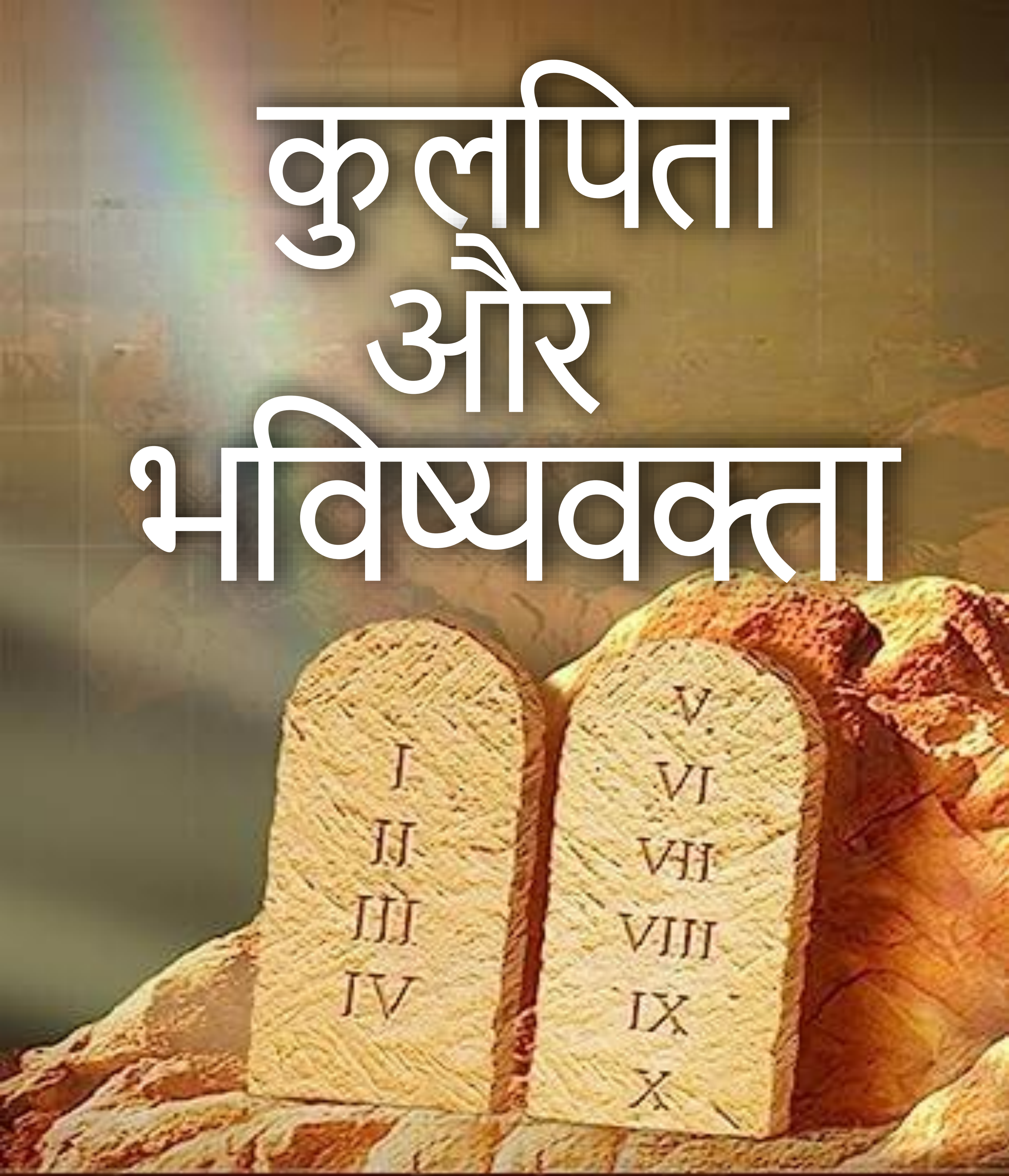
कुलपिता और भविष्यवक्ता



एलेन जी. व्हाइट

New Covenant Publications: Hindi

ISBN: 359-2-85933-609-1

ISBN: 359-2-85933-609-1

प्रकाशन डेटा में कैटलॉगिंग

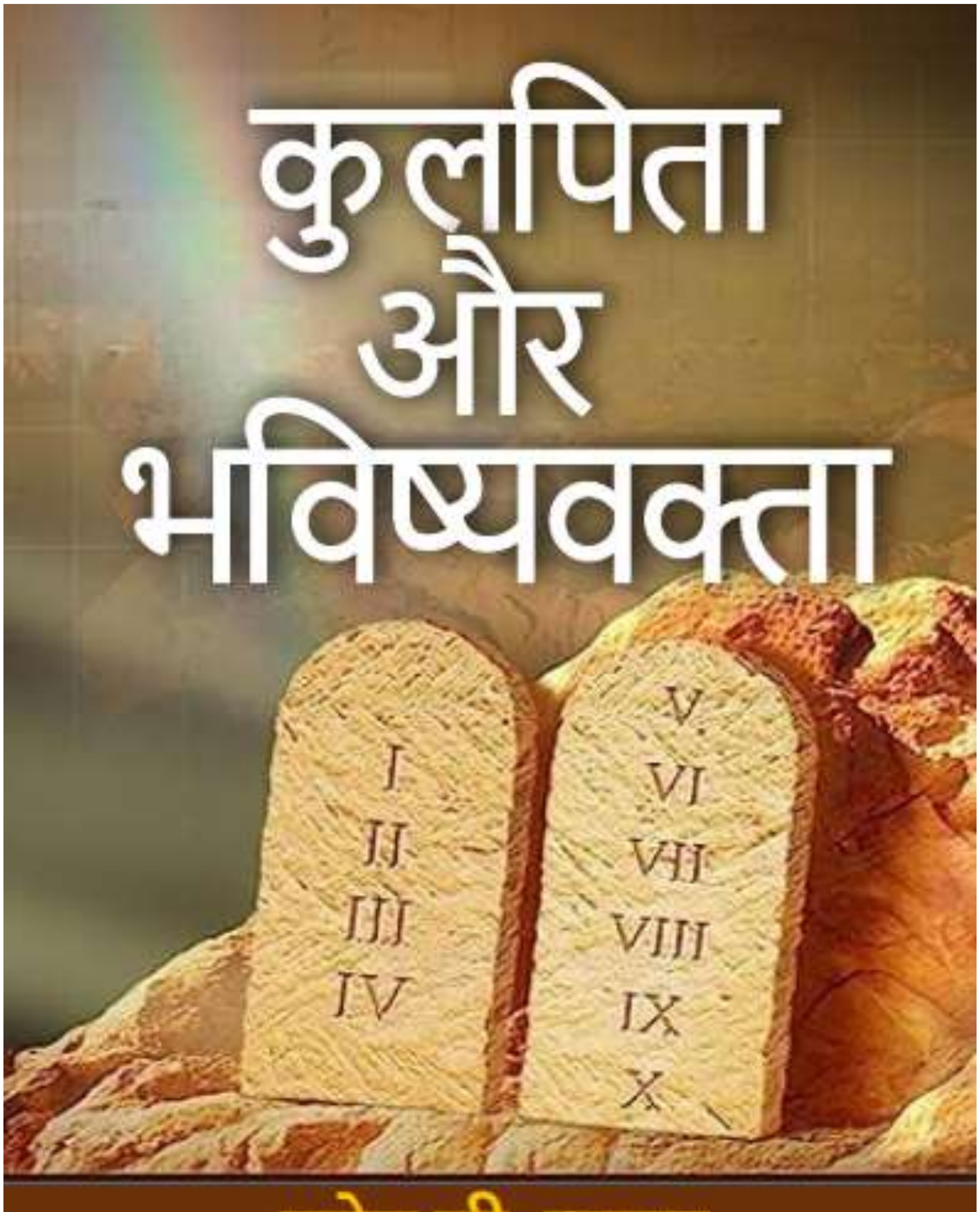
संपादित और डिज़ाइन किया गया: न्यू कोवेनेंट पब्लिकेशन्स इंटरनेशनल ग्रुप

यूनाइटेड किंगडम में मुद्रित।
पहली छपाई 26 मई 2020

द्वारा प्रकाशित: New Covenant Publications International Ltd.,

Kemp House, 160 City Road, London, EC1V 2NX

वेबसाइट पर जाएँ:: www.newcovenant.co.uk



कुलपिता
और
भविष्यवक्ता
I
II
III
IV
V
VI
VII
VIII
IX
X
एलेन जी. व्हाइट

भवन को सोने से मढ़े हुए स्तम्भों से लटकाए हुए, एक बहुमूल्य और सुन्दर परदे से दो कक्षों में विभाजित किया गया था, और वैसा ही परदा पहले कक्ष के द्वार को ढॉकता था। ये भी भीतर के परदों की तरह जिनसे छत बनी थी, नीले, बैंगनी और लाल रंग के थे व सुव्यवस्थति थे। इन पर सोने और चांदी के धागों की कढ़ाई से करूब बने हुए थे जो उस स्वर्गदूत समूह का प्रतीक थे जो स्वर्गीय पवित्र स्थान के कार्य से जुड़े हुए थे और जो पृथ्वी पर परमेश्वर के लोगों के लिये सहायक हैं। ....भीतरी परदे के परे पवित्रों का पवित्र था जहां मध्यस्थता और प्रायश्चित की प्रतीकात्मक विधि केन्द्रित थी, और जोपृथ्वी और आकाश को जोड़ने वाली कड़ी थी। इस कक्ष में एक सन्दूकथा जो बबूल की लकड़ी से बना था, और अन्दर से और बाहर से सोने से सढ़ा हुआ था और उसके ऊपर सोने की बाड़ थी। यह संग्रह स्थान था उन पत्थर की पटियाओं के लिये, जिन पर परमेश्वर ने स्वयं दस आज्ञाएं लिखी थी। इस कारण इसे परमेश्वर के साक्षीपत्र का सन्दूक या वाचा का सन्दूक कहा जाता था, क्योंकि दस आज्ञाएं इज़राइल और परमेश्वर के बीच बाँधी गई वाचा का आधार थी। (hi)

यह पृष्ठ स्वेच्छा से खाली छोड़ा गया है।

New Covenant Publications



International Ltd.

सुधारित पुस्तकें, परिवर्तित मन

New Covenant Publications International Ltd.,
Kemp House, 160 City Road, London, EC1V 2NX

मेल पता: newcovenantpublicationsintl@gmail.com

आभार

यह पुस्तक ईश्वर को समर्पित है।

प्रस्तावना

अंतर्राष्ट्रीय न्यूकॉवेनेंट प्रकरशन परठक को स्वर और् पथृवी को जोड़नेवरली दिव्य योजनर सेपनुः जोड़तर हैऔर् प्रेम केव्यवस्थर की अनंततर को मजबतू कर्तर है। यह लोगो, वाचा का संदूक, मसीह यीशुऔर् उनके लोर्ोंं के बीि की घदनष्ठतर और् पर्मेश्वर् केव्यवस्थर की कें द्रीयतर कर प्रतीक है। (2) जैसा लिखा है, परन्तु जो वाचा मैं उन दिनों के बाद इस्राएल के घराने से बान्धूंगा, वह यह है: मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में समवाऊंगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूंगा; और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा, और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, यहोवा की यह वाणी है। (यिर्मयाह अध्याय 31:31-33; यिर्मयाह अध्याय 8:8) इसदलए, नई वरिर उन लोर्ोंं को लें लर्रती हैदजनकेदिलों मेंउसकर प्रेम और् दनयम एकजटु और् अंदकत होतेहैं, यहरं तक दक दहसं क संघर्ा, व्यदिर्र् और वह भी ऐसे विरोध के बीच, जिसका सामना करना असंभव प्रतीत होता है।

असंख्य शताब्दियों से, कई लोगों ने कष्टदायक यातनाएं, अकल्पनीय उत्पीड़न और आक्रामक युद्धों का सामना किया है, जो सत्य को मिटाने और परमेश्वर के ज्ञान को समाप्त करने के लिए रचे गए थे। विशेष रूप से अंधकार युग में, सत्य को मानव परंपराओं और लोकप्रिय अज्ञानता द्वारा काफी हद तक छिपा दिया गया था, क्योंकि दुनिया के निवासियों ने ज्ञान को तुच्छ समझा और वाचा का उल्लंघन किया। बुराइयों के साथ समझौते की इस बीमारी ने इस तरह की असीम पतनशीलता और शैतानी अमानवीयता को उकसाया, कि कई लोगों के जीवन को अन्यायपूर्वक बलिदान कर दिया गया, जिन्होंने विवेक के अधिकार को छोड़ने से इनकार कर दिया। फिर भी, खोया हुआ ज्ञान पुनः प्राप्त किया गया, विशेष रूप से सुधार काल के दौरान

इतिहास, विशेष रूप से 16 वीं शताब्दी के सुधार युग के दौरान, सत्य के एक महत्वपूर्ण क्षण, मौलिक परिवर्तन और इसके परिणामस्वरूप उत्पन्न अशांति को दर्शाता है, जैसा कि प्रतिशोधी सुधार (काउंटर-रेफॉर्मशन) आंदोलन में परिलक्षित होता है। हालांकि, इस ग्रंथ के माध्यम से, सुधारकों और अन्य प्रत्यक्षदर्शियों के दृष्टिकोण से इस अद्वितीय क्रांति के अचूक महत्व को फिर से खोजा जा सकता है। उनकी नज़रों से,, इन विध्वंसकारी लड़ाइयों और ऐसी असाधारण प्रतिरोध की गहन कारणों को समझा जा सकता है। कोई भी व्यक्ति इस दौरान उत्पन्न अपार रहस्यों, कटु विवादों और अलौकिक हस्तक्षेपों की गहराई में जा सकता है।

हमारा उद्देश्य: “सुधारित पुस्तकें, परिवर्तित मन," उस विशिष्ट साहित्य की शैली को उजागर करता है, जो एक महत्वपूर्ण युग में लिखा गया था और उसके प्रभाव को दर्शाता है। यह व्यक्तिगत सुधार, पुनर्जन्म और परिवर्तन की अनिवार्यता को भी प्रतिध्वनित करता है। जिस प्रकार लगभग 500 साल पहले गुटेनबर्ग की प्रिंटिंग प्रेस और अनुवाद के माध्यम से सुधारित विश्वास के सिद्धांतों का प्रसार हुआ था, उसी प्रकार डिजिटल प्रेस, ऑनलाइन पुस्तकालयों और सोशल मीडिया के माध्यम से इन अंतिम समयों में सत्य का प्रकाश हर भाषा में प्रसारित होगा।

विषयसूची

अध्याय 1—पाप को अनुमति क्यों दी गई

1 यहुन्ना 4:16 में लिखा है, “परमेश्वर प्रेम है।” उसका स्वभाव, उसका कानून, प्रेम है। वह हमेशा से था और हमेशा रहेगा। वह जो उच्च है और जिसको ऊपर उठाया गया है, और जो अमर है, जो” सदा से ही ऐसा रहाहै’ बदलता नहीं। वह नक्षत्रों की गतिविधि से उत्पन्न छाया से कभी बदलता नहीं है। (यशायाह 57:15, हबक्क्क 3:6, जेम्स 1:17) PPHin 19.1

रचनात्मक योग्यता की हर अभिव्यक्ति उसके अनंत प्रेम की अभिव्यक्ति है। परमेश्वर की सम्प्रभुता सभी सृजन किये हुए प्राणियों को आशीषों की परिपूर्णता से सम्बद्ध है। भजन संहिता 89:143-18 में लिखा है, “हे परमेश्वर तू समर्थ है,तेरी शक्ति महान है, तेरी ही विजय है, तेरा राज्य सत्य और न्याय पर आधारित है, प्रेम और भक्ति तेरे सिंहासन के सैनिक है, हे परमेश्वर तेरे भक्त सचमुच प्रसन्न है, वे तेरी करूणा के प्रकाश में जीवित रहते है, तेरा नाम उनको सदा प्रसन्न करता है, वे तेरे खरेपन की प्रशंसा करते है, तृडन की अद्‌भुत शक्ति है, उनको तुझसे बल मिलता है। हे यहोवा, तू हमारा रक्षक है, इज़राइल का वह पवित्र हमारा राजा है”। PPHin 19.2

अच्छाई और बुराई के बीच संघर्ष का इतिहास, उस समय से जब वह सबसे पहले स्वर्ग में शुरू हुआ और विद्रोह के पराभव और पाप के नाश तक परमेश्वर के अपरिवर्तनीय प्रेम का प्रदर्शन है। PPHin 19.3

उपकार के अपने काम मे सृष्टि का प्रभु अकला नहीं था। उसका एक साथी था-एक सहकर्मी जो उसके उद्देश्य की सराहना कर सकता था, जो सृजन किये हुए प्राणियों को आनन्दित करने के आनंद में उसका भागीदार हो सकता था। यहुन्ना 1:1,2 में लिखा है, “आदि में शब्द था। शब्द परमेश्वर के साथ था। शब्द ही परमेश्वर था”। मसीह, शब्द, परमेश्वर का इकलौता पुत्र सनातन परमेश्वर के साथ था, दोनों के स्वभाव, चरित्र और उद्देश्य एक थे, वह एकाकी हस्ती जो परमेश्वर के हर उद्देश्य और विचार-विनिमय में हिस्सेदार था। यशायाह 4:6 में लिखा है, “उसका नाम अद्‌भुत, युक्ति करने वाला, पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा ।” मीका 5:2 में लिखा है “उसका निकलना प्राचीन काल से, वरन अनादि काल से होता आया है” और परमेश्वर का पुत्र स्वयं से सम्बन्धित घोषणा करता है। “यहोवा ने मुझे काम करने के आरम्भ में, वरन अपने प्राचीन काल के कामों से भी पहले उत्पन्न किया। मैं सदा से वरन आदि ही से ठहराया गया हूँ उसने धरती की नीवों का सूत्रपात किया, तब मैं उसके साथ कुशल शिल्पी सा था। और प्रतिदिन मैं उसके लिये प्रसन्नता थी जो हमेशा उसके सामने आनन्दित रहती थी।”नीतिवचन 8:22--30 PPHin 19.4

पिता ने समस्त स्वर्गीय प्राणियों की सृष्टि पुत्र द्वारा की। कुलुस्सियों 1:16 में लिखा है, “उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुईं....क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएं, क्या प्रधानताएं या अधिकार, सारी वस्तुएँ

उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई है"। परमेश्वर की उपस्थिति से प्रवाहित प्रकाश से प्रकाशवान और उसकी इच्छा का पालन करने को तीव्र गति से उड़ते स्वर्गदूत परमेश्वर के कर्मकर है। लेकिन परमेश्वर का पुत्र, परमेश्वर द्वारा अभिषेक किया हुआ, "उसके तत्व की छाप" "उस की महिमा का प्रकाश" "सब इन सब पर प्रभुत्व रखता है"। यिर्मयाह 17:12 में लिखा है-"आरम्भ से ही हमारा आराधनालय परमेश्वर के लिये एक गौरवशाली सिंहासन था" "धार्मिकता का राजदण्ड" उसके राज्य का राजदण्ड (इब्रानियों 1:8)।भजन संहिता 96:6 के अनुसार, "उसके सम्मुख सुन्दर महिमा दीप्त है, परमेश्वर के पवित्र मन्दिर में सामर्थ्य और सौन्दर्य है।' भजन संहिता 89:14में लिखा है, "करूणा और सच्चाई तेरे आगे-आगे चलती है। PPHin 20.1

परमेश्वर के राज्य की नींव प्रेम का सिद्धान्त है। इसलिये समस्त बुद्धिमान प्राणियों की प्रसन्नता धार्मिकता के महान सिद्धान्तों के साथ सहमत होने पर निर्भर है। परमेश्वर अपने द्वारा सृजन किये गये सभी प्राणियों से प्रेमपूर्ण सेवा चाहता है, सेवा जो उसके चरित्र की सराहना से फलती है। बलपूर्वक आज्ञापालन कराने में उसे कोई आनन्द नहीं आता,वह सबको इच्छाशक्ति की स्वतन्त्रता प्रदान करता है, ताकि वे उसे अपनी स्वैच्छिक सेवा दें ।जब तक सब सृजित प्राणी प्रेम की निष्ठा का अंगीकार करते रहे, परमेश्वर की सृष्टि में पूर्ण सामंजस्य था। अपने सृजनहार के उद्देश्य की पूर्ति करना स्वर्गीय समुदाय का आनन्द था। उसकी महिमा को प्रतिबिंबित करने में और उसका गुणगान करने में वे प्रफुल्लित होते थे, और जब तक परमेश्वर के प्रति प्रेम उच्चतम था, परस्पर प्रेम निःस्वार्थ और विश्वासपूर्ण था। कोई ऐसा कलह का सुर नहीं था जो स्वर्गीय समरसता को आघात पहुँचाता। लेकिन इस आनन्दमय अवस्था में बदलाव आया। कोई ऐसा था जिसने परमेश्वर द्वारा सृजित प्राणियों को दी गई स्वतंत्रता को विकृत कर दिया। पाप का जन्म उसी के साथ हुआ जो यीशु से दूसरे स्थान पर था, परमेश्वर द्वारा सम्मानित था और स्वर्ग के निवासियों के बीच अधिकार और प्रतिष्ठा में सबसे ऊँचा था। लूसिफेर, "प्रातःकाल का पुत्र" प्रावरण करने वाले करूबों में प्रथम था, बेदाग और पवित्र। वह महान सृष्टिकर्ता की उपस्थिति में खड़ा रहता था और सनातन परमेश्वर को आवरित करने वाली महिमा की किरणें उस पर टिकी रहती थी। "तू तो उत्तम से भी उत्तम है, तू बुद्धि से भरपूर और सर्वांग सुन्दर है। तू परमेश्वर की अदन नामक बारी में था, तेरे पास भांति-भांति के मणि और सोने के पहरावे थे, तू छाने वाला अभिषिक्त करूब था, मैंने तुझे ऐसा ठहराया कि तू परमेश्वर के पवित्र पवर्त पर रहता था, तू आग सरीखे चमकाने वाले मणियों के बीच चलता फिरता था। जिस दिन से तू सजा गया, और जिस दिन तक तुझ में कूटिलता नहीं पाई गई, उस समय तक तू अपने सारे चाल-चलन में निर्दोष रहा । यहेजकेल 28:12-15। PPHin 20.2

धीरे-धीरे लूसिफेर में स्वयं की पदोन्नति की अभिलाषा जाग उठी। पवित्र शास्त्र कहता है, "सुन्दरता के कारण तेरा मन फूल उठा था, और वैभव के कारण तेरी बुद्धि बिगड़ गई थी"-यहेजकेल 28:17 ।तू मन में कहता तो थाकि में अपने सिंहासन को ईश्वर के तारागण से अधिक ऊँचा करूंगा.........मैं परम-परमेश्वर के तुल्य हो जाऊँगा"- यशायाह 14:13,14 ।जबकि लूसिफेर का सारा

प्रताप परमेश्वर के माध्यम से था, यह शक्तिशाली स्वर्गदूत उसे स्वयं की मानने लगा था। अपने पद से असंतुष्ट, स्वर्गीय समूह से ऊपर सम्मानित होते हुए भी उसने उस निष्ठाभाव को हड़पना चाहा, जिसका अधिकार केवल सृष्टिकर्ता को था। समस्त प्राणी जगत की निष्ठा और आसक्ति में परमेश्वर को सर्वोच्च बनाने में सहायक होने के बजाय उसकी कोशिश यही थी कि प्राणीगण अपनी सेवाएं और स्वामिभक्ति उसको अर्पण करें। और पिता द्वारा पुत्र को प्रदान की गईं महिमा की लालसा रखते हुए, यह स्वर्गदूतों का राजकुमार उस अधिकार का महत्वकांक्षी था जो केवल यीशु का था। PPHin 21.1

अब स्वर्ग का संपूर्ण सांमजस्य टूट सा गया था। लूसिफेर का सृजनहार के बजाय स्वंयसेवा का आचरण देखकर उनको, जो परमेश्वर की महिमा को उत्तम मानते थे, सन्देह होने लगा। स्वर्गीय सभा में स्वर्गदूतों ने लूसिफेर से विनती की। परमेश्वर के पुत्र ने उसके समक्ष सृष्टिकर्ता की महानता, अच्छाई और न्यायबद्धता और उसके नियमों के पवित्र और अपरिवर्तनीय स्वभाव को रखा। परमेश्वर ने स्वंय स्वर्ग की व्यवस्था को स्थापित किया था, और उसका तिरस्कार करने पर लूसिफेर, अपने सृष्टिकर्ता का अपमान कर, स्वयं का विनाश करता। लेकिन अनन्त प्रेम और कृपा से दी गईं चेतावनी ने उसमें केवल प्रतिरोध की भावना को जगाया। लूसिफेर ने यीशु के प्रति इष्याभाव को पनपने दिया और वह और भी दृढ़-निश्चय हो गया। PPHin 21.2

सृष्टिकर्ता की बुद्धिमत्ता और प्रेम पर सन्देह करते हुए, परमेश्वर के पुत्र के प्रभुत्व को विवादास्पद बनाना ही इस स्वर्गदूतों के राजकुमार का उद्देश्य बन गया था। लूसिफेर जो यीशु से दूसरे स्थान पर था, जो परमेश्वर की सेना में प्रथम था, अपनी असामान्य बुद्धि की क्षमता को इसी लक्ष्य पर केंद्रित करने वाला था। लेकिन प्रत्येक प्राणी को इच्छाशक्ति की स्वतन्त्रता देने वाले परमेश्वर ने किसी को भी उलझाने वाले कुतक, जिससे विद्रोह स्वयं को उचित सिद्ध करता, से असावधान नहीं छोड़ा। प्रतियोगिता के शुरू होने से पूर्व, सभी को उसकी इच्छा का स्पष्ट प्रदर्शन होना था, जिसकी बुद्धिमत्ता और अच्छाई में उनकी प्रसन्नता का सोता था। PPHin 22.1

सृष्टि के सम्राट ने स्वर्गीय समुदाय को बुलाया, ताकि उनकी उपस्थिति में वह अपने पुत्र का सही स्थान बता सके और पुत्र और सभी सृजित प्राणियों के साथ उसके सम्बन्ध को समझा सके। परमेश्वर का पुत्र, पिता के सिंहासन का सहभागी था, और सनातन स्व-विद्यमान की महिमा दोनों को घेरे थी। सिंहासन के चारों और पवित्र स्वर्गदूत अनगिनत संख्या में-"लाखों, करोड़ो में" (प्रकाशित वाक्य 4:5,11)जमा हुए। यह कार्यकर्ता और प्रजा के रूप में उच्चतम गौरावान्वित स्वर्गदूत थे जो प्रभु की उपस्थिति से प्रवाहित प्रकाश में आनन्द मग्न थे [स्वर्ग के एकत्रित निवासियों के समक्ष राजा ने घोषणा की कि केवल परमेश्वर का इकलौता पुत्र यीशु, उसके उद्देश्यों को जान सकता है और उसकी इच्छाओं की महान सम्मति के क्रियान्वयन की प्रतिबद्धता उसी को दी गई थी। स्वर्ग के वासियों को सृष्टि में परमेश्वर के पुत्र ने पिता की इच्छा को पूरा किया। और वे दोनों ही उनकी

श्रद्धांजलि और निष्ठा पाने का अधिकार रखते है। अभी यीशु का पृथ्वी और पृथ्वी वासियों की सृष्टि में ईश्वरीय शक्ति का प्रयोग करना बाकी था। लेकिन इसमें उसने ईश्वर की योजना के विपरीत, स्वयं की पदोन्नति की लालसा नहीं की ।उसने अपने पिता की महिमा को ऊँचा किया। और उसके प्रेम और उपकार के प्रयोजनों कार्यान्वित किया । PPHin 22.2

स्वर्गदूतों ने प्रसन्नतापूर्वक यीशु के प्रभुत्व को स्वीकार किया और उसके आगे दण्डवत होते हुए, अपने प्रेम और भक्ति का प्रदर्शन किया। लूसिफेर भी उनके साथ झुका, लेकिन उसके हृदय में एक अद्‌भुत उग्र संघर्ष था। सत्य, न्याय और निष्ठा, ईर्ष्या और द्वेष के प्रति संघर्षरत थे। पवित्र स्वर्गदूतों का प्रभाव कुछ समय तकउसे उनकी तरफ ले गया। जैसे-जैसे महिमागान के मीठी धुनें हजारों प्रसन्नचित आवाजों के साथ गूंजने लगी, बुराई की आत्मा गायब होती प्रतीत होने लगी, उसका अस्तित्व अकथनीय प्रेम से प्रसन्नचित हो गया, उसकी आत्मा पाप रहित भक्तों के साथ हो ली, और हृदय पिता और पुत्र के लिये प्रेम से भर गया ।लेकिन फिर से वह अपनी महिमा के घमण्ड से भर गया। प्रभुत्व के लिए उसकी लालसा पुनः जागृत हो गई और यीशु के प्रति वह फिर ईर्ष्या से भर गया। जो उच्च सम्मान लूसिफेर को प्राप्त थे, उनको उसने ईश्वर के विशेष वरदान के रूप में नहीं स्वीकारा और इस कारण वह अपने सृष्टिकर्ता के प्रति आभारी नहीं हुआ। वह स्वयं की चमक और बढ़ोतरी में उन्मुक्त था और ईश्वर तुल्य होने के स्वप्न देखने लगा। वह स्वर्ग के निवासियों में सम्मानित था और उनका प्रिय था, स्वर्गदूत उसकी आज्ञाओं का प्रसन्नतापूर्वक पालन करते थे, और वह उनसे ज्यादा बुद्धिमता और महिमा से आवृत था। लेकिन परमेश्वर का पुत्र उससे उच्चतम था, क्योंकि प्राधिकार और सामर्थ्य में पिता और पुत्र एक थे। पुत्र पिता के विचार-विनिमय में भागीदार था, जबकि लूसिफेर का परमेश्वर के उद्देश्यों में कोई हिस्सा नहीं था। 'यीशु के पास प्रभुत्व क्यों होना चाहिये? इस शक्तिशाली स्वर्गदूत ने प्रश्न किया, "इसे लूसिफेर से ज्यादा सम्मान क्यों दिया जाए?" PPHin 23.1

पिता परमेश्वर की उपस्थिति में अपने स्थान को छोड़ कर लूसिफेर स्वर्गदूतों में असन्तोष की भावना फैलाने निकल पड़ा। उसने रहस्यमयी गोपनीयता के साथ काम किया और कुछ समय तक अपने वास्तविक लक्ष्य को ईश्वर के प्रति श्रद्धा के रूप में अप्रकट रखा। उसने स्वर्ग के वासियों को नियमित करने वाली व्यवस्था के सम्बन्ध में सन्देह पैदा करना शुरू किया और यह जताना शुरू किया कि व्यवस्था की आवश्यकता जगत के वासियों के लिए होगी;स्वर्गदूतों को जो उनसे उच्चतम है, ऐसी नियमबद्धता की आवश्यकता नहीं, क्योंकि उनकी अपनी बुद्धिमता एक कुशल सलाहकार है। वे परमेश्वर का निरादर करने वाले नहीं हो सकते थे, उनके विचार पवित्र थे, उनके लिये परमेश्वर की तरह ही गलती करना असम्भव था। चूंकि लूसिफेर भी आदर और सम्मान का पात्र था,परमेश्वर के पुत्र का पिता के तुल्य होने को लूसिफेर के साथ अन्याय समान दिखलाया गया। उसे उसके वास्तविक उच्चतम स्थान की प्राप्ति हो जाने पर समस्त स्वर्गीय समुदाय का भला हो सकता था; लेकिन अब वह स्वतन्त्रता जिसका आंनद अभी तक उठाया था, समाप्त होने को थी, क्योंकि उनके

लिए एक शासक को नियुक्त कर दिया गया था और सभी को उसकी सत्ता को श्रद्धांजलि देनी थी। इस तरह के चतुर रूप से व्यवस्थित भ्रम लूसिफेर की चालों से स्वर्गीय दरबार में फैल रहे थे। PPHin 23.2

यीशु के पद या अधिकार में कोई बदलाव नहीं आया था। लूसिफेर की ईर्ष्या और गलत विवरण के कारण और यीशु के साथ बराबरी के दावे के फलस्वरूप परमेश्वर के पुत्र के सही स्थान के बारे में घोषणा अनिवार्य हो गई थी, जबकि उसका यह स्थान आरम्भ से ही था। लेकिन फिर भी कई स्वर्गदूत लूसिफेर के छलावे में अंधे हो गए थे। PPHin 24.1

उसके अधीन पवित्र प्राणियों के निष्ठावान विश्वास का लाभ उठाते हुए, उसने स्वयं के अविश्वास और असन्तोष को उनके मनों में ऐसी कलाकारी से बैठाया कि उन्हें उसके माध्यम का आभास ही नहीं हुआ। लूसिफेर ने परमेश्वर के प्रावधानों को कपटपूर्ण प्रकाश में दिखाया- विकृत और भ्रम पैदा करने वाले तरीके से जिससे सुनने वालों का असन्तोष और असहमति जागृत हुई। उसने चालाकी से अपने सुनने वालों को अपनी भावनाएँ व्यक्त करने पर विवश कर दिया। फिर अपना काम निकालने के लिए वह इन्हीं अभिव्यक्तियों को बतौर साक्षी दोहराता कि स्वर्गदूत ईश्वरीय सत्ता के प्रति पूर्णतया सहमत नहीं थे। PPHin 24.2

परमेश्वर के प्रति स्वयं की निष्ठा का दावा करते हुए, उसने आग्रह किया कि ईश्वरीय सत्ता की स्थिरता के लिये नियम और परिवर्तन करना अनिवार्य था। इसलिये ईश्वरीय व्यवस्था के प्रति विद्रोह को बढ़ावा देने के लिये, स्वयं का असन्तोष अपने अधीन स्वर्गदूतों के मनों में बैठाने के लिये, वह असंतोष को दूर करने और असंतुष्ट स्वर्गदूतों का स्वर्ग की व्यवस्था से मेल-मिलाप करवाने का आडंबर रच रहा था। गुप्त रूप से भेदभाव और विद्रोह को बढ़ावा देते हुए उसने कपट से ऐसा प्रतीत होने दिया, जैसे उसका मूल उद्देश्य निष्ठा का समर्थन करना और शान्ति और सहमति बनाए रखना था। PPHin 24.3

असन्तोष की भावना जो उत्पन्न की गई थी अपना विनाशकारी कार्य कर रही थी। हालांकि सदृश्य विद्रोह नहीं था, स्वर्गदूतों में अलक्षित रूप से मतभेद बढ़ रहा था। कुछ ऐसे थे जो परमेश्वर की सत्ता के विरूद्ध लूसिफेर के परोक्ष रूप से दोषारोपण करने का समर्थन करते थे। हालांकि अभी तक वे परमेश्वर द्वारा स्थापित व्यवस्था के अनुकूल थे, लेकिन अब वे असन्तुष्ट और अप्रसन्न थे क्योंकि वे उसकी रहस्यमयी सम्मति को समझने में अयोग्य थे; यीशु को ऊंचा उठाने के, परमेश्वर के, उद्देश्य से वे असंतुष्ट थे। परमेश्वर के पुत्र के साथ समान अधिकार की मांग में वे लूसिफेर का साथ देने को तैयार थे। लेकिन जो स्वर्गदूत सच्चे और निष्ठावान थे, अभी भी पवित्र व्यवस्था में निहित न्याय और बुद्धिमता को पकड़े हुए थे और इस असमन्तुष्ट प्राणी का ईश्वरीय इच्छा से मेल कराने में लगे थे। यीशु परमेश्वर का पुत्र था, स्वर्गदूतों के अस्तित्व में आने से पूर्व यीशु और पिता परमेश्वर एक थे। वह हमेशा से पिता के सीधे हाथ पर विराजमान था। उसके प्रभुत्व को, जो उसके हितकारी नियन्त्रण में

रह रहे लोगो के लिये भरपूर आशीष का स्रोत था, किसी ने भी विवादास्पद नहीं ठहराया था। स्वर्ग की शान्ति कभी भंग नहीं हुई थी, तो अब असहमति क्यों होती?स्वामीभक्त स्वर्गदूत केवल इस असहमति के भयानक परिणामों को देख सकते थे, और उन्होंने गंभीर अनुनय के साथ असन्तुष्ट स्वर्गदूतों को परामर्श दिया कि वे अपना उद्देश्य त्याग दें और परमेश्वर की सत्ता के प्रति ईमानदारी से अपने आप को परमेश्वर के प्रति निष्ठावान होने का प्रमाण दे। PPHin 24.4

बड़ी दया के साथ, अपने ईश्वरीय चरित्र के अनुसार परमेश्वर ने लूसिफेर को देर तक सहा। स्वर्ग अंसतोष और अनिष्ठा की भावना से अछता था। यह एक नया तत्व था, जो अद्भुत, रहस्यमयी और अनुत्तरदायी था। लूसिफेर का स्वंय प्रारम्भ में अपनी भावनाओं के वास्तविक स्वभाव से परिचय नहीं था। कुछ समय के लिये वह अपने मन की कल्पनाओं को अभिव्यक्त करने से डरता था, लेकिन उनको नकारता भी नहीं था। उसने यह नहीं देखा कि वह किधर बह रहा था। लेकिन अनंत प्रेम और बुद्धिमता से उत्पन्न प्रयत्न किये गए कि उसे अपनी गलती का विश्वास हो। PPHin 25.1

यह साबित किया गया कि उसकी अनिष्ठा अकारण थी और उसको दिखाया गया कि उसके लगातार विद्रोह करने का नतीजा क्या होगा। लूसिफेर विश्वस्त हो गया कि वह गलत था। उसने देखा कि "यहोवा जो भी करता है, अच्छा ही करता है। यहोवा जो भी करता है, उसमें निज सच्चा प्रेम प्रकट करता है-भजन संहिता 145:17 PPHin 25.2

उसने यह भी जाना कि पवित्र अधिनियम नन्यायसंगत है, और उसे इन्हें समस्त स्वर्ग के सामने अंगीकार करना है। अगर उसने ऐसा किया होता तो उसने स्वयं को और कई स्वर्गदूतों को बचा लिया होता। उस समय उसने परमेश्वर के प्रति अपनी निष्ठा को पूरी तरह नहीं त्यागा था। हालांकि उसने ढांकने वाले करूब का स्थान छोड़ दिया था, यदि सृष्टिकर्ता की बुद्धिमता को स्वीकारते हुए और परमेश्वर की योजना में अपने नियुकक्त स्थान पर सन्तुष्ट होकर, परमेश्वर के पास लौटने को तैयार होता तो उसे अपने पद पर पुनः स्थापित कर दिया जाता। अन्तिम निर्णय का समय आ गया था या तो उसे ईश्वरीय संप्रभुता को सर्म्पण करना था, या स्पष्ट रूप से विद्रोह में स्थिर करना था। वह लगभग लौटने के निर्णय पर पहुँच गया, लेकिन घमण्ड ने उसे रोक दिया। इतने ऊँचे सम्मान के पात्र, लूसिफेर के लिये यह मान लेना कि वह गलत था, उसकी कल्पनाएं मिथ्या थी और उस प्रभुता के आगे समर्पण करना जिसे वह अन्यायपूर्ण प्रमाणित करने का प्रयत्न कर रहा था, बहुत बड़ा त्याग था। PPHin 26.1

लूसिफेर और उसके अनुनायियों के लिये दया से भरपूर, एक दयावान सृष्टिकर्ता उन्हें उस विनाश की खाई से, जिसमें वे कूदने वाले थे, पीछे खींचने के लिए प्रयत्नशील था। लेकिन उसकी कृपा दृष्टि का गलत मतलब निकाला गया परमेश्वर की सहनशीलता को लूसिफेर ने स्वयं की श्रेष्ठता का प्रमाण बताया, और यह संकेत दिया कि सृष्टि का राजा अभी भी उसकी शर्तों को सहमति देगा। उसने घोषणा की कि यदि स्वर्गदूत दृढ़ता से उसके साथ खड़े रहे तो वे वह सब कुछ पा सकते थे

जिसके वे इच्छुक थे। उसने लगातार अपने रास्ते का समर्थन किया और स्वयं को पूर्णरूप से सृष्टिकर्ता के विरूद्ध विवाद के लिये वचनबद्ध कर दिया। इस तरह लूसिफेर “प्रकाशवाहक”, परमेश्वर की महिमा का भागीदार, उसके सिंहासन का सेवक, उल्लंघन करने पर शैतान बना, परमेश्वर और पवित्र दूतों का वह “विरोधी” और उनका विनाशक जिन्हें स्वर्ग ने उसके दिशा निर्देश और संरक्षण के सुपुर्द किया था। PPHin 26.2

निष्ठावान स्वर्गदूतों के तर्कों और अनुनय का उसने तिरस्कार भरे अस्वीकरण से, उनको भ्रमित दासकहकर उनकी भर्त्सना की। यीशु को दी गईं प्राथमिकता को उसने, अपने और समस्त स्वर्गीय समूह के प्रति अन्याय का कार्य घोषित किया और सूचित किया कि अब वह अपने और उनके अधिकारों में हस्तक्षेप के आगे आत्म समर्पण नहीं करेगा; वह कभी भी यीशु के प्रभुत्व को नहीं स्वीकारेगा। वह उस सम्मान का दावा करने को, जो उसे दिया जाना चाहिए था और अपने होने वाले अनुयायियों पर प्रभुत्व करने को कृत-निश्चय था; और उसने उसके जत्थे में आने वालो को एक नई और बहतर सत्ता का आश्वासन दिया, जिसमें सभी को स्वतंत्रता मिलने वाली थी। बड़ी संख्या में स्वर्गदूतोंने उसे अपना अगुवा मानने का कारण स्पष्ट किया। अपनी बढ़ोतरी के समर्थन से प्रोत्साहित होकर, वह आशा करने लगा कि वह सब स्वर्गदूतों को अपनी तरफ खींच लेगा, परमेश्वर के तुल्य हो जाएगा और समस्त स्वर्ग के निवासी उसका आज्ञा-पालन करेंगे । PPHin 26.3

फिर भी निष्ठावान स्वर्गदूत, उससे और उससे सहानुभूति रखने वालों से परमेश्वर को समर्पण करने की दुहाई देते रहे और उनके मना करने पर जो परिणाम सामने आने वाला था, उससे उनको परिचित कराया। उनका सृष्टिकर्ता उनकी शक्ति को परास्त करने में सक्षम था और उपद्रवी निर्भकता को दण्डित कर सकता था। कोई भी स्वर्गदूत परमेश्वर की व्यवस्था, जो उसी की तरह पवित्र थी, कासफलतापूर्वक विरोध नहीं कर सकता था। उन्होंने सभी को चेतावनी दी कि वे लूसिफेर के कपटी विवेक के प्रति अपने कान बन्द कर लें। उन्होंने लूसिफेर और उसके अनुनायियों से विनती की कि बिना विलम्ब किये वे परमेश्वर की उपस्थिति में जाएं और उसकी बुद्धिमता और स्वाभित्व पर प्रश्न करने की गलती को स्वीकार करें । PPHin 27.1

कईइस परामर्श को ग्रहण करना चाहते थे, अपनी अनिष्ठा का पश्चाताप करना चाहते थे, और पुनः परमेश्वर और उसके पुत्र केपक्ष में होना चाहते थे, लेकिन लूसिफेर के पास दूसरा भ्रम तैयार था। इस शक्तिशाली उपद्रवी ने घोषणा की कि जो स्वर्गदूत उसके साथ जुड़ गए थे, उनकी वापसी असंभव थी क्योंकि वह ईश्वरीय. व्यवस्था से परिचित था और जानता था कि परमेश्वर उन्हें क्षमा नहीं करेगा। उसने घोषणा की कि जो भी स्वर्ग के प्रभुत्व के आगे समर्पण करेगा, उन्हें उनके सम्मान से वंचित कर दिया जाएगा और उनकेपद से नीचे उतार दिया जाएगा। जहां तक उसका प्रश्न था, वह कत-निश्चय था कि कभी भी यीशु के प्रभुत्व को स्वीकार नहीं करेगा। उसने कहा कि उसके

अनुयायियों के लिए और स्वयं उसके लिए यही रास्ता बचा था कि वे अपनी स्वतन्त्रता का दावा करें, और बलपूर्वक उन अधिकारों को प्राप्त करें जो उन्हें स्वेच्छा से नहीं दिये गए थे। PPHin 27.2

शैतान के प्रसंग मेंकहा जा सकता है कि उसका लौटना असंभव था, पर ऐसा उनके साथ नहीं था जो उसके कपट से अन्धे हो गए थे। उनके लिए निष्ठावान स्वर्गदूतों के परामर्श और अनुनय ने आशा का द्वार खोला था, और यदि उन्होंने उस चेतावनी को गंभीरता से लिया होता तो वह शैतान के शिकंजे से छूट सकते थे। लेकिन घमण्ड,अपने नेता के प्रति प्रेम, और असीमित स्वतन्त्रता की मनोकामना को हावी होने दिया गया और ईश्वरीय प्रेम और कृपा की विनतियों को अंत में अस्वीकार कर दिया गया। PPHin 28.1

परमेश्वर ने शैतान को उस समय तक कार्य करने दिया जब तक असन्तोष ने सक्रिय उपद्रव का रूप धारण किया। उसकी योजनाओं का पूर्ण रूप से विकसित होना अनिवार्य था ताकि सब उन योजनाओं का वास्तविक स्वभाव और प्रवृति को देख सकें। अभिषेक किया हुए करूब के रूप में लूसिफेर को उच्च स्थान दिया गया था, वह स्वर्गीय समुदाय का प्रिय था और उसका उन पर गहरा प्रभाव था। परमेश्वर की सत्ता में केवल स्वर्ग के वासी ही नहीं वरन उसके द्वारा रचित दूसरे जगत भी सम्मिलित थे, और लूसिफेर इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि यदि वह स्वर्ग के स्वर्गदूतों को विद्रोह के लिए उकसा सकता था, तो वह अन्य जगतों को भी सम्मिलित कर सकता था। उसने अपने लक्ष्य को सुरक्षित करने के लिए, कृतक और छल से अपना प्रश्न-पक्ष चालाकी से प्रस्तुत किया था। उसमें बहकाने की शक्ति बहुत थी। अपने आप को झूठ के आवरण में छुपाकर उसने अनुकूल परिस्थिति प्राप्त कर ली थी। उसके समस्त कार्य इस तरह रहस्यमयी थे कि स्वर्गदूतों को उसके कार्य का वास्तविक स्वभाव बताना कठिन था। पूर्ण विकास से पहले, यह प्रतीत नहीं कराया जा सकता था कि वह कार्य कितना हानिकारक था; उसकी अनिष्ठा विद्रोह नहीं लगती। निष्ठावान स्वर्गदूत उसके चरित्र को पूरी तरह नहीं समझ पाए और ना ही यह देख पाए कि उसका काम किस दिशा में था। PPHin 28.2

प्रारम्भ में लूसिफेर ने अपने प्रलोभनों को इस तरह संचालित किया कि वह स्वयं अप्रतिबद्ध प्रतीत हुआ। जिन स्वर्गदूतों को वह पूर्णतया अपने पक्ष में नहीं कर पाया, उन पर उसने स्वर्ग के वासियों के हित के प्रति उदासीन होने का लांछन लगाया। जो काम वह स्वयं कर रहा था, उसका उत्तरदायी उसने निष्ठावान स्वर्गदूतों को ठहराया। जटिल तर्कों से परमेश्वर के प्रयोजनों को पेचीदा बनाना उसकी नीति थी। साधारण को उसने रहस्यमयी बना दिया और धूर्ततापूर्ण विकति से यहोवा की सबसे साधारण उक्तियों को भी सन्देहास्पद बना दिया। और उसके ऊंचे पद के कारण, जो ईश्वरीय सत्ता के साथ जुड़ा हुआ था, उसके प्रतिवेदनों को बल मिला। PPHin 28.3

परमेश्वर उन्हीं युक्तियों का प्रयोग कर सकता था जो सत्य और धार्मिकता से संगत थी। शैतान चापलूसी और छल का प्रयोग कर सकता था जो परमेश्वर नहीं कर सकता था। उसने वचन को झूठा

ठहराने की कोशिश की थी और यह दावा करते हुए कि स्वर्गदूतों पर व्यवस्था थोपने वाला परमेश्वर अन्यायी था और समस्त प्राणियों से समर्पण और आज्ञाकारिता की उपेक्षा करने में वह सिफ अपनी बढ़ोतरी चाहता था, उसने ईश्वरीय सत्ता की योजना को गलत विवरण किया। इसलिये यह प्रदर्शित करना कि परमेश्वर की सत्ता न्यायसंगत है ओर उसकी व्यवस्था भली है, अनिवार्य था । शैतान ने ऐसा प्रतीत होने दिया जैसे वह सृष्टि की भलाई को बढ़ावा दे रहा था। हड़पने वाले के वास्तविक चरित्र और उसके वास्तविक लक्ष्य की समझ सबको होनी चाहिये। अपने आपको अपने कुकर्मों से प्रकट करने के लिए उसे समय चाहिये था। PPHin 29.1

अपने चुने हुए रास्ते से स्वर्ग में अशांति फैलाने का आरोप शैतान ने ईश्वरीय सत्ता पर लगाया। उसने घोषणा की कि हर बुराई ईश्वरीय प्रबंधन का परिणाम है। उसने दावा किया कि यहोवा की विधियों में सुधार उसका अपना लक्ष्य था। इसलिये परमेश्वर ने उसे अपने दावों के स्वभाव को प्रमाणित करने दिया, ताकि वह ईश्वरीय व्यवस्था में प्रस्तावित परिवर्तन की योजना को बता सकें। वह अपने ही कामों के द्वारा दोषी था। शैतान ने आरम्भ से ही विद्रोह में ना होने का दावा किया था। PPHin 29.2

सम्पूर्ण सृष्टि के द्वारा शैतान को बेनकाब हुआ देखा जाना अनिवार्य था अनंत बुद्धिमता ने शैतान को स्वर्ग से निकाल फेंकने के बाद भी नष्ट नहीं किया। परमेश्वर को केवल प्रेम से प्रेरित सेवा ही स्वीकार है, इसलिये उसके द्वारा सृजित प्राणियों की आज्ञाकारिता उसके न्याय और उदारता में विश्वास पर आधारित होनी चाहिये ।स्वर्ग और जगतो के वासी जो अभी पाप के स्वभाव और परिणाम की कल्पना के लिये तैयार नहीं थे, शैतान के विनाश में ईश्वर के न्याय को नहीं देख पाते ।यदि शैतान के अस्तित्व को तुरन्त मिटा दिया जाता, तो कुछ परमेश्वर की पूजा-अर्चना प्रेम से प्रभावित होकर नहीं बल्कि डर से करते। कपटी का प्रभाव पूरी तरह नष्ट नहीं होता, और ना ही उपद्रव की भावना का पूरी तरह नाश होता। युगों से सम्पूर्ण जगत के भले के लिये उसे अपने सिद्धांत को सम्पूर्ण से विकसित करना था ताकि ईश्वरीय सत्ता के विरूद्ध उसके आरोप सभी प्राणियों द्वारा सही दृष्टिकोण से देखे जा सके और परमेश्वर का न्याय और उसकी कृपा और उसकी व्यवस्था की अपरिवर्तनीयता सन्देहरहित हो सके । PPHin 29.3

आने वाले सभी युगों में शैतान का उपद्रव जगत के लिये सबक था- पाप का स्वभाव और उसके भयंकर परिणामों की अनंत गवाही। शैतान के शासन का योजनाबद्ध होना, उसका मानव और स्वर्गदूतों पर प्रभाव, ईश्वरीय प्रभुत्व को नकारने के परिणाम को दर्शाता। इससे इस बात की पुष्टि होती कि सभी प्राणी-जगत की भलाई ईश्वरीय सत्ता के अस्तित्व में निहित है। इस रीति से, उपद्रव के इस भंयकर परीक्षण का इतिहास सभी पवित्र प्राणियों के लिये एक अनंत सुरक्षा कवच था जिससे कि वे छलावे से बच सके, पाप करने से बच सके और पाप का दण्ड भुगतने से बच सके । PPHin 30.1

वह जो स्वर्ग में राज करता है वही है जो अंत को आरम्भ से देख सकता है- वह जिसके सामने भूतकाल और भविष्य के रहस्य एक समान फैले हुए है, और जो, पाप द्वारा गढ़े हुए दुख और अन्धकार और विनाश से परे, प्रेम और आशीष के अपने प्रयोजनों की सफलता को देख सकता है। भजन संहिता 97:2 में लिखा है, "बादल और अन्धकार उसके चारों ओर है, उसके सिंहासन का मूल धर्म और न्याय है"। और इस बात की सृष्टि के सभी, निष्ठावान और निष्ठारहित प्राणी एक दिन समझेंगे। व्यवस्थाविवरण 32:4 में लिखा हे, "वह (यहोवा) हमारी चट्टान है- उसके सभी कार्य पूर्ण है, क्योंकि उसके सभी भाग सत्य है। वह सच्चा ईश्वर है, उसमें कूटिलता नहीं है, वह धर्मी और सीधा है" I PPHin 30.2

अध्याय 2—सृष्टि

यह अध्याय उत्पत्ति 1 और 2 पर आधारित है।

भजन संहिता 38:6,9 में लिखा है, "यहोवा ने आदेश दिया और सृष्टि तुरन्त अस्तित्व में आई। परमेश्वर के श्वास ने धरती पर हर वस्तु रची । जब उस ने आज्ञा दी, तब वास्तव में वैसा ही हो गया। भजन संहिता 104:5 में लिखा है, "तूने पृथ्वी को उसकी नींव पर स्थिर किया है, ताकि वह कभी नहीं डगमगाए ।" PPHin 31.1

जब सृष्टिकर्ता के हाथों से पृथ्वी की रचना उभर कर आई वह अत्यन्त सुन्दर थी। उसकी सतह को पर्वतों, पहाड़ियों और वादियों ने विधिवता प्रदान की और उसके बीच यहां वहां वैभवपूर्ण नदियाँ और सुन्दर तालाब थे, लेकिन वे वर्तमान के खतरनाक खड़ी ढाल और डरावनी खाईयों से भरपूर विषम और उबड़-खाबड़ पर्वत और पहाड़ियों की तरह नहीं थे। धरती के पथरीले ढांचे के विषम छोर उपजाऊ मिट्टी के नीचे दबे हुए थे, जो चारों तरह हरियाली की प्रचुर उपज उत्पन्न करती थी। वहां वीभत्स दलदल और बंजर रेगिस्तान नहीं थे। प्रत्येक मोड़ पर सुन्दर झाड़ियों और कोमल पुष्प आखों का स्वागत करते थे। शिखर, वर्तमान युग के पेड़ो से अधिक ऊँचे-ऊँचे वृक्षों से विभूषित थे। हवा, अशुद्ध भाप से अदूषित, साफ और सेहतमन्द थी। सम्पूर्ण परिदृश्य की सुन्दरता सबसे महान महल के सुसज्जित मैदानों को मात देती थी। स्वर्गदूतों की टोली इसदृश्य को प्रसन्नचित होकर निहारती थी और परमेश्वर के निराले कृत्यों में आनंदित होतीथी ।जब जीव-जन्तु और पेड़-पौधों से परिपूर्ण धरती अस्तित्व में लाई गई, उसके बाद आदम को, जो सृष्टिकर्ता की श्रेष्ठतम रचना था, जिसके लिये सुन्दर पृथ्वी को रचा गया था, कार्यवाही के मंच पर उतारा गया। उसको उससब पर अधिराज्य दिया गया जिसे उसकी आँखें देख सकती थी, क्योंकि "परमेश्वर ने कहा, आओ हम मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाए, और उन्हें समस्त पृथ्वी का अधिराज्य सौंपे.......तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया......नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की।" यह मानव जाति का उदगम स्पष्ट रूप से बताया है और ईश्वरीय लेख को इतने स्पष्ट रूप से लिखा गया है कि त्रुटिपूर्ण निष्कर्षा का कोई अवसर नहीं। परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया। यहां कोई रहस्य नहीं, इस धारणा का कोई आधार नहीं कि मनुष्य का विकास, धीमी गति से, जीव-जन्तु और पेड़-पौधों के जगत में से हुआ। ऐसी शिक्षा सृष्टिकर्ता के श्रेष्ठ कार्य को मनुष्य की संकीर्ण, दुनियावी धारणा के स्तर पर उतार देती है। मनुष्य परमेश्वर को सृष्टि के प्रभुत्व से वर्जित रखने को इतना अभिलाषी है कि वह मनुष्य को निम्नीकृत करता है और उसके मूल के गौरव से वंचित करता है। उसने तारागण को ऊंचाईयों पर स्थापित किया और सूक्ष्म निपुणता से धरती के फूलों को रंगो से भरा, जिसने अपनी शक्ति के चमत्कार से धरती और आकाश को भर दिया। और जब वह सुन्दर धरती के स्वामी के रूप में एक को स्थापित करने और अपने महिमावान कार्य को मुकूट पहनाने

केचरण पर पहुँचा, तो वह उस प्राणी की सृष्टि करने में पीछे नहीं हटा, जो उसके हाथ के सम्मान योग्य था, जिसने उसे जीवन दिया था। हमारी जाति की वंशावली, प्रेरणा अनुसार, महान सृष्टिकर्ता से प्रारम्भ होती है ना कि विकासशील कीटाणुओ, धोंधो या चौपाया जानवरों की श्रृंखला से। हालांकि वह मिट्टी से बना था, पर आदम "परमेश्वर का पुत्र था।" PPHin 31.2

उसे निम्न श्रेणी के प्राणियों के ऊपर परमेश्वर के प्रतिनिधि के रूप मे रखा गया था। ये परमेश्वर के प्रभुत्व को ना ही समझ सकते थे और ना ही स्वीकार कर सकते थे, लेकिन फिर भी इन्हें मनुष्य की सेवा करने और उससे प्रेम करने योग्य बनाया गया था। भजन लिखने वाला भजन संहिता 8:6-8 में लिखता है "तूने उसे अपने हाथों के कार्यों पर प्रभुता दी है, "तूने उसके पांव तले सब कुछ कर दिया है......आकाश के पक्षी और समुद्र की मछलियां और जितने जीव-जन्तु समुद्रों में चलते-फिरते हैं। PPHin 32.1

मनुष्य को परमेश्वर की छवि धारण करनी थी, सादृश्य में भी और चरित्र में भी यीशु पिता के "तत्व की छाप" है, परन्तु मनुष्य को परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया था। उसके स्वभाव और परमेश्वर की इच्छा में सामंजस्य था। उसका मानस स्वर्गीय विषयों को समझने के योग्य था। उसका मनोवेग पवित्र था, उसकी प्रवृति और अभिलाषाएं विवेक के नियंत्रण में थे। वह परमेश्वर की छवि धारण करने में और उसकी इच्छा की पूर्ण आज्ञाकारिता में खुश था। PPHin 32.2

परमेश्वर द्वारा सृजन होने पर मनुष्य उत्कृष्ट डील-डौल और उत्तम समरूपता का स्वामी था। उसकी मुखाकति में सेहत का सुर्ख रंग था। और वह सजीवता और आनन्द के प्रकाश से कांतिमान थी। आदम का कद आज के मनुष्यों से बहुत अधिक ऊँचा था। हवा उससे डील-डौल में कुछ कम थी, लेकिन उसका रूप वैभवपूर्ण और सुन्दरता से भरपूर था। यह पापरहित दंपति कोई कृत्रिम वस्त्र नहीं पहने हुए थे, उन्हें स्वर्गदूतों समान प्रकाश और महिमा से आवृत किया गया था। जब तक वे परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते रहे, यह प्रकाश का आवरण उन्हे ढांके रखा । PPHin 32.3

आदम की सृष्टि के पश्चात सभी जीवित प्राणियों को नामकरण के लिये उसके समक्ष लाया गया । परमेश्वर ने देखा कि सबको एक साथी दिया गया था, लेकिन उनमें आदम का सहायक होने योग्य कोई नहीं था। परमेश्वर द्वारा धरती पर समस्त जीवधारियों में एक भी मनुष्य के तुल्य न था। और परमेश्वर ने कहा, "आदम का अकेला रहना उचित नहीं, मैं उसके लिए सहायक बनाऊंगा जो उससे मेल खाएं" मनुष्य को एकान्त में वास करने के लिये नहीं बनाया गया था [उसे एक सामाजिक प्राणी होना था। संगति के अभाव में अदन की वाटिका के मनोहर दृश्य और आनंदमय नियोजन संपूर्ण प्रसन्नता नहीं दे पाते। स्वर्गदूतों के साथ संगति भी उसकी मैत्री और दया की अभिलाषा को सन्तुष्ट नहीं कर पाती । कोई भी इस स्वभाव का नहीं था कि प्रेम कर सके था प्रेम पा सके । PPHin 33.1

परमेश्वर ने स्वयं आदम को साथी प्रदान किया। उसने आदम के लिये सहायक प्रदान किया जो उससे मेल खाता था, जो उसका साथी बनने योग्य था और जो प्रेम और दया में एक हो सकता था। हवा की सृष्टि आदम के शरीर से एक पसली निकालकर की गई। इसका यह तात्पर्य था कि ना ही वह आदम पर सिर की तरह नियन्त्रण रखे और ना ही आदम के पैरों तले रौंदी जाए, लेकिन पार्श्व में बराबरी के स्तर पर रहे और उसके प्रेम और संरक्षण में रहे। आदम का हिस्सा, उसकी हड्डी और मांस का मांस वह उसी का दूसरा भाग था और इससे इस तथ्य को दिखाया गया कि इस सम्बन्ध में घनिष्ठ सामजंस्य और स्नहेशील लगाव होना जरूरी है। इफिसियों 5:29 में लिखा है, “कोई अपनी देह से तो कभी धृणा नहीं करता, बल्कि वह उसे पालता पोसता है और उसका ध्यान रखता है” “इस लिए पुरूष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी के साथ रहेगा और वे दोनो एक तन होंगे। परमेश्वर ने प्रथम विवाह का उत्सव मनाया। इसलिये इस व्यवस्था का उत्पन्न कर्ता सृष्टि का सृष्टिकर्ता है। इब्रानियों 13:4 में लिखा है, “विवाह सम्मानीय है” ये मनुष्य को परमेश्वर द्वारा दिये गए पहले उपहारों में से एक है और यह उन दो व्यवस्थाओं में से एक है जो आदम,पतन के पश्चात्, अपने साथ अदन की वाटिका के द्वार के बाहर लाया था। जब इस सम्बन्ध में ईश्वरीय सिद्धांतो को मान्यता दी जाती है और उनका अनुसरण किया जाता है, तो विवाह एक वरदान साबित होता है। वह कुल की पवित्रता और खुशहाली की रक्षा करता है, मनुष्य के सामाजिक जरूरतों का पूरक होता है और उसके भौतिक, बौद्धिक और नैतिक आचरण को उन्नत करता है। PPHin 33.2

और यहोवा परमेश्वर ने पूर्व की ओर अदन में एक वाटिका लगाईं, और वहां आदम को जिसे उसने रचा था,रख दिया। सब कुछ जो परमेश्वर ने बनाया था, सुन्दरता की पराकाष्ठा थी और कोई ऐसी कमी नहीं थी जिसकी आपूर्ति इस पवित्र दंपति की प्रसन्नता में योगदान दे सकती थी फिर भी परमेश्वर ने इन्हें अपने प्रेम का एक और प्रतीक दिया, उसने उनके लिए एक और वाटिका तैयार की जिसे वह घर कह सके । इस वाटिका में हर तरह के पेड़ थे, और उन में से कई सुगन्धित स्वादिष्ट फलों से लदे थे। यहां मनोहर दाखलताएँ थी जो सीधी तो खड़ी थी, पर फिर भी देखने वे मनभावनी थी और उनकी शाखांए विभिन्न गहरे रंगो के आकर्षक फलों के भार से झुकी हुई थी ।आदम का काम था कि वह दाखलताओं से निकुज तैयार करे और इस तरह फलों और वनस्पति से लदे जीवित पेड़ों से अपना घर बनाए। वहां प्रचुर मात्रा में प्रत्येक रंग के सुगंधित फूल थे। वाटिका के बीच में जीवन का वृक्ष था जिसकी अप्रतिम सुन्दरता अन्य पेड़ों से ज्यादा थी। सुन्दर सृष्टि में कोई पाप का दाग था, और ना ही मृत्यु की छाया नहीं थी जो उसे क्षति पहुँचाए। “भोर के तारे एक संग आनंद से गाते थे और परमेश्वर के सब पुत्र जयजयकार करते थे।” अय्यूब 38:7 PPHin 34.1

महान यहोवा ने धरती की नीवों को रखा था, उसने पूरे जगत को सुन्दरता के आवरण से सजाया था, और मनुष्य के उपयोगी वस्तुओं से परिपूर्ण किया था। उसने जल और थल के सभी अजूबों का सृजन किया था। छह दिनों में सृष्टि का महान कार्य सम्पन्न हुआ था ।और उसने अपने किये हुए सारे काम से सातवें दिन विश्राम किया और परमेश्वर ने सातवें दिन को आशीष दी और

पवित्र ठहराया, क्योंकि उसमें उसने अपनी सृष्टि की रचना के सारे काम से विश्राम लिया। परमेश्वर को अपने हाथों की रचना को देखकर संतोष हुआ। सब कुछ उत्तम था,पवित्र रचयिता के सम्मान योग्य, और उसने अपनी प्रतिभा के प्रत्यक्षीकरण और अपनी बुद्धिमता और अच्छाई के परिणाम से प्रसन्न होकर विश्राम किया। PPHin 34.2

सातवें दिन विश्राम करने के पश्चात, परमेश्वर ने उसे पवित्र ठहराया और मनुष्य के लिए विश्राम दिन के तौर पर अलग किया। सृष्टिकर्ता के उदाहरण का अनुसरण करके मनुष्य को इस पवित्र दिन विश्राम करना था ताकि स्वर्ग और धरती को देखकर वह परमेश्वर की सृष्टि के महान कार्य का चिंतन कर सके, और परमेश्वर की बुद्धिमता और अच्छाई के साक्ष्य को देखकर उसका हृदय सृष्टिकर्ता के प्रति प्रेम, और भक्ति से भर सके । PPHin 34.3

अदन में, सातवें दिन को आशिषित करते हुए उसने सृष्टि के अपने कार्य का स्मारक बनाया। सबत को आदम के सुपुर्द किया गया और आदम सम्पूर्ण मानव परिवार का पिता और प्रतिनिधि था। पृथ्वी के वासियों द्वारा सबत का पालन उनकी आभारपूर्ण स्वीकृति का प्रदर्शन था कि परमेश्वर उनका सृष्टिकर्ता और यथोचित अधिपति था, और यह कि वे उसके हाथों की रचना और उसके राज्य की प्रजा थे। इस तरह यह पूरी व्यवस्था स्मणीय थी और समस्त मानव जाति के लिए दी गई थी। इसमें किसी के लिये कुछ भी धुंधला या वर्जित प्रयोग का नहीं था। PPHin 35.1

परमेश्वर ने देखा कि मनुष्य के लिये परलोक में भी सबत जरूरी था। उसके लिये सात दिनों में से एक दिन के लिये अपनी रूचि और अपने उद्यम को अलग रखना होगा, ताकि वह परमेश्वर के कामों पर पूरी तरह विचार कर सके और उसकी शक्ति और अच्छाई पर मनन कर सके। उसे परमेश्वर को स्पष्ट रूप ये याद दिलाने के लिये और उसमे आभार का भाव उत्पन्न करने के लिये सबत की जरूरत थी, क्योंकि वह सब जो उसके पास था और जिसका वह आनंद उठाता था सृष्टिकर्ता के उदार हाथों से आया था। PPHin 35.2

यह परमेश्वर की योजना है कि सबत मनुष्य का मन उसकी रचनाओं के अवलोकन की तरफ मोड़े। प्रकृति मनुष्य की इन्द्रियों से बात करती है और यह घोषणा करती है कि एक जीवित परमेश्वर सृष्टिकर्ता और उच्चतम अधिपति है। भजन संहित 19:1,2 में लिखा है,“आकाश ईश्वर की महिमा का वर्णन कर रहा है, और आकाशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट कर रहा है, दिन में दिन बातें करता है और रात का रात ज्ञान सिखाती है।” सुन्दरता जो धरती को आवृत करती है, परमेश्वर के प्रेम का प्रतीक है। हम इसे अमर पर्वतों में, ऊंचे-ऊंचे वृक्षों में, खिलती हुई कलियों में और कोमल फूलों में देख सकते हैं। ये सब हमें परमेश्वर के बारे में बताते है। हमेशा इनके बनाने वाले की तरफ संकेत करते हुए, सबत, मनुष्य को प्रकृति की महान पुस्तक खोलने की आज्ञा देता है और उसमें सृष्टिकर्ता के प्रेम, विवेक और सामर्थ्य को ढूंढने को कहता है। PPHin 35.3

हमारे प्रथम अभिभावक रचना के समय पवित्र और निर्दोष थे, लेकिन वह दुराचार की संभावना से सुरक्षित नहीं थे। परमेश्वर ने उन्हें स्वतन्त्र नैतिक कर्मक बनाया था, जो परमेश्वर की अपेक्षाओं की न्यायबद्धता, उसके चरित्र की उदारता और विवेक की सराहना करने में समर्थ हो। और उन्हें आज्ञा मानने या ना मानने की पूर्ण स्वतन्त्रता थी। परमेश्वर और पवित्र स्वर्गवूतों के साथ आनंद मनाना उनके भाग्य में था, लेकिन अनन्तकाल तक सुरक्षित होने से पूर्व, उनकी निष्ठा का परीक्षण हाना था। मनुष्य के अस्तित्व के आरम्भ से ही आत्म-भोगी होने की अभिलाषा पर रोक लगाई गई थी। शैतान के पतन का कारण भी यही घातक भावावेश था। ज्ञान का वृक्षजो वाटिका के बीच जीवन के वृक्ष के पास खड़ा था, आज्ञाकारिता, विश्वास और हमारे अभिभावकों के प्रेम का परीक्षण था। उन्हें इस पेड़ को छोड़कर अन्य सभी पेड़ों के फल खाने की छट थीं। शैतान के प्रलोभनों से भी उनका सामना कराना था, और यदि वे परीक्षा में खरे खतरे तो उन्हें शैतान की शक्ति से ऊपर कर दिया जाता और वे परमेश्वर की अनंत कृपादृष्टि का आनंद उठाते। व्यवस्था के अधीन होना, मनुष्य के अस्तित्व का अर्परहार्य प्रतिबन्ध था जो परमेश्वर ने लगाया था। वह ईश्वरीय सत्ता की प्रजा था और व्यवस्था के अभाव में कोई सत्ता नहीं होती। परमेश्वर मनुष्य को व्यवस्था का उल्लंघन करने की योग्यता से वंचित रख सकता था, वह आदम के हाथ को निषिद्ध फल को छूने से रोक सकता था, लेकिन ऐसा करने से मनुष्य एक स्वतन्त्र नैतिक कर्क ना होकर स्वचालित मशीन के समान होता। चयन की स्वतन्त्रता के अभाव में, उसकी आज्ञाकारिता स्वैछिक ना होकर कृत्रिम होती। इन परिस्थितियों में चरित्र का विकास असम्भव थ। यह तरीका अन्य ग्रहों के निवासियों के साथ व्यवहार करने की परमेश्वर की योजना के विपरीत होता। यह बुद्धिजीवी मानव के लिये अनुचित होता और शैतान द्वारा लगाए गए आरोप को प्रमाणित कर देता कि परमेश्वर का शासन एकपक्षीय है । PPHin 36.1

परमेश्वर ने मनुष्य को सिद्ध बनाया था। उसने मनुष्य को चरित्र की कुलीन विशेषताएं दी थी, जिनका बुराई की तरफ झुकाव नहीं था। उसने उसे बौद्धिक योग्यता से युक्त किया था, और उसके समक्ष प्रभावशाली सम्भव प्रोत्साहन रखे थे जिससे वह अपनी निष्ठा में खरा उतरे। परिपूर्ण और अनंत आज्ञाकारिता अनादि आनंद का प्रतिबंध थी। इसी शर्त पर वह जीवन के वृक्ष तक पहुँच सकता था। PPHin 36.2

जैसे-जैसे उनके बच्चे धरती पर आकर निवास करते, हमारे प्रथम अभिभावकों का घर दूसरे परिवारों के लिये आदर्श होना था। वह घर, परमेश्वर के हाथों से सुसज्जित किया हुआ, अति सुन्दर महल नहीं था। मनुष्य, अपने घमण्ड में, बहुमूल्य व भव्य विशाल भवनों से प्रसन्न होते है और स्वयं की हस्तकृतियों पर गर्व करते है। PPHin 37.1

लेकिन आदम को परमेश्वर ने वाटिका में रखा ।वही उसका घर था। नीला आकाश उसका गुबंद था और धरती, अपने कोमल फूलों और हरी घास के कालीन सहित, उसकी सतह थी, सुन्दर वृक्षों की पत्तेदार शाखाएं उसका मण्डप । उसकी दीवारें अत्याधिक सुन्दर सजावट से सजी हुई थी,

वह महान दक्ष कलाकार की हस्तकला से सुसज्जित थी। पवित्र दंपति के परिवेश में यह सबक सीखने को था कि वास्तविक प्रसन्नता, गर्व और भोग-विलास से नहीं, वरन् परमेश्वर के साथ, उसकी सृष्टि के माध्यम से, संपर्क बनाए रखने से होती है। अगर मानव कृत्रिम पर कम ध्यान दे, और अधिक सहजता को बढ़ाए तो वह अपनी सृष्टि में परमेश्वर की योजना को जान पाएगी। घमण्ड और महत्वकांक्षा कमी सन्तुष्ट नहीं होते, लेकिन जो वास्तव में बुद्धिमान है वे उन उपभोग के स्रोतों में पर्याप्त और मन को हल्का करने वाले सुख को प्राप्त करेंगे जो परमेश्वर ने सबकी पहुँच में रखे हैं। PPHin 37.2

अदन वासियों को वाटिका की देखभाल का कार्य सौंपा गया था। उनका व्यवसाय थकाने वाला नहीं बल्कि सुखद और शक्तिवर्धक था। परमेश्वर ने श्रम को मनुष्य के लिये आशीष के रूप में बनाया था, जिससे वह मन को बहला सके, शरीर को स्वस्थ कर सके और अपनी योग्यता का विकास कर सके। मानसिक और शारीरिक क्रिया-कलाप में आदम ने अपने पवित्र अस्तित्व के उच्चतम आनन्द को प्राप्त किया। और जब अवज्ञा के परिणाम स्वरूप, उसे अपने सुन्दरनिवास स्थान से निकाला गया, और बाध्य किया कि वह कठोर धरती पर प्रतिदिन के भोजन के लिये संघर्ष करें तो वही श्रम, जो वाटिका के सुखद व्यवसाय से बहुत भिन्न था, प्रलोभन के प्रति बचाव और प्रसन्नता का स्रोत बना। जो काम को श्राप समझते है, क्योंकि वह थकाने वाला और दुखदायी होता है, वे गलती करते है। धनवान श्रमिकों को तुच्छ समझते है, लेकिन यह मनुष्य की सृष्टि में परमेश्वर की योजना से पूर्णतया भिन्न है। तेजस्वी आदम की दी गई धरोहर की तुलना में सबसे धनवान व्यक्ति की सम्पत्ति कुछ भी नहीं है। फिर भी आदम को आलस्य से दूर रहना था। सृष्टिकर्ता ने आदम को कार्य करने को दिया, क्योंकि वह समझता है कि मनुष्य की प्रसन्नता किस में है। उद्यम करने वाले नर और नारियों को ही जीवन का वास्तविक आनन्द प्राप्त होता है। स्वर्गदूत भी परिश्रमी कर्मकर है, वे मनुष्य के बच्चों के लिये परमेश्वर के प्रतिनिधि है। सृष्टिकर्ता ने आलस्य की विकासहीन प्रथा के लिये कोई स्थान नहीं बनाया। PPHin 37.3

परमेश्वर के प्रति सच्चे होते हुए, आदम और हवा को धरती पर राज्य करना था। उन्हें हर जीवधारी पर असीमित नियंत्रण दिया गया था। सिंह और भेड़ शान्ति से उनके आस-पास खेलते थे या उनके चरणों में बैठ जाते थे। प्रसन्न पक्षी निडरता सेउनके पास उड़ते रहते और जब पक्षी अपनी चहचहाट से सृष्टिकर्ता का गुणगान करते, तो आदम और हवा भी उनके साथ पिता और पुत्र को धन्यवाद करते । PPHin 38.1

वह पवित्र दंपति केवल बच्चों समान नहीं थे जो परमेश्वर पिता की देखरेख में थे, बल्कि वे शिष्य भी थे, जो सर्वज्ञानी सृष्टिकर्ता से निर्देश प्राप्त कर रहे थे। स्वर्गदूत उनसे भेंट करने आने थे और उन्हें सृष्टिकर्ता से संपर्क करने की अनुमति प्राप्त थी। वे जीवन के वृक्ष में प्रदान की गई शक्ति से भरपूर थे और उनकी बौद्धिक योग्यता स्वर्गदूतों से कुछ ही कम थी। प्रत्यक्ष सृष्टि के रहस्य- "सर्वज्ञानी की

अद्‌भुत कृतियों’ अय्यूब 37:46 में मनुष्य को निर्देश और प्रसन्नता का कभी ना खत्म होने वाला स्रोत मिला। प्रकृति के नियम और कार्य विधियाँ, जिसने छः: हजार वर्षों से मनुष्य को अध्ययनरत रखा है, मनुष्य को अनन्त परमेश्वर द्वारा स्पष्टता से दिखाई गई। वे पेड़ पौधो और पत्तो से बात करते थे और हर एक से उसके जीवन के रहस्य की जानकारी लेते थे ।विशालकाय समुद्री जन्तु लिवियायन से लेकर सूर्य की किरण में उड़ते कण समान कीड़ो से आदम परिचित था। उसी ने हर एक को नाम दिया था और वह उनके स्वभाव और आदतों को जानता था। स्वर्ग में परमेश्वर का वैभव, यथाकम परिकमण करते असंख्य ग्रह, वादलों का संतुलन, प्रकाश और ध्वनि के रहस्य, दिन और रात के रहस्य-ये सब हमारे पूर्वजों के लिये अध्ययन के विषय थे। जंगल के हर पत्ते पर, पर्वतों के हर पत्थर पर, हर चमकते तारे में, धरती, हवा और आकाश में परमेश्वर का नाम लिखा था। PPHin 38.2

सृष्टि का कम और सामंजस्य अनंत बुद्धिमता और सामर्थ्य को दर्शाते थे। वह हर पल कोई आकर्षण का खोज निकालते थे जिससे उनके हृदय और भी गहरे प्रेम से भर जाते और वे आभार की अभिव्यक्ति करते । PPHin 38.3

जब तक वे ईश्वरीय व्यवस्था के प्रति निष्ठावान रहते,उनमें जानने की, आनंदित होने की और प्रेम करने की क्षमता बढ़ती रहती । वे ज्ञान के नए भण्डार निरन्तर पाते रहते, प्रसन्नता के नये सोते पता लगाते रहते और परमेश्वर के अपरिवर्तनीय और अथाह प्रेम की और स्पष्ट अवधारणा प्राप्त करते। PPHin 39.1

अध्याय 3—प्रलोभन और पतन

यह अध्याय उत्पत्ति 3 पर आधारित है।

अब शैतान स्वर्ग में विद्रोह फैलाने को स्वतंत्र नहीं था, इसलिये परमेश्वर के विरूद्ध उसकी शत्रुता ने मानव जाति के विनाश के षड़यंत्र में एक नया कार्यक्षेत्र पाया। अदन के पवित्र युगल की सुख और शान्ति में उसे उस परमानन्द की परिकल्पना होती थी जो उसने गँवा दिया था। ईर्ष्या से प्रभावित होकर उसने निश्चय कर लिया कि वह उन्हें आज्ञा के उल्लंघन के लिये उकसाकर उन्हें अपराध बोध और पाप की सजा का भोगी बनाएगा। वह उनके प्रेम को अविश्वास में और उनके महिमागान को सृजनहार के विरूद्ध उलाहना में बदल देगा। इस तरह न केवल वह निर्दोष प्राणियों को उसी दुर्गति में धकेलेगा जिसे वह स्वंय भुगत रहा था, वरन परमेश्वर को भी असम्मानित करेगा और स्वर्ग को शोकाकुल करेगा। PPHin 40.1

हमारे पूर्वजों को उस खतरे के प्रति आगाह किया गया था जो उन्हें डरा रहा था। स्वर्गीय सन्देशवाहकों ने उन्हें शैतान के पतन और उनके विनाश हेतु उसके षड़यंत्रो की जानकारी दी और ईश्वरीय सत्ता का स्वभाव विविधता से बताया जिसे बुराई का राजकुमार पराजित करने का प्रयत्न कर रहा था। परमेश्वर के न्यायसंगत आदेशों के प्रति अनाज्ञारिता के कारण ही शैतान और उसकी सेना का पतन हुआ था। कितना आवश्यक था, तब कि आदम और हवा उस व्यवस्था का मान रखें केवल जिसके द्वारा अनुशासन और निष्पक्षता का होना सम्भव था। PPHin 40.2

परमेश्वर की व्यवस्था उसी के समान पवित्र है। वह उसके इच्छाका प्रकटीकरण, उसके चरित्र की प्रतिलिपि और ईश्वरीय प्रेम और बुद्धिमता की आवश्यकता है ।सृष्टि का सामञ्अजस्य सब प्राणियों और सभी चेतन व अचेतन वस्तुओं की परमेश्वर की व्यवस्थासे सहमति पर निर्भर करता है। परमेश्वर ने ना केवल जीवित प्राणियों के शासन के लिये वरन प्रकृति के परिचालन केलिये भी व्यवस्था का प्रबन्ध किया है। सब कुछ निर्धारित नियमों के अधीन है जिनकी अवहेलना नहीं की जा सकती। हालाँकि प्रकृति में सब कुछ प्राकृतिक नियमों के अधीन है, पृथ्वीलोक में से केवल मनुष्य नैतिक व्यवस्था के अधीन है। सृष्टि की सर्वोच्च कृति, मानव को परमेश्वर ने अपनी अपेक्षाओं को, उसकी व्यवस्था के न्याय और उदारताको औरमनुष्य पर व्यवस्था के पवित्र अधिकारको समझने की योग्यता दी है। PPHin 40.3

स्वर्गदूतों के समान, अदनवासियों को परख अवधि में रखा गया था; उनकी खुशहाल अवस्था को तभी कायम रखा जा सकता था जब वे परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति निष्ठावान रहते। वे या तो आज्ञापालन करके जीवित रह सकते थे, या आज्ञा का उल्लंघन करके विनाश को प्राप्त हो सकते थे। परमेश्वर ने उन्हें बहुमूल्य आशीषों का प्राप्तकर्ता बनाया था, लेकिन यदि वे उसकी इच्छा की

उपेक्षा करते तो वह जिसने पाप करने वाले स्वर्गदूतों कोभी क्षमानहीं किया, उन्हें क्षमा नहीं कर सकता था। अवज्ञा उन्हें उसके उपहारों से वंचित कर देती और वे पीढ़ा और विनाश को प्राप्त होते । PPHin 41.1

स्वर्गदूतों ने उन्हें चेतावनी दी थी कि वे शैतान की युक्तियों से सावधान रहे, क्योंकि उन्हें लुभाने के उसके प्रयत्न बने रहेंगे। जब तक वे परमेश्वर के आज्ञाकारी थे, बुराई उन्हें क्षति नहीं पहुँच सकती थी, क्योंकि आवश्यकता पड़ने पर उनकी सहायता के लिये स्वर्ग के हर दूत को उनके लिये भेजा जाता। यदि वह शैतान की प्रथम-फुसलाहट का दृढ़तापूर्वक प्रतिरोध करते तो वे स्वर्ग के सन्देशवाहकों के समान सुरक्षित होते। लेकिन उनके एक बार प्रलोभन के सामने समर्पण करने से उनका स्वभाव इतना पथभ्रष्ट हो जाता कि शैतान का विरोध करने के लिये उनके पास सामर्थ्य और प्रवित न होती। PPHin 41.2

उनकी आज्ञाकारिता और परमेश्वर के प्रति प्रेम के परीक्षण हेतु ज्ञान के वृक्ष का प्रयोजन था। परमेश्वर वे उचित समझा कि वाटिका की प्रत्येक चीज के उपयोग से सम्बन्धित केवल एक ही प्रतिबन्ध लगाया जाए, लेकिन इस विषय में यदि वे उसकी इच्छा को अमान्य ठहराते तो वे उल्लंघन के दोषी हाते। शैतान को उनका लगातार प्रलोभनोंद्वारा पीछा नहीं करना था। उसकी उन तक पहुँच वर्जित वृक्ष तक सीमित थी। यदि वे इस वृक्ष की विशेषता की जांच-पड़ताल का प्रयत्न करते तो वे शैतान की चालों के शिकार हो जाते। उन्हें परमेश्वर द्वारा भेजी गई इस चेतावनी पर गंभीरता से ध्यान देने की सलाह दी गई थी और उसके द्वारा दिये गए निर्देश में सन्तुष्ट होने को कहा गया था। PPHin 41.3

अपने काम को गुप्त तरीके से पूरा करने के लिये शैतान ने अपने माध्यम के रूप में सांप का उपयोग किया।यह भेष धोखा देने की उसकी योजना के अनुकूल था। उस समय सांप धरती का सबसे सुन्दर और बुद्धिमान जन्तु था। वह पंखो से सुसज्जित था और हवा में उड़ते हुए वह अद्‌भुत तेजस्विता का प्रदर्शन करता था, क्योंकि उसमें तपाए हुए सोने की चमक और रंग थे। वर्जित वृक्ष केफलों से लदी शाखाओं पर बैठे हुए और स्वाद भरे फल का आनन्द लेते हुए, वह देखने वाले की आँखें के लिए आनंदमयी और आकर्षण का केन्द्र था। इस तरह, शान्ति की वाटिका में, विनाशक अपने शिकार के लिये सर्तक होकर छुपा बैठा था। PPHin 41.4

जब आदम और हवा वाटिका में अपने प्रतिदिन के काम में व्यस्त थे, स्वर्गदूतों ने हवा को अपने पति से अलग ना होने को सचेत किया था; पति के साथ होने पर, उसे प्रलोभन का शिकार बनने का कम खतरा था। लेकिन अपने सुखद कार्य में मग्न, वह अनजाने में आदम से अलग हो गईं। अपने-आप को अकेला पाकर उसे खतरे का आभास हुआ, लेकिन उसने यह सोचकर अपने डर मन से निकाला कि उसके पास बुराई को पहचानने और सामना करने की पर्याप्त शक्ति और सामर्थ्य है। स्वर्गदूत की चेतावनी से बेपरवाह उसने अपने आपको मिली-जुली जिज्ञासा और विस्मय

से वर्जित वृक्ष को टकटकी लगाए देखता पाया ।फल बेहद सुन्दर था और उसने स्वयं से प्रश्न किया कि परमेश्वर ने उसे उनसे रोक कर क्यों रखा था। यह बहकाने वाले के लिये अवसर था। मानों कि वह उसके मन की प्रक्रिया को भांप सकता था, उसने हवा से कहा, "हे स्त्री क्या परमेश्वर ने सचमुच तुमसे कहा कि तुम बाग के किसी पेड़ से फल न खाना?" हवा को आश्चर्य हुआ क्योंकि उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह अपने ही विचारों की गूँज सुन रही थी। लेकिन साँप मीठी आवाज में उसकी अत्यधिक सुन्दरता का गुणगान करता रहा। और उसके कथन अप्रिय नहीं थे। उस जगह से भागने के बजाय वह एक सापं को बोलता सुनने के लिये आश्चर्य करते हुए रूकी रही। यदि स्वर्गदूतों समान प्राणी ने संबोधित किया होता, तो उसमें डर उत्पन्न होता, लेकिन उसने कभी भी नहीं सोचा कि वह लुभावना साँप पतित शत्रु का माध्यम बन सकता था। PPHin 42.1

प्रलोभक के फूसलाने वाले प्रश्न का उसने उत्तर दिया "इन वाटिका के वृक्षों के फल हम खा सकते हैं, पर जो वृक्ष वाटिका के बीच में है, उसके फल के विषय में परमेश्वर ने कहा है कि न तो तुम उसको खाना और न उसको छूना, नहीं तो मर जाओगे। तब सर्प ने स्त्री से कहा, तुम निश्चय न मरोगे, वरन् परमेश्वर आप जानता है कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आँखें खुल जाएंगी और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे" । PPHin 42.2

शैतान ने कहा कि उस वृक्ष के फल को खाने से वे अस्तित्व के ऊंचे स्तर को प्राप्त करेंगे और ज्ञान के व्यापक क्षेत्र में प्रवेश करेंगे। उसने स्वयं वर्जित वृक्ष के फल का सेवन किया था, जिसके फलस्वरूप उसे वाकशक्ति प्राप्त हुई थी। और उसने चालाकी से सुझाया कि परमेश्वर ईर्ष्या के कारण उन्हें उस फल से वंचित रख रहा था, नहीं तो उनका स्तर भी परमेश्वर के तुल्य हो जाएगा। जीवन के वृक्ष के पास विवेक और शक्ति प्रदान करने की अद्‌भुत योग्यता थी, परमेश्वर ने उसके फल को चखने या छूने को मना किया था। प्रलोभक ने सूचित किया कि ईश्वरीय चेतावनी वास्तव में पूर्ण होने के लिये नहीं थी। उसे केवल उन्हें डराने के लिये योजनाबद्ध किया गया था। उनके लिए मृत्यु कैसे सम्भव थी? क्या उन्होंने जीवन के वृक्ष से नहीं खाया था? परमेश्वर उन्हें उच्च विकास के स्तर पर पहुँचने से, अधिक प्रसन्नता पाने से रोकने का प्रयत्न कर रहा था। PPHin 43.1

आदम के समय से वर्तमान तक शैतान का काम ऐसा ही रहा है और उसने इसमें सफलता पाई है। वह मनुष्य को परमेश्वर के प्रेम पर विश्वास न करने और उसके विवेक पर सन्देह करने को उकसाता है ।ईश्वरीय विवेक और सामर्थ्य की गुप्त बातों को समझने का श्रद्धाहीन कौतूहल, एक अशांत जिज्ञासा की भावना को उत्तेजित करने के लिये शैतान हमेशा प्रयत्नशील रहता है। जो परमेश्वर ने गुप्त रखा है, उसे ढूंढ निकालने का प्रयत्न करते-करते मनुष्य उस सत्य को ध्यान में नहीं ला पाता है जिसे परमेश्वर ने प्रकट किया है और जो उद्धार के लिये आवश्यक है। मनुष्य को यह विश्वास दिलाकर कि वे ज्ञान के एक अदभुत क्षेत्र में प्रवेश कर रहे है, शैतान उन्हें अवज्ञा के लिये उकसाता है। लेकिन यह सब छल है। उन्नति के अपने विचारों से हर्षित होकर, परमेश्वर की

अपेक्षाओं को कुचलते हुए, मनुष्य अपने कदम उस राह पर रख देता है, जो अपकर्ष और मृत्यु की ओर जाता है। PPHin 43.2

शैतान ने पवित्र दंपति को दर्शाया कि परमेश्वर की व्यवस्था को तोड़ने से वे लाभान्वित होंगे। क्या हम आज भी ऐसा ही तक नहीं सुनते? कई लोग परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने वालों की संकीर्णता की बात करते हैं और स्वयं दावा करते हैं कि वे खुले विचारों के है और अधिक स्वतन्त्रता का आनन्द उठाते हैं। यह अदन में जो आवाज आई थी उसी की प्रतिध्वनि है, "जिस दिन तुम इस फल को खालोगे" ईश्वरीय अपेक्षा की अवज्ञा करोगे, "तुम परमेश्वर तुल्य हो जाओगे"? शैतान ने दावा किया कि वर्जित वृक्ष का फल खाने से उसका कल्याण हुआ, लेकिन उसने यह प्रतीत नहीं होने दिया कि आज्ञा का उल्लघंन करने के कारण उसे स्वर्ग से बहिष्कृत कर दिया गया था, हालाँकि उसे ज्ञात हो गया था कि पाप का परिणाम अनंत नुकसान होता है, लेकिन उसने दूसरों को अपनी स्थिति में लाने के लिये अपनी पीड़ा को छुपा लिया। इसलिये अब भी अपराधी अपने वास्तविक चरित्र को छुपाने का प्रयत्न करता है, वह पवित्र होने का दावा कर सकता है, लेकिन उसका यह उत्कृष्ट ढोंग उसे कपटी के रूप में और भी खतरनाक बना देता है। परमेश्वर की व्यवस्था को कुचलता हुआ और दूसरों को भी उनके अनंत विनाश की ओर ले जाते हुए वह शैतान के पक्ष में है। PPHin 43.3

हवा ने शैतान की बातों पर विश्वास किया, लेकिन इस विश्वास ने उसे पाप की सजा से नहीं बचाया। उसने परमेश्वर के शब्दों पर विश्वास नहीं किया और यही उसके पतन का कारण बना। न्याय के समय मनुष्य को सजा इसलिये नहीं मिलेगी कि उसने जानबूझकर झूठ पर विश्वास किया, बल्कि इसलिये कि उसने सत्य पर विश्वास नहीं किया और सत्य क्या है, ये जानने के अवसर पर ध्यान नहीं दिया। शैतान के का ुर्तक के होने के बावजूद, परमेश्वर की अवज्ञा विनाशकारी होती है। सत्य क्या है-- यह जानने के लिये हमें अपने (हृदयों को तैयार करना चाहिये, वे सारे सबक जो परमेश्वर ने वचन में अंकित करवाये हैं। वह हमें आगाह करने और निर्देश देने के लिये हैं। ये हमें छलावे से बचने के लिये दिये गए है। इनकी उपेक्षा का परिणाम हमारा विनाश होगा। जो भी परमेश्वर के वचन का खण्डन करता है वह निश्चय ही शैतान से उत्पन्न होता है ।सर्प-रूपी शैतान ने वर्जित वृक्ष का फल तोड़ा और हिचकिचाती हवा के हाथों में थमा दिया। फिर उसने हवा को उसी के कथन स्मरण कराया कि परमेश्वर ने उन्हें इस फल को छूने से मना किया था, अन्यथा वे मर जाएंगे। जिस तरह फल को छूने से उसे कोई क्षति नहीं पहुँची, उसी तरह फल को खाने से भी कोई नुकसान नहीं होगा। यह देखकर कि उसके ऐसा करने का कोई बुरा परिणाम नहीं निकला, हवा और निर्भीक हो गई। "जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने में अच्छा और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि देने के लिये चाहने योग्य भी है, तब उसने उस में से तोड़कर खाया" वह स्वाद में अच्छा था, और खाने के साथ ही उसने एक सजीव करने वाली शक्ति का अनुभव किया और वह स्वयं को अस्तित्व के ऊंचे स्तर में प्रवेश होने की कल्पना करने लगी। निडर होकर उसने फल को तोड़ा और खाया। और

अब, स्वयं अपराध करने के बाद, वह अपने ही पति के पतन की प्रक्रिया में शैतान की कर्मक बन गई। अद्‌भुत व अप्राकृतिक उत्साह की अवस्था में, हाथों में वर्जित फल को पकड़े हुए, वह आदम की उपस्थिति में गई और सब जो हुआ था, उसका वर्णन किया। PPHin 44.1

आदम के चेहरे पर उदासी का भाव छा गया। वह अचम्मित और भयभीत प्रतीत हो रहा था। हवा की बातों के प्रत्युत्तर में उसने कहा कि यह वही शत्रु होगा जिसके प्रति उन्हें सावधान किया गया था और ईश्वरीय दण्डादेश के अनुसार उसकी मृत्यु निश्चित थी। उत्तर देते हुए हवा ने आदम से फल को खाने का आग्रह किया और सांप के कहे शब्दों को दोहराया कि वे यकीन नहीं मरेंगे। उसने तक रखा कि यह सच होगा क्योंकि उसे परमेश्वर के अप्रसन्न होने का कोई संकेत नहीं मिला था, बल्कि इसके विपरीत उसने एक रोमांचक और प्राणपोषक प्रभाव की अनुभूति की और उसे प्रतीत हुआ कि उसकी हर क्षमता नया जीवन पा गई थी, जो उसकी कल्पना अनुसार स्वर्ग के संदेशवाहकों से प्रेरित थी । PPHin 45.1

आदम समझ गया कि हवा ने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करने, उस एकमात्र प्रतिबन्ध का निरादार किया था जिसे उनके प्रेम और निष्ठा के परीक्षण के लिये रखा गया था। उसके मन में भंयकर संघर्ष हुआ। उसने शोक मनाया कि उसने हवा को अपने से अलग होकर घूमने की अनुमति दी। लेकिन अब कार्य सम्पन्न हो गया था, उसे उससे अलग होना था जिसकी संगति में उसकी प्रसन्नता निहित थी। वह ऐसा कैसे होने देता। आदम ने परमेश्वर और उसके पवित्र दूतों की संगति का आनंद उठाया था। उसने सृष्टिकर्ता की महिमा को देखा था। परमेश्वर के प्रति ईमानदार होने पर, मानव जाति के लिये जो नियति प्राप्त होने थी, उसे आदम समझता था। फिर भी आदम की दृष्टि में सबसे ज्यादा मूल्यवान उपहार को खोने के डर ने इन सब आशीषों को पीछे धकेल दिया । हवा के लिये आदम का प्रेम, परमेश्वर के प्रति प्रेम, आभार और निष्ठा से भारी पड़ा। वह उसी के शरीर का भाग थी और वह उनसे अलग होने का विचार नहीं सह सका। उसने यह नहीं समझा कि वह अनंत शक्ति जिसने धरती की धूल से उसकी सृष्टि, एक जीवित, सुन्दर आकार के रूप में की थी, और प्रेम से उसके लिये एक साथी को बनाया था, वह हवा की भरपाई कर सकता था। उसने हवा के दुर्भाग्य को बांटने का निश्चय किया, यदि उसे मरना था, तो वह भी उसके साथ मृत्यु को स्वीकार करेगा और फिर उसने यह भी सोचा कि बुद्धिमान सांप के बोले शब्द सत्य हो सकते थे। हवा उसके सामने थी, उतनी ही सुन्दर और निर्दोष जैसे कि अवज्ञा के इस कार्य से पहले थी। वह आदम के प्रति पहले से अधिक प्रेम की अभिव्यक्ति करने लगी। उसमें मृत्यु का कोई संकेत नहीं दिखा, इसलिये आदम ने परिस्थितियों का सामना करने का संकल्प किया। उसने फल को छीना और जल्दी से खा लिया। PPHin 45.2

आज्ञा के उल्लंघन पश्चात, आदम कल्पना करने लगा कि वह अस्तित्व की उच्चतम अवस्था में प्रवेश कर रहा है, लेकिन जल्द ही अपने पाप के विचार ने उसे भय से भर दिया। वह वायु जिसका

तापमान अब तक मन्द और एक समान था, अब उन्हें ठिठुरा रही थी। प्रेम और शान्ति की जगह उन्हें, पाप का बोध, भविष्य के लिये डर और आत्मा की नग्नता की अनुभूति हो रही थी। जिस प्रकाश के आवरण ने उन्हें ढांके रखा था, वह अदृश्य हो गया था, और उसकी जगह उन्होंने अपने लिये आवरण बनाया क्योंकि निर्वस्त्र होते हुए वे परमेश्वर और पवित्र स्वर्गदूतों से आँखें नहीं मिला सकते थे। PPHin 46.1

अब वह अपने पाप का वास्तविक चरित्र देखने लगे। आदम ने अपनी संगिनी को उससे दूर जाने की मूर्खता कर बैठने के लिये और सांप को अपने साथ खिलवाड़ करने देने के लिये उलाहना दी। लेकिन, वे दोनों अपने-आप को विश्वास दिलाते रहे कि जिसने उन्हें अपने प्रेम के इतने प्रमाण दिए थे इस एक अतिक्रमण को क्षमा कर देगा या वे ऐसे भयानक दण्ड के पात्र न होंगे जैसे कि वे डर रहे थे। PPHin 46.2

शैतान अपनी सफलता से फूले नहीं समा रहा था। उसने स्त्री को परमेश्वर के प्रेम पर सन्देह करने को, उसकी बुद्धिमता पर संशय करने को, उसकी आज्ञा का उल्लंघन करने को, भरमाया और उसके माध्यम से आदम को पराजित किया। लेकिन महान विधि-निर्माता आदम और हवा को उनके अतिक्रमण का परिणाम विदित कराने वाला था। वाटिका में ईश्वरीय उपस्थिति प्रकट होती थी। अपनी सरलता और पवित्रता में उन्होंने अपने सृष्टिकर्ता के आगमन का प्रसन्नतापूर्वक स्वागत किया था। लेकिन अब वे डर कर भागे और वाटिका के अगाध गुप्त स्थानों में छुपने का प्रयत्न करने लगे। लेकिन "तब यहोवा परमेश्वर ने पुकार कर आदम से पूछा, तू कहां हैं? उसने कहा, मैं तेरा शब्द बारी में सुनकर डर गया, क्योंकि में नग्न था, इसलिये छुप गया। उसने कहा, किस ने तुझे चिताया कि तू नग्न है? जिस वृक्ष का फल खाने को मैंने तुझे मना किया था, क्या तूने उसका फल खा लिया"? PPHin 46.3

आदम ना तो अपने पाप की अस्वीकृति कर सकता और न ही कोई बहाना बना सकता था; पछतावा प्रकट करने के बजाय, उसने अपनी पत्नी को आरोपित करने की चेष्टा की, और इस तरह परमेश्वर को दोषी ठहराया, "जिस स्त्री को तूने मेरे संग रहने को दिया है, उसी ने उस वृक्ष का फल मुझे दिया, और मैंने खाया" । वह, जिसने हवा के प्रेम में, जानबूझकर परमेश्वर की सहमति को, अदन की वाटिका में अपने घर को, सुखद अनंत जीवन को गवां देना पंसद किया, अब अपने पतन के पश्चात् अपनी संगिनी और अपने सृष्टिकर्ता को भी अतिक्रमण के लिये उत्तरदायी ठहरा सकता था। पाप का प्रभाव इतना भयानक है। PPHin 47.1

जब स्त्री से पूछा गया, "यह तूने क्या किया?" उसने उत्तर दिया, "सर्प ने तुझे बहका दिया, तब मैंने खाया। तूने सर्प की सृष्टि क्योंकि? तूने उसे अदन में प्रवेश क्यों होने दिया?" अपने पाप के बहाने का तात्पर्य इन्हीं प्रश्नों में था। इस तरह, उसने भी आदम की तरह अपने पतन का आरोप परमेश्वर पर लगाया। स्वयं तक-संगत होने की भावना का उदय झूठ से हुआ, यह गलती हमारे प्रथम

अभिभावा कों ने शैतान के प्रभाव के आगे समर्पण करते ही और तत्पश्चात आदम के सभी पुत्र और पुत्रियों ने प्रदर्शित की। अपने पापों का दीनता से अंगीकार करने के बजाय, वे दूसरों पर, परिस्थितियों पर या परमेश्वर पर आरोप लगाकर, अपने आप को बचाने की कोशिश करते है- उसकी आशीषों को भी उसके विरूद्ध बड़बड़ाहट का अवसर बना लेते हैं। PPHin 47.2

फिर परमेश्वर ने सर्प को दण्डाज्ञा दी, "तूने जो यह किया है इसलिये तू सब घरेलू पशुओं और सब बनेले पशुओं से अधिक शापित है, तू पेट के बल चला करेगा, और जीवन भर मिट्टी चाटता रहेगा" सर्प को ईश्वरीय न्याय के कोप का भागीदार होना पड़ा, क्योंकि उसे शैतान के माध्यम जैसे प्रयोग किया गया था। PPHin 47.3

धरती के सबसे सुन्दर और प्रशंसा योग्य जन्तु को सबसे घृणित रेंगने वाले जानवर में परिवर्तित होना था, और मनुष्य और जन्ुतु दोनो के डर और घृणा का पात्र होना था [सर्प को संबोधित किया गया अगला कथन शैतान से सम्बन्धित था जो उसकी पराजय और उसके विनाश की ओर संकेत करता है "और में तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूंगा, वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा। PPHin 47.4

हवा को उस दु:ख और पीढा से परिचित कराया गया जो उसके हिस्से में आना था। और परमेश्वर ने कहा, "तेरी लालसा तेरी पति की और होगी, और वह तुझ पर प्रभुता करेगा।" सृष्टि के समय परमेश्वर ने उसे आदम के तुल्य बनाया था। यदि वे परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी रहते तो- प्रेम की उत्तम व्यवस्था के साथ सामन्जस्य बनाए रखते- तो उनमें आपसी सामन्जस्य बना रहता; लेकिन पाप के द्वारा मतभेद उत्पन्न हुआ और जीवन और सामन्जस्य तभी सुरक्षित हो सकता था जब उनमें से एक आत्म समर्पण करता। हवा ने पहले पाप किया और वह प्रलोभन का शिकार हुई क्योंकि वह आदम से दूर चली गईं जो कि ईश्वरीय आदेश के प्रतिकूल था। उसके आग्रह पर आदम ने पाप किया और अब उसे अपने पति के अधीनस्थ रखा गया। यदि परमेश्वर की व्यवस्था से सम्बन्धित सिद्धांतों को पतित वंश ने अपनाया होता तो यह दण्ड, जो पाप के फलस्वरूप दिया गया था, उनके लिए आशीष का कारण होता, परन्तु पुरूष द्वारा आधिपत्य के दुरूपयोग के कारणवश कई महिलाओं का जीवन कटु और कष्टदायी हो गया। PPHin 48.1

अदन में अपने पति के पास हवा पूर्णतया प्रसन्न थी, लेकिन आधुनिक चंचल हवाओं की तरह परमेश्वर के नियुकत किये गए स्तर से उच्चतम स्तर में प्रवेश करने की आशा से वह विचलित हो गईं। अपनी प्रारम्भिक स्थिति से ऊपर उठने का प्रयास करने में, वह उससे बहुत नीचे गिर गई। यही परिणाम उनका भी होगा जो परमेश्वर की योजना के अनुसार अपने जीवन के दायित्व को प्रसन्नतपूर्वक स्वीकार करने में अनिच्छुक होते हैं। उन पदों पर, जिसके लिए परमेश्वर ने उन्हें नहीं बनाया है, पहुँचने के प्रयत्नों मे वह उस जगह को खाली छोड़ देता है, जहां वे आशीष का कारण हो सकते हैं। उच्चतम स्थिति की अभिलाषा में कई एक ने वास्तविक नारी सुलभ गरिमा और चरित्र की

उत्कृष्टता का त्याग किया है और उस काम को अधूरा छोड़ दिया है जिसके लिए परमेश्वर ने उन्हें नियुक्त किया था। PPHin 48.2

आदम को परमेश्वर ने कहा, "तूने जो अपनी पत्नी की बात सुनी, और जिस वृक्ष के फल के विषय मैंने तुझे आज्ञा दी थी कि तू उसे न खाना उसको तूने खाया है, इसलिये भूमि तेरे कारण शापित है, तू उसकी उपज जीवनभर दुख के साथ खाया करेगा, और वह तेरे लिये कांटे और ऊँटकटारे उगाएगी, और तू खेत की उपज खाएगा और अपने माथे के पसीने की रोटी खाया करेगा और अन्त में मिट्टी मे मिल जाएगा, क्योंकि तू उसी से निकाला गया है, तू मिट्टी तो है और मिट्टी ही में फिर जाएगा।" PPHin 48.3

यह परमेश्वर की इच्छा नहीं थी कि निष्पाप युगल बुराई के बारे में कुछ भी जाने। जो भी अच्छा था, वह उसने उन्हें उदारता से दिया था और बुराई को रोक कर रखा था। लेकिन, उसकी आज्ञा के विपरीत, उन्होंने वर्जित वृक्ष से फल खाया और अब यदि उम्रभर के लिये खाते रहते-तो उन्हें बुराई का ज्ञान हो जाता। उम्रभर के लिये। उसी समय से मानव जाति का शैतान के प्रलोभनों से पीड़ित होना लिखा था। सुखदायी श्रम के बदले अब उनके हिस्से में चिन्ता और कठिन परिश्रम था। उन्हें निराशा, दुःख, पीढ़ा और अन्ततः मृत्यु का पात्र होना था। PPHin 49.1

पाप के कोप के कारण समस्त प्रकृति को मनुष्य को परमेश्वर के विरूद्ध अतिक्रमण का स्वभाव और परिणाम का साक्ष्य होना था। परमेश्वर ने आदम को पृथ्वी और समस्त जीव- जन्तुओं पर राज करने के लिये बनाया था। जब तक आदम स्वर्ग के प्रति निष्ठावान था, समस्त प्रकृति उसके अधीन थी। लेकिन जब उसने ईश्वरीय व्यवस्था का विरोध किया, निम्न जीव-जन्तु उसके शासन के विरूद्ध हो गए ।इस प्रकार कृपालु प्रभु, मनुष्यों को उसकी व्यवस्था की पवित्रता को दिखलाकर, उन्हें उन्हीं के अनुभव से व्यवस्था की थोड़ी सी भी अवहेलना के खतरे से आगाह किया । PPHin 49.2

और मनुष्य का कठिन परिश्रम से भरा जीवन भी प्रेम से प्रेरित था। यह अनुशासन उसके पाप के संदर्भ में आवश्यक था, जिससे उसकी प्रवृति और मनोभाव की आसक्ति पर रोक लग सक और उसमें संयम उत्पन्न हो सकें। यह पाप के फलस्वरूप विनाश और पतन से मनुष्य को ऊपर उठाने की परमेश्वर की योजना का हिस्सा था। PPHin 49.3

हमारे प्रथम अभिभावकों को दी गईं चेतावनी- "जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा" इसका यह तात्पर्य नहीं था कि उनका उसी दिन मरना तय था जिस दिन उन्होंने वर्जित फल को खाया था; लेकिन उस दिन अखण्डनीय दण्डाज्ञा की घोषणा होनी थी। आज्ञाकारिता की शर्त पर उन्हें अमरता का आश्वासन दिया गया, पर आज्ञा का उल्लंघन करने पर वे हमेशा के जीवन को गंवा देते। उसी दिन उनका मरना तय हो जाता। PPHin 49.4

अन्तहीन अस्तित्व का स्वामी होने के लिये मानव को जीवन के वृक्ष का सेवन करते रहना है ।।इसके अभाव में उसकी जीवन शक्ति धीरे-धीरे घट जाती और फिर जीवन विलुप्त हो जाता। यह शैतान की योजना थी कि आदम और हवा आज्ञा का उल्लंघन कर परमेश्वर को कोधित करें। और फिर क्षमा ना पाने की स्थिति में, जीवन के वृक्ष का फल खाकर वे पाप और दु:ख के अस्तित्व को चिरायु बना देते-शैतान की यही आशा थी। लेकिन मनुष्य के पतन के बाद, जीवन के वृक्ष पर स्वर्गदूतों का पहरा लगा दिया गया। इन स्वर्गदूतों के चारों तरफ प्रकाश की किरणे जो जगमगाती तलवार सी प्रतीत होती थी, शोभायमान थी। आदम के परिवार के किसी भी सदस्य को अनुमति नहीं थी कि सीमा लांधकर वह जीवनदायी फल का सेवन करे; इसलिये एक भी अमर पापी नहीं है। PPHin 50.1

हमारे प्रथम अभिभावकों द्वारा आज्ञा के उल्लंघन से जो दु:खों का प्रवाह हुआ उसे कई लोग एक छोटे से पाप के लिये असाधारण रूप से बुरी परिस्थिति मानते है, और वे मनुष्य के प्रति परमेश्वर के व्यवहार में बुद्धिमता और न्याय को सन्देह से देखते है। यदि वे इस विषय को गम्भीरता सेले तो वे अपनी गलती को पहचान सकते है। परमेश्वर ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप में बनाया, पाप से मुक्त। धरती पर उन प्राणियों को निवास करना था, जो स्वर्गदूतों से कुछ ही कम थे, लेकिन उनकी आज्ञाकारिता का परीक्षण होना था, क्योंकि परमेश्वर इस बात की अनुमति नहीं देता कि पृथ्वी पर ऐसे लोग बसे जो उसकी व्यवस्था को मान्यता न दें। लेकिन कृपा से भरपूर परमेश्वर ने आदम की कठोर परीक्षा नहीं ली। निषेध के इसी अल्पभार ने पाप को बहुत बढ़ा बना दिया। यदि आदम छोटी सी परीक्षा नहीं सहन कर सका तो यदि उसे उच्चतम उत्तरदायित्व दिया जाता तो वह इससे कठोर योग्यता की परीक्षा नहीं दे पाता। PPHin 50.2

यदि आदम की परीक्षा कठोर होती, तो वे, जिनके हृदय बुराई की तरफ झुके है, कहते "यह साधारण विषय है, परमेश्वर ऐसी तुच्छ बातों पर ध्यान नहीं देता।" और फिर तुच्छ समझे जाने वाले विषयों में अवज्ञा की निरंतरता बनी रहती । लेकिन परमेश्वर ने यह स्पष्ट किया है कि पाप किसी भी रूप में घृणास्पद है। PPHin 50.3

हवा को लगा कि वर्जितवृक्ष का फल खाकर परमेश्वर की आज्ञाका उल्लंघन करना और अपने पति को भी आज्ञा उल्लंघन के लिये उकसाना भी छोटी सी बातहै। लेकिन उनके पाप ने संसार पर दु:ख के जलद्वार खोल दिए । प्रलोभन के पल में कौन जान सकता है कि एक गलत कार्य का परिणाम कितना भंयकर हो सकता है?जो यह सिखाते है कि परमेश्वर की व्यवस्था उनको बाध्य नहीं करती, आग्रह करते है कि उसके सिद्धान्तों का पालन करना असम्भव है। लेकिन यदि यह सत्य होता, तो आदमको अवज्ञा की दण्डाज्ञा क्यों भुगतनी पड़ी? हमारे प्रथम अभिभावाकों के पाप ने संसार को अपराध बोध और संताप से ग्रसित कर दिया, और परमेश्वर की अच्छाई और कृपा के अभाव में, पूरी मानव जाति आशाहीन हो जाती। कोई स्वयं को धोखे में न रखे। "पाप का फल मृत्यु

है 'रोमियों 6:23। आज भी व्यवस्था का उल्लंघन उतना ही दण्डनीय है जितना कि मानवजाति के पिता के लिए था। PPHin 51.1

पाप के पश्चात आदम और हवा को अदन की वाटिका छोड़नी पड़ी। उन्होंने विनती की कि उन्हें अपने निष्कपटता और प्रसन्नता के घर में रहने दिया जाए। उन्होंने स्वीकार किया कि उन्होंने उस सुखद निवासमें रहने का अधिकार गंवा दिया था, लेकिन उन्होंने भविष्य में पूर्णतया परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी होने का प्रण लिया। लेकिन उनसे कहा गया कि उनका स्वभाव पाप से प्रभावित होकर दुष्ट हो गया था, बुराई से बचने की उनकीयोग्यता कम हो गई थी और उन्होंने शैतान के लिए उन तक सहजता से पहुँचने के लिए द्वारा खोल दिए थे। अपनी सरलता में उन्होंने प्रलोभनों के आगे समर्पण कर दिया था और अबचेतन अपराध बोध की अवस्था में, अपनी सत्यनिष्ठा को बनाए रखने के लिए उनके पास पर्याप्त सामर्थ्य नहीं था। PPHin 51.2

दीनता और अकथनीय उदासी से उन्होंने अपने सुन्दर निवास से विदा ली और उस धरती पर बसने को चले जहां पाप का कोप था। जो वातावरण सुहावना और अपरिवर्तनीय था, अब परिवर्तनशील हो गया। परमेश्वर ने उन्हें चमड़े के वस्त्र दिए ताकि वे ताप और शीत की तीव्रता से बच सकें । PPHin 51.3

जब उन्होंने मुझझाते हुए पुष्पों में और गिरते हुए पत्तो में विघटन के प्रथम संकेत देखे, तो वे शोक में डूब गए।। कोमल और क्षीण पुष्पों का अन्त तो दुःख का कारण था ही, पर स्वस्थ वृक्षों से पत्तो के झड़ने से यह तथ्य सामने आया कि हर जीवित प्राणी मृत्यु का पात्र है। PPHin 51.4

अदन की वाटिका, आदम के निर्वासित होने के बाद भी कई वर्षो तक पृथ्वी पर थी। पतित वंश को लम्बे समय तक अनुमति दी गईं कि वे अपनी निष्कपटता के घर को निहार सकें। उनका प्रवेश केवल स्वर्गदूतों से बाधित था। देवदूतों द्वारा संरक्षित अदन-वाटिका के द्वार पर ईश्वरीय महिमा का प्रदर्शन हुआ। यहां आदम और उसके पुत्र परमेश्वर की आराधना करने आते थे।यहाँ उन्होंने उस व्यवस्था के आज्ञाकारी होने के अपने प्रण को दोहराया, जिसकी अवज्ञा के कारण उन्हें अदन की वाटिका से निष्कासित किया गया था। जब पाप का समुद्र प्रथ्वी पर फैला, और मनुष्य की दुष्टता ने उनका विनाश जल-प्रलय द्वारा निश्चित किया, तब उसी हाथ ने, जिसने अदन का रोपण किया था, उसे धरती से उठा लिया। लेकिन अन्तिम पुनर्निमाण के समय, "जब एक नया आकाश और नयी पथ्वी" होगी (प्रकाशतवाक्य 21:1), उसे पहले से भी ज्यादा सुन्दरता से संवारकर पुनः स्थापित किया जाएगा। PPHin 52.1

फिर वे जिन्होंने परमेश्वर की आज्ञाओं को माना है,वे जीवन के वृक्ष के नीचे अमर प्रबलता की श्वास लेंगे, और युगानुयुग निष्पाप ग्रहों के निवासी परमेश्वर की सृष्टि के संपूर्ण कार्य का प्रतिरूप उस लुभावने उद्यान मे देखेंगे जो पाप से अनछआ है-प्रतिरूप उसका जो समस्त पृथ्वी का होता यदि मनुष्य ने सृष्टिकर्ता की उत्तम योजना को मान्यता दी होती ।

अध्याय 4—उद्धार की योजना

मनुष्य के पतन ने सम्पूर्ण स्वर्ग को व्यथित कर दिया। परमेश्वर का रचित संसार पाप के प्रकोप से अभिशापित हो गया और उस पर वे प्राणी बस गए जिनका दुर्दशा और मृत्यु से सर्वनाश निश्चित था। व्यवस्था का उल्लंघन करने वालों के लिये कोई भी बचने का रास्ता नहीं था। स्वर्गदूतों का गुणगान थम गया। समस्त स्वर्ग पाप द्वारा लाए गए विनाश के कारण शोकग्रस्त था। PPHin 53.1

परमेश्वर का पुत्र स्वर्ग का तेजस्वी सेनापति, पतित मानव जाति के लिये दया से संवदेनशील हो गया। भटके हुए संसार की दुर्दशा देखकर उसका हृदय असीमित दयाभाव से विचलित हो गया। लेकिन पवित्र प्रेम ने मनुष्य के उद्धारहेतु एक योजना तैयार की। परमेश्वर की खंडित व्यवस्था पापी का जीवन मांगती थी। समस्त सृष्टि मे एक ही ऐसा था जो इस दावे की सन्तुष्टि कर सकता था। ईश्वरीय व्यवस्था परमेश्वर तुल्य पवित्र है, इसलिये उसके उल्लंघन का प्रायश्चित भी वहीं कर सकता था जो परमेश्वर के बराबर है। यीशु के अलावा कोई भी पतित मनुष्य को व्यवस्था के प्रकोप से उद्धार दिलाने में और स्वर्ग के साथ उसका सामनन्ॢजस्य कराने में सक्षम नहीं था। पाप का दोष और कलंक यीशु स्वयं धारण करने वाला था, वह पाप जो परमेश्वर के लिये इतना अपमानजनक था कि वह पिता और पुत्र को अलग कर देता। संताप में डूबकर भी वह विनाश प्राप्त मनुष्य जाति को बचाने वाला था। PPHin 53.2

पिता के सम्मुख यीशु ने मनुष्य के निमित्त अनुनय किया और इस समय स्वर्ग की सेना अत्यन्त गहरी व अकथनीय रूचि के साथ परिणाम की प्रतीक्षा करती रही। वह रहस्यमयी घनिष्ठ बातचीत देर तक चलती रही- मनुष्य के पतित पुत्रों के लिए “मेल की सम्मति” (जकर्याह 6:143)। उद्धार की योजना पृथ्वी की सृष्टि से पहले तैयार की जा चुकी थी। प्रकाशितवाक्य 1:8 के अनुसार, “वह जो जगत की उत्पत्ति के समय से घात हुआ है, यीशु ही है, फिर भी दोषी मानव जाति हेतु अपने पुत्र की बलि चढ़ाना जगत के राजा के लिए संघर्षपूर्ण था। यहुन्ना 3:16 में लिखा है, “क्योकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना इकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए। ओह, उद्धार का रहस्य! परमेश्वर का प्रेम उस जगत के लिए जो उससे प्रीति नहीं रखता था! जो “समझ से बिल्कुल परे है, “उस प्रेम की गहनता को कौन समझ सकता है? युगों तक भावस्मरणीय बुद्धिजीवी उस अबोधगम्य प्रेम के रहस्य को समझने की चेष्ठा करते हुए, विस्मय और आराधना भाव से भरे रहेंगे। PPHin 53.3

“और परमेश्वर ने मसीह मे होकर अपने संसार का मेल-मिलाप कर लिया”-2 कुरिन्थियों 5:19। मनुष्य पाप के कारण इतना पदावनत हो गया था कि उसका, स्वयं की सामर्थ्य से, परमेश्वर, जिसका स्वभाव पवित्र और भला है, से सामन्जस्य असम्भव था। मनुष्य को व्यवस्था की दण्डाज्ञा से छुटकारा दिलाने के पश्चात, मसीह मानव के प्रयत्न के साथ ईश्वरीय शक्ति को जोड़ सकता था। इस तरह

परमेश्वर के प्रति पश्चाताप और मसीह में विश्वास द्वारा आदम के पतित पुत्र एक बार फिर "परमेश्वर के पुत्र" बन सकते थे (1 यहुन्ना 3:2)। इस योजना में सम्पूर्ण स्वर्ग का असीम त्याग सम्मिलित था और केवल यही मनुष्य के उद्धार को सुरक्षित करने में सक्षम था। जब मसीह ने स्वर्गदूतों के समक्ष उद्धार की योजना को रखा, वे प्रसन्न न हो सके, क्योंकि मनुष्य के उद्धार का मूल्य था, उनके सेनापति की अकथनीय पीढ़ा। आश्चर्यवकित और दुःखी होकर उन्होंने उसकी बातों को सुना कि किस तरह वो स्वर्ग की पवित्रता और शान्ति से उसके आनंद, महिमा और अमरता से नीचे उतर कर, पृथ्वी से जुड़े कलंक, व्यवस्था और मृत्यु को सहन करने हेतु उसकी अधोगति के संपर्क में आने को था। उसे पापी और पाप की दण्डाज्ञा के बीच खड़ा होना था और फिर भी बहुत कम उसे परमेश्वर का पुत्र कहलाने की स्वीकृति देने को थे। स्वर्ग-सम्राट के ऊँचे पद को त्याग कर उसे स्वयं को दीन मनुष्य के रूप में अवतरित कर, अपने अनुभव से उन दुखों और प्रलोभनों से परिचित होना था, जिन्हें मनुष्य को सहना था। यह इसलिये आवश्यक था ताकि वह प्रलोभनमें पड़े मनुष्यों की सहायता कर सके,(इब्रानियों 2:18)। शिक्षक के रूप में लक्ष्य पाने के पश्चात, उसे दुष्ट मनुष्यों के हाथों में सौपं दिया जाना था और उसे हर उस अपमान और प्रताड़ना का पात्र बनाया जाना था, जिसकी प्रेरणा शैतान उन्हें देता। अपराध बोध में दबे पापी समान स्वर्ग और धरती के बीच लटके हुए उसेपापी के समान अत्यधिक निर्मम मृत्यु को प्राप्त होना था, जिसके सदृश्य होना स्वर्गदूतों के लिये असंभव था, और जिस दृश्य से उन्होंने अपने चेहरे ढाँक लिये, ऐसी भयावह यातना के कई पहर मसीह को व्यतीत करने थे। आज्ञा उललघंन का अपराध बोध-समस्त संसार के पापों का भार उसके ऊपर आने पर, उसे आत्मा की तीव्र व्यथा को, पिता के मुह फेर लेने को सहन करना था। PPHin 54.1

स्वयं को मनुष्य हेतु बलिदान के रूप में अर्पण करते हुए, स्वर्गदूत अपने सेनाध्यक्ष के चरणों में झुक गए। लेकिन एक स्वर्गदूत का जीवन ऋण का भुगतान नहीं कर सकता था, मनुष्य के उद्धार की क्षमता केवल उसके सृजनहार में थी। फिर भी उद्धार की योजना में स्वर्गदूतों को एक भूमिका का निर्वाह करना था। इब्रानियों 2:9 में लिखा है, "यीशु को स्वर्गदूतों से कुछ ही कम किया गया था, मृत्यु का दुख उठाने के लिये"। क्योंकि मसीह को मानव रूप धारण करना था, उसकी सामर्थ्य स्वर्गदूतों से कम होनी थी, और उन्हें उसकी सेवा में रहना था, और उसकी पीड़ा के समय उसे शक्ति और शान्ति का आभास कराना था। इब्रानियों 1:14 के अनुसार, "क्या वे सब सेवा टहल करने वाली आत्माएं नहीं, जो उद्धार पाने वालों के लिये सेवा करने को भेजी जाती है"? दुष्ट स्वर्गदूतों की शक्ति औरशैतान द्वारा चारों ओर फैलाए अन्धकार से अनुग्रह की प्रजा की सुरक्षा करना उनका कार्य था। PPHin 55.1

अपने स्वामी की व्यथा की पराकाष्ठा और अपमान के साक्ष्य स्वर्गदूत संताप और लोभ से भरकर उसे उसके हत्यारे से मुक्त कराना चाहेंगे, लेकिन उन्ही जो कुछ भी वे देखने वाले थे, उसे घटित होनेसे रोकने हेतु हस्तक्षेप नहीं करना था। यह उद्धार की योजना का एक भाग थाकि मसीह

दुष्ट मनुष्यों के तिरस्कारऔर अपशब्दों को सहन करे और उसने मनुष्य का उद्धारकर्ता बनने के समय इसकी सहमति दी थी। PPHin 55.2

मसीह ने स्वर्गदूतोंको आश्वस्त किया कि अपनी मृत्यु के माध्यम से कई मनुष्यों को बचा पाएगा और जिसके पास मृत्यु की शक्ति है, उसका विनाश करेगा। मनुष्य ने जिस राज्य को अवज्ञा के कारण गँवा दिया था, उसे वह पुनः प्राप्त करेगा। बचाए हुए लोग उस राज्य को उसके साथ विरासत के रूप में पाएंगे और सदा के लिये उसमें वास करेंगे। पाप और पापियों को जड़ से उखाड़ दिया जाएगा, ताकिवे स्वर्ग या पृथ्वी की शान्ति भंग न कर सके। उसने स्वर्गीय समूह से अपने पिता द्वारा स्वीकृत योजना से सहमत होनेको कहा और इस कारण प्रसन्न होने को कहा कि उसकी मृत्यु के माध्यम से पतित मनुष्य का परमेश्वर के साथ मेल-जोल पुनः स्थापित हो जाएगा ।फिर स्वर्ग अकथनीय हर्ष से भर गया। उद्धार पाए हुए संसार की महिमा और सुखद अनुभूति, जीवन के राजकुमार की मनोव्यथा और त्याग से बढ़कर सामने आयी। स्वर्ग के आंगनो से उस गीत के प्रारम्भिक राग गूंजने लगे जिन्हें बेतलेहम की पहाड़ियों के ऊपर गाया जाना था- "आकाश में परमेश्वर की महिमा और पृथ्वी पर उन मनुष्यों में जिनसे वह प्रसन्न है, शान्ति हो"-लूका 2:14। नई सृष्टि के उल्लास से अधिक प्रसन्नता के साथ, "भोर के तारों ने मिलकर गाया और परमेश्वर के सभी पुत्रों ने जय-जयकार किया"-अय्यूब 38:7 । PPHin 55.3

उद्धार का पहला संकेत मनुष्य को तब दिया गया जब वाटिका में शैतान को दण्डाज्ञा की घोषणा की गई। परमेश्वर ने घोषणा की, "मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूँगा, वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एडी को डसेगा"-उत्पत्ति 3:45 [प्रथम अभिभावकों की सुनवाई में यह कहा गया कथन उनके लिए एक प्रतिज्ञा थी, इस कथन द्वारा यह भी स्पष्ट था कि मनुष्य और शैतान के बीच युद्ध में महान शत्रु की पराजय निश्चित थी। आदम और हवा धर्मी न्यायकर्ता के सामने अपराधी के रूप में खड़े थे और आज्ञा उल्लंघन की दण्डाज्ञा की प्रतीक्षा कर रहे थे, लेकिन अपने हिस्से में आने वाले दु:खों और परिश्रम से भरे जीवन के बारे में या उनके मिट्टी में लौट जाने की व्यवस्था के बारे में सुनने से पूर्व, उन्होंने वे शब्द सुने जिनसे उनमें आशा उत्पन्न की हुई हालांकि उन्हें अपने महान शत्रु के आधिपत्य को भुगतना था, लेकिन वे निर्णायक विजय की आशा कर सकते थे। PPHin 56.1

जब शैतान ने सुना कि स्त्री और उसके बीच, और उसके वंश और स्त्री के वंश के बीच शत्रुता होगी, तो वह समझ गया कि मानव स्वभाव को भ्रष्ट करने का कार्य अवरूद्ध होगा, और किसी साधन से मनुष्य को इस योग्य बनाया जाएगा कि वह उसकी शक्ति का प्रतिरोध कर सके । लेकिन फिर भी जब उद्धार की योजना स्पष्ट रूप से सामने आई, तो शैतान अपने दूतों के साथ प्रसन्न हुआ कि मनुष्य के पतन पश्चात, वह परमेश्वर के पुत्र को उसके ऊँचे पद से नीचे उतार पाएगा। उसने धरती पर अपने अब तक की योजनाओं की सफलता की घोषणा की। उसने यह भी दावा किया कि मसीह

के मानव रूप धारण करने पर उसको भी पराजित किया जा सकता था और फिर पतित मानव जाति का उद्धार रोका जा सकता था। PPHin 56.2

स्वर्गदूतों ने हमारे प्रथण अभिभावकों को उनके उद्धार हेतु तैयार की गई योजना के बारे में और स्पष्टता से बताया। आदम और उसकी संगिनी को आश्वासन दिया गया कि उनके गम्भीर पाप के बावजूद, उन्हें शैतान के नियंत्रण में नहीं छोड़ा जाएगा। परमेश्वर का पुत्र, अपने जीवन के त्याग से मनुष्य को उसके पापों की दबण्डाज्ञा से मुक्ति दिलाने को तैयार था। उनके लिये परख-अवधि का प्रावधान रखा गया, जिसके दौरान पश्चाताप और मसीह मे विश्वास द्वारा वे फिर से परमेश्वर की संतान बन सकेंगे । PPHin 56.3

उनके आज्ञा-उल्लंघन ने जिस त्याग की मांग की, उससे आदम और हवा को परमेश्वर की व्यवस्था की पवित्रता ज्ञात हुई। और उन्होंने पाप का अपराध और उसके गंभीर परिणामों को उस दृष्टिकोण से देखा, जैसा पहले कभी नहीं देखा था। वेदना और ग्लानि से भरपूर, उन्होंने विनती की कि दण्डाज्ञा उसे न दी जाए जिसका प्रेम उनकी प्रसन्नताका स्रोत था, बल्कि उन्हें और उनके आने वाले वंशों को दी जाए। PPHin 57.1

उन्हे कहा गया कि यहोवा की व्यवस्था, धरती और स्वर्ग में, उसकी सत्ता की नींव है और उस व्यवस्था के उल्लंघन के लिये एक स्वर्गदूत का जीवन भी त्याग के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता। मनुष्य को उसकी पतित अवस्था मे मिलने के लिये व्यवस्था के किसी भी सिद्धान्त को परिवर्तित या निरस्त नहीं किया जा सकता, लेकिन परमेश्वर का पुत्र, जिसने मनुष्य को बनाया, उसके लिये क्षतिपूर्ति कर सकता था। जैसे आदम के आज्ञा उल्लंघन के कारण मृत्यु और दुर्दशा का प्रवेश हुआ, वैसे ही मसीह का त्याग जीवन और अमरता प्रदान करेगा । PPHin 57.2

केवल मनुष्य ही नहीं लेकिन पाप के परिणामस्वरूप धरती भी दुष्टके अधीनस्थ हो गई थी और उद्धार की योजना के माध्यम से उसको पूर्वावस्था मे लाना था। सृष्टि के समय आदम को पृथ्वी पर आधिपत्य सौंपा गया था, लेकिन प्रलोभन के प्रति समर्पण के कारण वह शैतान के अधीनस्थ हो गया, "जो व्यक्ति जिससे हार गया है, वह उसकादास बन जाता है"-2 पतरस 2:49 । जब मनुष्य शैतान का दास बनगया, तो उसका आधिपत्य उसके विजेता के पास चला गया। इस तरह शैतान, "इस ससार का ईश्वर"(2 कुरिन्थियों 4:4) बन गया। मूलतः आदम को दिया हुआ पृथ्वी का आधिपत्य शैतान ने हड़प लिया। लेकिन मसीह, दण्डाज्ञा का मूल्य चुका कर न केवल मनुष्य को स्वतन्त्र कराने वाला था, बल्कि आदम द्वारा गँवाए आधिपत्य को पुन: प्राप्त करने वाला था। मीका 4:8 में कहा गया, "हे ऐदर के गुम्मट, हे सिय्योन की पहाड़ी, पहली प्रभुता अर्थात यरूशलेम का राज्य तुझे मिलेगा"। प्रेरित पौलुस भी "मोल लिए हुओं के छुटकारे की और संकेत करता है"-इफिसियों 1:14। परमेश्वर ने धरती को पवित्र और प्रसन्न प्राणियों के निवास स्थान के लिये सजा था। यशायाह 45:18 में लिखा है कि परमेश्वर ने 'पृथ्वी को रचा और बनाया, उसी ने उसको स्थिर किया, उसने उसे सुनसान रहने

के लिये नहीं परन्तु बसने के लिये रचा है।" वह प्रयोजन तभी सम्पन्न होगा जब परमेश्वर की सामर्थ्य से नवीकत, और पाप और दुःख से मुक्त, वह बचाए हुए लोगों का सनातन आवास बन जाएगी। PPHin 57.3

"धर्मी लोग पथ्वीके अधिकारी होंगे, और उसमे सदा बसे रहेंगे।"" और फिर श्राप न होगा और परमेश्वर और मेंमने का सिंहासन उस नगर में होगा, और उसके दास उसकी सेवा करेंगे"। भजन संहिता 37:29, प्रकाशित वाक्य 22:3 । PPHin 58.1

निष्कपट आदम, अपने सृष्टिकर्ता के साथ प्रत्यक्ष सम्पकं का आनन्द लेता था, लेकिन पाप के कारण परमेश्वर और मनुष्य में दूरी आ गईं और अब केवल मसीह द्वारा की गई क्षतिपूर्ति ही, इस अगाघ गर्त को पाटकर, आशीष के संचार और पृथ्वी के, स्वर्ग द्वारा, उद्धार को संभव करा सकती थी। अपने सृष्टिकर्ता तक प्रत्यक्ष पहुँच से मनुष्य अभी भी वंचित था, लेकिन परमेश्वर ने उसके साथ मसीह और स्वर्गदूतों के माध्यम से संपर्क बनाए रखना था। PPHin 58.2

इस तरह अदन की वाटिका में दण्डाज्ञा की घोषणा से लेकर जल प्रलय तक और उसके आगे परमेश्वर के पुत्र के पहले आगमन तक मानवजाति के इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाँए आदम को प्रकाशित की गई। उसे यह भी बताया गया कि मसीह का त्याग समस्त संसार को बचाने के लिये पर्याप्त मोल था, लेकिन कई लोग प्रायश्चित और आज्ञापालन के जीवन के बजाय पाप के जीवन का चयन करेंगे। आने वाली पीढ़ियों द्वारा अपराध बढ़ेगा और मानव जाति और जीव-जन्तुओं पर पाप का श्राप और भारी होता चला जाएगा। स्वयं के चुने पाप के मार्ग के कारण मनुष्य की आयु छोटी हो जाएगी। उसके नैतिक और विवेक सम्बन्धी योग्यता और शारीरिक ढील-ढोल और संयम में तब तक गिरावट आएगी, जब तक यह संसार हर तरह की पीड़ा से ग्रस्त न हो जाएगा। प्रवृति और मनोभाव में लिप्त मानव उद्धार की योजना के महान सत्य को महत्व देने में असमर्थ हो जाएगा। फिर भी मसीहस्वर्ग का त्याग करने में अपने उद्देश्य को थामे हुए, मनुष्य मे रूचि दिखाता रहेगा और उन्हें अपनी कमियाँ और दुर्बलताएँ उसमें छिपाने का आमन्त्रण देगा। जो भी विश्वास में उसके पास आएगा, उसकी हर आश्यकता को वह पूरी करेगा। और हमेशा कुछ ऐसे मनुष्य होंगे जो परमेश्वर के ज्ञान को संरक्षित रखेंगे और प्रचलित अधर्म के मध्य निष्कलंक रहेंगे। बलि की भेंट परमेश्वर द्वारा नियत थी, ताकि वह मनुष्य के लिये उसके पाप की अनुतापी स्वीकृति और उद्धारकर्ता के प्रति अपने विश्वास के अंगीकार का अनंत स्मरण पत्र हो। इन भेंटो का उद्देश्य पतित मानव जाति पर, इस गम्भीर सत्य की छाप को छोड़ना था कि मृत्यु के पाप का परिणाम है। आदम के लिए पहली बलि की भेंट अत्यंत दर्दनाक विधि थी। उसे प्राण लेने के लिये हाथ उठाना था और प्राण केवल परमेश्वर दे सकता था। उसने पहली बार मृत्यु को देखा, और वो समझ गया कि यदि वह आज्ञाकारी होता तो ना ही मनुष्य और ना ही कोई जन्तु मृत्यु को प्राप्त होता। निर्दोष की हत्या करते समय वह इस विचार के डर से थरथराने लगा कि उसके पाप के कारण परमेश्वर के निष्कलंक मेमने का रक्त

बहाया जाएगा। इस दृश्य को देख उसे अपने पाप की गंभीरता का और भी गहन और विस्तृत आभास हुआ। उसके पाप की क्षतिपूर्ति केवल परमेश्वर का प्रिय पुत्र कर सकता था। और वह उस असीमित अच्छाई पर आश्चर्य करने लगा जो अपराधी को बचाने के लिए ऐसी छुड़ौती देगी। आशा की किरण ने उस अन्धकारमय और भयानक भविष्य को प्रकाशवान बना दिया और अत्यन्त उजाड़ होने से बचा लिया। PPHin 58.3

लेकिन उद्धार की योजना में मनुष्य की मुक्ति से बढ़कर एक व्यापक और गम्भीर उद्देश्य निहित था। मसीह पृथ्वी पर केवल इसी के लिए नहीं आया, ऐसा भी नहीं था कि इस संसार के निवासी उसकी व्यवस्था को उस तरह मान्यता दे जैसी उसे मिलनी चाहिये, बल्कि इस योजना के माध्यम से सृष्टि के समक्ष परमेश्वर के चरित्र को न्यायसंगत सिद्ध करना था। दूसरे ग्रहों एवं मनुष्य के विवेक का प्रभावित होना मसीह के महान त्याग का परिणाम था और मसीह इसी की प्रतिक्षा कर रहा था, जब कस पर चढ़ाए जाने से पूर्व उसने कहा, "अब इस जगत का न्याय होता है, अब इस जगत का सरदार निकाल दिया जाएगा और में यदि पृथ्वी पर से ऊँचे पर चढ़ाया जाऊंगा, तो सब को अपने पास खींच लूंगा'-यहुन्ना 12:31, 32 । PPHin 59.1

मनुष्य के उद्धार के लिये मसीह के मरने की भूमिका ना केवल उसके लिए स्वर्ग को उसकी पहुँच की सीमा में ले आता, वरन् सम्पूर्ण सृष्टि के समक्ष परमेश्वर और उसके पुत्र को शैतान के उपद्रव सम्बन्धित व्यवहार के लिये न्यायसंगत ठहराती। वह परमेश्वर की व्यवस्था की स्थिरता को स्थापित करती और पाप के परिणाम और स्वभाव को प्रकट करती । PPHin 59.2

प्रारम्भ से ही महान संघर्ष का विषय परमेश्वर की व्यवस्था थी। शैतान ने परमेश्वर को अन्यायी प्रमाणित करने का प्रयत्न किया था। उसकी व्यवस्था को त्रुटिपूर्ण बताते हुए उसने सृष्टि की भलाई हेतु उसमें परिवर्तन करने की आवश्यकता जताई। व्यवस्था पर आक्रमण कर वह व्यवस्था के रचयिता के अधिकार को पराजित करना चाहता था। संघर्ष में यह दिखाना था कि ईश्वरीय प्रावधान त्रुटिपूर्ण और परिवर्तनीय थे या सिद्ध और अपरिवर्तनीय थे। PPHin 60.1

जब शैतान को स्वर्ग से बाहर फेंक दिया गया, उसने पृथ्वी को अपना राज्य बनाने का निश्चय किया। आदम और हवा पर प्रलोभन के माध्यम से विजय पाने के बाद, उसने सोचा कि उसने संसार पर आधिपत्य पा लिया, उसने कहा, "क्योंकि उन्होंने मुझ अपना शासक चुना है" । उसने दावा किया कि पापी को क्षमा प्रदान होना असम्भव था, और इसलिये पतित मानव जाति उसकी यथोचित प्रजा थी, और संसार उसका था। परन्तु परमेश्वर ने अपने इकलौते प्रिय पुत्र को, जो उसके तुल्य था, पाप की दण्डाज्ञा भुगतने के लिये दिया और इस तरह उसने मनुष्य को अपने पक्ष में पुन: बहाल करने और अदन में लौटने का रास्ता बनाया। मसीह ने मनुष्य को पाप मुक्त करने और संसार को शैतान की पकड़ से बचाने का दायित्व लिया। स्वर्ग में प्रारम्भ हुआ महान संघर्ष का निर्णय इसी संसार में, उसी रणभूमि पर होना था, जिसे शैतान ने उसका होने का दावा किया था । PPHin 60.2

मसीह का दीन होकर पतित मनुष्य को बचाना समस्त सृष्टि का चमत्कार था। यह वो रहस्य था जिसे अन्य ग्रहों के निष्पाप, बुद्धिजीवी समझने की चेष्ठा करते थे कि मसीह जो अपनी नियति से विशाल सृष्टि के प्राणी की प्रत्येक श्रेणी की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए हर नक्षत्र और ग्रह का संचालन करता था, वह अपनी महिमा को त्याग कर मानव रूप को धारण करने को सहमत हो गया। जब मसीह इस संसार में मानव रूप से आया और जैसे-जैसे वह चरनी से लेकर कलवरी तक के रक्तरंजिज पथ पर चला, सभी उसके पीछे चलने के बहुत इच्छुक थे।। जो अपमान और तिरस्कार उसने सहा उसे स्वर्ग ने चिन्हित किया और माना कि वह शैतान का भड़कावा था। उन्होंने यह भी देखा कि विरोधी साधनों के कार्य प्रगति कर रहे थे, शैतान मानव जाति पर अन्धकार, व्यथा और आपदा उंडेल रहा था, और मसीह उसका प्रतिकार कर रहा था। उन्होंने अन्धकार और प्रकाश के बीच युद्ध को भीष्ण होते देखा। और जैसे ही कस पर लटके यीशु ने अपने अन्तिम यातना के पलों में पुकारा “पूरा हुआ”(यहून्ना 19:30); वैसे ही विजय की जयजयकार हर ग्रह और स्वर्ग में गूंज उठी। इस संसार में युगों से चला आ रहा महान संघर्ष का अब निर्णय हुआ और मसीह को विजेता माना गया। उसकी मृत्यु के इस प्रश्न का उत्तर दिया कि क्या पिता और पुत्र का मनुष्य के लिये प्रेम इतना पर्याप्त था कि वे आत्मत्याग और बलिदान की भावना का प्रयोग कर सकते थे? शैतान ने झूठे और हत्यारे समान अपना वास्तविक चरित्र दिखा दिया था।यह स्पष्ट हो गया था कि यदि उसे स्वर्ग के बुद्धिजीवियों को नियन्त्रित करने की अनुमति दे दी जाती, तो वह उसी भावना को दर्शाता जैसी उसने अपने अधीनस्थ मनुष्य के पुत्रों पर राज करने में दर्शायी थी। निष्ठावान सृष्टि ने एक आवाज के साथ एकीकृत होकर ईश्वरीय शासन-प्रबन्ध का गुणगान किया । PPHin 60.3

यदि व्यवस्था परिवर्तनशील होती तो मनुष्य को मसीह के त्याग के बिना बचाया जा सकता था, लेकिन यह तथ्य कि पतित जाति के लिए मसीह का जीवन दान अनिवार्य था, इस बात की पुष्टि करता है कि परमेश्वर की व्यवस्था पापी को व्यवस्था के अधिकार से निवारण नहीं दिला सकती। यह प्रमाणित किया गया कि पाप का प्रतिदान मृत्यु है। जब मसीह मृत्यु को प्राप्त हुआ, तब शैतान का विनाश निश्चित हो गया। लेकिन यदि कूस पर व्यवस्था समाप्त हो जाती, जैसा कि बहुत लोग दावा करते है, तो यह प्रमाणित होता कि परमेश्वर के पुत्र ने वेदना और मृत्यु को इसलिये सहन किया ताकि शैतान को वह मिल सके जो उसने मांगा था, और बुराई के राजकुमार की विजय होती, और ईश्वरीय सत्ता के विरूद्ध उसके आरोप प्रमाणित हो जाते। यह तथ्य कि मसीह ने मनुष्य के पाप की दण्डाज्ञा सही, सभी रचित बुद्धिजीवियों के लिये प्रबल तक है कि व्यवस्था अपरिवर्तनीय है कि परमेश्वर धर्मी, दयावान और आत्मत्यागी है, और उसकी सत्ता के शासन प्रबन्ध में असीम न्याय और कृपा का मेल है।

अध्याय 5—केन और हाबिल का परीक्षण

यह अध्याय उत्पत्ति 4:1-5 पर आधारित है

कैन और हाबिल, आदम के पुत्र, चरित्र में अत्यन्त भिन्न थे। हाबिल में परमेश्वर के प्रति निष्ठा की भावना थी, उसने सृष्टिकर्ता के पतित मानव जाति के प्रति व्यवहार में न्याय और दयालुता को देखा और मुक्ति की आशा को कृतज्ञता से स्वीकार किया। लेकिन कैन ने उपद्रव की भावनाओं को पनपने दिया और आदम के पाप के फलस्वरूप धरती और मानव जाति पर श्राप की घोषणा के कारण परमेश्वर के प्रति असन्तोष प्रकट किया। स्वयं की पदोन्नति की अभिलाषा कर और ईश्वरीय न्याय और अधिकार पर सन्देह कर उसने अपने विवेक को उसी मार्ग पर चलने दिया, जिस पर चलकर शैतान का पतन हुआ था। PPHin 62.1

इन भाईयों को परखा गया, जैसे इनसे पहले आदम को परखा गया था, यह प्रमाणित करने के लिये कि वे परमेश्वर के वचन को मानेंगे और उसमें विश्वास करेंगे या नहीं। उन्हें मनुष्य के उद्धार सम्बंधित प्रयोजन से परिचित कराया गया। उन्हें परमेश्वर द्वारा नियुक्त भेंट चढ़ाने की विधि बताई गई। उन्हें मालूम था कि भेंट के द्वारा उन्हें उद्धारकर्ता में विश्वास की अभिव्यक्ति करनी थी। साथ ही क्षमा के लिए उस पर निर्भरता को स्वीकार करना था और उन्हें यह भी ज्ञात था कि अपने उद्धार की ईश्वरीय व्यवस्था से सहमत होकर वे परमेश्वर की इच्छा के प्रति आज्ञाकारी होने का प्रमाण दे रहे थे। रक्त के बहाए जाने के बिना पापों से छुटकारा असंभव था, और अपने पशुओं के समूह के पहलौठों की बलि चढ़ाकर उन्हें प्रायश्चितरूपी मसीह के रक्त में अपने विश्वास की प्रतीति करने थी। इसके अलावा, खेत के पहले फलों को धन्यवाद की भेंट के रूप में परमेश्वर को अर्पित करना था। PPHin 62.2

दोनों भाईयों ने एक समान वेदियों का निर्माण किया और दोनों भेंट लेकर आए । हाबिल ने परमेश्वर के निर्देश के अनुसार पशु की बलि चढ़ाई, "तब यहोवा ने हाबिल और उसकी भेंट को ग्रहण किया ।" स्वर्ग से अग्नि प्रवाहित हुई और भेंट को जला डाला। लेकिन कैन ने परमेश्वर के प्रत्यक्ष और स्पष्ट आज्ञा की अवमानना करते हुए, फलों की भेंट चढ़ाई। स्वर्ग से स्वीकृति का कोई संकेत नहीं आया। हाबिल में अपने भाई से बिनती की कि वह परमेश्वर द्वारा निर्धारित विधि से उससे आग्रह करें, लेकिन उसके अनुनय ने कैन को स्वयं की इच्छा का अनुसरण करने को दृढ़ कर दिया। सबसे बड़ा होने के नाते उसे लगा कि वह अपने भाई के परामर्श से ऊपर है और उसने उसकी सलाह का तिरस्कार किया। बलिदान जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी, और बलि की भेंटो के संदर्भ में कैन अपने हृदय में सन्देह और श्रद्धाहीनता के साथ परमेश्वर के सम्मुख आया। उसकी भेंट में पापों के प्रायश्चित की अभिव्यक्ति नहीं थी। उसे लगा, जैसा की आज भी बहुतों को लगता है, कि परमेश्वर की निर्धारित समुचित योजना के पालन करने से अपनी दुर्बलता की स्वीकृति देने जैसा होगा और अपने उद्धार

का माध्यम पूर्णतया उद्धारकर्ता के पश्चताप में विश्वास करने जैसा होगा ।उसने आत्म-निर्भरता का मार्ग चुना। वह स्वयं की योग्यता लिये आएगा। वह न ही मेमने को लाएगा और न ही उसके रक्त को भेंट मे मिलाएगा, बल्किवह अपने फल--अपने श्रम की उपज लाएगा। अपनी भेंट को परमेश्वर पर एहसान करने जैसे, चढ़कर वह ईश्वरीय स्वीकृति प्राप्त करने की उपेक्षा कर रहा था। कैन ने आज्ञा के अनुसार वेदी बनाई, आज्ञा के अनुसार भेंट लाया, लेकिन उसका आज्ञा पालन अधूरा था। एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता का आभास जो सबसे अनिवार्य भाग था, छोड़ दिया गया था। PPHin 62.3

धार्मिक शिक्षा और जन्म के सन्दर्भ में दोनो भाई बराबर थे। दोनो पापी थे, और दोनो इस बात से सहमत थे कि परमेश्वर आदर और आराधना योग्य है। बाहर से उनका धर्म एक निश्चित सीमा तक समान था, लेकिन इसके परे उनमें बहुत मतभेद था। PPHin 63.1

"विश्वास ही से हाबिल ने कैन से उत्तम बलिदान परमेश्वर के लिए चढ़ाया"-इब्रानियों 11:4 । हाबिल ने उद्धार के महान रिद्धान्तों को ग्रहण किया । उसने स्वयं को पापी माना और उसने पाप और उसकी दण्डाज्ञा मृत्यु को अपनी आत्मा और परमेश्वर से संगति के बीच खड़े हुए देखा। वह बलिदान हेतु मारा हुआ पशु लेकर आया और इस तरह उसने उल्लंघन की गई आज्ञा के आरोप को स्वीकार किया। बहाए हुए रक्त के माध्यम से उसने भविष्य में होने वाले बलिदान की कल्पना की- मसीह का कलवरी के कस पर मरना। प्रायश्चित, जिसका होना निर्धारित था, में विश्वास करते हुए उसने धर्मी होने की गवाही दी और उसकी भेंट स्वीकार हुई । PPHin 63.2

कैन को भी हाबिल के समान इस सत्य को सीखने और स्वीकार करने का अवसर मिला। वह एकपक्षीय उद्देश्य का शिकार नहीं था। एक भाई परमेश्वर द्वारा स्वीकत होने के लिये मनोनीत नहीं था और दूसरा अस्वीकृत होने के लिये मनोनीत नहीं था। हाबिल ने विश्वास और आज्ञापालन को चुना और कैन ने अविश्वास और उपद्रव को चुना। यहां सम्पूर्ण विषय स्पष्ट है। PPHin 64.1

कैेन और हाबिल संसार में समय के अंत तक अस्तित्व में रहने वाली दो श्रेणियों को दर्शाता है। एक श्रेणी पाप के लिये नियुक्त बलिदान कालाभ उठाती है, और दूसरी श्रेणी अपनी योग्यता पर निर्भर होने का प्रयत्न करती है। उनके बलिदान में ईश्वरीय मध्यस्थता के सदगुण का अभाव होता है और इसलिए वह मनुष्य और परमेश्वर का मेल नहीं करा सकता। केवल यीशु की सामर्थ्य के माध्यम से हमारी अवज्ञा की क्षमा प्राप्ति हो सकती है। जिन्हें मसीह के खून की आवश्यकता का आभास नहीं होता, जिन्हें लगता है कि ईश्वरीय अनुग्रह के अभाव में वे अपने कामों के द्वारा परमेश्वर की स्वीकृति पा सकते है, वे वही गलती करते है जो कैन ने की थी। यदि वे पवित्र करने वाले रक्त को ग्रहण नहीं करते वे दण्डाज्ञा के अधीन है। कोई भी अन्य प्रयोजन नहीं है, जिससे मनुष्य को पाप के दासत्व से छुटकारा मिलें । PPHin 64.2

संसार का अधिक भाग उपासकों का वह वर्ग है जो कैन के उदाहरण का अनुसरण करते हैं। लगभग प्रत्येक मिथ्यावादी धर्म इसी सिद्धान्त पर आधारित है कि मनुष्य उद्धार के लियेस्वयं के प्रयत्नों पर निर्भर कर सकता है। कुछ का यह भी कहना है कि मानव जाति को उद्धार की नहीं, विकास की आवश्यकता है- वह स्वयं को शुद्ध करने, बौद्धिक व नैतिक स्तर पर उठाने और अवस्था सुधारने मे सक्षम है। जैसे कैन ने सोचा कि रक्तरहित बलिदान की भेंट से ईश्वरीय स्वीकृति प्राप्त कर सकता है, वैसे ही यह वर्ग पश्चताप के बिना, मानवता को ईश्वरीय मानक तक उठाने की अपेक्षा करता है। कैन का इतिहास ऐसी भेंट के परिणाम बताता है। वह बताता है कि मसीह से अलग मनुष्य क्या रूप धारण करेगा। मानवता स्वयं को पुनः उत्पन्न करने में असमर्थ है। वह ईश्वरत्व की ओर ऊपर नहीं जाती, वरन शैतानियत की तरफ नीचे को आती है। मसीह ही हमारी एकल आशा है। प्रेरितों के काम 4:12 में लिखा है, "और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं, क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरे नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सके" । PPHin 64.3

सच्चा विश्वास, जो पूर्णतया मसीह पर निर्भर करता है, परमेश्वर की समस्त अपेक्षाओं की आज्ञाकारिता में प्रकट होगा। आदम के समय से वर्तमान समय तक महान संघर्ष परमेश्वर की आज्ञा के पालन से सम्बन्धित है। सभी युगों में ऐसे मनुष्य रहे हैं जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मान्यता न देकर भी उसका उनके पक्ष में होने का अधिकार चाहते थे। लेकिन पवित्र-शास्त्र कहता है कि कर्मा से, विश्वास सिद्ध हुआ' और आज्ञापालन के कर्मा के अभाव में विश्वास 'मृत' है! जेम्स 2:22, 17 PPHin 65.1

"जो कोई यह कहता है, कि में उसे जान गया हूँ और उसकी आज्ञाओं को नहीं मानता, वह झूठा है,और उस में सत्य नहीं ।"यहुन्ना 2:4 PPHin 65.2

जब कैन ने देखा कि उसी भेंट स्वीकार नहीं हुई, तो वह परमेश्वर और हाबिल पर कोधित हुआ, वह परमेश्वर पर कोधित हुआ, क्योंकि उसने धर्मानुसार विधिवत बलि के एवज में मनुष्य का विकल्प स्वीकार नहीं किया, और कैन से इसलिए कुध हुआ कि बजाय उपद्रव मे उसका साथ देने के, उसने परमेश्वर का कहना माना। कैन के पवित्र आज्ञा की अवमानना करने के बावजूद परमेश्वर ने उसे पूरी तरह नहीं छोड़ा बल्कि उस मनुष्य के साथ तक-वितक करना स्वीकार कियाजिसने स्वयं को इतना अविवेकपूर्ण प्रमाणित किया था। और परमेश्वर ने कैन से कहा-"तू क्यों कोधित हुआ? और तेरे मुँह पर उदासी क्यो छा गई है? एक स्वर्गदूत सन्देशवाहक द्वारा ईश्वर की चेतावनी दी गई थी "यदि तू भला करे, तो क्या तेरी भेंट ग्रहण न की जाएगी? और यदि तू भला न करे तो पाप द्वार पर छिपा रहता है, और उसकी लालसा तेरी ओर होगी।" चुनने का अधिकार कैन के पास था। यदि वह प्रतिश्रुत उद्धारकर्ता की सामर्थ्य में विश्वास रखता और परमेश्वर की अपेक्षाओं में खरा उतरता तो परमेश्वर उसके पक्ष में होता। लेकिन यदि वह अविश्वास और आज्ञा उल्लंघन में बना रहता उसके पास आरोप का आधार न होता क्योंकि वह परमेश्वर द्वारा अस्वीकत होता। PPHin 65.3

लेकिन अपने पाप का अंगीकारकरने के बजाय, कैन परमेश्वर के अन्यायी होने का आरोप लगाता रहा और हाबिल के प्रति ईर्ष्या और घृणा को पालता रहा। उसने कोध अपने भाई को भला-बुरा कहा में और उसे परमेश्वर के, उनके प्रति, व्यवहार सम्बन्धी वाद-विवाद में घसीटने का प्रयत्न किया। यद्यपि नम्रता से, पर निडर और दृढ़ होकर हाबिल ने परमेश्वर की अच्छाई और न्याय प्रियता का समर्थन किया। उसने कैन की गलती की ओर संकेत किया और उसे समझाने की कोशिश की कि वह अपने आप में गलत था। उसने कैन और उसके माता-पिता को परमेश्वर द्वारा तत्कालिक मृत्युदण्ड के बजाए जीवन-दान देने में परमेश्वर की दयालुता की ओर संकेत किया और दृढ़ता पूर्वक अनुनय किया कि परमेश्वर उनसे प्रीति रखता है, नही तो उसने उनकी दण्डाज्ञा को भुगतने के लिये अपने पवित्र और निष्पाप पुत्र को नहीं दिया होता। इस सब से कैन और भी उत्तेजित हुआ। तर्क और अन्तरात्मा ने उसे हाबिल के सही के पक्ष में होने का संकेत दिया, लेकिन वह इस बात से कोधित हुआ कि जो अपने भाई की सलाह मानने का अभ्यस्त था, अब वही उसके असहमत होने की कल्पना कर रहा था और यह कि उसे उसके विद्रोह में हाबिल से कोई समर्थन नहीं मिलेगा। PPHin 65.4

कैन ने घृणा की और अपने भाई को मार डाला, किसी गलत कार्य के लिए नहीं बल्कि इस कारण कि "उसके काम बुरे थेऔर उसके भाई के काम धर्म क थे"-यहुन्ना 3:12। इसी तरह हर युग में हाबिल दुष्टो ने स्वयं से श्रेष्ठतर मनुष्यों से घृणा की है। हाबिल का आज्ञाकारिता और अडिग विश्वास से पूर्ण जीवन कैन के लिये चिरस्थाई निनदा थी। यहुन्ना 3:20 में लिखा है, "क्योंकि जो कोई बुराई करता है, वह ज्योति से बैर रखता है, और ज्योति के निकट नहीं आता, ऐसा न हो कि उसके कामों पर दोष लगाया जाए।" परमेश्वर के निष्ठावान सेवकों के चरित्र से प्रतिबिंबित ईश्वरीय प्रकाश जितना अधिक प्रजजलित होता है उतनी ही अधिक स्पष्टता से अधर्मी मनुष्यों के पाप उजागर होते हैं और उनकी शान्ति भंग करने वालों का विनाश करने के उनके प्रयत्न और भी दृढ़ हो जाते हैं। PPHin 66.1

परमेश्वर ने घोषणा की थी कि स्त्री के बीज और सर्प शैतान व उसकी प्रजा और मसीह व उसके अनुनायिययों के बीच शत्रुता का वास होगा और हाबिल की हत्या इसका पहला उदाहरण थी। शैतान ने, मनुष्य के पाप के माध्यम से, मानव जाति पर नियन्त्रण पा लिया था लेकिन मसीह मानव को इस योग्य बनाता है कि वह शैतान के दमनकारी शासन से छुटकारा पा सकें । PPHin 66.2

जब भी परमेश्वर के मेम्ने में विश्वास द्वारा कोई आत्मा पाप के कार्य करना छोड़ देता है, शैतान का कोध भड़क उठता है। हाबिल के पवित्र जीवन ने शैतान के.दावे का, कि मनुष्य के लिए परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना असम्भव है, खण्डन किया। जब कैन ने, दुष्ट की आत्मा से प्रभावित होकर देखा कि वह हाबिल पर नियंत्रण नहीं पा सकता तो वह रोष से भर गया और उसने अपने भाई के जीवन का अन्त कर दिया। और जहां भी परमेश्वर की व्यवस्था की धार्मिकता को प्रमाणित करने

लोग खड़े होंगे, वहां उनके विरूद्ध इस भावना को प्रकट किया जाएगा। यहीं वह भावना है जिसने हर युग में खूंटे को गाढ़कर, मसीह के अनुनायियों के लिए ज्वलंत ढेर को सुलगाया है। लेकिन यीशु के अनुयायी पर थोपी गईं यातनाएं शैतान और उसकी सेना द्वारा प्रारम्भ की गई है क्योंकि वह उसे अपने अधीन करने क लिए विवश नहीं कर पाया। यह एक पराजित शत्रु का रोष है। यीशु से सम्बन्धित सत्य व धर्म के लिये मरने वाला हर मनुष्य विजयी होकर मरा। प्रकाशतिवाक्य 12:11, 9 में भविष्यवक्ता कहता है, "और वे मेम्ने के लहू के कारण और अपनी गवाही के वचन के कारण उस पर (वह पुराना सर्प इबलीस और शैतान) जयवन्त हुए, और उसके दूत उसके साथ गिरा दिए गए" । PPHin 66.3

हत्यारे कैन को अपने अपराध के स्पष्टीकरण के लिये बुलाया गया। "परमेश्वर ने कैन से कहा, तेरा भाई हाबिल कहाँ है? और कैन ने उत्तर दिया, मुझे हीं मालूम, क्या मैं अपने भाई का रखवाला हूँ?" कैन पाप में इतनीदूर चला गया था कि उसे परमेश्वर की परस्पर उपस्थिति, उसकी महानता और उसके सर्वज्ञानी होने का आभास ही नहीं रहा। इन कारण अपने अपराध बोध को छिपाने हेतु उसने झूठ का सहारा लिया। PPHin 67.1

परमेश्वर ने कैन से फिर कहा, "यह तूने क्या किया? तेरे भाई का लहू भूमि में से मेरी ओर चिल्लाकर मेरी दुहाई दे रहा है।" परमेश्वर ने कैन को अपने पाप को स्वीकार करने का अवसर दिया था। उसके पास चिंतन करने का समय था। उसे अपने द्वारा किये गए कृत्य की गम्भीरता और उसे छिपाने के लिये बोला गया झूठ ज्ञात थे लेकिन अभी भी वह उपद्रवी था और अब दबण्डाज्ञा को विलम्बित नहीं किया गया। जो पवित्र वाणी निवेदन और परामर्श में सुनाई पड़ती थी, उसी ने कठोर शब्दों में उच्चारण किया, "इसलिए अब तू उस भूमि की ओर से शापित है, जिसने तेरे भाई का लहू तेरे हाथ से पीने के लिये अपना मुहँ खोला है।" चाहे तू भूमि पर खेती करे, तौभी उसकी पूरी उपज फिर तुझे न मिलेगी, और तू ष्थ्वी पर खानाबदोश और भगोड़ा होगा" । PPHin 67.2

इसके बावजूद कि दण्डाज्ञा कैन के अपराध का परिणाम थी, दयालु सृष्टिकर्ता ने उसके प्राण नहीं लिए और उसे पश्चताप का अवसर प्रदान किया। लेकिन कैन केवल अपने हृदय को कठोर बनाने हेतु ईश्वरीय सत्ता के विरूद्ध उपद्रव को बढ़ावा देने हेतु और निर्भक, परित्यक्त पापियों के वंश का मुखिया बनने के लिये जीवित रहा। यही एक अधर्मी, शैतान के नेतृत्व में, दूसरों के लिये प्रलोभन देने वाला सिद्ध हुआ, और उसके उदाहरण और दुष्प्रभाव ने नीतिग्रष्ट करने वाली प्रवृति को प्रवाहित किया, जब तक कि धरती इतनी विकृत और करतापूर्ण हो गई कि उसका विनाश करना पड़ा । PPHin 67.3

प्रथम हत्यारे को प्राण-दान देने में परमेश्वर ने समस्त सृष्टि के सम्मुख महान संघर्ष से सम्बन्धित शिक्षा को रखा। कैन और उसके वंश का निराशाजनक इतिहास एक दृष्टांत था जो प्रमाणित कर सकता था कि यदि पापी के लिए जीवित रहने की अनुमति दे दी जाती तो क्या परिणाम होता।

परमेश्वर की सहनशीलता ने दुष्टों को उनके पाप में और भी निर्भक और उद्धत बना दिया। कैन को दी गई दबण्डाज्ञा के पन्द्रह दशकों के पश्चात सृष्टि ने अपराध और प्रदूषण से भरी धरती में उसके प्रभाव और उदाहरण का फलवन्त होना देखा। PPHin 68.1

यह प्रकट किया गया कि परमेश्वर की व्यवस्था की अवज्ञा करने पर मृत्यु की दण्डाज्ञा न्यायसंगत और दयावान थी। जितना ज्यादा समय मानव पाप में व्यतीत करता, वह उतना ही परित्यक्त होता जाता। अनियंत्रित दुष्टता के कार्यकाल को घटाकर और जगत को कठोर हुए आक्रमणकारियों के दुष्टप्रभाव से स्वतन्त्र कराकर, पवित्र दण्डाज्ञा श्राप के बजाय आशीर्वाद प्रमाणित हुईं । PPHin 68.2

शैतान हजारों स्वांगो में प्रबलता के साथ परमेश्वर की सत्ता और स्वभाव का गलत प्रतिनिधित्व करने में कार्यरत है। वह विस्तृत, सुव्यवस्थित योजनाओं को अपने छलावे मे पकड़े रखने के लिये प्रयत्नशीन है। परमेश्वर, वह एक, जो अनंत और सर्वज्ञानी है, अन्त को प्रारम्भ से देखता है और पाप से सम्बन्धित उसकी योजनाएंदूरदर्शी और विस्तारपूर्ण थी। उसका उद्देश्य केवल विद्रोह का दमन करना ही नहीं था, बल्कि समूचे जगत को विद्रोह का स्वभाव बतलाना था। परमेश्वर की योजना, उसके न्याय और कृपा को दिखाते हुए, बुराई से सम्बन्धित व्यवहार मेंडसके विवेक और उसकी धार्मिकता को प्रमाणित करते हुए, स्पष्ट हो रही थी । PPHin 68.3

अन्य ग्रहों के निवासी धरती पर हो रही घटनाओं को अत्यन्त रूचि से देख रहे थे। जल-प्रलय से पूर्व संसार की अवस्था में, मसीह के प्रभुत्व को अस्वीकार करने में और उसकी व्यवस्था को टालने में उन्होंने लूसिफेर के शासन-दप्रबन्ध, जिसका संस्थापन उसने स्वर्ग में करने का प्रयत्न किया, के परिणाम को सोदाहरण देखा। जल प्रलय पूर्व संसार के उद्धत पापियों में उन्होंने उस प्रजा को देखा जो शैतान के अधीन थी। “उनके मन के विचार मे जो कुछ उत्पन्न होता है निरन्तर बुरा ही होता है ।”-उत्पत्ति 6:5 [हर एक मनोभाव, आवेग और कल्पना, पवित्रता, शान्ति और प्रेम के ईश्वरीय सिद्धान्तों से असंगत था। यह भंयकर दुष्टता, परमेश्वर के रचित प्राणियों पर से पवित्र व्यवस्था के नियंत्रण को हटा देने की शैतान की योजना के परिणाम का उदाहरण थी। PPHin 68.4

महान संघर्ष के प्रगति में स्पष्ट हुए तथ्यों के माध्यम से परमेश्वर शासन सम्बन्धी अपने नियमों के सिद्धान्तों को सोदाहरण बतलाएगा जिन्हें शैतान और उसके छलावे में आए लोगों द्वारा झूठा ठहराया गया था। उसके न्याय को अन्त में सम्पूर्ण जगत की स्वीकृति मिलेगी, लेकिन तब तक विरोधियों के बचाए जाने के लिये बहुत देर हो चुकी होगी ।जैसे-जैसे परमेश्वर की श्रेष्ठ योजना सम्पूर्णपूर्ति की तरफ अग्रसर होती है, परमेश्वर समस्त सृष्टि की स्वीकृति और समर्थन अपने साथ लिये चलता है। विद्रोह के उन्मूलन के अन्तिम चरण में भी, ऐसा देखा जाएगा कि उन सब ने जिन्होंने पवित्र नियमों का त्याग किया है, उन्होंने मसीह के विरूद्ध युद्ध में शैतान का पक्ष लिया। जब इस संसार के राजकुमार का न्याय होगा और उनका भी जो उसक साथ जुड़ गए थे, उसी के नियति के

भागीदार होंगे और समस्त सृष्टि दण्डाज्ञा के साक्षी के तौर पर घोषणा करेंगी, “तेरे मार्ग सच्चे और धार्मिकता से भरे हुए है, सभी जातियों का राजा”। प्रकाशित वाक्य 15:3 PPHin 69.1

अध्याय 6—शेत और हनोक

यह अध्याय उत्पत्ति 4:25 से 6:2 पर आधारित है।

आदम को एक और पुत्र दिया गया जिसे धर्म सम्बन्धी जन्मसिद्ध अधिकार और पवित्र प्रतीज्ञा का उत्तराधिकारी होना था। इस पुत्र को दिए गएनाम 'शेत' का अर्थ था "नियुक्त" या "इनाम" क्योंकि उसकी माँ ने कहा, परमेश्वर ने मेरे हाबिल के स्थान पर, जिसको कैन ने घात किया, एक और वंश ठहरा दिया। शेत का डील-डौल कैन और हाबिल से अधिक प्रभावशाली था और आदम के अन्य पुत्रों के तुल्य शेत और आदम में अधिक समानता थी। हाबिल का अनुसरण करते हुए, वह एक गुणवान पुरूष था। लेकिन उसने भी कैन से ज्यादा स्वाभाविक अच्छाई नहीं पाई। आदम की सृष्टि के बारे में कहा जाता है, "परमेश्वर ने उसे अपने स्वरूप में बनाया" पर पतन के पश्चात "मनुष्य ने पुत्र को जन्म दिया, अपने स्वरूप में, अपनी तरह ।" आदम की सृष्टि निष्पाप रूप में हुई थी-परमेश्वर के स्वरूप में-लेकिन शेत को, कैन की तरह अपने माता-पिता का पतित स्वभाव विरासत में मिला। लेकिन उसने भी उद्धारकर्ता का ज्ञान और धार्मिकता की शिक्षा ग्रहण की। पवित्र अनुग्रह द्वारा वह परमेश्वर का आदर-सत्कार करता था, और उसने सृष्टिकर्ता की आज्ञा मानने और उसका आदर करने हेतु पापी मनुष्यों का मन परिवर्तन करने के लिये श्रम किया, जैसा कि हाबिल भी जीवित होने पर करता । PPHin 70.1

"और शैतान के भी एक पुत्र उत्पन्न हुआ, और उसने उसका नाम एनोश रखा, उसी समय से लोग यहोवा से प्रार्थना करने लगे। "निष्ठावानों ने पहले भी परमेश्वर की आराधना की थी, लेकिन जनसंख्या के बढ़ने पर दो वर्गोंकि बीच भिन्नता और स्पष्ट हो गई। एक की ओर से परमेश्वर के प्रति प्रत्यक्ष निष्ठा की अभिव्यक्ति थी और दूसरे की ओर से घृणा और अवज्ञा का भाव प्रदर्शित होता था। PPHin 70.2

पतन से पूर्व हमारे प्रथण अभिभावक अदन में स्थापित किए हुए सबत का पालन करते थे और अदन की वाटिका से निष्कासित होने के बाद भी उसका अनुपालन करते रहे। उन्होंने अवज्ञा के कड़वे फलों का अनुभव किया था और सीखा था, जो परमेश्वर की आज्ञाओं का तिरस्कार करने वाला आज नहीं तो कल सीखेगा, कि ईश्वरीय आज्ञाएं पवित्र और अपरिवर्तनीय है और आज्ञा उललघंन की दण्डाज्ञा निश्चय ही दी जाएगी। आदम के सभी बाल-बच्चों ने, जो परमेश्वर के प्रति निष्ठावान थे, सबत को मान्यता दी। लेकिन कैन और उसके वंश ने परमेश्वर के विश्राम दिन का आदर नहीं किया। उन्होंने श्रम और विश्राम दिन का आदर नहीं किया। उन्होंने श्रम और विश्राम का समय स्वयं निर्धारित किया और परमेश्वर की सुस्पष्ट आज्ञा का अपमान किया। PPHin 70.3

परमेश्वर द्वारा शापित होने के पश्चात्, कैन अपने पिता के परिवार से अलग हो गया। पहले उसने किसान का व्यवसाय चुना था, और अब उसने एक शहर स्थापित किया और उसे अपने ज्येष्ठ पुत्र का नाम दिया। वह परमेश्वर की उपस्थिति से दूर चला गया था, पुनः स्थापित अदन सम्बन्धित प्रतीज्ञा को उसने अस्वीकार कर दिया और पाप से शापित धरती में अपनी सम्पत्ति और आनन्द को दूढने निकल पड़ा था। इस तरहवह मनुष्यों के उस वर्ग का मुखिया बन गया जो इस संसार के देवता की आराधना करते है। उसके वंशजो ने सांसारिक व वस्तुगत प्रगति सम्बन्धित विषयों में विशिष्टता पाई । लेकिन वे परमेश्वर के प्रति उदासीन थे और मानव के लिये उसके उद्देश्यों के विरूद्ध थे। कैन ने सबसे पहले हत्या का अपराध किया था और लेमेक, जो पाँचवी पीढ़ी का था, उसने अपराध की सूची में बहुविवाह की प्रथा को जोड़ दिया और अंहकारी उपेक्षापूर्ण होने के बावजूद, परमेश्वर को सिर्फ इसलिये स्वीकार किया कि वह कैन में सम्बन्धित प्रतिशोध से अपनी सुरक्षा का आश्वासन पा सके। हाबिल ने चारागाही जीवन बिताया था और वह तम्बू में रहता था, शेत के वंश ने भी ऐसा ही किया, क्योंकि स्वयं को "पृथ्वी पर अजनाबी और तीर्थयात्री" मानते हुए वे "एक श्रेष्ठतर पवित्र देश" की प्रतीक्षा में थे। इब्रानियों 11:13,16 PPHin 71.1

कुछ समय तक दोनों वर्ग अलग रहे। अपने पहले वास से फैलकर, कैन का कूल, वहां तितर-बितर हे गया जहां शेत के वंशज रहा करते थे। दूसरे वर्ग, पहले वर्ग के दुष्प्रभाव से बचने के लिए पहाड़ो में चला गया और वहीं पर बस गया। जब तक वे अलग रहे, वे पवित्रता में परमेश्वर की आराधना करते रहे। लेकिन समय बीतने पर, धीमे-धीमे वे घाटी के निवासियों के साथ मेल-जोल बढ़ाने लगे। इस संगति का परिणाम अत्यन्त बुरा हुआ। "परमेश्वर के पुत्रों में मनुष्य की पुत्रियों को देखा कि वे सुन्दर थी ।" शेत के पुत्र, कैन के वंशजो की पुत्रियों की सुन्दरता से आकर्षित होकर उनके साथ अन्तरजीय विवाह के बंधन में बंध गये जिससे परमेश्वर अप्रसन्न हुआ। उन प्रलोभनो के माध्यम से जो लगातार उनके सामने थे, परमेश्वर के आराध्य पाप में पड़ गए और अपने पवित्र चरित्र को खो बैठे। दुष्टों की संगति में वे भी भावनाओं और कर्मो में उन्हीं की तरह हो गए। सातवीं आज्ञा के प्रतिबन्ध की अपेक्षा कर, "उन्होंने स्वयं की इच्छा अनुसार अपने लिए पत्नियों का चयन किया।" शेत के पुत्र 'कैन के रास्ते! पर चलने लगे। उन्होंने सांसारिक सम्पन्तता और भोग-विलास में अपने मन को स्थिर कर दिया और परमेश्वर की आज्ञाओं की उपेक्षा की। पुरूष "अपने ज्ञान में परमेश्वर को स्थान नहीं देना चाहते थे" "वे व्यर्थ विचार करने लगे, यहां तक कि उनका मूर्ख मन अन्धकारपूर्णहो गया""-रोमियो 1:21। इस कारण "परमेश्वर ने भी उन्हें उनके निकम्मे मन पर छोड़ दिया कि वे अनुचित काम करे"। पाप धरती पर घातक कोढ़ की तरह फैल गया। PPHin 71.2

लगभग एक हजार वर्षों तक, आदम मनुष्यों के बीच पाप के परिणामों का साक्षी बन कर रहा। बड़ी निष्ठा से वह पाप के समुद्र को बाँधने का प्रयत्न करता रहा। उसे आदेश दियागया था कि वह अपने वंशजो को परमेश्वर के बताए मार्ग की शिक्षा दे, और उसने अपने वंश परमेश्वर द्वारा प्रकाशित बातों को ध्यानपूर्वक संभाल कर रखा था और हर पीढ़ी के समक्ष दोहराया था। नवीं पीढ़ी तक,

अपने बच्चे व उनके बच्चों को उसने अदन में मनुष्य के पवित्र और खुशहाल निवास का वर्णन किया, उसके पतन के इतिहास को दोहराया। उसने उन्हें उन विपदाओं के बारे में बताया जिनके द्वारा परमेश्वर ने उन्हें उसके नियमों का गम्भीरता से आज्ञा पालन करने की आवश्यकता के बारे में सिखाया और उनके उद्धार हेतु अनुग्रहपूर्ण प्रयोजनों को समझाया ।लेकिन फिर भी कुछ ही लोगों ने उसकी बातों पर ध्यान दिया। अधिकांश उस पाप के लिये उलाहना दी जाती थी जिसके कारण उसके वंशजों पर आपदाएं आईं। PPHin 72.1

आदम का जीवन दुख, दीनता औरपश्चताप का था। अदन को छोड़ने पर, मृत्यु के विचार ने उसे भयभीत कर दिया। मानव परिवार में मृत्यु की वास्तविकता से उसका परिचय तब हुआ, उसका पहलौठा पुत्र कैन अपने ही भाई का हत्यारा बन गया। स्वयं के पाप के लिये घोर पश्चताप से भरा, हाबिल की मृत्यु और केन के तिरस्कार से शोकाकुल, आदम व्यथा की पराकाष्ठा से झुक गया। वह साक्षी था उस भ्रष्टाचार का जिसके कारण जल प्रलय द्वारा संसार का विनाश होना निश्चित था। हालांकि सृजनहार द्वारा दी गई मृत्यु की दण्डाज्ञा प्रारम्भ में भयानक प्रतीत हुईं, लेकिन लगभग हजार सालों तक पाप के परिणामों को देखकर, उसे लगा कि दुःख और पीड़ा से ग्रस्त जीवन का अन्त करने में परमेश्वर की दयालुता दिखाई देती है। जल प्रलय पूर्व संसार की दुष्टता के बावजूद, उस युग को, जैसा कि माना जाता है, नासमझी और वहशीपन का युग नहीं कहा जा सकता। मानव को नैतिक और बौद्धिक उपलब्धियों के उत्कृष्ट स्तर को प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया गया था। वे शारीरिक और मानसिक क्षमता के स्वामी थे और उनके पास धार्मिक और विज्ञान सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त करने के अतुल्य सुअवसर थे। यह धारणा रखना गलत होगा कि उनकी बुद्धि देर से परिपक्व होती थी क्योंकि वे बहुत वर्षो तक जीवित रहते थे, उनकी मानसिक योग्यता जल्दी विकसित होती थी और परमेश्वर का भय मानने वाले और उसकी इच्छा के साथ सामन्जस्य रखनेवाले, ज्ञान और विवेक में जीवनभर बढ़ते रहते थे। यदि हमारे युग के उत्कृष्ट विद्वानों की तुलना जलप्रलय पूर्व के समआयु पुरूषों के साथ की जाए तो वे शारीरिक और मानसिक क्षमता में बहुत कम प्रतीत होंगे। आयु के घटने के साथ मनुष्य की शारीरिक शक्ति व मानसिक योग्यता भी कम हो गयी है। अब पुरूष बीस से पचास वर्ष अध्ययन करने मे व्यतीत करते है ओर संसार उनकी उपलब्धियों की प्रशंसा से भर जाता है। लेकन तुलना करने पर, उन मनुष्यों की उपलब्धियाँ जिनकी मानसिक और शारीरिक योग्यताओं का सदियों तक विकास हुआ, वर्तमान उपलब्धियाँ बहुत सीमित है। PPHin 72.2

यह सच है कि आधुनिक युग के लोग उनके पूर्वजों की उपलब्धियों से लाभान्वित है। निपुण-बुद्धि पुरूष, जिन्होंने योजना बनाई, अध्ययन किया ओर लिखा, अपनी कृतियों को अनुसरण करने वालों के लिये छोड़ गये है। लेकिन इस सन्दर्भ में भी, जहाँ तक मानव ज्ञान का सम्बन्ध है, प्राचीन युग के लोग अधिक लाभान्वित थे। कई दशकों तक उनके मध्यस्थ वह था जिसे परमेश्वर के स्वरूप मे, बनाया गया था। जिसे स्वयं सृजनहार ने “अच्छा” कहा था- वह पुरूष जिसे परमेश्वर ने वस्तुगत

संसार से सम्बन्धित सम्पूर्ण शिक्षा दी थी। आदम ने सृष्टि का इतिहास सृजनहार से सीखा था, नौ सदियों की घटनाओं का वह स्वयं साक्षी था और उसने अपना ज्ञान अपने वंशजो को प्रदान किया। जल प्रलय पूर्व के वासियो के पास पुस्तकों का अभाव था और ना ही उनके पास लिखित अभिलेख थे, उत्तम शारीरिक और मानसिक उत्साह के साथ उनके पास उत्तम स्मरण-शक्ति थी जो उन्हें बताई गई बातों को पूर्णतया ग्रहण करने में और याद रखने में सक्षम बनाती थी और वे ज्ञान को उसी अवस्था में अपने वंशजो को प्रदान करते थे। सैकड़ो वर्षो तक सात पीढ़ियां इस धरती पर एक ही समय जीवित थी और इस कारण उनके पास एक दूसरे क साथ विचार विमर्श करने का और सबके ज्ञान और अनुभव से हर-एक को लाभान्वित करने का अवसर था। परमेश्वर के कामों द्वारा उसके ज्ञान को प्राप्त करने के लिए उस समय क मनुष्यों के पास अतुल्य अनुकूल परिस्थितियाँ थी। इस तरह धार्मिक अंधकार का युग ना होकर वह उत्तम प्रकाश का युग था। सम्पूर्ण जगत के पास आदम से शिक्षा प्राप्त करने का सुअवसर था और परमेश्वर से डरने वालों के पास मसीह और स्वर्गदूतों के रूप में शिक्षक थे। और परमेश्वर की वाटिका मे उनके पास सत्य का मूक साक्षी था, जो कई सदियो तक मनुष्य के बीच रहा। अदन की वाटिका के स्वर्गदूतों द्वारा संरक्षित द्वार पर परमेश्वर की महिमा प्रकट हुई और सर्वप्रथम आराध्य वहां आए। यहाँ पर उनकी वेदियों को उठाया गया और उनकी भेंटों को अर्पण किया गया। यहीं पर कैन और हाबिल अपने चढ़ावे लेकर आए, और परमेश्वर ने उनसे संपर्क की स्वीकृति दी। PPHin 73.1

संदेहवाद भी अदन के अस्तित्व को नकार नहीं सका क्योंकि वह दृश्यमान थाऔर उसके द्वार पर स्वर्गदूतों का पहरा था। सृष्टि का कम, वाटिका का प्रयोजन, मनुष्य की नियति से जुड़ा वहां के दोनो वृक्षों का इतिहास निर्विवाद तथ्य थे। परमेश्वर का अस्तित्व और श्रेष्ठ अधिकार, व्यवस्था का दायित्व, वे तथ्य थे जिन पर आदम की उपस्थिति मे मनुष्य कम सन्देह करता था। PPHin 74.1

प्रचलित दुष्टता के बावजूद, पवित्र व्यक्तियों के एक श्रेणी थी, जो परमेश्वर की संगति द्वारा उदात्त और उन्नत किये हुए ऐसे रहते थे, मानो स्वर्ग की संगति में हो। वे श्रेष्ठतर बुद्धि और प्रशंसनीय उपलब्धियों के पुरूष थे। उनके सामने एक महान और पवित्र लक्ष्य था- धार्मिकता के चरित्र को विकसित करना और केवल अपने समय के लोगों को ही नहीं, वरन् भविष्य की पीढ़ियों को भी धार्मिकता का पाठ पढ़ाना। पवित्र-शास्त्र में केवल सबसे अधिक महत्वपूर्ण विषयों का ही वर्णन है, लेकिन हर युग में परमेश्वर के निष्ठावान साक्ष्य व हृदय से सच्चे उपासक हुए है। PPHin 74.2

हनोक के लिये लिखा गया है कि पैंसठ वर्ष के होने पर उसको एक पुत्र पैदा हुआ। तत्पश्चात् वह तीन सौ वर्ष परमेश्वर के साथ-साथ चला। इन प्रारम्भिक वर्षो में हनोक ने परमेश्वर से प्रेम रखा और उसका भय माना और उसकी आज्ञाओं का पालन किया। वह पवित्रों की श्रेणी में से था, जो सच्चे विश्वास के संरक्षक थे और स्त्री के पुत्र के अग्रगामी थे। आदम के द्वारा उसने पतन की निराशाजनक कहानी और परमेश्वर कीप्रतिज्ञा में देखे गए अनुग्रह की कहानी सुनी और उसे आने

वाले मुक्तिदाता में विश्वास हो गया। लेकिन पहले पुत्र के जन्म पश्चातू, हनोक अनुभव की ऊंचाईयों पर पहुँचा और परमेश्वर के साथ उसका घनिष्ठ सम्बन्ध बना। उसे परमेश्वर की संतान जैसे स्वयं के कर्तव्य और दायित्व का स्पष्टता से आभास हुआ ।जब उसने पिता के लिए बालक का प्रेम देखा, उसके संरक्षण में उसका सरल विश्वास देखा, जैसे उसने स्वयं अपने पहलौठे पुत्र के लिये हृदय की ललकती नम्रता को अनुभव किया, उसने पुत्र के रूप में दिए गये उपहार में परमेश्वर के अद्भुत प्रेम का बहुमूल्य पाठ पढ़ा और उस विश्वास को पहचाना जो परमेश्वर की संतान अपने स्वर्गीय पिता में कर सकती है। मसीह द्वारा परमेश्वर का असीमित, अथाह प्रेम उसके लिए रात-दिन मनन का विषय बन गया और अपनी आत्मा के सम्पूर्ण उत्साह से वह उस प्रेम को उन लोगों को बताने के लिये प्रयत्न करने लगा, जिनके बीच वह रहता था। PPHin 74.3

हनोक का परमेश्वर के साथ चलना अवचेतन अवस्था या परिकल्पना में नहीं था। वह अपने दैनिक जीवन के हर कर्तव्य में उसके साथ चलता था। संसार को छोड़कर वह साधु नहीं बना, क्योंकि उसे इस संसार मेंपरमेश्वर के लिये एक कार्य करना था और परिवार में और लोगों के साथ संवाद करने में एक पिता और पति, एक दोस्त, एक नागरिक के रूप में, वह परमेश्वर का अडिग और अविचलित होने वाला सेवक था। PPHin 75.1

उसके हृदय और परमेश्वर की इच्छा मे सामन्जस्य था, क्योंकि "यदि दो मनुष्य परस्पर सहमत न हो, तो क्या वे एक संग चल सकेंगे"? आमोस 3:3 यह पवित्र भ्रमण वह तीन सौ तक करता रहा। कुछ मसीही यदि वे जानते कि उनके पास समय कम है या प्रभु का आना जल्द है तो भी हनोक से अधिक गंभीर और समर्पित नहीं होते। लेकिन समय के साथ हनोक का विश्वास दृढ़ होता चला गया और उसका प्रेम और अधिक बढ़ गया। PPHin 75.2

हनोक विस्तृत ज्ञान और अनोखी और अत्यधिक सभ्य विवेक का स्वामी था। उसको परमेश्वर ने असाधारण रहस्योद्घाटनों से सम्मानित किया था, लेकिन फिर भी स्वर्ग के साथ निरंतर सम्पर्क में रहकर, ईश्वरीय महानता और सिद्धता के आभास को निरंतर ध्यान मे रखकर वह सबसे दीन मनुष्यों में से एक था। जितना अधिक घनिष्ठ उसका परमेश्वर से सम्बन्ध था, उतना ही गहरा आभास उसे स्वयं की क्षीणता और असिद्धता का था। PPHin 75.3

अधर्मी लोगों की बढ़ती हुईं दुष्टता से दुखी और इस डर से कि उनकी श्रद्धाहीनता के कारणवश परमेश्वर के प्रति उसकी आस्था कम न हो जाए, वह उनकी संगति से दूर रहने लगा और स्वयं को ध्यान और प्रार्थना को समर्पित कर, वह एकान्त में अधिक समय व्यतीत करने लगा। इस प्रकार, परमेश्वर की इच्छा को और स्पष्टता से ज्ञात करने के लिये, ताकि वह उसकी इच्छा को पूराकर सके, वह परमेश्वर की सेवा में जुट गया। उसके लिए प्रार्थना आत्मा की श्वास समान थी। वह स्वर्ग के वातावरण में रहता था। PPHin 76.1

स्वर्गदूतों के माध्यम से परमेश्वर ने हनोक को जलप्रलय द्वारा संसार का विनाश करने का उद्देश्य ज्ञात कराया और उद्धार की योजना को भी स्पष्ट किया। भविष्यद्वाणी की आत्मा द्वारा उसने हनोक को जल प्रलय के पश्चात वास करने वाली पीढ़ियाँ दिखाई और यीशु के दूसरे आगमन और संसार के अन्त से सम्बन्धित घटनाओ को भी दिखलाया। PPHin 76.2

मृतकों के सम्बन्ध मे हनोक अशात था। उसे लगता था कि धर्मी और दुष्ट दोनें ही मिट्टी को प्राप्त होंगे और यही उनका अन्त होगा। वह सिद्ध मनुष्योंके मृत्योपरांत के जीवन की कल्पना नहीं कर सकता था। भविष्य सूचक दर्शन में उसे मसीह की मृत्यु सम्बन्धित निर्देश दिये गए और उसे दिखाया गया कि स्वर्गदूतों सहित यशस्वी यीशु अपने लोगों को मृत्यु से छुटकारा दिलाने आएगा। उसने यीशु के दूसरे आगमन के समय के संसार की भ्रष्ट अवस्था को देखा कि उस समय की पीढ़ी भी घमण्डी, ढीठ और स्वेच्छाधारी होगी, जो अद्वितीय परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह का तिरस्कार करेगी और उसकी आज्ञाओं को कूचल देगी और पश्चताप को तुच्छ समझेगी। उसने धर्मियों को महिमा और प्रतिष्ठा का मुकुट पहने देखा और दुष्टों को परमेश्वर की उपस्थिति से निष्कासित, आग से नष्ट होते देखा । PPHin 76.3

हनाक धार्मिकता का प्रचारक बन गया और परमेश्वर द्वारा दिए गए ज्ञान को लोगों के साथ बांटने लगा। परमेश्वर का भय मानने वाले उसकी शिक्षा और प्राथागा के भागीदार होने के लिये इस धर्मी पुरूष के पास आए। उसने सार्वजनिक तौर से भी श्रम किया। उसने उन सभी तक जो चेतावनी के कथन को सुनने के इच्छुक थे, परमेश्वर के सन्देश को पहुँचाया। उसका प्रयत्न शेत के वंश तक ही सीमित नहीं था। उस क्षेत्र में भी कैन परमेश्वर की उपस्थिति से भाग गया था। परमेश्वर के इस भविष्यवक्ता ने उन अद्भुत दृश्यों का वर्णन किया जो उसने दर्शन में देखे थे। "देखो, प्रभु अपने लाखों पवित्रों के साथ आया कि सबका न्याय करे, और सब भक्तिहीनों को उनकी भक्ति के सब कामों के विषय में जो उन्होंने भक्तिहीन होकर किये हैं, दोषी ठहराया।" यहूदा 14,15 PPHin 76.4

वह पाप का निडरता से आशक्षेप करने वाला था। अपने समय के लोगो को मसीह में परमेश्वर के प्रेम का प्रचार करतेहुए और उनसे बुराई का रास्ता छोड़ने का आवेदन करते हुए उसने प्रचलित दुष्टता की निंदा की और अपनी पीढ़ी के लोगों को चेतावनी दी कि अपराधी का न्याय अवश्य होगा।। हनोक के माध्यम से यीशुका पवित्र-आत्मा बोलता था; वह आत्मा केवल प्रेम, दयालुता और निवेदन की उक्तियों में ही प्रकट नहीं होता; पवित्र मनुष्य केवल सुखदायी बातें ही नहीं बोलते। परमेश्वर अपने सन्देशवाहकों के होठो पर और हृदय में उन सच्चाईयों को लाता है जो दो धार वाली तलवार के समान संवेदनशील और कट होती है। PPHin 77.1

परमेश्वर का सामर्थ्य जो उसके सेवक के द्वारा काम करता था, उसके सुनने वालों को अनुभव हुआ। कुछ ने चेतावनी को गम्भीरता से लिया और अपने पापों को त्याग दिया, लेकिन अधिकांश सुनने वालों ने इस महत्वपूर्ण सन्देश का उपहास किया और दुष्टता के तौर तरीको में निडरतापूर्वक

बढ़ते गए। ऐसा ही सन्देश परमेश्वर के दासों को अन्त समय में संसार में फैलाना है, और सुनने वाले उस पर अविश्वास करेंगे और उसका उपहास करेंगे। जल प्रलय पूर्व संसार ने उसकी चेतावनी के सन्देश को अस्वीकृत किया जो परमेश्वर के साथ चलता था। इसी प्रकार अन्तिम पीढ़ी परमेश्वर के संदेशवाहकों की चेतावनियों को तुच्छ समझेंगें। PPHin 77.2

सक्रिय श्रम के जीवन में भी हनोक ने परमेश्वर के साथ अपने अपने संपर्क को दृढ़ता से बनाए रखा। जितना महत्वपूर्ण और अत्यावश्यक उसका श्रम होता, उतनी ही प्रायः और निष्ठावान उसकी प्रार्थना होती। कई बार निश्चित काल के लिए, वह अपने आप को समाज से अलग रखता रहा। कुछ समय लोगों के बीच उनको निर्देश और उदाहरण से लाभान्वित करने का प्रयत्न करने के बादवह पवित्र ज्ञान, जो केवल परमेश्वर दे सकता है, की भूख और प्यास में एकान्तवास में चला जाता। इस प्रकार परमेश्वर के साथ संपर्कों में रहने से उसमें और अधिक पवित्र छवि प्रतिबिंबित होने लगी। उसके मुख पर पवित्र प्रकाश को तेज था, जैसे कि मसीह के मुख पर होता है। जबवह धार्मिक समागम प्राप्त करके आता था, उसकी मुखाकति पर स्वर्ग के प्रभाव को अधर्मी भी अचरज से देखते थे। PPHin 77.3

मनुष्य की दुष्टता इतनी बढ़ गयी कि उनके विरूद्ध विनाश की घोषणा की गईं। जैसे-जैसे वर्ष व्यतीत होते गए, मानव के अपराध बोध का समुद्र गहरा होता गया और ईश्वरीय न्याय के बादल गहराते गए। फिर भी हनोक, विश्वास का साक्षी, प्रतिशोध के वज्रपात के स्थगन के लिये, अपराध-बोध के प्रवाह को पीछे लौटाने के लिये प्रयत्नशील रहा और लोगों को निवेदन करते हुए चेतावनी देता रहा। हालांकि पापी, भोग-विलास के प्रेमी मनुष्यों ने उसकी चेतावनियों को महत्व नहीं दिया, पर हनोक के पास परमेश्वर द्वारा स्वीकृत साक्ष्य था और वह प्रचलित बुराई के विरूद्ध निष्ठावान होकर लड़ता रहा, जब तक कि परमेश्वर ने उसे पापमय संसार से हटाकर स्वर्ग के निर्मल आनन्द में स्थान दिया। PPHin 78.1

उस पीढ़ी के मनुष्यों ने उसकी मूर्खता का उपहास किया था, जिसने सोने और चांदी को जमा करने की चेष्टा नहीं की थी और ना ही संसार में सम्पत्ति इकटठा करने का प्रयत्न किया था, पर हनोक का हृदय अनंत धनसंग्रह पर केन्द्रित था। उसने स्वर्गीय नगर कादर्शन किया था। उसने सिय्योन के बीच राजा को अपने तेज में देखा था। उसका विवेक, उसका हृदय, उसका वार्तालाप सब स्वर्ग में केन्द्रित थे। जितनी अधिक प्रचलित दुष्टताथी, उतनी ही ज्यादा गम्भीर उसकी परमेश्वर के घर की लालसा थी। पृथ्वी पर वास करते हुए भी, विश्वास द्वारा वह प्रकाश के क्षेत्र में रहता था। PPHin 78.2

"धन्य हैं वे जिन के मन शुद्ध है, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे-मत्ती5:8 ।तीन सौ वर्ष तक हनोक आत्मा की शुद्धि का प्रयास कर रहा था ताकि वह स्वर्ग के साथ सामन्जस्य बना सके। तीन सदियों तक वह परमेश्वर के साथ चला था। दिन-प्रतिदिन घनिष्ठ मेल-मिलाप की उसकी लालसा रही थी और परमेश्वर के साथ उसके समन्वय में निकटता आई, जब तक कि परमेश्वर ने उसे अपने पास ले

लिया। वह आलौकिक संसार के द्वार पर खड़ा था, उसके और पवित्रों के देश के बीच में केवल एक सीढ़ी बाकी थी और अब मुख्य द्वार खुल गया। जो भ्रमण, वह परमेश्वर के साथ पृथ्वी पर करता था, वैसे ही करता रहा। और उसने पवित्र नगर के फाटकों को पार किया। स्वर्ग में प्रवेश पाने वाला वह पहला मनुष्य था। PPHin 78.3

उसका अभाव धरती पर अनुभव किया गया। प्रतिदिन निर्देश और चेतावनी देने वाली आवाज के अभाव को महसूस किया गया। कुछ धर्मियों ने व कुछ दुष्टों ने उसके प्रस्थान की देखा था, और इस आशा में कि उसे उसी के किसी एकांत स्थान में पहुँचा दिया गया होगा, उससे प्रीति रखने वाले उसे खोजने का प्रयत्न करने लगे, जैसे आने वाले समय में भविष्यवक्ताओं के पुत्रों ने एलिय्याह को ढूँढा था, लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिली। उन्होंने बताया कि वह नहीं रहा, क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया था। PPHin 78.4

हनोक के रूपांतरण से परमेश्वर ने एक सीख देनी चाही। यह आशंका थी कि आदम के पाप के भयावह परिणामों के कारण मनुष्य निराशा से भर जाएगा। कई इस भावना को अभिव्यक्त करने को तैयार थे, "परमेश्वर का भय मानना और उसके नियमों का पालन करना व्यर्थ है, क्योंकि पूरे वंश पर भारी शाप पड़ा है और सब मृत्यु के पात्र है"? लेकिन जो निर्देश परमेश्वर ने आदम को दिए, जो शेत द्वारा दोहराए गये, और हनोक द्वारा समझाये गये, उन निर्देशों ने निराशा और अन्धकार को दूर किया और मनुष्य को यह आशा दी कि जैसे आदम से मृत्यु आई, उसी तरह उद्धारकर्ता के माध्यम से जीवन और अमरता आएगी। शैतान मनुष्य को आग्रहपूर्वक विश्वास दिला रहा था कि न तो धर्मी मनुष्यों के लिये पुरूस्कार है और ना ही दुष्टों के लिये दण्ड और मनुष्य का परमेश्वर की आज्ञाओं को मानना असम्भव है। लेकिन हनोक के सम्बन्ध में परमेश्वर कहता है "कि वह है, और अपने खोजने वालों को प्रतिफल देता है" । इब्रानियों 11:6 PPHin 79.1

वह बताता है कि आज्ञा पालन करने वालों के लिए वह क्या करेगा। मनुष्य को सिखाया गया कि परमेश्वर की व्यवस्था को मानना सम्भव है। पापी और भ्रष्ट लोगों के बीच रहकर भी वे परमेश्वर के अनुग्रह से प्रलोमन में नहीं पड़ेगे और वे शुद्ध और पवित्र हो जाएंगे। उन्होंने उस के उदाहरण में ऐसे जीवन का परमानन्द देखा और उसका रूपान्तरित होना औरउठा लिया जाना, उसकी मृत्योपरांत सम्बन्धित भविष्यद्वाणी-आज्ञाकारीमनुष्यों के लिये आनन्द महिमा और अनन्त जीवन का पुरस्कार और अपराधी के लिए दण्डाज्ञा, दरिद्रता और मृत्यु- के सत्य का प्रमाण थी । इब्रानियों 11:5 में लिखा है, "विश्वास ही से हनोक उठा लिया गया कि मृत्यु को न देखे और उसके उठाए जाने से पहले उसकी यह गवाही दी गई कि उसने परमेश्वर को प्रसन्न किया है"। अपनी दुष्टता के कारण विनाश के लिये अभिशष्त संसार के बीच, हनोक ने परमेश्वर के साथ इतनी घनिष्ठ संगति का जीवन व्यतीत किया कि उसे मृत्यु की शक्ति से पराजित होने की अनुमति नहीं दी गई। इस भविष्यवक्ता का पवित्रापूर्ण चरित्र प्रतिनिधित्व करता है, पवित्रता की उस अवस्था का जो "पृथ्वी पर से मोल लिये

गए" (प्रकाशित वाक्य 14:3) मनुष्यों को मसीह के दूसरे आगमन के समय प्राप्त होगी। उस समय जल प्रलय के पूर्व के संसार के समान, दुष्टता प्रचलित होगी । मायावी विचारधारा की शिक्षा और स्वयं के भ्रष्ट हृदय के प्रबोधनों का अनुसरण करते हुए, मनुष्य स्वर्ग के अधिकार के प्रति विद्रोह करेंगे। लेकिन हनोक के समान, परमेश्वर के लोग उसकी इच्छा के प्रति अनुकूलता और हृदय की पवित्रता पाने का प्रयत्न उस समय तक करेंगे जब तक उनमें मसीह का स्वरूप प्रतिबिंबित न हो जाए। हनोक समान, वे संसार को मसीह के दूसरे आगमन की और अपराधियों के न्याय की चेतावनी देंगे और अपनी धर्म से भरी बातचीत और पवित्र उदाहरण से अधर्मी मनुष्यों के अपराधों की निंदा करेंगे। जैसे कि जल प्रलय से पहले हनोक को स्वर्ग में जीवित अवस्था में उठा लिया गया था, ऐसे ही जीवित धर्मी मनुष्यों को अग्नि द्वारा विनाश से पहले धरती पर से उठा लिया जाएगा प्रेरित कहता है, "हम सब नहीं सोएंगे, परन्तु सब बदल जाएंगे और यह क्षण भर में पलक झपकते ही अन्तिम तुरही फेकते ही होगा।" "क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतेरगा, उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूकी जाएगी।" "तुरही फूँकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएंगे, और हम बदल जाएंगे।" "और जो मसीह में मरे है, वे पहले जी उठेंगे। तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उनके साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे कि हवा में प्रभु से मिलेंगे और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे। इस प्रकार इन बातों से एक दूसरे को शान्ति दिया करो ।

अध्याय 7—जल प्रलय

यह अध्याय उत्पत्ति 6 और 7 पर आधारित है

नूह के दिनों में पृथ्वी आदम के अपराध और कैन द्वारा किये गए वध के परिणाम स्वरूप दोहरी तरह शापित थी। लेकिन फिर भी प्रकृति के स्वभाव में अधिक परिवर्तन नहीं आया था। क्षय क प्रत्यक्ष संकेत थे, लेकिन प्रथ्वी अभी भी विधाता के उपहारों से समृद्ध और सुहावनी थी। पहाड़, दाखलता की फल से लदी शाखाओं को सहारा देते, अत्यन्त सुन्दर वृक्षों का मुकुट पहने थे। फैली हुए, हरी घास का आवरण पहने वाटिका समान समतल भूमि, सैकड़ो तरह के फलों की महक से भरपूर थी। धरती पर लगने वाले फल अगणनीय व विविधतापूर्ण थे। उस समय के पेड़ आकार, सुन्दरता और सही अनुपात में अतुल्य थे। उनकी लकड़ी सूक्ष्म कणों वाली थी, पर पत्थर समान कठोर तत्व से बनी थी। सोना, चांदी और बहुमूल्य पत्थरों का भण्डार था। PPHin 81.1

मानव जाति में अभी भी लगभग वही प्रबलता थी। आदम का जीवन के वक्ष का सेवन करने के समय से अब तक कुछ ही पीढ़ियाँ निकली थी, और मनुष्य का जीवन अभी भी शताब्दियों में मापा जाता था। यदि उन चिरंजीवियों ने योजनाबद्ध करने की और योजनाओं को क्रियान्वित करने की अदभुत क्षमता से अपने आपको परमेश्वर की सेवा में समर्पित किया होता तो पृथ्वी पर विधाता का नाम प्रशंसनीय होता और उन्हें जीवन देने में उसके उद्देश्य का स्पष्टीकरण होता। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। उस समय कई असाधारण शक्ति वाले दीर्घकाय मनुष्य थे, जो ज्ञान के लिये सुप्रसिद्ध अदभुत और आकर्षक कामों में निपुण थे, पर उनका अधर्म को खुली छूट देने का अपराधबोध उनकी मानसिक क्षमता और निपुणता के तुल्य था। PPHin 81.2

परमेश्वर ने इन जलप्रलय पूर्व वासियों को कई बहुमूल्य उपहार दिये, परन्तु उन्होंने उसके वरदानों को अपनी महिमा के लिये उपयोग किया और अपनी आराधना विधाता पर केन्द्रित करने के बजाय उन वरदानों पर की, जिसके कारण वरदान शाप में बदल गए। उन्होंने सोने-चांदी, बहुमूल्य पत्थर व उत्कृष्ट लकड़ी का उपयोग अपने लिये घर बनाने में किया और वे उन घरों को अत्यधिक निपुण कार्य-कुशलता से सुसज्जित करने की चेष्टा में एक दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा करने लगे। वे अपने अंहकारी हृदयों की मनोकामनाओं को सन्तुष्ट करने में लगे थे और वे दुष्टता और उपयोग में आनंद लेने लगे। अपने ज्ञान में परमेश्वर को महत्व ना देते हुए वे जल्द ही उसके अस्तित्व को नकारने लगे। प्रकृति के परमेश्वर के स्थान पर वे प्रकृति को पूजने लगे। उन्होंने मानवीय प्रतिभा को गौरावान्वित किया, अपनी ही हस्तकतियों की पूजा की और अपनी संतान को मूर्तिपूजा करना सिखाया। PPHin 81.3

हरे-भरे मैदानों में और घने वृक्षों की छाया में अपनी मूर्तियां के लिये वेदियाँ बनाई। विशाल वृक्ष वाटिकाएं जो सदाबहार थी, उन्हें देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना के लिये समर्पित कर दिया गया। इन वाटिकाओं को सुन्दर उपवनों से सम्बद्ध कर दिया गया, जिनके छायादार मार्ग में हर तरह के फलदायी वृक्षों ने छज्जा सा बना रखा था और यहां मूर्तियों से सजावट की गई और उन सब वस्तुओं का प्रयोजन रखागयाजो मनुष्य की इन्द्रियों को लुभाते हुए, उनकी विलासमय कामनाओं को सन्तुष्ट करती है। इस तरह उन्हें मूर्तिपूजा में भाग लेने के लिये प्रलोभन दिया जाता था। PPHin 82.1

परमेश्वर को अपने ज्ञान से बाहर कर, मनुष्य स्वयं की कल्पना के प्राणियों को पूजने लगे और इस तरह भ्रष्टाचार बढ़ता गया। मूर्तिपूजा करने से उपासक पर जो प्रभाव पड़ता है उसे भजन संहिता का लेखक इस प्रकार वर्णन करता है-' जैसी वे हें वैसे ही उनके बनाने वाले हैं, और उन पर सब भरोसा रखने वाले भी वैसे ही हो जाएंगे"-भजन संहिता 115:8। मानव-मन का यही नियम है कि देखने से हम परिवर्तित हो जाते है। जितनी उसकी सच्चाई, पवित्रता और धार्मिकता की समझ है, मनुष्य उतना ही ऊँचा उठेगा। यदि उसका विवेक मानवता के स्तर से ऊपर नहीं उठता, यदि वह असीमित बुद्धिमता और प्रेम का मनन करने हेतु विश्वास द्वारा ऊपर नहीं उठता तो मनुष्य का स्तर नीचा हो होता जाता है। झूठे देवी-देवताओं के उपासक उन्हें मानवीय गुणों और इच्छाओं के आवरण से सजाते थे, इसलिये उनके चरित्र का स्तर पापमय मानवता के स्वरूप विकृत हो गया। इसके परिणामस्वरूप वे अशुद्ध हो गए। "यहोवा ने देखा कि मनुष्यों की बुराई पृथ्वी पर बढ़ गई है, और उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है वह निरन्तर बुरा ही होता है। उस समय पृथ्वी परमेश्वर की द्दष्टि में बिगड़ गई थी और हिंसा से भर गईं थी ।" परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी पवित्र आज्ञा जीवन के नियम के रूप में दी थी, लेकिन उसकी आज्ञा का उललघंन हुआ और हर बोधगम्य पाप परिणाम के रूप में सामने आया। मनुष्य की दुष्टता सार्वजनिक और निर्भीक थी, न्याय को मिट्टी में मिला दिया गया और उत्पीड़ित मनुष्यों की पुकार स्वर्ग तक पहुँची । PPHin 82.2

प्रारम्भ में किये गए ईश्वरीयप्रयोजन के विपरीत बहुर्विवाह का प्रचलन बहुत जल्दी शुरू हुआ। परमेश्वर ने आदम को एक ही पत्नी देने के संदर्भ में अपनी योजना बताई थी। लेकिन पतन के पश्चात् मनुष्य ने अपनी पापमय अभिलाषाओं का अनुसरण किया और इसके फलस्वरूप दरिद्रता और अपराध तेजी से बढ़ने लगे। वैवाहिक सम्बन्ध और सम्पत्ति के अधिकार की मान्यता समाप्त हो गई। जो भी अपने पड़ोसी की पत्नी या उसकी सम्पत्ति के लिए ललचाता वह उसे बलपूर्वक ले लेता और मनुष्य उनके हिसंक कार्यों में आनन्दित होते। उन्हें जीव-जन्तुओं के जीवन को नष्ट करने में आनंद आता और मांस के सेवन ने उन्हें इतना कर और खून का प्यासा बना दिया कि वह मनुष्य के जीवन के प्रति भी लापरवाह हो गये। PPHin 83.1

संसार अभी अपनी प्रारम्भिक अवस्था में ही था, लेकिन दुष्टता इतनी बढ़ गईं कि परमेश्वर उसे और न सह सका और उसने कहा "मैं मनुष्य को जिसकी मैंने सृष्टि की है, पृथ्वी के ऊपर से मिटा

दूँगा"। उसने कहा कि उसका आत्मा अपराधी वंश में सदा विवाद न करता रहेगा। यदि वह संसार और उसकी बहुमूल्य निधि को अपने पापों से दूषित करना बन्द नहीं करेगा तो वह उसे अपनी सृष्टि में से मिटा देगा और उन सभी वस्तुओं को भी नष्ट कर देगा, जिनसे उसने संसार को प्रसन्नतापूर्वक आशीषित किया था।उसने कहा कि जीव-जन्तुओं और खाद्य-सामग्री की आपूर्ति करने वाली वनस्पति को भी नष्ट करके, सुन्दर पृथ्वी को निर्जनता और खंडहर के विशाल दृश्य में परिवर्तित कर देगा । PPHin 83.2

प्रचलित भ्रष्टाचार के बीच मतूशेलह, नूह और कई दूसरों ने सच्चे ईश्वर के ज्ञान को जीवित रखने और बढ़ती हुईं नैतिक बुराईयों को स्थगित करने का प्रयत्न किया। जलप्रलय से एक सौ बीस वर्ष पूर्व परमेश्वर ने पवित्र दूत द्वारा नूह को अपनी योजना बताई और उसे जहाज बनाने को कहा। जहाज बनाते समय,उसे प्रचार करना था कि दुष्टों के विनाश के लिए परमेश्वर पृथ्वी पर जलप्रलय लाने को था। उसे उन्हें यह भी बताना था कि जो उस सन्देश में विश्वास करेंगे और प्रायश्चित और मन परिवर्तन द्वारा उस घटना के लिये तैयारी करेंगे उन्हें क्षमा किया जाएगा और वे बचाए जाएंगे। हनोक ने जलप्रलय सम्बन्धित बातें, जो परमेश्वर ने उसे बताई थी, अपने बच्चों को दोहराई थी। मतूशेलह और उसके पुत्रों ने जो नूह के प्रचार करने के समय जो जीवित थे, जहाज बनाने में नूह की सहायता की । PPHin 83.3

परमेश्वर ने नूह को जहाज के निर्माण की हर विशिष्टता सम्बन्धी समुचित परिमाण और निर्देशन दिया। मानवीय क्षमता इतनी चिरस्थायी और मजबूत आकार की कल्पना करने में असमर्थ थी। परमेश्वर इस आकार का रूपकार था और नूह इसका राजमिस्त्री था। इसका निर्माण जहाज की काटी या पेंद जैसा था, तांकि वह पानी पर तैर सके, लेकिनकई तरह से वह लगभग घर के समान था। वह तीन मंजिल ऊँचा था, लेकिन उसमें एक ही द्वार था जो एक तरफ था। प्रकाश का प्रवेश ऊपर से था और विभिन्न कक्ष इस कम में थे कि सब जगह प्रकाश पहुँच जाता था। उसके निर्माण में सामग्री के रूप में साइप्रेस या गोफर की लकड़ी का उपयोग किया गया, क्योंकि यह सैकड़ो सालों तक सड़ती या गलतीनहीं है। इस आकार का निर्माण करना एक चिरकाल और कठिन कार्यविधि थी । हालांकि उस काल के मनुष्य अधिक प्रबल थे लेकिन फिर भी वृक्षों के बड़े आकार और लकड़ी के स्वभाव के कारण इमारती लकड़ी तैयार करने में आज से कहीं अधिक श्रम करना पड़ता था। मनुष्य की क्षमता अनुसार रचना को उत्तम बनाने का यत्न किया गया, लेकिन फिर भी जहाज अपने आप में आने वाले तूफान का सामना नहीं कर सकता था। केवल परमेश्वर ही तूफानी जलप्रलय में अपने सेवकों की सुरक्षा कर सकता था। इब्रानियों11:7 में लिखा है, "विश्वास ही से नह ने उन बातों के विषय में जो उस समय दिखाई न पड़ती थी, चेतावनी पाकर अपने घराने के बचाव के लिए जहाज बनाया और उसके द्वारा उसने संसार को दोषी ठहराया और उस धार्मिकता का वारिस हुआ, जो विश्वास से होता है।" जब नूह अपना चेतावनीपूर्ण सन्देश संसार को दे रहा था, उसके कामों ने उसकी निष्कपटता की गवाही दी। इस तरह उसका विश्वास परखा गया और

प्रमाणित हुआ। उसने संसार को केवल परमेश्वर की कहीं बातों पर विश्वास करने का उदाहरण दिया।उसने अपनी सारी सम्पत्ति का निवेश जहाज में कर दिया। जैसे ही उसने सूखी भूमि पर उस विशाल नाव का निर्माण आरम्भ किया, हर दिशा से इस एकमात्र प्रचारक के दृढ़ और उत्साहवर्धक सन्देश को सुनने और उस अद्‌भुत दृश्य को देखने के लिये भीड़ उमड़ी। जहाज पर किया गया हर वार मनुष्यों के लिये एक साक्षी था। PPHin 84.1

कई लोग प्रारम्भ में चेतावनी को ग्रहण करते प्रतीत हुए, लेकिन वह सच्चे पश्चाताप के साथ परमेश्वर की तरफ नहीं बड़े। वे अपने पापों को त्यागना नहीं चाहते थे। जलप्रलय से पहले जो समय दिया गया, उसमें उनके विश्वास को परखा गया और वे इस परीक्षा में खरे नहीं उतरे। प्रचलित अविश्वास से पराजित, वे इस गम्भीर सन्देश को अस्वीकार करने में अपने पुराने साथियों के साथ सम्मिलित हो गए। कु़छ दोषसिद्ध भी हुए और उन्होंने चेतावनी भरे शब्दों पर ध्यान भी दिया होता, लेकिन ताना मारने वाले और उपहास करने वाले इतने थे कि इनमें भी वह भावना उत्पन्न हो गई और वे दया के निमन्त्रण को नकार कर सबसे अधिक निर्भक और ललकारने वाले ठटठेबाजों के गुट में जुड़ गए, क्योंकि इतने निर्भीक वही हो सकते है और पाप की सीमाएं वहीं लांघ सकते है जिनके पास पहले प्रकाश रहा हो, लेकिन उन्होंने परमेश्वर के दोष सिद्ध करने वाले आत्मा का विरोध किया हो। PPHin 85.1

उस पीढ़ी के सभी लोग मूर्तिपूजक नहीं थे। कई दिखाते थे कि वे परमेश्वर के उपासक हैं। वे दावा करते थे कि उनकी मूर्तियां उसी ईश्वर का प्रतिनिधि थीं और उनके द्वारा उन्हें ईश्वरीय अस्तित्व की स्पष्ट धारणा मिलती है।यह श्रेणी नूह के प्रचार को अस्वीकार करने में सबसे आगे थी। परमेश्वर का प्रतिनिधित्व मूर्त वस्तुओं से करने के यत्न से वे उसके तेजस्व और सामर्थ्य को देखने में असमर्थ हो गए; उन्हें उसके चरित्र की पवित्रता, या उसके विधि-विधान की पवित्रता और अपरिवैतनीयता की अनुभूति होना समाप्त हो गया। पाप अब साधारण विषय था, और इसलिये वह कम पापी प्रकट होने लगे और अन्त में उन्होंने यह घोषणा कर दी कि ईश्वरीय व्यवस्था अब प्रचलन में नहीं थी। वे कहने लगे कि पाप के लिये दण्डाज्ञा देना परमेश्वर के चरित्र के प्रतिकूल है और वे इस बात से असहमत थे कि धरती पर उसका न्याय होगा। यदि उस पीढ़ी के मनुष्यों ने ईश्वरीय व्यवस्था का पालन किया होता तो परमेश्वर के दूत की चेतावनी में उन्होंने परमेश्वर की आवाज को पहचाना होता, लेकिन प्रकाश का तिरस्कार कर उनका विवेक इतना अंधा हो गया था कि वेनूह के संदेश को एक भ्रान्ति मानने लगे। PPHin 85.2

सही को बहुमत नहीं मिला। संसार परमेश्वर के न्याय और उसकी व्यवस्था के विरूद्ध खड़ा था और नह को कटटरपंथी माना गया। हवा को परमेश्वर का कहा न मानने के लिये प्रभावित करने के उद्देश्य से शैतान ने उससे कहा, “तुम अवश्य नहीं मरोगे”-उत्पत्ति 3:4। सांसारिक प्रतिष्ठित और बुद्धिमान महानुभवों ने भी यहीं कहा। उन्होंने कहा “परमेश्वर की चेतावनी डराने के उद्देश्य से दी

गई है, वे कभी भी पूरी नहीं होगी। तुम्हें सतर्क होने की आवश्यकता नहीं। संसार के विनाश की घटना उस परमेश्वर द्वारा जिसने संसार की स्वयं सृष्टि की, और स्वयं के रचित प्राणियों को दण्ड देना, कदापि सम्भव नहीं है। शान्त रहो, डरो मत, नूहएक असभ्य कटटरपंथी है।"संसार भ्रमित (जैसा कि लोग समझते थे) बूढ़े आदमी की मूर्खता की हंसी उड़ाते थे। परमेश्वर के समक्ष अपने मनों को दीन करने के बजाय, वे अवज्ञा करने और दुष्टता में ऐसे बने रहे जैसे कि परमेश्वर ने अपने दास के माध्यम से उनसे कभी बात नहीं की हो। PPHin 85.3

लेकिन नूह तूफान के बीच चट्टान के समान खड़ा रहा। तिरस्कार और उपहास से घिरे हुए, उसने अपनी पवित्र सत्यनिष्ठा और अविचल भक्ति से स्वयं को विशिष्ट बनाया। उसकी कही बातें प्रभावशाली थी क्योंकि वह परमेश्वर की वाणी थी जो उसके दास के माध्यम से मनुष्य तक पहुँचायी गईं थी। परमेश्वर की संगति ने उसमें असीमित क्षमता का स्वामी बना दिया था। एक सौ बीस वर्षो तक वह उस पीढ़ी के कानों तक उन घटनाओं से सम्बन्धित गम्भीर सन्देश पहुँचाता रहा, जिनकी कल्पना करना मानव बुद्धि के लिये असम्भव था। PPHin 86.1

जलप्रलय पूर्व के संसार ने तक रखा कि सदियों से प्रकृति के नियम निर्धारित थे। बदलती ऋतुएं अपने कमानुसार आईं थीं। इससे पहले कभी वर्षा नहीं हुई थी; धरती ओस या कोहरे सेनम होती थी। नदियों ने कभी अपनी सीमा नहीं लांघी थी, वरन् अपने जल को समुद्र में सुरक्षित पहुँचाया था। निश्चित नियमों ने जल को अपने परिक्षेत्र के ऊपर से बहने से रोक रखा था। तर्कसंगत मनुष्यों ने उसके हाथों को मान्यता न दी जिसने जल को ऐसा कहकर नियन्त्रित किया था-"यहीं तक आ और आगे न बढ़" । अय्यूब 38:11 PPHin 86.2

समय के बीतने पर जब प्रकृति में कोई प्रत्यक्ष परिवर्तन नहीं आया तो कभी-कभी डर से कापंने वाला मनुष्य का हृदय, आश्वस्त हो गया। वर्तमान के तर्कसंगत मनुष्यों के समान, उन्होंने भी तक रखा कि प्रकृति, प्रकृति के विधाता से ऊपर है और उसके नियम इतनी दृढ़ता से स्थापित है कि परमेश्वर स्वयं उन्हें नहीं बदल सकता । यह कहते हुए कि यदि नूह का सर्देश सही होता तो प्रकृति के कम में परिवर्तन आता और इस तरह उन्होंने लोगों के विचारों में नूह के संदेश को एक भ्रान्ति के रूप मे बैठा दिया। उन्होंने परमेश्वर की चेतावनी के तिरस्कार की अभिव्यक्ति,चेतावनी केपहले जैसा करने में की। वे उत्सव और लोलुपतापूर्ण भोजों में आनन्द लेते रहे, खाते रहे और मद्यपान करते रहे, बोते और निर्माण करते रहे, भविष्य में लाभ की आशा में योजनाएं बनाते रहे, और वे दुष्टता से और परमेश्वर के नियमों का निर्लज्जता से तिरस्कार करते रहे, जिससेयह प्रमाणित हुआ कि उन्हें परमेश्वर का कदापि भय नहीं था। उन्होंने दावा किया कि यदि नूहकी बातों मे सच्चाई होती तो उस विषय को प्रतिष्ठित व बुद्धिमान महापुरूष अवश्य समझते । PPHin 86.3

यदि जलप्रलय पूर्व वासियों ने चेतावनी में विश्वास किया होता तो परमेश्वर का कोध शान्त हो जाता, जैसाकि नीनवे के संदर्भ में हुआ था ।लेकिन परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता की चेतावनियों, और

अंतकरण की असहमति के प्रति अपने हठीले प्रतिरोध के कारण इस पीढ़ी की दुष्टता चरम सीमा पर पहुँच गई और विनाश के लिये परिपक्व हो गई । PPHin 87.1

उनकी परख-अवधि समाप्त होने को थी। नूह ने परमेश्वर द्वारा दिये गऐ निदशों का निष्ठापूर्वक अनुसरण किया था। परमेश्वर के निर्देशानुसार जहाज पूरी तरह से बन चुका था और मनुष्य व जीव जंतुओं की खाद्य-सामग्री के भण्डार उसमें भर दिये गए थे, और अब परमेश्वर के दास ने लोगों से अपनी अन्तिम सौम्य विनती की। अवर्णनीय इच्छा से प्रेरित होकर जो पीड़ा की सीमा तक प्रबल थी,उसने उन्हें शरणस्थान ढूंढने को कहा जब वह सम्भव था। लेकिन उन्होंने फिर अपनी असहमति प्रकट की और सबने मिलकर उसका ठटठा और उपहास किया। अकस्मात ही उपहासपूर्ण भीड़ में सन्नाटा छा गया। हर श्रेणी के जीव-जन्तु खुंखार एवं नम्र, पहाड़ों और जंगल की ओर से जहाज की और चुपचाप आते हुए दिखाई दिए। तेज हवा का स्वर सुनाई दिया और हर दिशा से, आकाश को अन्धकारमय सा बनाते हुए, पक्षी भी जहाज की ओर सही कम में आते दिखाई दिए। जन्तु-जगत ने परमेश्वर की आज्ञा को माना जबकि मनुष्य अनाज्ञाकारी था। पवित्र दूतों के निर्देशन में 'वे जोड़े से नूह के जहाज में गए' और शुद्ध जन्तुओं के सात-सात जोड़े झुण्ड में गए। संसार आश्चर्यचकित होकर देखता रहा व कुछ भयभीत हो गए; दार्शनिकों को इस अद्वितीय घटना को समझने के लिये बुलाया गया, लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। यह ऐसा रहस्य था जिसको वे भी नहीं समझ पाए। लेकिन प्रकाश की निरंतर अवमानना करने से मनुष्य इतना कठोर हो गया था कि यह दृश्य भी क्षणभंगुर प्रभाव ही उत्पन्न कर सका । चमकते सूर्य की गरिमा और लगभग अदन जैसी सुन्दरता से ढकी पृथ्वी को निहारते हुए, उन्होंने अपनी जोशपूर्णकीड़ा से डर को दूर कर दिया और अपने हिंसक कार्यों से परमेश्वर के पहले से ही जागे हुए कोध को न्योता दिया। PPHin 87.2

परमेश्वर ने नूह को आज्ञा दी, "तू अपने सारे घराने समेत जहाज में जा क्योंकि मैंने इस समय के लोगों में से केवल तुझी को अपनी दृष्टि से धर्मी पाया है" । नह की चेतावनियों को संसार ने अस्वीकार किया, लेकिन उसके प्रभाव और निष्ठा के फलस्वरूप उसके परिवार को आशीषें प्राप्त हुई। उसकी निष्ठा और पवित्रता के पारितोषिक के रूप में परमेश्वर ने उसे और और उसके परिवार के सभी सदस्यों को बचा लिया। यह माता-पिता का निष्ठावान होने के लिये प्रोत्साहन की बात है। PPHin 88.1

अनुग्रह ने अपराध बोध से ग्रसित वंश के लिये अनुनय-विनय करना समाप्त कर दिया था। भूमि के जन्तु और आकाश के पक्षियों ने शरणस्थान में प्रवेश कर लिया था। नूह और उसका घराना भी जहाज के भीतर थे "तब यहोवा ने जहाज का द्वार बन्द कर दिया"; चौंधियाने वाली ज्योति का प्रकाश दिखाई पड़ा और स्वर्ग से एक महिमापूर्ण बादल उतरा जो उस प्रकाश से भी उज्जवल था और जहाज के प्रवेश द्वार पर मंडराने लगा। वह विशाल द्वार, जिसे भीतर गए प्राणियों द्वारा बंद

किया जाना असम्भव था, अदृश्यों हाथों द्वारा बन्द कर दिया गया। नूह भीतर बंद हो गया और परमेश्वर के अनुग्रह का तिरस्कार करने वाले बाहर रह गए। PPHin 88.2

वह द्वार स्वर्ग द्वारा मुहरबन्द था, उसे परमेश्वर ने स्वयं बंद किया था और वही उसे खोल सकता था। इसी तरह जब मसीह अपराध बोध से ग्रसित मनुष्यों के लिये मध्यस्थता करना बन्द कर देगा, स्वर्ग के बादलों पर उसके आगमन से पहले अनुग्रह का द्वार बन्द कर दिया जाएगा। ईश्वरीय अनुग्रह दुष्टों को फिर बाधित नहीं करेगा और जिन्होंने अनुग्रह को स्वीकार नहीं किया उन पर शैतान का पूर्ण नियन्त्रण हो जाएगा। वे परमेश्वर के लोगों का विनाश करने के चेष्ठा करेंगे, लेकिन जैसे नूह को जहाज में बदं कर दिया गया था, उसी तरह धर्मी ईश्वरीय सामर्थ्य के संरक्षण में होंगे। PPHin 88.3

नूह और उसके परिवार के जहाज में प्रवेश होने पर सात दिन तक आने वाले तुफान का कोई संकेत नहीं दिखा। इस अवधि में उनके विश्वास को परखा गया। बाहर के संसार के लिये यह विजय का समय था। सदृश्य विलम्ब ने उनके इस विश्वास का समर्थन किया कि नूह का संदेश एक भ्रान्ति था और यह कि जलप्रलय कभी नहीं आएगा। उन गम्भीर घटनाओं के साक्षी होने के उपरान्त भी- पशुओं और पक्षियों का जहाज में प्रवेश करना, परमेश्वर के दूत द्वारा द्वार का बन्द किया जाना- वे मनोरंजन और आनन्दोत्सव में लगे रहे और ईश्वरीय सामर्थ्य के संकेतक प्रदर्शन का ठट्ठा करने में भी नहीं चूके। जहाज के चारों ओर एकत्रित होकर वे और दुस्साहसी उग्रता से भीतर गए लोगों का उपहास करने लगे जैसा उन्होंने पहले कभी नहीं किया था। PPHin 88.4

लेकिन आठवें दिन आकाश में घने बादल छा गए। मेघगर्जन होने लगा और बिजली चमकने लगी। वर्षा की बड़ी-बड़ी बूँदे गिरने लगी। संसार में ऐसा कभी नहीं हुआ था और मनुष्यों के हृदय भयभीत हो गए। अब वे गोपनीयता से पूछताछ करने लगे, "क्या ऐसा हो सकता है कि नूह सही था और पृथ्वी का सर्वनाश निश्चित है?" आकाश गहराता गया और वर्षा तेजी से पड़ने लगी। पशु भयभीत होकर घूमने लगे और उनका कर्कश स्वर जैसे उनके और मनुष्य के भाग्य का शोक मना रहा था। फिर "गहरे समुद्र के सब सोते फूट निकले और आकाश के झरोखे खुल गए" जल बादलों में से झरनों की तरह गिरता प्रतीत होने लगा। नदियों ने अपने बांध तोड़ दिए और घाटियों को डुबो दिया। अवर्णनीय शक्ति के साथ धरती से पानी के सोते फट पड़े, जिनके साथ विशाल पत्थर वातावरण में कई फीट ऊँचे उछले और गिरने पर धरती में समा गए। PPHin 89.1

लोगों ने पहले अपनी हस्तकृतियों का विनाश होते देखा। उनके वैभवशाली भवन, सुन्दर उद्यान और वृक्ष वाटिकाएं जहां उन्होंने मूर्तियाँ स्थापित की थीं, आकाश से बिजली गिरने से नष्ट हो गए और उनके टूटे-फूटे अंश दूर-दूर तक फैल गए। वे वेदियाँ जिन पर मलेबलि चढ़ाई जाती थी गिरा दी गई और इनके उपासकों को जीवित परमेश्वर की सामर्थ्य के सामने कांपने को बाध्य किया गया और उन्हें ज्ञात कराया गया कि यह सर्वनाश उनके भ्रष्टाचार और मूर्तिपूजा के कारण हुआ था। PPHin 89.2

जैसे-जैसे तूफान की प्रचण्डता बड़ी, पेड़, भवन, पत्थर और मिट्टी हर दिशा में उछाले गए। मनुष्य और जन्तुओं का भय वर्णन के बाहर था। तूफान की दहाड़ से ऊंचा उन लोगों के रोने का स्वर था जिन्होंने परमेश्वर के सामर्थ्य की अवमानना की थी। युद्धरत तत्वों के बीच रहने के लिए बाध्य, शैतान भी स्वयं के अस्तित्व के लिये भयभीत था। एक शक्तिशाली वंश पर नियन्त्रण करने के विचार से वह प्रफुल्लित था, और उसकी इच्छा थी कि वे जीवित रहकर अपनी घृणा का अभ्यास करेंगे और स्वर्ग के राजा के प्रति विद्रोह करते रहेंगे। अब वह परमेश्वर को अन्यायी और निर्दयी होने का आरोप लगाते हुए शापित करने लगा। शैतान की तरह, कई लोगों ने ईश्वर की निंदा की और यदि वे सक्षम होते तो वे परमेश्वर को उसके सिंहासन से उतार देते। अन्य भय से विचलित होकर जहाज की ओर हाथ उठाए प्रवेश के लिए विनती कर रहे थे। लेकिन अब उनकी विनती व्यर्थ थी। अंतकरण आखिरकार जागृत हुआ, यह ज्ञात करने के लिए कि परमेश्वर है जो स्वर्ग पर राज्य करता है। उन्होंने उसे बड़ी गम्भीरता से पुकारा, लेकिन अब उसके कान उनके विलाप को सुनने के लिये बन्द थे।। उस भयानक घड़ी में उन्हें ज्ञात हुआ कि परमेश्वर की आज्ञा न मानने के कारण उनका विनाश हुआ। लेकिन अभी भी दण्डाज्ञा के डर से उन्होंने अपने पाप का अंगीकार तो किया, लेकिन उन्हें यथार्थ में पछतावा नहीं थाऔर ना ही पाप से घृणा थी। यदि उन्हें न्यायमुक्त कर दिया जाता, तो वह फिर से स्वर्ग का विरोध करने में जुट जाते। इसलिये जब आग द्वारा सर्वनाश से पहले धरती पर परमेश्वर द्वारा न्याय किया जाएगा,अपश्चतापी मनुष्यों को ज्ञात कराया जाएगा कि उनका पाप कहां और क्या है-परमेश्वर की पवित्र व्यवस्था की अवज्ञा और इनका पछतावा भी उस युग के पापियों से अधिक नहीं होगा । PPHin 89.3

कईयों ने बलपूर्वक जहाज में प्रवेश होने का दुस्साहस किया, लेकिन दृढ़ता से निर्मित उस आकार ने उनके प्रयत्नों को विफल कर दिया। कई जहाज से उस मसय तक लटक रहे जब तक पानी का उफान उन्हें बहा न ले गया या जब तक कि जहाज और पेड़ो व चट्टानों के बीच टक्कर होने से उनके हाथ न छूट गए हों। एक लहर से दूसरी लहर पर उछाला गया, निर्दयी हवा की मार को झेलते हुए वह विशाल जहाज पूरी तरह से कांप रहा था। भीतर बन्द हुए जन्तुओं की चिललाहाट में भय और पीड़ा की अभिव्यक्ति थी। लेकिन युद्धरत तत्वों के बीच वह सुरक्षित तैरता रहा। शक्तिशाली स्वर्गदूतों को उसके संरक्षण के लिये नियुकत किया गया था। PPHin 90.1

तूफान के सामने अनाश्रित जन्तु मानों सहायता की आशा मे मनुष्य की तरफ दौड़े। कुछ लोगो ने स्वयं की ओर अपने बच्चों को सबल पशुओं परबांध दिया, यह जानते हुए कि हठी व शक्तिशालीहोने के कारण पशु उमड़ते जल से बचाव के लिये सबसे ऊंचे स्थान पर चढ़ जाएंगे। कुछ ने स्वयं को ऊंचे पर्वतों और पहाड़ो के शिखर पर लगे वृक्षों से बांध लिया, लेकिन मनुष्य के भार से वृक्ष जड़ से उखड़ कर लहरों पर जा गिरे। एक के बाद एक प्रत्येक स्थान, जहां सुरक्षा प्रतीत होती थी, नष्ट हो गया। जैसे-जैसे जल का स्तर बढ़ता गया, लोग शरण लेने सबसे ऊंचे पर्वतों की

ओर भागे। कई बार पैर टिकाने के स्थान के लिये मनुष्य और पशु दोनों संघर्ष करते, लेकिन फिर दोनों बहा लिये जाते । PPHin 90.2

सबसे ऊंचे शिखर से मनुष्य ने एक अपार समुद्र को देखा। परमेश्वर की चेतावनियाँ अब ठट्ठा और उपहास का विषय नहीं रही। कितने इच्छुक थे अब वे उन अवसरों के जिनका उन्होंने तिरस्कार किया था, कितनी विनती की उन्होंने एक घण्टे की परख-अवधि के लिए, कृपा के एक और विशेषाधिकार के लिये, नूहके होठों से एक पुकार के लिए, लेकिन अब दया से पूर्ण मधुर वाणी उनके कानों में नहीं पहुँची। प्रेम, जो किसी भी तरह न्याय के तुल्य कम न था, की मांग थी कि पाप पर परमेश्वर के न्याय द्वारा रोक लगाई जाए। प्रतिशोध से पूर्णसमुद्र उनके अन्तिम आश्रय को भी बहा ले गया और परमेश्वर से घृणा करने वालेसमुद्रकी गहराई में नष्ट हो गए ।पतरस 3:5-7 में लिखा है, "वचन के द्वारा आकाश प्राचीन काल से विद्यमान है और पृथ्वी भी जल में से बनी और जल में स्थिर है। इसी कारण उस युग का जगत जल में डूब कर नष्ट हो गया। फिर वर्तमान काल के आकाश और पृथ्वी उसी वचन के द्वारा इसलिए रखे गए है कि जलाए जाएं और ये भक्तिहीन मनुष्यों के न्याय और नष्ट होने के दिन तक ऐसे ही रहेंगे। एक और तूफान आने वाला है। पृथ्वी एक बार फिर परमेश्वर के प्रचण्ड क्रोध द्वारा समाप्त कर दी जाएगी और पाप और पापियों को नष्ट कर दिया जाएगा। PPHin 91.1

जिन पापों के कारण जलप्रलयपूर्व संसार दंडित हुआ वही पाप आज भी विद्यमान है। मनुष्य के हृदयों में परमेश्वर का भय नहीं और उसकी व्यवस्था को उदासीनता और घृणा से देखा जाता है। उस पीढ़ी की अत्यधिक सांसारिकता वर्तमान पीढ़ी की सांसारिकता के बराबर है। मत्ती 24:38,39 में लिखा है, "क्योंकि जैसे जल-प्रलय से पहले के दिनों में, जिस दिन तक कि नूह जहाज पर न चढ़ा, उस दिन तक लोग खाते पीते थे, और उनमें विवाह होते थे। और जब तक जल-प्रलय आकर उनको बहा न ले गया, तब तक उनको कुछ भी मालूम न पड़ा, वैसे ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा"। परमेश्वर ने जलप्रलय पूर्व वासियों को खाने पीने के लिये दंडित नहीं किया, उसने उनकी शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लियेबहुतायत से भूमि पर लगने वाले फल दिये थे। उनका पाप यह था कि उन्होंने इन उपहारों का सेवन तो किया, लेकिन विधाता के प्रति अकतज्ञ रहे और अपने लालच पर रोक न लगाकर, स्वयं के स्तर को नीचे गिरा लिया। उनके लिये विवाह वैध था। विवाह परमेश्वर के अनुकूल था, वह उसके द्वारा स्थापित की गईं पहली संस्था थी। उसने विवाह सम्बन्धित व्यवस्था के लिये विशेष निर्देश दिए और विवाह को पवित्रता और सुन्दरता से पूर्ण किया, लेकिन मनुष्य द्वारा इन निर्देशों को भुला दिया गया और विवाह को विकृत कर उसे वासना तृप्ति का साधन बना दिया गया। PPHin 91.2

आज भी स्थिति प्राचीन काल जैसे ही है। स्वयं में जो वैध है उसमें असंयम बरता जाता है। अनियंत्रित तरीके से प्रवृति को तृप्त किया जाता है। स्वयं को मसीह के अनुयायी कहने वाले भी

पियक्कड़ों के साथ खाते पीते है और उनके नाम कलीसियों के सम्मानित लोगों की सूची में पाए जाते है। असंयम नैतिक और आत्मिक क्षमता को शक्तिहीन कर देता है और नीचे स्तर के आवेगों की तृप्ति का मार्ग तैयार करता है। अधिंकाश लोग अपनी कामुक अभिलाषाओं पर नियंत्रण रखने के नैतिक कर्तव्य से मुक्त होकर, वासना के दास बन जाते है। मनुष्य इन्द्रियों के उपभोग के लिऐ जी रहे है, केवल इस संसार और इस जीवन के लिए, समाज के हर क्षेत्र में मर्यादाहीनता दिखाई पड़ती है। भोग-विलास और प्रदर्शन के लिए सत्यनिष्ठा को त्याग दिया जाता है। धनवान बनने की जल्दी में वे न्याय को विकृत कर देते है और निर्धन पर अत्याचार करते है और आज भी दास और मनुष्य की आत्माओं को बेचा और खरीदा जाता है। धोखा, रिश्ववखोरी औरऔर चोरी का ऊँचे व निचले स्तर के लोगों में स्वतन्त्रता से अभ्यास होता है। अखबार की प्रतियाँ अत्यन्त बर्बरतापूर्ण और अकारण हत्याओं के अभिलेखों से भरी होती हैं और ऐसा प्रतीत होता है जैसे मानवता की सहज-प्रवृति ही मिटा दी गई हो। और ऐसे अत्याचारों का घटित होना इतना सामान्य हो गया है कि ना ही इनपर टिप्पणी की जाती है और ना ही किसी को आश्चर्य होता है। सभी देशों में अराजकता की भावना फैल रही है और समय-समय पर होने वाले उपद्रव संसार के भय को तो उत्तेजित करते है, लेकिन वे केवल आवेग की दबी हुईं ज्वाला और व्यवस्था के अभाव के संकेत होते है। यही यदि नियंत्रण से बाहर हो गए तो पृथ्वी कष्ट और निर्जनता से भर जाएगी। जलप्रलय पूर्व संसार का जो चित्रांकन प्रेरणा ने किया है वह यथार्थ में प्रतिनिधित्व करता है उस अवस्था का जिसकी ओर आधुनिक समाज गतिमान है। आज भी, वर्तमान सदी में, मसीहत प्रधान देशो में, वही अपराध घटित होते है जो प्राचीन काल के काले और भयानक अपराधों के समान है, जिनके कारण उस काल के पापियों को नाश किया गया था। PPHin 92.1

जलप्रलय से पूर्व परमेश्वर ने नूह को संसार को सावधान करने हेतु भेजा, ताकि वे पश्चाताप कर विनाश से बचाए जा सके। जैसे-जैसे मसीह के दूसरे आगमन का समय निकट आ रहा है, परमेश्वर अपने दासों को संसार को चेतावनी देने भेजता है ताकि वे उस महान घटना के लिये तैयार हो सकें। अधिकांश लोग परमेश्वर की आज्ञाओं के उल्लंघन यानि पाप में जी रहे हैं और दयावान परमेश्वर उन्हें व्यवस्था के पवित्र सिद्धान्तोंका पालन करने के लिये बुलाता है। वे सभी जो परमेश्वर के प्रति प्रायश्चित और मसीह में विश्वास द्वारा अपने पापों का परित्याग करते है उन्हें क्षमादान प्राप्त होता है। लेकिन बहुतों को लगता है कि पाप का परित्याग करने के लिये बहुत बड़े त्याग की आवश्यकता है। उनका जीवन परमेश्वर के सात्विक शासन के अनुरूप नहीं है, इसलिये वे उसकी चेतावनियों की उपेक्षा कर देते है और उसकी व्यवस्था के अधिकार को नकार देते हैं। PPHin 93.1

जलप्रलय पूर्व पृथ्वी की बहुत जनसंख्या में से केवल आठ प्राणियों ने नूह के माध्यम से परमेश्वर के वचन का पालन किया और विश्वास किया। एक सौ बीस वर्षों तक इस धार्मिकता के प्रचारक ने जगत को आने वाले विनाश की चेतावनी दी, लेकिन उसके सन्देश को अस्वीकृत और तिरस्कृत कर दिया गया। अनाज्ञाकारियों को दण्डित करने, व्यवस्था प्रदान करने वाले के आने से पहले,

उल्लंघन करने वालों को चेतावनी दी जाती है कि वे प्रायश्चित करें और आज्ञाकारिता में लौटे, लेकिन अधिकांश लोगों के लिये यह चेतावनी व्यर्थ होगी। प्रेरित पौलुस कहता है, "अन्तिम दिनों में स्वेच्छाचारी हंसी उड़ाने वाले उपहास करते हुए आएंगे और कहेंगे, "क्या हुआ उसके फिर से आने की प्रतिज्ञा का? क्योंकि हमारे पूर्वज तो चल बसे, पर जब से सृष्टि बनी है, हर चीज वैसे की वैसी चली आ रही है""-2 पतरस 3:3,4। क्या हम यही शब्द, केवल अधर्मियों द्वारा ही नहीं, लेकिन उनके द्वारा भी जो हमारे देश के पुरोहितासनों पर विराजमान है, दोहराए गए नहीं सुनते? वे पुकार कर कहते है, "डरने का कोई कारण नहीं है।"इससे पहले कि मसीह आए समस्त संसार का रूपांतरित होना अवश्य है और धार्मिकता कोएक हजार वर्षों राज करना है, शान्ति, शान्ति! सब कुछ वैसे ही चल रहा है जैसा की प्रारम्भ से था कोई भी इन भय फैलाने वालों के भावोत्तेजक सन्देशों से व्याकुल ना हों।" लेकिन सहस्राब्दी का यह सिद्वान्त मसीह और उसके अनुयायियों की शिक्षा के अनुकूल नहीं है मसीह ने यह महत्वपूर्ण प्रश्न पूछा, "मनुष्य का पुत्र जब आएगा, तो क्या वह पृथ्वी पर विश्वास पाएगा"? लूका 18:8,और ,जैसा कि हमने देखा है कि संसार के स्थिति वैसी ही होगी जैसी नूह के दिनो मे थी ।पौलूस हमें सचेत करता है कि अन्तिम समय के निकट आने पर हम दुष्टता मे बढ़त होने की अपेक्षा कर सकते है। 1 तीमुथियुस 4:1में लिखा है "परन्तु आत्मा स्पष्टता से कहता है कि आने वाले समय में कितने लोग भरमाने वाली आत्माओं, दुष्ट आत्माओं की शिक्षाओं पर मन लगाकर विश्वास से बहक जाएंगे।" प्रेरित कहता है, "अन्तिम दिनों में कठिन समय आएंगे"-2तीमुथियुस 3:1। और वह चौंका देने वाली पाप की एक सूची देता है जो उन लोगों मे पाए जाएंगे जो धार्मिकता का रूप धारण करते हैं। PPHin 93.2

जैसे-जैसे परख-अवधि का समय समाप्त होने पर था जलप्रलय पूर्व के मनुष्य उत्तेजक मनोरंजन और आमोद-प्रमोद मे मग्न हो गए। प्रभावशाली प्रबल पुरूष दूसरों के मन को आमोद-प्रमोद मे लीन रखने की चेष्टा करते रहते, ताकि वे अन्तिमचेतावनी से प्रभावित न हो जाएं। क्या यही बात आज भी नहीं दोहराईं जाती? परमेश्वर के दास अन्तिम समय के निकट होने का सन्देश दे रहे हैं, लेकिन संसार मनोरंजन और उपभोग में व्यस्त है। उत्तेजना का एक स्थायी दौर है जो परमेश्वर के प्रति मनुष्य की उदासीनता का कारण है और लोगो को उस सत्य से प्रभावित होने से रोकता है, जो उन्हें आने वाले विनाश से बचा सकता है।नूह के दिनों में दार्शनिकों ने कहा कि संसार का जल द्वारा विनाश होना असम्भव था; इस तरह आज वैज्ञानिक है जो यह दिखाने का प्रयत्न करते है कि जगत का आग से विनाश नहीं हो सकता, क्योंकि यह प्रकृति के नियमों के प्रतिकूल है। लेकिन प्रकृति का परमेश्वर, उसके नियमों को रचने और नियन्त्रित करने वाला अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिये अपने हाथों की कृति का उपयोग कर सकता है। PPHin 94.1

जब महापुरूषों और बुद्धिजीवियों ने उन्हें संतोषजनक प्रमाण दिया कि जल से जगत का विनाश असम्भव था, जब लोगों का भय शान्त हो गया, जब सब ने नूह की भविष्यद्वाणी को भ्रमित माना और उसे कटटरपंथी समझा, तब परमेश्वर का समय आया। "गहरे समुद्र के सोते फूट निकले

और आकाश के झरोखे खुल गए” और ठट्ठा करने वाले जलप्रलय के जल में अभिलुप्त हो गए। अपने अंहकारी तत्वज्ञान के होते हुए, मनुष्य ने यह बहुत बाद में जाना कि उनका विवेक उनकी मूर्खता थी, और यह कि नियम बनाने वाला प्रकृति के नियमों से महान हैऔर सर्वशक्तिमान के पास अपने उद्देश्य को पूर्ण करने के लिये साधनों का अभाव नहीं है। लूका 17:26, 30में लिखा है, “जैसा नूह केदिनों में हुआ था, वैसा ही मनुष्य के पुत्र के दिनों में भी होगा मनुष्य के पुत्र के प्रगट होने के दिन भी ऐसा ही होगा।” 2 पतरस 3:10 में लिखा है, “परन्तु प्रभु का दिन चोर के समान आएगा, उस दिन आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा और तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल जाएंगे और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाएंगे ।” जब तत्वज्ञान के तक ने परमेश्वर के न्याय के भय को दूर कर दिया है, जब धर्म के शिक्षक शान्ति और समृद्धि के दीर्घकाल की ओर संकेत कर रहे हैं, और संसार व्यापार और मनोरंजन में रोपण करने में, निर्माण करने में, आमोद-प्रमोद में, परमेश्वर की चेतावनी का तिरस्कार करने में और उसके सन्देशवाहकों का उपहास करने में व्यस्त हैं वही समय है जब “उन पर एकाएक विनाश आ पड़ेगा और वे किसी रीति से न बचेंगे” । 1 थिस्सलुनीकियों 5:3 PPHin 94.2

अध्याय 8—जलप्रलय के बाद

जलप्रलय के जल का स्तर सबसे ऊंचे पर्वतों से पन्द्रह हाथ ऊपर चला गया। जब पांच महीनों तक जहाज डांवाडोल होता रहा और प्रकट रूप से हवा और लहरों की दया पर टिका रहा,कई बार जहाज के भीतर परिवार को लगा कि वे मारे जाएंगे । यह एक तनावपूर्ण कठिन परीक्षा थी, लेकिन नूह का विश्वास अटल था, क्योंकि वह आश्वस्त था कि जहाज के कर्ण के ऊपर ईश्वर का हाथ था। PPHin 96.1

जैसे-जैसे जल का स्तर घटने लगा, परमेश्वर ने जहाज को उसकी साभथ्य में संरक्षित पर्वत श्रंखला के बीच सुरक्षित स्थान की ओर बहने दिया। यह पर्वत एक दूसरे से कुछ दूरी पर थे और जहाज इस शांत बन्दरगाह में तैरता रहा। अब वह अपार समुद्र पर चालित नहीं था। इससे तूफान के सताए थके हुए जलयात्रियों को बहुत आराम मिला। PPHin 96.2

नूह और उसका परिवार जल स्तर के घटने की उत्सुकतावश प्रतीक्षा कर रहे थे, क्योंकि वे भूमि पर फिर से जाने के लिये इच्छुक थे। पर्वत-शिखरों के दृष्टिगोचार होने के चालीस दिन पश्चात् उन्होंने एक कौए को बाहर भेजा, जो कि सुगन्ध को जल्दी पकड़ता है, ताकि यह पता चल सके कि भूमि सूख गई थी या नहीं। जब इस पक्षी को पानी के अलावा कुछ न मिला तो वह जहाज के इर्द-गिर्द ही उड़ता रहा। सात दिन बाद एक कबूतरी को भेज गया और वह बैठने का स्थान न पाकर लौट आयी। सात दिन पश्चात् नूह ने फिर से कबूतरी को भेजा ।जब वह शाम को अपनी चोंच में जैतून का पत्ता लिये लौटी तो वहां प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी। तब "नूह ने जहाज की छत खोलकर क्या देखा कि धरती सूख गयी है।" फिर भी नूहजहाज के भीतर धेर्यवान होकर रूका रहा। जैसे उसने परमेश्वर के आज्ञा देने पर प्रवेश किया था, वैसे ही उसने प्रस्थान के लिये उसके विशेष निर्देशों की प्रतीक्षा की । PPHin 96.3

आखिरकार स्वर्ग से एक स्वर्गदूत उतरा, उसने विशाल द्वार को खोला और कुलपिता और उसके घराने को, प्रत्येक जीवित प्राणी को साथ लिए, बाहर आने को कहा। स्वतन्त्रता की प्रसन्नता में नूह उसे नहीं भूला। जिसकी अनुग्रहकारी देख-रेख में वे बचाए गए थे। जहाज से बाहर आने के पश्चात उसका पहला कार्य था कि उसने वेदी खड़ी करके उस पर प्रत्येक प्रकार के शुद्ध पशु-पक्षियों की होमबलि चढ़ाई और इस तरह महान बलिदान रूपी मसीह में विश्वास और मुक्ति के लिये परमेश्वर के प्रति अपनी कृतज्ञता दिखाई। यह बलि परमेश्वर को सुखद लगी और उसके प्रतिफल में ना केवल कुलपिता नूह और उसके परिवार को वरन धरती पर सभी रहने वालों को आशीष मिली। "यहोवा ने सुखदायक सुगन्ध पाकर सोचा, मनुष्य के कारण में फिर कभी भूमि को श्राप न दूंगा।" अब से जब तक पृथ्वी बनी रहेगी, तब तक बोने और काटने के समय, ठण्ड और तपन, धूपकाल और शीतकाल, दिन और रात निरन्तर होते चले जाएंगे। यहॉ पर आने वाली पीढ़ियों के लिये सन्देश

है। नूह ने उजाड़ धरती पर कदम रखा था, लेकिन फिर भी स्वयं के लिये घर बनाने से पहले उसने परमेश्वर के लिये वेदी बनाई। गाय-बैलों के रूप में पशुधन भी उसके पास कम था और बड़े यत्न से बचाया गया था।फिर भी उसने प्रसन्नतापूर्वक उसका एक भाग परमेश्वर को अर्पित किया और सब कुछ परमेश्वर का होने की स्वीकृति दी। इस विधि से परमेश्वर को स्वेच्छा से दान देना हमारा सर्वप्रथम दायित्व होना चाहिये। उसके काम के लिये उपहारों और भक्ति के कार्यों के माध्यम से हमें उसकी दया और उसके प्रेम की हर अभिव्यक्ति के प्रति कृतज्ञ होना चाहिये । PPHin 96.4

इस कारण कि दूसरे जलप्रलय के भय से मनुष्य उमड़ते बादलों और बरसते हुए जल से दूसरे जल-प्रलय के भय से निरन्तर भयभीत न हो, परमेश्वर ने वाचा द्वारा नूह के परिवार को प्रोत्साहित किया, "मैं तुम्हारे साथ अपनी यह वाचा बांधता हूँ कि सब प्राणी फिर जलप्रलय से नष्ट नहीं होंगे और पृथ्वी का नाश करने के लिये फिर जलप्रलय नहीं होगा।" मैंने बादल में अपना धनुष रखा है, वह मेरे और पृथ्वी के बीच में वाचा का चिन्ह होगा। और जब मैं पृथ्वी पर बादल फैलाऊं तब बादल में धनुष दिखाई देगा। में उसे देख कर यह सदा की वाचा स्मरण करूंगा, जो परमेश्वर के और पृथ्वी पर सब जीवित शरीरधारी प्राणियों के बीच बन्धी है।' PPHin 97.1

कितनी महान है पापमय प्राणियों के लिये उसकी कृपालुता और संवेदना कि उसने मनुष्य के साथ अपनी वाचा के चिन्ह के रूप में बादलों में धनुष को रखा। परमेश्वर घोषणा करता है कि जब वह धनुष को देखेगा वह अपनी वाचा का स्मरण करेगा। इसका यह तात्पर्य नहीं कि परमेश्वर कभी भूल जाएगा, बल्कि यह कि वह हमसे हमारी भाषा में बात करता है जिससे कि हम उसे भली-भांति समझ सके। उसका उद्देश्य था कि आने वाली पीढ़ियों की संतानें, स्वर्ग में आर से पार फैलाव वाले अति सुन्दर वृतखण्ड को देख उसका मतलब पूछे और उनके माता-पिता उन्हें जल प्रलय की कथा सुनाए और उनसे कहें कि परम प्रधान ने धनुष को मोड़कर बादलों में इस आश्वासन के तौर पर रखा था कि पृथ्वी पर जलप्रलय फिर कभी नहीं होगा। इस तरह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक वह मनुष्य के प्रति आलौकिक प्रेम की गवाही देगा और परमेश्वर में उसके विश्वास को दृढ़ करेगा [स्वर्ग में एक धनुष का आकार सिंहासन के और मसीह के सिर के चारों ओर घेरा बनाए हुए है। यहजकल 1:28 में भविष्यद्वक्ता कहता है, "जैसे वर्षा के दिन बादल में धनुष दिखाई पड़ता है, वैसे ही चारों ओर का प्रकाश दिखाई देता था ।"प्रकाशित वाक्य 4:2,3में लिखा है, "एक सिंहासन स्वर्ग में रखा है और उस सिंहासन पर कोई बैठा है, उस सिंहासन के चारों ओर मरकत सा एक मेघदूत दिखाई देता है। जब मनुष्य अपनी अति दुष्टता के कारण ईश्वरीय न्याय का पात्र बनता है, तब उद्धारकर्ता उसके पक्ष में पिता से विनती करते हुए पश्चतापी पापी के प्रति परमेश्वर की दया के प्रतीक के रूप में, बादलों में धनुष, सिंहासन के चारों ओर और उसके सिर पर मेघ-धनुष की ओर संकेत करता है। PPHin 97.2

परमेश्वर ने स्वयं अपने अनुग्रह की प्रतिज्ञाओं में से सबसे उत्कृष्ट प्रतिज्ञा को नूह को दिए गए जलप्रलय सम्बन्धित आश्वासन के साथ जोड़ा है, "जैसे मैं ने शपथ खाई थी कि नूह के समय के जलप्रलय से पथ्वी फिर न डूबेगी, वैसे ही मैंने यह भी शपथ खाई है कि फिर कभी तुझ पर कोध न करूंगा और न तुझको धमकी दूँगा। चाहे पहाड़ हट जाएं और पहाड़ियाँ टल जाएं, तब भी मेरी करूणा तुझ पर से कभी न हटेगी और मेरी शान्तिदायक वाचा न टलेगी, यहोवा, जो तुझपर दया करता है, उसका यही वचन है"-यगयाह 54:9,10 ।जब नूह ने शिकार प्रबल हिंसक पशुओं को अपने साथ जहाज में से बाहर निकलते देखा तो उसे लगा कि उसका परिवार, जिसमें केवल आठ सदस्य थे, जन्तुओं का शिकार हो जाएगा ।लेकिन परमेश्वर ने अपने दास के पास एक स्वर्गदूत को इस भरोसा दिलाने वाले संदेश के साथ भेजा, "तुम्हारा डर और भय पृथ्वी के सब पशुओं और आकाश के सब पक्षियों और भूमि पर के सब रेंगने वाले जन्तुओं और समुद्र की सब मछलियों पर बना रहेगा, ये सब तुम्हारे वश में कर दिये जाते हैं। सब चलने वाले जंतु तुम्हारा आहार होंगे, जैसे तुम को हरे-हरे छोटे पेड़ दिये थे, वैसे ही अब सब कुछ देता हूँ। इस समय से पहले परमेश्वर ने मनुष्य को मांसाहारी आहार खाने की अनुमति नहीं दी थी। वह चाहता था कि वह वंश पूर्णरूप से धरती की उपज पर निर्भर हो, लेकिन जब हर हरा पौधा नष्ट हो गया था, उसने उन्हें जहाज में बचाए गए शुद्ध पशुओं का मांस खाने की अनुमति दे दी। PPHin 98.1

जलप्रलय के समय पृथ्वी की समस्त सतह में बदलाव आया। पाप के परिणाम स्वरूप उस पर तीसरा भयंकर शाप था। जल का स्तर नीचे आने पर, पहाड़ और पहाड़ियाँ गन्दे समुद्र से घिर गए। सब जगह मनुष्यों और जीव-जन्तुओं के मृत शव बिखरे हुए थे। परमेश्वर को यह स्वीकार नहीं था कि ये वहीं पर सड़कर वायु को प्रदूषित करें। उसने पृथ्वी को एक विशाल कब्रिस्तान बना दिया। समुद्र समान जल को सुखाने के उद्देश्य से प्रवाहित की गई तेज हवा ने उसमें ऐसी तीव्र गति उत्पन्न की कि कहीं-कहीं वह पहाड़ों के शिखर भी बहा ले गया और मृतकों के शवों पर वृक्षों चट्टानों और मिट्टी का ढेर लगा दिया। इसी माध्यम द्वारा जलप्रलय पूर्व संसार को धनवान बनाने और विभूषित करने वाले, वासियों में पूजनीय माने जाने वाले सोना और चांदी, श्रेष्ठठमलकड़ी और अनमोल रत्न मनुष्य की दृष्टि और खोज से संगुप्त कर दिये गए; जल की प्रबल प्रक्रिया ने इस निधि के ऊपर मिट्टी और चटटनों का ढेर लगा दिया और कही-कहीं इनके ऊपर पहाड़ भी उठा दिए। परमेश्वर ने देखा कि वह पापी मनुष्य को जितना अधिक धनवान और संपन्न बनाएगा, उतना ही उसके होते हुए भी, वह अपने मार्गों को भ्रष्ट कर देगा। जिसके कारण बहुतायत से देने वाले की प्रशंसा होनी चाहिये थी, उस निधि की पूजा-अर्चना की गई और परमेश्वर का तिरस्कार और अनादर किया गया। PPHin 99.1

धरती पर अवर्णनीय निर्जनता और अव्यवस्था का दृश्य था। वे पर्वत जो कभी पूर्ण समरूपता के कारण सुन्दर थे, अबक्षतिग्रस्त और उबड़-खाबड़ हो गए। धरती की सतह पर पत्थर, पहाड़ से निकली चट्टानें और खुरदरे पत्थर बिखरे हुए थे। कई स्थानों से पहाड़ और पर्वत अदृश्य हो गए थे

और उनके वहां होने का कोई चिन्ह नहीं था, और समतल भूमि के स्थान पर पर्वत-श्रंखला उभर आई थीं। यह परिवर्तन कहीं कहीं स्पष्ट दिखाई देते थे।शाप का सबसे अधिक प्रभाव धरती पर वहां दिखाई पड़ा जहां सोने, चांदी और अनमोल रत्नों की बहुमूल्य निधि का भण्डार था। उन देशों में, जहां जनसंख्या नहीं थी, जहां अपराध बहुत कम था, शाप का प्रभाव कम पड़ा इस समय घने जंगल दब गए। उस समय से ये कोयले में परिवर्तित हो गए जो वर्तमान में कोयले की खानें हैं और जहां अधिक मात्रा में खनिज तेल पाया जाता है। यही कोयला और खनिज तेल प्राय: प्रज्वलित होकर धरती की सतह के नीच जल जाते है, इस तरह चट्टानें गरम हो जाती हैं, चूना पत्थर जल जाता है और लोहा पिघल जाता है। चूने पर पानी की प्रतिक्रिया से अत्याधिक तपन को दुगना कर देती है जिसके कारण भूचाल आते है, ज्वालामुखी फटते है और कई अग्नि-सम्बन्धित घटनाएँ घटती है। जब आग और पानी चटटानों के बहिर्गत भाग और कच्चे धातु के सम्पर्क में आते है, तो भूमिगत भारी विस्फोट होते हैं जिनकी आवाज अवरूद्ध गर्जन की तरह होती है। वातावरण गरम और घुटन-भरा हो जाता है। इसके बाद ज्वालामुखी फट पड़ते है, और यदि तपे हुए पदार्था को बाहर निकलने का पर्याप्त निकास नहीं मिलता तो स्वयं धरती कांपने लगती है, और उसमें समुद्र की लहरों के सामन उठ जाती है जिसमें कभी-कभी सम्पूर्ण नगर, गांव और ज्वलंत पर्वत निगल लिये जाते है। यह आश्चर्यजनक दृश्य तात्कालिक विनाश के चिन्हों के तौर पर, मसीह के द्वितीय आगमन के ठीक पहले और ज्यादा देखने को मिलेंगे। PPHin 99.2

धरती का आंतरिक भाग परमेश्वर का शस्त्रागार है, जहां से प्राचीन जगत के विनाश हेतु उपयोग में आने वाले शस्त्रों को निकाला जाता था। धरती से प्रवाहित जल और स्वर्ग से छोडे गए पानी ने मिलकर धरती को निर्जन बनाने का कार्य सम्पन्न किया। जलप्रलय के उपरान्त अग्नि और पानी अत्यन्त दुष्टतापूर्ण नगरों के विनाश के लिये परमेश्वर के माध्यम रहें है। यह न्याय इसलिये किया जाता है ताकि जो परमेश्वर की व्यवस्था का अनादर करते है और उसके प्रभुत्व का तिरस्कारकरते है, उनहें उसकी सामर्थ्य के आगे समर्पण करने और उसकी न्यायसंगत प्रभुता को ग्रहण करने के लिये प्रभावित किया जा सके। ज्वलंत पर्वतों से पिघले हुए खनिज पदार्थ की प्रचण्ड धारा और आग व उसकी लपटों को, निर्जल हुई नदियों को, अपरिहार्य जनपूर्ण नगरों को, व्यापक विनाश और निर्जनता को देखकर सबसे साहसी हृदय भी भयभीत हो गया और अविश्वासी और ईश-निन्दक भी परमेश्वर की अनन्त सामर्थ्य का अंगीकार करने के लिये विवश हो गये। PPHin 100.1

प्राचीनकालीन भविष्यद्वक्ताओं का इन दृश्यों के सन्दर्भ में यह कहना था,"भला होता कि तू आकाश को फाड़कर झाड़-झंकाड़ को जला देती या जल कोउबालती, उसी रीति जाति-जाति के लोग तेरे प्रताप से कांप उठे। जब तूने ऐसेभयानक काम किये जो हमारी आशा से भी बढ़कर थे, तब तू उतर आया, पहाड़ तेरे प्रताप से कांप उठे। "यगरियाह 64:1-3 PPHin 100.2

नहूम 1:3,4 में लिखा है, “यहोवा बवण्डर और आंधी में होकर चलता है, और बादल उसके पांवो की धूल है। उसके धड़कने से महानद सूख जाते है, और समुद्र भी निर्जल हो जाता है।’ PPHin 101.1

मसीह के द्वितीय आगमन के समय इससे भी अधिक भयावह प्रदर्शन, जैसे संसार ने अभी तक नहीं देखे, देखने को मिलेंगे। नूहम 1:5,6में लिखा है, “उसके स्पर्श से पहाड़ कांप उठते है और पहाड़ियाँ गल जाती है, उसके प्रताप से पृथ्वी वरन सारा संसार अपने सब रहने वालों समेत थरथरा उठता है। उसके कोध का सामना कौन कर सकता है? भजन संहिता 144:5,6में लिखा है, “हे यहोवा अपने स्वर्ग को नीचा करके उतर आ, पहाड़ों को छू तब उनसे धुँआ उठेगा। बिजली कड़कड़ाकर उनको तितर-बितर कर दे, अपने तीर चलाकर उनको घरा दे ।” PPHin 101.2

“और मैं ऊपर आकाश में अद्‌भुत काम और नीचे धरती पर चिन्ह, अर्थात लहू और आग और धुएं का बादल दिखाऊंगा”-प्रेरितों के काम 2:19 [प्रकाशतिवाक्य 16:18,20,21 में लिखा है “फिर बिजलियाँ चमकी और शब्द और गर्जन हुए, और एक ऐसा बड़ा भूकम्प आया कि जब से मनुष्य की उत्पत्ति पृथ्वी पर हुईं, तब से ऐसा बड़ा भूकम्प कभी न आया था। और हर एक टापू अपनी जगह से टल गया, और पहाड़ों का पता न चला। आकाश से मनुष्यों पर मन-मन भर के बड़े ओले गिरे और इसलिये कि यह विपत्ति बहुत ही भारी थी, लोगों ने ओलों को विपत्ति के कारण परमेश्वर की निंदा की ।” PPHin 101.3

स्वर्ग से प्रवाहित बिजली और धरती की आग के साथ मिल जाने पर, पर्वत भट्‌टी के समान भभक उठेंगे, और लावा की भयंकर नदियां उगलेंगे, जिससे बगीचे और खेत, गावं और शहर नष्ट हो जाएंगे ।खौलते हुए तरल पिंड नदियों में गिरकर पानी में उबाल ले आएंगे, जिससे अवर्णनीय उग्रता के साथ विशाल चटटानें उछलेंगी और समस्त धरती पर अपने टूटे-फटे अंश फैला देंगी। नदियां निर्जल हो जाएंगी। पृथ्वी कंपकृपाने लगेगी और हर जगह भूकम्प और विस्फोट होंगे । PPHin 101.4

इस तरह परमेश्वर पृथ्वी पर से दुष्टों का विनाश कर देगा। लेकिन इस गड़बड़ी के बीच धर्मी सुरक्षित रखे जाएंगे जैसे नूह को जहाज में सुरक्षित रखा गया था। परमेश्वर उनका शरणस्थान होगा औरउसके चरणों तले वे विश्वस्त होंगे। भजन संहिता 91:9,10 में लिखा है, “हे यहोवा, तू मेरा शरणस्थान ठहरा है, तूने जो परम प्रधान को अपना धाम मान लिया है, इसलिये कोई विपत्ति तुझपर न पड़ेगी, न कोई दुख तेरे निकट आएगा।” “क्योंकि वह तो मुझे विपत्ति के दिन में अपने मण्डप में छिपा रखेगा”भजन संहिता 27:5। परमेश्वर की प्रतिज्ञा है, “उसने जो मुझसे स्नेह किया है, इसलिये मैं उसको छुड़ाऊंगा, मैं उसको ऊंचे स्थान पर रखूँगा, क्योंकि उसने मेरे नाम को जान लिया हें”भजन संहिता 91:14 I PPHin 101.5

अध्याय 9—यथाशब्द सप्ताह

सबत के दिन की तरह, सप्ताह भी सृष्टि के समय आरम्भ हुआ और इसे सुरक्षित रख बाईबिल के इतिहास द्वारा, हम तक लाया गया। परमेश्वर ने स्वयं समय के अंत तक उत्तरोत्तर सप्ताहों के लिये उदाहरण के तौर पर पहले सप्ताह को संयत किया। अन्य हर सप्ताह की तरह इसमें भी सात यथाशब्द दिन थे। सृष्टि की रचना में छः दिन लगे, सातवें दिन परमेश्वर ने विश्राम किया और फिर उसने इसे धन्य ठहराया और मनुष्य के लिये विश्राम दिन के लिये अलग किया। PPHin 103.1

सिने से दी गई व्यवस्था में परमेश्वर ने सप्ताह और उन तथ्यों को जिन पर ये आधारित है, मान्यता दी। "तू विश्रामदिन को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखना," यह आज्ञा देने के बाद और यह स्पष्ट करते हुए कि छः दिनों में क्या करना चाहिये और सातवें दिन में क्या नहीं करना चाहिए, वह अपने उद्धाहरण की ओर संकेत करते हुए सप्ताह का इस तरह मानने का कारण बताता है, "क्योंकि छ: दिन में यहोवा ने आकाश और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उनमें है, सब को बनाया और सातवें दिन विश्राम किया, इस कारण यहोवा ने विश्रामदिन को आशीष दी और उसको पवित्र ठहराया ।-निर्गमन 20:5-11 जब हम सृष्टि के दिनों को यथाशब्द समझते है तो कारण उत्कृष्ट और प्रबल लगता है। सप्ताह के पहले छः दिन मनुष्य को श्रम के लिये दिए गए हैं क्योंकि परमेश्वर ने सृष्टि की रचना के लिये पहले सप्ताह में से इतने ही समय का उपयोग किया। सांतवे दिन मनुष्य को सृष्टिकर्ता के विश्राम के स्मरण में कार्य से निवृत्त रहना है। PPHin 103.2

लेकिन यह मान्यता चौथी आज्ञा की नींव पर प्रत्यक्ष प्रहार करती है कि पहले सप्ताह की घटनाओं को घटित होने में कई हजार वर्ष लगे। यह सृष्टिकर्ता को ऐसे प्रस्तुत करती है जैसे वह मनुष्य को व्यापक अनिश्चित अवधि के स्मरण में सप्ताह के यथाशब्द दिनों को मानने हेतु आज्ञा दे रहा हो। यह उसके मनुष्य के साथ व्यवहार करने के तरीके के अनुकूल नहीं है। यह परमेश्वर द्वारा स्पष्ट सत्यों को अनिश्चित और सन्देशहास्पद बना देती है। यह अधर्म का अत्यन्त घातक और इस कारण सबसे भंयकर रूप है; उसकी वास्तविक विशेषता इतनी गुप्त है कि कई स्वयं को बाईबल विश्वासी कहने वाले इसको मान्यता देते हैं और इसकी शिक्षा देते है। PPHin 103.3

भजन संहिता 33:6, 9 में लिखा है कि "आकाश मण्डल यहोवा के वचन से और उसके सारे गण उसके मुहँ की श्वास से बने" "क्योंकि जब उसने कहा तब हो गया, जब उसने आज्ञा दी, तब वास्तव में वैसा ही हो गया। बाईबल किसी दीर्घकाल को मान्यता नहीं देती, जिसमें धरती अव्यवस्था में से धीरे-धीरे विकसित हुई। सृष्टि के हर कमानुसार दिन के सन्दर्भ में पवित्र अभिलेख घोषित करता है कि बाद के दिनों की तरह उस दिन में भी सुबह और शाम हुई। हर दिन के अन्त में परमेश्वर के किया कलाप का परिणाम दिया गया है। पहले सप्ताह के अभिलेख के अन्त में यह कथन कहा गया, "आकाश और पृथ्वी की उत्पत्ति का वृत्तान्त यह है कि जब वे उत्पन्न हुए" लेकिन

इसका तात्पर्य यह नहीं कि सृष्टि के दिन यथाशब्द दिन नहीं थे [उत्पत्ति शब्द का प्रयोग इसलिये किया गया, क्योंकि हर दिन परमेश्वर ने उत्पत्ति की या अपने कार्य का कोई नया भाग उत्पन्न किया। PPHin 104.1

भूवैज्ञानिक धरती से ही साक्ष्य मिलने का दावा करते है कि धरती मूसा के समय के अभिलेख के अनुसार बताए जाने से भी प्राचीन है। वर्तमान में या हजारों वर्ष पूर्व अस्तित्व में रहे, पेड़, पशु और युद्ध के उपकरणों की तुलना में अत्यन्त विशाल मनुष्य व पशुओं की हडिडयाँ, युद्ध के हथियार, पथराए हुए पेड़ पाए गए है, जिससे यह निष्कर्ष निकाला गया कि पृथ्वी सृष्टि के समय से बहुत पहले जनपूर्ण हो गई थी और प्राणियों के उस वंश द्वारा जो वर्तमान के जीवित पुरूषों से बहुत भारी-भरकम थे। ऐसे विचारों ने कई तथाकथित बाईबिल विश्वासियों को यह दृष्टिकोण अपनाने को विवश कर दिया है कि सृष्टि के दिन व्यापक अनिश्चित काल थे। PPHin 104.2

लेकिन बाईबिल इतिहास से परे भूविज्ञान कुछ भी प्रमाणित नहीं कर सकता। जो भूविज्ञान की खोजों पर इतने विश्वास के साथ तर्क-वितर्क करता है, उसे न ही जलप्रलय पूर्व मनुष्यों, पशुओं और वृक्षों के माप का पर्याप्त अनुमान है और न ही उस समय हुए परिवर्तनों का। धरती से मिले अवशेष इस बात का प्रमाण है कि कई विषयों में अब और तब की स्थिति में अन्तर था लेकिन इन स्थितियों के अस्तित्व में होने का समय केवल प्रेरित आलेख से ही ज्ञात हो सकता है। जल-प्रलय के इतिहास में, प्रेरणाने वह स्पष्ट किया जो भूविज्ञान अकेला कभी भी समझ नहीं पाता। नूह के दिनों में मनुष्य, जन्तु और वृक्ष, आज जो अस्तित्व में है, उनसे बहुत बड़े थे, गाड़े गए। इस तरह वे आने वाली पीढ़ियों के लिये साक्ष्य के भांति संरक्षित किये गए कि जल प्रलय पूर्व वासियों का विनाश जलप्रलय द्वारा हुआ था। यह परमेश्वर की योजना थी कि इन बातों की खोज प्रेरणा के प्रभाव में लिखे गए इतिहास में विश्वास को स्थापित करें, लेकिन मनुष्य अपने आधारहीन तक के कारण वही गलती करते हैं जो जलप्रलय पूर्व के वासियों ने की थी; परमेश्वर द्वारा दी गईं वरदान जैसी वस्तुओं का दुरूपयोग कर वे उन्हें श्राप में बदल देते है। लोगों को अधर्म की कल्पित कथाओं को मान्यता देने को प्रोत्साहित करना शैतान की कई चालों में से एक है, क्योंकि इस तरह वह, अपने आप में स्पष्ट और साधारण व्यवस्था को जटिल बना देता है और मनुष्य को ईश्वरीय सत्ता का विरोध करने में सशक्त करता है। उसके प्रयत्न चौथी आज्ञा के विरूद्ध विशेष रूप से निर्देशित होते है, क्योंकि यह आज्ञा धरती और आकाश के सृजनहार जीवित परमेश्वर की और स्पष्टता से संकेत करती है। PPHin 104.3

सृष्टि के कार्य को प्राकृतिक कारणों का परिणाम मानकर समझने के भरसक प्रयत्न किये जाते है, और तथाकथित मसीही लोग भी मानव प्रधान तक का अंगीकार करते है जो पवित्र शास्त्र के तथ्यों के विरूद्ध है। कई लोग ऐसे हैं जो भविष्यद्वाणियों के अन्वेषण का विरोध करते हैं; विशेषतः दानियल औरप्रकाशितवाक्य की, जिन्हें वह इतना अस्पष्ट मानते है कि उन्हें समझना असम्भव है, फिर भी यही लोग मूसा के लेख का खण्डन करते हुए भूवैज्ञानिकों के अनुमानों को उत्सुकतापूर्वक

ग्रहण करते है। लेकिन यदि परमेश्वर द्वारा प्रकाशित किया हुआ समझने के लिये इतना कठिन है, तो कितना अनुचित है, ग्रहण करना उन अनुमानित बातों को जिससे सम्बन्धित परमेश्वर ने कुछ भी प्रकाशित नहीं किया है। PPHin 105.1

व्यवस्थाविवरण 29:29 में लिखा है "गुप्त बातें हमारे परमेश्वर यहोवा के वंश में है, परन्तु जो प्रगट की गईं है, वे सदा के लिये हमारे और हमारे वंश के वंश से रहेगी।" जैसा कि उसने मनुष्य को यह कभी प्रकाशित नहीं किया कि परमेश्वर ने सृष्टि के कार्य को कैसे सम्पन्न किया, वैसे ही मानव विज्ञान सर्वोच्च के रहस्य को कभी नहीं ढूँढ सकता। उसकी सृजनात्मक प्रतिभा उसके अस्तित्व जैसी अबोध्य है। PPHin 105.2

परमेश्वर ने संसार पर, कला और विज्ञान में अत्यधिक प्रकाश के उँडेले जाने की अनुमति दी है, लेकिन जब तथाकथित विज्ञान सम्बन्धी पुरूष इन विषयों का केवल मानवीय दृष्टिकोण से चिंतन करेंगे तो वे निश्चय ही गलत निष्कर्ष पर पहुँचेंगें। यदि हमारे सिद्धान्त पवित्र शास्त्र के तथ्यों के विरूद्ध न हो,परमेश्वर द्वारा प्रकाशित बातों के परे अनुमान लगाना अहानिकारक हो सकता है; लेकिन जो परमेश्वर के वचन को छोड़, उसके सृजन के कार्यों के वुतान्त को वैज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित करने का यत्न करते है, वे एक अज्ञात समुद्र में बिना समुद्री नक्शे या दिशासूचक के बहे जा रहे हैं। महानतम बुद्धिजीवी भी, विज्ञान और ईश्वर शक्ति के सम्बन्ध को जानने के प्रयत्नों में किकर्तव्यविमूढ़ हो जाते है, यदि उनका अनुसंधान परमेश्वर के वचन द्वारा मार्गदर्शित नहीं होता। सृष्टिकर्ता और उसके कार्य मनुष्य की कल्पना से इतने बाहर है कि वे उन्हेंप्राकतिक नियमों से नहीं समझा सकते, इसलिये वे बाईबिल इतिहास को अविश्वसनीय मानते है। जो भी पुराने और नये नियम के अभिलेखों की विश्वसनीयता पर सन्देह करते है, उन्हें परमेश्वर के अस्तित्व पर संदेह करने के लिये एक कदम बढ़ने दिया जाता है और फिर जब वे अपने लंगर को खो देते हैं, उन्हें अधर्म की चट्टानों पर टकराते रहने के लिये छोड़ दिया जाता है। PPHin 105.3

ये लोग विश्वास की सरलता को गँवा चुके हैं। परमेश्वर के पवित्र वचन की दिव्य सामर्थ्य में विश्वास होना चाहिए। बाईबल का मनुष्य के विज्ञान-प्रधान विचारों द्वारा परीक्षण नहीं किया जाना चाहिए। मानव-ज्ञान एक अविश्वसनीय मार्गदर्शक है। नास्तिक जो बाईबल को दोष ढूंढने के लिये पढ़ते है, विज्ञान या रहस्योद्धाटन की त्रुटिपूर्ण धारणा के माध्यम से इनमें मतभेद होने का दावा कर सकते है, लेकिन यदि उचित तरीके से समझा जाए तो यह सम्पूर्ण सहमति में हैं। मूसा ने परमेश्वर के आत्मा के मार्गदर्शन में लिखा और भूविज्ञान की सही धारणा कभी भी उन खोजों का दावा नहीं करेगी जो मूसा के कथनों को इनके साथ सहमत न करा सके। हर सत्य प्रकृति में हो या प्रकाशितवाक्य में, अपनी समस्त अभिव्यक्तियों में स्वयं के साथ संगत है। PPHin 106.1

परमेश्वर के वचन में कई प्रश्न उठाए जाते हैं जिनका उत्तर पारंगत विद्वान भी नहीं दे सकते। इन विषयों की ओर हमारा ध्यान खींचा जाता है यह दिखाने के लिये कि नित्य जीवन की साधारण

बातों में भी कितना कुछ है, जो सीमाबद्ध बुद्धिजीवी अपनी प्रशंसनीय, बुद्धिमता के होते हुए भी पूरी तरह नहीं समझ सकते । PPHin 106.2

फिर भी विज्ञान-प्रधान मानव सोचता है कि वह परमेश्वर की बुद्धिमता को समझ सकता है, जो उसने किया है और जो वह कर सकता है। यह विचार प्रचलित है कि परमेश्वर स्वयं की व्यवस्था से सीमित है। मनुष्य या तो उसके अस्तित्व को अनेदखा कर देते है या अस्वीकार कर देते है। वे सब कुछ समझाने का प्रयत्न करते है-मानव हृदय पर पवित्र आत्मा का प्रभाव भी, और वे ना ही उसके नाम कोआदरपूर्वक लेते है और ना ही उसकी शक्ति का भय मानते है। वे अलौकिक में विश्वास नहीं करते, क्योंकि वे परमेश्वर की व्यवस्था को, उसके माध्यम से उसकी छइच्छापूर्ति करने की अनन्त शक्ति को नहीं समझते। साधारणतया "प्रकृति के नियम" पदबंध के अंतरगत भौतिक संसार का संचालन करने वाले नियमों से सम्बन्धित मनुष्य की खोज आती है, लेकिन कितना सीमित है उनका ज्ञान और कितना विशाल है वह क्षेत्र जिसमें सृष्टिकर्ता स्वयं के नियमानुसार कार्य कर सकता है, लेकिन यह सीमाबद्ध मनुष्य की समझ से पूर्णतया बाहर है। PPHin 106.3

कई यह शिक्षा देते है कि तत्व में प्राणाधार शक्ति होती है-कि तत्व को विशेष गुण प्रदान किये गए है, और फिर उसे अपनी अंतर्निहित शक्ति के माध्यम से कार्यशील होने के लिये छोड़ दिया गया है, और यह कि प्रकृति के क्रिया-कलाप स्थायी नियमों के अनुसार संचालित होते है, जिसमें परमेश्वर भी हस्तक्षेप नहीं कर सकता। यह कृत्रिम विज्ञान है और परमेश्वर के वचन पर आधारित नहीं है। प्रकृति सृष्टिकर्ता की सेवक है। परमेश्वर ना ही अपने नियमों को निरस्त करता है और ना ही उनके विपरीत काम करता है, लेकिन वह उन्हें निरंतर अपने साधन की तरह प्रयोग करता है। प्रकृति एक प्रतिभा, एक उपस्थिति, एक सक्रिय शक्ति की साक्षी है और वह अपने नियमों में और नियमों के माध्यम से काम करती है। प्रकृति में पिता और पुत्र का नियमित संचालन है। यहून्ना 5:17में लिखा है, "मेरा पिता अब तक काम करता है और मैं भी काम करता हूँ।" नहेम्याह द्वारा रचित भजन में लैवीयों ने गाया, "तू ही अकेला यहोवा है, स्वर्ग वरन सब से ऊँचे स्वर्ग और उसके सब गण और पृथ्वी और जो कुछ उसमें है, सभी को तू ही ने बनाया और सभी की रक्षा तू ही करता है"-नहेम्याह 9:6। इन संसार के सन्दर्भ में परमेश्वर का सृष्टि का कार्य सम्पन्न हो गया है। इब्रानियों 4:3में लिखा है "जगत की उत्पत्ति के समय से उसके काम पूरे हो चुके थे"। लेकिन उसकी उर्जा अभी भी उसकी सृष्टि की कृतियों को कायम रखने में कार्यरत है। ऐसा इसलिये नहीं है कि एक बार गतिशील बना दिये जाने के बाद यंत्र स्वयं की अंतर्निहित ऊर्जा से क्रिया करता है और धड़कन और श्वास चलती रहती है, वरन् ऐसा इसलिये है क्योंकि हर श्वास हृदय की हर धड़कन उसके सम्पूर्ण व्यापक संरक्षण की साक्षी है जिसमें प्रेरितों के काम 17:28 के अनुसार, "हम जीवित रहते, चलते फिरते रहते और स्थिर रहते है" । यह किसी अंतर्निहित शक्ति के परिणामस्वरूप नहीं कि पृथ्वी अपने उपहार हर वर्ष उत्पन्न करती है और सूर्य की परिकमा करती है। परमेश्वर का हाथ ग्रहों का संचालन करता है और आकाश में उनके यथाकम गमन में उन्हें उपयुक्त स्थान पर रखता है। यशायाह 40:26 में

लिखा है, "वह इन गणों को गिन गिनकरनिकालता, उन सब को नाम लेकर बुलाता है। वह ऐसा सामर्थी और अत्यन्त बलवान है कि उनमें से कोई बिना आए नहीं रहता।" उसकी सामर्थ्य से वनस्पति पनपती है, पत्ते प्रकट होते है और पुष्प खिल उठते है। भजन संहिता 147:8

में लिखा है, "वह पहाड़ो पर घास उगाता है, और उसी के द्वारा मैदान फलते-फलते है।" "वन के सब जीव-जन्तु ईश्वर से अपना आहार मांगते है" और प्रत्येक जीवधारी, न्यूनतम कीड़े से लेकर मनुष्य तक, उसके शुभ संरक्षण पर प्रतिदिन निर्भर करता है। भजन रचयिता के सुन्दर शब्दों में "इन सब को तेरा ही आसरा है कि तू उन्हें देता है, वे चुन लेते है, तू अपनी मुटठी खोलता है और वे उत्तम पदार्था से तृप्त होते हैं' — भजन संहिता 104:20,21,27,28। उसका वचन तत्वों पर नियंत्रण रखता है, वह आकाश को बादलों से आवृत करता है और पृथ्वी क लिये मेघ को तैयार करता है। भजन संहिता 147:16के अनुसार, "वह ऊन के समान हिम को गिराता है, और राख के सम्मान पाला विखेरता है"। यिर्मयाह 10:43 में लिखा है, "जब वह बोलता है तब आकाश में जल का बड़ा शब्द होता है और पृथ्वी के छोर से वह कोहरे को उठाता है। वह वर्षा के लिये बिजली चमकाता और अपने भण्डार में से पवन चलाता है।" PPHin 107.1

परमेश्वर हर वस्तु का आधार है। वास्तविक विज्ञान उसके कामों के अनुकूल है, सच्ची शिक्षा उसकी सत्ता के प्रति आज्ञाकारिता सिखाती है। विज्ञान हमें नये चमत्कार दिखाता है, वह ऊंचे स्तर पर पहुँचकर नए विचार-गंभीयर्य विषयों का अनवेषण करता है, लेकिन वह अपने अनुसंधान से ऐसा कुछ नहीं लाता जो ईश्वरीय प्रकाशितवाक्य के प्रतिकूल हो। विज्ञान की दुहाई देकरअज्ञानता गलत धारणाओं का समर्थन करने का प्रयत्न करती है, लेकिन प्रकृति का ग्रंथ और लिखित वचन एक दूसरे पर प्रकाश डालते है। इस प्रकार हमें सृष्टिकर्ता की प्रशंसा करने के लिये और उसके वचन ने बौद्धिक विश्वास के लिये मार्गदर्शित किया जाता है। PPHin 108.1

कोई भी सीमाबद्ध बुद्धिजीवी परमेश्वर के अस्तित्व, सामर्थ्य और विवेक को संपूर्ण से नहीं समझ सकता। अय्यूब 11:7-9 में लिखा है, "क्या तू परमेश्वर का गूढ़ भेद पा सकता है? क्या तू सर्वशक्तिमान का मर्म पूरी रीति से जांच सकता है? वह आकाश से ऊंचा है-तू क्या कर सकता है? वह अधोलोक से गहरा है, तू क्या समझ सकता है? उसका माप पृथ्वी से भी लम्बा है और समुद्र से चौड़ा है। पृथ्वी के सर्वोत्तम बुद्धिजीवी भी परमेश्वर को नहीं समझ सकते । मनुष्य ढूँढ रहे हों, सीख रहे हों, लेकिन फिर भी उसके परे एक असीमितता है। PPHin 109.1

लेकिन फिर भी सृष्टि की कतियाँ परमेश्वर की महानता और क्षमता की साक्षी है। भजन संहिता 19:1में लिखा है, "आकाश परमेश्वर की महिमा का वर्णन कर रहा है।" जो लिखित वचन को अपने परामर्शदाता के रूप में लेता है तो उसे विज्ञान में परमेश्वर को समझने का साधन मिलेगा। रोमियों 1:20 में लिखा है, "उसके अनदेखे गुण, अर्थात उसकी सनातन सामर्थ्य और परमेश्वर जगत की सृष्टि के समय से उसक कामों के द्वारा देखने में आते हैं।

अध्याय 10—बाबुल का टावर(मीनार)

हाल ही में जलप्रलय द्वारा नैतिक भ्रष्टता से रिक्त की गई निर्जन पृथ्वी को जनपूर्ण करने के लिये परमेश्वर ने नूह के घराने, केवल एक परिवार को संरक्षित किया था और उसने नूह के लिये घोषणा की थी, “मैंने इस समय के लोगों में से केवल तुझी को अपनी दृष्टि में धमी पाया है” लेकिन नूह के तीन पुत्रों में जल्द ही वह विशेषताएं उत्पन्न हो गई जो जलप्रलय पूर्व के जगत में थी।। मानव वंश के होने वाले निर्माता शेम, हाम और येपेत में उनकी भावी पीढ़ी के चरित्र का पूर्वाभास था। PPHin 110.1

ईश्वरीय प्रेरणा से प्रभावित होकर बोलते हुए नूह ने मानवता के इन पिताओं से उत्पन्न होने वाली तीन महान पीढ़ियों के इतिहास कीभविष्यद्वाणी की । पिता के बजाय पुत्र के माध्यम से, हाम के वंशजों का पता लगाकर उसने घोषणा की, “कनान शापित हो वह अपने भाई बन्धुओं के दासों का दास हो ।” हाम के अस्वभाविक अपराध द्वारा प्रकट हुआ कि उसकी आत्मा ने संतानोचित श्रद्धा का बहुत पहले त्याग कर दिया था और यह उसके चरित्र की अपवित्रता और दुष्टता को दिखाता है। यह दुष्टतापूर्ण विशेषताएं कनान और उसके वंशजों में चिरआयु हो गई और उनके निरन्तर अपराध बोध ने उन्हें परमेश्वर के न्याय का पात्र बना दिया । PPHin 110.2

दूसरी ओर, पिता के लिये शेम और येपेत की श्रद्धा, जो ईश्वरीय व्यवस्था के प्रति श्रद्धा थी, के परिणाम स्परूप उनके वंशजो को सुनहरे भविष्य का आश्वासन मिला। इन पुत्रों के सन्दर्भ में कहा गया, “शेम का परमेश्वर यहोवा धन्य है ओर कनान शेम का दास हो। परमेश्वर येपेतक वंश को फैलाए और वह शेम के तम्बुओं में बसे और कनान उसका दास हो।” शेम का वंश चुने हुए लोगों का परमेश्वर की वाचा का, प्रतिश्रुत उद्धारकर्ता का वंश होना था। शेम का परमेश्वर यहोवा था। उसके द्वारा अब्राहीम और इज़राइल के लोगों को आना था, जिनके द्वारा मसीह का आना लिखित था। भजन संहिता 144:15में लिखा है “जिस राज्य का परमेश्वर यहोवा है, वह क्या ही धन्य है”। और येपेत, “शेम के तम्बुओं में बसे ।” येपेत के वंशजो के लिये विशेष रूप से सुसमाचार की आशीष का प्रावधान था। PPHin 110.3

कनान के वंशज मूर्तिपूजा के अत्यन्त अपमानजनक रूप में डूब गए। हालांकि पूर्वकथित शाप के अनुसार उन्हें दासत्व में जाना था, लेकिन सदियों तक उस शाप को रोका गया था। परमेश्वर ने उनके अधर्म और भ्रष्टाचार को उस समय तक सहन किया जब तक कि उन्होंने ईश्वरीय सहनशीलता की सीमाओं को पार न कर दिया। उसके बाद उन्हें बेदखल कर दिया गया और वे शेम और येपेत के वंशजो के दास बन गए। PPHin 111.1

नूह की घोषणा क्रोध का कोई स्वेच्छाधारी आक्षेप नहीं था और ना ही समर्थन की घोषणा। उस घोषणा से उसके पुत्रों के चरित्र या नियति निर्धारित नहीं हुए। बल्कि उससे उनेक द्वारा विकसित चरित्र और उनके द्वारा अलग-अलग जीवन के मार्गों के चयन का आगामी परिणाम ज्ञात हुआ। यह घोषणा उनके अपने चरित्र और व्यवहार के सन्दर्भ में परमेश्वर का उनके और उनके वंशजो के लिये प्रयोजन की अभिव्यक्ति थी ।नियमानुसार, संतानों में उनके माता-पिता का स्वभाव और प्रवृति अंतर्निहित होती है और वे उनके उदाहरण का अनुसरण करते है। इसी तरह एक के बाद एक पीढ़ी के बच्चे अपने माता-पिता के पापों को दोहराते है। इस तरह हाम की दुष्टता और अनादर की भावना उसके वंशजो में पुनः उत्पन्न हुई और कई पीढ़ियों के लिये शाप का कारण बनी। सभोपदेशक 9:18में लिखा है, "एक पापी बहुत सी भलाई का नाश करता है।' PPHin 111.2

दूसरी ओर, शेम को अपनीपितृभक्ति के लिये बहुतायत से पुरूस्कत किया गया और उसके वंशजो में धर्मी पुरूषों के कितने ही प्रतिष्ठित वंश है। भजन संहिता 37:48,26 में लिखा है, "यहोवा खरे लोगों की आयु की सुधि रखता है" "और उसके वंश पर आशीष फलती रहती है।" "इसलिये जान रख कि तेरा परमेश्वर यहोवा ही परमेश्वर है, यह विश्वासयोग्य ईश्वर है, जो उससे प्रेम रखते और उसकी आज्ञाएं मानते है, उनके साथ वह हजार पीढ़ी तक अपनी वाचा का पालन करता और उन पर करूणा करता रहता है ।व्यवस्थाविवरण 7:9 PPHin 111.3

कुछ समय तक नूह के वंशज पहाड़ी में, जहां जहाज आ कर रूका था, वास करते रहे। जैसे-जैसे उनकी संख्या में वृद्धि हुई, अधर्म के कारण उनमें विभाजन आ गया। जो लोग अपने सृष्टिकर्ता को भूल जाना चाहते थे और उसकी व्यवस्था के प्रतिबन्ध से स्वतन्त्र होना चाहते थे, उन्हें अपने परमेश्वर का भय मानने वाले साथियों के उदाहरण और शिक्षा से निरंतर चिड़चिड़ाहट होती थी, और कुछ समय पश्चात उन्होंने परमेश्वर के उपासकों से अलग होने का निर्णय लिया। योजनानुसार उन्होंने फरात नदी के तट पर शिनार के मैदान की ओर प्रवास किया। PPHin 111.4

यहां उन्होंने एक नगर का निर्माण करने का निश्चय किया और उसमें संसार का अजूबा कहलाने योग्य विलक्षण ऊंचाई वाला टावर बनाने का विचार किया । ये कठिन कार्य लोगों को उपनगरों में तितर-बितर होने से रोकने के लिये नियोजित किए गए। परमेश्वर ने मनुष्य को सारी पृथ्वी पर फैल जाने का, उसकी पुनःपूर्ति का और उसको अपने अधीन करने का निर्देश दिया था, लेकिन इन बाबुल के निर्माताओं ने अपने समाज को एक निकाय में संगठित रखने का और राजवाद, जो अंततः समस्त प्रथ्वी को सम्मिलित कर लेता, की स्थापना करने का संकल्प किया। इस तरह उनका नगर एक सर्वव्यापी साम्राज्य का महानगर बन जाता, अपने गौरव के कारण वह संसार के सत्कार और प्रशस्ति का पात्र होता और उसके निर्माता प्रतिष्ठित माने जाते। वह गगनचुम्बी भव्य स्मारक के रूप में खड़ा होता, जिससे उनकी प्रसिद्धि नवीनतम पीढ़ियों में भी चिरायु हो जाती । PPHin 112.1

शिनार के मैदान के वासी परमेश्वर की इस वाचा में विश्वास नहीं करते थे कि वह धरती पर दोबारा जलप्रलय नहीं आने देगा। उनमें से कई लोगो ने परमेश्वर के अस्तित्व को नकारा और प्राकृतिक कारणों को जलप्रलय के लिये उत्तरदायी ठहराया। अन्य किसी सर्वोच्च प्राणी में विश्वास करते थे और यह कि जल प्रलय पूर्व संसार को उसने विनाश किया और कैन के हृदय के समान उनके हृदय भी उसका विरोध करने लगे। टावर के निर्माण में उनका एक उद्देश्य यह भी था कि दूसरे जलप्रलय के आने पर वे अपनी सुरक्षा कर सकें [उन्होंने सोचा कि भवन को जलप्रलय के जल की पहुँच से अधिक ऊँचा बनाने से वे स्वंय को संकट की सम्भावना से परे रख सकते हैं। चूंकि वे बादलों के क्षेत्र में पहुँच पाते, उन्होंने जलप्रलय का कारण जान पाने की आशा की। यह सम्पूर्ण उपकम, टावर की युक्क्ति बनाने वालों के घमण्ड को और ऊंचा करने और आगामी पीढ़ियों के हृदय को परमेश्वर से दूर करने और उन्हें मूर्तिपूजा करने के लिये बाध्य करने को किया गया। PPHin 112.2

जब टावर का निर्माण आंशिक रूप से सम्पन्न हुआ तो उसका एक भाग निर्माण करने वालों का निवास स्थान बना दिया गया, भव्य ढंग से सुसज्जित व सुशोभित किये गए अन्य कक्ष मूर्तियों के लिये समर्पित किये गए लोग अपनी सफलता पर प्रसन्न हुए और उन्होंने सोने-चांदी के देवी-देवताओं की प्रशंसा की और इस तरह स्वयं को धरती और आकाश के राजा के विरूद्ध किया। अचानक से इतनी समृद्धिपूर्वक प्रगति कर रहे काम पर रोक लगा दी गई। निर्माताओं के उद्देश्यों को शून्य पर लाने के लिये स्वर्गदूतों को भेजा गया। टावर अत्यन्त ऊँचाई पर पहुँच चुका था और शिखर पर चढ़े कार्यकर्ताओं का तल पर काम कर रहे कार्यकर्ताओं के साथ प्रत्यक्ष संचार असम्भव था, इसलिये अलग-अलग स्थान पर पुरूषों को नियुक्त किया गया जिनका काम था, आवश्यक सामग्री की सूची या कार्य सम्बन्धी निर्देशों को ग्रहण कर अपने से निचले स्थान पर नियुक्त कार्यकर्ता को सूचित करे। जैसे ही यह सन्देश एक से दूसरे के पास पहुँचने लगा भाषा में गड़बड़ी उत्पन्न कर दी गईं, जिससे वह सामग्री मंगवाई जाती, जिसकी आवश्यकता न थी और जो निर्देश दिये जाने थे प्रायः उसके विपरीत होते ।अव्यवस्था और निराशा छा गईं। सम्पूर्ण कार्य में रूकावट आ गई। सामनन्ज़स्य या सहयोग की संभावना खत्म हो गई। निर्माता उनके बीच अदभुत असम्मति का कारण जान पाने में असमर्थ हो गए और अपने क्रोध और निराशा में एक दूसरे पर आरोप लगाने लगे। कलह और रकक्तपात में उनके संघ का अंत हो गया। परमेश्वर के क्रोध के प्रमाण के रूप में स्वर्ग से प्रवाहित बिजली ने टावर का ऊपरी हिस्सा अलग कर भूमि पर गिरा दिया। मनुष्य को यह आभास कराया गया कि एक परमेश्वर है जो स्वर्ग में राज्य करता है। PPHin 112.3

इस समय तक सभी मनुष्य एक ही भाषा बोलते आए थे; अब जो एक दूसरे की बोली समझते थे, मण्डलियों में संगठित हुए, कोई इस रास्ते गया और कोई दूसरे रास्ते गया। “इस प्रकार यहोवा ने उनको वहां से सारी पृथ्वी के ऊपर फैला दिया।” यह विसर्जन धरती को जनपूर्ण करने का साधन

था, और इस तरह परमेश्वर का उद्देश्य उसी साधन से सम्पन्न हुआ जो मनुष्य ने उसके परिपूर्ण होने को रोकने के लिये प्रयोग किया था। PPHin 113.1

लेकिन कितना नुकसान हुआ उन लोगों का जो परमेश्वर के विरूद्ध खड़े हुए! यह उसका उद्देश्य था कि जैसे-जैसे मनुष्य पृथ्वी के विभिन्न भागों में जाकर राज्यो की स्थापना करेंगे, वे अपने साथ उसकी इच्छा का ज्ञान भी ले जायेंगे और आगामी पीढ़ियों में सत्य का प्रकाश बिना कम हुए पहुँचेगा। धार्मिकता का निष्ठावान प्रचारक, नूह जलप्रलय के बाद तीन सौ पचास वर्षो तक जीवित रहा, शेम पांच सौ वर्षो तक, और इस प्रकार उनके वंशजों को परमेश्वर की अपेक्षाओं और परमेश्वर का उनके बाप-दादाओं के प्रति व्यवहार के इतिहास को जानने का अवसर प्राप्त हुआ। लेकिन वे इन अरूचिकर सत्यों को सुनने के लिये तैयार नहीं थे, उन्हें अपने ज्ञान में परमेश्वर को बनाए रखने में कोई इच्छा नहीं थी और भाषाओं की गड़बड़ी के कारण, बहुत हद तक वे उनसे बोल-चाल नहीं रख सकते थे जो उनको प्रकाश दे सकते थे। PPHin 113.2

बाबुल के निर्माताओं ने परमेश्वर के प्रति बड़बड़ाने की भावना को बढ़ावा दिया। आदम के लिये परमेश्वर की दयालुता, नूह के साथ उसकी पवित्र वाचा को कृतज्ञतापूर्वक याद करने के बजाए उन्होंने पहले जोड़े को अदन की वाटिका से खदेड़ने और जलप्रलय द्वारा संसार को नष्ट करने में उसपर कठोरता का आरोप लगाया था। परमेश्वर को कठोर और स्वेच्छाकारी मानकर उसके विरूद्ध बड़बड़ाने में वे सबसे निष्ठुर तानाशाह के राज को स्वीकृति दे रहे थे। शैतान बलिदान की भेंटो को जो मसीह की मृत्यु का आदिरूप थी, निनदा का विषय बनाना चाहता था, और जैसे-जैसे मनुष्य का विवेक मूर्तिपूजा से अन्धकारमय होता गया, उसने उन्हें इन भेटों और बलिदानों के बजाय देवी देवताओं की वेदियों पर अपने बच्चों की बलि चढ़ाने को उकसाया। मनुष्य के परमेश्वर से दूर हो जाने पर न्याय, पवित्रता और प्रेम जैसे पवित्र गुणों का स्थान अत्याचार, हिंसा और करता ने ले लिया। PPHin 114.1

बाबुल के लोगों ने ऐसी सरकार की स्थापना करने का निश्चय किया, जिसमें परमेश्वर का हस्तक्षेप न हो। उनमें से कुछ ऐसे थे जिनमें परमेश्वर का भय था लेकिन वे अधर्मियों के स्वांगों से ठगे गए थे और उनके षड़यंत्र में फंस गए थे। इन निष्ठावान लोगों की खातिर परमेश्वर ने अपना न्याय विलम्बित किया और लोगों कोअपना वास्तविक चरित्र दर्शाने का समय दिया। इसके विकसित होने पर परमेश्वर के पुत्रों ने उन्हें उनके उद्देश्य से विचलित करने का प्रयत्न किया, लेकिन लोग अपने स्वर्ग को चुनौती देने वाले उपकम में पूर्णतया संगठित थे। यदि वे बिना रूकावट चलते रहते, तो संसार अपनी प्रारम्भिक अवस्था में ही भ्रष्ट हो जाता। उनके संघ का आधार उपद्रव था, राज्य जिसकी स्थापना स्वयं को उच्चतर करने के लिये की गईं, लेकिन जिसमें परमेश्वर का कोई अधिकार या आदर नहीं होता। यदि इस संघ को अनुमति दे दी गई होती तो एक महान शक्ति योग्यता ने धार्मिकता और उसके साथ पृथ्वी पर से शान्ति, खुशहाली और सुरक्षा को निर्वासित कर दिया होता।

ईश्वरीय व्यवस्था, जो "पवित्र, न्यायसंगत और अच्छी है,'के स्थान पर मनुष्य उन आज्ञाओं को लागू करने के लिये प्रयत्नशील थे जो उनके स्वार्थी और निर्दयी हृदय के उद्देश्यों के अनुकूल थी। PPHin 114.2

परमेश्वर का भय मानने वालों ने उससे हस्तक्षेप करने की विनती की। "और परमेश्वर उस नगर और उस मीनार को, जिसे मनुष्य के पुत्रों ने बनाया था, नीचे उतर कर आया",नगर और गुम्मट बनाने वालों के उद्देश्य को पराजित किया और उनकी निभीकता के स्मारक को उलट दिया। उसने उनकी भाषा में गड़बड़ी उत्पन्न करी और इस तरह विद्रोह के उनके उद्देश्य पर रोक लगाईं। परमेश्वर मनुष्य की भ्रष्टता को बहुत देर तक सहता है ताकि उन्हें पश्चताप के लिये पर्याप्त अवसर मिले, लेकिन उनकी न्यायसंगत व पवित्र आज्ञा के अधिकार का विरोध करने वाली उनकी सब युक्तियों की वह सुधि लेता है। समय-समय पर सत्ता के प्रभुत्व को थामने वाला अदृश्य हाथ अधर्म को रोकने के लिये बढ़ाया जाता है। असंदिग्ध प्रमाण दिया गया है कि जगत का सृष्टिकर्ता, बुद्धिमत्ता, प्रेम और सत्य में अनंत वह अद्वितीय आकाश और धरती का सर्वोच्चशासक है और उसकी प्रभुता को ललकारने वाला कोई भी दण्डमुक्त नहीं हो सकता । PPHin 115.1

बाबुल निर्माताओं की युक्तियों का अन्त पराजय और अपमान में हुआ। उनके घमण्ड का स्मारक उनकी मूर्खता का स्मारक बन गया। लेकिन फिर भी मनुष्य स्वयं पर निर्भर होते हुए, परमेश्वर की आज्ञा को अस्वीकार करते हुए, उसी रास्ते पर चल रहे हैं। इसी सिद्धान्त को शैतान ने स्वर्ग में कार्यन्वित करने की चेष्ठा की थी, जिसने कैन को भेंट चढ़ाने में नियन्त्रित किया था। PPHin 115.2

वर्तमान में भी गुम्मट बनाने वाले है। विज्ञान के अनुमानित निष्कर्षों से नास्तिक अपने सिद्धान्तों का निर्माण करते हैं और परमेश्वर के प्रकाशित वचन का तिरस्कार करते है। वे परमेश्वर की पवित्र सत्ता को दण्डाज्ञा देने का विचार करते हैं। वे उसकी आज्ञा को तुच्छ समझते है और मानव-प्रधान तक के पर्याप्त होने की ढींग मारते है। सभोपदेशक 8:11 में लिखा है, फिर "बुरे काम के दण्ड की आज्ञा फुर्ती से नहीं दी जाती, इस कारण मनुष्य का मन बुरा काम करने की इच्छा से भरा रहता है।' PPHin 115.3

तथाकथित मसीही जगत में कई लोग बाईबिल की स्पष्ट शिक्षा से मुहँ फेर लेते हैं और सुखदायी कल्पित कहानियों और मानव-प्रधान अनुमानों से एक सम्प्रदाय बनाते है और स्वर्ग की और बढ़ने के मार्ग के रूप में अपने गुम्मट की ओर संकेत करते है। मनुष्य वाग्मिता (उत्तम बोली) के होठों से अत्यन्त आकर्षित होता है जबकि वह सिखाती है कि पापी मृत्यु को प्राप्त नहीं होगा, और परमेश्वर की आज्ञा न मानने पर भी उद्धार प्राप्त हो सकता है। यदि मसीह के तथाकथित अनुयायी परमेश्वर के आदर्श को ग्रहण करें तो वह उन्हें एकता में बांधेगा, परन्तु जब मानव की बुद्धिमता को पवित्र-वचन से श्रेष्ठतर माना जाता है, तब विभाजन और मतभेद होता है। 'बाबुल' शब्द असंगत सम्प्रदायों

और धर्म-मंत्रों की वर्तमान अव्यवस्था का उचित प्रतीक है, जिसे भविष्यद्वाणी(प्रकागतवाक्य 14:8, 8:12)अन्तिम समय की जगत-प्रेमी कलीसियाओं के लिये प्रयोग करती है। PPHin 115.4

कई लोग धन और आधिपत्य प्राप्त करके अपने लिये एक स्वर्ग बनाने की चेष्टा करते हैं। वे "ठट्ठा मारते है, और दुष्टता से अन्धेर की बात बोलते हैं, वे डींग मारते है।"-भजन संहिता 73:8 और इस तरह वे ईश्वरीय शक्ति का तिरस्कार कर मानव अधिकारों को रोंद डालते हैं। घमण्डी कुछ समय तक शक्तिशाली हो सकते है और अपने हर काम में सफलता देख सकते है, लेकिन अंत में उन्हें केवल निराशा और दुर्दशा हाथ लगेगी । PPHin 116.1

परमेश्वर द्वारा परीक्षण का समय निकट है। वह जो सर्वोच्च है, यह देखने नीचे उतरेगा कि मनुष्य की संतानों और मानव के घमण्ड के काम क्षतिग्रस्त होंगे। भजन संहिता 33:43, 14, 10, 11 में लिखा है, "यहोवा स्वर्ग से दृष्टि करता है, वह सब मनुष्यों को निहाराता है, अपने निवास के स्थान से वह पृथ्वी के सभी रहने वालों को देखता है"। "यहोवा जाति-जाति की युक्ति को व्यर्थ कर देता है, वह देश-देश के लोगों की कल्पनाओं को निष्फल करता है। यहोवा की युक्ति सदा स्थिर रहेगी, उसके मन की कल्पनाएं पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहेंगी ।' PPHin 116.2

अध्याय 11—अब्राहम को बुलाहट

बाबुल से विसर्जन के पश्चात मूर्तिपूजा भली-भांति सर्वव्यापी हो गई और पथराए हुए पापियों को अपने दुष्टतापूर्ण आचरण को निभाने के लिये छोड़कर, परमेश्वर ने शेम के वंश से अब्राहम का चयन किया और उसे आगामी पीढ़ियों के लिये अपनी व्यवस्था का संरक्षक बनाया। अब्राहम अन्धविश्वास और मूर्तिपूजा के वातावरण में पला-बड़ा था। परमेश्वर के ज्ञान को संरक्षित रखने वाला उसके पिता का घराना भी अपने चारों ओर के सम्मोहक प्रभावों के आगे समर्पित हो रहा था, और उन्होंने यहोवा के स्थान पर "अन्य देवताओं की उपासना की लेकिन सच्चे विश्वास को विलुप्त नहीं होना था। परमेश्वर ने अपनी आराधना के लिये हमेशा एक बकिया कलीसिया को संरक्षित किया है। अखंडित वंश में आदम, शेत, एनोश, मतूशलेह, नूह और शेम ने युगानुयग परमेश्वर की इच्छा के अनमोल प्रकाशन को संरक्षित करा था। तेरह का पुत्र इस पवित्र-न्यास का उत्तराधिकारी बना। मूर्तिपूजा ने व्यर्थ में उसे हर तरफ से निमंत्रण दिया। अविश्वासियों के बीच विश्वासपूर्ण, प्रचलित अधर्म के बावजूद शुद्ध, वह दृढ़तापूर्वक एक सच्चे परमेश्वर की आराधना करता रहा। भजन संहिता 145:18में लिखा है, "जितने यहोवा को पुकारते है, अर्थात जितने उसको सच्चाई से पुकारते है, उन सभी के वह निकट रहता है।" परमेश्वर ने अपनी इच्छा अब्राहम को व्यक्त की और उसे मसीह द्वारा सम्पन्न होने वाले उद्धार और अपनी व्यवस्था की अपेक्षाओं के बारे में विशिष्ट ज्ञान प्रदान किया। PPHin 117.1

अब्राहम को अनगिनत वंशज और राष्ट्रीय महानता का वचन दिया गया, जो उस युग के लोगों के लिये विशेषकर बहुमूल्य था। "मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊंगाऔर तुझे आशीष दूँगा, और तेरा नाम महान करूंगा और तू आशीष का मूल होगा।" साथ ही विश्वास के उत्तराधिकारी को यह भी आश्वासन दिया गया कि उसके वंश में से जगत का उद्धारकर्ता उत्पन्न होगा "भूमण्डल के सारे कल तेरे द्वारा आशीष पाएँगे।" लेकिन इसके परिपूर्ण होने के पहले प्रतिबन्ध के रूप में एक विश्वास की परीक्षा होनी थी, एक बलिदान की मांग रखी गई। PPHin 117.2

परमेश्वर का संदेश अब्राहम तक पहुँचा, "अपने देश और अपने कुटम्बियों और अपने घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा।' अब्राहम को उसके प्रारम्भिक जीवन की संगति से इसलिए अलग करना आवश्यक था ताकि परमेश्वर उसे पवित्र अभिलेखों का रक्षक होने के महान काम के लिये योग्य ठहरा सके। परिजनों और मित्रों का प्रभाव उस अभ्यास में हस्तक्षेप करता जो परमेश्वर अपने दास को देना चाहता था। चूंकिअब्राहम, विशेषतया स्वर्ग के संपर्क में था, उसका अपिरचितों के बीच रहना आवश्यक था। उसका चरित्र सभी लोगों से भिन्न होते हए विलक्षण होना था, वह अपनी क्रियाविधि को भी इस प्रकार नहीं समझा सका, जिस तरह उसके मित्र समझ

पाते। आत्मिक बातें आत्मिक रीति से जांची जाती है, और उसके प्रयोजन और कार्यकलाप उसके मूर्तिपूजक परिजन नहीं समझ पाए । PPHin 117.3

इब्रानियों 11:8में लिखा है, “विश्वास ही से अब्राहम, जब बुलाया गया तो, आज्ञा मानकर ऐसी जगह निकल गया जिसे मीरास में लेने वाला था, और यह न जानता था कि मैं किधर जाता हूँ. तौभी निकल गया।” अब्राहम का निर्विवाद आज्ञापालन बाईबल में पाया जाने वाला सबसे असाधारण प्रमाणों में से एक है। उसके लिए, “विश्वास आशा की हुईं वस्तुओं का निश्चय और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है ।'इब्रानियों 11:1 जिसके परिपूर्ण होने का कोई बाहरी संकेत नहीं था, उस पवित्र प्रतिज्ञा में विश्वास कर, वह अपने जनन्‍म-स्थान अपने परिजनों और अपने घर को छोड़कर, यह बिना जाने कि किधर जाएगा, वहां के लिये निकल पड़ा जहां परमेश्वर उसे जाने वाला था ।इब्रानियों 11:9में लिखा है, “विश्वास ही से उसने प्रतिज्ञा किये हुए देश में परदेशी के समान रहकर, इसहाक और याकूब समेत, जो उसके साथ उसी प्रतिज्ञा के वारिस थे, तम्बुओं में वास किया। PPHin 118.1

यह कहा जा सकता है कि अब्राहम की परीक्षा और उससे मांगा हुआ बलिदान आसान या तुच्छ नहीं थे। अपने देश अपने परिजनों और अपने घर से वह अटूट बन्धन में बांधा था। लेकिन वह बुलाहट की आज्ञा का पालन करने से नहीं हिचकिचाया। प्रतिज्ञा किये हुए देश से सम्बन्धित उसने कोई प्रश्न नहीं किया कि वहां की धरती उपजाऊ और जलवायु स्वास्थप्रद थी या नहीं, यदि वह देश सुखद वातावरण और धन इकटठा करने के अवसर प्रदान करता था या नहीं। परमेश्वर ने कह दिया और उसके दास को आज्ञा का पालन करना था, उसके लिए संसार का सबसे सुखदायी स्थान वहीं था, जहां परमेश्वर उसे रखना चाहता था। PPHin 118.2

कई लोग अब्राहम की तरह अभी भी परखे जाते है। वह परमेश्वर की आवाज को प्रत्यक्ष रूप में स्वर्ग से बोलते हुए नहीं सुनते, लेकिन वह उन्हें अपनी समझदारी की घटनाओं और अपने वचन के सिद्धान्तों के माध्यम से बुलाता है। उनसे धन और सम्मान का आश्वासन देने वाले व्यवसाय को त्यागने, स्वजातीय व लाभदायक संपर्क को छोड़ने व परिजनों से अलग होने और केवलआत्मत्याग, कष्ट और बलिदान के रास्ते पर चलने की अपेक्षा की जा सकती है। परमेश्वर के पास उनसे करवाने के लिये काम है, लेकिन एक सहज जीवन और मित्रों व परिजनों का प्रभाव उस काम की उपलब्धि के लिये अत्यन्त आवश्यक विशेषताओं के विकास में रूकावट डाल सकते हैं। वह उन्हें मानवीय प्रभाव और सहायता से दूर बुलाता है और उन्हें उसकी सहायता की आवश्यकता का आभास कराता है और केवल उसी पर निर्भर होने के लिये विवश करता है ताकि वह स्वयं को उन पर प्रकट कर सके। परिचित संगति और अभिलाषित योजनाओं को परमेश्वर की बुलाहट पर त्याग देने को कोन तैयार है? मसीह की खातिर अपने नुकसान को लाभ समझते हुए, दृढ़ और संहर्ष हृदय से परमेश्वर का कार्य करते हुए, कौन नए कर्तव्य को स्वीकार करेगा और अपरीक्षित क्षेत्रों में प्रवेश करेगा? जो ऐसा करेगा उसके पास अब्राहम का विश्वास होगा और उसके साथ “बहुत ही महत्वपूर्ण

और अनन्त महिमा का भागीदार होगा," जिसके सामने इस "समय के दुःख और क्लेश कुछ भी नहीं है।"2 कुरिन्थियों 4:17, रोमियों 8:18 PPHin 119.1

स्वर्ग से बुलाहट अब्राहम को सर्वप्रथम तब आईं जब वह "कसदियों के उस नगर" में वास कर रहा था, और आज्ञा का पालन करते हुए वह हारान नामक देश में पहुँचकर वहीं रहने लगा। यहां तक उसके पिता का परिवार उसके साथ था और उन्होंने अपनी मूर्तिपूजा के साथ सच्चे परमेश्वर की आराधना को मिला दिया। यह अब्राहम तेरह की मृत्यु तक रहा। लेकिन जब वह अपने पिता की कब्र के पास ही था ईश्वरीय वाणी ने उसे आगे जाने की कहा। उसका भाई नाहोर औरउसका घराना अपने घर और अपनी मूर्तियों को थामे रहे। हारान का पुत्र बहुत पहले मर चुका था, और अब्राहम की पत्नी सारै के अलावा केवल लूत ने कुलपिता की तीर्थ-यात्री जीवन का भागीदार होने को चुना। लेकिन फिर भी यह एक विशाल सम्प्रदाय था जो मेसोपोटामिया से चला। अब्राहम के पास पहले से ही व्यापक पशुधन और पूरब की सम्पति थी और वह कई शरणागतों और सेवकों से घिरा हुआ था। वह अपने पूर्वजों के देश से कभी न लौटने के लिये जा रहा था और वह जो कुछ भी उसके पास था"जो धन उन्होंने इकट्ठा किया था, और जो प्राणी उन्होंने हारान में प्राप्त किये थे" लेकर चला। इनमें से कई सेवा-भाव व स्वार्थ के प्रतिफल से उच्चतर प्रतिफल से प्रभावित थे। हारान में रहते हुये, अब्राहम और आराधना करने के लिये नेतृत्व किया। ये कुलपिता के घराने से जुड़ गये और प्रतिज्ञा के देश में उसके साथ गए "और वे कनान देश में आ गए।" PPHin 119.2

शकेम वह जगह थी जहां अब्राहम कुछ देर ठहरा। मोरे के ओक वृक्षों की छाया तले बाल और गिरिज्जीम पहाड़ों के बीच एक चौड़ी हरी-भरी जैतून की वक्ष वाटिकाओं और धारा-प्रवाह स्रोतों से भरपूर घाटी में उसनेअपना तम्बू गाड़ा। कुलपिता ने एक सुन्दर और अच्छे देश में प्रवेश किया था-/जो जल की नदियों का और तराईयों और पहाड़ों से निकले हुए गहरे-गहरे स्रोतों का देश, गेहूँ जौं दाखलताओं, अंजीरों और अनारों का देश, और तेल वाले जैतून और मधु का देश है ।"-व्यवस्थाविवरण 8:7,8लेकिन यहोवा के उपासक ने देखा कि उस वृक्षयुकत पहाड़ी और फलदायक समतल क्षेत्र एक पर एक गहरी छाया ठहरी हुईथी। "देश में उस समय कनानी थे।" अब्राहम अपनी आशाओं के लक्ष्य पर पहुँच चुका था, जहां उसे एक अन्यजातीय वंश द्वारा अधिकृत और मूर्तिपूजा से भरादेश मिला। उन वृक्ष वाटिकाओं में अन्य देवी-देवताओं की वेदियाँ स्थापित थी और पड़ोस की ऊँचाईयों पर मानव बलिदान की भेंट चढ़ाई जाती थी। ईश्वरीय प्रतीज्ञा को वह पकड़े रहा, लेकिन फिर भी तम्बू तानते समय कष्टप्रद पूर्वाभास से स्वतन्त्र नहीं था। फिर "यहोवा ने अब्राहम को दर्शन देकर कहा, यह देश में तेरे वंश को दूंगा।"/ इस आश्वासन से उसका विश्वास दृढ़ हुआ कि ईश्वर की उपस्थिति उसके साथ थी, जिससे वह दुष्टों की कृपा पर नहीं छोड़ा गया।" उसने वहां यहोवा के लिये, जिसने उसे दर्शन दिया था, एक वेदी बनाई ।" अभी तक वह पथिक ही था और जल्द हीवह बेतेल के निकट एक स्थान पर आ गया और वहां भी उसने यहोवा के लिये एक वेदी बनाई और यहावा से प्रार्थना की । PPHin 120.1

'परमेश्वर का मित्र' अब्राहम हमारे लिये एक उपयुक्त उदाहरण है। उसका जीवन प्रार्थना का जीवन था। जहां भी वह अपना तम्बू खड़ा करता था, पास ही वेदी भी स्थापित करता था और तम्बू में रहने वाले सभी लोगों को सुबह और शाम के बलिदानों के लिये बुलाता था। तम्बू के हटाए जाने के बाद भी वेदी वहीं रही। आगामी वर्षो में, कनानी कबीलों में कई थे, जिन्होंने अब्राहम से अनुदेश लिये और जब भी उनमें से कोई वेदी पर आता था, उसे ज्ञात होता था कि उससे पहले कौन वहां आया, और जब वह अपना तम्बू वहां खड़ा करता तो वह वेदी को संवारता और सच्चे परमेश्वर की आराधना करता । PPHin 120.2

अब्राहम दक्षिण की ओर अग्रसर होता गया और उसके विश्वास को पुन: परखा गया। आकाश ने वर्षा कोथाम लिया, घाटियों में नदियों ने बहना बन्द कर दिया और मैदानों की घास सूख गईं। गाय-बैलों और भेड़-बकरियों के लिये चरागाह न बचे और छावनी में भुखमरी का भय उत्पन्न हो गया। क्या कुलपिता ने अब भी परमेश्वर के नेतृत्व पर प्रश्न नहीं उठाया? क्या वह कसदियों के मैदानों की समृद्धि की ओर चाह से नहीं देखता था? सभी उत्सुकता से देख रहे थे कि अब्राहम क्या करेगा जब एक के बाद एक कष्ट उसक ऊपर आए। जब तक उसका विश्वास अविचलित था, उन्हें आशा दिखाई देती थी, वे आश्वस्त थे कि परमेश्वर अब्राहम का मित्र था और वह अभी भी उसका मार्गदर्शन कर रहा था। PPHin 121.1

अब्राहम परमेश्वर के नेतृत्व को नहीं समझा सकता था, उसकी अपेक्षा परिपूर्णनहीं हुई थी, लेकिन वह परमेश्वर की प्रतिज्ञा को थामे रहा, मैं तुझे आशीष दूँगा, और तेरा नाम महान करूंगा और तू आशीष का मूल होगा ।" सच्ची प्रार्थना के साथ उसने चिंतन किया कि किस तरह वह अपने लोगों और पशु समूह के जीवन को संरक्षण देगा, लेकिन परिस्थितियों को परमेश्वर के वचन में अपने विश्वास को हिलने नहीं देगा। अकाल से बचने के लिये वह मिस्र की ओर चल दिया। उसने कनान को त्यागा नहीं और ना ही अपनी विपत्ति से कसीदी देश में वापसी की जहां से वह आया था और जहां खाद्य-सामग्री का अभाव नहीं था, लेकिन उसने प्रतिज्ञा के देश के निकट एक अस्थायी शरणस्थान ढूंढा, ताकि वह जल्द ही उस जगह लोट आए जहां परमेश्वर ने उसे रखा था। PPHin 121.2

परमेश्वर ने अपनी पूर्वदृष्टि में अब्राहम की यह परीक्षा उसे धैर्य, विश्वास और समर्पण का पाठ पढ़ाने के उद्देश्य से ली ताकि इसका वर्णन अभिलेखों में उन लोगों की भलाई के लिए किया जा सके, जो आने वाले समय में यातानाएं सहेंगे। परमेश्वर अपने बच्चों का नेतृत्व अज्ञात तरीके से करता है, लेकिन जो उसमें विश्वास बनाए रखते हैं, उन्हें कभी भूलता या छोड़ता नहीं। उसने अय्यूब पर कष्ट आने दिए लेकिन उसे छोड़ा नहीं। उसने अतिप्रिय यहुन्ना को पतमुस के एंकात में जाने दिया, लेकिन परमेश्वर के पुत्र ने उससे वहां भेट की, और वहां उसे अनश्वर प्रताप के दृश्यों के दर्शन हुए। परमेश्वर अपने लोगों पर विपत्तियां आने देता है, जिसमें कि वे अपनी स्थिरता और आज्ञाकारिता से

आत्मिक उन्नति पाएं और उनका उदाहरण दूसरों के लिये मनोबल का स्रोत हो। यिर्मयाह 29:11में लिखा है, “जो कल्पनाएं मैं तुम्हारे विषय करता हूँ उन्हें में जानता हूँ. वे हानि नहीं, वरन् कुशल की है।” वही परीक्षा जो हमारे विश्वास को कठोरता से परखती हैं, और हमें ऐसा आभास कराती है कि परमेश्वर ने हमें छोड़ दिया है, हमें परमेश्वर के ओर निकट ले जाती है ताकि हम अपने सारे बोझ उसके चरणों में रख दें और उस शान्ति का अनुभव करें जो वह हमें उसके बदले में देना चाहता है। PPHin 121.3

परमेश्वर ने सदैव ही अपने लोगों को परीक्षा की भटटी में परखा है। भटटी के ताप से ही मसीही चरित्र के खरे सोनेको घातुमल से अलग किया जा सकता है। परमेश्वर उस परीक्षा का निरीक्षण करता है, उसे ज्ञात है कि बहुमूल्य घातु के शुद्धिकरण के लिये किस चीज की आवश्यकता है, जिससे कि उसके प्रेम का प्रकाश प्रतिबिंबित हो सक। गुप्त, कष्टकर परीक्षणों से परमेश्वर अपने दासों को अनुशासित करता है। वह देखता है कि कुछ के पास ऐसी योग्यताएं है जो उसके काम को आगे बढ़ाने के लिये प्रयोग में लाई जा सकती है और उन्हीं लोगों को वह परीक्षा में डालता है। अपनी दूरदर्शिता में वह उन्हें उन पदों पर लाता है जहां उनके चरित्र की परख होती है और उनके वह अवगुण और दुर्बलताएं सामने आती है जिनका उन्हें स्वयं ज्ञान नहीं होता। PPHin 122.1

वह उन्हें इन अवगुणों को सुधारने का अवसर देता है ताकि वे उसकी सेवा के लिये उपयुक्त हो सके। वह उन्हें उनकी दुर्बलताएं दिखाता है और उन्हें उस पर निर्भर होना सिखाता है क्योंकि वही उनका सहायक और सुरक्षा है। इस तरह उसका लक्ष्य पूरा होता है। जिस महान उद्देश्य के लिये उन्हें योग्यताएं दी थी उसे परिपूर्ण करने के लिये वे तैयार, अनुशासित, शिक्षित और प्रशिक्षित किये जाते है। जब परमेश्वर उन्हें काम के लिये बुलाता है, वे तैयार होते है और धरती पर परिपूर्ण होने वाले काम में स्वर्गदूत उनके साथ जुड़ सकते हैं। PPHin 122.2

मिस्त्र में वास करते समय, अब्राहम ने प्रमाण दिया कि वह मानवीय दुर्बलताओं और त्रुटियों से अछता नहीं था। इस तथ्य को छुपाने में कि सारे उसकी पत्नी थी, उसने ईश्वरीय सुरक्षा में अविश्वास और जिसका उदाहरण उसने प्रायः व उदारता से दिया था उस महान विश्वास और साहस के अभाव को प्रकट किया। सारे देखने में सुन्दर थी और अब्राहम को यकीन था कि वह सांवले मिस्त्र के लोग उस सुन्दर विदेशी के लिये ललचाएँगे और उसे पाने के लिये उसके पति की हत्या करने में नहीं हिचकिचाएंगे। उसने सोचा कि सारे को अपनीबताने में वह झूठ का अपराधी नहीं होगा, क्योंकि वह भले ही उसकी मां की नहीं, लेकिन उसके पिता की पुत्री थी। लेकिन उनके बीच वास्तविक सम्बन्ध को छू पाना धोखा था। सुपरिभाषित सत्यनिष्ठा से किसी भी प्रकार के विपथन को परमेश्वर की स्वीकृति नहीं मिल सकती। अब्राहम के विश्वास में कमी के कारण सारे गम्भीर संकट में पड़ गई। उसकी सुन्दरता की सूचना पाकर, उसे पत्नी बनाने की मंशा से, मिस्त्र के राजा ने उसे महल में ले जाने को कहा। लेकिन दयावान परमेश्वर ने शाही घराने पर विपत्तियाँ भेजकर सारे की रक्षा की। इस

प्रयोजन से सम्राट ने इस विषय की सच्चाई को जाना और उसके साथ हुए छल पर क्रोधित हो अब्राहम को उलाहना दी और यह कहते हुए, उसकी पत्नी को लौटा दिया, "तूने मेरे साथ यह क्या किया? तू ने मुझे क्यों नहीं बताया कि वह तेरी पत्नी है? तू ने क्यों कहा कि वह तेरी बहिन है? मैंने उसे अपनी ही पत्नी बनाने के लिये लिया, परन्तु अब अपनी पत्नी को लेकर यहां से चला जा।" PPHin 122.3

राजा ने अब्राहम पर बहुत उपकार किया, अभी भी फिरौन अब्राहम और उसके समूह को किसी भी तरह की हानि के पक्ष में नहीं था, वरन् उसने उन्हें अपने राज्य से बाहर सुरक्षित पहुँचाने हेतु एक सुरक्षाकमी को आज्ञा दी। उसके शासनकाल में नियम बनाए गए जिनके द्वारा मिस्त्र के लोगों का विदेशी चरवाहों के साथ खाने पीने के माध्यम से संपर्क को वर्जित किया गया। फिरौन का अब्राहम को विदा करना उदारतापूर्ण और नम्र था, लेकिन उसने उसे मिस्त्र छोड़ देने को कहा क्योंकि वह उसे रूकने की अनुमति देने का साहस नहीं कर पाया। वह अज्ञानतावश अब्राहम को गम्भीर चोट पहुँचाने को था, लेकिन परमेश्वर ने हस्तक्षेप किया और सम्राट को एक गम्भीर पाप करने से बचाया। इस विदेशी में फिरौन नेउस आदमी को देखा जिसे परमेश्वर ने सम्मानित किया था, और फिरौन अपने राज्य में उसके होने से भयभीत था जो स्पष्ट रूप से ईश्वरीय अनुग्रह की छत्र-छाया में था। यदि अब्राहम मिस्त्र में रह जाता तो उसकी बढ़ती हुई धन सम्पत्ति और और आदर मिस्त्र के लोगों में लालच और ईर्ष्या उत्पन्न करता और यह उसके लिये हानिकारक सिद्ध हो सकता था, और इसके लिये फिरोन स्वंय उत्तरदायी होता और शाही घराने पर दोबारा विपत्तियाँ आ सकती थीं। PPHin 123.1

फिरौन द्वारा दी गईं चेतावनी, भविष्य में अब्राहम का अन्य-जातियों के साथ संपर्क में सुरक्षा प्रमाणित हुईं, क्योंकि इस विषय को गुप्त नहीं रखा जा सकता था और यह देखा गया कि जिस परमेश्वर की अब्राहम आराधना करता था, वह उसकी रक्षा करता था और उस पर की गई किसी भी चोट का बदला लिया जाना निश्चित था। स्वर्ग के राजा की किसी भी संतान के साथ गलत करना खतरनाक चीज है। चुने हुए लोगों के बारे में अब्राहम के अनुभव के इस अध्याय से सम्बन्धित भजन लिखने वाला कहता है कि परमेश्वर, "राजाओं को उनके निमित्त यह धमकी देता था "मेरे अभिषिक्तों को मत छुओ और न मेरे नबियों की हानि करो ।" भजन संहिता 105:14,15 PPHin 123.2

मिस्त्र में अब्राहम के और सदियों पश्चात् उसके वंशजों के अनुभव में एक रूचिकर समानता है। दोनों ही अकाल की वजह से मिस्त्र देश में गए और दोनों वहां रहे। उनके पक्ष में ईश्वरीय न्याय के प्रकटीकरण से मिस्त्र के लोगों में उनका डर उत्पन्न हुआ और अन्य-जातियों द्वारा दी गई भेंटो से समृद्ध होकर, वे वहां से बहुत धन-सम्पत्ति लेकर निकले । PPHin 124.1

अध्याय 12—कनान में अब्राहम

यह अध्याय उत्पत्ति 13-15, 17:1-16, 18 पर आधारित है

अब्राहम कनान देश में, "भेड़-बकरी, गाय-बैल और सोने-चांदी का धनी" होकर लौटा। लूत अभी भी उसके साथ था और वे फिर बेतेल आए और उन्होंने अपने तम्बू उसी वेदी के पास खड़े किये जो उन्होंने पहले बनाई थी। जल्द ही उन्हें ज्ञात हुआ कि बढ़ी हुई सम्पत्ति अपने साथ बढ़ी हुई कठिनाई लाई थी। कठिनाईयों और परीक्षा के बीच वह एक दूसरे के साथ सामन्जस्य से रहते थे, लेकिन समृद्धि की स्थिति में उनमें कलह का खतरा था। चरागाह, दोनो के पशु-समूह के लिये पर्याप्त नहीं थे और चरवाहों के प्रायः होने वाले आपसी झगड़े सुलझाने के लिये उनके स्वामियों के पास लाए जाते थे। ये स्पष्ट हो चला था कि उन्हें अलग हो जाना चाहिए। अब्राहम आयु में लूत से वरिष्ठ था, लेकिन फिर भी शान्ति बनाए रखने की योजना प्रस्तावित करने में उसने पहल की। हालांकि स्वयं परमेश्वर द्वारा उसे वह सारा क्षेत्र दिया गया था, लेकिन उसने शिष्टतापूर्वक अपना अधिकार छोड़ दिया। PPHin 125.1

"मेरे और तेरे बीच, और मेरे और तेरे चरवाहों के बीच" उसने कहा, "झगड़ा न होने पाए, क्योंकि हम लोग भाई-बन्धु है। क्या सारा देश तेरे सामने नहीं? इसलिये मुझ से अलग हो जा, यदि तूबांई ओर जाए तो मैं दाहिनी ओर जाऊँगा, और यदि तू दाहिनी ओर जाए, तो मैं बाईं ओर जाऊंगा। PPHin 125.2

यहाँ पर अब्राहम की शिष्टतापूर्ण, निःस्वार्थ भावना प्रदर्शित होती है। ऐसी परिस्थितियों में कितने, सम्भावित संकट के बावजूद, अपने निजी अधिकारों और पसन्द से लिपटे रहेंगे! कितने घराने, इस तरह अलग-अलग हो गए! कितनी कलीसियायें सत्य के उद्देश्य को दुष्टों के बीच एक पर्याय और निन्दा का विषय बनाते हुए विभाजित हो गई है! अब्राहम ने कहा, "मेरे और तेरे बीच कोई झगड़ा न होने पाए क्योंकि हम केवल प्राकृतिक सम्बन्ध द्वारा ही नहीं वरन् सच्चे परमेश्वर के आराध्य होते हुए, "भाई-बन्धु है"। समस्त संसार में परमेश्वर की संताने एक परिवार है और उन्हें प्रेम और समझौते की समान भावना के अधीन होना चाहिए। हमारे उद्धारकर्ता की शिक्षा रोमियों 12:10 में पाई जाती है, "भाईचारे के प्रेम से एक-दूसरे से स्नेह रखो, परस्पर आदर करने में एक दूसरे से बढ़ चलो ।" एक समान शिष्टाचार के विकास से दूसरों के साथ स्वयं के प्रति जैसा व्यवहार करने की सहमति होने से जीवन की आधी बुराईयाँ समाप्त हो सकती है। स्वयं की उन्नति की भावना शैतान की भावना है, लेकिन जिस हृदय में मसीह के प्रेम को संजोया जाता है उसमें वह उदारता होती है जो स्वार्थी नहीं होती। ऐसे लोग ईश्वरीय आज्ञा का पालन करते है, "हर एक अपने ही हित की नहीं, वरन् दूसरी के हित की भी चिन्ता करे" फिलिप्पियों 2:4 PPHin 125.3

हालांकि, लूत को अपनी समृद्धि के लिए अब्राहम का आभारी होना चाहिये था, लेकिन उसने अपने हितकारी के प्रति कोई कृतज्ञता नहीं दिखाई। शिष्टाचार के नाते उसे चयन का अधिकार अब्राहम के पास ही रहने देना चाहिये था, लेकिन स्वार्थी होकर उसने उसके सारे लाभ प्राप्त करने का प्रयत्न किया। उसने "आखं उठाकर, यरदन नदी के पास वालीसारी तराई को देखा कि वह सब जलपूर्ण थी......सोअर तक वह तराई यहोवा की वाटिका और मिस्त्र देश के समान उपजाऊ थी। पूरे फिलिस्तीन में यरदन की तराई, सबसे उपजाऊ क्षेत्र था जो देखने वालों को गंवा दी गई अदन की वाटिका की याद दिलाती थी, और हाल ही में छोड़े हुए, नील नदी द्वारा उपजाऊ बनाए क्षेत्र की सुन्दरता और समृद्धि से बराबरी करती थी। वहां समृद्ध और देखने लायक सुन्दर शहर भी थे जो अपने भीड़-भरे बाजारों में लाभदायक अवैध व्यापार के लिये आकर्षण थे। सांसारिक लाभ की कल्पना से चकाचौंध, लूत ने वहां मिलने वाली नैतिक और आत्मिक बुराईयों पर ध्यान नहीं दिया। तराई के निवासी "यहोवा के लेखे में बड़े दुष्ट और पापी थे।" या तो इस बात से वो अनजान था या जानते हुए भी इस बात को उसने गम्भीरता से नहीं लिया। वह "उस बुराई के नगरों में रहने लगा और अपना तम्बू सदोम के निकट खड़ा किया ।" उस स्वार्थ भरे चयन के भयावह परिणामों की उसने कितनी कम पूर्वकल्पना की! PPHin 126.1

लूत से अलग होने के पश्चात अब्राहम को फिर से परमेश्वर द्वारा सम्पूर्ण राज्य का आश्वासन मिला। इसके तत्पश्चात अब्राहम छेब्रोन में स्थानान्तरित हो गया जहां उसने ममरे के ओक वृक्षों के नीचे अपना तम्बू खड़ा किया और वहां भी यहोवा की एक वेदी बनाई। जहां पहाड़ी तराईयों की खुली हवा थी, जहाँ जैतून की वृक्ष-वाटिकाएं और दाख के बगीचे, झूमते धान के खेत, चारों तरफ की पहाड़ियों के फैले हुए चरागाह थे, वहां अब्राहम जा कर बसा। सदोम की तराई की संकटमय शान और शौकत कोलूत के लिये छोड़कर, यह कुलपिता अपने साधारण जीवन से सन्तुष्ट था। अब्राहम को पड़ोसी देशों से एक शक्तिशाली राजकुमार और एक बुद्धिमान व योग्य मुखिया होने का सम्मान प्राप्त था। उसने अपने प्रभाव को अपने पड़ोसियों से परे नहीं रखा। मूर्तिपूजकों के बिल्कुल विपरीत, उसके जीवन और चरित्र ने सच्चे विश्वास के पक्ष में महत्वपूर्ण प्रभाव डाला। परमेश्वर के प्रति उसकी आज्ञाकारिता अविचलित थी, उसका मित्रतापूर्ण व्यवहार और हितैषिता विश्वास और मेत्री को प्रेरित करती थी और उसकी स्वभाविक महानता उसे आदर और सम्मान का पात्र बनाती थी। PPHin 126.2

उसके धर्म के बारे में यह मान्यता नहीं थी कि वहकड़े पहरे मेंसंभाल कर रखे जाने वाली अनमोल निधि है या जिसका आनन्द केवल उसका स्वामी ही ले सकता है। सच्चा धर्म ऐसा नहीं होता क्योंकि ऐसी भावना सुसमाचार के सिद्धान्तों के प्रतिकूल है। जब मसीह हृदय में वास करता है तो उसकी उपस्थिति के प्रकाश को छुपा कर रखना असम्भव है और ना ही वह प्रकाश फीका पड़ सकता है। इसके विपरीत जैसे-जैसे आत्मा पर छाने वालें स्वार्थ और पाप के कोहरे को

धार्मिकता के सूरज की प्रकाशमान किरणें दूर करती है, वैसे-वैसे यह प्रकाश और उज्जवल होता जाता है। PPHin 127.1

परमेश्वर के लोग धरती पर उसके प्रतिनिधि हैं और वो चाहता है कि वे इस संसार के नैतिक अन्धकार में प्रकाश समान हो। देश भर में, नगरों में, शहरों में और गांवो में फैले हुए वे परमेश्वर के साक्ष्य हैं, और वह माध्यम है जिनके द्वारा परमेश्वर अविश्वासी जगत में अपने अनुग्रह के आश्चर्यकर्म और अपनी इच्छा का ज्ञान पहुँचाएगा ।यह उसकी योजना है कि महान उद्धार को प्राप्त करने वाले सभी उसके लिये धर्म प्रचारक बने। मसीही की पवित्रता वह मानक स्थापित करती है जिसके आधार पर जगतवासी सुसमाचार को जांचते है। धैर्य के साथ सहे संकट, आभार के साथ प्राप्त की हुई आशीषें, दीनता, दयालुता, उदारता और प्रेम का स्वभाविक प्रदर्शन वह प्रकाश है जो संसार के सामने प्रकाश समान चमकता है और प्राकृतिक हृदय के स्वार्थ के परिणामस्वरूप आए अन्धकार का विपरीत रूप दिखाता है। PPHin 127.2

अपने तीर्थयात्री जीवन की सरलता में दीन, आज्ञापालन में स्थिर, उदारता में शिष्ट और विश्वास में समृद्ध, अब्राहम कूटनीति में विवेकपूर्ण और युद्ध में साहसी और दक्ष भी था। यह जानते हुए भी कि वह एक नए धर्म का शिक्षक था,एमोर की तराई, जहां वह पहले वास करता था, के शासक, राज परिवार से सम्बन्धित तीन भाईयों ने अधिक सुरक्षा के लिये उसे संधि करने हेतु आमन्त्रित करने में अपने मैत्री भाव का प्रदर्शन किया। वह देश हिंसा और दमन से ग्रसित था,इसलिये जल्द ही ऐसा अवसर आया कि वह इस सन्धि का लाभ उठा सके । PPHin 127.3

एलाम के राजा कदोर्लाओमेर ने चौदह वर्ष पूर्व कनान पर आक्रमण किया था और उसे अपने अधीन किया था। कई राजकुमारों ने अब विद्रोह किया और चार संधिबद्धों साथ, एलामी राजाने, कनान को अधीकृतकरनेके लिये कूच किया। कनान के पांच राजाओं ने अपनी सेनाओं को संगठित किया और सिद्दीम नामक तराईं में घुसपैठियों का सामना किया, लेकिन वे पूरी तरह से पराजित हुए। सेना का बड़ा भाग काट डाला गया ।और जो बच निकले वे सुरक्षा के लिये पहाड़ो की ओर भाग गए। पराक्रमियों ने तराई के शहरों को लूटा और व्यापक लूट की सामग्री व कई कैदियों, जिनमें लूत और उसका परिवार भी था, सहित प्रस्थान किया । PPHin 128.1

माम्रे की ओक की वृक्ष वाटिकाओं में शान्ति में रहते हुए अब्राहम ने एक शराणार्थी से युद्ध की कथा सुनी और उसके भतीजे लूत पर आई विपत्ति के बारे में जाना। उसने लूट की अकृतज्ञता की किसी भी निर्दयी स्मृति को संजो कर नहीं रखा था। उसका लूत के लिये सारा प्रेम जागृत हो गया और उसने संकल्प लिया कि उसे बचाया जाना चाहिये। सबसे पहले ईश्वरीय परामर्श लेकर, अब्राहम ने युद्ध के लिये तैयारी की। अपने जन-समूह से उसने तीन सौ अठारह प्रशिक्षित दासों को बुलाया जो अपने स्वामी की सेवा के लिये परमेश्वर के भय में प्रशिक्षित किये गए थे और युद्ध कौशल में निपुण थे। उसके साथ संधिबद्ध माम्रे, एश्कोल और आनेर अपनी टुकड़ियों सहित जुड़ गए और वे

एक साथ घुसपैठियों का पीछा करने निकल पड़े। एलेमियो और उनके संधिबद्धों ने अपना डेरा डान में डाला, जो कनान की उत्तरी सीमा पर स्थित था। विजय-प्राप्ति से आनन्द-विभोर और हारे हुए शत्रु की ओर से आक्रमण से भय-रहित, वे मनोरंजन में मग्न हो गए। कुलपिता अब्राहम ने अपने दासों के अलग-अलग दल बनाकर रात को उन पर चढ़ाई की। उसका आक्रमण इतना सशक्त और अप्रत्याशित था, कि उसे अविलम्ब विजय प्राप्त हुईं। एलाम का राजा मारा गया और और उसकी भयग्रस्त सेना को खदेड़ दिया गया। लूत को सहपरिवार, कैदियों व चलसंपत्ति के साथ वापस लाया गया और विजेताओं के हाथ बहुत सा लूट का माल लगा। परमेश्वर की अधीनता में, अब्राहम की विजय निश्चित थी । यहोवा के उपासक ने ना केवल देश केलिये महान सेवा की थी, बल्कि स्वयं को साहसी भी प्रमाणित किया था। यह स्पष्ट हुआ कि धार्मिकता कायरता नहीं है और अब्राहम के धर्म ने उसे सताए हुए लोगो की रक्षा करने में और अधिकार को कायम रखने में साहसी बनाया था। उसके साहसपूर्ण कृत्य का आस पास के कबीलों पर व्यापक प्रभावपड़ा । उसकी वापसी पर, सदोम का राजा अपने परिजनों सहित, विजेता को सम्मानित करने बाहर आया। कैदियों को वापस करने की विनती करते हुए, उसने अब्राहम को सारी लूट की सम्पत्ति ले जाने को कहा। लूट की सम्पत्ति पराक्रमी का अधिकार होता है, लेकिन अब्राहम का यह अभियान किसी लाभ के लिये नहीं था, और उसने अभागों का लाभ उठाने से मना कर दिया। लेकिन उसने तय किया कि उसके संधिबद्धों को वह भाग मिलना चाहिये जिसके वे हकदार थे। PPHin 128.2

ऐसी परीक्षा में बहुत कम, स्वयं को अब्राहम की तरह शिष्ट प्रमाणित कर पाते। बहुत कम ने इतनी सम्पत्ति प्राप्त करने के प्रलोमन में पड़ने से अपने आप को रोका होगा। उसका उदाहरण स्वार्थी, धन-लोलुप भावनाओं के लिये एक फटकार है। अब्राहम मानवता और न्याय के अधिकार को मान्यता देता था। उसका नैतिक व्यवहार इस प्रेरित नीतिवचन का उदाहरण है, “एक-दूसरे से अपने ही समान प्रेम रखना” (लैवव्यवस्था 19:18)। उसने सदोम के राजा से कहा, “परमप्रधान ईश्वर यहोवा, जो आकाश और पृथ्वी का अधिकारी है, उसकी मैं यह शपथ खाता हूँ कि जो कुछ तेरा है उसमें से न तो मैं एक सूत और न जूती का बन्धन, न कोई और वस्तु लूंगा कि तू ऐसा न कहने पाए कि अब्राहम मेरे ही कारण धनी हुआ।” अब्राहम उन्हें यह सोचने का कोई अवसर नहीं देना चाहता था कि उसने युद्ध लाभ के लिये किया था और ना ही वह अपनी समृद्धि का श्रेय उनके उपहारों को देना चाहता था। परमेश्वर ने अब्राहम को आशीष देने की प्रतिज्ञा की थी और सारी महिमा उसी को देनी चाहिये । PPHin 129.1

दूसरा जो विजयी कुलपिता के स्वागत के लिये बाहर आया, शालेम का राजा, मलिकिसिदक था जो उसकी सेना के जलपान के लिये रोटी और दाखधमु लेकर आया। परमप्रधान का याजक होने के नाते उसने अब्राहम को आशीर्वाद दिया और परमेश्वर का धन्यवाद किया जिसने उसके विद्रोहियों को उसके वश में कर दिया था। और अब्राहम ने उसको सब वस्तुओं का दश्वांश दिया। PPHin 129.2

अब्राहम प्रसन्नचित होकर अपने तम्बू और अपने पशु-समूह में लौट आया, लेकिन उसका मन कष्टप्रद विचारों से विचलित था। वह एक शान्तिप्रिय मनुष्य था जो जहां तक सम्भव होता था, शत्रुता और कलह से दूर रहता था, और भयभीत होकर उसने नरसंहार के दृश्य का स्मरण किया जिसका वह स्वयं साक्षी था। लेकिन वह देश जिनकी सेनाओं को उसने पराजित किया था, कनान पर निश्चय ही आक्रमण को सक्रिय कर उसे अपने बदले का विशेष लक्ष्य बनाते। इस प्रकार के राष्ट्रीय झगड़ों में उलझकर उसके जीवन की शान्ति भंग होने का डर था और तो और अभी उसे कनान का स्वामित्व नहीं मिला था और न ही वह उत्तराधिकारी की आशा कर सकता था, जिसमें प्रतिज्ञा परिपूर्ण हो सकती थी। PPHin 129.3

रात के एक स्वप्नदर्शन में यह अलौकिक वाणी सुनाई दी, "हे अब्राहम, मत डर" यह बोल राजाओं के राजा के थे, "तेरी ढाल और तेरा अत्यन्त बड़ा प्रतिफल में हूँ" लेकिन उसका मन आने वाले संकट के पूर्वाभास से इतना परेशान था कि वह पहले वाले निःसन्देह विश्वास के साथ प्रतिज्ञा को नहीं समझ पाया। उसने उसके परिपूर्ण होने के स्पष्ट प्रमाण के लिये प्रार्थना की ।और वाचा की प्रतिज्ञा कैसी पूरी होनी थी, जब वह पुत्र की आशीष से वंचित था? उसने कहा "मुझे तो तूने वंश नहीं दिया और क्या देखता हूँ कि मेरे घर में उत्पन्न हुआ एक जन मेरा वारिस होगा।" PPHin 130.1

उसने गोद लेकर अपने विश्वसनीय दास एलीआज़ार को अपना पुत्र व अपनी धन-सम्पत्ति का उत्तराधिकारी बनाने का प्रस्ताव रखा। लेकिन उसे आश्वासन दिया गया कि उसका जो निज पुत्र होगा, वही उसका वारिस होगा। फिर उसे तम्बू से बाहर ले जाया गया और उसे कहा गया कि आकाश में चमकते हुए असंख्य तारों की ओर दृष्टि करे और जब उसने ऐसा किया तो ये शब्द बोले गए, "तेरा वंश ऐसा ही होगा।" "अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया और यह उसके लिये धार्मिकता गिना गया।" रोमियों 4:3 PPHin 130.2

अभी भी कुलपिता ने एक सदृश्य चिन्ह की विनती की जिससे उसके विश्वास का पुष्टिकरण हो सकते और आने वाली पीढ़ियों को यह प्रमाण मिल सके कि उनके लिये परमेश्वर की अनुग्रहकारी योजनाओं का परिपूर्ण होना निश्चित है। विधिवत कार्य के पुष्टिकरण हेतु मनुष्यों में परम्परागत तरीके को अपनाते हुए परमेश्वर ने अब्राहम के साथ वाचा बांधना स्वीकार किया। ईश्वरीय निर्देशन में अब्राहम ने तीन वर्ष की एक कलोर, तीन वर्ष की एक बकरी और तीन वर्ष का एक मेढ़ा, एक पिण्डुक और एक कबूतर के बच्चे की बलि चढ़ाई । इन सभी को लेकर उसने बीच से दो टुकड़े कर दिये और टुकड़ो को आमने सामने रखा पर चिड़ियों के उसने टुकड़े नहीं किए। ऐसा करने के पश्चात वह श्रद्धापूर्वक बलि के अंशों के बीच से निकला और परमेश्वर के प्रति अखंडित आज्ञाकारिता की प्रतिज्ञा की। सर्तक और अटल, वह सूर्यास्त तक उन टुकड़ो के पास रहा ताकि वह उन्हें माँसाहारी पक्षियों द्वारा खाए जाने से या अशुद्ध करने से सुरक्षित रख सके। जब सूर्य अस्त होने लगा तबअब्राहम को गहरी नींद आई और देखो, अत्यन्त भय और महाअन्धकार ने उसे छा लिया। और

परमेश्वर की वाणी सुनाई दी जो उसे कह रही थी कि वह प्रतिज्ञा के देश के तत्काल स्वामित्व की अपेक्षा न करे और उसके वंशजो पर, कनान में स्थापित होने से पूर्व, आने वाली आपदाओं का संकेत दिया। मसीह की मृत्यु में, महान बलिदान में, उसकी महिमा के साथ आगमन में उद्धार की योजना से उसे अवगत कराया गया। अब्राहम ने यह भी देखा कि प्रतिज्ञा के अन्तिम और सम्पूर्णपरिपूर्णता के तौर पर अनन्त सम्पत्ति के रूप में अदन की सुन्दरता में पुनः निर्मित धरती उसे दी जायेगी। PPHin 130.3

परमेश्वर और मनुष्य के बीच वाचा की शपथ जैसे, एक अंगीठी जिसमें से धुआं उठता था, और एक जलती हुई मशाल, ईश्वर की उपस्थिति के चिन्ह, उन टुकड़ो के बीच में से होकर निकली और उन टुकड़ो को भस्म कर दिया। और अब्राहम को फिर से एक आवाज सुनाईं दी जिसने उसके वंशजो के लिये कनान देश के उपहार की पुष्टि की, "मिस्त्र के महानद से लेकर फरात नामक बड़े नद तक जितना देश।" PPHin 131.1

जब अब्राहम कनान में लगभग पच्चीस वर्ष व्यतीत कर चुका था तब यहोवा ने उसको दर्शन देकर कहा, "में सर्वशक्तिमान ईश्वर हूँ मेरी उपस्थिति में चल और सिद्ध होता जा"। श्रद्धायुक्त विस्मय से कुलपिता अपने मुहँ के बल गिरा और परमेश्वर उससे यूं बाते करता रहा, "देख मेरी वाचातेरे साथ बन्धी रहेगी, इसलिये तू जातियों के समूह का मूलपिता हो जाएगा।" इस वाचा के परिपूर्ण होने के चिन्ह स्वरूप उसका नाम अब्राम से अब्राहम हो गया, जिसका मतलब है, "जातियों के समूह का मूलपिता" सारै का नाम सारा हो गया-'राजकमारी' "क्योंकि वह जाति-जाति की मूलमाता हो जाएगी और उसके वंश में राज्य-राज्य के राजा उत्पन्न होंगे। PPHin 131.2

इस समय जोविश्वास उसने बिना खतने की दशा में दर्शाया था, उसके परिणामस्वरूप धार्मिकता पर छाप के रूप में अब्राहम को खतने की विधि दी गई। कुलपिता व उसके वंशजों को चिन्ह के रूप में इसका पालन करना था यह बताने के लिये कि वे परमेश्वर की सेवा के लिये समर्पित हैं और इस तरह मूर्तिपूजा करने वालों से अलग किए गए है, और परमेश्वर ने उन्हें उसकी अनमोल निधि के रूप में स्वीकार किया है। इस विधि के माध्यम से वे अब्राहम के साथ बांधी गई वाचा के प्रतिबन्धों को पूर्ण करने के लिये वचनबद्ध थे। उनको अन्य जातियों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध नहीं बनाने थे, ऐसा करने से वे परमेश्वर और उसकी व्यवस्था का निरादर करते, वे अन्य देशों के पापमय अभ्यासमें भागीदार होने को प्रलोभित होते और मूर्तिपूजा में पड़ जाते। PPHin 131.3

परमेश्वर ने अब्राहम को बहुत सम्मान दिया। स्वर्गदूतों मित्रों जैसे उससे बात-चीत करते और उसके साथ चलते थे। सदोम पर आने वाली दण्डाज्ञा का तथ्य उससे छुपा नहीं था और वह पापियों और परमेश्वर के बीच मध्यस्थ बना। स्वर्गदूतों का उसके साथ साक्षात्कार, अतिथि-सत्कार का उत्तम उदाहरण है। PPHin 132.1

ग्रीष्मऋतु की तपती दोपहर में कुलपिता अपने तम्बू के द्वार पर बेठे शान्त स्थल-प्रकृति को देख रहा था जब उसने तीन यात्रियों को दूर से आते हुए देखा । उसके तम्बू तक पहुँचने से पूर्व, वे ठहरे जैसे रास्ते के सम्बन्ध में परामर्श कर रहे हों। उनके सहायता मांगने से पहले ही, अब्राहम जल्दी से उठा और जब वे सम्भवत दूसरी दिशा में मुड़ रहे थे, वह उनके पीछे गया और शिष्टतापूर्वक उनसे विनती की कि वे जलपान के लिये रूककर उसका सम्मान करे। वह स्वयं जल लेकर आया कि वे अपने पैरों पर लगी यात्रा की धूल को धो सकें। उनके खाने काउसने स्वयं चयन किया, और जब वे ठण्डी छाया में विश्राम कर रहे थे, उसने उनके मनोरंजन का प्रबन्धन किया गया और वह आदर भाव के साथ तब तक उनके पास खड़ा रहा जब तक वे उसके अतिथि-सत्कार को ग्रहण करते रहे । शिष्टाचार का यह कृत्य इतना महत्वपूर्ण है कि एक प्रेरित अनुयायी ने हजार वर्ष पश्चात इसके सन्दर्भ में कहा, "अतिथि-सत्कार करना न भूलना, क्योंकि इसके द्वारा कुछ लोगों ने अनजाने में स्वर्गदूतों का आदर-सत्कार किया ।"इब्रानियों 13:2 PPHin 132.2

अब्राहम ने अपने अतिथियों मे केवल तीन थके हुए यात्रियों को देखा, बिना सोचे कि उनमें से एक है जो निष्पाप है और वह उसकी आराधना करेगा। लेकिन स्वर्ग के दूतों का वास्तविक चरित्र अब स्पष्ट हुआ। हालांकि वे क्रोध के वाहकों के रूप में अपनी राह पर थे, लेकिन विश्वास के पिता, अब्राहम के साथ उन्होंने पहले आशीषों की बात कही। हालाँकि परमेश्वर दुष्टता की सुधि लेने में और पापियों को दण्डित करने में कठोर है, लेकिन उसे प्रतिशोध में आनन्द नहीं आता। विनाश का कार्य उसके लिये विचित्र है जो प्रेम में असीमित है।भजन संहिता 25:14में लिखा है, "यहोवा के भेद को वहीं जानते है जो उससे डरते है।' अब्राहम ने परमेश्वर का आदर किया और परमेश्वर में अब्राहम के साथ विचार-विनियम करते हुए, अपने उद्देश्यों को उसे बताते हुए, अब्राहम को सम्मानित किया। यहोवा ने कहा, "यह जो मैं करता हूँ. उसे क्या अब्राहम से छिपा रखूँ? सदोम और अमोरा की चिललाहट बढ़ गईं है, और इनका पाप बहुत भारी हो गया है। इसलिये मैं उतरकर देखूँगा कि उसकी जैसी चिल्लाहट मेरे कान तक पहुँचती है, उन्होंने ठीक वैसा ही काम किया है कि नहीं, और न किया हो तो मैं उसे जान लूंगा।" परमेश्वर को भली-भांति सदोम के अपराध-बोध का अनुमान था, लेकिन उसने स्वयं को उसी तरह व्यक्त किया जैसे कि मनुष्य करते है, ताकि उसके व्यवहार में न्याय को समझा जा सके। वह स्वयं नीचे उतरेगा और उनके क्रिया कलापों को जांच कर यह निर्धारित करेगा कि उन्होंने ईश्वरीय दया की सीमा तो पार नहीं की और ऐसा होने पर उन्हें पश्चताप का मौका देगा । PPHin 132.3

उनमें से स्वर्ग के दो सन्देशवाहक चले गए और अब्राहम को उसके साथ छोड़ गए, जिसे वह अब परमेश्वर के पुत्र के रूप में पहचानता था। और विश्वास के पिता ने सदोम-वासियों के लिये विनती की। एक बार उसने उन्हें अपनी तलवार से बचाया था और अब वह उन्हें प्रार्थना के द्वारा बचाने का प्रयत्न कर रहा था।लूत और उसका घराना अभी भी वहां रह रहा था और जिस निस्स्वार्थ

प्रेम ने अब्राहम को उन्हें एलामियों से बचाने को प्रेरित किया था, उसी प्रेम ने अब यदि परमेश्वर की इच्छा थी तो, पवित्र दण्डाज्ञा से बचाना चाहा। PPHin 133.1

अत्यन्त आदर और दीनता के साथ उसने आग्रह किया, हे प्रभु सुन मैं तो मिट्टी और राख हूँ तौभी मैं ने इतनी ढिठाई की कि तुझ से बातें करूँ ।" इसमें न तो आत्मविश्वास था, और न ही अपने धर्मी होने की बढ़ाई करना। परमेश्वर की इच्छानुसार अपने द्वारा दी गई बलि की भेंटो या अपनी आज्ञाकारिता को उसने परमेश्वर से अति-कृपा पाने का आधार नहीं बनाया। स्वयं को पापी मानते हुए, उसने दूसरे पापियों की ओर से विनती की। एसी ही भावना उन सब में होनी चाहिये जो परमेश्वर से आग्रह करते हैं। अब्राहम ने ऐसा विश्वास प्रकट किया जैसा कि एक बच्चा अपने प्रिय पिता से विनती करने में दिखाता है। वह स्वर्ग से आए सन्देश वाहक के निकट आया और आग्रपूर्वक याचना की। हालांकि, लूत सदोम का वासी हो गया था, लेकिन उसने वहां के निवासियों की दुष्टता का अंगीकार नहीं किया था। अब्राहम ने सोचा कि उस जनपूर्ण शहर में सच्चे परमेश्वर के और भी उपासक होंगे। इस दृष्टिकोण से उसने विनती की, "क्या तू सचमुच दुष्ट के संग धर्मी का भी नाश करेगा? यह तुझ से दूर रहे, क्या सारी पृथ्वी का न्यायी न्याय न करे, अब्राहम ने एक नहीं अनेकों बार पूछा। निवेदन स्वीकार होने पर उसका साहस बढ़ता गया और वह तब तक विनती करता रहा जब तक उसे यह आश्वासन नहीं मिला कि यदि उस शहर में दस धर्मी मनुष्य भी मिले तो उसे नष्ट नहीं किया जाएगा। PPHin 133.2

अब्राहम की प्रार्थना मरती हुई आत्माओं के लिये प्रेम से प्रेरित हुई। वह उस भ्रष्ट शहर के पापों से तो घृणा करता था, लेकिन पापियों को बचाना चाहता था। सदोम के प्रति उसकी गहरी संवेदना प्रतीक है उस चिन्ता भरी उत्सुकता का जिसका आभास हमें पश्चतापहीन लोगों के प्रति होना चाहिये। हमें पाप से घृणा लेकिन पापी के प्रति प्रेम और दया दिखानी चाहिये। हमारे चारों ओर आत्माएं उस विनाश की ओर जा रही है,जो सदोम के विनाश जैसा आशाहीन और भयानक है। हर दिन किसी न किसी की परख अवधि समाप्त हो रही है। हर घण्टे कोई न कोई ईश्वर की दया की पहुँच से बाहर होता जा रहा है। और कहां है वे चेतावनी और निवेदन भरी आवाजें जो पापियों को इस भयावह विनाश से दूर भाग जाने को कहें? कहां हैं वे फैलाए हुए हाथ जो इन्हें भयानक मृत्यु से पीछे खींच सके? कहां है वो जो दीनता और दृढ़ विश्वास के साथ परमेश्वर से विनती कर रहे है? PPHin 134.1

अब्राहम की भावना मसीह की भावना थी। स्वयं परमेश्वर का पुत्र पापी की ओर से महान अधिवक्ता है। वह जिसने पापी के उद्धार की कीमत चुकायी है, मनुष्य के मोल को जान सकता है। बुराई के प्रति असीम घृणा करते हुए, जो एक बेदाग पवित्र स्वाभाव ही कर सकता है, मसीह ने पापी के प्रति उस प्रेम की अभिव्यक्ति की जो केवल अपरिमित अच्छाई ही उत्पन्न कर सकती है। क्रूस पर चढ़ाए जाने की यातनाओं के बीच, समस्त संसार के पापों का बोझढोते हुए भी उसने उसके

हत्यारों और ठट्ठा करने वालों के लिये प्रार्थना की है,"हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि यह नहीं जानते कि यह क्या कर रह ह ।"-लूका 23:34 PPHin 134.2

अब्राहम के सन्दर्भ में लिखा गया है कि "वह परमेश्वर का मित्र कहलाया" और "उन सब का पिता ठहरा जो विश्वास करते हैं।" (याकूब 2:23, रोगियों 4:11)इस निष्ठावान कुलपिता के लिये परमेश्वर की गवाही है, "क्योंकि अब्राहम में मेरी मानी और जो मैने उसे सौंपा था उसकी और मेरी आज्ञाओं, विधियों और व्यवस्था का पालन किया है, और "मैं जानता हूँ कि वह अपने पुत्रों और परिवार को, जो उसके पीछे रह जाएंगे, आज्ञा देगा कि वह यहोवा के मार्ग में अटल बने रहे, और धर्म और न्याय करते रहें, ताकि जो कुछ यहोवा ने अब्राहम के विषय में कहा है उसे पूरा करे।" जिन लोगों के द्वारा प्रतिज्ञा के मसीह के आगमन सम्बन्धित सर्वजगतवासियों को आशीष मिलनी थी, जो सदियों तक जगत के लिये परमेश्वर के सत्य के संरक्षक और अभिभावक रहे, उनका पिता कहलाने के लिये बुलाया जाना, अब्राहम के लिये उत्कृष्ट सम्मान था। जिसने कुलपिता के लिये बुलाहट भेजी उसने उसे इस योग्य पाया। वह परमेश्वर है जो बोलता है। जो बहुत दूर तक के विचारों को भांप लेता है और मनुष्य पर सही अनुमान लगाता है, वह कहता है, "मैं इसे जानता हूँ"। अब्राहम स्वार्थपूर्ण प्रयोजनों के लिये सत्य को झुठलाने वालों में से नहीं था। वह व्यवस्था और समझौते का न्यायपूर्वकता और सत्यपरायणता सहित पालन करने वाला था। स्वयं परमेश्वर का भय मानने के साथ-साथ वह अपने घर-परिवार में धर्म को बढ़ावा देता था। वह अपने परिवार को सिद्धता को शिक्षा देता। परमेश्वर की व्यवस्था उसके घराने का नियम होता था। PPHin 134.3

अब्राहम के घराने में हजार से भी अधिक प्राणी थे। जो उसके नेतृत्व में परमप्रधान परमेश्वर की उपासना करने लगे थे, उन्हें उसके डेरे में घर मिला और यहां उन्हें सच्चे विश्वास के प्रतिनिधि के रूप में तैयार करने वाली शिक्षा उसी प्रकार मिली, जैसे कि किसी पाठशाला में मिलती है। इस तरहउस पर एक महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व था। वह परिवार के मुखियाओं को प्रशिक्षित कर रहा था, और जिन घरानों का वे संचालन कर रहे थे, उन घरानों में अब्राहम के निर्धारित किये नियमों का पालन होना था। PPHin 135.1

प्राचीन काल में पिता अपने सम्पूर्ण परिवार का मुखिया और धर्माध्यक्ष होता था और उसका अपनी संतान पर तब भी अधिकार होता था, जब वे खुद परिवार वाले हो जाते थे। उसके वंशजो को उसे मुखिया मानने की शिक्षा दी गई। अब्राहम इस पुरूष प्रधान शासन-व्यवस्था को स्थायी बनाना चाहता था क्योंकि यह परमेश्वर के ज्ञान को संरक्षित रखने में सहायक होती। मूर्तिपूजा इतनी व्यापक और गंभीरस्थ हो गई थी कि उस पर रोक लगाने हेतु परिवार के सदस्यों में एका बनाए रखना अनिवार्य था।अब्राहम ने अपनी क्षमतानुसार छावनी के सहवासियों को अधर्मियों के साथ मेल-जोल बढ़ाने से और उनकी मूर्तिपूजक परम्पराओं के दर्शक होने से बचाए रखने के हर साधन द्वारा प्रयत्न किया, क्योंकि वह जानता था कि बुराई से अंतरगता सिद्धान्तों को अलक्ष्य रूप से भ्रष्ट कर सकती

थी।हर प्रकार के कृत्रिम धर्म को बाहर रखने का बहुत ध्यान रखा गया और आराधना योग्य जीवित परमेश्वर के वैभव और महिमा से मन को प्रभावित करने के प्रयत्न किये गए। PPHin 135.2

यह परमेश्वर द्वारा स्वयं किया गया ज्ञानपूर्ण प्रबन्ध था, कि जहां तक सम्भव हो, उसके लोगों को अन्य जातियों के संपर्क से अलग रखा जाए और अन्य देशों में सम्मिलित न करके उन्हें एक पृथक सम्प्रदाय बनाया जाए। उसने अब्राहम को उसके मूर्तिपूजक परिजनों से अलग किया था ताकि मेसोपोतामिया के लुभावने प्रभाव से परे कुलपिता अपने परिवार को शिक्षित और प्रशिक्षित कर सके और आने वाली हर पीढ़ी के वंशजो द्वारा सच्चे विश्वास की पवित्रता संरक्षित रहे। PPHin 136.1

अपनी संतानों और घराने के प्रति प्रेम ने अब्राहम को उनके धर्म-सम्बन्धी विश्वास की सुरक्षा करने उन्हें और उनके द्वारा पूरे जगत को, उसकी सबसे महत्वपूर्ण मीरास के रूप में पवित्र नियमों की शिक्षा प्रदान करने को प्रेरित किया। सब को यह शिक्षा दी गई कि वे आलौकिक परमेश्वर के नियमाधीन थे। अभिभावकों की ओर से दमनऔर बच्चों की ओर से अवज्ञा का कोई स्थान नहीं था। परमेश्वर की व्यवस्था ने सभी के कार्य निर्धारित किये थे और उसी का पालन करने से उन्हें शान्ति और समृद्धि प्राप्त हो सकती थी। PPHin 136.2

अब्राहम का निजी उदाहरण, उसके दैनिक जीवन का निःशब्द प्रभाव, एक स्थायी सबक था। वह अटल सत्यनिष्ठा, वह उदारता और निःस्वार्थ कृतज्ञता, जिन्हें राजाओं ने भी सराहा, उसके घर में दिखती थी। उस जीवन में एक सुगन्ध थी, चरित्र में भद्रता और माधुर्य था जो उसके स्वर्ग से जुड़े होने को प्रमाणित करता था। उसने सबसे निम्न दास की आत्मा की भी उपेक्षा नहीं की। उसके घराने में स्वामी और दास के लिये अलग-अलग नियम नहीं थे और न ही धनवान और निर्धनों के प्रति व्यवहार में अन्तर था। सभी के साथ जीवन के अनुग्रह के उत्तराधिकारी समान न्यायपूर्ण और करूणामय व्यवहार किया जाता था। PPHin 136.3

“वह अपने घराने का संचालन करेगा।” बच्चों की पापमय प्रवृति पर रोक न लगाने की अधर्मी उपेक्षा का, निर्बल, विवकेहीन, क्षमाशील पक्षपात का, गलत समझे हुए प्रेम के आगे कर्तव्यपरायणता के परित्याग का कोई स्थान नहीं था। अब्राहम को न केवल सही निर्देश देने थे, वरन् न्याय संगत और पवित्र नियमों की मान्यता को भी बनाए रखना था। PPHin 137.1

हमारे समय में कितने कम है ऐसे लोग जो इस उदाहरण का अनुसरण करेंगे! कोई अभिभावक एक अन्धा, स्वार्थपूर्ण संवेदनशील, कृत्रिम प्रेम दिखाते हुए, अपने बच्चों को उनके अविकसित विवेक के अनुशासनहीन आवेग के साथ मनमर्जी करने को छोड़ देते है। यह नौजवानों पर किया हुआ घोर अत्याचार है और जगत के लिये अपराध। अभिभावकों के अनुचित दुलार से परिवारों और समाज में अव्यवस्था पनपती है। ईश्वरीय अपेक्षाओं के प्रति समर्पित होने के बजाए, बच्चों में स्वयं की रूचियों को तृप्त करने की अभिलाषा घर कर लेती है। इस कारण वे ऐसे हृदय के साथ बड़े होते है, जो

परमेश्वर की इच्छा के विरूद्ध काम करता है और उनकी यह अधर्मी, असमर्पित भावना को अपनी संतानों और संतानों की संतानों में भी पहुँच जाती है। अब्राहम के समान, अभिभावकों को अपने घरानों का संचालन स्वयं करना चाहिए। परमेश्वर के प्रभुत्व के प्रति आज्ञाकारिता में पहले चरण के रूप में पैतक अधिकार की मान्यता देने की शिक्षा दी जानी चाहिये। PPHin 137.2

धर्माध्यक्षों द्वारा परमेश्वर की व्यवस्था की अपर्याप्त मान्यता देने के कारण कई बुराईयाँ उत्पन्न हुई। उनकी शिक्षा जो इतनी व्यापक हो गई है कि मनुष्य पवित्र नियमबद्ध न रहा, उस शिक्षा का मनुष्य की नैतिकता पर मूर्तिपूजा जैसा प्रभाव पड़ता है। जो प्रयत्न करते हैं, वे प्रत्यक्ष रूप से राज्यों और परिवारों की शासन-प्रणाली की नींव पर चोट करते हैं। धर्म-प्रधान अभिभावक यदि परमेश्वर के नियमानुसार नहीं चलते है, तो वे अपने घराने को परमेश्वर के बताए पथ पर नहीं चला सकते। जब सन्ताने स्वयं अपने परिवार स्थापित करते है, तो वे अपने बच्चों को वह सिखाने के लिये कर्तव्यबद्ध नहीं समझते जो उन्हें कभी नहीं सिखाया गया। इसी कारण कई परिवार ईश्वररहित है, इसी कारण दुष्टता इतनी व्यापक और अति है। PPHin 137.3

जब तक अभिभावक स्वयं शुद्ध हृदय से परमेश्वर की व्यवस्था में नहीं चलते, वे अपनी संतानों को व्यवस्था मानने को बाध्य नहीं कर सकते। इस सन्दर्भ में गम्भीर और व्यापक सुधार की आवश्यकता है। अभिभावकों में सुधार की आवश्यकता है, धर्माध्यक्षों में सुधार की आवश्यकता है। उनके घराने को परमेश्वर की आवश्यकता है। अगर उन्हें परिस्थिति में कुछ अलग प्रतीत होता है, तो उन्हें अपने परिवारों में परमेश्वर के वचन को लाना चाहिये और उसे अपना सलाहकार बनाना चाहिये [उन्हें अपने बच्चों को सिखाना चाहिये कि यह परमेश्वर की वाणी है और उन्हें इसका कहा मानना चाहिये। उन्हें धैर्य के साथ उन्हें निर्देश देने चाहिये और नम्रतापूर्वक व बिना थके उन्हें सिखाना चाहिये कि वे किस तरह अपना जीवन व्यतीत करें, जिससे परमेश्वर प्रसन्न हो। ऐसे घरानों के बीच मूर्तिपूजा के कृतक का उत्तर देने को तैयार होते है। उन्हें बाईबल को अपने विश्वास का आधार माना होता है और उनकी नींव संदेहवाद के प्रवाह में नहीं बह सकती । PPHin 137.4

कई घरों में प्रार्थना की उपेक्षा होती है। माता-पिता को लगता है कि उनके पास सुबह-शाम की प्रार्थना के लिये समय नहीं है। परमेश्वर की बहुतायत से दी हुई कृपा, वर्षा की वौछार और सूर्य की रोशनी, जो वनस्पति को पनपाती है, व पवित्र स्वर्गदूतों द्वारा दी गईं सुरक्षा के लिये उसका धन्यवाद करने के लिये कुछ पल भी नहीं निकाल सकता। अपने घराने में मसीह की स्थायी उपस्थिति और ईश्वरीय सहायता और मार्गदर्शन के लिये प्रार्थना का समय भी नहीं होता। बिना स्वर्ग या परमेश्वर का विचार किए, में बैल या घोड़े की तरह अपने-अपने कार्यों के लिये निकल पड़ते है। उनकी आत्माएं इतनी मूल्यवान है कि उनका सर्वनाश होने के बजाय परमेश्वर के पुत्र ने उन्हें बचाने के लिये अपना जीवन दे दिया, लेकिन वे उसकी अति अच्छाई की सराहना मरते हुए पशुओं से कु़छ ही ज्यादा करते हैं। PPHin 138.1

प्राचीन कुलपिताओं की भाँति जो भी परमेश्वर से प्रेम रखते है उन्हें जहां वे अपना तम्बूखड़ा करते है, परमेश्वर के लिये एक वेदी बनानी चाहिये। यदि ऐसा कभी भी ऐसा समय था कि प्रत्येक घर प्रार्थना का घर होना चाहिये तो वह समय अभी है। माता और पिता को अपने बच्चों के लिये दीनता भरी विनती में अपने हृदयों को परमेश्वर की ओर उठाना चाहिए। पिता को घराने का ध्माध्यक्ष होने के नाते सुबह-शाम परमेश्वर की वेदी पर बलि की भेंट चढ़ानी चाहिए और माता और प्रार्थना और स्तुति में एक होना चाहिए [ऐसे घरानों में मसीह को देर तक रहने में आनन्द आता है। PPHin 138.2

हर मसीही घराने में से एक पवित्र प्रकाश प्रवाहित होना चाहिए। प्रेम की अभिव्यक्ति कार्य में होनी चाहिए। स्वयं को संवेदनशील दयालुता व नम्र, निस्वार्थ कृतज्ञता में प्रकट करते हुए यह प्रेम घर के पारस्परिक व्यवहार में प्रवाहित होना चाहिये। ऐसे घर है जहां इस सिद्धान्त का पालन किया जाता है, जहां परमेश्वर की आराधना होती है और जहां प्रेम प्रभावशाली होता है, इन घरों से सुबह शाम अगरबत्ती के घुएं रूपी सुबह-शाम की प्रार्थनाएं ऊपर जाती है और सबुह की ओस रूपी कृपा और आशीष विनती करने वालों पर नीचे आती है। PPHin 139.1

एक सुव्यवस्थित मसीही घराना मसीही धर्म की वास्तविकता के पक्ष में एक प्रभावशाली तक है, जिसका मूर्तिपूजक भी खण्डन नहीं कर सकते। सब को ज्ञात होता है कि परिवार में एक शक्ति होती है जो दूसरों पर प्रभाव डालती है, और यह कि अब्राहम का परमेश्वर उनके साथ है। यदि तथाकथित मसीही लोगों के घरों का आचरण धर्म प्रधान होता तो वे सकात्मक प्रभाव डाल सकते। वे वास्तव में "जगत की ज्योति" होते। अब्राहम को सम्बोधित किये शब्दों द्वारा परमेश्वर हर विश्वसनीय अभिभावक से बात करता है, "क्योंकि मैं जानता हूँ कि वह अपने पुत्रों और परिवार को जो उसके पीछे रह जाएंगे, आज्ञा देगा कि वे यहोवा के मार्ग में अटल बने रहें और धर्म और न्याय करते रहे, ताकि जो कुछ यहोवा ने अब्राहम के विषय में कहा है उसे पूरा करें। PPHin 139.2

अध्याय 13—विश्वास की परीक्षा

यह अध्याय उत्पत्ति 16,17:18-20, 21:1-14, 22:1-19 पर आधारित है

अब्राहम ने बिना प्रश्न किए एक पुत्र की प्रतिज्ञा को स्वीकार कर लिया था, लेकिन उसने परमेश्वर को अपने समयानुसार और अपने तरीके से अपने वचन को पूरा करने की प्रतीक्षा नहीं की। परमेश्वर की सामर्थ्य में उसके विश्वास की परीक्षा के लिये विलम्ब को अनुमति दी गई, लेकिन वह इसमें सफल नहीं हो सका। यह सोचकर कि बुढ़ापे में पुत्र प्राप्ति असभंव थी, सारै नेईश्वरीय प्रयोजन को पूर्ण कराने हेतु योजना के तौर पर अब्राहम को सलाह दी कि वह उसकी दासियों में से एक को दूसरी पत्नी के रूप में अपना ले। बहुर्विवाह इतना व्यापक हो गया था कि उसे पाप नहीं माना जाता था, लेकिन ये प्रथा परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन थी और पारिवारिक सम्बन्ध की पवित्रता और शान्ति के लिये हानिकारक थी। अब्राहम का हाजिरा से विवाह न केवल उसके घराने के लिये वरन् आने वाली पीढ़ियों के लिये भी हानिकारक सिद्ध हुआ। PPHin 140.1

अब्राहम की पत्नी का सम्मान पाने से प्रसन्न होकर और अब्राहम से उत्पन्न एक महान वंश की माँ कहलाने की आशा में, हाजिरा घमण्डी और डींगमार हो गई, और अपनी मालकिन से घृणा करने लगी। परस्पर ईर्ष्या के कारण एक खुशहाल रह रहे परिवार की शान्ति भंग हो गईं। दोनों के आरोपों को सुनने के लिये बाध्य, अब्राहम व्यर्थ में सामनन्जस्य पुनःस्थापित करने का प्रयत्न करता । हालांकि सारे के निवेदन पर उसने हाजिरा से विवाह किया था, लेकिन अब सारे उसी को गलत ठहरा कर उसे उलाहना देने लगी। उसने हाजिरा को भगा देना चाहा लेकिन अब्राहम ने ऐसा नहीं होने दिया। क्योंकि हाजिरा उसके बच्चे की माँ बनने वाली थी और इस प्रतिज्ञा के पुत्र की वह आशा कर रहा था। हाजिरा सारे की दासी थी इसलिये अब्राहम ने अभी भी उसे सारै के नियन्त्रण में छोड़ा । उसकी घृष्टता से भड़की हुईसारै की निष्ठुरता को उसका अंहकारी स्वभाव सहन न कर सका और "जब सारै उसको दुख देने लगी, वह उसके सामने से भाग गई" । PPHin 140.2

उसने जंगल की राह पकड़ी और जब वह अकेली और मित्रहीन, जल के एक सोते के पास विश्राम कर रही थी तो यहोवा का दूत मानव के रूप में उसके सामने प्रकट हुआ। 'हे सारे की दासी' कहकर संबोधित करते हुए उसने हाजिरा को उसके स्थान और कर्तव्य का स्मरण कराया और उससे कहा, "अपनी स्वामिनी के पास लौट जा और उसके वश में रहा।" लेकिन इस फटकार के साथ सांत्वना के शब्द भी थे। "परमेश्वर ने तेरी मनोव्यथा को सुन लिया है।" "मैं तेरे वंश को बहुत बढ़ाऊंगा, यहां तक कि बहुतयात के कारण उसकी गणना न हो सकेगी ।" और परमेश्वर की कृपा के स्थायी स्मरणपत्र के तौर पर उसे अपने पुत्र का नाम इश्माएल रखने को कहा गया जिसका मतलब है, "परमेश्वर सुनता है।' PPHin 140.3

जब अब्राहम सौ वर्ष का था, उसे पुत्र प्राप्ति की प्रतिज्ञा को दोहराया गया और यह आश्वासन दिया गया कि उसका भविष्य का उत्तराधिकारी सारे की संतान होगा। लेकिन अब्राहम को अभी भी यह प्रतिज्ञा समझ नहीं आई। उसे एकदम इश्माएल का ध्यान आया कि उसी के माध्यम से परमेश्वर की अनुग्रहकारी योजना सम्पन्न होगी। पुत्र-मोह में वह बोला, “इश्माएल तेरी दृष्टि में बना रहे, वही बहुत है।'फिर से स्पष्ट शब्दों में प्रतिज्ञा की गई, “निश्चय तेरी पत्नी सारै के तुझ से एक पुत्र उत्पन्न होगा और तू उसका नाम इसहाक रखना और मैं उसके साथ वाचा बांधूगा।” अभी भी परमेश्वर ने पिता की प्रार्थना को अनसुना नहीं किया। “इश्माएल के विषय में भी मैंने तेरी सुनी है, में उसको भी आशीष दूंगा, और उसे फलवन्त करूंगा और अत्यन्त ही बढ़ा दूँगा। PPHin 141.1

जीवन भर की प्रतीक्षा पश्चात, इसाहक के जन्म में उनकी सबसे प्रिय आशा के पूर्ण होने पर, अब्राहम और सारे के तम्बुओं में प्रसन्नता छा गई। लेकिन हाजिरा के लिये यह घटनाउसकी अनुराग सहित संजोए महत्वाकाक्षाओं की पराजय थी। इश्माएल को, जो अब एक नवयुवक हो गया था, तम्बू में रहने वाले सभी लोग अब्राहम की सम्पत्ति का व उसके वंशजों को वचनबद्ध आशीषों का उत्तराधिकारी मानते थे। अब उसे अचानक ही एक तरफ कर दिया गया और निराश हुए माता और पुत्र सारै के पुत्र से घृणा करने लगे। सार्वजनिक उत्सव ने ईर्ष्या को और बढ़ा दिया और इश्माएल का दुसस्ुसहास इतना बढ़ गया कि वह प्रकट रूप में परमेश्वर की प्रतिज्ञा के उत्तराधिकारी क तिरस्कार करने लगा। सारे ने इश्माएल के उग्र व्यवहार में असामंजस्य का स्थायी स्रोत देखा और अब्राहम से विनती की कि वह हाजिरा और उसके पुत्र इश्माएल को वहां से भेज दे। कुलपिता के लिये यह बहुत संकटमयी था। इश्माएल को जो अभी भी उसे प्रिय था, वह कैसे भेज देता? दुविधा की स्थिति में उसने ईश्वरीय मार्गदर्शन के लिए विनती की। पवित्र स्वर्गदूत के माध्यम से परमेश्वर ने उसे सारे की इच्छा पूरी करने का निर्देश दिया, इसी तरह वह अपने परिवार का सुख और शान्ति पुनःस्थापित कर सकता था और इसके लिये वह हाजिरा और इश्माएल के प्रति अपने प्रेम को बाधा नहीं बनाना चाहता था। स्वर्गदूत ने उसे सांत्वना भरा आश्वासन दिया कि अपने पिता के घर से पृथक होने के बावजूद, इश्माएल को परमेश्वर कभी नहीं छोड़ेगा, उसका जीवन सुरक्षित होगा और वह एक महान वंश का पिता होगा। अब्राहम ने स्वर्गवृत का कहा माना, लेकिन उसके लिये यह बहुत दुखद था। हाजिरा और अपने पुत्र को भेजते हुए, एक पिता का हृदय निःशब्द व्यथा से भर गया। PPHin 141.2

अब्राहम को दिया गया निर्देश वैवाहिक सम्बन्ध की पवित्रता के सम्बन्ध में था और हर युग के लिये एक सीख था। वह स्पष्ट बताता है कि महात्याग भी करना पड़े तो भी इस सम्बन्ध के अधिकार और सुख की सुरक्षा अत्यन्त आवश्यक है। सारे ही अब्राहम की वैध पत्नी थी। उसके माँ और पत्नी होने के अधिकार को अन्य कोई भी नहीं बांट सकता था ।वह अपने पति का आदर करती थी और इस सन्दर्भ मे नए नियम में उसे एक उत्तम उदाहरण के तौर पर प्रस्तुत किया गया है। लेकिन वह इस बात से असहमत थी कि अब्राहम का प्रेम किसी और के लिये भी हो और परमेश्वर ने उसकी

प्रतिरोधी हाजिरा के निर्वासन की माँग को अनुचित नहीं ठहराया। अब्राहम और सारै दोनों ही ने परमेश्वर के सामर्थ्य पर सन्देह किया था और अब्राहम का हाजिरा से विवाह इसी गलती का परिणाम था। PPHin 142.1

परमेश्वर ने अब्राहम को विश्वासियों का पिता होने के लिये बुलाया था और उसका जीवन आने वाली पीढ़ियों के लिये विश्वास का प्रतीक होना चाहिये था। लेकिन उसका विश्वास सम्पूर्ण नहीं था। सारे का उसकी पत्नी होने के तथ्य को छुपाने में हाजिरा से विवाह करने में उसने परमेश्वर में अविश्वास दिखाया। उसे विश्वास के सबसे ऊंचे मानक पर पहुँचाने के लिये, परमेश्वर ने उसकी एक और परीक्षा ली, जैसी शायद ही किसी ने सही हो। रात को स्वप्नदर्शन में उसे मोरिय्याह देश मं जाने का निर्देश मिला और वहां एक पहाड़ पर, जिसे परमेश्वर बताने वाला था, अपने पुत्र की होमबलि चढ़ाने को कहा गया। इस आज्ञा के मिलने के समय अब्राहम एक सौ बीस वर्ष का था। अपनी पीढ़ी में भी उसकी गणना वृद्ध-पुरूषों में होती थी। युवावस्था में वह संकटो का सामना करने और खतरों से खेलने में सक्षम था, लेकिन अब युवावस्था का जोश जा चुका था। जिसका सामना पुरूष के जाशे में कोई भी कर सकता है, वही दुख और संकट,जब पैर कब्र की ओर बढ़ रहे हो, हृदय को हताश कर सकते है। लेकिन परमेश्वर ने अब्राहम के लिये अपनी अन्तिम व सबसे कठिन परीक्षा तब तक सुरक्षित रखी थी जब तक कि वृद्धावस्था के बोझ से दबा अब्राहम चिंता और श्रम से विश्राम पाने की अभिलाषा करने लगा। PPHin 142.2

कुलपिता, वैभव और सम्मान के साथ बेशंबा में रहा था। वह धनवान था और देश के शासक उसे शक्तिशाली राजकुमार का सा सम्मान देते थे। उसके डेरों से बहुत दूरतक चरागाहों पर सैंकड़ो भेड़ें और गाय-बैल फैले हुए थे। तम्बुओं के चारों ओर उसके शर्णागतों के घर थे, जो उसके वफादार सेवक थे। स्वर्गने मानों आस्थगित आशा की धीरजवन्त सहनशक्ति में त्याग भरे जीवन को अपनी आशीष का मुकुट पहनाया था। PPHin 143.1

विश्वास पर चलते हुए, अब्राहम ने अपना जन्म स्थान छोड़ दिया जहां उसके पित्रों की कब्रें थीं और परिजनों के घर थे। अपनी धरोहर में वह परदेशी होकर घूमता रहा। वचनबद्ध उत्तराधिकारी के जन्म के लिये उसने बहुत प्रतीक्षा की थी। परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हुए उसने इश्माएल को दूर भेज दिया । और अब जब वही बालक जिसकी इच्छा उन्हें वर्षो से थी किशोरावस्था में प्रवेश कर रहा था और कुलपिता को अपनी आशा का पूर्ण होना प्रतीत हो रहा था, तब उसके सामने वह परीक्षा आईं जो अन्य सब परीक्षाओं से कठिन थी। PPHin 143.2

जिन शब्दों में उस आज्ञा की अभिव्यक्ति हुई, उन शब्दों ने उस पिता के हृदय को यातना से मरोड़ दिया होगा। “अपने पुत्र को, जिससे तू प्रेम रखता है संग लेकर होमबलि करके चढ़ा।” इसहाक अब्राहम के घर का प्रकाश या उसकी वृद्धावस्था का आश्वासन और सबसे अहम वचनबद्ध आशीष का उत्तराधिकारी था। दुर्घटना या बीमारी के कारण ऐसे पुत्र को खाना प्रेमपूर्ण पिता के लिये मर्मभेदी

होता; शोक से उसके शरीर को झुका दिया होता; लेकिन उसे आज्ञा दी गई कि वह अपने ही हाथों अपने पुत्र का खून बहाए। उसे एक भयानक असंभवना प्रतीत हो रही थी।पास ही में शैतान ने सलाह दी कि अब्राहम को धोखा हुआ होगा, क्योंकि पवित्र आज्ञा कहती है, "तू हत्या न करना" और परमेश्वर ने जिस पर रोक लगाई है उसे वह कैसे होने दे सकता है। अब्राहम तम्बू के बाहर गया और उसने बादल रहित आकाश के मद्धम प्रकाश को देखा और पचास वर्ष पूर्व दी गई प्रतिज्ञा का स्मरण किया, जिसके अनुसार उसके वंश को तारों के समान असंख्य होना था। यदि इस प्रतिज्ञा को इसहाक द्वारा सम्पन्न होना था, तो उसे मृत्यु के घाट कैसे उतारा जा सकता था? अब्राहम यह विश्वास करने को ललचाया कि उसे कोई धोखा हुआ है। सन्देह और यातना में उसने नतमस्तक होकर प्रार्थना की, जैसे कभी न की थी कि उसे उस भयानक कार्य को करने की आज्ञा का आश्वासन दिया जाए। उसने सदोम के विनाश में परमेश्वर के उद्देश्य को स्पष्ट करने हेतु भेजे गए स्वर्गदूतों को स्मरण किया ओर उन्हें भी जिन्होंने उसे इसहाक के पैदा होने का आश्वासन दिया था और वह उसी स्थान पर गया जहां वह कई बार स्वर्ग के सन्देशवाहकों से मिला था, इस आशा में कि वह दोबारा उनसे मिलकर और निर्देश प्राप्त कर सके, लेकिन उसकी सहायता के लिये कोई नहीं आया। उसे अपने आप को अंधकार में घिरा पाया, लेकिन परमेश्वर की आज्ञा उसके कानों में गूँज रही थी, "अपने पुत्र को अर्थात अपने इकलौते पुत्र इसाहक को, जिससे तू प्रेम रखता है, संग लेकर जा"। इस आज्ञा का पालन करना अनिवार्य था और वह बिलम्ब करने का दुस्साहस नहीं कर सका। दिन निकट आ रहा था और उसे अपनी यात्रा पर निकलना था। PPHin 143.3

तम्बू में लौटकर, वह वहां गया जहां इसाहक किशोरावस्था और निष्कपटता की गहरी व शान्तिपूर्ण नींद सो रहा था। एक क्षण के लिये पिता ने अपने पुत्र का प्यारा सा चेहरा देखा और कांपते हुए मुड़ गया। वह सारे के निकट गया जो अभी सो रही थी। क्या उसे सारे को जगाना चाहिये कि एक बारवह अपने पुत्र को गले लगा ले? क्या उसे परमेश्वर की आज्ञा के बारे में उसे बताना चाहिये? वह अपने हृदय को हल्का करना चाहता था और इस कष्टदायक कार्य को उसके साथ बांटनाचाहता था, लेकिन वह इस डर से रूक गया कि वह उसको बाधित करेगी। इसहाक सारै का अभिमान और आनन्द था, उसका जीवन उसी में सीमित था और मातृप्रेम होमबलि की अनुमति नहीं देता। आखिरकार अब्राहम ने अपने पुत्र को बुलाया और उसे दूर पहाड़ पर बलि की भेंट की आज्ञा के बारे में बताया। भ्रमण के दौरान बनाई गई वेदियों पर इसहाक अपने पिता के साथ आराधना के लिये प्रायः जाता था और इस कारण यह बुलावा कोई आश्चर्य का विषय नहीं था। यात्रा की तैयारियाँ जल्द ही सम्पन्न हो गई। लकड़ी तैयार की गई और खच्चर पर लाद दी गई और दो दासों के साथ आगे भेज दी गई । PPHin 144.1

पिता और पुत्र साथ-साथ चुप्पी साधे यात्रा करते रहे। कुलपिता का हृदय उस गम्भीर रहस्य में विचारमग्न था और उसे बात करने की इच्छा नहीं थी। वह उस अभिमानी व प्रेमपूर्ण माँ का बारे में

और उस दिन के बारे में जब वह अकेला उसके पास लौटेगा, सोच रहा था। उसे भली-भांति ज्ञात था कि जब वह छुरी उसके पुत्र के प्राण लेगी तभी वह सारे के हृदय को भी चीर देगी। PPHin 145.1

वह दिन-जो अब्राहम के अनुभव में सबसे लम्बा था, धीरे-धीरे बीतने को आया। जब उसका पुत्र और नौजवान दास सो रहे थे, अब्राहम से रातभर प्रार्थना में व्यतीत की, इस आशा में कि स्वर्ग से कोई सन्देशवाहक उसे आकर कहेगा कि इतनी परीक्षा पर्याप्त थी और वह अपने पुत्र को उसकी मां के पास सुरक्षित ले जा पाएगा। लेकिन उसको उत्पीड़ित आत्मा को चेन नहीं मिला। एक और दिन, एक और प्रार्थना और दीनता भरी रात बीती और वह आज्ञा, जिसका पालन करने से वह पुत्रहीन हो जाएगा, उसके कानों में गूंजती रही । शैतान उसके मन में सन्देह और अविश्वास उत्पन्न करता रहा, लेकिन अब्राहम ने उसके प्रस्तावों को प्रतिरोध किया। यात्रा के तीसरे दिन, कुलपिता ने उत्तर दिशा में मोरिय्याह पर्वत पर मंडराते हुए वैभपूर्ण बादल को देखा, जो कि एक वचनबद्ध चिन्ह था और वह समझ गया कि जो आवाज सुनी थी, वह स्वर्ग से थी ।अभी भी वह परमेश्वर पर नहीं बड़बड़ाया, वरन उसकी अच्छाई और विश्वसनीयता के प्रमाणों के आधार पर अपने हृदय को ढाढस बंधाता रहा। इस पुत्र का जन्म अप्रत्याशित था और क्या जिसने यह वरदान दिया था, उसे अपने द्वारा दिये गए को वापस लेने का अधिकार नहीं था? फिर विश्वास ने प्रतिज्ञा को दोहराया, "इसहाक ही से तेरा वंश कहलाएगा" वंश जो समुद्र के तीर के बालू के समान अनगिनत होगा। इसहाक चमत्कार से उत्पन्न हुआ बच्चा था, और क्या वही सामर्थ्य जिसने उसे जीवन दिया उसे बहाल नहीं कर सकता था। जो देखा था, उसके आगे देखते हुए अब्राहम ने पवित्र वचन को थाम लिया, "उसने मान लिया कि परमेश्वर सामर्थी है कि उसे मरे हुओं में से जिलाएं"। इब्रानियों 11:19 PPHin 145.2

लेकिन फिर भी परमेश्वर के अलावा और कोई नहीं समझ सकता कि उस पिता का बलिदान कितना महान था, जिसने अपने पुत्र को मृत्यु के लिये समर्पित कर दिया। अब्राहम की इच्छा थी कि इस वियोग के दृश्य का केवल परमेश्वर साक्षी हो। उसने अपने दासों को कहा, ""गधेके पास यहीं ठहरे रहो, यह लड़का और मैं वहां तक जाकर और दण्डवत करके, फिर तुम्हारे पास लौट आएंगे" । लकड़ी को इसहाक पर लाद दिया गया, जिसकी बलि चढ़ानी था, पिता ने छुरी और आग अपने हाथ में ली और वे दोनों पहाड़ के शिखर की ओर चढ़ने लगे और इस दौरान नौजवान चुपचाप सोचता रहा कि डेरे और पशु समूह से दूर, बलि के लिये भेंट कहां से आएगी। आखिरकार उसने पिता से पूछा, "हे मेरे पिता, देख, आग और लकड़ी तो है, परहोमबलि के लिये भेड़ कहाँ है?" आह ये कैसी परीक्षा थी! 'हे मेरे पिता' किस तरह इस प्रिय संबोधन ने अब्राहम का हृदय चीर दिया। अभी नहीं वह उसे अभी नहीं बता सकता था, उसने कहा, "हे मेरे पुत्र, परमेश्वर होमबलि की भेड़ का उपाय आप ही करेगा।" PPHin 145.3

निर्धारित स्थान पर उन्होंने वेदी बनाई और उस पर लकड़ी को रख दिया। फिर कैंपकँपाती आवाज में उसे अपने पुत्र को पवित्र सन्देश का खुलासा किया। अपनी नियति जानकर इसहाक

भयभीत हुआ और भौंचक्का रह गया, लेकिन उसने प्रतिरोध नहीं किया। वह चाहता तो स्वयं को बचा सकता था, तीन यातनापूर्ण दिनों के संघर्ष से थका हुआ, वृद्ध-पुरूष शक्तिशाली नवयुवक की इच्छा का विरोध नहीं करता। लेकिन इसहाक को बचपन से तत्पर, विश्वासपूर्ण आज्ञा-पालन में प्रशिक्षित किया गया था और जब उसे परमेश्वर की योजना से अवगत कराया गया, तो उसने स्वैच्छिक विनम्रता से स्वयं को समर्पित कर दिया। अब्राहम के विश्वास में वह सहभागी था और उसे लगा कि यह सम्मान की बात है कि परमेश्वर को होमबलि चढ़ाने के लिये उसे प्राण न्यौछावर करने के लिये चुना गया था। वह नम्रतापूर्वक अपने पिता के दुःख को कम करने का प्रयत्न करता है और उसके निर्बल हाथों को प्रोत्साहित करता है कि वे वेदी पर उसे बांधने वाली रस्सियों को कस दे। PPHin 146.1

और अब प्रेम के अन्तिम शब्द बोले गए, आखिरी आंसूँबहाए गए और अन्तिम आलिगंन दिया गया। पिता ने पुत्र का वध करने के लिये छरी को ऊंचा उठाया कि अचानक उसका हाथ रूक गया। परमेश्वर के दूत ने स्वर्ग से कुलपिता को पुकार कर कहा, “अब्राहम, अग्गरहम” अब्राहम ने तुरन्त उत्तर दिया “देख मैं यहहूँ‌ं” और आवाज फिर सुनाई दी, “इस लड़के पर हाथ मत बढ़ा और न उसे कुछ कर, क्योंकि तूने जो मुझसे अपने पुत्र वरन् अपने इकलौते पुत्र को भी नहीं रख छोड़ा, इसमें में अब जान गया हूँ कि तू परमेश्वर का भय मानता है। PPHin 146.2

फिर अब्राहम ने देखा, “कि एक मेढ़ा एक झाड़ी में फंसा हुआ था, और अविलम्ब नए शिकार को लाते हुए उसने “अपने पुत्र के स्थान पर” उसे होमबलि करके चढ़ाया। प्रसन्नता और कृतज्ञता से भरपूर अब्राहम ने उस पवित्र स्थान का नाम “यहोवा यिरे” रखा, “यहोवा उपाय करेगा । PPHin 146.3

मोरिय्याह पर्वत पर परमेश्वर ने, फिर से, अब्राहम और उसके वंश और सभी आने वाली पीढ़ियों के लिये एक पवित्र शपथ द्वारा आशीष का आश्वासन देते हुए अपनी वाचा का नवीनीकरण किया, “यहोवा की यह वाणी है, कि मैं अपनी ही यह शपथ खाता हूँ. कि तूने जो यह काम किया है कि अपने पुत्र, वरन् अपने इकलोते पुत्र को भी नहीं रख छोड़ा, इस कारण मैं निश्चय तुझे आशीष दूँगा, और निश्चय तेरे वंश को आकाश के तारागण और समुद्र के तीर की बालू के किनकों के समान अनगिनत करूंगा, और तेरा वंश अपने शत्रुओं के नगरों का अधिकारी होगा, और पृथ्वी की सारी जातियाँ तेरे वंश के कारण आशीषित होंगी। में यह इसलिये करूंगा क्योंकि तुमने मेरी आज्ञा का पालन किया ।” PPHin 147.1

अब्राहम के विश्वास का यह महान कार्य प्रकाश के एक स्तम्भ के समान है जो सभी उत्तरगामी युगों में परमेश्वर के दासों के मार्ग को दीप्तिमान करता है। अब्राहम परमेश्वर की इच्छा की पूरी करने से बचने का बहाना नहीं ढूंढ रहा था। तीन दिनों के यात्रा के दौरान उसके पास तर्क-विर्तक करने के लिये और यदि सन्देह करना उसका स्वभाव होता तो परमेश्वर पर सन्देह करने के लिये पर्याप्त

समय था। वह तर्क रख सकता था अपने ही पुत्र का वध करने के कारण वह हत्यारा व दूसरा कैेन कहलाता, और उसकी शिक्षा का लोग तिरस्कार करते, जिससे अपने के लिये उसके परोपकार की योग्यता नष्ट हो जाती। उसने विनती की होगी किउसकी आयु को ध्यान में रख कर उसे आज्ञा पालन से छूट दे दी जाए। लेकिन कुलपिता ने इनमें से किसी भी बहाने का सहारा नहीं लिया। अब्राहम मनुष्य था, उसकी भावनाएँ और लगाव हमारे जैसे ही थे लेकिन वह यह पूछने के लिये नहीं रूका कि यदि इसहाक को मार दिया जाएगा तो प्रतिज्ञा कैसे पूरी होगी। वह अपने दुखते हृदय के साथ तर्क-विर्तक में नहीं पड़ा। उसे ज्ञात था कि परमेश्वर अपने सब नियमों में न्ायाप्रिय और धर्मी है और उसने पूरे तरह से आज्ञा का पालन किया। "अब्राहम ने परमेश्वर का विश्वास किया और यह उसके लिये धर्म गिना गया, और वह परमेश्वर का मित्र कहलाया ।" याकूब 2:23और पौलुस कहता है, "जो विश्वास करने वाले हैं, वे ही अब्राहम की संतान है" उत्पत्ति 3:7। लेकिन अब्राहम का विश्वास उसके कामों द्वारा प्रकट होता था। याकूब 2:21,22में लिखा है, "जब हमारे पिता अब्राहम ने अपने पुत्र इसहाक को वेदी पर चढ़ाया तो क्या वह कर्मों से धार्मिक न ठहरा था?" कई ऐसे हैं जो विश्वास और कर्मा के सम्बन्ध को समझने में असफल हो जाते हैं। वे कहते है, "केवल मसीह में विश्वास रखो और तुम सुरक्षित हो। व्यवस्था का पालन करने से तुम्हारा कोई वास्ता नहीं"। लेकिन वास्तविक विश्वास आज्ञापालन में प्रकट होता है। यहुन्ना 8:39में मसीह अविश्वासी यहूदियों से कहता है, "यदि तुम अब्राहम की संतान होते तो अब्राहम के समान काम करते है" और विश्वास के पिता के सन्दर्भ में परमेश्वर कहता है, "अब्राहम ने मेरी मानी, और जो मैंने उसे सौंपा था उसको और मेरी आज्ञाओं, विधियों और व्यवस्था का पालन किया" उत्पत्ति 26:5 ।याकूब 2:17में प्रेरित याकूब कहता है, "विश्वास यदि कर्म सहित न हो तो अपने स्वभाव में मरा हुआ है।" 1 यहुन्ना 5:3 में यहुन्ना, प्रेम के विषय में विस्तार से मनन करता है और कहता है, "क्योंकि परमेश्वर से प्रेम रखना यह है कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें । PPHin 147.2

प्ररूप और प्रतिज्ञा से परमेश्वर ने, "अब्राहम को यह सुसमाचार सुना दिया ।" और कुलपिता का विश्वास अपनेउद्धारकर्ता पर कन्द्रित हो गया। यहुन्ना 8:56 में मसीह ने यहूदियों से कहा, "तुम्हारा पिता अब्राहम मेरा दिन देखने की आशा से बहुत मगन था, और उसने देखा और आनन्द किया।" इसहाक के स्थान पर होमबलि में चढ़ाया गया मेढ़ा परमेश्वर के पुत्र का प्रतीक था, जिसे हमारे स्थान पर बलि की भेंट होना था। जब परमेश्वर की आज्ञा के उल्लंघन के परिणामस्वरूप मनुष्य की मृत्यु निश्चित थी तब पिता ने, अपने पुत्र की ओर देख कर, पापी से कहा, "जीता रह, मुझे उद्धार मूल्य मिल गया है।' PPHin 148.1

सुसमाचार की वास्तविकता से अब्राहम को प्रभावित करने और उसके विश्वास को परखने के लिये परमेश्वर ने उसे अपने पुत्र की बलि चढ़ाने को कहा। उस भयावह परीक्षा के अंधकारमय दिनों जो यातनाएं उसने सही उन्हें इसलिए स्वीकृति दी गई, ताकि अपने अनुभव से वह मनुष्य के उद्धार के लिये अनन्त परमेश्वर द्वारा किये गए त्याग की महानता को समझ सके। अपने ही पुत्र के बलिदान

को छोड़ अन्य कोई भी परीक्षा इस तरह आत्मा को उत्पीड़ित नहीं करती । परमेश्वर ने अपने पुत्र को यातनाभरी और शर्मनाक मृत्यु को सौंप दिया। जिन स्वर्गदूतों ने परमेश्वर के पुत्र का अपमानित होना और आत्मा की वेदना को देखा था, उन्हें हस्तक्षेप की अनुमति नहीं थी, जैसे इसहाक के विषय में थी। किसी आवाज ने चिल्ला कर नहीं कहा, "बहुत हुआ" । पतित वंश को बचाने के लिये प्रतापी राजा ने अपना जीवन दे दिया। परमेश्वर के प्रेम और असीमित दयाभाव का इससे बढ़कर उचित उदाहरण क्या हो सकता है"? रोमियों 8:32में लिखा है, "जिसने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिये दे दिया, वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्यों न देगा"? PPHin 148.2

अब्राहम से माँगा गया बलिदान केवल उसी की भलाई के लिये नहीं था और न ही पूर्णतया उत्तरगामी पीढ़ियों की सुविधा के लिये था, वरन् अन्य ग्रहों और स्वर्ग के निष्पाप बुद्धिजीवियों के निर्देशन के लिये भी था। मसीह और शैतान के बीच संघर्ष की पृष्ठभूमि जिस पर उद्धार की योजना बनाई गई सृष्टि की अभ्यास पुस्तिका है। क्योंकि अब्राहम ने परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के प्रति विश्वास का अभाव दिखाया था, शैतान ने परमेश्वर और स्वर्गदूतों की उपस्थिति में उस पर आरोप लगाया कि वह वाचा के प्रतिबन्ध का अनुपालन करने में असफल रहा था और उसकी आशीषों के योग्य नहीं था। परमेश्वर अपने सेवक की सत्यनिष्ठा को समस्त स्वर्ग के सामने प्रमाणित करना चाहता था और उदाहरण द्वारा समझाना चाहता था कि सम्पूर्ण आज्ञाकारिता ही स्वीकार्य है और उनके सामने उद्धार की योजना को और स्पष्टता से बताना चाहता था। PPHin 149.1

स्वर्ग के प्राणी साक्षी थे उस दृश्य के जब अब्राहम के विश्वास को और इसहाक के समर्पण को परखा गया। यह परीक्षा आदम पर लाई गईं परीक्षा से बहुत ज्यादा कठिन थी। हमारे प्रथम अभिभावकों पर निषेधाज्ञा का अनुपालन करने में कोई पीड़ा सम्मिलित नहीं थी, लेकिन अब्राहम को दी हुईं आज्ञा अत्यन्त दुखदायी बलिदान मांगती थी। समस्त स्वर्ग अब्राहम की अविचलित आज्ञापालन को विस्मय और सराहना से देखता रहा। समस्त स्वर्ग उसकी निष्ठा को सराह रहा था। शैतान के आरोप निराधार प्रमाणित हुए। परमेश्वर ने अपने सेवक से कहा, "अब मैं जान गया हूँ कि तू परमेश्वर का भय मानता है, क्योंकि तूने अपने पुत्र को अर्थात इकलौते पुत्र को भी मुझसे नहीं रख छोड़ा" । परमेश्वर की वाचा, जो अन्य ग्रहों के बुद्धिजीवियों के सामने शपथ द्वारा निश्चित की गई, इस बात का प्रमाण थी कि आज्ञापालन का प्रतिफल अवश्य मिलता है ।उद्धार के रहस्य को समझ पाना स्वर्गदूतों के लिये भी कठिन था- यह कल्पना करना कि स्वर्ग के सेनापति परमेश्वर के पुत्र को अपराधग्रस्त मनुष्य के लिये मरना था ।।जब अब्राहम को अपने पुत्र को बलिदान करने की आज्ञा दी गई तब स्वर्ग के प्राणियों की रूचि जागृत हुई। अत्यन्त गम्भीरता के साथ वे इस आज्ञा के पूरे होने के प्रत्येक चरण को देखते रहे। इसाहक के प्रश्न, "होमबलि के लिये भेड़ कहां है?" का अब्राहम ने उत्तर दिया, "परमेश्वर होमबलि की भेड़ का उपाय खुद ही करेगा" और जब पुत्र का वध करने से ठीक पहले पिता का हाथ थम गया, और परमेश्वर द्वारा दी गई भेड़ को इसाहक के स्थान पर बलि

चढ़ाया गया, तब उद्धार के रहस्य पर प्रकाश डाला गया, और स्वर्गदूत भी मनुष्य के उद्धार के लिये परमेश्वर द्वारा किये गए निराले प्रयोजन को और स्पष्ट रूप से समझ गए । 1 पतरस 1:12

अध्याय 14—सदोम का विनाश

यह अध्याय उत्पत्ति 19 पर आधारित है

सदोम, यर्दन घाटी के नगरों में सबसे सुन्दर उस मैदान में स्थित था जो सौंदर्य और उर्वरता में परमेश्वर की वाटिका जैसा था। यहाँ पर उष्णकटिबन्ध की प्रचुर वनस्पति फलती-फलती थी । और यहां खजूर, जेतून और दाखलता का घर था, और यहाँ साल भर फल अपनी सुगन्ध बिखेरते थे। मैदानों भरपूर उपज के आवतृथे और ने ढका हुआ था और भेडों और गाय-बैलों ने मैदानकों ढांक रखा था। कला और व्यापार ने इस समभूमि को समृद्ध बनाने में योगदान दिया। पूरब के खजाने वहां के महलों को सुसज्जित करते थे, और रेगिस्तान के कारवां वहाँ के व्यापार के बाजारों की आपूर्ति करने के लिये बहुमूल्य वस्तुओं के भण्डार लाते थे। कुछ ही श्रम और चिंतन करने से जीवन की हर आवश्यकता की आपूर्ति हो जाती थी और पूरा साल उत्सव की एक पारी प्रतीत होता था। PPHin 151.1

हर तरफ प्रचुरता के प्रभाव ने घमण्ड और भोग-विलास को बढ़ावा दिया। जिस हृदय ने कभी अभाव या कष्ट की पीड़ा नहीं सहन की हो उसे आलस्य और धन कठोर बना देता है। मनोरंजन के प्रेम को धन और खाली समय बढ़ावा देता है और लोग कामुक विलासिता में डूब जाते है। यहेजकेल 16:49,50 में लिखा है, "देख तेरी बहन सदोम का अधर्म यह था, कि वह अपनी पुत्रियों सहित घमण्ड करती, पेट भर-भर के खाती और सुख-चैन से रहती थी, और दीन दरिद्र को न सम्भालती थी। अतः: वह गर्व करके मेरे सामने घृणित काम करने लगी, और यह देखकर मैंने उन्हें दूर कर दिया।" धन और खाली समय से अधिक, मनुष्य को और किसी चीज की अभिलाषा नहीं होती । PPHin 151.2

लेकिन इनसे ही वे पाप उत्पन्न हुए जिनके कारण शहरों का सर्वनाश हुआ। उनके बेकार, आलसी जीवन ने उन्हें शैतान के प्रलोभनों का शिकार बनाया और उन्होंने परमेश्वर की छवि को विकृत कर दिया और वे पवित्र बनने के बजाए शैतानी बन गए। आलस्य मनुष्य के लिये सबसे बड़ा शाप है, क्योंकि अपराध और बुराई इसके पीछे आती है। यह विवेक को असमर्थ बनाता है, समझ को पथ भ्रष्ट कर देता है और आत्मा को हीन बना देता है। शैतान घात लगाए बैठा रहता है, असावधानी को नष्ट करने के लिये तैयार, जिनका खाली समय उसे आकर्षक स्वांग की आड़ में भड़काने का अवसर देता है। मनुष्य के आलस भरे समय में वह ज्यादा सफल होता है। PPHin 151.3

सदोम में आमोद-प्रमोद और धूमधाम, भोजपान और मादकता का वातावरण था। सबसे घिनौने और असभ्य मनोविकार असंयमित थे। लोग खुले आम परमेश्वर और उसकी आज्ञा की अवहेलना करते थे और हिंसक कत्यों में आनन्दित होते थे। हालांकि उनके सामने जलप्रलय पूर्व जगत का

उदाहरण था, और उन्हें ज्ञात था कि किस तरह परमेश्वर का क्रोध उसके विनाश द्वारा प्रकट हुआ था, फिर भी उन्होंने दुष्टता का वही मार्ग चुना। PPHin 152.1

लूत के सदोम में स्थानान्तरित होने के समय, भ्रष्टाचार सार्वजनिक नहीं हुआ था और दयावान परमेश्वर ने नैतिक अन्धकार के बीच प्रकाश की किरणों को आने दिया था। जब अब्राहम ने एलाम वासियों से बन्धकों को मुक्त कराया लोगों का ध्यान सच्चे विश्वास की ओर गया। सदोम वासियों के लिये अब्राहम परदेशी नहीं था और अद्दश परमेश्वर की आराधना उनके लिये हास्यास्पद था, लेकिन उच्चतर शक्तियों पर उसकी विजय, और उसके कैदियों और लूट सम्बन्धित उदार व्यवहार ने लोगों में अचरज और उत्साह उत्पन्न किया। उसके कोशल और साहसको सराहा गया और कोई भी इस बात को नकार नहीं सका कि उसे एक पवित्र सामर्थ्य ने विजेता बनाया था। उसकी भद्र और निःस्वार्थी भावना, जो सदोम के स्वार्थी निवासियों के लिये अपरिचित थी, उस धर्म की श्रेष्ठा का एक और प्रमाण थी, जिसका उसने साहस और निष्ठा से सम्मान किया था । PPHin 152.2

अब्राहम को आशीष देते समय मलिकिसिदक ने यहोवा को उसकी सामर्थ्य का स्रोत और उसकी विजय का कर्ता माना था, "परमप्रधान ईश्वर की ओर से, जो आकाश और पृथ्वी का अधिकारी है, तू धन्य हो, और धन्य है, परमप्रधान ईश्वर, जिसने तेरे द्रोहियों को तेरे वश में किया"-उत्पत्ति 14:19,20 । परमेश्वर उन लोगों से अपनेईश्वरीय व्यवधान द्वारा बात कर रहा था, लेकिन पहले की तरह अब भी प्रकाश की अन्तिम किरण को बहिष्कृत कर दिया गया। PPHin 152.3

ओर अब सदोम की अन्तिम रात होने को थी। प्रतिशोध के बादलों की परछाई उस शहर पर पड़ चुकी थी। लेकिन मनुष्य ने उसे नहीं देखा। स्वर्गदूत विनाश के अभियान के साथ निकट आ रहे थे। अन्तिम दिन भी अन्य दिनों के समान था। सुन्दरता और सुरक्षा के द्दश्य पर शाम हो चली। अतुल्य सौन्दर्य के प्राकतिक द्दश्य डूबते हुए सूरज की किरणों में नहाए हुए थे। संध्याकाल की ठंडक ने नगर वासियों का आहवान किया और आमोद-प्रमोद प्रेमी झुण्ड समय का आनंद लेने को तत्पर इधर-उधर घूम रहे थे। PPHin 152.4

धुंधले प्रकाश में दो अपरिचित नगर के द्वार के निकट आए। वह देखने में यात्री लग रहे थे जो रात को रूकना चाहते थे। कोई भी सोच नहीं सकता था कि यह सीधे-साधे यात्री पवित्र दण्डाज्ञा के शक्तिशाली अग्रदूत थे और उस बेपरवाह, विलासी भीड़ ने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि उसी रात उन आलौकिक सन्देशवाहकों के साथ दुर्व्यवहार करने में वह अपने अपराध बोध की चरमावस्था पर पहुँच जाएंगे जो उस अभिमानी शहर के विनाश का कारण होगा। लेकिन एक मनुष्य था जिसने इन अनजान मनुष्यों पर ध्यान दिया और उन्हें अपने घर में आमन्त्रित किया। लूत को उनका वास्तविक चरित्र नहीं मालूम था, लेकिन अतिथि-सत्कार और शिष्टता उसके स्वभाव में थे, यह उसके धर्म का हिस्सा थे- वह सीख जो उसे अब्राहम के उदाहरण से मिली थी। यदि उसने कृतज्ञता की भावना को विकसित नहीं किया होता तो उसे भी शेष सदोम के साथ नष्ट होने के लिये छोड़ दिया

जाता। कई घरानोंने अपरिचितों पर अपने घरों के द्वार बन्द करके परमेश्वर के दूतों को अन्दर नहीं आने दिया जो उनके लिये आशीष शान्ति और आशा लेकर आते। PPHin 153.1

जीवन का प्रत्येक कर्म, चाहे कितना भी अमहत्वपूर्ण हो, अच्छा या बुरा होता है। सबसे निम्न कर्तव्यों में निष्ठा या उपेक्षा या तो जीवन के लिये सबसे समृद्धिपूर्ण आशीर्वाद या सबसे बड़े संकट के लिये द्वार खोलती है। छोटी-छोटी बातों से चरित्र की परख होती है। वे दैनिक आत्म-समर्पण के अकृत्रिम कार्य जिन्हें प्रसन्नतापूर्वक स्वेच्छा से किया जाता है, परमेश्वर की मुस्कराहट का कारण है। हमें स्वयं के लिये नहीं वरन् दूसरों के लिये जीना चाहिये। स्वयं को भूलने से, एक स्नेहमय, उपकारी भावना को संजोने में हम अपने जीवन को आशीष बना सकते है। थोड़ा सा ध्यान, साधारण शिष्टाचार जीवन के सुख का सार बनाने में बहुत दूर तक जाते है, और इनकी उपेक्षा मानवीय दुदर्शा को बढ़ाती है। PPHin 153.2

सदोम में उन अपरिचितों का शोषण होने की सम्भावना को देख, लूत ने उनकी सुरक्षा को अपना कर्तव्य समझा और उनके जलपान का प्रबन्ध अपने घर में किया। यात्रियों के आगमन के समय वह द्वार पर ही बैठा था और उन्हें देखकर उनसे भेंट करने को उठा और शिष्टतापूर्ण अभिवादन करते हुए बोला, “हे मेरे प्रभुओं, अपने दास के घर में पधारिये, और रात भर विश्राम कीजिये, लेकिन उसके अतिथि सत्कार को स्वीकार न करते हुए वे बोले, “नहीं, हम चौक ही में रात बिताएंगे।” उनके इस उत्तर में दोहरा लक्ष्य था-लूत की नेकनीयती की परख करना और सदोम के पुरूषों के चरित्र के बारे में अनजान प्रतीत होना, जैसे कि उनका मानना था कि चौक में रात बिताना सुरक्षित था। उनके उत्तर नेलूत को, उन्हें भीड़ की दया पर न छोड़ने के लिये, और दृढ संकल्पी बना दिया । वो तब तक आग्रह करता रहा, जब तक कि वे मान न गए और उसके साथ उसके घर न चले गए। PPHin 153.3

उन दो अनजान व्यक्तियों को टेढ़े-मेढ़े मार्ग से अपने घर लाने में वह अपने आशय को द्वार पर खड़े कामचोरों से छुपाना चाहता था, लेकिन उनकी हिचकिचाहट और विलम्ब और उसके हठी आग्रह के कारण वे नजर में आ गए और इससे पहले कि वह रात की नींद ले पाते, लूत के घर के बाहर नौजवान व वृद्ध पुरूषों का बहुत बड़ा झुण्ड एकत्रित हो गया। अनजान व्यक्ति सदोम की विशेषताओं के बारे में पूछ-ताछ कर रहे थे, और लूत ने उन्हें उस रात बाहर जाने का दुस्साहस न करने की सलाह दी, जब उन अनजान व्यक्तियों को उनके हवाले कर दिये जाने के लिये भीड़ का हो हल्ला और हंसी उड़ाने की आवाजें सुनाई दी। PPHin 154.1

यह जानते हुए कि यदि उन्हें हिंसा के लिये उकसाया गया, तो वे उसके घर में आसानी से घुस आएंगे, लूत ने बाहर जाकर समझाने बुझाने के प्रभाव को परखना चाहा। उसने कहा, “हे मेरे भाईयों, ऐसी बुराई न करो”। ‘भाईयो’ शब्द के प्रयोग उसका तात्पर्य पड़ीसियों से था और वह उनसे समझौता करने की और उनके दुष्टतापूर्ण उद्देश्य के लिये उन्हें लज्जित करने की आशा कर रहा था। लेकिन

उसके शब्दों ने आग में घी डालने का काम किया। उनका क्रोध तूफान की गड़ग़ड़ाहट जैसा प्रतीत होने लगा। स्वयं को उनके ऊपर न्यायाधीश जैसे मानने में उन्होंने लूत का तिरस्कार किया और उसे धमकी दी कि वह उसके साथ परेदेशियों के साथ किये जाने वाले व्यवहार से भी दुष्टतर व्यवहार उसके साथ करेंगे। वे उस पर कद पड़े और यदि परमेश्वर के दूतों ने उसे नहीं बचाया होता तो वे उसके टुकड़े-टुकड़े कर देते। तब उन अतिथियों ने हाथ बढ़ाकर उसे घर के अन्दर अपने पास खींच लिया और किवाड़ को बन्द कर दिया। उसके बाद की घटनाओं से उन अतिथियों का जिनका उसने सत्कार किया था, चरित्र उजागर हो गया। "उन्होंने क्या छोटे, क्या बड़े, सब पुरूषों को जो घर के द्वार पर थे, अन्धा कर दिया, अतः: वे द्वार को टटोलते-टटोलते थक गए।" यदि उन पर दोगुना अन्धापन न छाया होता तो उनके हृदय की कठोरता के कारणवश, परमेश्वर की मार ने उन्हें डरने, और बुराई से बचने को बाध्य किया होता। उस रात भी वही सब पाप हुए जो अब तक होते आए थे, लेकिन अनुग्रह, जिसका अभी तक तिरस्कार किया गया था, का आग्रह समाप्त हो गया। सदोम के वासियों ने परमेश्वर की सहिष्णुता की सीमा को लांघ लिया था- "परमेश्वर के धैर्य और क्रोध के बीच की अदृश्य सीमा।" सिद्दिम की घाटी में उसके प्रतिशोध की ज्वाला भड़कने वाली थी। PPHin 154.2

स्वर्गदूतों ने लूत को अपने अभियान से अवगत कराया, "हम यह स्थान नष्ट करने पर हैं, इसलिये कि इसकी चिललाहट यहोवा के सम्मुख बढ़ गई है, और यहोवाने हमें इसका सर्वनाश करने के लिये भेजा है"।। जिन परदेशियों को लूत ने सुरक्षा प्रदान की थी, उन्होंने अब उसे और उसके साथ उस दुष्टतापूर्ण नगर से भाग लेने को तैयार परिवार के सदस्यों की सुरक्षा का वचन दिया। भीड़ अब थक कर जा चुकी थी और लूत अपने बच्चों को चेतावनी देने गया। उसने स्वर्गदूत के शब्द दोहराए, "उठो, इस स्थान से निकल चलो, क्योंकि यहोवा इस नगर को नष्ट करने पर है" पर वह उनकी दृष्टि में ठट्ठा करने वाला जान पड़ा। जिसे वह उसका अंधविश्वासी भय समझते थे, उस पर वे हंसने लगे। उसकी पुत्रियाँ अपने पतियों के प्रभाव में थी। वे जहां भी थे समृद्ध थे। उन्हें संकट का कोई संकेत नहीं मिल रहा था। सब कुछ पहले के समान ही था। उनके पास धन सम्पत्ति थी और सुन्दरतापूर्ण सदोम के सर्वनाश की सम्भावना में वे विश्वास नहीं कर पा रहे थे। PPHin 155.1

दुःखी होकर लूत अपने घर लौट आया और अपनी असफलता की कहानी सुनाई। तब स्वर्गदूतों ने उसे उठ जाने को और अपनी पत्नी और दोनों पुत्रियों को, जो अभी भी उसके घर में थी, नगर छोड़ने को कहा। लेकिन लूत विलम्ब करता रहा। हालांकि वह प्रतिदिन होने वाली हिंसक घटनाओं से दुखित था, लेकिन उस दुष्टतापूर्ण शहर में प्रचलित नीचतापूर्ण और घृणित दुष्टता की उसे वास्तविक समझ नहीं थी। पाप पर रोक लगाने के लिये परमेश्वर की दण्डाज्ञा की विवश्ता को वह समझ नहीं पाया। उसकी सनन्ताने सदोम से जुड़ी रही, और उसकी पत्नी उनके बिना जाने को तैयार न थी। जो धरतीपर उसे प्रिय थे, उन्हें छोड़कर जाने का दर्द उसकी सहनशक्ति के बाहर था। सम्पूर्ण जीवन के परिश्रम से प्राप्त की गई धन-सम्पत्ति और भव्य आरामदेह घर को छोड़ कर एक निराश्रित पथिक के रूप में जाना कठिन था। कष्ट से पथराया हुआ, प्रस्थान के लिये अप्रसन्न, लूत

विलम्ब करता रहा। परमेश्वर के दूतों की सहायता के बिना वे सदोम के सर्वनाश में नष्ट हो जाते। उन्होंने लूत का और उसकी पत्नी और दोनों पुत्रियों का हाथ पकड़ा और उनको निकालकर नगर के बाहर कर दिया। PPHin 155.2

यहाँ उन्हें स्वर्गदूतों ने छोड़ा, और सर्वनाश के कार्य को सम्पन्न करने के लिये सदोम की और मुड़े। एक और जिससे अब्राहम ने विनती की थी लूत के पास आया। तराईं के सारे नगरों के लोगों को मिलाकर दस लोग भी धर्मी नहीं पाए गये, लेकिन कुलपिता की प्रार्थना के उत्तर में, परमेश्वर का भय मानने वाला एक व्यक्ति सर्वनाश होने से बचाया गया। आज्ञा आश्चर्यजनिक उग्रता से दी गई, "अपना प्राण लेकर भाग जा, पीछे की ओर न ताकना और तराई भर में न ठहराना, उस पहाड़ पर भाग जाना, नहीं तो तू भी भस्म हो जाएगा।" हिचकिचाहट या विलम्ब अब घातक हो सकता था। उस भव्य नगर पर एक टकटकी दृष्टि, सुन्दर घर को छोड़ने के दुःख में क्षण भर का विलम्ब उनकी जान ले सकता था। पवित्र दण्डाज्ञा का तूफान केवल इसलिये थमा हुआ था कि यह दीन पलायक अपनी निकासी कर सके । PPHin 156.1

लेकिन असमंजम में और भयभीत लूत ने विनती की वह ऐसा नहीं कर सकता था इस डर से कि कोई विपित्त उस पर आ पड़ेगी और वह मर जाएगा। उस दुष्टतापूर्ण नगर ने अविश्वास के बीच रहते हुए उसका विश्वास घट गया था। स्वर्ग का राजकुमार उसके साथ था, फिर भी वह अपने प्राणों के लिये इस प्रकार विनती करता रहा मानो, जिस परमेश्वर ने उसके प्रति इतना प्रेम और दया दिखाई थी वह उसको नहीं बचाएगा। उसे स्वयं पवित्र सन्देशवाहक पर निर्भर करना चाहिये था और बिना प्रश्न किए निःसन्देह अपनी इच्छा और अपने प्राणों को परमप्रधान के हाथों में दे देना चाहिये था, "देख वह नगर निकट है कि मैं वहां भाग सकता हूँ, और वह छोटा भी है। मुझे वहीं भाग जाने दे, (क्या वह नगर छोटा नहीं हैं) और मेरा प्राण बच जाएगा।" यह बेला नामक नगर था, जिसका बाद में सोअर नाम पड़ा। यह सदोम से कुछ ही दूरी पर था और उसी तरह भ्रष्ट और विनाश का पात्र था। लेकिन लूत ने सोअर को नष्ट न करने की विनती की, यह आग्रह करते हुए कि यह उसका छोटा सा निवेदन था और उसकी इच्छा मान ली गईं। परमेश्वर ने उसे आश्वस्त किया, "मैंने इस विषय में तेरी विनती स्वीकार की है, कि जिस नगर की चर्चा तूने की है, उसको मैं नष्ट न करूंगा ।" "कितना महान है, पापी प्राणियों के प्रति परमेश्वर का अनुग्रह । PPHin 156.2

फिर से लूत को जल्दी करने की आज्ञा दी गई क्योंकि ज्वलंत तूफान को केवल कुछ और समय तक रोका जा सकता था। लेकिन एक निराश्रित ने शापित नगर की ओर दृष्टि फेरकर पीछे की ओर देखा और वह परमेश्वर की दण्डाज्ञा का स्मारक बन गईं। यदि स्वयं लूत ने स्वर्गदूत कीचेतावनी को बिना हिचकिचाए मान लिया होता, और निष्ठापूर्वक पहाड़ों की ओर, बिना विनती और आपत्ति के, भाग गया होता तो उसकी पत्नी भी अपने आप को बचा पाती। उसके उदाहरण के प्रभाव ने उसे बचा लिया होता उस पाप से जिसके कारण उसका विनाश निश्चित हुआ। लेकिन लूत

की हिचकिचाहट और विलम्ब के कारण उसने ईश्वरीय चेतावनी को गम्भीरता से नहीं लिया। उसका शरीर तो तराई पर था, लेकिन उसका हृदय सदोम से जुड़ा था और वह उसी के साथ नष्ट हो गई। उसने परमेश्वर का विरोध किया क्योंकि विनाश के सन्दर्भ में परमेश्वर की दण्डाज्ञा उसकी धन सम्पत्ति और उसकी संतानों से सम्बन्धित थी । हालाँकि दुष्ट नगर से बाहर बुलाए जाने की कृपा की वह पात्र थी, लेकिन उसे लगा कि उसके साथ दुर्व्यवहार किया गया था, क्योंकि जिस धन-दौलत को संचय करने में कई वर्ष लग गए थे, उसी का छोड़ देना पड़ रहा था। धन्यवाद के साथ मुक्ति को स्वीकार करने के बजाय उसने ध्रष्टतापूर्वक पवित्र चेतावनी का तिरस्कार करने वालों के जीवन की इच्छा करते हुए पीछे मुड़ कर देखा। उसके पाप ने उसे जीवित रहने के अयोग्य ठहराया, क्योंकि उस जीवन के संरक्षण के प्रति उसने अकृतज्ञता दिखाई । PPHin 157.1

हमारे उद्धार के लिये परमेश्वर की अनुग्रहकारी योजनाओं को हलके में लेने से सावधान रहना चाहिए। कई मसीही कहते हैं, "जब तक मेरे बच्चे और मेरे साथी मेरे साथ ही बचाएं जाते मुझे स्वयं को बचाए जाने में कोई दिलचस्पी नहीं उन्हें लगता है कि उनकी, जो उन्हें इतने प्रिय है, उपस्थिति के अभाव में स्वर्ग, स्वर्ग समान नहीं लगेगा। लेकिन क्या ऐसी भावना रखने वालों को, उसकी अच्छाई और अनुग्रह को देखते हुए, परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध की सही समझ है? क्या वे भूल गए कि वे अपने सृष्टिकर्ता और उद्धारकर्ता की सेवा के प्रति आदर और निष्ठा और प्रेम के पक्के बन्धन में बन्धे हुए हैं। अनुग्रह का आमन्त्रण सब के लिये है, लेकिन क्योंकि हमारे मित्र उद्धारकर्ता के आग्रहपूर्ण प्रेम को स्वीकार नहीं करते, क्या हम भी मुहँ फेर लें? आत्माओं का बचाया जाना महत्वपूर्ण है। मसीह ने हमारे उद्धार के लिये भारी रकम चुकाई है और जो भी इस महान त्याग का और आत्मा के मोल का मान करता है, दूसरों की तरह वह परमेश्वर के अनुग्रह को तिरस्कार नहीं करेगा। इस सत्य से, कि अन्य लोग उसके न्यायपूर्ण दावों को अनेदखा कर रहे हैं, हमारे अन्दर यत्न की धुन जागृत होनी चाहिये, जिससे कि उन सभी को, जिन्हें हम प्रभावित कर सकते हैं, उसके प्रेम का अंगीकार करा सके । PPHin 157.2

"लूत के सोअर के निकट पहुँचते ही सूर्य पृथ्वी पर उदय हुआ।" प्रात: काल की स्वर्णिम किरणे, तराई के नगरों में केवल शान्ति और समृद्धि का संकेत दे रही थी। सड़को पर सक्रिय जीवन की हलचल शुरू हो गई थी, लोग अपने-अपने रास्ते जा रहे थे और दिन के मनोरंजन या व्यापार के लिये प्रयत्नशील थे। लूत के दामाद क्षीण-बुद्धि वृद्ध पुरूष की चेतावनी और शंका का ठटठा कर रहे थे।बादल रहित आकाश से बिजली की गड़गड़ाहट सा एक अनपैक्षित व अचानक तुफान आ गया। यहोवा ने समृद्ध तराई व नगरों पर आकाश से गन्धक और आग बरसाई, जिसमें, वहां के महल और मन्दिर, भव्य भवन, वाटिकाएं और अंगूर के बाग और प्रसन्नचित, आमोद-प्रमोद प्रेमी जिन्होंने बीती रात ही स्वर्ग के सन्देशवाहकों का अपमान किया था, सब भस्म हो गए। अग्निकाण्ड का धुआ एक विशाल भट्टी के धुए की तरह उठने लगा। सिद्दिम की घाटी निर्जन हो चली जिसका पुनःस्थापित होना या जनपूर्ण होना असम्भव था। यह आज्ञा उल्लंघन के लिये परमेश्वर की दण्डाज्ञा की निश्चित्ता

का सब पीढ़ियो के लिये साक्ष्य था। जिन लपटों ने तराई के नगरों को भस्म किया, उन्होंने अपनी चेतावनी का प्रकाश हमारे समय तक भेजा है। हमें यह भयावह और महत्वपूर्ण पाठ पढ़ाया जाता है कि परमेश्वर की दया पापी को बहुत देर तक सहन करती है लेकिन पापी के पाप करने की एक सीमा होती है। उस सीमा पर पहुँचने पर कृपा का प्रस्ताव समाप्त कर दिया जाता है और न्याय की परिचर्या का प्रारम्भ होता है। PPHin 158.1

जगत का मुक्तिदाता घोषित करता है कि इससे भी बड़े पाप हैं जिनके लिये सदोम और अमोरा का विनाश किया गया। जो लोग पापियों को पश्चाताप के लिये बुला रहे, सुसमाचार के आमंत्रण को सुनकर भी अनसुना कर देते हैं, वे परमेश्वर के सामने सिद्‌दिम की तराई के वासियों से भी ज्यादा दोषी है। उससे भे बड़ा पाप उनका है जो परमेश्वर को जानने का और उसकी आज्ञाओं का पालन करने का दावा करते है, लेकिन अपने दैनिकजीवन और अपने चाल-चलन से परमेश्वर को नकारते है। उद्धारकर्ता की चेतावनी के प्रकाश में, सदोम की नियति एक औपचारिक प्रबोधन है केवल उन्हीं के लिये नहीं जो पाप को बढ़ाने के दोषी हैं, वरन् उस सब के लिये जो स्वर्ग द्वारा भेजे गऐ प्रकाश और विशेषाधिकारों के साथ खेल रहे हैं। PPHin 158.2

प्रकाततवाक्य 2:4,5 में लिखा है, जो सच्चे साक्ष्यों ने इफिसियों की कलीसिया से कहा, “पर मुझे तरे विरूद्ध यह कहना है कि तूने अपना पहला सा प्रेम छोड़ दिया है। इसलिये स्मरण कर कि तू कहाँ से गिरा है, और मन फिरा और पहले की तरह काम कर ।” एक सांसारिक अभिभावक को अपने दुखी हठधर्मी पुत्र को क्षमा करने के लिये हृदय को विवश करने वाली से और अधिक संवेदनशील करूणा के साथ उचद्धारकर्ता प्रेम और क्षमा के अपने प्रस्ताव की प्रतिक्रिया की बाट जोहता है। वह भटके हुओं से कहता है, “तुम मेरी ओर फिरो, तब मैं भी तुम्हारी ओर फिरूगा”- मलाकी 3:7। लेकिन यदि गलती करने वाला करूणामयी मधुर प्रेम से बुलाती हुई आवाज की लगातार अवहेलन करता है, तो वह अंधेरे में छोड़ दिया जाएगा। जो हृदय परमेश्वर के अनुग्रह को तुच्छ समझता है, वह पाप के कारण कठोर हो जाता है और परमेश्वर के अनुग्रह के प्रभाव को ग्रहण करने योग्य नहीं रहता। उनका विनाश बहुत ही भयावह होगा जिनके लिये प्रार्थनापूर्वक उद्धारकर्ता अन्तत: घोषणा करेगा, यह ‘मूरतों का संगी हो गया है, इसलिये उसको रहने दो”-होगी 4:17। न्याय का दिन तराई के नगरवासियो की तुलना में उनके लिये अधिक असहनीय होगा जिन्होंने मसीह के प्रेम को जानते हुए भी उसे पीठ दिखाकर पापी संसार के आमोद-प्रमोद को चुना। PPHin 159.1

तुम में से जो दया के प्रस्ताव को तुच्छ मान रहे हो, स्वर्ग की पुस्तकों में तुम्हारे विरूद्ध लम्बी सूची के बारे में सोचो, क्योंकि व्यक्तियों, परिवारों और राज्यों की अधार्मिकता का लेखा-जोखा रखा जाता है। परमेश्वर तब तक सहन करेगा, जब तक हिसाब चालू है और पश्चाताप और क्षमा का अवसर प्रदान करता है, लेकिन एक समय आएगा जब हिसाब पूरा हो जाएगा, जब प्राणी का निर्णय

हो चुका होगा। जब उसके चयन से उसकी नियति निश्चित हो जाएगी फिर न्याय के निष्पादन का संकेत दे दिया जाएगा। PPHin 159.2

आज के धार्मिक जगत की स्थिति में खतरे का संकेत है। परमेश्वर की करूणा को हलके में लिया गया है। जनसाधारण ने मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हुए यहोवा की व्यवस्था को खोखला कर दिया है। (मत्ती 15:9) हमारे देश की कई कलीसियों में अधर्म का प्रचलन है, बाईबिल को नकारने का अधर्म नहीं जो कि बहुत साधारण है, वरन मसीहत के वेष में ढका अधर्म जो बाईबिल को परमेश्वर का प्रकाशितवाक्य होने के विश्वास को खोखला कर देता है। जोश से भरी भक्ति और प्राणाधार धर्मनिष्ठता का स्थान निराधार रीतिवाद ने ले लिया है। इसके परिणामस्वरूप धर्मत्याग और भोगवाद प्रचलित है। मसीह ने घोषणा की, "और जैसा लूत के दिनो में हुआ था, मनुष्य के पुत्र के प्रगट होने के दिन भी ऐसा ही होगा" लूका 17:28-30 प्रासंगिक घटनाओं का देनिक आलेख उसके वचन का पूरे होने की साक्षी देता है। संसार विनाश के लिये तैयार हो रहा है। परमेश्वर की दण्डाज्ञा जल्द ही उंडेली जाएगी और पाप और पापी भस्म हो जाएंगे । PPHin 159.3

लूका 21:34-36में उद्धारकर्ता ने कहा है, "इसलिये सावधान रहो, ऐसा न हो कि तुम्हारे मन खुमार, और मतवालेपन, और इस जीवन की चिन्ताओं से सुस्त ही जायें, और वह दिन तुम पर फन्दे के समान अचानक आ पड़े क्योंकि वह सारी पृथ्वी के सब रहने वालों पर इसी प्रकार आ पड़ेगा। इसलिये जागते रहो और हर समय प्रार्थना करते रहो कि तुम इन सब आने वाली घटनाओं से बचने और मनुष्य के पुत्र के सामने खड़े होने के योग्य बनो ।" PPHin 160.1

सदोम के विनाश से पूर्व, परमेश्वर ने लूत को सन्देश भेजा, "अपना प्राण लेकर भाग जा, पीछे की ओर न ताकना, और तराई भर में भी नहीं ठहरना, उस पहाड़ पर भाग जाना, नहीं तो तू भी भस्म हो जाएगा ।" यरूशलेम के विनाश से पहले यही चेतावनीपूर्ण आवाज मसीह के चेलों द्वारा सुनी गई, "जब तुम यरूशलेम को सेनाओं से घिरा हुआ देखो, तो जान लेना कि उसका उजड़ जाना निकट है। तब जो यहूदिया में हो वे पहाड़ो पर भाग जाएँ ।"-लूका 21:20,21 । उन्हें अपनी धन-सम्पत्ति में से कुछ बचाकर ले जाने में देर करने के बजाय वहाँ से भाग जाने के अवसर कापूरा लाभ उठाना चाहिये। PPHin 160.2

वहाँ से बाहर निकलना था, दुष्टों से सोचा-समझा सन्धि-विच्छेद था, वह जीवन को बचाने का उपाय था। जैसा कि नूह के दिनों में था, वैसा ही लूत के साथ हुआ, वैसा ही यरूशलेम के विनाश से पूर्व चेलों के साथ हुआ और अन्तिम दिनों में भी ऐसा ही होगा। फिर से परमेश्वर की वाणी सुनाई दी जिसमें चेतावनी का सन्देश था और जो लोगों को प्रचलित दुष्टता से अलग होने को कह रह रही थी । PPHin 160.3

अन्तिम समय में धार्मिक जगत में भ्रष्टाचार और अधर्म की अवस्था के होने का वर्णन भविष्यवक्ता यहुन्ना के बाबुल के स्वप्नदर्शन में प्रस्तुत किया गया है- “वह बड़ा नगर है जो पृथ्वी के राजाओं पर राजकरता है।”- प्रकातिवाक्य 17:18 । विनाश से पूर्व स्वर्ग से आवाज दी जाएगी, “हे मेरे लोगो, उसमेंसे निकल आओ कि तुम उसके पापों के भागी न हो, और उसकी विपत्ततयों में से कोई तुम पर न आ पड़े।” प्रकातिवाक्य 18:4 [लूत और नूह के दिनों के समान, पाप और पापियों का स्पष्ट रूप से अलग होना अनिवार्य है। परमेश्वर और संसार के बीच कोई समझौता नहीं हो सकता, ना ही सांसारिक निधि की प्राप्ति के लिये पीछे मुड़ा जा सकता है। मत्ती6:24 में लिखा है, “कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता । PPHin 161.1

सिद्दिम के तराई वासियों के समान, लोग समृद्धि और शान्ति का स्वप्न देख रहे हैं। परमेश्वर केदूतों द्वारा चेतावनी दी जाती है, “अपना प्राण लेकर भाग जा, लेकिन अन्य आवाजें यह कहते सुनाई देती हैं, “उत्तेजित न हो, चौंकने का कोई कारण नहीं।” जनसाधारण चिल्लाते है, “शान्ति और सुरक्षा,” जबकि स्वर्ग यह घोषणा करता है कि पापी का जल्द ही विनाश होने को है। विनाश के पूर्व की रात तराई के नगर खा पी रहे थे और परमेश्वर के सन्देशवाहकों की चेतावनी को उपहास में उडा रहे थे, लेकिन वह ठठठेबाज लपटों में भस्म हो गए, उसी रात सदोम के बेपरवाह व दुष्ट निवासियों के लिये दया का द्वार हमेशा के लिये बन्द हो गया। परमेश्वर हमेशा तिरस्कार नहीं होने देगा और ना ही स्वयं को हल्के में लेने देगा। यग्आयाह 13:9में लिखा है “देखो, यहोवा का वह दिन रोष और क्रोध और निर्दयता के साथ आता है कि वह पृथ्वी को उजाड़ डाले और पापियों को उसमें से नष्ट करे। जगत के अधिकांश लोग परमेश्वर के अनुग्रह को अस्वीकार करते है और शीघ्रगामी असाध्य विनाश से पराजित होंगे। जो चेतावनी को गम्भीरता से लेते है वे “परमप्रधान के गुप्त स्थान में वास करेंगे, और “सर्वशक्तिमान की छाया में ठिकाना पाएंगे ।” उसकी सच्चाई उनके लिये ढाल और कवच होगा। उनके लिए प्रतिज्ञा है, “मैं उसको दीर्घायु से तृप्त करूंगा, और अपने किये हुए उद्धार का दर्शन दिखाऊंगा।” भजन संहिता 91:1,4,16 PPHin 161.2

लूत सोअर में कुछ ही समय क लिये रहा। सदोम की तरह यहां दुष्टता प्रचलित थी क्योंकि नगर के विनाश होने की संभावना के कारण वहां बसने से डरा हुआ था। कुछ ही समय पश्चात सोअर भस्म हो गया, जैसा कि परमेश्वर ने सोचा था। लूत पहाड़ो की ओर जाकर उस सब से वंचित जिसके लिये उसने अपने परिवार को उस दुष्ट नगर से प्रभावित होने देने का दुस्साहस किया था, एक गुफा में जाकर रहने लगा। लेकिन सदोम के श्राप ने वहां भी उसका पीछा नहीं छोड़ा । उसकी पुत्रियों का पापमय आचरण उस घृणित स्थान की बुरी संगति का परिणाम था। उसका नैतिक भ्रष्टाचार उनके चरित्र के साथ इस तरह घुल-मिल गया था कि वह अच्छाई और बुराई के बीच का अंतर नहीं समझ पायी। मोआबी और एमोनी, जो लूत के वंशज थे, वे पापी और मूर्तिपूजक, परमेश्वर के विद्रोही और उसके लोगों के शत्रु थे। PPHin 161.3

लूत का जीवन अब्राहम के जीवन से कितना अलग था। एक बार वह साथी थे, अपने तीर्थ यात्री तम्बुओं में पास-पास रहते हुए एक ही वेदी पर आराधना करते थे लेकिन अब एक दूसरे से कितने दूर हो गए थे। लूत में आमोद-प्रमोद और लाभ के लिये सदोम को चुना था। अब्राहम की वेदी और जीवित परमेश्वर को चढ़ाए जाने वाली बलि की भेटों को छोड़कर, उसने अपनी संतानों को भ्रष्ट और मूर्तिपूजा करने वालों के साथ मेल-जोल बढ़ाने की अनुमति दी, लेकिन अपने हृदय में उसने परमेश्वर के भय को बनाए रखा, क्योंकि पवित्र शास्त्र में उसे, 'भला' व्यक्ति कहा गया है, प्रतिदिन कानों में पड़ने वाला अधर्मी वार्तालाप और जिस हिंसा और अपराध को रोकने में वह असमर्थ था, उसकी धर्मी आत्मा को दुःखी कर देता था आखिर में, 'आग से निकाली हुई लकड़ी' के समान उसे बचा लिया गया, (जकर्याह 3:2), लेकिन अपनी धन-सम्पत्ति से वंचित, पत्नी और संतानों के वियोग में, गुफाओं में जगंली-जन्तुओं समान रहते हुए, वह वृद्धावस्था में अप्रसिद्ध था। उसने जगत को धर्मी पुरूषों का वंश नहीं वरन दो मूर्तिपूजक राज्य दिये जो परमेश्वर के साथ शत्रुता करते थे और उसके लोगों के साथ युद्धरत थे। उनकी दुष्टता का कटोरा भरने पर उनका विनाश निश्चित था। एक गलत कदम का परिणाम कितना भयानक था। PPHin 162.1

बुद्धिमान पुरूष कहता है, "धनी होने के लिये परिश्रम न करना, अपनी समझ का भरोसा छोड़ना ।" "लालची अपने घराने को दुःख देता है, परन्तु घूस से घृणा करने वाला जीवित रहता है ।"-नीतिवचन 23:4, 15:27। प्रेरित पौलुस कहता है, "जो धनी होना चाहते है, वे ऐसी परीक्षा और फंदे और बहुत सी व्यर्थ और हानिकारक लालसाओं में फंसते है, जो मनुष्यों को बिगाड़ देती है और विनाश के समुद्र में डुबा देती है।" 1 तीमुथियुस 6:9 PPHin 162.2

जब लूत ने सदोम में प्रवेश किया वह अपने आप को पाप से मुक्त रखना चाहता था और अपने घराने का संचालन स्वयं करना चाहता था। लेकिन वह असफल रहा। उसके आस-पास भ्रष्टाचारी प्रभावों ने उसके विश्वास को प्रभावित किया और उसकी सन्तानों का सदोम वासियों के साथ सम्बन्ध के कारण उसकी भी रूधि उनके साथ जुड़ गई। परिणाम हमारे सामने है। PPHin 163.1

कई अभी भी यही गलती कर रहे है। घर के चयन में वे अपने परिवारों के आस-पास के नैतिक व सामाजिक वातावरण को देखने के बजाय प्राप्त होने वाले सांसारिक सुविधाओं को प्राथमिकता देते है। वे अधिक समृद्धि की प्राप्ति की आशा में किसी समृद्ध नगर में स्थानान्तरित हो जाते हैं या किसी उपजाऊ और सुन्दर नगर को चुनते है, लेकिन उनके बच्चे प्रलोभनों से घिर जाते हैं, और वे प्रायः ऐसी मण्डलियाँ बना लेते हैं जो अच्छे चरित्र के निर्माण और धार्मिकता के विकास के प्रतिकल होती है। धर्मभ्रष्टता, अविश्वास और धार्मिक विषयों के प्रति उदासीनता के वातावरण में अभिभावकों के प्रभाव का प्रतिकार करने की प्रवृति होती है। नौजवानों के सम्मुख ईश्वरीय व पैतृक प्रभुत्व के प्रति अतिक्रमण के कई उदाहरण है, कई नास्तिकों और अविश्वासियों केमोह में पड़ जाते है और परमेश्वर के शत्रुओं के सांचे में ढल जाते है। PPHin 163.2

घर के चयन में परमेश्वर चाहता है कि हम सर्वप्रथम अपने और अपने परिवारों के चारो तरफ के नैतिक व धार्मिक वातावरण पर ध्यान दें। हम कई बार तनावपूर्ण स्थितियों में पड़ सकते है क्योंकि हमें मनचाहा वातावरण नहीं मिलता, और जब भी हमारा कर्तव्य हमें बुलाता है, यदि हम मसीह के अनुग्रह में विश्वास रखकर सतक रहे और प्रार्थना करते रह परमेश्वर हमें शुद्ध रहने में सुयोग्य बनाएगा। लेकिन हमें अनावश्यक स्वयं को मसीही चरित्र निर्माण के लिये हानिकारक तत्वों के सामने नहीं लाना चाहिये। जब हम स्वेच्छा से स्वयं को अविश्वास और सांसारिकता के वातावरण में रख देते हैं, हम परमेश्वर को अप्रसन्न करते हैं और पवित्र दूतों को अपने घरों से बाहर कर देते है। PPHin 163.3

जो लोग सनातन लाभ के बदले अपनी संतान के लिये सांसारिक धन-सम्पत्ति और यश प्राप्त करते हैं, अन्त में इस लाभ से हानि उठाते है। लूत की तरह, कई अपने बच्चों को बर्बाद हुआ पाते हैं और अपनी आत्मा को भी मुश्किल से बचा पाते है। उनके जीवनभर का श्रम व्यर्थ हो जाता है और उनका जीवन एक दुखद असफलता। यदि उन्होंने वास्तविक बुद्धिमता से काम लिया होता, तो उनकी संतान के पास सांसारिक समृद्धि तो कम होती पर अनश्वर विरासत का अधिकार को सुरक्षित कर लिया होता। PPHin 163.4

जो विरासत परमेश्वर ने अपने लोगों के लिये प्रतिज्ञाबद्ध की है, वह इस संसार में नहीं है। अब्राहम के पास इस धरती पर कोई अधिकृत क्षेत्र नहीं था, "उसको कुछ मीरास वरन पैर रखने भर की भी उसमें जगह न दी।" उसके पासबहुत धन-सम्पत्ति थी, लेकिन उसका प्रयोग उसने परमेश्वर की महिमा और अपने परिजनों के भले के लिये किया, लेकिन वो इस संसार का अपना घर नहीं मानता था। परमेश्वर ने उसे मूर्तिपूजक देशवासियों को छोड़ने के लिये बुलाया था और चिरस्थायी सम्पत्ति के रूप में कनान का प्रदेश प्रतिज्ञाबद्ध किया था ।जब अब्राहम ने अपने मृतकों को गाड़ने के लिये स्थान चाहा, तो उसे कनानियों से खरीदनी पड़ी। प्रतिश्रुत देश में, मकपेला की गुफा में पत्थर काट कर बनायी गईं गुम्बद उसकी एकमात्र सम्पत्ति थी। PPHin 164.1

लेकिन परमेश्वर का वचन ना ही असफल हुआ था और ना ही यहूदियों के द्वारा कनान के कब्जा करने पर परिपूर्णता पर पहुँचा था। गलतियों 3:16में लिखा है, "अतः प्रतिज्ञाएं अब्राहम को और उसके वंश को दी गई ।" परमेश्वर की प्रतिज्ञा के परिपूर्ण होने में बहुत विलम्ब हो सकता है क्योंकि, "प्रभु के यहां एक दिन हजार वर्ष के बराबर है, और हजार वर्ष एक दिन के बराबर है।" 2 पतरस 3:8 । देर होती प्रतीत हो सकती है, लेकिन निर्धारित समय पर, "इसके पूरे होने का समय वेग से आता है, इनमें धोखा न होगा ।"-हबक्कूक 2:3 ।केवल कनान का प्रदेश ही नहीं, सम्पूर्ण पृथ्वी अब्राहम और उसके वंश के उपहार में सम्मिलित थी। रोमियों 4:13में प्रेरित कहता है, "यह प्रतिज्ञा कि वह जगत का वारिस होगा, न अब्राहम को न उसके वंश को व्यवस्था के द्वारा दी गई थी, परन्तु विश्वास की धार्मिकता के द्वारा मिली। और बाईबिल की शिक्षा यही है कि अब्राहम को दिए

हुए वचन मसीह के द्वारा परिपूर्ण होंगे। जो भी मसीह के है, "वे अब्राहम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस है"- "एक अविनाशी, निर्मल और अजर मीरास के लिये" पाप के श्राप से मुक्त धरती। गलतियों 3:29, 1 पतरस 1:4 । "तब राज्य और प्रभुता और धरती पर के राज्य की महिमा, परमप्रधान ही की प्रजा अर्थात उसके पवित्र लोगों को दी जाएगी" और "नम्र लोग पृथ्वी के अधिकारी होंगे, और बड़ी शान्ति के कारण आनन्द मनाएंगे। दानिय्येल 7:27, भजन संहिता 37:11 PPHin 164.2

परमेश्वर ने अब्राहम को अनश्वर विरासत की झलक दिखलाई और वह इसी आशा से सन्तुष्ट था। इब्रानियों 11:9, 10मेंलिखा है, "विश्वास ही से उसने प्रतिज्ञा किये हुए देश में, पराए देश में परदेशी के समान रहकर इसहाक और याकूब समेत, जो उसके साथ उसी प्रतिज्ञा के वारिस थे, तम्बुओं में वास किया, क्योंकि वह उस स्थिर नींववाले नगर की बाट जोहता था, जिसको रचनेवाला और बनानेवाला परमेश्वर है।" इब्रानियों 11:9,10 PPHin 165.1

अब्राहम के वंश के बारे में लिखा है, "ये सब विश्वास ही की दशा में मरे, और उन्होंने प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएं नहीं पाई, पर उन्हें दूर से देखकर आनन्दित हुए और मान लिया कि हम पृथ्वी पर परदेशी और बाहरी है।" इब्रानियों 11:13 । हमें यहाँ, "एक उत्तम अर्थात स्वर्गीय देश" (इब्रानियों 11:46)की प्राप्ति के लिये तीर्थयात्री और परदेसी के समान रहना होगा। अब्राहम की संतान उस शहर की अपेक्षा कर रहे होंगे जिसका वह अभिलाषी था, "जिसका निर्माण करने वाला परमेश्वर है।" PPHin 165.2

अध्याय 15—इसहाक का विवाह

यह अध्याय उत्पत्ति 24 पर आधारित है

अब्राहम वृद्ध हो चला था और जल्द ही मृत्यु को प्राप्त होने वाला था, लेकिन अपने वंश को दिये हुए वचन को परिपूर्ण करने के लिये एक काम बचा हुआ था। इसहाक चुने हुए लोगों का पिता और परमेश्वर की व्यवस्था के संरक्षक के रूप में ईश्वर द्वारा नियुक्त था, लेकिन वह अभी तक अविवाहित था। कनानवासी मूर्तिपूजक थे और परमेश्वर ने उनके और उसके लोगों के बीच अंतर्विवाह वर्जित किया था क्योंकि वह जानता था कि ऐसे विवाहों से स्वधर्म त्याग को बढ़ावा मिलता। कुलपिता को अपने पुत्र के चारों ओर दुराचारी तत्वों के प्रभाव का डर था। इसहाक का चरित्र अब्राहम का परमेश्वर में स्वाभाविक विश्वास और उसके प्रतिआज्ञानुकूलताकाप्रतिबिंबथा; पर नौजवान का प्रेमभ्रातृभाव घनिष्ठ था और वह व्यवहार में नम्र और दयालु था। परमेश्वर का भय न मानने वाले की संगति में, सामांजस्य बचाए रखने के लिये, उस पर रिद्धान्तों का त्याग करने का खतरा बना रहता। अब्राहम के मन में अपने पुत्र के लिये पत्नी का चयन एक महत्वपूर्ण विषय था। वह उसका विवाह ऐसी स्त्री से करवाना चाहता था जो उसे परमेश्वर से दूर नहीं ले जाए। PPHin 166.1

प्राचीन काल में विवाह का प्रबन्ध माता-पिता करते थे, और यह रीति परमेश्वर के उपासकों में प्रचलित थी। कोई भी उससे विवाह करने को बाध्य न था जिससे वह प्रेम नहीं रखता हो, लेकिन अपने प्रेम को प्रदान करने में नवयुवक परमेश्वर का भय मानने वाले व अनुभवी अभिभावकों के निर्णय से मार्गदर्शितहहोते थे। इसके विपरीत कोई भी तरीका अपनाना अभिभावकों का अपमान व अपराध माना जाता था। PPHin 166.2

अपने पिता के विवेक और प्रेम में विश्वास रखते हुए इसहाक इस विषय को अपने पिता को सौंप देने मेंसन्तुष्ट था और उसे यह भी विश्वास था कि इस चयन में परमेश्वर स्वयं निर्देश देगा। कुलपिता का ध्यान, मेसोपोतामिया देश में अपने पिता के परिजनों की ओर गया। वे मूर्तिपूजा से स्वतन्त्र तो नहीं थे, लेकिन वे सच्चे परमेश्वर का ज्ञान और उसकी उपासना संजोए थे। इसहाक को कनान छोड़कर उनके पास नहीं जाना था, पर वहां से एक स्त्री अपना घर छोड़ कर, जीवित परमेश्वर की पवित्र आराधना को कायम रखने में उसके साथ जुड़ सकती थी। अब्राहम ने यह महत्वपूर्ण काम अपने सबसे वरिष्ठ सेवक को सौंपा जो एक धर्मी, अनुभवी, सही अनुमान लगाने वाला व्यक्ति था व जिसने कई साल निष्ठापूवक उसकी सेवा की थी। उसने अपने इस दास से परमेश्वर के सम्मुख शपथ लने को कहा कि वह कनानियों में से नहीं, वरन मेसोपोतामिया में नाहोर के परिवार से एक कुवांरी स्त्री को चुन कर लाएगा। उसने दास को, इसहाक को साथ ले जाने से मना किया। यदि इसहाक के लिये अपना घर छोड़ कर आने वाली कोई नवयुवती नहीं मिलती तो सन्देशवाहक अपनी शथप से

आजाद था। कुलपिता ने यह आश्वासन देते हुए कि परमेश्वर इस अभियान को सफलता का मुकुट पहनाएगा, अपने दास को इस मुश्किल और संवेदनशील कार्य के लिये प्रोत्साहित किया। "स्वर्ग का परमेश्वर यहोवा," उसने कहा, "जो मुझे मेरे पिता के घर से और मेरी जन्म भूमि सेले आया.........वहीं अपना दूत तेरे आगे भेजेगा।" PPHin 166.3

सन्देशवाहक बिना विलम्ब किए निकल पड़ा। अपने साथ लौट कर आने वाले वैवाहिक समूह और स्वयं की टोली के उपयोग के लिये दस ऊंटो को लिये, इसहाक की भावी पत्नी और उसकी सहेलियों के लिये भी उपहार लिये उसने दमिश्क के भी आगे पूर्व की महान नदी के सीमावर्ती उपजाऊ तराई तक यात्रा की। "नाहौर के शहर" हारान में वह नगर के बाहर एक कुएं के पास बैठे गया, जहां संध्या के समय, स्त्रियाँ जल भरने के लिये आती थी।उसके लिये यह उत्सुकतापूर्ण विचार-मग्न होने का समय था। उसके चयन पर उसके स्वामी के घराने के लिये ही नहीं वरन् आने वाली पीढ़ियों के लिये भी महत्वपूर्ण परिणाम निर्भर थे। अब्राहम के कहे शब्दों को स्मरण कर कि परमेश्वर अपना दूत उसके साथ भेजेगा, उसने सकात्मक मार्गदर्शन के लिये आग्रह के साथ प्रार्थना की। अपने स्वामी के परिवार में अतिथि सत्कार और उदारता के लगातार अभ्यास का अभ्यस्त था, अतः: उसने विनती की कि शिष्टाचार के प्रदर्शन परमेश्वर द्वारा भेजी गई स्त्री का संकेत हो। PPHin 167.1

प्रार्थना के किये जाते ही उत्तर आ गया। कुएँ पर आईं सभी स्त्रियों में से एक के शिष्टतापूर्ण व्यवहार से वह आकर्षित हुआ। जैसे ही वह कुए से आई, परदेशी उससे मिलने गया और उसके कांधे पर रखे घड़े में से कुछ जल देने को कहा। उसके निवेदन को नम्र उत्तर मिला कि वह ऊंटों के लिये भी पानी खींचेगी। रीति के अनुसार राजाओं की पुत्रियाँ भी अपने पिता के पशु-समुह के लिये कुएं से पानी खींचती थी। इस तरह माँगा हुआ संकेत दे दिया गया। स्त्री "अति सुन्दर और कवारी थी" और उसकी तत्पर शिष्टता उसके नम्र हृदय और सक्रिय उद्यमी स्वभाव का प्रमाण थी। यहां तक परमेश्वर का हाथ उसके साथ था। उसकी उदारता का उपहारों द्वारा आभार मानकर, उसने उसके माता-पिता के वारे में पूछा और यह जानकर कि वह अब्राहम के भतीजे, बतुएल की पुत्री थी, उसने "सिर झुकाकर यहोवा को दण्डवत किया। PPHin 167.2

दास ने कन्या के पिता के घर में सत्कार चाहा था, और धन्यवाद करते समय अब्राहम के साथ अपने सम्बन्ध के तथ्य को उजागर किया था। घर लौटने पर, कन्या ने सारा वृतान्त कह सुनाया और लाबान, जो उसकाभाई था, परदेशी और उसके साथियों का सत्कार करने के लिये दौड़ा एलियाज़र अपने प्रयोजन के बारे में, क्ुएँ पर उसकी प्रार्थना के सम्बन्ध में और उसके संदर्भ में सभी परिस्थितियों के बारे में बताने से पूर्व जलपान करने को तैयार न था। फिर उसने कहा, "यदि तुम मेरे स्वामी के साथ कृपा और सच्चाई का व्यवहार करना चाहते हो, तो मुझसे कहो, और यदि नहीं चाहते हो, तो भी मुझसे कह दो,ताकि मैं दाहिनी ओर या बांई ओर फिर जाऊं ।" तब उसे उत्तर

मिला, "यह बात यहोवा की ओर से हुई है, रिबका तेरे सामने है, उसको ले जा, और वह यहोवा के वचन के अनुसार तेरे स्वामी के पुत्र की पत्नी हो जाए। PPHin 168.1

परिवार की सहमति प्राप्त होने के पश्चात, रिबका से पूछा गया यदि वह अपने पिता के घर से इतनी दूर जाना चाहेगी जिससे कि वह अब्राहम के पुत्र से विवाह कर सके। जो कुछ हुआ था, उससे उसने विश्वास किया कि परमेश्वर ने उसे इसहाक की पत्नी के रूप में चुना था और उसने कहा, "हाँ, में जाऊंगी ।" PPHin 168.2

अपने अभियान की सफलता पर अपने स्वामी की प्रसन्नता की कल्पना कर दास लौट जाने को व्याकुल था, और सुबह होते ही वह घर की ओर चल दिया। अब्राहम बीरशेबा में रहता था, और इसहाक पास के देश में भेड़ो को चराकर हारान से सन्देशवाहक के आगमन की प्रतीक्षा करने अपने पिता के तम्बू में लौटा । "सांझ के समय वह मैदान में ध्यान करने के लिये निकला था और उसने आंख उठाकर देखा कि ऊंट चले आ रहे हैं। रिबका ने भी आँखें उठाकर इसहाक को देखा, और देखते ही ऊँट पर से उतर पड़ी। तब उसने दास से पूछा, "जो पुरूष मैदान पर हम से मिलने को चला आता है, वह कौन है?" दास ने कहा, "वह तो मेरा स्वामी है।" तब रिबका ने घूंघटलेकर अपने मुँह को ढाँक लिया। दास ने इसहाक को अपना सम्पूर्ण वृतान्त सुनाया। तब इसहाक रिबका को अपनी माता सारे के तम्बू में ले आया और उसको ब्याह कर उससे प्रेम किया, इस प्रकार इसहाक को माता की मृत्यु के पश्चात् शान्ति प्राप्त हुई। PPHin 168.3

अब्राहम ने परमेश्वर का भय रखने वालों और परमेश्वर का भय नहीं रखने वालों के बीच अंतर्विवाह के परिणाम को कैन के समय से अपने समय तक देखा था। हाजिरा से उसक विवाह और इश्माएल और लूत के वैवाहिक सम्बन्धों के परिणाम उसके सामने थे। अब्राहम और सारे के विश्वास में कमी के परिणामस्वरूप इश्माएल का जन्म हुआ जिससे अधर्मियों और धर्मी वंश में मेल-जोल बढ़ा। PPHin 169.1

इश्माएल की मूर्तिपूजक पत्नियों के साथ सम्बन्ध और मां के मूर्तिपूजक परिजनों के प्रभाव ने पुत्र पर पिता के प्रभाव को निष्क्रिय कर दिया। हाजिरा की इर्ष्या और उसके द्वारा चुनी गईं इश्माएल के पत्नियों ने उसके परिवार के लिये ऐसा प्रतिबन्ध खड़ा किया, जिस पर अब्राहम ने व्यर्थ में विजय पानी चाही। इश्माएल पर अब्राहम की शिक्षा का प्रभाव तो पड़ा था, लेकिन उसकी पत्नियों के प्रभाव ने उसके परिवार में मूर्तिपूजक को बढ़ावा दिया। अपने पिता से अलग हुए वह परमेश्वर के भय और प्रेम के अभाव में, घर के कलह और प्रतिद्वंद्वेति के कारण लूटमार का असभ्य जीवन जीने को विवश हो गया और "उसका हाथ सबके विरूद्ध और सबके हाथ उसके विरूद्ध" हो गए। (उत्पत्ति 16:12)आने वाले दिनों में उसने अपने पापों का पश्चताप किया और अपने पिता के परमेश्वर के पास लौट आयालेकिन उसके वंश को दी गईं उसके चरित्र की छाप बनी रही। उससे उत्पन्न शक्तिशाली

वंश उत्तेजक, मूर्तिपूजक थे जो इसहाक के वंशजो के लिये हमेशा पीड़ाजनक और कष्टदायक थे। PPHin 169.2

लूत की पत्नी एक स्वार्थी व अधर्मी महिला थी और उससे प्रभावित होकर लूत अब्राहम से अलग हो गया। यदि लूत की पत्नी का प्रश्न नहीं होता, तो लूत विवेकपूर्ण, परमेश्वर का भय रखने वाले कुलपिता के मार्ग-दर्शन से वंचित कभी भी सदोम में न रहता। बीते दिनों में अब्राहम से प्राप्त शिक्षा के अभाव में, अपनी पत्नी के प्रभाव और उस दुष्ट नगर के संपर्क के कारण उसने ईश्वरीय सिद्धान्तों का त्याग कर दिया होता। लूत का विवाह और वास करने के लिये सदोम का चयन कई पीढ़ियों के लिये बुराई के कारण घटित घटनाओं की श्रंखला में, संसार के लिये पहले लिंक थे। PPHin 169.3

परमेश्वर का भय मानने वाला कोई भी बिना खतरे के स्वयं को परमेश्वर का भय न मानने वाला के साथ नहीं जोड़ सकता। आमोस 3:3में लिखा है, "यदि दो मनुष्य परस्पर सहमत न हो, तो क्या वे एक संग चल सकेंगे"? वैवाहिक सम्बन्ध में शान्ति और समृद्धि सम्बन्धित पक्षों की एकता पर निर्भर करते हैं, लेकिन विश्वासी और अविश्वासी के बीच रूचि, झुकाव व उद्देश्य का मौलिक अंतर होता है। वे दो स्वामियों के सेवा कर रहे है, जिनमें कोई सहमति नहीं हो सकती। किसी के सिद्धान्त कितने ही पवित्र और उचित हो, लेकिन एक अविश्वासी साथी के प्रभाव की प्रवृति उसे परमेश्वर से दूर करने की होगी । PPHin 170.1

जो बिना परिवर्तन के वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर लेता है, वह परिवर्तन के माध्यम से अपने साथी के प्रति ईमानदार होने के लियेऔरअधिक उत्तरदायी हो जाता है, भले ही धर्म के संदर्भ वे कितने ही अलग क्यों न हो, फिर भले ही परीक्षण और उत्पीड़न सहना पड़े, ईश्वर के अधिकारों को प्रत्येक सांसारिक सम्बन्ध से ऊपर रखना चाहिये। प्रेम और नम्रता की भावना से यह निष्ठा अविश्वासी को जीतने के लिये प्रभावशाली हो सकती है। लेकिन बाईबिल में मसीही लोगों का अधर्मी लोगों के साथ विवाह वर्जित है।2 कुरिन्थियों 6:14 में, परमेश्वर का निर्देश इस प्रकार है, "अविश्वासियों के साथ असमान जुए में न जुतो । PPHin 170.2

परमेश्वर ने इसहाक को संसार को धन्य करने वाली प्रतिज्ञाओं का उत्तराधिकारी बनाकर बहुत सम्मानित किया, लेकिन फिर भी जब वह चालीस वर्ष का था, पत्नी के चयन के कामक लिये जब उसके पिताने अपने अनुभवी, ईश्वर का भय मानने वाले सेवक को नियुक्त कियाउसने अपने पिता के निर्णय का समर्थन किया । और उस विवाह का परिणाम, जैसे कि शामत्लों में प्रस्तुत किया गया है, घरेलू शान्ति का एक सुन्दर व हृदयस्पर्शी चित्र है। "तब इसहाक रिबका को अपनी माता सारे के तम्बू में ले आया और उसको ब्याह कर उससे प्रेम किया। इस प्रकार इसहाक की माता की मृत्यु के पश्चात शान्ति प्राप्त हुई ।" PPHin 170.3

कितना अंतर है इसहाक द्वारा अपनाये हुए रास्ते और हमारे समय के नौजवानों व तथाकथित मसीहों द्वारा अपनाए रास्तों में! युवाओं को प्रायः लगता है कि प्रेम के विषय में उन्हें स्वयं से ही

परामर्श लेना चाहिये व इसका नियंत्रण न तो ईश्वर के और न ही माता पिता के हाथ में होना चाहिये। पुरूषत्व व नारीत्व की अवस्था में पहुँचने से पूर्व ही वे स्वयं को बिना माता-पिता की सहायता, चयन करने योग्य समझने लगते है। उनकी मूर्खता ज्ञात करने के लिये उनके वैवाहिक जीवन के कुछ ही वर्ष पर्याप्त होते हैं, लेकिन तब तक उसके भयावह परिणामों को रोकने के लिये बहुत देर हो चुकी होती है। इसी असंयम और विवेक के अभाव को, जिसके कारण जल्दबाजी में निर्णय लिया गया, बुराई को बढ़ावा देने की अनुमति दे दी जाती है, जब तक कि वैवाहिक सम्बन्ध एक जहरीले जुए का रूप न ले ले। कई लोगों ने इस जीवन में शान्ति को और आने वाले जीवन की आशा को नष्ट कर दिया है। PPHin 170.4

यदि कोई विषय है जिस ध्यानपूर्वक सोचना समझना चाहिये और जिसमें अनुभवी व चिरआयु व्यक्तियों की सलाह लेनी चाहिये, वह विषय विवाह से सम्बन्धित है; जीवनभर के लिये दो लोगों को बन्धन में बंधने के लिये कदम उठाने से पहले, प्रार्थनाके माध्यम से ईश्वरीय मार्गदर्शन माँगना चाहिये और बाईबल को सलाहकार के रूप में देखना चाहिये । PPHin 171.1

अभिभवाकों को अपने बच्चों की आगामी खुशहाली के प्रति स्वयं के उत्तरदायित्व को नहीं भूलना चाहिये। इसहाक का अपने माता-पिता के निर्णय के प्रति सम्मान, उस प्रशिक्षण का परिणाम था जिसने उसे आज्ञाकारितापूर्ण जीवन से प्रीति रखना सिखाया था। हालांकि अब्राहम अपने बच्चों से पैतृक अधिकारों के प्रति सम्मान की अपेक्षा करता था, पर उसका दैनिक जीवन इस बात का साक्ष्य था कि अधिकार स्वार्थी या स्वेच्छाचारी नियन्त्रण नहीं था, वरन् उसका आधार प्रेम था और उनकी भलाई और खुशहाली उसके लक्ष्य थे। PPHin 171.2

अभिभावकों को यह आभास होना चाहिये कि युवाओं की पसन्द का मार्गदर्शन करना उनका कर्तव्य है, ताकि वे अपने लिये उपयुक्त साथी का चयन कर सके। ईश्वर के सहायतापूर्ण अनुग्रह और स्वयं के शिक्षण और उदाहरण द्वारा, उन्हें बच्चों के बचपन से ही चरित्र को इस तरह ढालना चाहिये कि वे महान व पवित्र रहेंगे और जो अच्छा और सच्चा है उसकी ओर आकर्षित होंगे । समान स्वभाव एक दूसरे को आकर्षित करते है, एक दूसरे की सराहना करते हैं। अच्छाई और पवित्रता और सत्य के प्रति प्रेम को आत्मा में प्रारम्भ से ही प्रत्यारोपित होने दें, और युवा उन लोगों के समाज की अभिलाषा करेंगे जो इन विशेषताओं के धनी हैं। PPHin 171.3

अभिभावकों को अपने स्वयं के चरित्र और घरेलू जीवन में स्वर्गीय पिता के प्रेम और परोपकार का उदाहरण देना चाहिए। घरों को सूर्य के प्रकाश से भरा रहने दें। यह आपके बच्चों के लिये जमीन-जायदाद या रूपये पैसे से अधिक लाभदायक होगा। उनके हृदयों में घर का प्रेम जीवत रहने दे ताकि वे अपने बचपन के घर को, स्वर्ग के बाद, शान्ति और प्रसन्नता के गढ़ जैसे स्मरण करें। परिवार के सभी सदस्यों पर चरित्र की छाप नहीं होती और घेर्य और सहनशीलता के अभ्यास

के लिये अवसर प्राय: होंगे, लेकिन प्रेम और आत्म-अनुशासन के माध्यम से सब एक दूसरे के साथ अटूट बन्धन में जुड़ सकते हैं। PPHin 171.4

सच्चा प्रेम एक उच्च स्तरीय व पवित्र सिद्धान्त है जो स्वभाव में उस प्रेम से बिल्कुल अलग है, जो आवेग से जागृत होता है और कठिन परीक्षा के दौरान अचानक ही समाप्त हो जाता है। पैतृक घर में कर्तव्यपरायण होकर युवा स्वयं को अपने परिवारों के लिये तैयार करते है। यहां उन्हें आत्म-त्याग का अभ्यास करने दे और नम्रता, शिष्टाचार और मसीही संवेदना प्रकट करने दें।। इस तरह प्रेम को हृदय में सक्रिय रखा जाएगा और जो कोई भी ऐसे घराने से अपने स्वयं को परिवार के मुखिया के रूप में खड़ा करता है, वह उसकी, जिसे उसने अपने जीवन का साथी चुना है, प्रसन्नता को बढ़ाना जान पाएगा। विवाह प्रेम का अन्तिम चरण नहीं वरन् प्रारम्भ होगा ।

अध्याय 16—याकूब और एसाव

यह अध्याय उत्पत्ति 25:19-24, 27 पर आधारित है

याकूब और एसाव, इसहाक के जुड़वां पुत्र, चरित्र और व्यवहार में असाधारण भिन्नता व्यक्त करते है। इस असमानता की भविष्यद्वाणी उनके जन्म से पूर्व ही स्वर्गदूतों द्वारा की गई थी। रिबका की दुखभरी प्रार्थना के उत्तर में उसने घोषणा की कि उसे दो पुत्र प्राप्त होंगे, उसने उनका आगामी इतिहास भी बताया कि दोनों एक शक्तिशाली वंश के मुखिया बनेंगे, लेकिन एक दूसरे से महान होगा और यह कि छोटा पुत्र श्रेष्ठ होगा। PPHin 173.1

ऐसाव आत्म-सन्तोष को चाहते हुए बड़ा हुआ और उसकी सारी रूचि वर्तमान में केन्द्रित थी। नियंत्रण उसे घेर्यहीन बना देता था, अत: वह आखेट की निरंकुश स्वतन्त्रता में आनन्दित होता था और उसने जल्द ही शिकारी का जीवन चुन लिया। फिर भी वह अपने पिता का लाडला था। वह शांत, शान्तिप्रिय चरवाहा अपने ज्येष्ठ पुत्र के दुस्साहस और प्रबलता से आकर्षित हो गया, जो निडर होकर पहाड़ और रेगिस्तान का भ्रमण करता और अपने जोखिम भरे जीवन की रोमांचक कथाओं और पिता के लिये शिकार लिये घर लौटता था। याकूब जो विचारशील, मेहनती, देखभाल करने वाला, वर्तमान की तुलना में भविष्य के बारे में ज्यादा सोचने वाला था, घर पर रहने में सन्तुष्ट था और भेड़ो के झुण्ड की देखभाल और धरती को जोतने में व्यस्त रहता था। उसकी मां उसकी धीरजवन्त द्दढ़ता, मितव्ययीता और दूरदर्शिता का सम्मान करती थी। उसका लगाव घनिष्ठ और मजबूत था और ऐसाव की उद्यमी और अनियमित दयालुता की तुलना में उसे याकूब का उसकी ओर नम्रतापूर्वक नित्य ध्यान देना अधिक प्रसन्नता देता था। रिबका को याकूब अधिक प्रिय था। PPHin 173.2

अब्राहम से की हुई और उसके पुत्र को आश्वस्त की हुई प्रतिज्ञाएं इसहाक और रिबका के लिये उनकी इच्छाओं ओर आशाओं का महान उद्देश्य था। इन प्रतिज्ञाओं से याकूब और एसाव परिचित थे। उन्हें जन्मसिद्ध अधिकार को अधिकमहानता का विषय मानने की शिक्षा दी गई थी क्योंकि इसमें न केवल सांसारिक धन की विरासत, बल्कि आध्यात्मिक सर्वश्रेष्ठा भी सम्मिलित थी। इसे प्राप्त करने वाला परिवार का धर्मगुरू होता था और उसके वंशजो की श्रृंखला से जगत के उद्धारकर्ता को आना था। दूसरी ओर जन्मसिद्ध अधिकार के स्वामी पर बहुत से दायित्व थे। उसकी आशीषों को प्राप्त करने वाले को अपने जीवन को परमेश्वर की सेवा में समर्पित करना होता था। अब्राहम की तरह उसे पवित्र आज्ञाओं के प्रति आज्ञाकारी होना होता था। विवाह, पारिवारिक सम्बन्धों, सार्वजनिक जीवन में उसे परमेश्वर की इच्छा के अनुसार चलना होता था। PPHin 173.3

इसहाक ने अपने पुत्रों को इन विशेषाधिकारों और प्रतिबन्धों से अवगत कराया और स्पष्ट रूप से बताया कि ज्येष्ठ होते हुए एसाव, जन्मसिद्ध अधिकार का हकदार था। लेकिन एसाव को न धर्मनिष्ठा से प्रेम था, और ना ही धार्मिक जीवन के प्रति लगाव। आध्यात्मिक जन्मसिद्ध अधिकार से जुड़ी अपेक्षाएं उसके लिये अप्रिय, यहां तक कि घृणित रूकावट थी। परमेश्वर की व्यवस्था, जो अब्राहम के साथ बंधी वाचा की शर्त थी, ऐसाव के लिये दासत्व का जुआ थी। आत्ममुग्धता में डूबा, मनमानी करने की स्वतन्त्रता से ज्यादा और किसी चीज की उसे अभिलाषा नहीं थी। हर्ष से उसका अभिप्राय अधिकार और धन-दौलत, दावतों और आमोद-प्रमोद से था। वह अपने घुमक्कड़ी, निरंकुश जीवन की मर्यादाहीन स्वाधीनता में गौरवान्वित था। रिबका कोस्वर्गदूत के शब्द याद थे और उसने अपने पुत्रों के स्वभाव को अपने पति से बेहतर अंतर्दृष्टि से ताड़ा। उसे विश्वास था कि ईश्वरीयवचन की विरासत याकूब के लिये थी। उसने इसहाक के सम्मुख स्वर्गदूत के सन्देश को दोहराया लेकिन पिता का प्रेम ज्येष्ठ पुत्र पर केन्द्रित था और वह अपने उद्देश्य में दृढ़ था। याकूब को अपनी माता से यह ज्ञात हुआ था कि पवित्र आदेश अनुसार जन्मसिद्ध अधिकार उसका होगा और वह उससे जुड़े विशेषाधिकारों की अनुच्चारित अभिलाषा से भर गया। उसे अपने पिता की धन-दौलत पर अधिकार की लालसा नहीं थी, उसकी तृष्णा का लक्ष्य आध्यात्मिक जन्मसिद्ध अधिकार था। धर्मी अब्राहम की भांति परमेश्वर सेसंगत करना, अपने परिवार के लिये प्रायश्चित के लिये बलि की भेंट चढ़ाना, प्रतिश्रुत मसीहा और चुने हुए लोगों का मूल होने के लिये और वाचा के वरदान से जुड़ी अनश्वर विरासत- ये सब वे सम्मान और विशेषाधिकार थे, जिन्होंने उसकी तीव्र अभिलाषाओं को जागृत किया। उसका विवेक हमेशा भविष्य की कल्पना करता था और अनदेखी आशीषों को प्राप्त करने को प्रयत्नशील था। PPHin 174.1

गुप्त लालसा के साथ उसने वह सब सुना जो उसके पिता ने जन्मसिद्ध अधिकार के बारे में कहा, माता से ज्ञात हुईं बातों को भी उसने ध्यानपूर्वक संजोये रखा। दिन और रात उसके विचार इसी विषय से जुड़े होते, जब तक कि यह उसके जीवन की अवशोषक रूचि बन गया। यद्यपि याकूब आलौकिक आशीर्वाद को सांसारिक आशीर्वाद से श्रेष्ठ मानता था, उसे अपने आराध्य परमेश्वर का प्रयोगात्मक ज्ञान नहीं था। पवित्र अनुग्रह से उसके हृदय का नवीनीकरण नहीं हुआ था। उसका मानना था कि जब तक पहलौठे का अधिकार एसाव के पास था तब तक उससे सम्बन्धित प्रतिज्ञा का पूरा होना असम्भव था और वह लगातार अपने भाई द्वारा तुच्छ समझे जाने वाले अधिकार को प्राप्त करने का उपाय ढूंढता रहा क्योंकि वह अधिकार उसके लिये अनमोल था। PPHin 174.2

एक दिन एसाव आखेट से थका-मांदा लौटा और उसने खाने की मांग की जो याकब तैयार कर रहा था। याकूब, जिसके लिये एक ही विचार सबसे ऊपर था, अवसर का लाभ उठाते हुए, जन्मसिद्ध अधिकार के मूल्य पर अपने भाई की भूख को तृप्त को तैयार हुआ। "देख, मैं तो अभी मरने पर हूँ इसलिये पहलौठे के अधिकार से मेरा क्या लाभ होगा"? दुस्साहसी, आत्ममुग्ध शिकारी ने कहा। और लाल शोरबे के व्यंजन के लिये अपना जन्मसिद्ध अधिकार बेच दिया और शपथ द्वारा

इस सौदे का पुष्टिकरण किया। उसे कुछ ही समय बाद अपने पिता के तम्बुओं में खाना मिल जाता, लेकिन उस क्षण की इच्छा को सन्तुष्ट करने के लिये उसने उस गौरवपूर्ण विरासत का लापरवाही से सौदा कर दिया जिसकी परमेश्वर ने स्वयं उसके पूर्वजों को आश्वासन दिया था। उसका समूचा ध्यान वर्तमान में था। वह सांसारिक के लिये स्वरगगीय का त्याग करने को तैयार था; क्षणिक तुष्टि के लिये आगामी कल्याण का आदान-प्रदान करने को तैयार था। PPHin 175.1

"यों एसाव ने अपना पहलौठे का अधिकार तुच्छ जाना।" उसे बेचकर उसे राहत की भावना का आभास हुआ। अब उसका मार्ग अबाधित था, वह जैसा चाहे वैसा कर सकता था। इस प्रकार के मर्यादाहीन आमोद-प्रमोद व झूठी स्वतन्त्रता के लिये कितने ही लोग स्वर्ग में अनन्त, शुद्ध व पवित्र विरासत के जन्मसिद्ध अधिकार को बेच रहे हैं। हमेशा बाहरी और सांसारिक आकर्षणों के अधीन एसाव ने हेत की दो पुत्रियों को अपनी पत्नियाँ बनाया। वे कृत्रिम देवी देवताओं की उपासक थी और उनकी मूर्तिपूजा से इसहाक और रिबका खेदित थे। PPHin 175.2

एसाव ने वाचा के उस प्रतिबन्ध का खण्डन किया था जिसके अनुसार चुने हुए और नास्तिकों के बीच अंतर्विवाह निषिद्ध था, लेकिन इसहाक अभी भी उसे जन्मसिद्ध अधिकार देने के संकल्प में अविचलित था। रिबका के तक का, आशीर्वाद के लिये याकूब की तीव्र इच्छा का, और उसके दायित्व के प्रति एसाव की उदासीनता का पिता के उद्देश्य में परिवर्तन लाने के लिये कोई प्रभाव नहीं पड़ा। PPHin 175.3

समय बीतता गया और वृद्ध और अच्धे, मृत्यु की प्रतीक्षा में इसहाक ने निश्चय किया कि वह अपने ज्येष्ठ पुत्र को आशीर्वाद देने में और विलम्ब नहीं करेगा। लेकिन रिबका और याकूबका विरोध जानते हुए उसने निर्णय लिया कि वह उस पवित्र विधि का पालन गुप्त रखेगा। परम्परागत ऐसे अवसरों पर भोजपान कराने के लिये कुलपिता ने एसाव से कहा, "अब तू अपना तरकश और धनुष आदि हथियार लेकर मैदान में जा और मेरे लिये अहेर लेआ, तब मेरी रूचि के अनुसार स्वादिष्ट भोजन बनाकर मेरे पास ले आना कि मैं उसे खाकर मरने से पहले तुझे जी भर के आशीर्वाद दूँ। PPHin 176.1

रिबका ने उसके उद्देश्य को भांप लिया। उसे विश्वास था कि परमेश्वर ने उसकी इच्छा के रूप में जो प्रकट किया था, उस उद्देश्य के विपरीत था। इसहाक ईश्वरीय कोध को उकसाने और अपने छोटे पुत्र को उस पद से, जिसके लिये परमेश्वर ने उसे बुलाया था, वंचित रखने के खतरे में था। उसने व्यर्थ में इसहाक के साथ तर्कें के प्रभाव को परखा था और उसने कपट का सहारा लेने का निश्चय किया । PPHin 176.2

जैसे ही ऐसाव अपने काम पर निकला, रिबका ने अपने उद्देश्य को परिपूर्ण करने की तैयारी शुरू की। ऐसाव की अन्ततः व स्थायी आशीर्वाद प्राप्ति को रोकने हेतु तत्काल कार्यवाही की आवश्यकता का आग्रह करते हुए, रिबका ने याकूब को वह सब बताया जो घटित हुआ था। और

उसने अपने पुत्र को आश्वस्त किया कि यदि वह उसके निर्देशों का पालन करेगा, तो वह उस अधिकार को परमेश्वर की प्रतिज्ञा के अनुसार प्राप्त करेगा।याकूब ने उसकी प्रस्तावित योजना को आसानी से सहमति नहीं दी। अपने पिता को धोखा देने के विचार से उसे अत्याधिक पीड़ा हुईं। उसे लगा कि ऐसा पाप आशीर्वाद के स्थान पर शाप लेकर आएगा। लेकिन उसकी शंकाओं को दबा दिया गया और वह अपनी मां के सुझावों को क्रियान्वित करने के लिये आगे बढ़ा। प्रत्यक्ष झूठ बोलने का उसका कोई इरादा नहीं था, लेकिन पिता की उपस्थिति में आकर उसे लगा कि वापस लौटने के लिये वह बहुत दूर आ चुका था और उसने छल से वह प्रतिष्ठित आशीर्वाद को प्राप्त कर लिया। PPHin 176.3

याकूब और रिबका अपने उद्देश्य में सफल तो हो गए, लेकिन उनके धोखे के बदले उन्हें केवल कठिनाईयाँ और कष्ट मिले। परमेश्वर ने याकब को जन्मसिद्ध अधिकार मिलने की घोषणा की थी और उसका वचन उसके समय में पूरा होता यदि वे विश्वास के साथ परमेश्वर को उनके लिये काम करने के लिये रूके होते। लेकिन तथाकथित परमेश्वर की संतानों की तरह वे इस विषय को उसके हाथों में छोड़ने के लिये तैयार न थे। रिबका को अपने पुत्र को गलत सलाह देने पर घोर पछतावा हुआ, वह उसका अपने बेटे से अलग होने का कारण बना और उसने उसका चेहरा फिर कभी नहीं देखा। जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्ति के समय से याकब स्व-भर्तसना से भर गया। उसने अपने पिता, भाई, स्वयंआत्मा व परमेश्वर के प्रति पाप किया था। एक घण्टे की छोटी सी अवधि घण्टे में उसने जीवनभर के प्रायश्चित योग्य काम किया था। आगामी वर्षो में, जब उसके पुत्रों के दुष्टापूर्ण कत्यों ने उसकी आत्मा को उत्पीड़ित किया, यह दृश्य उसके सम्मुख आ खड़ा होता था। PPHin 176.4

जैसे ही याकूब अपने पिता के तम्बू से गया, एसाव ने प्रवेश किया। हालांकि उसने अपना जन्मसिद्ध अधिकार बेच दिया था और पवित्र शपथ द्वारा लेन-देन की पुष्टि की थी, अपने भाई के दावे के बावजूद वह आशीर्वाद को प्राप्त करने के लिये दृढ़ निश्चयी था। आध्यात्मिक के साथ सांसारिक जन्मसिद्ध अधिकार संलग्न था जो उसे परिवार का आधिपत्य और पिता की सम्पत्ति के दोगुना भाग पर अधिकार देता। ये वह आशीषें थी जिनका मोल वह जानता था। उसने कहा, "हे मेरे पिता, उठकर अपने पुत्र के अहेर का मांस खा, ताकि मुझे जी से आशीर्वाद दे।" PPHin 177.1

विस्मय और पीड़ा से थरथर कांपते हुए, बूढे व अन्धे पिता को उसके साथ हुए धोखे कापता चला। उसकी दीर्घकालीन प्रेम से संजोयी आशाओं को नाकाम कर दिया गया था, और इस कारण अपने ज्येष्ठ पुत्र को होने वाली निराशा को अनुभव कर रहा था। लेकिन फिर भी उसे विश्वास था कि उसके प्रयोजन के पराजित होने में ईश्वर की इच्छा है इसलिये उसने वह हो जाने दिया जिसे इसहाक निश्चय ही रोकना चाहता था। उसने स्वर्गदूत द्वारा रिबका को कहे शब्दों का स्मरण किया और याकूब के द्वारा किये गए पाप, जिसके लिये वह दोषी था, के बावजूद, उसमें परमेश्वर की योजना को सम्पन्न करने वाला उचित व्यक्ति देखा । उसके होठों पर आशीर्वाद का वचन था, और वह

प्रेरणा की भावना याकूब को अनजाने में दिये गए वचन की पुष्टि की, "मैंने उसे आशीर्वाद दिया है, हाँ और वह आशीषित होगा।" PPHin 177.2

जब आशीर्वाद उसकी पहुँच में प्रतीत हो रहा था, तब ऐसाव ने उसे तुच्छ माना, अब जब वह उससे दूर हो गया वह उसे पाना चाहता था। उसके आवेगपूर्ण भावुक स्वभाव के प्रवृति पूरी तरह जागृत हो गईऔर वह अत्याधिक खेद और कोध से भर गया। अत्यन्त ऊंचे और दुःख भरे स्वर से चिललाकर उसने कहा, "हे मेरे पिता, मुझको भी आशीर्वाद दे।" "क्या तूने मेरे लिये भी कोई आशीर्वाद नहीं सोच रखा है?" लेकिन जो वचन दे दिया गया था वापस नहीं लिया जा सकता था। जिस जन्मसिद्ध अधिकार को तुच्छ समझ उसने बेच दिया था, उसे वह वापस प्राप्त नहीं कर सकता था, "मांस के एक टुकड़े के लिये" कभी संयमित नहीं की गईं भूख की क्षणिक सन्तुष्टि के लिये, एसाव ने अपनी धरोहर को बेच दिया, लेकिन जब उसने अपनी मूर्खता को पहचाना, तब आशीर्वाद की पुनः प्राप्ति के लिये बहुत देर हो चुकी थी। इब्रानियों 12:16,17में लिखा है, "आँसू बहा बहा कर खोजने पर भी मन-फिराव का अवसर उसे नहीं मिला।" पश्चताप द्वारा परमेश्वर की करूणा पाने के विशेषाधिकार से एसाव वंचित नहीं था, लेकिन उसे जन्मसिद्ध अधिकार को वापस पाने को कोई साधन नहीं मिला। उसका दुख पाप की दोषसिद्धि से उत्पन्न नहीं हुआ था, वह ईश्वर के साथ सामन्जस्य स्थापित करने का इच्छुक नहीं था। वह अपने पाप के परिणामों के कारण दुःखी हुआ, लेकिन पाप के लिये नहीं । PPHin 178.1

ईश्वरीय आशीर्वाद और अपेक्षाओं के प्रति उसकी उदासनीता के कारण एसाव को पवित्र-शास्त्र में 'अधर्मी' कहा गया है। वह उन लोगों का प्रतीक है जो मसीह द्वारा खरीदे गए उद्धार को तुच्छ मानते हैं, और पृथ्वी की नश्वर चीजों के लिये स्वर्ग में उनके उत्तराधिकार का त्याग करने के लिये तैयार हैं। अधिकांश लोग वर्तमान के लिये जीते हैं, भविष्य के बारे में ना वो सोचते है और ना ही परवाह करते हैं। ऐसाव के तरह वे कहते है, "आओ, खांए-पीएंक्योंकि कल तो मर ही जाएंगे।" 1 कुरिन्थियों 15:32। वे अपनी प्रवृति द्वारा नियन्त्रित होते हैं और आत्मत्याग का अभ्यास करने के बजाय वे महत्वपूर्ण विचारों को त्याग देते हैं। यदि किसी को तृप्त किया जाए, विकृत भूख की सन्तुष्टि या आत्म-त्यागी और परमेश्वर का भय मानने वालों को प्रतिज्ञाबद्ध आशीषें की सन्तुष्टि, तो भूख के दावे की जीत होती है और स्वर्ग और परमेश्वर का वस्तुतः तिरस्कार किया जाता है। यहांतक कि तथाकथित मसीही भी विलासिता पकड़े रहते हैं जो स्वास्थ्य के लिये हानिकारक होती है और आत्मा की संवेदनाओं को शान्त कर देता है। जब उन्हें, परमेश्वर का भय मानकर पवित्रता को सिद्ध बनाने हेतु आत्मा और शरीर की अशुद्धता को साफ करने का काम दिया जाता है तो उन्हें ठेस पहुँचती है। वे जानते है कि इन कष्टदायक सन्तुष्टियों के साथ स्वर्ग को नहीं पा सकते, और वे निष्कर्ष निकाल लेते हैं कि शाश्वत जीवन का मार्ग अति कठिन है और वे उस पर नहीं चलेंगे। PPHin 178.2

अधिकांश लोग कामुक विलासिताओं के लिये अपने जन्मसिद्ध अधिकार को बेच रहे है। क्षणिक आमोद-प्रमोद के लिये स्वास्थ्य को दाव पर लगाया जाता है, मानसिक संकायों को निर्बल होने दिया जाता है और स्वर्ग का भी परित्याग किया जाता है। यह विलासिता स्वभाव से ही भ्रष्ट और शक्तिहीन करने वाली होती है। जब एसाव अपने अविवेकपूर्ण विनिमय की मूर्खता को देखने के लिये जागा तब नुकसान की भरपाई के लिये बहुत देर हो चुकी थी, ऐसा ही परमेश्वर के दिन उनके साथ होगा, जिन्होंने स्वार्थी सन्तुष्टियों के लिये स्वर्ग के उत्तराधिकार को बेच दिया है। PPHin 179.1

अध्याय 17—याकूब का भागना और प्रवास

यह अध्याय उत्पत्ति 28—31 पर आधारित है

ऐसाव के कोध के कारण मृत्यु के डर से, याकूब निराश्रित होकर अपने पिता के घर से चला गया, लेकिन अपने साथ अपने पिता के आशीर्वाद को ले गया। इसहाक ने उसके लिये वाचा की प्रतिज्ञा को नवीकत किया और याकूब को उसका उत्तराधिकारी बनाकर उसे मेसोपोतामियास्थित उसकी माँ के परिवार से पत्नी लाने की आज्ञा दी। फिर भी अत्यन्त अशान्त मन से याकूब वीरान यात्रा पर निकल पड़ा। अपने हाथ में सिफ लाठी लिये उसे घुमक्कड़ असमभ्य जनजातियों से जनपूर्ण देश के बीच से कई मीलों का सफर करना था। पश्चताप और डर के कारण वो मनुष्यों से छुपाता रहा, ताकि उसका कोधित भाई उसे ढूँढ न पाए। उसे डर था कि उसने हमेशा के लिये उस आशीर्वाद को खो दिया जिसे परमेश्वर उसे देना चाहता था और शैतान उस पर प्रलोभनों द्वारा हावी होना चाहता था। PPHin 180.1

दूसरे दिन की संध्या में उसने स्वयं को अपने पिता के तम्बुओं से बहुत दूर पाया। उसे लगा कि वह एक परित्यक्त था और यह जानता था कि उसके गलत मार्ग को चुनने के कारण यह विपत्ति उस पर आ पड़ी थी। निराशा का अन्धकार उसकी आत्मा पर छा रहा था और वह प्रार्थना करने का भी दुस्सहास नहीं कर सका। वह इतना अकेला था कि उसे परमेश्वर की ऐसी सुरक्षा की आवश्यकता का आभास हुआ, जैसे पहिले कभी नहीं हुआ था। रोते हुए और अत्यन्त दीनता के साथ उसने अपने पाप का अंगीकार किया और किसी ऐसे प्रमाण की विनती की जिससे उसे पता लगे कि उसे पूरी तरह छोड़ नहीं दिया गया है। लेकिन उसके बोझिल हृदय को चैन नहीं मिला। वह स्वयं में पूरा विश्वास खो चुका था और उसे डर था कि उसके पूर्वजों के परमेश्वर ने उसे छोड़ दिया था। PPHin 180.2

लेकिन परमेश्वर ने उसे छोड़ा नहीं था। उसकी कूपा अपने भटके हुए सन्देही दास पर अभी भी बनी हुई थी। परमेश्वर ने सहानुभूतिपूर्वक वही प्रकट किया जिसकी याकूब को आवश्यकता थी- एक उद्धारकर्ता । उसने पाप किया था लेकिन जब उसने परमेश्वर के पक्ष में पुन: स्थापित होने के माध्यम को प्रकट रूप से देखा, उसका हृदय कृतज्ञता से भर गया। PPHin 180.3

यात्रा से थक कर चूर, पथिक एक पत्थर को अपना तकिया बनाकर, जमीन पर लेट गया। नींद में उसने एक उज्जवल जगमगाती सीढ़ी को देखा, जिसका निचला हिस्सा जमीन पर टिका था और दूसरा सिरा स्वर्ग तक पहुँच रहा था। परमेश्वर के दूत उस पर उतर-चढ़ रहे थे और उसके ऊपर परमेश्वर का तेज था और स्वर्ग से एक स्वर सुनाई दिया, “मैं यहोवा, तेरे दादा अब्राहम का परमेश्वर और इसहाक का भी परमेश्वर हूँ।” वह जिस भूमि पर वह निराश्रित और निर्वासित की तरह लेटा था,

उसके और उसके वंशजों के लिये प्रतिज्ञाबद्ध की गई और उसे आश्वासन दिया गया, "तेरे और तेरे वंश के द्वारा पृथ्वी के सारे कुल आशीष पाएँगे।" यह वचन अब्राहम और इसहाक को दिया गया था और अब इसे याकूब के लिये नवीकृत किया गया। और फिर उसकी वर्तमान पीड़ा और अकेलेपन को विशेष रूप से ध्यान में रखते हुए सात्वंना और प्रोत्साहन भरे शब्द बोले गए, "मैं तेरे संग रहूंगा और जहाँ कहीं तू जाए वहाँ तेरी रक्षा करूँगा, और तुझे इस देश में लौटा ले आऊंगा, मैं अपने कहे हुए को जब तक पूरा न कर लूँ तब तक तुझ को न छोड़ूंगा ।" PPHin 181.1

परमेश्वर उन कुप्रभावों को जानता था जो याकूब को घेरे रहते और उन खतरनाक परिस्थितियों को भी जिनके प्रति वो अरक्षित होता। कृपा करते हुए परमेश्वर ने पश्चातापी पापी के सामने भविष्य को उजागर किया, ताकि वह स्वयं के संदर्भ में ईश्वरीय योजना को समझ सकें और षड़यन्त्रकारियों और मूर्तिपूजा करने वाले लोगों के साथ अकेले होने पर निश्चित रूप से आने वाले प्रलोभनों से स्वयं को बचा सके। उसके सामने स्थायी रूप से एक उच्च मापक था जो उसका लक्ष्य था और परमेश्वर की योजना का उसके द्वारा सम्पन्न होने का ज्ञान उसे लगातार विश्वसनीयता के लिये प्रेरित करता। PPHin 181.2

स्वप्नदर्शन में याकूब के सामने उद्धार की योजना प्रस्तुत की गई, पूरी तो नहीं, लेकिन वह अंश जो उस समय उसके लिये आवश्यक थे। स्वप्न में दिखाई गईं रहस्यमयी सीढ़ी वही थी, जिसका उल्लेख मसीह ने नतनएल के साथ वार्तालाप के दौरान किया था। उसने कहा, "तुम स्वर्ग को खुला हुआ और परमेश्वर के स्वर्गदूतों को मनुष्य के पुत्र को ऊपर से उतरते और ऊपर जाते देखोगे ।" परमेश्वर के राज के विरूद्ध मनुष्य के अतिक्रमण के समय तक परमेश्वर और मनुष्य के बीच स्वतन्त्र रूप से संपर्क होता था। लेकिन आदम और हवा के पाप ने पृथ्वी को स्वर्ग से अलग कर दिया, जिससे कि मनुष्य अपने सृष्टिकर्ता से संपर्क न कर सके। लेकिन फिर भी जगत को अकेले व आशाहीन अवस्था में नहीं छोड़ा गया। सीढ़ी प्रतीक है मसीह का जो संपर्क का नियुक्त माध्यम है। पाप द्वारा बनी खाड़ी को अपनी सामर्थ्य से सेतुबद्ध नहीं किया होता तो सहायक स्वर्गदूत पतित मनुष्य के साथ संपर्क करने में असमर्थ होते। मसीह दुर्बल और असहाय मनुष्य को अनन्त शक्ति के स्रोत के साथ जोड़ देता है।यह सब याकूब को स्वप्न में बताया गया। हालाँकि उसके विवेक ने प्रकाशित वाक्य के कुछ भाग को एकदम समझ लिया, लेकिन उसके महान और रहस्यमयी सत्य उसके जीवनभर का चिंतन था और उसकी समझ के लिये अधिक से अधिक खुलासा करता रहा । PPHin 181.3

रात के गहरे सन्नाटे में याकूब अपनी नींद से जागा। उसके स्वप्नदर्शन की कांतिमान आकृतियाँ अदृश्य हो गई थी। सुनसान पहाड़ियों की धुंधली रूप-रेखा, और उनके ऊपर तारागण से दीप्तिमान आकाश पर उसकी दृष्टि पड़ी। लेकिन उसे एक पवित्र आभास था कि परमेश्वर उसके साथ था। उस एकान्त को एक अनदेखी उपस्थिति ने भर दिया। उसने कहा,निश्चय ही इस स्थान में यहोवा है, और

मैं इस बात को न जानता था.......यह तो परमेश्वर के भवन को छोड़ और कुछ नहीं हो सकता, वरन् यह स्वर्ग का फाटक ही होगा। PPHin 182.1

“भोर को याकूब उठा, और अपने तकिए का पत्थर लेकर उसका खम्भा खड़ा किया, और उसके ऊपरी सिरे पर तेल डाल दिया।” महत्वपूर्ण घटनाओं को श्रंद्धाजलि देने की रीति के अनुसार, याकूब ने परमेश्वर की करूणा का एक स्मारक स्थापित किया, ताकि जब भी वह उस मार्ग से गुजरे वह उस पवित्र स्थान पर रूककर परमेश्वर की आराधना करे। उसने उस स्थान का नाम बेतेल रखा जिसका मतलब है, “परमेश्वर का घर” । बहुत कृतज्ञता के साथ उसने उस प्रतिज्ञा को दोहराया कि परमेश्वर की उपस्थिति हमेशा उसके साथ होगी और फिर उसने यह पवित्र शपथ ली, “यदि परमेश्वर मेरे संग रहकर इस यात्रा में मेरी रक्षा करें, और मुझे खाने के लिये रोटी, और पहिनने के लिये कपड़ा दे, और मैं अपने पिता के घर में कुशल क्षेम से लौट आँऊ, तो यहोवा मेरा परमेश्वर ठहरेगा। और यह पत्थर, जिसका मैंने खम्भा खड़ा किया है, परमेश्वर का भवन रहेगा, और जो कुछ तू मुझे दे उसका दश्वांश मैं अवश्य ही तुझे दिया करूंगा। PPHin 182.2

याकूब यहां परमेश्वर के साथ शर्तें नहीं रख रहा था। परमेश्वर उसे समृद्धि का आश्वासन दे चुका था और यह शपथ परमेश्वर के प्रेम और कृपा के आश्वासन के लिये कृतज्ञता से पूर्ण हृदय का बहिर्रवाह था। याकूब को लगा कि परमेश्वर का उसपर अधिकार है और उसे यह बात माननी चाहिये, और उसे प्रदान किये गए ईश्वर की कृपा के विशेष प्रतीक बदले में कुछ मांगते थे। इसी तरह हमें दी गई हर आशीष हम पर की गई करूणा के कर्ता के प्रति प्रतिक्रिया की मांग करती है। हर मसीही को अपने बीते जीवन का प्राय: समीक्षा करनी चाहिये और धन्यवाद के साथ उन महत्वपूर्ण छुटकारों को याद करना चाहिये जो मसीह के माध्यम से उसे मिले थे, संकट के समय उसकी सहायता सब कुछ अन्धकारमय और भयानक प्रतीत होने पर उसके सम्मुख मार्ग निकालने में उपाय, जब वह बेहोश होने का था उसे तरो ताजा करने में इन सब को उसे स्वर्गदूतों की देख-रेख के परिणामों की तरह मान्यता देनी चाहिये। इन असंख्य आशीषों को ध्यान में रखते हुए, उसे कृतज्ञतापूर्ण व वशीभूत हृदय से प्राय: पूछना चाहिये, “यहोवा ने मेरे जितने उपकार किये है, उनका बदला मैं उसके क्या दूँ। PPHin 182.3

हमारा समय, हमारे तोड़े, हमारी सम्पत्ति उसी को समर्पित होना चाहिये जिसने विश्वास में हमे यह आशीष दी हैं। हमारे लिये मुक्ति का कोई भी कार्य किया गया हो या हम पर अप्रत्याशित दया की गई हो तो हमें अपने आभार की अभिव्यक्ति ना केवल शब्दों में, वरन् परमेश्वर के काम के लिये दान व उपहारों से करके परमेश्वर की अच्छाई का अंगीकार करना चाहिये। जैसे हम लगातार परमेश्वर की आशीषों को प्राप्त कर रहे है, वैसे ही हमें लगातार देते रहना चाहिये। PPHin 183.1

याकूब ने कहा, “जो कुछ तू मुझे दे उसका दश्वांश मैं अवश्य ही तुझे दिया करूँगा ।” क्या हमें, जो सुसमाचार के विशेषाधिकार और सम्पूर्ण प्रकाश का आनन्द लेते है, परमेश्वर को उन से कम

देकर सन्तुष्ट होना चाहिये जिनके पास इतना प्रकाश नहीं था? नहीं, यदि वे आशीषें, जिनका हम आनन्द उठाते हैं, उनसे ज्यादा है, तो क्या उसके परिणामस्वरूप हमारे कर्तव्य नहीं बढने चाहिये? लेकिन कितना कम है ये अनुमान उस अकल्पनीय मोल के उपहार व अथाह प्रेमका गणितीय नियमोा; समय,धनऔरप्रेमके आधार पर आंकलन करने का प्रयत्न कितना व्यर्थ है! मसीह के लिये दश्वांश! आह तुच्छ दान, शर्मनाक प्रतिदान उसके लिये जोमूल्य बहुमूल्य था! कलवरी के कस से परमेश्वर अनारक्षित समर्पण के लिये बुलाता है। जो कुछ भी हमारे पास है, जो कुछ भी हम है, परमेश्वर को समर्पित होना चाहिये। PPHin 183.2

ईश्वरीय प्रतीज्ञाओं में एक नये अटूट विश्वास के साथ और स्वर्गदूतों की सुरक्षा और उपस्थिति से आश्वस्त याकूब ने 'पूर्बियों के देश" उत्पत्ति 29:1की ओर अपनी यात्रा को जारी रखा। लेकिन कितना भिन्न था यह आगमन, लगभग सौ साल पूर्व अब्राहम के संदेशवाहक के आगमन से! वह सेवक, बहुत से अनुचरों के साथ ऊँटो पर सवार व सोने चांदी के बहुमूल्य उपहार लेकर आया था, पुत्र एक अकेला, पैरों से जख्मी यात्री था, जिसके पास छड़ीके अलावा और कुछ नहीं था। अब्राहम के सेवक की तरह याकूब भी कुएं के पास रूका और यही वह स्थान था जहां उसकी मुलाकात लाबान की छोटी बेटी, राहेल से हुई। अब वह याकूब था जिसने कुए से पत्थर हटाकर, भेड़ों के झुण्ड को पानी पिलाकर सेवा की। उसके द्वारा अपनी रिश्तेदारी ज्ञात कराने पर, उसका लाबान के घर में स्वागत किया गया। हालाँकि वह खाली हाथ व अकेला आया था, कुछ ही सप्ताहों ने उसकी कर्मठता और कौशल का महत्व दिखा दिया और उसने रूकने के लिये आग्रह किया गया। तय हुआ कि राहेल का हाथ मांगने के लिये उसे सात वर्ष की सेवा करनी होगी। PPHin 184.1

प्राचीन काल में रीति के अनुसार विवाह के सत्यापन से पहले वर अपनी पत्नी के पिता को, अपनी परिस्थितियों के अनुसार कुछ धनराशि या सम्पत्ति के रूप में उसका समतुल्य देता था। इसे वैवाहिक सम्बन्ध के लिये जमानत माना जाता था। पिता अपनी पुत्रियों की प्रसन्नता के सन्दर्भ में उन पुरूषों पर विश्वास करना उचित नहीं समझते थे जिन्होंने एक परिवार के भरण-पोषण के लिये प्रावधान नहीं किया हो। यदि उनके पास व्यवसाय का प्रबन्धन करने और मवेशियों या भूमि का अधिग्रहण करने के लिये पर्याप्त मितव्ययिता और सामर्थ्य नहीं होता था, तो ऐसा माना जाता था कि उनका जीवन निरथर्क होगा। लेकिन जिनके पास पत्नी के लिये कुछ भी देने को नहीं होता था, उनको परखने के लिए एक परीक्षा का प्रावधान था, उन्हें उस पिता के लिये श्रम करने की अनुमति दी जाती थी जिसकी बेटी से वे प्रेम करते थे; समय की अवधि देय दहेज के मूल्य के आधार पर विनियमित की जाती थी। जब विवाह का प्रस्ताव रखने वाला अपनी सेवाओं में विश्वासयोग्य होता और अन्य विषयों में योग्य साबित होता, तो वह उस घर की बेटी को अपनी पत्नी के रूपमें पा लेता, और साधारणतया जो दहेज विवाह के समय पिता को मिलता था, वह पुत्री को दे दिया जाता था। राहेल और लिआ के मामले में, स्वार्थी होकर लाबान ने उन्हें दिये जाने वाले दहेज को अपने पास रख

लिया; मेसोपोतामिया से पलायन करने के पूर्व उसकी पुत्रियों ने इस बात का उल्लेख किया, "उसने हम को तो बेच डाला और हमारी धनराशि को खा बैठा है।" PPHin 184.2

यद्यपि इस प्राचीन परम्परा का कभी-कभी दुरूपयोग होता था, जैसा कि लाबान द्वारा किया गया, लेकिन इसके परिणाम फलदायक होते थे। जब विवाहार्थी को दुल्हन की प्राप्ति के लिये श्रम करना पड़ता था, तो एक जल्दबाजी के विवाह से बचा जा सकता था और उसके प्रेम की थाह को, और परिवार का भरण-पोषण करने की योग्यता को परखने का अवसर मिल जाता था। हमारे समय में इसके विपरीत मार्ग चुनने से कई बुराईयाँ उत्पन्न हो जाती है। प्राय: ऐसा होता है कि विवाह से पूर्व भावी युगलों को एक दूसरे के स्वभाव और आदतों को जानने का बहुत कम अवसर मिलता है, और जहां तक नित्य जीवन का सवाल है, जब वह विवाह के समय अपनी रूचियों को एक करते है वे एक-दूसरे के लिये लगभग अपरिचित होते हैं। कई बहुत समय पश्चात समझ पाते है कि वे एक-दूसरे के अनुकूल नहीं है और उनके मेल का परिणाम होता है, जीवन भर की असन्तुष्टि । प्रायः पत्नी और संतानों को पति और पिता की भ्रष्ट आदतों या उसके आलस्य व अयोग्यता के कारण कष्ट उठाते हैं। यदि, प्राचीन परम्परा के अनुसार विवाहार्थी का चरित्र विवाह से पहले परख लिया जाए तो अत्याधिक अप्रसनन्नता को रोका जा सकता था। PPHin 185.1

याकूब ने राहेल के लिये निष्ठापूर्ण सेवा के सात वर्ष दिये और सेवा के वह साल उसे कुछ ही दिनों के बरकार लगे क्योंकि वह उससे बहुत प्रेम करता था। लेकिन स्वार्थी और लालची लाबान ने इतने उपयोगी सहायक को रोकने की इच्छा के कारण राहेल के स्थान पर लिआ कोस्थानापनन्न कर एक निर्दयी छल किया। इस तथ्य को जान कि लिआ स्वयं धोखेबाज की समर्थक थी, याकूब में यह भावना उत्पन्न हुई कि वह लिआ से प्रेम नहीं कर सकता था। जब याकूब ने लाबान को कोधपूर्ण उलाहना दी तो लाबान ने राहेल के लिये उसे सात वर्ष और सेवा करने को कहा और यह भी आग्रह कि वह लिआ का परित्याग न करे, क्योंकि उससे परिवार का अपमान होता। इस तरह याकूब बड़ी कष्टपूर्ण व पीड़ादायक स्थिति में पड़ गया, अन्ततः उसने लिआ को साथ रख राहेल से विवाह करने का निर्णय लिया। राहेल से वह अधिक प्रेम करता था, और उसकी इस प्राथमिकता ने इर्ष्या व द्वेष को उत्तेजित किया ओर लिआ और राहेल की प्रतिद्वंद्धेता के कारण उसका जीवन कटुता से भर गया। PPHin 185.2

बीस वर्षों तक याकूब मेसोपोतामिया में रहा और लाबान की सेवा करता रहा जो रिश्तों के बन्धचन को कोई महत्व न देकर इस सन्धि के लाभ को स्वयं के लिये सुरक्षित करने में लगा रहा। अपनी दोनो पुत्रियों के लिये उसने चौदह वर्षा की मांग की और बची हुई अवधि में उसकी पगार दस बार बदली गईं । याकूब की सेवा परिश्रमी व विश्वसनीय थी। उनके अन्तिम साक्षात्कार के दौरान लाबान से कहे वाक्य उसकी अथक जागरूकता का जो उसने अपने कठोर श्रमसाध्य स्वामी के लाभ के लिये दी थी, विस्तृत रूप से वर्णन करते हैं। "बीस वर्षा तक मैं तेरे घर में रहा, इनमें न तो

तेरी भेड़-बकरियों के गर्भ गिरे, और न तेरे मेढों का मांस मैंने कभी खाया। जिसे बनेले जन्तुओं ने फाड़ डाला उसको मैं तेरे पास नहीं लाता था, उसकी हानि मैं ही उठाता था, चाहे दिन को चोरी जाता, चाहे रात को, तू मुझ ही से उसको ले लेता था। मेरी तो यह दशा थी कि दिन को तो धाम और रात को पाला मुझे खा गया और नींद मेरी आंखो से भाग जाती थी।' PPHin 186.1

रात-दिन भेड़ बकरियों की चौकसी करना चरवाहे के लिये अनिवार्य था। उन पर चोरों और असंख्या, दुस्साहसी, असुरक्षित झुण्डो में तबाही मचाने वाले जंगली जन्तुओं का खतरा हमेशा बना रहता था। याकूब के पास लाबान के बहुसंख्य भेड़-बकरियों की देख-रेख के लिये कई सहायक थे, लेकिन उन सब का दायित्व उसी पर था। वर्ष के कुछ महीनों में उसका व्यक्तिगत रूप से भेड़-बकरियों के साथ होना आवश्यक हो जाता था, ताकि ग्रीष्म-काल में वह उन्हें प्यास से और ठण्ड के महीनों में रात में पड़ने वाली ओस में नष्ट हो जाने से बचा सके। याकूब मुख्य चरवाहा था, उसके नीचे काम करने वाले दास उपचरवाहे थे। यदि कोई भेड़ खोती थी तो उसकी भरपाई मुख्य चरवाहे को करनी पड़ती थी, और यदि भेड़-बकरियाँ तन्दुरूस्त अवस्था में न पाईं जाती थी तो उसका लेखा-जोखा वह कठोरता से उपचरवाहों से लेता था जिन्हें उनकी देख-रेख का दायित्व सौंपा था। PPHin 186.2

चरवाहे के देखभाल करने वाले और कर्मठ जीवन और उसके प्रभार को सौंपे गए असहाय प्राणियों के प्रति विनम्र करूणा को, सुसमाचार के सबसे अधिक अनमोल सत्यों को, उद्धारण सहित समझाने के लिये, प्रेरित लेखकों के द्वारा प्रयोग में लाया गया है। अपने लोगों के साथ उसके सम्बन्ध के संदर्भ में मसीह की तुलना चरवाहे से की गयी है। पतन के पश्चात उसने अपनी भेड़ों का पाप के अन्धेरे मार्गों में सर्वनाश को प्राप्त होना देखा। इन भटके हुओं को बचाने हेतु उसने अपने पिता के घर के गौरव और वैभव को छोड़ा । वह कहता है, "मैं खोई हुई को ढूंढूंगा, और निकाली हुई को लौटा लाऊंगा।" "मैं अपनी भेड़-बकरियों को छुड़ाऊंगा और वे फिर न लुटेंगी।" "फिर जाति-जाति से लूटी न जाएंगी" यहेजकेल 34,16,22,28 [उसकी आवाज उन्हें उसके बाड़े में लौट आने को पुकारती है, "दिन को धूप से बचने के लिये छाया और आंधी-""पानी और झड़ी में एक शरण और आड़" (यशायाह 4:6)भेड़-बकरियों के लिये उसकी देखभाल अथक है। वह निर्बल को प्रबल करता है, कष्ट का निवारण करता है, भेड़ो को अपनी बाहोंमें लेता है, और अपनी गोद में उठाता है। उसकी भेड़े उससे प्रेम करती है। "वे पराये के पीछे नहीं जाएंगी, परन्तु उससे भागेंगी, क्योंकि वे पराये का शब्द नहीं पहचानती ।" यहुन्ना 10:5 PPHin 186.3

मसीह कहता है, "अच्छा चरवाहा भेड़ो के लिये अपना प्राण देता है। मजदूर जो न चरवाहा है और न भेड़ो का मालिक है, भेड़ियों को आते देख भेड़ो को छोड़कर भाग जाता है, और भेड़िया उन्हें पकड़ता और तितर-बितर कर देता है। वह इसलिये भाग जाता है कि वह मजदूर है और उसे

भेड़ो की चिन्ता नहीं । अच्छा चरवाहा मैं हूँ, मैं अपनी भेड़ो को जानता हूँ और मेरी भेड़ मुझे जानती है। PPHin 187.1

मुख्य चरवाहे, मसीह ने अपनी भेड़ो का प्रभार अपने धर्म-उपदेशकों को उपचरवाहों के तौर पर सौंपा है, और वह उन्हें आज्ञा देता है कि वे उनमें वही रूचि रखे जैसी कि उसने रखी हे, उसके द्वारा सौंपे गये प्रभार के पवित्र उत्तरदायित्व का आभास करे। उनसे उन्हें कर्तव्यनिष्ठ होने की, भेड़ो का भरण-पोषण करने की, निर्बल को प्रबल करने की, मूछित होते हुओ को सचेत करने की और उन्हें भूखे भेड़ियों से बचा कर रखने की औपचारिक आज्ञा दी है। PPHin 187.2

अपनी भेड़ो को बचाने के लिये, मसीह ने अपना प्राण न्यौछावर कर दिया, और वह अपने चरवाहो को उदाहरण के तौर पर इस तरह प्रकट किये हुए प्रेम की ओर संकेत करता है। लेकिन "जो मजदूर है......जिसकी स्वयं की भेड़े नहीं है, भेड़ो में वास्तविक रूचि नहीं होती। वह केवल लाभ के लिये श्रम करता है और केवल अपने लिये सोचता है। वह अपने प्रभार के स्थान पर केवल अपने लाभ पर ध्यान लगाता है और संकट की घड़ी में वह भेड़ो को छोड़कर भाग जाता है। PPHin 187.3

प्रेरित पौलुस उपचरवाहों को समझाता है, "परमेश्वर के उस झुण्ड की, जो तुम्हारे बीच में है, रखवाली करो, और यह दबाव से नहीं वरन् परमेश्वर की इच्छानुसार आनन्द से, और नीच कमाई के लिये नहीं, पर मन लगाकर, जो लोग तुम्हें सौंपे गए है, उन पर अधिकार न जताओं, वरन् झुण्ड के लिये आर्दश बनो । 1 पतरस 5:2,3 । पौलुस कहता है, "इसलिये अपनी और पूरे झुण्ड की चौकसी करो जिसमें पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लहू से मोल लिया है। मैं जानता हूँ कि मेरे जाने के बाद फाड़ने वाले भेड़िए तुम में आएंगे जो झुण्ड को न छोड़ेगें।" प्रेरितों के काम 20:28, 29 PPHin 188.1

जो भी कर्तव्यनिष्ठ चरवाहे के गल्ले में आए दायित्व और देख-रेख को अवांछनीय कार्य समझता है, उन्हें प्रेरित झिड़कता है, "दबाव से नहीं, वरन् स्वेच्छा से, नीच कमाई के लिये नहीं, वरन् मन लगाकर" 1 पतरस 5:2 ऐसे अनिष्ठ दासों को मुख्य चरवाहा बिना हिचकिचाए सेवानिवृत कर देगा। मसीह की कलीसिया को लहूँ देकर खरीदा गया है, और चरवाहे को यह ज्ञात होना चाहिये कि उसकी देख-रेख में दी गई भेड़ो का मोल अनंत त्याग है। उसे हरेक भेड़ को अनमोल मानना चाहिये और उन्हें स्वस्थ और समृद्ध अवस्था में रखने के प्रयत्नों से थकना नहीं चाहिये। जो चरवाहा मसीह के आत्मा से व्याप्त है वो उसके आत्म-त्याग के उदाहरण को अपनाएगा और अपने प्रभार के कल्याण के लिये लगातार श्रम करेगा, और उसकी देख-रेख में भेड़े उन्नति करेंगी । PPHin 188.2

सभी को अपनी सेवकाई का पक्का विवरण देने के लिये बुलाया जाएगा। स्वामी हर चरवाहे से पूछेगा, "वह सुन्दर झुण्ड जो तुझे सौंपा गया था, कहाँ है?" यिर्मयाह 13:20 ।जो निष्ठावान पाया जाएगा, वह प्रतिफल प्राप्त करेगा। "जब प्रधान रखवाला प्रगट होगा" प्रेरित कहता है, "तब तुम्हें महिमा का मुकुट दिया जाएगा जो मुरझाने का नहीं । 1 पतरस 5:4 PPHin 188.3

जब याकूब ने, लाबान की सेवा से थककर, कनान लौटने का प्रस्ताव रखा, उसने अपने सुसर से कहा, ""मुझे विदा कर कि मैं अपने देश और स्थान को जाऊँ। मेरी स्त्रियाँ और मेरे बच्चे, जिनके लिये मैंने तेरी सेवा की है, उन्हें मुझे दे कि मैं चला जाऊं, तू तो जानता है कि मैंने तेरी कैसे सेवा की है।" लेकिन लाबान ने यह कहकर उससे रूकने का आग्रह किया, 'मैने अनुभव से जान लिया है कि यहोवा ने तेरे कारण से मुझे आशीष दी है।" उसने देखा कि उसके दामाद की देख-रेख में उसकी सम्पत्ति में बढ़ोतरी हो रही थी। PPHin 188.4

याकूब ने कहा, "मेरे आने से पहले तुम्हारे पास थोड़ी सी थी। अब तुम्हारे पास बहुत अधिक है। लेकिन समय बीतने के साथ, याकूब की समृद्धि के प्रति ईर्ष्यालु हो गया, क्योंकि याकूब "बहुत धनवान हो गया", उसके पास बहुत मवेशी बहुत से नौकर, ऊंट और गधे थे।" लाबान के पुत्र भी अपने पिता समान ईर्ष्यालु थे और उनकी द्वेषपूर्ण बातें याकूब के कानों में पड़ी, पिता "याकूब ने हमारे पिता का सब कुछ छीन लिया है, और हमारे पिता के धन के कारण उसकी यह प्रतिष्ठा है और याकूब ने लाबान के मुख पर दृष्टि की और ताड़ लिया कि उसके प्रति पहले के समान नहीं हैं।" PPHin 189.1

याकूब को यदि ऐसाव से टकराव का भय न होता तो वह अपने चालाक सम्बन्धी को बहुत पहले छोड़ चुका होता। अब उसे लाबान के पुत्रों से खतरे का आभास होने लगा, जो उसकी धन-सम्पत्ति को अपना समझने लगे थे और उसे पाने के लिये वे हिंसक हो सकते थे। वह अत्यन्त कष्ट और उलझन में था, क्योंकि वह नहीं जानता था कि किधर जाए। लेकिन बैथेल की अनुग्रही प्रतीज्ञा का ध्यान कर वह इस विषय को परमेश्वर के पास ले गया और उससे मार्गदर्शन की प्रार्थना की। स्वप्न में उसे उसकी प्रार्थना का उत्तर मिला, "अपने पितरों के देश और अपनी जन्मभूमि को लौट जा, और मैं तेरे संग रहूंगा।' PPHin 189.2

लाबान की अनुपस्थिति ने निकासी का अवसर प्रदान किया। भेड़-बकरियों और मवेशियों को जल्द से एकत्रित किया गया और आगे भेज दिया गया, और अपनी पत्नियों बच्चों और दासों सहित याकूब ने फरात नदी को पार कर, कनान की सीमा पर गिलाद देश की ओर रूख किया। तीन दिन पश्चात लाबान को उनके भागने का समाचार मिला और उसने सात दिन तक उसका पीछा किया और गिलाद के पहाड़ी देश में उसे जा पकड़ा। वह अत्यन्त कोधित था और उन्हें लौटने को बाध्य करना चाहता था, ऐसा करवा पाने में उसे कोई सन्देह नहीं था क्योंकि उसकी टोली ज्यादा शक्तिशाली थी । पलायक गहरे संकट में थे । PPHin 189.3

उसने अपनी शत्रुतापूर्ण योजना को क्रियान्वित नहीं किया, क्योंकि यथार्थ में अपने दास की सुरक्षा के लिये परमेश्वर ने स्वयं मध्यस्थता की। लाबान ने कहा, "तुम लोगों को हानि पहुँचाने की शक्ति मेरे हाथ में तो हैं, पर तुम्हारे पिता के परमेश्वर ने मुझसे बीती हुई रात में कहा, सावधान रह,

याकूब को न तो तू भला कहना और न बुरा” जिसका तात्पर्य है कि ना तो उसे याकूब को लौटने के लिये बाध्य करना था और न ही मनभावने प्रलोभनों द्वारा आग्रह करना था। PPHin 189.4

लाबान ने अपनी पुत्रियों के दहेज को हड़प लिया था और याकूब के साथ चातुर्य और कठोरता से व्यवहार किया था, लेकिन अब विशेष रूप से भावनाओं को छुपाते हुए उसने याकूब को चुपके से भाग आने के लिये उलहाना दी कि ऐसा करने से उसने पिता को विदाई-उत्सव का या अपनी पुत्रियों और उनकी संतानों को विदा करने का अवसर नहीं दिया। PPHin 190.1

प्रत्युत्तर में याकूब ने लाबान की स्वार्थी व लालची युक्ति को सामने रखा और उसे स्वयं की निष्ठा और नेकनीयती का साक्षी मानते हुए विनती की, “मेरे पिता का परमेश्वर, अर्थात अब्राहम का परमेश्वर, जिसका भय इसहाक भी मानता है, यदि मेरी ओर न होता तो निश्चय तू मुझे खाली हाथ जाने देता मेरे दुःख और मेरे हाथों के परिश्रम को देखकर परमेश्वर ने बीतीरात तुझे डॉटा। PPHin 190.2

लाबान इन तथ्यों को झुठला न सका और अब उसने शान्ति की वाचा बांधने का प्रस्ताव रखा। याकूब ने प्रस्ताव को स्वीकार किया और सन्धि के प्रतीक के रूप में पत्थरों को लेकर एक ढेर खड़ा किया। लाबान ने इस खम्भे का नाम ‘मिज़पाह’ यज्ञ सहादूधा रखा औरकहा, ““यहढेर आज से मेरे ओर तेरे बीच साक्षी होगा जब हम एक दूसरे से दूर रहेंगे। PPHin 190.3

“और लाबान ने याकूब से कहा, “इस ढेर को देख और इस खम्भे को भी देख जिनको मैंने अपने और तेरे बीच में खड़ा किया है। यह ढेर और यह खम्भा दोनो इस बात के साक्षी रहें कि हानि करने के विचार से ना तो मैं इस ढेर को पार कर तेरे पास जाऊंगा, न तू इस ढेर और खम्भे को पार करके मेरे पास आएगा। अब्राहम और नाहोर और उनके पिता, तीनों का जो परमेश्वर है, वही हम दोनों के बीच न्याय करें, तब याकूब ने इसहाक के ‘भय’ के नाम से शपथ ली। रात मैत्रीपूर्ण बात-चीत में बिताई गई, और भोर को लाबान अपने जन समूह के साथ लौट गया। इस अलगाव के साथ मेसोपोतामिया के निवासियों और अब्राहम की सन्तानों के बीच सम्बन्ध का नाम और निशान मिट गया।

अध्याय 18—मल्लयुद्ध (कुश्ती) की रात

यह अध्याय उत्पत्ति 32 और 33 पर आधारित है

यद्यपि याकूब ईश्वरीय निर्देश का पालन करते हुए पदानराम को छोड़ चुका था, फिर भी बीस वर्ष पूर्व जिस मार्ग में वह पलायक के रूप में चला या, उस पर वापस जाने में उसे सन्देह हो रहा था। अपने पिता को धोखा देने का पाप हमेशा उसके सामने आ जाता था। उसे ज्ञात था कि उसका दीर्घकालीन प्रवास उसके पाप का प्रत्यक्ष परिणाम था। इन बातों को वह रात दिन सोचता रहता था और एक अभियोगात्मक अन्तरात्मा द्वारा उसका तिरस्कार उसकी यात्रा को दुःखद बना रही थी। जैसे ही दूर से उसके जन्म-स्थान के पहाड़ दिखाई दिए, कुलपिता का हृदय विचलित हो गया। पिछली बातें स्पष्ट रूप से उसके सामने आ खड़ी हुईं। पाप के स्मरण के साथ ही उसे अपने प्रति परमेश्वर की दयालुता का विचार आया। और उसे ईश्वरीय सहायता और मार्गदर्शन का विचार भी आया। PPHin 191.1

यात्रा के अन्तिम पड़ाव में, एसाव का विचार अपने साथ कई विपत्तियों को पूर्वाभास लेकर आया। याकूब के भाग जाने के पश्चात, एसाव स्वयं को अपने पिता की धन-सम्पत्ति का एकमात्र उत्तराधिकारी मानता था। याकूब के लौट कर आने का समाचार उसमे यह डर उत्पन्न कर देता कि वह अपनी मीरास का दावा करने के लिये आ रहा था। एसाव, यदि चाहता तो, अपने भाई को अधिक हानि पहुँचाने में सक्षम था, और वह न केवल बदले की इच्छा से हिंसक हो सकता था, बल्कि उस सम्पत्ति पर बाधा रहित अधिकार सुरक्षित करने के कारण भी क्योंकि वह उसे अभी तक अपनी समझता था। PPHin 191.2

परमेश्वर ने फिर से याकूब को ईश्वरीय सुरक्षा का प्रतीक प्रदान किया। जब उसने गिलाद पर्वत से दक्षिण की ओर यात्रा की, स्वर्गदूतों के दो समूह उसे आगे और पीछे घेरे हुए प्रतीत हुए और उसकी टोली के साथ, मानो उनकी सुरक्षा हेतु चलते रहे। याकूब ने बेथेल में देखे स्वप्नदर्शन को स्मरण किया और उसके हृदय को बोझ कम हुआ, जब उसने इस प्रमाण को देखा कि जिन पवित्र सन्देशवाहकों ने उसके कनान से भागने के समय उसे आशा और साहस प्रदान किया था वही उसके लौटने में उसके रक्षक होंगे। और उसने कहा, "यह तो परमेश्वर का दल है, इसलिये उसने उस स्थान का नाम महनैम रखा"- "दो दल या टोली"। PPHin 191.3

लेकिन फिर भी याकूब को लगा कि उसे अपनी सुरक्षा के लिये कुछ करना चाहिये। इस कारण उसने अपने भाई के लिये मैत्रीपूर्ण अभिवादन लिये सन्देशवाहकों को भेजा। उसने उन्हें एसाव को संबोधित करने वाले उचित शब्दों का निर्देश दिया। दोनो भाईयों के जन्म से पूर्व यह भविष्यद्वाणी की गई थी कि बड़ा छोटे की सेवा करेगा और इस डर से कि इस बात के कारण कड़वाहट उत्पन्न हो सकती थी, याकूब ने अपने दासों से कहा कि वहउन्हें 'ऐसाव, मेरे स्वामी" के पास भेज रहा है और ऐसाव के सामने वे उसे 'तेरा दास याकब' कहकर बुलाएँ । इस डर को दूर करने के लिये कि वह एक असहाय पलायक के रूप में अपनी पैतृक धन पर दावा करने के लिये आ रहा था, याकूब ने ध्यानपूर्वक अपने संदेश में कहलवाया, "मेरे पास गाय-बैल, गधे, भेड़-बकरियाँ और दास दासियाँ है, और मैंने अपने प्रभु के पास इसलिये संदेश भेजा है कि तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हो।" PPHin 192.1

लेकिन याकूब के दूतों ने लौटकर समाचार दिया कि एसाव चार सौ आदमियों के साथ आ रहा था और मैत्रीपूर्ण सन्देश का उसने कोई उत्तर नहीं दिया। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वह निश्चय की प्रतिशोध लेने कोआरहा था। डेरे में डर फैल गया। "तब याकूब बहुत डर गया और संकट में पड़ा ।" वह पीछे नहीं जा सकता था, और आगेबढ़ने में डर रहा था। उसका निहत्था व निस्सहाय दल प्रतिरोधी मुठभेड़ के लिए बिल्कुल तैयार नहीं था और यह सोचकर उसने अपने दल को दो भागों में बाँट दिया कि यदि एसाव आकर पहले दल को मारने लगे तो दूसरा दल भाग कर बच जाए। उसने अपने पशु-धन में से एसाव के लिये बहुत से उपहार भेजे और साथ ही मैत्रीपूर्ण सन्देश भी भेजा। अपने भाई के साथ धोखा करने की क्षतिपूर्ति के लिये और चुनौतीपूर्ण खतरे को टालने के लिये जो भी उसके बस में था उसने किया, और फिर दीन होकर पश्चाताप के साथ ईश्वरीय सुरक्षा के लिये विनती की, "तूने मुझ से कहा था कि अपने देश और जन्मभूमि में लौट जा, और में तेरी भलाई करूंगा, तूने जो काम अपनी करूणा और सच्चाई से अपने दास के साथ किये है कि मैं जो अपनी छड़ी ही लेकर इस यरदन नदी के पार उतर आया, और अब मेरे दो दल हो गए है, तेरे ऐसे कामों में से में एक के भी योग्य नहीं हूँ। मेरी विनती सुनकर मुझे मेरे भाई एसाव के हाथ से बचा, मैं तो उससे डरता हूँ. कही ऐसा न हो कि वह आकर मुझे और माँ समेत लड़को को भी मार डाले।" PPHin 192.2

अब तक वे यब्बोक नदी के पास पहुँच गए थे। रात होने पर याकूब ने अपने परिवार को नदी के पार भेज दिया और स्वयं अकेला पीछे रह गया। उसने रात प्रार्थना में बिताने का निश्चय किया और परमेश्वर के साथ अकेले रहना पसन्द किया। परमेश्वर एसाव के हृदय को विनम्र कर सकता था। कुलपिता की आशा उसी में थी। PPHin 193.1

उस निर्जन, सुनसान, अरक्षित पहाड़ी इलाके में, जो चारों और हत्यारों के छुपने का स्थान व जँगली जानवरों का घर था, याकूब व्यथित मन लेकर पृथ्वी पर दण्डवत हुआ। मध्यरात्रि का समय

था। जिनके लिये उसे जीवन से प्रेम था वे उससे दूर थे और मृत्यु और संकट उन पर मंडरा रहे थे। सबसे कष्टदायक विचार यह था कि उसके पाप के कारण यह विपत्ति उन निर्दाषों पर आ पड़ी थी। आँसुओं के साथ ऊंचे स्वर में उसने परमेश्वर से प्रार्थना की। अचानक एक शक्तिशाली हाथ उस पर पड़ा। उसने सोचा कि कोई शत्रु उसके प्राण लेना चाहता था और वह हमलावर की पकड़ से स्वयं को छूड़ाने का प्रयत्न करता रहा। अन्धकार में दोनो स्वामित्व के लिये संघर्ष करते रहे। एक भी शब्द नहीं बोला गया, लेकिन याकूब ने अपना पूरा बल लगा दिया और क्षणभर के लिये भी प्रयत्न करना नहीं छोड़ा। जब वह अपने प्राणों के लिये लड़ रहा था, अपराध का आभास उसकी अन्तरात्मा पर हावी हो रहा था, उसके पाप उसके सामने आ जाते थे और उसे परमेश्वर से दूर कर देते थे। लेकिन इस भयानक परमसंकट में भी वह परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को नहीं भूला और उसने पूरे हृदय से उससे दया की भीख मांगी। पौ फटने तक मल्लयुद्ध चलता रहा, और तब उस अपरिचित ने याकूब की जांघ पर अगुंली रखी और वह उसी समय लंगड़ा हो गया। कुलपिता ने अब आकमाणकारी के चरित्र को पहचाना। वह समझ गया कि वह स्वर्गीय संदेशवाहक के साथ संघर्षरत था और इसी कारण उसका लगभग अतिमानवीय प्रयत्न विजयी नहीं हुआ। वह मसीह था, “वाचा का स्वर्गदूत” जो याकूब को प्रकट हुआ था। कुलपिता अब विकलांग हो चुका था और अत्यन्त पीड़ा सहन कर रहा था लेकिन वह अपनी पकड़ को ढीला नहीं छोड़ रहा था। पश्चताप से भरा व हताश, वह स्वर्गदूत से लिपटा रहा, “वह रोया और उससे गिड़गिड़ाकर विनती की” (होशे 12:4) और आशीर्वाद के लिये अनुरोध किया। उसे आश्वासन चाहिये था कि उसके पाप क्षमा किये गए। शारीरिक पीड़ा उसको उसके हृदय से विचलित करने के लिये पर्याप्त नहीं थी। उसका निश्चय आखिर तक दृढ़ होता गया और उसका विश्वास भी और बढ़ता गया। स्वर्गदूत ने स्वयं को छुड़ाने की कोशिश की, उसने कहा, “मुझे जाने दे, क्योंकि भोर होने को है” लेकिन याकूब ने उत्तर दिया, “जब तक तू मुझे आशीर्वाद न देगा, तब तक मैं तुझे जाने न दूंगा।” यदि यह घृष्ट, घमण्डपूर्ण आत्म-विश्वास होता तोयाकूब का उसी समय विनाश हो जाता, लेकिन उसने अपनी अयोग्यता का अंगीकार करने का आश्वासन दिया था कि वह अभी भी प्रतिज्ञा पूरी करने वाले परमेश्वर की विश्वसनीयता में विश्वास रखता था। PPHin 193.2

याकूब “दूत से लड़ा और जीत भी गया ।”-होशे 12:4दीनता, पश्चताप, और आत्म-समर्पण के द्वारा यह पापी गलतियां करने वाला, नश्वर व्यक्ति ‘स्वर्ग के गौरव’ से जीत गया।उसने अपनी कॉपती हुईं पकड़ को परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं से बांध दिया था और ‘अथाह प्रेम’ का हृदय पापी की विनती को अस्वीकार न कर सका । PPHin 194.1

वह विकल्प जो, धोखे से जन्मसिद्ध अधिकार की प्राप्ति हेतु याकूब के पाप का कारण था, अब उसके सामने स्पष्ट रूप से सामने आया। उसने परमेश्वर की प्रतिज्ञा में विश्वास न करके, स्वयं के प्रयत्नों से वह करना चाहा जो परमेश्वर अपने समयानुसार व अपने तरीके से सम्पन्न करना चाहता था। उसके क्षमा हो जाने के प्रमाण के तौर पर उसका नाम याकूब से बदलकर इज़राइल रखा गया-

याकूब उसके पाप का स्मरण पत्र था, व इज़राइल उसकी विजय का स्मारक। स्वर्गदूत ने कहा, "तेरा नाम अब याकूब नहीं, परन्तु इज़राइल होगा, क्योंकि तू परमेश्वर से और मनुष्यों से भी युद्ध करके प्रबल हुआ है। PPHin 194.2

याकूब को वह आशीर्वाद मिल गया था जिसक लिये उसकी आत्मा इच्छुक थी। 'छीनने वाले' और 'धोखा देने वाले' के तौर पर जो पाप किया था, वह क्षमा हो गया था। उसके जीवन का संकट-काल समाप्त हो गया। सन्देह, उलझन और पछतावे ने उसके अस्तित्व में कड़वाहट भर दी थी, पर अब सब कुछ बदल गया था, लेकिन परमेश्वर के साथ समझौते से जो शान्ति मिली वह सुखदायी थी। अब याकूब को अपने भाई से मिलने का डर नहीं था। परमेश्वर, जिसने उसका पाप क्षमा किया था उसके पश्चाताप और उसकी दीनता को स्वीकार करने के लिये एसाव के हृदय को प्रभावित कर सकता था। PPHin 194.3

जब याकूब स्वर्गदूत के साथ मल्लयुद्ध कर रहा था, एसाव के पास दूसरा स्वर्गीय सन्देशवाहक भेजा गया। ऐसाव ने अपने भाई को देखा जो बीस वर्षों से अपने पिता के घर से प्रवास में था, उसने उसके स्वर्गवासी माँ के लिये दुःख को देखा, उसने उसे परमेश्वर के दल से घिरा हुआ देखा। एसाव ने इस स्वप्न की चर्चा अपने सिपाहियों से की, और उन्हें याकूब कोहानि न पहुँचाने का निर्देश दिया, क्योंकि उसके पिता का परमेश्वर उसके साथ था। PPHin 194.4

दोनों पक्ष, मरूघर का प्रधान अपने योद्धाओं का नेतृत्व करते हुए और याकूब अपनी पत्नियों, बच्चों, चरवाहों व दासियों और उनके पीछे भेड़-बकरियों व गाय-बैलों की लम्बी पक्तियों के साथ, अन्त में आमने-सामने आए। अपनी लाठी का सहारा लिये, कुलपिता सिपाहियों की टोली से मिलने आगे जाता है। हाल की में हुए संघर्ष से वह विकलांग व क्षीण हो गया था और हर कदम पर रूकते हुए वह धीमी गति से दर्द सहते हुए चल रहा था, लेकिन उसकी मुखाकति प्रसन्नता व शान्ति से कांतिमान थी । PPHin 195.1

विकलांग पीड़ित को देखते ही, "एसाव उससे भेंट करने को दौड़ा, और उसको हृदय से लगाकर, गले से लिपटकर चूमा, फिर वे दोनो रो पड़े।" इस दृश्य को देखकर ऐसाव के अभद्र सिपाही भी द्रवित हो उठे। हालांकि ऐसाव ने उन्हें उसके स्वप्न के बारे में बताया था, फिर भी अपने सरदार में आए परिवर्तन को वे समझ नहीं पा रहे थे। उन्होंने कुलपिता की दुर्बलता को देखा, लेकिन वे ये नहीं भांप पाए कि उसकी निर्बलता को ही उसकी प्रबलता बना दिया गया था। PPHin 195.2

यब्बोक नदी के किनारे यातनापूर्ण रात में, जब विनाश उसके सामने प्रतीत हो रहा था, याकूब को ज्ञात कराया गया कि मनुष्य द्वारा दी गई सहायता कितनी व्यर्थ है और मानवीय योग्यता पर विश्वास करना कितना निराधार है। उसकी एकमात्र सहायता उसी से आनी थी जिसके विरूद्ध उसने महापाप किया था। निस्सहाय और अयोग्य, उसने पश्चातापी के प्रति परमेश्वर की करूणा की प्रतिज्ञा की विनती की। वह प्रतिज्ञा ही उसके लिये आश्वासन था कि परमेश्वर उसे क्षमा करेगा और स्वीकार

करेगा। आकाश और पृथ्वी भले ही न रहे, उसका वचन कभी नहीं टलेगा। और इसी के द्वारा वह उस भयानक संघर्ष में सफल रहा । PPHin 195.3

उस रात के मल्लयुद्ध और वेदना का याकूब का अनुभव उस परीक्षा का प्रतीक है जो परमेश्वर के लोगों पर मसीह के दूसरे आगमन के पूर्व आएगी। यिर्मयाह नबी ने पवित्र स्वप्नदर्शन में इस समय को देखते हुए कहा, "थरथरा देने वाला शब्द सुनाई दे रहा है, शान्ति का नहीं, भय ही का है........सब के मुख पीले पड़ गये है। हाय! वह दिन क्या ही भारी होगा! उसके समान और कोई दिन नहीं, वह याकूब के संकट का समय होगा, परन्तु वह उस से भी छूड़ाया जाएगा ।" यिर्मयाह 30:5-7 PPHin 195.4

जब मसीह मनुष्य के पक्ष में मध्यस्थ के तौर पर अपना कार्य छोड़ देगा, तब संकट का समय प्रारम्भ होगा। शुद्ध करने के लिये पश्चतापी लहँ न होगा। जब यीशु परमेश्वर के सामने से मनुष्य के मध्यस्थ का पद छोड़ देता है, तब यह पवित्र घोषणा की जाती है, "जो अन्याय करता है, वह अन्याय ही करता रहे, और जो मलिन है, वह मलिन बना रहे, और जो धर्मी है, वह धर्मी बना रहे, और पवित्र है, वह पवित्र बना रहे"-प्रकाशित वाक्य 22:11। फिर नियमित करने वाला परमेश्वर का आत्मा पृथ्वी से हटा लिया जाता है। जैसे याकूब को अपने कोधित भाई से मृत्यु का डर था, वैसे ही परमेश्वर के लोगों को उनसे खतरा होगा जो उनका विनाश करना चाहते हैं। और जैसे एसाव के हाथों से बचने के लिये, कुलपिता ने रात भर मल्लयुद्ध किया, वैसे ही धर्मी रात-दिन उनके चारों ओर के शत्रुओं से बचाए जाने के लिये परमेश्वर से प्रार्थना करेंगे । PPHin 196.1

उसके पाप के कारण याकूब को नष्ट करने के अधिकार का दावा करते हुए, शैतान ने परमेश्वर के स्वर्गदूतों के सामने याकूब को आरोपित किया, उसने ऐसाव को याकूब पर चढ़ाई करने के लिये उत्तेजित किया, और कुलपिता के मल्लयुद्ध की लम्बी रात में शैतान ने उसमें अपराधबोध की भावना को हावी करने का प्रयत्न किया ताकि वह निराश होकर परमेश्वर से स्वयं को दूर कर लें। जब अपनी व्यथा में याकूब ने स्वर्गदूत को पकड़ कर आंसुओं के साथ विनती की, स्वगगीय संदेशवाहक ने उसके विश्वास को परखने के लिये उसे उसके पाप का स्मरण कराया और उससे छूट कर भागने की चेष्ठा की। लेकिन याकूब पीछे हटने वालों में से नहीं था। उसने सीखा था कि परमेश्वर दयालु है और उसने परमेश्वर की उसी दया का वास्ता दिया। उसने अपने पाप के लिये किए गये पश्चाताप की ओर संकेत किया और छुटकारे की विनती की। अपने जीवन का अवलोकन कर वह लगभग निराश हो गया, लेकिन उसने स्वर्गदूत को पकड़े रखा और सच्चे, वेदनापूर्ण विलाप के साथ विनती की जब तक कि वह सफल नहीं हुआ । PPHin 196.2

बुराई की शक्तियों के साथ अन्तिम संघर्ष में परमेश्वर के लोगों का भी यही अनुभव रहेगा। परमेश्वर उनके विश्वास को, उनकी तपस्या को, उन्हें छुटकारा दिलाने की उसकी योग्यता में विश्वास को परखेगा। शैतान उन्हें इस विचार से डराने की चेष्ठा करेगा कि उनकी परिस्थिति निराशाजनक

है, यह कि पाप इतने गम्भीर है कि उन्हें क्षमा नहीं किया जा सकता। उन्हें अपनी कमियों का आभास होगा, और जब वे अपने जीवन की समीक्षा करेंगे तो उनकी आशा डूब जाएगी। लेकिन परमेश्वर की करूणा की महानता व अपने व्यक्तिगत सच्चे पश्चताप का स्मरण कर वे निस्सहाय पश्चतापी पापियों के लिये मसीह के माध्यम से की गई उसकी प्रतिज्ञाओं की विनती करेंगे। उनकी प्रार्थनाओं का तुरन्त उत्तर न मिलने के कारण उनका विश्वास विफल न होगा। वह परमेश्वर की सामर्थ्य को थामे रहेंगे, जैसे याकबस्वगंदूत को पकड़े रहा और उनकी आत्मा सदा कहेगी, 'मैं तुम्हें नहीं जाने दूँगा, जब तक तुम मुझे आशीर्वाद न दो ।" PPHin 196.3

यदि याकूब ने पहले, धोखे से जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्ति के पाप का प्रायश्चित नहीं किया होता तो परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना नहीं सुनी होती और उसके जीवन की रक्षा न की होती। इसी प्रकार संकट के समय, यदि परमेश्वर के लोगों मेंवेदबा व भय से उत्पीड़न के दौरान उनके सामने लाए जाने वाले अस्वीकत पाप होंगे तो वे पराजित होंगे, निराशा उनके विश्वास को समाप्त कर देगी और उनमें छुटकारा पाने के लिये परमेश्वर से विनती करने का विश्वास नहीं होगा। लेकिन यदि उनमें अपनी अयोग्यता का आभास है तो उनमें प्रदर्शित करने के लिये कोई गुप्त पाप नहीं होंगे। मसीह के मेल कराने वाले लहू से उनके पाप मिटा दिये जाएंगे और वे उन्हें याद न करेंगे । PPHin 197.1

शैतान कई लोगों में यह विश्वास उत्पन्न करता हे कि परमेश्वर जीवन के महत्वहीन कार्यों में अनिष्ठा को अनदेक्षा कर देगा, लेकिन याकूब के प्रति अपने व्यवहार से परमेश्वर बताता है कि वह किसी भी परिस्थिति में बुराई को सहन या स्वीकार नहीं करेगा। जो भी अपने पापों को अनदेखा करने या छुपाने की चेष्ठा करते है और उन्हें स्वर्ग की पुस्तकों में अस्वीकत व बिना क्षमा हुए रहने देते है, वे शैतान द्वारा पराजित होंगे। जितना उत्तम उनका व्यवसाय, जितना अधिक सम्मानित उनका पद, उतना ही परमेश्वर की द्दष्टि में क्षतिकर उनका मार्ग होता है और उतनी ही निश्चित महान शत्रु की विजय हो जाती है। PPHin 197.2

फिर भी याकूब का इतिहास एक आश्वासन है कि परमेश्वर उनको नहीं छोड़ेगा जो धोखे से पाप में पड़ जाते हैं, लेकिन सच्चा प्रायश्चित कर उसके पास लौट आते है। वह आत्म-समर्पण और सहज रूप से विश्वासी निष्ठा ही थी जिसके द्वारा याकूब ने वह प्राप्त किया जो वह अपनी शक्ति के बल पर संघर्ष करके पाने में विफल रहा। परमेश्वर ने इस तरह अपने दास को सिखाया कि केवल ईश्वरीय सामर्थ्य और अनुग्रह ही उसे वह आशीर्वाद दे सकता था जिसकी उसे तीव्र अभिलाषा थी । ऐसा ही अन्त समय में रहने वालोंके साथ होगा। जब वे खतरों से घिर जाएं और उनकी आत्मा निराश हो जाए जो उन्हें केवल प्रायश्चित की योग्यता पर निर्भर होना चाहिये। हम अपने आप में कुछ नहीं कर सकते। हमारी सारी असहाय अयोग्यता में हमें जीवित उद्धारकर्ता की योग्यता में विश्वास रखना चाहिये। ऐसा करने से कोई भी नष्ट नहीं होगा। हमारे अवगुणों की लम्बी सूची अंनत परमेश्वर की आंखो के समाने है। सूची पूरी हो चुकी है, हमारे कोई भी अपराध छूटे नहीं हैं। लेकिन जिसने प्राचीन

काल के अपने दासों की पुकार को सुना था, वह विश्वास की प्रार्थना को सुनेगा और अपराधो को क्षमा करेगा। उसने वचन दिया है, और वह अपने वचन को पूरा करेगा। PPHin 197.3

याकूब ने जीत प्राप्त की क्योंकि वह आग्रही और दृढ़ संकल्पी था। उसका अनुभव आग्रहपूर्ण प्रार्थना की शक्ति की साक्षी देता है। वह समय अब है कि हम प्रबल प्रार्थना और दृढ़ विश्वास के सबक को याद करें। परमेश्वर की कलीसिया या व्यक्तिगत मसीही की सर्वोत्तम विजय या उपलब्धियाँ वह नहीं है जो गुण या विद्या से प्राप्त होती है। ये उपलब्धियाँ वे है जो परमेश्वर के साथ श्रोता कक्ष में प्राप्त की जाती है, जब सच्चा व अत्याधिक विश्वास सामर्थ्य का शक्तिशाली हाथ पकड़ लेता है। PPHin 198.1

जो लोग अपने प्रत्येक पाप को त्यागने को और परमेश्वर की आशीष को गम्भीरतापूर्वक पाने को सहमत नहीं है, वे उसे नहीं पाएंगे। लेकिन जो याकूब की तरह परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं का दावा करेंगे और वे उसी की तरह सच्चे और आग्रहपूर्ण होंगे तो वह उसी की तरह सफल होंगे। “क्या परमेश्वर अपने चुने हुओ का न्याय न चुकाएगा, जो रात दिन उसकी दुहाई देते रहते है? क्या वह उनके विषय में देर करेगा?, मैं तुमसे कहता हूँ. वह तुरन्त उनका न्याय चुकाएगा ।” लूका 18:7,8 PPHin 198.2

अध्याय 19—कनान की ओर वापसी

यह अध्याय उत्पत्ति 34,35,37 पर आधारित है

यरदन नदी को पार करके, याकूब ने, “कनान देश के शकेम नगर के पास कुशल क्षेम से पहुँचकर नगर के सामने डेरे खड़े किये।” उत्पत्ति 33:18इस तरह बेथेल में माँगी गईं कुलपिता की प्रार्थना, कि परमेश्वर उसे शान्तिपूर्वक तरीके से उसके जन्म स्थान में लौटा लाएगा, स्वीकार हुईं। कुछ समय शकेम की तराई में रहा। यहाँ पर अब्राहम ने सौ वर्षों से भी अधिक पहले, अपना पहला शिविर लगाया था और प्रतिज्ञा के देश में अपनी पहली वेदी का निर्माण किया था। यहाँ, “भूमि के जिस खण्ड पर याकब ने अपना तम्बू खड़ा किया, उसको उसने शकेम के पिता हमोर के पुत्रों के हाथ से एक सौ कसीतों में मोल लिया। वहाँ उसने एक वेदी बनाकर उसका नाम एल-एलाहे-इज़राइल रखा। उत्पत्ति 33:19,20'परमेश्वर, इज़राइल का परमेश्वर ।” जैसा अब्राहम ने किया था, वैसे ही याकूब ने अपने तम्बू के पास परमेश्वर के लिये एक वेदी बनाई, वह सुबह शाम के बलिदान के लिये अपने घराने के सदस्यों को बुलाता था। यहीं पर उसने एक कुंआ खोदा, जहां सत्रह सदियों के पश्चात याकूब का पुत्र और मसीह आया और दोपहर की गर्मी में जिसके पास विश्राम करते समय उसने अपने आश्चर्यचकित सुनने वालो को “अनन्त जीवन के लिये उमड़ने वाले जल के सोते” के बारे में बताया। यहुन्ना 4:14 PPHin 199.1

शकेम में याकूब और उसके पुत्रों की वासअवधि का अन्त हिंसा और रक्तपात में हुआ। घराने की एक पुत्री को भ्रष्ट कर दिया गया, दो भाई हत्या के दोषी थे, एक अविवेकी नौजवान के विधिविरूद्ध कृत्य के प्रतिकार में पूरा नगर बर्बादी और नरसंहार को समर्पित हो गया। वह शुरूआत जो आगे जाकर इतने भंयकर परिणाम लाई, याकूब की पुत्री का कर्म था, जो “उस देश की लड़कियो से भेंट करने को निकली’ और इस प्रकार अधर्मियों की संगति का जोखिम उठाया। जो परमेश्वर का भय न मानने वालों की संगति में आनन्दित होता है वह अपने आप को शैतान के भूक्षेत्र में रख देता है और उसके प्रलोभनों को आमन्त्रित करता है। PPHin 199.2

शिमोन और लेवी की विश्वासघाती निर्दयता अकारण नहीं थी, लेकिन फिर भी शकेम के लोगों के प्रति अपनाए गए मार्ग में उन्होंने घोर पाप किया। उन्होंने बड़ी सावधानी से याकूब से अपने अभिप्रायों को छुपाए रखा, और उनके पुत्रों के धोखे और हिंसक आचरण से दुखी होकर उसने केवल यह कहा, “तुमने जो इस देश के निवासी कनानियों और परिज्जियों के मन में मेरे प्रति घृणा उत्पन्न कराई है, इस से तुम ने मुझे संकट में डाला है, क्योंकि मेरे साथ तो थोड़े ही लोग है, इसलिये अब वे इकट्ठे होकर मुझ पर चढ़ेंगे, और मुझे मार डालेंगे, तो मैं अपने घराने समेत नष्ट हो जाऊंगा।/! लेकिन जिस शोक और अत्यन्त घृणा से वह उनके इस रकक्तपातपूर्ण कृत्य को देखता था वह इन शब्दों में प्रकट होती है जो उसने लगभग पचास वर्ष पश्चात्, जब वह मृत्यु शैय्या पर था,

कहे, "शिमोन और लेवी तो भाई-भाई है, उनकी तलवारें उपद्रव के हथियार हैं। हे मेरे जीव, उनके मर्म में न पड़, हे मेरी महिमा, उनकी सभा में मत मिल, घधिक्कार उनके कोप को, जो प्रचण्ड था, और उनके रोष को, जो निर्दय था ।"उत्पत्ति 49:57 PPHin 199.3

याकूब को लगा कि बहुत दीन होने की आवश्यकता थी। उसके पुत्रों के चरित्र में निर्दयता और झूठ प्रत्यक्ष रूप से स्पष्ट थे। दल में देवी-देवता थे, और उसके घराने में भी कुछ हद तक मूर्तिपूजा ने पैर जमाने की जगह प्राप्त कर ली थी । यदि परमेश्वर उनके परित्याग के अनुसार उनकी सुधि ले, तो क्या वह उन्हें निकटवर्ती राज्यों के प्रतिशोध के लिये नहीं छोड़ता? PPHin 200.1

जब याकूब संकट के तले दबा हुआ था, प्रभु ने उसे दक्षिण में बेथेल के लिये कूच करने का निर्देश दिया। इस स्थान के विचार ने कुलपिता को ना केवल स्वर्गदूतों के स्वप्नदर्शन व परमेश्वर की करूणा की प्रतिज्ञा का, बल्कि उस वाचा की भी, जो उसने वहां दी थी कि प्रभु उसका परमेश्वर होगा, स्मरण कराया। उसने दृढ़ संकल्प किया कि इस पवित्र स्थान पर जाने से पहले उसके घराने को मूर्तिपूजा की मलिनता से आजाद होना चाहिये। इसलिये उसने डेरे के सभी लोगों को निर्देश दिया, "तुम्हारे बीच में जो पराए देवता है, उन्हें निकाल फेंको, और अपने को शुद्ध करो, और अपने वस्त्र बदल डालो, और आओ, हम यहां से निकल कर बेथेल को जाएं, वहां मैं परमेश्वर के लिये एक वेदी बनाऊँगा, जिसने संकट के दिन मेरी सुन ली और जिस मार्ग से मैं चलता था, उसमें मेरे संग रहा । PPHin 200.2

भावुक होकर, याकूब ने बेथेल में अपने पहले दोरे की कहानी को दोहराया, जब उसने अपने पिता के तम्बू को अपने प्राण बचाने के लिये भाग रहे एक अकेले पलायक के रूप में छोड़ा था और किस प्रकार रात के स्वप्नदर्शन में परमेश्वर उसके सामने प्रकट हुआ। जब उसने परमेश्वर के उसके साथ किये गये आश्चर्यजनक व्यवहार का अवलोकन किया, तो उसका हृदय विनम्र हो गया और उसके बच्चे भी एक शान्त करने वाली शक्ति से प्रभावित हो गए, उसने उनके बेथेल पहुँचने पर, परमेश्वर की आराधना में उन्हें सम्मिलित होने के लिये तैयार करने का सबसे प्रभावशाली तरीका चुना था ।"इसलिये जितने पराए देवता उनके पास थे, और जितने कुण्डल उनके कानों में थे, उन सभी को उन्होंने याकूब को दिया, और उसने उनको उस ओक वृक्ष के नीचे, जो शकेम के पास है, गाड़ दिया । PPHin 200.3

नगर निवासियों के मन में परमेश्वर की ओर से ऐसा भय समा गया, कि उन्होंने शकेम के नरसंहार का प्रतिशोध लेने का कोई प्रयत्न नहीं किया। यात्री बेथेल बाधा रहित पहुँच गए। यहां पर परमेश्वर ने याकूब में बातें की, वहां याकूब ने पत्थर का एक खम्भा खड़ा किया। PPHin 201.1

बेथेल में याकूब ने रिबका की दूध पिलानेहरी धाय दबोरा की मृत्यु पर शोक मनाया, दबोरा उसके पिता के परिवार की सम्मानित सदस्या थी और वह अपनी मालकिन की सेवा के लिये मेसोपोटामिया से कनान देश को आयी थी। इस वृद्ध महिला की उपस्थिति याकूब के लिये एक

अनमोल बन्धन था जो उसे उसके प्रारम्भिक जीवन से जोड़े हुए था, विशेषकर उसकी माँ से, जिसका प्रेम उसके लिये अटूट व नम्र था। दबोरा को इतने दु:ख के साथ मिट्टी दी गई कि जिस बांज वृक्ष के निचले भाग में उसको गाड़ा गया उस वृक्ष का नाम 'विलाप का बांज वृक्ष! रखा गया। स्मरण रहे कि उसकी निष्ठापूर्ण सेवा से भरे जीवन की और इस घरेलू मित्र की मृत्यु पर शोक मनाने की स्मृति को परमेश्वर के वचन में संरक्षित रखने के योग्य माना गया। PPHin 201.2

बेथेल से हेब्रोन का सफर मात्र दो दिन का था, लेकिन राहेल की मृत्यु ने याकूब को अत्याधिक दुःख से भर दिया। उसके लिये उसने दो बार सात-सात वर्ष सेवा की थी और उसके प्रेम के कारण उसका परिश्रम उतना कठोर नहीं लगता था। यह प्रेम कितना गहरा और स्थायी था, यह बहुत बाद में पता चलता है जब मिस्र मेंयाकूब अपनी मृत्यु के करीब था और युसुफ अपने पिता से मिलने आया, और वृद्ध कुलपिता ने, अपने बीते जीवन में झांकते हुए कहा, "जब में पद्यान से आया था, तब एप्राता पहुँचने से थोड़ी ही दूर पहले राहेल कनान देश में, मार्ग में, मेरे सामने मर गई, और मैंने उसे वहीं, अर्थात एप्राता जो बैतलहम भी कहलाता है, उसी के मार्ग में मिट्टी दी।"उत्पत्ति 48:7उसके लम्बे और कष्ट भरे जीवन के पारिवारिक इतिहास में केवल राहेल की मृत्यु को याद किया गया। PPHin 201.3

मृत्यु से पहले राहेल ने दूसरे पुत्र को जन्म दिया। आखिरी श्वास लेते हुए उसमें उसका नाम 'बेनोनी' रखा- 'मेरे दुख का पुत्र'। लेकिन उसके पिता ने उसका नाम बिन्यामीन रखा- '"मेर दाहिने हाथ का पुत्र' या 'मेरी शक्ति'। राहेल को उसके मरने के स्थान पर ही गाड़ा गया और उसकी स्मृति की चिरायु बनाने के लिये वहां एक खम्भा खड़ा किया गया। PPHin 202.1

एप्राता के मार्ग पर चलते हुए एक और गम्भीर अपराध ने याकूब के परिवार को कलंकित किया, जिसके कारण रूबेन जो पहलोठा था, उसे जन्म सिद्ध अधिकार के सम्मान और विशेषाधिकारों से वंचित किया गया । PPHin 202.2

अन्ततः याकूब की यात्रा समाप्त होने को आई, "याकूब मम्रे में, जो करियतअर्बा अर्थात हेब्रोन है, जहाँ अब्राहम और इसहाक परदेशी होकर रहे थे, अपने पिता इसहाक के पास आया।" वह अपने पिता के जीवन के अन्तिम वर्षो में यहां रहा। निबल और अन्धे इसहाक के लिये अपने इस वर्षो से बिछड़े हुए पुत्र की नम्रतापूर्ण सेवा, उसके अकेलेपन और वियोग के समय में सांत्वना थी। PPHin 202.3

याकूब और एसाव अपने पिता की मृत्युशैय्या पर मिले। एक समय था जब बड़े भाई में इस घटना को प्रतिशोधके अवसर के रूप में देखा था, लेकिन तब से उसकी भावनाओं में परिवर्तन आया। याकूब जन्मसिद्ध अधिकार की आध्यात्मिक आशीषों से पूर्णतया सन्तुष्ट था और उसने अपने पिता की धन-सम्पत्ति की मीरास अपने बड़े भाई के लिये छोड़ दी। वही एकमात्र मीरास जिसके लिये एसाव इच्छुक था। अब वे ईर्ष्या या घृणा के कारण विरक्त नहीं थे, लेकिन फिर भी वे अलग हो

गए, एसाव सेईर नामक पहाड़ी देश में रहने लगा। परमेश्वर ने जो आशीषे देने में उदार है, याकूब को, उसी के द्वारा अभिलाषित आध्यात्मिक आशीर्वाद के साथ, सांसारिक धन-सम्पत्ति भी प्रदान की। दोनो भाईयों की सम्पत्ति, "इतनी हो गई थी कि वे इकट्ठे न रह सके और पशुओं की बहुतायत के कारण उस देश में, जहां वे परदेशी होकर रहते थे, वे समा न सके।" यह अलगाव याकूब से सम्बन्धित पवित्र योजना के अनुसार था। क्योंकि दोनो भाई धार्मिक विश्वास के संदर्भ में इतने भिन्न थे, कि उनका एक-दूसरे से दूर रहना ही उचित था। PPHin 202.4

एसाव और याकूब को परमेश्वर के ज्ञान में एक समान निर्देश मिले थे और दोनों को उसके नियमों पर चलने की और उसकी कृपा-दृष्टि पाने की आजादी थी, लेकिन उनमें से एक ही ने इस मार्ग को चुना। दोनो भाई अलग-अलग रास्तों पर चले थे और उनके रास्ते अलग-अलग दिशाओं में बढ़ते गए । PPHin 203.1

एसाव को उद्धार के आशीर्वाद से वंचित रखने में परमेश्वर की ओर से एकपक्षीय निर्णय नहीं था। मसीह के माध्यम से उसके अनुग्रह का उपहार सबके लिये मुफ्त था। हर व्यक्ति अपने ही चुनाव से विनाश को प्राप्त होता है। परमेश्वर ने अपने वचन में उन प्रतिबन्धों को रखा है जिनके आधार पर प्रत्येक प्राणी अनन्त जीवन के लिये चयनित होगा, मसीह में विश्वास के द्वारा, उसकी आज्ञाओं का पालन। परमेश्वर ने अपनी व्यवस्था के अनुकूल चरित्र का चयन किया है और जो भी उसकी अपेक्षाओं के मापक पर खरा उतरेगा उसे महिमा के राज्य में प्रवेश मिलेगा। मसीह ने स्वयं कहा, "जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है, परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का कोध उस पर रहता है।" यहुन्ना 3:36"जो मुझसे, हे प्रभु! हे प्रभ। कहता है उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।'-मत्ती 7:21और प्रकाशितवाक्य 22:44में वह घोषणा करता है, "धन्य वे हैं, जो अपने वस्त्र धो लेते हैं, क्योंकि उन्हें जीवन के वक्ष के पास आने का अधिकार मिलेगा, और वे फाटकों से होकर नगर में प्रवेश करेंगे ।" मनुष्य के निर्णायक उद्धार के संदर्भ में, परमेश्वर के वचन में केवल इसी चुनाव को सामने लाया गया है। PPHin 203.2

जो भी प्राणी कंपकृपाते हुए और भय मानकर अपने निजी उद्धार के लिये प्रयत्न करता है वह चुन लिया जाता है। जो विश्वास का कवच धारण करेगा और विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़ेगा वह चुना जाता हैं। वह जो प्रार्थना में जागा रहता है, जो पवित्र-शास्त्र में दूँढेगा, और प्रलोभनों से दूर आयेगा, वह चुना जाएगा। जिसका विश्वास सर्वदा बना रहेगा और जो परमेश्वर के मुँह से निकले हुए प्रत्येक वचन के प्रति आज्ञाकारी होता है, वह चुना जाता है। उद्धार का प्रयोजन सब के लिये मुफ्त है, उद्धार के परिणामों का आनन्द वे ले सकेंगे जिन्होंने प्रतिबन्धों का अनुपालन किया है। PPHin 203.3

ऐसाव ने वाचा की आशीषों का तिरस्कार किया। उसने आध्यात्मिक कल्याण से अधिक सांसारिक कल्याण को महत्व दिया। वह अपनी सोची समझी पसन्द के कारण ही परमेश्वर के लोगों से अलग हो गया। याकूब ने विश्वास की मीरास को चुना था। उसने उसे झूठ, धोखे व कपट से पाने का प्रयत्न किया था, लेकिन परमेश्वर ने उसके पाप को सुधारने की अनुमति दी। लेकिन फिर भी अपने परवर्ती वर्षो में हुए कड़वे अनुभवों के दौरान वह अपने उद्देश्य से विचलित नहीं हुआ और ना ही उसने अपने चयन का परित्याग किया। उसने जान लिया था कि आशीष को सुरक्षित करने के लिये कपट और मानवीय निपुणता की सहायता लेने में वह परमेश्वर के विरूद्ध लड़ रहा था। यब्बोक नदी के किनारे, मल्लयुद्ध की उस रात के बाद, याकूब एक अलग ही व्यक्ति जैसे सामने आया। आत्म-विश्वास जड़ से उखड़ गया था। इसके पश्चात पहले की सी चालाकी नहीं देखी गई । कपट और धोखे के स्थान पर, उसका जीवन सरलता व सत्यता से अंकित था। उसने सर्वशक्तिमान बांह पर सहज विश्वास का पाठ पढ़ लिया था और परीक्षा और कष्ट के समय वह परमेश्वर की इच्छा के सम्मुख दीन आत्मा-समर्पण में झुक गया। चरित्र के अवगुण आग की भटटी में भस्म हो गए, खरा सोना शुद्ध होकर निकला, और याकूब में अब्राहम और इसहाक का उत्साहपूर्ण विश्वास प्रकट हुआ । PPHin 203.4

याकूब का पाप और उससे सम्बन्धित घटनाओं की श्रंखला, दुष्प्रभाव डालने से नहीं चूकं-वह प्रभाव जिसका कटु फल उसके पुत्रों के जीवन में दिखाई दिया। प्रौढ़ अवस्था में पहुँचने पर उनमे गम्भीर विकृतियाँ विकसित हो गई। बहुर्विवाह के परिणाम घराने में स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे। यह भंयकर बुराई प्रेम के सोतों को ही सुखा देती है, औरइसका प्रभाव सबसे अधिक पवित्र बन्धनों को भी कमजोर कर देता है। एक से अधिक माताओं की ईर्ष्या ने पारिवारिक सम्बन्धों में कड़वाहट भर दी थी, बच्चे बढ़े होकर झगड़ालू और नियन्त्रित करे जाने पर अधीर हो गए थे और पिता का जीवन दुख और चिंता से निराशापूर्ण हो गया था। PPHin 204.1

उनमें से एक, फिर भी, बहुत अलग स्वभाव का था- युसुफ राहेल का ज्येष्ठ पुत्र जिसकी अद्वितीय व्यक्तिगत सुन्दरता उसके हृदय व मन की आंतरिक सुन्दरता को प्रतिबिम्बित करती थी। निष्पाप, चपल और प्रसन्नचित यह किशोर नैतिक निष्ठा व द्दढ़ता का प्रमाण था। वह अपने पिता के निर्देशों का पालन करता था और परमेश्वर की आज्ञा मानने में आनन्दित होता था। जिन गुणों के कारण वह बाद में मिस्र देश में विख्यात हुआ-नगम्रता, सत्यनिष्ठा और स्वामिभक्ति-उसके जीवन में पहले से ही प्रकट थी। मां के मरने के कारण, वह अपने पिता का अति प्रिय था और याकूब का हृदय उसकी वृद्धावस्था के पुत्र से बंधा हुआ था। वह ‘युसुफ को अपने दूसरे बच्चों से अधिक प्रेम करता था।’ PPHin 204.2

लेकिन यह प्रेम भी संकट और दुःख का कारण बनने वाला था। याकूब में अविवेकपूर्णढंग से युसुफ के लिये अपनी प्राथमिकता प्रकट की, और इससे उसके अन्य पुत्रों की ईर्ष्या उत्तेजित हो

गईं। अपने भाईयों का बुरा आचरण देखकर युसुफ अत्यन्त दुखी हुआ, उसने नम्रतापूर्वक उनका विरोध करना चाहा, लेकिन इसके परिणामस्वरूप उनकी घृणा और द्वेष और जागृत हो गये। वह उन्हें परमेश्वर के प्रति पाप करते हुए सहन नहीं कर सका औरइस आशा में कि उसके आदेश पर वे सुधार जाएंगे, उसने इस विषय को अपने पिता के सामने रखा। PPHin 205.1

याकूबने सावधानी बरतते हुए कठोरता और ककर्शता से उनके कोध को नहीं भड़कने दिया। भावुक होकर उसने अपने बच्चों के लिये चिंता की अभिव्यक्ति की, और उनसे विनती की वेउसके पलित केशों का सम्मान करे और उसके नाम को बदनाम ना करें और विशेषकर परमेश्वर के सिद्धान्तों का तिरस्कार न करें उसके अपमानित न करें। अपनी दुष्टता के ज्ञात होने पर शर्मशार, नौजवान पश्चतापी प्रतीत तो हुए, लेकिन वे केवल अपनी वास्तविक भावनाएँ छुपा रहे थे जो इस खुलासे से और भी कटु हो गई थी। PPHin 205.2

युसुफ के लिये एक महँगे अंगरखेका विवेकहीन उपहार, जो विशिष्टता प्राप्त व्यक्ति ही पहना करते थे, उसके भाईयों को अपने पिता की एकपक्षीयता का प्रमाण लगा और उनमें सन्देह उत्पन्न हो गया कि अपने ज्येष्ठ पुत्रों के बजाय वह जन्मसिद्ध अधिकार राहेल के पुत्र को देने की मंशा रखता है। युसुफ ने एक स्वप्न देखा और अपने भाईयों से उसका वर्णन किया, तब वे उससे और भी द्वेष करने लगे। उसने उनसे कहा, "जो स्वप्न मैंने देखा है उसे सुनो हम लोग खेत में पूले बांध रहे थे, और क्या देखता हूँ कि मेरा पूला उठकर सीधा खड़ा हो गया, तब तुम्हारे पूलों ने मेरे पूले को चारो तरफ से घेर लिया और उसे दण्डवत किया ।" PPHin 205.3

तब उसके भाईयों ने द्वेषपूर्ण कोध में उससे कहा, "क्या सचमुच तू हमारे ऊपर राज्य करेगा? या क्या सचमुच तू हम पर प्रभुता करेगा? PPHin 205.4

फिर उसने एक और स्वप्न देखा, और अपने भाईयों से उसका भी या वर्णन किया, "सूर्य और चन्द्रमा और ग्यारह तारे मुझे दण्डवत कर रहे हैं।" इस स्वप्न को भी पहले स्वप्न की तरह सहर्ष व्याख्या कर दी गई। तब उसके पिता ने, जो वहां उपस्थित था, उसको डॉट कर कहा, "यह कैसा स्वप्न है जो तू ने देखा हैं? क्या सचमुच मैं और तेरी माता और तेरे भाई सब जाकर तरे आगे भूमि पर गिरकर दण्डवत करेंगे?" यद्यपि याकूब के शब्दों में ऊपरी तौर पर कठोरता थी लेकिन वह जानता था कि परमेश्वर युसुफ को भविष्य दिखा रहा था। PPHin 206.1

अपने भाईयों के सामने खड़े किशोर की सुन्दर मुखाकति प्रेरणा के आत्मा से दमक उठी और वे उसकी सराहना करने से स्वयं को नहीं रोक सके, लेकिन उन्होंने अपने दुष्टतापूर्ण तरीकों का परित्याग नहीं किया और वे उनके पापों की निन्दा करने वाली पवित्रता से घृणा करते थे। जिस भावना ने कैन को सक्रिय किया, उनके हदयों में भी प्रज्वलित थी। PPHin 206.2

भाई को अपनी भेड़-बकरियों के लिये चरागाह ढूंढते हुए एक जगह से दूसरी जगह जाना पड़ता था और वे प्रायः घर से कई महीनों तक अनुपस्थित होते थे। वर्णन की गईं परिस्थितियों के बाद, वे उस स्थान पर गए जिसे उनके पिता ने शकेम में खरीदा था। जब अधिक समय बीत गया और उनसे कोई समाचार न मिला तो शकेम वासियों से उनकी शत्रुता के आधार पर, पिता उनकी चिंता करने लगा। इसलिये उसने युसुफ को उन्हें ढूंढने के लिये और उनके कुशल क्षेम में होने का समाचार लाने को कहा। यदि याकूब, युसुफ के प्रति, अपने अन्य पुत्रों की भावनाओं से परिचित होता तो वह युसुफ को उनके पास अकेला नहीं भेजता, लेकिन यह बात उन्होंने भली-भांति छुपा रखी थी। PPHin 206.3

प्रसन्नचित युसुफ अपने पिता से विदा हुआ, वृद्ध पुरूष और नौजवान ने स्वप्न में भी वह नहीं सोचा जो उनके दोबारा मिलने से पहले होने वाला था। जब एक लम्बी, एकान्त यात्रा के बाद युसुफ शकेम पहुँचा तो उसके भाई वहां नहीं थे। पूछताप करने पर उसे दोतान जाने का निर्देश मिला। वह पचास मील की यात्रा कर चुका था और उसके सामने पन्द्रह मील की दूरी और थी, लेकिन अपने पिता की चिन्ता को दूर करने के विचार से और अपने भाईयों से, जिन्हें वह उनकी निर्दयता के बावजूद प्रेम करता था,मिलने के विचार से चलता गया। PPHin 206.4

उसके भाईयों ने उसे आते हुए देखा, लेकिन उनसे मिलने हेतु उसकी लम्बी यात्रा, उसकी भूख और थकान, उनके सत्कार और भाईचारे पर उसके अधिकार के किसी भी विचार ने उनकी घृणा की कड़वाहट को नहीं हटाया। उसके अंगरखे को देखकर, जो उनके पिता के प्रेम का प्रतीक था, उन पर एक पागलपन सा सवार हो गया। वे उस पर व्यंग्य करते हुए बोले, "देखो वह स्वप्न देखने वाला आ रहा है।" अब वे द्वेष और प्रतिशोध, जिसे वे गुप्त रूप से संजोए थे, के अधीन थे। "आओ, हम उसको घात करके किसी गड्ढे में डाल दे, और यह कह देंगे कि कोई बनेला पशु उसको खा गया। फिर हम देखेंगे कि उसके स्वप्नों का क्या फल होगा ।" उन्होंने कहा। PPHin 206.5

रूबेन न होता तो वे अपनी योजना कियांवित कर देते। रूबेन अपने भाई के वध मे भागीदार नहीं होना चाहता था, और उसने प्रस्ताव रखा कि युसुफ को गड्ढेमें जीवित डाल दिया जाए और उसे वहां मरने के लिये छोड़ दिया जाए। वह उसको उनके हाथ से छूड़ाकर पिता के पास फिर पहुँचना चाहता था। सबको इस योजना पर सहमत होने के लिये कायल कर रूबेन ने दल को वही छोड़ दिया क्योंकि उसे डर था कि वह अपनी भावनाओं पर नियन्त्रण नहीं रख पाएगा और उसकी वास्तविक मंशा प्रकट हो जाएगी । PPHin 207.1

युसुफ, संकट से निःस्सन्देह आगे आता गया इस प्रसन्नता से उसका अपने भाईयों को दूँढना व्यर्थ न गया, लेकिन अपेक्षित अभिवादन के स्थान पर अपने भाई की कोधपूर्ण और प्रतिशोध की द्दष्टि से वह डर गया। उसको पकड़ कर उसके अंगरखे को उतार लिया गया। ताने और धमकियाँ प्राणघाती योजना का संकेत दे रही थी। उसकी विनतियों को अनसुना कर दिया गया वह पूरी तरह

उन कोधपूर्ण मनुष्यों के बस में था। निर्दयता से गहरे गड्ढे की ओर घसीटते हुए, उन्होंने उसको गड्ढे में फेंक दिया और निश्चित करने के बाद कि उसके वहां से भागने की कोई संभावना नहीं, उन्होंने उसको वहां भूख से मरने के लिये छोड़ दिया, और स्वयं 'रोटी खाने को बैठे।' PPHin 207.2

लेकिन कुछ अभी भी परेशान थे, उन्होंने अपने प्रतिशोध से अपेक्षितसन्तुष्टि का आभास नहीं हुआ। जल्द ही यात्रियों का एक दल आता हुआदिखाई दिया। यह यरदन नदी के पार से इश्माएलियों का कारवाँ था जो ऊंटोपर सुगन्धद्रव्य, बलसान और गन्धरस लादे हुए मिस्र को चला जा रहा था। अबयहूदा ने प्रस्ताव रखा कि युसुफ को मरने के लिये छोड़ देने के बजाय वे अपनेभाई को उन अधर्मी व्यापारियों के हाथ बेच दें। इस तरह वह उनके रास्ते से भीहट जाएगा और उसके खून का आरोप उन पर न होगा, क्योंकि उसने आग्रह किया, "वह हमारा भाई और हमारी ही हड्डी और माँस है।" इस प्रस्ताव को सबने मान लिया और युसुफ को जल्दी से गड्ढे से बाहर खींचा गया। PPHin 207.3

जब उसने व्यापारियों को देखा, भयानक सच्चाई उसके सामने आ गई । दासत्व मृत्यु से भी अधिक भयानक था। भयभीत पीड़ा में उसने एक के बाद एक अपने भाईयों से विनती की परन्तु वे व्यर्थ गई। कुछ दया से प्रभावित हुए लेकिन घृणापूर्ण उपहास के डर से वे चुप रहे, सब को लगा कि पीछे हटना अब सम्भव न था। यदि युसुफ को छोड़ दिया गया तो वह निस्सन्देह अपने पिता को सब कुछ बताएगा और पिता अपने अति प्रिय पुत्र के प्रति उनकी निर्दयता को अनदेखा न करेगा। उसकी विनतियों के प्रति अपने हृदयों को कठोर करके, उन्होंने उसे अधर्मी व्यापारियों के हाथ बेच दिया। कारवाँ चला गया और जल्दी ही दृष्टि से ओझल हो गया। PPHin 208.1

रूबेन गड्ढे के पास लौटा, लेकिन युसुफ वहां न था। विस्मय और आत्मतिरस्कार में उसने अपने कपड़े फाड़ डाले। अपने भाईयों के पास लौटकर उसनेकहा, "लड़का तो नहीं है, अब मैं किधर जाऊँ?" युसुफ का भाग्य जानते हुए किउसे पुनः प्राप्त करना असम्भव था, रूबेन को अन्य भाईयों के अपराध को छुपानेके प्रयत्न में सम्मिलित होने को मनाया गया। उन्होंने युसुफ का अंगरखा लियाऔर एक बकरी के बच्चे को मार कर उसके लहू में उसे डुबा दिया और उसेअपने पिता के पास ले गए और उससे कहा कि वह उनको खेतों में मिला थाऔर उन्हें डर था कि वह उनके भाई का था। "देखकर पहचान" उन्होंने कहा, "कि यह तेरे पुत्र का अंगरखा है कि नहीं"। उन्होंने इस दृश्य की अपेक्षा की थी, लेकिन वे उस हृदय भेदी वेदना और अत्याधिक शोकके लिये तैयार नहीं थे, जिसे देखने के लिये वे विवश हो गए । याकूब ने कहा, "हाँ, यहा मेरे ही पुत्र काअंगरखा है, किसी दुष्ट पशु ने उसको खा लिया है, निस्सन्देह युसुफ फाड़ डालागया है।" उसके पुत्र और पुत्रियों ने व्यर्थ में उसे सांत्वना देने का प्रयत्न किया।तब याकूब ने "अपने वस्त्र फाड़े और कमर में टाट लपेटा ओर अपने पुत्र केलिये बहुत दिनों तक विलाप करता रहा।" समय उसके दुख को कम न करसका। वह यही कहता रहा, "मैं तो विलाप करता हुआ अपने पुत्र के पासअधोलोक में उतर जाऊंगा ।" नौजवान

अपने द्वारा किये गये कृत्य से भयभीत थे, लेकिन अपने पिता की डांट के डर से, उन्होंने अपने अपराध को अपने हृदयों मेंछुपाए रखा जो उन्हें भी अत्यन्त भारी लग रहा था। PPHin 208.2

अध्याय 20—मिस्र में युसुफ

यह अध्याय उत्पत्ति 39—41 पर आधारित है

इसी दौरान, युसुफ उसके बन्दीकर्ता व्यापारियों के साथ मिस्र के मार्ग पर था। जब कारवाँ कनान देश की सीमाओं की और दक्षिण में जा रहा था युसुफ दूर से उन पहाड़ों को पहचान सकता था जिनके बीच उसके प्रिय पिता के तम्बू थे। अपने पिता के अकेलेपन व मनोव्यथा के बारे में सोच कर वह बहुत रोया। फिर से दोतान का दृश्य उसके सामने आ खड़ा हुआ। उसने अपने कोधित भाईयों को देखा और उसे लगा मानों उनकी डरावनी दृष्टि उसी पर है। उसकी पीड़ाभरी विनतियों के उत्तर में दिए गए डंक मारने वाले अपमानजनक शब्द उसके कानों में गूंज रहे थे। कंपकँपाते हृदय से भविष्य की ओर देखने लगा। परिस्थितियों में क्या बदलाव आया था-एक लाड़-प्यार में पले हुए पुत्र से एक घृणित और असहाय दास! अकेला और मित्रहीन जहां वह जा रहा था उस देश में उसके हिस्से में क्या आने वाला था? कुछ समय के लिये युसुफ ने स्वयं को असहनीय शोक और भय को समर्पित कर दिया। PPHin 209.1

लेकिन, परमेश्वर की पूर्व दृष्टि में, यह अनुभव भी युसुफ के लिये आशीष था। कुछ ही घण्टों में वो सीख गया जो उसे कई वर्ष भी नहीं सिखा सकते थे। अपने प्रेम की तरह दृढ़ और नम्र पिता की एक पक्षीयता अपने प्रेम की तरह दृढ़ और नम्र था, एक पक्षीयता और प्यार के कारण युसुफ को बहुत कष्ट उठाना पड़ा। उसकी अविवेकपूर्ण प्राथमिकता युसुफ के भाईयों को कोधित कर उन्हें निर्दयी कृत्य के लिये उकसाया जिसके कारण उसे अपने घर से अलग होना पड़ा। उसका प्रभाव उसके चरित्र में भी स्पष्ट रूप से प्रकट थे। उन गलतियों को प्रोत्साहन दिया गया था जिनको सुधारना अब अनिवार्य था। वह आत्म-निर्भर और श्रमसाध्य बन रहा था। वह अपने पिता की नम्रतापूर्ण देखभाल का अभ्यस्थ था और अब एक दास और अपरिचितके कष्टपूर्ण व उपेक्षित जीवन में आने वाली कठिनाईयों का सामना करने में असमर्थ था। PPHin 209.2

फिर उसके विचार उसके पिता के परमेश्वर पर केन्द्रित हुए। उसके बचपन में उसे परमेश्वर का भय मानना और उससे प्रेम करना सिखाया गया था। प्रायः अपने पिता के तम्बू में उसने घर से भागे हुए पलायक और निराश्रय याकूब के स्वप्नदर्शन की कहानी को सुना था। उसे याकूब को दी गई परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं और किस प्रकार वे पूरी हुई, इस बारे में बताया गया था उसके यह भी बताया गया था कि किस प्रकार आवश्यकता की घड़ी में, परमेश्वर के स्वर्गवृत उसे निर्देश, सांत्वना व सुरक्षा प्रदान करने आए थे। उसने मनुष्य के लिये एक उद्धारकर्ता का प्रयोजन करने में परमेश्वर के प्रेम के बारे में सीखा था। अब यह बहुमूल्य पाठ विस्तृत रूप में उसकेसामने आए। युसुफ को विश्वास था कि उसके पूर्वजों का परमेश्वर उसका भी परमेश्वर होगा। उसी समय और उसी स्थान पर

उसने स्वयं को पूर्णतया परमेश्वर को समर्पित किया और प्रार्थना की कि इज़राइल का रक्षक उसके प्रवास के देश में भी उसके साथ हो। PPHin 209.3

स्वयं को परमेश्वर के प्रति सच्चा प्रमाणित करने के संकल्प से वह आत्मविभोर हो उठा-उसने निश्चय किया किसी भी परिस्थिति में उसका आचरण ऐसा होगा जैसा स्वर्ग के राजा की प्रजा का होना चाहिए। उसने परमेश्वर की पूरे मन से सेवा करने का, अपने भाग्य में आने वाली परीक्षाओं का धैर्यपूर्वक सामना करने का, और प्रत्येक कर्तव्य का निष्ठापूर्वक पालन करने का संकल्प किया। एक दिन का अनुभव युसुफ के जीवन में नया मोड़ ले आया। उसकी भयानक विपत्ति ने उसे एक लाड़ले से एक आत्म-सम्पन्न, साहसी विचारपूर्ण पुरूष में परिवर्तित कर दिया। PPHin 210.1

मिस्र पहुंचने पर युसुफ को पोतिफर को बेच दिया गया, जो राजा केसुरक्षा दल का कप्तान था और जिसकी सेवा में युसुफ दस वर्ष तक रहा। यहांउसे असाधारण प्रलोभनों का सामना करने पड़ा। वह मूर्तिपूजा के बीच था।राजसी गौरव के आंडम्बर से परिपूर्ण देवी-देवताओं की आराधना को उस समयके उच्चतम सभ्य जातियों की संस्कृति और बाहुल्य का समर्थन प्राप्त था। फिरभी युसुफ ने अपनी सादगी और परमेश्वर के प्रति निष्ठा को बचाए रखा। उसकेचारों ओर पाप के दृश्य और स्वर थे लेकिन वह उनसे अप्रभावित रहा। वहनिषिद्ध विषयों पर अपने मन के मनन करने की अनुमति नहीं देता था। PPHin 210.2

मिस्रवासियों की कृपा-दृष्टि प्राप्त करने की अभिलाषा में वह अपने सिद्धान्तों कोनहीं छुपाता था। ऐसा करने पर वह प्रलोभन में पड़ जाता, लेकिन वह अपनेपूर्वजों के धर्म से लज्जित नहीं था, और उसने इस तथ्य को छुपाने का कोईप्रयत्न नहीं किया कि वह यहोवा का आराध्य था। PPHin 210.3

“पर यहोवा युसुफ के संग-संग रहा और उस पर करूणा की.......... औरयुसफ के स्वामी ने देखा कि यहोवा उसके संग रहता है, और जो काम वह करता है उसको यहोवा उसके हाथ से सफल कर देता है।” युसुफ में पोतिफर का विश्वास बढ़ता गया और उसने युसुफ को अपनी सेवा टहल करने के लिये नियुक्त किया और फिर उसने उसको अपने घर का अधिकारी बनाकरसब कुछ उसके हाथ में सौंप दिया। “उसने अपना सब कुछ युसुफ के हाथ में छोड़ दिया यहां तक कि अपने खाने की रोटी को छोड़, वह अपनी सम्पत्ति का हाल कुछ न जानता था। PPHin 210.4

युसुफ की देख-रेख मे हर चीज में उल्लेखनीय समृद्धि कोई प्रयत्यक्ष चमत्कार का परिणाम नहीं थी, लेकिन उसका परिश्रम, देख-रेख और बल को ईश्वरीय आशीष से अभिषिकक्त किया गया। युसुफ ने अपनी सफलताका श्रेय परमेश्वर की कृपा-दृष्टि को दिया और उसके मूर्तिपूजक स्वामी ने भी इसको युसुफ की अद्वितीय समृद्धि का रहस्य स्वीकार किया। लेकिन निरन्तर, सुनिर्देशित प्रयत्न के अभाव में सफलता असंभव थी। अपने दास की निष्ठा से परमेश्वर की महिमा हुई। उसका उद्देश्य था कि निर्मलता और धार्मिकता में परमेश्वर में विश्वास रखने वाले मूर्तिपूजकों

से बिल्कुल भिन्न प्रकट हों और इस तरह मूर्तिपूजा के अंधकार के बीच आलौकिक अनुग्रह का प्रकाश चमके। PPHin 211.1

युसुफ की विनम्रता और निष्ठा ने मुख्य कप्तान का हृदय जीत लिया और वह उसे दास नहीं वरन् बेटे के समान मानने लगा। नौजवान का संपर्क ज्ञानी और विशिष्ट पुरूषों से कराया गया और उसने भाषा, विज्ञान और प्रशासन का ज्ञान प्राप्त किया- वह शिक्षा जो मिस्र के भावी मुख्यमंत्री के लिये अनिवार्य थी। PPHin 211.2

लेकिन युसुफ के विश्वास और निष्ठा को अग्नि समान परीक्षाओं द्वारा परखा जाना था। उसके स्वामी की पत्नी ने नौजवान युसुफ को परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करने के लिये ललचाने का प्रयत्न किया। इससे पहले वह मूर्तिपूजकों के देश में प्रचलित भ्रष्टाचार से अछता रहा था, लेकिन यह प्रलोभन, इतना आकस्मिक, इतना प्रभावशाली, इतना सम्मोहक था कि इसका सामना किस तरह किया जाए? युसुफ भली भांति जानता था कि प्रतिशोध का परिणाम क्या होगा। एक तरफ थे छिपाव, कृपा-दृष्टि और उपहार, और दूसरी तरफ थे अपमान, कैद और संभवत: मृत्यु भी। उसका सम्पूर्ण भावी जीवन उस क्षण के निर्णय पर निर्भर था। क्या सिद्धान्त विजयी होगा? क्या युसुफ अभी भी परमेश्वर के प्रति सत्यवान होगा? अनिर्वचनीय उत्सुकता के साथ स्वर्गदूत इस दृश्य को देखते रहे। PPHin 211.3

युसुफ का उत्तर धार्मिक सिद्धांत की शक्ति को दर्शाता है। वह अपने सांसारिक स्वामी के विश्वास को छलने के लिये तैयार न था और किसी भी परिस्थिति में वह अपने स्वर्गीय स्वामी के प्रति सत्यवान होने को तत्पर था। परमेश्वर और पवित्र स्वर्गदूतों की निरीक्षण करती आंखो के सामने भी कईं लोग अपने सहजनों की उपस्थिति में अपराधी नहीं ठहरने की स्थिति में मौक का फायदा उठा लेते है, लेकिन युसुफ ने सबसे पहले परमेश्वर का ध्यान किया। "मैं ऐसी बड़ी दुष्टता करके परमेश्वर का अपराधी क्यूँ बनूँ"? उसने कहा। PPHin 212.1

यदि हम इस स्वाभाविक धारणा का संजोए रखे कि परमेश्वर हमारे प्रत्येक कृत्य और कथन को देखता और सुनता है और हमारे शब्दों और कामों का उल्लेख रखता है और हमें इन सब का सामना करना हे तो हम पाप करने से डरेंगे । नौजवान याद रखें कि वे कहीं भी हो और कुछ भी करें, वे परमेश्वर की उपस्थिति में हैं। हमारे आचरण का कोई भी अंश अवलोकन से नहीं बच सकता । हम अपने उपायों को 'सर्वोच्च' से नहीं छुपा सकते। मनुष्य द्वारा बनाए गए नियमों का कठोर होते हुए भी नि:संकोच उल्लंघन किया जाता है क्योंकि वे दृष्टि में नहीं आते। लेकिन परमेश्वर की व्यवस्था के साथ ऐसा नहीं होता। अपराधी के लिये काली से काली मध्यरात्रि भी आवरण नहीं होती। वह भले ही स्वयं को अकेला सोचे, लेकिन प्रत्येक कार्य का एक अदृश्य साक्षी है। उनके हृदय के अभिप्राय तक ईश्वरीय निरीक्षण के पात्र होते है। प्रत्येक कृत्य, प्रत्येक शब्द, प्रत्यूकें विचार इतनी स्पष्टता से अंकित किया जाता है मानो समस्त जगत में एक ही मनुष्य हो और स्वर्ग का ध्यान उसी पर केन्द्रित

हो ।युसुफ ने अपनी निष्ठा के लिये कष्ट उठाया क्योंकि उसको ललचाने वाली ने उस पर कुकर्म का आरोप लगाकर उसे कैदखाने में डलवाकर अपने प्रतिशोध को पूरा किया। यदि पोतिफर ने अपनी पत्नी द्वारा युसुफ पर लगाए आरोप को सच मान लिया होता, तो नौजवान इब्री ने अपने प्राण गँवा दिये होते, लेकिन उसके आचरण की शालीनता और ईमानदारी उसकी निष्कपटता का प्रमाण थे, और फिर भी अपने स्वामी के घर की प्रतिष्ठा को बचाए रखने के लिये उसे अपमान और अधीनता को सहन करना पड़ा। PPHin 212.2

प्रारम्भ में दरोगा द्वारा युसुफ के साथ कठोर व्यवहार किया। भजन संहिता 105:18,19में भजनकर्ता कहता है, "उसके पैरों में बेड़ियाँ डालकर उसे दुःख दिया, वह लोहे की साँकलों में जकड़ा गया, जब तक कि उसकी बात पूरी न हुई तब तक यहोवा का वचन उसे कसौटी पर कसता रहा ।" लेकिन बन्दीगृह के अन्धकार में भी युसुफ का वास्तविक चरित्र चमकता रहा। वह अपने विश्वास और धैर्य में स्थिर रहा, उसके वर्षों के निष्ठावान सेवा की भुगतान निष्ठुरता से किया गया, लेकिन इससे वह उदास या अविश्वसनीय नहीं बना। उसके पास वह शान्ति थी जो जागरूक निष्कपटता से आती है और अपने विषय में उसे परमेश्वर पर विश्वास था। वह अपने पर हुए अत्याचारों पर विचारशील नहीं हुआ, बल्कि दूसरों के कष्ट निवारण में अपने कष्टों को भूल गया। कैदखाने में भी उसके पास करने के लिये काम था। परमेश्वर उसे महानतम उपयोगिता के लिये यातना की पाठशाला में तैयार कर रहा था। कैदखाने में उत्पीड़न और निरंकुशता के परिणामों को देखकर उसने न्याय, सहानुभूति व कृपा के सबक सीखे जिन्होंने उसे संवेदना और बुद्धिमता से शक्ति का अभ्यास करने को तैयार किया। PPHin 212.3

युसुफ ने धीरे-धीरे बन्दीगृह के दरोगा का विश्वास जीता और अनन्त: उसे अन्य कैदियों को, जो कारागार में थे, प्रभार सौंप दिया गया। जो भूमिका उसने बन्दीगृह में निभायी-- उसकेनैतिक जीवन की निष्ठा और पीड़ितो के लिये उसकी संवेदना ने उसकी भावी समृद्धि और सम्मान के लिये मार्ग खोल दिया। प्रकाश की प्रत्येक किरण जो हम दूसरों पर बिखेरते है वह हम पर ही प्रतिबिम्बित होती है। खेदयुक्त को बोला गया प्रत्येक संवेदनशील शब्द, उत्पीड़ित के छुटकारे के लिये प्रत्येक कार्य, निर्धन को दी गयी, प्रत्येक सौगात यदि सही नीयत से प्रेरित हो तो वह देने वाले के लिये आशीष का कारण होंगे। PPHin 213.1

फिरौन के प्रधान पिलानेहार और प्रधान पकानेहार को किसी अपराध के लिये बन्दीगृह में डाल दिया गया और उन्हें युसुफ के हाथ में सौंप दिया गया। एक दिन, उन्हें उदास देखकर उसने नम्रतापूर्वक उनसे उनकी उदासी का कारण पूछा और उन्हें बताया गया कि उन दोनों ने एक असाधारण स्वप्न देखा था जिसकी महत्ता को जानने के लिये वे उत्सुक थे। युसुफ ने उनसे कहा, "क्या स्पष्टीकरण करना परमेश्वर का काम नहीं? मुझे अपना-अपना स्वप्न बताओं ।" दोनों ने अपने-अपने स्वप्न का वर्णन किया और युसुफ ने उनका मतलब समझाया: अब से तीन दिन के अन्दर

फिरौन फिर से पिलानेहार को उसके पद पर नियुक्त करेगा, और वह पहले के सामन फिरौन का पिलानेहारा होकर उसका कटोरा उसके हाथ में फिर से दिया करेगा। लेकिन पकानेहारे को फिरौन की आज्ञा से मृत्यु के घाट उतार दिया जाएगा। ये दोनों घटनाएं वैसी ही घटित हुईं जैसे इनके बारे में भविष्यद्वाणी की गई थी। PPHin 213.2

फिरोन का पिलानेहार युसुफ के प्रति, अपने स्वप्न के उत्साहवर्धक स्पष्टीकरण के लिये और दया-द्दष्टि के कई काया के लिये अत्यंन्त कतज्ञ था और इसके बदले में युसुफ ने अपने अन्यायपूर्ण दासत्व का मर्ममेदी ढंग से वर्णन करते हुए उससे विनती की वह फिरौन से उसकी चर्चा करे। उसने कहा, "तब तेरा भला हो जाए जब मेरा स्मरण करना, और मुझ पर कृपा करके फिरौन से मेरी चर्चा चलाना, औरइस घर से मुझे छुड़वा देना। क्योंकि सचमुच इब्रियों के देश से मुझे चुरा कर लाया गया है, और यहाँ भी मैंने कोई ऐसा काम नहीं किया, जिसके कारण में इस कारागार में डाला जाऊं।" प्रधान पकानेहार ने देखा कि स्वप्न प्रत्येक विवरण में पूरा हुआ था, लेकिन राजसी पद पर पुन: स्थापित होने पर, उसने अपने हितकारी के बारे में एक बार भी न सोचा। युसुफ दो वर्ष और बन्दी बन कर रहा। जो आशा उसके हृदय में जागृत हईं थी धीमे-धीमे समाप्त हो गई और अन्य सब परीक्षाओं के साथ कतज्ञहीनता का पीड़ादायक डंक भी जुड़ गया। PPHin 214.1

लेकिन एक ईश्वरीयहाथ बन्दीग्रह के फाटकों को खोलने वाला था। मिस्र के राजा ने एक ही रात में दो स्वप्न देखे जो उसी घटना की ओर संकेत कर रहे थे और ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वे किसी घोर संकट का पूर्वाभास करा रहे थे। वह उनकी महत्ता नहीं जान पाया और वे उसके मन को व्याकूल करते रहे । उसके राज्य के ज्योतिषी और पण्डित कोई भी स्पष्टीकरण नहीं दे पाए। फिरोन की उलझन और व्यथा बढ़ गई और उसका महल भय से भर गया। उस सामान्य घबराहट ने प्रधान पिलानेहारे को उसके स्वप्न की परिस्थितियों का स्मरण कराया, इसक साथ ही उसके युसुफ की याद आई और वह अपनी कृतज्ञता और भुलक्कड़पन के लिये पश्चताप से भर गया। उसने तुरन्त फिरौन को सूचित किया कि किस तरह एक डइब्री बन्दी ने उसके और प्रधान पकानेहारे के स्वप्न का स्पष्टीकरण किया था और किस तरह वे भविष्यद्वाणियाँपूरी हुई थी। PPHin 214.2

फिरोन के लिये अपने राज्य के ज्योतिषियों और पण्डितों से हटकर एक परदेशी और दास से परामर्श लेना अपमानजनक था लेकिन अपने मन को शान्त करने के लिये वह छोटी से छोटी सेवा को स्वीकार करने के लिये तैयार था। युसुफ को तुरन्त बुलाया गया, उसने अपनेबन्दीग्रह के वस्त्र उतारे, अपना मुण्डन करवाया क्योंकि उसके कारावास और अपमान की अवधि में उसके बाल बहुत लम्बे हो गए थे। फिर वह फिरौन की उपस्थिति में लाया गया। PPHin 214.3

फिरोन ने युसुफ से कहा, "मैंने एक स्वप्न देखा है, और उसके फल का बतानेवाला कोई भी नहीं, और मैंने तेरे विषय में सुना है कि तू स्वप्न सुनते ही उसका फल बता देता है।" युसुफ ने फिरौन से कहा, "में तो कुछ नहीं जानता, परमेश्वर ही फिरीन के लिये शुभ वचन देगा।" युसुफ का फिरौन

को दिया हुआ उत्तर उसकी दीनता और उसके विश्वास को दर्शाता है। वह शालीनता से स्वयं में उत्तम बुद्धिमता के होने के सम्मान को नकार देता है। "में तो कुछ नहीं जानता" केवल परमेश्वर ही इन रहस्यों को समझा सकता है। PPHin 215.1

फिर फिरौन ने अपना स्वप्न युसुफ को बताया, "मैंने देखा कि मैं नील नदी के किनारे खड़ा हूँ। फिर क्या देखा कि नदी में से सात मोटी और सुन्दर गायें निकलकर चरागाह की घास चरने लगीं। फिर क्या देखा कि उनके पीछे सात और गायें निकली, जो दुबली और बहुत कुरूप ओर दुर्बल है, मैंने सारे मिस्र में ऐसी कुडौल गायें कभी नहीं देखी। इन दुर्बल और कुडौल गायों ने उन पहली सातों मोटी गायों को खा लिया और जब वे उनको खा गईं तब यह मालूम नहीं होता था कि वे उनको खा गई हैं, क्योंकि वे पहले के समान जैसी की तैसी कुडौल रही । तब में जाग उठा। फिर मैंने दूसरा स्वप्न देखा, कि एक ही डंठल में सात अच्छी-अच्छी और अन्न से भरी हुईं बालें निकली। फिर क्या देखता हूँ कि उनके पीछे और सात बालें छछी-छछी और पतली और पुरवाई से मुरझाई हुई निकली। और इन पतली बालों ने उन सात अच्छी बालों को निगल लिया। इसे मैंने ज्योतिषियों को बताया, पर इसका समझानेहारा कोई नहीं मिला। PPHin 215.2

तब युसुफ ने फिरौन से कहा, "फिरौन का स्वप्न एक ही है, परमेश्वर जो काम करना चाहता है, उसको उसने फिरौन पर प्रगट किया है। सात वर्ष बहुतायत की उपज के होंगे। खेत और बगीचे पहले से बहुतायत से उपज देंगे । उनके पश्चात सात वर्ष अकाल के आएंगे।" "और सारे मिस्र के लोग इस सारी उपज को भूल जाएंगे और अकाल से देश का नाश होगा।" स्वप्न का दोहराया जाना उसके पूरे होने की निश्चितृता और शीघ्रता का प्रमाण था। और वह कहता रहा, "इसलिये अब फिरीन किसी समझदार और बुद्धिमान पुरूष को दूँढ करके उसे मिस्र देश पर प्रधानमंत्री ठहराए। फिरौन यह करे कि देश पर अधिकारियों को नियुक्त करे और जब तक सुकाल के सात वर्ष रहें तब तक वह मिस्र देश की उपज का पंचमाश लिया करे। और वे इन अच्छे वर्षों में सब प्रकार की भोजन वस्तु इकटठा करें, और नगर-नगर में भण्डार घर भोजन के लिये, फिरौन के वश में करक उसकी रक्षा करें। वह भोजनवस्तु अकाल के उन सात वर्षों के लिये, जो मिस्र देश में आएँगे, देश के भोजन के लिये रखी रहे, जिससे देश का उस अकाल से सत्यनाश न हो जाए।" PPHin 215.3

यह स्पष्टीकरण इतना तकसँ◌ंगत और अनुरूप था, और जो नीति सुझाई गईं इतनी ठोस और समझदारीपूर्ण थी कि उसके औचित्य पर सन्देह नहीं किया जा सकता था। लेकिन योजना को क्रियान्वित करने के लिये किसको नियुक्त किया जाना था? इस चयन की बुद्धिमता पर राज्य का संरक्षण निर्भर था। PPHin 216.1

फिरौन परेशान था। कुछ समय तक नियुक्ति के विषय पर सोच-विचार किया गया। प्रधान पिलानेहारे के माध्यम से फिरौन बन्दीग्रह के शासन प्रबन्ध में युसुफ द्वारा दिखाई गई बुद्धिमत्ता और समझदारी के बारे में जाना था। यह प्रमाणित था कि वह उत्कृष्ट प्रशासकीय योग्यताका स्वामी था।

पिलानेहारे ने अब आत्मग्लानि से भरपूर, अपने हितकारी की हार्दिक प्रशंसा के द्वारा अपनी पुरानी कतज्ञहीनता का प्रायश्चित करने का प्रयत्न किया और फिरौन द्वारा की गईं पूछताछ में उसकी जानकारी को सही ठहराया। पूरे राज्य में केवल युसुफ ही राज्य पर मँडराने वाले संकट और उससे निपटने के उपायों का संकेत देने की कियात्मक बुद्धि में प्रतिभा सम्पन्न था। फिरौन को विश्वास हो गया था कि उसके द्वारा प्रस्तावित योजनाओं को क्रियान्वित करने के लिये वही गुण-सम्पन्न था। यह स्पष्ट था कि वह ईश्वरीय शक्ति उसके साथ थी और फिरौन के अधिकारीगण में इस आपदा में राज्य के प्रशासन को संचालित करने के लिये कोई भी इतना योग्य नहीं था। उसके इब्री और दास होने के तथ्य को यदि उसके प्रमाणित विवेक और ठोस न्यायप्रियता के विरूद्ध तोला जाए तो वह तथ्य महत्वहीन था। “क्या हम को ऐसा पुरूष, जैसा यह है जिसमें परमेश्वर का आत्मा रहता है, मिल सकता है?” फिरोन ने अपने कर्मचारियों से कहा। PPHin 216.2

नियुक्ति पर निर्णय हो गया और युसुफ को यह आश्चर्यजनक उद्घोषणा की गई, “परमेश्वर ने जो तुझे इतना ज्ञान दिया है कि तेरे तुल्य कोई समझदार और बुद्धिमान नहीं, इस कारण तू मेरे घर का अधिकारी होगा, और तेरी आज्ञा के अनुसार मेरी सारी प्रजा चलेगी, केवल राजगद्दी के विषय में में तुझ से बड़ा ठहरूंगा ।” फिर फिरौन ने अपने हाथ से अंगूँठी निकालकर युसुफ के हाथ में पहना दी और उसके गले में सोने की चेन डाल दी और उसको बढ़िया मलमल के वस्त्र पहिनवा दिये और उसके अपने दूसरेरथ पर चढ़वाया और लोग उसके आगे यह प्रचार करते चले कि घुटने टेककर दण्डवत करो।” PPHin 216.3

“उसने उसको अपने भवन का प्रबन्ध और अपनी पूरी सम्पत्ति का अधिकारी ठहराया कि वह उसके हाकिमों को अपनी इच्छा के अनुसार कैद करे और पुरनियों को ज्ञान सिखाए” भजन संहिता 105:21,22। कारागार से उठाकर युसुफ को मिस्र देश का अधिपति बनाया गया। यह एक अति सम्मानीय पद था, लेकिन यह कठिनाईयों और खतरों से भरा था। कोई भी ऊंचाई पर बिना खतरे के खड़ा नहीं रह सकता। आंधी तराई के तुच्छ फूलों को नुकसान नहीं पहुँचाती लेकिन पहाड़ों की चोटियों पर विशाल वृक्षों को जड़ से उखाड़ देती है। इसी प्रकार जिन्होंने अपने दीनता भरे जीवन में अपनी निष्ठा को कायम रखा, उन्हें भी सांसारिक सफलता और सम्मान पर आक्रमण करने वाले प्रलोभनों द्वारा गड्ढे में खींचा जा सकता है। लेकिन युसुफ दरिद्रता और सम्पन्नता की परीक्षा में एक समान खरा उतरा। कारागार के कक्ष में और फिरीन की उपस्थिति में खड़े होने के समय भी उसके द्वारा परमेश्वर के प्रति एक समान निष्ठा दिखाई गई। वह अभी एक मूर्तिपूजक देश में परदेशी था, जो परमेश्वर के भक्तों से, अपने परिजनों से बिछड़ गया था, लेकिन उसे पूरा विश्वास था कि परमेश्वर का हाथ उसका मार्गदर्शन करता था, और सर्वदा परमेश्वर पर निर्भर रहकर उसने अपने पद से सम्बन्धित कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन किया। युसुफ के माध्यम से फिरौन और मिस्र के प्रतिष्ठित मनुष्यों का ध्यान सच्चे परमेश्वर की ओर गया, और हालाँकि वे मूर्तिपूजा से जुड़े रहे लेकिन उन्होंने

यहोवा के उपासकों के चरित्र और जीवन में प्रदर्शित सिद्धान्तों का सम्मान करना सीखा। PPHin 217.1

बुद्धिमता, धार्मिकता व चरित्र की दृढ़ता का ऐसा कीर्तिमान स्थापित करने में युसुफ कैसे कामयाब हुआ? अपने प्रारम्भिक वर्षा में उसने प्रवृति से अधिक कर्तव्य पर ध्यान दिया था, और उसकी नौजवानी की निष्ठा, सरल विश्वास व नम्र स्वभाव उसकी प्रौढ़ अवस्था में फलवन्त हुए । एक पवित्र और सादगी भरे जीवन ने विवेक सम्बन्धी व शारीरिक योग्यताओं के सशक्त विकास में योगदान दिया। परमेश्वर के कामों द्वारा उसके साथ संपर्क से और विश्वास के उत्तराधिकारियों को सुपुर्द किये गए सर्वश्रेष्ठ सत्यों के चिंतन ने उसके आध्यात्मिक स्वभाव को उन्नत और उदात्त किया और उसके विवेक को उदार और प्रबल किया जो अन्य कोई शिक्षा नहीं कर सकती थी। प्रत्येक स्थान पर छोटे से बड़े कामों में कर्तव्य-निष्ठा उसकी प्रत्येक योग्यता को उच्चतर सेवा के लिये प्रशिक्षित कर रही थी। जो सृष्टिकर्ता की इच्छा के अनुसार जीवन व्यतीत करता है, उसमें चरित्र का सबसे सच्चा और सबसे उत्कृष्ट विकास होता है। अय्यूब 28:28 में लिखा है, "प्रभु का भय मानना यही बुद्धि है और बुराई से दूर रहना वही समझ है।" PPHin 217.2

बहुत कम है जिन्हें चरित्र के विकास पर जीवन की छोटी-छोटी बातों के प्रभाव का आभास होता है। जिसका सम्बन्ध हम से है छोटा नहीं होता। विभिन्न परिस्थितियाँ जिनका हम दिन-प्रतिदिन सामना करते हैं, हमारी निष्ठा को परखने के लिये और हमें उच्चतम दायित्व के लिये योग्य बनाने के लिये बनाई गई है। सामान्य जीवन के व्यवहार में सिद्धान्तों का पालन करने से हमारा मन प्रवृति और भोग से ऊपर उठकर कर्तव्य पालन करने का अभ्यस्थ हो जाता है। इस प्रकार अनुशासित किया गया विवेक हवा में कंपकृपाती घास की तरह सही और गलतके बीच नहीं झूलता। वे कर्तव्य के प्रति निष्ठावान होते है क्योंकि उन्होंने स्वयं को सत्यवादिता और कर्तव्य परायणता के अभ्यास में प्रशिक्षित किया है। सबसे तुच्छ बातों में ईमानदारी के द्वारा वह महत्वपूर्ण विषयों में ईमानदार होने की शक्ति प्राप्त करते है। PPHin 218.1

एक धर्मी चरित्र का मूल्य ओपीर के कुन्दन से भी अधिक है। इसके अभाव में कोई भी सम्मानीय प्रतिष्ठा नहीं पा सकता। लेकिन चरित्र मीरास में नहीं मिलता। इसे खरीदा नहीं जा सकता। नैतिक विशिष्टता और उत्कृष्ट बौद्धिक आचरण संयोग का परिणाम नहीं है। उत्तम बहुमूल्य योग्यताओं को उन्नत न किया जाए, तो उनका कोई महत्व नहीं। उत्कृष्ट चरित्र की रचना जीवनभर का कार्य है और अथक और निरन्तर प्रयत्न का परिणाम है। परमेश्वर अवसर प्रदान करता हैं, सफलता उसके उपयोग पर निर्भर करती है। PPHin 218.2

अध्याय 21—युसुफ और उसके भाई

यह अध्याय उत्पत्ति 41:54-56, 42—50 पर आधारित है

उपजाऊ वर्षो के प्रारम्भ से ही आने वाले अकाल के लिये तैयारियाँशुरू हो गई। युसुफ के निर्देशन में समूचे मिस्र में सभी मुख्य स्थानों पर विशाल भण्डारगृहों का निर्माण किया गया और प्रत्याशित उपज के अतिरिक्त भाग के सरंक्षण के लिये पर्याप्त व्यवस्था की गई। यही विधिसमृद्धि के सात वर्षों के दोरान कायम रही, जब तक कि भण्डार में बेहिसाब अनाज की मात्रा इकट्ठी न हो गई। PPHin 219.1

अब युसुफ की भविष्यद्वाणी के अनुसार, सात वर्षों के लिये अकाल पड़ने लगा, परन्तु सारे मिस्र देश में अन्न था। जब मिस्र का सारा देश भूखों मरने लगा, तब प्रजा फिरौन से चिलला-चिल्लाकर रोटी माँगने लगी और उसने सब मिस्रियों से कहा, "युसुफ के पास जाओं, और जो कुछ वह तुमसे कहे, वही करो । इसलिये जब अकाल सारी पृथ्वी पर फैल गया, तब युसुफ सब भण्डारों को खोल खोलकर मिस्रियों के हाथों अन्न बेचने लगा। PPHin 219.2

अकाल कनान देश तक भी फैल गया और देश के जिस भाग में याकूब रहता था वहाँ उसका प्रकोप अधिक था। मिस्र के राजा द्वारा अन्त के प्रयोजन के बारे में सुनकर याकूब के दस पुत्र अन्न मोल लेने के लिये वहाँ गए। उनके आगमन पर उन्हें राजा के प्रतिनिधि के पास भेजा गया और वे राज्य के शासक के सम्मुख प्रस्तुत होने को आए और उन्होंने, "भूमि पर मुँह के बल गिरकर उसको दण्डवत किया।" युसुफ ने अपने भाईयों को पहचान लिया, लेकिन उन्होंने उसको नहीं पहचाना। उसका इब्री नाम राजा द्वारा दिए गये नाम से बदल दिया गया था और प्रधान मंत्री और उनके द्वारा इशमाएलियों को बेचे गए किशोर में नहीं के बराबर समानता थी। PPHin 219.3

जब युसुफ ने अपने भाईयों को दण्डवत प्रणाम करते देखा, उसे अपने स्वप्न का स्मरण हुआ और बीते समय के दृश्य स्पष्ट रूप से उसके सामने आ खड़े हुए। दल का पैनी दृष्टि से निरीक्षण करते हुए उसे ज्ञात हुआ कि उनमें बिन्यामीन नहीं था। क्या वह भी उन दुष्ट मनुष्यों कीकपटी निर्दयता का शिकार हो गया था? उसने सच्चाई जानने का निश्चय किया । उसने कठोरतापूर्वक कहा, "तुम भेदिए हो, इस देश की दुर्दशा को देखने के लिये आए हो।" वह जानना चाहता था कि क्या उनमें अभी भी वही अहंकारी भावना थी जो उनमे उसके साथ होने के समय थी और वह उनसे उनके घर के बारे में जानकारी निकालना चाहता था, लेकन वह जानता था कि उनके कथन कितने छल से भरे हो सकते थे। उसने आरोप को दोहराया और उन्होंने उत्तर दिया, "हम तेरे दास बारह भाई हैं, और कनान देशवासी एक ही पुरूष के पुत्र हैं, और छोटा इस समय हमारे पिता के पास है और एक जाता रहा।' PPHin 219.4

उनकी कहानी की सच्चाई पर सन्देह करने का और उन्हें अभी भी भेदिए समझने का ढोंग करते हुए, राज्यपाल ने घोषणा की कि वह उन्हें इस रीति से परखेगा कि जब तक उनमें से एक जाकर अपने छोटे भाई को नहीं लाएगा, तब तक वे मिस्र देश में रहेंगे। यदि वे इस बात से सहमत न होंगे तो उन्हें भेदिए ही माना जाएगा। लेकिन याकूब के पुत्र इस व्यवस्था को स्वीकार नहीं कर सकते थे क्योंकि जो समय इसका पालन में लगता उसमें उनके परिवार खाने के लिये परेशान होते, उनमें से कौन अपने भाईयों को कैदखाने में अकेले यात्रा करने का जोखिम उठाता? इन परिस्थितियों में वह अपने पिता से कैसे मिल सकता था? ऐसा प्रतीत हुआ कि सम्भवतः उन्हें मौत के घाट उतार दिया जाएगा या दास बना दिया जाएगा और यदि बिन्यामीन कोलाया भी जाए तो उसका भी वही हाल होगा । उन्होंने अपने पिता को उसके अकेले बचे हुए पुत्र को भी खो देने के अतिरिक्ति दुख से बचाने के लिये निर्णय किया कि वे एकसाथ वही रहेगें और कष्ट उठाऐंगे ।इस कारण उन्हें कारावास में डाल दिया गया, जहां वे तीन दिनों तक रहे । PPHin 220.1

उन वर्षों के दौरान, जबसे युसुफ अपने भाईयों से अलग हुआ था, याकूब के इन पुत्रों के चरित्र में बदलावआया था। वे द्वेषपूर्ण, उधमी, कपटी, निर्दयी व प्रतिशोधी हुआ करते थेलेकिन अब जब वे विपत्तति द्वारा परखे गयेतो वे निःस्वार्थी, एक-दूसरे के प्रति सच्चे, पितृभक्त और स्वयं अधेड़ उम्र पुरूष अपने पिता के अधीन पाए गये । PPHin 220.2

मिस्री कारावास में तीन दिन अत्यन्त पीड़ाजनक थे जब भाईयों ने अपने पिछले पापों पर विचार किया। जब तक बिन्यामीन को लाया नहीं जाता उनके भेदिए होने की प्रतीति निर्विवाद लग रही थी और यह आशा बिल्कुल नहीं थी कि उनका पिता बिन्यीन की अनुपस्थिति को स्वीकार करेगा। तीसरे दिन युसुफ ने भाईयों को बुलवाया। वहउन्हें और रोक रखने का दुस्साहस न कर सका। उसका पिता और उसके साथ रह रहे परिवार खाने को तरस रहे होंगे। “एक काम करो, तब जीवित रहोगे”, उसने कहा, “क्योंकि मैं परमेश्वर का भय मानता हूँ। यदि तुम सीधे मनुष्य हो, तो तुम सब भाईयों में से एक जनइस बनन्ृदीग्रह में बंधुआ रहे, और तुम अपने घरवालों की भूख मिटाने के लिये अन्न ले जाओ और अपने छोटे भाई को मेरे पास ले आओ, इस प्रकार तुम्हारी बातें सच्ची ठहरेंगी और तुम मार डाले न जाओगे ।” हालाँकि पिता द्वारा बिन्यामीन को उनके साथ ले जाने की अनुमति की कम ही आशा थी, लेकिन फिर भी उन्होंने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। युसुफ ने उनके साथ एक दुभाषिये के माध्यम से संपर्क किया था, और इस बात से अनजान कि राज्यपाल उन्हें समझ सकता था, उसकी उपस्थिति में वे एक-दूसरे के साथ खुलकर बातचीत करते थे। युसुफ के साथ किये गए व्यवहार के सन्दर्भ में उन्होंने स्वयं पर आरोप लगाया, “निःसन्देह हम अपने भाई के विषय में दोषी है, क्योंकि जब उसने हम से गिड़गिड़ाकर विनती की, तब भी हमने यह देखकर कि उसका जीवन कैसे संकट में पड़ा है, उसकी न सुनी, इसी कारण हम भी अब इस संकट में है।” रूबेन, जिसने दोतान में उसे छुड़ाने की योजना तैयार की थी, ने कहा, “क्या मैंनेतुमसे न कहा था कि लड़के के अपराधी मत बनो? परन्तु तुम ने न सुना। देखो, अब उसके लहू का पलटा लिया जाता है।” यह

सुनकर युसुफ अपनी भावनाओं पर नियन्त्रण न रख सका और वह बाहर गया और बहुत रोया। फिर उनके पास लौटकर उसने शिमौन को बन्दी बनाकर बन्दीगृह में डालने की आज्ञा दी। उनके भाई के प्रति निर्दयतापूर्ण व्यवहार में शिमौन बहकाने वाला और मुख्य कर्ता था, और इसी कारण युसुफ द्वारा उसे चुना गया। PPHin 220.3

अपने भाईयों को जाने की अनुमति देने से पहले युसुफ ने आज्ञा दी कि उनके बोरे अन्न से भर दिए जाएँ प्रत्येक के बारे में चुपके से उसके रूपये भी रख दिए जाएँ । पशुओं के लिये चारा भी दिया गया। जब एक ने अपने बोरे को खोला तो उसमें उसका चाँदी के सिक्कों से भरा थेला पाकर वहआश्चर्यचकित हुआ। जब उसने यह तथ्य दूसरों को बताया तो वे चिंतित हुए और उलझन में पड़ गए और एक दूसरे से कहने लगे, “परमेश्वर ने यह हमसे क्या किया”?-क्या वे परमेश्वर की ओर से भलाई का प्रतीक माने, क्या उसने उनके पापों के लिये उन्हें दण्डित करने और उन्हें और अधिक कष्टों में घकेलने के लिये ऐसा होने दिया? उन्होंने स्वीकार किया कि परमेश्वर ने उनके पापों को देख लिया था और अब वह उन्हें दण्डित कर रहा था। PPHin 221.1

याकूब उत्सुकता से अपने पुत्रों के लौटने की प्रतीक्षा कर रहा था और उनके आगमन पर पूरे तम्बूवासियों ने उन्हें घेर लिया और उन्होंने अपने पिता को वह सब बताया जो उनके साथ हुआ था। प्रत्येक हृदय भय और आंशका से भर गया। मिस्री राज्यपाल का आचरण किसी षड़यन्त्र का संकेत दे रहा था और जब उन्होंने अपने बोरे खोले और प्रत्येक के बोरे में स्वामी की धनराशि पाई गई तो उनके भय की पुष्टि हो गई। दुखी होकर वृद्ध पिता ने कहा, “मुझ को तुमने निर्वंश कर दिया, देखो युसुफ नहीं रहा, और शिमौन भी नहीं आया और अब तुम बिन्यामीन को भी ले जाना चाहते हो, ये सब विपत्तियाँ मेरे ऊपर आ पड़ी है।’ रूबेन ने उत्तर दिया, “यदि मैं उसको तेरे पास न लाऊं तो मेरे दोनों पुत्रों को मार डालना, तू उसको मेरे हाथ में सौंप दे, मैं उसे तेरे पास फिर पहुँचा दूँगा।’ जल्दबाजी में कहे इन शब्दों ने याकूब के मन को शान्त नहीं किया। उसने उत्तर दिया, “मेरे पुत्र तुम्हारे साथ नहीं जाएगा, क्योंकि उसका भाई मर गया और वह अब अकेला रह गया है। इसलिये जिस मार्ग से तुम जाओगे, उसमें यदि उस पर कोई विपत्ति आ पड़े, तब तो तुम्हारे कारण मैं इस बुढ़ापे की अवस्था में शोक के साथ अधोलोक में उतर जाऊँंगा।” PPHin 222.1

लेकिन अकाल समाप्त नहीं हुआ और समय के साथ मिस्र से लाया गया अन्न का भण्डार लगभग समाप्त हो गया। याकूब के पुत्र भली-भांति जानते थे कि बिन्यामीन के बिना मिस्र को लौटना व्यर्थ था। उन्हें अपने पिता के संकल्प को बदलने की कम ही आशा थी और चुपचाप उसके उत्तर की प्रतीक्षा करते रहे । अकाल की छाया गहराती गई, डेरे में सबसे व्याकुल मुखाकृतियों में बूढ़े याकूब ने उनकी आवश्यकता को पढ़ लिया और अनन्तः वह बोला, “फिर जाकर हमारे लिये थोड़ी सी भोजनवस्तु मोल ले आओं।” PPHin 222.2

तब यहूदा ने उससे कहा, "उस पुरूष ने हम को चेतावनी देकर कहा, "यदि तुम्हारा भाई तुम्हारे साथ न आए, तो तुम मेरे सम्मुख न आ पाओगे। इसलिये यदि तू हमारे भाई को हमारे साथ भेजे, तब तो हम जाकर तेरे लिये भोजनवस्तु मोल ले आएंगे, परन्तु यदि तू उसको न भेजे, तो हम न जाएँगे क्योंकि उस पुरूष ने हमसे कहा, 'यदि तुम्हारा भाई साथ न हो, तो तुम मेरे सम्मुख न आने पाओगे ।"पिता के संकल्प को डगमगाते देख उसने कहा, "उस लड़के को मेरे साथ भेज दे कि हम चले जाएं, इससे हम और तू और हमारे बाल-बच्चे मरने न पाएँगे, वरन जीवित रहेंगे" और उसने अपने भाई का जामिन होना स्वीकार किया और बिन्यामीन को पिता के पास लोटा कर न लाने की सूरत में स्वयं को सर्वदा के लिये अपराधी मानना स्वीकार किया । PPHin 222.3

याकूब अब अपनी सहमति को और न रोक पाया और उसने अपने पुत्रों को यात्रा की तैयारियाँ करने को कहा। उसने उन्हें यह भी कहा कि अधिकारी के लिये ऐसी उत्तम वस्तुओं की भेंट ले जाए जो वह अकाल-पीड़ित देश दे सकता था जैसे कि "थोड़ा सा बलसान, और थोड़ा सा मधु और कुछ सुगन्ध द्रव्य, और गन्धरस, पिस्ते और बादाम" और दुगनी धन राशि भी ले जाएं। उसने यह भी कहा, "अपने भाई को भी साथ लेकर उस पुरूष के पास फिर जाओ।" जब उसके पुत्र अपनी अनिश्चित यात्रा के लिये निकलने वाले थे, वृद्ध पिता PPHin 223.1

खड़ा हुआ और स्वर्ग की ओर हाथ उठाकर उसने प्रार्थना की, "सर्वशक्तिमान परमेश्वर ईश्वर उस पुरूष को तुम पर दया कराए, जिससे कि वह तुम्हारे दूसरे भाई को और बिन्यामीन को भी आने दे और यदि मै शोकसंतप्त हुआ तो होने दे। PPHin 223.2

वे फिर मिस्र को गए और स्वयं को युसुफ के सम्मुख प्रस्तुत किया। जब उसकी दृष्टि बिन्यामीन पर पड़ी जो उसकी अपनी माँ से पैदा हुआ था, वह भावुक हो उठा। उसने, हालाँकि अपनी भावनाओं को छुपाए रखा, लेकिन आज्ञा दी कि उन्हें उसके घर ले जाया जाए और उसके उनके साथ भोजन करने की तैयारी की जाए। राज्यपाल के महल में पहुँचाए जाने पर सब भाई डर गए कि कहीं उनके बोरी में मिली धनराशि का हिसाब देने तो नहीं बुलाया गया। उन्होंने सोचा कि धनराशि को जान बूझकर वहाँ रखा गया था ताकि उसे उन्हें दास बनाने का मौका मिल सके। इस संकट के समय उन्होंने घर के अधिकारी से परामर्श लिया। यह बताते हुए कि किन परिस्थितियों में उन्होंने मिस्र का दौरा किया था, और अपने निर्दोष होने के प्रमाण के रूप में उन्होंने उसे सूचित किया कि वह बोरी में मिली धनराशि को वापसले आये थे और उन्होंने यह भी कहा, "हम नहीं जानते कि हमारा रूपया हमारे बोरों में किसने रख दिया।" अधिकारी में उत्तर दिया, "तुम्हारा कुशल हो, मत डरो! तुम्हारा परमेश्वर, जो तुम्हारे पिता का भी परमेश्वर है, उसी ने तुम को तुम्हारे बोरों में धन दिया होगा, तुम्हारा रूपया तो मुझे मिल गया था।" वे चिंतामुक्त हो गये, और जब शिमौन कारावास से छटकर उनसे आ मिला तो उन्हें लगा कि परमेश्वर वाकई उनपर मेहरबान है। PPHin 223.3

जब राज्यपाल उनसे दोबारा मिला तो उन्होंने अपनी भेंट उसे दी और, "भूमि पर गिरकर उसको दण्डवत किया।" फिर से उसे उसके स्वप्नों का स्मरण हुआ और अपने अतिथियों का अभिवादन करने के पश्चात उसने उनसे पूछा, "क्या तुम्हारा वह बूढ़ा पिता, जिसकी तुमने चर्चा की थी, कशल से है? क्या वह अब तक जीवित है?" फिर से दण्डवत करते हुए उन्होंने कहा, "हाँ, तेरा दास हमारा पिता कुशल से है और अब तक जीवित है।" फिर उसकी दृष्टि अपने सगे भाई बिन्यामीन पर पड़ी और उसने पूछा, "क्या तुम्हारा यह छोटा भाई, जिसकी चर्चा तुम ने मुझ से की थी यही है?" हे मेरे पुत्र, परमेश्वर तुझ पर अनुग्रह करें। "लेकिन स्नेहशीलता की भावनाओं में बहकर वह और कुछ न कह सका। "वह तुरन्त अपनी कोठरी में गया और वहाँ रो पड़ा।" PPHin 224.1

फिर स्वयं पर नियन्त्रण पाकर वह लौटा और सब भोजन करने बैठे। जाति के नियमों के अनुसार मिस्रियों का अन्य जाति के लोगों के साथ भोजन करना निषिद्ध था।याकूब के पुत्रों के लिये अलग खाना परोसा गया और राज्यपाल ने, अपने ऊंचे पद के अनुसार, अलग से भोजन किया और मिस्रियों को भी अलग से भोजन परोसा गया। जब सब भाई बैठ गए तो उन्होंने विस्मय से देखा कि वे अपनी अपनी आयु के अनुसार उचित कम के अनुसार बैठाए गए थे। युसुफ "अपने सामने से भोजन-वस्तुएँ उठाकरउनके पास भेजने लगा।"'लेकिन बिन्यामीन को अपने भाईयों से पांच गुणा भोजन वस्तु मिली। बिन्यामीन पर विशेष कृपा-दृष्टि दिखाकर युसुफ जानना चाहता था कि कही उसके छोटे भाई को भी ईर्ष्या और घृणा से तो नहीं देखा जाता था जैसे कि उसके साथ होता था। अभी भी यह सोच कि युसुफ उनकी भाषा नहीं समझता था, सभी भाई एक दूसरे से खुलकर बातचीत कर रहे थे, और इस प्रकार उनकी वास्तविक भावनाओं को जानने का उसके पास अच्छा अवसर था। लेकिन फिर भी वह उन्हें और परखना चाहता था, और उनके निकास से पहले उसने आज्ञा दी कि उसका चाँदी का निजी प्याला सबसे छोटे भाई के बोरे में छिपा दिया जाए। PPHin 224.2

प्रसन्नतापूर्वक वे वापसी के लिये निकले। शिमौन और बिन्यामीन उनके साथ थे, उनके जानवर अन्न से लदे हुए थे और सब को लगा कि जो संकट उन्हें घेरे हुए प्रतीत हो रहे थे अब टल गए थे। लेकिन वे अभी नगर की बाहरी सीमा पर ही पहुँचे थे कि राज्यपाल के अधिकारी ने उन्हें आ पकड़ा और सख्ती से पूछताछ की, "तुमने भलाई के बदले बुराई क्यों की है? क्या यह वह वस्तु नहीं जिसमें मेरा स्वामी पीता है, और जिससे वह शकन भी विचारा करता है? तुमने यह जो किया है बुरा किया।" माना जाता था कि वह प्याला उसके अन्दर डाले गए किसी भी विषैली वस्तु का पता लगाने में सक्षम था। उन दिनों विषपान द्वारा हत्या के प्रति सुरक्षा के तौर पर ऐसे प्याले का बहुत महत्व था। PPHin 224.3

अधिकारी द्वारा लगाए गए आरोप का उत्तर देते हुए यात्रियों ने कहा, "हे हमारे प्रभु, तू ऐसी बातें क्यूँ कहता है? ऐसा काम करना तेरे दासों से दूर रहे है। देख, जो रूपया हमारे बोरो के मुहँ पर निकला था, जब हमने उनको कनान देश से ले आकर तुझे लौटा दिया, तब भला, तेरे स्वामी के

घर में से हम कोई चाँदी या सोने की वस्तु कैसे चुरा सकते हैं? तेरे दासो में से जिस किसी के पास सेयह निकले, वह मारा डाला जाए, और हम भी अपने उस प्रभु के दास हो जाएँ। PPHin 225.1

अधिकारी ने कहा, "तुम्हारा ही कहना सही, जिसके पास यह निकले, वह मेरा दास होगा और तुम लोग निरपराध ठहरोगे। PPHin 225.2

ढूंढने का काम तत्काल शुरू किया गया। "वे जल्दी से अपने-अपने बोरे को उतार भूमि पर रखकर उन्हें खोलने लगे" और अधिकारी ने प्रत्येक का निरीक्षण किया, उसने रूबेन से शुरू किया और कमानुसार बड़े के बोरे से लेकर छोटे के बोरे तक खोज की, और कटोरा बिन्यामीन के बोरे में मिला । PPHin 225.3

अत्यन्त दयनीयता के प्रतीक के रूप में उन्होंने अपने वस्त्र फाड़े और धीरे-धीरे नगर को लौट गए। उन्हीं की प्रतीज्ञा के अनुसार बिन्यामीन के लिये दासत्व के जीवन का दण्ड मिला। वे अधिकारी के पीछे-पीछे महल पहुँचे और राज्यपाल को वहां पाकर उसको फिर से दण्डवत किया। उसने उनसे पूछा, "तुम लोगों ने यह कैसा काम किया? क्या तुम न जानते थे कि मुझ सा मनुष्य भविष्यद्वाणी कर सकता है?" युसुफ उनसे उनके द्वारा किए गए पाप को स्वीकार करवाना चाहता था। उसने कभी भी भविष्यद्वाणी करने की योग्यता का दावा नहीं किया था, लेकिन वह उन्हें आश्वस्त कराने को सहमत था कि वह उनके जीवन के रहस्यों को भांप सकता था। PPHin 225.4

यहूदा ने उत्तर दिया, "हम लोग अपने प्रभु से क्या कहे? हम क्या कहकर अपने को निर्दोष ठहराएँ? परमेश्वर ने तेरे दासों के अधर्म को पकड़ लिया है, हम और जिसके पास कटोरा निकला वह भी, हम सब के सब अपने प्रभु के दास ही है।" PPHin 225.5

युसुफ ने उत्तर दिया, "ऐसा करने से परमेश्वर मुझे रोके, लेकिन जिस जन के पास कटोरा निकला है वही मेरा दास होगा,और तुम लोग अपने पिता के पास कुशल चले जाओ ।" PPHin 226.1

तब अत्यन्त खेदित यहूदा ने राज्यपाल के पास जाकर कहा "हे मेरे प्रभु, तेरे दास को अपने प्रभु से एक बात कहने की आज्ञा हो, और तेरा कोप तेरे दास पर न भड़के, क्योंकि तू तो फिरौन के तुल्य है।" संवेदनशील वाकपटुता के शब्दों में उसने युसुफ को खोने के दुख और बिन्यामीन को उनके साथ मिस्र आने देने में संकोच का वर्णन किया, बिन्यामीन इसलिये क्योंकि वह उसकी माँ राहेल का अकेला जीवित बेटा था जिसे याकूब बहुत प्रेम करता था। उसने कहा, "इसलिये जब मैं अपने पिता तेरे दास के पास पहुँचू और यह लड़का साथ न रहे, उसका प्राण जो इसी पर अटका रहता है, यह देखकर कि लड़का नहीं है वह तुरन्त ही मर जाएगा। तब तेरे दासों के कारण तेरा दास हमारा पिता, जो बुढ़ापे की अवस्था में है, शोक के साथ अधोलोक में उतर जाएगा। फिर तेरा दास अपने पिता के यहाँ यह कहकर इस लड़के का जामिन हुआ है, यदि मैं इसको तेरे पास न

पहुँचा दूँ तो मैं सदा के लिये तेरा अपराधी ठहरूंगा। इसलिये अब तेरा दास इस लड़के के बदले अपने प्रभु का दास होकर रहने की आज्ञा पाए और यह लड़का अपने भाईयों के साथ जाने दिया जाए। क्योंकि लड़के के बिना साथ रहे मैं कैसे अपने पिता के पास जा सकँगा, ऐसा न हो कि मेरे पिता पर जो दुख पड़ेगा वह मुझे देखना पड़े।" PPHin 226.2

युसुफ सन्तुष्ट हुआ। उसने अपने भाईयों में सच्चे प्रायश्चित के फल को देख लिया था। यहूदा के नेक प्रस्ताव को सुनकर उसने आज्ञा दी उसके आस-पास के सभी लोग बाहर चले जाए और फिर वह चिल्ला चिल्लाकर रोते हुए बोला, "मैं युसुफ हूँ, क्या मेरा पिता अभी तक जीवित है? PPHin 226.3

उसके भाई निस्तब्ध खड़े रहे, डर और आश्चर्य से निशब्द । उनका भाई युसुफ, जिससे वे ईर्ष्या करते थे और जिसे वेमार देना चाहते थेऔर जिसे उन्होंने आखिर में दास की तरह बेच दिया, मिस्र का शासक। उनका सम्पूर्ण दुर्व्यवहार उनके सामने आ गया। उन्हें स्मरण हुआ कि किस प्रकार उन्होंने उसके स्वप्नों से घृणा की और उनके पूर्ण न होने देने का प्रयत्न किया। लेकिन फिर भी उन स्वप्नों के पूरा होने में उन्हें अपनी भूमिका निभाई थी, और अब जब वे पूर्णतया उसके वश में थे, वह निःसन्देह उसके द्वारा उठाए गए कष्टों का प्रतिशोध लेगा। PPHin 226.4

उनकी उलझन को देखकर वह नम्रतापूर्वक बोला, "मेरे निकट आओ" जब वे यह सुनकर निकट आए तो उसने कहा, "मैं युसुफ हूँ, तुम्हारा भाई" जिसको तुमने मिस्र आने वालों के हाथ बेच डाला था। अब तुम लोग मत पछताओं, और तुम ने जो मुझे यहां बेच डाला, इससे उदास मत हो, क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हारे प्राणों को बचाने के लिये मुझे तुम्हारे आगे भेज दिया है।" यह आभास करते हुए कि उसके प्रति निष्ठुरता के लिये वे पर्याप्त कष्ट उठा चुके थे, उसने सज्जनता से उन्हें भयमुक्त करने उनके आत्म-तिरस्कार की कड़वाहट को कम करने के बारे में सोचा। PPHin 227.1

युसुफ ने कहा, "अब दो वर्ष से इस देश में अकाल है, और अब पाँच वर्ष और ऐसे ही होंगे कि उनमें न तो हल चलेगा और न अन्न काटा जाएगा। इसलिये परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे आगे इसी लिये भेजा कि तुम पृथ्वी पर जीवित रहो, और तुम्हारे प्राणों के बचने से तुम्हारा वंश बढ़े। इस रीति अब मुझे यहाँ पर भेजने वाले तुम नहीं, परमेश्वर ही ठहरा और उसी ने मुझे फिरीन का पिता सा और उसके सारे घर का स्वामी, और सारे मिस्र देश का प्रभु ठहरा दिया है। अतः शीघ्र मेरे पिता के पास जाकर कहो, 'तेरा पुत्र युसुफ यह कहता है कि परमेश्वर ने मुझे सारे ग्रिस का स्वामी ठहराया है, इसलिये तू मेरे पास बिना विलम्ब किये चला आ। तेरा निवास गोशेन देश में होगा, और तू बेटे, पोतों, भेड़-बकरियों, गाय-बैलों, और अपने सब कुछसमेत मेरे निकट रहेगा और अकाल के जो पांच वर्ष और होंगे, उनमें में वही तेरा पालन पोषण करूंगा, ऐसा न हो कि तू और तेरा घराना वरन् जितने तेरे है, वे भूखे मरे। और तुम अपनी आंखो से देखते हो, और मेरा भाई बिन्यामीन भी अपनीं आखों से देखता है कि जो हम से बातें कर रहा है वह युसुफ है।" "तबवह अपने भाई बिन्यामीन के गले से

लिपटकर रोया, और बिन्यामीन भी उसके गले से लिपटकर रोया । यहीनहींवह अपने सभी भाईयों को भी चूमकर रोया, और इसके पश्चात उसके भाई उससे बातें करने लगे। उन्होंने दीनतापूर्वक अपने पापों का अंगीकार किया और उससे क्षमा याचना की। उन्होंने लम्बे समय तक पछतावा और व्याकुलता को सहन किया था और अब उसके जीवित पाए जाने पर उन्होंने आनन्द मनाया। PPHin 227.2

जो घटित हुआ उसका समाचार फिरौन तक शीघ्र ही पहुँच गया जिसने युसुफ को कृतज्ञता प्रकट करने की इच्छा से युसुफ का अपने परिवार को आमन्त्रित करने को स्वीकार किया और वह बोला, “मिस्र देश में जो कुछ अच्छे से अच्छा है वह तुम्हरा हुआ।” भाईयों को, बहुतायत में सामग्री, गाड़ियाँ और प्रत्येक उस वस्तु के साथ जो उनके नौकर-चाकर और परिवारों को मिस्र लाने के लिये आवश्यक थी, कनान भेजा गया। बिन्यामीन को युसुफ ने अपने अन्य भाईयों से अधिक मूल्यवान उपहार दिये। फिर उस डर से कि घर जाते समय उनमें मतभेद न उत्पन्न हो जाए, उसने उनके उसे छोड़ कर जाने से पहले, उन्हें आज्ञा दी, “मार्ग में कही झगड़ा नहीं करना ।’ PPHin 227.3

याकूब के पुत्र शुभ समाचार के साथ अपने पिता के पास पहुँचे, “याकूब अब तक जीवित है और सारे मिस्र देश पर प्रभुता वही करता है।” पर उसने उनकी प्रतीति न की और वृद्ध पुरूष अपने आपे में नहीं रहा, जो उसने सुना उस पर वह विश्वास नहीं कर सका, लेकिन जब उसने गाड़ियों की कतार को और भार से लदे जानवरों को देखा, और देखा कि बिन्यामीनभी एक बार फिर उसके साथ था, उसे विश्वास हो गया और अत्यन्त प्रसन्नता व्यक्त करते हुए वह बोला, “बस, मेरा पुत्र युसुफ अब तक जीवित है, मैं अपनी मृत्यु से पहले जाकर उसे देखूंगा ।” PPHin 228.1

दसों भाईयों के लिये उन्हें दीन कर देने वाला एक और कार्य था। उन्होंने उनकी और उनके पिता के जीवन को इतने वर्षों से कटु बनाने वाली उनकी निर्दयता और छल का अपने पिता के सम्मुख अंगीकार किया ।याकूब ने कभी नहीं सोचा था कि वे इतना घोर पाप भी कर सकते हैं लेकिन उसने देखा कि भले के लिये सब कुछ भुला दिया गया था, और उसने अपने भटके हुए बच्चों को क्षमा कर उन्हें आशीर्वाद दिया। PPHin 228.2

पिता और उसके पुत्र, अपने परिवारों, भेड-बकरियों व गाय-भेंसो, व कई सेवकों सहित जल्द ही मिस्र की ओर चले। हृदय में हर्ष के साथ वे अपनी यात्रा करते रहे और बेशबा पहुँचने पर कुलपिता ने धन्यवाद की भेंट चढ़ाई और प्रभु से विनती की कि वह उनके साथ जाने का आश्वासन दे । जब परमेश्वर ने उसे रात का दर्शन में कहा, “तू मिस्र में जाने सेमत डर, क्योंकि मैं तुझ से वहां एक नई जाति बनाऊंगा। मैं तेरे संग-संग मिस्र को चलता हूँ और मैं तुझे वहां से फिर निश्चय ले आऊँगा। PPHin 228.3

“तू मिस्र में जाने से मत डर, क्योंकि मैं तुझ से वहां एक बड़ी जाति बनाऊंगा ।” यह आश्वासन महत्वपूर्ण था। अब्राहम को नक्षत्रों से असंख्य वंशजो की प्रतीक्षा दी गई थी, लेकिन अभी तक चुने

हुए लोगो में कुछ ही वृद्धि हुई थी। और कनान देश में ऐसी जाति, जिसकी भविष्यद्वाणी की गईं थी, के विकास के लिये कोई संभावना नहीं थी। वह शक्तिशाली मूर्तिपू्जक कबीलों के अधीन था जो चार पीढ़ियों तक उन्हीं का रहना था। यदि इज़राइल के वंशजो को अपनी जनसंख्या में वृद्धि करनी थी तो यह अनिवार्यथा कि या तो वे वहां के निवासियों को खदेड़ दे या उन लोगों के बीच स्वयं को तितर-बितर कर दें। ईश्वरीय प्रबन्ध के अनुसार, पहला विकल्प वे नहीं ले सकते थे और यदि वे कनानियों के साथ मेल-जोल बढ़ाते तो उनको मूर्तिपूजा के लिये बहकाए जाने का खतरा था। फिर भी, मिस्र ने पवित्र योजना के परिपूर्ण होने के लिये आवश्यक परिस्थिति प्रदान की। देश का वह भाग जो जल-सम्पन्न और उपजाऊ था, उनके लिये खुला था, और उनकी शीत्र वृद्धि के लिये अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान कर रहा था। मिस्र के लोग चरवाहों से घृणा करते थे, इस कारण उनके व्यवसाय के कारण उत्पन्न होने वाला बैर-भाव उन्हें एक विशिष्ट और पृथक जाति होने में सहायक हुआ और मिस्र की मूर्तिपूजा में सम्मिलित होने से बाहर रखने में सहायक हुआ। PPHin 228.4

मिस्र पहुँचकर यह समूह सीधे गोशेन देश को गया। तब युसुफ राजसी अनुचरवर्ग के साथ भव्य रथ पर सवार होकर आया। वह अपने चारों और वैभव और अपने पद की मर्यादा दोनों को भूल गया, उसके मन में एक ही विचार था, हृदय को एक ही तृष्णा व्याकुल कर रही थी। यात्रियों को आते देख जिस प्रेम की तृष्णा को इतने वर्षो तक दबा कर रखा गया था, अब नियन्त्रण में न रह सकी । वह अपने रथ से कदा और अपने पिता का स्वागत करने आगे बड़ा। "वह उससे भेंट करके बहुत देर तक उसके गले से लिपटा हुआ रोता रहा।' और इज़राइल ने युसुफ से कहा, "मैं अब मरने से भी प्रसन्न हूँ, क्योंकि तुझे जीवित पाया और तेरा मुहँ देख लिया।" PPHin 229.1

युसुफ अपने भाईयों में से पांच को फिरौन के सम्मुख ले जाने के लिये और उससे अपने भावी घर के लिये भूमि का दान प्राप्त करने गया। फिरौन अपने प्रधान मन्त्री का आभार प्रकट करनेको उन्हें सम्मानजनक पदों पर नियुक्त कर सकता था, लेकिन युसुफ यहोवा की आराधना में सच्चा, अपने भाईयों को एक मूर्तिपूजक दरबार के प्रलोभनों से बचाना चाहता था, इसलिये उसने उन्हें सलाह दी कि फिरौन द्वारा पूछे जाने पर, वे उसे स्पष्ट रूप से अपना व्यवसाय बता दे। याकूब के पुत्रों ने उसका कहना माना और बड़ी सावधानी से यह भी बता दिया कि वे वहां स्थायी निवासी बनने नहीं, बल्कि कुछ समय के लिये निवास करने आये थे और इस तरह उन्होंने अपनी इच्छानुसार वहां से चले जाने के अधिकार को सुरक्षित रखा। फिरौन ने उनके लिये एक घर नियुकक्त किया, जो गोशेन 'राज्य में सबसे उत्तम" था। PPHin 229.2

अपने आगमन के कुछ ही समय पश्चात याकूब अपने पिता को भी फिरौन के सम्मुख लाया। कुलपिता राजसी दरबारों में अपरिचित था, लेकिन प्रकृति के उत्कृष्ट दृश्यों के बीच उसने एक महानतम सम्राट के साथ संगति की थी, और अब साभिप्राय वरिष्ठता में उसने हाथ उठाकर फिरौन को आशीर्वाद दिया। PPHin 230.1

युसुफ को अपने पहले अभिवादन में, याकूब ने ऐसे बात की थी, मानो दुःख और चिन्ता के आनन्दमयी अन्त में वह मरने को तैयार था। लेकिन गोशेन के शान्तिपूर्ण एकान्त स्थान में उसे सतरह वर्ष और मिलने थे। ये वर्ष खुशहाली के सन्दर्भ में पिछले वर्षों के विपरीत थे। उसने अपने पुत्रों में सच्चे प्रायश्चित का प्रमाण देखा था, उसने अपने परिवार को एक महान जाति के विकास के लिये आवश्यक परिस्थितियों से घिरा हुआ देखा, और उसके विश्वास का कनान में उनकी भावी गृहस्थी की असंदिग्ध प्रतिज्ञा का बोध हुआ। वह प्रेम के प्रतीकों से घिरा हुआ था, और अपने बहुत दिनों से बिछड़े हुए पुत्र की संगति में प्रसन्न, वह शान्तिपूर्वक अपनी मृत्यु को प्राप्त हुआ। PPHin 230.2

जब याकूब को लगा कि उसकी मृत्यु का समय निकट है, तो उसने युसुफ को बुलवाया। कनान पर अधिकार से सम्बन्धित परमेश्वर की प्रतिज्ञा को थामे हुए वह बोला, "यदि तेरा अनुग्रह मुझ पर हो, तो मुझे मिस्र में मिट्टी न देना, जब मैं अपने बाप-दादाओं के साथ सो जाऊँगा, तब तू मुझे मिस्र से उठा ले जाकर उन्हीं के कब्रिस्तान में रखना।" युसुफ ने वैसा ही करने का वचन दिया, लेकिन याकूब को सन्तुष्टि न हुई, उसने युसुफ को शपथ लेने को बाध्य किया कि वह उसके उसके बाप दादों के पास मकपेला की गुफा में रखेगा। PPHin 230.3

एक और आवश्यक कार्य ध्यान देने योग्य था, युसुफ के पुत्रों को इज़राइल की संतानों में औपचारिक ढंग से सम्मिलित करना था। पिता के साथ अपने अन्तिम साक्षात्कर के समय, युसुफ अपने साथ एप्रेम और मनरशे को लेकर आया। इन नौजवानों को, उनकी माता के द्वारा, मिस्री पुरोहिताई के सर्वश्रेष्ठ वर्ग से जोड़ा गया, और उनके पिता की प्रतिष्ठा ने उनके लिये गौरव और धन-सम्पत्ति के अवसर प्रदान किये बशर्त वे मिस्रियों के साथ मेल-जोल करने की तत्पर होते। लेकिन युसुफ की इच्छा थी कि वे अपने ही लोगों के साथ एक हों। तुच्छ चरवाहों के कबीलों के बीच स्थान पाने के लिये, जिनके सुर्पुद परमेश्वर की भविष्यद्वाणी की गईं थी, उसने वाचा की प्रतिज्ञा में अपना विश्वास प्रकट किया, व अपने पुत्रों की ओर से मिस्र के दरबार द्वारा प्रस्ताव सम्मानों का परित्याग कर दिया। PPHin 230.4

याकूब ने कहा, "तेरे दोनों पुत्र, एप्रैम और मनश्शे, जो मिस्र में मेरे आने से पहले उत्पन्न हुए हैं, वे मेरे ही ठहरेंगे, अर्थात जिस रीति से रूबेन और शिमौन मेरे हैं, उसी रीति से एप्रेम और मनश्शे भी मेरे ठहरेंगे।" वे उसी की सन्तान के तौर पर गोद लिये जाने थे जो आगे जाकर अलग-अलग कुटुम्बों के मुखिया बने ।इस तरह जन्मसिद्ध अधिकार का एक विशेषाधिकार, जिसे रूबेन ने खो दिया था, युसुफ को मिलना था-इज़राइल में दुगना भाग। PPHin 231.1

याकूब की दृष्टि आयु के साथ धुंधला गई थी, और उसे नौजवानों की उपस्थिति का ध्यान नहीं था, लेकिन अब उनकी आकृति के प्रारूपका अनुमान लगाकर उसने पूछा, "ये कौन है?" बताए जाने पर उसने कहा, "उनको मेरे पास ले आ कि मैं उन्हें आशीर्वाद दूं।" जब वे पास आए तो कुलपिता ने उन्हें चूमकर गले लगा लिया और उनके सिरों पर हाथ रखकर उन्हें आशीर्वाद दिया।

फिर उसने प्रार्थना की, “परमेश्वर जिसके सम्मुख मेरे बापदादे अब्राहम और इसहाक चले, वही परमेश्वर मेरे जन्म से लेकर आज के दिन तक मेरा चरवाहा बना है, वही दूत मुझे सारी बुराई से छुड़ाता आया है, वही अब इन लड़कों को आशीष दे।” अब आत्मा-निर्भरता की कोई भावना नहीं थी और ना ही निपुणता या मानवीय क्षमता पर विश्वास । परमेश्वर उसका सहायक व रक्षक रहा था। बीते समय के बुरे दिनों की कोई शिकायत नहीं थी। बीते समय के संकट व दुख अब उसके (विरूद्ध/ जैसा विषय न थे। उसे केवल उसकी करूणा और प्रेमपूर्ण दयालुता का स्मरण था, जो सम्पूर्ण तीथयात्रा में उसके साथ था। PPHin 231.2

आशीर्वाद देने के बाद याकूब ने अपने पुत्र को आश्वासन दिया और दुख और दासत्व की लम्बी अवधि के दौरान आने वाली पीढ़ियों के लिये विश्वास की यह गवाही छोड़ी, “देख, में तो मरने पर हूँ, परन्तु परमेश्वर तुम लोगों के साथ रहेगा, और तुम को तुम्हारे पितरों के देश में फिर पहुँचा देगा।’ PPHin 231.3

अन्त में याकूब के सब पुत्र उसकी मृत्यु शैय्या के चारों ओर इकटठे हुए। याकूब ने उन्हें बुलाकर कहा, “इकटठेहो जाओ, हे याकूब के पुत्रों, इकट्ठे होकर सुनो, अपने पिता इज़राइल की ओर कान लगाओ” “मैं तुमको बताऊंगा कि अन्त के दिनों में तुम पर क्या बीतेगा।” प्रायः और उत्सुकता से उसने उनके भविष्य के बारे में सोचा था और अलग-अलग कूटुम्बों के इतिहास का चित्रांकन करने का प्रयत्न किया था। अब जब उसके बच्चे उसके आखिरी आशीर्वाद को प्राप्त करने की प्रतीक्षा कर रहे थे, प्रेरणा का आत्मा उस पर आया और उसके सामने भविष्यद्वक्ता दर्शन में उसके वंशजों का भविष्य खोला गया। एक के बाद एक उसके पुत्रों के नाम बताए गए, प्रत्येक के चरित्र का वर्णन किया गया और कुटुम्बों के भावी इतिहास की संक्षेप में भविष्यद्वाणी की गई । PPHin 231.4

“हे रूबेन, तू मेरा जेठा, मेरा बल और मेरे पौरूष का पहला का फल है: प्रतिष्ठा का उत्तम भाग और शक्ति का भी उत्तम भाग तू ही हैं। PPHin 232.1

इत तरह पिता ने चित्रांकित किया कि पहलौठा पुत्र होने के नाते रूबेन का स्थान क्या होता, लेकिन एडार में उसके घोर अपराध ने उसे जन्मसिद्ध अधिकार के आशीर्वाद के लिये अयोग्य ठहराया। याकूब कहता गया- PPHin 232.2

“तू तो जल के समान उबलने वाला है, इसलिये दूसरों से श्रेष्ठ न ठहरेगा।” PPHin 232.3

पुरोहित लेवी के हिस्से मे आई, राज्य और मुक्तिदाता सम्बन्धित प्रतिज्ञा यहूदा के भाग में और मीरास का दो गुना हिस्सा युसुफ को मिला। रूबेन का कुटुम्ब इज़राइल में प्रतिष्ठित न हुआ, वह यहूदा, युसुफ और डान के जितना बहुसंख्य नहीं था और दासत्व के पात्र बनने में प्रथम था ।आयु

में रूबेन के बाद शिमौन और लेवी थे। शेकेम के वासियों के प्रति निर्दयता में वे साथी थे और युसुफ का सौदा करने में सबसे अधिक आरोपित थे। उनके सम्बन्ध में घोषणा की गई- PPHin 232.4

“मैं उन्हें याकूब में अलग-अलग और इज़राइल में तितर-बितर कर दूँगा।’ PPHin 232.5

कनान में प्रवेश के ठीक पहले, इज़राइल की जन गणना के समय शिमौन का सबसे छोटा कुटुंब था। मूसा ने, अपने अन्तिम आशीर्वाद में शिमौन का उल्लेख नहीं किया। कनान के निर्धारण में इस कट्म्ब के पास यहूदा के भू-भाग का छोटा सा हिस्सा था और जो परिवार बाद मे शक्तिशाली बने उन्होंने अलग-अलग बस्तियाँ बनाई और पवित्र देश की सीमा के बाहरी क्षेत्र में बस गये। लैवी को भी राज्य के अलग-अलग भागों मे तितर-बितर अड़तालीस नगरों को छोड़ और कोई धरोहर नहीं मिली। लेकिन, दूसरे कृट्म्बों द्वारा स्वधर्म-त्याग के समय, लैवियों की यहोवा के प्रति निष्ठा ने उन्हें हैकल के पवित्र विधि के लिये नियुक्त करवाया और इस तरह प्रकोप आशीर्वाद में बदल गया। PPHin 232.6

जन्मसिद्ध अधिकार की सर्वश्रेष्ठ आशीष यहूदा को दे दी गई। उस नाम का महत्व- जिसका अभिप्राय प्रशंसा है, इस जाति के भविष्यसूचक इतिहास में ज्ञात होता है — PPHin 233.1

हे यहूदा, तेरे भाई तेरा धन्यवाद करेंगे

तेरा हाथ तेरे शत्रुओं की गरदन पर पड़ेगा

तेरे पिता के पुत्र तुझे दण्डवत करेंगे।

यहूदा सिंह का बच्चा है।

हे मेरे पुत्र, तू अहेर करके गुफा में गया है

वह सिंह अथवा सिंहनी के समान दबकर बैठ गया

फिर कोन उसको छेड़ेगा। जब तक शीलो न आए

यहूदा से राजदण्ड न छूटेगा, न उसके वंश से

व्यवस्था देने वाला अलग होगा, और राज्य-राज्य

के लोग उसके अधीन हो जाएंगे। PPHin 233.2

जंगल का राजा, सिंह, इस कट्म्ब का उचित प्रतीक है, जिसमें से दाऊद आया, और दाऊद का पुत्र, शीलो, यहूदा के कुटुंब का सिंह था जिसके आगे सभी राज्य दण्डवत करेंगे और सब जातियाँ श्रद्धांजालि अर्पित करेंगी। PPHin 233.3

अपने अधिकतर बच्चों के लिये याकूब ने एक समृद्ध भविष्य की भविष्यद्वाणी की। आखिरकर युसुफ के नाम पर आकर पिता का हृदय उमड़ पड़ा जब उसने, युसुफ के सिर पर, जो अपने भाईयों से अलग किया गया था' आशीर्वाद दिया — PPHin 233.4

युसुफ फलवन्त लता की एक शाखा है,

वह सोते के पास लगी हुई फलवन्त लता की शाखा है, उसकी डालियाँ भीत पर से चढ़कर फैल जाती है।

धनुर्धारियों ने उसको खेदित किया,

और उस पर तीर मारे,

और उसके पीछे पड़े हैं,

पर उसका धनुष दृढ़ रहा,

और उसकी बाँह और हाथ याकूब के

उसी शक्तिमान परमेश्वर के हाथों के द्वारा फूर्तीले हुए,

जिसके पास से वह चरवाहा आएगा,

जो इज़राइल की चटटान भी ठहरेगा

यह तेरे पिता के उस ईश्वर का काम है,

जो तेरी सहायता करेगा,

उस सर्वशक्तिमान का जो मुझे

ऊपर से आकाश में की आशीषें,

और स्तनों और गर्भ की आशीषें देगा।

तेरे पिता के आशीर्वाद,

मेरे पितरों के आशीर्वादों से अधिक बढ़ गए है,

और सनातन पहाड़ियों की मनचाही वस्तुओं

के समान बने रहेंगे, वे युसुफ के सिर पर,

जो अपने भाईयों से अलग किया गया था,

उसी के सिर के मुकूट पर फले पलेंगे। PPHin 233.5

याकूब सर्वदा से ही प्रेम रखने वाला पुरूष था, उसका अपने पुत्रों के लिये प्रेम गहरा व विनम्र था और उसके मरने के समय की साक्षी एकपक्षीयता या अप्रसन्नता की अभिव्यक्ति नहीं थी। उसने सबको क्षमा कर दियाथा, और अन्त तक सबसे प्रेम करता रहा। उसकी पैतृक विनम्रता को आशा और प्रोत्साहन के ही शब्दों में अभिव्यक्ति मिलती। लेकिन परमेश्वर का आत्मा उस पर उतरा, और प्रेरणा के प्रभाव में वह सच्चाई बताने क लिये विवश हो गया। हालाँकि सच्चाई बहुत कष्टदायक थी। PPHin 234.1

अन्तिम आशीर्वाद देने के पश्चात्, याकूब ने अपने गाड़े जाने के सम्बन्ध में आज्ञा को दोहराया, "मैं अपने लोगों के साथ मिलने पर हूँ. इसलिये मुझे मेरे बापदादाओं के साथ मिट्टी देना..........उसी गुफा में जो मकपेला की भूमि में है।" "वहाँ अब्राहम और उसकी पत्नी सारा को मिट्टी दी गई, और वही इसहाक और उसकी पत्नी रिबका को भी मिट्टी दी गई, और वही मैने लिआ को भी मिट्टी दी।" इस प्रकार उसके जीवन का अन्तिम कार्य परमेश्वर की प्रतिज्ञा में विश्वास को प्रकट करना था। PPHin 235.1

याकूब के अन्तिम वर्ष एक दु:खित और थकाने वाले दिन के बाद शान्ति और विश्राम की संध्या लेकर आए। उसके मार्ग में अन्धेरा करने वाले बादल एकत्रित हुए, लेकिन उसके सूर्यास्त का आकाश साफ था और स्वर्ग के प्रकाश ने उसकी अन्तिम घड़ियों को प्रकाशमान किया। पवित्र-शास्त्र कहता है, "सांझ के समय उजियाला होगा ।/"-जकर्याह 14:7 "खरे मनुष्य पर दृष्टि कर और धर्मी को देख, क्योंकि मेल से रहने वाले पुरूष का अन्तफल अच्छा है।" - भजन संहिता 37:37। PPHin 235.2

याकूब ने पाप किया था, और घोर कष्ट उठाया। उस दिन से, जब उसके पाप ने उसे उसके पिता के तम्बू से भागने पर विवश कर दिया, याकूब ने दुख, चिन्ता और कठोर परिश्रम के कई वर्ष बिताए थे। एक निराश्रय पलायक अपनी मां से बिछड़ कर, जिसे उसने फिर न देखा, सात वर्षो तक उसके लिये परिश्रम करते हुए जिससे वह बहुत प्रेम करता था, केवल छले जाने के लिये, बीस वर्षों तक एक कपटी और लालची परिजन की सेवा में कठोर परिश्रम करते हुए, अपनी धन-सम्पत्ति में वृद्धि देखते हुए अपने पुत्रों को बड़ा होता देखते हुए, लेकिन विभाजित और कलहपूर्ण घराने में आनन्द के अभाव में, अपनी पुत्री के साथ हुए कुकर्म से दुःखी, उसके भाईयों द्वारा प्रतिशोध से दुखी, राहेल की मृत्यु से दुखी, रूबेन के अस्वाभाविक अपराध से दुखी, यहूदा के पाप से दुखी, युसफ के प्रति उसके पुत्रों के निर्दयी धोखे और ईर्ष्या से दुखी- बुराईयों की यह सूची जो हमारे सामने फैली है कितनी विस्तृत और अन्धकारमय है! बार-बार उसने अपने पहले गलत काम के फल की फसल काटी थी। बार-बार उसने अपने पुत्रों को वही गलतियाँ दोहराते हुए देखा जिनके लिये वह स्वयं दोषी था। लेकिन अनुशासन भले ही कठोर रहा हो, उसमें अपना काम सम्पन्न कर दिया था। ताड़ना,

भले ही कठोर थी, लेकिन उससे 'शान्ति के साथ धर्म का प्रतिफल मिला। (इब्रानियों 12:11) PPHin 235.3

'प्रेरणा' भले मनुष्यों की गलतियों का स्पष्टता से उल्लेख करती है, उनका जो परमेश्वर की कृपा-दृष्टि के द्वारा विशिष्ट थे, यथार्थ में उनकी त्रुटियाँ उनके सदगुणों से अधिक सम्पूर्णता से प्रस्तुत की गई है। यह कई लोगों के लिये आश्चर्य का विषय है, और इसने नास्तिकों को बाईबल का तिरस्कार करने का अवसर दिया है। लेकिन यह पवित्र शास्त्र में सच्चाई का सबसे ठोस प्रमाण है कि तथ्यों को छिपाया नहीं गया है और न ही उसके मुख्य पात्रों के पापों को दबाया गया है। मनुष्य का मन इतना पक्षपाती है कि मानवीय इतिहास का पूरी तरह से निर्षेक्ष होना सम्भव नहीं है। यदि बाईबल प्रेरणा रहित मनुष्यों द्वारा लिखी गईं होती तो निःसन्देह विशिष्ट मनुष्यों के चरित्र को प्रशंसापूर्ण प्रकाश में प्रस्तुत किया जाता। लेकिन जैसा यथार्थ में है, हमें उनके अनुभवों का सही उल्लेख मिलता है। PPHin 236.1

वे मनुष्य, जिन पर परमेश्वर की कृपा-दृष्टि थी और जिनको उसने महान दायित्व सौंपा था, कभी कभी प्रलोभन में पड़कर पाप कर बैठते थे, जैसे कि आज भी हम प्रयत्न करते है, डगमगाते है और बहुत बार गलती कर बैठते है। उनके जीवन, उनकी त्रुटियों औरऔर मूर्खताओं के माध्यम से हमें चेतावनी देने और प्रोत्साहित करने के लिये हमारे सामने है। यदि उन्हें त्रुटिहीन प्रस्तुत किया जाता तो हम अपने पापमय स्वभाव के आधार पर, अपनी गलतियों और विफलताओं को लेकर हताश हो जाते। लेकिन यह देखते हुए कि अन्य लोगों ने भी हमारी तरह निराशा की स्थिति में संघर्ष किया, जहाँ वे भी हमारी तरह प्रलोभन में पड़े, लेकिन फिर भी साहस करके परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा पराक्रमी हुए तो हम धार्मिकता प्राप्त करने के लिये प्रोत्साहित होते हैं। जैसे वे यद्यपि कभी-कभी पछाड़े जाते थे, लेकिन फिर से अपना स्थान पा लेते थे और परमेश्वर द्वारा धन्य ठहराए जाते थे, इसी प्रकार हम भी यीशु की शक्ति में विजयी हो सकते हैं। दूसरी ओर उनके जीवन का उल्लेख हमारे लिये चेतावनी का काम कर सकता है। वह बताता है कि परमेश्वर अपराधी को किसी भी तरह निर्दोष नहीं ठहराएगा। जिन पर उसकी अधिक कृपा-दृष्टि है, उन प्रियों के भी पापों को वह देखता है, और उनके साथ इस सन्दर्भ में, कम प्रकाश और दायित्व वाले लोगों से अधिक सख्ती से व्यवहार करता है। PPHin 236.2

याकूब को मिट्टी देने के पश्चात युसुफ के भाईयों के हृदय फिर डर से भर गए। उनके प्रति उसकी दयालुता के बावजूद, सचेतन अपराधबोध ने उन्हें संकोची और अविश्वसनीय बना दिया हो सकताहैे कि उसने प्रतिशोध में केवल विलम्ब किया हो, पिता के सम्मान की खातिर और अब वह उन्हें उनके अपराध का दण्ड होगा। उन्होंने व्यक्तिगत तौर पर उसके सम्मुख आने का दुस्साहस तो नहीं किया, लेकिन एक सन्देश भेजा, "तेरे पिता ने मरने से पहले हमें यह आज्ञा दी थी, तुम लोग युसुफ से इस प्रकार कहना कि हम विनती करते हैं कि तू कि तू अपने भाईयों के अपराध और पाप

का क्षमा कर, हम ने तुझ से बुराई की थी, पर अब अपने पिता के परमेश्वर के दासों का अपराध क्षमा कर।" इस सन्देश से प्रभावित होकर युसुफ रो पड़ा, और इससे प्रोत्साहित होकर उसके भाई आकर उसके सामने गिर पड़े और बोले, "देख हम तेरे दास है।" अपने भाईयों के लिये युसुफ का प्रेम गहरा व निःस्वार्थ था, और इस विचार से उसे दुख हुआ कि उसे प्रतिशोध की भावनाओं को संजोए रखने वाला मान रहे थे। उसने कहा, "मत डरो, क्या में परमेश्वर की जगह पर हूँ? यद्यपि तुम लोगों ने मेरे लिये बुराई का विचार किया था, परन्तु परमेश्वर ने उसी बात में भलाई का विचार किया, जिससे वह ऐसा करे, जैसा आज के दिन प्रकट है कि बहुत से लोगों के प्राण बचे है।" इसलिये अब मत डरो, में तुम्हारा और तुम्हारे बाल-बच्चों का पालन-पोषण करता रहूँगा।' PPHin 237.1

युसुफ का जीवन मसीह के जीवन का उदाहरण है। वह ईर्ष्या ही थी जिसने युसुफ के भाईयों को उसे बेच डालने के लिये उकसाया, वे उसे स्वयं से अधिक महान बनने से रोकना चाहते थे। और जब उसे मिस्र ले जाया गया वे इस बात से आनन्दित हुए कि युसुफ के स्वप्न उन्हें और परेशान नहीं करेंगे, क्योंकि उनके पूरे होने की प्रत्येक सम्भावना को उन्होंने समाप्त कर दिया था। लेकिन उनकी युक्ति को परमेश्वर ने नाकाम कर दिया ताकि वह उस घटना को घटित कर सकेजिसे उन्ोंनें बाधित करने का षड़यन्त्र रचा। इसी प्रकार यहूदी धर्मगुरू और पुरनिये (एल्डर) मसीह से डाह करते थे, इस डर से कि वह लोगों का ध्यान उन पर से हटाकर स्वयं की ओर आकर्षित करेगा। उन्होंने उसे राजा बनने से रोकने के लिये मृत्यु के घाट उतार दिया, लेकिन वही हुआ जो होना था। PPHin 237.2

युसुफ, मिस्र में अपने दासत्व के माध्यम से, अपने पिता परिवार के लिये मसीहा बना, लेकिन फिर भी इस तथ्य ने उसके भाईयों का अपराध कम नहीं हुआ। इसी प्रकार मसीह के शत्रुओं द्वारा उसे कूस पर चढ़ा देने से वह मनुष्यजाति का मुक्तिदाता बना, पतित जाति का उद्धारकर्ता, व समस्त जगत का राजा, लेकिन उसके हत्यारों का अपराध उतना ही घिनौना था मानो मनुष्य की भलाई और अपनी स्वयं की महिमा के लिये परमेश्वर के शुभ हाथों ने घटनाओं पर नियन्त्रण ना रखा हो। PPHin 238.1

जैसे युसुफ को उसी के भाईयों द्वारा अधर्मियों को बेच दिया गया, इसी प्रकार मसीह को उसी के एक शिष्य द्वारा उसके द्वेषपूर्ण शत्रुओं को बेच दिया गया। युसुफ को उसके सदगुण के कारण, झूठे आरोप के कारण कारावास में डाल दिया गया, इसी प्रकार मसीह को तिरस्कत व अस्वीकत किया गया, क्योंकि उसका धार्मिकता व आत्म-त्याग का जीवन पाप के लिये ताड़ना था, और निर्दोष होते हुए भी उसे झूठी साक्षी के कथन के आधार पर दण्डित किया गया। और अन्याय और अत्याचार की परिस्थिति में युसुफ का धैर्य और दीनता, उसकी तत्पर क्षमाशीलता, अपने सौतेले भाईयों के प्रति उसकी शिष्टतापूर्ण उदारता, दुष्ट मनुष्यों के दुराचार और द्वेष के प्रति उद्धारकर्ता की तत्पर

सहनशीलता को और ना केवल उसके हत्यारों के प्रति, वरन् प्रायश्चित करते हुए उन सभी क्षमाप्रार्थियों के प्रति जो उसके पास आते है, उसकी क्षमाशीलता को दर्शाता है। PPHin 238.2

युसुफ अपने पिता से चौपन वर्ष अधिक जीवित रहा। “और युसुफ एप्रेम के परपोतों तक को देखने पाया, और मनश्शे के पोते, जो माकीर के पुत्र थे, वे उत्पन्न हुए और युसुफ ने उन्हें गोद में लिया ।” उसने अपने लोगों की वृद्धि और समृद्धि को देखा और सभी वर्षों के दौरान प्रतिज्ञा के देश में इज़राइल के परमेश्वर द्वारा पुनःस्थापना में उस विश्वास अटल रहा। PPHin 238.3

जब उसने देखा कि उसका अन्त निकट था, उसने अपने परिजनों को अपने पास बुलाया। फिरौन के देश में वह सम्मान प्राप्त था, पर मिस्र उसके लिये उसके प्रवास का स्थान था; उसका अन्तिम कृत्य था यह प्रकट करना कि उसका स्थान-विशेष इज़राइल के साथ था। उसके अन्तिम शब्द थे, “परमेश्वर निश्चय तुम्हारी सुधि लेगा, और तुम्हें इस देश से निकालकर उस देश में पहुँचा देगा, जिसके देने की उसने अब्राहम, इसहाक और याकूब से शपथ खाई थी।” और उसने इज़राइलियों से शपथ ली कि वे उसकी हडिडयों को वहां से अपने साथ कनान देश को ले जाएँगे। “इस प्रकार युसुफ एक सौ दस वर्ष का होकर मर गया, और उसके शव में सुगन्धद्रव भरे गए, और वह शव मिस्र में एक सन्दूक में रखा गया।” इसके बाद की परिश्रम से भरी सदियों के दौरान, युसुफ के मृत्युपूर्व शब्दों के स्मरण पत्र, उसका ताबूत (शवघार), इज़राइल को यह विश्वास दिलाता रहा कि मिस्र में वे केवल अस्थायी निवासी है, और उन्हें प्रतिज्ञा के देश पर अपनी आशाएं केन्द्रित करने की आज्ञा देता रहा, क्योंकि छुटकारे का समय के आना निश्चित था।

अध्याय 22—मूसा

यह अध्याय निर्गमन 1-4 पर आधारित है

मिस्रवासियों ने, अकाल के दौरान स्वयं के लिये खाद्य-सामग्री जुटाने के लिये, अपनी भूमि और मवेशियों को राजा को बेच दिया था और अपने आप को अन्ततः: चिरस्थायी कषि-दासत्व के लिये विवश कर दिया था। युसुफ ने समझदारी से उनके निवारण हेतु प्रबन्ध किया; उसने उन्हें राजसी, पट्टेदार बनने की अनुमति दे दी। वे फिरौन की भूमि के स्वामी तो थे, लेकिन अपने श्रम की उपज का पाँचवा हिस्सा वार्षिक शुल्क के तौर पर देते थे। PPHin 240.1

लेकिन याकूब के पुत्र ऐसे प्रतिबन्धों की आवश्यकता के अधीन नहीं थे। मिस्र देश को युसुफ द्वारा दी गईं सेवा के आधार पर, उन्हें ना केवल राज्य का कुछ भाग निवास स्थान के रूप में प्रदान किया गया, वरन उन्हें कर देने से भी छूट दी गई और अकाल के दौरान उन्हें उदारतापूर्वक भोजनवस्तु मुहैया की गईं। फिरौन ने सार्वजनिक तौर पर स्वीकार किया कि युसुफ के परमेश्वर के करूणापूर्ण हस्तक्षेप के कारण मिस्र ने बहुतायत का आनन्द उठाया जबकि अन्य राज्य अकाल से नष्ट हुए जा रहे थे। उसने यह भी देखा कि युसुफ के शासन प्रबन्ध ने राज्य को अत्यन्त समृद्ध किया था और इस कारण याकूब के परिवार पर राजसी कृपा-दृष्टि बनी रही। PPHin 240.2

लेकिन समय बीतने पर, जिस महान व्यक्ति का मिस्र ऋणी था, ओर जिसके श्रम से वह पीढ़ी धन्य हुईं, वह मृत्यु को प्राप्त हो गया। और "मिस्र में एक नया राजा गद्दी पर बैठा जो युसुफ को नहीं जानता था।" ऐसा नहीं था कि वह राज्य के प्रति युसुफ की सेवाओं से अनभिज्ञ था लेकिन वह उन्हें मान्यता नहीं देना था और जहां तक सम्भव था उन्हें बिल्कुल भुला देना चाहता था। उसने अपनी प्रजा से कहा, "देखो, इज़राइली हमसेगिनती और सामर्थ्य में अधिक बढ़ गए हैं। इसलिये आओ हम उनके साथ बुद्धिमानी से बर्ताव करें, कहीं ऐसा न हो कि जब ये बहुत बढ़ जाएं और यदि संग्राम का समय आ पड़े, तो हमारे बैरियों से मिल कर हम से लड़े और इस देश से निकल जाएं।" PPHin 240.3

इज़राइलियों की संख्या बहुत बढ़ गई थी, वे 'फूलने-फलने लगे, और वे लोग अत्यन्त सामर्थी बनते चले गए, और इतना अधिक बढ़ गए कि सारा देश उनसे भर गया।" याकूब के पालन-पोषण द्वारा उस समय के फिरौन की कृपा-दृष्टि से वे बढ़ते और फैलते चले गए। लेकिन उन्होंने स्वयं को एक विशिष्ट जाति के रूप में रखा था और धर्म और रीति-रिवाजों में मिस्र के लोगों के साथ समन्वय नहीं बढ़ाया था। उनकी बढ़ती जनसंख्या ने अब फिरौन और उसके लोगों में भय उत्पन्न कर दिया कि युद्ध के समय वे मिस्र के शत्रुओं के साथ न मिल जाएं। लेकिन विधि अनुसार उन्हें देश निकाला नहीं दिया सकता था। उनमें से कई योग्य व समझदार कारीगार थे जिन्होंने राज्य की निधि को बढ़ाने

में योगदान दिया था, फिरीन को अपने वैभवशाली महलों व मन्दिरों के निर्माण के लिये ऐसे श्रमिकों की आवश्यकता थी। इस के अनुसार उसने इज़राइलियों को उसी वर्ग में रख दिया जो उन मिस्रियों का था जिन्होंने स्वयं को अपनी धन-सम्पत्ति सहित, राज्य के हाथों बेच दिया था। उन पर बेगारी कराने वाले को नियुक्त कर दिया गया और इस प्रकार वे पूर्ण रूप से दासत्व में बँध गए। "और मिस्रियों ने इज़राइलियों से कठोरता के साथ सेवा करवाई और उनके जीवन को गारे, ईंट और खेती के भांति-भांति के काम की कठिन सेवा से दुखी कर डाला, जिस किसी काम में वे उनसे सेवा करवाते थे, उसमें वे कठोरता का व्यवहार करते थे।" "लेकिन ज्यो-ज्यों वे उनको दुख देते गए, त्यौं-त्यौं वे बढ़ते और फैलते चले गए। PPHin 240.4

फिरोन और उसके परामर्शदाताओं ने कठोर परिश्रम करवाकर इज़राइलियों का दमन करके उनकी संख्याकों घटाने और उनके स्वतन्त्र स्वभाव को कुचल डालने की आशा की थी। अपने उद्देश्य की आपूर्ति में असफल होने पर उन्होंने और भी निर्मम युक्तियाँ अपनाई। उन महिलाओं को आदेश दिए गए जिनकी नियुक्ति उन्हें नवजात इब्री बालकों को नष्ट कर देने की आज्ञा का पालन करने का अवसर प्रदान करती थी। इस विषय में पहल करने वाला शैतान था। उसे ज्ञात था कि इज़राईलियों में से एक मुक्तिदाता आने को था, और फिरौन के माध्यम से बालको को नष्ट करवाकर वह ईश्वरीय प्रयोजन को नष्ट कर देना चाहता था। लेकिन महिलाएँ परमेश्वर का भय रखने वाली थीं, और उन्होंने उस निर्दयी जनादेश का पालन करने आ दुस्साहस नहीं किया। परमेश्वर ने उनके उपाय को स्वीकार किया और उन्हें समृद्ध किया। अपनी युक्ति की असफलता से कोधित, फिरौन ने आदेश को और भी आग्रहपूर्ण और व्यापक बना दिया। पूरे राज्य को अधिकार दे दिया गया कि उसके असहारा अहेरों को ढूँढ कर मार दिया जाए। "तब फिरौन ने अपनी सारी प्रजा के लोगों को आज्ञा दी" इब्रियों के जितने बेटे उत्पन्न हो उन सभों को तुम नील नदी में डाल देना और सब बेटियों को जीवित रहने देना। PPHin 241.1

जब यह राजाज्ञा पूरे जोर पर थी, लैवी के घराने के धर्मपरायण इज़राइलियों, अम्राम और योकेबेद से एक बेटा उत्पन्न हुआ। यह बालक 'एक सुन्दर था। यह विश्वास रखते हुए कि इज़राइल के मुक्त होने का समय निकट आ रहा था और यह कि परमेश्वर अपने लोगों के लिये एक मुक्तिदाता को खड़ा करेगा, उसके मां-बाप ने निश्चय किया कि वे अपने बालक की बलि नहीं चढ़ने देंगे। परमेश्वर में विश्वास ने एनके हृदयों को स्थिर किया, "और वे राजा की आज्ञा से भयभीत न हुए"।-इब्रानियों 11:23 । PPHin 242.1

तीन मास तक माँ बच्चे को छिपाए रखने में सफल रही । जब उसे लगने लगा कि वह उसे और दिनों तक सुरक्षित नहीं रख सकती थी,तब सरंकडो की एक टोकरी लेकर, उसे चिकनी मिट्टी और तारकोल से जलरोधक बनाकर, उसने बालक को उसमें रखकर और नील नदी के किनारे काँसो के बीच छोड़ आईं । अपने बच्चे व अपने प्राण गँवा देने के डर से वह वहाँ खड़े रहकर उसकी

रक्षा कर दुस्साहइस न कर सकी, लेकिन बालक की बहन, मिरियम, वही रूकी रही, बेपरवाह, लेकिन उत्सुकता से यह देखते हुए कि उसके भाई का क्या हाल होगा। देखने वाले और भी थे। माँ की विश्वास भरी प्रार्थनाओं ने बालक को परमेश्वर की सुरक्षा के सुपुर्द कर दिया था, और अदृश्य स्वर्गदूत उसके साधारण विश्राम स्थान के ऊपर मण्डरा रहे थे। स्वर्गदूत ने वहाँ फिरौन की पुत्री को भेजा। छोटी सी टोकरी ने उसकी उत्सुकता को जागृत किया और जब उसने उसके अन्दर उस सुन्दर बालक को देखा तो एक ही झलक में उसने कहानी को पढ़ लिया। बच्चों के आँसुंओं ने उसकी करूणा को जागृत किया और उस माँ पर बहुत तरस आया जिसने अपने अनमोल नवजात शिशु के प्राणों की सुरक्षा के लिये यह तरीका अपनाया था। उसने शिशु को अपनी ही संतान के रूप में अपनाकर बचाने का निश्चय किया। PPHin 242.2

मिरियम छिपकर प्रत्येक गतिविधि को देख रही थी, यह देखकर कि बालक पर नम्रतापूर्वक विचार किया जा रहा था, वह पास जाकर बोली, "क्या मैं जाकर इब्री स्त्रियों में से किसी धाई को तेरे पास बुला ले आऊं, जो तेरे लिये बालक को दूध पिलाया करें?" और उसे अनुमति दे दी गई। PPHin 242.3

बहन जल्दी से यह शुभ समाचार लेकर माँ के पास गईं और, अविलम्ब, फिरोन की बेटी के उपस्थिति में, उसके साथ लौटी। फिरोन की बेटी ने उससे कहा, "तू इस बालक को ले जाकर मेरे लिये दूध पिलाया कर, और में तुझे मजदूरी दूँगी।" PPHin 243.1

परमेश्वर ने माँ की प्रार्थनाओं को सुना था, उसके विश्वास का प्रतिफल उसे मिला। अत्यन्त कृतज्ञता के साथ उसने अपना सुरिक्षत और आनन्ददायक काम शुरू किया। उसे आभास हुआ किकि बालक को किसी महान कार्य के लिये संरक्षित किया गया था, और वह यह भी जानती थी कि जल्द हर उसे उसकी राजसी माता के सुपुर्द कर दिया जाएगा और तब वह ऐसी शक्तियों से घिरा होगा जो उसे परमेश्वर से दूर ले जा सकती थी। यह सब सोचकर अपने अन्य बच्चों से ज्यादा उसे शिक्षा देने में वह सावधान और उद्यमी थी। उसने उसके मन को पमरेश्वर के भय, सत्य और न्यायपरायणता के प्रति प्रेम से व्याप्त करने का प्रयत्न किया और आग्रहपूर्वक प्रार्थना की कि वह प्रत्येक भ्रष्ट कर देने वाले प्रभाव से सुरक्षित रहे। उसने उसे मूर्तिपूजा के पाप और अज्ञानता से परिचित करवाया और कम आयु में ही उसे जीवित परमेश्वर के सम्मुख झुकना और प्राथना करना सिखया, क्योंकि केवल परमेश्वर उसकी सुन सकता था और प्रत्येक आपातकाल में उसकी सहायता कर सकता था। PPHin 243.2

उसने जब तक उससे हो सका, बालक की देखभाल की, लेकिन जब वह बारह वर्ष का हो गया तो वह उसको अपनेसेअलगकरने को विवश हो गई । उसके साधारण घर से उसे फिरौन की बेटी के पास राजसी महल में ले जाया गया, जहाँ, "वह उसका बेटा ठहरा" लेकिन यहाँ भी वह बचपन में प्राप्त हुए संस्कारों को नहीं भूला। जो सबक उसने अपनी माँ से सीखे थे, उन्हें उसने

हमेशा याद रखा। ये संस्कार दरबार के वैभव के बीच पनपने वाली, अधर्म और घमण्ड के प्रति एक कवच के समान थे। PPHin 243.3

कितना व्यापक था अपने परिणामों में उस एक इब्री स्त्री का प्रभाव, और वह भी एक प्रवासी और दास। मूसा का सम्पूर्ण भावी जीवन व इज़राइल अगुवा होने के नाते जो महान विशिष्ट कार्य उसने सम्पन्न किया था, एक मसीही माँ के काम के महत्व को प्रमाणित करता है। इस काम का कोई तुल्य नहीं। बहुत हद तक बच्चों का भविष्य माँ केहाथों में होता है। उसका काम विकासशील चित्रों और मनों से सम्बन्धित है, जो केवल समय के लिये नहीं वरन अनंतकाल के लिये कार्यशील रहती है। वह बीज बोती है जो अंकुरित होता है और फल देता है, भले के लिये या बुरे के लिये। उसे न तो कैन्वस पर सौन्दर्य के आकार को पेंट करना है और न ही संगमरमर से काट कर निकालना है, वरन् ईश्वर की छवि की मानव पर छाप छोड़नी है। विशेषकर, बच्चों के प्रारम्भिक वर्षो के दौरान उनके चरित्र निर्माण का दायित्व माँ पर होता है। जो प्रभाव उनके विकासशील बुद्धि पर पड़ता है वह उनके साथ जीवन भर रहता है। अभिभावकों को अपने बच्चों को मसीही रखने के उद्देश्य से उन्हें बहुत कम आयु से निर्देश और प्रशिक्षण देना चाहिये। उन्हें एक सांसारिक साम्राज्य के सिंहासन का उत्तराधिकारी के रूप में नहीं, वरन् चिरकालिक युगों के दौरान राज करने क लिये परमेश्वर में राजाओं के रूप में प्रशिक्षण प्राप्त करने हेतु हमारी देख-रेख में रखा गया है। PPHin 243.4

प्रत्यक माँ को लगना चाहिये कि उसके क्षण अनमोल है, लेखा-जोखा के पवित्र दिन उसके कार्य को परखा जाएगा। उस समय ज्ञात होगा कि पुरूषों व स्त्रियों के अपराध और विफलताएँ उन लोगो की उपेक्षा और अज्ञानता का परिणाम है, जिनका कर्तव्य था कि वे बचपन में अपने बच्चों का सही मार्ग-दर्शन करें । फिर ज्ञात होगा कि कई लोग जिन्होंने पवित्रता और सच्चाई और प्रतिभा के प्रकाश से संसार को धन्य किया, वे उनकी सफलता और प्रभाव की प्रेरणा देने वाले सिद्धान्तों का श्रेय एक प्रार्थना में लीन मसीही माँ को देते हैं। PPHin 244.1

फिरौन के दरबार में, मूसा ने सर्वोच्च मानव-समाज सम्बन्धी व सामरिक प्रशिक्षण प्राप्त किया। फिरौन ने अपनेदत्तक नाती को अपने सिहासन का उत्तराधिकारी बनाने का निश्चियकर लिया था और नौजवन को उसके ऊँचे पद के लिये शिक्षित किया गया। "मूसा की मिस्रियों की सारी विद्या पढ़ाई गई, और वह वचन और कर्म दोनों में सामर्थी था।"-प्रेरितों के काम 7:32। सैनिक अधिकारी के रूप में उसकी योग्यता ने उसे मिस्र की सेनाओं का प्रीतिपात्र बना दिया और उसे एक असाधारण व्यक्ति माना जाता था। शैतान अपनी योजना में पराजित हुआ। जिस आज्ञा के अनुसार इब्री बालकों को मृत्यु के घाट उतारा जाना था वह परमेश्वर के द्वारा रद कर दी गई ताकि उसके लोगों के भावी अगुवे का प्रशिक्षण और शिक्षण हो सके। PPHin 244.2

इज़राइल के बड़ों को स्वर्गदूतों द्वारा सिखाया गया कि उनकी मुक्ति का समय निकट था और मूसा वह पुरूष था जिसके माध्यम से परमेश्वर अपने कार्य को पूरा करने वाला था। स्वर्गदूतों ने मूसा

को भी निर्देश दिया कि परमेश्वर ने उसके लोगों को दासत्व से निवारण के लिये उसे चुना था। मूसा ने यह सोचकर कि वे अस्त-शस्त्र की ताकत से स्वतन्त्र प्राप्त करेंगे, मिस्र की सेनाओं के विरूद्ध इब्री सेना नेतृत्व करने की अपेक्षा की और इसी बात को दृष्टि में रखते हुए, उसने अपने मोह को सीमित रखा कि कहीं अपनी पालन पोषण करने वाली मां से या फिरीन से लगाव के कारण वह परमेश्वर की इच्छा पूरी को स्वतन्त्र न होगा। PPHin 244.3

मिस्र के नियमों के अनुसार जो भी फिरौन के सिंहासन पर बैठता था, उसके लिये धर्मगुरू की जाति का सदस्य बनाना अनिवार्य था, और मूसा को होने वाला उत्तराधिकारी होने के नाते, राष्ट्रीय धर्म के रहस्यों में दीक्षित होना था। यह कर्तव्य धर्म गुरूओं को दिया गया। लेकिन जब तक वह एकजउत्कृष्ट और अथक विद्यार्थी था, उसे देवी-देवताओं की आराधना में सम्मिलित होने के लिये बाध्य नहीं किया जा सकता था। उसे सिंहासन खो देने की धमकी दी गईं और यह चेतावनी दी गई कि यदि वह इब्री विश्वास के प्रति अपनी भक्ति में लीन रहेगा तो उसका राजकुमारी द्वारा परित्याग कर दिया जाएगा। लेकिन मूसा एकल परमेश्वर को छोड़ और किसी को श्रद्धांजलि न देने के संकल्प में दृढ़ था। उसने धर्मगुरूओं और आराध्यों से तर्क-वितर्क किया और निजीव वस्तुओं की अन्धविश्वासी उपासना करने की मूर्खता से परिचित करवाया। कोई भी उसके तर्कों का खण्डन न कर सका और ना ही उसके लक्ष्य को बदल सका, लेकिन उस समय के लिये उसके उच्च पद और फिरौन और लोगों की कृपा-दृष्टि का पात्र होने के कारण उसकी दृढ़ता को सहन कर लिया गया। PPHin 245.1

"विश्वास ही से मूसा ने सयाना होकर फिरौन की बेटी का पुत्र कहलाने से इन्कार किया। इसलिये कि उसे पाप में थोड़े दिन के सुख भोगने से परमेश्वर के लोगों के साथ दुःख भोगना अधिक उत्तम लगा। उसनेमसीह के कारण निन्दित होने को मिस्र के भण्डार से बड़ा धन समझा, क्योंकि वहअपना प्रतिफल पाने की बाटजोहरहा था।" मूसा प्रथ्वी के महान लोगों में विशिष्ट कहलाने, उसके सबसे गौरवशाली राज्य के दरबारों में सम्मानित होने व उसके अधिकार का राजदण्ड धारण करने के योग्य था। उसकी विवेक-सम्बन्धी श्रेष्ठता उसे सब युगों के महापुरूषों से अधिक विशिष्ट ठहराती है। इतिहासकार, कवि, दर्शनशास्त्री, सेनाध्यक्ष और विधायक के रूप में उसका कोई तुल्य नहीं। फिर भी संसार के सामने होते हुए भी, उसमें प्रसिद्धि और श्रेष्ठ और धन-सम्पत्ति के लुभावने प्रस्तावों को अस्वीकार करने का हौसला था और उसने "पाप में थोड़े दिन के सुख भोगने से परमेश्वर के लोगों के साथ दुःख भोगने को चुना ।मूसा को परमेश्वर के दीन और आज्ञाकारी सेवकों को दिये जाने वाले निर्णायक पुरूस्कार के सम्बन्ध में निर्देशित किया गया था, और उसकी तुलना में सांसारिक लाभ अपने वास्तविक महत्वहीनता पर उतर आया। फिरौन का शानदार महल और उसका सिंहासन मूसा के लिये प्रलोभन के रूप में सामने आए लेकिन वह जानता था कि उसके भव्य दरबारों में वे पापमय सुख थे जो मनुष्यों को परमेश्वर को भुला देने का काम करते हैं। उसने वैभवपूर्ण महल के परे, सम्राट के मुक्ट के परे, पापरहित राज्य में सर्वश्रेष्ठ के पवित्र लोगों को मिलने वाले सम्मान को

देखा। विवश्वास के द्वारा उसने स्वर्ग के राजा द्वारा विजेता के सिर पर रखे जाने वाले अनवश्वर मुकुट को देखा। इसी विश्वास ने उसे पृथ्वी के तेजस्वी राज्यों से मुहँ मोड़ कर उस दीन, दरिद्र और तिरस्कृत जाति से जुड़ने कोविवश किया जिन्होंने पाप के काम करने के बजाय परमेश्वर की आज्ञा मानने को चुना था। PPHin 245.2

मूसा चालीस वर्ष की आयु तक दरबार में रहा। अपने लोगों की दयनीय स्थिति पर वह अक्सर विचार किया करता था, और वह दासत्व में फंसे अपने भाईयों से मिलता था और उन्हें यह आश्वासन देकर प्रोत्साहित करता था कि परमेश्वर उनकी मुक्ति को कारगर करेगा। प्रायः उन पर किये जाने वाले अत्याचार व अन्याय के दृश्यों से कोधित होकर वह प्रतिशोध की आग में जलता था। एक दिन, जब वह बाहर था, उसने देखा कि एक मिस्री जन उसके एक भाई को मार रहा था। वह आगे कद पड़ा और उसने मिस्रारी को मार डाला। इस्राएली भाई के अलावा और कोई साक्ष्य को न देख, उसने तुरन्त उस शव को बालू में गाढ़ दिया। अब उसने स्वयं को यह प्रमाणित कर दिया था कि वह अपने लोगों के आन्दोलन को कायम रखने को तैयार था और उन्हें अपनी स्वतन्त्रता पुनः प्राप्त करने हेतु जागृत होते हुए देखने का इच्छुक था। "उसने सोचा कि उसके भाई समझेंगे कि परमेश्वर उसके हाथों से उसका उद्धार करेगा, परन्तु उन्होंने न समझा।"-प्रेरितों के काम 7:25 । वे अभी स्वतन्त्र के लिये तैयार नहीं थे। दूसरे दिन मूसाने दो इब्रियों को लड़ते हुए देखा, जिनमें से एक यथार्थ में गलत था। मूसा ने अपराधी को डॉटा, जो यह कहते हुएएकदम प्रतिकार पर उतर आया, कि मूसा को हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं और वह मूसा पर ही अपराध का अरोप लगाने लगा, "तुझे किसने हम पर हाकिम और न्यायी ठहराया है? क्या जिस रीति से तूने कल मिस्री को मार डाला, मुझे भी मार डालना चाहता है? PPHin 246.1

यह सारी बात शीघ्र ही मिस्रियों में फैल गयी और बढ़-चढ़कर, फिरौन के कानों तक पहुँची। राजा के सम्मुख इस घटना को ऐसे प्रस्तुत किया गया मानों वह बहुत कुछ कह रही हो, कि मूसा अपने लोगों का मिस्रियों के विरूद्ध नेतृत्व करना चाहता था, वह सरकार को पराजित करना चाहता था और स्वयं सिंहासन पर बैठना चाहता था और यह कि उसके जीवित रहते हुए राज्य सुरक्षित नहीं था। फिरौन ने तुरन्त निर्णय किया कि मूसा को मरना होगा, लेकिन मूसा इस खतरे से सावधान होकर अरब की ओर बच कर भाग निकला। PPHin 247.1

परमेश्वर ने उसका मार्गदर्शन किया और उसे मिद्यान के राजकुमार और धर्मगुरू यित्रो, जो स्वयं परमेश्वर का आराध्य था, के घर में आश्रय मिला। कुछ समय पश्चात मूसा ने यित्रो की एक बेटी से विवाह किया और वहाँ, अपने ससुर की सेवा में, भेड़ बकरियाँ चराते हुए उसने चालीस वर्ष व्यतीत किए। PPHin 247.2

ग्रिसी को मारने में मूसा वहीं पाप कर बैठा था, जो उसके पूर्वज प्राय: किया करते थे, जिस काम को करने की परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की हो उसके स्वयं अपने हाथों में ले लेने की गलती। अपने

लोगों को युद्ध के माध्यम से स्वतन्त्र कराना परमेश्वर की इच्छा न थी, जैसाकिमूसा ने सोचा; वरन परमेश्वर अपने निजी पराक्रमी सामर्थ्य से उन्हें स्वाधीन कराना चाहता था, ताकि महिमा केवल उसी को मिले। लेकिन यह अविवेकीय कृत्य भी परमेश्वर द्वारा अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिये भुला दिया गया ।मूसा अपने महान कार्य के लिये तैयार नहीं था। PPHin 247.3

उसे अभी भी विश्वास का वह सबक सीखना था जो अब्राहम और याकूब को सिखाया गया था कि परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के पूरा होने के लिये मानवीय सामर्थ्य व बुद्धि पर नहीं, वरन् परमेश्वर की सामर्थ्य पर निर्भर होना चाहिये। इसके अलावा कुछ और सबक थे जो पहाड़ी के एकान्त में मूसा को प्राप्त होने थे। आत्म-त्याग और कठिनाईयों की पाठशाला में उसे अपने आवेग पर नियन्त्रण रखना और धेरयवान होना सीखना था। बुद्धिमानी से शासन करने से पहले उसे आज्ञापालन के लिये प्रशिक्षण पाना था। इससे पहले कि वह परमेश्वर की इच्छा का ज्ञान उसके लोगों को दे सकता परमेश्वर के साथ हार्दिक सामंजस्य आवश्यक था। अपने अनुभव से उसे उन सब की पिता-समान देखभाल करने के लिये तैयार होना था, जिन्हें उसकी सहायता की आवश्यकता थी। PPHin 247.4

व्यर्थ समय गँवाना मानकर, मनुष्य अज्ञानता और परिश्रम की लम्बी अवधि से स्वयं को मुक्त कर लेता लेकिन 'असीमित ज्ञान' यानि परमेश्वर ने उसे, जिसे उसके लोगों का अगुवा बनना था, चालीस वर्षो तक चरवाहे का दीन काम करने के लिये नियुक्त किया। इस व्यवसाय के द्वारा विकसित देखभाल, स्वयं को भूल जाना और भेड़-बकरियों के प्रति संवेदनशील चिंता की व्यवहारिक विशेषताएं उसे इस्राएल का संवेदनशील व सहनशील चरवाहा बनने के लिये तैयार करती। मानवीय प्रशिक्षण या रीति-रिवाज द्वारा दिया गया कोई भी सुअवसर इस अनुभव का प्रतिनिधि नहीं हो सकता था। PPHin 248.1

अभी तक मूसा वह सीख रहा था जिसे उसे भुलाना था।वे प्रभावजोमिस्र में उसे चारों ओर सेघेरे हुएथे-पालन-पोषण करने वाली उसकी मां, फिरौन का नाती होने के नाते उसका उच्च पद, हर तरफभ्रष्टाचार, कृत्रिम धर्म की सजावट, जटिलता और रहस्यवाद, मूर्तिपूजा का वैभव, मूर्तिकला और वास्तुशिल्प की प्रभावशाली भव्यता- इन सब ने उसके विकासशील मन पर गहरा प्रभाव डाला था और कुछ हद तक उसके चरित्र और आचरण को ढाला था। समय, परिवेश में बदलाव, और परमेश्वर के साथ संपर्क इन संस्करणों को दूर कर सकते थे। इसके लिये मूसा को वैसा ही संघर्ष करना था जैसा कि वह अपने प्राणों के लिये करता ताकि वह असत्य को त्याग कर सत्य को अपना सके, लेकिन संघर्ष के मानवीय सामर्थ्य के लिये अधिक विकट होने पर परमेश्वर उसका सहायक हुआ। PPHin 248.2

उन सब में, जिन्हें परमेश्वर के किसी भी कार्य को सम्पन्न करने के लिये चुना जाताहै, वह मानवीय प्राकृतिक स्वभाव दिखाई देता है। लेकिन फिर भी वे आचरण व चरित्र से रूढ़िवादी नहीं थे, जो उसी अवस्था में रहने में सन्तुष्ट थे। वे परमेश्वर से ज्ञान प्राप्त करने और उसके कार्यों को करने

की शिक्षा प्राप्त करने की अभिलाषा करते थे। अनुयायी कहता है, “पर यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो तो परमेश्वर से माँगे, जो बिना उलहाना दिये सब को उदारता से देता है, और उसको दी जाएगी ।”-याकूब 1:5 ।लेकिन जब मनुष्य अन्धकार में रहने में सन्तुष्ट है तब परमेश्वर उन्हें ईश्वरीय प्रकाश नहीं प्रदान करेगा। परमेश्वर की सहायता प्राप्त करने के लिये मनुष्य को अपनी निर्बलता व अपूर्णता का आभास होना चाहिये, स्वयं में बदलाव लाए जाने के लिये उसे मन से तैयार होना चाहिये। उसे निरन्तर प्रार्थना व प्रयत्न के लिये जागरूक होना चाहिये । गलत आदतों व प्रथाओं को दूर कर देना चाहिये; इन गलतियों को सुधारने हेतु निर्धारित प्रयत्न और पवित्र सिद्धान्तों कीपुष्टि द्वारा ही विजय प्राप्त हो सकती है। कई लोग उस पद तक नहीं पहुँचते, जहाँ वे हो सकते थे, क्योंकि वे परमेश्वर द्वारा वह करने के लिये रूके रहते है, जिसे स्वयं करने की सामर्थ्य उन्हें परमेश्वर द्वारा दी गई है। जो भी उपयोग में लाए जाने योग्य है उन्हें कठोरतम मानसिक व सात्विक अनुशासन द्वारा प्रशिक्षण मिलना चाहिये, और मानवीय प्रयत्न के साथ ईश्वरीय सामर्थ्य को जोड़ने में परमेश्वर उनकी सहायता करेगा। PPHin 248.3

पहाड़ों के एकान्तवास में मूसा परमेश्वर के साथ अकेला था। मिस्र के भव्य मन्दिर अब उसके मन को उनके अन्धविश्वास और भ्रान्ति द्वारा प्रभावित नहीं करते थे। उन अनन्त पहाड़ों के पवित्र गौरव में उसने ‘सर्वोच’ परमेश्वर के गौरव को देखा और उसे आभास हुआ कि इसकी तुलना में मिस्र के देवी-देवता कितने महत्वहीन और शक्तिहीन हैं। प्रत्येक जगह सृष्टिकर्ता का नाम अंकित था। मूसा को प्रतीत होता था कि वह उसकी उपस्थिति में खड़ा है और उसके सामर्थ्य की छाया उसपर है। यहाँ उसका घमण्ड और उसकी आत्म-निर्भरता दूर हो गए। निर्जन प्रदेश में जीवन की कठोर सादगी में भोग-विलास व सहजता के परिणाम विलोप हो गए। मूसा, धर्यवान, श्रद्धापूर्ण, दीन, “पृथ्वी भर के रहने वाले सब मनुष्यों से बहुत अधिक नम्र स्वभाव” का हो गया (गिनती 12:3)। फिर भी वह याकूब के परमेश्वर में दृढ़ विश्वास रखता था। PPHin 249.1

समय बीतता गया, और वह एकान्त स्थानों में अपनी भेड़-बकरियों के साथ घूमता था, अपने लोगों की उत्पीड़ित दशा पर मनन करते हुए उसे अपने पूर्वजों के साथ परमेश्वर का व्यवहार और चुनी हुईं जाति की धरोहर परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं का स्मरण हुआ और वह रात दिनइज़राइल के लिये प्रार्थना करने लगा। पवित्र स्वर्गदूतों ने उसके चारों ओर अपना प्रकाश बिखेरा। यहाँ, पवित्र आत्मा की प्रेरणा से, उसने उत्पत्ति की पुस्तक लिखी। मरूधर के एकांत में बिताए चिरकाल, ना केवल मूसा और उसके लोगो के लिये, वरन् उत्तरगामी युगों में जगत के लिये बहुतायत से आशीषें लाए। PPHin 249.2

“बहुत दिनों के बीतने पर मिस्र का राजा मर गया, इज़राइली दासत्व के कारण लम्बी-लम्बी सांस लेकर आहे भरने लगे, और पुकार उठे, और उनकी दुहाई जो जो दासत्व से प्रवाहित थी, परमेश्वर तक पहुँची। परमेश्वर ने उनका कराहना सुनकर, अपनी वाचा को, जो उसने अब्राहम,

इसहाक और याकूब के साथ बाँधी थी, स्मरण किया और परमेश्वर ने इज़राइलियों की मुक्ति का समय आ गया था। लेकिन परमेश्वर की योजना को इस प्रकारसे परिपूर्ण होना था कि मानवीय धमंड का तिरस्कार हो। मुक्ति दिलाने वाले को, हाथ में केवल एक लाठी लिये हुए एक दीन चरवाहा बनकर जाना था, लेकिन परमेश्वर उसी लाठी को उसके सामर्थ्य का प्रतीक बनाने वाला था। एकदिन होरेब नामक परमेश्वर के पर्वत के पास अपनी भेड़-बकरियों को चराते हुए, मूसा ने एक जलती हुईं झाड़ी को देखा जिसकी शाखाएं, तना, पत्ते सब जले रहे थे लेकिन भस्म नहीं हो रहे थे। वह इस आश्चर्यजनक दृश्य को देखने के लिये झाड़ी के पास गया और झाड़ी के बीच आग की लौ में से एक आवाज ने उसे नाम लेकर बुलाया। कंपकंपाते होठों से उसने उत्तर दिया, “मैं यहां हूँ” उसे सावधान किया गया कि वह उस स्थान पर श्रद्धाहीनता से आगे न बढ़े “इधर पास मत आ, और अपने पाँवों से जूतियों को निकाल दे क्योंकि जिस स्थान परतू खड़ा है वह पवित्र भूमि हे.......में तेरे पिता का परमेश्वर, और अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूँ यह वही था, जिसने वाचा के स्वर्गदूत के रूप में, बीते युगों में उसके पूर्वजों को दर्शन दिये थे।” तब मूसा ने जो परमेश्वर की ओर देखने से डरता था, अपना मुँह ढांप लिया।” PPHin 249.3

परमेश्वर की उपस्थिति में आने वाले सभी मनुष्यों के आचरण में आदर और दीनता चरित्रार्थ होने चाहिये। यीशु के नाम में हम आत्म-विश्वास के साथ उसके सम्मुख तो आ सकते हैं, लेकिन उसके पास जाने में हमें यह सोचने का दुस्साहस नहीं करना चाहिये, कि वह भी उसी स्तर पर है जहाँ हम है। कई लोग हैं जो अगम्य प्रकाश में निवास करने वाले महान पवित्र व सर्वशक्तिमान परमेश्वर को ऐसे संबोधित करते हैं, जैसे वे अपने तुल्य या अपने से निम्नव्यक्ति को संबोधित करते हैं। फिर वे लोग है जो परमेश्वर के घर में ऐसा व्यवहार करते है,जैसा वे एक सांसारिक शासक के श्रोता कक्ष में करने को सोचेंगे भी नहीं। इन्हें स्मरण रखना चाहिये कि वे उसकी दृष्टि में है जिसकी प्रशंसा उच्च कोटि के स्वर्गदूत करते हैं, जिसके सामने स्वर्गदूत भी अपने मुहँढाँप लेते हैं। परमेश्वर को बहुत आदर मिलना चाहिये; जिन्हें उसकी उपस्थिति का आभास होता है, वे उसके सामने दीनतापूर्वक दण्डवत करेंगे और, परमेश्वर का दर्शन पाते हुए याकूब की तरह, ऊँचे स्वर में कहेंगे, “कितना डरावना है ये स्थान! यह स्थान कोई और नहीं, वरन् परमेश्वर का घर है, और यह स्वर्ग का फाटक है।” PPHin 250.1

मूसा परमेश्वर के सम्मुख आदरपूर्ण भय के साथ रूका रहा और परमेश्वर का कथन जारी रहा, “मैंने अपनी प्रजा के लोग जो मिस्र में है, उनके दुख को निश्चय देखा है, और उनकी जो चिल्लाहट परिश्रम कराने वालों के कारण होती है उसको भी मैंने सुना है, और उनकी पीड़ा पर मैंने चित्त लगाया, इसलिये अब मैं उतर आया हूँ कि उन्हें मिस्रियों के वश में छड़ाऊं, और उस देश से निकलकर एक अच्छे और बड़े देश में, जिसमें दूध और मधु की धाराएँ बहती है....इसलिये आ, मैं तुझे फिरीन के पास भेजता हूँ कि तू मेरी इज़राइली प्रजा को मिस्र से निकाल ले आए।” PPHin 250.2

आज्ञा सुनकर आश्चर्यवकित और भयभीत, मूसा पीछे हटकर बोला, “मैं कोन हूँ जो फिरौन के पास जाऊं और इज़राइलियों को मिस्र से निकाल ले आऊं?” उसे उत्तर मिला, “निश्चय में तेरे संग रहूँगा, और इस बात का कि तेरा भेजने वाला मैं हूँ तेरे लिये यह चिन्ह होगा कि जब तू उन लोगों को मिस्र से निकाल चुके, तब तुम इसी पहाड़ पर उपासना करोगे।” PPHin 251.1

मूसा उन कठिनाईयों के बारे में सोचने लगा जिसका उसे सामना करना था, अपने लोगों की अज्ञानता, दृष्टिहीनता और अवश्विस और वे जिनमें परमेश्वर सम्बन्धी ज्ञान का अभाव था। मूसा ने परमेश्वर से कहा, “जब में इज़राइलियों के पास जाकर उनसे कहूँ, ‘तुम्हारे पितरों के परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है, तब यदि वे मुझसे पूछें, “उसका नाम क्या है?” तब में उनको क्या बताऊं” इस प्रश्न का उत्तर मिला- “मैं जो हूँ सो हूँ।” “तू इज़राइलियों से यह कहना, जिसका नाम मैं हूँ है”, उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।” PPHin 251.2

मूसा को आज्ञा दी गई कि वह इज़राइली पुरनियों को इकट्ठा करे, जो उनमें सबसे शिष्ट और धर्मी थे, जो अपने दासत्व के कारण बहुत समय दुखी रहे, और उन्हें परमेश्वर कीओर से छुटकारे की प्रतिज्ञा के साथ यह सन्देश दे, तत्पश्चात उसे पुरनियों सहित राजा के सामने जा कर यह कहना था- ‘इब्रियों के परमेश्वर, यहोवा से हम लोगों की भेंट हुई है, इसलिये अब हम को बीहड़ में तीन दिन की यात्रा की अनुमति दे ताकि हम अपने परमेश्वर यहोवा को बलिदान चढ़ाएँ।” PPHin 251.3

मूसा को पहले से ही ज्ञात कराया गया था कि फिरौन इज़राइल को जाने देने की याचना को स्वीकार नहीं करेगा। लेकिन, फिर भी परमेश्वर के दास का साहस कम नहीं होना था, क्योंकि परमेश्वर इस बात को अपने लोगों और मिस्रियों के सम्मुख अपने सामर्थ्य को प्रकट करने का अवसर बनाना चाहता था। “मैं हाथ बढ़ाकर उन सब आश्चर्यकर्मों से, जो मिस्र के बीच करूंगा, उस देश को मारूंगा, और उसके पश्चात वह तुम को जाने देगा।” PPHin 251.4

यात्रा के लिये सामग्री-सम्बन्धितनिर्देश भी दिया गया। पमरेश्वर ने कहा, “जब तुम निकलोगे तो खाली हाथ न निकलोगे। वरन् तुम्हारी एक-एक स्त्री अपनी-अपनी पड़ोसन और उनके घर में रहने वाली से सोने चांदी के गहने, और वस्त्र मांग लेगी, और तुम उन्हें अपने बेटों और बेटियों को पहिनाना।” मित्री लोग इज़राइलियों से बेगार करवाकर धनवान हुए थे, और अब जब इज़राइली अपने नये घर की ओर यात्रा शुरू करने वाले थे, यह उनका अधिकार था कि वे अपने वर्षों के परिश्रम के प्रतिफल का दावा करें। उन्हें मूल्यवान वस्तुएँ माँगनी थी, जिन्हें आसानी से ले जाया सके और परमेश्वर मिस्रियों की दृष्टि में उन पर कृपा-दृष्टि करेगा। उनकी मुक्ति के लिये किये गए सामर्थी आश्चर्यकर्म अत्याचारियों में भय उत्पन्न करता ताकि दासों की माँग पूरी हो सके। PPHin 252.1

मूसा अपने सामने दुर्गम प्रतीत होने वाली कठिनाईयाँ देख रहा था। वह अपने लोगों को क्या प्रमाण दे सकता था। परमेश्वर ने वास्तव में उसे भेजा था? उसने कहा, “वे मेरा विश्वास नहीं करेंगे और न मेरी सुनेंगे, वरन् कहेंगे, “यहोवा ने तुझको दर्शन नहीं दिया।” अब उसे वह प्रमाण दिया गया

जो उसकी इन्द्रियों को भावता था। उससे कहा गया कि वह अपनी लाठी को भूमि पर फेंके। जैसे ही उसने ऐसा किया, "वह सर्प बन गई, और मूसा उसके सामने से भागा।" फिर उसे सर्प को पूँछ से पकड़ लेने की आज्ञा दी गई और उसके हाथ में वह फिर लाठी बन गया। फिर उसे उसका हाथ छाती पररखकर ढॉपनेको कहा गयाऔर, फिर जब उसनेहाथ बाहरनिकाला तब क्या देखा कि उसका हाथ कोढ़ के कारण हिम के समान श्वेत हो गया था।" फिर उसे दोबारा अपना हाथ छाती पर रखकर ढॉपने को कहा गया और वापस निकाले जाने पर उसने उसे अपने दूसरे हाथ के समान पाया। इन चिन्हों से परमेश्वर ने मूसा को आश्वस्त किया कि उसके अपने लोगों व फिरौन को यह विश्वास हो जाएगा कि मिस्र के राजा से अधिक शक्तिशाली प्रकट रूप से उनके बीच में था। PPHin 252.2

लेकिन परमेश्वर का दास अभी भी उस अद्‌भुत और चमत्कारिक कार्य के जो उसके सामने था, विचार से डरा हुआ था। दुःख और डर के प्रभाव में उसने हकलाने का बहाना बनाया, "हे मेरे प्रभु, मैं बोलने में निपुण नहीं, मैं तो धीरे-धीरे बोलता हूँ और उत्तम शब्दों का प्रयोग नहीं करता।" वह मिम्रियों से बहुत दिनों पहले दूर हो गया था और अब उसे उनकी भाषा का ना ही सही उपयोग करना आता था और ना ही उसका स्पष्ट ज्ञान जो कि तब था जब वह उनके बीच था। PPHin 252.3

परमेश्वर ने उससे कहा, "मनुष्य का मुहँ किसने बनाया है? और मनुष्य को गूगा या बहरा या देखने वाला या अन्धा, मुझ यहोवा को छोड़ कोन बनाता है? "साथ ही उसने ईश्वरीय सहायता का एक और आश्वासन दिया? "अब जा, में तेरे मुख के संग होकर जो तुझे कहना होगा वह तुझे सिखलाता जाऊँंगा।" लेकिन फिर भी मूसा ने आग्रह किया कि उसे अधिक योग्य व्यक्ति को चुना जाए। पहले ये बहाने संकोच और विनग्रता से उत्पन्न हुए थे, लेकिन परमेश्वर द्वारा दी गई प्रतिज्ञा के बाद कि वह सब कठिनाईयों कोदूर कर देगा और उसे निर्णायिक सफलता देगा, उसका और संकोच करना और अपनी निर्बलता पर कूड़कड़ाना परमेश्वर के प्रति अविश्वास प्रकट करता। इसका अभिप्राय एक डर से था कि जिस महान कार्य के लिये उसे परमेश्वर ने बुलाया था, उसी के लिये वह मूसा को सुयोग्य नहीं बना सका या उसने मनुष्य के चुनाव में उससे गलती हुई थी। PPHin 253.1

मूसा का ध्यान उसके बड़े भाई हारून की ओर किया गया, जो मिस्रियों की भाषा का प्रतिदिन प्रयोग करके, उसे भली-भांति बोल सकता था। उससे कहा गया कि हारून उससे भेंट करने आ रहा था। परमेश्वर द्वारा बोला गया अगला वचन एक अप्रतिबन्ध आज्ञा था, "तू उसे ये बातें सिखाना, और मैं उसके मुख के संग और तेरे मुख के संग होकर जो कुछ तुम्हें करना होगा वह तुम को सिखलाता जाऊंगा। वह तेरी ओर से बातें किया करेगा, वह तेरे लिये मुह और तू उसके लिये परमेश्वर ठहरेगा और तू इस लाठी को हाथ में लिए जा, और इसी से इन चिन्हों को दिखाना।" मूसा, इसक आगे प्रतिरोध न कर सका, क्योंकि बहानों का सम्पूर्ण आधार ही हटा दिया गया।मूसा को दी हुई ईश्वरीय आज्ञा ने उसे स्व-अविश्वासी, हकलाने वाला और कायर पाया। इज़राइल के परमेश्वर का

प्रवक्ता बनने में अयोग्य होने की भावना से वह विह्वल हो गया। लेकिन एक बार कार्य को स्वीकार करने के बाद परमेश्वर में पूर्ण विश्वास के साथ, वह सहृदय उस कार्य को करने में जुट गया। उसके उद्देश्य की महानता ने उसके विवेक की उत्तम क्षमताओं का अभ्यास करवाया। परमेश्वर ने उसकी तत्पर आज्ञाकारिता को आशीष दी और वह मनुष्यों को अब तक दिये गए कार्यों में सवश्रेष्ठ कार्य को करने के लिये शब्दचतुर, आशावादी, आत्म-सम्पन्न व सुयोग्य बन गया। यह इस बात का उदाहरण है कि परमेश्वर उनके चरित्र को सुदृढ़ करने के लिये क्या करता है जो उसमें पूरी तरह से विश्वास करते है और उसकी आज्ञाओं का पूरी तरह पालन करता है। PPHin 253.2

जब मनुष्य परमेश्वर द्वारा दिये गए दायित्व को स्वीकार कर लेता है और उसे सही तरह से निभाने के लिये पूरे मन से स्वयं को योग्य बनाने का प्रयत्न करता है, उसे शक्ति और कायक्षमता प्राप्त होती है। उसका पद कितना ही निम्न और उसकी दक्षता कितनी हो सीमित हो, वह मनुष्य वास्तविक महानता को प्राप्त करेगा, जो ईश्वरीय सामर्थ्य में विश्वास रखते हुए अपने कार्य को सम्पूर्ण निष्ठा के साथ करता है। यदि मूसा ने अपनी सामर्थ्य और बुद्धिमानी पर निर्भर किया होता और इस महान प्रभार को उत्सुकतापूर्वक ग्रहण कर लिया होता तो उसने ऐसे कार्य के लिये अपनी सारी अयोग्ता का प्रदर्शन कर दिया होता। मनुष्य का कमी का आभास इस बात का प्रमाण हे कि वह उसे दिये गए कार्य के महत्व को पहचानता है और यह कि वह परमेश्वर कोअपना परामर्शदता और अपनी ताकत बनाएगा। PPHin 254.1

अपने सुसर यित्रो के पास लौटकर, मूसा ने मिस्र में अपने भाईयों से भेंट करने जाने की इच्छा व्यक्त की। यित्रो ने कहा, "कुशल से जा' और उसे जाने की अनुमति दी। अपनी पत्नी और बच्चों के साथ मूसा यात्रा पर निकल पड़ा। उसने अपने विशेष कार्य का उद्देश्य बताने का दुःस्साहस नहीं किया नही तो उसे पत्नी और बच्चों की साथ ले जाने की अनुमति नहीं मिलती। लेकिन मिस्र पहुँचने से पहले, उसने स्वयं उनकी सुरक्षा के लिये उन्हें मिद्यान में उनके घर वापस भेजना उचित समझा। PPHin 254.2

फिरोन और मिस्रियों का एक अप्रकट भय, जिनका कोध चालीस वर्ष पूर्व उसके प्रति भड़क उठा था, मूसा को मिस्र देश को लौटने में विमुख कर रहा था। लेकिन जब वह परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने निकल पड़ा, तब परमेश्वर ने उस पर प्रकट किया कि उसके शत्रु मर चुके थे। PPHin 254.3

मिद्यान से मिस्र के मार्ग पर, मूसा को परमेश्वर के कोध की एक आश्चर्यजनक व भयानक चेतावनी मिली। एक स्वर्गदूत उसको तत्काल मार देने वाले भयानक रूप में प्रकट हुआ। उसने कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया, लेकिन मूसा को स्मरण हुआ कि उसने परमेश्वर की एक आज्ञा को नहीं माना था; अपनी पत्नी के अनुनय के आगे समर्पण कर, उसने अपने सबसे छोटे पुत्र के खतने की विधि का पालन नहीं किया था। उसने उसप्रतिबंधका अनुपालन नहीं किया थाजिससे उसका

पुत्रपरमेश्वर की इज़राइल के साथ बाँधी वाचा के आशीर्वाद का हकदार हो सकता था। चुने हुए अगुवा की ओर से ऐसी अवहेलना, लोगों पर, निश्चित रूप से, पवित्र आज्ञाओं का दबाव कम कर देती। इस डर से कि उसके पति को मार दिया जाएगा, सिप्पोरा ने खतने की विधि स्वयं सम्पन्न की, और फिर स्वर्गदूत ने मूसा को अपनी यात्रा पर बढ़ने की अनुमति दी। फिरौन से सम्बन्धित विशेष कार्य में, मूसा को एक संकटपूर्ण पद पर आसीन होना था। उसका जीवन केवल पवित्र स्वर्गदूतों कीसुरक्षा के माध्यम से संरक्षित रखा जा सकता था। लेकिन यदि वह एक ज्ञात कर्तव्य की अवेहलना करते हुए जीवित रहता तो वह सुरक्षित न होता, क्योंकि तब परमेश्वर के स्वर्गदूत उसकी रक्षा न कर पाते। PPHin 254.4

मसीह के आगमन के ठीक पहले संकटकाल में, धर्मी जनों को स्वर्गदूतों को सहायता से संरक्षित रखा जाएगा, लेकिन परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करने वालों के लिये कोई सुरक्षा न होगी। फिर स्वर्गदूत पवित्र आज्ञाओं का तिरस्कार करने वालों की रक्षा नहीं कर सकते।

अध्याय 23—मिस्र की महामारियाँ

यह अध्याय निर्गमन 5—10 पर आधारित है

स्वर्गदूत का निर्देश पाकर, हारून अपने भाई से, जिससे वह बहुत लम्बे समय से अलग रहा था, भेंट करने गया, और वे होरेब के पास, मरूधर के एंकात में मिले। यहां उन्होंने एक दूसरे से बात की और मूसा ने हारून को यह बताया कि, "यहोवा ने क्या-क्या बातें कहकर उसको भेजा है, और कौन-कौन से चिन्ह दिखलाने की आज्ञा उसे दी है ।"-निर्गमन 4:28 । फिर वे दोनों मिस्र की यात्रा पर निकले और गोशेन पहुँचकर उन्होने इज़राइल के सब पुरनियों को इकट्ठा किया। और जितनी बातें यहोवा ने मूसा से कही थी, वह सब बातें हारून ने उन्हें सुनाई, और जो चिन्ह परमेश्वर ने मूसा को दिये थे, लोगो को दिखाए गए। "और लोगों ने उनका विश्वास किया, और यह सुनकर कि यहोवा ने इज़राइलियों की सुधि ली और उनके दुखों पर दृष्टि की है, उन्होंने सिर झुकाकर दण्डवत किया।" निर्गमन 4:3 PPHin 256.1

मूसा को राजा को सन्देश पहुंचाने का कार्य भी सौंपा गया था। दोनों भाईयों ने राजाओं के राजा के प्रतिनिधियों के रूप में, फिरौन के महल में प्रवेश किया और फिर परमेश्वर के नाम में वे बोले, "इज़राइल का परमेश्वर यहोवा यो कहता है, मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे कि वे जंगलमें मेरे लिये पर्व करें। PPHin 256.2

फिरौन ने कहा, "यहोवा कौन है कि मैं उसका वचन मानकर इज़राइलियों को जाने दूँ? में यहोवा की नहीं जानता, और मैं इज़राइलियों को नहीं जाने दूँगा।' PPHin 256.3

उनका उत्तर था, ""इब्रियों के परमेश्वर ने हमसे भेंट की है। इसलिये हमें जंगल में तीन दिन के मार्ग पर जाने दे, कि अपने परमेश्वर यहोवा के लिये बलिदान करें, ऐसा नहीं हो कि वह हम में मरी फैलाए या तलवार चलवाए।" PPHin 256.4

उनका और उनके द्वारा लोगों में उत्पन्न अभिरूचि का समाचारराजा के पास पहुँच चुका था। उसका कोध भड़क उठा। उसने उनसे कहा, "हे मूसा, हे हारून, तुम क्यों लोगों से काम छुड़वाना चाहते हो? तुम जाकर अपना-अपना बोझ उठाओ ।"पहले हीइन परदेशियों के हस्तक्षेप के कारण राज्य को हानि उठानी पड़ी थी। यह सोचकर उसने कहा, "सुनो, इस देश में वे लोग बहुत हो गए हैं, फिर तुम उनको परिश्रम से विश्राम दिलाना चाहते हो।" PPHin 256.5

अपने दास्तव में, कुछ हद तक, इज़राइल परमेश्वर की व्यवस्था का ज्ञान खो चुके थे और वे उसके सिद्धान्तों का त्याग कर चुके थे। 'सबत' विश्राम दिन को आमतौर पर भुला दिया गया था, और उनसे परिश्रम कराने वालों द्वारा बेगारी कराई जाने के कारण विश्राम दिन का अनुपालन असंभव सा प्रतीत होता था। लेकिन मूसा ने अपने लोगों को दिखाया था कि परमेश्वर के प्रति

आज्ञाकारिता मुक्ति की पहलीशर्त थी और विश्राम दिन के अनुपालन को पुन: प्रचलन में लाने के प्रयत्न आततायियों की दृष्टि में आ चुका था। PPHin 257.1

पूरी तरह से उत्तेजित राजा को सन्देह था कि इज़राइली उसकी सेवाओं के विरूद्ध उपद्रव का षड़यन्त्र रच रहे थे। आलस्य का परिणाम विद्रोह था, वह उन्हें पड़यन्त्र रचने का समय न देगा। उसने तत्काल ही उनके अनुबंध को कड़ा करने और उनकी स्वतन्त्र भावना को कुचलने के उपाय अपनाए। उसी दिन आदेश दिया गया जिससे उनका परिश्रम और भी निर्दयी और दमनकारी हो गया। धूप से सुखाई हुईं इंटे उस राज्य की सबसे साधारण निर्माण-सामग्री थी, वैभवशाली भवनों की दीवारें इन्हीं से बनाई जाती थी और उनके सामने का भाग पत्थर का होता था। ईटों को बनाने के लिये कई दासों को काम पर लगाया जाता था। पुआल को चिकनी मिट्टी के साथ मिलाया जाता था ताकि वह जुड़ी रह सके और इसलिये इस काम के लिये बड़ी मात्रा में पुआल की आवश्यकता पड़ती थी, अब राजा ने निर्देश दिया की पुआल श्रमिकों को स्वयं ही जुटाने दी जाए, लेकिन ईंटो की गिनतीमें कमी नहीं होनी चाहिये। PPHin 257.2

इस आदेश ने पूरे राज्य के इज़राइलियों के लिये घोर कठिनाईयों को उत्पन्न किया। मिस्री अधिकारियों ने लोगों के काम का निरीक्षण करने के लिये इब्री अफसरों को नियुक्त किया गया था और ये असफर उनके सुपुर्द लोगों के द्वारा किये गए काम के लिये उत्तरदायी होते थे। जब राजा के आदेश को लागू किया गया, तो वे लोग पुआल के बदले चाराइकट्ठा करने सारे मिस्र में तितर-बितर होगए लेकिन उन्होंने पाया किपहले जितनाकामपूरा करना उनके लिये असम्भव था। इस असफलता के लिये इब्री अफसरों को निर्दयता से पीटा जाता था। PPHin 257.3

इन अफसरों ने सोचा कि उन पर अत्याचार राजा नहीं वरन उनके ऊपर नियुक्त कठोर अधिकारी कर रहे हैं, इसलिये वे अपना दुखड़ा लेकर फिरौन के पास गए। लेकिन फिरौन ने उनकी आपत्ति का उत्तर इस कटाक्ष के साथ दिया, “तुम आलसी हो आलसी, इसी कारण कहते हो कि हमें यहोवा के लिये बलिदान करने को जाने दे।” उन्हें वापस जाकर काम पर लग जाने को आदेश दिया गया इस घोषण के साथ कि उनके कार्य-भार में कोई कभी न की जाएगी। लौट कर उन्होंने मूसा और हारून से भेंट की और उनसे कहा, “यहोवा तुम पर दृष्टि और न्याय करे, क्योंकि तुमने हम को फिरौन और उसके कर्मचारियों की दृष्टि में घृणित ठहराकर हमें घात करने के लिये उनके हाथ में तलवार दी है।” PPHin 258.1

यह उलाहना सुनकर मूसा को बहुत खेद पहुँचा। लोगों के कष्टों में बहुत वृद्धि हो गई थी। पूरे राज्य के बढ़े-बूढ़े व नौजवान निराश होकर अपनी दुर्दशा का आरोप मूसा पर लगाने लगे। दु:खित हृदयके साथ वह परमेश्वर के सम्मुख गया और बोला, “हे प्रभु, तूने इस प्रजा के साथ ऐसी बुराई क्यों की? औरतूने मुझे यहां क्यो भेजा है जब से में तेरे नाम से फिरौन के पास बाते करने के लिये गया तब से उसने इस प्रजा के साथ बुरा ही व्यवहार किया है, और तूने अपनी प्रजा का कुछ भी छुटकारा

नहीं मिला।" उसे उत्तर मिला, "अब तू देखेगा कि मैं फिरोन के साथ क्या करूंगा, जिससे वह मेरे लोगों को जाने देगा, वह उन्हें जाने के लिये विवश करेगा ।" उसे फिर परमेश्वर की उसके पूर्वजों के साथ बाँधी हुई वाचा का स्मरण कराया गया और उसे उस वाचा के पूरे होने का आश्वासन दिया गया। PPHin 258.2

मिस्र में दासत्व के काल के दौरान इज़राइलियों में वे लोग थे जो यहोवा की आराधना करते आए थे। वे इस बात से अत्यन्त दुःखी थे कि उनके बच्चे प्रतिदिन उन अधर्मी मनुष्यों की घृणित वस्तुओं को देखते थे और उनके देवी-देवताओं के आगे दण्डवत भी करते थे। दुःखी होकर उन्होंने परमेश्वर को पुकारा कि वह उन्हें मिस्रियों के दमनकारी शासन से स्वतन्त्र करे ताकि वे मूर्तिपूजा के भ्रष्टाचारी प्रभाव से दूर हो सके। उन्होंने अपने विश्वास को छिपाया नहीं, वरन् मिप्रियों के समक्ष घोषणा की कि उनकी आराधना का विषय आकाश और पृथ्वी को बनाने वाला एकल सच्चा और जीवित परमेश्वर था। उन्होंने सृषि से लेकर याकूब के दिनों तक उसके सामर्थ्य और आस्तित्व में होने के प्रमाण दोहराये। इस प्रकार मिस्त्ररियों को इब्रियों के धर्म से परिचित होने का अवसर मिला, लेकिन दासों से निर्देश प्राप्त करने को तुच्छ समझ, उन्होंने परमेश्वर के उपासकों को उपहारों का लालच देकर भरमाना चाहा, और जब वे इसमें असफल रहे तो उन्हें धमकियों और निर्दयता का सहारा लेकर जीतना चाहा। PPHin 258.3

इज़राइल के पुरनियों ने अपने पूर्वजों को दी गई परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को दोहराकर अपने इजराइली भाईयों के डूबते विश्वास को जीवित रखने का प्रयत्न किया व उन्हेंउनके छुटकारे की उस भविष्यद्वाणीका स्मरण कराया, जो युसुफ ने मृत्युपूर्व की थी । कुछ सुनते थे और विश्वास करते थे। दूसरे, अपने चारों ओर की परिस्थितियों को देखकर आशा भी नहीं करना चाहते थे। जब मिस्रियों को अपने दासों में किये गये प्रचार के बारे में सूचित किया गया, तो उन्होंने उनकी उपेक्षाओं का उपहास उड़ाया और उनके परमेश्वर की सामर्थ्य का तिरस्कारपूर्ण खंडन किया। उन्होंने इज़राइलियों की दासों का राष्ट्र जैसी परिस्थिति की ओर संकेत कियाऔर ताना मारते हुए कहा, "यदि तुम्हारा परमेश्वर भला और दयालु है, और मिस्र के देवी देवताओं से अधिक शक्तिशाली है, तो वह तुम्हें एक स्वतन्त्र जाति क्यों नहीं बनाता? उन्होंने उनका ध्यान अपनी ओर खींचा । वे इज़राइलियों द्वारा नांमाकित झूठे देवी देवताओं की आराधना करते थे, लेकिन वे एक समृद्ध और शक्तिशाली राष्ट्र थे। उन्होंने कहा कि उनके देवी-देवताओं ने उन्हें समृद्धि का आशीर्वाद दिया और दासों के तौर पर इज़राइलियों को उन्हें दिया और वे यहोवा के भक्तों को नष्ट करने और उत्पीड़ित करने की अपनी शक्ति में गर्व का आभास करते। फिरौन स्वयं घमण्ड के साथ कहता था कि इब्रियों का परमेश्वर उन्हें उसके हाथ से नहीं छड़ा सकता था। PPHin 259.1

इस तरह के कथन सुनकर कई इज़राइली हताश हो गए। उनकी दशा कुछ ऐसी ही थी जैसी मिस्रियों ने बताई थी। वे यथार्थ में दास थे और उन्हें वे सब अत्याचार सहन करने थे जो उनके कठोर

अधिकारी उन पर करते थे। उनके बच्चों को ढूँढ-ढूँढ कर मारा जाता था, और उनका अपना जीवन बोझ से कम न था। लेकिन फिर भी वे स्वर्ग के परमेश्वर की आराधना कर रहे थे। यदि यहोवा यथार्थ मेंउन देवी-देवताओं से श्रेष्ठ था तो वह उन्हें मूर्तिपूजको की दासता में नहीं छोड़ेगा। लेकिन जो परमेश्वर के प्रति निष्ठावान थे वे यह भी जानते थे कि यह परमेश्वर ने उनके उससे दूर हो जाने के कारण, उनके अधर्मी जातियों के साथ अन्तर्जातीय विवाह करने वमूर्तिपूजा का पथ पकड़ने के कारण परमेश्वर ने उन्हें बन्धुआ बनने दिया और उन्होंने विश्वास के साथ अपने जाति-भाईयों को आश्वासन दिया कि परमेश्वर जल्दी ही उन्हें दमनकारियों के शासन से मुक्त कराएगा। PPHin 259.2

इब्रियों ने सोचा था वे बिना किसी कष्ट या कठिनाई उठाएया उनके विश्वास की विशेष परीक्षा के बगैर अपनी स्वतन्त्रता को प्राप्त कर लेंगे लेकिन अभी वे स्वतन्त्रता के लिये तैयार नहीं थे। उनका परमेश्वर में विश्वास नही के बराबर था और वे परमेश्वर द्वारा उसके समयानुसार इसे सम्भव करने हेतु कठिनाईयों को धेर्यपूर्वक सहन करने को सहमत न थे। कई तो एक अपरिचित देश में स्थानांतरित होने के बजाय दासत्व में रहने में सन्तुष्ट थे और कुछ की आदतें मिस्रियों की आदतों से इतनी मिलती-जुलती हो गई थी कि उन्होंने मित्र में ही रहना उचित समझा। इस कारण परमेश्वर ने फिरौन के सम्मुख अपनी शक्ति के पहले प्रदर्शन के समय उन्हें स्वतन्त्र न कराया। उसने फिरौन की अराजकतावादी भावना को विकसित करने और स्वयं को अपने लोगों पर प्रकट करने के उद्देश्य से कई घटनाओं का पूर्ण रूप से अनदेखा किया। उसकी न्यायसंगतता, शक्ति व प्रेम को देखकर, वे स्वयं मिस्र को छोड़ने का निर्णय लेकर परमेश्वर की सेवा के लिये समर्पित होते ।यदि मिस्र छोड़ने में संकोच करने की हद तक कई इजराएली भ्रष्ट न हुए होते तो मूसा का काम इतना कठिन न हुआ होता। PPHin 260.1

परमेश्वर ने मूसा को लोगों के पास दोबारा जाकर छुटकारे की प्रतिज्ञा के दोहराने और उन्हें ईश्वरीय कृपा-दृष्टि का फिर से आश्वासन देने को कहा, "वह आज्ञानुसार लोगों के पास गया लेकिन उन्होंने उसकी एक न सुनी। पवित्र शास्त्र कहता हे, "इज़राइलियों ने मेरीन सुनी........मन की बैचेनी और दासत्व की करता के कारण ।" फिर से मूसा के पास ईश्वर का सन्देश पहुँचा, "तू जाकर मिस्र के राजा फिरौन से कह कि इज़राइलियों को अपने देश में से निकाल दे।" हतोत्साहित मूसा ने कहा, "देख, इज़राइलियों ने मेरी नहीं सुनी, फिर फिरौन मेरी क्यो सुनेगा?" मूसा से कहा गया कि वह हारून को लेकर फिरौन के सम्मुख जाए और फिर से उससे कह कि वह, "इज़राइलियों को अपने देश से निकाल दे।" PPHin 260.2

उसे सूचित किया गया कि जब तक परमेश्वर मिस्र पर दण्डाज्ञा नहीं भेजेगा और अपनी अपनी शक्ति के संकेत प्रदर्शन से इज़राइल को बाहर न निकाल लूंगा तब तक फिरौन समर्पण नहीं करेगा। विपत्ति की मार से पहले, मूसा को विपत्ति के स्वभाव व प्रभाव का वर्णन करना था ताकि यदि राजा चाहे तो स्वयं को बचा ले। प्रत्येक उपेक्षित दण्ड के पश्चात उससे भी कठोर विपत्ति को आना था जब

तक कि फिरौन का अंहकारी हृदय दीन न हो जाएऔर वह धरती और आकाश के सृजनहार को सच्चा और जीवित परमेश्वर न मान ले। परमेश्वर मिस्रियों को एक अवसर देना चाहता था कि वे अपने प्रबल महापुरूषों की बुद्धिमानी के व्यर्थ होने का व अपने देवी-देवताओं की शक्ति की निर्बलता का आभास कर सके, विशेषकर तब जब यह यहोवा की आज्ञाओं के विरूद्ध हो । वह मिस्र के लोगों को मूर्तिपूजा के लिये दण्ड देना चाहता था और निर्जीव वस्तुओं से प्राप्त आशीर्वाद के उनके दावे का खण्डन करना चाहता था ताकि दूसरी जातियाँ उसकी शक्ति व सामर्थ्य के बारे में सुनें और उसके चमत्कारी महान कार्यों को देखकर केपकेपाएँ, और उसके लोग मूर्तिपूजा से हटकर उसकी सच्ची आराधना करें। PPHin 260.3

मूसा और हारून ने दोबारा राजा के वैभवशाली महल में प्रवेश किया। वहाँ चमचमाते आभूषणों और ऊंचे-ऊंचे स्तम्भों, आकर्षक चित्रकला की कृतियों व अधर्मी देवी-देवताओं की गढ़ी हुई मूर्तियों से घिरे हुए, दास्तव के शिकार वंश के दो प्रतिनिधि, इज़राइल के छुटकारे के लिये परमेश्वर की आज्ञा को दोहराने, उस समय के विद्यमान सबसे शक्तिशाली साम्राज्य के सम्राट के सम्मुख खड़े हुए। राजा ने उनके ईश्वरीय कार्यभार के प्रमाण के रूप में चमत्कार की माँग की। ऐसी माँग पर प्रतिक्रिया के सम्बन्ध में मूसा और हारून को निर्देश दिया गया था, और हारून ने लाठी को पकड़कर फिरौन के समाने फेंक दिया। लाठीतुरन्त सर्प बन गईं। सम्राट ने अपने बुद्धिजीवियों व तान्त्रिकों को बुलवाया, "उन्होंने भी अपनी-अपनी लाठी को नीचे डाला और वे सर्प बन गईं, लेकिन हारून की लाठी ने उनकी लाठियों को निगल लिया।" पहले से भी अधिक संकल्प के साथ, राजा ने अपने जादूगरों को शक्ति में मूसा और हारून के तुल्य घोषित किया, उसने परमेश्वर के दासों को बहरूपिया बताया और स्वयं को उनकी माँगो का प्रतिरोध करके सुरक्षित महसूस किया। लेकिन फिर भी, उनके सन्देश से घृणा करते हुए भी ईश्वरीय शक्ति ने उन्हें हानि पहुँचाने से रोक रखा। PPHin 261.1

वह मूसा और हारून में निहित शक्ति या कोई मानवीय प्रभाव नहीं, वरन् परमेश्वर का हाथ था, जिसने उनके माध्यम से फिरीन के सम्मुख वे चमत्कार दिखाए। इन चिन्हों और चमत्कारों का प्रयोजन, फिरीन को यह विश्वास दिलाने के लिये किया गया कि मूसा को उस महान "मैं हूँ" ने भेजा था और यह कि राजा का ये कर्तव्य था कि वो इज़राइलियों को देश में जाने दे ताकि वे जीवित परमेश्वर की उपासना कर सके। जादूगरों ने भी चिन्ह और चमत्कार दिखाए, परवह केवल उनके कौशल से नहीं वरन् उनके देवता शैतान की शक्तिसे, जिसने यहोवा के कार्यों के प्रतिरूप दिखाने में उनकी सहायता की थी । PPHin 261.2

जादूगरों ने अपनी लाठियों को यथार्थ में सर्प तो नहीं बनाया, लेकिन महान कपटी शैतान की सहायता से सर्प का प्रतिरूप उत्पन्न किया। जीवित सर्पों को लाठी में परिवर्तित करना शैतान की शक्ति से बाहर था। बुराई के राजकुमार के पास एक पतित स्वर्गदूत का ज्ञान और शक्ति तो थे,

लेकिन जीवन देने या लेने का उसे अधिकार नहीं है, ये विशेषाधिकार केवल परमेश्वर का है। लेकिन जो भी शैतान के बस में था, उसने किया, उसने एक प्रतिरूप उत्पन्न किया। मनुष्य की दृष्टि में लाठियाँ सर्प में परिवर्तित हो गई। ऐसा फिरौन और उसके दरबारियों का विश्वास था। उनकी आकृति में ऐसा कुछ नहीं था जो उन्हें मूसा द्वारा उत्पन्न किये गए सर्प से भिन्न बताए। हालाँकि परमेश्वर ने मूसा के सर्पो को कृत्रिम सर्पों को निगलने दिया लेकिन इस घटना को फिरौन ने परमेश्वर के सामर्थ्य का कार्य नहीं वरन् अपने जादूगरों की जादूगरी से श्रेष्ठ जादूगरी का परिणाम माना । PPHin 262.1

पवित्र आज्ञा का प्रतिरोध करने में फिरौन अपने हठीलेपन को सही ठहराना चाहता था और इस कारण वह मूसा के माध्यम से किये गए परमेश्वर के चमत्कारों को उपेक्षित ठहराने के बहाने ढूँढ रहा था। शैतान ने उसे वही दिया जो उसे चाहिये था। जादूगरों के माध्यम से कराये गए काम से उसने मिम्रियों को यह जताया कि मूसा और हारून केवल जादूगर और तान्त्रिक थे और उनके द्वारा लाया गया सन्देश एक श्रेष्ठतर हस्ती के पास से आने वाले सन्देश के समान माननीय होने का दावा नहीं कर सकता। इस प्रकार शैतान द्वारा उत्पन्न प्रतिरूप ने मिस्रियों को उनके अतिक्रमण में प्रबल करने और विश्वास के विरूद्ध फिरौन के हृदय कठोर करने के उद्देश्य को प्राप्त किया। शैतान मूसा और हारून के इस विश्वास को तोड़ना चाहता था कि उनको दिये गए विशेष कार्य का स्रोत ईश्वरीय है, ताकि वह अपने साधनों को सफल कर सके। वहइसके पक्ष में नहीं था किइज़राइलियों को जीवित परमेश्वर की उपासना करने के लिये दासत्व से मुक्ति दीजाए। लेकिन जादूगरों के माध्यम से अपने चमत्कारों का प्रदर्शन करने में बुराई के राजकुमार का और भी बड़ा लक्ष्य था। उसे भली भांति ज्ञात था कि इज़राइल के लोगों को दासत्व के बन्धन से छड़ाने में मूसा मसीह का आदिरूप था-वह मसीह जिसे मानव परिवार पर पाप के शासन का अन्त करना था। उसे ज्ञात था कि मसीह के आगमन पर संसार के समक्ष प्रमाण के तौर पर कई चमत्कार घटित कराए जाएँगे कि मसीह को परमेश्वर द्वारा भेजा गया हैं। मूसा के द्वारा किये गए कृत्य का प्रतिरूप दिखाकर, शैतान न केवल इज़राइल की मुक्ति में बाधा उत्पन्न करना चाहता है, आने वाले युगों के लिये ऐसा प्रभाव छोड़ना चाहता था कि लोगों का मसीह के चमत्कारों पर से विश्वास समाप्त हो जाए। शैतान मसीह के काम का प्रतिरूप उत्पन्न करने और अपने आधिपत्य और शासन की स्थापित करने के लिये निरन्तर प्रयत्नशील रहता है। वह मनुष्य से मसीह के चमत्कारों का वर्णन इस प्रकार करवाता है कि वे मनुष्य के कौशल और सामर्थ्य का परिणाम प्रतीत होता हैं। कई लोगों के मन में वह मसीह के परमेश्वर का पुत्र होने के विश्वास को नष्ट कर देता है और उन्हें उद्धार की योजना द्वारा दया के प्रस्ताव को अस्वीकार करा देता है। PPHin 262.2

मूसा और हारून को दूसरे दिन की प्रातः ही नदी के किनारे जाने का निर्देश दिया गया जहां राजा प्रतिदनि आने का अभ्यस्त था। मिस्र के लिये नील नदी का अतिप्रवाह खाद्य सामग्री और धन सम्पत्ति का स्रोत था, और इस कारण नील नदी को पूजनीय माना जाता था, और राजा वहाँ प्रतिदिन श्रद्धांजलि अर्पित करने आता था। यहाँ दोनो भाईयों ने सन्देश को फिर से दोहराया और उन्होंने

लाठी को उठाकरजल पर मारा। नदी का सारा जल लहू बन गया और नील नदी में जो मछलियाँ थी वे मर गई, और नदी से दुर्गन्ध आने लगी। घरों का पानी, टंकियों में रखा हुआ पानी भी लहू में परिवर्तित हो गया। तब "मिस्र के जादूगरों ने भी अपने तंत्र-मंत्र से वैसा ही किया" और "फिरौनने इस पर भी ध्यान नहीं दिया, और मुह फेर कर घर चला गया।" सात दिनों तक यह विपत्तति कायम रही लेकिन इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। PPHin 263.1

फिर से नदियों, नहरों और झीलों के ऊपर लाठी वाला हाथ बढ़ाया गया ओर नदी में से मेंढक बाहर निकलकर पूरे मिस्र में फैल गए। उन्होंने घरों पर आक्रमण कर, शयन कक्षों, भट्टे और आटा गूँधने वाली थालियों पर भी धावा बोल दिया। मेंढक को मिस्री लोग पूज्य मानते थे इसलिये वे उसे नष्ट नहीं करना चाहते थे, लेकिन वे चिपचिपे जीव अब असहनीय हो गए थे। वे फिरौन के महल में भी भर गये और फिरौन उनके निवारण के लिये उतावला हो गया। जादूगर मेढ़को को उत्पन्न करने के लिये तो आए थे, लेकिन वे उन्हें हटा न सके। यह देखकर फिरौन थोड़ा सा दीन हुआ। उसने हारून और मूसा को बुलाया और उनसे कहा, "यहोवा से विनती करो कि वह मेढ़को को मुझ से और मेरी प्रजा से दूर करें, और में इज़राइली लोगों को जाने दूँगा, जिससे वे यहोवा के लिये बलिदान करें।" राजा को उसी की ढींगमार बातों का स्मरण कराकर, मूसा व हारून ने एक समय नियुक्त करने को कहा, जब वे मेंढ़कों को दूर करने की विनती कर सकते थे। फिरौन ने अगला दिन निर्धारित किया, इस गुप्त आशा के साथ कि तब तक मेंढक स्वयं ही विलोप हो जाएंगे और वह इज़राइल के परमेश्वर के आगे समर्पण करने के घोर अपमान से बच जाएगा। लेकिन मेंढकों का आक्रमण नियमित समय तक चलता रहा, और फिर जब सारे मिस्रमें मेंढक मर गये तो उनके दुर्गन्धित शवों ने वातावरण कों दूषित कर दिया। PPHin 263.2

परमेश्वर उन्हें क्षण भर में मिट्टी में मिला सकता था, लेकिन उसने ऐसा इसलिये नहीं किया क्योंकि मेंढकों को इस तरह हटाए जाने के बाद राजा और उसकी प्रजा इसे जादूगरी या तनन्‌्त्र-मन्त्र का परिणाम बताते। मेंढक मर गये, और उन्हें इकट्ठा करके उनके ढेर लगा दिए गए। इसमें राजा और सम्पूर्ण मिस्र के लिये यह प्रमाण था जिसके लिये उनकी व्यर्थ तक-शास्त्र की विद्या भी यही कह सकती थी कि यह कार्य जादू से सम्पन्न नहीं हुआ, वरन् वह स्वर्ग के परमेश्वर की दण्डाज्ञा थी। PPHin 264.1

"परन्तु जब फिरौन ने देखा कि अब आराम मिला है, तब उसने फिर अपने मन को कठोर कर लिया।" परमेश्वर की आज्ञानुसार हारून ने लाठी को ले हाथ बढ़ाया और भूमि की धूल पर मारा और सर्वत्र धूल जुएँ बन गई। फिरौन ने जादूगरों को वैसा ही करने को बुलाया लेकिन वे जुएँ न बना सके। इस तरह परमेश्वर का काम शैतान के काम से श्रेष्ठतर प्रमाणित हुआ। जादूगरों ने स्वयं स्वीकार किया, "यह तो परमेश्वर के हाथ का काम है।" लेकिन फिरौन का मन कठोर होता गया। PPHin 264.2

विनती व चेतावनी दोनो प्रभावहीन रही और एक और दण्डाज्ञा दी गईं। उसके घटित होने का समय पहले से ही बता दिया गया, ताकि ऐसा न कहा जाए कि इस विपत्ति का आना आकस्मिक था। घर मक्खियों से भर गए और भूमि पर मक्ख्यिों के झुण्ड के झुण्ड उतर आए, और मक्खियों के कारण वह देश नष्ट हुआ।" ये मक्खियाँ बड़ी और विषैली थी इनका काटना मनृष्य व जंतु दोनों के लिये अत्यन्त पीड़ादायक था। भविष्यद्वाणी के अनुसार, यह विपत्तति गोशेन देश तक नहीं पहुँची। PPHin 264.3

अब फिरौन ने इज़राइलियों को मिस्र में बलिदान करने की अनुमति का प्रस्ताव रखा, लेकिन उन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया "ऐसा करना उचित नहीं" मूसा ने कहा, "क्या हम मिस्रियों के देखते उनकी घृणित वस्तु बलिदान करेंगे तो क्या वे हम पर पथराव न करेंगे?" बलिदान के लिये जिन जानवरों की इब्रियों को आवश्यकता थी वे मिम्रियों द्वारा पूजनीय माने जाते थे और इन जंतुओं को इतने भक्तिभाव से देखा जाता था कि इन्हें संयोगवश मारना भी वह अपराध था जिसके लिये मृत्युदण्ड मिल सकता था। अपने स्वामियों को ठेस पहुँचाए बिना, इब्रियों के लिये मिस्र में उपासना करना असम्भव था। मूसा ने फिर से जंगल में तीन दिन की यात्रा का प्रस्ताव रखा। सम्राट सहमत हो गया, और उसने परमेश्वर के दासों से विनती की कि वे विपत्ति हटाए जाने के लिये उनके निमित्त विनती करें। उन्होंने ऐसा करने का वचन दिया लेकिन उसे चेतावनी दी कि वह उनके साथ छल न करें। विपत्ति को स्थगित कर दिया गया, किन्तु लगातार विद्रोह करने के कारण उसका हृदय कठोर हो गया था और वह समर्पण करने को तैयार नहीं था। PPHin 265.1

तत्पश्चात उससे भी अधिक भयानक विपत्ति आई- मैदानों के सभी पशुओं पर मरी। पूजनीय पशु व भारवाहक पशु- गाय-बैल, भेड़े, घोड़े, ऊंट व गधे- सब नष्ट हो गए। यह स्पष्ट रूप से बताया गया था कि इब्रियों पर विपत्ति न आएगी, और इज़राइलियों के घरों पर सन्देशवाहकों को भेजकर फिरौन ने मूसा की घोषणाकी सच्चाई को प्रमाणित किया, "इज़राइलियों का एक भी पशु नहीं मरा ।" फिर भी फिरौन हठपूर्वक अड़ा रहा। PPHin 265.2

इसके बाद मूसा को भट्ठी में से एक-एक मुट्ठीराख लेकर "फिरौन के सामने आकाश की ओर जड़ा देने" को कहा गया। यह कृत्य अत्यन्त महत्वपूर्ण था। चार सौ वर्ष पूर्व परमेश्वर ने अब्राहम को एक जलते हुए दीपक और धुंएदार भट्ठी के आकार के नीचे अपने लोगों के भविष्य में होने वाले अत्याचार को दिखाया था। उसने अत्याचारियों पर दण्डाज्ञा की और बन्धकों को बहुत से धन के साथ लाने की घोषणा की थी। मिस्र में इज़राइल, यातना की भट्ठी में बहुत लम्बा समय काटा था। मूसा का यह कृत्य उनके लिये आश्वासन था कि परमेश्वर को अपनी वाचा का ध्यान है और उनकी मुक्ति का समय आ गया था। PPHin 265.3

जैसे-जैसे राख आकाश की ओर बिखेरी गईं, उसके सूक्षम कण पूरे मिस्र देश में फैल गए और जहाँ पर भी वह गिरी, "मनुष्य और पुशओं दोनो पर फफोले और फोड़े बन गई ।" पुजारियों और

जादूगरों ने अब तक फिरौन को उसकी हठधर्मिता में प्रोत्सहान दिया था, लेकिन अब दण्डाज्ञा उन तक भी पहुँच गईं। पीड़ादयक और घृणास्पद बीमारी से ग्रसित, वे इज़राइल के परमेश्वर के विरूद्ध नहीं लड़ सके और, उनकी दिखावटी योग्यता ने उन्हें और भी तुच्छ बना दिया । जब वे अपने ही शरीर की सुरक्षा नहीं कर पाए तो पूरे राष्ट्र को जादूगरों पर विश्वास करने की मूर्खता को दिखाया गया। PPHin 266.1

लेकिन फिर भी फिरीन का हृदय और भी कठोर हो गया और अब परमेश्वर ने उसके पास यह सन्देश भेजा, “अब के बाद मैं तुझ पर, और तेरे कर्मचारियों, और तेरी प्रजा परसब तरह की विपत्तियाँ डालूँगा, जिससे तू जान ले कि सारी पृथ्वी पर मेरे तुल्य कोई दूसरा नहीं है........परन्तु सचमुच में मैंने इसी कारण तुझे बनाए रखा है कि अपनी सामर्थ्य दिखाऊं, और अपना नाम सारी पृथ्वी पर प्रसिद्ध करूं ।” ऐसा नहीं था कि परमेश्वर उसे इसी उद्देश्य से आस्तित्व में लाया था, वरन् उसी के प्रयोजन से कई घटनाओं का अनदेखा किया गया, ताकि इज़राइल की मुक्ति के नियुक्त समय में उसे सिंहासन पर बैठाया जाए। हालाँकि इस अहंकारी सम्राट ने अपने अपराधों के कारण परमेश्वर की दया का पात्र नहीं रहा था, लेकिन उसका जीवन इसलिये संरक्षित रखा गया ताकि उसके हठीलेपन के माध्यम से परमेश्वर मिस्र देश में अपने चमत्कारों का प्रदर्शन करे । घटनाओंको सुव्यवस्थित करना परमेश्वर का कार्य था। वह सिंहासन पर इए करूणामयी राजा को बैठा सकता था, जो ईश्वरीय शक्ति के प्रबल प्रदर्शनों का प्रतिरोध करने का दुस्साहस न करता, लेकिन उस दशा में परमेश्वर की योजनाएँ सफल न होती। उसके लोगों को मिस्रियों की अत्यन्त कष्टदायक निर्दयता का अनुभव करने दिया गया, ताकि वे मूर्तिपूजा के दुष्प्रभाव के सम्बन्ध में धोखा न खाएं । फिरौन के साथ अपने व्यवहार में परमेश्वर ने मूर्तिपूजा के लिये उसकी घृणा और उत्पीड़न और निर्दयता को दण्डित करने के संकल्प को प्रकट किया। PPHin 266.2

फिरौन के सम्बन्ध में परमेश्वर ने घोषणा की थी, “में उसके हृदय को कठोर कर दूँगा और वह लोगों को जाने न देगा”-निर्गमन 4:21 । राजा के हृदय को कठोर करने के लिये किसी अतिप्राकत शक्ति का प्रयोग नहीं किया गया, परमेश्वर ने फिरौन को ईश्वरीय शक्ति के ठोस प्रमाण दिए लेकिन सम्राट ने प्रकाश पर ध्यान देने से मना कर दिया। अनन्त शक्ति का प्रत्येक प्रदर्शन जिसकी उसने उपेक्षा की, उसे उसके अतिक्रमण में और दृढ़ बनाता गया। पहले चमत्कार को अस्वीकृत करके जो विद्रोह का बीजउसने बोये थे, उन्होंने अपनी पहली उपज उत्पन्न की। जैसे-जैसे वह अपने ही रास्ते पर चलता रहा, और अपने हठीलेपन में बढ़ता गया, उसका हृदय कठोर होता चला गया और अन्त में उसे पहलौठों के ठण्डे पड़े निर्जीव चेहरों को देखना पड़ा। PPHin 266.3

परमेश्वर, पाप को धिक्कारते हुए व चेतावनियाँ देते हुए, अपने दासों द्वारा मनुष्य से बात करता है। वो हर एक को गलतीसुधारने का अवसर देता है, इससे पहले कि वह गलती उसके चरित्र का हिस्सा बन जाए, लेकिन यदि कोई सुधार होने देने से मनाही करता है तो पवित्र सामर्थ्य उसके अपने

कत्य की प्रवृति का प्रतिरोध करने के लिये हस्तक्षेप नहीं करता। फिरीन को एक ही बात को दोहराना आसान लगा। वह पवित्र आत्मा के विरूद्ध अपने हृदय को कठोर कर रहा था। प्रकाश की और उपेक्षा ने उसे वहां लाकर खड़ा कर दिया जहाँ पहले से अधिक गहरा प्रभाव भी एक स्थायी संस्करण छोड़ने में निष्प्रभाव होता। PPHin 267.1

जो एक बार प्रलोभन में पड़ जाते है वे दूसरी बार और तत्परता से प्रलोभन में पड़ जाएंगे। पाप का प्रत्येक दोहराव उसमें प्रतिरोध की शक्ति को कम कर देता है, उसे अंधा कर देता है और विश्वास का गला घोंट देता है। अति भोग का प्रत्येक बोया हुआ बीज फलवन्त होगा। परमेश्वर उपज को बाधित करने के लिये कोई चमत्कार नहीं करता, "मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा"-गलतियो 6: जो विद्यर्मी साहस और पवित्र सत्य के प्रति उदासीनता प्रकट करता है, वह उसी की उपज काट रहा है जो उसने स्वयं बोई है। इस प्रकार कई लोग एक समय में उनकी आत्माओं को झकझोर कर रख देने वाले सत्यों को उदासीन उपेक्षा के साथ सुनने आते है। उन्होंने सत्य के प्रति उपेक्षा और प्रतिरोध का बीजारोपण किया और ऐसीही वह फसल है जो वे काठते हैं। PPHin 267.2

जो इस विचार से अपराधबोध से ग्रसित अन्तरात्मा को शान्त करने का प्रयत्न करते है कि वे जब चाहे पाप के रास्ते को बदल सकते हैं और दया के निमन्त्रण को तुच्छ समझ सकते है और फिर भी बार-बार प्रभावित हो सकते है, वे यह रास्ता अपने आपको संकट में डालकर चुनते हैं। वे सोचते है अपना सारा प्रभाव महान विद्रोही के पक्ष में डालने के बाद, परम संकट के क्षणों में जब वे खतरों से घिरे होंगे, वे सरदार बदल लेंगे। लेकिन ऐसा करना आसान नहीं होता। पापमय अतिभोग ग्रस्त जीवन का अभ्यास, शिक्षण व अनुभव उनके चरित्र को पूर्ण रूप से ढाल देते है कि फिर वे यीशु की छवि को ग्रहण नहीं सकते हैं । यदि उनके मार्ग में प्रकाश का अभाव होता तो बात कुछ और होती। दया ने हस्तक्षेप कर उन्हें उसके प्रस्तावों को स्वीकार करने का अवसर दिया होता, लेकिन जब प्रकाश को बहुत समय तक अस्वीकार व तिरस्कत किया जाता है, तो उसे हटा लिया जाएगा। PPHin 267.3

आने वाली अगली विपत्ति, ओलों की वर्षा की चेतावनी फिरौन को दी गई, "अब लोगो को भेजकर अपने पशुओं को और मैदान में जो कुछ तेरा है सब को फरर्ती से आड़ में छिपा ले, नहीं तो जितने मनुष्य या पशु मैदान में रहे और घर में इकट्ठा न किए जाएं उन पर ओले गिरेंगे और वे मर जाएंगे ।" वर्षा या ओले दोनो ही मिस्र में अस्वाभाविक थे, और ऐसा तुफान, जैसा भविष्यद्वाणी में बताया गया था, कभी नहीं देखा गया था। यह सूचना शीघ्रता से फैल गयी, और जिन्हें परमेश्वर के कथन पर विश्वास था, उन्होंने अपने पशुओं को इकटठा कर लिया, लेकिन जिन्होंने चेतावनी का तिरस्कार किया उन्होंने अपने पशुओं को मैदान में ही छोड़ दिया। इस प्रकार न्याय करने के दौरान भी परमेश्वर की दयालुता का प्रदर्शन हुआ, लोगों को परखा गया। और यह बताया गया कि उसके सामर्थ्य के प्रदर्शन से कितनों को परमेश्वर का भय मानने के लिये प्रेरित किया गया। PPHin 268.1

तूफान वैसे ही आया जैसा कि बताया गया था- मेघगर्जन और ओले, और उसके साथ आग मिली हुई, "और वे ओले इतने भारी थे कि जब से मिस्र देश बसा था तब से मिस्र भर में ऐसे ओले कभी नहीं गिरे थे। इसलिये मिस्र भर के खेतों, क्या मनुष्य, क्या पशु, जितने थे सब ओलों से मारे गए और ओलों से खेत की सारी उपज नष्ट हो गई, और मैदान के वृक्ष भी नष्ट हो गए।" जहां से भी विनाश का स्वर्गदूत निकला, वहाँ बरवादी और निर्जनता के चिन्ह छोड़ गया। केवल गोशेन प्रदेश को छोड़ दिया गया। मिस्रियों को उदाहरण देकर समझाया गया कि पृथ्वी जीवित परमेश्वर के नियन्त्रण में है, आंधी और पानी भी उसकी आज्ञा को मानते है, और उसकी आज्ञाका पालन करने में ही सुरक्षा है। PPHin 268.2

पवित्र दण्डाज्ञा के उँडेले जाने पर पूरा मिस्र कॉप उठा। फिरौन ने तुरन्त दोनो भाईयों को बुलाया और उसने कहा, "इस बार मैंने पाप किया है, यहोवा धर्मी है, और मैं और मेरी प्रजा अधर्मी है। मेघों का गरजना और ओलों का बरसना तो बहुत हो गया, अब यहोवा से विनती करो, तब मैं तुम लोगो को जाने दूँगा, और तुम ना रोके जाओगे ।" मूसा ने उत्तर दिया "नगर से निकलते ही मैं यहोवा की ओर हाथ फैलाऊंगा, तब बादल का गरजना बन्द हो जाएगा और फिर ओले ना गिरेंगे, इससे तू जान लेगा कि पृथ्वी यहोवा की ही है। तो भी मैं जानता हूँ कि न तो तू और न तेरे कर्मचारी यहोवा परमेश्वर का भय मानेंगे।" PPHin 268.3

मूसा को ज्ञात था कि संघर्ष अभी समाप्त नहीं हुआ था। फिरौन के वचन और पापों का अंगीकार करना उसके मन या हृदय में सुधारवादी परिवर्तन का प्रभाव नहीं थे, वरन् उसके भय और यन्त्रणा से उत्पन्न हुए थे। लेकिन मूसा ने उसका निवेदन स्वीकार करने का वचन दिया क्योंकि उसे और हठीला होने का अवसरनहीं देना चाहता था। तूफान की प्रचण्डता पर ध्यान देते हुए नबी चल पड़ा, और फिरीन और उसके लोग परमेश्वर की अपने दूत को संरक्षित रखने के समार्थ्य के साक्षी थे। नगर से बाहर जाकरउसने, "यहोवा की ओर हाथ फैलाए, तब बादलों का गरजना और ओलों का बरसना बन्द हुआ और पृथ्वी पर अधिक वर्षा न हुई ।" लेकिन जैसे ही फिरौन भय-युकत हुआ, उसका हृदय फिर से हठी हो गया। PPHin 269.1

परमेश्वर ने मूसा से कहा, "फिरीन के पास जा, क्योंकि मैंने ही उसके और उसके कर्मचारियों के मन को इसलिये कठोर कर दिया है कि अपने चिन्ह उनके बीच में दिखलाऊँ, जिससे तुम लोग यह जान लोगे कि मैं यहोवा हूँ। प्रभु अपनी सामर्थ्य का प्रदर्शन इसलिये कर रहा था कि इज़राइल अपने विश्वास की पुष्टि कर सके कि वह ही एकल सच्चा और जीवित परमेश्वर है। वह उनमें और मिस्रियों के बीच अन्तर का ठोस प्रमाण देने वाला था और सब जातियों को यह बताने वाला था कि इब्री, जिनसे वे इतनी घृणा और जिन पर इतना अत्याचार करते थे वे स्वर्ग के परमेश्वर की सुरक्षा में थे। PPHin 269.2

मूसा ने सम्राट को चेतावनी दी कि यदि वह अभी भी हठधर्मी बना रहेगा, तो टिडियों की विपत्ति भेजी जाएगी, जो संपूर्ण पृथ्वी पर छा जाएगी और ओलों की मार से प्रत्येक हरी वस्तु जो बची हुई है, को खा जाएंगी, वे सारे मिस्रियों के घरों में भर जाएंगी और महल में भी और "इतनी टिडियां तेरे बाप-दादा ने या उनके पुरखाओं ने जब से पृथ्वी पर जन्मे तब से आज तक कभी न देखी।" PPHin 269.3

फिरोन के परामर्शदाता हक्का-बक्का रह गए। अपने पशुओं के मरने से मिस्र को बहुत हानि पहुँचती थी। ओलो की मार से कईलोगों की मृत्यु हो गई थी। न तो किसी वृक्ष पर कुछ हरियाली रह गई और न ही खेत में अनाज रह गया था। इब्रियों के परिश्रम के परिणामस्वरूप जो कुछ भी उन्होंने प्राप्त किया था वे उसे शीघ्रता से गँवा रहे थे। पूरे मिस्र पर भुखमरी का खतरा मण्डरा रहा था। राजकुमारों और दरबारियों ने आग्रहपूर्वक कोध में यह मांग की, "वह जन कब तक हमारे लिये फन्दा बना रहेगा? उन लोगों को जाने दे कि वे अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करें। क्या तू अब तक नहीं जानता कि सारा मिस्र नष्ट हो गया है?" PPHin 270.1

मूसा और हारून को फिर से बुलवाया गया और फिरौन ने उनसे कहा, "चले जाओ, अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करो, परन्तु वे जो जाने वाले हैं कौन-कौन है? PPHin 270.2

मूसा ने कहा, "हम तो बेटे-बेटियों, भेड़-बकरियों, गाय-बैलों समेत वरन् बच्चों से बूढ़ो तक सब के साथ जाएँगे, क्योंकि हमें यहोवा के लिये पर्व करना है। PPHin 270.3

राजा कोध से भर गया, "यहोवा तुम्हारे संग रहे यदि मैं तुम्हें बच्चों समेत जाने देता हूँ देखो तुम्हारे मन में बुराई है। नहीं, ऐसा नहीं होने पाएगा, तुम पुरूष ही जाकर यहोवा की उपासना करो, तुम यही तो चाहते थे।" और वे फिरोन की उपस्थिति से निकाल दिये गए। PPHin 270.4

फिरौन नेइज़राइलियों से कठोर परिश्रम करवाकर उनका विनाश करने का प्रयत्न किया था लेकिन अबवह उनके छोटे-छोटे बच्चों के प्रति नम्रतापूर्ण व्यवहार और उनके कल्याण में गहरी रूचि दिखाने की चेष्टा कर रहा था। उसका वास्तविक उद्देश्य था कि वह स्त्रियों और बच्चों को जाने वाले पुरूषों की जमानत के तौर पर रखे। PPHin 270.5

मूसा ने अब मिस्र की भूमि पर अपनी लाठी वाला हाथ बढ़ाया और पूरब दिशा से एक हवा चली और अपने साथ टिडियों को ले आई। "टिडियों का दल बहुत भारी था, न तो उनसे पहले ऐसी टिडिडियां आई थी, और न उनके बाद ऐसी फिर आएँगी।" वे सारी धरती पर छा गई, यहाँ तक कि देश में अन्धकार छा गया, और बची हुई प्रत्येक हरित वस्तु को खा गईं। फिरौन ने शीघ्र ही नबी को बुलाकर कहा, "मैं तो तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का और तुम्हारा भी अपराधी हूँ। इसलिये केवल अब की बार मेरा अपराध क्षमा करो, और अपने परमेश्वर यहोवा से विनती करो कि वह मेरे ऊपर से इस मृत्यु को दूर करे।" उन्होंने ऐसा ही किया, और एक बहुत प्रचण्ड पश्चिमी हवा टिडियों को

लाल समुद्र की ओर उड़ाकर ले गईं। लेकिन फिरौन अपने हठपूर्ण संकल्प पर डटा रहा। PPHin 270.6

मिस्र के लोग निराशा की ओर बढ़ रहे थे। उन पर आयी विपत्तियाँ असहनीय प्रतीत हो रही थी और वे भविष्य को लेकर भयभीत हो गए थे। राष्ट्र ने फिरौन को उनके देव के प्रतिनिधि के रूप में पूजा था लेकिन अब कईयों को विश्वास हो गया था कि वह उसके विरूद्ध खड़ा था, जिसने प्रकृति की प्रत्येक शक्ति को अपनी इच्छा का कर्मकर बनाया था। इब्री दास, जिनपर परमेश्वर की आश्चर्यजनक कृपा-दृष्टि थी, अपने छुटकारे के लिये आश्वस्त थे। अब से उनके कठोर अधिकारी उन पर पहले जैसा अत्याचार नहीं करते थे। सम्पूर्ण मिस्र दासों पर किये गए अत्याचारों के कारण उनके प्रतिशोध की आंशका से व्याप्त था। हर तरफ भयभीत मनुष्य के होठों पर एक ही प्रश्न था, "अब क्या होना वाला है?" PPHin 271.1

अकस्मात ही पूरे देश पर अन्धकार छा गया जो इतना घोर व प्रगाढ़ था कि 'उसे टटोला जा सकता था।' ना केवल लोग प्रकाश से वंचित हो गए वरन् संपूर्णवातावरण इतना दमघोंटू हो गया कि श्वास लेने में कठिनाई होने लगी। "तीन दिनों तक न तो किसी ने किसी को देखा, और न कोई अपने स्थान से उठा, परन्तु सारे इज़राइलियों के घरों में उजियाला था।" सूर्य और चन्द्रमा मिस्रियों के लिये पूजा के पात्र थे; इस रहस्यमयी अन्धकार में, दासों की मुक्ति कादायित्व लेने वाली शक्ति द्वारा मनुष्य और उनके देवी-देवताओं एक सामन मारे गये। फिर भी भयानक होते हुए भी यह दण्डाज्ञा परमेश्वर की संवेदना और उसकी नष्ट न करने की इच्छा का प्रमाण है। अन्तिम और सबसे भयानक विपत्ति से पहले वह लोगों को प्रायश्चित और चिन्तन का समय देना चाहता था। PPHin 271.2

डर से प्रभावित होकर फिरौन ने एक और अनुदान दिया। अन्धकार के तीसरे दिन उसने मूसा को बुलाया, और लोगों की निकासी की सहमति इस प्रतिबन्ध के साथ दी कि वे अपने पशु पीछे छोड़ जाएँ। दृढ़ संकल्प के साथ इब्री ने कहा, "उनका एक खुर तक न रहेगा।" "जब तक हम वहाँ नहीं पहुँचे तब तक हम नहीं जानते कि क्या-क्या लेकर यहोवा की उपासना करनी होगी।" राजा का कोध आपे से बाहर हो गया। वह बोला, "मेरे सामने से चला जा, और सचेत रह मुझे अपना मुख फिर न दिखाना, क्योंकि जिस दिन तू मुझे मुहँ दिखाएगा, उसी दिन तू मारा जाएगा ।" माँ ने कहा, "तूने ठीक कहा है, तेरे मुहँ को फिर कभी न देखूँगा।" PPHin 271.3

"वह पुरूष मूसा, मिस्र देश में फिरीन के कर्मचारियों और साधारण लोगों की दृष्टि में अति महान था।" मिस्रियों के द्वारा मूसा का श्रद्धायुक्त भय के साथ आदर किया जाता था। राजा उसे हानि पहुँचाने का दुस्साहस नहीं कर सकता था, क्योंकि लोगों की दृष्टि में केवल मूसा ही विपत्तियों को दूर करने के योग्य था, वे चाहते थे कि इज़राइलियों को मिस्र छोड़ कर जाने दिया जाए। वे राजा और पुजारी ही थे जो अन्त तक मूसा की माँगों का विरोध करते रहे।

अध्याय 24—फसह का पर्व

यह अध्याय निर्गमन 11, 12:1-32 पर आधारित है

जब इज़राइल के छुटकारे की माँग पहली बार मिस्र के राजा के सम्मुख प्रस्तुत की गई थी, उस समय सबसे भयानक विपत्ति की चेतावनी भी दे दी गई थी । मूसा को निर्देशित किया गया था कि वह फिरौन से कहे, "यहोवा यों कहता है, कि इज़राइल मेरा पुत्र वरन मेरा पहलौठा है, और मैं तुझ से कहता हूँ कि मेरे पुत्र को जाने दे कि वह मेरी सेवा करे, और तूने अब तक उसे जाने नहीं दिया, इस कारण मैं अब तेरे पुत्र वरन् तेरे पहलौठे को घात करूँगा।" हालाँकि मिस्रियों द्वारा तिरस्कृत, इज़राइलियों को परमेश्वर का आदर प्राप्त था। उन्हें उसकी व्यवस्था के संग्रहालय होने के लिये अलग किया गया था। जैसे कि पहलौठे का स्थानभाईयों में श्रेष्ठ होता था उसी प्रकार इज़राइलियों को मिले हुए विशेष आशीर्वाद और विशेषाधिकारों के कारण वेदूसरे राष्ट्रों में प्रतिष्ठित थे। PPHin 273.1

जिस दण्डाज्ञा की मिस्र को चेतावनी दी गई थी, वह आने को थी। परमेश्वर दया करने में सहनशील व उदार है। अपने ही स्वरूप में बनाए गए प्राणियों के प्रति वह नम्रतापूर्वक व्यवहार करता है। यदि फसल के व अपने पशुओं के नष्ट होने पर मिस्र ने पश्चताप किया होता तो बच्चों को मारा नहीं जाता, लेकिन राष्ट्र ने पवित्र आज्ञा का जिद में आकर प्रतिरोध किया, और अब निर्णायक वार होने को था। PPHin 273.2

मूसा को, मृत्यु की पीड़ा में भी फिरौन की उपस्थिति में प्रकट होने को मना किया गया था, लेकिन विद्रोही सम्राट के पास परमेश्वर का अन्तिम सन्देश पहुँचाया जाना था और फिर से मूसा उसके सम्मुख यह भयानक सूचना लेकर पहुँचा, "यहोवा इस प्रकार कहता है, आधी रात के लगभग मिस्र देश के बीच में जाऊंगा, तब मिस्र के सिंहासन पर विराजने वाले फिरौन से लेकर चक्की पीसने वाली दासी तक के पहलौठे, वरन् पशुओं तक के सब पहलोठे मर जाएंगे। और सारे मिस्र देश में बड़ा हाहाकार मचेगा, यहाँ तक कि उसके समान न तो कभी हुआ और न होगा, पर इज़राइलियों के विरूद्ध क्या मनुष्य, क्या पशु, किसी पर कोई कृत्ता भी न भौंकेगा, जिससे तुम जान लो कि मिस्रियों और इज़राइलियों के बीच यहोवा ने अन्तर रखा है। तब तेरे सब कर्मचारी मेरे पास आकर मुझे दण्डवत करेंगे और कहेंगे, अपने सब अनुचरों समेत निकल जा, और मैं उसके पश्चात निकल जाऊंगा।" PPHin 273.3

इस दःण्डाज्ञा के क्रियान्वन से पूर्व परमेश्वर ने मूसा के द्वारा इज़राइलियों को मिस्र से उनकी निकासी से सम्बन्धित विशेषकर आने वाली विपत्ति से उनके सरंक्षण हेतु निर्देश दिये। प्रत्येक परिवार को, अकेले या दूसरों के साथ मिलकर, एक ननिर्दोष' बकरी के या भेड़ के बच्चे को बलि करके,

कठिंजर जूफे के गुच्छे से उसके लहू को घर के द्वार के दोनों अलंगो और चौखट के सिरे पर' छिड़कना था, ताकि मध्य रात्रि को आने वाला विनाश का स्वर्गदूत उस घर में प्रवेश न करे। रात को उन्हें मास को आग में भूनकर, अखमीरी रोटी और कड़वे सागपात के साथ खाना था, जैसा मूसा ने कहा, "कमर बाँधे पाँव में जूती पहिने और हाथ में लाठी लिये हुए उसे फूर्ती से खाना, वह तो यहोवा का पर्व होगा। PPHin 274.1

परमेश्वर ने घोषणा की, "उस रात को मैं मिस्र देश के बीच में से होकर जाऊंगा, और मिस्र देश के क्या मनुष्य कया, पशु, सब के पहलौठों को मारूँगा, और मिस्र के सारे देवताओं को भी मैं दण्ड दूँगा, मैं यहोवा हूँ। और जिन घरों में तुम रहोगे उन पर वह लहू तुम्हारेलिये चिन्ह ठहरेगा, अर्थात मैं उस लहू को देखकर तुम को छोड़ जाऊंगा, और जब मैं मिस्र देश के लोगों को मारूँगा, तब वह विपत्ति तुम पर नहीं पड़ेगी और तुम नष्ट नहोगे। PPHin 274.2

इस महान छुटकारे की समृति में इज़राइल के लोगों द्वारा व आने वाली पीढ़ियों में भी उस पर्व को मनाया जाना था। "वह दिन तुम को स्मरण दिलानेवाला ठहरेगा, और तुम उसको यहोवा के लिये पर्व जैसे मनाना, वह दिन तुम्हारी पीढ़ियों में सदा की विधि मानकर पर्व माना जाए।"आने वाले वर्षों में भी इस पर्व के मानने के समय उन्हें अपने बच्चों को इस महान छुटकारे की कहानी को अपने बच्चों के लिये दोहरानी थी, जैसा मूसा ने कहा, "यहोवा ने जो मिस्रियों के मारने के समय मिस्र में रहने वाले हम इज़राइलियों के घरों को छोड़कर हमारे घरों को बचाया इसी कारण उसके फसह का यह बलिदान किया जाता है।" PPHin 274.3

इसके अतिरिक्त मनुष्य और पशु दोनों के पहलौठे परमेश्वर के माने जाते थे जिन्हें मोल देकर वापस खरीदा जा सकता था, इस बात की पुष्टि करने के लिये कि जब मिस्र में पहलौठों को मारा गया, इज़राइलियों के पहलौठों को अनुग्रहपूर्ण संरक्षण प्राप्त हुआ, लेकिन पश्चताप की बलि की भेंट के अभाव में वे भी न्याय के अनुसार दूसरों के समान विनाश को प्राप्त होते। परमेश्वर ने घोषणा की, "सब पहलौठे मेरे है, क्योंकि जिस दिन मैंने मिस्र देश में के सब पहलौठों को मारा, उसी दिन मैंने, क्या मनुष्य, क्या पशु इज़राइलियों के सब पहलौठों को अपने लिये पवित्र ठहराया""-गिनती 3:13 ।मिलापवाले कीविधिके संस्थापन के बाद, पवित्र स्थान के काम के लिये परमेश्वर ने लैवी के कुल को चुना, ना कि लोगों के पहलौठों को। उसने कहा, "वे इज़राइलियों में से मुझे पूरी रीति से अर्पण किये हुए हैं, मैंने उनको सब इज़राइलियों के पहलौठे के बदले अपना कर लिया है""-गिनती 8:16फिर भी, सब लोगों को, परमेश्वर की दया की अभिस्वीकृति में अपनेपहलौठे पुत्र का उद्धार-मूल्य चुकाना पड़ता था। (गिनती 18:15, 16) PPHin 274.4

फसह के पर्व को प्रतीकात्मक व संस्मारक होना था जो केवल मिस्र से छुटकारे की ओर ही संकेत न करे, वरन् उस महानतम छुटकारे की ओर संकेत करे जो मसीह के द्वारा, उसके लोगों को पाप के दासत्व से मुक्त कराकर, सम्पन्न होना था। "बलिदान का मेमना' 'परमेश्वर के मेमने' का

प्रतीक है जिसमें हमारे उद्धार की अकेली आशा है। 1 कुरिन्थियों 5:7में प्रेरित कहता है, "हमारा फसह, जो मसीह है बलिदान हुआ है।" फसह के मेमने का मारा जाना पर्याप्त नहीं था, उसका लहू द्वार की चौखटों पर छिड़का जाना था, इसी प्रकार मसीह के लहू की विशेषता हमारी आत्माओं में प्रयुक्त होना चाहिये। हमें विश्वासहोना चाहियेकि वहसंसारकेलिये हीनहीं वरन् हम में से एक-एक के लिये बलिदान हुआ। हमें प्रायश्चित के बलिदान के सदगुण को अपना बना लेना चाहिये। PPHin 275.1

लहू को छिड़कने के उपयोग में लाया गया कठिजंर जूफा शुद्धीकरण का प्रतीक था, जो कोढ़ियों के व मृतकों को छूने से अशुद्ध हुए मनुष्यों के शुद्धीकरण में प्रयोग किया जाता था। भजन संहिता के लेखक की प्रार्थना में इसका महत्व ज्ञात होता है, "जूफा से मुझे शुद्ध कर, तो मैं पवित्र हो जाऊँगा, मुझे धो, और में हिम से भी अधिक श्वेत बनूगा"-भजन संहिता 51:7। मेमने को पूरा, बिना किसी हड्डी के तोड़े हुए पकाया जाना था। इसी प्रकार परमेश्वर के मेमने की भी, जिसे हमारे लिये बलिदान होना था, एक भी हडडी नहीं तोड़ी जानी थी। (यहुन्ना 19:36) यह मसीह के बलिदान की संपूर्णता का प्रतीक था। PPHin 275.2

माँस का सेवन किया जाना था। यह पर्याप्त नहीं है कि हम अपने पापों की क्षमा के लिये मसीह पर विश्वास रखें, उसके वचन के माध्यम से हमें परमेश्वर से लगातार आध्यात्मिक शक्ति और पुष्टिकारक पदार्थ ग्रहण करते रहना चाहिये। मसीह ने कहा है, "जब तक तुम मनुष्य के पुत्र का मास न खाओ, और उसका लहू न पिओ, तुम में जीवन नहीं। जो मेरा मास खाता है और मेरा लहू पीता है, अनंत जीवन उसी का है"-यहुन्ना 6:53,54। और इसका अभिप्राय समझाने के लिये उसने कहा, "जो बातें मैंने तुम से कही हैं वे आत्मा है, और जीवन है"-यहुन्ना 6:63 ।यीशु ने अपने पिता की व्यवस्था को स्वीकार किया, अपने जीवन में उसके सिद्धान्तों को अपनाया, उसकी भावना को प्रकट किया और हृदय में उसकी परोपकारी सामर्थ्य को दिखाया। यहुन्ना 1:14में यहुन्ना कहता है, "और वचन देहधारी हुआ, और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा ।" मसीह के अनुयायियों को उसके अनुभव के भागीदार होना चाहिये। उन्हें परमेश्वर के वचन को ग्रहण कर अपनाना चाहिये ताकि वह हमारे कार्यों और जीवन की प्रेरणादायक शक्ति बन जाए। मसीह के सामर्थ्य से उन्हें उसके स्वरूप में परिवर्तित होना चाहिये और उसकी पवित्र विशेषताओं को प्रतिबिम्बित करना चाहिये। उन्हें परमेश्वर के पुत्रकेमाँस को खाना और लहूको पीना चाहिये, वरन् उनमें जीवन नहीं। मसीह के काम और आत्मा उसके अनुयायियों के काम और आत्मा बन जाना चाहिये। PPHin 275.3

मेमने को कड़वी बूटियों के साथ खाया जाना था। इसी प्रकार हमें मसीह के लहू और देह का सेवन, अपने पापों के कारण, हृदय के प्रायश्चित के साथ करना चाहिये। अखमीरी रोटी का प्रयोग किया जाना भी अर्थपूर्ण था। फसह की विधि में यह स्पष्ट रूप से आज्ञा दी गईं थी कि पर्व के दौरान

घरों में खमीर का होना निषिद्ध था और यहूदी इस नियम का सख्ती से पालन करते थे। इसी प्रकार मसीह से जीवनऔर पौष्टिक पदार्थ पाने वालों में पाप का खमीर दूर कर दिया जाना चाहिये। कुरिन्थियों की कलीसिया को पौलूस लिखता है, "पुराना खमीर निकाल कर अपने आप को शुद्ध करो कि नया गूँधा हुआ आटा बन जाओ, ताकि तुम अखमीरी हो.........क्योंकि हमारा भी फसह, जो मसीह है, बलिदान हुआ है। इसलिये आओ, हम उत्सव में आनन्द मनांए, न तो पूराने खमीर से और न बुराई और दुष्टता के खमीर से, परन्तु निष्कपटता और सच्चाई की अखमीरी रोटी से।"1 कुरिन्थियों 5:7,8 PPHin 276.1

स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व बंधको को सम्पन्न होने वाले महान छुटकारे में विश्वास दिखाना था। उनके घरों पर लहू के चिन्हका लगाया जाना आवश्यक था, उन्होंने स्वयं को व अपने परिवारों को मिप्रियों से अलग करना था और अपने अपने घरों में इकट्ठा होना था। यदि इज़राइलियों ने दिये गए निर्देशों के किसी भी विवरण को अमान्य ठहराया होता या मिम्रियों से अपने बच्चों को अलग न किया होता, यदि उन्होंने मेमने को तो मारा होता, पर उसके लहू को द्वार की चौखटों पर नहीं लगाया होता, या वे अपने घरों से बाहर निकल गए होते, तो वे सुरक्षित न होते। उन्होंने यह विश्वास कर लिया होगा कि उन्होंने वह सब कुछ किया जो अनिवार्य था, लेकिन उनकी सच्चाई ने उन्हें न बचाया होता। जिन्होंने भी परमेश्वर के निर्देश की अवहेलना की, उन्हें विनाशक के हाथों अपने पहलौठों को खोना था। PPHin 276.2

आज्ञा का पालन करके लोगों को उनके विश्वास का प्रमाण देना था। इसी प्रकार जो भी मसीह के खून की सामर्थ्य से बचाए जाने की आशा करते हैं, उन्हें समझना चाहिये कि अपने उद्धार की प्राप्ति में उन्हें स्वयं भी कुछ करना था। हालांकि केवल मसीह ही हमें पाप की दण्डाज्ञा से छुटकारा दिला सकता है, किन्तु हमें पाप से हटकर आज्ञाकारिता की ओर मुड़ना होगा। मनुष्य अपने कामों के द्वारा नहीं, वरन् अपने विश्वास के द्वारा बचाया जाता है, लेकिन उसका विश्वास उसके कामों से प्रकट होना चाहिये । परमेश्वर ने पाप कीके कारण अपने पुत्र को मरने के लिये दे दिया। उसने जीवन के मार्ग और सत्य के प्रकाश को प्रकट किया, उसने सुविधाएं, विधियाँ और विशेषाधिकारदिये हैं और अब मनुष्यों को इन सुरक्षा-माध्यमों के साथ सहयोग करना चाहिये; उसे परमेश्वर द्वारा दी गई सहायता का प्रयोग करना चाहिये और उसका आभारी होना चाहिये और सब पवित्र आज्ञाओं का पालन और विश्वास करना चाहिये। PPHin 277.1

जब मूसा ने उनके छुटकारे के लिये परमेश्वर के प्रयोजनों को इज़राइल के लिये दोहराया, तो लोगों ने दण्डवत करके उसकी आराधना की। मुक्ति की आनन्दमयी आशा, उनका उत्पीड़न करने वालों पर होने वाली दण्डाज्ञा का ज्ञान, उनकी शीघ्र निकासी से सम्बन्धित परिश्रम-यह सब उस समय अनुमग्रहपूर्ण उद्धारकर्ता के प्रति कृतज्ञता में भुला दिये गए। कई मिस्री 'इब्रियों को परमेश्वर' का

एकल सच्चा परमेश्वर होने में विश्वास हो गया था और ये लोग विनाशक स्वर्गदूत के आने के समय इज़राइल के घरों में आश्रय पाने की अनुमति की भीख मांगने लगे। PPHin 277.2

उनका प्रसनन्नतापूर्वक स्वागत किया गया, और उन्होंने शपथ ली कि उस समय के याकूब के परमेश्वर की आराधना करेंगे और उसके लोगों के साथ मिस्र से चले जायेंगे। PPHin 278.1

इज़राइलियों ने परमेश्वर द्वारा दिये गये निर्देशों का पालन किया। शीघ्रता व गुप्त रूप से उन्होंने निकासी की तैयारियाँ की। परिवारों को इकट्ठा किया गया, फसह के मेमने को मारा गया, मास को आग में भूना गया और अखमीरी रोटी और कड़वी जड़ी बूटियों को तैयार किया गया। घराने के धर्मगुरू और पिता ने द्वार की चौखट पर लहू को छिड़का और अपने परिवार सहित घर के अन्दर हो गया। शीघ्रता से और चुपचाप फसह के मेमने को खाया गया। आदरपूर्ण भय के साथ लोगों ने प्रार्थना की ओर, शक्तिशाली पुरूष से लेकर छोटेबच्चे तक, सबसे ज्येष्ठ के हृदय को अवर्णनीय भय से घड़कते हुए देखा। उस रात को होने वाले भयानक आक्रमण का विचार करते हुए माताओं ने अपने प्रिय पहलौठों को अपनी बाहों में पकड़ लिया। लेकिन इज़राइल के किसी भी घर पर मृत्यु देने वाला स्वर्गदूत नहीं आया। लहू का चिन्ह-उद्धारकर्ता द्वारा रक्षा का चिन्ह उनके द्वारों पर था और विनाशक ने वहां प्रवेश नहीं किया। PPHin 278.2

आधी रात को, मिस्र में बड़ा हाहाकार मचा, क्योंकि एक भी ऐसा घर नहींथा जिसमें कोई मरा न हो। देश के सभी पहलौठे, "मिस्र देश में सिंहासन पर विराजने वाले फिरौन से लेकर कालकोठरी में पड़े हुए बंधक तक, और पशुओं के विस्तृत राज्य में प्रत्येक घराने का घमण्ड समाप्त कर दिया गया। रोने वालों की चिल्लाहट और सिसकियों से वातावरण गूँज उठा। पीले पड़े चेहरों और कंपकंपाते हाथ-पैरों के साथ राजा और दरबारी इस हावी होने वाले भय से हक्का-बक्का रह गए। फिरौन को अपने ही कथन का स्मरण हुआ, "यहोवा कौन है, जो मैं उसकी बात सुनूँ और इज़राइल को जाने दूँ? मैं यहोवा को नहीं जानता, और चुनौती देने वाला घमण्ड मिट्टी में मिल गया। उसने मूसा और हारून को बुलवाकर कहा "तुम इज़राइलियों समेत मेरी प्रजा के बीच से निकल जाओ ओर अपने कहने के अनुसार जाकर यहोवा की उपासना करो। अपने कहने के अनुसार अपनी भेड़-बकरियों औरगाय-बैलों को साथ ले जाओ और मुझे आशीर्वाद दे जाओ। राजसी सलाहकारों और लोगों ने भी इज़राइलियों को जाने के लिये कहा। वे बोले, "देश से झटपट निकल जाओ,हम तो सब मर मिटेंगे।" PPHin 278.3

अध्याय 25—निर्गमन

यह अध्याय निर्गमन 12:34-51, 13—15 पर आधारित है

अपनी कमर कस के, पैरों में जूते पहने, हाथ में लाठी लिये, इज़राइल आगे बढ़ने के राजसी जनादेश की प्रतीक्षा में चुपचचाप आदरयुक्त भय के साथ, लेकिन आशान्वित खड़े हुए थे। पौ फटने से पहले, वे अपने रास्ते पर थे। विपत्तियों के समय जैसे-जैसे परमेश्वर के सामर्थ्य ने बन्धकों के हृदयों में विश्वास को जागृत किया था और उनका उत्पीड़न करने वालों के मन में भय उत्पन्न किया था, वैसे-वैसे इज़राइलियों ने अपने आप को गोशेन में इकटठा किया; और उनके अकस्मात निर्गमन के बावजूद पलायन करने वालों के नियन्त्रण और आवश्यक व्यवस्था के लिये प्रयोजन कर दिया गया था, उन्हें अलग-अलग दलों में नियुक्त अगुवों की देख-रेख में विभाजित कर दिया गया था। PPHin 279.1

और बाल बच्चों को छोड़कर “कोई छ: लाख पैदल चलने वाले पुरूष और उनके साथ मिली जुली हुई एक भीड़ भी गई” इस भीड़ में केवल वही नहीं थे जो इज़राइल के परमेश्वर में विश्वास से प्रेरित हुए थे, वरन् इनसे भी अधिक वे लोग थे जो केवल विपत्तियों से बचना चाहते थे या वे जो केवल उत्सुकतावश और जोश में भीड़ के साथ चल दिये थे। इस श्रेणी के लोग हमेशा ही इज़राइल के लिये एक प्रलोभन का जाल व बाधा बने रहे। PPHin 279.2

ये लोग अपने साथ ‘भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल और बहुत से पशु’ ले गए। यह उन इज़राइलियों की सम्पत्ति थी जिन्होंने अपनी सम्पत्ति को राजा को नहीं बेचा था, जैसा कि मिस्रियों ने किया था। याकूब और उसके पुत्र अपने भेड़-बकरियों और गाय-बैलों को अपने साथ मिस्र लाए थे, जहां उनमें बढ़ीतरी हुई थी। मिस्र छोड़ने से पहले, मूसा के निर्देशन में, लोगों ने अपने अवैतनिक परिश्रम के मुआवजे का दावा किया और मिस्र उन्हें मना न कर सके क्योंकि वे उनकी उपस्थिति से स्वतन्त्र होने को आतुर थे। बन्धुए अपने उत्पीड़नकर्ताओं से लूटी सामग्री से लदे हुए गए। PPHin 279.3

उस दिन अब्राहम को भविष्यसूचक स्वपष्नदर्शन में बताए गए इतिहास को पूर्ण किया, “तेरे वंश पराए देश में परदेशी होकर रहेंगे, ओर उस देश के लोगों के दास हो जाएँगे और वे उनको चार सौ वर्ष तक दु:ख देंगे। फिर जिस देश के वे दास होंगे उसको मैं दण्ड दूँगा, और उसके पश्चात वे बहुत सा धन वहाँ से लेकर निकल आएँगे”-उत्पत्ति 15:13,14 । चार सौ वर्ष पूरे हुए। ठीक उसी दिन यहोवा इज़राइलियों को मिस्र देश से दल-दल करके निकाल ले गया।” मिस्र से प्रस्थान करने में इज़राइली युसुफ की हड्डियों की एक अनमोल धरोहर की लेकर गए, जो परमेश्वर की प्रतिज्ञा के पूर्ण होने की प्रतीक्षा में थी, और जो दासत्व के अन्धकारमय वर्षों में इज़राइल के छुटकारे का स्मृति-पत्र रही थी। PPHin 279.4

कनान के लिये सीधे मार्ग पर जाने के बजाए, जो पलिश्तियों के देश से होकर निकलता था, परमेश्वर ने उन्हें दक्षिण की ओर लाल समुद्र के किनारों की ओर जाने का निर्देश दिया। परमेश्वर ने कहा, "कहीं ऐसा न हो कि जब ये लोग लड़ाई देखें तब पछताकर मिस्र को लौट आएँ। PPHin 280.1

पलिश्तिया में से निकलने का प्रयत्न करने पर, उनकी प्रगति का विरोध किया जाता, क्योंकि यह जानते हुए कि वे दास अपने स्वामियों से छुप कर भाग रहे थे, पलिश्ती उनके साथ युद्ध करने में नहीं हिचकिचाते। उन शक्तिशाली योद्धा-प्रवृति के लोगों के साथ मुठभेड़ के लिये इज़राइली बिल्कुल तैयार नहीं थे। उन्हें परमेश्वर का कुछ ही ज्ञान था और उनका उस पर विश्वास भी कम था और वे बहुत जल्दी भयभीत और हतोत्साहित हो जाते। वे निहत्थे थे और युद्ध के अभ्यस नहीं थे।लम्बे समय के दासत्व से वे दबे हुए से जोशहीन थे और स्त्रियों, बच्चों, भेड़-बकरियों व गाय बैलों से भारग्रस्त थे। उन्हें लाल समुद्र के रास्ते सेले जाने के द्वारा परमेश्वर ने स्वयं को दयालुता और न्याय का परमेश्वर प्रमाणित किया। PPHin 280.2

"और उन्होंने सुक्कोत से कूच करके जंगल के छोर पर एताम में डेरा डाला। और यहोवा उन्हें दिन को मार्ग दिखाने के लिये मेघ के खम्भे में होकर;और रात को उन्हें प्रकाश देने के लिये आग के खम्भे में होकरठउनके आगे-आगे चलता था; जिससे वे दिन और रात दोनों में चल सके। उसने न तो बादल के खम्भे को दिन में और न आग के खम्भे को रात में लोगों के आगे से हटाया ।भजन संहिता 105:39में लेखक कहता है, "उसने छाया के लिये बादल फैलाया और रात को प्रकाश देने के लिये आग प्रकट की । इसके अलावा (1 कुरिन्थियों 10:1,2)भी देखिये। उनके अदृश्य मार्गदर्शक का ध्वज हमेशा उनके साथ रहा। दिन में मेघ उनका मार्गदर्शन करता था, तम्बू की तरह भीड़ पर फैल जाता। वह भीष्ण गर्मी से उन्हें बचाता था, और निर्जल शुष्क मरूस्थल में अपनी ठंडक और नमी से ताजगी उत्पन्न करता। रात को वह आग का खम्भा बन जाता और उनके डेरे को दीप्तिमान करके उन्हें पवित्र उपस्थिति का लगातार आश्वासन देता। PPHin 280.3

यशायाह की भविष्यद्वाणी के एक अत्यन्त सुन्दर व सुखदायी दृष्टान्त में बुराई की शक्तियों के साथ महान निर्णायक संघर्ष में परमेश्वर का अपने लोगों के प्रति दायित्व को दर्शाने के लिये आग और मेघ के स्तम्भ का उल्लेख किया गया है। "तब यहोवा सिय्योन पर्वत के एक-एक घर के ऊपर, और उसके सभास्थानों के ऊपर, दिन को तो धुंए का बादल और रात को धधकती आग का प्रकाश सिरजेगा, और समस्त वैभव के ऊपर एक मण्डप छाया रहेगा। वह दिन को धूप से बचाने के लिये छाया और आंधी पानी और झडी में एक शरण और आड़ होगा।" (यशायाह 4:5,6) PPHin 281.1

उन्होंने एक निर्जन, मरूस्थल जैसे फैले हुए क्षेत्र में यात्रा की। वे उत्सुक होने लगे थे कि वे जिस रास्ते पर चल रहे थे, वह उन्हें कहा ले कर जाने वाला था; वे उसेदुर्गम रास्ते पर यात्रा करते हुए थक गए थे और कईयों के हृदयों में मिस्त्ररियों द्वारा पीछा किये जाने का भय उत्पन्न होने लगा था लेकिन

बादल उनके आगे-आगे चलता रहा और वे उसके पीछे-पीछे चलते रहे। अब परमेश्वर ने मूसा को निर्देश दिया कि वे एक पहाड़ी संकीर्ण घाटी में समुद्र के किनारे डेरा डाले। उस पर प्रकट किया गया कि फिरौन उनका पीछा करेगा, लेकिन उनके छुटकारे में परमेश्वर की महिमा होगी। PPHin 281.2

मिस्र में यह समाचार फैल गया कि मरूस्थल में रूककर आराधना करने के बजाय इज़राइली लाल समुद्र की ओर बढ़ रहे थे। फिरौन के सलाहकारों ने उसे बताया कि उनके दास भाग गए और वे कभी लौट कर नहीं आएंगे । परमेश्वर की सामर्थ्य को अपने पहलौठों की मृत्यु का उत्तरदायी ठहराने की मूर्खता पर वे पछतावा करने लगे। उनके महापुरूषों ने अपने डर से सम्भल कर, विपत्तियों को प्राकृतिक कारणों का परिणाम बताया। वे कहने लगे, "हम ने यह क्या किया कि इज़राइलियों को अपनी दासता से छुटकारा देकर जाने दिया?" PPHin 281.3

फिरौन ने अपनी सेनाओं को इकट्ठा किया जिनमें छः: सौ अच्छे से अच्छे रथ, और मिस्र के सारे रथ,'घुड़सवार, सेनापति और सिपाही सम्मिलित थे। राजा ने स्वयं अपनेराज्यके महान पुरूषों के साथ, आक्रमणकारी सेना का नेतृत्व किया। देवी-देवताओं की कृपा-दृष्टि पाने के लिये और उनके कार्य की सफलता निश्चित करने के लिये, पुजारी भी उनके साथ गए। राजा अपनी शक्ति के भव्य प्रदर्शन के द्वारा इज़राइलियों को भयभीत करने के लिये कृतसंकल्प था। मिम्रियों को डर था कि इज़राइल के परमेश्वर के प्रति बलात समर्पण उन्हें अन्य राष्ट्रों द्वारा उपहास का पात्र बना देगा, लेकिन यदि वे शक्ति के महान प्रदर्शन के साथ आगे जाकर पलायकों को लौटा कर ले आएंगे तो वे अपने सम्मान को भी बचा लेंगे और बन्धकों की सेवाओं को भी पुनःप्राप्त कर लेंगे। PPHin 281.4

इब्री अपना डेरा समुद्र के किनारे डाले हुए थे जिसकाजलउनके सामने अगम्य अवरोध प्रस्तुत कर रहा था और दक्षिण की ओर एक ऊबड़-खाबड़ पहाड़ ने भावी प्रगति को बाधित कर दिया। अचानक ही उन्होंने बहुत दूरी पर चमचमाते कवच ओर गतिमान रथों को देखा, जो एक सशक्त सेना के अग्रिम सुरक्षा का प्रतीक थे। जैसे-जैसे सैन्यदल निकट आया, मिस्र की सेनाएँठासके पीछे पीछे दिखाई पड़ी। इज़राइलियों के हृदय भयभीत हो गए। कुछ लोगों ने परमेश्वर को पुकारा लेकिन अधिकतर लोग अपने दुखड़े लेकर शीघ्रता से मूसा के पास पहुँचे, "क्या मिस्र में कब्रें न थी जो तू हम को वहाँ से मरने के लिये जंगल में ले आया है? तू ने हम से क्या किया कि हम को मिस्र से निकाल लाया? क्या हम तुम से मिस्र में यही बात न कहते रहे कि हमें रहने दे कि हम मिस्रियों की सेवा करें? हमारे लिये जंगल मेंमरने की अपेक्षा मिस्रियों की सेवा करना अच्छा था।" PPHin 282.1

मूसा इस बात से अत्यन्त खेदित था कि उसके लोग परमेश्वर में इतना कम विश्वास रखते थे, बावजूद इसके कि उनके लिये परमेश्वर की सामर्थ्य का प्रदर्शन उन्होंने कई बार देखा था। वे उस पर अपनी परिस्थिति से सम्बन्धित कठिनाईयों और खतरों का आरोप कैसे लगा सकते थे, जबकि उसने परमेश्वर की निश्चित आज्ञा का पालन किया था। यह सच था कि परमेश्वर के हस्तक्षेप के अभाव

में, उनके छुटकारे की कोई सम्भावना नहीं थी, लेकिन ईश्वरीय निर्देश का पालन करने के बाद इस स्थिति में लाए जाने के कारण मूसा को परिणामों का डर नहीं था। उसने शान्ति से लोगों को आश्वस्त किया, "डरो मत, खड़ेहोकर वह उद्धार का काम देखो, जो यहोवा आज तुम्हारे लिये करेगा, क्योंकि जिन मिस्रियों को तुम आज देखते हो, उनको फिर कभी न देखोगे। यहोवा आप ही तुम्हारे लिये लड़ेगा, इसलिये तुम चुपचाप रहो। PPHin 282.2

इज़राइलियों को परमेश्वर के सम्मुख प्रतीक्षा में रखे रखना आसान कार्य नही था। अनुशासन और आत्म-संयम के अभाव में, वे उग्र और अतर्कसंगत हो गए थे। उन्हे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वे शीघ्र ही उनके आततायियों के हाथों में पड़ जाएँगे और वे ऊँची आवाज में विलाप करने लगे। बादल के आश्चर्यजनक खम्भे को परमेश्वर द्वारा आगे बढ़ने का संकेत मानते हुए, वे उसके पीछे-पीछे चल रहे थे, लेकिन अब वे आपस में सन्देह प्रकट करने लगे; क्योंकि क्या वह उन्हें पहाड़ के उस तरफनहीं ले गया, जहाँ का मार्ग दुर्गग था? इस प्रकार उनके भ्रमित विवेक को परमेश्वर का स्वर्गदूत त्रासदी का सन्देशवाहक प्रतीत होने लगा। PPHin 283.1

लेकिन अब, जब मिस्री सेना, उन्हें आसान शिकार समझकर, आगे बढ़ी, बादल का खम्भा शान से स्वर्ग की ओर उठा, इज़राइलियों के ऊपर से निकला और उनके और मिमस्रियों की सेना के बीच जा खड़ा हुआ। पीछे करने वालों और पीछे किये जाने वालों के बीच अन्धकार की एक दीवार खड़ी हो गईं । मिस्री अब इब्रियों के डेरे को देख पाने में अफसल थे, और पड़ाव के लिये विवश हो गए। PPHin 283.2

लेकिन रात के गहराने पर बादल की दीवार इब्रियों के लिये प्रकाश बन गई और पूरे शिवर को दिन जैसे प्रकाश से भर दिया। PPHin 283.3

इज़राइलियों के मन में आशा का संचार हुआ। मूसा ने परमेश्वर को पुकारा "और यहोवा ने मूसा से कहा, तू क्यों मेरी दुहाई दे रहा है? इज़राइलियों को आज्ञा दे कि यहां से कूच करे। और तू अपनी लाठी उठाकर अपनाहाथ समुद्र के ऊपर बढ़ा, और वह दो भाग हो जाएगा, तब इज़राइली समुद्र के बीच होकर स्थल ही स्थल पर चले जाएंगे।' PPHin 283.4

भजन संहिता का लेखक भजन में इज़राइल द्वारा समुद्र को पार करने का इस प्रकार वर्णन करता है, "तेरा मार्ग समुद्र में था, और तेरा रास्ता गहरे जल में था और तेरे पाँवो के चिन्ह मालूम नहीं हुए। तूने मूसा और हारून के द्वारा अपनी प्रजा की अगुवाई भेड़ों की सी की"-भजन संहिता 77:19,20। तब मूसा ने अपना लाठी वाला हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ाया और समुद्र दो भागों में बँट गया और इज़राइली समुद्र के बीच सूखे स्थल पर से होकर निकले, और जल उनके दाएँ और बाएँ ओर दीवार के समान खड़ा रहा। परमेश्वर के आग के स्तम्भ का प्रकाश झागदार लहरों पर चमक रहा था, और समुद्र के जल के बीचहल-रेखा के समान काटे हुए मार्ग को प्रकाशमान करते हुए, दूरस्थ किनारे के धुंधलेपन में खो गया। PPHin 283.5

“तब मिस्री, अर्थात फिरौन के सब घोड़े, रथ और सवार उनका पीछा किए हुए समुद्र के बीच में चले गए। और रात के अन्तिम पहर में यहोवा ने बादल और आग के खम्भे में से मिस्रियों की सेना पर दृष्टि करके उन्हें घबरा दिया।” वह रहस्यमयी बादल उनकी आश्चर्यवकित आंखो के सामने आग के स्तम्भ में परिवर्तित हो गया। मेघगर्जन के साथ बिजलियाँ चमकती रही। “मेघों से बड़ी वर्षा हुई, आकाश में मेघों का तीव्र गर्जन लोगों ने सुना। फिर उन बादलों से बिजली के तेरे तीर चारोंओर चले। कौंधती बिजली में तेरेगरजने का स्वरसुनाई दिया, जगत बिजली सेचमक उठा। धरती हिल उठी और थर-थर काँप उठी”। भजन संहिता 77:17,18 PPHin 284.1

मिस्री निराश और भ्रम में जकड़े जा चुके थे। आकाश और पृथ्वी के प्रकोप में, जिसमें उन्होंने एक कोधित परमेश्वर के स्वर को सुना, उन्होंने अपने कदम पीछे हटाकर उसी समुद्र तट की ओर भागने का प्रयत्न किया, जिसे वह पीछे छोड़कर आए थे। लेकिन मूसा ने अपना लाठी वाला हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ाया औरदीवार के समान खड़ा हुआ जल अपने शिकार के लिये उत्सुक, दहाड़ते हुए, फफकारते हुए, ज्यों का त्यों हो गया और अपने स्याह अंधेरों में मिस्री सेना को निगल गया। PPHin 284.2

भोर होते ही इज़राइलियों ने अपने सशक्त शत्रुओं के मृत पड़े कवचधारी शवों को समुद्र के तट पर फेंके हुए देखा। एक ही रात सबसे भयानक विपत्तति से सम्पूर्ण छुटकारा ले आई थी। युद्ध में अनभ्यस्त दास, स्त्रियाँ, बच्चे, गाय-बैल, समुद्र जिनके सामने था, और पीछा करती हुई मिस्र की सेनाएं जिन पर हावी हो रही थी, उस विशाल भीड़ ने समुद्र के बीच से रास्ता खुलते हुए और शत्रुओं द्वारा अपेक्षित विजय के क्षण में शत्रुओं को पराजित होते हुए देखा। उनके छुटकारे का श्रेय केवल यहोवा को गया और विश्वास और आभार अभिव्यक्ति में उनके हृदय उसकी ओर मुड़ गये। उनकी भावनाएं प्रशंसा के गीतों में अभिव्यक्त हुईं । परमेश्वर का आत्मा मूसा पर उतरा और उसने धन्यवाद के विजय गान में लोगों की अगुबाई की और यह गाना मनुष्य को ज्ञात गीतों से सबसे प्राचीन और सबसे श्रेष्ठ है। PPHin 284.3

मैं यहोवा का गीत गाऊंगा, क्योंकि वह महाप्रतापी ठहरा है, घोड़ों समेत सवारों को उसने समुद्र में पटक दिया है।

यहोवा मेरा बल और भजन का विषय है,

और वही मेरा उद्धार भी ठहरा है,

मेरा परमेश्वर वही है, में उसी की स्तूति करूंगा

मेरे पूर्वजों का परमेश्वर वही है,मैं उसको सराहूँगा

यहोवा योद्धा है, उसका नाम यहोवा है।

फिरोन के रथों और सेना को उसने समुद्र में फेंक दिया
और उसके उत्तम से उत्तम रथी लाल समुद्र में डूब गए।
गहरे जल ने उन्हें ढांप लिया,
वे पत्थर के समान गहरे स्थानों में डूब गए।
हे यहोवा, तेरा दाहिना हाथ शक्ति में महाप्रतापी हुआ,
हे यहोवा, तेरा दाहिना हाथ शत्रु को चकनाचूर कर देता है।
हे यहोवा, देवताओं में तेरे तुल्य कौन है?
तू तो पवित्रता के कारण महाप्रतापी है?
और अपनी स्तुति करने वालों के भय के योग्य,
और आश्चर्यकर्म का कर्ता है।
तूने अपना दाहिना हाथ बढ़ाया, और पृथ्वी ने उनको निगल लिया है
अपने बल से तू उसे अपने पवित्र निवास स्थान को ले चला है।
देश-देश के लोग सुनकर कॉप उठेंगे, पलिश्तियों के प्राणों के लाले पड़ जाएँगे।
एदोम के अधिपति व्याकूल होंगे, मोआब के पहलवान थरथरा उठेंगे
सब कनान निवासियों के मन पिघल जाएँगे। उनमें डर और घबराहट समा जाएँगी,
तेरी बॉह के प्रताप से वे पत्थर के समान अबोल हो जाएँगे।
जब तक, हे यहोवा, तेरी प्रजा के लोग निकल न जाएँ
जब तक तेरी प्रजा के लोग जिनको तूने मोल लिया है पार न निकल जाए
तू उन्हें पहुँचाकर अपने निज भागवाले पहाड़ पर बसाएगा। PPHin 284.4

यह वही स्थान है, हे यहोवा, जिसे तूने अपने निवास के लिये बनाया, और वही पवित्रस्थान है, जिसे हे प्रभु तूने आप ही स्थिर किया है ।"-निर्गमन 15:1-17 । PPHin 286.1

समुद्र के स्वर के समान, यह श्रेष्ठ रचना इज़राइलियों की सेना ने गाई । तब मूसा ही बहन मरियम ने हाथ में डफ लिया और सब स्त्रियाँ डफ लिये नाचती हुई उसके पीछे हो लीं। वह

आनन्दमयी टेकस्थल और समुद्र पर ध्वनित हुआ और पहाड़ो में उनकी प्रशंसा के शब्द गूँज उठे- 'यहोवा का गीत गाओ, क्योंकि वह महाप्रतापी ठहरा है।' PPHin 286.2

इस गीत और उस महान छुटकारेने, जिसका यह स्मरण कराता है, ऐसी छाप छोड़ी जो इब्री लोगों की स्मृति से कभी भी विलोप नहीं होगी। युगानुयुग इसे इज़राइल के गायकों और भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा दोहराया गया, जिससे यह प्रमाणित होता है कि यहोवा उस पर विश्वास रखने वालों का बल और छुटकारा है। यह गीत केवल यहूदियों का ही नहीं है। यह धार्मिकता के सभी शत्रुओं के सर्वगाश और परमेश्वर के इज़राइल की निर्णायक विजय की ओर संकेत करता है। पात्मास के भविष्यद्वक्ता ने श्वेत-वस्त्रधारी भीड़ को देखा जो-जयवन्त हुए थे जो "आग के साथ मिले हुए काँच के समुद्र' पर खड़े हुए थे और जिनके पास 'परमेश्वर की वीणाएँ' थी। और "वे परमेश्वर के दास मूसा का गीत, और मेम्ने का गीत" गाते है। प्रकाशित वाक्य 15:2,3 PPHin 286.3

"हे यहोवा, हमारी नहीं, वरन् अपने ही नाम की महिमा, अपनी करूणा और सच्चाई के निमित्त कर"-भजन संहिता 115:1 । इज़राइल के छुटकारे के गीत में यही भावना व्याप्त थी और परमेश्वर का भय मानने वालों में और उससे प्रीति रखने वालों के हृदयों में इसी भावना का वास होना चाहिये। पाप के बन्धन से हमारे जीवन को स्वतन्त्र कराने में, परमेश्वर ने लाल समुद्र पर इब्रियों को दिलाए छूटकारे से भी अधिक महान छुटकारा, हमें दिलवाया है। इब्री समुदाय के समान हमें भी "मनुष्य के पुत्रों के लिये उसके अदभुत कार्यों के लिये, हृदय और आत्मा और स्वर से प्रभु की प्रशंसा करनी चाहिये। जो परमेश्वर महान अनुग्रह पर चिंतन करते हैं, व उसके द्वारा दिए गए साधारण उपहारों के प्रति उदासीन होते है वे आनन्द का कमरबन्द धारण कर के अपने हृदय में परमेश्वर के लिये गीत गाते हैं। परमेश्वर के हाथों से प्राप्त प्रतेदिन की आशीषें, विशेषकर स्वर्ग और आनन्द को हमारी पहुँच में लाने के लिये यीशु की मृत्यु, सर्वदा के लिये आभार का विषय होना चाहिये। स्वयं को हमारे साथ जोड़ने में.उसके लिये अदभुत धन होने के लिये, परमेश्वर ने हम भटके हुए पापियों के प्रति कैसा प्रेम, कैसी संवेदना दिखायी है! हमारे उद्धारकर्ता ने कितना महान बलिदान दिया कि हम परमेश्वर की संतान कहला सके। उद्धार की योजना में निहित उस धन्य आशा के लिये हमें उसकी प्रशंसा करनी चाहिये, उसकी अनमोल प्रतिज्ञाओं और स्वर्गीय धरोहर के लिये उसकी प्रशंसा करनी चाहिये, उसको प्रशंसा हो कि यीशु हमारी मध्यस्थता करने के लिये जीवित है। PPHin 286.4

भजन संहिता 50:23 में सृष्टिकर्ता कहता है,'धन्यवाद के बलिदान का चढ़ानेवाला मेरी महिमा करता है" । स्वर्ग के समस्त निवासी एकजुट होकर यहोवा की प्रशंसा करते हैं। हम भी स्वर्गदूतों का गीत सींखे, जिसे हम उनके जगमगाते समूह से जुड़ने पर गा सकें हम भजन संहिता के लेखक के साथ कहें, "मैं जीवनभर यहोवा की स्तुति करता रहूँगा, जब तक मैं बना रहूँगा। तब तक मैं अपने परमेश्वर का भजन गीता रहूँगा""-भजन संहिता 146:2। "देश-देश के लोग तेरी प्रशंसा करें, हे परमेश्वर, देश-देश क लोग तेरी प्रशंसा करें । - भजन संहिता 67:5 PPHin 287.1

परमेश्वर योजनाबद्ध तरीक से इब्रियों के समुद्र के सामने दुर्गम पहाड़ में लाया ताकि वह उनके छुटकारे में अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर सके और उनका उत्पीड़न करने वालों के घमण्ड को मिटा सके। वह उन्हें किसी और प्रकार से भी बचा सकता था, लेकिन उसने उनके विश्वास को परखने के लिये और उस पर उनके विश्वास को दृढ़ करने हेतु इस तरीके को चुना। लोग थके हुए और भयभीत थे, लेकिन यदि मूसा द्वारा आगे जाने की आज्ञा सुनकर भी व पीछे रह जाते, तो परमेश्वर ने कभी भी उनके लिये मार्ग नहीं खोला होता। "विश्वास ही से वे लाल समुद्र के पार ऐसे उतर गए, जैसे सूखी भूमि पर से"-इब्रानियों 11:29 । उसी समुद्र की ओर बढ़ने में उन्होंने प्रमाणित किया कि मूसा के द्वारा कहे गए परमेश्वर के वचन में वे विश्वास रखते थे। जो कुछ करने के वे योग्य थे, उन्होंने किया, और फिर इज़राइल के 'सर्वशक्तिमान' ने उनके पैरों के लिये पथ बनाने के लिये समुद्र को विभाजित कर दिया। PPHin 287.2

यहाँ सिखाया गया महत्वपूर्ण पाठ सर्वदा के लिये है। मसीही जीवन प्राय: खतरों से घिरा होता है और कर्तव्य का पालन करना कठिन प्रतीत होता है। कल्पना आने वाले विनाश को अपने सामने चित्रांकित करती है और दासत्व और मृत्यु को पीछे। लेकिन परमेश्वर का स्वर स्पष्ट रूप से कहता है, "आगे बढ़ो "भले ही हमारे पैरों तले ठण्डी लहरे हों और हमारी आँखें अन्धकार को न भेद सके, फिर भी हमें इस आज्ञा का पालन करना चाहिये। जो बाधाएँ हमारी प्रगति के रास्ते में आती है, वे एक सन्देहात्मक भावना के आगे कभी दूर नहीं होंगी। जो पराजय और असफलता की आशंका के समाप्त होने तक और अनिश्चितृता की प्रत्येक छाया के विलोप होने तक आज्ञापालन को टालते रहते हैं, वे कभी भी आज्ञा का पालन नहीं करेंगे। अविश्वास फुसफसाता है, "हमें बाधाओं के दूर होने तक और जब तक कि हमें रास्ता स्पष्ट रूप से दिखाई न दे, रूके रहना चाहिये" लेकिन विश्वास साहस के साथ, सब बातों की आशा रखते हुए, सब बातों की प्रतीति करते हुए, आगे बढ़ने का आग्रह करता है। PPHin 288.1

जो बादल मिस्रियों के लिये अन्धकार की दीवार था, इब्रियों के लिये वह प्रकाश की बहुतायत थी, जो पूरे डेरे को प्रकाशभान कर रही थी और उनके मार्ग पर प्रकाश बिखेर रही थी। इसी प्रकार परमेश्वर के काम अविश्वासी के लिये अन्धकार और निराशा लाते हैं, लेकिन एक विश्वासी के लिये वे प्रकाश और शान्ति से भरपूर हैं। परमेश्वर द्वारा दिखाया गया मार्ग चाहे जंगल या समुद्र से होकर निकले, लेकिन वह एक सुरक्षित मार्ग है। PPHin 288.2

अध्याय 26—लाल समुद्र से सिने तक

यह अध्याय निर्गमन 15:22-27, 16-18 पर आधारित है PPHin 289

बादल के स्तम्भ के मार्गदर्शन में, इज़राइलियों ने लाल समुद्र से आगे की यात्रा प्रारम्भ की। उनके आस-पास का दृश्य डरावना था-अनावृत, उजाड़ से पहाड़, बंजर भूमि, फैला हुआ समुद्र जिसके किनारे पर उनके शत्रुओं के शव बिखरे पड़े थे, लेकिन फिर भी वेस्वतन्त्रता की चेतना में आनन्द से भरपूर थे, और असंतोष के प्रत्येक विचार को शान्त कर दिया गया था। PPHin 289.1

लेकिन यात्रा के तीसरे दिन तक भी, उन्हें पानी नहीं मिला। जो पानी पीने व अपने साथ लाए थे समाप्त हो चुका था। उनकी तीव्र प्यास को बुझाने के लिये कुछ नहीं था और वे झुलसे हुए मैदान में थककर धीमी गति से चलते रहे। PPHin 289.2

मूसा, जो इस क्षेत्र से अपरिचित था, वह जानता था जो दूसरे नहीं जानते थे, कि वहां के निकटतम स्थान, मारा में जल के स्रोत थे, लेकिन उसका पानी पीने योग्य नहीं था। अत्यधिक उत्सुकता के साथ वह मार्गदर्शक बादल को देखता रहा। डूबते हृदय से उसने लोगों को प्रसन््नतापूर्वक पानी!पानी! चिल्लाते हुए सुना। आनन्द से उतावले हुए पुरूष, स्त्रियाँ और बच्चे फैँव्वारे के पास इकट्ठे हुए, लेकिन फिर समुदाय में से एक दर्दनाक आवाज़ आईं। पानी खारा था। भय और निराशा में डूबे उन्होंने मूसा पर इस तरह मार्गदर्शन कराने का आरोप लगाया, वे ये भूल गए कि उस रहस्यमयी बादल में ईश्वरीय उपस्थिति उन्हीं का नहीं, मूसा का भी मार्गदर्शन कर रही थी। उनकी पीड़ा पर दुःखी होकरमूसा ने परमेश्वर को सहायता के लिये पुकारा। “और यहोवा ने उसे वह पौधा बतला दिया जिसे जब उसने पानी में डाला, तब वह पानी मीठा हो गया।” यहाँ पर मूसा के माध्यम से इज़राइल को वचन दिया गया, “यदि तू अपने परमेश्वर का वचन तनमन से सुने, और जो उसकी दृष्टि में ठीक है वही करे, और उसकी आज्ञाओं पर कान लगाए, और उसकी सब विधियों को माने, तो जितने रोग मैंने मिस्रियों पर भेजे हैं, उनमें से एक भी तुझ पर नहीं भेजूँग, क्योंकि मैं तुम्हारा चँगा करने वाला यहोवा हूँ।’ PPHin 289.3

तब वे मारा से एलीम को आए, “जहाँ पानी के बारह सोते और सत्तर खजूर के पेड़ थे।” यहाँ सिने के निर्जन प्रदेश में प्रवेश करने से पहले वे कई दिन रहे। मिस्र देश से निकलने के एक महीने बाद उन्होंने इस निर्जन प्रदेश में अपना पहला डेरा डाला। उनके पास सामग्री का भण्डार समाप्त होने लगा था। उस उजाड़ प्रदेश में बहुत कम घास थी और उनकी भेड़-बकरियाँ कम होती जा रही थी। इतने बड़े जन समूह के लिए खाद्य सामग्री कहाँ से मुहैया कराई जाएगी। उनके हृदय संकोच से भर गये और वे बड़बड़ाने लगे। परमेश्वर द्वारा नियुक्त अगुवों के विरूद्ध आरोप लगाने में अधिकारी और बड़े बुजुर्ग भी सम्मिलित हो गए। “जब हम मिस्र देश में मास की हडिडयों के पास

बैठकर मनमाना भोजन करते थे, तब यदि हम यहोवा के हाथ में मार डाले भी जीते तो उत्तम वही था, पर तुम हम को इस जंगलमें इसलिये निकाल ले आए हो कि इस सारे समाज को भूखा मार डालो।” PPHin 289.4

अभी तक उन्होंने भूख के कारण कष्ट नहीं उठाया था, उनकी वर्तमान आवश्यकताएं पूरी की जा रही थी, लेकिन वे भविष्य के लिये डरते थे। वे समझ नहीं पा रहे थे कि उस निर्जन प्रदेश में यात्रा के दौरान इतने बड़े जन-समूह का भरण-पोषण कैसे होगा, और वे अपने बच्चों के भूखे मरने की कल्पना लगे। परमेश्वर ने उन्हेंकठिनाईयों से घिरने दिया और उनकी खाद्य सामग्री की आपूर्ति भी सीमित कर दी ताकि उनके हृदय उसकी ओर आकर्षित हो सके जो अभी तक उनका मुक्तिदाता रहा था। यदि अपनी घटी में वे उसको पुकारते थे, तो वह तब भी उन्हें अपने प्रेम और देखभाल के स्पष्ट संकेत देता था। उसने प्रतिज्ञा की थी कि यदि वे उसकी आज्ञाओं का पालन करेंगे, तो उन पर कोई रोग नहीं आएगा और उनका ऐसा सोचना कि उनके बच्चे भूख से मर जाएंगे, पापमयी अविश्वास के बराबर था। PPHin 290.1

परमेश्वर ने उनका परमेश्वर होने की, उन्हें अपना बनाने की.उन््हें एक विशाल और खुशहाल देश में ले जाने की प्रतिज्ञा की थी, लेकिन वे उस प्रदेश के मार्ग पर आने वाली प्रत्येक बाधा का सामना रकने में मूच्छित होने को तत्पर थे। वह उन्हें आश्चर्यजनक तरीके से मिस्र में उनके दासत्व से बाहर निकाल लाया था, ताकि वह उन्हें उदात्त और उन्नत और पृथ्वी पर प्रशंसा योग्य बना सके। लेकिन अभावों को सहन करना और कठिनाईयों का सामना करना, उनके लिये आवश्यक था। परमेश्वर उन्हें अप्रतिष्ठा की अवस्था से निकालकर, जातियों में सम्मानजनक स्थान ग्रहण करने हेतु और पवित्र व आवश्यक दायित्व ग्रहण करने के लिये सुयोग्य बना रहा था। उसके द्वारा उनके लिये किये गए कार्यों पर दृष्टि करके, यदि उन्होंने परमेश्वर में विश्वास रखा होता, तो उन्होंने असुविधा, अभाव और अत्याधिक कष्ट भी प्रसन्नतापूर्वक सहन कर लिये होते, लेकिन न तो वे प्रभु पर और आगे विश्वास करने को और न ही उसकी सामर्थ्य के नित्य प्रमाणों के साक्षी होने को सहमत थे। वे मिस्र में अपने अप्रिय अनुभव को भूल गए। वे दासत्व से उनके छुटकारे में उनके लिये परमेश्वरकी सामर्थ्य और भलाई के प्रदर्शन कोभी भूल गए। वे भूल गए कि जब विनाशक स्वर्गदूत ने मिस्र के सभी पहलौठों का वघ किया किस तरह उनके बच्चों को छोड़ दिया गया था। वे लाल समुद्र पर ईश्वरीय शक्ति के महान प्रदर्शन को भूल गए। वे भूल गए कि उनके लिये खोले हुए मार्ग पर चलकर वे सुरक्षापूर्वक पार हो गए, लेकिन उनके शत्रुओं को, जो उनका पीछा करने का प्रयत्न कर रहे थे, समुद्र के जल ने पराजित कर दिया। उन्होंने केवल अपनी असुविधाओं और परीक्षाओं पर ध्यान दिया और यह कहने के बजाय कि, “यहोवा ने हमारे साथ बड़े-बड़े काम किए हैं, जबकि हम दास थे, वह हमें एक महान जाति बना रहा है, वे रास्ते की कठिनाईयों की बातें कर रहे थे ओर सोच रहे थे कि उनकी दुखदायी तीर्थयात्रा कब समाप्त होगी। PPHin 290.2

इज़राइल के निर्जन प्रदेश में बिताए जीवन के इतिहास अन्तिम समय तक परमेश्वर के इज़राइल के लाभ के लिये इतिवृत किया गया। मरूधर भ्रमण में परमेश्वर का घुमक्कड़ों के साथ व्यवहार का उल्लेख, भूख, प्यास और थकावट का उनका अनुभव, उनके सुख चैन के लिये परमेश्वर का विस्मयकारी प्रदर्शन, सभी युगों में उसके लोगों के लिये निर्देश और चेतावनियों से भरपूर है। इब्रियों के विभिन्न अनुभव, कनान में उनके प्रतिज्ञाबद्ध घर के लिये उपकम की शिक्षा थी। इन दिनों में परमेश्वर अपने लोगों से इज़राइल द्वारा अनुभव की हुई परीक्षाओं को दीन हृदय और सिखाने योग्य स्वभाव से समीक्षा करवाना चाहता था, ताकि स्वर्गीय कनान की तैयारी में उनको निर्देशित किया जा सके । PPHin 291.1

कई लोग पीछे मुड़कर इज़राइलियों को देखते हैं, और उनके अविश्वास और बड़बड़ाहट पर अचम्भा करते हैं, और उन्हें लगता है वे स्वयं उतने कृतज्ञहीन नहीं होते, लेकिन जब उनके विश्वास को सामान्य परीक्षाओं द्वारा भी परखाजाता है तो वे भी उतना ही विश्वास और धैर्य प्रकट करते हैं जितना कि प्राचीन इज़राइली करते थे। जब उन्हें कष्टप्रद स्थानों में लाया जाता है तो वे, परमेश्वर द्वारा चुनी गई, उनके शुद्धीकरण की विधि पर बड़बड़ाते है। हालाँकि उनकी तात्कालिक आवश्यकाताओं की आपूर्ति कर दी जाती है, फिर भी बहुत से लोग भविष्य के लिये परमेश्वर पर विश्वास करने को असहमत हैं, और हमेशा चिंतितरहते हैं कि वे निर्धन हो जाएंगे और उनके बच्चों का कष्ट उठाना पड़ेगा । कुछ लोग पहले से ही विपदा के बारे में सोचते रहते हैं या विद्यमान कठिनाईयों को बढ़ा-चढ़ा कर देखते हैं, जिससे उनकी आखें उन आशीषों को देखने के लिए अन्धी हो जाती है, जिनके लिये उन्हें धन्यवाद करना चाहिये। जो बाधाएँ उनके सामने आती हैं, वे उन्हें, शक्ति के एकल स्रोत, सहायता के लिये परमेश्वर के पास ले जाने के बजाय, उनमें असन्तोष और अशान्ति जागृत करके, उन्हें उससे दूर कर देती हैं। PPHin 291.2

इस प्रकार अविश्वासी होने में क्या हम अच्छा करते हैं? हम अकृतज्ञ और संदिग्धचित क्यों हों? यीशु हमारा मित्र है, सम्पूर्ण स्वर्ग हमारे कल्याण में रूचि रखता है, और हमारी उत्सुंक्ता और हमारा डर परमेश्वर की पवित्र आत्मा को दुःखी कर देते हैं। हमें ऐसी चिंता में नहीं पड़ना चाहिये जो हमें केवल क्षति पहुँचाती है और कठिन परिस्थितियों को सहन करने में सहायता नहीं करती। हमें परमेश्वर के प्रति अविश्वास कोकोई स्थाननहीं देना चाहिये जो भविष्य की आवश्यकताओं के लिये तैयारियों कों हमारे जीवन का लक्ष्य बना दे, जैसे कि हमारी सुख शान्ति इन्हीं सांसारिक वस्तुओं में हो। यह परमेश्वर की इच्छा नहीं है कि उसके लोग बोझ से दबे हों। PPHin 292.1

लेकिनप्रभुयहनहींकहता कि हमारे मार्ग में कोई भी खतरे नहीं । वह अपने लोगों को बुराई और पाप से भरे जगत से बाहर ले जाने का प्रस्ताव नहीं रखता, वरन् वह एक सुनिश्चित शरण-स्थान का संकेत देता है। वह थके हुओं और बोझ से दबे लोगोंको आमन्त्रित करता है, "हे सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे हुए लोगों, मेरे पास आओ, में तुम्हें विश्राम दूँगा।" सांसारिक दायित्व

और चिंता का जुआ जो तूने अपनी गर्दन पर रखा हुआ है, उसे निकाल फेंको और, "मेरा जुआ अपने ऊपर उठा लो, और मुझ से सीखो, क्योंकि मैं नम्र और मन से दीन हूँ। तुम अपने मन से आराम पाओगे"-मत्ती 11:28, 29 । हम अपनी सारी चिन्ता उस पर डाल कर, परमेश्वर में शान्ति और आराम पा सकते हैं, क्योंकि उसको हमारा ध्यान है। 1 पतरस 5:7 देखिये। PPHin 292.2

पौलुस प्रेरित कहता है, "हे भाइयों, चौकस रहो कि तुम में ऐसा बुरा और अविश्वासी मन न हो, जो तुम्हें जीवते परमेश्वर से दूर हटा ले जाए।" जो कुछ भी परमेश्वर ने हमारे लिये किया है, उसी दृष्टि से हमारा विश्वास दृढ़, सक्रिय और चिरस्थायी होना चाहिये। बड़बाड़ने और शिकायत करने के बजाय हमारे हृदय से यह शब्द निकलने चाहिये, "हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह, और जो कुछ मुझ में है, वह उसके पवित्र नाम को धन्य कह, और उसके उपकार को न भूलना ।" भजन संहिता 103:1,2 PPHin 292.3

परमेश्वर इज़राइल की आवश्यकताओं के प्रति उदासीन नहीं था। उसने उनके अगुवों को कहा, "मैं तुम्हारे लिये आकाश से भोजन वस्तु बरसाऊंगा।' और निर्देश दिये गए कि लोग प्रतिदिन का भोजन इकट्ठा करें, और छठवें दिन दुगनी मात्रा में, ताकि विश्राम-दिन की पवित्र व्यवस्था को कायम रख सकें। PPHin 293.1

मूसा ने कलीसिया को आश्वास्त किया कि उनकी आवश्यकताएँ पूरी की जाएँगी, "यहोवा साँझ को तुम्हें खाने के लिये मास और भोर को पेट भर रोटी देगा। और हम क्या है? तुम्हारा बड़बड़ाना हम पर नहीं यहोवा ही पर होता है।" फिर उसने हारून से उनको कहलवाया, "यहोवा के सामने आओ, क्योंकि उसने तुम्हारा बड़बड़ाना सुना है।" जब हारून बोल ही रहा था, "उन्होंने जंगल की ओर दृष्टि करके देखा, औरयहोवा का तेज बादल में दिखाई दिया।" ऐसी भव्यता, जो उन्होंने पहले कभीनहीं देखी थी, ईश्वरीय उपस्थिति का प्रतीक थी। उनकी इन्द्रियों को संबोधित करने वाले प्रदर्शनों के माध्यम से उन्हें परमेश्वर का ज्ञान प्राप्त करना था। उन्हें यह सिखाना था कि केवल वह मनुष्य मूसा नहीं, वरन वह जो 'सर्वोच्चः है उनका अगुवा है, ताकि वे उसके नाम का भय माने और उसकी आज्ञा का पालन करें। PPHin 293.2

सांझ को बटेरें आकर सारी छावनी पर बैठ गई, और वे पूरे जन समूह की आवश्यकता की आपूर्ति के लिये पर्याप्त थी। भोर होने पर भूमि की सतह पर, "एक छोटी गोल सी वस्तु, जो पाले के किनकों के समान थी, पड़ी हुई मिली । वह धनिये के समान था, और उसका रंग रूप मोती का सा था।" लोगों ने उसे 'मनन्ना' कहा। मूसा ने कहा, "यह वही भोजनवस्तु है जो यहोवा तुम्हें खाने के लिये देता है।" लोगों में मन्ना को इकट्ठा किया और उन्हें पता चला कि वह सब के लिये पर्याप्त मात्रा में था। वे उसे, "चक्की में पीसते या ओखली में कटते थे, फिर तसले में पकाते और उसके फलके बनाते थे" और "उसका स्वाद शहद में बने पुए के समान था।" उन्हें निर्देश दिया गया कि प्रतिदिन प्रति मनुष्य के पीछे एक-एक ओमेर बटोरे, और सवेरे तक नहीं रख छोड़ना था। किसी ने

उसमें से कुछ सवेरे तक रख छोड़ा, तो सुबह तक वह मनन्ना खाने योग्य नहीं रहा। खाद्य सामग्री को प्रात: काल ही इकट्ठा करना था, क्योंकि जो कुछ भी भूमि पर रह जाता था, सूर्य की गर्मी से पिघल जाता था। PPHin 293.3

मन्ना के इकट्ठा करने में यह पाया गया कि किसी ने नियत मात्रा से अधिक और किसी ने कम मनन्ना पाया। लेकिन, "जब उन्होंने उसको ओमेर से नापा, तब जिसके पास अधिक थाउसके पास अधिक न रह गया, और जिसके पास थोड़ा था, उसको कुछ घटी नहीं हुई ।" इस पवित्र वचन का अर्थ औरउससे प्राप्त व्यावहारिक उपदेश, पौलूस द्वारा कुरिन्थियों की दूसरी पत्री में दिया गया है। "यह नहीं कि दूसरों को चैन और तुम को क्लेश मिले। परन्तु बराबरी के विचार से इस समय तुम्हारी बढ़त उनकी घटी में काम आए, ताकि उनकी बढ़त भी हो "जिसने बहुत बटोरा उसका कुछ अधिक न निकला और जिसने थोड़ा बटोरा उसका कुछ कम न निकला ।"2 कुरिन्थियों 8:13-15 PPHin 294.1

छठवें दिन लोगों ने प्रत्येक मनुष्य के पीछे दो ओमेर इकट्ठा किये। मण्डली के सब प्रधानों ने शीघ्र ही जाकर मूसा को इस बात से अवगत कराया। मूसा ने उत्तर दिया, "यह वही बात है जो यहोवा ने कही, क्योंकि कल परमविश्राम, अर्थात यहोवा के लिये पवित्र विश्राम होगा, इसलिये तुम्हें जो तन्दूर में पकाना हो उसे पकाओ और जिसे उबालना है उबालो, और इसमें से जितना बचे उसे सवेरे के लिये रख छोड़ो।" उन्होंने ऐसा नहीं किया और उसमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ। "तब मूसा ने कहा, आज उसी को खाओ, क्योंकि आज यहोवा का विश्रामदिन है, इसलिये आज तुम को वह मैदान में न मिलेगा। छः: दिन तो तुम उसे बटोरा करोगे, परन्तु सातवाँ दिन विश्राम का दिन है, उसमें वह न मिलेगा।" PPHin 294.2

परमेश्वर अपेक्षा करता है कि उसका पवित्र दिन को आज भी वही मान्यता मिले जो इज़राइल के समय में दी जाती थी। इब्रियों को दी गई आज्ञा को सब मसीहियों द्वारा यहोवा का आदेश माना जाना चाहिये। विश्राम दिन से पहले वाला दिन तैयारी का दिन होना चाहिये ताकि उसकी पवित्र घड़ियोंसे सम्बन्धित सब कुछ तैयार हो। किसी भी परिस्थिति में हमारी निजी व्यवस्था को पवित्र समय पर हावी नहीं होने देना चाहिये। परमेश्वर का निर्देश है कि रोगियों और पीड़ितो की देखभाल की जाए, उनके आराम के लिये किया गया परिश्रम दया का काम है, विश्राम दिन का खण्डन नहीं, लेकिन अनावश्यक कार्यों को टाल देना चाहिये। कई लोग उन छोटे-छोटे कार्यों को, जो तैयारी के दिन किये जा सकते थे, विश्राम दिन के प्रारम्भ होने तक छोड़ देते हैं। ऐसा नहीं होना चाहिये। जिन कार्यों को विश्राम दिन के प्रारम्भ तक अवहेलना की जाती है, उन्हें विश्राम दिन के बीत जाने तक नहीं करना चाहिये। यह नियम वे जो बेपरवाह है उनको विश्राम दिन का स्मरण कराएगा और वे अपने निजी कार्य छः कामकाजी दिनों में करने का ध्यान रखेंगे। PPHin 294.3

निर्जन प्रदेश में लम्बे समय तक डेरा लगाए रखने के दौरान प्रत्येक सप्ताह इज़राइली एक तिहरा चमत्कार के साक्षी होते थे जो विश्रामदिन की पवित्रता को उनके मनों पर अंकित करने के लिये किये जाते थे। छठवें दिन दुगुनी यात्रा में मन्ना बरसता था व सातवें दिन बिल्कूल नहीं और विश्राम दिन के लिये आवश्यक भाग मीठे और शुद्ध रूप से संरक्षित रहता था, जबकि अन्य दिनों में दूसरे दिन तक रखे रहने पर प्रयोग में लाने योग्य न रहता था। PPHin 295.1

मन्ना के दिये जाने से सम्बन्धित परिस्थितियों में, हमारे पास निर्णायक प्रमाण है कि विश्राम दिन का संस्थापन सिने पर्वत पर दस-आज्ञाओं के देने के समय नहीं हुआ था, जैसा कि कई लोग दावा करते है। सिने आने से पहले इज़राइली समझते थे कि विश्राम दिन को मानने के लिये वे कर्तव्यबद्ध हैं। PPHin 295.2

विश्राम दिन को मन्ना नहीं गिराया जाता था; इसदिन की तैयारी के लिये, शुकवार को दो गुना भाग इकट्ठा करने के निर्देश के द्वारा विश्राम दिन के पवित्र स्वभाव को लगातार उन्हें स्मरण कराया जाता था ।।और जब कुछ लोग विश्राम दिन पर मन्ना इकट्ठा करने बाहर गए, तो परमेश्वर ने पूछा, "तुम लोग मेरी आज्ञाओं और व्यवस्था को कब तक नहीं मानोगे? PPHin 295.3

"इज़राइली जब तक बसे हुए देश में न पहुँचे तब तक, अर्थात चालीस वर्ष तक मनन्ना खाते रहे, वे जब तक कनान देश की सीमा पर नहीं पहुँचे तब तक मन्ना खाते रहे।" चालीस वर्षों तक इस चमत्कारी प्रेम और सहानुभूति का प्रतिदिन स्मरण कराया गया। भजन लेखक के शब्दों में परमेश्वर ने उन्हें "स्वर्ग का अन्न दिया, मनुष्यों नेस्वर्गदूतों का खाना खाया"-भजन संहिता 78:24,25 । जिसका तात्पर्य है स्वर्गदूतों द्वारा उनके लिये दिया गया खाना। स्वर्ग के अन्न' को खाकर जीवित मनुष्यों को सिखाया गया कि परमेश्वर की प्रतिज्ञा के होते हुए वे घटी के प्रति ऐसे सुरक्षित थे मानो उपजाऊ तराईयों के लहराते अनाज के खेतों से घिरे हुए हों। PPHin 295.4

मन्ना, जो इज़राइल को जीवित रखने के लिये स्वर्ग से गिरता था उसका प्रारूप था जो संसार को जीवन देने के लिये परमेश्वर की ओर से आया। यीशु ने कहा, "जीवन की रोटी मैं हूँ। तुम्हारे बाप-दादाओं ने जंगल में मन्ना खाया और मर गए। यह वह रोटी है जो स्वर्ग से उतरती है। जीवन की रोटी जो स्वर्ग से उतरी में हूँ। यदि कोई इस रोटी में से खाए, तो सर्वदा जीवित रहेगा, और जो रोटी मैं जगत के जीवन के लिये दूँगा, वह मेरा माँस है।" और भावी जीवन में परमेश्वर के लोगों के लिये आशीर्वाद की प्रतिज्ञाओं में लिखा है, "जो जय पाए, उसे मैं गुप्त मन्ना में से दूँगा।" प्रकाशित वाक्य 2:17 PPHin 295.5

सीन नामक जंगल ने निकलने के पश्चात, इज़राइलियों ने रपीदीम में डेरा डाला। यहां पर पानी नहीं था और फिर से उन्होंने परमेश्वर की शक्ति पर अविश्वास किया। अपनी अज्ञानता और घृष्टता में वे लोग मूसा के पास यह माँग लेकर आए, "हमें पीने को पानी दे। लेकिन उसका धैर्य बना रहा। उसने कहा, "तुम मुझ से क्यों वाद-विवाद करते हो? और यहोवा की परीक्षा क्यों लेते हो? वे कोध

से बड़बड़ाने लगे, "तू हमें बाल-बच्चों और पशुओं समेत प्यासा मार डालने के लिये मिस्र से क्यों ले आया है?" जब उन्हें बहुतायत से खाना मुहैया कराया गया, उन्होंने शर्मसार होकर अपने अविश्वास और अपनी बड़बड़ाहट का स्मरण किया और भविष्य में प्रभु पर विश्वास रखने की प्रतिज्ञा की, लेकिन वे शीघ्र ही अपनी प्रतिज्ञा को भूल गए और अपने विश्वास की प्रथम परीक्षा में असफल रहे। उनका मार्गदर्शन करने वाला बादल का स्तम्भ एक भयानक रहस्य पर पर्दा डाले प्रतीत हो रहा था। और मूसा कौन था वह? वे पूछ रहे थे, और उनको मिस्र से लाने में उसका क्या उद्देश्य था? उनके हृदय सन्देह और अविश्वास से भर गए और उन्होंनेउस पर निर्भीकता से आरोप लगाया कि उसने उन्हें और उनके बच्चों को कठिनाईयों और अभावों से मार डालने का षड़यन्त्र रचा था ताकि वह स्वयं को उनकी धन-सम्पत्ति से धनवान बना सके। घृणा और कोध के कोलाहल में वे उस पर पथराव करने वाले थे। PPHin 296.1

तब मूसा ने यहोवा की दुहाई दी, "इन लोगों के साथ मैं क्या करूँ? उसे इज़राइल के वृद्ध लोगों और मिस्र में जिसके प्रयोग से आश्चर्यकर्म किये गए थे, उस लाठी को लेकर लोगों के आगे-आगे जाने को कहा गया। और परमेश्वर ने उससे कहा, "देख, मैं तेरे आगे चलकर होरेब पहाड़ की एक चट्टान पर खड़ा रहूंगा, और तू उस चट्टान पर मारना,तब उसमें से पानी निकलेगा, जिससे ये लोग पीएँ; उसने वैसा ही किया और जीवन्त जल की धारा फूट पड़ी और पूरे डेरे को बहुतायत से जल प्राप्त हुआ। मूसा को लाठी उठाकरइन बड़बड़ाते हुए सरदारों पर किसी भयानक विपत्ति को बुलानेकी आज्ञादेने के बजाय, अपनी करूणा में प्रभु ने उसी लाठी को उनके छुटकारे के लिये अपना साधन बनाया। PPHin 296.2

"वह जंगल में चट्टानों को फाड़कर उनको मानो गहरे जलाशयों से पानी पिलाता था। उसने चट्टान से भी धाराएँ निकाली और नदियों का सा जल बहाया -भजन संहिता 78:45,16 ।मूसा ने चट्टान पर लाठी से मारा, लेकिन उस बादल के स्तम्भ में आवृत परमेश्वर का पुत्र था, जिसने मूसा के पास खड़े होकर जीवनदायी पानी को बहाया, ना सिफ मूसा और पुरनियों ने, वरन् दूरखड़ी समस्त कलीसिया ने प्रभु की महिमा के दर्शन किये, लेकिन यदि बादल को हटा दिया जाता, तो उसमें रहने वाले तेज प्रकाश ने उन्हें मार दिया होता। PPHin 297.1

प्यास के प्रभाव में लोगों ने यह कहते हुए परमेश्वर को परखा, "प्रभु हमारे बीच में है या नहीं"? " यदि परमेश्वर हमे यहां लेकर आया है, तो वह हमे रोटी और पानी क्यों नहीं देता?" इस प्रकार प्रकट किया हुआ अविश्वास आपराधिक था और मूसा को डर था कि परमेश्वर की दण्डाज्ञा उन पर आएगी और उसने उस स्थान का नाम मस्सा-'परीक्षा' और मरीबा, 'डॉटना' रखा। यह उनके पाप का स्मारक था। PPHin 297.2

अब उनके ऊपर एक नया खतरा मण्डरा रहा था। उनकी बड़बड़ाहट के कारण परमेश्वर ने उनके दुश्मनों द्वाराइउन पर आक्रमण होने दिया। अमालेकी, उस क्षेत्र में रहने वाली एक उग्र,

रणकुशल जाति, उनसे लड़ने को आ गये और उन सब को मार गिराया जो थक कर पीछे रह गये थे। यह जानते हुए कि अधिक संख्या में लोग युद्ध करने के लिये तैयार नहीं थे, मूसा ने यहोशू को कहा कि वह अलग-अलग कुठम्बों में से योद्धाओं का एक समूह चुने और दुश्मन से लड़ने में उनका नेतृत्व करें, और वह स्वयं परमेश्वर की लाठी हाथ में लिये हुए पहाड़ी की चोटी पर खड़ा रहेगा। मूसा की इस आज्ञा के अनुसार यहोशू और उसकी टोली ने अमालेकियों पर आक्रमण किया, और मूसा हारून और हूर पहाड़ी की चोटी पर चढ़ गए। अपने हाथ स्वर्ग की ओर उठाए व अपने सीधे हाथ में परमेश्वर की लाठी पकड़े हुए, मूसा ने इज़राइल की सेनाओं की सफलता के लिये प्रार्थना की। युद्ध के दौरान यह देखा गया कि जब तक मूसा अपना हाथ ऊपर उठाए रहता, तब तक इज़राइल प्रबल होता, परन्तु जब उसके हाथ नीचे आ जाते तो शत्रु विजयी होने लगता। जब मूसा थक गया, तब हारून और हूर सूर्यास्त तक उसके हाथों को सम्भाले रहे और तब शत्रु को खदेड़ दिया गया। PPHin 297.3

हारून और हूर ने मूसा के हाथों को उठाए रखने में लोगों को यह बताया कि जब मूसा उन्हें बताने के लिये परमेश्वर के आदेश को ग्रहण करे, यह उनका कर्तव्य था कि उस कठिन काम में वे उसका समर्थन करें। मूसा की भूमिका भी महत्वपूर्ण थी, क्योंकि उससे पता चलता था कि उनका भविष्य परमेश्वर के हाथों में था; जब वे उस पर विश्वास रखेंगे वह उनके लिये लड़ेगा और उनके शत्रुओं को वश में करेगा, लेकिन जब वे उसे छोड़कर स्वयं की योग्यता पर विश्वास करेंगे तो वे उनसेभीदुर्बलहो जाएँगे जिनके पास परमेश्वर का ज्ञाननहीं था और उनके शत्रु उन पर विजय पा लेंगे। PPHin 298.1

जैसे मूसा के द्वारा हाथ स्वर्ग की ओर ऊपर उठाकर इब्रियों की मध्यस्थता करने में उनकी विजय हुईं, इसी प्रकार जब परमेश्वर का इज़राइल विश्वास के साथ अपने 'महान सहायक' के सामर्थ्य पर निर्भर करता है तो वह विजयी होता है। अभी भी ईश्वर की शक्ति और मनुष्य के प्रयत्नों को मेल आवश्यक है। मूसा को यह विश्वास नहीं था कि इज़राइल के निष्क्रिय रहने पर परमेश्वरउनके शत्रुओंको पराजितकरेगा। जब महान अगुवा प्रभु से विनती कर रहा था, तबयहोशूऔर उसके साहसी अनुयायी परमेश्वर और इज़राइल के शत्रुओं कोखदेड़ कर भगा देने का भरसक प्रयत्न कर रहे थे। PPHin 298.2

अमालेकियों की पराजय के पश्चात परमेश्वर ने मूसा को निर्देश दिया, "स्मरणार्थ इस बात को पुस्तक में लिख ले और यहोशू को सुना दे कि मैं आकाश के नीचे से अमालेक का स्मरण भी पूरी रीति से मिटा डालूँगा।" मृत्यु से कुछ समय पहले इस महान अगुवे ने अपने लोगों को यह आज्ञा दी, "स्मरण रख कि जब तू मिस्र से निकलकर आ रहा था तब अमालेक ने तुझ से मार्ग में क्या किया। जब तू मार्ग में थका माँदा था, तब तुझ पर चढ़ाई करके जितने निर्बल होने के कारण सबसे पीछे थे उन सभी को मारा, उनको परमेश्वर का भय न था. ......प अमालेक का नाम धरती पर से मिटा

डालना, और तुम इस बात को न भूलना ”-व्यवस्थाविवरण 25:17-19। इन दुष्ट लोगों के सन्दर्भ में प्रभु ने घोषणा की, “यहोवा अमालेकियों से पीढ़ियों तक लड़ाई करता रहेगा ।”-निर्गमन 17:16 PPHin 298.3

अमालेकी परमेश्वर के चरित्र या उसकी सार्वभौमिकता से अनभिज्ञ नहीं थे, लेकिन उसका भय मानने के बजाय, उन्होंने उसके आधिपत्य को ललकारने का दुस्साहस किया। अमालेक के लोगों ने मूसा के माध्यम से दिखाए गए आश्चर्यकर्मो कोउपहास का विषय बना दिया और पड़ोसी देशों के भय का ठट्ठा उड़ाया गया। उन्होंने अपने देवी-देवताओं की शपथ खाई कि वे इब्रियों का विनाश कर देंगे ताकि कोई भी भाग कर निकल नहीं पाए और वे अंहकारी मन से कहते रहे कि इज़राइल का परमेश्वर उनका विरोध करने में असमर्थहोगा। उन्हें इज़राइलियों द्वारान तो धमकी दी गई थी और न ही चोट पहुँचाई गयी थी । उनका आक्रमण बिल्कूल अकारण था। वे केवल परमेश्वर के प्रति अवज्ञा व घृणा को प्रकट करने हेतु उसके लोगों का विनाश करना चाहते थे। अमालेकी लम्बे समय से कर पापी थे और उनके अपराधों ने परमेश्वर को प्रतिशोध लेने के लिये पुकारा, लेकिन फिर परमेश्वर ने उन्हें प्रायश्चित का अवसर दिया लेकिन जब अमालेक के योद्धाओं ने इज़राइल के निहत्थे और थके हुए सिपाहियों पर आक्रमण किया तो उन्होंने अपने ही देश का विनाश निश्चित कर लिया। परमेश्वर अपने सबसे दुर्बल संतान की रक्षा करता है। स्वर्ग उन पर हुए अत्याचार और निर्दयता के किसी भी कृत्य को अनदेखा नहीं करता। जो भी उससे प्रेम करते हैं और उसका भय मानते है, उन पर उसकी सुरक्षा का हाथ होता है, मनुष्य सावधान रहे कि वह उस हाथ पर वार नहीं करे, क्योंकि उस हाथ में न्याय की तलवार होती हैं। PPHin 298.4

इज़राइलियों के डेरे से कुछ ही दूरी पर मूसा के सुसर यित्रो का घर था। इब्रियों के छुटकारे का समाचार पाकर यित्रोमूसा की पत्नी और दोनों पुत्रों को मूसा के पास लौटाने के लिये उससे भेंट करने को निकला। मूसा को सन्देशवाहकों द्वारा उनके आगमन की सूचना दी गई और वह प्रफुल्लित होकर उनसे मिलने गया, और औपचारिक अभिनन्दन के बाद उन्हें अपने तम्बू में ले गया। मिस्र से इज़राइल का नेतृत्व करने में खतरों से बचाने के लिये वह उन्हें पीछे छोड़ आया था, लेकिन अब वह उनकी संगति का सुख भोग सकता था। उसने यित्रो को इज़राइल के लिये किए गएसभी कार्यों का वर्णन किया और कुलपिता आनन्दित हुआ और परमेश्वर को धन्य किया, मूसा और पुरनियों के साथ मिलकर उसने बलि की भेंट चढ़ाई और परमेश्वर की करूणा के स्मरण में प्रतिभोज का आयोजन किया। PPHin 299.1

डेरे में रहते हुए यित्रो ने देखा कि मूसा पर कितना बड़ा उत्तरदायित्व था। इतने विशाल, अज्ञान और अप्रशिक्षित जन-समूह में अनुशासन और व्यवस्था बनाए रखना बहुत बड़ा काम था। मूसा उनका मान्यता प्राप्त अगुवा और न्यायी था और न केवल लोगों के कर्तव्य और सामान्य हितों की बातें, वरन् उनके बीच उत्पन्न लड़ाई झगड़ों कोभी निर्णय के लिये उसके पास भेजा जाता था।

उसने ऐसा होने दिया क्योंकि ऐसा करने से उसे उन्हें निर्देश देने का अवसर मिल जाता था जैसा कि उसने कहा, "में उन्हें परमेश्वर की विधि और व्यवस्था समझता हूँ।" लेकिन यित्रों ने विरोध करते हुए कहा, "यह काम तेरे लिये बहुत भारी है, तू इसे अकेला नहीं कर सकता ।" "तुम निश्चय ही थक जाओगे।" और उसने मूसा को सम्मति दी कि वह गुणी मनुष्यों को हजार-हजार सौ-सौ, पचास-पचास और दस-दस मनुष्यों पर प्रधान नियुक्त कर दे। ये पुरूष, "परमेश्वर का भय मानने वाले, सच्चे और कपटीपन से घृणा करने वाले होने चाहिये ।" उन्हें छोटे-छोटे मुकदमों को मूसा के सम्मुख लाना था। यित्रों ने कहा, "तू इन लोगों के लिये परमेश्वर के सम्मुख जाया कर, और इनके मुकद्दमों को परमेश्वर के पास तू पहुँचा दिया करं इन्हें विधि और व्यवस्था प्रगट करके, जिस मार्ग पर इन्हें चलाना है, और जो-जो काम इन्हें करनाहो, वह उनको जता दिया कर ।" इस सम्मति को मूसा ने स्वीकार किया और इससे ना केवल मूसा को राहत मिली, वरन्इसके परिणामस्वरूप लोगों में सम्पूर्ण शान्ति व्यवस्था स्थापित हो गई। PPHin 299.2

परमेश्वर ने मूसा को बहुत सम्मानित किया था, और उसके हाथों आश्चर्य कर्म करवाये थे, लेकिन दूसरों को निर्देश देने के लिये चुने जाने के तथ्य ने उसे इस निष्कर्ष पर नहीं पहुँचने दिया कि स्वयं उसे किसी निर्देशन की आवश्यकता नहीं थी। इज़राइल के नियुक्त अगुवे ने मिद्यान के धर्मपरायण याजक के सुझावों को शान्ति से सुना और उसकी योजना को एक ज्ञानपूर्ण आयोजन के रूप में अपनाया । PPHin 300.1

रपीदीम से वे लोग बादल के स्तम्भ के पीछे-पीछे यात्रा करते रहे । उनका मार्ग बंजर मैदानों के पार, खड़ी ढाल वाली चढ़ाईयों से और पथरीली संकरी घाटियों में से होकर निकला। बालुई बंजर भूमि के पारगमन में उन्होंने अपने सामने उबड़-खाबड़ पहाड़ों को किले के समान अपने मार्ग के आड़े खड़े पाया, जो उनकी प्रगति में बाधा प्रतीत हो रहे थे। लेकिन निकट पहुँचने पर उन्होंने पाया कि पहाड़ो की दीवार में यहाँ-वहाँ खुली जगह थी, जिसके पार दूसरी घाटी सदृश्य हो रही थी। अब उन्हें एक गहरे कंकरीले रास्ते से ले जाया गया। यह एक भव्य और प्रभावशाली दृश्य था। दोनो ओर कईं फीट ऊंचे पथरीली चट्टानों के बीच से, जहां तक दृष्टि जा सकती थी, अपने भेड़-बकरियों और गाय-बैलों समेत इज़राइल की सेनाएँ, बहती धारा के समान प्रतीत हुए। और अब उनके सामने पवित्र वैभव लिये सिने पर्वत का अति-विशाल अग्र भाग खड़ा था। बादल का स्तम्भ सिने पर्वत के शिखर पर जा टिका और लोगों में नीचे मैदानों में अपने तम्बू गाढ़े। यहीं पर लगभग एक साल तक उन्हें बसेरा करना था। रात को अग्नि-स्तम्भ उन्हें ईश्वरीय सुरक्षा का आश्वासन देता और जब वे निद्रा-मग्न हो जाते, तब उनके शिविर पर हल्के से स्वर्ग की रोटी गिरती थी। PPHin 300.2

भोर पहाड़ो की मेढ़ो को स्वर्णिम कर रही थी और सूरज की स्वर्णिम किरणें, तंग नदी घाटियों को भेद रही थी और इन थके मांदे यात्रियों को करूणा की किरणों सी प्रतीत हो रही थी। हर तरफ उबड़-खाबड़ ऊंचाईयाँ अपनी सुनसान भव्यता में सनातन स्थायित्व और तेजस्विता को

दर्शातीप्रतीत हो रही थी । यहाँ लोगों का मन पवित्रता और श्रद्धायुक्त भय से प्रभावित हुआ। PPHin 301.1

“जिसने पहाड़ों को तराजू में और पहाड़ियों को काँटे में तोला है” (यगाययाह 40:42) उसकी उपस्थिति में, मनुष्य को उसकी अज्ञानता और दुर्बलता का आभास कराया गया। यहाँ प्रभु ने अपनी निजी आवाज में घोषणा द्वारा अपने लोगों पर अपनी अपेक्षाओं की छाप छोडने के लिये उन्हें इकट्ठा किया। उनमें महत्वपूर्ण व सुधारवादी परिवेंतन लाया जाना था, क्योंकि मूर्तिपूजा से उनका चिरकालीन सम्बन्ध और दासत्व के निम्नकारी प्रभावों ने उनके आचरण व चरित्र पर अपनी छाप छोड़ दी थी। परमेश्वर उन्हें अपने बारे में ज्ञान देकर उन्हें उच्चतर सात्विक स्तर पर उठाने के लिये प्रयत्नशील था। PPHin 301.2

अध्याय 27—इज़राइल को दी गई व्यवस्था

यह अध्याय निर्गमन 19—24 पर आधारित है

सिने में पड़ाव डालने के तुरन्त बाद मूसा को परमेश्वर से भेंट करने के लिये पर्वत पर बुलाया गया। वह अकले ही उस खड़ी ढाल और उबाड़-खाबड़ रास्ते की चढ़ाई की और उस बादल के निकट आया जो यहोवा की उपस्थिति का अंकित स्थान था। इज़राइल का 'सर्वोच्च' अर्थात परमेश्वर के साथ एक घनिष्ठ और असाधारण सम्बन्ध स्थापित होने को था- उन्हें परमेश्वर के शासन के अधीनस्थ एक राष्ट्र और कलीसिया के रूप में संगठित होना था। लोगों के लिये मूसा का यह सन्देश था। PPHin 302.1

"तुमने देखा है कि मैंने मिस्रियों के साथ क्या किया, तुम को मानो ऊकाब पक्षी के पंखो पर उठाकर अपने पास ले आया हूँ। इसलिये अब यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे और मेरी वाचा का पालन करोगे, तो सब लोगो में से तुम ही मेरा निज धन ठहरोगे, क्योंकि समस्त पृथ्वी तो मेरी है। और तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे।' PPHin 302.2

शिविर में लौटने पर, मूसा ने इज़राइल के पुरनियों को बुलाकर, ईश्वरीय सन्देश को दोहराया। उन्होंने कहा, "जो कुछ यहोवा ने कहा है, वह सब हम करेंगे ।" इस प्रकार उसे अपना शासक मानकर, स्वयं को प्रतिज्ञाबद्ध करके उन्होंने परमेश्वर के साथ पवित्र वाचा बाँधी, जिसके द्वारा, विशेष रूप से, वे उसके आधिपत्य की प्रजा बन गए। PPHin 302.3

मूसा फिर से पहाड़ पर चढ़ा और प्रभु ने उससे कहा, "सुन, में बादल के अंधियारे में होकर तेरे पास आता हूँ, इसलिये जब तक में तुझ से बातें करूं तब वे लोग सुनें, और सदा तुझ पर विश्वास करें। मार्ग में कठिनाईयाँ सामने आने पर वे मूसा एवं हारून के विरूद्ध बड़बड़ाने लगते और उन पर दोष लगाते कि वे इज़राइल के लोगों को मिस्र से इसलिये निकाल लाए ताकि उनका विनाश कर सके । परमेश्वर मूसा को उनके सामने सम्मानित करता। ताकि वे उसके निर्देशों में विश्वास ला सकें। PPHin 302.4

अपनी व्यवस्था को उच्चारित करने के दृश्य को परमेश्वर ने महिमामयी व भव्य बनाया जो कि उसके उत्कृष्ट विशेषता में मेल खाता था। लोगों को इस बात से प्रभावित करना था कि परमेश्वर के कार्यों से सम्बन्धित सभी कार्यों का महानतम भक्तिभाव से आदर करना चाहिये। परमेश्वर ने मूसा से कहा, "लोगों के पास जा और उन्हें आज और कल पवित्र करना, और उन्हें अपने वस्त्र धोने देना। वे तीसरे दिन तक तैयार हो जाएँ, क्योंकि तीसरे दिन यहोवा सब लोगों के देखते-देखते सिने पर्वत पर उतर आएगा।" इन मध्यवर्ती दिनों में सभी को परमेश्वर के सम्मुख प्रस्तुत होने के लिये विधिवत तैयारी में समय व्यतीत करना था। उनके वस्त्र और व्यक्तित्व अशुद्धता से मुक्त होना था। जब मूसा

उन्हे उनके पापों से अवगत कराए, तो उन्हें प्रार्थना, उपवास और विनीतता को समर्पित होकर अपने हृदयों से अधर्म को दूर करना था। PPHin 302.5

आज्ञानुसार तैयारियाँ की गई और अगले आदेश का पालन करते हुए मूसा ने पहाड़ के चारों ओर बाढ़ा बाँधा, ताकि चाहे मनुष्य हो या पशु कोई भी सीमा लॉघकर उस पवित्र स्थान पर नहीं आए। जो कोई भी पहाड़ को छुए वह निश्चय ही मार डाला जाता। PPHin 303.1

तीसरे दिन भोर होने पर जब सब लोगों की आँखें पर्वत की ओर थी, पर्वत शिखर एक घने बादल ने ढक गया और बादल स्याह और घना होता गया जो तब तक नीचे उतरता रहा जब तक पूरा पर्वत अन्धकार और भयावह रहस्य में लिपट गया। फिर तुरही का स्वर सुनाई दिया जो लोगों को परमेश्वर से मिलने को बुला रहा था, और मूसा उन्हें पर्वत की सीमा पर ले गया। गहरे अन्धकार में से बिजलियाँ चमक रही थी, औरबादलों का गर्जन आस-पास के पहाड़ो में गूंज रहा था। "और यहोवा जो आग में होकर सिने पर्वत पर उतारा था, इस कारण समस्त पर्वत धुएँ से भर गया, और उसका धुंआँ भट्ठे का सा उठ रहा था, और समस्त पर्वत बहुत काँप रहा था।" "इज़राइलियों की दृष्टि में यहोवा का तेज पर्वत की चोटी पर प्रचण्ड आग के समान दिखाई पड़ता था।" और, "तुरही का शब्द देर तक सुनाई देता रहा, और तेज होता गया।" यहोवा की उपस्थिति के प्रतीक इतने प्रभावशाली थे कि इज़राली डर से काँप उठे, और प्रभु के सम्मुख अपने मुँह क बल गिर पड़े। यहां तक कि मूसा भी बोल उठा, "मैं बहुत डर गया हूँ और कॉप रहा हूँ। - इब्रानियों 12:21 PPHin 303.2

अब गड़गड़हाट थम गई, तुरही का शब्द अब सुनाई नहीं दे रहा था, पृथ्वी भी स्थिर हो गई थी। इस समय सन्नाटा छा गया, और फिर परमेश्वर का शब्द सुनाई दिया। घने बादल के बीच से बोलते हुए, जब वह पर्वत पर स्वर्गदूतों के समूह से घिरा हुआ खड़ा था, परमेश्वर ने अपनी व्यवस्था को प्रकट किया। इस दृश्य का वर्णन करते हुए मूसा कहता है, "यहोवा सिने से आया, और सेईर से उनके लिये उदय हुआ, उसने पारान पर्वत पर से अपना तेज दिखाया और लाखों पवित्रों के मध्य में से आया, उसके दाहिने हाथ से उनके लिये ज्वालामय विधियाँ निकली। वह निश्चय ही देश-देश के लोगों से प्रेम करता है, उसके सब पवित्र लोग तेरे हाथ में है, ये तेरे पाँवों के पास बैठे रहते हैं, हर एक तेरे वचनों से लाभ उठाता है।" व्यवस्था विवरण 33:2,3 PPHin 303.3

यहोवा ने स्वयं को केवल विधि-निर्माता और न्यायाधीश की महिमामयी तेजस्विता में ही नहीं, वरन् अपने लोगों के दयावान अभिभावक के रूप में भी प्रकट किया, "मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ जो तुझे दासत्व के घर अर्थात मिस्र देशसे निकालकर आया है।" वह जिसको वे पहले से ही मार्गदर्शक और मुक्तिदाता के रूप में जानते थे, जो उनके लिये समुद्र के बीच से रास्ता निकाल कर, फिरौन और उसकी सेना को हराकर, मिस्र से निकाल कर लाया था, जिसने स्वयं को मिस्र के सभी देवी-

देवताओं से उच्चतर प्रमाणित किया था - वही था जिसने अब अपनी व्यवस्था का उच्चारण किया। PPHin 304.1

व्यवस्था, इस समय केवल इब्रियों के लाभ के लिये ही नहीं बताई गई । परमेश्वर ने उन्हें उसकी व्यवस्था के रक्षक और अभिभावक बनाकर उनका सम्मान किया, लेकिन उसे सम्पूर्ण जगत के लिये पवित्र कार्यभार जैसे माना जाना चाहिये। दस नियमों के सिद्धान्त सारी मानवता के अनुकल है और वे सभी के संचालन और निर्देशन के लिये दिए गए थे। आधिकारिक, व्यापक व संक्षिप्त दस नियम मनुष्य के परमेश्वर और अन्य लोगों के प्रति कर्तव्य की व्याख्या करते है और सभी प्रेम के महान मौलिक सिद्धान्त पर आधारित है, "तू प्रभु अपने परमेश्वर अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी शक्ति और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख और अपने पड़ौसी से अपने समान प्रेम रख'-लूका 10:27 [दस आज्ञाओं में इन सिद्धान्तों को विस्तार से कार्यान्वित किया जाता है और मनुष्य की अवस्था और परिस्थितियों के अनुकूल बनाए गए हैं। PPHin 304.2

"तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना ।'' PPHin 304.3

यहोवा जो, सनातन, आत्म-विद्यमान, जिसे सृजा नहीं गया, जो स्वयं सबका स्रोत ओर पोषक है, वही अकेला आदर और भक्ति का हकदार है। अपने कार्यों या अपने सम्बन्धों में परमेश्वर को छोड़ और किसी चीज को पहला स्थान देने की मनाही है। जो भीहम संजोए रखते हैं, वह परमेश्वर के लिये हमारे प्रेम को कम करने या उसकी भक्ति में हस्तक्षेप करने की प्रवृति रखता है, क्योंकि वही हमारे लिये ईश्वर बन जाता है। PPHin 304.4

"तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना, जो आकाश में या पृथ्वी पर, या जल में है। तू उनको दण्डवत न करना, और न उनकी उपासना करना।" PPHin 305.1

दूसरी आज्ञा प्रतिभाओं या प्रतिरूपों के माध्यम से सच्चे परमेश्वर की आराधना की मनाही करती है। कई मूर्तिपूजक जातियों ने दावा किया कि उनकी मूर्तियाँ केवल आकार या चिन्ह थे जिनके द्वारा ईश्वर की आराधना की जाती थी, लेकिन परमेश्वर ने ऐसी आराधना को पाप घोषित किया है। सनातन परमेश्वर की सांसारिक वस्तुओं के द्वारा निरूपण करने से मनुष्य की परमेश्वर के बारे में धारणा अपकृष्ट हो जाएगी। यहोवा की अनन्त सर्वत्कृष्टता से हटकर मन सृष्टिकर्ता के बजाय सृष्टि के प्रति आकर्षित हो जाएगा। परमेश्वर के बारे में विचारों के घटने से मनुष्य का स्तर भी गिरता जाएगा। PPHin 305.2

"में तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखने वाला परमेश्वर हूँ।" विवाह के रूप में परमेश्वर का उसके लोगों के साथ घनिष्ठ और पवित्र सम्बन्ध का प्रतीक है। क्योंकि मूर्तिपूजा आध्यात्मिक व्यभिचार है, परमेश्वर की इसके प्रति अप्रसन्नता को जलन कहना उचित है। PPHin 305.3

“जो मुझसे बैर रखते हैं, उनके बेटों, पोतों, और परपोतों को भी पितरों का दण्ड दिया करता हूँ।” माता-पिता के गलत कायौ के कारण उनकी सन्तान को कष्ट अवश्य उठाना पड़ताहै, लेकिन यदि वे उनके पापों में भाग नहीं लेते तो उन्हें अपने माता-पिता के अपराधों के लिये दण्डित नहीं किया जाता है। लेकिन ऐसा होता है कि बच्चे अपने माता-पिता के कदमों पर चलते है। मीरास और उदाहरण से पुत्र अपने पिता के पापों के भागीदार हो जाते है। विकृ्त प्रवृतियाँ, विकृ्त रूचियाँ, भ्रष्ट नैतिकता और शारीरिक बीमारियाँ व पतन पिता से पुत्र में धरोहर की तरह, तीसरी और चौथी पीढ़ी तक संचारित हो जाते है। इस भयावह सत्य में वह शक्ति अवश्य है जो मनुष्य को पाप के मार्ग पर चलने से रोकती है। PPHin 306.1

“जो मुझ से प्रेम रखते है और मेरी आज्ञाओं को मानते है, उन हजारों पर में करूणा किया करता हूँ।” देवी-देवताओं की आराधना की मनाही में, दूसरी आज्ञा सच्चे परमेश्वर की आराधना का आदेश देती है।जो भक्ति में उसके प्रति निष्ठावान है उन्हें तीसरी और चौथी पीढ़ी तक ही नहीं, वरन हजारों पीढ़ियों तक, अनुग्रह का आश्वासन है लेकिन उसका तिरस्कार करने वालों कोतीसरी और चौथी पीढ़ी तक उसके कोप की चेतावनी दी जाती है। PPHin 306.2

“त् अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना, क्योंकि जो यहोवा का नाम व्यर्थ ले वह उसको निर्दोष न ठहराएगा।” PPHin 306.3

यह आज्ञा न केवल झूठी शपथों और सामान्य सौगन्धों पर रोक लगाती है, वरन् परमेश्वर का नाम, सहजता या लापरवाही से, उसकी उत्कृष्ट महत्ता के अनादर के साथ लेने की भी मनाही करता है। सामान्य वार्तालाप में परमेश्वर के अचेत उल्लेख से, साधारण विषयों से सम्बन्धित याचनाओं से, और उसके नाम को बार-बार विचारहीनता से लेने में, हम उसका निरादार करते है। “उसका नाम पवित्र और भययोग्य है”-भजन संहिता 111:9। सभी को उसके गौरव शुद्धता और पवित्रता पर मनन करना चाहिये, जिससे कि उसके उत्कृष्ट चरित्र में उनका हृदय प्रभावित हो, और उसका नाम अत्यन्त आदर और संजीदगी से लेना चाहिये। PPHin 306.4

“तू विश्राम को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखना। छः: दिन तो तू परिश्रम करके अपना सब काम काज करना, परन्तु सातवाँ दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये विश्रामदिन है। उसमें न तो तू किसी भांति का काम-काज करना, और न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा दास, न तेरी दासी, ने तेरे पशु, न कोई परदेशी, जो तेरे घर में हो, क्योंकि छः दिन में यहोवा ने आकाश, पृथ्वी और समुद्र, और जो कुछ उनमें है, सबको बनाया और सातवें दिन विश्राम किया, इस कारण यहोवा ने विश्रामदिन को आशीष दी और उसको पवित्र ठहराया।” PPHin 306.5

विश्राम दिन या सबत का एक नई व्यवस्था की तरह नहीं वरन् सृष्टि के समय संस्थापित की गईं संस्था के रूप में परिचय कराया गया है। इसे सृष्टिकर्ता के कार्य के स्मारक के रूप में स्मरण रखना है और इसका पालन करना है। परमेश्वर की ओर ष्थ्वी और आकाश के रचयिता होने का

संकेत करते हुए, वह उसे अन्य देवी-देवताओं से अलग सच्चे परमेश्वर की विशिष्टता प्रदान करता है। जो भी विश्राम दिन को विधिवत मानते है वे यह दर्शाते हैं कि वे यहोवा के उपासक हैं। इस प्रकार जब तक इस पृथ्वी पर उसकी भक्ति करने वाले हैं तब तक विश्राम दिन परमेश्वर के प्रति मनुष्य की स्वामिभक्ति का चिन्ह है। दसों आज्ञाओं में से केवल चौथी आज्ञा में नियम बनाने वाले का नाम और पदवी दोनों पाए जाते हैं। यही एक आज्ञा है जो यह बताती है कि व्यवस्था किसके अधिकार से दी गई है। इस प्रकार उसकी विश्वसनीयता और बन्धन्कारी शक्ति के प्रमाण के तौर पर उसकी व्यवस्थाके साथ उसकी महुर भी संबद्ध है। PPHin 306.6

परमेश्वर ने मनुष्य को श्रम करने के लिये छ: दिन दिये हैं और वह चाहता है कि मनुष्य अपने निजी कार्य छः काम-काजी दिनों में सम्पन्न करे। विश्राम-दिन के दौरान आवश्यकता व दया के काम करने की अनुमति है, रोगियों और पीड़ितों की हर समय देखभाल करनी चाहिये, लेकिन अनावश्यक कार्यों को टाल देना चाहिये। यगरायाह 58:13 में लिखा है, “यदि तू विश्रामदिन को अशुद्ध न करे अर्थात मेरे उस पवित्र दिन में अपनी इच्छा पूरी करने का यत्न न करें, और विश्रामदिन को आनन्द का दिन और यहोवा का पवित्र किया हुआ दिन समझकर माने, यदि तू उसका सम्मान करके उस दिन अपने मार्ग पर न चले, अपनी इच्छा पूरी न करे”...और निषेधाज्ञा यहीं समाप्त नहीं होती, “और अपनी ही बाते न बोले” नबी कहता है। जो लोग सबत के दिन व्यापारिक विषयों पर चर्चा करते है या योजनाएं बनाते हैं, उन्हें परमेश्वर व्यापार के वास्तविक लेन-देन में व्यस्त ही मानता है। विश्राम दिन को पवित्र रखने के लिये, हमें अपने मन सांसारिक वर्ग की वस्तुओं में नहीं लगाना चाहिये। और यह आज्ञा हमारे फाटकों के भीतर सब कुछ को सम्मिलित करता है। घर के सदस्यों को पवित्र घड़ियों के दौरान अपने सांसारिक किया-कलापों को अलग रख देना चाहिये। इस पवित्र दिन पर सभी को सहर्ष भक्ति द्वारा एकजुट होकर परमेश्वर की महिमा करनी चाहिये। PPHin 307.1

“तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, जिससे जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है, उसमें तू बहुत दिन तक रहने पाए।” PPHin 307.2

माता-पिता की एक सीमा तक प्रेम और आदर पाने का अधिकार है, जिसपर और किसी का अधिकार नहीं। उनके सुपुर्द किये गएबच्चों का उत्तरदायित्व परमेश्वर ने स्वयं उन पर डाला है और यह उसी का आदेश है कि अपने बच्चों की बाल्यवस्था में वे उनके लिये परमेश्वर के स्थान पर खड़े रहे । जो अपने मां-बाप की यथोचित अधिकार की उपेक्षा करता है, वह परमेश्वर के प्रभुत्त का तिरस्कार करता है। पांचवी आज्ञा के अनुसार बच्चों को अपने माता-पिता के प्रति विनम्रतापूर्ण, आज्ञाकारी और आदरपूर्ण होना चाहिये। इसके अतिरिक्त उनके साथ प्रेम और नम्रता से व्यवहार करना चाहिये, उनके बोझ को हल्का करना चाहिये, उनकी प्रतिष्ठा को सुरक्षा करनी चाहिये और उनकी वृद्धावस्था में उन्हें सहायता और सान््तवना देनी चाहिये। इसके अलावा उन्हें शासकों और

धर्माध्यक्षों और उन सब का, जिन्हें परमेश्वर ने अधिकार दिया है, आदर करना चाहिये। PPHin 307.3

इफिसियों 6:2 में प्रेरित कहता है, "यह पहली आज्ञा है जिसके साथ प्रतिज्ञा भी है।" इज़राइल के लिये, जो कनान में जल्द ही प्रवेश करने वाला था, यह आज्ञाकारी लोगों के लिये उस समृद्ध देश में चिरआयु के लिये शपथ थी, लेकिन परमेश्वर के सम्पूर्ण इज़राइल के लिये इसका अभिप्राय विस्तृत है और वह पाप-मुक्त पृथ्वी पर अनन्त जीवन का आश्वासन देता है। PPHin 308.1

"तू खून न कर।" PPHin 308.2

अन्याय के वे सारे कृत्य जो जीवनकाल को घटाने के प्रवृति रखते है, घृणा और प्रतिशोध की भावना, ऐसा कोई भी आवेग जो दूसरों के प्रति हानिकारक कृत्यों को उकसाता है, या हमें दूसरों के अनष्ठि की इच्छा को जागृत करता है। (जो अपने भाई से घृणा करे, वह हत्यारा है) दरिद्रों और पीड़ितों की उपेक्षा, अतिभोग या अनावश्यक अभाव या अत्यधिक श्रम जो स्वास्थ्य के लिये हानिकारक हो- यह सब, कम या अधिक छठी आज्ञा का उल्लंघन है। PPHin 308.3

"तू व्यभिचार न कर।" PPHin 308.4

यह आज्ञा ना केवल अशुद्धता के कृत्यों की, वरन् उत्तेजना उत्पन्न करने वाले विचारों और अभिलाषाओं की, या कोई भी ऐसा काम जो उन्हें उत्तेजित करे, उनकी मनाही करता है। पवित्रता केवल बाहरी जीवन में ही नहीं, वरन् हृदय के गुप्त प्रयोजनों और भावनाओं में भी होनी चाहिये। जिसने परमेश्वर की व्यवस्था की व्यापक प्रतिबद्धता के बारे में सिखाया, उसी मसीह ने घोषणा कि कि कृदृष्टि या बुरे विचार भी गैर कानूनी काम के समान पाप ही है। PPHin 308.5

"तू चोरी न कर" PPHin 308.6

इस निषेधाज्ञा में सार्वजनिक पाप व निजी पाप दोनों ही सम्मिलित हैं। आठवीं आज्ञा मनुष्य की चोरी और दासों के व्यापार को दोषी ठहराती है और दूसरे देशों की जीतने के लिये युद्ध करने की मनाही करती है। यह चोरी और डकैती की निंदा करती है। यह जीवन की गतिविधियों की छोटी से छोटी विशेषता में सम्पूर्ण समग्रता की माँग करती है। यह व्यापार में ठगी की मनाही करती है और न्यायसंगत ऋण और वेतन की अदायगी की अपेक्षा करती है। यह आज्ञा यह घोषणा करती है कि स्वयं के लाभ के लिये दूसरे की अज्ञानता, दुर्बलता या दुर्भाग्य का लाभ उठाना, स्वर्ग की पुस्तकों में धोखाधड़ी के नाम से पंजीकत है। PPHin 308.7

"तू किसी के विरूद्ध झूठी साक्षी न देना।" PPHin 309.1

किसी भी विषय में झूठ बोलना, अपने पड़ोसी को धोखा देने का उद्देश्य या प्रयत्न, इसमें सम्मिलित है। धोखा देने का ध्येय अधर्म को संगठित करता है। आँख की सरसरी नजर से, हाथ के

संकेत से, मुखाकृति के भाव से झूठ को सत्य जैसे ही प्रभावशाली ढंग से कहा जा सकता है। सभीसाभिप्राय सुविचारित कथन, अतिश्योक्तिपूर्ण व भ्रमात्मक प्रभाव को व्यक्त करने के लिये सुनियोजित कटाक्ष या संकेत, यहां तक कि पथशभ्रष्ट करने के उद्देश्य से तथ्यों का वर्णन भी अधर्म है। यह सिद्धान्त हमें हानिकारक सन्देह या मिथ्या प्रस्तुति, लाँछन या गप-शप अपने पड़ोसी की प्रतिष्ठा को ठेस पहुँचाने के प्रयत्न की भी मनाही करता है। सत्य को सुविचारित रूप से दबाना, जिससे दूसरे को ठेस पहुँचे, नवीं आज्ञा का उल्लंघन है। PPHin 309.2

"त् किसी के घर का लालच न करना, न तो किसी की स्त्री का लालच करना और न किसी के दास या बैल गधे का, न किसी को किसी वस्तु का लालच करना।" PPHin 309.3

दसवीं आज्ञा, स्वार्थी मनोकामनापर, जहां से पापमय कृत्य उत्पन्न होता है, रोक लगाते हुए पाप की जड़ पर ही प्रहार करती है। जो दूसरों का है उसके लिये पापमय अभिलाषा रखने पर, परमेश्वर की आज्ञा को मानते हुए, रोक लगा लेता है, वह अपने सह-प्राणियों के साथ गलत काम करने का अपराधी न होगा। PPHin 309.4

महान नियम बनाने वाले के गौरव और सामर्थ्य के आश्चर्यजनक प्रदर्शन के साथ आग और आग की लपटों के बीच से बोले गए दस आज्ञाओं के पवित्र सिद्धान्तों का यह वर्णन है। परमेश्वर ने अपनी व्यवस्था के साथ अपनी महिमा और सामर्थ्य का प्रदर्शन इसलिये किया ताकि लोग इस दृश्य को कभी नहीं भूले, और नियम के लेखक के प्रथ्वी और आकाश के सृष्टिकर्ता से प्रभावित हो। वह सभी मनुष्यों को अपनी व्यवस्था की पवित्रता, महत्ता और स्थायित्व को दिखाना चाहता था। PPHin 309.5

इज़राइली भय से भर गए। परमेश्वर के कथनों की विस्मयकारी शक्ति उनके कांपते हृदयों की सहनशक्ति से बाहर थी। जब उसके सम्मुख परमेश्वर के सत्य-आधारितसंचालन को प्रस्तुत किया गया तो उन्हें पाप के हानिकारक स्वभाव और पवित्र परमेश्वर की दृष्टि में उनके निजी दोष का आभास हुआ, जैसा पहले कभी न हुआ था। श्रद्धा और भय से वे पर्वत से पीछे हट गए। PPHin 310.1

उन्होंने मूसा से कहा, "तू ही हम से बातें कर, तब तो हम सुन सकेंगे, परन्तु परमेश्वर हम से बातें न करे, ऐसा न हो कि हम मर जाएँ।" मूसा ने लोगों से कहा, "डरो मत, क्योंकि परमेश्वर इसलिये आया है कि तुम्हारी परीक्षा करे, और उसका भय तुम्हारे मन में बना रहे कि तुम पाप न करो।" लेकिन लोग दृश्य को भयभीत होकर निहारते हुए दूर ही खड़े रहे, परन्तु मूसा "उस घोर अन्धकार के समीप गया जहाँ परमेश्वर था।" PPHin 310.2

लोगों के मन जो अधर्म और दासत्व से पतित और अँधे हो गएथे ,परमेश्वर की दस आज्ञाओं के व्यापक सिद्धान्तों कोपूर्ण रूप से मान्यता देने को तैयार नहीं थे। दस आज्ञाओं के सिद्धान्तों के

उदाहरण और प्रयोग देते हुए अतिरिक्त सिद्धान्त भी दिये गए जिससे दस आज्ञाओं की प्रतिबद्धता पूरी तरह समझी जा सके और लोगोंपर लागू की जा सके। इन नियमों को दण्डाज्ञा कहा गया क्योंकि इनका आधार अनन्त बुद्धिमता और न्याय था और न्यायियों को इनके अनुसार न्याय करना था। दस आज्ञाओं के विपरीत, येमूसा को व्यक्तिगत रूप से दिये गये और उसे इन्हें लोगों तक पहुँचाना था। PPHin 310.3

इनमें से पहला नियम दासों से सम्बन्धित था। प्राचीन काल में कभी-कभी न्यायियों द्वारा अपराधियों को दास्तव में बेच दिया जाता था, कुछ एक मामलों में ऋणियों को उनके साहूकारों को बेच दिया जाता था, और गरीबी के कारण लोग स्वयं को या अपने बच्चों को बेच दिया करते थे। लेकिन एक इब्री को जीवन भर के लिये दास के तौर पर नहीं बेचा जा सकता था। उसकी सेवा की अवधि छः वर्षों के लिये सीमित थी ।सातवें वर्ष उसे स्वतन्त्र किया जाना था। मनुष्यों की चोरी, सुविचारित हत्या, और माता-पिता की आज्ञाओं का विरोध करने पर मृत्यु दण्ड प्राप्त होना था। जिन दासों का जन्म इज़राइली नहीं था उन्हें दास बनाए रखने की आज्ञा थी, लेकिन उनका जीवन और अस्तित्व पूर्णतया सुरक्षित थे। यदि उसे दाँत टूटने जितनी भी, अपने स्वामी द्वारा चोट पहुँचायी जाती तो वह स्वतन्त्रता का हकदार था। PPHin 310.4

इज़राइली स्वयं अभी तक दास रहे थे, अब जब उनके अधीन दासों को रहना था, तो अपनी मिस्री स्वामियों के अधीनस्थ होने के समय जिस निर्दयता और बेगारी को उन्होंने सहन किया था, उससे उन्हें सावधान रहना था। उनके दासत्व के कड़वे अनुभव की समृति से उन्हें स्वयं को अपने दास के स्थान पर रखने के योग्य बनाना था, जिससे वे संवेदनशील व दयालु बन सके और दूसरों के साथ ऐसा हो व्यवहार कर सके, जैसा कि वे स्वयं के साथ चाहते है। PPHin 311.1

विधवाओं और अनाथों के अधिकारों का विशेषकर ध्यान रखा गया और उनकी असहाय अवस्था के बारे में यह विनम्र घोषणा की गयी, "यदि तुम ऐसों को किसी प्रकार का दुख दो और वे मेरी दुहाई दें, तो मैं निश्चय उनकी दुहाई सुन्नंगा, तब मेरा कोध भड़केगा, और मैं तुमको तलवार से मरवाऊँगा, और तुम्हारी पत्नियां विधवा और तुम्हारे बालक अनाथ हो जाएंगे। "जो परदेशी इज़राइल के साथ जुड़ गए थ.उन्हें उत्पीड़न व अन्याय से बचाया जाना था। "तुम परदेशी को न सताना और न उस पर अंधेर करना, क्योंकि मिस्र देश में तुम भी परदेशी थे। PPHin 311.2

दरिद्रों से अत्यधिक ब्याज दर लेना मना था। एक निर्धन मनुष्य का प्रतिज्ञा के तौर पर लिया गया वस्त्र या कम्बल, सूर्यास्त तक उसे लौटा देना होता था। चोरी करने में दोषी पाए गए व्यक्ति को दोगुना वापस करना था। इसके अतिरिक्त न्यायियों और शासकों का सम्मान करना था और न्यायियों को दण्ड की आज्ञा को विकृत करने, झूठे कार्य का समर्थन करने और रिश्वत लेने के प्रति चेतावनी दी गई। झूठे आरोप लगाने और मानहानि पहुँचाने की मनाही थी और निजी शत्रुओं के प्रति भी दयालुतापूर्ण व्यवहार करने का आदेश था। PPHin 311.3

फिर से लोगों को विश्राम दिन के पवित्र कर्तव्य का स्मरण कराया गया। वार्षिक पर्वों का प्रयोजन रखा गया, जब राज्य के सभी लोगों को प्रभु के सम्मुख, अपने खेतों की पहली उपज का पहला भाग और धन्यवाद की भेंटो सहित, इकटठा होना था। इन सभी विधियों का उद्देश्य बताया गया था: यह मात्र एकपक्षीय सार्वभौमिकता के अभ्यास से उत्पन्न नहीं हुए थे; इन्हें इज़राइल की भलाई के लिये दिया गया था। प्रभु ने कहा, "तुम मेरे लिये पवित्र बने रहना'- पवित्र परमेश्वर द्वारा स्वीकार किये जाने योग्य। PPHin 311.4

इन आज्ञाओं को लिपिबद्ध करने का दायित्व मूसा पर था और इज़राइल को दी गई परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के सम्पूर्ण होने के प्रतिबन्ध वे दस सिद्धान्तों के साथ जिन्हें उदाहरण के तौर पर दिया गया था, इन्हें राष्ट्रीय व्यवस्था की नींव की तरह ध्यानपूर्वक संजो कर रखना था। PPHin 312.1

अब उन्हें यहोवा की ओर से सन्देश दिया गया, "सुन, मैं एक दूत तेरे आगे-आगे भेजता हूँ जो मार्ग में तेरी रक्षा करेगा, और जिस स्थान को मैंने तेयार किया है उसमें तुझे पहुँचाएगा। उसके सामने सावधान रहना और उसकी मानना, उसका विरोध न करना, क्योंकि वह तुम्हारा अपराध क्षमा न करेगा, इसलिये कि उसमें मेरा नाम रहता है। यदि तू सचमुच उसकी माने और जो कुछ मैं कहूँ वह करे, तो मैं तेरे शत्रुओं का शत्रु और तेरे द्रोहियों का द्रोही बनूँगा। इज़राइल के सम्पूर्ण भ्रमण के दोरान, बादल और आग के स्तम्भ के रुप में मसीह उनका मार्गदर्शक था।हालाँकि आने वाले उद्धारकर्ता की ओर संकेत करते हुए प्रतिरूप थे, लेकिन एक उपस्थित उद्धारकर्ता भी था जो लोगों के लिये मूसा को आज्ञा देता था और जिसे उनके सम्मुख आशीर्वाद के एकमात्र माध्यम के रूप में रखा गया था। PPHin 312.2

पहाड़ से उतरने पर, "मूसा ने लोगों के पास जाकर यहोवा की सब बातें और सब नियम सुना दिए। तब सब लोग एक स्वर में बोल उठे, "जितनी बातें यहोवा ने कहीं है उन सब बातों को हम मानेंगे।" यह प्रतिज्ञा और परमेश्वर के वे कथन जिनका पालन करने को इस प्रतिज्ञा ने उनको विवश किया, मूसा द्वारा एक पुस्तक में लिखी गई। इसके बाद वाचा का सत्यापन किया गया। पहाड़ की तराई में एक वेदी स्थापित की गई, और उसके पास ही 'इज़राइल के बारह गोत्रों के अनुसार' बारह खम्भे भी खड़े किये गए जो वाचा का उनके द्वारा स्वीकृत होने के साक्षी थे। फिर इस विधि के लिये नियुक्त नौजवानों ने होमबलि औरमेलबलि चढ़ाई। PPHin 312.3

बलि के लहू को वेदी पर छिड़कने के बाद, मूसा ने "वाचा की पुस्तक को लेकर लोगों को पढ़कर सुनाया ।" इस प्रकार वाचा के प्रतिबन्धों को संजीदगी से दोहराया गया, और उनसे सहमत होने की या ना होने की सबको स्वतन्त्रता थी। प्रारम्भ में उन्होंने परमेश्वर के वचन का पालन करने की प्रतीज्ञा की थी, लेकिन उसकी व्यवस्था की घोषणा उन्होंने अभी सुनी थी, और उसके सिद्धांतों का विस्तृत विवरण किया गया ताकि उन्हें ज्ञात हो सके कि उसमें बहुत कुछ अंतनिहित है। फिर से लोगों ने एक स्वर में कहा, "जो कुछ यहोवा ने कहा है उस सब को हम करेंगे और उसकी आज्ञा

मानेंगे ।" "जब मूसा सब लोगों को व्यवस्था की हर एक आज्ञा सुना चुका तो उसने बछड़ो और बकरों का लहूलेकर, उस पुस्तक पर और सब लोगों पर छिड़क दिया और कहा, "यह उस वाचा का लहू है, जिसकी आज्ञा परमेश्वर ने तुम्हारे लिये दी है।" इब्रानियों 9:19,20 PPHin 312.4

अब यहोवा के राजत्व में चुने हुए राज्य की सम्पूर्ण स्थापना का प्रबन्ध करना था। मूसा को आदेश मिला, "तू हारून, नादाब, अबीहू और इज़राइलियों से दण्डवत करना। केवल मूसा यहोवा के समीप आए।" लोगों ने तराई में आराधना की और इन चुने हुए पुरूषों को पहाड़ पर बुलाया गया। उन सत्तर पुरनियों को इज़राइल के शासन में मूसा का सहयोग करना था और परमेश्वर ने उन पर अपना आत्मा उँडेला और उन्हें अपनी महानता और शक्ति का दर्शन दिखाकर सम्मानित किया। "उन्होंने इज़राइल के परमेश्वर कादर्शन किया और उसके चरणों तले नीलमणि का चबूतरा सा कुछ था, जो आकाश के तुल्य ही स्वच्छ था।" उन्होंने ईश्वर को तो नहीं देखा, लेकिन उसकी उपस्थिति की महिमा देखी। इससे पहले वे इस तरह के दृश्य को सहन नहीं कर सकते थे, लेकिन परमेश्वर की शक्ति के प्रदर्शन के परिणामस्वरूप श्रद्धापूर्ण भय ने उन्हें पश्चताप के लिये विवश कर दिया। वे उसकी महिमा, पवित्रता और दया पर मनन-चिंतन करते रहे थे, जब तक कि उन्होंने उसका सामीप्य न पा लिया, जो उनके चिंतन का विषय था। मूसा और "उसके सेवक यहोशू" को परमेश्वर से भेंट करने के लिये बुलाया गया। और क्योंकि कुछ समय वे अनुपस्थित होने वाले थे,हारून और हूर और उनकी सहायता के लियेपुरनियों कोनियुक्त किया ।' तब मूसा पहाड़ पर चढ़ गया, और बादल ने पहाड़ को ढॉक दिया और "यहोवा के तेज ने सीने पर्वत पर निवास किया।" छः दिनो तक परमेश्वर की विशेष उपस्थिति के प्रतीक के रूप में बादल पहाड़ पर छाया रहा, लेकिन उसके या उसकी इच्छा के सम्पर्क का कोई प्रकटन नहीं हुआ। इस दौरान मूसा सर्वोच्च के उपस्थिति कक्ष में बुलाए जाने की प्रतीक्षा करता रहा। उसे निर्देशित किया गया था, "पहाड़ पर मेरे पास चढ़ आ, और वहीं रह,'और यद्यपि उसके धैर्य और आज्ञाकारिता की परख हो रही थी, वह सतर्क रहते हुए थका नहीं और न ही अपने पद को छोड़ा। प्रतीक्षा की यह अवधि उसके लिये तैयार का और गहन आत्म-निरीक्षण का समय था। परमेश्वर का यह कृपा-दृष्टि प्राप्त सेवक भी एकदम से उसकी उपस्थिति में नहीं जा सकता था और ना ही उसकी महिमा के प्रदर्शन को सहन कर सकता था। अपने सृष्टिकर्ता के साथ प्रत्यक्ष संपर्क के लिये तैयार होने से पूर्व उसे प्रार्थना, ध्यान और आत्म विशलेषण के द्वारा छः दिन तक स्वयं को परमेश्वर को समर्पित करना था। PPHin 313.1

सातवें दिन, जो कि सबत का दिन था, मूसा को बादलों में बुलाया गया। इज़राइलियों की दृष्टि में घना बादल छितर गया और यहोवा का तेज प्रचण्ड आग के समान दिखाई दिया। "तब मूसा बादल के बीच में प्रवेश करके पर्वत पर चढ़ गया। और मूसा पर्वत पर चालीस दिन और चालीस रात रहा।" चालीस दिन के इस वास में तैयारी के छः दिन सम्मिलित नहीं थे। छः दिनों तक यहोशूमूसा के साथ थाऔर उन्होंने मिलकर मन्ना का सेवन किया और "उस नदी से जो पर्वत से निकलकर नीचे बहती थी" पानी पिया। लेकिन यहोशू ने मूसा के साथ बादल में प्रवेश नहीं किया।

वह बादल के बाहर ही रहा और मूसा के लौटने की प्रतीक्षा के दौरान भोज-पान करता रहा, लेकिन मूसा ने पूरे चालीस दिनों तक उपवास रखा। PPHin 314.1

पहाड़ पर रहते हुए मूसा ने ईश्वरीय उपस्थिति विशेष प्रकटन हेतु मन्दिर के निर्माण के लिये निर्देश प्राप्त किये। "और वे मेरे एक पवित्र स्थान बनाएं कि में उनके बीच निवास करूँ"-निर्गमन 25:8 ।यह परमेश्वर की आज्ञा थी। तीसरी बार विश्राम दिन के पालन की आज्ञा बताई गई, "क्योंकि मेरे और तुम लोगों के बीच यह बात जान रखो कि यहोवा हमें पवित्र करने वाला है। इस कारण तुम विश्रामदिन को मानना, क्योंकि वह तुम्हारे लिये पवित्र ठहरा है, इसलिये जो कोई विश्राम के दिन में काम-काज करेगा, वह निश्चय मार डाला जाएगा।" निर्गमन 31:17 PPHin 314.2

परमेश्वर की आराधना के लिये अस्थाई उपासनाग्रह के तत्काल निर्माण के लिये निर्देश दे दिये गए थे और अब लोग इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते थे कि जो लक्ष्य दृष्टि में था,वह परमेश्वर की महिमा थी, और आराधना के लिये स्थान की आवश्यकता के कारण उनका विश्राम दिन के दौरान निर्माण कार्य करना न्यायोचित था। उन्हें यह गलती करने से रोकने के लिये चेतावनी दी गई। परमेश्वर के इस विशेष कार्य की पवित्रता और अत्यावश्यकता के कारण से भी उसके पवित्र विश्राम दिन का उललंधन नहीं होना चाहिये। PPHin 314.3

अब के बाद लोगों को उनके राजा की स्थायी उपस्थिति से सम्मानित किया जाना था, "और में इज़राइलियों के मध्य निवास करूंगा और उनका परमेश्वर ठहरूगा।" "और वह तम्बू मेरे तेज से पवित्र किया जाएगा"-निर्गमन 29:45,43; यह आश्वासन मूसा को दिया गया। परमेश्वर की इच्छा के अवतार और परमेश्वर के अधिकार के प्रतीक के रूप में मूसा को दस आज्ञाओं की एक प्रति दी गई जो पत्थर की दो पटियों पर परमेश्वर ने स्वयं अपने हाथों से अंकित किया था। (व्यवस्थाविवरण 9:10, निर्गमन 32:15,16)३न्नहें उसपवितत्रस्थान में सम्मानपूर्वक प्रतिष्ठापित करना था,जिसे निर्माण होने पर राज्य द्वारा आराधना करने के लिये सदृश स्थान होना था। PPHin 315.1

दासों के वर्ग से इज़राइलियों को अन्य सब जातियों से ऊपर उठाया गया था ताकि वे राजाओं के राजा की विशेष निधि ठहरें। परमेश्वर ने उन्हें संसार से अलग किया था ताकि वह उन्हें एक पवित्र प्रभार सौंप सके। उसने उन्हें अपनी व्यवस्था का संग्रहस्थान बनाया और उसका उद्देश्य था कि उनके द्वारा वह मनुष्यों में स्वयं के ज्ञान को सरंक्षित रखे। इस प्रकार अन्धकार से आवृत जगत पर स्वर्ग के प्रकाश को फैलना था और लोगों को मूर्तिपूुजा को पीठ दिखाकर जीवित परमेश्वर की आराधना के लिये निवेदन करती आवाज को सुना जाना था। अपने विश्वास में सच्चे होने पर इज़राइलियों की जगत में एक शक्ति बनने की सम्भावना थी। परमेश्वर उनका बचाव होता और उन्हें सब अन्य जातियों से ऊपर उठाता। उनके माध्यम से उसका प्रकाश और सत्य प्रकट होता और प्रत्येक प्रकार की मूर्तिपूजा से ऊपर उसकी आराधना की श्रेष्ठता के उदाहरण के तौर पर हम उसके बुद्धिमतापूर्ण और पवित्र शासन में आगे होते।

अध्याय 28—सिने में मूर्तिपूजा

यह अध्याय निर्गमन 32—34 पर आधारित है

मूसा की अनुपस्थिति इज़राइल के लिये प्रतीक्षा और असमंजस का समय था। लोगों को यह पता था कि वह यहोशू के साथ पहाड़ पर चढ़ा था, और बादल की गहरी स्याही, जो तराई से देखी जा सकती थी, में प्रवेश हुआ था, और वह बादल जो पहाड़ की चोटी पर टिका था, समय-समय पर ईश्वरीय उपस्थिति के प्रकाश से प्रकाशमान हो रहा था। वे उत्सुकता से उसके लौटने की प्रतीक्षा कर रहे थे। मिस्र में वे ईश्वर के देहधारी प्रतिरूप के अभ्यस्त थे, इसलिये एक अदृश्य अस्तित्व में विश्वास करना कठिन था, और अपने विश्वास को जीवित रखने के लिये वे मूसा पर निर्भर करने लगे थे। अब मूसा को उनसे ले लिया गया था। दिन के बाद दिन और सप्ताह के बाद सप्ताह निकल गए, लेकिन मूसा नहीं लौटा। बादल की उपस्थिति के बावजूद, कईयों को ऐसा प्रतीत हो रहा था कि उनके अगुए ने उनको छोड़ दिया था और या वह प्रचण्ड अग्नि मे भस्म हो गया था। PPHin 316.1

प्रतीक्षा की इन घड़ियों में, उनके पास, उनके द्वारा सुनी गईं परमेश्वर की व्यवस्था पर मनन करने का और उनके हृदयों को परमेश्वर के और सम्भावित रहस्यों के उदघाटनों को ग्रहण करने का समय था। इस काम के लिये तब उनके पास बहुत समय नहीं था, और यदि वे परमेश्वर की अपेक्षाओं की स्पष्ट समझके इच्छुक होते और उसके सम्मुख अपने हृदयों को दीन करते तो वे प्रलोभन से बच सकते थे। लेकिनउन्होंने ऐसा नहीं किया, और वे शीघ्र की लापरवाह, असावधान और न्यायविरूद्ध हो गए। इस मिश्रित भीड़ के साथ ऐसा ही था। वे प्रतीज्ञा के देश-वह देश जहां दूध और शहद की नदियाँ बहती थी-के मार्ग पर जाने के लिये अधीर हो रहे थे। यह समृद्ध देश की प्रतीक्षा उन्हें आज्ञाकारिता के प्रतिबन्ध पर दी गईं थी लेकिन वे इस बात को भूल गए थे। कई एक ने मिस्र लौट जाने की सलाह दी, लेकिन चाहे वे कनान की ओर जाना हो या फिर मिस्र को लौटना हो, लोगों की यह भीड़ मूसा की और प्रतीक्षा न करने का संकल्प ले चुके थे। PPHin 316.2

अपने अगुवे की अनुपस्थिति मे असहाय सा महसूस करते हुए, वे अपने पुराने अंधविश्वासों में लौट गए। यह 'मिश्रित भीड़' अधीर होने और बड़बड़ाने में सबसे आगे थी और आने वाले अधर्म के लीडर हुईं। मिस्र के लोगों द्वारा ईश्वर के प्रतीक माने जाने वाले पशु बछड़ा या बैल थे, और मिस्र में इस प्रकार की मूर्तिपूजा करने वालों के परामर्श पर एक बछड़े का आकार बनाकर उसकी पूजा की गई । लोगों की यह इच्छा थी कि कोई आकति परमेश्वर का प्रतिरूप हो और मूसा के स्थान पर उनके आगे-आगे चले। परमेश्वर ने स्वयं का किसी प्रकार का प्रतिरूप नहीं दिया था और उसने इस प्रयोजन के लिये किसी भी देहधारी प्रतिरूप की मनाही की थी। मिस्र और लाल समुद्र के चमत्कारों का प्रयोजन इसलिये किया गया कि लोग परमेश्वर को एकल सच्चा परमेश्वर, इज़राइल का अदृश्य सर्वशक्तिमान सहायक मानकर उसमें विश्वास करें ।और सिने पर्वत पर उसकी महिमा के प्रदर्शन

में और सेनाओं का मार्गदर्शन करने वाले आग और बादल के स्तम्भोंमें, परमेश्वर की अदृश्य प्रकटीकरण की लोगों की इच्छा को तृप्त कर दिया गया था। लेकिन ‘उपस्थिति'अर्थात परमेश्वर के बादल को अपने सम्मुख पाकर भी, उन्होंने अपने हृदयों को मूर्तिपूजा की और मोड़ लिया और उस अदृश्य परमेश्वर की महिमा को एक बैल के आकार में दर्शाया। PPHin 316.3

मूसा की अनुपस्थिति में न्याय सम्बन्धी अधिकार हारून को सौंपे गए थे और उसके तम्बू के बाहर एक विशाल मानव समूह इकट्ठा हो गया और माँग करने लगा, “अब हमारे लिये देवता बना, जो हमारे आगे-आगे चले, क्योंकि उस पुरूष मूसा को जो हमें मिस्र देश से निकाल ले आया है, हम नहीं जानते कि क्या हुआ? वे कहने लगे कि अब तक जो बादल उनका मार्गदर्शन करता था, वह पर्वत पर टिक गया था, और अब वह उन्हें यात्रा के लिये निर्देशित नहीं करेगा। उसके स्थान पर किसी आकृति का होना आवश्यक था और यदि, सुझाव के अनुसार, वे मिस्र लौट जाने का निर्णय लें तो इस आकृति को अपने आगे-आगे रखकर और उसको अपना देवता स्वीकार करके वे मिमस्रियों की कृपा-दृष्टि प्राप्त कर सकते थे। PPHin 317.1

इस प्रकार की संकटावस्था में एक दृढ़तापूर्ण, निर्णय लेने वाला, व अडिग साहस वाले मनुष्य की आवश्यकता थी, जिसके लिये जीवन, निजी सुरक्षा और लोकप्रिय कृपा-दृष्टि के बजाय परमेश्वर का सम्मान अधिक प्रिय था। लेकिन इज़राइल का वर्तमान अगुवा इस आचरण का नहीं था। हारून ने लोगों का थोड़ा विरोध किया, लेकिन ऐसी संकटमय स्थिति में उसकी कायरताऔर हिचकिचाहट ने उन्हें अपने संकल्प में और दृढ़ कर दिया। कोलाहल बढ़ गया। भीड़ पर जैसे एक अंधा, अविवेकपूर्ण पागलपन सा सवार हो गया। उनमें कुछ ऐसे थे, जो परमेश्वर के साथ अपनी वाचा के प्रति सत्यनिष्ठ रहे, लेकिन अधिकांश लोग अधर्म क साथ जुड़ गए। जिन्होंने प्रस्तावित आकृति बनाने को मूर्तिपूजा का नाम देकर निंदा की, उनक साथ दुर्व्यवहार किया गया और गड़बड़ी और उत्तेजना में वे अनन्त: अपने प्राण गँवा बैठे। PPHin 317.2

हारून को अपनी सुरक्षा का भय था, और परमेश्वर के सम्मान के लिये शिष्टता से खड़े रहने के बजाय, वह भीड़ की माँगों के आगे झुक गया। उसका पहला कृत्य था लोगों को निर्देश देने कि वे सब अपने कानों से सोने की बालियाँ निकालकर उसके पास लाए, इस आशा में कि घमण्ड के कारण वे इस प्रकार के त्याग के लिये सहमत नहीं होंगे। लेकिन लोगों ने स्वेच्छा से अपने आभूषण दे दिये, और उनको पिघलाकर उसने एक सोने का बछडा बनाया जो मिस्र के देवताओं की नकल था। तब लोग कहने लगे, “हे इज़राइल, तेरा ईश्वर जो तुझे मिस्र देश से छुड़ा लायाहै, वह यही है।” और हारून ने यहोवा के प्रति इस अपमान की अनुमति दे दी। उसने इससे भी अधिक निन्दनीय कार्य किया। यह देखकर कि सोने के देवता को संतोष के साथ ग्रहण किया गया, उसने उसके सामने एक वेदी बनाकर घोषणा की, “कल यहोवा के लिये पर्व होगा। सम्पूर्ण डेरे में एक समूह से दूसरे समूह तक इस सूचना को प्रसारित किया गया। “और दूसरे दिन लोगों ने भोर को उठकर

होमबलि चढ़ाई और मेलबलि ले आए, फिर बैठकर खाया पिया और उठकर खेलने लगे।" "परमेश्वर के लिये पर्व" केस्वांग में वे लोलुपता और व्यभिचारी रंगरलियों में खो गए। PPHin 318.1

प्राय, हमारे समय में भी आमोद-प्रमोद की चाह, '(धार्मिकता के रूपः में आवृत होती है! धर्म यदि उपासना की विधियों के दौरान मनुष्य को स्वार्थपूर्ण या इन्द्रिय सन्तुष्टि के प्रति समर्पित होने की अनुमति देता है, तो जनसाधारण के लिये उतना ही मनभावना है जैसा कि इज़राइल के दिनों में था। और अभी भी दब्बू हारून हैं, जो कलीसिया में आधिकारिक पदों पर होते हुए भी अपवित्र लोगों की इच्छाओं के आगे झुक जाते है और इस प्रकार पाप में उनका समर्थन करते हैं। PPHin 318.2

इब्रियों द्वारा परमेश्वर के साथ आज्ञाकारिता की वाचा बाँधे कुछ ही दिन बीते थे। उन्होंने पर्वत के सामने भय से कॉपते हुए , प्रभु के कथनों को सुना था, "तूमुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना।" कलीसिया की दृष्टि में सिने पर्वत पर परमेश्वर की महिमा अभी भी मँडरा रही थी, लेकिन उन्होंने फिर भी मुंह फेर लिया और अन्य देवताओं की माँग की। "उन्होंने हौरेब में बछड़ा बनाया, और ढली हुई मूर्ति को दण्डवत किया। जो उन्होंने अपनी महिमा अर्थात परमेश्वर को घास खाने वाले बैल की प्रतिभा से बदल डाला"-भजन संहिता 106:19,20। इससे अधिक कृतज्ञहीनता कैसे दिखाई जा सकती थी, या दुस्साहसपूर्ण अपमान किया जाता उसका जिसने स्वयं को एक सर्व-शक्तिमान राजा और दयावान पिता के रूप में प्रकट किया था! PPHin 318.3

पहाड़ पर मूसा को डेरे में अधर्म की चेतावनी दी गई और उसे अविलम्ब लौटने का निर्देश दिया गया। परमेश्वर के शब्द थे, "नीचे उतर जा, क्योंकि तेरी प्रजा के लोग, जिन्हें तू मिस्र देश से निकाल लाया है, वे बिगड़ गए है, और जिस मार्ग पर चलने की आज्ञा मैंने दी थी उसको झटपट छोड़कर उन्होंने एकबछड़ा ढालकर बना लिया, फिर उसको दण्डवत किया।" परमेश्वर इस आन्दोलन को प्रारम्भ में ही रोक सकता था, लेकिन उसने इसे चरम सीमा पर पहुँचने दिया जिससे कि स्व-धर्म त्यागऔर देशद्रोहकी दण्डाज्ञा में वह सबको सबक सिखा सके। PPHin 319.1

परमेश्वर और उसके लोगों के बीच वाचा को रद्द कर दिया गया और उसने मूसा से कहा, "अब मुझे मत रोक, मेरा कोप उन पर भड़क उठा है जिससे मैं उन्हें भस्म करूं, परन्तु तुझसे एक बड़ी जाति उपजाऊँगा।" इज़राइल के लोग, विशेषकर मिश्रित जनसाधारण, लगातार परमेश्वर के प्रति विद्रोह करने को तत्पर थे। वे अपने अगुवे के विरूद्ध बड़बड़ाते थे और अपने हठ और अविश्वास के कारण उसे खेद पहुँचाते, और प्रतिज्ञा के देश तक ले जाने में उनका नेतृत्व करना एक कठिन और आत्मा के लिये कष्टकर कार्य था। उनके पापों के कारण वे परमेश्वर की कृपा-दृष्टि को खो चुके थे और न्याय उनके विनाश की माँग कर रहा था। इस कारण प्रभु ने उनके विनाश का और मूसा के द्वारा एक सशक्त जाति बनाने का निर्णय लिया। PPHin 319.2

"मुझे मत रोक.......जिससे कि मैं उन्हें भस्म कर सके" परमेश्वर के यही शब्द थे। यदि परमेश्वर ने इज़राइल को नष्ट करने की ठान ली थी, तो कौन उनकी पैरवी करता? कम नहीं होंगे वे लोग

जिन्होंने पापियों को उनके भाग्य पर छोड़ दिया होगा। कम नहीं है वे लोग जो परिश्रम और बोझ और त्याग को प्रसन्नतापूर्वक सम्मान और सुख के पद से बदल लेते है और उसका बदला बड़बडाहट और कृतज्ञहीनता से चुकाते है, भले ही यह छुटकारा स्वयं परमेश्वर ने ही क्यों न दिलाया हो।" PPHin 319.3

लेकिन जहाँ केवल निराशा और कोध प्रकट हो रहा था, वहाॅमूसा ने आशा का आधार देखा। "मुझे मत रोक", परमेश्वर के इन शब्दों को उसने मनाही करना नहीं समझा, बल्कि मध्यस्थता को प्रोत्साहित करना माना, जिसका तात्पर्य था कि केवल मूसा की प्रार्थनाएँ इज़राइल को बचा सकती थी, लेकिन यदि इस तरह विनती की जाए तो परमेश्वर उसके लोगों को दण्डित नहीं करेगा। मूसा "अपने परमेश्वर यहोवा को यह कहकर मनाने लगा, "हे यहोवा, तेरा कोप अपनी प्रजा पर क्यों भड़का है जिसे तू बड़े सामर्थ्य और बलवन्त हाथ के द्वारा मिस्र देश से निकाल लाया है? PPHin 320.1

परमेश्वर ने यह संकेत दिया था कि उसने अपने लोगों को छोड़ दिया था। उनके सन्दर्भ में उसने मूसा से कहा, "तेरे लोग, जिन्हें तू मिस्र से बाहर निकाल ले आया।" लेकिन मूसा ने दीनता से इज़राइल का नेतृत्व अस्वीकार किया । वे लोग उसके नहीं वरन् परमेश्वर के थे- "तेरी प्रजा, जिन्हें तू मिम्र से निकाल लाया है........बड़े सामर्थ्य और बलवन्त हाथ के द्वारा। उसने आग्रह किया, "मिस्री लोग यह क्यों कहने पाएँ, "वह उनको बुरे अभिप्राय से अर्थात पहाड़ो में घात करधरती पर से मिटा डालने की मनसा से निकाल ले गया? इज़राइल के मिस्र छोड़ने के कुछ महीनों पश्चात, उनके आश्चर्यजनक छुटकारे की सूचना पड़ौसी राज्यों में फैल गई थी। अधर्मी लोगों पर भय और भयेंकर पूर्वाभास छाया हुआ था। सभी देखना चाहते थे कि इज़राइल का परमेश्वर अपने लोगों के लिये क्या करने वाला था। यदि उनको अभी नष्ट किया जाता, तो उनके शत्रुओं की विजय होती और परमेश्वर का अनादर होता। मित्र के लोग दावा करते कि उनके आरोपसही थे- अपने लोगों को बलि की भेंट चढ़ाने जंगल में ले जाने के बजाय परमेश्वरने उन्हीं को बलि होने दिया। उन्होंने इज़राइल के पापों के बारे में नहीं सोचा, उन लोगों का विनाश जिनको उसने प्रत्यक्ष रूप से सम्मानित किया था, उसके नाम क लिये निंदनीय होता। परमेश्वर द्वारा सम्मान-प्राप्त लोगों के काँधो पर उसके नाम को पृथ्वी पर प्रशंसा को विषय बनाने का उत्तरदायित्व कितना महान है! पाप करने से एवं परमेश्वर की दण्डाज्ञा को आमन्त्रित करके अधर्मियों द्वारा उसके नाम की निंदा होने देने से बचे रहने के लिये कितनी सावधानी बरतने की आवश्यकता है! PPHin 320.2

जब मूसा ने इज़राइल के लिये मध्यस्था की, उसकी हिचकिचाहट गहरी रूचि और प्रेम में विलीन हो गई उन लोगों के लिये, जिनके वास्ते वह परमेश्वर के हाथों में, इतना कुछ करने का साधन रहा था। परमेश्वर ने उसकी विनती को सुना और उसकी निःस्वार्थ प्रार्थना को स्वीकार किया। परमेश्वर अपने सेवक का साक्ष्य था, उसने उन भटके हुए, कतज्ञहीन लोगों के प्रति उसके प्रेम और उसकी

निष्ठा को परख लिया था और शिष्टतापूर्वक मूसा इस परीक्षा में खरा उतरा था। इज़राइल में उसकी रूचि किसी स्वार्थपूर्ण उद्देश्य का परिणाम नहीं थी। उसके लिये निजी प्रतिष्ठा से बढ़कर परमेश्वर के चुने हुए लोगों की समृद्धि अधिक प्रिय थी, एक सशक्त जाति का पिता बनने के विशेषाधिकार से भी अधिक प्रिय । परमेश्वर उसकी निष्ठा, उसके हृदय की कोमलता और उसकी ईमानदारी से प्रसन्न हुआ और उसने मूसा के एक सत्यनिष्ठ चरवाहे के रूप में इज़राइल को प्रतिज्ञा के देश ले जाने का प्रभार सौंपा। PPHin 321.1

जब मूसा और यहोशू पर्वत से उतर कर नीचे आए, मूसा के हाथों में "साक्षी की पटियाएँ" थी, उन्होंने उत्तेजित जनसाधारण के कोलाहल और चिल्लाहट को सुना। योद्धा यहोशू का पहला विचार शत्रुओं ने आक्रमण का था। उसने कहा, "छावनीमें लड़ाई का सा शब्द सुनाईदे रहा है।" लेकिन मूसा ने शोरगुल के स्वभाव का सही अनुमान लगाया। वह आवाजें लड़ाई की नहीं वरन् आनन्दोत्सव की थी।"यह सेना के लिये विजय का शोर नहीं है, यह हार से चिललाने वाली सेना का शोर भी नहीं है। मैं जो सुन रहा हूँ वह उनके गाने का शोर है।" PPHin 321.2

छावनी के निकट आने पर मूसा ने लोगों को मूर्ति के चारों ओर नाचते और गाते हुए देखा। वह मित्र के मूर्तिपूजक उत्सव का प्रतिरूप, अधर्मी मनोरंजन का दृश्य था, परमेश्वर की श्रद्धांजलि और सविधि आराधना से कितनी भिन्न! मूसाभौंचक्का रहगया । वह हाल ही में ईश्वरीय महिमा की उपस्थिति से आया था, और यद्यपि जो हो रहा था उसकी चेतावनी उसे दी गई थी, लेकिन इज़राइल के पतन के इस भयंकर प्रदर्शन लोगों के अपराध के प्रति घृणा दर्शाने के लिये उसने पत्थर की पटियाओं को नीचे फेंक दिया, और वे लोगों की आंखो के सामने टूट गई। इसका अभिप्राय यह था कि जैसे उन्होंने परमेश्वर के साथ अपनी प्रतिज्ञा को तोड़ा था, उसी प्रकार परमेश्वर ने उनके साथ की गई प्रतिज्ञा को तोड़ दिया था। PPHin 321.3

छावनी में प्रवेश करते हुए, मूसा आमोद-प्रमोद करते लोगों की भीड़ को पार करके निकला और उसने मूर्ति को उठाकर आग में फेंक दिया। फिर उसने उसे पीसकर चूर-चूर कर दिया और पर्वत से नीचे बहने वाली धारा में बिखेर दिया और उसदेवताकी मूल्यहीनता को प्रकट किया गया जिसकी वे उपासना कर रहे थे। PPHin 322.1

महान अगुवों ने अपने दोषी भाई को बुलवाया और सख्ती से पूछा "इन लोगों ने तेरे साथ क्या किया कि तू ने उनको इतने बड़े पाप में फंसाया"? लोगोंके विरोध का वर्णन करके हारून ने स्वयं को बचाने का प्रयत्न किया कि यदि उसने उनकी इच्छाओं को पूरा न किया होता तो वे उसे मृत्यु के घाट उतार देते। "मेरेप्रमभु का कोप न भड़के" उसने कहा, "तू तो इन लोगों को जानता ही है कि ये सदा गलत काम करने को तैयार रहते है, उन्होंने मुझ से कहा, 'हमारे लिये देवता बनवा जो हमारे आगे-आगे चले, क्योंकि उस पुरूष मूसा को, जो हमें मिस्र देश से छुड़ा लाया है, हम नहीं जानते कि क्या हुआ। तब मैंने उनसे कहा, जिस-जिस के पास सोने के आभूषण है, वे उनको उतार लाएँ।

और जब उन्होंने मुझ को वह दिया, मैंने उन्हें आग में डाल दिया, तब यह बछड़ा निकल पड़ा ।" वह मूसा को विश्वास दिलाना चाहता था कि एक चमत्कार हुआ था - सोने को आग में डाला गया था और और वह अलौकिक शक्ति से बछड़े में परिवर्तित हो गया। लेकिन उसके बहाने और वाक छल से कोई लाभ नहीं हुआ। उसके साथ वहीं व्यवहार किया गया जो मुख्य आरोपी के साथ किया जाता था। PPHin 322.2

हारून को अन्य लोगों की तुलना से बहुत अधिक आशीर्वाद और सम्मान प्राप्त था और इसी तथ्य के कारण उसका पाप अत्यन्त जधन्य माना गया। वह 'परमेश्वर का पवित्र' (भजन संहिता 106:16)हारून था जिसने मूर्ति बनाई और भोज की घोषणा की। यह वही था जिसे मूसा के प्रवक्ता के तौर पर नियुक्त किया गया था, और इसके सन्दर्भ में परमेश्वर ने गवाही दी थी, "वह बोलने में निपुण है" (निर्गमन 4:14)और हारून मूर्तिपूजकों को उनके स्वर्ग को ललकारने वाले कार्य पर रोक लगाने में असफल रहा था। परमेश्वर ने जिसके द्वारा मिस्रियों और उनके देवताओं पर दण्डाज्ञा भेजी थी, उसी ने अविचलित हुए ढली हुई आकति के सामने यह घोषणा सुनी, "हे इज़राइल तेरा ईश्वर जो मुझे मिस्र देश से छुड़ा लाया है, वह यही है।" ये वही था जो मूसा के साथ पर्वत पर था, और वहाँ उसने परमेश्वर की महिमा का दर्शन किया था, और जिसने देखा था कि महिमा के उस प्रदर्शन में ऐसा कुछ नहीं था जिसे मूर्ति में ढाला जा सके-वह हारून ही था जिसने उस महिमा को एकबछड़े के स्वरूप में बदल दिया। जिसे परमेश्वर ने, मूसा की अनुपस्थिति में लोगों का शासन सौंपा था, वह उनके अतिक्रमण स्वीकृत करते पाया गया। व्यवस्थाविवरण 9:20में लिखा है, "और यहोवा हारून से इतना कोपित हुआ कि उसने उसका भी सर्वनाश करना चाहा ।" लेकिन मूसा की सच्ची मध्यस्थता के उत्तर में उसकाप्राण नहीं लिया गया, और अपने महापाप के लिये प्रायश्चित करने और दीन होने पर उसे परमेश्वर की कृपा-दृष्टि पुनः प्राप्त हुई। PPHin 322.3

यदि हारून में सत्य के लिये खड़े रहने का, परिणामों का विचार किये बिना, साहस होता, तो वह इस अधर्म को रोक सकताथा। यदि उसने अटल रूप से परमेश्वर के प्रति अपनी स्वामिभक्ति को बरकरार रखा होता, यदि उसने लोगों को सिने के खतरों का हवाला दिया होता और उन्हें परमेश्वर के साथ, उसकी आज्ञाओं का पालन करने की उनकी पवित्र प्रतिज्ञा का स्मरण कराया होता तो इस बुराई पर रोक लगाई जा सकती थी। लेकिन लोगों की इच्छाओं के साथ उसकी सहमति ने और उस निश्चल आश्वासन ने जिससे वह उनकी योजना को कार्यान्वित करने के लिये आगे बड़ा, लोगो को पाप में इतनी दूर जाने को प्रोत्साहित किया, जितनी दूर उनके मन पहले कभी नहीं पहुँचे थे। PPHin 323.1

छावनी में लौटने पर जब मूसा ने उपद्रवियों का सामना किया, व्यवस्था की पवित्र पटियाओं को तोड़ने में उसके कोध के प्रदर्शन और उसके द्वारा लोगों की कठोर निनन्दा की तुलना लोगों द्वारा उसके भाई के सुखदायी वचन और गरिमापूर्ण आचरण से की और वे हारून के प्रति संवेदना

जताने लगे। स्वयं को न्यायोचित ठहराने के लिये, हारून ने लोगों की माँगो के आगे समर्पण करने में अपने दोष के लिये उनको उत्तरदायी ठहराने का प्रयत्न किया, लेकिन इसके बावजूद वे उसकी भलमनसाहत और सहनशीलता की सराहाना से भर गए। लेकिन परमेश्वर वैसे नहीं देखता जैसे मनुष्य देखता है ।हारून की समर्पण कर देने वाली भावना और लोगों को सन्तुष्ट करने की अभिलाषा ने उसकी आखों को उस अपराध की जधन्यता के प्रति अन्धा कर दिया, जिसकी वह अनुमति दे रहा था। इज़राइल के पाप को अपना अधिकार देने में हारून के द्वारा की गईं कार्यवाही ने हजारों के प्राण ले लिये। कितनी भिन्न थी यह मूसा की कार्यवाही से जिसने परमेश्वर की दण्डाज्ञाओं का निष्ठापूर्वक पालन करते हुए यह बताया कि उसे समृद्धि या सम्मान या जीवन से अधिक प्रिय इज़राइल की खुशहाली थी। PPHin 323.2

परमेश्वर द्वारा दण्डित किये जाने वाले अपराधों में, उसकी दृष्टि में कोई भी अपराध इतना कष्टदायक नहीं है जितना कि वह अपराध जो दूसरों को बुरा करने के लिये प्रोत्साहित करता है। परमेश्वर चाहता है कि उसके सेवक अपराध को ईमानदारी से निन्दनीय ठहराकर अपनी निष्ठा को प्रमाणित करे, चाहे वह कृत्य कितना ही पीड़ाजनक हो। जिन्हें पवित्र कार्यभार से सम्मानित किया गया है वे निर्बल, आसानी से वश में आने वाले अवसरवादी नहीं हो सकते। उन्हें स्वयं की उन्नति को लक्ष्य नहीं बनाना है और ना ही अप्रिय कर्तव्यों को अस्वीकार करना है, वरन् परमेश्वर के कार्य को अटल स्वाभिभक्ति क साथ करना है। PPHin 324.1

यद्यपि परमेश्वर ने इज़राइल का विनाश ना करके मूसा की प्रार्थना को स्वीकार किया, लेकिन उनके अधर्म को प्रतीकात्मक रूप से दण्डित होना था। यदि हारून द्वारा अनुमति प्राप्त लोगों की नियमहीनता और अवज्ञा को शीघ्र ही कूचला न जाता, तो वह दुष्टता को बढ़ावा देते और पूरे राज्य को असाध्य विनाश के घेरे में ले आते। इस बुराई को कठोरता से दूर करना था। छावनी के फाटक पर खड़े होकर मूसा ने लोगों से कहा, "जो कोई यहोवा की ओर है, वह मेरे पास आए ।" जो लोग अधर्म के साथ नहीं जुड़े थे, उन्हें मूसा के दाहिनी तरफ अपना स्थानलेना था ओर दोषी पर पश्चातापी थे उन्हें उसके बाई ओर स्थान लेना था। आज्ञा का पालन किया गया। यह पता चला कि लैवी के गोत्र ने मूर्तिपूजा में भाग नहीं लिया था। दूसरे गोत्रों में से बड़ी संख्या में वे थे जिन्होंने पाप तो किये थे, लेकिन अब पश्चताप प्रकट कर रहे थे। लेकिन मिश्रित जनसाधारण का एक बड़ा समूह, जिन्होंने बछड़े के निर्माण के लिये लोगों को उकसाया था, हठी होकर विद्रोह करते रहे। 'इज़राइल के प्रभु परमेश्वर" के नाम से, मूसा ने अपने स्वयं को अलग रखा था, आज्ञा दी कि वे अपनी तलवारों से उन सब का घात करे जो अभी भी विद्रोह कर रहे थे।" और उस दिन तीन हजार के लगभग लोग मारे गए। पद, सगोत्रता या मित्रता को परे रखकर, दुष्टता के सरदारों को काट डाला गया, लेकिन जिन्होंने पश्चाताप किया और अपने आप को दीन किया उन्हें छोड़ दिया गया। PPHin 324.2

जिन्होंने दण्डाज्ञा के इस भयानक कार्य को सम्पन्न किया वे ईश्वरीय अधिकार से ऐसा कर रहे थे और स्वर्ग के राजा की दण्डाज्ञा को निष्पादित कर रहे थे। मनुष्य को सावधान रहना है कि किस प्रकार अपनी मानसिक अज्ञानता में, वह दूसरे मनुष्यों को दोषी ठहराता है और दण्डित करता है, लेकिन जब परमेश्वर उन्हें अधर्म सम्बन्धी दण्डाज्ञा का निष्पादन करने की आज्ञा देता है तो उसका आज्ञापालन अनिवार्य है। जिन्होंने इस पीड़ाजनक कृत्य को किया, उन्होंने इस प्रकार मूर्तिपूजा और विद्रोह के प्रति अपनी घृणा को प्रकट किया, और सच्चे परमेश्वर की सेवा में पूर्ण रूप से स्वयं को समर्पित किया। लैवी के गोत्र को विशेष सम्मान देकर उनकी सत्यनिष्ठा का आदर किया। PPHin 324.3

इजराइली देशद्रोह के अपराधी थे और वह भी उस राजा के विरूद्ध जिसने उन्हें बहुतायत से सुविधाएँ प्रदान की थी और जिसके प्रभुत्व का पालन करने के लिये उन्होंने स्वेच्छा सेस्वयं को प्रतिज्ञाबद्ध किया था। ईश्वरीय सत्ता को कायम रखने के लिये देशद्रोहियों का न्याय होना आवश्यक है। लेकिन यहाँ भी परमेश्वर की दया का प्रदर्शन हुआ। अपनी व्यवस्था को कायम रखते हुए, उसने सभी को विकल्प की स्वतन्त्रता और पश्चताप का अवसर प्रदान किया। केवल उन्हीं को काट डाला गया जो विद्रोह में बने हुए थे। PPHin 325.1

पड़ीसी देश के लिये, मूर्तिपूजा के प्रति परमेश्वर की अप्रसन्नता का साक्ष्य के तौर पर इस अपराध को दण्डित करना आवश्यक था। दोषियों को दण्डित करने से, मूसा को, परमेश्वर के साधन के रूप में, अपराध के विरूद्ध लिखित में एक गम्भीर व सार्वजनिक प्रतिवाद छोड़ना था। तदोपरान्त, यदि इज़राइली अपने पड़ौसी गोत्रों द्वारा की जाने वाली मूर्तिपूजा की निनन्दा करते, तो उनके शत्रु पलटकर उन्हीं पर यह आरोप लगाते कि जिन लोगों ने दावा किया कि यहोवा उनका परमेश्वर है, उन्होंने ही बछड़ा बनाकर होरेब में उसकी उपासना की। फिर, हालाँकि, वे इस अपमानजनक सत्य को स्वीकार करने के लिये विवश हो जाते, लेकिन अपराधियों के भयानक अंत की ओर संकेत करके, वे प्रमाणित कर सकते थे कि ना तो उनके पाप अनुमोदित थे और न ही उनसे छुटकारा मिला था। PPHin 325.2

न्याय के समान प्रेम की भी यहीं माँग थी कि पाप के लिये दण्डाज्ञा दी जाए। परमेश्वर अपने लोगों का अभिभावक व प्रभु है ।जो विद्रोह करने पर अड़े रहते है, वह उन्हें समाप्त कर देता है।।कैन के प्राण न लेकर, परमेश्वर ने जगत को उद्धाहरण दिया कि पाप को बिना दण्डित किये जाने देने का परिणाम क्या होता। उसके द्वारा दी गई शिक्षा और उसकी जीवन शैली ने उसके वंशजो पर जो प्रभाव डाला, उससे भ्रष्टाचार की ऐसी अवस्था आ गईं कि समस्त संसार का जल-प्रलय द्वारा विनाश अनिवार्य हो गया। जल-प्रलयपूर्व के वासियों का इतिहास इस बात को प्रमाणित करता है कि पापी के लिये चिरायु वरदान नहीं हैं, परमेश्वर की श्रेष्ठ सहनशीलता ने उनकी दुष्टता का

दमन नहीं किया। जितने अधिक समय के लिये मनुष्य जीवित रहे, उतने ही अधिक भ्रष्ट वे होते हुए। PPHin 325.3

सिने पर अधर्म के साथ भी ऐसा ही हुआ। यदि पाप को शीत्रता से दण्डित न किया जाता तो, यही परिणाम फिर से देखने को मिलते। पृथ्वी उतनी ही भ्रष्ट हो जाती जितनी कि नूह के दिनों में थी। यदि इन अपराधियों को छोड़ दिया जाता, तो कैन के प्राण न लेने के फलस्वरूप उत्पन्न बुराईयों से अधिक बुराईयाँ जन्म लेती। यह परमेश्वर की करूणा ही थी कि लाखों पर दण्डाज्ञा भेजने की आवश्यकता को रोकने के लिये, उसने हजारों को कष्ट उठाने दिया। बहुतों को बचाने क लिये उसे कुछ को दण्ड देना था। और फिर, परमेश्वर के प्रति निष्ठा का परित्याग करके, वे ईश्वरीय सुरक्षा गवाँ चुके थे, निस्सहाय हो गए थे जिससे सम्पूर्ण राज्य शत्रुओं की शक्ति के सामने बेबस हो गया था। यदि बुराई को तत्काल दूर न किया गया होता, तो वे शीघ्र ही अपने असंख्य और सशक्त शत्रुओं का शिकार बन गए होते। यह इज़राइल की भलाई के लिये आवश्यक था, और आने वाली पीढ़ियों के लिये सबक था कि अपराध को तत्काल दण्डित करना चाहिये। स्वयं पापियों के लिये यह कम करूणा नहीं थी किउनके पापमय किया-कलापों में उनका जीवन घटा दिया जाए। यदि उनके प्राण न लिये जाते तो जिस भावना से प्रेरित होकर उसने परमेश्वर के विरूद्ध उपद्रव किया, वही भावना उनके आपसी क्लेश और घृणा में प्रकट होती, और अनन्त: उन्होंने एक दूसरे का सर्वनाश कर दिया होता। संसार के प्रति प्रेम के कारण, इज़राइल के प्रति प्रेम में, और पापियों के प्रति भी प्रेम के कारण, अपराध को शीघ्रता और भयानक कठोरता से दण्डित किया गया। PPHin 326.1

जब लोगों को उनके अपराध की घोरता को देखने के लिये जागृत किया गया, सम्पूर्ण छावनी भय से व्याप्त हो गईं। प्रत्येक अपराधी को मृत्यु के घाट उतार दिये जाने का भय होने लगा। उनकी पीड़ा पर तरस खाकरमूसा ने उनके लिये परमेश्वर से विनती करने का आश्वासन दिया। उसने कहा, "तुम लोगों ने भंयकर पाप किया है। किन्तु अब मैं यहोवा के पास ऊपर जाऊंगा, सम्भव है कि मैं तुम्हारे पाप का प्रायश्चित कर सकूँ "। वह गया और परमेश्वर के सम्मुख अपने पापों का अंगीकार करते हुए उसने कहा, "इन लोगों ने सोने का देवता बनाकर महापाप किया है। फिर भी तू उनका पाप क्षमा कर-; नहीं तो मेरे नाम को उस पुस्तक में से काट दे, जो तूने लिखी है। यहोवा ने मूसा से कहा, "जिसने मेरे विरूद्ध पाप किया है, उसी का नाम मैं अपनी पुस्तक में से काट दूँगा। अब तू जाकर उन लोगों को उस स्थान में ले चल जिसकी चची मैंने तुझे से की थी, देख, मेरा दूत तेरे आगे-आगे चलेगा। परन्तु जिस दिन मैं दण्ड देने लगूँगा उस दिन उनको इस पाप का भी दण्ड दूँगा।" PPHin 326.2

मूसा की प्रार्थना में हमारा ध्यान स्वर्गीय अभिलेखों की ओर ले जाया जाता है जिनमें सभी मनुष्यों के नाम लिखे हुए हैं और उनके अच्छे व बुरे काम निष्ठापूर्वक पंजीकृत हैं। जीवन की पुस्तक में उन सब के नाम है जिन्होंने परमेश्वरकी सेवकाई का कार्यभार ग्रहण किया। यदि इनमें से कोई भी उससे

मुहँ मोड़ लेता है और जो हठीला होकर पाप में बना रहता है और अन्त में परमेश्वर के पवित्र आत्मा के प्रभाव के प्रति कठोर हो जाता है, उसका नाम न्याय होने के समय जीवन की पुस्तक में से मिटा दिया जाएगा और स्वयं विनाश के प्रति समर्पित होगा। मूसापापी के अन्त को भली-भांति जानता था, फिर भी यदि इज़राइल के लोगों को परमेश्वर द्वारा अस्वीकार किया जाना था, तो उसकी मनोकामना थी कि उनके साथ उसका नाम भी मिटा दिया जाए। वह परमेश्वर की दण्डाज्ञा को उन पर आते नहीं देख सकता था, जिन्हें इतने अनुमग्रहपूर्वक छुटकारा दिलाया गया था। मूसा का इज़राइलियों के लिये मध्यस्थता मसीह की पापियों के लिये मध्यस्थता का उदाहरण है। लेकिन परमेश्वर ने मूसा कोआज्ञा उललघंन करने वालों का अपराधबोध सहन करने की अनुमति नहीं दी जैसा कि मसीह ने सहा था। उसने कहा, "जिसने मेरे विरूद्ध पाप किया है उसका नाम मैं अपनी पुस्तक में से काट दूँगा। PPHin 327.1

अत्यन्त दुख के साथ लोगों ने अपने मरे हुओं को मिट्टी दी। तीन हज़ार लोग तलवार से मारे गए और उसके बाद छावनी में महामारी फैल गई, और अब उनके पास सन्देश आया कि उनके आगे की यात्रा में 'पवित्र उपस्थिति! उनके साथ न होगी। यहोवा ने घोषणा की, "में तुम्हारे साथ नहीं जाऊंगा, तुम लोग बड़े हठी हो, यदि मैं तुम्हारे साथ गया तो ऐसा न हो कि मैं मार्ग में तुम्हारा अन्त कर दूँ।" और उन्हें आज्ञा दी गई, "अब अपने गहनों को शरीर से अलग कर दो, ताकि में जान सके कि तुम्हारे साथ क्या करना है।" पूरी छावनी में शोक मनाया गया। पश्चताप और दीनता में "इज़राइल के लोगों ने होरेब पर्वत पर अपने सभी गहने उतार लिये।" PPHin 327.2

पवित्र निर्देश के अनुसार, जो तम्बू आराधना करने के लिये एक अस्थायी स्थान था, उसे "छावनी से बाहर वरन दूर" खड़ा कराया गया। यह एक और प्रमाण था कि परमेश्वर ने उनके बीच से अपनी उपस्थितिको हटा लिया था। वह स्वयं को मूसा पर प्रकट करता लेकिन ऐसे लोगों पर नहीं। इस आक्षेप को व्यग्रता से अनुभूति हुई और अन्तरात्मा से प्रताड़ित जन-समूह को यह बहुत बड़ी आपदा का पूर्वाभास प्रतीत हुआ। क्या मूसा को परमेश्वर ने छावनी से इसलिये अलग नहीं किया कि वह उन्हें पूरी तरह से नष्ट कर दे? लेकिन उन्हें पूरी तरह बिना आशा के नहीं छोड़ा गया। तम्बू को छावनी के बाहर खड़ा किया गया, लेकिन मूसा उसे 'कलीसिया का तम्बूकहता था। जो भी वास्तव में पश्चतापी थे, और परमेश्वर के पास लौटने के इच्छुक थे, उन्हें निर्देश दिया गया कि वे मिलाप वाले तम्बू के पास जाकर अपने पापों का अंगीकार करें और उससे दया की याचना करें। जब वे छावनी में लौट आते थे तब मूसातम्बू के भीतर प्रवेश करता । अत्यन्त दुखदायी उत्सुकता से वे किसी चिन्ह की बाट जोहते जो उन्हें बता सके कि उनके पक्ष में की गई मूसा की मध्यस्थता स्वीकार की गई। यदि परमेश्वर मूसा से भेंट करना स्वीकार कर लेता तो वे पूरी तरह नष्ट न किये जाने की आशा कर सकते थे। जब बादल का स्तम्भ नीचे उतरा, और तम्बू के द्वार पर आकर ठहरा तो लोग प्रसन्नता से रो पड़े और उन्होंने " उठकर अपने अपने डेरे के द्वारा पर से दण्डवत किया। PPHin 328.1

मूसा उन लोगों के अन्धेपन और भ्रष्टता को भली-भांति जानता था, जिन्हे उसकी देखरेख में रखा गया था, वह कठिनाईयों को भी जानता था जिनका उसे सामना करना था। लेकिन उसे अनुभव हो गया था लोगो को नियन्त्रण में करने के लिये उसे परमेश्वर की सहायता की आवश्यकता थी। उसने परमेश्वर की उपस्थिति के आश्वासन के लिये और परमेश्वर की इच्छा के स्पष्ट अभिव्यक्ति के लिये विनती की, "सुन तू मुझसे कहता है, 'इन लोगों को ले चल, परन्तु यह नहीं बताया कि तू मेरे संग किसको भेजेगा। तब भी तू ने कहा, 'तेरा नाम मेरे चित्त में बसा है, और तुझ पर मेरे अनुग्रह की दृष्टि है। और अब यदि मुझ पर तेरे अनुग्रह की दृष्टि हो,तो मुझे बता दे कि तेरा निर्णय क्या है, जिससे जब मैं तेरा ज्ञान पारऊँ तब तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर बनी रहे। फिर यह भी ध्यान रख कि यह जाति तेरी प्रजा है।" PPHin 328.2

उसे उत्तर मिला, "मैं स्वयं तेरे साथ चलूँगा और तुझे विश्राम दूँगा। लेकिन मूसा अभी भी सन्तुष्ट नहीं हुआ। उसके मन में, परमेश्वर द्वारा इज़राइल को कठोर और अपश्चतापी ही रहने देने से, भंयकर परिणामों की अनुभूति हावी हो रही थी। उसके लिये यह असहनीय था कि उसके हित को उसके भाई बन्धुओं के हित से अलग कर दिया जाए, और उसने प्रार्थना की कि लोगों को परमेश्वर की कृपा-दृष्टि पुनः प्राप्त हो जाए, और उसकी उपस्थिति का प्रतीक उनकी यात्रा में अगुवाई करता रहे। उसने कहा, "यदि तू आप न चले, तो हमें यहाँ से आगे न ले जा। यह कैसे जाना जाए कि तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर और अपनी प्रजा पर है? क्या इससे नहीं कि तू हमारे संग-संग चले? जिससे मैं और तेरी प्रजा के लोग पृथ्वी भर के सब लोगों से अलग ठहरे। PPHin 328.3

प्रभु ने मूसा से कहा, "मैं यह काम भी, जिसकी चर्चा तूने की है, करूँगा, क्योंकि मेरे अनुग्रह की दृष्टि तुझ पर है और तेरा नाम मेरे चित्त में बसा है।" नबी ने फिर भी विनती करना नहीं छोड़ा। प्रत्येक प्रार्थना सुनी गई थी लेकिन मूसा परमेश्वर की कृपा-दृष्टि के श्रेष्ठतर प्रतीकों का प्यासा था। उसने अब वह निवेदन किया जो अब तक किसी मनुष्य ने नहीं किया था, "कृपया, मुझे अपनी महिमा दिखा। PPHin 329.1

परमेश्वर ने उसके निवेदन को, दुस्साहसपूर्ण मानकर, निन्दा नहीं की, बल्कि ये अनुग्रहपूर्ण शब्द कहे, "में तेरे सम्मुख होकर चलते हुए तुझे अपनी सारी भलाई दिखाऊंगा।" परमेश्वर की अनावृत महिमा का, कोई भी मनुष्य अपनी नश्वर अवस्था में दर्शन करके जीवित नहीं रह सकता, लेकिन मूसा को आश्वस्त किया गया कि वह उतनी पवित्र महिमा को देख पाएगा जितनी वह सहन कर सकता था। उसे फिर से पर्वत के शिखर पर बुलाया गया, फिर उस हाथ ने जिसने जगत की सृष्टि की, उस हाथ ने जो, 'पर्वतों को अचानक हटा देता है, और उन्हें पता भी नहीं चलता' (अय्युब 9:5) विश्वास के महापुरूष, मिट्टी के इस मानव को उठाकर चटटान की एक दरार में रख दिया, और परमेश्वर का तेज उसके सामने से होकर निकल गया। PPHin 329.2

यह अनुभव-अन्य सब प्रतिज्ञाओं से बढ़कर,कि परमेश्वर की उपस्थिति उसके साथ होगी-मूसा के लिये, उसके सामने जो काम था, उसमें सफलता प्राप्त करने का आश्वासन था, और एक सामरिक मार्गदर्शक या नीतिज्ञ के रूप में उसकी समस्त उपलब्;धियों से या मिस्र में प्राप्त सारी शिक्षा से कही अधिक महत्वपूर्ण था। परमेश्वर की स्थाई उपस्थिति का स्थान कोई भी सांसारिक शक्ति या कौशल या ज्ञान नहीं ले सकता। PPHin 329.3

आज्ञा उल्लघंन करने वालों के लिये परमेश्वर के हाथों में पड़ जाना एक भयावह अनुभव होता है, लेकिन मूसा सनातन परमेश्वर की उपस्थिति में अकेला खड़ा रहा, और वह डरा हुआ नहीं था, क्योंकि उसका चित्त उसके सृष्टिकर्ता की इच्छा के अनुकूल था। भजन संहिता 66:48में कहा गया है, "यदि में मन में अनर्थ की बात सोचता तो प्रभु मेरी न सुनता।" लेकिन "यहोवा के भेद को वही जानते हैं जो उससे डरते हैं, और वह अपनी वाचा उन पर प्रगट करेगा।" भजन संहिता 25:14 PPHin 330.1

प्रभु ने स्वयं घोषणा की, "यहोवा, यहोवा, ईश्वर दयालु और अनुग्रहकारी, कोप करने में धीरजवान, और अति करूणामय और सत्य, हजारों पीढ़ियों तक निरन्तर करूणा करने वाला, अधर्म और अपराध और पाप को क्षमा करने वाला है, परन्तु दोषी को वह किसी प्रकार निर्दोष न ठहराएगा।" PPHin 330.2

"तब मूसा ने तुरन्त ष्थ्वी की ओर झुककर दण्डवत किया।" उसने फिर से विनती की कि परमेश्वर उसके लोगों के पापों को क्षमा करे और उन्हें अपनी मीरास का भागीदार बनाए। उसकी प्रार्थना स्वीकार की गईं। परमेश्वर ने उदारतापूर्वक इज़राइल पर अपनी कृपा-द्दष्टि पुनः रखने की प्रतिज्ञा की और उनके लिये ऐसे चमत्कार करेगा जैसे कि पहले 'पृथ्वी पर और सब जातियों में' कभी नहीं हुए। PPHin 330.3

चालीस दिन और चालीस रात मूसा पहाड़ में रहा, और पहली बार की तरह, इस समय के दौरान भी उसे आश्चर्यजनक तरह से जीवित रखा गया। उसके साथ अन्य किसी मनुष्य को ऊपर जाने की अनुमति नहीं दी गईं, और ना ही उसकी अनुपस्थिति में किसी को पहाड़ के पास जाने की अनुमति थी। परमेश्वर की आज्ञानुसार, उसने पत्थर की दो पटियाएँ तैयार की थी, और उन्हें अपने साथ पहाड़ पर ले गया था, और प्रभु ने दोबारा "पत्थर की पटियाओं पर वाचा के वचन, दस आज्ञाएँ लिखी।" (परिशिष्ट नोट 5 देखिये) PPHin 330.4

उस लम्बे समय के दौरान जो मूसा ने परमेश्वर के साथ संपर्क में बिताए, उसकी मुखाकृति में ईश्वरीय उपस्थिति का तेज प्रतिबिम्बित होता था, जब मूसा पहाड़ से उतर रहा था, वहनहींजानता था किउसका चेहरा एक तेज प्रकाश से कॉंतिमान था। एसे हीप्रकाश नेस्तिफनुसके चेहरे को उज्जवल किया था जब उसे न्यायियों के सम्मुख लाया गया, और "तब सब लोगों ने जो सभा में बैठे थे, उस पर द्दष्टि गड़ाई तो उसका मुख स्वर्गदूत का सा देखा।" हारून और अन्य लोग मूसा से पीछे

हट गए, और "वे उसके पास आने से डर रहे थे।" उनकी हिचकिचाहट और भय को देखकर, लेकिन कारण से अनभिज्ञ, उसने उन्हें पास आने को कहा। उसने परमेश्वर की सुलह सम्बन्धी प्रण उनके सामने रखा और उन्हें परमेश्वर की कृपा-दृष्टि पुनःप्राप्त होने का आश्वासन दिया। उन्होंने उसकी वाणी में विनती और प्रेम के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं पाया और आखिर में एक ने उसके पास आने का साहस किया। श्रद्धा और भय के कारण बिना कुछ कहे, उसने मूसा के चेहरे की ओर संकेत किया और फिर स्वर्ग की ओर। महान अगुवे ने उसके अभिप्राय को समझ लिया। अपने सचेतन अपराधबोध में, ईश्वरीय अप्रसन्नता के आभास के कारण वे उस अलौकिक प्रकाश को सह न सके, जो, यदि वे परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी होते, उन्हें आनन्द से भरपूर कर सकता था। अपराध में डर होता है। जिसमें पाप नहीं होता वे स्वर्ग से प्रवाहित प्रकाश से छुपने की इच्छा नहीं करते। PPHin 330.5

मूसा को उन्हें बहुत कुछ बताना था, और उनके डर पर दया करके, उसने अपने चेहरे पर एक आवरण डाल लिया, और जब वह यहोवा से बात करने के बाद छावनी में लौटता तब वह ऐसा ही करता था। PPHin 331.1

इस तेजस्विता से परमेश्वर, मसीह के माध्यम से प्रकट की गईं सुसमाचार की महिमा और इज़राइल अपनी व्यवस्था की उत्तम और पवित्र प्रतिष्ठा की छाप छोड़ना चाहता था। जब मूसा पर्वत पर था, परमेश्वर ने उसे केवल वे पत्थर की पटियाएं, जिन पर व्यवस्था लिखी थी, ही नहीं दी वरन् उसे उद्धार की योजना भी बताई। उसने देखा कि यहूदी काल के सभी चिन्हों और प्रतिरूपों के द्वारा मसीह के बलिदान को दर्शाया गया था, और वह कलवरी से प्रवाहित अलौकिक प्रकाश ही था जो परमेश्वर की व्यवस्था की महिमा से थोड़ा सा भी कम नहीं था, जिसने मूसा के चेहरे को इतना तेजस्व बनाया। वहईश्वरीय प्रकाश उस दंडोन्मुक्ति की महिमा का प्रतीक था जिसका प्रत्यक्षमध्यस्थ मूसा था, जो उस एकल सच्चे रक्षक का प्रतिनिधि था। PPHin 331.2

मूसा के चेहरे पर प्रतिबिम्बित महिमा, परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने वाले लोगों के लिये मसीह की मध्यस्थता के माध्यम से प्राप्त होने वाली आशीषों का उदाहरण है। वह प्रमाणित करती है कि परमेश्वर के साथ जितना घनिष्ठ हमारा सम्बन्ध होगा, और उसकी अपेक्षाओं का ज्ञान जितना स्पष्ट होगा, उतनी ही सम्पूर्णता से हम ईश्वरीय स्वरूप के सदृश होंगे और अधिक तत्परता से हम पवित्र स्वभाव के भागीदार हो सकेंगे। PPHin 331.3

मूसा मसीह का प्रतिरूप था। जैसे इज़राइल के मध्यस्थ ने अपने चेहरे को ढांक लिया, क्योंकि लोग उसकी महिमा को देख पाने को सहन नही कर सकते थे, इसी प्रकार मसीह ने उस ईश्वरीय मध्यस्थ ने पृथ्वी पर आने पर अपने ईश्वरत्व को मनुष्यत्व में ढाँक लिया। यदि वह स्वर्ग की धवलता में आवृत होकर आता तो वह मनुष्यों के पास उनकी पापमय अवस्था में नहीं पहुँच सकता था। वे उसकी उपस्थिति के तेज को सहन नहीं कर सकते थे। इस कारण उसने स्वयं को दीन किया और

उसे "पापमय शरीर की समानता" में बनाया गया, ताकि वह पतित जाति तक पहुँच सके, और उन्हें उठा सकें।

अध्याय 29—व्यवस्था के विरूद्ध शैतान की शत्रुता

परमेश्वर की व्यवस्था को पराजित करने का प्रथम प्रयत्न- जो स्वर्ग के निष्पाप वासियों के बीच किया गया -कुछ समय सफलता से अभिषिक्त प्रतीत हुआ। स्वर्गदूतों का विशाल समूह पथगभ्रष्ट हो गया, लेकिन शैतान की दृश्यमान विजय का परिणाम था, पराजय और क्षति, परमेश्वर से अलगाव, और स्वर्ग से निष्कासन। PPHin 333.1

जब पृथ्वी पर संघर्ष पूर्ण अवस्था में आ गया, शैतान को फिर से एक काल्पनिक अनुकूल परिस्थिति मिल गईं। आज्ञा उल्लंघन के कारण, मनुष्य उसका दास हो गया और मनुष्य का राज्य धोखे से प्रधान-विद्रोही के हाथों में चला गया। अब शैतान के लिये एक स्वतन्त्र राज्य की स्थापना करने को और परमेश्वर और उसके पुत्र के आधिपत्य को चुनौती देने के लिये रास्ता खुला प्रतीत हो रहा था। लेकिन उद्धार की योजना ने मनुष्य का परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी होने को, और मनुष्य और पृथ्वी को दुष्ट के आधिपत्य से अनन्त: छुटकारे को सम्भव किया। PPHin 333.2

शैतान फिर से पराजित हुआ और अपनी हार को जाति में बदलने की आशा में दोबारा धूर्तता पर उतर आया। पतित जाति में अतिक्रमण को उकसाने के लिये, उसने परमेश्वर को अन्यायी बताया, क्योंकि उसने मनुष्य को उसकी आज्ञा का उल्लंघन करने की अनुमति दी। धूर्त प्रलोभक ने कहा, "जब परमेश्वर जानता था कि परिणाम क्या होगा, फिर उसने मनुष्य की परीक्षा क्यों ली जाने दी, उसे पापक्यों करने दिया, और दुख और मृत्यु को क्यों आने दिया?" और आदम की संतानों ने, उस चिरसहिष्णु करूणा को भुलाकर, जिसने मनुष्य को एक और सुनवाई प्रदान की थी, उस आश्चर्यजनक और महिमामय बलिदान पर ध्यान दिये बिना, जो विद्रोह के मूल्य के तौर पर स्वर्ग के राजा को देना पड़ा, प्रलोभक की बातों पर विश्वास किया और उस एकमात्र हस्ती के विरूद्ध बड़बड़ाये जो उन्हें शैतान की क्षति शक्ति से बचा सकता था। PPHin 333.3

आज भी हजारों ऐसे लोग हैं जो परमेश्वर के विरूद्ध वही विद्रोही आरोप को दोहराते हैं। वे यह नहीं देखते कि मनुष्य को चयन की स्वतन्त्रता से वंचित करने का मतलब था उसके बुद्धिजीवी होने के विशेषाधिकार को दीन कर उसे महज एक मशीन बनाना। इच्छा को बाध्य कर परमेश्वर का उद्देश्य नहीं। मनुष्य को एक स्वतन्त्र सात्विक कर्मक सृजा गया था। अन्य ग्रहों के वासियों को तरह, उसकी आज्ञाकारिता को परखा जाना था, लेकिन उसे कभी भी उस स्थिति में नहीं लाया जाता कि बुराई के आगे समर्पण करना अनिवार्य हो जाए। ऐसे किसी भी प्रलोभन या परीक्षा को उसके पास आने की अनुमति नहीं जिसका प्रतिरोध करने में वह सक्षम नहीं। परमेश्वर ने ऐसा पर्याप्त प्रयोजन की व्यवस्था की है कि शैतान के साथ संघर्ष में वह कभी भी पराजित नहीं होगा। PPHin 333.4

जैसे-जैसे पृथ्वी पर जनसंख्या में वृद्धि हुई, सम्पूर्ण जगत विद्रोह-वर्ग से जा मिला। एक बार फिर ऐसा प्रतीत हुआ कि शैतान की विजय हुई। लेकिन सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने पाप की प्रक्रिया पर रोक लगा दी और जल-प्रलय द्वारा प्थ्वी को उसके नैतिक प्रदूषण से स्वच्छ किया गया। PPHin 334.1

यगगायाह 26:9,10 में नबी कहता है, "जब तेरे न्याय के काम पृथ्वी पर प्रकट होते हैंतब जगत के रहने वाले धर्म को सीखते है। दुष्ट पर चाहे दया भी की जाए तो भी वह धर्म को नहीं सीखेगा, धर्मराज्य में भी वह कूटिलता करेगा, और यहोवा की तेजस्विता उसे दिखाई नहीं देगी।" जल प्रलय के पश्चात ऐसा ही हुआ। परमेश्वर की दण्डाज्ञा से छुटकारा पाते ही, प्रथ्वी वासियों ने फिर से प्रभु के प्रति अतिक्रमण किया। दो बार जगत के द्वारा परमेश्वर की वाचा और उसकी व्यवस्था की उपेक्षा की गई थी। जल-प्रलय पूर्व के वासियों व नूह के वंशजो ने ईश्वरीय सत्ता को अस्वीकार किया। फिर परमेश्वर ने अब्राहम के साथ वाचा बाँधी और एक जाति को अपनी व्यवस्था का संग्रहस्थान होने के लिये अपनाया। इन लोगों को झाँसा देने और नष्ट करने के लिये शैतान ने तत्काल ही अपना जाल बिछाना आरम्भ किया। याकूब की संतानों को अधर्मियों के साथ वेवाहिक सम्बन्ध स्थापित करने व उनकी मूर्तियों की पूजा करने का प्रलोभन दिया गया। लेकिन युसुफ परमेश्वर के प्रति निष्ठावान था और उसकी स्वाभिभक्ति उस सत्यनिष्ठा की स्थायी साक्षी थी। इस प्रकाश को समाप्त करने के लिये शैतान ने युसुफ के भाईयों की ईर्ष्या के द्वारा उसे एक अधर्मी देश में दास के तौर पर बेचा जाना सम्भव उसके बारे में मिस्र के लोगों को ज्ञान दिया जा सके। पोतिफेर के घर में और कारागार में भी युसुफ ने वह शिक्षा और प्रशिक्षण पाया, जिसने परमेश्वर के भय के साथ, उसको राज्य के प्रधानमंत्री के ऊँचे पद के लिये तैयार किया। फिरीन के महल से उसके प्रभाव का आभास सम्पूर्ण मिस्र में था और परमेश्वर का ज्ञान चारों ओर फैल गया। मिस्र में इज़राइली भी समृद्ध व धनवान हो गए औरजो परमेश्वर के प्रति सच्चे थे उन्होंने वहाँ के लोगों को व्यापक रूप से प्रभावित किया। नये धर्म को समर्थन मिलता देखकर मूर्तिपूजक याजकों में खलबली मचगई। शैतान की परमेश्वर के प्रति निजी शत्रुता से प्रेरित होकर, वे स्वयं इस प्रकाश को बुझाने में लग गए। सिंहासन के उत्तराधिकारी की शिक्षा का दायित्व याजकों पर था और भावी सम्राट के चरित्र कोमूर्तिपूजा के लिये जोश और परमेश्वर के प्रति निर्धारित प्रतिरोध हालता था और उसे इब्रियों के प्रति उत्पीड़न और करता उत्पन्न करता था। PPHin 334.2

मिस्र से मूसा के चले आने के बाद चालीस वर्षों के दौरान, ऐसा प्रतीत हुआ कि मूर्तिपूजा ने विजय प्राप्त कर ली है। वर्ष के बाद वर्ष बीत जाने के साथ इज़राइलियों की आशाएँ मंद पड़ गईं। राजा और प्रजा दोनों ही शक्तिशाली होने के कारण फले न समा रहे थे और इज़राइल के परमेश्वर की हँसी उड़ा रहे थे। यह बढ़कर फिरौन के पास जाकर समाप्त हुआ जब उसका सामना मूसा से हुआ। जब यह इब्री अगुवा "इज़राइल के परमेश्वर, यहोवा" का सन्देश लेकर फिरौन के सम्मुख आया, वह सच्चे परमेश्वर के प्रति अज्ञानता नहीं, वरन् उसके आधिपत्य के प्रति अनादर था जिसके

कारण फिरौन ने उत्तर दिया, "यहोवा कौन है जो मैं उसका कहा मानूँ? मैं यहोवा को नहीं जानता।" प्रारम्भ से लेकर अन्ततक, पवित्र आज्ञा के प्रति फिरौन का विरोध, अज्ञानता का नहीं, वरन् घृणा और तिरस्कार का परिणाम था। PPHin 335.1

हालाँकि कि अब तक मिस्रियों ने परमेश्वर के ज्ञान को स्वीकार नहीं किया था, फिर भी प्रभु ने उन्हें पश्चताप का अवसर प्रदान किया। युसुफ के समय, मिस्र इज़राइल के लिये शरणस्थान रहा था, उसके लोगों पर की गई दया से परमेश्वर का सम्मान हुआ था, और अब 'उस चिरसहिष्णु' दयावान, और धेर्यवान ने प्रत्येक दण्डाज्ञा को समय दिया, जो अपना काम कर सके; मिस्री, जो स्वयं की ही पूजी गईं वस्तुओं के कारण शापित थे यहोवा की शक्ति को जानते थे और चाहते तो परमेश्वर के आगे आत्म-समर्पणकरके उसकी दण्डाज्ञा से बच सकते थे। राजा के हठीलेपन और धर्मान्धिता के कारण परमेश्वर के ज्ञान का प्रचार हुआ, और कई मिस्री प्रभु की सेवकाई के लिये समर्पित हो गये। PPHin 335.2

इज़राइली अधर्मियों के साथ सम्बन्ध स्थापित करने और मूर्तिपूजा को अपनाने के आदी हो चुके थे, इसलिये परमेश्वर ने उन्हें मिस्र जाने की अनुमति दे दी थी जहाँ युसुफ का प्रभाव का व्यापक रूप से आभास होता था और जहाँ उनके ऐसे विशिष्ट जाति बने रहने के लिये परिस्थितियाँ अनुकूल थी। यहाँ पर भी मिस्रियों की निर्लज्ज मूर्तिपूजा और इब्रियों के अल्पवास के उत्तरार्ध के दौरान, उनकी करता और अत्याचार के कारण उनमें मूर्तिपूजा के प्रति घृणा उत्पन्न होनी चाहिये थी और उन्हें अपने पूर्वजों के परमेश्वर में शरण लेनी चाहिये थी। इसी घटना को शैतान ने अपना उद्देश्य प्राप्त करने का साधन बनाया, उसने इज़राइलियों के मनों को अन्धकार से भर दिया और उन्हें उनके अधर्मी स्वामियों के रीति-रिवाजों को अपनाने के लिये विवश कर दिया। अंधविश्वास से प्रेरित, पशुओं के प्रति मिस्रियों को श्रद्धा के कारण, इब्रियों को, उनके दासत्व काल के दौरान बलि की भेंट चढ़ाने की अनुमति नहीं दी गई । इस प्रकार उनके मन-मस्तिष्क में इस विधि के अभाव में उस महान बलिदान का प्रभाव नहीं पड़ा और उनका विश्वास घट गया। शैतान परमेश्वर के प्रयोजन का प्रतिरोध करने पर उतारू हो गया। यह उसका संकलप था कि उन महान लोगों को जो संख्या में दो लाख से अधिक थे, अज्ञान और अंधविश्वास में रखा जाए । वे लोग जिन्हें परमेश्वर ने आशिषित करनेऔर बड़ाने और प्थ्वी पर एक महान शक्ति बनाने की प्रतिज्ञा की थी,और जिनके द्वारा वही अपनी इच्छा को प्रकट करने वाला था, वे लोग जिन्हें वह अपनी व्यवस्था का रक्षक बनाने वाला था, इन्हीं लोगों को शैतान अँधेरे और दास्तव में रखना चाहता था ताकि वह उनके मन से परमेश्वर की स्मृति को मिटा दे। PPHin 335.3

जब राजा के सम्मुख चमत्कार किये गए, तब शैतान उन चमत्कारों की शक्ति को निष्प्रभाव करने और फिरौन को परमेश्वर के प्रभुत्व को स्वीकार करने और उसके जनादेश का पालन करने से रोकने के लिये वहीं पर था। अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ शैतान ने परमेश्वर के चमत्कारों की

नकल करने और उसकी इच्छा का प्रतिरोध करने की चेष्ठा की।। लेकिन इसके फलस्वरूप ईश्वरीय शक्ति और महिमा के महानतम प्रदर्शनों के लिये मार्ग तैयार हो गया और इज़राइलियों और समस्त मिस्र को जीवित और सच्चे परमेश्वर की सार्वभौमिकता और अस्तित्व और स्पष्ट हो गए। PPHin 336.1

परमेश्वर ने अपनी शक्ति के श्रेष्ठ प्रदर्शों और मिस्र के सभी देवी-देवताओं को दण्डाज्ञा के द्वारा इज़राइल को छुटकारा दिलाया। भजन संहिता 105:43-45में लिखा है, “वह अपनी प्रजा को हर्षित करके और अपने चुने हुओं से जयजयकार कराके निकाल लाया, ताकि वे उसकी विधियों को माने और उसकी व्यवस्था को पूरी करें।” उसने उन्हें दासों जैसी अवस्था से मुक्त कराया, ताकि वह उन्हें एक समृद्ध देश में ला सके- वह जगह जिसे उसकी देख-रेख में उनके शत्रुओं से उनकी सुरक्षा के लिये तैयार किया गया था, जहाँ वे उसके पंखो की छाया तले वास कर सके। वह उन्हें अपनाकर, अपनी अनश्वर बाहों में लेना चाहता था, और उसकी करूणा और भलाई के बदले में उनसे परमेश्वर की यहीउपेक्षा थी कि वे उसे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न माने और पृथ्वी पर उसके नाम को ऊंचा करे और महिमा पहुँचाए। PPHin 336.2

मिस्र में अपने दासत्व के दौरान अधिकांश इज़राइली, परमेश्वर की व्यवस्था के ज्ञान को लगभग खो चुके थे, और उन्होंने उसके सिद्धान्तों को मूर्तिपूजकों के रीति-रिवाजों और परम्पराओं में मिला दिया। परमेश्वर उन्हें सिने पर्वत लेकर आया, और वहाँ अपनी आवाज में व्यवस्था की घोषणा की। PPHin 337.1

शैतान और उसके दुष्ट दूत पृथ्वी पर ही थे। जब परमेश्वर अपने लोगों के सम्मुख अपनी व्यवस्था की घोषणा कर रहा था, तब भी शैतान उन लोगों को पाप करने के लिये बहकाने का षड़यन्त्र रच रहा था। स्वर्ग के बिल्कुल सामने से वह परमेश्वर के चुने हुए लोगों को छीन कर ले जाना चाहता था। उन्हें मूर्तिपूर्जा में अग्रसर करके, वह आराधना के प्रभाव को समाप्त कर देना चाहता था, क्योंकि मनुष्य का धार्मिक उत्थान कैसे हो सकता है यदि वह उसकी उपासना करें जो उसी के तुल्य है या जिसका प्रतीक उसकी अपनी हस्तकला हो? जब मनुष्य सनातन परमेश्वर के सामर्थ्य गौरव और महिमा के प्रति इतना अंधा हो जाता कि गढ़ी हुईं मूर्ति से या जीव-जन्तु से उसका प्रतिनिधित्व करता, जब वह अपने पवित्र पवित्र सम्बन्ध को भूल जाता कि उसे अपने सृष्टिकर्ता के स्वरूप में बनाया गया है और उन घृणित, निजीव वस्तुओं को दण्डवत करने लगता, तब नियम का उललघंन करने का मार्ग खुल जाता, हृदय की पापी अभिलाषाएँ अनियन्त्रित हो जाती, और शैतान को पूरा अधिकार मिल जाता। PPHin 337.2

सिने पर्वत के नीचे ही शैतान ने परमेश्वर की व्यवस्था को पलट देने की अपनी योजना को क्रियान्वित करना आरम्भ किया और इस प्रकार उसी काम को आगे बढ़ाया जो उसनेस्वर्ग में प्रारम्भ किया था। उन चालीस दिनों के दोरान जब मूसा परमेश्वर के साथ पहाड़ पर था, शैतान सन्देह, अधर्म

और विद्रोह को उकसाने में व्यस्त था। जब परमेश्वर अपनी वाचा वाली प्रजा को देने के लिये अपनी व्यवस्था को लिख रहा था, इज़राइली यहोवा के प्रति अपनी निष्ठा को त्यागकर, सोने के देवी-देवताओं की मांग कर रहे थे। जब मूसा व्यवस्था के सिद्धान्तों के साथ, जिनका पालन करने की उन्होंने प्रतिज्ञा की थी, ईश्वरीय महिमा की उपस्थिति से लौटा तो उसने उन्हें उसकी आज्ञाओं को प्रत्यक्ष रूप से अनादर करते हुए, एक स्वर्णिम आकृति के सामने दण्डवत करते हुए पाया। PPHin 337.3

इज़राइलियों द्वारा यहोवा का चुनौतीपूर्ण अपमान और ईश-निंदा करवाकर, शैतान ने उनके विनाश की योजना बनाई थी। चूंकि उन्होंने स्वयं को, इतना गिरा हुआ, परमेश्वर द्वारा दिये गए आशीर्वाद और विशेषाधिकारों के आभास, और निष्ठा की पवित्र व दोहरायी हुई अपनी प्रतिज्ञाओं के प्रति उदासीन प्रमाणित कर दिया था, शैतान को विश्वास था कि प्रभु उनसे सम्बन्ध-विच्छेद करके उन्हें विनाश को समर्पित कर देगा। इस प्रकार अब्राहम की संतान का सर्वनाश निश्चित था-प्रतिज्ञा की वह संतान जिसके द्वारा उसे आना था जो शैतान पर विजयी होने वाला था। उस महान विद्रोही ने इज़राइल के विनाश की योजना बनाई थी और इस प्रकार परमेश्वर के उद्देश्य को विफल करना चाहा। लेकिन वह फिर से पराजित हुआ। पापी होने के बावजूदइज़राइल के लोगों को नष्ट नहीं किया गया। जो हठपूर्वक शैतान के पक्ष में सम्मिलित हो गये उन्हें काट डाला गया और जो लोग दीन हो गये और जिन्होंने पश्चताप किया उन्हें क्षमा कर दिया गया। इस पाप का इतिहास मूर्तिपूजा के दण्ड और अपराधबोध का और परमेश्वर की चिरसहिष्णु करूणा और न्याय का चिरस्थायी साक्ष्य है। PPHin 338.1

सिने के दृश्यों का साक्षी सम्पूर्ण नभमण्डल था। इन दो प्रबन्धनों के कियान्वन में परमेश्वर के शासन और शैतान के शासन के बीच भिन्नता दिखाई देती है। फिर से अन्य ग्रहों के वासियों ने शैतान के स्वधर्म-त्याग के परिणाम को देखा और यह भी जाना कि यदि उसे अधिकार दे दिया जाता तो वह स्वर्ग में किस प्रकार का शासन स्थापित करता मनुष्य द्वारा दूसरी आज्ञा का उल्लंघन कराक शैतान परमेश्वर को उनकी दृष्टि में नीचा दिखाना चाहता था। चौथी आज्ञा को परे रखकर वह चाहता था कि वे पूरी तरह परमेश्वर को भूल जाए। परमेश्वर का, मूर्तिपूजकों के देवी-देवताओं से बढ़कर आदर और उपासना का दावा, इस बात पर आधारित है कि वह सृष्टिकर्ता है और अन्य सभी प्राणियों के अस्तित्व का श्रेय उसको जाता है। ऐसा बाइबिल में प्रस्तुत किया गया है। यिर्मयाह नबी कहता है, "यहोवा वास्तव में परमेश्वर है, जीवित परमेश्वर और सदा का राजा वही है। वेदेवता जिन्होंने आकाश और पृथ्वी को नहीं बनाया वे पृथ्वी के ऊपर से और आकाश के नीचे से नष्ट हो जाएंगे। उसी ने पृथ्वी को अपनी सामर्थ्य से बनाया, उसने जगत को अपनी बुद्धि से स्थिर किया, और आकाश को अपनी प्रवीणता से तान दिया है।" "सब मनुष्य पशु सरीखे ज्ञान रहित है, प्रत्येक सुनकर बुत के कारण उलझन में है, क्योंकि उनके द्वारा ढाली गई मूर्तियाँ मिथ्या है, और उनमें श्वास नहीं है। वे खोखली और नासमझी के काम है, जब उनके दण्ड का समय आएगा तब वे नष्ट हो जाएंगी। परन्तु याकूब का निज भाग उनके समान नहीं है, क्योंकि वह तो सब का सृजनहार है"-यिर्मयाह 10:10-

12, 14-16 [विश्राम दिन, परमेश्वर की सृजनात्मक शक्ति के स्मारक के तौर पर, उसकी ओर आकाश और पृथ्वी के सृष्टिकर्ता होने कीओरसंकेत करता है। इस प्रकार वह उसके अस्तितव का स्थायी साक्ष्य और उसके प्रेम, बुद्धिमता और महानता का स्मृतिपत्र है। यदि विश्राम दिन का पालन पूरी श्रद्धा के साथ किया जाता, तो कभी भी कोई नास्तिक या मूर्तिपूजक नहीं होता। PPHin 338.2

विश्राम की विधि, जो अदन में आरम्भ हुई, जगत जितनी ही प्राचीन है। सृष्टि से लेकर आगे तक इसका पालन सभी कुलपिताओं ने किया। मिस्र में दासत्व के दौरान, इज़राइलियों को उनके अधिकारियों द्वारा सबत को भंग करने को बाध्य किया गया और वे उसकी पवित्रता को लगभग भूल ही गए। सिने पर्वत में जब व्यवस्था को घोषित किया गया, चौथी आज्ञा कापहला वाक्य था, "तू विश्राम दिन को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखाना-इससे ज्ञात होता है कि विश्राम दिन की स्थापना उस समय नहीं वरन् सृष्टि के समय हुईं। मनुष्य के मन मस्तिष्क से परमेश्वर को निकाल देने के लिये, शैतान ने इस स्मारक को समाप्त कर देना चाहा। अपने सृष्टिकर्ता को भूल जाने पर मनुष्य बुराई की शक्तियों का प्रतिरोध करने का कोई प्रयत्न न करता और शैतान अपने शिकार के लिये निश्चित हो जाता। PPHin 339.1

शैतान की परमेश्वर के प्रति शत्रुता ने उसे दस आज्ञाओं के प्रत्येक सिद्धान्त के विरूद्ध लड़ाई करने को बाध्य कर दिया। परमेश्वर के प्रति निष्ठा और प्रेम के श्रेष्ठ सिद्धान्त के साथ, आज्ञाकारिता और संतानीय प्रेम का सिद्धान्त, जो सबका पिता है, गहरा सम्बन्ध है। माता-पिता की आज्ञाओं की अवहेलना करने करते मनुष्य परमेश्वर की आज्ञाओं की अवहेलना करने लगता है। इस कारण शैतान पॉचवी आज्ञा के आभासं को कम करना चाहता था। मूर्तिपूजकों ने इस नियम के सिद्धान्त पर अधिक ध्यान नहीं दिया। कई देशों में यदि वृद्धावस्था में माता-पिता अपना पालन-पोषण करने में असमर्थ हो जाते तो या तो उनका परित्याग कर दिया जाता था या उन्हें मार दिया जाता था। परिवार में माँ के साथ आदरपूर्ण व्यवहार नहीं किया जाता था और पति की मृत्यु के पश्चात उससे उपेक्षा की जाती थी कि वह अपने ज्येष्ठ पुत्र की अधीनता स्वीकार करें। मूसा ने सन्ंतानीय आज्ञाकारिता की आज्ञा दी, लेकिन जब इजराइली परमेश्वर से दूर चले गए तो पाँचवीं आज्ञा की मान्यता नहीं रही। शैतान "आरम्भ से ही हत्यारा है (यहुन्ना 8:44)और मानव जाति पर अधिकार प्राप्त करने के तुरन्त बाद, उसने ना केवल उन्हें एक दूसरे से घृणा करने और एक-दूसरे को मार डालने को उकसाया, वरन् परमेश्वर के प्रभुत्व को अधिक निर्भीकता से चुनौती देने के लिये उसने पांचवी आज्ञा के उल्लंघन को उनके धर्म का हिस्सा बना दिया। PPHin 339.2

ईश्वरीय सदगुणों की विकृत धारणाओं के द्वारा, मूर्तिपूजक राष्ट्रों को विश्वास दिलाया गया कि देवी-देवताओं की कृपा-दृष्टि पाने के लिये मानव-बलि आवश्यक थी, और मूर्तिपूजा के कई रूपों में सबसे अधिक भयानक नशंसता का अभ्यास किया गया। इनमें से एक प्रथा थी कि बच्चों को मूर्तियों के सामने आग में से होकर निकलना होता था। जब उनमें से एक इस अग्नि-परीक्षा को

सुरक्षित पार कर लेता था, तब लोगों को विश्वास हो जाता था कि उनकी भेंट स्वीकार की गई। जो इस अवस्था में निकल आते थे उन्हें परमेश्वर का कृपा-दृष्टि प्राप्त माना जाता था, उसे कई सुविधाएं प्रदान की जाती थी और उसके बाद भी उन्हें बहुत सम्मान दिया जाता था, और उनके अपराध, चाहे कितने भी जधन्य हो, कभी भी दण्डित नहीं किये जाते थे। लेकिन जो उस अग्नि परीक्षा में विफल हो जाता था, उसका अन्तिम परिणाम निश्चित हो जाता था। विश्वास किया जाता था कि उसके प्राण लेने से देवी-देवताओं को सन्तुष्ट किया जा सकता था, और इस रीति से उसे बलि की भेंट के रूप में चढ़ा दिया जाता था। स्वधर्म-त्याग के काल में ये घृणित प्रथाएँ प्रचलन में थी और कुछ हद तक इज़राइलियों में भी थी। PPHin 340.1

धर्म के नाम में सातवीं आज्ञा का भी उल्लघंन किया गया। सबसे अधिक घृणित और व्यभिचारी विधियों को मूर्तिपूजा का हिस्सा बना दिया। देवी-देवताओं को अपवित्र दर्शाया जाता था, और उनके उपासक नीचतापूर्ण मनोभावों के अधीन हो गए। असाधारणबुराईयाँ प्रचलन में थी और धार्मिक पर्व और व्यापक अपवित्र से अभिलक्षित थे। PPHin 340.2

बहुर्विवाह इससे पहले भी प्रचलित था। यह पाप उन कई पापों में से एक था जिसके कारण जल-प्रलय पूर्व जगत पर परमेश्वर का कोप भड़का। लेकिन फिर भी जल-प्रलय के पश्चात यह व्यापक हो गया। विवाह की व्यवस्था को विकृत करना, उसके आभार को क्षीण करना और उसकी पवित्रता को भंग करना, शैतान का सुविचरित प्रयत्न था। इसके अलावा मनुष्य के सामने परमेश्वर के स्वरूप को विकृत करने और बुराई और विपत्ति का मार्ग खोलने का और कोई तरीका नहीं था। PPHin 341.1

महान विवाद के प्रारम्भ से ही शैतान का यह उद्देश्य रहा है कि वह परमेश्वर के चरित्र को गलत रूप में प्रस्तुत करें और उसकी व्यवस्था के विरूद्ध अतिक्रमण को उकसाए और इस कार्य को मानो सफलता का ताज भी मिला। जनसाधारण शैतान के बहकावे में आकर परमेश्वर के विरूद्ध खड़े हो जाते हैं। लेकिन बुराई के अभ्यास के बीच में भी परमेश्वर के उद्देश्य या प्रयोजन व्यवस्थित रूप से आगे बड़ते हुए सिद्धि प्राप्त करते हैं; सभी सृजित बुद्धिजीवियों के लिये वह अपनी न्यायसंगतता और उदारता प्रकट कर रहा है। शैतान के प्रलोभनों के द्वारा संपूर्ण मानव जाति ने परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन किया, लेकिन उसके पुत्र के बलिदान के माध्यम से उनके लिये परमेश्वर के पास लौटने का मार्ग खुल गया। मसीह के अनुग्रह से वे पिता की व्यवस्था का पालन करने में समर्थ हो जाते है। इस प्रकार प्रत्येक युग में, स्वधर्म त्याग और विद्रोह के वातावरण मेंभी, परमेश्वर उन लोगों को एकत्रित कर लेता है जो उसके प्रति सत्यवान है- वे लोग "जिनके मन में उसकी व्यवस्था है।" ययाह 51:7 PPHin 341.2

शैतान ने धोखे से स्वर्गदूतों को बहकाया, इस तरह उसने मनुष्यों के बीच अपने काम को आगे बढ़ाया और वह अन्त तक इस नीति का प्रयोग करेगा। यदि वह खुले तौर पर परमेश्वर और उसकी

व्यवस्था के प्रति युद्धरत रहेगा, तो मनुष्य सावधान हो जाएगा, लेकिन वो अपना भेष बदल लेता है और सत्य को असत्य के साथ मिला देता है। इस प्रकार उन त्रुटियों को ग्रहण कर लिया जाता है जो आत्मा को वशीभूत और नष्ट कर देती हैं। इस माध्यम से शैतान जगत को अपने साथ खींच ले जाता है। लेकिन वह दिन आ रहा है जब उसका पराकम हमेशा के लिये समाप्त हो जाएगा। PPHin 341.3

परमेश्वर का विद्रोह से निपटने का तरीका उस कार्य को अनावृत कर देगा जो अभी तक आढ़ में किया जा रहा था। शैतान के शासन के परिणाम, पवित्र आज्ञाओं को अनदेखा करने का फल सभी सृजित बुद्धिजीवियों की दृष्टि के सामने नष्ट हो जाएँगे। परमेश्वर की व्यवस्था पूर्ण रूप से दोष मुक्त ठहराई जाएगी। यह देखा जाएगा कि परमेश्वर की सभी कार्य-विधियाँ उसके लोगों की भलाई और उसके द्वारा सृजित अन्य सभी ग्रहों की भलाई के सन्दर्भ में थी। शैतान स्वयं, साक्ष्य विश्व की उपस्थिति में, परमेश्वर की सत्ता की न्यायपरता और उसकी व्यवस्था की पवित्रता का अंगीकार करेगा। PPHin 341.4

वह समय दूर नहीं जब परमेश्वर अपमानित हुए अपने अधिकार को दोषमुक्त करने के लिये खड़ा होगा। यग्याह 26:21में लिखा है, "यहोवा पृथ्वी के निवासियों को अधर्म का दण्ड देने केलिये अपने स्थान से चला आता है। "परन्तु उसके आने के दिन को कौन सह सकेगा और तब तक वह दिखाई दे, तब कौन खड़ा रह सकंगा?"-मलाकी 3:2। अपने दुराचरण के कारण, इज़राइल के लोगों को सिने पर्वत के पास जाने की मनाही थी जब परमेश्वर उस पर अपनी व्यवस्था की घोषणा करने के लिये उतरने वाला था, नहीं तो वे उसकी उपस्थिति के अग्नि-समान तेज से नष्ट हो जाते है। यदि उसकी व्यवस्था की घोषणा के लिये चुने हुए स्थान पर उसकी सामर्थ्य का इतना प्रभावशाली प्रदर्शन हुआ, तो उसका न्यायाधिकरण कितना भयानक होगा, जब वह इन पवित्र नियमों का निष्पादन करने के लिये आएगा। निर्णायक प्रतिफल के महत्वपूर्ण दिन उसकी महिमा को वे कैसे सहन कर पाएंगे, जिन्होंने उसके सामर्थ्य को पैरों तले कुचल दिया था? सिने की भयावह घटनालोगों के लिये न्याय के दिन के दृश्यों का प्रतीक थी। तुरही के स्वर से लोगों को परमेश्वर से भेंट करने के लिये बुलाया गया। प्रधान स्वर्गदूत की वाणी और परमेश्वर की तुरही, समस्त पृथ्वी पर से, सजीव व निर्जीव प्राणियों को उनके न्यायाधीश की उपस्थिति में बुलाएंगे। पिता और पुत्र, स्वर्गदूतों के समूह के साथ पर्वत पर उपस्थित थे। न्याय के दिन मसीह "अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा में आएगा"-मत्ती 16:27। फिर वह अपनी महिमा के सिंहासन पर बैठेगा, और उसके सामने समस्त राज्य एकत्रित होंगे। PPHin 342.1

जब सिने पर परमेश्वर की उपस्थिति का प्रकटीकरण हुआ, इज़राइल की दृष्टि में, परमेश्वर की महिमा भस्म कर देने वाली अग्नि के समान थी। परन्तु जब मसीह अपने स्वर्गदूतों सहित महिमा में आएगा, समस्तपृथ्वी उसकी उपस्थिति के प्रचण्ड प्रकाश से प्रज्वलित हो जाएगी। भजन संहिता

50:3,4में लिखा है, "हमारा परमेश्वर आएगा और चुपचाप न रहेगा, आग उसके आगे-आगे भस्म करती जाएगी, और उसके चारों ओर आंधी चलती रहेगी। वह अपनी प्रजा का न्याय करने के लिये ऊपर के आकाश को और पृथ्वी को भी पुकारेगा।" उसके आगे से एक अग्निमय धारा उत्पन्न होकर बहेगी जो प्रचण्ड ताप से वातावरण के पदार्थों को पिघला देगी और पृथ्वी की सब कृतियों को जला देगी। 2 थिस्सलुनीकियों 1:7,8में लिखा है, "प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रकट होगा और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते, उनसे पलटा लेगा।" PPHin 342.2

मनुष्य की सृष्टि के समय से अब तक पवित्र सामर्थ्य का ऐसा प्रदर्शन नहीं देखा गया, जैसा कि सिने पर व्यवस्था की घोषणा के समय हुआ। भजन संहिता 68:8 में लिखा है, "पृथ्वी काँप उठी और आकाश भी परमेश्वर की उपस्थिति में टपकने लगा, सिने पर्वत भी परमेश्वर, इज़राइल के परमेश्वर की उपस्थिति में कांप उठा।" प्रकृति के भयावह उतार-चढ़ाव के बीच बादल में से, तुरही के सामन परमेश्वर का स्वर सुनाई पड़ा। पर्वत ऊपर से लेकर नीचे तक कॉप उठा और इज़राइल की सेना, भय के कारण कांतिहीन और कंपकंपाती हुई, पृथ्वी पर मुहँ के बल गिर पड़ी। जिसकी आवाज ने तब पृथ्वी को हिला दिया, उसने इब्रानियों 12:26में घोषणा की है, "एक बार फिर में ने केवल पृथ्वी को वरन् आकाश को भी हिला दँगा।'यिर्मयाह 25:30 व योएल 3:16में पवित्र शास्त्र कहता है, "यहोवा ऊपर से गरजेगा और अपने उसी पवित्र धाम में से अपना पवित्र शब्द सुनाएगा," "और आकाशओर पृथ्वी थरथराएँगे।" उसके आगमन के महान दिन आकाश स्वयं, 'खर्र की तरह जब वह लपेट दिया जाता है' अपने स्थान से हट जाएगा (प्रकाशित वाक्य 6:14) और हर एक पहाड़ और टापू , अपने अपने स्थान से हटा दिये जाएंगे। यग्याह 24:20में लिखा है, "पृथ्वी मतवाले के समान बहुत डगमगाएगी और एक कूटिया के समान हटा दी जाएगी, वह अपने पाप से दबकर गिर जाएगी और फिर न उठेगी।" PPHin 343.1

"इस कारण सब के हाथ ढीले पड़ेंगे" सभी के चेहरे "पीले पड़ जाएंगे" "और प्रत्येक मनुष्य का हृदय द्रवित हो जाएगा, और मैं जगत के लोगों को उनकी बुराई के कारण दण्ड दूँगा"। परमेश्वर कहता है, "में अभिमानियों के अभिमान का नाश करूंगा और दिल दहला देने वालों के घमण्ड को नीचे गिरा दूँगा।" यशायाह 13:7,8,11 PPHin 343.2

जब मूसा पर्वत में परमेश्वर की उपस्थिति से होकर आया, जहाँ उसे साक्षी की पटियाएँ प्राप्त हुई थी, अपराध बोध से ग्रसित इज़राइल उस प्रकाश को सहन नहीं कर सका जो उसकी मुखाकृति को महिमान्वित कर रहा था। जब मनुष्य का पुत्र, स्वर्गीय सेना से घिरा हुआ, उसके प्रायश्चित का तिरस्कार करने वालों और उसकी आज्ञाओं का उल्लंघन करने वालों पर दण्डाज्ञा भेजने आएगा, तब अपराधी मनुष्य के पुत्र को कितना कम देख पाएँगे। जिन्होंने परमेश्वर की व्यवस्था को अमान्य ठहराया और मसीह के लहू को पैरों के नीचे कुचल दिया, "वे पृथ्वी के राजा, और प्रधान, और

सरदारऔर धनवान और सामर्थी लोग, "पहाड़ों की खोहों और चटटानों में" जा छिपेंगे, "और पहाड़ों और चटटानों से कहेंगे, "हम पर गिर पड़ो और हमें उसके मुहँ से जो सिंहासन पर बैठा है, और मेम्ने के प्रकोप से छुपा लो क्योंकि उसके प्रकोप का भयानक दिन आ पहुँचा है, अब कौन ठहर सकता है"? प्रकाIतवाक्य 6:15--17 I "उस दिन लोग अपनी चांदी-सोने की मूर्तियों को जिन्हें उन्होंने दण्डवत करने के लिये बनाया था, छछुँन्दरों और चमगादड़ों के आगे फेंक देंगे, और जब यहोवा पृथ्वी को केपकैपाने के लिये उठेगा तब वे उसके भय के कारण और उसके प्रताप के मारे चटटानों की दरारों ओर उबड़-खाबड़ पहाड़ो की चोटियों पर चले जाएंगे।" यशायाह 2:20-21 PPHin 344.1

फिर देखने मेंआएगा कि परमेश्वर के विरूद्ध शैतान के अतिक्रमण के परिणाम स्वरूप उस का और उन सब को जिन्होंने उसकी प्रजा बनना स्वीकार किया, सर्वनगाश हुआ। उसने जताया था कि आज्ञाओं का उललघंन करने से अधिक लाभ होगा, लेकिन इस बात की पुष्टि हो जाएगी कि "पाप का फल मृत्यु है।" "क्योंकि देखो, वह धधकते भट्ठे का सा दिन आता है, जब सब अभिमानी और सब दुराचारी लोग, दठूँठ के समान होंगे, और उस आने वाले दिन में वे ऐसे भस्म हो जाएँगे कि उनका पता तक न रहेगा"-मलाकी 4:1। शैतान, जो हर पाप की जड़ है, और सब दुष्ट कार्यकर्ता, जो उसकी शाखाएँ है, पूर्णतया काट दिये जाएँगे। पाप का और उसके फलस्वरूप आए सारे कष्टों और बर्बादी का अन्त हो जाएगा। भजन संहिता 9:5,6 मेंलिखा है, "तूने जाति-जाति को झिड़का और दुष्ट को नष्ट किया है, तूने उसका नाम अनन्तकाल के लिये मिटा दिया। हे शत्रु, विनाश का चिरस्थायी अन्त हो गया है।' PPHin 344.2

लेकिन पवित्र दण्डाज्ञा के तूफान के बीच परमेश्वर की संतान को डरने का कोई कारण नहीं। योएल 3:16में लिखा है, "यहोवा अपनी प्रजा के लिये शरणस्थान और इज़राइलियों के लिये गढ़ ठहरेगा।" जो दिन परमेश्वर की आज्ञाओं का उल्लंघन करने वालों के लिये भय और विनाश लाता है, वही दिन आज्ञा पालन करने वालों के लिये "निर्वचनीय आनन्द"लेकर आता है। परमेश्वर कहता है, "मेरे भक्तों को मेरे पास इकटठा करो, जिन्होंने बलिदान चढ़ाकर मुझ से वाचा बाँधी है। स्वर्ग उनके धर्मी होने का प्रचार करेगा, क्योंकि परमेश्वर तो आप ही न्यायी है।' PPHin 344.3

"तब तुम लौटोगे और धर्मी और दुष्ट का भेद अर्थात जो परमेश्वर की सेवा करता है, और जो उसकी सेवा नहीं करता, उन दोनों का भेद पहचान सकोगे" -मलाकी 3:18।" हे धर्म के जानने वालों, जिनके मन में मेरी व्यवस्था है मेरी बातसुनो ।" मै लड़खड़ा देने वाले कटोरे को अर्थात अपनी जलजलाहट के कटारे को तेरे हाथ से ले लेता हूँ. तुझे उस में से फिर कभी पीना न पड़ेगा।" "मैं, में ही तेरा शान्ति-दाता हूँ-ययाह 51:7,22,12। "चाहे पहाड़ हट जाएँ और पहाड़ियाँ टल जाएँ, तो भी मेरी करूणा तुझ पर से कभी न हटेगी, और मेरी शान्तिदायक वाचा न टलेगी, यहोवा, जो तुझ पर दया करता है, उसका यही वचन है।" यायाह 54:10 PPHin 345.1

उद्धार की महान योजना के परिणामस्वरूप, जगत पर पूरी तरह से परमेश्वर की कृपा-दृष्टि हो गई । जो भी पाप के कारण खो गया था, पुनः प्राप्त हो गया। न केवल मनुष्य वरन् समस्त पृथ्वी भी आज्ञाकारियों के लिये पवित्र निवास स्थान होने के लिये, बचाई गई। छः: हजार वर्ष तक शैतान ने पृथ्वी पर अपने स्वामित्व को कायम रखने का संघर्ष किया। अब परमेश्वर का पृथ्वी की सृष्टि का मूल उद्देश्य प्राप्त हुआ। "परन्तु परमप्रधान के पवित्र लोग राज्य को पाएंगे, और युगानयुग उसके अधिकारी बने रहेंगे ।"दानिय्येल 7:18 PPHin 345.2

"उदयाचल से लेकर अस्ताचल तक, यहोवा का नाम स्तुति के योग्य है"-भजन संहिता 113:3। "उस दिन एक ही यहोवा और उसका नाम भी एक ही माना जाएगा।" "तब यहोवा सारी पृथ्वी का राजा होगा"-जकयाह 14:9 । पवित्र शास्त्र में लिखा है, "हे यहोवा, तेरा वचन आकाश में सदा तक स्थिर रहता है।" "उसके सब उपदेश विश्वासयोग्य है, वे सर्वदा अटल रहेंगे-भजन संहिता 119:89,111:7,8 । उन पवित्र आज्ञाओं का, जिनसे शैतान ने घृणा की और जिन्हें नष्ट करना चाहा, समस्त पापरहित विश्व में सम्मान किया जाएगा। और "जैसे भूमि अपनी उपज को उगाती और बारी में जो कुछ बोया जाता है उसको वह उपजाती है, वैसे ही प्रभु यहोवा सब जातियों के सामने धार्मिकता और प्रशंसा को बढ़ाएगा।" यगयाह 61:11

अध्याय 30—मिलाप वाला तम्बू और उसमें होने वाली धर्म-क्रियाएं

यह अध्याय निर्गमन 25-40, लैवव्यवस्था 4 और 16 पर आधारित है

जब मूसा पर्वत पर परमेश्वर के साथ था तब उसे यह आदेश दिया गया, "वे मेरे लिये एक पवित्र स्थान बनाएं कि मैं उनके बीच निवास करूँ" और पवित्र मण्डप के निर्माण के लिये सम्पूर्ण निदेश दिये गए। अपने स्वधर्म-त्याग के कारण इज़राइलियों ने ईश्वरीय 'उपस्थिति' की आशीष खो दी, और उस समय अपने मध्य परमेश्वर के लिये पवित्र स्थान का निर्माण असम्भव कर दिया। लेकिन दोबारा से स्वर्ग की कृपा-दृष्टि प्राप्त करने के बाद, वह महान अगुवा परमेश्वर की आज्ञा को क्रियान्वित करने आगे बढ़ा। PPHin 347.1

पवित्र भवन के निर्माण के लिये चुने हुए व्यक्तियों को परमेश्वर द्वारा हुन और ज्ञान से सम्पन्न किया गया। परमेश्वर ने स्वयं उसके पाप और आकृति, प्रयोग में लाईं जाने वाली सामग्री, और उसमें रखी जाने वाली चल सामग्री (फर्नीचर) से सम्बन्धित विशेष निर्देशों सहित, मूसा को उस भवन का रेखा-चित्र दिया। हाथों से बनाए गये पवित्र स्थान को "सच्चे पवित्र स्थान का नमूना" और स्वर्ग में की वस्तुओं का स्वरूप" होना था" (इब्रानियों 9:24,23)-स्वर्गीय मन्दिर का एक लघुचित्र प्रतिरूप जहां हमारे महान महायाजक, मसीह को, बलिदान के रूप में अपने प्राणों की भेंट चढ़ाने के बाद, पापी के पक्ष में मध्यस्थता करनी थी। परमेश्वर ने पर्वत पर मूसा के सामने स्वर्गीय पवित्र स्थान का दृश्य प्रस्तुत किया और उसे आज्ञा दी कि प्रत्येक वस्तु उस नमूने के आधार पर बनाई जाए। यह सारे निर्देश मूसा द्वारा सावधानी से अंकित किये गए, जिसने उन्हें लोगों के अगुवों तक पहुँचाये ।पवित्र स्थान के निर्माण के लिये अत्यधिक और बड़ी लागत वाली तैयारियाँ करना आवश्यक था, अधिक मात्रा में बहुमूल्य सामग्री की आवश्यकता थी, लेकिन परमेश्वर ने केवल स्वेच्छिक भेंटे स्वीकार की। मूसा ने कलीसिया के सम्मुख पवित्र आदेश को दोहराया, "जितने अपनी इच्छा से देना चाहें उन्हीं सभों से मेरी भेंट लेना।" 'सर्वोच्चः के लिये निवास स्थान तैयार करने में परमेश्वर के प्रति भक्ति और त्याग की भावना प्रथम आवश्यकता थी। PPHin 347.2

सभी लोगों ने एकचित्तता के साथ उत्तर दिया। "और जितनों के हृदय ने उन्हें उत्साहित किया, और जितनों के मन में ऐसी इच्छा उत्पन्न हुई, वे कलीसिया के पवित्र मण्डप के कार्य के लिये, उसकी सेवा के लिये और पवित्र वस्त्रों के लिये यहोवा की भेंट लाए। स्त्री और पुरूष दोनों ही, जिनते के मन से ऐसी इच्छा उत्पन्न हुई थी वे सब कंगन, कानों की बालियाँ, अंगूँठियाँ, मणिबंध आदि सोने के गहने लाए और प्रत्येक मनुष्य जो भेंट लाया, उसने परमेश्वर के लिये सोने की भेंट अपर्ण की।" PPHin 347.3

“और जिस भी मनुष्य के पास नीले, बैंगनी या लाल रंग का उत्तम सन का कपड़ा, बकरी के बाल या लाल रंग में रंगी हुई मेढ़ो की खालें, जलव्याप्र की खालें थी, वह उन्हें लेकर आया। फिर जितने चांदी या पीतल की भेंट देने वाले थे वे यहोवा के लिये वैसी भेंट लेकर आये, और जिसके पास विधि के किसी भी कार्य के लिये बबूल की लकड़ी थी, वह उसे लेकर आया।* PPHin 348.1

“और जितनी स्त्रियों के हृदय में बुद्धि का प्रकाश था वे अपने हाथों से सूत काता करती थी, और वे अपने द्वारा काता हुआ नीला, बैंगनी व लाल रंग का उत्तम सन का वस्त्र लेकर आईं। जितनी स्त्रियों के मन मे बुद्धि का प्रकाश जागृत हुआ, उन्होंने बकरी के बाल बुनें” । PPHin 348.2

“और प्रधान लोग एपोद और कवच में जड़ने के लिये सुलेमानीपत्थर और मणियां और उजियाला देने और अभिषेक करने और मनभावनी सुगन्ध के लिये सुगन्ध द्रव्य और तेल लेकर आए ।” निर्गमन 35:23-28 PPHin 348.3

जब पवित्र स्थान के निर्माण का कार्य प्रगति पर था, वृद्ध एवं तरूण-पुरूष, स्त्रियाँ व बालक अपनी भेंट लाते रहे, जब तक उसकाम के प्रभारियों ने पाया कि सामग्री पर्याप्त थी, और आवश्यकता से अधिक थी। और मूसा ने पूरे डेरे में घोषणा करवाई, “क्या पुरूष, क्या स्त्री, कोई पवित्र स्थान के लिये भेंट न लाए।” इस प्रकार लोगों को और भेंट लाने से रोका गया। इज़राइलियों की बड़बडाहट और उनके पापों के फलस्वरूप परमेश्वर की दण्डाज्ञा निष्पादन, चेतावनी के तौर पर आगे की पीढ़ियों के लिये उल्लिखित की गई । और उनकी भक्ति, उनका उत्साह और उदारता अपनाने योग्य उदाहरण है। जो भी परमेश्वर की आराधना से प्रेम करते है और उसकी पवित्र उपस्थिति के आशीर्वाद को महत्व देते हैं वे उससे भेंट करने के स्थान को तैयार करने में त्याग की ऐसी हो भावना को प्रकट करेंगे। वे अपनी निधि में से परमेश्वर को भेंट चढ़ाने के लिये सबसे उत्तम भाग लाने के इच्छुक होंगे। परमेश्वर के लिये बनाये गये भवन को कर्ज में नहीं छोड़ना चाहिये क्योंकि इस प्रकार उसका अनादर होगा। इस कार्य को सम्पन्न करने के लिये पर्याप्त धनराशि उदारता से दी जानी चाहिये, ताकि श्रमिक भी पवित्र स्थान के निर्माताओं की तरह कह सकें, “अब और भेंटे न लाओ।” PPHin 348.4

पवित्र-स्थान का निर्माण इस प्रकार किया गया था कि उसे विघटित किया जा सकता था और इज़राइली उसे अपनी सब यात्राओं में ले जा सकते थे। इस कारण वह आकार में छोटा था। वह लम्बाई में पचपन फीट और चौड़ाई और ऊँचाई में अठाहरह फीट से अधिक नहीं था। लेकिन फिर भी वह एक भव्य भवन था [जो लकड़ी भवन और उसकी साज-सज्जा के लिये प्रयोग में लाई गई थी वह बबूल की लकड़ी थी, जो सिने में पाई जाने वाली अन्य प्रकार की लकड़ी से भिन्न थी क्योंकि वह सड़ती नहीं थी। उसकी दीवारे खड़े तख्त थे जिन्हें चांदी के आधार में टिकाया गया था और उन्हें स्तम्मों और जोड़ने वाली छड़ो से स्थिर किया गया था। इन सभी को सोने से मढ़ा गया जिससे के भवन सोनेसे बना प्रतीत होता था। पवित्र स्थान की छत परदे के चार जोड़ो से बनी थी, और सबसे

अन्दर वालेनीले, बैंगनी और लाल पर्दों पर कुशल कढ़ाई से करूब बने थे।" अन्य तीन परदे कमशः बकरी के बाल, लाल रंग में रंगी, मेढ़े की खालऔर जलव्याप्र की खाल से बने थे जिन्हें इस प्रकार व्यवस्थित किया गया था कि वे पूर्ण सुरक्षा प्रदान करें। PPHin 348.5

भवन को सोने से मढ़े हुए स्तम्भों से लटकाए हुए, एक बहुमूल्य और सुन्दर परदे से दो कक्षों में विभाजित किया गया था, और वैसा ही परदा पहले कक्ष के द्वार को ढॉकता था। ये भी भीतर के परदों की तरह जिनसे छत बनी थी, नीले, बैंगनी और लाल रंग के थे व सुव्यवस्थति थे। इन पर सोने और चांदी के धागों की कढ़ाई से करूब बने हुए थे जो उस स्वर्गदूत समूह का प्रतीक थे जो स्वर्गीय पवित्र स्थान के कार्य से जुड़े हुए थे और जो पृथ्वी पर परमेश्वर के लोगों के लिये सहायक हैं। PPHin 349.1

पवित्र स्थान के चारों ओर खुला ऑगन था जिसके चारों ओर के स्तम्भों से लटकते हुए उत्तम सन के वस्त्र के परदे या आवरण था। इस प्रॉगण का प्रवेशद्वार पूर्वी सिरे पर था। इस पर सुन्दर कढ़ाई वाले व बहुमूल्य कपड़े के परदे टैंगे हुए थे, जो पवित्र स्थान के परदों से निम्न थे। प्रांगण के परदे मण्डप की दीवारों की ऊंचाई से आधे थे, इसलिये भवन को लोग बाहर से आसानी से देख सकते थे। प्रांगण में, प्रवेश द्वार के बिल्कुल निकट, होमबलि की पीतल की वेदी थी। इस वेदी पर परमेश्वर के लिये चढ़ाए गएबलिदान अग्नि से भस्म हो जाते थे और वेदी के चारों सींगों पर पश्चताप का लहू छिड़का जाता था। पवित्र मण्डप के द्वार और वेदी के बीच में पीतल का पात्र था जो इजराइली स्त्रियों के दर्पणों की स्वेच्छिक भेंट से बनाए गए थे। इस पात्र में याजक अपने हाथ और पैर धोते थे जब भी वे पवित्र कक्ष के प्रवेश करते या परमेश्वर के लिये होमबलि चढ़ाने वेदी के पास आते थे। PPHin 349.2

पहले कक्ष या पवित्र स्थान में विशेष रोटी की मेज, दीपाघार और धूपवेदी रखे जाते थे। विशेष रोटी की मेज उत्तर की ओर होती थी। अपनी अलंकारिक सतह के साथ, वह सोने से मढ़ी हुई थी। इसमेज पर याजक प्रत्येक सबत को, बारह रोटियों के दो ढेर बनाकर, उन पर लोबान छिड़ककर रखते थे। हटाए जाने पर इन रोटियों को पवित्र मानकर, याजकों द्वारा खाया जाता था। दक्षिण की ओर सात दीपों सहित सात शाखाओं वाला दीपाधार था। उसकी शाखाएँ सोसन के समान, फूलों की उत्कृष्ट कृतियों से सुसज्जित थी और पूरा दीपाधार खरे सोने से बना हुआ था। पवित्र मण्डप में खिड़कियाँ नहीं थी, इस कारण दीपकों को एक साथ बुझने नहीं दिया जाता था, वे रात दिन अपना प्रकाश बिखेरते थे। सबसे पवित्र व परमेश्वर की उपस्थिति और पवित्र स्थानों को अलग करने वाले परदे के बिल्कुल सामने धूप की स्वर्णिम वेदी थी। इस वेदी पर याजक को सुबह शाम लोबान सुलगाना होता था; उसके सींगों पर पाप की भेंट का लहू लगाया जाता था और पश्चताप के दिन उस पर लहू छिड़का जाता था। इस वेदी पर अग्नि को परमेश्वर स्वयं प्रज्वलित करता था और वेदी को

पवित्रता से संजोये रखा जाता था। रात-दिन लोबान की पवित्र सुगन्ध कक्ष के अन्दर, बाहर और चारों ओर दूर तक फैल जाती थी। PPHin 349.3

भीतरी परदे के परे पवित्रों का पवित्र था जहां मध्यस्थता और प्रायश्चित की प्रतीकात्मक विधि केन्द्रित थी, और जोपृथ्वी और आकाश को जोड़ने वाली कड़ी थी। इस कक्ष में एक सन्दूकथा जो बबूल की लकड़ी से बना था, और अन्दर से और बाहर से सोने से सढ़ा हुआ था और उसके ऊपर सोने की बाड़ थी। यह संग्रह स्थान था उन पत्थर की पटियाओं के लिये, जिन पर परमेश्वर ने स्वयं दस आज्ञाएं लिखी थी। इस कारण इसे परमेश्वर के साक्षीपत्र का सन्दूक या वाचा का सन्दूक कहा जाता था, क्योंकि दस आज्ञाएं इज़राइल और परमेश्वर के बीच बाँधी गई वाचा का आधार थी। PPHin 350.1

पवित्र सन्दूक का ढक्कन प्रायश्चित का ढकक्कन कहलाता था। इसे खरे सोने के एकल खंड से बनाया जाता था और इसके दोनों सिरों पर सोने के करूब खड़े किये जाते थे। प्रत्येक स्वर्गदूत का एक पंख ऊपर की ओर फैला हुआ होता था और दूसरा आदर और दीनता के प्रतीक जैसे शरीर पर लिपटा होता था। करूबों का एक-दूसरे की ओर मुहँ करके खड़े होना और आदर के साथ नीची द्दष्टि किये सन्दूक को देखना, उस श्रद्धा का, जो स्वर्गीय समूह परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति रखते है और उद्धार की योजना में उनकी रूचि का प्रतीक था। PPHin 350.2

प्रायश्चित के ढकक्कन के ऊपर परमेश्वर की महिमामय उपस्थिति थी और वह करूबों के बीच में से वार्तालाप द्वारा अपनी इच्छा प्रकट करता था। कभी-कभी महायाजक के पास ईश्वरीय सन्देश बादल में से आवाज के द्वारा पहुँचाया जाता था। कभी-कभी दाहिनी ओर खड़े स्वर्गदूत पर प्रकाश होता जो स्वीकृति का चिन्ह था या बाएं तरफ के स्वर्गदूत पर बादल या एक परछाई के पड़ने से अस्वीकृति प्रकट होती थी। PPHin 350.3

सन्दूक में प्रतिष्ठापित, परमेश्वर की व्यवस्था धार्मिकता और दबण्डाज्ञा का श्रेष्ठ नियम था। व्यवस्था आज्ञा केउललघंन करने वालों को मृत्यु का पात्र ठहराती थी, लेकिन इससे श्रेष्ठ प्रायश्चित का ढक्कन था, जिस पर परमेश्वर की उपस्थिति प्रकट होती थी, और जहाँ से प्रायश्चित के आधार पर, प्रायश्चित करने वाले अपराधी को क्षमा प्रदान की जाती थी। इस प्रकार पवित्र स्थान के विधि के द्वारा हमारे उद्धार के लिये मसीह के कार्य को दर्शाया गया है। "करूणा और सच्चाई, आपस में मिल गईं हैं, धर्म और मेल ने एक-दूसरे को चूम लिया है।" भजन संहिता 84:10 PPHin 350.4

पवित्र स्थान के भीतर प्रस्तुत किये गए द्दश्य की महिमा का किसी भी भाषा द्वारा वर्णन करना असम्भव है- सोने की दीवटों के प्रकाश को प्रतिबिम्बित करती सोने से मढ़ी दीवारें चमकीले स्वर्गदूतों वाले शानदार बूटेदार परदों के उत्कृष्ट रंग, वह मेज, धंप की स्वर्णिम वेदी, दूसरे परदे के पीछे पवित्र करूब सहित पवित्र संदूक, और उनके ऊपर यहोवा की उपस्थिति का प्रकट प्रदर्शन-वह पवित्र

महिमा, ये सब मनुष्य के उद्धार के कार्य के महत्वपूर्ण केन्द्र, स्वर्ग में परमेश्वर के मन्दिर की महिमा की एक मद्धम सी झलक है। PPHin 351.1

पवित्र मण्डप के निर्माण में लगभग छ: महीने का समय लग गया। उसके सम्पन्न होने पर, मूसा ने निर्माताओं के कार्य का निरीक्षण किया और उसकी तुलना उस नमूने के साथ की जो उसे पहाड़ पर दिखाया गया था और उन निर्देशों के साथ ही जो परमेश्वर ने उसे दिये थे। "जो-जो आज्ञा यहोवा ने उसको दी थी, उन्होंने उसी के अनुसार किया और मूसा ने उन्हें धन्य ठहराया ।" उत्सुकतापूर्ण अभिरूचि के साथ इज़राइली जनसाधारण पवित्र भवन को देखने के लियेएकत्रित हुए। जब वे श्रद्धायुक्त सन्तोष के साथ उस दृश्य का चिंतन कर रहे थे, बादल का स्तम्भ पवित्र स्थान के ऊपर गया और नीचे आते हुए उसने भवन को अपने में लपेट लिया। "यहोवा का तेज निवास स्थान में भर गया।" पवित्र तेजस्विता के प्रकटन के कारण, कुछ समय के लिये मूसा भी प्रवेश नहीं कर सकता। भावुक होकर लोग उस चिन्ह को देखते रहे जो इस बात का प्रमाण था कि उनके हाथों की संरचना स्वीकार करली गईथी । उच्च स्वरमें कोई अभिव्यक्ति नहीं की गई, वरन् सभी लोगों पर एक संस्करणपूर्ण श्रद्धायुक्त भय उतर आया। लेकिन उनके ह्रदयों की प्रसन्नता, खुशी के आसुओं में वह निकली और वे धन्यवादिता के सत्य वचन धीमी आवाज में फसफुसाने लगे कि परमेश्वर उनके साथ वास करने को तैयार हो गया था। PPHin 351.2

पवित्र निर्देश के अनुसार, मिलापवाले तम्बू की विधि के लिये लैवी के घराने को अलग किया गया। सबसे प्रारम्भिक समय में प्रत्येक मनुष्य अपने घराने का याजक होता था। अब्राहम के समय में, याजकता ज्येष्ठ पुत्र का जन्मसिद्ध अधिकार माना जाता था। अब समस्त इज़राइल के पहलौठों के स्थान पर, परमेश्वर ने मिलापवाले तम्बू की विधि के लिये लेवी के घराने को स्वीकार किया। इस सांकेतिक सम्मान से उसने उसकी स्वामिभक्ति को स्वीकार करने का प्रमाण दिया जो उन्होंने उसकी विधि का पालन करने और उसकी दण्डाज्ञा को क्रियान्वित करने में तब दर्शाया, जब इज़राइल सोने के बछड़े के आगे दण्डवत करके धर्म-त्याग कर रहा था। लेकिन पुरोहिती हारून के परिवार तक ही सीमित थी। परमेश्वर के सामने पुरोहिती करने की अनुमति केवल हारून के पुत्रों को थी, अतिरिक्ति घराने के सदस्यों को पवित्र मण्डप और उसकी साज-सज्जा का प्रभार सौंपा गया। इसके अलावा उन्हें याजकों की सेवा में रहना था लेकिन उन्हें बलि चढ़ाने, लोबान सुलगाने या पवित्र वस्तुओं को बिना आवरण के देखने की अनुमति नहीं थी। PPHin 351.3

याजकों के कार्यभार के अनुसार, उनके लिये एक विशेष पहनावा नियुक्त किया गया। मूसा को पवित्र निर्देश दिया गया, "तू अपने भाई हारून के लिये वैभव और शोभा के निमित्त पवित्र वस्त्र बनवाना।" सामान्य याजक का चोगा सन के सफेद कपड़े से बनाया जाता था, जिसमें जोड़ नहीं होता था। यह चोगा पैरों तक लम्बा होता था और इसे लाल, बेंगनी व नीले रंग के बूटेदार श्वेत सन के कपड़े से बने कमरबन्ध से कमर पर बाँधा जाता था। बाहरी वस्त्र के लिये सन के कपड़े की

पगड़ी बनायी जाती थी। प्रज्वलित झाड़ी के पास मूसा को चप्पल उतारने को कहा गया क्योंकि जिस स्थान पर वह खड़ा था, वह पवित्र था। इसी प्रकार याजकों को मिलाप वाले तम्बू में जूतों सहित जाने की अनुमति नहीं थी। जूतों से चिपके हुए धूल के कण पवित्र स्थान को अशुद्ध कर देते, मिलाप वाले तम्बू में प्रवेश करने से पहले उन्हें अपने जूते प्रॉगण में छोड़ने होते थे और मेलबलि की वेदी पर या पवित्र मण्डप में अनुष्ठान करने से पूर्व हाथ और पैर धोने होते थे। इस प्रकार लगातार यह शिक्षा दी जाती थी कि जो भी परमेश्वर की उपस्थिति के निकट आता है उससे सारी अशुद्धता दूर कर देनी चाहिये। PPHin 352.1

महायाजक के वस्त्र उसके उच्च पद के उपयुक्त, बहुमूल्य सामग्री से बने होते थे और उन पर सुन्दर कढ़ाई की गईं होती थी। सामान्य बिना जोड़ वाला नीला चोगा भी धारण करता था। उसके नीचे वाला घेरा सोने की घटियों, नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़े के अनार से विभूषित था। एपोद के ऊपर स्वर्णिम, नीला, बैंगनी और लाल और श्वेत रंग का छोटा वस्त्र था। यह भी उन्हीं रंगोके कमरबन्ध से बाँधा जाता था। एपोद की बांहे नहीं होती थी और उसके काँधे वाले भाग में, इज़राइल के बारह घरानों के नाम धारण किये हुए दो सुलेमानी पत्थर जड़े हुए थे। PPHin 352.2

एपोद के ऊपर कवच या सीनाबन्द था जो याजकीय वस्त्रों में सबसे पवित्र था। यह उसी सामग्री से बना था जिससे एपोद बना था। वह आकार में नौ इंच का वर्ग था और इसे कांधो पर लगे सुनहरे छल्लों से बॉधी नीली बटी हुईं डोरी से लटकाया जाता था। उसकी बाहरी सीमा पर कई प्रकार के बहुमूल्य रत्न जड़े थे, जैसे परमेश्वर के नगर की बारह नीवों में जड़े गये थे। सीमा के भीतर चार पंक्तियों में सोने में बारह मणियाँ जड़ित थी और इन पर गोत्रों के नाम खुदे हुए थे जैसे कि कंधे वाले भाग में जड़े हुए थे। प्रभु का निर्देश था, "जब-जब हारून पवित्र स्थान में प्रवेश करें, तब तक वह न्याय के कवच पर अपने हृदय के ऊपर इज़राइलियों के नामों को लगाए रखे, जिससे यहोवा के सामने उनका स्मरण नित्य रहे"-निर्गमन 28:29 । इसी प्रकार मसीह, वह महान महायाजक, पापी के पक्ष में पिता के सम्मुख मध्यस्थता करते हुए, अपने हृदय पर प्रत्येक पश्चतापी, विश्वासी प्राणी का नाम धारण किये रहता है। भजन सहित 40:17में लिखा है, "में तो दीन और दरिद्र हूँ तो भी प्रभु मेरी चिन्ता करता है।' PPHin 352.3

कवच के दाएं और बांई तरफ दो बड़ी मणियाँ थी जिनकी चमक अधिक थी । इन्हें ऊरीम और तुम्मीम कहा जाता था। उनके माध्यम से महायाजक द्वारा परमेश्वर की इच्छा ज्ञात होती थी। जब परमेश्वर के सम्मुख निर्णय के लिये विवाद के विषय लाए जाते थे, बांए तरफ की बहुमूल्य मणि के चारों ओर प्रकाश का तेजोमंडल ईश्वरीय स्वीकृति या सहमति का प्रतीक होता था, जबकि दाहिनी ओर के पत्थर पर बादल की परछाई का पड़ना अस्वीकृति या खंडन का प्रमाण माना जाता था। महायाजक की टोपी एक श्वेत सन के कपड़े की पगड़ी थी जिसके साथ एक सोने की पट्टी, जिस पर 'यहोवा के लिये पवित्र" नामक उपधि खोदी हुई थी, और वह एक नीले फीते से टोपी के साथ संलग्न

थी। याजकों के वस्त्र और व्यवहार से सम्बन्धित सब कुछ ऐसा होता था कि देखने वाला परमेश्वर की पवित्रता के आभास से उसकी आराधना की पवित्रता से, और उसकी उपस्थिति में आने वालों से अपेक्षित पवित्रता से प्रभावित हो जाए। PPHin 353.1

केवल मिलापवाला तम्बू ही नहीं, याजकों द्वारा की गई सेवा-उपासना "स्वर्ग की वस्तुओं के प्रतिरूप और उदाहरण के अनुसार" होनी थी। (इब्रानियों 8:5) ।इस प्रकार यह अत्यन्त महत्वपूर्ण थी, और प्रभु ने मूसा के द्वारा, इस प्रतीकात्मक आराधना के प्रत्येक बात से सम्बन्धित सबसे पुख्ता और सुस्पष्ट निर्देश दिया। मिलापवाले तम्बू की परिचर्या के दो भाग थे, एक दैनिक और एक वार्षिक आराधना। दैकिन आराधना पवित्र स्थान और पवित्र मण्डप के प्रांगण में होमबलि की वेदी पर की जाती थी। PPHin 353.2

मिलापवाले तम्बू के भीतरी कक्ष को महायाजक के सिवायकोई भी नश्वर मनुष्य नहीं देख सकता था। वर्ष में केवल एक बार महायाजक वहाँ जा सकता था और वह भी अधिक विस्तृत और विधिवत तैयारियों के साथ ही सम्भव था। वह केपकैपाते हुए परमेश्वर के सम्मुख भीतर जाता था, और लोग आदरपूर्वक चुप्पी साधे उसके लौटने की प्रतीक्षा करते थे और हृदय से ईश्वर के आशीर्वाद की प्रार्थना किया करते थे। प्रायश्चित के ढक्कन के आगे महायाजक इज़राइल के लिये पश्चताप करता और महिमा के बादल में परमेश्वर उससेभेंट करता था। उसका यहाँ और दिनों की तुलना में, अधिक देर तक रहना लोगों को भयभीत कर देता था कि कहीं उनके या उसके पापों के कारण, परमेश्वर की महिमा द्वारा वह मारा तो नहीं गया। PPHin 353.3

देनिक आराधना, भोर और गोधुली के समय होमबलि चढ़ाकर, सोने से मढ़ी वेदी पर धूप की भेंट, और व्यक्तिगत पापों के लिये विशेष भेंटें चढ़ाकर की जाती थी। और विश्राम दिन पर, नये चांद के दिन और विशेष पर्वों पर भी भेटें चढ़ाई जाती थी। PPHin 354.1

प्रतिदिन भोर और गोधुलि के समय वेदी पर एक साल को मेम्ना उचित माँस की भेंट के रूप में अग्नि में जलाया जाता था, और यह यहोवा के लोगों के नित्य समर्पण और मसीह के पश्चतापी लहू पर लगातार निर्भर रहने का प्रतीक था। परमेश्वर का स्पष्ट निर्देश था कि मिलापवाले तम्बू की आराधना में लाई जाने वाली भेंट 'निर्दोष (निर्गमन 12:5) होनी चाहिये ।बलिदान के रूप में लाये जानेवालेप्रत्येक पशु का याजकों द्वारा निरीक्षण किया जाता था और यदि उनमें कोई दोष पाया जाता था तो भेंट स्वीकार नहीं की जाती थी। केवल एक ननिर्दोष भेंट" ही उसकी सम्पूर्ण पवित्रता का प्रतीक हो सकती थी जिसे स्वयं को एक, "निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने' (10 पतरस 1:19)के तौर पर बलिदान करना था। पौलुस इन बलिदानों की ओर उदाहरण के तौर पर संकेत करता है कि मसीह के अनुयायियों को ऐसा ही बनना है। रोमियों 12:14में वह कहता है, "हे भाईयों, मैं तुमसे, परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूँ कि अपने शरीरों को जीवित और पवित्र और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ यही तुम्हारी यथोचित सेवा है"। हमें स्वयं को परमेश्वर की

सेवा के लिये समर्पित करना है, और हमें हमारी भेंट को, जहाँ तकसम्भव है, दोषहीन बनाने की चेष्ठा करनी चाहिये। यदि हम उसे अपनी ओर से सर्वोत्तम देने में सक्षम है, लेकिन परमेश्वर को उससे कम दें वो वह प्रसन्न नहीं होता। जो उससे हृदय से प्रेम करते है, वे उसे अपनी जीवन की सर्वोत्तम सेवाएँ देने को इच्छुक होंगे, और वे, परमेश्वर की इच्छा पूरी करने की, अपनी क्षमता को बढ़ाने वाले नियमों के साथ अपने अस्तित्व के सम्पूर्ण सामर्थ्य का सांमजस्य स्थापित करने के लिये प्रयत्नशील रहेंगे ।दैनिक परिचर्या की अन्य विधियों की तुलना में धूप की भेंट चढ़ाने में याजक परमेश्वर की उपस्थिति में अधिक प्रत्यक्ष रूप मेंलाया जाता था। मिलाव वाले तम्बू का भीतरी परदा छत तक नहीं पहुँचता था, इसलिये प्रायश्चित के ढक्कन के ऊपर प्रदर्शित, परमेश्वर की महिमा, प्रथम कक्ष से आंशिक रूप से दिखाई देती थी। जब याजक परमेश्वर के सम्मुख धूप की भेंट चढ़ाता था, वह सन्दूक की ओर देखता था, और जब धूप का धुआँ उठता था, परमेश्वर का तेज प्रायश्चित के ढक्कन पर उतरता था और सबसे पवित्र स्थान में पूरी तरह फैल जाता था, और प्रायः इस तरह दोनों कक्षों को भर देता था कि याजक पवित्र मण्डप के द्वार के पास जाने को विवश हो जाता था। जिस प्रकार उस प्रतीकात्मक विधि में याजक विश्वास में प्रायश्चित के ढककन की ओर देखता था, जो अदृश्य हो जाता था, वैसे ही लोगों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे अपनी प्रार्थनाएँ अपने महायाजक, मसीह को संबोधित करें, उस अदृश्य मसीह को जो उनके पक्ष में स्वर्ग के पवित्र स्थान में उनकी मध्यस्थता कर रहा है। PPHin 354.2

इज़राइल की प्रार्थनाओं के साथ उठता हुआ धुआँ, मसीह की मध्यस्थता और विशेषता का, उसकी सम्पूर्ण पवित्रता का प्रतीक है, और केवल यही पापी मनुष्यों की आराधना को परमेश्वर की दृष्टि में स्वीकार्य बना सकता है। सबसे पवित्रस्थान के परदे के सामने अविरत प्रायश्चित की वेदी थी। जिसके माध्यम से पापी यहोवा के पास पहुँच सकता था, और जिसके द्वारा पश्चतापी, विश्वासी मनुष्य को दया और उद्धार प्रदान किया जा सकता था,उस महान मध्यस्थ के सांकेतिक प्रतीक, लहू और धूप के साथ परमेश्वर की उपस्थिति में जाना होता था। PPHin 355.1

धूप की विधि के समय जब याजक भोर और संध्या को पवित्र स्थान में प्रवेश करता था, तो बाहर प्रॉगण में वेदी पर चढ़ाने वाली भेंट के रूप में दैनिक बलिदान (बलि का पशु) तैयार रहता था। पवित्र मण्डप पर एकत्रित उपासकों के लिये यह समय बड़ा रूचिकर होता था। याजक की परिचर्या के माध्यम से परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करने से पहले, उन्हें अपने पापों को अंगीकार करना और अपने हृदय को टटोलना होता था। वे एकचित्त होकर अपने मुख पवित्र स्थान की ओर करके चुपचाप प्रार्थना करते थे। इस प्रकार उनके निवेदन धूप के धुंए के साथ ऊपर उठ जाते थे, पश्चतापी बलिदान में आदिरूपित प्रतिश्रुत उद्धारकर्ता के सामर्थ्य पर विश्वास की पकड़ हो जाती थी। भोर व संध्या के बलिदान के नियुक्त समय को पवित्र माना जाता था, और इसे समस्त यहूदी राष्ट्र में आराधना का निर्धारित समय ठहरा दिया गया। आने वाले समय में जब यहूदी दूर देशों में बन्धकों के रूप में तितर-बितर हो गए, तब भी नियुक्ति समय पर, अपने मुख यरूशेलेम की दिशा

में मोड़कर, वे इज़राइल के परमेश्वर को अपने निवेदन अर्पित करते थे। इस रीति में मसीही लोगों के पास भोर व संध्या की आराधना का उदाहरण है। परमेश्वर भक्ति-भाव से रहित धर्मकिया की औपचारिकता का खंडन करता है,लेकिन जो लोग अपने द्वारा किये गए अपराधों की क्षमा-प्राप्ति के लिये और आवश्यक आशीषों का अनुरोध करने के लिये सुबह-शाम उसे दण्डवत करते है और उससे प्रेम करते हैं उन्हें देखकर वह आनन्दित होता है। PPHin 355.2

सर्वकालिक भेंट के रूप में, भेंट की रोटी, परमेश्वर के सम्मुख हमेशा रहती थी। वह भी दैनिक बलिदान का हिस्सा थी। इसे भेंट की रोटी या "उपस्थिति की रोटी" कहा जाता था क्योंकि यह परमेश्वर के सामने रखी होती थी। यह सांसारिक और आध्यात्मिक पोषण के लिये मनुष्य की परमेश्वर पर निर्भरता की आभारोक्ति थी और इस बात की पुष्टि करती थी कि यह पोषण केवल मसीह की मध्यस्थता से प्राप्त होता था। परमेश्वर ने इज़राइल को निर्जन-प्रदेश में स्वर्ग की रोटी खाने को दी थी और वे अभी भी सांसारिक और आध्यात्मिक पोषण के लिये उसकी बहुतायत पर निर्भर थे। भेंट की रोटी और मन्ना दोनो ही मसीह की और संकेत करते थे, जो जीवन की रोटी है, और जो हमारे लिये हमेशा परमेश्वर की उपस्थिति में रहता है। यहुन्ना 6:48-51 के अनुसार उसने स्वयं कहा, "जीवन की रोटी मैं ही हूँ जो स्वर्ग से उतरी ।" रोटी पर लोबान रखा जाता था। जब प्रत्येक सबत को रोटी हटाकर, उसके स्थान पर ताजी रोटी को रखा जाता था, तो परमेश्वर के सम्मुख स्मारक के तौर पर लोबान को वेदी पर जला दिया जाता था। PPHin 355.3

दैनिक परिचर्या का सबसे महत्वपूर्ण भाग वह विधि थी जो व्यक्ति-विशेष के लिये की जाती थी। पश्चतापी पापी अपनी भेंट पवित्र मण्डप के द्वार तक लाता था, और अपना हाथ बलि के पशु पर रखकर अपने अपराधों को स्वीकार करता था, और इस प्रकार प्रकट रूप से वह अपने अपराध को निर्दोष बलि के पशु पर स्थानान्तरित कर देता था। फिर उसी के हाथोंद्वारा उस पशु का वध किया जाता था और पशु के खून को याजक पवित्र स्थान पर ले जाकर उस परदे के सामने छिड़कता था, जिसके पीछे उस वाचा का संदूक रखा होता था, जिसका उसने उल्लंघन किया। इस विधि के द्वारा, लहूँ के माध्यम से, प्रकट रूप से पाप मिलाप वाले तम्बू में स्थानान्तरित हो जाता था। कुछ मामलों में लहू को पवित्र स्थान में नहीं ले जाया जाता था:(परिधिश्ट, नोट 6 देखिये) लेकिन फिर उस पशु के माँस को याजक द्वारा खाना होता था, जैसे मूसा ने हारून के पुत्रों को यह कहते हुए निर्देश दिया, "तुम मण्डली का भार अपने पर उठाकर उनके लिये यहोवा के सामने प्रायश्चित करो ।' लैवव्यवस्था 10:17 [दोनो ही विधियाँ एकसमान पाप को पश्चतापी से मिलाप वाले तम्बू में स्थानान्तरित करती थी। PPHin 356.1

पूरे साल प्रतिदिन यह किया चलती रहती थी। इज़राइल के पापों के पवित्र स्थान में स्थानान्तरित होने से, पवित्र स्थान अपवित्र हो जाता था, इस कारण पापों को हटाने के लिये एकविशेषकार्यअनिवार्यथा। परमेश्वर ने आज्ञा दी किप्रत्येक पवित्र कक्ष के लिये प्रायश्चित किया जाए,

जैसा कि वेदी के लिये किया जाता था, ताकि “उसे इज़राइलियों की भांति-भांतिकी अशुद्धता से छुड़ाकर शुद्ध और पवित्र'(लैवव्यवस्था 16:19) किया जा सके। PPHin 356.2

वर्ष में एक बार, प्रायश्चित के दिन, याजक मिलाप वाले तम्बू के शुद्धीकरण के लिये सबसे पवित्र स्थान में प्रवेश करता था। यह कार्य परिचर्या का वार्षिक चक सम्पन्न करता था। PPHin 357.1

प्रायश्चित के दिन बकरी के दो बछुडे पवित्र मण्डप के द्वार पर लाए जाते थे और उनके लिये चिटिठयाँ डाली जाती थी, “एक चिटठी यहोवा के लिये और दूसरी ‘अजाजेल’ (बलि का बकरा) के लिये जिसके बकरे के नाम पहली चिटठी निकलती थी उसके लोगों के लिये पापबलि के रूप में वध किया जाना होता था। और फिर याजक को उसका लहू परदे के भीतर लाकर प्रायश्चित के ढककन पर छिड़कना होता था। “और वह इज़राइलियों की भांति-भांति की अशुद्धता, और अपराधों और उनके सब पापों के कारण पवित्रस्थान के लिये प्रायश्चित करे, और मिलापवाला तम्बू जो उनके संग उनकी भांति-भांति की अशुद्धता के बीच रहता है उसके लिये भी वैसा ही करे।” PPHin 357.2

“और हारून अपने दोनों हाथों कों जीवित बकरे का रखकर इज़राइलियों के सब अधर्म के कामों, और उसके सब अपराधों, अर्थात उनके सारे पापों को अंगीकार करे, और उनको बकरे के सिरपरधरकरउसको किसी मनुष्यक हाथ,जो इसकामकेलिये तैयार हो, जंगल में भेजकर छुड़वा दे। वह बकरा उनके सब अधर्म के कामों को अपने ऊपर लादे हुए किसी निर्जन स्थान में उठा ले जाएगा।” जब तक बकरे को इस प्रकार भेज नहीं दिया जाता था तब तक लोग अपने आप को अपने पापों से मुक्त हुए नहीं मानते थे। प्रत्येक मनुष्य को प्रायश्चित के कार्य के दौरान अपनी आत्मा को कष्ट पहुँचाना होता था। सब उद्यम परे रख कर, इज़राइल की समस्त कलीसिया पूरा दिन आत्मविश्लेषण, उपवास और प्रार्थना के साथ, परमेश्वर के सम्मुख संस्कारपूर्वक दीन होकर दिन व्यतीत करना चाहिये। PPHin 357.3

इस वार्षिक धर्म-किया के द्वारा लोगों को प्रायश्चित से सम्बन्धित महत्वपूर्ण सत्य सिखाए जाते थे। वर्ष के दौरान दी गईं पापबलियों में, पापी के स्थान पर उसका प्रतिनिधि स्वीकार कर लिया जाता था, लेकिन बलि के पशु का लहू पाप के लिये के पशु का लहू पाप के लिये सम्पूर्ण प्रायश्चित नहीं करता था। वह केवल एक साधन प्रदान करता थाजिसके द्वारा पाप को मिलापवाले तम्बू में स्थानान्तरित किया जाता था। लहू की भेंट द्वारा, पापी व्यवस्था के प्रभुत्व को स्वीकार करता था, अपने अपराध के दोष का अंगीकार करता था, और उसमें अपने विश्वास की अभिव्यक्ति करता था, जो जगत के पाप को ले जाने वाला था, लेकिन वह व्यवस्था के दण्डादेश से पूर्णतया स्वतन्त्र नहीं होता था। प्रायश्चित के दिन महायाजक, कलीसिया के लिये भेंट लेकर, लहू के साथ सबसे पवित्र स्थान में प्रवेश करके, उसे व्यवस्था की पटियाओं के ऊपर, प्रायश्चित के ढककन पर छिड़क देता था। इस प्रकार व्यवस्था का दावा, जो पापी के प्राण की माँग करता था, सन्तुष्ट हो जाता था। फिर मध्यस्थ की भूमिका निभाते हुए याजक पापों को अपने ऊपर ले लेता था, और मिलाप के तम्बू को

छोड़कर, इज़राइल के दोष का बोझ वो ढोता था। पवित्र मण्डप के द्वार पर वह अपने हाथ 'अजाजेल' (बलि का पशु) के सिर पर रखकर, 'इज़राइलियों के सब अधर्म के कामों, और उनके सब अपराधों, अर्थात उनके सब पापों को अंगीकार कर, उनको बकरे के सिर पर धर देता था।" जब उस बकरे को सब अधर्म के कामों लदे हुए भेज दिया जाता था, तो ऐसा माना जाता था कि उनके पाप उनसे अलग किये गये । यह विधि जो "स्वर्ग में वस्तुओं के प्रतिरृपष और उदाहरण" (इब्रानियों 8:5) सम्पन्न की जाती थी। PPHin 357.4

जैसा कि कहा गया है पृथ्वी पर मिलापवाला तम्बू मूसा द्वारा, पर्वत पर दिखाए गये नमूने के अनुसार, बनाया गया था। "यह तम्बू वर्तमान समय के लिये एक दृष्टान्त था, जिसमें ऐसी भेंट और बलिदान चढ़ाए जाते थे।" उसके दो पवित्र स्थान, "स्वर्ग में की वस्तुओं के प्रतिरूप" थे।मसीह, हमारा महान महायजक, ""मिलापवाले तम्बू का, और सच्चे पवित्र मण्डप का सेवक हुआ, जिसे किसी मनुष्य ने यही, वरन् प्रभु ने खड़ा किया है।"-इब्रानियों 9:9, 23, 8:2। जैसे कि स्वप्नदर्शन में, प्रेरित यहुन्ना को स्वर्ग में परमेश्वर के मन्दिर की झलक दिखाई गईं और वहां उसने "सिंहासन के सामने आग के सात दीपक जलते हुए देखे।" उसने देखा, "फिर एक और स्वर्गदूत सोने का धूपदान लिये हुए आया, और उसको बहुत धूप दी गईं कि सब पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं के साथ सोने की उस वेदी पर, जो सिंहासन के सामने है, चढ़ाएँ ।"- प्रकाशित वाक्य 4:5, 8:51 यहाँ नबी को स्वर्ग के पवित्र तम्बू का प्रथम कक्ष देखने की अनुमति दी गई, और वहाँ उसने "आग के सात दीपक" और 'सोने की वेदी' को देखा जिसके प्थ्वी पर के मिलापवाले तम्बू में स्वर्णिम दीपाधार और धूप की वेदी प्रतीक थे। फिर से, "परमेश्वर का जो मन्दिर स्वर्ग में है वह खोला गया"(प्रकाशित वाक्य 11:19), और उसने भीतरी परदे के अन्दर पवित्रों के पवित्र को देखा। यहाँ उसने "अपनी वाचा के सन्दूक" (प्रकाशित वाक्य 11:19)की देखा, जिसका प्रतीक परमेश्वर की व्यवस्था को रखने के लिये मूसा द्वारा बना गया पवित्र सन्दूक था। PPHin 358.1

मूसा ने पृथ्वी पर मिलाप का तम्बू "जो आकार उसने देखा था उसके अनुसार" बनाया। पौलुस घोषणा करता है कि सम्पन्न होने पर "पवित्र मण्डप, और उपासना-उत्सवों में काम आने वाली हर वस्तु" "स्वर्ग में की वस्तुओं का प्रतिरूप थी ।।"-प्रेरितों के काम 7:44, इब्रानियों 9:21,23। और यहुन्ना कहता है कि उसने स्वर्ग में तम्बू को देखा। वह पवित्र तम्बू, जिसमें यीशु हमारे पक्ष में पुरोहिती करता है, मूल रूप में है और मूसा द्वारा निर्मित मिलापवाला तम्बू उसका प्रतिरूप है। वह स्वर्गीय मन्दिर, राजाओं के राजा का निवास स्थान, जहाँ "हजारों हजार लोग उसकी सेवा टहल कर रहे थे, और लाखों लाख लोग उसके सामने उपस्थित थे ।"-(दानिय्येल 7:10),वह मन्दिर जो शाश्वत सिंहासन की महिमा से भरा था, जहां स्वर्गदूत, उसके चमकते हुए रक्षक, श्रद्धा में अपने मुख को ढॉक लेते है- कोई भी सांसारिक भवन उसकी महिमा और विशालता का प्रतीक नहीं हो सकता। फिर भी स्वर्गीय मिलापवाले तम्बू और मनुष्य के उद्धार हेतु आगे बढ़ाए जाने वाले कार्य से सम्बन्धित

महत्वपूर्ण सत्य को प्रथ्वी पर के मिलापवाले तम्बू और उसकी विधियों द्वारा सिखाया जाना था। PPHin 358.2

अपने आरोहण के पश्चात, हमारे उद्धारकर्ता को हमारे महायाजक के रूप में अपना कार्य प्रारम्भ करना था। इब्रानियों 9:24में पौलुस कहता है, "मसीह ने हाथ के बनाए हुए पवित्र स्थानों में प्रवेश नहीं किया, जो सच्चे पवित्र स्थान का प्रतिरूप है, पर स्वर्ग ही में प्रवेश किया, ताकि हमारे लिये अब परमेश्वर के सामने दिखाई दे। जैसे मसीह की परिचर्या में दो महत्वपूर्ण विभाजन होने थे, व प्रत्येक का समय निर्धारित और स्वर्गीय तम्बू में विशिष्ट स्थान होना था, उसी प्रकार प्रतीकात्मक परिचर्या के भी दो भाग थे, दैनिक और वार्षिक धर्म-किया और प्रत्येक को पवित्र मण्डप का एक विभाग समर्पित था। PPHin 359.1

जैसे आरोहण के समय मसीह पश्चतापी विश्वासियों के पक्ष मं अपने लहूद्वारा विनती करने परमेश्वर की उपस्थिति में प्रकट हुआ, इसी प्रकार दैनिक परिचर्या में याजक पापी की ओर से पवित्र स्थान में बलि के पशु का लहू छिड़कता था। PPHin 359.2

मसीह का लहू , पश्चतापी पापी को व्यवस्था के दण्डादेश से तो मुक्त करानेके लिये था, लेकिन पाप को रद्ध कराने के लियेनहीं था; वह अन्तिम प्रायश्चित तक पवित्र तम्बू में उल्लिखित रहेगा, इसी रीति से पापबलि का लहू पश्चतापी से पाप को हटा देता था परन्तु वह प्रायश्चित के दिन तक मिलापवाले तम्बू में रहता था। PPHin 359.3

निर्णायक प्रतिफल के महत्वपूर्ण दिन, "जैसा उन पुस्तकों में लिखा हुआ था, वैसे ही उनके कामों के अनुसार मरे हुओं का न्याय किया जाएगा । - प्रकाशित वाक्य 20:12फिर मसीह के पश्चतापी लहू की सामर्थ्य से, स्वर्ग की पुस्तकों में से यथार्थ में पश्चतापी लोगों के पाप मिटा दिए जाएँगे। इस प्रकार पवित्र तम्बू पाप के अभिलेख से स्वतन्त्र या पवित्रिकृत हो जाएगा। प्रतिरूप में, प्रायश्चित का यह महान कार्य या पापों का मिटाया जाना, प्रायश्चित के दिन की धर्म-किया द्वारा बताया जाता था - पृथ्वी पर मिलाप का तम्बू, जो पापों द्वारा दूषित हो जाता था, उसे पापबलि के लहू के सामर्थ्य से पवित्रिकत किया जाता था। PPHin 359.4

जैसे कि निर्णायक प्रतिफल के समय यथार्थ में पश्चतापी लोगों के पाप स्वर्ग की पुस्तकों से मिटा दिए जाएँगे, और कभी भी स्मरण नहीं किये जाएँगे या मन में नहीं आएँगे, इसी प्रकार प्रतिरूप में वे जंगल में लिवा लिये जाते थे और कलीसिया से सर्वदा के लिये अलग कर दिये जाते थे। PPHin 360.1

शैतान पाप को जन्म देने वाला और पाप को प्रत्यक्ष रूप से उकसाने वाला है, जो परमेश्वर के पुत्र की मृत्यु का कारण बना, इसलिये यह न्यायोचित है कि शैतान निर्णायक दण्ड को भोगे। मसीह का मनुष्य के उद्धार का व जगत को पवित्रिकरण द्वारा पाप रहित करने का कार्य, स्वर्गीय तम्बू से

पापों को हटाकर निर्णायक दण्ड भुगतने के पात्र शैतान पर धर कर या रख कर, समाप्त हो जाएगा। इसी प्रकार प्रतीकात्मक धर्म-किया में, परिचर्याकावाषिक चक, मिलाववाले तम्बू के पवित्रिकरण और 'अजाजेल' (बलि का पशु) के सिर पर हाथ रख कर पापों के अंगीकरण के साथ समाप्त हो जाता था। PPHin 360.2

इसी प्रकार पवित्र मण्डप की परिचर्या में, और मन्दिर, जिसने बाद में पवित्र मण्डप का स्थान लिया, की परिचर्या में, लोगों को मसीह की मृत्यु और परिचर्या से सम्बन्धित महत्वपूर्ण सत्य प्रतिदिन सिखाये जाते थे, और वर्ष में एक बार उनके ध्यान को शैतान और मसीह के बीच महान संघर्ष की अन्तिम घटनाओं व जगत का पाप और पापियों से रहित होने, या उसके पवित्रिकरण की ओर ले जाया जाता था। PPHin 360.3

अध्याय 31—नादाब और अबीहू का पाप

यह अध्याय लैवव्यवस्था 10:1-11 पर आधारित है

पवित्र मण्डप के उत्सर्ग पश्चात, याजकों को उनके पवित्र कार्य के लिये अभिषिकक्त किया गया। इन धर्मकियाओं में सात दिन का समय लगा और प्रत्येक पर विशेष अनुष्ठान किया गया। आठवें दिन याजकोंने अपनी परिचर्या प्रारम्भ की। PPHin 361.1

हारूनऔर उसके पुत्रोंकीसहायता सेपरमेश्वर द्वारा अपेक्षित बलि की भेंट चढ़ाई और परमेश्वर ने उसकी भेंट को स्वीकार किया, और अपनी महिमा को विशिष्ट रूप से प्रकट किया, परमेश्वर की ओर से अग्नि प्रवाहित हुई और वेदी पर चढ़ाई भेंट को उसने भस्म कर दिया।लोगइस ईश्वरीय सामार्थ्य केआश्चर्यजनक प्रदर्शनों को अत्यन्त रूचि से देखते रहे। उन्होंने इसमें परमेश्वर की महिमा और कृपा-दृष्टि का प्रतीक देखा और उन्होंने एक साथ मिलकर उसकी स्तुति और आराधना की, और उन्होंने ऐसे दण्डवत किया मानो वे परमेश्वर की प्रत्यक्ष उपस्थिति में हो। PPHin 361.2

लेकिन इसके बाद शीघ्र ही महायाजक के परिवार पर एक आकस्मिक और भयानक विपत्ति आ पड़ी। आराधना के समय, जब लोगों की प्रार्थनाएं और स्तुति परमेश्वर की ओर उठ रही थी, हारून के पुत्रों में से दो ने एक-एक धूपदान लिया और उसमें सुगन्धित लोबान जला दिया, ताकि वह परमेश्वर के सम्मुख मनभावनी सुगन्ध के रूप में फैल जाए, लेकिन उन्होंने "ऊपरी आग" का प्रयोग करके परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया। लोबान को जलाने के लिये उन्होंने परमेश्वर द्वारा स्वयं प्रजजलित की गईं पवित्र अग्नि के स्थान पर सामान्य अग्नि का प्रयोग किया जबकि परमेश्वर का आदेश था कि इस कार्य के लिये उसी के द्वारा प्रज्जलित अग्नि का प्रयोग किया जाए। इस पाप के फलस्वरूप यहोवा के सम्मुख से आग निकली और वे लोगों के सामने ही भस्म हो गए। मूसा और हारून के बाद, नादाब और अबीहू को इज़राइल में सबसे ऊंचा स्थान प्राप्त था। पर्वत पर सत्तर पुरनियों के साथ महिमा का दर्शन करने की अनुमति देकर, परमेश्वर ने विशेष रूप से उन्हें सम्मानीय ठहराया था। लेकिन उनके द्वारा आज्ञा के उल्लघंन को ना ही अनदेखा किया जा सकता था और ना ही हल्के में लिया जा सकता था। इस कारण उनका अपराध और भी संगीन माना गया। क्योंकि मनुष्य ने अधिक प्रकाशप्राप्त किया, क्योंकि इज़राइल के राजकुमारों के समान वे पर्वत पर चढ़े और उन्हें परमेश्वर के साथ संगति करने का व उसकी महिमा के प्रकाश वास करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, उन्हें स्वयं को इस बात से प्रसन्न नहीं करना चाहिये कि वे बाद में बिना दण्ड पाए पाप कर सकते हैं और कि उन्हें इस प्रकार सम्मानित करने के बाद, परमेश्वर उनके अधर्म को दण्डित करने के लिये कठोर नहीं होगा। यह एक घातक छलावा है। प्रदत्त प्रकाश व विशेषाधिकार वापसी में, दिये गए प्रकाश के तदानुसार पवित्रता और सदाचार की अपेक्षा करते हैं। इससे थोड़ा भी कम, परमेश्वर स्वीकार नहीं कर सकता। महान आशीषों या विशेषाधिकारों के कारण निर्भयता या

असावधानी को बढ़ावा नहीं मिलना चाहिये। इन्हें कभी भी मनुष्य को पाप करने का अधिकार नहीं देना चाहिये और ना ही प्राप्तकर्ता को यह आभासकराना चाहिये कि परमेश्वर उनके साथ खुश न होगा। परमेश्वर द्वारा दिये गये सभी सुअवसर, आत्मा में उत्साह, प्रयत्न में तत्परता और उसकी इच्छापूर्ति के लिये जोश भरने का उसका साधन है। PPHin 361.3

नादाब और अबीहू को उनकी किशोरावस्था में आत्म-संयम के अभ्यास में प्रशिक्षित नहीं किया गया था। पिता के सुनम्य स्वभाव, सत्य के लिये उसमेंदृढ़ता के अभाव के कारण उसने अपने बच्चों के अनुशासन की उपेक्षा की। उसके पुत्रों को प्रवृति का अनुसरण की अनुमति दे दी गईं थी। लम्बे समय से पोषित असंयम की आदतें ने उन पर ऐसी पकड़ प्राप्त की कि उन्हें समाप्त करने की शक्ति सबसे पवित्र कार्यभार के उत्तरदायित्व में भी नहीं थी। उन्हें पिता के आधिपत्य का आदर करना नहीं सिखाया गयाथा, और वे परमेश्वर की अपेक्षाओं के प्रति सम्पूर्ण आज्ञाकारिता की आवश्यकता को नहीं समझ पाए। हारून के गलत समझे हुए दयालुतापूर्ण व्यवहार ने उसके पुत्रों को पवित्र दण्डाज्ञा के अधीनस्थ बनने के लिये तैयार कर दिया। PPHin 362.1

परमेश्वर की योजना लोगों को यह सिखाने की थी कि वे आदर और श्रद्धायुक्त भय के साथ और उसके द्वारा नियुक्त तरीके से उसके पास आएँ। वह आंशिक आज्ञापरता स्वीकार नहीं कर सकता। उसकी आराधना की पावन घड़ी में लगभग सब कुछ उसके निर्दशानुसार सम्पन्न करना पर्याप्त नहीं था। परमेश्वर ने उसकी आज्ञाओं का तिरस्कार करने वालों को शापित किया है और उन्हें भी जो सामान्य व पवित्र वस्तुओं में अन्तर नहीं करते। वह नबी द्वारा घोषणा करता है, "हाय उन पर जो भले को बुरा और बुरे को भला कहते, जो अंधियारे को उजियाला और उजियाला को अँधियारा ठहराते। हाय उन पर जो अपनी दृष्टि में ज्ञानी और अपने दृष्टिकोण से बुद्धिमान है।...................जो घूस लेकर दुष्टों को निर्दोष, और निर्दोषों को दोषी ठहराते हैं।..............उन्होंने सेनाओं के यहोवा की व्यवस्था को त्यक्त कर दिया, और इज़राइल के पवित्र परमेश्वर के वचन को तुच्छ जाना है ।"- यशायाह 5:20-24।किसी को भी इस धारणा से स्वयं को छलावा नहीं देना चाहिये कि परमेश्वर की आज्ञाओं का कुछ अंश आवश्यक नहीं है या यह कि वह जिसकी अपेक्षा करता है, उसके लिये प्रतिरूप को स्वीकार कर लेगा। विलापगीत 3:37 में यिर्मयाह नबी ने कहा, "यदि यहोवा ने आज्ञा न दी हो तब कौन है कि वचन कहे और वह पूरा हो जाए?" परमेश्वर ने अपने वचन में कोई ऐसा आदेश नहीं दिया जिसका मनुष्य अपनी इच्छानुसार पालन या अवमानना करे और परिणाम न भुगते। यदि मनुष्य सम्पूर्ण आज्ञापरता से अलग कोई और मार्ग चुनते है, तो वे पाएंगे कि, "अन्त में मृत्यु ही मिलती है ।" - (नीतिवचन14:12) PPHin 362.2

"मूसा ने हारून से और उसके पुत्र एलआजर और ईतामार से कहा, तुम लोग अपने सिरों के बाल मत बिखराओं, और न ही अपने वस्त्रों को फाड़ो, ऐसा न हो कि तुम भी मर जाओ...........क्योंकि यहोवा के अभिषेक का तेल तुमपर लगा हुआ है।' महान अगुवे ने अपने भाई को परमेश्वर का कहा

स्मरण कराया, "जो मेरे समीप आए, अवश्य है कि वह मुझे पवित्र जाने, और सभी लोगों के समाने मेरी महिमा करें ।' हारून चुप था। उसके पुत्रों की मृत्यु, जो इतने भयानक अपराध के कारण, बिना चेतावनी के भस्म कर दिये गए-- उस पाप ने जो अब उसे अपने कर्तव्य की उपेक्षा करने का परिणाम प्रतीत हुआ-पिता के हृदय को वेदना से भर दिया, लेकिन उसने अपनी भावनाओं का अभिव्यक्त नहीं किया। किसी भी प्रकार के शोक-प्रदर्शन से यह नहीं लगना चाहिये थाकि वह पाप के प्रति सहानुभूति दिखा रहा था। कलीसिया को परमेश्वर के विरूद्ध बड़बड़ाने का अवसर नहीं देना था। PPHin 363.1

प्रभु अपनी प्रजा को उसके सुधारों की न्यायसंगतता को स्वीकार करना सिखाना चाहता था, ताकि अन्य लोगों में भय उत्पन्न हो। इज़राइल में कुछ ऐसे लोग थे जिन्हें, इस भयावह दण्डाज्ञा की चेतावनी, परमेश्वर की सहिष्णुता पर परिकल्पना से बचा सकती थी नही तो वे भी अपने अन्त को स्वयं ही निश्चित कर लेते। पवित्र ताड़ना उसके लिये है जो पापी के लिये झूठी सहानुभूति रखता है, जो पापी के पाप को क्षमा कर देने की चेष्ठा करता है। पाप का प्रभाव नैतिक अनुभूति को शिथिल कर देता है, जिससे अपराधी को अपने पाप की जघन्यता का एहसास नहीं होता और पवित्र आत्मा को दोषविभावक शक्ति के अभाव में वह अपने पाप के प्रति आंशिक रूप से अँधा बना रहता है। यह मसीह के कार्यकर्ताओं का कर्तव्य है कि वे गलतियाँ करने वालों को उन पर मण्डरा रहे संकट से अवगत कराएँ। पाप के परिणामों और वास्तविक स्वभाव के प्रति पापी की आंखो को अन्धा करके, जो व्यक्ति इस चेतावनी के प्रभाव को नष्ट करता है, वह स्वयं को संतोष दिलाता है कि ऐसा करके वह अपनी उदारता को प्रमाणित करता है, लेकिन ऐसे लोग परमेश्वर के पवित्र आत्मा के कार्य को बाधित करने और उसका विरोध करने के लिये प्रत्यक्ष रूप से कार्यरत रहे हैं, वे पापी को सर्वनाश के कगार पर जा कर ठहरने को बहकाते है, वे स्वयं को उसके अपराध में भागीदार बना रहे हैं, और उसकी पश्चतापहीनता के लिये स्वयं को बुरी तरह से उत्तरदायी बना रहे हैं। कई लोग इस प्रकार की झूठी व भ्रमकारी सहानुभूति के कारण विनाश को प्राप्त हुए हैं ।नादाब और अबीहू ने यह घातक अपराध कभी नहीं किया होता यदि वे मदिरा के अनियन्त्रित सेवन से पहली बार आंशिक रूप से मदहोश न हुए होते। वे भली-भांति समझते थे कि मिलाववाले तम्बू में, जहाँ परमेश्वर की उपस्थिति प्रकट होती थी, स्वयं को प्रस्तुत करने से पहले संस्कारपूर्ण व कर्तव्यनिष्ठ तैयारी आवश्यक थी, लेकिन अपने असंयम के कारण वे अपने हो गए और उनका नैतिक दृष्टिकोण संवेदनाशून्य हो गया जिससे वे सामान्य और पवित्र के बीच के अन्तर को नहीं देख पाए। हारून और उसके उत्तरजीवी पुत्रों को चेतावनी दी गई, "जब-जब तू या तेरे पुत्र मिलापवाले तम्बू में आएँ तब-तब तुम में से कोई न तो दाखमधु पिये और न ही किसी प्रकार की मदिरा, कहीं ऐसा न हो कि तुम मर जाओ, तुम्हारी पीढ़ी में यह प्रचलित रहे, जिससे तुम पवित्र और अपवित्र में, और शुद्ध और अशुद्ध में अन्तर कर सको, और इज़राइलियों को उन सब विधियों को सिखा सको, जो यहावा ने मूसा के द्वारा उन्हें बताई है।" मादक पेय के सेवन के प्रभाव से शरीर दुर्बल हो जाता है, मन

किकर्तव्यविमूढ़ हो जाता है और नैतिकता का पतन हो जाता है। यह, मनुष्य को पवित्र वस्तुओं की धार्मिकता का या परमेश्वर की अपेक्षाओं की बन्धन्कारी शक्ति का एहसास होने से रोकते हैं। जो भी पवित्र उत्तरदायित्व के पदों पर आसीन थे उन्हें पूर्णतया आत्मसंयमी पुरूष होना था ताकि उनका विवेक सत्य और असत्य के बीच स्पष्टता से अन्तर कर सके, ताकि वे सिद्धान्तों के पक्के हों और उनमें दया दिखाये और न्याय करने की बुद्धिमता हो। PPHin 363.2

मसीह के प्रत्येक अनुयायी का यह नैतिक कर्तव्य है। प्रेरित पतरस कहता है, "तुम एक चुना हुआ वंश, और राजपदधारी याजको का समाज, और पवित्र लोग और परमेश्वर की निज प्रजा हो ।"-1 पतरस 2:9 । परमेश्वर हमसे अपेक्षा करता है कि हम अपनी प्रत्येक क्षमता को यथासम्भव उत्तम अवस्था में संरक्षित रखे, ताकि हम अपने सृष्टिकर्ता को स्वीकारयोग्य सेवा दे सकें। जब मादक पदार्थ प्रयोग में लाए जाते है, तो उनका प्रभाव भी वैसा ही होगा जैसा इज़राइल के याजकों का हुआ था। PPHin 364.1

अन्तरात्मा को पाप की अनुभूति नहीं होगी, और अधर्म की स्थिति में पहुँचाने तक दृढीकरण की प्रक्रिया निश्चित है जब तक सामान्य और पवित्र में महत्वपूर्णता का भेद सामप्त हो जाएगा। फिर हम ईश्वरीय अपेक्षाओं के मानक पर कैसे खरे उतर सकते हैं?" 1 कुरिन्थियों 6:10,20 में लिखा है, "क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारी देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है, जो तुम में बसा हुआ है, और तुम्हे परमेश्वर की ओर से मिला हुआ है। और तुम अपने नहीं हो, क्योंकि तुम दाम देकर मोल लिये गए हो, इसलिये अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो।"-1 कुरिन्थियों 6:19,20 । "इसलिये तुम चाहे खाओ, चाहे पियो, चाहे जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिये करों।"-4 कुरिन्थियों 10:31। प्रत्येक युग में मसीह की कलीसिया को यह भयावह व गम्भीर चेतावनी दी गईं है, "यदि कोई परमेश्वर के मन्दिर को भ्रष्ट करेगा तो परमेश्वर उसे नष्ट करेगा, क्योंकि परमेश्वर का मन्दिर पवित्र है, और वह तुम हो।" PPHin 364.2

अध्याय 32—व्यवस्था और वाचा

आदम और हवा को उनकी सृष्टि के समय, परमेश्वर की व्यवस्था का बोध था। उन पर उसके अधिकारों से वे परिचित थे, उसके सिद्धान्त उनके हृदयों पर लिखित थे। जब आज्ञा उल्लंघन के कारण मनुष्य का पतन हुआ, उस समय व्यवस्था में कुछ बदलाव नहीं आया लेकिन मनुष्य को आज्ञाकारिता में पुनः लाने के लिये एक सुधारात्मक प्रणाली की स्थापना की गई। एक उद्धारकर्ता की प्रतीज्ञा दी गई और पापबलि के रूप में मसीह की मृत्यु की ओर संकेत करने वाले बलिदान सम्बन्धी भेटों की नींव डाली गई। लेकिन यदि परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन नहीं किया जाता, तो मृत्यु नहीं होती और ना ही उद्धारकर्ता की आवश्यकता होती, इस कारण से बलिदान की आवश्यकता भी नहीं होती। PPHin 365.1

आदम ने अपने वंशजो को परमेश्वर की व्यवस्था का ज्ञान कराया, और यह पीढ़ी दर पीढ़ी पिता द्वारा पुत्र को सौंपा गया। लेकिन मनुष्य के उद्धार के लिये अनुग्रहकारी प्रयोजन के बावजूद, बहुत कम लोगों ने उसको स्वीकार किया और उसका पालन किया। आज्ञा उल्लंघन के फलस्वरूप संसार इतना भ्रष्टतापूर्ण हो गया कि जल-प्रलय द्वारा इसे इसके भ्रष्टाचार से मुक्त कराना अनिवार्य हो गया। नूह और उसके परिवार ने व्यवस्था को संरक्षित रखा और नूह ने अपने वंशजो को दस आज्ञाओं की शिक्षा दी। जब मनुष्य एक बार फिर परमेश्वर से दूर हो गया, प्रभु ने अब्राहम को चुना, जिसके बारे में उसने घोषणा की, "अब्राहम ने मेरी मानी और जो मैंने उसे सौंपा था, उसको और मेरी आज्ञाओं, विधियों और व्यवस्था का पालन किया ।"-उत्पत्ति 26:5। उसे खतने कीरीति दी गई, जो एक प्रतीक था कि जो भी खतने की रीति को अपनाते है वे परमेश्वर की सेवा के लिये समर्पित हैं-यह एक शपथ थी कि वे मूर्तिपूजा से अलग रहेंगे और परमेश्वर की आज्ञा का पालन करेंगे। अब्राहम के वंशजो की इस शपथ का निर्वाह करने में असफलता, जो अधर्मियों के साथ उनके संबंध स्थापित करने के व्यवहार में और उसके रीति-रिवाजों को अपनाने में दिखाई गईं, मिस्र में उनके दासत्व और अस्थायी निवास का कारण थी। लेकिन मूर्तिपूजकों के साथ उनके पारस्पारिक व्यवहार में और मिस्रियों के प्रति उनके बलात् समर्पण में, ईश्वरीय धर्मादेश मूर्तिपूजा के भ्रष्ट और निष्ठुर अध्यापन से और अधिक दूषित हो गए। इस कारण, जब परमेश्वर उन्हें मिस्र से निकालकर लाया, वह महिमा में लिपटा हुआ और स्वर्गदूतों से घिरा हुआ, सिने पर्वत पर उतरा और महिमामय अधिकार से अपनी व्यवस्था को बताया जिसे सब लोगों ने सुना। PPHin 365.2

तब भी उसने अपने नियमों को उन लोगों की स्मृति के भरोसे नहीं छोड़ा, जो स्वयं उसकी अपेक्षाओं को भूलने के अभ्यस्त थे, बल्कि उसने उन आज्ञाओं को पत्थर की पटियाओं पर लिखा। वह इज़राइल अपने पवित्र नियमों और मूर्तिपूजक परम्पराओं के बीच मेल-जोल या उसकी अपेक्षाओं को मानवीय अध्यायदशों या प्रथाओं द्वारा पराजित होने की प्रत्येक सम्भावना को दूर कर

देना चाहता था। लेकिन वह उन्हें दस नियमों के सिद्धान्त देकर रूक नहीं गया। लोगो ने आसानी से पथशभ्रष्ट हो जाने का प्रमाण दिया था, इसलिये वह उनके लिये प्रलोभन का कोई भी द्वार असुरक्षित नहीं छोड़ना चाहता था। मूसा को आदेश दिया गया कि परमेश्वर के निर्देशानुसार वह अपेक्षा सम्बन्धी विस्तारपूर्वक निर्देश देते हुए, दण्डाज्ञाओं और नियमों को लिखे। यह निर्देश जो मनुष्य का परमेश्वर के प्रति, एक-दूसरे के प्रति व अपरिचित के प्रति कर्तव्य से सम्बन्धित है, ये दसआज्ञाओं के सिद्धान्त ही थे जिन्हें विस्तारपूर्वक और विशिष्ट तरीके से दिया गया है, ताकि कोई गलती नहीं कर सके। इन्हें पत्थर की पटियाओं पर उत्कीर्ण दस आज्ञाओं की पवित्रता की रक्षा के लिये योजनाबद्ध किया गया था। PPHin 365.3

यदि मनुष्य ने परमेश्वर की आज्ञा को माना होता, जैसे आदम को उसके पतन के पश्चात दी गई, नूह द्वारा संरक्षित रखी गई, अब्राहम द्वारा मानी गई, तो खतना के अध्यादेश की आवश्यकता नहीं होती। और यदि अब्राहम के वंशजो ने वाचा का निर्वाह किया होता, जिसका प्रतीक खतना था, तो वे कभी भी मूर्तिपूजा की ओर आकर्षित नहीं होते, और ना ही उन्हें मिस्र में दासत्व का कष्टपूर्ण जीवन व्यतीत करना पड़ता, वे परमेश्वर की व्यवस्था को अपने मन में रख लेते, तो उसे पत्थर की पटियाओं पर उत्कीर्ण करने या सिने पर्वत से घोषित होने की आवश्यकता नहीं पड़ती। और यदि लोगों ने दस आज्ञाओं के सिद्धान्तों का अभ्यास किया होता, तो मूसा को दिये गए अतिरिकति निर्देशों की आवश्यकता नहीं होती। PPHin 366.1

आदम को सौंपी गयी, बलिदान सम्बन्धी प्रणाली भी उसके वंशजो द्वारा विकृत कर दी गई। परमेश्वर द्वारा नियुक्त सरल और अर्थपूर्ण उपासना को अन्धविश्वास, मूर्तिपूजा, नृशंसता, और स्वच्छता ने भ्रष्ट कर दिया। मूर्तिपूजकों के साथ चिरकालीन पारस्पारिक व्यवहार के माध्यम से इज़राइलियों ने अपनी आराधना में कई मूर्तिपूजक रीति-रिवाज मिला लिये थे, इस कारण प्रभु ने सिने पर्वत पर से बलिदान-सम्बन्धी प्रणाली सम्बन्धित स्पष्ट निर्देश दिये। पवित्र मण्डप के समापन के पश्चात वह प्रायश्चित के ढक्कन के ऊपर महिमा के बादल में से मूसा के साथ संपर्क किया और मिलाव वाले तम्बू में कायम रखने वाले आराधना के प्रकारों को और भेंटो की प्रणालीसे सम्बन्धित सम्पूर्ण निर्देश दिये। इस प्रकार मूसा को रीति-सम्बन्धित व्यवस्था दी गई और उसके द्वारा पुस्तक में लिखी गईं। लेकिन सिने पर्वत से उच्चारित दस आज्ञाओं की व्यवस्था स्वयं परमेश्वर द्वारा पत्थर की पटियाओं पर लिखी गई, और सन्दूक में श्रद्धापूर्वक संरक्षित किया गया। PPHin 366.2

यह प्रमाणित करने के लिये कि आचरण सम्बन्धी व्यवस्था को समाप्त कर दिया गया है, कई लोग रीति सम्बन्धी व्यवस्था की व्याख्या करने वाले अवतरणों का प्रयोग करते हुए, इन दोनों व्यवस्थाओं को मिलाने का प्रयत्न करते हैं, लेकिन यह पवित्र शास्त्र को विकृत करना है। दोनों व्यवस्थाओं के बीच भिन्नता व्यापक व स्पष्ट है। रीति सम्बन्धी व्यवस्था मसीह, उसके बलिदान और उसकी याजकता की ओर संकेत करने वाले प्रतीकों से बनी थी। इस संस्कार-सम्बन्धीव्यवस्था का

पालन, बलिदानों और अध्यादेशों सहित, इब्रानियों द्वारा जगत के पापों को निवारण करने वाले मेमने, मसीह की मृत्यु में नये और पुराने का मिलन होने तक किया जाना था। तत्पश्चात सभी बलिदानों सम्बन्धी भेटों को बन्द हो जाना था। यही वह विधि है जिसे मसीह ने "मिटा डाला..........और उसे कस पर कीलों से जड़कर सामने से हटा दिया ।-कुलुस्सियों 2:14। लेकिन दस आज्ञाओं की व्यवस्था के सन्दर्भ में भजन संहिता में लिखा है, "हे यहोवा, तेरा वचन, आकाश में सदा तक स्थिर रहता है।" और मसीह स्वयं कहता है, "यह न समझो कि मैं व्यवस्था को नष्ट करने आया हूँ... .... तुमसे सत्य कहता हूँ"- और फिर अपने दावे को यथासम्भव ओजपूर्णबनाने के लिये वह कहता है-- "जब तक आकाश और पृथ्वी ढल न जाएँ, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा थ्या एक बिन्दु भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा ।"-मत्ती 5:17,18। यह वह केवल यही नहीं सिखाता है कि परमेश्वर की व्यवस्था का अधिकार क्या रहा होगा, और उस समय क्या था, वरन् यह भी कि यह अधिकार पृथ्वी और आकाश के अस्तित्व में होने तक रहेगा। परमेश्वर की व्यवस्था उतनी ही अपरिवर्तनीय है जितना कि उसका सिंहासन। वह युगों तक मानवजाति पर अपना अधिकार कायम रखेगी। PPHin 367.1

सिने पर्वत पर घोषित व्यवस्था के सन्दर्भ में नेहम्याह कहता है, "फिर तूने सिने पर्वत पर उतरकर आकाश में से उनके साथ बातें की, और उनकों सही नियम, सच्ची व्यवस्था, अच्छी विधियाँ और आज्ञाएं दी ।"-नहे म्याह 9:13और "अन्य जातियों के लिये प्रेरित', पौलूस कहता है, "व्यवस्था पवित्र है, और आज्ञा भी पवित्र, न्यायसंगत और अच्दी है।" - रोमियों 7:12। यह दस आज्ञाओं को छोड़ और कोई नहीं हो सकती क्योंकि व्यवस्था ही यह कहती है, "तू लालच मत कर ।" - रोमियों 7:7 PPHin 367.2

हालाँकि, उद्धारकर्ता की मृत्यु ने परछाईयों और प्रतिरूपों की व्यवस्था का अन्त कर दिया, लेकिन आचरण सम्बन्धी व्यवस्था में से उसने कुछ भी कम नहीं किया। इस के विपरित, यह तथ्य कि व्यवस्था के उल्लंघन के लिये प्रायश्चित करने के लिये मसीह को मृत्यु स्वीकार करना अनिवार्य था, प्रमाणित करता है कि आचरण सम्बन्धी व्यवस्था अपरिवर्तनीय है। PPHin 367.3

जो यह दावा करते हैं कि मसीह परमेश्वर की व्यवस्था का निराकरण करने और पुराने नियम को रद्द करने आया, वे यहूदी काल को अन्धकार का युग कहते है और इब्रियों के धर्म को केवल रशीतियों और अनुष्ठानों से बना होना मानते हैं। लेकिन यह सत्य नहीं है। पवित्र इतिहास में आरम्भ से अन्ततक, जहाँ परमेश्वर का मनुष्य के साथ व्यवहार का उल्लेख हैं, वहां उस महान मैं हूँ" के प्रबल संकेत हैं। परमेश्वर ने मनुष्य के पुत्रों के सम्मुख अपनी महिमा और सामर्थ्य का इससे अधिक स्पष्ट प्रदर्शन कभी नहीं किया, जेसा कि उसने तब किया जब केवल उसे इज़राइल का शासक माना गया और जब उसने अपने लोगों को व्यवस्था प्रदान की। यहां वह राज-दण्ड था जो किसी मनुष्य के हाथ में नहीं था, और इज़राइल के अदृश्य राजा का गौरव-युक्त नेतृत्व अकथनीय रूप से भव्य और महिमामय था। PPHin 368.1

पवित्र उपस्थिति के इन सब प्रदर्शनों में मसीह के माध्यम से परमेश्वर की महिमा प्रकट हुईं। केवल उद्धारकर्ता के आगमन पर ही नहीं, वरन् पतन और उद्धार की प्रतिज्ञा के बाद के सभी युगों में, "परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल-मिलाप कर लिया।'- 2 कुरिन्थियों 5:19। कलपतियों के और यहूदी काल दोनों में मसीह बलिदान सम्बन्धी प्रणाली का केन्द्र बिन्दु और आधार था। हमारे प्रथम अभिभावकों के पाप के समय से परमेश्वर और मनुष्य में प्रत्यक्ष सम्पर्क नहीं रहा है। पिता ने जगत को मसीह के हाथों में सौंप दिया है, ताकि उसकी मध्यस्थता के कार्य के माध्यम से वह मनुष्य को पाप से मुक्त करा सके और परमेश्वर की व्यवस्था की पवित्रता और अधिकार को न्यायसंगत सिद्ध कर सके। स्वर्ग और पतित जाति के बीच समस्त सहभागिता मसीह के माध्यम से हुईं है। परमेश्वर के पुत्र ने ही हमारे प्रथम अभिभावकों को उद्धार की प्रतिज्ञा दी। उसी ने स्वयं कोकुलपिताओं आदम, नहू, अब्राहम, इसहाक, याकूब के सम्मुख प्रकट किया और मूसा ने सुसमाचारकों समझा। वे मनुष्य के प्रतिनिधि और प्रतिभू के द्वारा उद्धार की बाट जोहते थे।प्राचीन काल के ये सिद्ध पुरूष उस उद्धारकर्ता से संपर्क करते थे, जो देहधारी होकर जगत में आने वाला था, और इनमें से कुछ मसीह और स्वर्गदूतों के साथ आमने-सामने होकर बात करते थे। PPHin 368.2

जब इब्री निर्जन प्रदेश में थे मसीह केवल उनका अगुवा ही नहीं था - वह स्वर्गदूत जिसमें यहोवा का नाम था और जो बादल के स्तम्भ में आवृत सेनाओं के आगे-आगे गया- वरन् उसी ने इज़राइल को व्यवस्था दी।-(परिशिष्ट नोट 7 देखिये) सिने की विस्मयकारी महिमा के बीच, मसीह ने, सबके सुनने की पहुँच में, अपने पिता की व्यवस्था के दस नियमों की घोषणा की। उसी ने मूसा को पत्थर की पटियाओं पर उत्कीर्ण व्यवस्था दी। PPHin 368.3

वह मसीह ही था जो भविष्यवक्ताओं के माध्यम से अपने लोगों के साथ बात करता था। मसीही कलीसिया को लिखते हुए प्रेरित पतरस कहता है कि भविष्यवक्ताओं ने, "उस अनुग्रह के विषय में जो तुम पर होने को था, भविष्यद्वाणी की थी। उन्होंने इस बात की खोज की कि मसीह का आत्मा जो उनमें था और पहले सेही मसीह के दुखों की और उसके बाद होने वाली महिमा की गवाही देता था, वह कौन से और कैसे समय की ओर संकेत करता था।"-1 पतरस 1:140,111 वह मसीह का स्वर है जो पुराने नियम के द्वारा हमसे बात करता है। "यीशु की गवाही भविष्यद्वाणी की आत्मा है।" प्रकाशित वाक्य 19:10। PPHin 369.1

जब यीशु व्यक्तिगत रूप से मनुष्यों के बीच में था, अपने प्रचार में उसने मनुष्य का ध्यान पुराने नियम की ओर आकर्षित किया। उसने यहूदियों से कहा"तुम पवित्र शास्त्र में ढूंढते हो, क्योंकि समझते हो कि उसमें अनन्त जीवन तुम्हें मिलता है, और यह वही है जो मेरी गवाही देता है।"- यहुन्ना 5:39। इस समय पुराने नियम की पुस्तकें विद्यमान बाईबिल का एकमात्र भाग थी। फिर से परमेश्वर के पुत्र ने घोषणा की, "उनके पास तो मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकें हैं, वे उसकी

सुनें।” इसके अतिरिक्त उसने कहा, “जब वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की नहीं सुनते, तो यदि मरे हुओं में से कोई भी जी उठे तो उसकीभी नहीं मानेंगे।” - लूका 16:29,31 PPHin 369.2

सांस्कारिक व्यवस्था मसीह द्वारा दी गई। उसका पालनकरने की आवश्यकता न होने के बाद भी, मसीह के कार्य के साथ उसका सम्बन्ध और उद्धार की योजना में उसका स्थान दिखाते हुए, पौलूस ने यहूदियों के सम्मुख इस व्यवस्था को इसके वास्तविक स्थान और महत्व सहित प्रस्तुत किया, और महान प्रेरित इस व्यवस्था को महिमामय और इसके पवित्र प्रवंतक के योग्य घोषित करता है। मिलापवाले तम्बू की पवित्र आराधना उन महान सच्चाईयों का प्रतिनिधित्व करती है जो उत्तरोत्तर पीढ़ियों में प्रकट होनी थी। इज़राइल की प्रार्थनाओं के साथ ऊपर उठता हुआ धूप का धुआँ प्रतीक है उसकी धार्मिकता का, जो पापी मनुष्य की प्रार्थना को परमेश्वर द्वारा स्वीकार्य ठहहरने का अकेला माध्यम है, बलि की वेदी पर लहूलुहान बलि का पशु आने वाले उद्धारकर्ता का प्रमाण था, और पवित्रों के पवित्र से ईश्वरीय उपस्थिति का सदृश प्रतीक दिखाई दिया। इस प्रकार अन्धकार और अधर्म के एक के बाद एक युग के दौरानप्रतिश्रुत मसीह के आगमन का समय आने तक विश्वास को मनुष्यों के हृदयों में जीवित रखा गया। PPHin 369.3

पृथ्वी पर देहधारी होकर आने से पहले यीशु अपने लोगों के लिये ज्योति था- जगत की ज्योति। प्रकाश की पहली किरण, अन्धकार को बेधकर, वह मसीह से आई। और पृथ्वी के वासियों पर पड़ने वाली स्वर्ग के प्रकाश की प्रत्यके किरण उसी में से आई है। उद्धार की योजना में अल्फा और ओमेगा आदि और अन्त मसीह है। PPHin 369.4

जबसे उद्धारकर्ता ने पापों की क्षमा के लिये अपना लहू बहाया, और “हमारे लिये परमेश्वर के सम्मुख दिखाई देने के लिये” स्वर्ग को गया, स्वर्गीय मिलापवाले तम्बू के पवित्र स्थानों से और कलवरी के कस से प्रकाश प्रवाहित हो रहा है। लेकिन हमें, हमको प्रदान किये गए निर्मल प्रकाश के कारण उस प्रकाश को तुच्छ नहीं समझना चाहिये जो प्राचीन समय में, आने वाले उद्धारकर्ता की ओर संकेत करने वाले प्रतिरूपों के द्वारा प्राप्त किया जाता था। मसीह का सुसमाचार यहूदी अर्थव्यवस्था पर प्रकाश डालता है और सांस्कारिक व्यवस्था को महत्व देता है। जैसे-जैसे नए सत्य सामने आते है और जो सत्य आदि से ज्ञात है और स्पष्ट होते हैं, परमेश्वर के प्रयोजन और उसका स्वभाव उसके, अपने चुने हुए लोगों के साथ व्यवहार में प्रकटहोते हैं। प्रत्येकअतिरिक्त किरण जो हमें प्राप्त होती है, उद्धार की योजना से सम्बन्धित हमारी समझ को और स्पष्ट करती है, जो मनुष्य के उद्धार में परमेश्वरकी इच्छा का सम्पन्न होना है। प्रेरित वचन में हम नई मनोहरता और बल देखते हैं और हम उसके पृष्ठों को और गहराई और ध्यान मग्न होकर पढ़ते हैं। PPHin 370.1

कई लोगों की यह धारणा है कि परमेश्वर ने इब्रानियों और पराए जगत के बीच एक वियोजक दीवार रखी है, यह कि उसका प्रेम और ध्यान इज़राइल पर केन्द्रित था और काफी हद तक शेष मानवजाति के प्रति उदासीन था। लेकिन परमेश्वर की यह योजना नहीं थी कि मनुष्य अपने और

दूसरों के बीच में बँटवारे की दीवार खड़ी करें। 'अनन्त प्रेम! का हाथ पृथ्वी के सभी वासियों की और बढ़ रहा था। यद्यपि जगत ने उसका तिरस्कार किया, वह स्वयं को उन पर प्रकट करने और उन्हें अपने अनुग्रह और प्रेम का भागीदार बनाने के लिये लगातार प्रयत्नशील था। चुने हुए लोगों को उसकी आशीष दी गई ताकि वे दूसरों को धन्य करें। PPHin 370.2

परमेश्वर ने अब्राहम को बुलाया, और उसे समृद्ध और सम्मानित किया, और इस कुलपिता की स्वाभिभक्ति उन सभी देशों में, जहाँ उसने पड़ाव डाला, लोगों के लिये प्रकाश थी। अब्राहम ने स्वयं को अपने आस-पास के लोगों से अलग नहीं कर लिया। उसने पड़ोसी देशों के राजाओं के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध कायम रखे और इनमें से कई राजाओं ने उसके साथ आदरपूर्ण व्यवहार किया। उसकी सत्यनिष्ठा, निःस्वार्थत, साहस और उदारता परमेश्वर के चरित्र का वर्णनकर रहे थे। मेसोपोतामिया में, कनान में, मिस्र में, और सदोम वासियों को भी, स्वर्ग के परमेश्वर ने अपने प्रतिनिधि के माध्यम से स्वयं को प्रकट किया। PPHin 370.3

इसी प्रकार मिस्र के लोगों और उस शक्तिशाली राज्य से सम्बद्ध सभी राज्यों में परमेश्वर ने युसुफ के माध्यम सेस्वयं को प्रकट किया। परमेश्वर ने युसुफ को, मिस्रियों के बीच, इतना उच्च सम्मान देना क्यों चुना? याकूब की सन्तानों के प्रति अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिये वह कोई अन्य साधन उपलब्ध करा सकता था, लेकिन वह युसुफ को प्रकाश समान बनाना चाहता था, और उसने युसुफ को राजा के महल में स्थापित किया, ताकि स्वर्गीय प्रकाश दूर और पास फैल सके। अपनी बुद्धिमता और न्यायसंगतता से, अपने दैनिक जीवन की पवित्रता और उदारता से, लोगों की भलाई के लिये अपनी लगन से-जबकि वे लोग मूर्तिपूजक थे-युसुफ मसीह का प्रतिनिधि था। उनके हितकारी में, जिसके पास समस्त मिस्र धन्यवाद और प्रशंसा के साथ जाते थे, उन मूर्तिपूजकों को उनके सृष्टिकर्ता और उद्धारकर्ता के प्रेम को देखना था। इसी प्रकार मूसा के रूप में, परमेश्वर ने पृथ्वी के महानतम राज्य के सिंहासन के पास ज्योति को स्थापित किया ताकि वे सभी, जो चाहते थे, जीवित और सच्चे परमेश्वर के बारे में जाने। परमेश्वर द्वारा दण्डाज्ञा के लिये हाथ बढ़ाए जाने से पहले, यह प्रकाश मिस्र के लोगों को दिया गया। PPHin 371.1

मिस्र से इज़राइल के छुटकारे में, परमेश्वर के सामर्थ्य की जानकारी दूर-दूर तक फैल गईं। यरीहो के गढ़ के रणकुशल लोग काँपने लगे। रहाब ने कहा, "यह सुनते ही हमारा हृदय पिघल गया, और तुम्हारे कारण किसी में साहस नहीं रहा, क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा ऊपर के आकाश का और नीचे की पृथ्वी का परमेश्वर है।" यहोशू 2:41। निर्गमन के सदियों पश्चात् पलिश्तियों के याजकों ने लोगों को मिस्र की विपत्तियों का स्मरण कराया और इज़राइल के परमेश्वर का प्रतिरोध करने के विरूद्ध चेतावनी दी। PPHin 371.2

परमेश्वर ने इज़राइल को बुलाया, और उन्हें आशीषित औरगौरवान्तित किया, इसलिये नहीं कि उसकी व्यवस्था का पालन करने से केवल वही उसकी कृपा-दृष्टि प्राप्त करें और उसकी आशीषों

का विशेष प्राप्तकर्ता बने, वरन् इसलिये कि उनके द्वारा वह पृथ्वी के सभी वासियों के लिये स्वयं को प्रकट कर सके। इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिये उसने उन्हें अपने आप को पड़ोसी मूर्तिपूजक देशों से अलग रखने की आज्ञा दी। PPHin 371.3

मूर्तिपूजा और उसकी श्रंखला में होने वाले सभी पाप परमेश्वर के लिये घृणास्पद थे। परमेश्वर ने आदेश द्वारा लोगों को अन्य देशों के साथ मेलजोल बढ़ाने से व उनके जैसे काम करके परमेश्वर को भूल जाने से मना किया था। उसने उन्हें मूर्तिपूजकों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करने से भी मना किया ताकि उनके हृदय उससे दूर न हो जाएँ। यह तब भी उतना ही आवश्यक था जितना कि अब है कि परमेश्वर के लोग स्वयं को शुद्ध और 'संसार से निष्कलंक' रखे। मूर्तिपूजा की विचारधारा से भी उन्हें स्वयं को स्वतन्त्र रखना चाहिये क्योंकि वह सत्य और धार्मिकता के विरूद्ध है। लेकिन परमेश्वर का यह अभिप्राय नहीं था कि आत्म-धर्मपरायण गैर-मिलनसारिता में उसके लोग जगत से अपने आप को परे रख लें जिससे वे उस पर प्रभाव न डाल सकें। PPHin 371.4

अपने स्वामी की तरह, मसीह के अनुयायियों को हर युग में जगत की ज्योति होना था। उद्धारकर्ता ने कहा, "जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है वह छुप नहीं सकता। और दीपक जलाकर पैमाने के नीचे नहीं वरन् दीवट पर रखते है, तब उससे घर के सब लोगों को प्रकाश पहुँचता है" जिसका तात्पर्य जगत से है। और वह आगे कहता है, "उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करे।""-मत्ती 5:14-16 [हनोक, नूह, अब्राहम, युसुफऔर मूसा ने ठीक ऐसा ही किया। इज़राइलियों के लिये भी परमेश्वर की यही योजना थी। PPHin 372.1

शैतान द्वारा नियन्त्रित, वह उनका दुष्ट हृदय ही था, जिसने उन्हें पड़ोसी राष्ट्रों पर प्रकाश बिखरने के बजाय उसे छुपाने का आग्रह किया, यह वही धर्माधं भावना थी जिसके कारण या तो वे मूर्तिपूजकों की अधम्ी प्रथाओं का अनुसरण करने लगे या अंहकारी अनन्यता में स्वयं को अलग रखनेलगे , मानो परमेश्वर का प्रेम और सुरक्षा केवल उन्हीं के लिये हो। PPHin 372.2

जैसे बाइबिल दो व्यवस्थाओं का वर्णन करती है, एक अपरिवर्तनीय और सनातन और दूसरी अल्पकालीन और सामयिक, और इसी प्रकार वाचाएं भी देते हें। अनुग्रह को वाचा सर्वप्रथम मनुष्य के साथ अदन की वाटिका में बांधी गई, जब पतन के पश्चात् यह पवित्र प्रतिज्ञा दी गई कि मनुष्य का पुत्र सर्प केसिर को कुचल डालेगा। यह वाचा सभी मनुष्यों को मसीह में विश्वास के द्वारा भविष्य में आज्ञाकारिता के लिये परमेश्वर का सहायक अनुग्रह और क्षमादान प्रदान करती थी। मनुष्य के परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति सत्यनिष्ठा दिखाने पर वह उन्हें अनन्त जीवन की प्रतिज्ञा देती थी। इस प्रकार कुलपिताओं ने उद्धार की आशा को पाया। PPHin 372.3

उत्पत्ति 22:18 में उल्लिखित प्रतिज्ञा, "पृथ्वी की सारी जातियाँ अपने को तेरे वंश के कारण धन्य मानेगी" में अब्राहम को यह वाचा दोहराई गईं। यह प्रतिज्ञा ने मसीह की ओर संकेत किया। अब्राहम

ने इसे समझ लिया (गलतियों 3:8,16 देखिये) और उसने पापों की क्षमा के लिये मसीह में विश्वास रखा। इसी विश्वास के आधार पर उसे धर्मी ठहराया गया। अब्राहम के साथ बांधी वाचा ने परमेश्वर की व्यवस्था के अधिकार को कायम रखा। यहोवा ने अब्राहम को दर्शन देकर कहा, "मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर हूँ, मेरी उपस्थिति में चल और सिद्ध होता जा।'-उत्पत्ति 17:1 अपने निष्ठावान सेवक से सम्बन्धित परमेश्वर की गवाही थी, "अब्राहम ने मेरी मानी, और जो मैं ने उसे सौंपा था उसको और मेरी आज्ञाओं, विधियों और व्यवस्था का पालन किया।"-उत्पत्ति 26:5 और परमेश्वर ने उसके सम्मुख घोषणा की, "'मैं तेरे साथ, और तेरे पश्चात पीढ़ी-पीढ़ी तक तेरे वंश के साथ भी इस आशय की युग-युग की वाचा बांधता हूँ कि मैं तेरा और तेरे पश्चात तेरे वंश का भी परमेश्वर रहूंगा।-उत्पत्ति 17:7 PPHin 372.4

यद्यपि यहवाचा आदम के साथ बाँधी गई और अब्राहम के साथ दोहरायी गई, मसीह की मृत्यु तक इसकी पुष्टि नहीं हो सकी। उद्धार की प्रथम सूचना के दिये जाने के समय से यह वाचा परमेश्वर की प्रतिज्ञा द्वारा अस्तित्व में थी, इसे विश्वास द्वारा ग्रहण की गई थी, लेकिन मसीह द्वारा प्रमाणित होने के बाद यह नई वाचा कहलाई । परमेश्वर की व्यवस्था इस वाचा का आधार थी जो, मनुष्य को वहाँ स्थापित कर जहां वे परमेश्वर की आज्ञा का पालन कर सकते थे, ईश्वर की इच्छा के साथ मनुष्य का सामन्जस्य पुनः स्थापित करने का केवल एक प्रबन्ध थी। PPHin 373.1

दूसरा समझौता-पवित्र -शास्त्र में जिसे "पुरानी" वाचा कहा जाता है- सिने में इज़राइल और परमेश्वर के बीच हुआ और इसकी पुष्टि बलिदान के लहू द्वारा हुईं और उसे "दूसरी' या "नई" वाचा कहा जाता है क्योंकि जिसे लहू के द्वारा इसे प्रमाणित किया गया वह प्रथम वाचा के लहू के बाद बहाया गया। अब्राहम के समय में नई वाचा मान्य होता इस तथ्य से प्रमाणित होता है कि वह उस समय परमेश्वर की शपथ और उसकी प्रतिज्ञा दोनों के द्वारा सुनिश्चित की गई- दो अपरिवर्तनीयबातों के द्वारा, जिनके बारे में परमेश्वर कभी झूठ नहीं कह सकता ।""- (इब्रानियों 6:18)। PPHin 373.2

लेकिन यदि अब्राहमी वाचा में उद्धार की प्रतिज्ञा निहित थी, तो सिने पर दूसरी वाचा क्यों तैयार की गई? दासत्व की अवस्था में लोग, काफी हद तक, परमेश्वर के ज्ञान और अब्राहमी वाचा के सिद्धान्तों को खो चुके थे। मिस्र से उन्हें छुटकारा दिलाने में, परमेश्वर उनपर अपनी करूणा और सामर्थ्य को प्रकट करना चाहता था, जिससे कि वे उससे प्रेम करने लगे और उस पर विश्वास ला सकें। वे उन्हें लाल समुद्र तक लाया, जहां मिमस्रियों द्वारा पीछा किये जाने के कारण, उनका बच कर निकल जाना असम्भव था। उसने, उनके अस्थायी दासत्व से छुटकारा दिलाने वाले के रूप में, स्वचयं को उनके साथ बांध रखा था। PPHin 373.3

लेकिन इससे भी महान एक और सत्य था जिसे उनके मन में अंकित किया जाना था। मूर्तिपूजा और भ्रष्टाचार के बीच रहते हुए, उनके पास परमेश्वर की पवित्रता की, अपने व्यक्तिगत हृदयों की अत्याधिक पापमयता की परमेश्वर उद्धारकर्ता की आवश्यकता की सही धारणा नहीं थी। उन्हें यह

सब सिखाना अनिवार्य था। परमेश्वरन उन्हें सिने पर अपनी व्यवस्था दी और साथ ही आज्ञाकारिता की शर्त पर अत्याधिक आशीषों का वचन भी दिया, "यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे, और मेरी वाचा का पालन करोगे, तो तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे, तो तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे ।"-निर्गमन 19:5,6 । लोगों को उनके अपन हृदय की पापमयता का एहसास नहीं हुआ, और न ही इस बात का कि मसीह के अभाव में परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करना असम्भव था, और वे तत्परता सेपरमेश्वर के साथ वाचा में बन्ध गए। यह सोचकर कि वे अपनी धार्मिकता को स्वयं सिद्ध करने में समर्थ थे, उन्होंने घोषणा की, "जो कुछ यहोवा ने कहा है उस सब को हम करेंगे, और उसकी आज्ञा मानेंगे।।"-निर्गमन 24:7 [व्यवस्था की प्रभावशाली व तेजोमय घोषणा के वे साक्षी थे, और पर्वत के सम्मुख वे डर से काँप उठे थे, लेकिन फिर भी कुछ ही वर्ष बीते थे कि उन्होंने परमेश्वर के साथ अपनी वाचा को खंडित कर दिया एक गढ़ी हुई आकृति के आगे भक्तिभाव से दण्डवत किया। स्वयं के द्वारा तोड़ी गईं वाचा के माध्यम से वे परमेश्वर की कृपा-दृष्टि की आशा नहीं कर सकते थे, और अब उनकी पापमयता और क्षमादान की आवश्यकता को देखते हुए, उन्हें बलिदान सम्बन्धी भेटों में प्रतिबिम्बित और अब्राहमी वाचा में प्रकट की गई मनुष्य के लिये उद्धारकर्ता की आवश्यकता का एहसास कराया गया। अब विश्वास और प्रेम से वे उस परमेश्वर के साथ बन्धन में बन्ध गए थे, जिसने उन्हें पाप के बन्धन से मुक्ति दिलाई थी। अब वे नयी वाचा की आशीषों का मान करने को तैयार थे। PPHin 373.4

"पुरानी वाचा" के नियम थे, आज्ञापालन करो और जीवित रहो, "जो मनुष्य उनकी माने, वह उनके कारण जीवित रहेगा ।"-यहेजकेल 20:11, लैवव्यवस्था 18:5; लेकिन"शापित हो वह जो इस व्यवस्था के वचनों को मानकर पूरा न करे।" व्यवस्थाविवरण 27:26। "नई वाचा" का संस्थापन "बेहतर प्रतिज्ञाओं" पर हुआ था- पापों की क्षमा और हृदय परिवर्तन करके उसे परमेश्वर की व्यवस्था के सिद्धान्तों के साथ सुसंगत कराने के लिये परमेश्वर अनुग्रह की प्रतिज्ञा ।जो वाचा मैं उन दिनों के बाद इज़राइल के घराने से बाँधूगा, वह यह है, मैं अपनी व्यवस्थाको उनके मस्तिष्क में रखूँगा तथा उनके ह्दयों पर लिखूँगा.........में उनका अधर्म क्षमा करूँगा, और उनका पाप फिर स्मरण न करूंगा ।"-यिर्मयाह 31:33,34। PPHin 374.1

जो व्यवस्था पत्थर की पटियाओं पर उत्कीर्ण की गई थी, वही व्यवस्था पवित्र आत्मा द्वारा हृदय की पटिया पर लिखी गई। स्वयं की निजी धार्मिकता सिद्ध करने के बजाय हम मसीह की धार्मिकता को अपनाते है। उसका लहू हमारे पापों के लिये प्रायश्चित करता है। उसकी आज्ञापरता हमारे लिये स्वीकार की जाती है। फिर पवित्र आत्मा द्वारा परिवर्तित हृदय आत्मा के फल' लाता है। मसीह के अनुग्रह से हम हमारे हृदयों पर लिखी गई परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करेंगे। मसीह का आत्मा हमारे पास होने से, हम उसकी जैसी चाल चल सकेंगे। नबी के द्वारा उसने स्वयं के लिये घोषणा की, "हे मेरे परमेश्वर मैंतेरी इच्छा पूरी करने में प्रसन्न हूँऔर तेरी व्यवस्था मेरी अन्तकरण में बसी है।"भजन संहिता 40:8; और जब वह मनुष्यों के बीच था उसने कहा, "मेरे पिता ने मुझे अकेला नहीं

छोड़ा है, क्योंकि मैं सर्वदा वही काम करता हूँ जिससे वह प्रसन्न होता है ।-यहुन्ना 8:29 । PPHin 374.2

प्रेरित पौलूस नई वाचा के अंतर्गत विश्वास और व्यवस्था के बीच के सम्बन्ध को स्पष्टता से प्रस्तुत करता है। वह कहता है, "जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल हो गया। तो क्या हम व्यवस्था को विश्वास के द्वारा व्यर्थ ठहराते हैं? परमेश्वर ना करे, वरन् हम व्यवस्था को स्थिर करते है।" "क्योंकि जो काम व्यवस्था न कर सकी, क्योंकिशरीर के कारण वह दुर्बल थी" वह मनुष्य को निर्दोष नहीं ठहरा सकी। क्योंकि अपनी पापमय प्रवृति में वह व्यवस्था को नहीं रख सका- "परमेश्वर ने अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में, शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी, इसलिये कि हमारे द्वारा, जो देह की भौतिक विधि से नहीं, बल्कि आत्मा की विधि से जीते हैं, व्यवस्था की आवश्यकताएँ हममें पूरी हो सके ।"-रोमियों 5:14, 3:31, 8:3,4। PPHin 375.1

परमेश्वर का कार्य सर्वदा समान ही होता है, हालाँकि विकास के चरणों और उसकी शक्ति के प्रदर्शनों में अलग-अलग युगों में मनुष्य की आवश्यकतापूर्ति के अनुसार भिन्नता होती थी। प्रथम सच्ची प्रतिज्ञा से लेकर, कुलपिताओं और यहूदियों के युगों से होते हुए वर्तमान समय तक उद्धार की योजना ने परमेश्वर के उद्देश्यों का नियमित प्रकटन हुआ है। यहूदी व्यवस्था की विधियों और अनुष्ठानों मं जो उद्धारकर्ता प्रतीक के रूप में होता था वही उद्धारकर्ता सुसमाचार में प्रकट होता है। उसके ईश्वरीय रूप को ढॉकने वाला बादल हट गया है, कोहरा और परछाईयाँ लुप्त हो गई हैं, और जगत का उद्धारकर्ता, यीशु प्रकट हुआ। वह जिसने सिने से व्यवस्था की घोषणा की और मूसा को सांस्कारिक व्यवस्था दी, वही है जिसने पहाड़ी संदेश दिया। परमेश्वर के प्रेम के प्रति महान सिद्धान्त जो उसनेभविष्यद्वक्ताओं औरव्यवस्था के आधार के रूप में निर्धारित किये वे इब्रानियों को मूसा द्वारा परमेश्वर के कहे शब्दों को दोहराना है, "हे इज़राइल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है, तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने पूरे मन, और पूरी आत्मा और पूरी शक्ति के साथ प्रेम रखना।"-व्यवस्थाविवरण 6:4,5 ।तू अपने पड़ौसी से अपने समान ही प्रेम रखना। -लैवव्यवस्था 19:18। दोनों विधानों में शिक्षकएक ही है। परमेश्वर का अधिकार वही है। उसके शासन के सिद्धान्त वही है। क्योंकि सभी उसके पास से आते है, "जिसमें न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, और न अदल-बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है।"-याकूब 1:17 PPHin 375.2

अध्याय 33—सिने से कादेश तक

यह अध्याय गिनती 11 और 12 पर आधारित है

इज़राइल के सिने में आराम के पश्चात् कुछ समय तक पवित्र मण्डप का निर्माण आरम्भ नहीं हुआ, और निर्गमन के दूसरे वर्ष के आरम्भ में इस पवित्र आकार को सबसे पहले खड़ा किया गया। इसके बाद हुआ याजकों का अभिषेक, फसह का पर्व, जनगणना, धार्मिक व नागरिक सम्बन्धी प्रणालियों के लिये अनेक आवश्यक व्यवस्थाओं की निवृति, ताकि सिने के पड़ाव में एक वर्ष बिताया जा सके। यहाँ उनकी आराधना ने एक निश्चित रूप धारण किया; लोगों के संचालन के लिये आज्ञाएँ दी गई और कनान में उनके प्रवेश से पहले एक और अधिक कार्यकुशल संगठन नियोजित किया गया। PPHin 377.1

इज़राइल की शासन-प्रणाली सुव्यवस्थित प्रबन्धन के लिये प्रख्यात थी और इसी प्रकार अपनी सहजता और सम्पूर्णता में अद्‌भुत थी। परमेश्वर द्वारा सृजित कृतियों के आयोजन और सर्वोत्कृष्टता में आश्चर्यजनक ढंग से व्यक्त सुव्यवस्था इब्रानी अर्थव्यवस्था में स्पष्ट थी। परमेश्वर इज़राइल का संप्रभु, सत्ता और अधिकार का केन्द्र था। परमेश्वर के नाम में नियमों को कार्यान्वित करने के लिये, परमेश्वर द्वारा नियुक्त, मूसा उनके प्रत्यक्ष अगुवे के रूप में खड़ा हुआ। तत्पश्चात घरानों के पुरनियों में से, राष्ट्र के जाति-सम्बन्धी विषयों में मूसा की सहायता करने के लियेसत्तरकी एकसभाचुनी गई। इसके बाद थे याजकजोमिलापवाले तम्बू में परमेश्वर से सम्मति लेते थे।गोत्रों या घरानों पर प्रधानों या राजकूमारों का राज चलता था। उनके नीचे "हजार-हजार, सौ-सौ, पचास-पचास और दस-दस के ऊपर मुखिया थे" और, अन्त में थे वे अधिकारी जो विशेष कार्यों के लिये नियुक्त किये जाते थे। (व्यवस्थाविवरण 1:15) PPHin 377.2

इब्रानी छावनी को बिल्कुल सही कम में व्यवस्थित किया गया था। वह तीन भागों में विभाजित था, और प्रत्येक का छावनी में नियुक्त स्थान था। मध्य में पवित्र मण्डप था, जो अदृश्य राजा का निवास-स्थान था। इसके चारों ओर याजकों और लैवियों को रखा गया था। इनके परे सभी अन्य गोत्रों के डेरे थे। PPHin 377.3

लैवियों को, छावनी में और यात्रा के दौरान, पवित्र मण्डप और उससे सम्बद्ध सब कुछ का प्रभार सौंपा गया। जब शिविर कूच करता था तो पवित्र मण्डप को निकालाजाता था, और ठहरने के स्थान पर आकर वे उसे फिर से जमाते थे। अन्य गोत्र के किसी भी व्यक्ति को, बिना मृत्यु की पीड़ा सहे, उस मण्डप के पास आने की अनुमति नहीं थी। लैवियों को भी तीन वर्गों में बाँटा गया था, ये लैवी के तीन पुत्रों के वंशज थे और प्रत्येक वर्ग का काम और विशिष्ट स्थान नियुकत किया गया। पवित्र मण्डप के सामने और उसके सबसे निकट, हारून और मूसा के तम्बू थे। दक्षिण में कहातियों

के कुल का निवास था, और उन पर सन्दूक और अन्य सेवा-टहल के सामान की देख-रेख का उत्तरदायित्व था, उत्ल में मरारी थे जो स्तम्भों, तख्तो, बेड़ों इत्यादि के प्रभारी बनाए गए, पश्चिम की ओर गेशौनी थे, जिनको निवास और तम्बू का आवरण और परदों और डोरियों की देख-रेख का उत्लदायित्व सौंपा गया। PPHin 377.4

प्रत्येक घराने का स्थान निर्धारित किया गया। प्रत्येक को कूच करके अपने झण्डे के पास पड़ाव डालना था जैसे कि परमेश्वर ने आदेश दिया था, "इज़राइली मिलापवाले तम्बू के चारों ओर औरउसके सामने अपने-अपनेझण्डे और अपने-अपने पितरों के घराने के निशान के समीप अपने डेरे खड़े करें। जिस कम से वे डेरे खड़े करें, उसी कम से वे अपने-अपने स्थान पर अपने-अपने झण्डे के पास-पास चलें।"-गिनती 2:2,17। मिस्र सेमिश्रित जनसाधारण भी इज़राइलियों के साथ आये। मिश्रित जनसाधारण को घरानों वाले निवासों में रहने की अनुमति नहीं दी गई, लेकिन उनको छावनी के सीमांत पर निवास करना था, और तीसरी पीढ़ी तक उनके वंशजो को इज़राइली सम्प्रदाय से अलग रखा जाना था। (व्यवस्थाविवरण 23:7,8) PPHin 378.1

छावनी और उसके परिप्रदेश के चारों ओर सम्पूर्ण स्वच्छता और कठोर अनुशासन का भी आदेश दिया गया। स्वास्थ्यप्रद अधिनियम लागू किये गए। किसी भी कारण से अशुद्ध हुए प्रत्येक व्यक्ति का डेरे में प्रवेश करना निषिद्ध था। यह उपाय इतने विशाल मानव समूह में स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिये अत्यावश्यक थे और यह भी आवश्यक था कि शुद्धता अर कठोर अनुशासन कायम रखा जाए ताकि इज़राइल पवित्र परमेश्वर की उपस्थिति का आनन्द ले सकें। उसने घोषणा की, "क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को बचाने और तेरे शत्रुओं को तुझ से हटवाने को तेरी छावनी के मध्य घूमता रहेगा, इसलिये तेरी छावनी पवित्र रहनी चाहिये।" PPHin 378.2

इज़राइलियों कीसभी यात्राओं में, "यहोवा की वाचा का सन्दूक उनके लिये विश्राम का स्थान ददूंढता हुआ उनके आगे-आगे चलता था ।"-गिनती 10:33 । कहात के पुत्रों द्वारा उठाया हुआ, परमेश्वर की पवित्र व्यवस्था से युक्त सन्दूक अग्र-दल की अगुवाई करता था। उसके आगे मूसा और हारून चलते थे, और याजक, चाँदी की तुरहियाँ लिये पास ही में रहते थे। मूसा से निर्देश पाकर, याजक, तुरहियों के द्वारा उन्हें लोगों तक पहुँचाते थे। प्रत्येक मण्डली के अगुवे का यह कर्तव्य था कि, तुरही द्वारा दी गई सूचना के अनुसार, प्रस्थान से सम्बन्धित निश्चित निर्देश दें। जो भी दिये गए निर्देशोंका पालन नहीं करता था, उसे मृत्यु दण्ड दिया जाता था। PPHin 378.3

परमेश्वर व्यवस्था का परमेश्वर है। स्वर्ग से सम्बन्धित सब कुछ पूर्ण रूप से कमानुसार है। स्वर्गदूतों की सेना के संचालन में समर्पण और कठोर अनुशासन विद्यमान है। सफलता केवल सुव्यवस्था और सामंजस्यपूर्ण कार्यवाही से मिलतीहै ।परमेश्वरअपनेकार्य में उतनीहीसुव्यवस्था और कम की अपेक्षा करता है जितनी कि इज़राइल के समय में करता था। जो भी परमेश्वर के लिये काम कर रहे हैं, उन्हें अनुत्तरदायी, अव्यवस्थित रीति से नहीं वरन् कुशलता से श्रम करना है। वह अपेक्षा

करता है कि उसका काम विश्वास और परिशुद्धता से किया जाए, ताकि वह उस पर अपनी स्वीकृति की मुहर लगा सके। PPHin 379.1

इज़राइलियों की सभी यात्राओं में परेमश्वर ने स्वयं उनका मार्गदर्शन किया। उनके पड़ाव डालने के स्थान का संकेत बादल के स्तम्भ के उतरान से दिया जाता था, और जब तक उन्हें वहाँ डेरा डाले रहना होताथा, बादल पवित्र मण्डप पर छाया रहता था। जब उन्हें अपनी आगे की यात्रा के लिये प्रस्थान करना होता था तो बादल को पवित्र तम्बू पर से ऊपर उठा लिया जाता था। प्रस्थान व ठहराव के समय पवित्र वंदन किया जाता था। "और जब-जब सन्दूक का प्रस्थान होता था तब-तब मूसा यह कहा करता था, 'हे यहोवा उठ, तेरे शत्रु तितर-बितर हो जाएँ, और तेरे बैरी तेरे सामने से भाग जाएँ। और जब वह ठहर जाता था तब-तब मूसा कहा करता था, 'हे यहोवा, हजारों-हजार इज़राइलियों में लौटकर आ जा।।"-गिनती 40:35,36। PPHin 379.2

कनान की सीमा पर कादेश और सिने के बीच केवल ग्यारह दिनों की यात्रा की दूरी थी, और उस समृद्ध प्रदेश में शीघ्र ही प्रविष्टि होने की संभावना को देखतेहुए,इज़राइल की सेनाओं नेअन्ततःबादल से गतिशील होने का संकेत पाकर,फिर से कच किया। मिस्र से उन्हें निकालकर लाने में परमेश्वर ने कई चमत्कार किये थे, और अब जब उन्होंने उसे यथाविधि वाचा द्वारा अपना प्रभु स्वीकार कर लिया था, और उन्हें सर्वोच्च के चुने हुए लोगों के रूप में स्वीकार कर लिया गया था, तो अब ऐसी कौन सी आशीषें थी, जिनकी अपेक्षा वे नहीं करते? PPHin 379.3

फिर भी लगभग हिचकिचाहट के साथ कई लोगों ने वह स्थान छोड़ा जहां उन्होंने अब तक पड़ाव डाला था। अब वे उसे अपना घर जैसा मानने लगे थे। परमेश्वर ने ग्रेनाइट की उन दीवारों के शरणस्थान के भीतर, सभी अन्य जातियों से दूर, अपने लोगों को इकट्ठा किया था, ताकि वह उनके सम्मुख अपनी पवित्र व्यवस्था को दोहरा सके। वे उस पवित्र पर्वत को निहारते रहते थे, जिसके धवल शिखरों और बंजर टीलों पर पवित्र महिमा को प्रायः प्रदर्शित किया गया था। इस दृश्य का पवित्र स्वर्गदूतों और परमेश्वर की उपस्थिति से इतना गहरा सम्बन्ध था, कि यह इतना पावन प्रतीत होता था कि इस पर विचार किये बिना या प्रसन्नता से इसे छोड़ा नहीं जा सकता था। PPHin 379.4

तब भी, तुरही फेंकने वालों के संकेत पर, पूरी छावनी आगे बढ़ी, पवित्र मण्डप बीच में, प्रत्येक गोत्र अपने नियुक्त स्थान पर और अपने झण्डे के साथ। सभी आँखे उत्सुक थी यह देखने के लिये कि बादल किस दिशा में लेकर जाएगा। जब उसने पूरब की ओर रूख किया, जहाँ केवल काले व सुनसान असंख्य पहाड़ एकत्रित थे, कई लोगों के हृदयों में भय और सन्देह की भावना उत्पन्न हुई। PPHin 380.1

जैसे-जैसे वे आगे बड़े, मार्ग और भी कठिन हो गया। उनका मार्ग पथरीली घाटी और बंजर क्षेत्र में से होकर निकलता था। उनके चारों और बीहड़ था-""मरूभूमि और गहरे गडढों का देश," "सूखे और अन्धकार का प्रदेश", "जिसमें से होकर कोई नहीं चलता और जिसमें कोई मनुष्य नहीं

रहता ।”-यिर्मयाह 2:6। चट्टानी घाटियाँ, स्त्रियों, पुरूषों, बच्चों, पशुओं, भारवाहनों और मवेशियों और भेड़-बकरियों की लम्बी पक्तियों की भीड़ से भर गईं। उनकी प्रगति आवश्यकतावश धीमी और दुष्कर थी, और लम्बे पड़ाव के बाद, जनसाधारण अब मार्ग की असुविधाओं और संकटों को सहन करने के लिये तैयार नहीं थे। PPHin 380.2

तीन दिन की यात्रा के पश्चात् शिकायतें सुनाई देने लगी। ये मिश्रित जनसाधारण से आरम्भ हुई, जो इज़राइल के साथ पूर्णतया एकजुट नहीं थे, और आक्षेप के किसी भी कारण के लिये लगातार चौकस रहते थे। शिकायतकर्ता यात्रा की दिशा से सन्तुष्ट नहीं थे और वे मूसा के नेतृत्व में लगातार कमियाँ निकाल रहे थे, हालाँकि उन्हें भली-भाँति यह मालमू था कि मूसा और स्वयं वे भी मार्गदर्शी बादल का अनुसरण कर रहे थे। असंतोष संकामक होता है, और वह जल्द ही छावनी में फैल गया। PPHin 380.3

वे फिर से खाने के लिये माँस की माँग करने लगे। हालाँकि उन्हें बहुतायत से मन्ना दिया जा रहा था, वे सन्तुष्ट नहीं थे। इज़राइली, मिस्र में अपने दासत्व के दौरान, सबसे साधरण खाना खाकर अपना निर्वाह करने को विवश थे, लेकिन कठोर परिश्रम और अभाव से जागृत तेज भूख ने उस खाने को स्वादिष्ट बना दिया था। लेकिन कई मिस्री जो अब उनके बीच थे, सुस्वाद भोजन के अभ्यस्त थे, और शिकायत करने में ये सबसे आगे थे।मनन्ना देने के समय, इज़राइल के सिने पहुँचने के ठीक पहले, उनकी शिकायतों के प्रत्युत्तर में परमेश्वर ने उन्हें खाने को माँस दिया, लेकिन यह प्रयोजन केवल एक ही दिन के लिये था। PPHin 380.4

परमेश्वर उन्हें उतनी ही आसानी से माँस दे सकता था जितनी आसानी से उसने उन्हें मन्ना दिया था, लेकिन उन्हीं की भलाई के लिये उन पर यह प्रतिबन्ध लगाया गया था। परमेश्वर का उद्देश्य उन्हें उनकी आवश्यकता के अनुकूल आहारदेनाथा बजाय उस हानिकारक भोजन के जिसके वे मिस्र में अभ्यस्त हो गए थे। विकृत भूख को स्वस्थ अवस्था में लाया जाना था, ताकि वे मनुष्य के लिये प्रारंभ में दिये गए भोजन का आनन्द ले सके-पृथ्वी पर के फल, जो परमेश्वर ने आदम और हवा को अदन में दिये। यही कारण था कि इज़राइलियों को काफी हद तक माँसाहारी भोजन से वंचित रखा गया। PPHin 381.1

शैतान ने उन्हें इस प्रतिबन्ध को अन्यायपूर्ण और निर्दयी मानने के लिये उकसाया। उसने उनमें वर्जित वस्तुओं के लिये लालसा उत्पन्न की, क्योंकि वह जानता था कि भूख के प्रति अनियंत्रित झुकाव विलासिता को उत्पन्न करने के प्रवृति रखता है और इस साधन से वह लोगों पर आसानी से नियन्त्रण पा सकता था। कष्ट और रोग का लेखक मनुष्य पर वहीं आक्रमण करता है जहाँ उसे सबसे अधिक सफलता मिल सकती है। उसके बहकावे में आकर हवा द्वारा वर्जित फल खाए जाने के समय से, भूख को सम्बोधित करने वाले प्रलोभनों द्वारा उसने काफी हद तक मनुष्य को पाप में घसीट लिया है। इसी साधन से उसने इज़राइल को परमेश्वर के विरूद्ध बड़बड़ाने को उकसाया खाने पीने में

असंयम, जैसा कि वह करता है, तुच्छ भावनाओं की ओर झुकाव कराकर, मनुष्य के लिये सभी नैतिक दायित्व का अनादरकरने के लिये मार्ग तैयार करता है। जब उनपर आजमाइश आती है तो उनमें उसका प्रतिरोध करने की शक्ति नहीं होती। PPHin 381.2

परमेश्वर इज़राइलियों को मिस्र से निकालकर लाया ताकि वह उन्हें कनान प्रदेश में शुद्ध, पवित्र और खुशहाल जाति के रूप में स्थापित कर सके। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिये उसने उनकी और वंशजो की भलाई की खातिर उन्हें अनुशासनविधि के अधीन किया। यदि वे परमेश्वर के ज्ञानवर्धक प्रतिबन्धों का पालन कर, भूख का त्याग करने को तत्पर होते, तो दुर्बलता और रोग से वे अछते होते। उनके वंशज मानसिक और शारीरिक शक्ति के स्वामी होते। उन्हें सत्य व कर्तव्य, सही निर्णय और, सही पहचान का स्पष्ट बोध होता। लेकिन परमेश्वर की अपेक्षाओं और प्रतिबन्धों को स्वीकार करने की अनिच्छा ने काफी हद तक उस उच्च स्तर पर, जो वह चाहता था कि वे पाएँ, पहुँचने से और उन आशीषों की प्राप्ति से, जो वह उन्हें देने की तैयार था, वंचित रखा । PPHin 381.3

भजन संहिता 78:18-21 में लिखा है, “अपनी चाह के अनुसार भोजन मॉगकर मनही मन ईश्वरकीपरीक्षा की। वे परमेश्वर के विरूद्ध बोले और कहने लगे, “क्या परमेश्वर जंगल में मेज लगा सकता है? उसने चट्टान पर मारकर जल बहा तो दिया, और धाराएँ उमड़ पड़ी, परन्तु क्या वह रोटी भी दे सकता है? क्या वह अपनी प्रजा के लिये माँस भी तैयार कर सकता है? यहोवा यह सुनकर कोध से भर गया।” लाल समुद्र से सिने तक की यात्रा के दौरान बड़बड़हाट और कोलाहल नियमित रूप से होते चले आए थे, लेकन उनके अन्धेपन और अज्ञानता पर दया करके परमेश्वर ने उनके पाप पर दण्डाज्ञा नहीं भेजी थी। लेकिन उस समय से होरेब पर उसने स्वयं को प्रकट किया था। उन्हें बहुत प्रकाश प्राप्त हुआ था, क्ियोंक वे परमेश्वरके गौरव, सामर्थ्य और करूणा के साक्ष्य रहे थे, और उनके अविश्वास और असन्तोषने उनके पाप को और बड़ा कर दिया। और तो और उन्होंने यहोवा को अपने राजा के तौर पर स्वीकार करने की और उसकी आज्ञा मानने की वाचा द्वारा स्वीकृति दी थी। उनकी बड़बड़ाहट उपद्रव के समान थी और इस रीति से उसे तात्कालिक व प्रतीकात्मक दण्ड प्राप्त होना था यदि इज़राइल को विनाश और अराजकता से बचाना था। “यहोवा की आग उनके मध्य में जल उठी, और छावनी के एक किनारे से उन्हें भस्म करने लगी ।” शिकायत करने वालों में सबसे अधिक बड़बड़ाहट करने वाले बादल से प्रवाहित तेज से मारे गए। लोग भयभीत होकर मूसा के पास आए और उससे कहने लगे कि वह उनके लिये परमेश्वर से प्रार्थना करे। उसने वैसा ही किया और आग बुझ गईं। इस दण्डाज्ञा के स्मरण में उसने उस स्थान का नाम “तबेरा’ रखा, ‘ज्वलंत'। PPHin 381.4

लेकिन यह बुराई पहले से भी अधिक बड़ गई। जो भस्म होने से बच गए थे, उन्हें दीनता और प्रायश्चित के मार्ग पर ले जाने के बजाय, ऐसा प्रतीत हो रहा था कि उनकी बड़बडाहट में वृद्धि हो गई थी। चारों दिशाओं में लोग अपने-अपने तम्बुओं के द्वार पर एकत्रित होकर रो रहे थे और विलाप

कर रहे थे।" फिर जो मिली-जुली भीड़ उनके साथ थी , वे ललचाने लगे, और इज़राइली भी फिर रोने और कहने लगे, हमें मांस खाने को कौन देगा। हमें वे मछलियाँ स्मरण है जो हम मिस्र में जी भी कर खाते थे, और वे खीरे, और खरबूजे और गन्दने, और प्याज, और लहसुन भी, लेकिन अब हमारे प्राण सूखगए है, यहाँ पर इस मन्ना को छोड़ और कुछ भी दिखाई नहीं देता।" इस प्रकार उन्होंने उस भोजन के प्रति असन्तोष व्यक्त किया जो उनके सृष्टिकर्ता द्वारा उन्हें मुहैया कराया गया था। लेकिन उनके पास स्थायी प्रमाण था कि वह उनकी आवश्यकता के अनुकूल था, क्योंकि उनके द्वारा इतनी कठिनाईयाँ को सहन करे जाने के बावजूद उनके सभी घराने में से एक भी दुर्बल नहीं था। PPHin 382.1

मूसा का हृदय बैठ गया। उसने विनती की थी कि इज़राइल विनाश न किया जाए, भले ही ऐसा होने पर उसके अपने वंशज एक महान राष्ट्र बन सकते थे। उनके लिये प्रेम के कारण उसने प्रार्थना की कि बजाय इसके कि उनको विनाश के लिए छोड़ दिया जाए, उसका नाम जीवन की पुस्तक से मिटा दिया जाए। उसने अपना सब कुछ उनके लिये संकट में डाला और उनका यह उत्तर था। उन्होंने अपनी सभी कठिनाईयों का और उनकी काल्पनिक पीड़ाओं का भी दोष उसी पर लगाया, और उनकी दुष्टतापूर्ण बड़बड़ाहट ने उत्तरदायित्व और सुरक्षा के भार को, जिसके नीचे वो लड़खड़ा रहा था, दो गुना भारी कर दिया। अपनी निराशा में वह परमेश्वर में भी अविश्वास करने को विवश हो गया, "तू अपने दास से यह बुरा व्यवहार क्यों करता है? और क्या कारण है कि मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह नहीं पाया, कि तू ने इन सब लोगों का भार मुझ पर डाला है? मुझे इतना माँस कहा से मिले कि इन सब लोगों को दूँ? ये यह कह कर मेरे पास रो रहे हैं कि तू हमें माँस खाने को दे। मैं अकला इन सब लोगों का भार नहीं सम्भाल सकता, क्योंकि यह मेरे लिये बहुत भारी है। PPHin 382.2

प्रभु ने उसकी प्रार्थना को स्वीकार किया और उसे इज़राइली पुरनियों में से सत्तर पुरूषों को इकटठा करने का आदेश दिया- ऐसे पुरूष जो ना केवल आयु में बढ़े थे, वरन् मर्यादा, सही निर्णय और अनुभव के धनी हो। "और मिलापवाले तम्बू के पास ले आ कि वे तेरे साथ यहाँ खड़े हों। तब मैं उतरकर तुझ से वहां बातें करूंगा, और जो आत्मा तुझ में है उसमें से कुछ लेकर उन पर डालूँगा, और वे इन लोगों का भार तेरे संग उठाए रहेंगे, और तुझे उसको अकेले उठाना न पड़ेगा।' PPHin 383.1

प्रभु ने मूसा को अनुमति दी कि वह अपने लिये सबसे निष्ठावान और कार्यकुशल पुरूषों को उसके साथ उत्तरदायित्व बॉटने के लिये चुने। उनका प्रभाव, अतिक्रमण को कुचलने और लोगों की हिंसा को रोक कर रखने में सहायक होता । फिर भी उनकी पदोन्नति के परिणामस्वरूप गम्भीर बुराईयाँ उत्पन्न होने को थी। यदि मूसा ने परमेश्वर के सामर्थ्य और, जिनका वह साक्ष्य था, उसकीअच्छाई के प्रमाणों के तदनुरूप विश्वास प्रकट किया होता तो वे कभी भी चुने नहीं जाते, लेकिन उसने अपनी सेवाओं और अपने भार को बढ़ा-चढ़ा कर बताया, और उस तथ्य को लगभग

भूल ही गया कि वह केवल एक साधन था जिसके माध्यम से परमेश्वर ने सब कुछ किया। बड़बड़ाहट की भावना, जिसके द्वारा इज़राइल शापित हुआ, उसके लिये मूसा को भी क्षमा नहीं किया जा सकता था। यदि उसने पूरी तरह से परमेश्वर पर निर्भर किया होता, तो प्रभु ने उसे लगातार निर्देशित किया होता और उससे प्रत्येक आपातकालीन स्थिति के लिये शक्ति प्रदान की होती। PPHin 383.2

मूसा को निर्देश दिया गया कि वह लोगों को उसके लिये तैयार करे जो परमेश्वर उनके लिये करने वाला था। "कल के लिये स्वयं को पवित्र करो, तब तुम्हें माँस खाने को मिलेगा, क्योंकि तुम यहोवा के सम्मुख यह कहकर रोए हो, कि हमें मास खाने को कौन देगा? हम मिस्र ही में भले थे। इसलिये यहोवा तुम को माँस खाने को देगा और तुम खाना। फिर तुम एक दिन या दो दिन, या पाँच दिन या दस दिन या बीस दिनही नहीं, परन्तु महीने भर से उसे खाते रहोगे, जब तक कि वह तुम्हारे नथुनों से निकलने न लगे और तुमको उससे घृणा न हो जाए, क्योंकि तुम लोगों ने यहोवा को, जो तुम्हारे मध्य में हैं, तुच्छ जाना है, और उसके सामने यह कहकर रोए हो कि हम मिस्र से क्यों निकल आए?" PPHin 383.3

फिर मूसा ने कहा, "जिन लोगों के बीच मैं हूँउन में से छः: लाख तो प्यादे ही है, और तू ने कहा है कि मैं उन्हें इतना माँस दूंगा कि वे महीने भर उसे खाते ही रहेंगे। क्या वे सब भेड़-बकरी, गाय-बैल उनके लिये मारे जाएँ कि उनको माँस मिले? या क्या समुद्र की सब मछलियाँ उनके लिये इकट्ठी की जाएँ कि उनको माँस मिले? PPHin 384.1

उसे उसके अविश्वास के लिये झिड़का गया, "क्या यहोवा का हाथ छोटा हो गया है? अब तू देखेगा कि मेरा वचन जो मैंने तुझ से कहा है वह पूरा होता है कि नहीं। PPHin 384.2

तब मूसा ने प्रजा के लोगों को यहोवा की कहीं बातें सुनाई और सत्तर पुरनियों की नियुक्ति की घोषणा की। महान अगुवे द्वारा इन चुने हुए व्यक्तियों को दिया गया प्रभार आधुनिक युग के विधायकों और न्यायियों के लिए न्यायिक सत्यनिष्ठा का आदर्श माना जा सकता है। "तुम अपने भाईयों के मुकद्दमे सुना करो, और उनके बीच और उनके पड़ोसियों और परदेशियों के बीच भी धर्म से न्याय किया करो। न्याय करते समय किसी का पक्ष न लेना, जैसा बड़े की वैसे छोटे मनुष्य की भी सुनना, किसी का मुहँ देखकर न डरना, क्योंकि न्याय परमेश्वर का काम है।""-व्यवस्थाविवरण 1:16,17। PPHin 384.3

मूसा ने अब सत्तर पुरनियों को पवित्र मण्डप के पास बुलाया। "तब यहोवा बादल में होकर उतरा और उसने मूसा से बातें की और जो आत्मा उसमें था उसमें से लेकर उन सत्तर पुरनियों में समवा दिया, और जब वह आत्मा उनमें आ गया तब वे भविष्यद्वाणी करने लगे और वे रूके नहीं ।" जैसे कि पिन्तेकुस्त के दिन, अनुयायियों को "स्वर्ग से सामर्थ्य" प्रदान कीगई वैसे ही इनके साथ भी हुआ। प्रभु उन्हें उनके काम के लिये इस प्रकार तैयार करके और प्रजा की उपस्थिति में सम्मानित

करके सन्तुष्ट हुआ, ताकि इज़राइल के शासन में मूसा के सहभागी होने के लिये, ईश्वर द्वारा नियुक्त, मनुष्यों जैसा आत्म-विश्वास उनमें भी समा जाए। PPHin 384.4

महान अगुवे की उत्कृष्ट निःस्वार्थ भावना का एक बार फिर प्रमाण दिया गया। सत्तर में से दो पुरनिये, जो दीनता में स्वयं को इस उत्तरदायी पद के लिये अयोग्य समझ रहे थे, अपने भाईयों के साथ पवित्र मण्डप पर नहीं आए, लेकिन परमेश्वर का आत्मा उन पर वहीं उतरा जहाँ वे थे और उन्होंने भी भविष्यद्वाणी करने का अभ्यास किया। इस बात की सूचना पाकर, विभाजन होने के डर से, यहोशू ने इस प्रकार की अनियमितता को रोकना चाहा। अपने स्वामी के सम्मान के लिये सतर्क उसने कहा, "हे मेरे स्वामी मूसा, उनको रोक दे।" मूसा ने उत्तर दिया, "क्या तू मेरे कारण जलता है? भला होता कि यहोवा की सारी प्रजा के लोग नबी होते, और यहोवा अपना आत्मा उनमें समवा देता। PPHin 384.5

समुद्र से एक तेज आंधी आई और अपने साथ बटेरों के इतने झुण्ड ले आई कि "इधर-उधर एक दिन के मार्ग तक, छावनी के चारों ओर और भूमि पर लगभग दो हाथ ऊँची परत जम गई ।"-गिनती 11:31 और लोग उस दिन भर और रात भर, और दूसरे दिन भी दिनभर उस खाने को मेहनत से इकट्ठा करतेरहे जो उन्हें चमत्कारी रूप से मुहैया कराया गया था। बड़ी मात्रा में खाना प्राप्त हुआ। "जिसने कम से कम बटोरा उसने दस होमेर बटोरा।" जितना भी उस समय के लिये आवश्यक नहीं था, उसे सुखा कर संरक्षित किया गया , ताकि प्रतिज्ञा के अनुसार यह भोजन एक महीने के लिये पर्याप्त था। PPHin 385.1

परमेश्वर ने लोगों को वह दिया जो उनके लिये सबसे अच्छा नहीं था क्योंकि वे उसकी माँग करते रहे, वे प्रमाणित हो सकता था। उनकी विद्रोहपूर्ण अभिलाषाओं को तृप्त किया गया, लेकिन उन्हें परिणाम भुगतने के लिये छोड़ दिया गया। वे बिना नियन्त्रण के खाते रहे और उनके असंयम को शीघ्रता से दण्डित किया गया। "यहोवा ने उनको बहुत बड़ी मार से मारा।" भारी संख्या में लोग तेज बुखार के कारण मारे गए, जबकि उनमें सबसे अधिक दोषी लोगों को उस भोजन को चखते ही मार डाला गया, जिस भोजन का उन्होंने लालच किया था। PPHin 385.2

तबेरा से प्रस्थान करने के बाद, हसेरोत में अगला पड़ाव डालने पर, मूसा के लिये एक और अधिक कठिन परीक्षा प्रतीक्षा में थी। हारून और मरियम इज़राइल में उत्कृष्ट सम्मान और नेतृत्व के पद पर आसीन थे। दोनो भविष्यद्वाणी के फल से आशिषित थे, और दोनों ही ईश्वर द्वारा, इब्रियों के छुटकारे में मूसा के साथ सहयोगी थे। "मैंने तेरी अगुवाई करने मूसा, हारून और मरियम को भेज दिया ।"-मीका 6:4, मीका नबी द्वारा बोला गया यह परमेश्वर का कथन है। मरियम के प्रभावशाली चरित्र का प्रदर्शन तब किया गया जब वह एक छोटी बालिकाथी और उसने नील नदी के किनारे उस टोकरी पर नज़र रखी जिसमें अबोध शिशु मूसा को छपाया गया था। अपने लोगों के मुक्तिदाता को संरक्षित रखने में परमेश्वर ने उसके आत्म संयम और निपुणता को साधन बनाया।

काव्यात्मकता और संगीत की धनी मरियम ने लाल समुद्र के तट पर इज़राइली महिलाओं का नाच-गाने में नेतृत्व किया था। जहाँ तक लोगों के प्रेम और स्वर्ग के सम्मान का प्रश्न था, मूसा और हारून के बाद उसी का नाम था। लेकिन वही बुराई जो सबसे पहले स्वर्ग में असामनन्जस्य लेकर आई, इस इज़राइली स्त्री के मन में जागृत हुई, और वह भी अपनी असन्तुष्टि में एक हितैषी पाने में असफल नहीं हुई। PPHin 385.3

सत्तर पुरनियों की नियुक्ति में मूसा और हारून की राय नहीं ली गईं, और इस कारण मूसा के विरूद्ध उनकी ईर्ष्या भड़क उठी। जब इज़राइली सिने के मार्ग पर थे, यित्रो व मूसा की भेंट के समय, मूसा द्वारा अपने ससुर की राय को तत्काल स्वीकृति देने के कारण, हारून और मरियम के मन में यह आंशका जाग उठी कि मूसा उनसे अधिक यित्रो से प्रभावित था। पुरनियों के संगठन में उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उनके पद और अधिकार की उपेक्षा की गई हो। मरियम और हारून ने मूसा के उत्तरदायित्व और सुरक्षा के भार को कभी जाना नहीं, लेकिन फिर भी, क्योंकि उन्हें उसकी सहायता के लिये चुना गया था वे स्वयं के सन्दर्भ में ऐसा मानते थे कि वे नेतृत्व के भार को मूसा के साथ बराबरी से बाँट रहे थे, और उनका मानना थाकि अतिरिक्त सहायकों की नियुक्ति की आवश्यकता नहीं थी। PPHin 386.1

मूसा उसके सुपुर्द किये गए महान कार्य के महत्व को इतनी गम्भीरता से लिया था जैसे किसी अन्य व्यक्ति ने नहीं लिया। उसे अपनी कमियों का एहसास हुआ और उसने परमेश्वर को अपना परामर्शदाता बनाया। हारून स्वयं को माननीय मानता था और परमेश्वर में कम विश्वास रखता था। जब उसे उत्तरदायित्व सौंपा गया वह असफल रहा, सिने पर मूर्तिपूजा के विषय में अपनी अधर्म सहमति द्वारा अपने चरित्र की दुर्बलता का प्रमाण दिया। ईर्ष्या और महत्वाकांक्षा में अन्धे हुए मरियम और हारून इस बात को भूल गए। याजकता के पवित्र कार्य के लिये हारून के परिवार की नियुक्ति में परमेश्वर द्वारा हारून को उत्कृष्ट सम्मान दिया गया था, लेकिन अब इस कारण भी उसकी आत्मा-पदोन्नति की इच्छा प्रबल हो गई। “क्या यहोवा ने केवल मूसा ही के साथ बातें की है? क्या उसने हम से भी बातें नहीं की?” स्वयं को परमेश्वर द्वारा, मूसा के तुल्य, कृपा दृष्टि प्राप्त मानते हुए, उन्हें प्रतीत हुआ कि वे भी उसी पद और आधिपत्य के लिये अधिकृत थे। PPHin 386.2

असंतोष की भावना में बहकर, मरियम ने उन घटनाओं में शिकायत का कारण ढूँढ लिया, जिन्हें परमेश्वर ने विशेषकर निष्प्रभाव कर दिया था। मूसा के विवाह से भी वह खिनन्ॎन थी। मूसा द्वारा, इब्रियों में से पत्नी चुनने के बजाय, दूसरी जाति की स्त्री को चुनना उसके जातीय व पारिवारिक गौरव का अपमान था।सिप्पोरा के साथ अत्यन्त घृणा के साथ व्यवहार किया जाता है। PPHin 386.3

हालाँकि कहने को वह एक कूशी स्त्री थी (गिनती 12:1), पर मूसा की पत्नी एक मिद्यानी थी, और इस रीति से वह अब्राहम की वंशज थी। निजी स्वरूप में वह इब्रियों से भिन्न थी क्योंकि उसका रंग साँवला था। इज़राइली ना होते हुए भी, सिप्पोरा सच्चे परमेश्वर की उपासक थी। वह संकोचशील,

नम्र व स्नेहमय स्वभाव की थी और पीड़ितों को देखकर अत्यन्त दुखी हो जाती थी, और यही कारण था कि मिस्र जाने के समय मूसाने उसे मिद्यान वापसी की अनुमति दी। वह उसे मिपस्रियों पर आने वाली दण्डाज्ञाओं का साक्ष्य होने के दुख से बचाना चाहता था। PPHin 387.1

जब सिप्पोरा भीड़ में अपने पति से पुनः मिली, तो उसने देखा कि उसके दायित्व का बोझ उसके स्वास्थ्य पर प्रभाव डाल रहा है और उसने अपनी चिन्ता अपने पिता यित्रों पर प्रकट की, जिसने मूसा के लिये भारमुक्ति के उपाय सुझाए । सिप्पोरा के प्रति मरियम के बैर-भाव का मुख्य कारण यहाँ था। स्वयं और हारून के प्रति दिखाई गई तथाकथित उपेक्षा से व्यथित, वह मूसा की पत्नी को कारण मानती थी, यह निष्कर्ष निकालते हुए कि उसी के प्रभाव ने मूसा को उनके सुझाव लेने से रोका था, जैसा कि वह पहले किया करता था। यदि हारून सही के लिये दृढ़ता से खड़ा रहता, तो उसने बुराई पर रोक लगा दी होती, लेकिन मरियम को उसके व्यवहार की दुष्टता बताने के बजाय, उसने उसके प्रति सहानुभूति प्रकट की, उसकी शिकायत के कथनों को सुना और इस प्रकार वह उसकी ईर्ष्या में भागीदार हो गया। PPHin 387.2

मूसा ने उनके आशीषों को बिना शिकायत किये चुपचाप सहन किया। यह मिद्यान में प्रतीक्षा और कठिन परिश्रम के वर्षा के दौरान प्राप्त अनुभव था- वहां विकसित हुई दीनता और धेयशीलता थी- जिसने मूसा को लोगों की कुड़कड़ाहट और अविश्वास का और जिन लोगों को उसका अटल सहायक होना चाहिये था, उनके घमण्ड और ईर्ष्या का धेर्य के साथ सामना करने के लिये तैयार किया। "मूसा पृथ्वी भर के रहने वाले सब मनुष्यों से बहुत अधिक नम्र स्वभाव का था" और इस कारण उसे सबको दिये गए शाश्वत ज्ञान और मार्गदर्शन से अधिक सनातन ज्ञान और मार्गदर्शन दिया गया। पवित्र शास्त्र कहता है, "वह नम्र लोगों को न्याय की शिक्षा देगा, हां वह नम्र लोगों को अपना मार्ग दिखलाएगा।"-भजन संहिता 25:91 नम्र लोगों का मार्गदर्शन परमेश्वर द्वारा किया जाता है, क्योंकि वे सिखाने योग्य हैं और निर्देशित होने के लिये तत्पर होते हैं। उनकी हार्दिक इच्छा होती है कि वे परमेश्वर की इच्छा को जानें और उसका पालन करें। मुक्तिदाता ने वचन दिया है, "यदि कोई उसकी इच्छा पर चलना चाहे, तो वह इस उपदेश के विषय में जान जाएगा ।-यहुन्ना 7:17। और वह प्रेरित याकूब के माध्यम से घोषणा करता है, "पर यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो तो परमेश्वर से माँगे, जो बिना उलाहना दिये सब को उदारता से देता है, और उसको दी जागएऐंी। लेकिन उसकी प्रतिज्ञा उन्हीं के लिये है जो पूरी तरह से प्रभु के पीछे हो लेने को तैयार हैं। परमेश्वर किसी की इच्छा को बाध्य नहीं करता, इसलिये वह उनकी अगुवाई नहीं कर सकता जो घमण्ड के कारण सिखाने योग्य नहीं है, जो अपनी ही राह पर चलने पर तुले हुए है।जो मनुष्य दुविधा में हो- जो अपनी इच्छा का अनुसरण करे और साथ ही परमेश्वर की इच्छा का पालन करने का भी दावा करे- उनके बारे में लिखा है, "ऐसा मनुष्य यह न समझे कि मुझे प्रभु से कुछ मिलेगा ।"- याकूब 1:7 PPHin 387.3

परमेश्वर ने मूसा को चुना था, और उस पर अपना आत्मा उँडेला था, और अपनी कुड़कुडाहट के द्वारा मरियम और हारून ना केवल अपने नियुक्त अगुवे के वरन् स्वयं परमेश्वर के प्रति भक्तिहीनता के दोषी थी। उपद्रवी फसफसाने वालों को पवित्र मण्डप में बुलाया गया और मूसा के सम्मुख लाया गया। तब यहोवा ने बादल के खम्भे में उतरकर तम्बू के द्वार पर खड़े होकर हारून और मरियम को बुलाया । उनके भविष्यद्वाणी सम्बन्धी वरदान के दावे को नकारा नहीं गया था, परमेश्वर ने उनके साथ स्वप्न और दर्शनों के माध्यम से बातचीत की होगी। लेकिन मूसा को, जिसके लिये परमेश्वर ने स्वयं घोषणा की थी कि “वह तो मेरे सब घरानों में विश्वासयोग्य है,” परमेश्वर की अंतरग सहभागिता प्रदान की गई थी। उसे परमेश्वर आमने-सामने बात करता था। “तुम मेरे दास मूसा की निनन्ृदा करते हुए क्यों नहीं डरे? तब यहोवा का कोप उनपर भड़का और वह चला गया।” बादल परमेश्वर की अप्रसननता के प्रतीक के रूप में मिलापवाले तम्बू पर से ओझल हो गया, और मरियम पर मार पड़ी। वह, ‘कोढ़ से हिम के समान श्वेत हो गई । हारून को छोड़ दिया गया, लेकिन मरियम के दण्ड में उसे कठोरतापूर्वक फटकारा गया। अब उनका घमण्ड मिट्टी में मिल गया, हारून ने अपने पाप का अंगीकार किया, और विनती की उसकी बहन को उस प्राणघातक व घृणास्पद दण्ड नष्ट होने न दिया जाए। मूसा की प्रार्थनाओं के उत्तर में उसका कोढ़ जाता रहा। लेकिन मरियम को सात दिन तक छावनी से बाहर रहना पड़ा। छावनी सेउसके निष्कासन के बाद ही परमेश्वर की कृपा-दृष्टि का चिन्ह दोबारा मिलापवाले तम्बू पर आकर ठहरा। उसे उच्च पद के सम्मान में, और उस पर आई विपत्ति के शोक में, सम्पूर्ण मण्डली उसकी वापसी की प्रतीक्षा में हसेरोत में रूकी रही। PPHin 388.1

प्रभु की अप्रसननता का प्रदर्शन सम्पूर्ण इज़राइल को चेतावनी देने के लिये प्रयोजित किया गया ताकि असंतोष और आज्ञाभंग की बढ़ती हुई भावना पर रोक लगाई जा सके ।यदि मरियम की असन्तुष्टि और ईर्ष्या को संकेतक रूप से झिड़का ना गया होता, तो ये बहुत हानिकारक सिद्ध हो सकती थी। ईर्ष्या मानव हृदय में विद्यमान रहने वाला सबसे शैतानी लक्षण हो सकती है और यह अपने प्रभाव में सबसे अधिक अनिष्टकर है। ज्ञानी पुरूष ने कहा है, “कोध तो क्र, और प्रकोप धारा के समान होता है, परन्तु ईर्ष्या के आगे कौन ठहर सकता है? नीतिवचन 27:4 । ईर्ष्या ही थी जिसके कारण, सबसे पहले, स्वर्ग में असामन्जस्य उत्पन्न हुआ, और इसके अतिभोग से मनुष्यों में अत्याधिक बुराईयां उत्पन्न हो गई। “क्योंकि जहाँ डाह और विरोध होता है, वहाँ गड़बड़ी और हर प्रकार का दुष्कर्म होता है ।” याकूब 3:16 PPHin 388.2

दूसरों के बारे में बुरा बोलने को छोटी बात नहीं समझना चाहिये औरना हीस्वयं को उनके कर्मा और प्रयोजनों का निर्णायक समझना चाहिये। “जो अपने भाई को बदनामी करता है या भाई पर दोष लगाता है, वह व्यवस्था की बदनामी करता है और व्यवस्था पर दोष लगाता है, और यदि तू व्यवस्था पर दोष लगाता है, तो तू व्यवस्था पर चलने वाला नहीं पर उस पर हाकिम ठहरा ।”-याकूब 4:11 [एक ही न्यायाधीश- “वही अन्धकार की छिपी बातें ज्योति में दिखाएगा, और मनों के अभिप्रयों

को प्रगट करेगा ।”-कुरिन्थियों 4:5 और जो भी अपने भाई-बन्धुओं को दोषी ठहराने और उनको परखने का उत्तरदायित्व स्वयं पर ले लेता है वह सृष्टिकर्ता के विशेषाधिकार को हड़प रहा है। PPHin 389.1

बाइबिल हमें विशेष रूप से यह सिखाती है कि हम उन पर बिना सोचे समझे आरोप लगाने से सावधान रहें, जिन्हें परमेश्वर ने अपने राजदूत की भूमिका निभाने के लिये चुना है। परित्यक्त पापियों के वर्ग का वर्णन करते हुए प्रेरित पौलुस कहता है “वे ढीठ और हठी है, और ऊँचे पदवालों को बुरा भुला कहने से नहीं डरते। जबकि स्वर्गदूत जो शक्ति और सामर्थ्य में उनसे बड़े हैं, प्रभु के सामने उन्हें भला-बुरा कहकर दोष नहीं लगाते ।-2 पतरस 2:10,11 ।और पौलुस, कलीसिया के प्रधानों को अपने निर्देश में कहता है, “कोई दोष किसी प्राचीन पर लगाया जाए तो बिना दो या तीन गवाहों के उसको न सुन ।”-1 तीमुथियुस 5:19। जिसने मनुष्यों को अपने लोगों के अगुवे और अध्यापक होने का भारी उत्तरदायित्व सौंपा है, वह उन्हें अपने दासों के प्रति किए गए व्यवहार के लिये उत्तरदायी ठहराएगा। जिन्हें परमेश्वर ने सम्मानित किया है, उनका सम्मान करना हमारा कर्तव्य है। मरियम पर आई दण्डाज्ञा उन सभी के लिये झिड़की है जो ईर्ष्या के आगे समर्पण करते है और उनके विरूद्ध कुडकड़ाते है जिन पर परमेश्वर अपने काम का बोझ डालता है।

अध्याय 34—वे बारह गुप्तचर

यह अध्याय गिनती 13 और 14 पर आधारित है

होरेब पर्वत से प्रस्थान करने के पश्चात् इब्री सेना ने परान के भीड़ में कादेश नामक स्थान में पड़ाव डाला, जो कनान की सीमाओं से दूर नहीं था। यहाँ लोगों ने प्रस्ताव रखा कि उस देश का निरीक्षण करने हेतु गुप्तचरों को भेजा जाए। मूसा द्वारा इस विषय को परमेश्वर के सम्मुख प्रस्तुत किया गया, और इस निर्देश के साथ कि इस कार्य के लिये प्रत्येक गोत्र से एक-एक प्रधान को चुना जाए, उसे अनुमति दे दी गई। निर्दशानुसार पुरूषों को चुना गया, और मूसा ने उन्हें आदेश दिया कि वे जाकर उस देश को देखें कि वह कैसाथा, उसकी स्थिति और प्राकृतिक अनुकूल परिस्थितियाँ क्या थी; और वहां बसे हुऐ लोग बलवान थे या निर्बल, थोड़े थे या अधिक; और यह भी देखे कि उस देश की मिट्टी उपजाऊ है या बंजर, और यह कि वह उस देश का कोई फल भी अपने साथ लेकर लौटें। PPHin 390.1

दक्षिण सीमा से प्रवेश करते हुए, उत्तरी सीमा तक वे गए, और देश का निरीक्षण किया। चालीस दिन पश्चात् वे लौटकर आए। इजराइली ऊंची आशाएं संजोय हुए अपेक्षाकृत होकर उत्सुकता से उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। गुप्तचरों के लौटने की सूचना एक गोत्र से दूसरे गोत्र तक पहुँचाई गई और उसे आनन्दपूर्वक ग्रहण किया गया। जो सन्देशवाहक अपने खतरनाक कार्य के खतरों से सुरक्षापूर्वक बचकर निकल आए थे, उनसे मिलने के लिये लोग उमड़ पड़े। गुप्तचर उस फल कनमूने लेकर आए, जो मिट्टी के उपजाऊ होने का प्रमाण थे। वे अंजीर और अनार भी लेकर आए जो वहाँ बहुतायत से होते थे। अँगूरो के पकने के समयथा , वे दाखों का एक गुच्छा ले आए, जो इतना बड़ा था कि दो व्यक्ति उसे लाठी पर लटकाकर लाए। PPHin 390.2

लोग प्रसन्न थे कि वे इतने समृद्ध देश को प्राप्त करने वाले थे, और उन्होंने वृतान्त को इतना ध्यानपूर्वक सुना कि एक शब्द भी अनसुना नहीं हुआ। गुप्तचरों ने बताया, "जिस देश में तूने हमें भेजा था, उसमें सचमुच दूध और मधु की धाराएं बहती है, और उसकी उपज में से यही है।" वे लोग जोशीले थे, वे उत्साहपूर्वक परमेश्वर की आज्ञा का पालन कर, तत्काल ही उस देश में बसने के लिये चले जाते लेकिन देश के सौन्दर्य और उपजाऊपन का वर्णन करने के पश्चात्, दो को छोड़, सभी गुप्तचरों ने इज़राइलियों के सम्मुख, कनान पर विजय प्राप्त करने के प्रयास में आने वाली कठिनाईयों और खतरों को बढ़ा-चढ़ा कर बताया। उन्होंने देश के विभिन्न भागों में स्थित शक्तिशाली जातियों को गिनवाया और बताया कि उसके नगर गढ़वाले थे और बहुत बड़े थे और उस देश के निवासी बलवान थे, और उन्हें पराजित करना असम्भव था। उन्होंने यह भी बताया कि उन्होंने वहां अनाकवंशियों को देखा जो देखने में विशाल थे और इस कारण उस देश पर अधिकार पाने का विचार करना व्यर्थ था। PPHin 390.3

अब परिस्थितियाँ बदल गई। जैसे-जैसे गुप्तचरों ने, शैतान द्वारा उकसाई गई निराशा से भरे अपने अविश्वासी हृदयों की भावनाएँ व्यक्त की, आशा और साहस का स्थानकायरतापूर्ण निराशा ने ले लिया। उनके अविश्वास ने भकतगणों पर निराशा की परछाई डाल दी, और परमेश्वर के सामर्थ्य को जो प्रायः चुने हुए लोगों के लिये प्रकट किया जाता था, भुला दिया गया। लोगों ने इस पर रूककर चिंतन नहीं किया, उन्होंने यह भी नहीं सोचा कि जो उन्हें इतनी दूर ले आया है, वह उन्हें वह देश अवश्य देगा; उन्होंने यह भी स्मरण नहीं किया कि किस तरह फिरौन की पीछा करती हुई सेनाओं का विनाश करते हुए,समुद्र के जल का पाटकर मार्ग निकालते हुए, परमेश्वर ने विस्मयकारी ढंग से उन्हें उनके उत्पीड़नकर्ताओं से छुटकारा दिलाया था। उन्होंने परमेश्वर को इस परिस्थिति से बाहर छोड़ दिया, और ऐसा जताने लगे मानो वे अपने अस्त्रों-शस्त्रों की शक्ति पर ही निर्भर थे। PPHin 391.1

अपने अविश्वास में उन्होंने परमेश्वर के सामर्थ्य को सीमित कर दिया और उस हाथ पर भी सन्देह किया जिसने अब तक उनका सुरक्षापूर्ण मार्गदर्शन किया था। और उन्होंने मूसा और हारून के विरूद्ध बड़बड़ाने के अपने पहले अपराध को दोहराया, “अब, यही, हमारी ऊंची आशाओं का अन्त है। यही वह देश है जिसे पाने के लिये हम मिस्र से इतनी दूर यात्रा करके आए हैं।” उन्होंने अपने प्रधानों पर धोखाधड़ी का और इज़राइल पर संकट लाने का आरोप लगाया। PPHin 391.2

लोग निराशा में डूब चुके थे। एक वेदनापूर्ण विलाप सुनाई दिया और बड़बड़ाहट की मिली-जुली आवाजों में मिल गया। कालेब ने परिस्थिति को समझा, और, परमेश्वर के वचन के पक्ष में खड़े होने का साहस कर, अपनी क्षमता के अनुसार, अपने अविश्वसनीय सहयोगियों के दुष्प्रभाव का प्रतिकार करने का प्रयत्न किया। क्षणभर के लिये, समृद्ध देश के समर्थन में कहे गए उसके आशावान और साहसपूर्ण शब्दों को सुनने के लिये लोग शान्त हो गए। जो कहा गया था उसका खंडन नहीं किया, दीवारे ऊंची थी और कनानी बलवान थे। लेकिन परमेश्वर ने इज़राइलियों को वचन दिया था कि वह देश वह उन्हें देगा। कालेब ने आग्रह किया, “हम अभी चढ़ के उस देश को अपना कर लें, क्योंकि निस्सन्देह हम में ऐसा करने की शक्ति है।” PPHin 391.3

लेकिन उन दस गुप्तचरों ने, हस्तक्षेप करते हुए, बाधाओं को और अधिक स्याह रंगो में चित्रित किया, “उन लोगों पर चढ़ाई करने की शक्ति हममें नहीं हैं, क्योंकि वे हमसे बलवान है......जितने पुरूष हमने उसमें देखे वे सब बड़े डील-डौल के हैं। फिर वहां हमने नपीलों को अर्थात नीली जाति वाले अनाकवंशियों को देखा, और हम अपनी दृष्टि में उनके सामने टिड्डे के समान दिखाई पड़ते थे, और ऐसे ही उनकी दृष्टि में मालूम पड़ते थे।” PPHin 391.4

ये पुरूष, गलत मार्ग पर चलकर, हठपूर्वक कालेब और यहोशू के, मूसा के और परमेश्वर के विरूद्ध हो गए। प्रत्येक बढ़ते कदम ने उनके संकल्प को और भी दृढ़ कर दिया। उन्होंने निश्चय कर लिया कि कनान पर स्वामित्व प्राप्त करने के प्रत्येक प्रयत्न को वे नाकाम कर देंगे। अपने दुष्प्रभाव

को बनाए रखने के लिये उन्होंने सत्य को विकृत कर दिया। उन्होंने कहा, "वह देश अपने वासियों को निगल जाता है।' यह एक बुराही नहीं, वरन् झूठा वृतान्त था। वह अपने आप में ही असंगत थी। गुप्तचरों ने देश को फलवन्त और समृद्ध और लोगों को बड़े डील-डौल वाले बताया था; ऐसा होना असम्भव था यदि वहाँ का वातावरणइतना अस्वास्थ्यपूर्ण होताकि वह देश अपने वासियों को निगल जाता था।" लेकिन जब मनुष्यों अपने हृदयों को अविश्वास को समर्पित कर देते हैं तो वे स्वयं को शैतान के अधीनस्थ कर देते हैं और कोई नहीं जानता कि वह उन्हें कहाँ तक ले जा सकता है। PPHin 392.1

"तब सारी मण्डली चिल्ला उठी, और रात भर वे लोग रोते ही रहे।" शीघ्र ही विद्रोह और बगावत ने अपनारूप दिखाया क्ृयोंकिशैतान पूर्णतया हावी हो गया; और लोग अपनी सूझ-बूझ खो बेैठे। यह भूलकर कि परमेश्वर उनके दुष्ट व्याख्यानों को सुन रहा था, और यह कि उनके कोध के भंयकर आवेग का बादल के स्तम्भ में ढका "उसकी उपस्थिति का स्वर्गदूत" साक्षी था, उन्होंने मूसा और हारून को भला बुरा कहा। कड़वाहट में वे चिल्ला उठे, "भला होता कि हम मिस्र ही मेंमर जाते या इस भीड़ ही में मर जाते"! फिर उनकी भावनाएँ परमेश्वर के विरूद्ध हो गईं:"यहोवा हमें उस देश में ले जाकर क्यों तलवार से मरवाना चाहता है? हमारी स्त्रियाँ और बाल-बच्चे तो लूट में चले जाएँगे, क्या हमारे लिये अच्छा नहीं कि हम मिस्र देश को लौट जाएँ? फिर वे आपसमें कहने लगे, आओ, हम किसी को अपना प्रधान बना लें, और मिस्र को लौट चलें।" इस प्रकार उन्होंने न केवल मूसा को वरन् परमेश्वर को भी आरोपित किया कि उन्होंने उस देश की प्राप्ति का उन्हें वचन दिया जो वे प्राप्त न कर सके। और वे इस हद तक चले गए कि उन्होंने अपने लिये एक प्रधान नियुक्त किया, जो उन्हें उनके दासत्व और कष्टों के देश मं लौटा कर ले जाए, जहाँ से सर्वशक्तिमान के सशक्त हाथ ने उन्हें छुटकारा दिलाया था। PPHin 392.2

अनादर और पीड़ा में, "मूसा और हारून इज़राइलियों की सारी मण्डली के सामने मुहँ के बल गिरे," और वे नहीं जानते थे कि उन्हें उनके विवेकहीन और आवेगपूर्ण प्रयोजन से कैसे पीछे हटाएँ। कालेब और यहोशू ने उपद्रव को शान्त करने का प्रयत्न किया। दुःख और कोध के प्रतीक के रूप में अपने वस्त्र फाड़कर वे लोगों के बीच में गए और विद्रोहपूर्ण पीड़ा और विलाप के तूफान के शोर से अधिक ऊँची उनकी आवाज सुनाई पड़ी, "जिस देश का भेद लेने को हम इधर-उधर धूम कर आए है, वह अत्यन्त उत्तम देश है। यदि यहोवा हम से प्रसन्न हो, तो हम को उस देश में, जिसमें दूध और मधु की धाराएँ बहती है, पहुँचकर उसे हमें दे देगा। केवल इतना करो कि तुम यहोवा के विरूद्ध बलवा न करो, और न ही उस देश के लोगों से डरो, क्योंकि वे हमारी रोटी ठहरेंगे, छाया उनके ऊपर से हट गई है, और यहोवा हमारे संग है, उन से न डरो।" PPHin 392.3

कनानियों के पाप के घड़ा भर चुका था, औरपरमेश्वर अब उनको और सहन करने वाला नहीं था। उसकी सुरक्षा के अभाव में, उन पर आसानी से विजय पाई जा सकती थी। परमेश्वर की वाचा के द्वारा इज़राइल के लिये वह देश निर्धारित था। PPHin 393.1

लेकिन उन अविश्वसनीय गुप्तचरों के झूठा विवरण ग्रहण किया गया, और उसके माध्यम से सम्पूर्ण मण्डली बहकावे में आ गईं। विश्वासघातियों ने अपना काम कर दिया था। यदि केवल दो व्यक्ति अच्छी खबर लाए होते, और सभी दस लोगों ने परमेश्वर के नाम में उन्हें उस देश को पाने के लिये प्रोत्साहित किया होता, तब भी उन्होंने दस के बजाय अपने दुष्टतापूर्ण अविश्वास के कारण उन दोनों की ही सलाह मानी होती। लेकिन वहाँ पर केवल दो ही थे जो सही की पैरवी कर रहे थे, जबकि दस व्रिदोह के पक्ष में थे। PPHin 393.2

उन विश्वासघाती गुप्तचरों ने कालेब और यहोशू का ऊँची आवाज में दोषारोपण किया और सारी मण्डली चिल्ला उठी कि उन पर पथराव किया जाए। वे पागलपन में चिल्लाते हुए आगे बड़े, लेकिन अक्समात ही उनके हाथों से पत्थर गिर पड़े, एक चुप्पी सी छा गई और वे डर से कॉपने लगे परमेश्वर ने उनके घातक षड़यन्त्र पर रोक लगाने के लिये हस्तक्षेप किया। अग्नि की लपटों समान उसकी उपस्थिति ने मिलापवाले तम्बू को प्रकाशमान कर दिया। सभी लोगों ने परमेश्वर के संकेत को देखा। यह पहले से अधिक प्रभावशाली था और किसी ने अपने प्रतिरोध को जारी रखने का दुस्साहस नहीं किया। जो गुप्तचर गलत खबर लेकर आए थे, वे भय की मार से दुबक गए और साँस रोककर अपने तम्बुओं में लौट गए। PPHin 393.3

मूसा उठा और उसने मिलापवाले तम्बू में प्रवेश किया। प्रभु ने उससे कहा, "मैं उन्हें मरी से मारूगा और उनके निज भाग से उन्हें निकाल दूँगा, और तुझ से एक जाति उत्पन्न करूँगा जो उनसे बड़ी और बलवन्त होगी।" लेकिन मूसा ने फिर से अपने लोगों के लिये विनती की। स्वयं के द्वारा एक शक्तिशाली जाति बनाकर, वह अन्यों के विनाश की सहमति नहीं दे सका। परमेश्वर की करूणा का आग्रह करते हुए उसने कहा, "अब प्रभु की सामर्थ्य की महिमा तेरे इस कथन के अनुसार हो कि यहोवा कोप करने में धीरजवन्त और अति करूणामय है.......अब इन लागों के अधर्म को अपनी बड़ी करूणा के अनुसार, और जैसे तू मिस्र से लेकर यहां तक क्षमा करता रहा है वैसे ही अब भी क्षमा कर दे। PPHin 393.4

परमेश्वर ने इज़राइल का तत्काल विनाश ना करने का वचन दिया लेकिन उनके अविश्वास और कायरता के कारण वह उसके शत्रुओं का दमन करने के लिये अपनी सामर्थ्य प्रकट नहीं कर सका। इसलिये दया दिखाते हुए, उसने सुरक्षित उपाय के रूप में उन्हें लाल समुद्र की ओर मुड़ जाने को कहा। PPHin 394.1

विद्रोह करते समय लोगों ने कहा था, "भला होता कि हम इस भीड़ में ही मर जातें" अब इस प्रार्थना का उत्तर देने का समय आ गया था। परमेश्वर ने घोषणा की, "जो बातें तुम ने मेरे सुनते कही

है, निःसन्देह मैं उसी के अनुसार तुम्हारे साथ व्यवहार करूंगा। तुम्हारे शव इसी जंगल में पड़े रहेंगे, और तुम सब में से बीस वर्ष के या उससे अधिक आयु के जितने गिए गए थे......परन्तु तुम्हारे बाल-बच्चे, जिनके विषय में तुमनेकहा था कि वे मारे जाएँगे,उन्हें मैं निकालले आऊंगा, और वे उस देश को जान लेंगे, जिसे तुमने तुच्छ जाना है।" और कालेब के विषय में उसने कहा, "परन्तुइस कारण कि मेरे दास कालेब के साथ और ही आत्मा है, और उसने पूरी रीति से मेरा अनुकरण किया है, मैं उसको उस देश में जिसमें वह हो आया है पहुँचाऊँगा, और उसका वंश उस देश का अधिकारी होगा। जैसे गुप्तचरों ने अपनी यात्रा में चालीस दिन व्यतीत किये थे। वेसे ही इज़राइलियों को बीहड़ में चालीस वर्ष भ्रमण करना था। PPHin 394.2

जब मूसा ने लोगों को पवित्र निर्णय के बारे में बताया, तो उनका कोध शोक में परिवर्तित हो गया। वे जानते थे कि उनको दी गई दबण्डाज्ञा न्यायपूर्ण थी। वे दस विश्वासघाती गुप्तचर भी मरी द्वारा इज़राइल की आंखो के सामने मारे गए। उनके अन्त में लोगों ने स्वयं का भी सर्वनाश देखा। PPHin 394.3

अब वे अपने दुराचरण के लिये सच्चा प्रायश्चित करते हुए प्रतीत हुए, लेकिन वे अपनी कृतज्ञहीनता और अनाज्ञाकारिता की अनुभूति से नहीं वरन् अपने गलत तरीकों के परिणामों की वजह से दुखी थे। जब उन्होंने देखाकि परमेश्वर के दण्डादेशमें कोई परिवर्तन नहीं हुआतो उनकी स्वेच्छा फिर से जागृत हो गई और उन्होंने घोषणा की कि वे भीड़ में नहीं लौटेंगे। उन्हें शत्रुओं के देश से प्रस्थान करने को कहने में, परमेश्वर ने उनके दिखावटीसमर्पणकोपरखाऔरप्रमाणितकिया कि वहवास्तविकनहीं था। वे जानते थे कि स्वयं को अपनी अविवेकपूर्ण भावनाओं से नियंत्रित होने देने में और उन्हें परमेश्वर को मार डाजने की योजना बनाने में उन्होंने जघन्य अपराध किया था, लेकिन यह जानकर कि उन्होंने एक गम्भीर अपराध किया था, जिसके परिणाम उनके लिये बहुत घातक सिद्ध होने वाले थे, वे केवल भयभीत हुए । उनके हृदयों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ और उन्हें वैसे ही अतिक्रमण को घटित कराने का बहाना चाहिये था। यह तब सामने आया, जब परमेश्वर के अधिकार से, उसने उन्हें भीड़ में लौट जाने की आज्ञा दी। PPHin 394.4

चालीस वर्षों तक इज़राइल को कनान में प्रवेश ना करने का आदेश मूसा, हारून, कालेब और यहोशू के लिये अत्यन्त निराशाजनक था, लेकिन उन्होंने बिना शिकायत करे, ईश्वर के निर्णय को स्वीकार किया। लेकिन जो परमेश्वर के उनके प्रति व्यवहार को लेकर शिकायत करते आ रहे थे और मिस्र लौट जाने की घोषणा करते आए थे, वे उन आशीषों के वापिस लिये जाने पर, जिनका उन्होंने तिरस्कार किया था, बहुत रोए और गिड़गिड़ाए। उन्होंने अकारण ही शिकायत की थी, और अब परमेश्वर ने उन्हें रोने के लिये कारण दे दिया। यदि उन्होंने पाप के लिये शोक मनाया होता, तब उनके पाप उनके सम्मुख रखे गएथे तो उनपरदण्डाज्ञा की घोषणानहींकी गई होती लेकिन उन्होंने

दण्डाज्ञा के लिये शोक मनाया, उनका दुःख प्रायश्चित नहीं था, और उनको दी गई दण्डाज्ञा कोरद्द नहीं करा सकता था। PPHin 395.1

रात विलाप करने में बीत गईं, लेकिन भोर के साथ आशा का भी उदय हुआ। उन्होंने अपनी कायरता को मुक्ति देने का संकल्प किया। जब परमेश्वर ने उन्हें ऊपर जाकर उस देश को जीत लेने को कहा था, तब उन्होंने इन्कार कर दिया था, और अब जब उसने उन्हें वापसी का आदेश दिया, तब वे उतने ही विद्रोही थे। उन्होंने उस देश को हड़पकर उस पर अधिकार करने का निश्चय किया, शायद परमेश्वर उनके काम को स्वीकार कर लेता और उनके प्रति उसके उद्देश्य में बदलाव कर देता। PPHin 395.2

अपने द्वारा नियुक्त समय पर उनके कनान में प्रवेश को परमेश्वर ने उसे उनका विशेषाधिकार और कर्तव्य ठहराया था, लेकिन उनकी दुराग्रही उपेक्षा के कारण यह अनुमति वापस ले ली गईं थी। शैतान ने कनान में उनके प्रवेश को बाधित करके अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लिया था, और अब ईश्वरीय निषेधाज्ञा के होते हुए भी उसने उन्हें वही करने को उकसाया, जिसको करना उन्होंने तब स्वीकार नहीं किया जब परमेश्वर ने उन्हें कहा था। इस प्रकार उस महाकपटी ने उन्हें दूसरी बार विद्रोह करवाने में विजय प्राप्त की। उन्होंने कनान पर अधिकार प्राप्त करने में अपने प्रयत्नों के साथ परमेश्वर के सामर्थ्य के काम करने पर अविश्वास किया था, और अभी भी वे कार्य को सम्पन्न करने के लिये, ईश्वरी की सहायता के बिना, अपनी निजी क्षमता पर विश्वास कर रहे थे। "हम ने यहोवा के विरूद्ध पाप किया है, अब हम अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार चढ़ाई करेंगे और लड़ेंगे।"-व्यवस्थाविवरण 1:41। आज्ञा उललघंन द्वारा वे इतनी बुरी तरह अन्धे हो गए थे। परमेश्वर ने कभी भी यह आदेश नहीं दिया था कि "ऊपर जाओ और लड़ो।" उसका यह प्रयोजन कभी भी नहीं था कि वे युद्ध द्वारा उस देश को जीते, वरन् वह चाहता था कि उसकी आज्ञाओं का पालन कर ससे प्राप्त करे। PPHin 395.3

यद्यपि उनके हृदय परिवर्तित नहीं हुए थे, लोगों को गुप्तचरों के विवरण पर विद्रोह करने की मूर्खता और पापमयता का अंगीकार करने को कायल किया गया था। वे अब उस आशीष के मूल्य को देख सकते थे, जो उन्होंने उतावलेपन में अस्वीकार कर दी थी। उन्होंने स्वीकार कियाकि वह उनका अविश्वास ही था जिसके कारण वे कनान से बाहर हो गए थे। उन्होंने कहा, "हमने पाप किया है", और स्वीकार किया कि गलती उन्हीं में थी, ना कि परमेश्वर में, जिसपर उन्होंने इतनी दुष्टता से उनको दी गई प्रतीज्ञा को पूरी ना करने का आरोप लगाया था। हालाँकि उनका पाप का अंगीकार करना सच्चे प्रायश्चित से प्रवाहित नहीं हुआ था, इससे उनके साथ परमेश्वर के न्यायसंगत व्यवहार की पुष्टि हो गईं। PPHin 396.1

प्रभु आज भी मनुष्य को अपनी न्यायसंगतता को स्वीकार कराने के द्वारा उसके नाम को महिमा पहुँचाने के लिये इसी रीति से कार्य करता है। जब उसने प्रेम रखने का दावा करने वाले उसकी

समझदारी पर सन्देह करते हैं, उसकी प्रतिज्ञाओं का तिरस्कार करते हैं, और प्रलोभन में पड़कर परमेश्वर के उद्देश्यों को पराजित करने के लिये दुष्ट दूतों के साथ मिल जाते हैं, प्रभु प्रायः परिस्थितियों को इस प्रकार वश में कर लेता है कि वास्तविक प्रायश्चित के अभाव में भी मनुष्य को अपने पाप का विश्वास हो जाता है और वह अपने द्वारा चुने हुए मार्ग की दुष्टता और परमेश्वर के उनके साथ परस्पर व्यवहार में अच्छाई को स्वीकार करने के लिये बाध्य हो जाता है। इस प्रकार परमेश्वर अन्धकार के कार्यों को प्रकट कराने हेतु प्रतिकार के साधनों को सक्रिय करता है। और हालाँकि बुराई करने के लिये उकसाने वाली प्रवृति में मूलतः परिवर्तन नहीं होता, पापों का अंगीकार किया जाता हैजो परमेश्वर के सम्मान की पुष्टि करते है और उसके निष्ठावान झिड़कीदेने वालों को, जिनका विरोध किया गया ओर जिनका गलत ढंग से प्रतिनिधित्व किया गया, सही ठहराता है। ऐसा ही तब होगा जब परमेश्वर का रोष अन्ततः उँडेला जाएगा। जब "प्रभु अपने लाखों पवित्रों के साथ आएगा कि सबका न्याय करें," वह उन सब, "भक्तिहीनों को उनके अभक्ति के कामों के विषय में दोषी ठहराएगा ।"-यहूदा 14,15। प्रत्येक पापी को उसकी दण्डाज्ञा की न्यायसंगतता को देखकर स्वीकार कराया जाएगा। PPHin 396.2

ईश्वरीय दण्डाज्ञा का मान न रखते हुए, इज़राइल ने कनान पर विजय पाने की तैयारी की। युद्ध के हथियारों और सुरक्षा कवच से लैस, वे स्वयं के अनुमान के अनुसार संघर्ष के लिये पूर्णता तैयार थे, लेकिन परमेश्वर और उसके दुखी सेवकों की दृष्टि में वे बुरी तरह से अपूर्ण थे। जब, लगभग चालीस वर्ष पश्चात् परमेश्वर ने इज़राइल को ऊपर जाकर यरीहो को अधीकृत करने का आदेश दिया, उसने उनके साथ जाने की प्रतिज्ञा की। उसकी व्यवस्था से युक्त सन्दूक उनकी सेनाओं के आगे ले जाया जाता था। ईश्वरीय निरीक्षण में, उसके द्वारा नियुक्त प्रधान उनके प्रस्थान का निर्देशन करते थे। ऐसे मार्गदर्शन से, उन पर कोई आपत्ति नहीं आ सकती थी। लेकिन अब अपने अगुवों की औपचारिक निषेधाज्ञा और परमेश्वर की आज्ञा के विपरीत, वाचा के सन्दूक के बिना और बिना मूसा के, वे शत्रु-सेना का सामना करने निकल पड़े। PPHin 397.1

तुरही ने चेतावनी का संकेत दिया और मूसा ने उन्हें आगाह किया, "तुम यहोवा की आज्ञा का उल्लंघन क्यों करते हो? लेकिनयह सफल नहीं होगा। यहोवा तुम्हारे मध्य में नहीं है, मत चढ़ोनहीं तो शत्रुओं से हार जाओगे। वहाँ तुम्हारे आगे अमालेकी और कनानी लोग हैं, इसलिये तुम तलवार से मारे जाओगे।" PPHin 397.2

कनानियों ने उस अद्‌भुत शक्ति के बारे में सुना था जो इन लोगों की रक्षा करती प्रतीत होती थी और उनके पक्ष में किये गए चमत्कारों के बारे में भी सुना था, और अब उन्होंने घुसपैठियों को पीछे धकेलने के लिये एक शक्तिशाली सेना को बुलाया। कोई प्रार्थना नहीं की गई कि परमेश्वर उन्हें विजय प्राप्त करवाए। वह अपने अन्त को पीछे मोड़ने के उद्देश्य से या युद्ध में मृत्यु को प्राप्त हो जाने के लिये आगे बड़े । हालांकि युद्ध करने में वे अप्रशिक्षित थे, वे हथियारों से लैस एक विशाल

समूह थे, और उन्हें आशा थी कि वे एक आकस्मिक और भयंकर चढ़ाई के द्वारा समस्त विरोध को दबा देंगे। उन्होंने घृष्टता से उस शत्रु को चुनौती दी जिन्होंने उन पर आक्रमण करने का दुस्साहस नहीं किया था। PPHin 397.3

कनानियों ने स्वयं को एक पहाड़ी पठार पर तैनात किया हुआ था, जहाँ केवल दुर्गग घाटियों से होकर और खाड़ी व खतरनाक चढ़ाई के बाद ही पहुँचा जा सकता था। इब्रियों की विशाल सेना की पराजय और भयानक हो सकती थी। वे धीमे-धीमे कतारबद्ध होकर पथरीले मार्ग पर चले और उन पर ऊपरी हिस्से से शत्रुओं के घातक अस्त्रों का संकट बना हुआ था। बड़ी-बड़ी चट्टानें लुढ़क कर नीचे आने लगी और उनका मार्ग हताहत लोगों के लहू से रंग गया। जो भी चढ़ाई करके थके हुए चोटी तक पहुँचे, उन्हें गहरे नुकसान के साथ पीछे खदेड़ दिया गया। नरसंहार के क्षेत्र पर मृतकों के शव बिखरे पड़े थे। इज़राइलकी सेना पूर्णतया पराजित हो गई। विनाश और मृत्यु उस विद्रोही प्रयोग का परिणाम था। PPHin 397.4

आत्म-समर्पण के लिये विवश आखिरकार, बचे हुए लोग "लौटे और प्रभु के सामने रोए" लेकिन "प्रभु ने उनकी आवाज नहीं सुनी ।"-व्यवस्थाविवरण 1:45 । अपनी संकेतक विजय के द्वारा इज़राइल के शत्रु, जो अब तक उस शक्तिशाली सेना के आगमन की भयभीत होकर प्रतीक्षा कर रहे थे, अब आत्म-विश्वास के साथ उनका प्रतिरोध करने को प्रेरित हुए। परमेश्वर द्वारा अपने लोगों के लिये किये गए चमत्कारों से सम्बन्धिम जो भी वृतान्त उन्होंने सुने थे, उन्हें वे अब असत्य मानने लगे, और उन्हें लगा कि डरने का कोई कारण नहीं था। इज़राइल की उस प्रथम पराजय ने, कनानियों को साहस और संकल्प से प्रेरित करके, विजय प्राप्त करने की कठिनाईयों में अत्याधिक वृद्धि कर दी। इज़राइल के लिये कुछ भी नहीं बचा, सिवाय इसके कि वे अपने शत्रुओं के सामने से पीछे हट जाएँ, क्योंकि वे जान गए कि वहाँ एक सम्पूर्ण पीढ़ी का मृत्यु पश्चात गाड़ा जाना निश्चित था। PPHin 398.1

अध्याय 35—कोरह का विद्रोह

यह अध्याय गिनती 16 और 17 पर आधारित है

इज़राइल पर आई दण्डाज्ञाओं ने कुछ समय के लिये उनकी कुड़कुड़ाहट और दुर्विनीतता पर प्रतिबन्ध तो लगाया, लेकिन जो विद्रोह की भावना अभी भी उनके हृदय में थी, अन्ततः अत्यन्त कटु परिणाम लेकर आई। पहले हुए विद्रोह केवल जनसाधारण का उत्पात रहे थे जो उत्तेजित भीड़ के आकस्मिक आवेग से उत्पन्न होते थे, परन्तु अब एक गहरा षड़यन्त्र रचा गया, जो स्वयं परमेश्वर द्वारा नियुक्त अगुवों के अधिकार को उखाड़ फेंकने के निश्चित उद्देश्य का फल था। PPHin 399.1

कोरह, इस आन्दोलन का मुखिया, एक लैवी था, कोहात के परिवार से था, और मूसा का सम्बन्धी था; वह एक योग्य और प्रभावशाली मनुष्य था। हालाँकि वह पवित्र मण्डप के कार्य के लिये नियुक्त था, वह अपने पद से असन्तुष्ट हो गया था और याजकता के गौरव के लिये महत्वाकाँक्षी था। हारूनऔरउसकेपरिवार को दिया गयायाजकता के प्रभारने, जो पहले के समय में प्रत्येक परिवार के पहलौठे पुत्रको दिया जाताथा ईर्ष्या और असन्तुष्टि को जन्म लिया, और कुछ समय से कोरह गुप्त रूप से मूसा और हारून के अधिकार काविरोध कर रहा था, हालाँकि उसने प्रत्यक्ष रूप से विद्रोह का प्रयत्न नहीं किया था। आखिरकार उसने धार्मिक और नागरिकता सम्बन्धी दोनों ही आधिपत्योंकोउखाड़ फेंकने का दुस्साहसी षड़यन्त्र रचा। उससे सहानुभूति रखने वाले ढूंढने में वह असफल नहीं रहा। मिलापवाले तम्बू के दक्षिण में कोरह और कहातों के तम्बुओं के पास, रूबेनीयों का डेरा, अबीरम और दातान के तम्बू थे और कुल के यह दो प्रधान कोरह के करीब थे। ये प्रधान तत्परता से कोरह की महत्वाकांक्षी योजनाओंमें सम्मिलित हो गए। याकूब के सबसे बड़े पुत्र के वंशज होने के नाम पर इन्होंने दावा किया कि नागरिक सम्बन्धी आधिपत्य उनका होना चाहिये और उन्होंने याजकता के कर्तव्यों को कोरह के साथ बॉटने का संकल्प किया। PPHin 399.2

लोगों की भावना की अवस्था ने कोरह के षड़यन्त्र का साथ दिया। उनकी निराशा की कड़वाहट में, उनके पहले वाले सन्देह, ईर्ष्या और घृणा लौट आए थे, और फिर से उनकी शिकायतों ने उन्हीं के धेर्यवान अगुवे के विरूद्ध निशाना लगाया। इज़राइली लगातार इस तथ्य को भूल रहे थे कि वे प्रभु के मार्गदर्शन में थे। वे भूल गए कि वाचा का स्वर्गदूत उनका अदृश्य अगुवा था, और यह कि बादल के स्तम्भ में आवृत, मसीह की उपस्थिति उनके आगे-आगे जाती थी, और मूसा उसी से सारे निर्देश प्राप्त करता था। PPHin 399.3

भीड़ में मृत्यु को प्राप्त होने की भयंकर दण्डाज्ञा के आगे समर्पण करने को वे तैयार नहीं थे, और इस कारण वे प्रत्येक उस बहाने को पकड़ने को तैयार थे जो उन्हें विश्वास दिलाता था कि परमेश्वर नहीं वरन् मूसा था जो उनकी अगुवाई कर रहा था और जिसने उनके सर्वनाश की घोषणा

की थी। पृथ्वी पर वास करने वाले सबसे दीनमनुष्य के अति उत्तम प्रयत्न इन लोगों की दुर्विनीतता को दबा नहीं सके, और हालाँकि उनकी घटी हुई संख्या और खंडित टुकड़ियों में, उनकी पहले दिखाई गई भ्रष्टता पर परमेश्वर की अप्रसन्नता के चिन्ह, अभी भी उनके सामने थे, फिर भी उन्होंने हृदय से सबक नहीं सीखा। वे फिर से प्रलोभन में बह गए। उत्पाती प्राणियों की विशाल सभा का अगुवा होने की उसकी वर्तमान पदवी से अधिक, मूसा का दीन चरवाहे वाला जीवन इस जीवन से अधिक शान्तिपूर्ण और खुशहाल था। लेकिन मूसा ने दोनों में से एक को चुनने का दुस्साहस नहीं किया। चरवाहे की लाठी के स्थान पर उसे राजदण्ड थमा दिया गया था, जिसे वह तब तक नीचे नहींरख सकता था जब तक परमेश्वर उसे इस कर्तव्य से मुक्त ना करता । PPHin 400.1

जो हृदय की गुप्त बातों को पढ़ता है, उसने कोरह और उसके साथियों के प्रयोजन को भाँप लिया था, और उसने अपने लोगों को ऐसे चेतावनी और निर्देश दिये थे कि वे इन षड़यन्त्रकारियों के चँगुल से बच निकलने के योग्य हो जाते। मूसा के विरूद्ध ईर्ष्या और शिकायतों के कारण, मरियम पर आई परमेश्वर की दण्डाज्ञा को उन्होंने देखा था। प्रभु ने घोषित किया था कि मूसा नबी से सर्वश्रेष्ठ है। “उसके साथ में आमने-सामने होकर बात करूंगा ।” और उसने कहा, “क्या तुम मेरे दास मूसा के विरूद्ध बोलने से नहीं डरे?”गिनती 12:8। यह निर्देश केवल हारून और मरियम के लिये ही नहीं, वरन् समस्त इज़राइल के लिये थे। PPHin 400.2

कोरह और उसके सह-षड़यन्त्रकारी वे मनुष्य थे जिन पर परमेश्वर के सामर्थ्य और उसकी महानता के विशेष प्रदर्शनों द्वारा कृपा-दृष्टि थी। वे उनमें से थे जो मूसा के साथ पर्वत पर गए और जिन्होंने पवित्र तेज का दर्शन किया। लेकिन उस समय के तत्पश्चात एक परिवर्तन आया। एक प्रलोभन, जो पहले नगण्य था, विकसित होने दियागया था, और वह सशक्त हुआ और उसे तब तक प्रोत्साहित किया गया, जब तक सशक्त हुआ और उसे तब तक प्रोत्साहित किया गया, जब तक उनके मन शैतान द्वारा नियन्त्रित हो गए, और उन्होंने विद्रोह करने का अपना कार्य प्रारम्भ किया। लोगों की समृद्धि में रूचि रखने का दावा कर, उन्होंने आपस में पहले अपनी असन्तुष्टि प्रकट की और फिर उसे इज़राइल के प्रतिष्ठत मनुष्यों तक पहुँचाई । उनके परोक्ष संकेतों को इतनी तत्परता से ग्रहण किया गया कि वे विद्रोह कार्य में और आगे बड़े और अंत में स्वयं को, परमेश्वर के लिये जोश से, प्रेरित समझने लगे। PPHin 400.3

वे ढाई सौ प्रधानों को, जो प्रजा में प्रतिष्ठित व्यक्ति थे, अलग करने में सफल हुए। इन सशक्त और प्रभावशाली समर्थकों के होते हुये वे हारून और मूसा के शासन प्रबन्ध में सुधार लाने के लिये और शासन में सुधारवादी परिवर्तन करने के लिये निश्चित महसूस करने लगे। PPHin 401.1

सन्देह ने ईर्ष्या को जन्म दिया था, और ईर्ष्या ने विद्रोह का जन्म दिया। उन्होंने मूसा के इतने अधिक सम्मान और अधिकार के प्रश्न पर परिचर्चा की थी और वे इस निष्कर्ष पर पहुँच गए थे कि मूसा एक वांछनीय पद पर आसीन था, जिसकी आपूर्ति उचित रूप से उनमें से कोई भी कर सकता

था। ऐसा सोचने में उन्होंने स्वयं कोऔर एक-दूसरे को इस भ्रम में डाल दिया कि मूसा और हारून ने स्वयं उन पदों पर अधिकार जमा लिया जिन पर वे आसीन थे। असन्तुष्ट जन कहने लगे कि इन अगुवों ने संचालन और याजकता का दायित्व अपने ऊपर लेने में, स्वयं को प्रभु की प्रजा से ऊँचा पद दे दिया था, लेकिन उनके परिवार अन्य इज़राइलियों से अधिक विशिष्टता के लिये अधिकृत नहीं थे, वे प्रजा से अधिक पवित्र नहीं थे, और उनके लिये इतना पर्याप्त होना चाहिये कि वे अपने भाई-बन्धुओं के समान स्तरीय रहे, जो परमेश्वर की विशेष उपस्थिति और सुरक्षा से अनुग्रहीत थे। PPHin 401.2

षड़यन्त्रकारियों का अगला कार्य लोगों से सम्बन्धित था। जो दोषी होते है, और दण्ड के योग्य होते है, वे प्रशंसा और सहानुभूति पाकर अत्यन्त प्रसन्न होते हैं। इस प्रकार कोरह और उसके समर्थकों ने लोगों का ध्यान आकर्षित किया और प्रजा का समर्थन प्राप्त किया। उस आरोप को, कि लोगों की कुड़कड़ाहट के कारण परमेश्वर का कोप भड़क उठा था, एक गलती घोषित कर दिया गया। उन्होंने कहा कि प्रजा का कोई दोष नहीं था क्योंकि वे केवल अपने अधिकारों की कामना कर रहे थे, लेकिन मूसा एक दमनकारी शासक था और उसने लोगों को पापियों समान दण्डित किया था, जबकि वे पवित्र लोग थे और प्रभु उनके बीच में था। PPHin 401.3

कोरह ने उनकी भीड़ में आरम्भ से लेकर अन्त तक की यात्रा के इतिहास की समीक्षा की, कहाँ उन्हें कठिन स्थानोंमें लाया गया, और कई अपनी कड़कुड़ाहट और अनाज्ञाकारिता के कारण नष्ट हुए। उसके सुनने वालों ने सोचा कि उन्होंने स्पष्ट रूप से देखा कि यदि मूसा ने कोई दूसरा मार्ग लिया होता तो वे इन विपत्तियों से बच सकते थे। वे कतसंकल्प थे कि उन पर आईं समस्त कठिनाईयों के लिये मूसा दोषी था, और कनान से उनका बहिष्कार हारून और मूसा के कुशासन का परिणाम था, और यह कि यदि कोरह उनका अगुवा होगा, और उन्हें अच्छे कर्मों पर ध्यान देने को प्रोत्साहित करेगा, बजाय इसके कि उनके पापों के लिये दण्डित करे, तो उनकी यात्रा शान्तिपूर्ण व सुखद होगी, भीड़ में इधर-उधर भटकने के बजाय वे सीधे प्रतिज्ञा के देश की ओर प्रस्थान करेंगे। PPHin 401.4

विद्रोह के इस कार्य में प्रजा के असंगत तत्वों में, पहले से अधिक, एकता और सामन्जस्य था। लोगों के बीच कोरह की सफलता ने उसके आत्म-विश्वास में वृद्धि की और उसके इस विश्वास की पुष्टि की, कि यदि मूसा द्वारा अधिकार के हड़पने को अनदेखा किया गया, तो वह इज़राइल की स्वतन्त्रता के लिये घातक सिद्ध होगा, उसने यह भी दावा किया कि परमेश्वर ने इस विषय को उसके सम्मुख रखा था, और उसे अधिकृत किया था, कि बहुत देर होने से पहले वह शासन में परिवर्तन करे। लेकिन कई लोग कोरह के मूसा के विरूद्ध आरोपों को स्वीकार करने के लिये तैयार नहीं थे। उसके धेरयशील, आत्म-त्यागी परिश्रम की स्मृति उनके समक्ष आ खड़ी हुईं और उनकी अन्तरात्मा बैचेन हो उठी। इस कारण यह अनिवार्य हो गयाकि इज़राइल के लिये उसकी गहरी रूचि को उसके

किसी स्वार्थपूर्ण प्रयोजन के साथ जोड़ा जाए। पुराने आरोप को दोहराया गया कि वह उन्हें भीड़ में नष्ट करने के लिये लाया, ताकि वह उनकी धन-सम्पत्ति को लूट सके। PPHin 402.1

कुछ समय तक यह कार्य गुप्त रूप से किया गया। लेकिन जैसे ही आन्दोलन प्रत्यक्ष अतिक्रमण की दस्तक देने के लिये पर्याप्त रूप से प्रबल हो गया, कोरह उपद्रवी दल के सिरे पर प्रकट हुआ और उसने सार्वजनिक तौर पर, मूसा और हारून पर उस अधिकार को हड़पने का अरोप लगाया, जिसका प्रयोग करने के लिये स्वयं कोरह और उसके सहयोगी अधिकृत थे। इसके अतिरिक्त यह आरोप भी लगाया गया किलोगों को उनकी स्वतन्त्रता से वंचित किया गया था। षड़यन्त्रकारियों ने कहा, तुमने बहुत किया, अब बस करो, क्योंकि सारी मण्डली का एक-एक मनुष्य पवित्र है, और यहोवा उनके मध्य में रहता है, इसलिये तुम यहोवा की मण्डली में ऊँचे पदवाले क्यों बन बैठे हो?” PPHin 402.2

मूसा ने इस गहरे षड़यन्त्र का सन्देह भी नहीं किया था, और जब इसका भयानक अभिप्राय उसके सामने उभर कर आया परमेश्वर से चुपचाप विनती करते हुए वह मुँह के बल गिर पड़ा। उसे ईश्वरीय मार्गदर्शन प्रदान किया गया था। उसने मण्डली से कहा, “सवेरे यहोवा दिखला देगा कि उसका कोन है, और पवित्र कौन है, और उसको अपने समीप बुला लेगा, जिसको वह आप चुन लेगा, उसी को समीप बुला भी लेगा।” इस परीक्षा को सुबह तक के लिये स्थगित किया गया, ताकि सभी को विचार करने का समय मिल सके।जो याजकता की चाह रखते थे, उनमें से प्रत्येक को अपना-अपना धूपदान लाना था, और प्रजा की उपस्थिति में पवित्र मण्डप में धूप-बलि चढ़ानी थी। नियम एकदम सुस्पष्ट था कि जो इस पवित्र कार्य के लिये अभिषिक्त थे केवल वही मिलापवाले तम्बू की सेवा टहल करें। और नादाब और अभीहू भी, जो स्वयं याजक थे, सनातन आज्ञा की अवमानना करते हुए, बलि की विधि में ऊपरी आग’ का प्रयोग करने के कारण नाश को प्राप्त हुए। फिर भी मूसा ने उस पर आरोप लगाने वालों को चुनौती दी, कि यदि वे ऐसे खतरनाक आकर्षण से प्रभावित होने का दुस्साहस कर रहे थे, तो वे इस विषय को परमेश्वर के सुपुर्द करें। PPHin 402.3

कोरह और उसके सह-लैवियों को मूसा ने विशेष रूप से कहा, “क्या यह तुम्हें छोटी बात जान पड़ती है कि इज़राइल के परमेश्वर ने तुम को इज़राइल की मण्डली से अलग करके अपने निवास की सेवा करने, और मण्डली के सामने खड़े होकर उसकी भी सेवा टहल करने के लिये अपने समीप बुला लिया है, और तुझे और तेरे सब लैवी भाईयों को भी अपने समीप बुला लिया है? फिर भी तुम याजक पद लेना चाहते हो? और इसी कारण तूने अपनी सारी मण्डली को यहोवा के विरूद्ध इकट्ठा किया है, हारून कौन है कि तुम उस पर बुड़बुड़ाते हो?” PPHin 403.1

दातान और अबीराम ने इतना दुस्साहसी निर्णय नहीं लियाथा जैसा कि कोरह ने लिया था, और मूसा ने, यह आशा करते हुए कि षड़यंन्त्र में सम्मिलित हो जाने के बावजूद वे पूर्णतया भ्रष्ट नहीं हुए होंगे, उन्हें अपने सम्मुख बुलाया ताकि वह उन आरोपों को सुन सके जो उन्होंने मूसा पर लगाए थे।

लेकिन वे नहीं आए और उन्होंने घृष्टता से मूसा के आधिपत्य को मानने से इन्कार कर दिया। प्रजा के सुनने में आने वाला उनका उत्तर था, "क्या यह एक छोटी बात है कि तू हम को ऐसे देश से, जिसमें दूध और मधु की धाराएँ बहती है, इसलिये निकाल लाया है कि हमें भीड़ में मार डाले, सिवाय इसके कि तू हमारे ऊपर प्रधान बनकर अधिकार जताता है? फिर तूने हमें ऐसे देश में जहाँ दूध और मधु की धाराएँ बहती है नहीं पहुँचाया, और न हमे खेतों और दाख की बारियों की धरोहर सौंपी, क्या तू इन लोगों की आंखो में धूल झोंकेगा? हम तो ऊपर नहीं आएँगे।" PPHin 403.2

इस प्रकार उन्होंने अपने दासत्व के दृश्य में उसी भाषा का प्रयोग किया जिसका परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की मीरास का वर्णन करने में किया था। उन्होंने मूसा पर ईश्वरीय मार्गदर्शन के अनुसार कार्य करने का दिखावा करने का आरोप लगाया, जिससे वह अपना आधिपत्य स्थापित कर सके, और उन्होंने घोषणा कि वे अंधे व्यक्तियों की तरह, मूसा के महत्वाकांक्षी योजनाओं के अनुकूल, कभी कनान की और, कभी भीड़ की और उसके पीछे-पीछे नहीं चलेंगे। इस प्रकार जो एक विनम्र पिता और धीरजवन्त चरवाहे की तरह रहा था, उसे एक हड़पनेवाले और तानाशाह के दुष्टतापूर्ण चरित्र वाला बताया गया। उनके अपने निजी पापों के दण्ड के रूप में कनान से उनके बहिष्कार का आरोप भी मूसा पर लगाया गया।यह स्पष्ट था कि लोगों का समर्थन विरोधी दल के साथ था, लेकिन मूसा ने स्वयं को निर्दोष प्रमाणित करने का कोई प्रयत्न नहीं किया। प्रजा की उपस्थिति में, अपने आचरण की धार्मिकता और अपने प्रयोजनों की निर्मलता के साक्ष्य के तौर पर, उसने संजीदगी से परमेश्वर से विनती की और उससे याचना की कि वह उसका न्यायी हो। PPHin 403.3

सवेरा होने पर, कोरह के नेतृत्व में, ढाई सौ प्रधान अपने-अपने धूपदान लेकर प्रस्तुत हुए । उन्हें मिलापवाले तम्बू के प्रॉगंण में लाया गया और परिणाम की प्रतीक्षा में लोग बाहर एकत्रित हुए। वह मूसा नहीं था जिसने कोरह और उसकी मण्डली की पराजय को देखने के लिये प्रजा को एकत्रित किया, बल्कि वे उपद्रवी थे, जिन्होंने अपनी निराधार परिकल्पना में, उन्हें अपनी विजय के साक्षी होने के लिये एक स्थान पर इकट्ठा किया था। मण्डली का बहुत बड़ा भाग खुलकर कोरह का पक्ष ले रहा था, जो हारून के विरूद्ध अपना दृष्टिकोण प्रमाणित करने के लिये आशान्वित था। PPHin 404.1

इस प्रकार जब वे परमेश्वर के सम्मुख एकत्रित थे, "तब यहोवा का तेज सारी मण्डली को दिखाई दिया।" मूसा और हारून को चेतावनी दी गई, "उस मण्डली के बीच में से अलग हो जाओं ताकि मैं उन्हें क्षण भर में भस्म कर डालूँ।" लेकिन वे मुहँ के बल गिरकर प्रार्थना करने लगे, "हे ईश्वर, हे सब प्राणियों के आत्माओं के परमेश्वर, क्या एक पुरूष के पाप के कारण तेरा कोध सारी मण्डली पर होगा"? PPHin 404.2

जब मूसा, सत्तर पुरनियों के साथ, उन मनुष्यों के पास आखिरी चेतावनी लेकर गया, जिन्होंने उसके पास आने में मना कर दिया था, तब कोरह, दातान और अबीराम के साथ जुड़ने के लिये सभा से पीछे हट गया था। भीड़ पीछे-पीछे गई, और सन्देश देने से पूर्व, पवित्र निर्देश द्वारा, मूसा ने

लोगों से कहा, "तुम उन दुष्ट मनुष्यों के डेरों के पास से हट जाओ, और उनकी कोई वस्तु न छुओ, कहीं ऐसा न हो कि तुम भी उनके सब पापों में फँसकर मिट जाओ।" चेतावनी का पालन किया गया क्योंकि आने वाली दण्डाज्ञा का भय सभी पर छाया हुआ था। मुख्य उपद्रवियों ने स्वयं को उनसे परित्यक्त पाया, जिनको उन्होंने भ्रमित किया था लेकिन उनका साहस अविचलित था। वे अपने परिवारों के साथ अपने तम्बुओं के द्वार पर खड़े रहे, मानो ईश्वरीय चेतावनी को ललकार रहे हों। PPHin 404.3

इज़राइल के परमेश्वर के नाम में, मूसा ने घोषणा की, जो प्रजा ने सुनी, "इस से तुम जान लोगे कि यहोवा ने मुझे भेजा है कि यह सब काम करूँ, क्योंकि मैं ने अपनी इच्छा से कुछ नहीं किया। यदि ये मनुष्यसभी मनुष्यों के समानसामान्य मृत्यु को प्राप्ततोे, और उनका दण्ड सब मनुष्यों के समान हो, तब जानो कि मैं यहोवा का भेजा हुआ नहीं हूँ। परन्तु यदि यहोवा अपनी अनोखी शक्ति प्रकट करे, और पृथ्वी अपना मुहँ पसारकर उनको, और उनका सब कुछ निगल जाए, और वे जीते जी अधोलोक में जा पड़े, तो तुम समझ लो कि इन मनुष्यों ने यहोवा का अपमान किया है!" PPHin 404.4

सभी आँखे मूसा पर टिकी हुई थी, और वे घटना की प्रतीक्षा में भय और अपेक्षा के साथ खड़े थे। जब वह ये सब बातें कह चुका, भूमि फट गईं और उपद्रवी गढ़हे में जीते जी समा गए और उनके साथ वह भी जो उनसे सम्बन्धित था और "वे मण्डली के बीच में से नष्ट हो गए।" पाप में भागीदार के तौर पर स्वयं को दोषी मान लोग वहाँ से भाग खड़े हुए। PPHin 405.1

लेकिन दण्डाज्ञाएं समाप्त नहीं हुई । बादल के भीतर से आग निकली, और उन ढाई सौ धूप चढ़ानेवालों को भस्म कर डाला.ये व्यक्ति, मुख्य षड़यन्त्रकारियों के साथ नष्ट नहीं किये गए। क्योंकि ये उपद्रव में प्रथम नहीं थे। उन्हें अपना अन्त देखने की अनुमति दी गई और पश्चताप का अवसर दिया गया, लेकिन इनकी सहानुभूति विद्रोहियों के साथ थी, और इस कारण इनका अन्त भी वैसा ही हुआ। PPHin 405.2

जब मूसा इज़राइल से आने वाले विनाश से भाग जाने की विनती कर रहा था, ईश्वरीय दण्डाज्ञा स्थगित हो सकती थी, यदि कोरह और उसकी मण्डली ने प्रायश्चित कर लिया होता और क्षमा मांगी होती। लेकिन उनकी हठी दृढ़ता ने उनका विनाश निश्चित कर दिया। पूरी प्रजा उनके पाप में सहभागी थी, क्योंकि सभी ने, चाहे थोड़ी चाहे बहुत, उनके साथ सहानुभूति रखी थी। लेकिन फिर भी करूणामय परमेश्वर ने विद्रोह के अगुवों और उनके द्वारा मार्गदर्शित लोगों में अन्तर दिखाया। स्वयं को भ्रमित होने देने की अनुमति देने वालों को प्रायश्चित का समय प्रदान किया। मूसा के सही होने का और उनके गलत होने का ठोस प्रमाण दिया गया था। परमेश्वर की सामर्थ्य के संकेतात्मक प्रदर्शन ने सम्पूर्ण संदिग्धता को मिटा दिया था। PPHin 405.3

यीशु, वह स्वर्गदूत जो इब्रियों के आगे-आगे जाता था, उन्हें विनाश से बचाना चाहता था। क्षमा उनके लिये ठहरी हुई थी। परमेश्वर का न्याय निकट था और उनसे पश्चताप की याचना कर रहा था। स्वर्ग की ओर से एक विशेष प्रबल हस्तक्षेप में विद्रोह को थाम लिया था। अब, यदि वे परमेश्वर द्वारा किये गए बीच बचाव पर प्रतिक्रिया दिखाते, तो वे बच सकते थे। लेकिन विनाश के डर से वे दण्डाज्ञा से भाग तो गए, लेकिन उनका विद्रोह ठीक नहीं हुआ। उस रात वे डरेहुए अपने तम्बुओं में लौट, लेकिन उन्हें पछतावा नहीं था। PPHin 405.4

कोरह और उसकी मण्डली ने उनकी मिथ्या प्रशंसा करके उन्हें आश्वस्त कर दिया था कि वे भले लोग थे और उनका मूसा द्वारा शोषण किया गया था और उनके साथ गलत हुआ था। यदि वे स्वीकार करते कि कोरह और उसकी मण्डली गलत थे और मूसा सही था, तो भीड़ में मृत्यु का दण्ड वे उसी प्रकार ग्रहण करते जैसे कि परमेश्वर का वचन। वे इस बात को मानने के लिये तैयार नहीं थे और उन्होंने विश्वास करने का प्रयास किया कि मूसा ने उन्हें धोखा दिया था। उन्होंने बड़े चाव से इस आशा को संजोए रखा था कि एक नयी शासन प्रणाली का संस्थापन होगा जिसमें दण्ड के स्थान पर प्रशंसा और चिंता और कलहके स्थान पर विश्राम होगा। जो मनुष्य विनाश को प्राप्त हो गए थे उन्होंने प्रशंसापूर्ण शब्द कहे थे और उनके लिये अत्यन्त प्रेम और गहरी रूचि का दावा किया था और सुनने वाले लोगों ने इस निष्कर्ष पर पहुँच गए थे कि कोरह और उसके सहयोगी भद्र पुरूष रहे होंगे, और यह कि मूसा किसी प्रकार से उनके विनाश का कारण रहा था। PPHin 405.5

मनुष्य के लिये परमेश्वर का इससे अधिक अपमान करना कदाचित ही सम्भव है कि वह उन्हीं के उद्धार के लिये परमेश्वर द्वारा प्रयोग में लाए जाने वाले माध्यमों को तिरस्क्त और अस्वीकार करे। इज़राइलियों ने केवल यह ही नहीं किया, वरन् मूसा और हारून दोनों को मार डालने की भी योजना बनाई। फिर भी उन्होंने परमेश्वर से अपने जघन्य पाप के लिये क्षमा माँगने की आवश्यकता को नहीं समझा । परख अवधि कीवह रात पश्चताप और पापों का अंगीकार करने में नहीं, वरन् उन्हें पापियों में सबसे श्रेष्ठ बताने वाले प्रमाणों का प्रतिरोध करने के उपायों को ढूंढने में व्यतीत की गई। वे अभी भी परमेश्वर द्वारा नियुक्त व्यक्तियों के लिये घृणा पाले हुए थे, और उनके आधिपत्य का प्रतिरोध करने के लिये उन्होंने स्वयं को तैयार किया। उनके निर्णय को विकृत करने और उन्हें.उनकी आँखों पर पट्टी बाँधकर,विनाश की ओर ले जाने के लिये शैतान आस-पास ही था। PPHin 406.1

जो अधोलोक में समा गए थे, उन दण्डित पापियों की चिल्लाहट पर समस्त इज़राइल भाग खड़ा हुआ था, क्योंकि, वे कहने लगे, "हमें भी भूमि निगल ना ले।" लेकिन "दूसरे दिन इज़राइलियों की सारी मण्डली यह कहकर मूसा और हारून पर बड़बड़ाने लगी कि यहोवा की प्रजा को तुमने मारा है।" और वे अपने निष्ठावान, आत्म-त्यागी अगुवों के विरूद्ध हिंसा पर उतरने वाले ही थे। PPHin 406.2

मिलापवाले तम्बू के ऊपर बादल में पवित्र तेज का प्रदर्शन दिखाई दिया और बादल में से एक आवाज ने मूसा और हारून को सम्बोधित किया, “तुम मण्डली के बीच में से निकल जाओ, ताकि मैं इन्हें क्षण-भर में भस्म कर दूँ।” PPHin 406.3

पाप का दोष मूसा पर नहीं था, इसलिये उसे डर नहीं था और वह मण्डली को नष्ट होने देने के लिये छोड़ कर नहीं गया। इस भयावह संकट के समय भी वह विलम्ब करता रहा, और उसने उसकी देखरेख में की भेड़ो में अच्छे चरवाहे की रूचि का प्रमाण दिया। उसने परमेश्वर से विनती की कि परमेश्वर का कोप उसके चुने हुए लोगों की पूरी तरह नष्ट न करे। अपनी मध्यस्थता के द्वारा मूसा ने प्रतिशोध के हाथ को थाम लिया, ताकि अनाज्ञाकारी, उपद्रव इज़राइल का सर्वनाश न हो। PPHin 406.4

लेकिन कोप का कर्मक आगे बड़ चुका था, महामारी मृत्यु देने का काम कर रही थी। अपने भाई के निर्देशानुसार, हारून ने एक धूपदान लिया और वह ‘उनके लिये प्रायश्चित करने” मण्डली के बीच में गया। “वह मृतकों और जीवित लोगों के बीच में खड़ा हुआ।” धूप के धुएं के साथ मिलापवाले तम्बू से मूसा की प्रार्थनाएं भी परमेश्वर के पास ऊपर गई, और महामारी को स्थगित कर दिया गया, लेकिन तब तक चौदह हजार इज़राइली मरे पड़े थे, और यह बड़बड़ाहट और विद्रोह के पाप का प्रमाण था। PPHin 407.1

याजकता का हारून के परिवार में स्थापित होने का अतिरिक्त प्रमाण भी दिया गया। पवित्र निर्देश के द्वारा प्रत्येक गोत्र ने एक-एक छड़ी तैयार की और उस पर गोत्र या घराने का नाम लिखा। हारून का नाम लैवी के नाम वाली छड़ी पर था। सभी छड़ियों को मिलापवाले तम्बू में “वाचा के सन्दूक के सामने” रखा गया। किसी भी छड़ी पर कलियों और फल-पत्तों का उभर आना इस बात का प्रतीक था कि परमेश्वर ने उस गोत्र या परिवार को याजकता के लिये चुना है। सुबह होने पर, “हारून की वह छड़ी जौ लैवी वंश की थी, एक मात्र ऐसी थी जिससे नयी पत्तियाँ उगनी आरम्भ हुई थी।” उस छड़ी को लोगों को दिखाया गया, और उसके पश्चताप उसे आने वाली पीढ़ियों के लिये साक्षी के तौर पर मिलाप वाले तम्बू में रख दिया गया। इस चमत्कार ने याजकता के विवादित विषय का समाधान कर दिया। PPHin 407.2

अब यह पूरी तरह प्रमाणित हो गया था कि मूसा और हारून ने ईश्वरीय अधिकार से बाते कही थी, और लोग, भीड़ मेंमृत्यु को प्राप्त होने के कटु सत्य पर विश्वास करने के लिये विवश हो गए। वे बोले, “हमारे प्राण निकले जाते है, हम नष्ट हुए, हम सब के सब नष्ट हुए जाते है।” उन्होंने अंगीकार किया कि अपने अगुवों के विरूद्ध विद्रोह में उन्होंने पाप किया था, और यह कि कोरह और उसके सहयोगियों ने परमेश्वर का न्यायसंगत दण्ड भुगता था। PPHin 407.3

कोरह के विद्रोह में, एक छोटे प्रदर्शन मंच पर, उसी भावना का कियाशील होना दिखाई देता है, जिसके प्रभाव में शैतान ने स्वर्ग में विद्रोह किया। वह घमण्ड और महत्वाकांक्षा ही थे जिन्होंने

लूसिफेर को परमेश्वर की सत्ता के विरूद्ध शिकायत करने को उकसाया और स्वर्ग में स्थापित शासन-प्रणाली को उखाड़ फेंकने का प्रयास करवाया । उसके पतन के समय से उसका लक्ष्य रहा है कि वह मनुष्य के मन में असन्तोष और ईर्ष्या की उसी भावना, पद और सम्मान की उसी महत्वाकांक्षा को जागृत करे। इसी प्रकार उसने कोहर, दातान और अबीराम के मनों में डाह, अविश्वास और विद्रोह को उकसाया और आत्म-उनन्नति की अभिलाषा को जागृत किया। शैतान के प्रभाव में आकर उन्होंने परमेश्वर द्वारा नियुक्त मनुष्यों को तिरस्कार किया और इस प्रकार परमेश्वर का उनका अगुवा होने का भी तिरस्कार किया। मूसा और हारून के विरूद्ध कुड़कड़ाने में उन्होंने परमेश्वर की निंदा की और इसमें वे इतने भ्रमित हो गए थे कि वे स्वयं को धर्मी और उनके पापों को धिक््कारने वालों को शैतान द्वारा प्रेरणा प्राप्त समझने लगे थे। कोरह के विनाश का कारण, ये बुराईयाँ, क्या वर्तमान में विद्यमान नहीं है? घमण्ड और महत्वाकांक्षा व्यापक है, और जब इन्हें संजोया जाता है, तो यह ईर्ष्या के लिये और आधिपत्य के प्रयास के लिये द्वार को खोल देते है, औरमनुष्य परमेश्वर से अलग हो जाता है और अनजाने में शैतान की मण्डली में खिंच जाता है। कोरह और उसके सहभागियों की तरह कई लोग, वे भी जो यीशु के तथाकथित अनुयायी हैं, स्वयं के उत्थान या पदोन्नति के लिये इतनी व्यग्रता से सोच-विचार कर रहे हैं, योजना बना रहे हैं और प्रयास कर रहे हैं कि परमेश्वर के दासों का गलत प्रतिनिधित्व करके उहें झूठा ठहरा कर, और उन पर ऐसे नीच और स्वार्थपूर्ण उद्देश्यों का आरोप लगाकर, जो स्वयं उनके हृदयों को प्रेरित करते है, वे लोगों का समर्थन और सहानुभूति पाने के लिये सत्य को विकृत करने के लिये तैयार है। सभी प्रमाणों के विरूद्ध मिथ्या को लगातार दोहराने से, वे अनन्त: उसे ही सत्य मानने लगते है। परमेश्वर द्वारा नियुक्त व्यक्तियों पर से लोगों का विश्वास उठा देने का प्रयास करने में, वे वास्तव में विश्वास करते हैं कि वे एक अच्छे काम में व्यस्त है, और तत्परता से परमेश्वर की सेवा कर रहे हैं। PPHin 407.4

इब्री परमेश्वर के प्रतिबन्धों और निर्देशों का पालन करने के लिये तैयार नहीं थे। वे नियन्त्रित किये जाने पर अधीर हो जाते थे और फटकार प्राप्त करने के लिये अनिच्छुक मूसा के विरूद्ध उनकी कड़कुड़ाहट का यही रहस्य था। यदि उन्हें अपनी ही इच्छाएं पूरी करने के लिये छोड़ दिया जाता तो उनके अगुवे के विरूद्ध उनकी शिकायतें कम होती। कलीसिया के इतिहास में आरम्भ से अन्त तक परमेश्वर के दासों को इसी भावना का सामना करना पड़ा है। PPHin 408.1

पापमय अतिभोग के माध्यम ही से मनुष्य शैतान को अपने मन में आने देता हैं और वे दुष्टता के एक चरण से दूसरे चरण में चला जाते हैं। प्रकाश का तिरस्कार बुद्धि को भ्रष्ट कर देता है और हृदय को कठोर बना देता है,जिससे मनुष्य के लिये पाप में अग्रसर होना और बेहतर प्रकाश का तिरस्कार करना आसान हो जाता है जब तक कि उनकी कुकर्म करने की आदतें जड़ पकड़ लेती हैं। पाप उन्हें पाप प्रतीत नहीं होता है। जो परमेश्वर के वचन का श्रद्धापूर्वक प्रचार करता है और उसके द्वारा उनके पापों को धिक्कारता हैं, वो उनकी घृणा का पात्र हो जाता है। सुधार के लिये

अनिवार्य त्याग और कष्ट को सहन करने के लिये विमुख वे परमेश्वर के दास के विरूद्ध हो जाते है, और उसकी फटकार को कठोर और नागवार ठहराते हैं। कोरह के समान वे लोगों के निर्दोष होने की घोषणा करते है और डॉटने वाले को सारे कष्टों का कारण बताते हैं। उनकी अन्तरात्मा को इस भ्रम से शान्त करते हुए, कलीसिया में असामन्जस्य का बीज बोने के लिये और कलीसिया के प्रत्याशित समर्थकों के हाथों को शक्तिहीन करने के लिये, ईर्ष्यालु और असंतुष्ट लोग एक हो जाते है। PPHin 408.2

जिन्हें परमेश्वर ने उसके काम में अगुवाई करने के लिये चुना है, उनके प्रत्येक प्रयास ने सन्देह को उत्पन्न किया है, उनके हर कार्य को ईर्ष्यालु और मीन-मेक निकालने वालों द्वारा तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत किया गया है। ऐसा ही लूथर, वेसली और अन्य सुधारकों के समय में था, आज भी ऐसा होता है। PPHin 409.1

कोरह ने वह मार्ग नहीं चुना होता जो उसने चुना यदि उसने विश्वासमें यह जाना होता कि इज़राइल को दिये गए सभी निर्देश और ताड़ना परमेश्वर की ओर से थे ।काश कि उसने यह जाना होता। परमेश्वर ने ठोस प्रमाण दिया था कि इज़राइल की अगुवाई वह स्वयं कर रहा था। लेकिन कोरह और उसके सहयोगी प्रकाश का तब तक तिरस्कार करते रहे, जब तक कि वे इतने अन्धे हो गए कि परमेश्वर के सामर्थ्य के सबसे प्रभावशाली प्रदर्शन भी उन्हें विश्वास दिलाने के लिये पर्याप्त नहीं थे, उन सभी प्रदर्शनों का श्रेय उन्होंने मानवीय या शैतानी शक्ति को दिया। ऐसा ही उन लोगों ने किया जो कोरह के विनाश के तत्पश्चात मूसा और हारून के पास से कहते हुए, आए, "तुमने परमेश्वर के लोगों को मार डाला है।" बावजूद इसके कि उन्हें भ्रमित करने वालो लोगों के विनाश में, उनके पास उनके चुने हुए मार्ग पर परमेश्वर की अप्रसन्नता का सबसे अधिक विश्वसनीय प्रमाण था, यह घोषणा करते हुए कि शैतान की शक्ति के माध्यम से मूसा और हारून ने सिद्ध और भले मनुष्यों को मारा था, उन्होंने परमेश्वर की दण्डाज्ञाओं का उत्तरदायी शैतान को ठहराया। उनके इसी कृत्य ने उनके विनाश पर मुहर लगा दी। उन्होंने पवित्र आत्मा के विरूद्ध पाप किया था, वह पाप जिसके द्वारा, ईश्वरीय अनुग्रह के प्रभाव के प्रति, मनुष्य का हृदय प्रभावोत्पादक ढंग से कठोर हो जाता है। मत्ती 12:32में लिखा है, "जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध में कोई बात कहेगा, उसका यह अपराध क्षमा किया जाएगा, परन्तु जो कोई पवित्र आत्मा के विरोध में कुछ कहेगा, उसका अपराध न तो इस लोक में और न परलोक में क्षमा किया जाएगा।" ये शब्द हमारे उद्धारकर्ता द्वारा तब कहे गए जब परमेश्वर की सामर्थ्य के द्वारा जो अनुग्रह के कार्य उसने किये थे, उनका श्रेय यहूदियों ने शैतान को दिया। पवित्र आत्मा के माध्यम से परमेश्वर मनुष्यके साथ संपर्क करता है, और जो इस माध्यम से शैतानी मानकर जानबूझकर अस्वीकार करते है, वे स्वर्ग और प्राणी के बीच संपर्क का साधन नष्ट कर देते हैं। PPHin 409.2

परमेश्वर पापी को उसके पाप का एहसास दिलाने और उसको फटकारने के लिये अपनी पवित्र आत्मा की अभिव्यक्ति के द्वारा काम करता है, और यदि पवित्र आत्मा के कार्य को अन्तत: अस्वीकार कर दिया जाता है तो परमेश्वर मनुष्य के लिये और कुछ नहीं कर सकता। अनुग्रह का अन्तिम स्रोत भी उपयोग हो गया। अपराधी स्वयं को परमेश्वर से अलग कर लेता है और पाप के पास स्वयं को निरोग करने की कोई उपाय नहीं। ऐसी कोई आरक्षित शक्ति नहीं जिसके द्वारा परमेश्वर पापी के परिवर्तन और दोष-सिद्धि के लिये काम कर सके। पवित्र आज्ञा यह है कि “उसे अकेला छोड़ दो।” होगी 4:17, फिर “पापों के लिये कोई बलिदान बाकी नहीं! हां, दण्ड की भयानक प्रतीक्षा और कोध की भीष्ण अग्नि ही शेष रह जाते हैं, जो परमेश्वर के विरोधियों को भस्म कर देंगे ।”-इब्रानियों 10:26,27

अध्याय 36—निर्जन प्रदेश में

लगभग चालीस वर्षो तक इज़राइली मरूधर की गुमनामी में खो गए। मूसा कहता है, "हमारे कादेशबर्न को छोड़ने से लेकर जेरेद नदी पर होने तक अड़तीस वर्ष बीत गए, उस बीच में यहोवा की शपथ के अनुसार उस पीढ़ी के सब योद्धा छावनी में से नष्ट हो गए। और जब तक वे नष्ट न हुए तब यहोवा का हाथ उन्हें छावनी में से मिटा डालने के लिये उनके विरूद्ध बढ़ा ही रहा।"-व्यवस्थाविवरण 2:14,15 PPHin 411.1

इन वर्षो के दौरान लोगों को लगातार स्मरण कराया गया कि वे परमेश्वर द्वारा ताड़े जा रहे थे। कादेश में विद्रोह करके उन्होंने परमेश्वर का तिरस्कार किया था, और इस समय के लिये परमेश्वर ने उन्हें अस्वीकार कर दिया था। वे उसकी वाचा के प्रति अनिष्ठावान प्रमाणित हुए थे, इसलिये उन्हें वाचा का चिन्ह, खतना की विधि, नहीं मिलनी थी। दासत्व के देश लौट जाने की उनकी अभिलाषा ने उन्हें स्वतन्त्रता के अयोग्य ठहरा दिया था, और दास्तव से छुटकारे का स्मरण करने के लिये स्थापित फसह का पर्व नहीं मनाया जाना था। PPHin 411.2

लेकिन मिलाप वाले तम्बू की धर्मक्रिया होते रहना इस बात का प्रमाण था कि परमेश्वर ने अपने लोगों को पूरी तरह नहीं छोड़ दिया था। वह अभी भी उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति कर रहा था। उनके भ्रमण के इतिहास को दोहराते हुए मूसा ने कहा, "तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे हाथों के सब कामों के विषय तुम्हे आशीष देता आया है। इस विशाल जंगल में तुम्हारा चलना-फिरना वह जानता है, इन चालीस वर्षों में तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे संग-संग रहा है, और तुम को कुछ घटी नहीं हुई।" नेहम्याह द्वारा उल्लिखित लैवी का भजन, निर्वासन और बहिष्कार के वर्षो के दौरान भी परमेश्वर के इज़राइल के लिये दायित्व को विस्तारपूर्वक चित्रित करता है, "तब भी तूने, जो अति दयालु है, उनको जंगल में न त्याग, न तो दिन को अगुवाई करने वाला बादल उन पर से हटा, और रात को उजियाला देने वाला और उनका मार्ग दिखाने वाला आग का खम्भा। वरन् तू ने उन्हें समझाने के लिये अपने आत्मा को, जो भला है, दे दिया और अपना मनन्ना उन्हें खिलाना न छोड़ा, और उनकी प्यास बुझाने को पानी देता रहा। चालीस वर्षो तक तू जंगल में उनका ऐसा पालन पोषण करता रहा कि उनको कुछ घटी नहीं हुई, न तो उनके वस्त्र पुराने हुऔर न उनके पाँवो में सूजन हुईं। - नेहम्याह 9:19-21। PPHin 411.3

निर्जन प्रदेश में भटकना, केवल कुड़कड़ाने वालों और विद्रोहियों के लिये दण्डाज्ञा के तौर पर नियुकत नहीं की गई, वरन् वह उभरती हुई पीढ़ी के लिये, प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश करने की तैयारी के रूप में, अनुशासन की तरह थी। मूसा ने उनसे कहा, "जैसा कोई अपने बेटे को ताड़ना देता है वैसे ही तेरा परमेश्वर यहोवातुझ को ताड़ना देता है" "कि वह तुझे नम्र बनाए, और तेरी परीक्षा लेकर यह जान ले कि तेरे मन में क्या है कि तू उसकी आज्ञाओं का पालन करेगा या नहीं। उसने तुझ को

भूखा भी होने दिया, फिर वह मन्ना, जिसे न तू और न तेरे पुरखे ही जानते थे, वही तुझ को खिलाया, इसलिये कि वह तुझ को सिखाए कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं जीवित रहता, परन्तु जो जो वचन यहोवा के मुहँ से निकलते है उन ही से वह जीवित रहता है।" व्यवस्थाविवरण 8:5,2,3 PPHin 411.4

"उसने उसको जंगल में, और सुनसान गरजनेवालों से भरी हुई मरूभूमि में पाया, उसने उसका मार्गदर्शन किया, उसे निर्देश दिए और उसकी अपनी आंख की पुतली के समान सुधि रखी।" "उनके सारे संकट में उस ने भी कष्ट उठाया, और उसके सम्मुख रहने वाले दूत ने उनका उद्धार किया, प्रेम और कोमलता से उसने आप ही उनको छुड़ाया, उसने उन्हें उठाया और प्राचीनकाल से सदा उन्हें लिये फिरा। - व्यवस्थाविवरण 32:40, यशायाह 63:9 । PPHin 412.1

फिर भी बीहड़ में व्यतीत किए गए उनके जीवन के एकमात्र उल्लेख, परमेश्वर के प्रति विद्रोह के दृष्टाँत है। कोरह का विद्रोह चौदह हज़ार इज़राइलियों के विनाश में प्रमाणित हुआ। ईश्वरीय सत्ता के प्रति तिरस्कार की भावना दिखाने वाली और भी अलग-अलग घटनाएँ थी। PPHin 412.2

एक बार एक इज़राइली स्त्री और एक मिस्री के पुत्र ने, जो भिन्न जातियों केलोग मिस्र से इज़राइलियों के साथआये थे, अपने पड़ाव का स्थान छोड़ कर, इज़राइलियों के डेरे से घुसकर, अपना तम्बू वहाँ तानने के अधिकार की माँग करने लगा। पवित्र आज्ञा के अनुसार तीसरी पीढ़ी तक एक मिस्री के वंशजों को मण्डली से अलग कर दिया गया था, इसलिये वह अपना तम्बू इज़राइलियों के भाग में नहीं तान सकता था। उसके और एक इज़राइली के बीच विवाद छिड़ गया, और जब इस विषय को न्यायियों के समक्ष रखा गया तो निर्णय अपराधी के विरूद्ध दिया गया। PPHin 412.3

इस निर्णय से कोधित होकर, उसने न्यायी को शापित ठहराया और आवेग की अति में परमेश्वर के नाम का अपमान किया। उसे तत्काल मूसा के सम्मुख लाया गया। आदेश दे दिया गया था, "जो अपने पिता या माता को श्राप दे वह भी निश्चय मार डाला जाए।-निर्गमन 21:17 लेकिन इस विषय के प्रत्युत्तर के लिये कोई प्रयोजन नहीं बनाया गया था। यह अपराध इतना गंभीर था कि परमेश्वर के विशेष निर्देशन की आवश्यकता महसूस हुईं। परमेश्वर की इच्छा भली-भाँति ज्ञात होने तक उसे निगरानी में रखा गया। स्वयं परमेश्वर ने दण्डाज्ञा सुनाई, पवित्र निर्देश द्वारा ईश-निन्दा करने वाले को छावनी से बाहर ले जाकर पथराव द्वारा मार दिया गया। जो इस अपराध के साक्षी थे, उन्होंने अपने हाथ अपराधी के सिर पर रखे, और इस प्रकार उस परलगाये गए आरोप की सच्चाई को प्रमाणित किया। फिर उन्होंने पहले पत्थर मारे और इसके तत्पश्चात पास खड़े लोग दण्डाज्ञा कियान्वन में सम्मिलित हुए। PPHin 412.4

इसके बाद इसी प्रकार के अपराधों के निर्णय के लिये घोषणा की गई "और तू इज़राइलियों से कह कि जो कोई भी अपने परमेश्वर को श्राप दे उसे अपने पाप का भार उठाना पड़ेगा। यहोवा के नाम की निन्दा करने वाला निश्चय मार डाला जाए, सारी मण्डली के लोग निश्चय उस पर पथराव करें,

चाहे देशी हो चाहे परदेशी, यदि कोई उस नाम की निन्दा करे तो वह मार डाला जाए ।-लैवव्यवस्था 24:15,16। PPHin 413.1

ऐसे भी लोग है जो आवेग की अति में बोले गए शब्दों के लिये इतनी कठोर दण्डाज्ञा देने में परमेश्वर के प्रेम और उसकी न्ायायपरता पर आपत्ति करेंगे। लेकिन प्रेम और न्याय दोनों की यह माँग है कि परमेश्वर के विरूद्ध द्वेष से प्रोत्साहित कथनों को महापाप की श्रेणी में रखा जाए। पहले अपराधी को दिया गया दण्ड दूसरों के लिये इस बात की चेतावनी होगा कि परमेश्वर का नाम आदर के साथ लिया जाए। लेकिन यदि इस व्यक्ति के पाप को दण्डित नहीं किया जाता तो दूसरे नीतिभ्रष्ट हो जाते और इसके फलस्वरूप कई लोगों के जीवन बलिदान हो जाते। PPHin 413.2

जो मिली-जुली जातियाँ मिस्र से इज़राइलियों के साथ आई थी वे लगातार प्रलोभन और मुसीबत का स्रोत थीं। वे मूर्तिपूजा का त्याग कर सच्चे परमेश्वर की आराधनाका दावा तो करते थे, लेकिन उनकी प्रारम्भिक शिक्षा और प्रशिक्षण में उनके चरित्र और आचरण को ढाल दिया था और वे परमेश्वर का निरादर करने और मूर्तिपूजा से भ्रष्ट हो चुके थे। अधिकतर कलह उत्पन्न कराने वाले वहीं होते थे और वही सबसे पहले शिकायत करते थे; परमेश्वर के प्रति बड़बड़ाहट और अपनी मूर्तिपूजक रीतियों से उन्होंने छावनी को प्रभावित कर दिया। PPHin 413.3

निर्जन प्रदेश में लौटने के तत्पश्चात ही, सबत के उल्लंघन की घटना हुई, ऐसी परिस्थितियों में जिन्होंने उसे असाधारण पाप बना दिया। प्रभु की इस घोषणा ने कि वह इज़राइल का उत्तराधिकार समाप्त कर देगा, विद्रोह की भावना को उत्पन्न किया। कनान से बहिष्कृत होने पर कोधित और परमेश्वर की व्यवस्था को ललकारने के लिये दृढ़ संकल्प लिये एक व्यक्ति ने सबत के दिन लकड़िया इकट्ठा करने के लिये बाहर जाकर चौथी आज्ञा का खुले रूप से उल्लंघन करने का प्रयत्न किया। निर्जन प्रदेश में पड़ाव डालने के समय सप्ताह के सातवें दिन अग्नि प्रज्वलित करना निषिद्ध था। यह निषेधाज्ञा कनान प्रदेश पर लागू नहीं होनी थी, क्योंकि वहां की अतिविषम जलवायु के कारण आग का जलना एक आवश्यकता थी, लेकिन बीहड़ में गर्माहट के लिये आग की आवश्यकतानहीं थी। उस मनुष्य का कृत्य चौथी आज्ञा का स्वैच्छिक व जानबूझकर किया गया उल्लंघन था- एक पाप, विचारहीनता था अज्ञानता नहीं, वरन् पूर्व विचारित। PPHin 413.4

उसे रंगे हाथों पकड़ा गया और मूसा के सम्मुख लाया गया। यह घोषित कर दिया गया था कि सबत के उल्लघंन को मृत्यु से दण्डित किया जाएगा, लेकिन अभी यह स्पष्ट नहीं था कि दण्ड किस प्रकार दिया जाएगा। इस मामले को मूसा द्वारा प्रभु के सम्मुख लाया गया और निर्देश दिया गया, "वह मनुष्य निश्चय मार डाला जाए, सारी मण्डली के लोग छावनी के बाहर उस पर पथराव करें ।"-गिनती 15:35 । ईश-निंदा और सबत-उल्लंघन के पाप का दण्ड एक समान था, क्योंकि यह परमेश्वर की सत्ता के विरूद्ध घृणा की अभिव्यक्ति के बराबर था। PPHin 414.1

हमारे समय में भी कई लोग सृष्टि के सबत को यहूदी संस्थापन मान कर अस्वीकार कर देते है, और आग्रह करते हैं कि यदि इसका पालन किया जाना है, तो इसके उल्लघंन के लिये मृत्यु दण्ड दिया जाना चाहिये, लेकिन हम देखते हैं कि ईश-निन्दा के लिये भी सबत-उल्लघंन के समान दण्ड दिया गया। तो क्या हम यह निष्कर्ष निकाले कि तीसरी आज्ञा भी यहूदियों पर ही लागू होती है? लेकिन मृत्यु-दण्ड से प्राप्त युक्ति तीसरी, पाँचची और लगभग दसों आज्ञाओं व चौथी आज्ञा पर बराबरी से लागू होती है। हालांकि परमेश्वर भले ही अभी अपनी व्यवस्था के उल्लंघन को सांसारिक दंड से दण्डित न करे, लेकिन उसकावचन कहता है कि पाप का दण्ड मृत्यु है, और दण्डाज्ञा के निर्णायिक कियान्वन में यह स्पष्ट हो जाएगा कि जो उसकी पवित्र आज्ञाओं का उल्लघंन करते हैं उनके हिस्से में मृत्यु आती है। PPHin 414.2

निर्जन प्रदेश में पूरे चालीस वर्षो के दौरान, लोगों को प्रत्येक सप्ताह मन्ना के द्वारा सबत के पवित्र कर्तव्य का स्मरण कराया जाता था, लेकिन यह भी उन्हें आज्ञाकारिता की ओर नहीं ले गया। उल्लंघन करने की चेष्ठा नहीं की थी जैसा कि पहले किया गया था और जिसके लिये प्रतीकात्मक दण्डाज्ञा दी गई थी, फिर भी चौथी आज्ञा के पालन करने में गम्भीरता नहीं थी। अपने नबी द्वारा परमेश्वर कहता है, "मेरे विश्रामदिनों को अति अपवित्र किया। (यहेजकल 20:43) और इसकी गणना प्रतिज्ञा के देश से पहली पीढ़ी के बहिष्करण के कारणों में की गई है। फिर भी उनकी संतानों ने सबक नहीं सीखा। चालीस वर्षो में भटकने के दौरान सबत का उन्होंने इतना तिरस्कार किया, कि परमेश्वर ने भले ही उन्हें कनान में प्रवेश करने से नहीं रोका, लेकिन उसने घोषणा की कि प्रतिज्ञा के देश में उनके बस जाने के बाद उन्हें अधर्मियों के बीच तितर-बितर कर दिया जाए। PPHin 414.3

कादेश से इज़राइली निर्जन प्रदेश में लौट आए थे, और उनके पड़ाव का समय समाप्त होने के पश्चात्, "सारीइज़राइली मण्डली के लोग सिने नामक जंगल में आ गए और कादेश में रहने लगे ।"-गिनती 20:1 PPHin 415.1

यहाँ मरियम मृत्यु को प्राप्त हुई और उसे गाढ़ा गया। लाल समुद्र के छोर पर हर्षोल्लास के दृश्य से, जब इज़राइल यहोवा की विजय का उत्सव मनाने के लिये नाचते-गाते आगे को गए, निर्जन प्रदेश मे कब्र तक, जहाँ जीवन भर का भटकना समाप्त हुआ- यही उन हजारों लोगों का अन्त था जो मिस्र से ऊँची आशाएँ लेकर आए थे। पाप ने उनके होठों से आशीष का प्याला छीन लिया था। क्या अगली पीढ़ी सब सीखने वाली थी? PPHin 415.2

"इतने पर भी वे और अधिक पाप करते गए, और परमेश्वर के आश्चर्यकमों की प्रतीति नहीं की........जब वह उन्हें घात करने लगता, तब वे उसको पूछते थे, और लोटकर परमेश्वर को यत्न से खोजते थे। उनको स्मरण होता था कि परमेश्वर उनकी चट्टान था और परमप्रधान परमेश्वर उनका छुड़ानेवाला था ।"-भजन संहिता 78:32-35 फिर भी वे परमेश्वर की ओर नेक प्रयोजन से नहीं मुड़े। हालांकि जब उन्हें उनके शत्रुओं द्वारा पीड़ित किया गया, उन्होंने परमेश्वर से सहायता माँगी जो

उनके छुटकारे का एकमात्र स्रोत था, लेकिन “उनका हृदय उसके साथ नहीं था, न वे उसकी वाचा के विषय सच्चे थे। परन्तु वह जो दयालु है, वह उनके अधर्म को ढाँपता, और उन्हें नष्ट नहीं करता, वह बार-बार अपने कोध को ठण्डा करता है...... उसको स्मरण रहा कि ये नश्वर है, यह वायु के समान है जो चली जाती है और लौट कर नहीं आती ।” भजन संहिता 78:37-39। PPHin 415.3

अध्याय 37—वह चट्टान जिसपर चोट की गई

यह अध्याय गिनती 20:1-13 पर आधारित है

यह पहली बार हुआ था कि होरेब में उस चट्टान से वह जीवनदायी जल की नदी प्रवाहित हुई जिसने बीहड़ में इज़राइल की तृप्त किया। उनके भ्रमण के दौरान, जहाँ भी आवश्यकता पड़ती थी, उन्हें परमेश्वर की दया के चमत्कार के द्वारा जल प्रदान किया जाता था। लेकिन होरेब से जल बहता नहीं रहता था। जब भी उन्हें अपनी यात्रा में जल की आवश्यकता होती थी, वहीं पर, उनके पड़ाव के पास, चट्टान की दरारों से जल फूट पड़ता था। PPHin 416.1

वह मसीह था, जिसने अपने वचन की सामर्थ्य से, इज़राइल के लिये स्फर्तिदायक सरिता के प्रवाह को सम्भव किया। "सब ने एक ही आत्मिक जल दिया, क्योंकि वे उस आत्मिक चटटान से पीते थे जो उनके साथ-साथ चलती थी, और वह चट्टान मसीह था।"-1 कुरिन्थियों 10:4; वही सब सांसारिक और आत्मिक आशीषों का स्रोत था। मसीह, जो सच्ची चट्टान है, उनके भ्रमण के दौरान उनके साथ था। "वह जब उन्हें निर्जल देशों मं ले गया, तब वे प्यासे न हुए, उसने उनके लिये चटटान से पानी निकाला, उसने चटटान को चीरा और जल बह निकला ।" "निर्जल भूमि पर नदी बहने लगी ।"-यायाह 48:21, भजन संहिता 105:41। PPHin 416.2

वह चटटान जिस पर चोट की गई, मसीह का स्वरूप थी इस प्रतीक के माध्यम से सबसे अधिक महत्वपूर्ण आध्यात्मिक सत्य सिखाये जाते है। जैसे कि चोट की गई चट्टान सेजीवनदायी जल प्रवाहित हुआ, उसी प्रकार, "परमेश्वर का ताड़ा हुआ" "हमारे अपराधों के लिये घायल" "हमारे अधर्म के कार्या के कारण कुचला गया" मसीह पतित वंश के उद्धार की सरिता का स्रोत है। जिस प्रकार चट्टानों पर एक बार चोट की गई, उसी प्रकार मसीह को "बहुतों के पापों को उठा लेने के लिये" बलिदान होना था। (इब्रानियों 9:28)हमारे उद्धारकर्ता को दूसरी बार बलिदान नहीं होना था, जो उसके अनुग्रह की आशीष चाहते हैं उन्हें पश्चातापी प्रार्थना में अपनी हादिके अभिलाषा को व्यक्त करते हुए, केवल यीशु के नाम से माँगने की आवश्यकता है। ऐसी प्रार्थना सेनाओं के यहोवा के सम्मुख यीशु के घावों को ले आएगी और फिर जीवनदायी लहू की धारा फिर से बह निकलेगी, जिसका प्रतीक इज़राइल के लिये बहाया गया जीवनदायी जल है। PPHin 416.3

अत्यन्त हर्षोल्लास के प्रदर्शन के साथ, कनान में बस जाने के पश्चात, निर्जल प्रदेश में चटटान से जल के प्रवाहित होने को इज़राइलियों ने पर्व के रूप में मनाया । मसीह के समय में यह पर्व एक अत्यन्त प्रभावशाली धर्म किया बन गया था। मिलापवाले तम्बू के पर्व के अवसर पर जब पूरे देश के लोग यरूशेलेम में एकत्रित होते थे, तब यह धर्म-किया की जाती थी। पर्व के सात दिनों में प्रत्येक दिन याजक संगीत और लैवियों की गायक मण्डली के साथ, सिलोम के सोते से सोने के बर्तन में

जल लाने के लिये बाहर जाते थे। उनके पीछे-पीछे उपासको की भीड़ होती थी, जितने कि जलधारा के निकट पहुँचकर जल को ग्रहण कर सकते थे,और प्रफूल्लित धुनें बजती रहती थी, “तुम आनन्दपूर्वक उद्धार के सोतो से जल भरोगे ।”-यशायाह 12:3 । फिर याजकों द्वारा भरा हुआ जल, पवित्र भजन, “हे यरूशेलेम, तेरे फाटकों के भीतर, हम खड़े हो गए है” (भजन संहिता 122:2)और तुरही के स्वर के बीच मन्दिर में ले जाया जाता था। जल को होमबलि की वेदी पर उँडेल दिया जाता था, और इस दौरान जब स्तुति गान होता था, वाद्य-यन्त्रों और तुरहियों की कर्णप्रिय ध्वनि के साथ जनसाधारण जय-जयकार के साथ उनके साथ मिल जाते थे। PPHin 416.4

उद्धारकर्ता ने इस प्रतीकात्मक धर्म-किया का प्रयोग लोगों के मन उन आशीषों की ओर, जो देने के लिये वह संसार में आया था, आकर्षित करने के लिये किया। “पर्व के अन्तिम दिन, जो मुख्य दिन है” उसकी वाणी का उच्चारण मन्दिर के प्रॉगण में गूज उठा, “यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आए और पिए। जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्र शास्त्र कहता है, “उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियाँ बह निकलेंगी।” यहुन्ना कहता है, “उसने यह वचन पवित्र आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करनेवाले पाने पर थे ।”-यहुन्ना 7:37-39 । बंजर और सूखी भूमि में उमड़ता हुआ, निर्जल प्रदेश का हरा-भरा कराने वाला और मरने वालों की जीवन देने के लिये प्रवाहित होने वाला स्फूर्तिदायक जल, उस पवित्र अनुग्रह का प्रतीक है जो केवल मसीह प्रदान कर सकता है और यह उसी जीवन के जल के समान है, जो शुद्ध करता है, थकान दूर करता है और प्राण को सबल बनाता है। जिसमें मसीह का वास होता है, उसके अन्दरअनुग्रह और शक्ति का कभी न समाप्त होने वाला सोता है। यीशु अपने खोजियों के पथ को उज्जवल करता है और जीवन को उत्साहित करता है। उसके प्रेम को यदि हृदय में ग्रहण किया जाए तो वह सनातन जीवन के लिये अच्छे कार्यों में फलवन्त होता है। यह केवल उसी को आशीषित नहीं करता जिसमें यह फलवन्त होता है, वरन् यह जीवनदायी धारा, अपने चारों ओर के प्यासे लोगों को तृप्त करने के लिये धार्मिकता के कार्या और शब्दों में बहती है। PPHin 417.1

मसीह ने याकूब के कुएँ पर सामरी स्त्री के साथ वार्तालाप करते समस इसी उदाहरण का प्रयोग किया था,, “परन्तु जो कोई उस जल में से पीयेगा जो मैं उसे दूँगा, वह फिर अनन्तकाल तक प्यासा न होगा, वरन् जो जल मैं उसे दूँगा, वह उसमें एक सोता बन जाएगा, जो अनन्त जीवन के लिये उमड़ता रहेगा ।”-यहुन्ना 4:14 । मसीह इन दोनो का सम्मिश्रण है। वही चट्टान है, वही जीवनदायी जल है। PPHin 417.2

यही सुन्दर और अर्थपूर्ण उदाहरण सम्पूर्ण बाइबिल में प्रयोग किये गए है। मसीह के आगमन से सदियों पूर्व, मूसा ने उसकी ओर इज़राइल के उद्धार की चटटान जैसे होने का संकेत दिया (व्यवस्थाविवरण 32:15); भजन संहिता लिखने वाले ने उसे, “छुटकारा दिलाने वाला”, “जो चट्टान मुझसे ऊंची है”, “मेरे उद्धार का आधार,” “हृदय की चटटान” “मेरी शरण की चटटान” “मेरी चटटान

और मेरा गढ़" कहा है। दाऊद के भजन में उसके अनुग्रह को हरी तराईयों के बीच, शीतल 'सुखदायी जल' के रूप में चित्रित किया गया है, जिसके किनारे स्वर्ग का चरवाहा अपनी भेड़ो को चराता है। और फिर वह कहताहै, "तू अपनी सुख की नदी में से उन्हें पिलाएगा, क्योंकि जीवन का सोता तेरे ही पास है।"-भजन संहिता 19:174, 62:7, भजन संहिता 61:2, 71:26, 94:22, 23:2, 36:8,9। और बुद्धिमान पुरूष कहता है, "मनुष्य के मुहँ के वचन गहरा जल, और उमड़ने वाली नदी बुद्धि के सोते है।-नीतिवचन 18:4। यिर्मयाह के लिये यीशु "बहते जल का सोता है" और जकर्याह के लिये वह "मलिनता और पाप धोने के निमित एक बहता हुआ सोता है।"-यिर्मयाह 2:13, जकर्याह 13:1। PPHin 418.1

यशायाह उसका वर्णन "सनातन चट्टान" और "तप्त भूमि में बड़ी चटटान की छाया" के रूप में करता है।(यंगयाह 26:4, 32:2)। और इज़राइल के लिये प्रवाहित जीवनदायी धारा का स्पष्ट रूप से स्मरण कराते हुए, वह अमूल्य प्रतिज्ञा का उल्लेख करता है, "जब दीन और दरिद्र लोग जल ढूंढने पर भी न पाएं और उनका तालू प्यास के मारे सूख जाए, मैं यहोवा उनकी विनती सुनूँगा, मैं इज़राइल का परमेश्वर उनको त्याग न दूंगा।" "क्योंकि में प्यासी भूमि पर जल और सूखी भूमि पर धाराएँ बहाऊँगा" "जंगल में जल के सोते फूट निकलेंगे और मरूभूमि में नदियाँ बहने लगेंगी।" निमन्त्रण दे दिया गया है, "अहो, सब प्यासे लोगों, पानी के पास आओ।'"-यंगयाह 41:14, 44:3, यशायाह 55:6, 55:1। पवित्र वचन के अन्तिम पृष्ठों में यह निमन्त्रण गूंजता है। जीवन के जल की नदी, जो "यशब की तरह स्वच्छ" है, परमेश्वर और मेम्ने के सिंहासन से निकलती है, और युगों से अनुग्रहकारी बुलाहट सुनाई दे रहा है"जो प्यासा हो वह आए और जो कोई चाहे वह जीवन का जल ग्रहण कर ले।"- प्रकाशित वाक्य 22:17। इब्री सेना के कादेश पहुँचने के ठीक पहले, छावनी के निकट, इतने वर्षो से जो जीवनदायी जल बह रहा था, वह थम गया। यह फिर से लोगों को परखने का प्रभु का प्रयोजन था। उन्हें प्रमाणित करनाथा कि वे परमेश्वर के ईश्वरत्व में विश्वास करेंगे या अपने पित्रों के अविश्वास को अपनाएँगे। PPHin 418.2

अब वे कनान की पहाड़ियों को देख सकते थे। कुछ दिन और चलने के पश्चात वे प्रतिज्ञा के प्रदेश की सीमा पर पहुँच जाने वाले थे। वह एदोम से जो ऐसाब के वंशजो का था, और जिसमें से कनान का निर्धारित मार्ग होकर निकलता था, कुछ ही दूरी पर थे। मूसा को निर्देश दे दिया गया था, "तुम धूमकर उत्तर की ओर चलो। और तू प्रजा के लोगों को मेरी यह आज्ञा सुना कि तुम सेईर के निवासी अपने भाई एसावियों की सीमा के पास से होकर जाने पर हो, और वे तुम से डर जाएंगे। तुम उनसे भोजन मोल लेकर खा सकोगे, और मोल देकर कुओं से पानी भरकर पी सकोगे।" व्यवस्थाविवरण 2:3-6। यह निर्देश यह समझाने के लिये पर्याप्त थे कि उनका पानी का प्रयोजन क्यों समाप्त कर दिया गया था, वे कनान देश को एक सीधे मार्ग पर उपजाऊ और जलयुक्त देश में से होकर निकलने को थे। परमेश्वर ने उन्हें एदोम में से होकर निकलने वाले बाधारहित यात्रा, भोजन वस्तु खरीदने के अवसर और सेना के लियेपर्याप्त जल का आश्वासन दिया था। जल के

चमत्कारी प्रवाह का थम जाना, उनके बीहड़ में भटकने के अन्त के रूप में, प्रसन्नता का कारण होना चाहिये था। यदि वे अविश्वास में अन्धे न हुए होते तो वे यह समझ जाते। लेकिन जिस अवसर को परमेश्वर की प्रतिज्ञा का पूरा होने का प्रमाण होने चाहिये था, उसे सन्देह करने और कड़कड़ाने का अवसर बना दिया गया। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों लोग इस आशा को खो चुके थे कि परमेश्वर उन्हें कनान का स्वामित्व देगा और वे बीहड़ में मिली आशीषों के लिये चिल्लाने लगे। PPHin 419.1

कनान में प्रवेश करने से पूर्व, उन्हें यह प्रमाणित करना था कि वे परमेश्वर की प्रतिज्ञा में विश्वास करते थे। उनके एदोम पहुँचने से पहले पानी का बहना बन्द हो गया। यहाँ उनके पास दृष्टि के बजाय विश्वास के द्वारा चलने का अवसर था। लेकिन पहली परीक्षा ने उसी उपद्रवी, कृतज्ञहीन भावना को विकसित किया जैसी उनके पितरों द्वारा प्रदर्शित की गई थी। जैसे ही छावनी में पानी के लिये हाहाकार सुनाई पड़ा, वे उनके लिये इतने वर्षो से आवश्यकताओं को पूरी करने वाले हाथ को ही भूल गए, और सहायता के लिये परमेश्वर के पास जाने के बजाए, अपनी निराशा में यह कहकर, परमेश्वर के विरूद्ध बड़बड़ाने लगे, “भला होता कि हम उस समय ही मर गए होते, जब हमारे भाई यहोवा के सामने मर गए ।।”-गिनती 20:3। इसका तात्पर्य यह है वे चाहते थे किवे भी उस संख्या में होते जो कोरह के विद्रोह में नष्ट हो गए थे। PPHin 419.2

उनकी चिल्लाहट मूसा और हारून की ओर थी, “तुम यहोवा की मण्डली को इस जंगल ने क्यों ले आए हो कि हम अपने पशुओं समेत यहाँ मर जाएँ । और तुम ने हम को मिस्र से क्यों निकालकर इस बुरे स्थान में पहुँचाया हैं? यहां तो बीज, या अंजीर, या दाखलता, या अनार, कुछ नहीं है, यहां तक कि पीने का कुछ पानी भी नहीं है। PPHin 419.3

तब अगुवे मिलापवाले तम्बू के द्वार पर जाकर अपने मुह के बल गिरे। फिर से “यहोवा का तेज उनको दिखाई दिया” और मूसा को निर्देश दिया गया, “उस लाठी को ले, और तू अपने भाई हारून समेत मण्डली को इकटठा करके उनके देखते हुए उस चट्टान से बात कर, तब वह अपना जल देगी, इस प्रकार से तू चट्टान में से जल निकाल कर मण्डली के लोगों के लिये ला। PPHin 420.1

दोनों भाई मण्डली के आगे-आगे चले। मूसा के हाथ में परमेश्वर की लाठी थी। अब वे वृद्ध हो चले थे। अत्यन्त लम्बे समय से उन्होंने इज़राइल के हठीलेपन और अतिक्रमण को सहन किया था, लेकिन अब अन्त में, मूसा का धेर्य टूट गया। उसने कहा, “हे दंगा करने वालों सुनो, क्या हम को इस चटूटान में से तुम्हारे लिये जल निकालना होगा?” और चट्टान से बात करने के बजाय, जैसे कि परमेश्वर ने आदेश दिया था, उसने लाठी दो बार चट्टान पर मारी। PPHin 420.2

चट्टान में से मण्डली को सन्तुष्ट करने के लियेपानी बहुतायत से फूट निकला। लेकिन एक गम्भीर गलती की गईं थी। मूसा ने चिड़चिड़ी भावना से वह वाक्य कहा था। उसके कहे शब्द पवित्र कोध की अभिव्यक्ति ना होकर मानवीय आवेग का वचन था क्योंकि परमेश्वर का अपमान हुआ था। ‘हे दंगा करने वालों सुनो, “उसने कहा था। यह आरोप सही था, लेकिन सत्य को भी आवेग या

अधीरता से नहीं कहना चाहिये। जब परमेश्वर ने मूसा को इज़राइल पर उनके विद्रोह का दोषारोपण करने को कहा, तो वह आज्ञा उसके लिये कष्टदायक थी और इज़राइलियों के लिये भी असहनीय थी, लेकिन परमेश्वर ने सन्देश देने में उसकी सहायता की। लेकिन जब मूसा ने उन पर आरोप लगाना स्वयं के ऊपर ले लिया, तो उसने परमेश्वर के आत्मा को दुःख पहुँचाया और लोगों के लिये हानिकारक ठहरा। उसमें धैर्य और आत्म-संयम का अभाव स्पष्ट था। इस प्रकार लोगों को प्रश्न करने का अवसर मिल गया कि उसका पहले वाला तरीका परमेश्वर के निर्देशन में था या नहीं और अपने पापों को पाप न मानने का बहाना मिल गया। वे कहने लगे कि उसका तरीका प्रारम्भ से ही आलोचना और आक्षेप का विषय रहा था। अब उन्हें दास के माध्यम से भेजे गए परमेश्वर की असहमति या फटकार का तिरस्कार करने का मनचाहा बहाना मिल गया। PPHin 420.3

मूसा ने परमेश्वर में अविश्वास प्रकट किया। "क्या हम जल लेकर आए?" उसने प्रश्न किया, मानों परमेश्वर वह नहीं करता जिसकी उसने प्रतिज्ञा की थी। प्रभु ने दोनो भाईयों सेकहा, "तुम ने जो मुझ पर विश्वास नहीं किया मुझे इज़राइलियों की दृष्टि में पवित्र नहीं ठहराया ।" जब पानी का बहना थम गया, लोगों के बड़बड़ाने और विद्रोह से परमेश्वर की प्रतिज्ञा के पूरिपूर्ण होने में स्वयं उनका विश्वास डगमगा गया था। पहली पीढ़ी को बीहड़ में विनाश का दण्ड उनके अविश्वास के कारण मिला था, लेकिन उनकी सन्तान में वही भावना प्रकट हुई। क्या ये भी प्रतिज्ञा को पाने में असफल होंगे? थके हुए और निराश, मूसा और हारून ने लोकप्रिय भावना के प्रवाह को रोकने का कोई प्रयत्न नहीं किया था। यदि उन्होंने स्वयं परमेश्वर में अटल विश्वास प्रकट किया होता तो उन्होंने इस विषय को लोगों के सम्मुख ऐसे प्रकाश में रखा होता कि वे इस परीक्षा में खरे उतरने के योग्य हो जाते। न्यायियों के तौर पर उनमें निहित अधिकार के निर्णयात्मक, तत्पर अभ्यास से, वे लोगों की कुड़कड़ाहट को शान्त कर सकते थे। यह उनका कर्तव्य था कि उनके लिये काम करने हेतु परमेश्वर के कहने से पहले, स्थिति में सुधार लाने के लिये वे अपनी क्षमतानुसार प्रत्येक प्रयत्न करे। यदि कादेश में बड़बड़ाहट पर तत्परता से रोक लगा दी गई होती, बुराईयों का कितना लम्बा ताँता बन्धने से रोका जा सकता था! PPHin 420.4

अपने अविवेकपूर्ण कृत्य से मूसा ने उस सबक की नैतिक शक्ति समाप्त कर दी, जो परमेश्वर सिखाना चाहता था। चट्टान, मसीह का प्रतीक था, जिस पर एक बार चोट की गई, ठीक उसी प्रकार मसीह को भी एक बार बलिदान होना था [दूसरी बार चट्टान से केवल बात करने की आवश्यकता थी, जैसे कि हमें आशीषों को केवल यीशु के नाम से मांगने की आवश्यकता होती है। चट्टान पर दूसरी बार चोट करने से मसीह के उस सुन्दर स्वरूप का महत्व नष्ट हो गया था। PPHin 421.1

इससे बढ़कर, मूसा और हारून ने वह अधिकार धारण कर लिया था जो केवल मसीह का है। ईश्वरीय बीच-बचाव की आवश्यकता ने अवसर को धार्मिक किया का रूप दे दिया और इज़राइल के अगुवों को इसे परमेश्वर के प्रति आदर से लोगों को प्रभावित करने के लिये और उसकी अच्छाई

और समार्थ्य में उनके विश्वास को वृढ़ करने के लिये संशोधित करना चाहिये था। जब उन्होंने कोधित होकर कहा, "क्या हम इस चट्टान में से तुम्हारे लिये जल निकालकर लाए"? उन्होंने स्वयं को परमेश्वर के स्थान पर रख दिया, मानो सामर्थ्य स्वयं उन्ही में विद्यमान थी, जबकि वे मानवीय दुर्बलताओं और भावावेश से युक्त मनुष्य थे। लोगों की लगातार बड़बड़ाहट से थका हुआ, मूसा अपने सर्वशक्तिमान परमेश्वर को भूल गया और ईश्वरीय सामर्थ्य के अभाव में उसके लिये मानवीय दुर्बलता के प्रदर्शन द्वारा अपने कीर्तिमान को क्षति पहुँचाने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा था। जो व्यक्ति अपना कार्य सम्पन्न करने तक शुद्ध, दृढ़ और निःस्वार्थ रह सकता था, पराजित हो चुका था। इज़राइल की प्रजा के सम्मुख परमेश्वर का अनादर हुआ था, उस समय जब उसकी अत्याधिक प्रशंसा और महिमाकी जानी चाहिये थी। PPHin 421.2

इस अवसर पर परमेश्वर ने उन पर दण्डाज्ञा की घोषणा नहीं की जिनकी युक्ति ने मूसा और हारून को इस प्रकार उत्तेजित किया था। सारी ताड़ना अगुवों को मिली। जो परमेश्वर के प्रतिनिधियों के रूप में खड़े हुए थे, उन्होंने उसका मान नहीं रखा था। मूसा और हारून स्वयं व्यथित थे, इस तथ्य को अनदेखा कर कि लोगो का बुड़बुड़ाना उनके प्रति नहीं वरन् परमेश्वर के विरूद्ध था। अपने ही बारे में सोचने से, स्वयं से सहानुभूति रख कर, वे अनजाने में पाप में पड़ गये और लोगों के सम्मुख उनके पाप परमेश्वर के सम्मुख रखने में असफल रहे। PPHin 422.1

तत्काल घोषित दण्डाज्ञा अत्यन्त अपमानजनक और कठोर थी। "परन्तु मूसा और हारून से यहोवा ने कहा, "तुम ने जो मुझ पर विश्वास नहीं किया और मुझे इज़राइलियों की दृष्टि में पवित्र नहीं ठहराया, इसलिये तुम इस मण्डली को उस देश में पहुँचाने न पाओगे जिसे मैंने उन्हें दिया है।" विद्रोही इज़राइल के साथ उन्हें यरदान पार करने से पहले मृत्यु को प्राप्त होना था। यदि ताड़ना और ईश्वरीय चेतावनी के होते हुए, मूसा और हारून आवेशपूर्ण भावना में लिप्त होते या स्वाभिमान को संजोय रखते, तो उनका दोष और भी गम्भीर हो जाता। लेकिन उन पर स्वैच्छिक या जानबूझकर किये गए पाप को आरोप नहीं लगा, क्योंकि वे अचानक आई परीक्षा में पड़ गए थे और उनका पश्चताप हार्दिक और तत्काल था। परमेश्वर ने उनके प्रायश्चित को स्वीकार किया, यद्यपि उनका पाप लोगों में क्षति पहुँचा सकता था उसकी दण्डाज्ञा को क्षमा नहीं किया जा सकता था। PPHin 422.2

मूसा ने अपने दण्ड को गुप्त नहीं रखा, बल्कि लोगों से कहा कि क्योंकि वह परमेश्वर को महिमा पहुँचाने में असफल रहा, इसलिये वह उनका प्रतिज्ञा के देश में नेतृत्व नहीं कर सकता था। उसने उन्हें उसको दी गई दण्डाज्ञा पर ध्यान देने को कहा, और उसके बाद मनन करने को कहा कि जिस दण्डाज्ञा के लिये वे अपने पापों के कारणवश दोषी थे उसका आरोप एक तुच्छ मनुष्य पर लगाकर बड़बड़ाने को परमेश्वर किस तरह सहन करेगा। उसने उन्हें यह भी बताया कि किस तरह उसने दण्डाज्ञा की क्षमा के लिये परमेश्वर से विनती की थी, लेकिन उसकी विनती स्वीकार नहीं की गई।"

परन्तु यहोवा तुम्हारे कारण मुझ से रूष्ठ हो गया और मेरी न सुनी ।"-व्यवस्थाविवरण 3:26 । PPHin 422.3

परीक्षा या कठिनाई के प्रत्येक अवसर पर इज़राइली मूसा पर मिस्र से उन्हें लिवा लाने का आरोप लगाने को तत्पर रहते थे, मानो परमेश्वर की इस विषय में कोई भूमिका नही थी। अपनी सभी यात्राओं के दौरान जब मार्ग में आई कठिनाईयों की शिकायत की थी और अपने अगुवों के विरूद्ध कुड़कुड़ाए थे, तब मूसा ने कहा था, "तुम्हारा बुड़बुड़ाना परमेश्वर पर है, वो में नहीं, वरन् परमेश्वर है जिसने तुम्हें छुटकारा दिलाया है।" लेकिन चट्टान के सम्मुख उसके ये अविवेकपूर्ण शब्द, "क्या हम जल निकालकर लाएँ"?उन पर लगाए गए लोगों के आरोप का वास्तविक अंगीकार था, और उनके अविश्वास की पुष्टि करता था और उनकी बुड़बुड़ाहट को सही ठहराता था। प्रतिज्ञा के देश में मूसा का प्रवेश निषेध कर, परमेश्वर उनके मनों से यह प्रभाव हमेशा के लिये मिटा देना चाहता था। इसमें अचूक प्रमाण था कि मूसा उनका अगुवा नहीं था वरन् वह स्वर्गदूत जिसके बारे में परमेश्वर ने कहा, "सुन, मैं एक दूत तेरे आगे-आगे भेजता हूँ जो मार्ग में तेरी रक्षा करेगा, और जिस स्थान को मैं ने तैयार किया है उसमें तुझे पहुँचाएगा। उसके सामने सावधान रहा, और उसकी बात मानना........इसलिये कि उसमें मेरा नाम रहता है ।"-निर्गमन 23:20,21 । PPHin 422.4

मूसा ने कहा, "यहोवा तुम्हारे कारण मुझसे रूष्ठ हो गया।" सभी आँखें मूसा पर लगी हुई थी और उसके पाप की परछाईं परमेश्वर पर पड़ी, जिसने उसे अपने लोगों का अगुवा नियुकक्त किया था। पाप पूरी प्रजा को ज्ञात था, और यदि इसे गम्भीरता से नहीं लिया जाता तो वो इस धारणा को जन्म देता कि महत्वपूर्ण पदों वालों में उकसाहत की अति की स्थिति में अविश्वास और अधीरता को क्षमा किया जा सकता है। लेकिन जब यह घोषण की गई कि उस एक पाप के कारणवश हारून और मूसा कनान प्रदेश में प्रवेश नहीं कर सकते थे, लेकिन लोगजान गये कि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं लेता, और यह कि वहआज्ञा का उल्लंघन करने वाले को अवश्य ही दण्डित करेगा। PPHin 423.1

इज़राइल का इतिहास, आने वाली पीढ़ियों के लिये चेतावनी और निर्देशन के लिये उल्लिखित किया जाना था। भविष्य की पीढ़ियों के लिये स्वर्ग के परमेश्वर को एक निष्पक्ष शासक के रूप में देखना आवश्यक था, जो पाप को कभी भी न्यायसंगत नहीं ठहराता है। लेकिन बहुत कम है जो पाप की अत्यधिक पापमयता को समझते है। मनुष्य स्वयं को सांत्वना देता है कि परमेश्वर इतना भला है कि वह आज्ञा उललघंन करने वाले को दण्ड नहीं देगा। लेकिन बाइबल के इतिहास के प्रकाश में यह स्पष्ट है कि परमेश्वर की भलाई और उसका प्रेम उसे पाप को विश्व की शान्ति और खुशहाली के लिये घातक बुराई मानकर, वैसा ही बर्ताव करने को वचनबद्ध करता है। PPHin 423.2

मूसा की सत्यनिष्ठा और विश्वसनीयता भी उसकी गलती के प्रतिफल को टाल नहीं सके। परमेश्वर ने लोगों के इससे गम्भीर पाप भी क्षमा किये थे, लेकिन वह अगुवे के पापों के साथ वैसा बर्ताव नहीं कर सकता था जैसा कि उसका अनुसरण करने वालों के साथ करता ।उसने मूसा को धरती के सभी अन्य पुरूषों से अधिक सम्मानीय ठहराया था। उसने अपना तेज उस पर प्रकट किया था, और उसके माध्यम से अपनी आज्ञाओं को इज़राइल तक पहुँचाया था। मूसा को अधिक मात्रा में प्रकाश और ज्ञान का लाभ उठाया था, इसलिये उसका पाप और गम्भीर हो गया था। पिछली सत्यनिष्ठा एक गलत कृत्य की क्षतिपूर्ति नहीं कर सकती। मनुष्य को जितने अधिक विशेषाधिकार और प्रकाश प्रदान किये जाते हैं, उतना ही बड़ा उनका उत्तरदायित्व होता है, उसकी असफलता उतनी ही भारी होती है, और उसका दण्ड उतना ही कठोर होता है। PPHin 423.3

मनुष्य के दृष्टिकोण से, मूसा किसी जघन्य अपराध का दोषी नहीं था, उसका पाप साधारणतया होने वाले पापों में एक था। भजन संहिता में 106:33में कहा गया है, “मूसा बिना सोचे बोल उठा।” मानवीय निर्णय के अनुसार यह साधारण प्रतीत हो सकता है, लेकिन यदि परमेश्वर ने अपने सबसे निष्ठावान और सम्मानीय दास इस पाप के साथ इतनी कठोरता से व्यवहार किया, वह अन्य व्यक्तियों में इसे क्षमा नहीं करेगा। आत्म प्रशंसा की भावना, अपने भाई-बन्धुओं की निंदा करने की प्रवृति, परमेश्वर को अप्रसन्न करती है। जो इन पापों में पड़ते है, वे परमेश्वर के काम को सन्देहास्पद बना देते हैं, और सन्देहवादियों को उनके अविश्वास का बहाना दे देते है। जितना महत्वपूर्ण किसी का पद, और जितना अधिक उसका प्रभाव होता है, उसे दीनता और धेर्यशीलता विकसित करने की उतनी ही अधिक आवश्यकता होती है। PPHin 424.1

यदि परमेश्वर की सन्तानों को विशेषकर उन्हें जो उत्तरदायित्व वाले पदों पर कार्यरत है, परमेश्वर को द्वारा महिमा को स्वयं ले लेने को मनाया जा सकता है, तो शैतान अत्यन्त प्रसन्न होता है। उसने विजय पा ली होती है। इसी प्रकार उसका पतन हुआ था। इसी प्रकार वह दूसरे को विनाश की ओर प्रलोभित करने में सबसे अधिक सफल होता है। हमें शैतान की युक्तियों से सावधान करने के लिये परमेश्वर ने अपने वचन में आत्म-प्रशंसा के खतरे का ज्ञान देने के लिये सबक दिये है। हमारे स्वभाव की ऐसी कोई तीव्र इच्छा नहीं, मस्तिष्क की ऐसी कोई क्षमता या हृदय को कोई ऐसा झुकाव नहीं, जिसे प्रत्येक क्षण, परमेश्वर के आत्मा के नियन्त्रण में होने की आवश्यकता ना हो। मनुष्य को परमेश्वर द्वारा दी गई ऐसी कोई आशीष नहीं, ना ही उसके द्वारा अनुमति प्राप्त कोई परीक्षा है, सिवाय इसके कि यदि हम शैतान को तनिक भी सुवअसर दे तो, वह हमें बर्बाद करने और सताने व प्रलोमित के लिये, इन्हीं का प्रयोग कर सकता है और करेगा। अत: किसी के पास कितना ही आध्यात्मिक प्रकाश क्यों ना हो; उसे कितनी ही आशीषें और परमेश्वर की कृपा दृष्टि प्राप्त क्यों न हो, उसे परमेश्वर के सम्मुख सर्वदा दीन होकर रहना चाहिये, और यह प्रार्थना करते रहने चाहिये कि परमेश्वर उसके प्रत्येक विचार को निर्देशित करेगा और उसकी प्रत्येक तीव्र इच्छा को नियन्त्रित करेगा। PPHin 424.2

वे सब जो धार्मिकता का दावा करते हैं, आत्मासुरक्षा के लिये और सबसे अधिक उकसाहट की स्थिति में आत्मा-संयम का अभ्यास करने के लिये कर्तव्यबद्ध है। मूसा के ऊपर रखे गये उत्तरदायित्व को बोझ अधिक था, कुछ ही लोग होंगे जिन्हें उसके समान इतनी कठोरता से परखा जाएगा, फिर भी उसके पाप की क्षमा के लिये इसकी अनुमति नहीं दी गईं। परमेश्वर ने अपने लोगों के लिये बहुतायत से प्रयोजन किया है, यदि वे उसके सामर्थ्य पर निर्भर करेंगे, तो वे कभी भी परिस्थितियों को खिलौना नहीं बनेंगे। सबसे मोहक प्रलोभन भी पाप को क्षमा नहीं दिला सकता। मन और मस्तिष्क पर सहन करने को कितना ही दबाव क्यों न हो, आज्ञा उललघंन हमारा निजी कृत्य है। किसी को पाप करने के लिये बाध्य करना पृथ्वी या नरक के बस में नहीं हैं। शैतान हमारे दुर्बल पक्ष पर प्रहार करता है, लेकिन यह आवश्यक नहीं कि हम पराजित हों। आक्रमण कितना ही अप्रत्याशित या सशक्त क्यों न हो, परमेश्वर ने हमारे लिये सहायता प्रदान की है, उसकी सामर्थ्य से हम विजय प्राप्त कर सकते हें PPHin 425.1

अध्याय 38—एदोम के चारों ओर की यात्रा

यह अध्याय गिनती 20:144-29, 21:1-9 पर आधारित है

कादेश में इज़राइल का पड़ाव एदोम की सीमाओं से कुछ ही दूरी पर था, और मूसा और लोग दोनों ही प्रतिज्ञा के देश को ऐदोम से होकर जाने वाले मार्ग से जाने के इच्छुक थे। तदनुसार, जैसे परमेश्वर ने उन्हें निर्देश दिया था, उन्होंने ऐदोम के राजा के पास सन्देश भेजा- PPHin 426.1

"तेरा भाई इज़राइल यों कहता है, हम पर जो जो क्लेश पड़े है, वह तू जानता होगा, अर्थात यह कि हमारे पुरखा मिस्र में गए थे, और हम मिस्र में बहुत दिन रहे, और मिस्रियों ने हमारे पुरखाओं के साथ और हमारे साथ भी बुरा बर्ताब किया । परन्तु जब हम ने यहोवा की दुहाई दी तब उसने हमारी सुनी और एक दूत को भेजकर हमे मिस्र से निकाल ले आया है, इसलिये अब हम कादेश नगर में है जो तेरी सीमा पर ही है। अत: हमे अपने देश से होकर जाने थे: हम किसी खेता या दाख की बारी से होकर न चलेंगे, और क्ुओं का पानी नहीं पिएंगे, सड़क-सड़क होकर चले जाएंगे और जब तक तेरे देश से बाहर न हो जाएं, तब तक न दाहिने न बाएं मुड़ेंगे।" PPHin 426.2

इस नम्रर निवेदन को एक चुनौतीपूर्ण अस्वीकृति के रूप में प्रत्युत्तर मिला। "तू मेरे देश में होकर मत जा,नहीं तो मैं तलवार लिये हुए तेरा सामना करूंगा।" PPHin 426.3

इस प्रतिरोध से अचम्भित, इज़राइल के अगुवों ने राजा को दूसरा निवेदन इस आश्वासन के साथ भेजा, "हम राजमार्ग से ही जाएंगे, और यदि और हमारे पशु तेरा पानी पीएं, तो हम उसका दाम देंगे, हम को और कुछ नहीं, केवल पांव-पांव चलकर जाने दे।" PPHin 426.4

परन्तु राजा ने कहा, "तुम निकल कर नहीं जाआंगे।" कठिन रास्तों पर एदोमीयों के सशस्त्र जत्थे पहले से ही पदस्थापित थे, जिससे कि उस दिशा में शान्तिपूर्वक क्च करना असम्भव था, और इब्रियों को बल का प्रयोग करना निषिद्ध था। उनको एदोम प्रदेश के बाहर-बाहर घूमकर लम्बी यात्रा पर जाना पड़ा। PPHin 426.5

परीक्षा के समय, यदि लोगों ने परमेश्वर पर विश्वास किया होता, तो यहोवा की सेना का कप्तान उन्हें एदोम में से निकाल कर ले गया होता, और एदोम के निवासियों में उनका डर बैठ जाता, जिससे कि शत्रुता प्रकट करने के बजाय, वे कृपा दृष्टि दिखाते। लेकिन इज़राइलियों ने तत्परता से परमेश्वर का कहा नहीं माना और जब वे कुड़कड़ाहट रहे थे और शिकायत करने में लगे हुए थे, वह सुअवसर उनके हाथों से निकल गया ।आखिरकार जब वे इस राजा के पास अपना निवेदन करने को तैयार हुए,उसे अस्वीकार कर दिया गया। जब से उन्होंने मिस्र छोड़ा था, शैतान उनके मार्ग में प्रजोभन और बाधाएं उत्पन्न करने में प्रयत्नशील था, ताकि वे कनान के उत्तराधिकारी न बन सके।

और अपनेअविश्वास के कारण, वे शैतान के लिये परमेश्वर के उद्देश्य का प्रतिरोध करने के लिये लगातार द्वार खोलते आए थे। PPHin 426.6

परमेश्वर के वचन पर विश्वास करना और उस पर तत्परता से काम करना आवश्यक होता है जब उसके स्वर्गदूत हमारे लिये कार्य करने की प्रतीक्षा में होते हैं। शैतान के दूत प्रत्येक बढ़ाए हुए कदम का विरोध करने को तैयार रहते हैं। और जब परमेश्वर पूर्व-विचार में अपने बच्चों को आगे बढ़ने को कहता है, जब वो उनके लिये महान कार्य करने को तैयार रहता है, शैतान उन्हें विलम्ब और हिचकिचाहट द्वारा परमेश्वर को अप्रसन्न करने के लिये उकसाता है, वह उनमें विद्रोह की भावना उत्पन्न करने की, या कड़कड़ाहट और अविश्वास जागृत कर उन्हें उन आशीषों से वंचित रखना चाहता है जो परमेश्वर उन्हें देना चाहता है। परमेश्वर के दासों को प्रत्येक क्षण, परमेश्वर द्वारा रास्ता खोले जाने पर कूच करने के लिये सर्वदा तैयार रहना चाहिये। उनकी ओर से विलम्ब शैतान को उनको पराजित करने हेतु कार्य करने का समय देता है। PPHin 427.1

एदोमियों के इज़राइलियों द्वारा भयभीत होने की घोषणा के तत्पश्चात् एदोम से होकर जाने वाले मार्ग से सम्बन्धित, परमेश्वर द्वारा मूसा को दिये गए.पूर्व निर्देश के अनुसार, उसके लोगों को इस अनुकल परिस्थिति का उनके विरूद्ध प्रयोग करने को मना किया गया था। क्योंकि परमेश्वर का सामर्थ्य इज़राइल के लिये कार्यरत था, और इसलिये कि एदोमियों का डर उन्हें आसान शिकार बना देता, इब्रियोंकों उनपर आक्रमण नहीं करना था। व्यवस्थाविवरण 2:4,5में लिखा है, “तुम बहुत चौकस रहो, उन्हें न छेड़ना, क्योंकि उनके देश में से मैं तुम्हें पांव रखने की जगह तक न दूँगा, इस कारण कि मैंने सेईर पर्वत एसावियों के अधिकार में कर दिया है”। एदोम अब्राहम और इसहाक के वंशज थे, और अपने इन्हीं दासों की खातिर, परमेश्वर की ऐसाव के बच्चों पर कृपा दृष्टि थी। उसने उन्हें सेईर पर्वत का स्वामित्व दिया था, और उन्हें तब तक नहीं छोड़ा जाना था, जब तक उनके पाप उसकी कृपा की सीमा को लाँघ न जाएं। इब्रियों को कनान के निवासियों को निर्वासित और सरासर नष्ट कर देना था, क्योंकि उनके पापों का घड़ा भर चुका था, लेकिन एदोमी अभी परिवीक्षाधीन ही थे, और इस कारण उनके साथ करूणामय व्यवहार होना था। परमेश्वर दया करने में आनन्दित होता है, और वह दण्डाज्ञा देने से पहले अपनी संवेदना को प्रकट करता है। वह इज़राइलियों को एदोम के लोगों को छोड़ देने की शिक्षा देता है, इससे पहले कि वे कनान के निवासियों का सर्वनाश करते। PPHin 427.2

एदोम और इजराईल के पूर्वज भाई थे, और इस रीति से उनके बीच भाईयों जैसी दयालुता और कृतज्ञता होना आवश्यक था। इज़राइलियों को, उस समय या भविष्य में किसी भी समय, एदोम के रास्ते निकलकर जाने की अस्वीकृति द्वारा अपमान का प्रतिशोध लेने को मना किया गया था। उन्हें एदोम प्रदेश के किसी भी भाग पर अपना अधिकार होने की अपेक्षा नहीं करनी थी। इज़राईली परमेश्वर की कृपा-दृष्टि के पात्र और उसके चुने हुए लोग थे, इसलिये उसके द्वारा लगाए गए प्रतिबन्धों

का उन्हें अवश्य पालन करना था। परमेश्वर ने उन्हें एक अच्छी विरासत का आश्वासन दिया था, लेकिन उन्हें यह भावना नहींरखनी थी कि पृथ्वी पर केवल उन्हीं के पास अधिकार थे और अन्य किसी के पास नहीं। एदोमियों के साथ उनके समस्त पारस्पारिक व्यवहार में उनके प्रति अन्याय करने से सावधान रहने का उन्हें निर्देश था। मूल्य चुकाकर, वे उनसे आवश्यक वस्तुओं को खरीदकर उनके साथ व्यापार कर सकते थे। परमेश्वर के वचन का पालन करने और उस पर विश्वास करने के लिये प्रोत्साहन के रूप में उन्हें स्मरण कराया गया, “तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे हाथों के सब कामों के विषय तुम्हें आशीष देता आया है, और तुम को कुछ घटी नहीं हुई ।”-व्यवस्थाविवरण 2:7। वे एदोमियों पर निर्भर नहीं थे, क्योंकि उनके साथ वह परमेश्वर था जो साधनों में सम्पन्न था। स्वयं से कुछ भी सम्बन्धित उन्हें बल या छल से प्राप्त करने का प्रयत्न नहीं करना था, किन्तु अपने पारस्पारिक व्यवहार में ईश्वरीय व्यवस्था के सिद्धान्त का उदाहरण होना था, “अपने पड़ौसी से वैसा ही प्रेम कर जैसा तू स्वयं से करता है।’ PPHin 428.1

यदि उन्होंने इस रीति से एदोम को पार किया होता, जैसा परमेश्वर का प्रयोजन था, उनका जाना, उन्हीं के लिये नहीं, वरन् उस प्रदेश के वासियों के लिये भी आशीष सिद्ध होता, क्योंकि उन्हें परमेश्वर की आराधना और उसके लोगों से परिचित होने का अवसर प्राप्त होता और वे देख पाते कि किस प्रकार याकूब का परमेश्वर उससे प्रेम रखने वालों और उसका भय मानने वालों को समृद्ध करता है। लेकिन इज़राइल के अविश्वास ने इस सब पर रोक लगा दी। उनकी चिल्लाहट के उत्तर में परमेश्वर ने लोगों को पानी दिया था, लेकिन उसने उनके अविश्वास को अपना दण्ड निर्धारित करने की अनुमति दे दी। फिर से उन्हें मरूस्थल का पारगमन करना था और जल के चमत्कारी सोते से अपनी प्यास बुझानी थी, जिसकी, यदि उन्होंने परमेश्वर पर विश्वास किया होता तो, आवश्यकता नहीं पड़ती। PPHin 428.2

तदानुसार, इज़राइल की सेना दक्षिण की ओर मुड़ गई और अनुपजाऊ बंजर भूमि पर चल पड़ी जो एदोम की घाटियों और पहाड़ो के हरे-भरे स्थानों की झलक के बाद और भी अधिक नीरस प्रतीत हो रही थी। इस अरोचक मरूभूमि की सीमान्तर पर्वत श्रंखला से होर पर्वत उठता है, जिसके शिखर पर हारून की मृत्यु होनी थी और उसे दफनाया जाना था। जब इज़राईली इस पर्वत पर पहुँचे, पवित्र आज्ञा मूसा को संबोधित की गईं- “हारून और उसके पुत्र एलीआजार को होर पहाड़ पर ले चल, और हारून के वस्त्र उतारकर उसके पुत्र एलीआजर को पहना, तब हारून वहीं मरकर अपने लोगों में जा मिलेगा।” PPHin 429.1

साथ-साथ ये दोनों वृद्ध-पुरूष और वह नौजवान पर्वत की ऊंचाई पर चढ़े। मूसा और हारून के केश साठ शीत ऋतुओं की हिम से श्वेत हो चुके थे। उनका लम्बा व घटनापूर्ण जीवन महानतम सम्मानों और एसी अगाघ परीक्षाओं से प्रख्यात था जैसी कभी ही किसी मनुष्य के हिस्से में आई हों। वे अद्भुत स्वाभाविकयोग्यता के धनी थे और उनकी प्रत्येक क्षमता सनातन परमेश्वर के साथ संगति

के द्वारा विकसित, उन्नत और प्रतिष्ठित हुई थी। उनका जीवन परमेश्वर और उनके सह-वासियों की निःस्वार्थ सेवा में व्यतीत हुआ था, उनकी मुखाकृतियाँ महान बुद्धिजीवी क्षमता, उद्देश्य की उत्कृष्टता और दृढ़ता, और घनिष्ठ प्रेम का प्रमाण देती थी। PPHin 429.2

कई वर्षो तक मूसा और हारून अपने दायित्व और कर्तव्य में साथ-साथ खड़े रहे थे। एक साथ उन्होंने असंख्य खतरों का सामना किया था और परमेश्वर की प्रतीकात्मक आशीषों को एक साथ बांटा था, लेकिन अब उनके अलग होने का समय निकट आ गया था। वे अत्यन्त धीमी गति से चल रहे थे, क्योंकि संगति का प्रत्येक क्षण अनमोल था। चढ़ाई खड़ी व दुर्गन थी, और जब वे प्राय: विश्राम करने के लिये रूकते थे, वे बीते समय और भविष्य के बारे में बातचीत करते थे। उनके सामने, जहाँ तक दृष्टि पहुँचती थी, उनके बीहड़-भ्रमण के दृश्य फैले थे। नीचे मैदान में इज़राइलियों की विशाल सेना पड़ाव डाले हुए थी, जिनके लिये इन चुने हुये पुरूषों ने अपने जीवन का उत्तम भाग व्यतीत किया था, जिनके कल्याण के लिये उन्होंने अत्यन्त गहरी रूचि की अनुभूति की थी और महान बलिदान दिये थे। एदोम के पर्वतों के पार कहीं वह रास्ता था जो प्रतिज्ञा के देश जाता था- वह देश जिसकी आशीषों का आनन्दमूसा और हारून के हिस्से में नहीं था। उनके हृदयों में व्रिदोही भावनाओं का कोई स्थान नहीं था, उनके होठों से कुड़कुड़ाहट की कोई अभिव्यक्ति नहीं होती थी, लेकिन फिर भी जब उन्हें अपने पितरों की विरासम से वंचित होने का कारण स्मरण होता था, तो उनके मुख पर गम्भीर उदासी छा जाती थी। PPHin 429.3

इज़राइल के लिये हारून का कार्य सम्पन्न हो चुका था। चालीस वर्ष पूर्व, जब वह तिरासी वर्ष का था, परमेश्वर ने उसे मूसा के महान और महत्वपूर्ण कार्य में हाथ बॉटने के लिये बुलाया था। उसने मिस्र से इज़राइलियों को निकाल लेने में मूसा का सहयोग किया। उसने महान अगुवे के हाथों को उठाए रखा, जब इब्री सेना अमालेकियों से लड़ रही थी। उसे सिने पर्वत पर चढ़ने की , परमेश्वर की उपस्थिति में जाने की और शाश्वत महिमा के दर्शन करने की अनुमति प्राप्त थी । याजकता का कार्यभार हारून के परिवार को प्रदान किया गया था और उसे महायाजक के पवित्र अभिषेक से परमेश्वर ने सम्मानित किया था। कोरह और उसके दल के विनाश में, पवित्र दण्डाज्ञा के भयानक प्रदर्शन द्वारा उसने हारून को उसके पवित्र पद पर सुरक्षित रखा। हारून की मध्यस्थता के माध्यम से विपत्ति को स्थगित किया गया। जब उसके दो पुत्रों को परमेश्वर की स्पष्ट आज्ञा की अवमानना के लिये मृत्युदण्ड दिया गया, उसने ना तो विरोध किया और ना हीवह बड़बड़ाया। फिर भी उसके उत्कृष्ट जीवन का अभिलेख कलंकित हो गया था। हारून ने एक जघन्य अपराध किया जब उसने लोगों की चिल्लाहट के सम्मुख समर्पण कर सिने में सोने का बछड़ा बनाया, और फिर जब वह मूसा के विरूद्ध बड़बड़ाने और ईर्ष्या करने में मरियम के साथ एक हो गया। और कादेश में चट्टान से पानी को प्रवाहित करने के लिये उससे बात करने की आज्ञा का उल्लंघन करके मूसा ओर हारून ने परमेश्वर को खेदित किया। PPHin 430.1

परमेश्वर चाहता था कि उसके लोगों के यह दो अगुवे मसीह के प्रतिनिधि हो। हारून अपने सीने पर इज़राइल के बारह घरानों के नामों को धारण करता था। वे लोगों तक परमेश्वर की इच्छा को पहुँचाता था। पूरे इज़राइल के मध्यस्थ के रूप में, "बिना लहू के नहीं" प्रायश्चित के दिन वह सबसे पवित्र स्थान में प्रवेश करता था। उस कार्य को सम्पन्न करके वह प्रजा को आशीष देने आगे आता था,जैसे लोगों की ओर से प्रायश्चित के अपने कार्य की समाप्ति पर, यीशु भी आगे आकर अपने प्रतीक्षारत् लोगों को आशिषित करेगा। हमारे महान महायाजक के प्रतिनिधि के रूप में उस पविवत्र पद के उत्कृष्ट स्वभाव ने कादेश में हुए हारून के पाप को इतना गम्भीर बना दिया। PPHin 430.2

बड़े दुख के साथ, मूसा ने हारून के शरीर पर से उस पवित्र पहनावे को उतारा, और उसे एलीआज़र पर रखा, औरइस रीति से एलीआज़ार, पवित्र नियुक्ति द्वारा हारून का उत्तराधिकारी बना। कादेश में उसके पाप के कारण, हारून को कनान में परमेश्वर के महायाजक के तौर पर कार्य करने के विशेषाधिकार से वंचित रखा गया-उस सुखद प्रदेश में प्रथम बलिदान की भेंट चढ़ाकर, इज़राइल की मीरास को अर्पण करने का विशेषाधिकार । मूसा को कनान की सीमाओं तक लोगों की अगुवाई का दायित्व सम्भाले रहना था। उसने प्रतिज्ञा के देश के दिखाई देने की सीमा तक आना था, लेकिन कनान में प्रवेश करने की उसे अनुमति नहीं थी। यदि परमेश्वर के इन दासों ने, कादेश में चट्टान के सम्मुख खड़े होने के समय, उन पर भेजी हुईं परीक्षा को बिना कड़कुड़ाए सहन कर लिया होता, तो कितना भिन्न होता, इनका भविष्य! एक गलत कार्य को अकत नहीं किया जा सकता। ऐसा भी हो सकता है कि प्रलोभन या विचारहीनता के एक क्षण में जो खो गया हो, उसकी क्षतिपूर्ति जीवन भर का प्रयत्न भी नहीं कर सकेगा। PPHin 431.1

छावनी से दोनों महान अगुवों की अनुपस्थिति, एलीआज़ार, जिसके बारे में सबको भली-मभांति ज्ञात था कि पवित्र पद के लिये वह हारून का उत्तराधिकारी है, उसके, उनके साथ जाने के कारण सन्देह की भावना ने जन्म लिया और वे उनकी वापसी की उत्सुकता से प्रतीक्षा करने लगे ।जब लोगों ने अपने चारों ओर अपने विशाल समुदाय को देखा, तो उन्होंने देखा कि वे सभी प्रौढ़, जिन्होंने मिस्र छोड़ा था, भीड़ में नष्ट हो गए थे। हारून और मूसा को दी गई दण्डाज्ञा का स्मरण कर उन्हें अनिष्ट का पूर्वाभास होने लगा। किसी-किसी को होर पर्वत के शिखर की रहस्यमयी यात्रा के लक्ष्य के बारे में जानकरी थी और स्व-दोषारोपण और कटु-स्मृतियों के द्वारा अपने अगुवों के प्रति उनकी चिन्ता और भी बढ़ गई। PPHin 431.2

आखिरकार मूसा और एलीआज़ार की आकतियाँ पर्वत से धीरे-धीरे नीचे आती दिखाई पड़ती, लेकिन हारून उनके साथ नहीं था। एलीआज़ार ने याजकीय वस्त्र धारण किए हुए थे, जिसका तात्पर्य था कि उसने पवित्र पद पर उसने अपने पिता की जगह प्राप्त की थी। जैसे-जैसे लोग भारी मन से अपने अगुवे के आस-पास एकत्रित हुए, मूसा ने उन्हें बताया कि होर पर्वत पर हारून ने उस की बाहों में दम तोड़ा और यह कि उन्होंनेउसे वहीं दफना दिया था। प्रजा शोक और विलाप में डूब

गई, क्योंकि भले ही उन्होंने कई बार उसे दुख पहुँचाया था, लेकिन वे उससे बहुत प्रेम करते थे। "तब इज़राइल के सब घरानों के लोग तीस दिन तक रोते रहे।' PPHin 432.1

इज़राइल के महायजक के दफनाए जाने के संदर्भ में पवित्र-शास्त्र केवल एक अभिलेख देता है, "वहां हारून मर गया, और उसको वहीं मिट्टी दी गई ।' परमेश्वर केस्पष्ट आदेशानुसार संचालित यह शव-संस्कार वर्तमान समय के रीति-रिवाजों से कितना भिन्न था। वर्तमान समय में उच्च पद के व्यक्ति का शव-संस्कार दिखावटी और अनावश्यक प्रदर्शन का अवसर बना दिया जाता है। हारून की गणना संसार के प्रख्यात लोगों में होती है, लेकिन उसकी मृत्यु के साक्षी और उसे मिट्टी देने वाले केवल उसके दो घनिष्ठ मित्र थे। और होर पर्वत पर वह एकाकी कब्र हमेशा के लिये इज़राइल से छिप गईं। मृतकों पर प्राय: किये गए प्रदर्शन और मृत शरीर को मिट्टी को लौटा देने में किये गए अनावश्यक खर्च से परमेश्वर का सम्मान नहीं होता। PPHin 432.2

समस्तप्रजा को हारून के जाने का दु:ख था, लेकिन मूसा को उसकी कमी की उनसे कहीं ज्यादा अनुभूति हुई। हारून की मृत्यु ने मूसा को यह स्मरण करने को बाध्य कर दिया कि उसका स्वयं का अन्त भी निकट था, लेकिन इस पृथ्वी पर उसके रहने का समय भले ही थोड़ा था, उसे अपने हमेशा साथ रहने वाले साथी की बहुत कमी महसूस हुई, हारून ही वह एक था जिसके साथ मूसा ने अपना सुख और दुख, अपनी आशा और भय इतने लम्बे समय के लिये बाँटे थे। अब मूसा को अपना कार्य अकेले ही सम्भालना था, लेकिन वह जानता था कि परमेश्वर उसका मित्र था और उस पर वह अधिक निर्भर करता था। PPHin 432.3

होर पर्वत को छोड़ने के तुरन्त बाद, इज़राइलियों ने एक कनानी राजा, अराद के साथ मुठभेड़ में पराजय का सामना किया। लेकिन जब उन्होंने परमेश्वर से आग्रहपूर्वक सहायतामाँगी, तो उन्हें ईश्वरीय सहायता प्रदान की गई और उसके शत्रुओं को खदेड़ दिया गया। धन्यवादी होने की प्रेरणा देने और लोगों को परमेश्वर पर अपनी निर्भरता का एहसास कराने के बजाय, इस विजय ने उन्हें ढींगगार और आत्मा-विश्वासी बना दिया। वे फिर से कड़कड़ाने की आदत में पड़ गए। अब वे असन्तुष्ट थे क्योंकि इज़राइल की सेनाओं को चालीस वर्ष पूर्व भेदियों की सूचना पर विद्रोह के पश्चात् कनान पर तुरन्त चढ़ाई करने की अनुमति नहीं दी गई थी। बीहड़ में अपने लम्बे पड़ाव को अनावश्यक विलम्ब बताया, और यह तर्क रखा कि उन्होंने अपने शत्रुओं पर उतनी ही आसानी से विजय पा ली होती, जैसे कि अभी प्राप्त की थी। दक्षिण की ओर यात्रा में उनका मार्ग एक छाया या वनस्पति रहित घाटी से होकर निकलता था। रास्ता लम्बा और कठिन प्रतीत होता था और वे भूख और थकान से पीड़ित थे। फिर से वे धैर्य और विश्वास की परीक्षा में खरे नहीं उतरे। निरन्तर अपने अनुभवों के अन्धकारमय पक्ष के बारे में सोचने के कारण, उन्होंने स्वयं को परमेश्वर से बहुत दूर कर लिया। वे उस तथ्य को भूल गए कि यदि, कादेश में उन्होंने पानी के प्रवाह के रूकने पर बड़बड़ाया नहीं होता, तो उन्हें एदोम के चारों ओर घूमकर यात्रा नहीं करनी पड़ती। परमेश्वर के पास उनके

लिये बेहतर चीजों का प्रयोजन था। उनके हृदय परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता से पूर्ण होने चाहिये थे कि उसने उनके पापों को कम दण्डित किया था। लेकिन इसके बजाय वे स्वयं को सन्तुष्ट करतेरहे कि यदि परमेश्वर और मूसा ने हस्तक्षेप नहीं किया होता तो उन्होंने अब तक प्रतिज्ञा के देश पर अधिकार पा लिया होता। स्वयं पर संकट लाकर, अपने जीवन को परमेश्वर की योजना से अधिक कठिन बनाकर, उन्होंने अपने दुर्भाग्य का आरोप परमेश्वर पर लगा दिया। इस प्रकार अपने प्रति उसके व्यवहार के सम्बन्ध में कटु विचार संजोते रहे, और अन्ततः वे प्रत्येक चीज से असन्तुष्ट हो गए। मिस्र स्वतन्त्रता से, और उस देश से असन्तुष्ट हो गए। मिस्र स्वतन्त्रता से, और उस देश से जहाँ परमेश्वर उन्हें लेकर जा रहा था, अधिक वांछनीय और उज्जवल दिख रहा था। PPHin 432.4

असन्तोष की भावना में लिप्त होने से, इज़राइलियों अपनी आशीषों में भी त्रुटियाँ निकालने पर उतारू हो गए। "वे परमेश्वर और मूसा के विरूद्ध बाते करने लगे, 'तुम लोग हम को मिस्र से जंगल से मरने के लिये क्यों ले आए हो? यहाँ न तो रोटी है, और न पानी, और हमारे प्राण इस निकम्मी रोटी से दुखित है। PPHin 433.1

मूसा ने निष्ठापूर्वक लोगों के सम्मुख उनके महापाप को रखा। केवल परमेश्वर के सामर्थ्य ने उन्हें "उस बड़े और भयानक बीहड़", में भी सुरक्षित रखा"जहाँ तेज विषवाले सर्प और बिच्छू और सूखा था और जहाँ जल न था" ।-व्यवस्थाविवरण 8:45 । उनकी यात्रा के प्रत्येक दिन उन्हें ईश्वरीय कृपा के चमत्कार द्वारा जीवित रखा गया। परमेश्वर के मार्गदर्शन में पूरे रास्ते उन्हें जल मिलता रहा था जिससे प्यासे तृप्त होते थे, भूख को शान्त करने के लिये स्वर्ग से रोटी मिलती थी, रात को अग्नि के स्तम्भ द्वारा और दिन को छाया देने वाले बादल के नीचे सुख और सुख शान्ति मिलती थी। जब वे पथरीली ऊंचाईयों पर चढ़ते या बीहड़ के ऊबड़-खाबड़ रास्तेपर पंक्तिबद्ध होकर चलते थे, स्वर्गदूत उनकी सेवा टहल करते थे। इतनी कठिनाईयाँझेलने के बावजूद भी उनके सारे जत्थों में एक भी दुर्बल व्यक्ति नहीं था। लम्बी यात्रा में ना तो उनके पैरों में सूजन आईं और ना ही उनके कपड़े पुराने हुए थे। परमेश्वर ने उनके सम्मुख जंगल और मरूस्थल के हिंसक पशुओं और विषैले रेंगनेवाले जानवरों को वशीभूत कर दिया था। यदि उसके प्रेम के इन सब प्रतीकों के बाद भी लोग शिकायतें करते रहते, तो यहोवा अपनी सुरक्षा से उन्हें तब तक वंचित रखता जब तक वे उसकी करूणामय देखभाल का मान नहीं रखते और दीनता और प्रायश्चित में उसके पास लौटकर नहीं आते। PPHin 434.1

ईश्वरीय समार्थ्य की सुरक्षा में वे उन असंख्य खतरों की नहीं जान पाए जिनसे वे हमेशा घिरे हुए रहते थे। अपने अविश्वास और कतज्ञहीनता में वे मृत्यु की आशा कर रहे थे और अब यहोवा ने उन पर मृत्यु को आने की अनुमति दे दी। बीहड़ में बहुतायत से विषैले सर्प थे जिन्हें अग्निमय सर्प कहा जाता था, क्योंकि इनके डंक का प्रभाव अत्यन्त भयानक था जिससे सूजन और जलन हो जाती थी

और और डंक मारे व्यक्ति की शीघ्र ही मृत्यु हो जाती थी, इज़राइलियों पर से परमेश्वर की सुरक्षा का हाथ हटते ही, बड़ी संख्या में लोगों पर इन विषैले सर्पों ने आक्रमण किया। PPHin 434.2

पूरी छावनी में भय और गड़बड़ी फैल गई। लगभग प्रत्येक तम्बू में कोई न कोई मर रहा था मर चुका था। कोई भी सुरक्षित नहीं था। प्राय: कर्णभेदी चीखें रात के सन्नाटे को तोड़ देती और नये पीड़ितों की सूचना देती। सभी लोगपीड़ितों की सेवा में या सर्प से बचे हुए लोगों की अत्यधिक रखवाली के प्रयत्न में व्यस्त थे। उनकी इस समय की पीड़ा की तुलना में, उनकी बीती कठिनाईयों और परीक्षाओं के बारे में विचार करना व्यर्थ था। PPHin 434.3

अब लोगों ने स्वयं को परमेश्वर के सम्मुख दीन किया। वे अपनों पापों का अंगीकार करऔर निवेदन लेकर मूसा के पास आए। “हमने पाप किया है” वे बोले, “क्योंकि हम ने यहोवा और तेरे विरूद्ध बातें की है।” कुछ ही समय पहले उन्होंने मूसा पर उनका सबसे बड़ा शत्रु होने का दोषी और उनके सभी कष्टों और कठिनाईयों का कारण ठहराया था। लेकिन जब शब्द उनके होठों पर ही थे, वे जानते थे कि आरोप झूठा हैं, और जैसे ही वास्तव में विपत्ति आई तो वे उसके पास दौड़े चले आए क्योंकि वे जानते थे केवल वही परमेश्वर के साथ उनके लिये मध्यस्थता कर सकता था। उन्होंने विनती की, “यहोवा से विनती कर कि वह साँपो को हम से दूर करें। PPHin 435.1

मूसा को पवित्र आदेश दिया गया कि वह जीवित सर्पों से मिलता-जुलता एक पीतल का सॉप बनाए, और उसे लोगों के सम्मुख उठाए। साँप द्वारा सभी कांटे हुओं को इस पीतल के सर्प को देखना था और ऐसा करने से उन्हें आराम मिलना था। मूसा ने ऐसा ही किया, औरसम्पूर्ण छावनी में यह शुभ-समाचार पहुँचाया गया कि जिन्हें भी सांप ने काटा था, वे पीतल के साँप को देखकर जीवित रह सकते थे। कई मर चुके थे, और जब मूसा ने साँप की प्रतिमा को खम्भे पर लटकाया, कुछ लोग को विश्वास नहीं था कि केवल धातु की प्रतिमा को देख लेने से वे चंगे हो जाएँगे, ये लोग अपने अविश्वास के कारण मारे गए। लेकिन बहुत से लोग थे जिन्हें परमेश्वर द्वारा किये गए प्रयोजन में विश्वास था। पिता, भाई, माएँ और बहने पीड़ितों और मरते हुए मित्रों की निस्तेज आंखों को सांप की प्रतिभा पर कन्द्रित करने में चिंतावश व्यस्त थे। यदि ये, हालांकि निर्बल और मरने वाले थे, केवल एक बार उसे देख पाते तो वे पूर्णतया पूर्वावस्था में आ जाते। PPHin 435.2

लोग भली-भाँति जानते थे कि पीतल के साँप में ऐसी कोई शक्ति नहीं थी जो उस पर दृष्टि डालने वाले में ऐसा परिवर्तन ला सके। आरोग्यकर गुण केवल परमेश्वर की ओर से था। इस साधारण उपाय से लोगों को यह आभास कराया गया कि यह कष्ट उनपर उनके पापों द्वारा लाया गया। उन्हें यह भी आश्वासन दिया गया कि यदिवे परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते रहे तो डरने का कोई कारण नहीं, क्योंकि वह उन्हें सुरक्षित रखेगा। PPHin 435.3

पीतल के सांप को ऊँचा उठाकार इज़राइल को एक महत्वपूर्ण सबक सिखाना था। वे अपने घावों के विष के प्राणघातक प्रभाव से स्वयं को बचाने में असमर्थ थे। केवल परमेश्वर ही उन्हें आरोग्य

करने में सक्षम था। फिर भी उन्हें परमेश्वर द्वारा दिए गऐ प्रावधान में अपना विश्वास प्रकट करना था। जीवित रहने के लिये उन्हें दृष्टि डालनी थी। वह उनका विश्वास था जो परमेश्वर को स्वीकार्यथा, और सॉप पर दृष्टि करने से उनका विश्वास प्रकट होता था। उन्हें ज्ञात था कि सॉप में स्वयं कोई विशेष गुण नहीं था, लेकिन वह मसीह का प्रतीक था, और उसके सदगुणों में विश्वास की आवश्यकता को उनके मनों में प्रस्तुत किया गया। इससे पहले, बहुत से लोग परमेश्वर के लिये भेंट लेकर आए थे, और उन्हें लगता था कि ऐसा करने से उन्होंने अपने पापों के लिये पर्याप्त प्रायश्चित कर लिया था। वे आने वाले उद्धारकर्ता पर निर्भर नहीं करते थे, जिसकी यह भेंटे केवल रूप-प्ररूप थी। परमेश्वर अब उन्हें यह सिखाना चाहता था कि जैसे पीतल के सांप में कोई गुण या शक्ति नहीं थी, वैसे ही उनके बलिदानों में स्वयं की कोई गुणवत्ता नहीं थी और इस प्रकार वह उनका ध्यान उस महान पापबलि, मसीह की ओर आकर्षित करना चाहता था। PPHin 435.4

"और जिस रीति से मूसा ने जँगल में सॉप के ऊंचे पर चढ़ाया" इस रीति से मनुष्य का पुत्र भी, "ऊंचेपर चढ़ाया जाए, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह अनन्त जीवन पाए ।"यहुन्ना 3:14,15 ।जितने भी लोग इस पृथ्वी पर रहे हैं, उन्होंने उस, "पुराने साँप, जो इबलीस और शैतान कहलाता है" (प्रकाततवाक्य 12:9) के विषैले डंक को महसूस किया है। पाप के प्राण घातक प्रभाव केवल परमेश्वर द्वारा रखे गए प्रावधान के द्वारा ही मिटाया जा सकता है। इज़राइलियों ने उठाए हुए साँप पर दृष्टि डालकर स्वयं को बचा लिया। उस दृष्टि का तात्पर्य विश्वास था। वे जीवित रहे क्योंकि उन्होंने परमेश्वरके वचन में विश्वास रखा और उनके पूर्वास्था में आने के लिये दिये गए साधन में विश्वास किया। इसी प्रकार पापी मसीह को देखकर, जीवित रह सकता है। प्रायश्चित के बलिदान में विश्वास द्वारा उसे क्षमा प्राप्त होती है। निर्जीव और निष्क्रिय प्रतीक के विपरीत, मसीह के पास पश्चतापी पापी को चंगा करने के लिये स्वयं की शक्ति और विशेषता होती है। PPHin 436.1

पापी स्वयं को नहीं बचा सकता, लेकिन उद्धार पाने के लिये वह कुछ कर सकता है। यहुन्ना 6:37में लिखा है, "जो कोई मेरे पास आएगा उसे मैं कभी नहीं निकालूँगा।" लेकिन हमें उसके पास अवश्य आना है, और जब हम अपने पापों का प्रायश्चित करते हैं, हमें विश्वास करना चाहिये कि वह हमें स्वीकार करता है और हमें क्षमा करता है। विश्वास परमेश्वर का वरदान है, लेकिन उसका अभ्यास करने की शक्ति हमारी है। विश्वासवह हाथ है जिससे मनुष्य, अनुग्रह और कृपा के पवित्र प्रस्ताव को ग्रहण करता है। PPHin 436.2

केवल मसीह की धार्मिकता हमें अनुग्रह की वाचा की आशीष का पात्र बना सकती है। कई लोगों ने लम्बे समय से इन आशीषों की अभिलाषा की है और इन्हें प्राप्त करने की चेष्ठा की है, लेकिन उन्हें यह आशीष प्राप्त नहीं हुई, क्योंकि उन्होंने इस विचार को संजोए रखा कि वे स्वयं को इनके योग्य बनाने के लिये कुछ कर सकते हैं। वे अपने अहम से हटकर नहीं देख पाये है, इस विश्वास के साथ भी कि यीशु एक अपने आप में सर्व-पर्याप्त उद्धारकर्ता है। हमें यह नहीं सोचना चाहिये

किहमारे स्वयं की गुणवत्ता हमें बचा लेगी, केवल मसीह की हमारे उद्धार की आशा है। “स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया जिसके द्वारा हम उद्धार पा सके ।” - प्रेरितों का काम 4:12। PPHin 437.1

जब हम परमेश्वर में पूर्णतया विश्वास रखते है, जब हम पाप क्षमा करने वाले उद्धारकर्ता के रूप में यीशु की योग्यता पर निर्भर करते हैं, तो हमें वह सहायता प्रदान की जाती है, जिसकी हमें अभिलाषा होती है। किसी को भी स्वयं के बारे में ऐसा नहीं सोचना चाहिये ,मानों उनमें स्वयं को बचाने की योग्यता है। यीशु ने हमारे लिये इसलिये प्राण दिया, क्योंकि हम स्वयं को बचाने में असहाय थे। उसी में है हमारी आशा, हमारी दोषमुक्ति, हमारी धार्मिकता। अपनी पापमयता को देखकर, हमें यह निराशा या भय नहीं होना चाहिये कि हमारे पास उद्धारकर्ता नहीं या यह कि उसका हमारे प्रति दया का कोई विचार नहीं। इसी समय वह हमें हमारी विवशता में उसके पास आने का निमन्त्रण देता है ताकि वह हमें बचा सकें। PPHin 437.2

बहुत से इज़राइली स्वर्ग द्वारा निर्धारित उपाय में कोई सहायता नहीं देखी । उनके चारों तरफ मृतक और मरने वाले थे, और उन्हें ज्ञात था कि बिना ईश्वरीय सहायता के उनका अपना अन्त भी निश्चित था, लेकिन वे अपने घावों, अपनी पीड़ाओं, उनकी निश्चित मृत्यु का विलाप करते रहे, जब तक कि उनकी शक्ति जाती न रही, और उनकी आँखें पथरा न गई, जबकि उन्हें तत्काल चंगाई मिल सकती थी। यदि हम अपनी आवश्यकताओं के प्रति सजग होती है, तो हमे हमारी सारी शक्ति उन पर शोक मनानेके लिये समर्पित नहीं कर देनी चाहिये । मसीह के अभाव में हमार असहाय अवस्था को जानकर, हमे निराशा के आगे समर्पण करने के बजाय उस उद्धारकर्ता पर निर्भर करना चाहिये जो हमारे लिये क्रूस पर चढ़ाया गया और जो जी उठा। देखो और जीवित रहो। यीशु ने प्रतिज्ञा की थी, वह उन सब कोई बचाएगा जो उसके पास आएँगे। लाखों लोग, जिन्हें चंगाई की आवश्यकता है उसकी प्रस्तावित करूणा का तिरस्कार करेंगे, लेकिन उसकी सामर्थ्य में विश्वास रखने वाला एक भी मनुष्य नष्ट नहीं होगा। PPHin 437.3

कई लोग मसीह को स्वीकार करने के लिये तैयार नहीं है जब तक उद्धार की योजना का सम्पूर्ण रहस्य उनके लिये स्पष्ट न किया जाए। विश्वास की दृष्टि को वे अस्वीकार कर देते है, जबकि वे साक्षी है इस तथ्य के कि हजारों लोगों ने मसीह के कूस को देखा और उसे देखने की गुणवत्ता को महसूस किया। कई लोग, कभी न मिलने वाले, प्रमाणों और तकका की खोज में तक-शास्त्र की भूल-भूलैया में घूमते रहते हैं, और वे उस प्रमाण को अस्वीकार कर देते है जो परमेश्वर ने प्रसन्न होकर दिया है। वे धार्मिकता के सूरज के प्रकाश में चलना स्वीकार नहीं करते, जब तक उन्हें उसके चमकने का कारण न समझाया जाए। जो भी इस रास्ते पर चलने पर अड़े रहेंगे, वे सत्य के ज्ञान को प्राप्त करने में असमर्थ होंगे। परमेश्वर कभी भी सन्देह का प्रत्येक अवसर नहीं हटाएया। वह विश्वास के आधार के लिये पर्याप्त प्रमाण देता है, और यदि इसे स्वीकार नहीं किया जाता, तो विवेक अन्धकार

में रह जाता है। यदि, जिन्हें साँप ने काटा था, पीतल के सॉप को देखने की स्वीकृति देने से पूर्व, प्रश्न या सन्देह करने के लिये रूके होते तो वे नष्ट हो जाते। हमारा कर्तव्य है कि, सबसे पहले, हम दृष्टि डाले, और वह विश्वास की दृष्टि हमें जीवन देगी। PPHin 438.1

अध्याय 39—बाशन पर विजय

यह अध्याय व्यवस्था विवरण 2:3:1-11 पर आधारित है

एदोम के दक्षिण में पहुँचकर, इज़रइली उत्तर की ओर मुड़े, और उन्होंने फिर से अपने चेहरे प्रतिज्ञा के देश की ओर किये। अब उनका मार्ग एक लम्बे-चौड़े मैदान पर स्थित था, जहां पहाड़ो से ठण्डी, स्वच्छ मंद पवन चलती रहती थी। उस निर्जल घाटी से, जहाँ से वेयात्रा करके यहाँ आ रहे थे, यह एक सुखद परिवर्तन था, और वे प्रसन्नचित और आशान्वित आगे बढ़ते गए। जेरेद नदी को पार कर, वे मोआब प्रदेश के पूरब में पहुँचे, क्योंकि उन्हें आज्ञा दी गई थी, "मोआबियों को न सताना और न लड़ाई छेड़ना, क्योंकि मैं उनके देश में से कुछ भी तेरे अधिकार में न करूँगा, क्योंकि मैंने आर को लूत के वंशजो के अधिकार में किया है।" और यही निर्देश अम्मोनियों के सम्बन्ध में भी दोहराया गया, क्योंकि वे भी लूत के वंशज थे। PPHin 439.1

उत्तर की ओर बढ़ते हुए, इज़राइली शीघ्र ही अमोरियों के देश में पहुँच गए। आरम्भ में इन बलवन्त और रणकुशल लोगों ने कनान प्रदेश के दक्षिणी भाग को अधिकृत किया हुआ था। लेकिन जनसंख्या में वृद्धि होने पर, इन्होंने यरदन नदी को पार कर, मोआबियों पर चढ़ाई कर के उनके अधिकारक्षेत्र से कुछ भाग को अधिकृत कर लिया था। यहाँ पर वे बस गए थे और अर्नान से लेकर उत्तर में यब्बोक तक की भूमि पर उनका निर्विवाद अधिकार था। यरदन को जाने वाला मार्ग, जिसपर इज़राइली अपनी यात्रा करना चाहते थे, इसी भू-खण्ड से होकर निकलता था, और मूसा ने अमोरियों के राजा, सिहोन के पास मैत्रीपूर्ण सन्देश भेजा, "मुझे अपने देश से होकर जाने दे, मैं राजपथ से चला जाऊँगा और दाहिने और बाएं हाथ न मुडूंगा। तू रूपया लेकर मेरे हाथ भोजनवस्तु देने कि मैं खाऊं, और पानी भी मुझे रूपया लेकर दे देना कि मैं पिऊं, केवल मुझे पैदल जाने दे।" उत्तर एक निर्णायक अस्वीकृति में आया और अमोरियों की सभी सेनाओं को घुसपैठियों की प्रगति का प्रतिरोध करने के लिये बुलाया गया। इज़राईली, जो सुअनुशासित और हथियारबन्द सेनाओं का सामना करने के लिये पूरी तरह तैयार न थे, इस दुर्जय सेना से भयभीत हो गए। जहाँ तक युद्ध मेंकौशल का प्रश्न था, उनके शत्रु श्रेष्ठ थे। मनुष्य की दृष्टि से, इज़राइल का शीघ्र अन्त निश्चित था। PPHin 439.2

लेकिन मूसा ने अपनी दृष्टि बादल के स्तम्भ पर टिकाए रखी और लोगों को इस विचार से प्रोत्साहित किया कि परमेश्वर की उपस्थिति का प्रतीक अभी भी उनके साथ था। उसी समय उसने उन्हें निर्देश दिया कि युद्ध की तैयारी के लिये वह वे सब करे जो मानवीय क्षमता के बस में था। उनके शत्रु युद्ध के लिये उत्सुक थे, और उन्हें विश्वास था कि वे अचेतइज़राइलियों को अपने देश से मिटा देंगे। लेकिन सभी देशों के स्वामी से इज़राइल के अगुवे के पास जनादेश पहुँच चुका था, "अब तुम लोग उठकर कच करो और अर्नोन के नाले के पार चलो सुनो, में देश समेत हेशबोन के राजा

एमोरी सीहोन को तुम्हारे हाथ में कर देता हूँ इसलिये उस देश को अपने अधिकार में लेना आरम्भ करो, और उस राजा से युद्ध छेड़ दो। और जितने लोग धरती पर रहते है, उन सब के मन में मैं आज ही के दिन से तेरे कारण डर और थरथराहट समाने लगूगा, वे तेरे समाचार पाकर तेरे डर के मारे काँपेगें और पीड़ित होंगे।' PPHin 440.1

यदि कनान के इन सीमान्तर प्रदेशों ने परमेश्वर की आज्ञा को चुनौती देकर, इज़राइल की प्रगति का प्रतिरोध नहीं किया होगा तो इन्हें छोड़ दिया जाता। परमेश्वर ने इन मूर्तिपूजक जातियों के प्रति भी चिरसहिष्णु, कृपालु औरकरूणामयी होने का प्रमाण दिया था। जब अब्राहम को दर्शन में दिखाया गया कि उसके वंशज, अर्थात इज़राइल, चार सौ वर्ष तक एक पराये देश में परदेसी होकर रहेंगे, यहोवा ने उसे यह आश्वासन दिया, "पर वे चौथी पीढ़ी में यहाँ फिर आएँगे, क्योंकि अब तक एमोरियों का अधर्म पूरा नहीं हुआ है।" हालाँकि एमोरी मूर्तिपूजक थे, जिनका जीवन उनकी अति दुष्टता के कारण न्यायतः तज दिया गया था। परमेश्वर ने उन्हें उसके एकमात्र सच्चा परमेश्वर और धरती और आकाश का सृजनहार होने का असंदिग्ध प्रमाण देने के लिये चार सौ वर्ष के लिये छोड़ रखा। उन्हें मिस्र से इज़राइल लाने में उसके सभी चमत्कारों से वे परिचित थे। पर्याप्त प्रमाण दिया, यदि वे लुचपन और मूर्तिपूजा से मुँहमोड़ने को तत्पर होते, तो वे सत्य को जान सकते थे। लेकिन उन्होंने प्रकाश का तिरस्कार किया और मूर्तियों को पकड़े रखा। PPHin 440.2

जब यहोवा दूसरी बार अपने लोगों को कनान की सीमा पर लाया, उन मूर्तिपूजक जातियों को उसके समार्थ्य का अतिरिक्त प्रमाण दिया गया। उन्होंने देखा कि राजा अराद और कनानियों पर प्राप्त विजय में परमेश्वर इज़राइल के साथ था, साँपो के द्वारा काटे जाने से मरने वालों को बचाने के लिये किये गए चमत्कार में भी वह उनके साथ था। हालाँकि इज़राइलियों को एदोम प्रदेश से होकर जाने की स्वीकृति नहीं मिली थी, और इस कारण वे लाल समुद्र के किनारे-किनारे लम्बे और कठिन रास्ते पर जाने को विवश हो गए थे, फिर भी एदोम, मोआब और एम्मोन प्रदेशों के पास से की गई यात्राओं और डालेगए पड़ावों में, उन्होंने कोई शत्रुता नहीं दिखाई और ना ही लोगों को या उनकी धरोहर को कोई हानि पहुँचाई । एमोरियों की सीमा पर पहुँचने पर, दूसरे देशों के साथ उनके पारस्परिक व्यवहार सम्बन्धी नियमों का पालन करने की प्रतिज्ञा करते हुए, उन्होंने केवल प्रदेश में से सीधे यात्रा करने की अनुमति माँगी थी। जब एमोरी राजा ने उनकी विनयपूर्ण सानुरोध याचना को अस्वीकार कर दिया, और चुनौती देते हुए अपनी सेनाओं को युद्ध के लिये एकत्रित किया, तो उनके पाप का घड़ा भर गया और अब परमेश्वर ने उनकी पराजय के लिये अपनी शक्ति का अभ्यास करने का निर्णय किया। PPHin 440.3

इज़राइलियों ने अर्नोन नदी को पार कर, शत्रु पर चढ़ाई की। एक मुठभेड़ हुई, और उसमें इज़राइल की सेनाएँ विजयी हुई, और इसी विजय का लाभ उठाते हुए, उन्होंने शीघ्र हो ऐमोरियों के देश पर अधिकार कर लिया। वह यहोवा की सेनाओं का कप्तान था जिसने उसके लोगों के शत्रुओं

को पराजित किया, और यदि इज़राइल ने उसमें विश्वास रखा होता, तो अड़तीस वर्ष पूर्व भी उसने ऐसा ही किया होता। PPHin 441.1

आशा और साहस से भरपूर, इज़राइल की सेना, व्यग्रता से आगे बढ़ी, और उत्तर की ओर यात्रा करते हुए, शीघ्र ही उस देश में पहुँची जहाँ परमेश्वर में उनके विश्वास और उनके शौर्य की परख होनी थी। उनके सम्मुख था बाशान का शक्तिशाली व जनपूर्ण राज्य जिसमें प्रख्यात पत्थर के नगर थे जो आज भी संसार को अचरज में डाल देते है-"साठनगर........उनके ऊंचे-ऊंचे शहरपनाह, और फाटक, और बिना शहरपनाह के भी बहुत से नगर।"-व्यवस्थाविवरण 3:1-11 वहाँ के घर विशाल काले पत्थरों से निर्मित थे, जिनका विशालकाय आकार भवनों को, उन पर उस समय की, आने वाली किसी भी शक्ति के लिये पुर्णतया अभेद्य बना देता था। वह डरावनी गुफाओं, ऊंची-ऊंची खड़ी चटटानों, गहरी और फैली हुईं खाड़ियों और पहाड़ी दुर्गों से भरा देश था। इस देश के निवासी, जो एक असुर जाति के वंशज थे, स्वयं अद्‌भुत डील-डौल और शक्ति के स्वामी थे और वे हिंसा और निर्दयता के लिये इतने विख्यात थे कि सभी पड़ौसी राष्ट्र उनका भय मानते थे। उस देश का राजा ओग अपने डील-डौल और भुजबल के लिये, असुरों के राष्ट्र में भी विलक्षण था। PPHin 441.2

लेकिन बादल का स्तम्भ आगे-आगे चलता रहा, और उसके मार्गदर्शन में इब्री समुदाय एद्रेई की ओर बढ़ा, जहां वह विशालकाय राजा अपनी सेना सहित, उनके आने की प्रतीक्षा कर रहा थ। ओग ने कुशलता से युद्ध का स्थान चुना था। एद्रेई नगर एक सीधी ढाल वाले पठार पर स्थित है और दंतुरित ज्वालामुखीय चट्टानों से ढका है। वहां चढ़ाई के लिये दुर्गगन और सीधी ढाल वाले संकीर्ण मार्गों से ही पहुँचा जा सकता है। हारने की सूरत में उसकी सेना चटटानों के बीहड़ में शरण ले सकती थी, जहां अपरिचितों द्वारा उनका पीछा किया जाना असम्भव था। PPHin 442.1

सफलता के लिये निश्चित, राजा अपनी विशाल सेना के साथ खुले मैदान में आगे आया। पठार पर से ललकारकी पुकार सुनाई दे रही थी, जहां लड़ाई के लिये तत्पर हजारों के हथियार दिखाई देते। जब इब्रियों ने उसकी सेना के सैनिकों से भी ऊंचे असुरों के असुर की उस विशालकाय आकृति को देखा, जब उन्होंने उन सेनाओं को देखा जो उसे घेरे हुए थी, और उस अभेद्य गढ़ को देखा, जिसके पीछे हजारों अदृश्य खाई में छुपे थे, तो कई इज़राइलियों के हृदय भय से कॉप उठे। लेकिन मूसा शान्त और दृढ़ था, परमेश्वर ने बाशान के राजा के सन्दर्भ में कहा था, "उससे मत डर, क्योंकि मैं उसकी सारी सेना और देश समेत तेरे हाथ में कर देता हूँ और जैसा तू ने एमोरियों के राजा हेशबोनवासी सिहोन के साथ किया है, वैसा ही उसके साथ भी करना।" PPHin 442.2

उनके अगुवे का निश्चल विश्वास लोगों को परमेश्वर में विश्वास की प्रेरणा देता था। वे उसके सर्वशाक्तिशाली हाथ में विश्वास रखते थे और ना तो शहरपनाह वाले नगर, ना हथियारबन्द सेनाएं और ना ही चटूटानी गढ़, यहोवा की सेनाओं के कप्तान के सम्मुख खड़े रह सकते थे। सेना का नेतृत्व प्रभु ने किया, प्रभु ने शत्रु को परास्त किया, प्रभु ने इज़राइल के पक्ष में विजय प्राप्त की ।

असुर राजा और उसकी सेना को नष्ट कर दिया गया और इज़राइलियों ने सम्पूर्ण राज्य को अपने अधिकृत कर लिया। इस तरह पृथ्वी पर से उन असामन्य लोगों को मिटा दिया गया जिन्होंने स्वयं को अधर्म और मूर्तिपूजा को समर्पित कर दिया था। PPHin 442.3

गिलाद और बाशान की विजय में कई लोगों ने उनघटनाओं का स्मरण किया, जिनके कारण, कादेश में, चालीस वर्ष पूर्व, इज़राइल को इतने लम्बे समय तक बीहड़में भटकने को विवश कर दिया गया था। उन्होंने देखा कि प्रतिज्ञा के देश से सम्बन्धित गुप्तचरों की सूचना कई विषयों में सही थी। नगर चारों ओर प्राचीरों से सुरक्षित थे और असुरों से निवासित थे, उनकी तुलना में इब्री मात्र बौने थे। लेकिन अब वे देख सकते थे कि परमेश्वर के सामर्थ्य में अविश्वास उनके पूर्वजों की सबसे क्षतिकर गलती थी। यही एकमात्र कारण था जिसने उन्हें उस समृद्ध देश में अविलम्ब प्रवेश करने से रोका था। PPHin 442.4

जब वे प्रारम्भ में कनान प्रवेश की तैयारी कर रहे थे, उनके कार्य में अब से कम कठिनाईयाँ आईं थी। परमेश्वर ने अपने लोगों से प्रतिज्ञा की थी कि यदि वे उसकी आज्ञा का पालन करेंगे, तो वह उनके आगे-आगे जाएगा और उनके लिये लड़ेगा, और उस देश के निवासियों को खदेड़ कर भगा देने के लिये ततैये भी भेजेगा। उन राज्यों में सार्वजनिक तौर पर भय उत्पन्न नहीं किया गया था और उनकी प्रगति के प्रतिकार के लिये बहुत कम तैयारियाँ की गई थी। लेकिन जब प्रभु ने इज़राइल को आगे बढ़ने की आज्ञा दी, तो उनके लिये सतक और सशक्त शत्रुओं के विरूद्ध अग्रसर होना आवश्यक था, और इज़राइलियों के आगे बढ़ने को रोकने की तैयारी करती रही उन विशाल और सुशिक्षित सेनाओं के साथ लड़ना था। PPHin 443.1

ओग और सिहोन के साथ प्रतिस्पर्धा में लोगों को वही परीक्षा देनी पड़ी, जिसमें उनके पूर्वज विशेष रूप से असफल रहे थे। लेकिन अब वह परीक्षा उस समय से अत्यधिक कठोर थी, जब परमेश्वर ने इज़राइल को आगे बढ़ने का आदेश दिया था। उनके रास्ते की कठिनाईयाँ बहुत बढ़ गई थी जबसे उन्होंने प्रभु के नाम में अग्रसर होने के आदेश को अस्वीकार किया। इसी रीति से परमेश्वर अभी भी लोगों को परखता है। यदि वे परीक्षा में खरे नहीं उतरते, वो वह उन्हें पहले वाले स्थान पर ले आता है, और दूसरी बार परीक्षा पहले वाली परीक्षा से ज्यादा और शीघ्र आती है। ऐसा तब तक होता रहता है जब तक वे इस परीक्षा को सहन करते है, या यदि वे फिर से विद्रोही होते है तो परमेश्वर उन्हें प्रकाश से वंचित कर देता है और उन्हें अन्धकार में छोड़ देता है। PPHin 443.2

इब्रियों ने अब स्मरण किया कि किस तरह, एक बार पहले, जब वे युद्ध करने गए थे, उन्हें उखाड़ दिया गया था और हजारों लोग मारे गए थे। लेकिन उस समय वे परमेश्वर की आज्ञा के प्रत्यक्ष विरोध में गए थे। वे परमेश्वर द्वारा नियुक्त अगुवे, मूसा के बिना, ईश्वरीय उपस्थिति के प्रतीक, बादल के स्तम्भ के बिना और वाचा के सन्दूक के बिना गए थे। लेकिन अब मूसा उनके साथ था, जो उनके हृदयों को विश्वास और आशा के शब्दों से प्रबल कर रहा था, बादल के स्तम्भ में प्रतिष्ठापित, परमेश्वर

का पुत्र उनका मार्गदर्शन कर रहा था, और पवित्र सन्दूक सेना के साथ था। इस अनुभव में हमारे लिये एक सीख है। इजराईल का महान परमेश्वर हमारा परमेश्वर है। उसमें हम विश्वास रख सकते है। और यदि हम उसकी आज्ञाओं को मानेंगे तो वह हमारे लिये वैसे ही विशेष रूप से कार्य करेगा जैसा वह प्राचीन काल में अपने लोगों के लिये करता था। जो भी कर्तव्य के रास्ते पर चलने का प्रयत्न करता है, कभी-कभी अविश्वास और संदेह की चपेट में आ सकता है। वह रास्ता कभी-कभी इतनी बाधाओं से बाधित होगा, कि वह दुर्गम प्रतीत होगा, और जो निराशा के आगे झुक जाते है, उन्हें निराश कर देगा, लेकिन परमेश्वर ऐसे ही लोगों से कहता है, आगे बढ़ों' किसी भी कीमत पर अपने कर्तव्य का पालन करो। जो कठिनाईयाँ इतनी विकट प्रतीत होती है, जो तुम्हारे चित्त को भयभीत कर देती है, एकदम विलुप्त हो जाएगी, यदि तुम परमेश्वर में दीनतापूर्वक विश्वास करते हुए, आज्ञाकारिता के रास्ते पर आगे बढ़ोगे।

अध्याय 40—बिलाम

यह अध्याय गिनती 22-24 पर आधारित है

बाशान पर विजय प्राप्त करने के पश्चात यरदन को लौटते समय, कनान पर तत्काल आक्रमण की तैयारी में, इज़राइलियों ने यरीहो की तराई के ठीक सामने नदी के किनारे पड़ाव डाला। वे मोआब देश की सीमा पर थे, और आक्रमणकारियों की निकटता ने मोआबी लोगों को भयभीत कर दिया। PPHin 445.1

मोआब के लोगों को इज़राइल द्वारा छेड़ा नहीं गया था, लेकिन पड़ोसी देशों में होने वाली घटनाओं को उन्होंने चिंताजनक पूर्वाभास से देखा था। एमोरियों पर जिनके सम्मुख वे पीछे हटने को विवश हो गए थे, इब्रियों ने विजय प्राप्त कर ली थी और जो भू-खण्ड एमोरियों ने मोआब से छीना था अब इज़राइल के अधिकार में था। बाशान की सेनाओं ने बादल के स्तम्भ में आवृत उस रहस्यमयी शक्ति के आगे समर्पण कर दिया था, और असुरों के गढ़ो पर इब्रियों ने अधिकार कर लिया था। मोआबियों ने उनपर आक्रमण का जोखिम उठाने दुस्साहस नहीं किया, उनके पक्ष में कार्य करने वाली आलौकिक शक्तियों के सामने हथियारों का प्रयोग व्यर्थ था। लेकिन फिरौन की तरह, उन्होंने परमेश्वर के काम को निष्फल करने के लिये जादू-टोने की शक्ति की सहायता लेने का निश्चय किया। उन्होंने इज़राइल को श्राप देने पर विचार किया। PPHin 445.2

मोआबवासी और म्यािनियों में धर्म और राष्ट्रीयता के बन्धन के कारण घनिष्ठ सम्बन्ध थे। और मोआब के राजा बालक ने सजातीय लोगों के भय के जागृत किया और इज़राइल के विरूद्ध अपनी युक्तियों में उनका सहयोग इस सन्देश द्वारा प्राप्त किया, 'अबवह दल हमारे चारों ओर के सब लोगों को ऐसा चट कर जाएगा, जिस तरह बैल खेत की हरी घास को चट कर जाता है।" मेसोपोतामिया निवासी बिलाम, सूचना के अनुसार, अलौकिक शक्तियों का स्वामी था, और उसकी कीर्ति मोआब देश तक पहुँच गई थी। उनकी सहायता के लिये उसे बुलवाने का निर्णय लिया गया। तदानुसार "मोआबी और मिश्यानी पुरनियों' के सन्देशवाहकों को भेजा गया ताकि वे इज़राइल के विरूद्ध उसकी भविष्यवाणी और सम्मोहन की सेवाओं को प्राप्त कर सके। राजदूत तत्काल ही लम्बी यात्रा पर निकल पड़े जो मेसोपोतामिया के मरूस्थल के पार, पहाड़ो के ऊपर से होकर की जानी थी और बिलाम को ढूंढ कर उन्होंने उसे राजा का यह सन्देश दिया, "सुन, एक दल मिस्र से निकल आया है, और भूमि उनसे ढक गईं है, और अब वे मेरे ही सामने आकर बस गए है, इसलियों आ, और उन लोगों को मेरे निमित्त श्राप दे, क्योंकि वे मुझसे अधिक बलवन्त है, तब सम्भव है कि हम उनपर जयवन्त हो, और हम सब इनको अपने देश से मारकर निकाल दे, क्योंकि यह में जानता हूँ कि

जिसको तू आशीर्वाद देता है वह अन्य होता हैऔर जिसको तू श्राप देता है, वह श्रापित होता है।' PPHin 445.3

एक समय था बिलाम एक भला मनुष्य और परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता था, लेकिन उसने स्व-धर्म त्याग किया था, और वह लालचीपन का आदी हो गया था, फिर भी वह 'सर्वोच्च' का दास होने का दावा करता था। वह इज़राइल के पक्ष में किये गए परमेश्वर के कार्य से अनभिज्ञ नहीं था, और जब सन्देशवाहकों ने अपना सन्देश सुनाया, वह भली-भाँति जानता था कि बालक के उपहारों को अस्वीकार करना और उसके दूतों को विदा करता उसका कर्तव्य था। लेकिन उसने प्रलोभन से मन बहलाने का साहस किया, और यह घोषणा करते हुए कि वह परमेश्वर से परामर्श किये बिना कोई निश्चित उत्तर नहीं दे सकता था, उसने दूतों से रात को वही उसके साथ रूकने का आग्रह किया। बिलाम जानता था कि उसका श्राप इज़राइल को हानि नहीं पहुँचा सकता था। परमेश्वर उनके पक्ष में था, और जब तक वे उसके प्रति निष्ठावान थे, तब तक पृथ्वी या अधोलोक की कोई भी अनिष्टकारी शक्ति उनपर विजयी नहीं हो सकती थी। लेकिन दूतों के इन शब्दों ने उसके घमण्ड को हवा दी, "जिसे तू आशीर्वाद देता है, वह धन्य हो जाता है, और जिस तू श्राप देता है, वह श्रापित हो जाता है। भावी प्रतिष्ठा और बहुमूल्य उपहारों ने उसके लालच को उत्तेजित कियाऔर उसने लालच में प्रदत्त खजाने को ग्रहण कर लिया, और फिर परमेश्वर की इच्छा के प्रति सम्पूर्ण आज्ञाकारिता का दावा करते हुए, उसने बालाक की अभिलाषाओं के साथ समझौता करने का प्रयत्न किया। PPHin 446.1

रात्रि के समय परमेश्वर का स्वर्गदूतत बिलाम के पास यह सन्देश लेकर आया, "तू इनके संग मत जा, उन लोगों को श्राप मत दे, क्योंकि वे आशीष के भागी हो चुके है। PPHin 446.2

प्रातः काल बिलाम ने हिचकिचाते हुए दूतों को विदा किया लेकिन उन्हें नहीं बताया कि परमेश्वर ने उससे क्या कहा था। लाभ और सम्मान की परिकल्पना का खंडन हो जाने से कोधित वह चिड़चिड़ा कर बोला, "तुम अपने देश को चले जाओ, क्योंकि यहोवा मुझे तुम्हारे साथ जाने की आज्ञा नहीं देता।' PPHin 446.3

2 पतरस 2:15 में लिखा है, बिलाम ने "अधर्म की मजदूरी को प्रिय जाना ।" लालच के पाप ने, जिसे परमेश्वर मूर्तिपूजा के तुल्य ठहराता है, उसे अवसरवादी बना दिया, और इस एक अवगुण के माध्यम से शैतान ने उसको पूर्णतया अपने नियन्त्रण में कर लिया। इसी के कारण वह विनाश को प्राप्त हुआ। प्रलोभन देने वाला मनुष्य को परमेश्वर की सेवा करने से रोकने के लिये सांसारिक लाभ और सम्मान का लालच देता है। वह उन्हें कहता है कि उनकी अत्याधिक अंतर्विवेकशीलताउन्हें समृद्धि से वंचित रखती है। इस प्रकार बहुत से लोग विशुद्ध सत्यनिष्ठा के मार्ग को छोड़ देने का दुस्साहस करने के लिये प्रेरित हो जाते है। एक गलत कदम दूसरे को आसान बना देता है, और वे ढीठ होते जाते है। एक बार स्वयं को अधिकार की अभिलाषा और लालच के नियन्त्रण के प्रति

समर्पित कर देने के पश्चात वे बुरे से बुरे कार्य करने लगते है। कई स्वयं को सन्तुष्ट करने का प्रयत्न करते है कि किसी सांसारिक लाभ के कारण वे सत्यनिष्ठा को कुछ समय के लिये त्याग सकते है, और लक्ष्य प्राप्ति के पश्चात, जब भी वे चाहे अपना रास्ता बदल सकते हैं। ऐसे लोग स्वयं को शैतान के जाल में उलझा रहे हैं और उनका बच कर निकल आना शायद ही कभी होता है। PPHin 447.1

जब दूतों ने भविष्यद्क्ता के उनके साथ आने की अस्वीकृति की सूचना बालाक को दी, उन्होंने यह नहीं बताया कि परमेश्वर ने उसे मना किया था। इस विचार से कि बिलाम का विलम्ब मात्र अधिक उपहारों की प्राप्ति के लिये था, राजा ने और हाकिम भेजे जो पहले भेजे गए हाकिमों से अधिक प्रतिष्ठित और गिनती में भी अधिक थे। उसने बिलाम को और उच्च सम्मानों का आश्वासन दिया और इन हाकिमों को बिलाम की किसी भी शर्त को मान लेने का अधिकार दिया। भविष्यद्वक्ता के लिये बालाक का यह सन्देश था, ""मेरे पास आने से किसी कारण मना मत कर, क्योंकि मैं निश्चय तेरी बड़ी प्रतिष्ठा करूंगा, औरजो कुछ तू मुझ से कहे वहीं मैं करूंगा, इसलिये आ, और उन लोगों को मेरे निमित्त श्राप दे। PPHin 447.2

बिलाम को दूसरी बार परखा गया। दूतों की सानुरोध यातना के उत्तर में उसने अधिक सत्यनिष्ठा और अंतर्विवेकशीलता का दावा किया, और उन्हें विश्वास दिलाया कि सोने और चांदी की कितनी भी मात्रा उसे परमेश्वर की इच्छा के विपरीत जाने को प्रेरित नहीं कर सकती। लेकिन राजा के निवेदन को स्वीकार करने की उसकी तीव्र इच्छा थी, और यद्यपि परमेश्वर की इच्छा उसे निश्चित रूप से ज्ञात करा दी गईं थी, उसने दूतों से रूकने का आग्रह किया, ताकि वह परमेश्वर से और पूछताछ कर पाएँ, मानों अनन्त परमेश्वर कोई मनुष्य था, जिसे मनाया जा सकता था। PPHin 447.3

रात्रि के समय प्रभु बिलाम पर प्रकट हुआ और उसने उससे कहा, "यदि वे पुरूष तुझे बुलाने आए है, तो तू उठकर उनके साथ जा, परन्तु जो बात मैं तुझ से कहूँ उसी के अनुसार करना ।" यहां तक परमेश्वर ने बिलाम को अपनी निजी इच्छा का पीछा करने दिया क्योंकि वह इसी के लिये कत-संकल्प था। वह परमेश्वर की इच्छा को पूरी करने का इच्छुक नहीं था, वरन् उसने अपना रास्ता स्व्यं चुना, और उसके बाद परमेश्वर की स्वीकृति प्राप्त करने का प्रयत्न किया। PPHin 448.1

वर्तमान समय में भी हजारों है जो यही रास्ता अपनाते हैं। यदि उनका कर्तव्य उनके झुकाव के साथ सामन्जस्यपूर्णहो तो उन्हें उस कर्तव्य को समझने में कोई कठिनाई नहीं होती। बाईबिल में यह स्पष्ट रूप से उनके सम्मुख रखा गया है या तक और परिस्थितियों के माध्यम से स्पष्टतया सूचित किया गया है। लेकिन यह प्रमाण उनकी कामनाओं और झुकाव के बिल्कुल विपरीत है, इसलिये वे प्रायः इन्हें एक तरफ रखकर, अपने कर्तव्य के ज्ञान के लिये परमेश्वर के पास जाने की परिकल्पना करते हैं। दिखावटी अंतर्विवेकशीलता के साथ वे प्रकाश के लिये लम्बी और आग्रहपूर्ण प्रार्थना करते है। लेकिन परमेश्वर के साथ खिलवाड़ नहीं किया जा सकता। ऐसे व्यक्तियों को वह प्रायः उनकी इच्छाओं के पीछे जाने की और उसका फल भुगतने की अनुमति दे देता है। भजन संहिता 81:11,12में

लिखा है, "परन्तु मेरी प्रजा ने मेरी न सुनी, इज़राइल ने मुझे न चाहा। इसलिये मैंने उसको उसके मन के हठ पर छोड़ दिया, कि वह अपनी ही युक्तियों के अनुसार चलें ।" जब कोई एक कर्तव्य को स्पष्ट रूप से देखता है तो उसे उस कर्तव्य का पालन न करने देने की प्रार्थना लेकर परमेश्वर के पास जाने की परिकल्पना नहीं करनी चाहिये। इसके बजाय उसे, दीन होकर और समर्पण की भावना से उस कार्य को करने के लिये ईश्वरीय शक्ति और बुद्धिमत्ता की विनती करनी चाहिये। PPHin 448.2

मोआबी पतित, मूर्तिपूजक लोग थे, फिर भी उनकोप्राप्त प्रकाश के अनुसार स्वर्ग की दृष्टि में उनका पाप बिलाम के पाप से बड़ा नहीं था। वह परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता होने का दावा करता था, जो भी वो कहता था उसे परमेश्वर के अधिकार से कहा गया माना जाता था। इस कारण जैसा वो चाहे वैसा ही बोलने की उसे अनुमति नहीं दी जा सकती थी, वरन उसे परमेश्वर द्वारा दिया गया सन्देश देना था। "जो बात मैं तुझ से कहूँ, उसी के अनुसार करना।" यह पवित्र आदेश था। PPHin 449.1

यदि प्रात: काल दूत बिलाम को बुलाने के लिये आए, तो बिलाम को उनके साथ जाने की अनुमति प्राप्त हो गई थी। लेकिन बिलाम के विलम्ब के कारण खिनन्न, और एक और अस्वीकृति की अपेक्षा में, बिना उसके परामर्श के, दूत अपने घरों की ओर यात्रा पर निकल पड़े। अब बालाक के निवेदन को स्वीकार करने का बहाना नहीं बचा था। लेकिन बिलाम ने पुरूस्कार प्राप्त करने का दृढ़ संकल्प किया, और जिस पशु की सवारी का वह अभ्यस्थ था, उसे लेकर वह यात्रा पर निकल पड़ा। उसे डर था कि अभी भी ईश्वरीय अनुमति वापस ली जा सकती थी, वांछित पुरस्कार प्राप्त करने में किसी कारण असफलता के डर से अधीर होकर, वह उत्साहपूर्वक आगे बढ़ता गया। PPHin 449.2

लेकिन "यहोवा का दूत उसका विरोध करने के लिये मार्ग रोककर खड़ा हो गया।" उस पशु ने पवित्र दूत को देखा, जिसे बिलाम नहीं देख पाया, और वह मुख्य मार्ग को छोड़कर खेत में चली गयी। तब बिलाम ने गदही को निर्दयता से मारा कि वह मार्ग पर फिर से आ जाए, लेकिन फिर, दीवारों के बीच संकीर्ण गली में दूत प्रकट हुआ और उस डरावनी आकृति से बचने के लिये, गदही दीवार से ऐसे सट गईं कि बिलाम का पैर दीवार से दब गया। बिलाम स्वर्गीय हस्तक्षेप से अनजान था, और वह नहीं जानता था कि परमेश्वर उसके मार्ग को अवरूद्ध कर रहा था। वह कोधित हो उठा, और गदही को निर्दयता से पीटते हुए, उसे आगे बढ़ने को विवश किया। PPHin 449.3

फिर से "यहोवा का दूत आगे बढ़कर एक संकीर्ण स्थान पर खड़ा रहा, जहाँ न तो दाहिनी ओर हटने की जगह थी, और न बाई ओर, "और बेचारी गदही, डर से कॉपते हुए, बिलाम को अपने ऊपर लिये धरती पर बैठ गई। फिर तो बिलाम का कोध भड़क उठा और उसने गदही को पहले से भी अधिक निर्दयता से मारा। परमेश्वर ने अब अपना मुहँ खोला और, "गूंगी गदही केमाध्यम से मनुष्य

की बोली बोल” उसने “भविष्यद्यकता के उस पागलपन को रोका ।”-2 पतरस 2:16 ।वह बोली, “मैंने तेरा क्या किया है कि तूने मुझे तीन बार मारा?”अपनी यात्रा में बाधित होने से कोधित, बिलाम ने गदही को ऐसे उत्तर दिया मानों वह एक बुद्धिजीवी प्राणी को संबोधित कर रहा हो- “क्योंकि तूने मेरा मजाक बनाया। यदि मेरे हाथमें तलवार होती तो मैं तुझे अभी मार डालता ।” यहाँ एक पेशेवर जादूगर था, जो एक सम्पूर्ण राष्ट्र को, उनकी शक्ति को निष्प्रभाव करने के लिये, उनको श्रापित करने के रास्ते पर था, जबकि उसमें जिस पशु की वह सवारी कर रहा था, उस पशु को मार डालने की भी योग्यता नहीं थी। PPHin 449.4

बिलाम की आँखें अब खुली, और उसने परमेश्वर के स्वर्गदूत को हाथ में नंगी तलवार लिये, उसे मार डालने को तैयार खड़े देखा। भयभीत होकर, “वह झुक गया और मुहँ के बल गिरकर उसने दण्डवत किया।” स्वर्गदूत ने उससे कहा, “तूने अपनी गदही को तीन बार क्यों मारा? सुन तेरा विरोध करने को मैं ही आया हूँ इसलिये कि तू मेरे सामने उलटी चाल चलता है, और यह गदही मुझे देखकर मेरे सामने से तीन बार हट गई है। यदि वह मेरे सामने से हट न जाती, तो निःसन्देह मैं अब तक तुझे तो मार ही डालता, परन्तु उसे जीवित छोड़ देता बिलाम अपने प्राण के संरक्षण के लिये उस बेचारी गदही का, जिसे उसने इतनी निर्दयता से मारा था, ऋणी था। वह पुरूष, जो परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता होने का दावा करता था, जिसने घोषणा की कि उसकी आँखें खुली थी, और उसने ‘सर्वशक्तिमान का दर्शन’ देखा, महत्वाकांक्षा और लोलुपता में इतना अंधा हो गया था कि गदही को दृष्टिगोचर परमेश्वर के दूत को वह पहचान नहीं सका। 2 कुरिन्थियों 4:4 में लिखा है, “और उन अविश्वासियों की बुद्धि इस संसार के ईश्वर ने अंधी करदी है”। कितने हैं जो इसप्रकार अंधेहो जाते है!पवित्र आज्ञा का उल्लंघन करके वे निषिद्ध मार्गों पर जाते है और नहीं जान पाते कि परमेश्वर और उसके स्वर्गवृत उनके विरूद्ध है। बिलाम की तरह वे उनपर कोधित होते हैं जो उनके विनाश को रोकते हैं।” PPHin 450.1

अपनी गदही के साथ किये गए व्यवहार के द्वारा, बिलाम ने उसे नियन्त्रित करने वाली भावना का प्रमाण दिया था। नीतिवचन में 12:10 में लिखा है, “धर्मी अपने पशु के भी प्राण की सुधि रखता है, परन्तु दुष्टों की दया भी निर्दयता है।” बहुत कम इस बात का एहसास करते है, जैसा कि उन्हें करना चाहिये, कि पशुओं का शोषण या उन्हें उपेक्षा के कारण कष्ट उठाने को छोड़ देना पाप है। उसने, जिसने मनुष्य की सृष्टि की, उसी ने पशुओं को भी बनाया, और भजन संहिता 145:9में लिखा है, “उसकी दया उसकी सारी सृष्टि पर है।” पशुओं को मनुष्य की सेवा के लिये बनाया गया, लेकिन मनुष्य को उससे बलपूर्वक काम लेकर या कठोर व्यवहार द्वारा कष्ट पहुँचाने का कोई अधिकार नहीं है। PPHin 450.2

मनुष्य के पाप के कारण , “सारी सृष्टि अब तक मिलकर कराहती और पीड़ाओं में पड़ी तड़पती है।”-रोमियों 8:22। इस प्रकार दुख और मृत्यु केवलमानव जाति पर ही नहीं, वरन् पशु पर भी आए।

इस प्रकार निश्चित रूप से, यह मनुष्य का कर्तव्य है कि वह परमेश्वर की सृष्टि पर उसकी आज्ञा के उल्लंघन द्वारा लाए गए कष्ट के भार को बढ़ाने के बजाय, कम करने का प्रयत्न करे । जो मनुष्य, पशु पर अपना अधिकार समझ कर, उसका शोषण करता है, वह कायर और अत्याचारी शासक है। कष्ट पहुँचाने की प्रवृति, चाहे वह हमारे सहवासियों के प्रति हो या जँगली पशुओं के प्रति हो, शैतानी है। कई लोग इस बात को नहीं समझते कि उनकी निर्दयता कभी ज्ञात नहीं होगी, क्योंकि अबोल व निर्दोष पशु उसे प्रकट नहीं कर सकते। लेकिन, यदि बिलाम की आंखो की तरह, इनकी आँखें भी खुल सकती तो वे परमेश्वर के दूत को स्वर्ग के न्यायालय में उनके विरूद्ध प्रमाणित करने, साक्षी के रूप में देख पाते। एक अभिलेख ऊपर स्वर्ग को जाता है और वह दिन आने को है जब परमेश्वर की सृष्टि का शोषण करने वालों के विरूद्ध दण्डाज्ञा की घोषणा की जाएगी। PPHin 451.1

जब बिलाम ने परमेश्वर के दूत को देखा वह भयभीत होकर बोला, "मैंने पाप किया है, मैं नहीं जानता था कि तू मेरा सामना करने को मार्ग में खड़ा है, इसलिये अब यदि तुझे बुरा लगता है, तो मैं लौट जाता हूँ।" यहोवा ने उसे अपनी यात्रा पर आगे जाने की अनुमति दी, लेकिन इस समझौते के साथ कि उसके द्वारा बोले जाने वाले शब्द ईश्वरीय प्रभाव से नियन्त्रित होंगे। PPHin 451.2

परमेश्वर मोआब को प्रमाण देगा कि इब्री स्वर्ग की सुरक्षा में थे और यह उसने प्रभावशाली तरीक से किया भी जब उसने मोआबियों को दिखाया कि परमेश्वर की अनुमति के अभाव में इज़राइलियों को श्राप देने में भी बिलाम कितना असमर्थ था। बिलाम के पहुँचने की सूचना पाकर, मोआब का राजा, उसका स्वागत करने, अपने परिचारकगण के साथ अपने राज्य की सीमा पर गया। बिलाम को मिलने वाले बहुमूल्य उपहारों को ध्यान में रखते हुए, जब उसने बिलाम के विलम्ब पर आश्चर्य प्रकट किया, तो भविष्यद्वक्ता का उत्तर था, "देख, मैं तेरे पास अया तो हूँ, परन्तु अब क्या मैं कुछ कह सकता हूँ? जो बात परमेश्वर मेरे मुहँ में डालेगा वही बात मैं कहूँगा।" बिलाम को इस प्रतिबन्ध का बहुत खेद था, उसे डर था कि उसका उद्देश्य पूरा नहीं हो सकंगा, क्योंकि परमेश्वर की नियन्त्रण की शक्ति उस पर थी। PPHin 451.3

बड़े आडम्बरपूर्ण प्रदर्शन के साथ, राजा और उसके राज्य के प्रतिष्ठित व्यक्ति बिलाम को 'बाल के ऊंचे स्थानों' तक लेकर गए, जहाँ से वह इब्री सेना का सर्वक्षण कर सकता था। उन ऊंची ऊचाईयों पर खड़े भविष्यद्वक्ता को परमेश्वर के चुने हुए लोगों के पड़ाव पर दृष्टि करते हुए देखो! उन्हीं के इतने निकट हो रही घटनाओं के बारे में इज़राइली कितना कम जानते थे। दिन रात परमेश्वर द्वारा की गई सुरक्षा के बारे में कितना सीमित था उनका ज्ञान! कितना धुंधघला है मनुष्य का दृष्टिकोण! कितने पीछे हैं वो, हर युग में, उसकी करूणा और उसके प्रेम को समझने में! यदि वे उनके पक्ष में लगातार प्रयोग की गई परमेश्वर के सामर्थ्य को पहचान सकते, तो क्या उनके हदय उसके प्रेम के प्रति कृतज्ञता से, और उसकी सामर्थ्य और तेजस्विता के विचार पर श्रद्धा से भर नहीं जाते? PPHin 452.1

बिलाम को इब्रियों की बलि की भेटों का थोड़ा बहुत ज्ञान था, और उसे आशा थी कि उनसे बढ़कर मूल्यवान उपहारों द्वारा वह परमेश्वर की आशीष प्राप्त कर लेगा और अपने पापमय उद्देश्यों की उपलब्धि को निश्चित कर लेगा। इस प्रकार मूर्तिपुजक मोआबियों की भावनाएँ उसके विवेक को नियन्त्रित करने लगी थी। उसकी बुद्धिमता मूर्खता हो गई थी, उसकी आध्यात्मिक दृष्टि धुँधला गई थी, और शैतान की शक्ति के आगे समर्पण करके वह स्वयं अंधा हो गया था। बिलाम के निर्देश से सात वेदियाँ बनवाई गई, और उसने प्रत्येक वेदी पर बलि की भेंट चढ़ाई। फिर वह परमेश्वर से मिलने एक "उच्च स्थान' पर गया और उसने परमेश्वर द्वारा प्रकट किया हुआ सब कुछ बालाक को बताने की प्रतिज्ञा की। PPHin 452.2

अपने हाकिमों और अधिकारियों के साथ मोआबका राजा बलि के पशु के पास खड़े रहे, और भविष्यद्वक्ता के लौटने की प्रतीक्षा में, उत्सुक प्रजा उसके चारों ओर एकत्रित हो गई । आखिरकार वह आया और लोग उन शब्दों के लिये रूके रहे जो घृणित इज़राइलियों के पक्ष में प्रयोग की जाने वाली अद्भुत शक्ति को हमेशा के लिये निष्प्रभाव करने वाले थे। बिलाम ने कहा- PPHin 453.1

"बालाक ने मुझे आराम से, अर्थात मोआब के राजा ने

मुझे पूरब के पहाड़ो से बुलावा भेजा,

'आ, मेरे लिये याकूब को श्राप दे!"

परन्तु जिन्हें परमेश्वर ने श्राप नहीं दिया

उन्हें में क्या श्राप दूँ। और जिन्हें

यहोवा ने धमकी नहीं दी, उन्हें

मैं कैसे धमकी दूँ?

चट्टानों की चोटी पर से वे मुझे दिखाई पड़ते है,

पहाड़ियों पर से में उन्हें देखता हूँ,

वह ऐसी जाति है जो अकेली बसी रहेगी

और अन्य जातियों से अलग गिनी जाएगी

याकूब के धूलि के किनके को कौन गिन सकता है?

या इजराईल की चौथाई की गिनती कौन ले सकता है?

सौभाग्य, यदि मेरी मृत्यु धर्मियों की सी

और मेरा अन्त भी उन्हीं के समान हो ।" PPHin 453.2

बिलाम ने इस बात का अँगीकार किया कि वह इज़राइल को श्रापित करने के उद्देश्य से आया था, लेकिन जो शब्द उसने कहे वे उसके ह्दय की भावनाओं के बिल्कुल विपरीत थे। उसे आशीर्वचन कहने को विवश किया गया था, जबकि उसका ह्रदय श्रापों से भरा था। PPHin 453.3

बिलाम ने इज़राइलियों के पड़ाव पर दृष्टि डाली, और उनकी समृद्धि के प्रमाण को उसने अचरज से देखा। उसे बताया गया था कि वे एक असम्य, अव्यवस्थित समूह है, जो देश में घुमक्कड़ झुण्डों में फैले हुए है, और पड़ौसी देशों के लिये सताहट और भय का कारण है, लेकिन उनका अविर्भाव इसके बिल्कुल विपरीत था। उसने उनकी छावनी का विस्तृत फैलाव और त्रुटिहीन प्रबन्धन देखा, जिसमें अनुशासन और व्यवस्था हर हर चीज में दिखाई दे रहे थे। उसे इज़राइल के प्रति परमेश्वर की कृपा-दृष्टि दिखाई गई और उसके चुने हुए लोगों के तौर पर उसका विशिष्ट चरित्र भी दिखाया गया। उन्हें अन्य जातियों के समस्तर नहीं वरन् उनसे बढ़कर ऊँचा उठना था। "वह ऐसी जाति थी जो अकेली बसी रहेगी, और अन्य जातियों से अलग गिनी जाएगी।" इन शब्दों के बोले जाने के समय इज़राइलियों का कोई स्थायी उपनिवेश नहीं था, और उनका विशेष चरित्र, उनका आचरण और उनके रीति-रिवाज बिलाम से अपरिचित थे। लेकिन इज़राइल केपश्चइतिहास में यह भविष्यवाणी कितने प्रभावशाली ढंग से पूरी हुईं! अपने दास्तव के सभी वर्षा के दौरान, विभिन्न देशों में तितर-बितर होने के समय से सभी युगों में, वे एक विशिष्ट जाति रहे हैं। इसी प्रकार परमेश्वर के लोग वास्तविक इज़राइल भले ही सभी देशों में तितर-बितर हैं, और पृथ्वी पर यात्री है, पर उनकी नागरिकता स्वर्ग में है। PPHin 454.1

विलाम को केवल राष्ट्र के तौर पर इब्री लोगों का इतिहास ही नहीं दिखाया गया, वरन् उसने अन्त समय तक परमेश्वर के वास्तविक इज़राइल की वृद्धि और समृद्धि को देखा। उसने 'सर्वोच्च' परमेश्वर से प्रेम करने वाले और उसका भय मानने वालों पर उसकी विशेष कृपा-दृष्टि को देखा। उसने देखा कि जब वे मृत्यु की परछाई की अन्धकारमय घाटी में प्रवेश करते है, परमेश्वर का हाथ उन्हें सहारा देता है। उसने उन्हें कब्र में से अनश्वरता, सम्मान और महिमा का ताज पहने बाहर निकलते हुए देखा। उसने बचाए हुए लोगों को नवीनीकृत पृथ्वी की अनश्ववर महिमा में आनन्दित होते देखा। दृश्य को निहारते हुए वह कहता है, "याकूब की धूलि के किनके को कौन गिन सकता है या इज़राइल की चौथाई की गिनती कौन ले सकता है।" जब उसने प्रत्येक सिर परमहिमा के मुक्ट को देखा, प्रत्येक मुखाकृति से हर्ष की अभिव्यक्ति को देखा और पावन प्रसन्नता के कभी ना समाप्त होने वाले जीवन की अपेक्षा की, उसने प्रार्थना की, "मेरी मृत्यु धर्मियों की सी और मेरा अन्त भी उन्ही के समान हो। PPHin 454.2

यदि परमेश्वर द्वारा दिए गए प्रकाश को ग्रहण करना बिलाम के आचरण में होता, तो उसके कहे शब्दों को वह सत्य प्रमाणित करता, वह मोआब के साथ तत्काल ही सारे सम्बन्ध समाप्त कर

देता। वह परमेश्वर की दया की परिकल्पना नहीं करता, वरन् गहरे प्रायश्चित के साथ उसके पास लौट आता। लेकिन बिलाम को अधर्म की मजदूरी प्रिय थी और इसी को प्राप्त करने के लिये वह दृढ़ निश्चयी था। PPHin 455.1

बालक ने आत्मविश्वास के साथ इज़राइल पर श्राप को क्षतिकर अंगमारी की तरह लगने की अपेक्षा की थी, और भविष्यद्वक्ता के उच्चारण पर वह भावुक होकर बोला, "तूने मेरे साथ यह क्या किया? मैंने तुझे अपने शत्रुओं को श्राप देने को बुलवाया था, परन्तु तूने उन्हें आशीष ही आशीष दी है।" बिलाम ने आवश्यकता का आधार बनाने के लिये, दावा किया कि ईश्वरीय शक्ति द्वारा उसके होठो से बलपूर्वक निकाले गए शब्द परमेश्वर की इच्छा के लिये अंतर्विवेकशील श्रद्धा से बोले गए थे। उसने उत्तर दिया, "जो बातयहोवा ने मुझे सिखलाई है, क्या मुझे उसी को सावधानी से बोलना नहीं चाहिये।" PPHin 455.2

बालक अब अपने उद्देश्यों को त्याग नहीं सकता था। उसने निर्णय लिया कि इब्रियों की विशाल छावनी द्वारा प्रस्तुत भव्य स्मरणीय दृश्य ने बिलाम को इतना डरा दिया था कि वह उनके विरूद्ध अपने जादू-टोने का अभ्यास करने का दुस्साहसल न कर सका। राजा ने संकल्प किया कि वह भविष्यद्वकता को किसी ऐसे स्थान पर ले जाएगा जहाँ से सेना का छोटा सा भाग ही दिखाई दे। यदि विलाम को उन्हें पृथक दलों में श्राप देने को मनाया जा सकता तो शीघ्र ही सम्पूर्ण छावनी विनाश को समर्पित हो सकती थी। पिसगा के सिरे पर दूसरा प्रयत्न किया गया। यहाँ भी सात वेदियाँ बनाई गई और पहली वेदी के समान, इसपर भी वैसी ही भेटें रखी गई। राजा और उसके हाकिम बलि के पशु के पास खड़े रहे, और बिलाम परमेश्वर से मिलने गया। भविष्यद्वक्ता को फिर से एक पवित्र सन्देश दिया गया जिसमें परिवर्तन करने की या जिसे रोके रखने का अधिकार उसके पास नहीं था। PPHin 455.3

जब वह चिंतित, प्रत्याशित समूह के सामने प्रकट हुआ, उससे प्रश्न पूछा गया, "यहोवा ने क्या कहा है? पहले की तरह, उसके उत्तर ने राजा और हाकिमों के हृदय को भय से भर दिया। PPHin 455.4

"ईश्वर मनुष्य नहीं कि झूठ बोले, और न वह आदमी है कि अपनी इच्छा बदले।

क्या जो कुछ उसने कहा उसे न करे?

क्या वह वचन देकर उसे पूरा न करे?

देखो, आशीर्वाद ही देने की आज्ञा मैंने पाई है,

वह आशीष दे चुका है, और में उसे नहीं पलट सकता।

उसने याकूब में अनर्थ नहीं पाया

और न इज़राइल में अन्याय देखा है।

उसका परमेश्वर यहोवा उसके संग है,

और उनमें राजा की सी ललकार होती है। PPHin 455.5

इन रहस्यों के उजागर होने से श्रद्धायुक्त भय के साथ बिलाम ने कहा, "निश्चय ही कोई मन्त्र याकूब पर नहीं चल सकता, और इज़राइल के विरूद्ध भविष्यवाणी करना व्यर्थ है।" महान जादूगर ने सम्मोहन की अपनी शक्ति को, मोआबियों के अनुरोध के तदानुसार प्रयोग किया था, लेकिन इसी अवसर के सन्दर्भ में इज़राइल के लिये कहा जाना चाहिये, "ईश्वर ने क्या ही विचित्र काम किया हैं।" ईश्वरीय सुरक्षा की छत्र-छाया में, उनपर कोई भी जाति या कोई राज्य, भले ही वह शैतान की सम्पूर्ण शक्ति से सहायताप्राप्त क्यों न हो, विजयी नहीं हो सकेगा। समस्त संसार को उसके लोगों के लिये किए गए चमत्कारी कार्य पर अचम्भा करना चाहिये- कि एक मनुष्य जिसने अपने ही मार्ग पर चलने का दृढ़ संकल्प कर रखा हो, दिव्य शक्ति से इस प्रकार नियन्त्रित हो कि श्रापों के स्थान पर वह उत्कृष्ट और भावुक कविता की भाषामें सबसे प्रिय व अनमोल प्रतिज्ञाओं को उच्चारित करने लगे। और इस समय इजराईल के प्रति परमेश्वर द्वारा प्रकट की गई कृपा-दृष्टि सभी युगों में उसके निष्ठावान और आज्ञाकारी लोगों के लिये उसकी सुरक्षादेय देखभाल का आश्वासन है। जब शैतान परमेश्वर के लोगों को नष्ट करने, धमकाने या गलत प्रतिनिधित्व करने के लिये दुष्ट मनुष्यों को उकसाने का प्रयत्न करे, यही घटना उनकी स्मृति में लाई जाएगी और यह परमेश्वर में उनके विश्वास और उनके साहस को सबल करेगी। PPHin 456.1

मोआब का राजा, खेदित और हतोत्साहित होकर बोला, "उनको न तो श्राप देना, और न आशीष देना।" अभ्ज्ञी भी उसके हृदय में थोड़ी सी आशा बची हुई थी, और उसने एक और प्रयत्न करने का संकल्प किया। वह बिलाम को पोर पर्वत पर ले गया, जहां एक मन्दिर उनके देवता बाल की पाश्विक आराधना के लिये समर्पित था। यहां भी पहले की तरह उतनी ही वेदियाँ बनाई गई और उतनी ही बलि की भेटें चढ़ाई गई, लेकिन बिलाम इस परमेश्वर की इच्छा जानने अकेला नहीं गया, जैसे कि पहले गया था। उसने जादू-टोने का दिखावा नहीं किया, वरन् वेदी के निकट खड़े रहकर, उसने चारों ओर इज़राइलियों के तम्बुओं पर दृष्टि डाली। फिर से परमेश्वर का आत्मा उस पर उतरा और उसके होठों से ईश्वरीय सन्देश निकला — PPHin 457.1

हे याकूब तेरे डेरे, और हे इज़राइल तेरे निवासस्थान

क्या ही मनभावने है

वो तो घाटियों के समान और नदी के तट की

वाटिकाओं के समान ऐसे फैले हुए है,

जैसे कि यहोवा के लगाए हुए अगर के वक्ष
और जल के निकट के देवदार।
और उसके घड़ो से जल उमड़ा करेगा
और उसका बीज बहुत से जलभरे खेतों में पड़ेगा
और उसका राजा अगाम से भी महान होगा
और उसका राज्य बढ़ता ही जाएगा ।
वह दुबका बैठा है, वह सिंह या सिंहानी के
समान लेट गया, अब उसको कौन छेडे?
जो कोई तुझे आशीर्वाद दे वह आशीष पाए
और जो कोई श्राप दे वह श्रापित हो।" PPHin 457.2

परमेश्वर के लोगों की समृद्धि, यहाँ पर, प्रकृति में पाई जाने वाली अत्यन्त सुन्दर आकृतियों के द्वारा दर्शायी गई है। भविष्यद्वक्ता इज़राइल की तुलना प्रचुर पैदावार से ढकी हुई उपजाऊ घाटियों से चिरस्थायी जल के सोतों से तरित प्रफुल्लित वाटिकाओं से, भव्य देवदार और सुगंधित चन्दन वृक्षों से करता है। भव्य देवदार की आकृति बाईबल में पाई जाने वाली सबसे सुन्दर और उचित आकृति है। लेबनान का देवदार पूरब वासियों द्वारा सम्मानीय माना जाता था। वृक्षों की जिस श्रेणी का ये सदस्य है, वह पृथ्वी पर जहाँ कहीं भी मनुष्य गया है, पायी जाती है। उत्तर ध्रुवीय क्षेत्र से लेकर ऊष्ण कटिबन्ध तक, भीष्ण गमी में आनन्दमग्न, फिर भी शीत का सामना करते हुए, नदी के किनारे प्रचुरता में लहराते हुए, और सूखी प्यासी बंजर भूमि पर मीनार के समान ऊंचा खड़े हुए वे फलते-फूलते रहते है। अपनी जड़ो को वे पर्वतों की चट्टानों में गहराई तक रोप देते है, और तूफान को चुनौती देते हुए दृढ़ता से खड़े रहते है। शीत के श्वास लेने पर जब अन्य सब नष्ट हो जाता है, इनके पत्ते हरे और ताजे रहते हैं। अन्य सभी वृक्षों से श्रेष्ठतर लेबनान के देवदारअपनी मजबूती, अपनी स्थिरता, अपनी अक्षय ताकत के लिये प्रख्यात है ओर इन्हें उनके प्रतीक के रूप में प्रयोग किया जाता है जिनका "जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है ।'- कुलुस्सियों 3:31 भजन संहिता में लिखा है, "धर्मी लोग देवदार के समान बढ़ते रहेंगे।" ईश्वर के हाथ ने देवदार को जँगल के राजा के तौर पर ऊँचा उठाया है। "सनौबर उसकी टहनियों के समान भी नहीं थे, और न अर्मोन वृक्ष उसकी शाखाओं के तुल्य थे"-यहेजकेल 31:8 । परमेश्वर की बारी का कोई भी वृक्ष उसके तुल्य न था। देवदार को बार-बार राजसी गौरव के प्रतीक के रूप में प्रयोग में लाया गया है और पवित्र शास्त्र में धर्मी का प्रतिनिधित्व करने के लिये उसका प्रयोग बताता है कि स्वर्ग किस प्रकार उनका सम्मान करता है जो परमेश्वर की इच्छा को पूरी करते है। PPHin 458.1

बिलाम नें भविष्यवाणी की कि इज़राइल का राजा अगाग से अधिक शक्तिशाली और महानतम होगा। यह नाम अमालेकियों के राजाओं को दिया गया था, जो उस समय एक शक्तिशाली राष्ट्र थे, लेकिन यदि इज़राइल परमेश्वर के प्रति निष्ठावान रहते तो वे अपने सभी शत्रुओं को वश में कर सकते थे। इज़राइल का राजा परमेश्वर का पुत्र था, और एक दिन पृथ्वी पर उसके सिंहासन को स्थापित होना था, और उसका अधिकार सभी सांसारिक राज्यों से ऊंचा होना था। PPHin 458.2

भविष्यद्वक्ता की बात सुनकर बालाक निराशा, डर और कोध से अभिभूत हो गया। वह रूष्ट इस कारण था कि जब सब कुछ उसके विरूद्ध नियत था, बिलाम उसे अनुकूल प्रत्युत्तर का कम से कम प्रोत्साहन दे सकता था। उसने भविष्यद्वक्ता के भ्रमकारी मध्यमार्गको घृणा की दृष्टि से देखा। अत्यन्त कोधित होकर उसने कहा, "अब तू अपने स्थान पर भाग जा, मैने तो सोचा था कि तेरी बड़ी प्रतिष्ठा करूँगा, परन्तु अब यहोवा ने तुझे प्रतिष्ठा पाने से रोक रखा है।" उत्तर यह था कि राजा को आगाह कर दिया गया था कि बिलाम वही संदेश दे सकता था जो उसे परमेश्वर द्वारा दिये गए थे। PPHin 459.1

अपने लोगों के पास लौटने से पहले, बिलाम ने संसार के उद्धारकर्ता और परमेश्वर के शत्रुओं के निर्णायक विनाश की उत्कृष्ट और सुन्दर भविष्यवाणी की, "मैं उसको देखूंगा तो सही, परन्तु अभी नहीं, मै उसको निहारूंगा तो सही, परन्तु समीप होकर नहीं, याकूब में से एक तारा उदय होगा, और इजराईल में से एक राज दण्ड उठेगा, जो मोआब की सीमाओं को चूर कर देगा, और सब दंगा करने वालों को गिरा देगा। ओर उसने केनियों, एमोलेक, एदोम और मोआब के सर्वनाश की भविष्यवाणी करते हुए अपनी बात का समापन किया, और इस प्रकार मोआबी राजा के लिये आशा की कोई किरण नहीं बची। PPHin 459.2

उन्नति और धन की अपेक्षा में निराश, राजा की घृणा का पात्र, और यह जानते हुए कि उसने परमेश्वर को खेदित किया था, बिलाम अपने स्व-चयनित अभियान से लौटा। उसके घर पहुँचने पर परमेश्वर के आत्मा की नियन्त्रणकारी शक्ति ने उसे छोड़ दिया और उसका लालच, जो अभी तक केवल रोक कर रखा गया था, जीत गया। बालक द्वारा प्रस्तावित पारितोषिक को पाने के लिये, बिलाम किसी भी साधन का प्रयोग करने को तैयार था। बिलाम जानता था कि इज़राइलियों की समृद्धि उनकी परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता पर निर्भर थी, और उन्हें छल-कपट से पाप करवाने के अलावा, पराजित करने का और कोई उपाय नहीं था। उसने निर्णय लिया कि इज़राइल को श्रापित ठहराने के लिये वह मोआबियों को अनुसरण किये जाने वाले तरीके का परामर्श देगा और राजा की कृपा-दृष्टि प्राप्त करेगा। PPHin 459.3

वह तत्काल मोआब देश लौटा और राजा के सम्मुख अपनी योजना प्रस्तुत की। मोआबियों को स्वयं विश्वास था कि जब तक इज़राइली परमेश्वर के वफादार थे, परमेश्वर उनकी ढाल होगा। बिलाम द्वारा प्रस्तावित योजना के अनुसार इज़राइलियों को मूर्तिपूजा के लिये फूसलाकर परमेश्वर से दूर

किया जा सकता था। यदि उन्हें बाल और अशतींरेत की व्यभिचारी उपासना मे व्यस्त किया जाए, तो उनका सर्वशक्तिमान रखवाला उनका शत्रु हो जाएगा और वे उनके पड़ोसी रणकुशल राष्ट्रों के शिकार हो जाएँगे। यह योजना राजा द्वारा तत्परता से स्वीकार कर ली गई, और बिलाम स्वयं इसके कियान्वन में सहयोग करने के लिये रूका रहा। बिलाम ने अपनी शैतानी युक्ति की सफलता देखी। उसने देखा कि परमेश्वर का प्रकोप उसके लोगों पर पड़ा और उसकी दण्डाज्ञा से हजारों मृत्यु को प्राप्त हुए, लेकिन जिस ईश्वरीय न्याय ने पाप को दण्डित किया, उसी ने प्रलोभन देने वालों को दण्ड से बच निकलने की अनुमति नहीं दी। इज़राइल के मिद्यानियों के विरूद्ध युद्ध में बिलाम मारा गया। उसे अपने अन्त के निकट होने का पूर्वाभास हुआ था जब उसने कहा, "मेरी मृत्यु धर्मियों की सी, और मेरा अन्त भी उन्ही के समान हो!" लेकिन उसने धर्मी के जीवन को जीना नहीं चुना, और उसका अन्त परमेश्वर के शत्रुओं के साथ निर्धारित किया गया। PPHin 460.1

बिलाम का अन्त यहूदा के अन्त से मिलता जुलता था, और उनके आचरण में भी बहुत समानता थी। इन दोनो व्यक्तियों ने परमेश्वर और धन सम्पत्ति की शुश्रूष को एक करने का प्रयत्न किया और इन्हें कड़ी हार का सामना करना पड़ा। बिलाम ने सच्चे परमेश्वर को स्वीकार किया और उसकी सेवा टहल करने का दावा किया, यहूदा ने यीशु के मसीह होने में विश्वास किया ओर उसे अनुयायियों के साथ मिल गया। लेकिन बिलाम यहोवा की सेवा-टहल को सांसारिक लाभ और सम्मान की उपलब्धि के लिये पैरों का पत्थर बनाना चाहता था, और ऐसा करमेमें असफल होने पर वह लड़खड़ाया, गिरा और टूट गया। यहूदा, मसीह के साथ उसके सम्बन्ध द्वारा उस सांसारिक राज्य में पदोन्नते और धन सम्पत्ति सुरक्षित करना चाहता था, जिसे, जैसा कि उसे विश्वास था, मसीह स्थापित करने वाला था। उसकी आशाओं की असफलता उसके धर्मत्याग और विनाश का कारण बनी। बिलाम और यहूदा दोनो को ही बहुत प्रकाश प्राप्त था और उनके पास विशेषाधिकार भी थे, लेकिन एक पाप ने, जिसे वे संजोए हुए थे, उनके सम्पूर्ण चरित्र को विषैला कर दिया और उनके विनाश का कारण बना। PPHin 460.2

हृदय में किसी भी मसीह-विरोधी लक्षण को बसने की अनुमति देना खतरनाक है। संजोए रखा गया एक पाप, धीरे-धीरे चरित्र का पतन कर देता है, और उसकी सभी शिष्ट क्षमताओं को पापमय अभिलाषाओं के अधीनस्थ कर देता है। अंतरात्मा पर से एक सुरक्षाकर्मी हटाने से, एक बुरी आदत में पड़ने से, कर्तव्य की माँग की एक उपेक्षा आत्मा की सुरक्षा को खंडित कर देती है और शैतान के अन्दर आनेके लिये और हमें पथभ्रष्ट करने के लिये द्वार खोल देती है। एकमात्र सुरक्षित मार्ग यही है कि दाऊद की तरह निष्ठावान हृदय से हम प्रतिदिन प्रार्थनाएँ करें। "मेरे पाँव तेरे पथों में स्थिर रहें, फिसले नहीं । - भजन संहिता 17:5 । PPHin 461.1

अध्याय 41—यरदन में स्वधर्म-त्याग

यह अध्याय गिनती 25 पर आधारित है

आनन्दित ह्दयों और परमेश्वर में नवीनीकृत विश्वास के साथ इज़राइल की सेनाएं बाशान से लौट आई थी। उन्होंने लाभप्रद भू-खण्ड पर अधिकार प्राप्त कर लिया था और वे कनान पर तत्काल विजय पाने के लिये आश्वस्त थे। उनके और प्रतिज्ञा के देश के बीच में केवल यरदन नदी थी। नदी के पार एक उपजाऊ मैदान था जो हरियाली से आवृत था, कई झरनों से प्रवाहित धाराओं से तरित था और ताड़ के घने वृक्षों से आच्छादित था। मैदान की पश्चिमी सीमा पर यरीहो के महल और मीनारें थीं जो ताड़ की वृक्षवाटिकाओं से इतने घिरे हुए थे कि यरीहो को 'ताड़ के पेड़ो का शहर' कहा जाता था। PPHin 462.1

यरीहो के पूरब में, जिस पठार पर वे चल रहे थे, उसके और नदी के बीच एक मैदान था जो कई मील चौड़ा था और नदी के किनारे कुछ दूरी तक फैला हुआ था। इस परिरक्षित घाटी की जलवायु, उष्णकटिबन्ध की जलवायु के समान थी, और यहां शित्तीम या कीकी के वृक्षों की भरमार थी जिससे इस मैदान का नाम, 'शित्तीम की घाटी" पड़ा। इज़राइलियों ने यहां पड़ाव डाला, और नदी के किनारे की वृक्ष वाटिकाओं उन्हें एक उपयुक्त आश्रयस्थल मिला। PPHin 462.2

लेकिन इस आकर्षक परिवेश के मध्य उनका सामना एक ऐसी बुराई से होना था जो बीहड़ के जंगली जानवरोंया हथियारबंध सैनिकों की शक्तिशाली सेनाओं से भी अधिक घातक थी। प्राकृतिक सुविधाओं से सम्पन्न, वह देश वहाँ के निवासियों द्वारा दूषित कर दिया गया था। मुख्य देवता, बाल की सार्वजनिक आराधना में, सबसे अपमानजनक और अधर्मी दृश्यों को अभिनीत किया जाता था। हर तरफ मूर्तिपूजा और व्यभिचार के लिये विख्यात स्थान थे, उनके नाम ही लोगो के भ्रष्टाचार और दुष्टता के संकेतक थे। PPHin 462.3

इस परिवेश ने इज़राइलियों पर मलिनकारी प्रभाव डाला। उनके मन लगातार प्रस्तावित भ्रष्ट विचारों से परिचित हो गए। उनके आरामदेह और निष्क्रिय जीवन ने नीतिमग्रष्ट करने वाले प्रभाव उत्पन्न किये, और लगभग स्वयं से अनजान वे परमेश्वर से दूर हो रहे थे और उस अवस्था में आ रहे थे जिसमें वे आसानी से प्रलोभन का शिकार हो जाते। यरदन के किनारे पड़ाव डालते समय, मूसा कनान में स्थापित होने की तैयारी कर रहा था। इस कार्य में महान अगुवा पूरी तरह व्यस्त था, लेकिन लोगों के लिये असमंजस और प्रत्याशा का यह समय बहुत कष्टकर था, और कुछ ही सप्ताह बीते थे कि उनका इतिहास सदाचार और निष्ठा से हटकरअत्यन्त भयावह अपसरण से दूषित हो गया। PPHin 462.4

प्रारम्भ में इज़राइलियों और उनके मूर्तिपूजक पड़ोसियों के बीच सीमित संपर्क था, लेकिन कुछ समय पश्चात मिश्यानी स्त्रियाँ चुपके से छावनी में आने लगी। उनके आने से कोई खलबली नहीं मची, और उनकी युक्ितियाँ इतने गुप्त रूप से संचालित की थी कि मूसा का ध्यान इस विषय की ओर नहीं लाया गया। इब्रानियों के साथ संगति में, इन स्त्रियोंका लक्ष्य इब्रियों को परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करने के लिये उकसाना उनका ध्यान मूर्तिपूर्जक विधियों और रीति-रिवाजों की ओर आकर्षित करना और उन्हें मूर्तिपूजा में जाना था। ये लक्ष्य, मित्रता के स्वांग में ध्यान से संगुप्त थे, ताकि इनका सन्देह लोगों के अभिभावकों को भी नहीं हुआ। PPHin 463.1

बिलाम के परामर्श अनुसार, मोआब के राजा ने मोआबी देवताओं के सम्मान में एक भव्य पर्व का आयोजन किया, और गुप्त रूप से प्रबन्ध किया गया कि बिलाम इज़राइलियों को इस पर्व में सम्मिलित होने को मनाए। बड़ी संख्या में लोग इस उत्सव को देखने के लिये उसके साथ हो लिये। उन्होंने निषिद्ध क्षेत्र में जाने का दुस्साहस किया, और शैतान के जाल में फेस गए। नृत्य और संगीत से मोहित, और अधर्मी स्त्रियों के सौंदर्य से आकर्षित होकर, उन्होंने यहोवा के प्रति अपनी स्वामिभक्ति को त्याग दिया। जैसे-जैसे वे आमोद-प्रमोद और सहभोज में सम्मिलित हुए, मदिरापान ने उनकी बुद्धि को भ्रष्ट कर दिया और आत्म-संयम के बाँध को तोड़ दिया। आवेग के वश में, अपनी अंतरात्मा को अश्लीलता से मलिन कर वे मूर्तियों को दण्डवत करने के लिये तैयार हो गए। PPHin 463.2

कुछ ही समय में इज़राइल की छावनी में, घातक रोग की तरह यह जहर फैल गया। जो युद्ध में अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर सकते थे, वे अधर्मी स्त्रियों के छल-कपट से पराजित हो गए। लोग प्रेमान्ध से प्रतीत हो रहे थे। प्रतिष्ठित व्यक्ति और प्रधान आज्ञा का उल्लंघन करने मेंसर्वप्रथम थे, और इतने लोग दोषी थे कि स्वधर्म त्याग पूरे देश में सर्वव्यापी हो गया। "इज़राइली बालपोर देवता को पूजने लगे।" जब मूसा को इस पाप को देखने के लिये जागृत किया गया, उनके शत्रुओं के षड़यन्त्र इतने सफल हो गए थे कि पोर पर्वत पर होने वाली व्यभिचारी पूजा में इज़राइली केवल सम्मिलित ही नहीं हो रहे थे, वरन् मूर्ति-पूजा सम्बन्धित विधियाँ इज़राइल के डेरों में भी पालन की जाने लगी थी। वृद्ध अगुवा कोध से भर गया, और परमेश्वर का कोप भड़क उठा। PPHin 463.3

उनकी अधर्मी प्रथाओं ने इज़राइलियों के लिये वह कर दिया जो बिलाम का जादू-टोना नहीं कर सका। इन प्रथाओं ने उन्हें परमेश्वर से अलग कर दिया। शीघ्र आने वाली दण्डाज्ञाओं के द्वारा लोगों को उनके पाप की घोरता के प्रति जागरूक किया गया। छावनी में ऐसी महामारी फैली कि उसमें लाखों लोग मारे गए। परमेश्वर ने आदेश दिया कि स्वधर्म त्याग के अगुवो को न्यायियों द्वारा मृत्यु दण्ड दिया जाए। आदेश का तत्परता से पालन किया गया। अपराधियों का वध किया गया, और उनके शवों को समस्त इज़राइल की दृष्टि में टॉगा गया, ताकि प्रजा, यह देखकर कि उनके

अगुवों के साथ इतना कठोर व्यवहार किया गया, उनके पाप के प्रति परमेश्वर की घृणा और उनके विरूद्ध उसके कोध के प्रकोप का गहराई से आभास कर सके। PPHin 464.1

सभी को लगा कि दण्ड न्यायसंगत था, और लोग शीघ्र ही मिलापवाले तम्बू में गए और दीन होकर आँसुओं के साथ अपने पापों का अंगीकार किया। जब वे मिलापवाले तम्बू के द्वार पर, परमेश्वर के सम्मुख रो रहे थे, जब महामारी मृत्यु सम्बन्धित अपना कार्य कर रही थी, और न्यायी अपने कठोर कार्यभार को कार्यन्वित कर रहे थे, इज़राइल का एक प्रधान, जिम्नरी, 'मिद्यान के एक घराने" की राजकमारी, एक मिद्यानी कसबी के साथ छावनी में निडरतापूर्वक आया और उसे अपने तम्बू में ले गया। पाप कभी भीइससे अधिकनिडरऔर उद्दण्डनहीं था ।नशे में चूर, जिम्री ने अपने 'सदोम समान पाप' की घोषणा की, और अपनी निरलज्जता में आनन्दित हुआ । याजकों और अगुवों ने दीन व दुखी होकर, "वेदी और आँगन के बीच" रोते हुए और परमेश्वर से उसके लोगों को दण्डित ना करने की विनती करते हुए दण्डवत किया था, जबकि पूरी मण्डली की उपस्थिति में, इज़राइल के इस प्रधान ने अपने पाप का प्रदर्शन किया, मानों परमेश्वर के प्रतिशोध को ललकारना चाहता हो और छावनी के न्यायियों की हँसी उड़ाना चाहता हो। महायाजक एलीआजार का पुत्र पीनहास, मण्डली के मध्य से उठा, और हाथ में एक बरछी लेकर, "उस इज़राईली पुरूष के डेरे में भीतर गया" और दोनो को मार दिया। इस पर मरी थम गईं, और जिस याजक ने पवित्र आदेश को कार्यान्वित किया था, उसे इज़राइल के सम्मुख सम्मानित किया गया, और उसको और उसके घराने को हमेशा केलिये याजकता सौंपी गई। PPHin 464.2

पवित्र सन्देश था, "पीनहास ने मेरी जलजलाहट को इज़राइलियों पर से दूर किया, इसलिये तू कह दे कि में उससे शान्ति की वाचा बाँधता हूँ. और वह उसके लिये, और उसके बाद उसके वंश के लिये, सदा के याजकपद की वाचा होगी, क्योंकि उसमें अपने परमेश्वर के लिये जलन उठी, और उसने इज़राइलियों के लिये प्रायश्चित किया। PPHin 465.1

शित्तिम में पाप के कारण इज़राइलियों पर आईं दण्डाज्ञा ने उस विशाल समुदाय के उत्तरजीवियों को नष्ट कर दिया, जिन्होंने चालीस वर्ष पूर्व अपने ऊपर ली थी, "वे अवश्य ही बीहड़ में मृत्यु को प्राप्त होंगे।" यरदन की तराईयों में पड़ाव के दौरान, पत्रि निर्दशानुसार की गई जनगणना से ज्ञात हुआ कि, "जिन इज़राइलियों को मूसा औरयाजक हारून ने सिने के बीहड़ में गिना था, उनमें से एक भी पुरूष इस समय के गिने हुओं में न था.........यपुन्ने के पुत्र कालेब और नून के पुत्र यहोशू को छोड़, उनमें से एक भी पुरूष नहीं बचा।"-गिनती 26:64,65। PPHin 465.2

परमेश्वर ने इज़राइल पर दण्डाज्ञा भेजी क्योंकि वे मिद्यानियों के बहकावे में आ गए, लेकिन प्रलोभन देने वाले ईश्वरीय न्याय के प्रकोप से बचकर नहीं निकल सकते थे। एमोलिकियों ने इज़राइल पर रपीदीम में आक्रमण किया था और सेना के पिछले वर्ग के थक और क्षीण लोगों पर चढ़ाई की थी, लेकिन जिन मिद्यानियों ने उन्हें पाप में छलावे द्वारा घसीटा उन्हें परमेश्वर की दण्डाज्ञा का शीघ्र

ही एहसास कराया गया।क्योंकि वे सबसे खतरनाक शत्रु थे। “मिद्यानियों से इज़राइलियों का बदला ले (गिनती 31:2),मूसा को यह परमेश्वर का आदेश था, “बाद को तू अपने लोगों से जा मिलेगा।” इस जनादेश का तत्परता से पालन किया गया। प्रत्येक घराने से एक हजार पुरूषों को चुना गया और उन्हें पीनहास के नेतृत्व में बाहर भेजा गया।” और जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी, उसके अनुसार उन्होंने मिद्यानियों से युद्ध करके सब पुरूषों को घात किया। जिन लोगों को उन्होंने मार डाला, उनमें पांच मिद्यानी राजा भी थे? उन्होंने बोर के पुत्र बिलाम को भी तलवार से मार डाला ।”-गिनती 31:7,8 । आक्रमण करने वाली सेना के द्वारा बन्दी बनाई गई महिलाओं को मूसा के आदेश पर, मृत्यु के घाट उतार दिया गया और उन्हें इज़राइल के शत्रुओं में सबसे अधिक दोषी और खतरनाक ठहराया गया। PPHin 465.3

परमेश्वर के लोगों के विरूद्ध उत्पात की योजना बनाने वालों का ऐसा अन्त हुआ। भजन संहिता में 9:18 में लिखा है, “अन्य जातिवाली ने जो कुआ खोदा था, उसी में वे आप गिर पड़े, जो जाल उन्होंने लगाया था, उसमें उन्ही का पाँव फेस गया ।”-भजन संहिता 9:15। “क्योंकि यहोवा अपनी प्रजा को न तजेगा, वह अपनी धरोहर को नहीं छोड़ेगा। परन्तु न्याय फिर धर्म के अनुसार किया जाएगा।” ” वे धर्मी का प्राण लेने को दल बाँधते हैं, और निर्दोष को प्राणदण्ड देते हैं।” “उसने उनका अनर्थ उन्हीं पर लौटाया है, और वह उन्हें उन्ही की बुराई के द्वारा नष्ट करेगा ।-भजन संहिता 94:14,15,21,23। PPHin 466.1

जब बिलाम को इब्रियों को श्राप देने के लिये बुलाया गया, वह अपने जादू-टोने से उनको क्षति नहीं पहुँचा सका, क्योंकि प्रभु ने “याकूब में अनर्थ नहीं पाया” था, और ना ही उसने “इज़राइल में श्रष्टता देखी थी।”-गिनती 23:21,23 । लेकिन जब प्रलोभन में पड़कर उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा का उललघंन किया, उनका प्रतिरक्षक उनसे दूर हो गया। जब परमेश्वर के लोग उसकी आज्ञाओं के प्रति निष्ठावान होते हैं, तो “कोई मंत्र याकूब पर नहीं चल सकता और इज़राइल के विरूद्ध कोई भविष्यवाणी है।” इस कारण उन्हें छल-कपट से पाये जाने के लिये शैतान की सम्पूर्ण शक्ति और कपटी युक्तियाँ प्रयोग में लाई जाती है। यदि परमेश्वर की व्यवस्था के संरक्षक होने का दावा करने वाले उसके सिद्धान्तों का उल्लंघन करने वाले बन जाते हैं, तो वे परमेश्वर से स्वयं को दूर कर लेते हैं, और वे अपने शत्रुओं के सम्मुख खड़े होने में असमर्थ होंगे। PPHin 466.2

इज़राइली, जो मिद्यान के जादू-टोने या हथियारों से वशीभूत न हो सके, वे मिद्यान की भ्रष्ट स्त्रियों के शिकार हो गए। शैतान की सेवा टहल में प्राप्त, ऐसी है वह शक्ति, जो उस स्त्री ने आत्माओं को फँसाने और नष्ट करने के लिये प्रयोग की है। नीतिवचन 7:26में लिखा है, “क्योंकि बहुत से लोग उसने मार गिराए हैं। उसके घात किये हुओं की एक बड़ी सख्या है।” इसी प्रकार शेत की सनन्तान को उनकी निष्ठा से दूर किया गया, और वे पवित्र भ्रष्ट हो गए। इसी प्रकार यूसुफ को प्रलोभन दिया गया। इसी प्रकारइज़राइल के न्यायी, शिमशोन ने अपनी शक्ति को पलिश्तियों के हाथों खो दिया।

यहां दाऊद ने ठोकर खाई। और सबसे बुद्धिमान राजा, सुलेमान, जिसे तीन बार परमेश्वर का प्रिय कहा गया था, आवेग का दास बना और उसने उसी सम्मोहन शक्ति के लिये अपनी सत्यनिष्ठा को बलिदान कर दिया। PPHin 467.1

"परन्तु ये सब बातें, जो उन पर पड़ी, दृष्टांत की रीति पर थी, और वे हमारी चेतावनी के लिये जो जगत के अन्तिम समय में रहते है, लिखी गई है। इसलिये जो समझता है, "में स्थिर हूँ" वह चौकस रहे कि कहीं गिर न पड़े-1 कुरिन्थियो 10:11,12। शैतान भली भांति जानता है कि मनुष्य के हृदय में उसे किस बात को सम्बोधित करना है। वह जानता है- क्योंकि उसने हजारों वर्षो से पैशाचिक प्रगाढ़ता से अध्ययन किया है- प्रत्येक प्राणी में आसानी से प्रभावित होने वाले विषय, और सभी पीढियों में उसने इज़राइल के प्रधानों और शक्ति मनुष्यों को उन्हीं प्रलोभनों से पराजित किया है, जो बालपोर में इतने सफल रहे थे। तब से अब तक के युगों में अत्यन्त कमजोर व्यक्ति फैले हुए हैं जो कामुक अतिभोग की कमजोरी में फेस कर रह गये। जैसे-जैसे हम अन्तिम समय के समीप आते है, जब लोग स्वर्गीय कनान की सीमाओं पर खड़े है, पहले की तरह, शैतान उन्हें उस समृद्ध देश में प्रवेश करने से रोकने के लिये अपने प्रयत्नों को दुगना कर देगा। वह प्रत्येक मनुष्य केलिये जाल बिछाता है। वे केवल अनभिज्ञ और असम्य ही नहीं जिन्हें रक्षित होने की आवश्यकता है, शैतान अपने प्रलोभन उनके लिये भी तैयार करेगा, जो सबसे पवित्र कार्यों के लिये उच्च पदों पर आसीन है। यदि वह उनसे उनकी आत्मा को भ्रष्ट करवा सकता है, तो उनके द्वारा कई लोगों को नष्ट कर सकता है। आज भी वह उन्ही माध्यमों का प्रयोग करता है जो उसने तीन हजार वर्ष पूर्व अपनाए थे। सांसारिक मित्रता द्वारा, सौन्दर्य के आकर्षण से, भोग-विलास आमोद-प्रमोद, सहभोज या मदिरापान के माध्यम से वह सातवीं आज्ञा के उल्लंघन के लिये प्रलोभन देता है। PPHin 467.2

इससे पहले कि वह उन्हें मूर्तिपूजा के लिये मनाता शैतान ने छल से इज़राइल को व्यभिचार के लिये भरमाया। जो परमेश्वर की छवि का निरादार करेंगे और अपने निजी शरीर में उसके मन्दिर को दूषित करेंगे, वे परमेश्वर के प्रति किसी भी अपमान से अपने दुष्ट हृदयों की मनोकामना को सन्तुष्ट करने में नहीं हिचकिचाएगें। कामुक अतिभोग विवेक को क्षीण और आत्मा को भ्रष्ट कर देता है। पाश्विक प्रवृति की सन्तुष्टि द्वारा नैतिक और मानसिक शक्तियाँ निष्क्रिय हो जाती है, और आवेग के दास के लिये परमेश्वर की व्यवस्था के पवित्र दायित्व को जानना, प्रायश्चित का आभार मानना, और आत्मा का सही मूल्यांकन करना असम्भव है। भलाई, पवित्रता, सत्य, परमेश्वर के लिये श्रद्धा, पवित्र वस्तुओं के प्रति प्रेम-- वे सभी पवित्र लगावऔर शिष्ट इच्छाएं जो मनुष्य को स्वर्ग से जोड़ती हैं- कामुकता की अग्नि में भस्म हो जाती है। वह प्राणी एक कलंकित, उजाड़ बंजर भूमि, दुष्ट आत्माओं का गढ़ और "प्रत्येक अशुद्ध और घृणास्पद चिड़िया का पिंजरा" बन जाता है।" परमेश्वर के स्वरूप में सृजन किये हुए प्राणियों को पशुओं के स्तर पर उतार दिया जाता है। PPHin 468.1

मूर्तिपूजकों के साथ संगति करने ओर उनके उत्सवों में सम्मिलित होने से इब्रियों ने परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन किया जिससे राष्ट्र पर दण्डाज्ञा आईं। आज भी मसीह के अनुयायियों को अधर्मियों की संगति में ले जाकर और उनके मनोरंजन में सम्मिलित कराकर, शैतान उन्हें पाप के लिये आकर्षित करने में सफल होता है। 2 कुरिन्थियों 6:17 में लिखा है, "उनके बीच में से निकलो और अलग रहो, और अशुद्ध वस्तु को मत छुओ ।" परमेश्वर आज भी अपने लोगों से सिद्धान्तों, आचरण और रीति-रिवाजो में संसार से अलग होने की उतनी ही अपेक्षा करता है, जितनी कि प्राचीन काल में इसने इज़राइल से की थी। यदि वे वचन की शिक्षा को निष्ठा से अपनाएँगे, तो यह विशिष्टता बनी रहेगी, अन्यथा यह नहीं हो सकता। इब्रियों को आत्मसंगत करने के विरूद्ध दी गई चेतावनी, मसीहीलोगों को अधर्मियों के रीति-रिवाजों और प्रथाओं के अनुरूप होने की निषेधाज्ञा से अधिक प्रत्यक्ष और स्पष्ट नहीं थी। मसीह हमसे कहता है, "तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो। यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उसमें पिता का प्रेम नहीं है-1 यहुन्ना 2:5। "संसार से मित्रता करना परमेश्वर से बेर करना है? अतः जो कोई संसार का मित्र होना चाहता है, वह स्वयं को परमेश्वर का बैरी बनाता है"-याकूब 4:4। मसीह के अनुयायियों को स्वयं को पापियों से अलग करना है, और अपने संग-साथ का चयन तभी करना है जब उन पर उपकार करने का अवसर हो। जो हमारे ऊपर, हमें परमेश्वर से दूर करने के लिये प्रभाव डालते है, हम उनकी संगति से किनारा करने के लिये अत्यन्त निर्णायक नहीं हो सकते। "हमें परीक्षा में न पड़ने दे।" जब हम यह प्रार्थना करते है, हमे जहाँ सम्भव हो परीक्षा से दूर रहना है। PPHin 468.2

जब इज़राइली दिखावटी शान्ति और सुरक्षा की अवस्था में थे, वे पाप में ले जाए गए। उन्होनें परमेश्वर को सदा अपने आगे नहीं रखा, प्रार्थना की उपेक्षा की, और आत्मविश्वास की भावना को पनपने दिया। सहजता और असंयम ने आत्मा के गढ़ को असुरक्षित कर दिया, और भ्रष्ट विचारों ने प्रवेश पाया। वे दीवारों के भीतर के देशद्रोही थे जिन्होंने सिद्धान्तों के गढ़ो को उखाड़ फेंका ओर इज़राइल को शैतान के वश में होने दिया। इसी प्रकार आज भी शैतान आत्मा को विनाश तक पहुँचाना चाहता है। इससे पहले कि मसीही खुला पाप करे, उसके हृदय में, संसार के लिये अज्ञात, एक लम्बी प्रारम्भिक कार्यविधि चलती है। मन शुद्धता और पवित्रता से एकाएक भ्रष्टाचार, दुष्टता और अपराध में नहीं उतर आता है। परमेश्वर के स्वरूप में सृजन किये हुओं को पाश्विक या शैतानी छवि में उतारने में समय लगता है। निहारने से हमबदल जाते हैं। अपवित्र विचारों का भोग करने से, मनुष्य अपने मन को इस तरह शिक्षित कर सकता है कि जिस पाप से उसने कभी घृणा की थी वही उसके मन को भाने लगेगा। PPHin 469.1

शैतान प्रत्येक भ्रष्ट करने वाली बुराईयों और अपराध को लोकप्रिय करने के लिये हर साधन का प्रयोग कर रहा है। हम अपने शहरों की सड़को पर, किसी उपन्यास में प्रस्तुत या किसी विज्ञापन को देखे बिना नही चल सकते। मन को पाप के साथ परिचित होने की शिक्षा दी जाती है। PPHin 469.2

तुच्छ व दुष्ट लोगों द्वारा अपनाए गए मार्गों को दैनिक पत्रिकाओं में लोगों के सम्मुख रखा जाता है और रोमांचक कथाओं के माध्यम से उनके जुनून को उत्तेजित किया जाता है। वे नीचतापूर्ण अपराधों के बारे में इतना सुनते और पढ़ते है, कि उनका पहले वाला अंतर्मन, जो दृश्यों से उत्पन्न डर से कॉपं जाता था, कठोर हो जाता है, और वे इन विषयों के बारे में अत्यधिक रूचि के साथ विचार करने लगते हैं। PPHin 469.3

वर्तमान जगत और तथाकथित मसीही लोगों के भी कई लोकप्रिय मनोरंजनों का उद्देश्य वही होता है जो अधर्मियों का था। उनमें से कुछ ही ऐसे होते है जिनसे शैतान आत्माओं को नष्ट करने का ब्यौरा नहीं लेता। नाटक के माध्यम से वह बुराई को गौरवान्वित करने और आवेग को उत्तेजित करने के लिये सदियों से कार्य कर रहा है। सिद्धान्तों के प्रतिरोध को तोड़ने और कामुक अति भोग के लिये द्वार खोलने हेतु शैतान नृत्यशाला और उसका आकर्षक प्रदर्शन व विस्मयकारी संगीत, छद्मवेष, नृत्य और ताश खेलने की मेज का प्रयोग करता है। आमोद-प्रमोद के प्रत्येक समारोह में जहाँ घमण्ड को प्रोत्साहन दिया जाता है यास्वाभाविक इच्छा की पूर्ति की जाती है, जहाँ लोगों को परमेश्वर को भूलने और सात्विक रूचियों के प्रति उदासीन होने को प्रेरित किया जाता है, वहाँ शैतान आत्मा को अपनी जंजीर में जकड़ रहा होता है। PPHin 469.4

नीतिवचन 4:23 में बुद्धिमान पुरूष का परामर्श है, "सबसे अधिक अपने मन की रक्षा कर, क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वहीं है।" नीतिवचन 23:7में लिखा है, "जैसा मनुष्य अपने मन में विचार करता है, वैसा वह आप है।" पवित्र अनुग्रह से हृदय का नवीनीकरण करना चाहिये, अन्यथा जीवन की पवित्रता की अपेक्षा व्यर्थ होगी। जो भी मसीह के अनुग्रह के बिना एक सदाचारी व उत्कृष्ट चरित्र का निर्माण करने का प्रयत्न करता है, वह अस्थिर रेत पर अपना घर बना रहा है। प्रलोभन की भयानक आँधी में यह निश्चय ही गिर जाएगा। दाऊद की प्रार्थना प्रत्येक आत्मा का निवेदन होना चाहिये, "हे परमेश्वर, मेरे अन्दर शुद्ध मन उत्पन्न कर, और मेरे भीतर स्थिर आत्मा को नये सिरे से उत्पन्न कर ।"-भजन संहिता 51:10। और पवित्र वरदान के भागी बनकर हमें "परमेश्वर की समार्थ्य से विश्वास के द्वारा रक्षा"(1 पतरस 1:5)के होते हुए सब प्रकार से सन््तोषप्रद बनाना है। PPHin 470.1

फिर भी प्रलोभन का प्रतिरोध करने के लिये हमें एक कार्य करना है। जो शैतान की युक्तियों का शिकार नहीं होना चाहते उन्हें आत्मा के सभी मार्गों को सुरक्षित रखना चाहिये। जो अपवित्र विचारों का सुझाव देते हैं, उन सब चीजों को पढ़ने, देखने या सुनने से दूर रहना चाहिये। आत्मा के शत्रु द्वारा सुझाव के रूप में दिये हुए प्रत्येक विषय पर मनको भटकने के लिये नहीं छोड़ना चाहिये। प्रेरित पतरस कहता है, "इस कारण अपनी बुद्धि की कमर बांधकर, और सचेत रहकर... ...अपनी अज्ञानता के समय की पुरानी अभिलाषाओं के सदृश न बनो, पर जैसा तुम्हारा बुलाने वाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चाल-चलन में पवित्र बनो ।-1 पतरस 1:13-15 ।फिलिप्पियों 4:8में पौलुस

कहता है, "जो जो बातें सत्य उचित है, और जो जो बाते पवित्र है, और जो जो बातें सुहावनी है, और जो जो बाते मनभावनी है, अर्थात जो भी सदगुण और प्रशंसा की बाते हैं, उन पर ध्यान लगा।" इसके लिये हार्दिक प्रार्थना और निरंतर जागरूकता की आवश्यकता होगी । हमें पवित्र आत्मा के स्थायी प्रभाव का सहयोग चाहिये होगा, जो मन को स्वर्ग की ओर आकर्षित करेगा, और उसे पवित्र और शुद्ध चीजों पर मनन करने का अभ्यस्त बनाएगा। और हमें परमेश्वर के वचन का लगातार अध्ययन करना चाहिये। "युवा अपनी चाल को किस उपाय से शुद्ध रखे? परमेश्वर के वचन के अनुसार चल कर।" भजन लिखने वाला कहता है, "मैंने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है, कि तेरे विरूद्ध पाप न करूं। -भजन संहिता 119:9,11। PPHin 470.2

बेतपोर में इज़राइल के पाप के कारणवश प्रजा पर परमेश्वर की दण्डाज्ञा आई और हालाँकि वही पाप इस युग में इतनी शीघ्रता से दण्डित न हो, लेकिन उनका प्रतिफल मिलना निश्चित है। 1 कुरिन्थियों 3:17में लिखा है, "यदि कोई परमेश्वर के मन्दिर को नष्ट करेगा तो परमेश्वर उसे नष्ट करेगा।" प्रकृति ने इन अपराधों के लिये भयानकदण्डाज्ञाएं निर्धारित की है-वे दण्डाज्ञाएँ ,जो शीघ्र या विलम्ब से, आज्ञा उल्लंघन करने वालों को दी जाएगी। अन्य पापों की तुलना में इन पापों के कारण हमारी जाति का इतना भयंकर पतन हुआ, और संसार दुख और रोग की अति से श्रापित हुआ। मनुष्य अपने सहवासियों से अपने पाप को छुपाने में सफल हो सकता है, लेकिन वे कष्ट, रोग, मूर्खता या मृत्यु के रूप में उतना ही प्रतिफल पाएँगे। और इस जीवन के उस पार दण्डाज्ञा की कचहरी अविनाशी दंड के प्रतिफल को लिये खड़ी है। "ऐसे काम करने वाले परमेश्वर के राज्य में वारिस नहीं होंगे" लेकिन शैतान और उसके दूतों के साथ उसका स्थान उस "आग की झील" में होगा जो "दूसरी मृत्यु है।"-(गलतियों 5:21, प्रकाशित वाक्य 20:14) PPHin 471.1

नीतिवचन 5:3,4 में लिखा है, "पराई स्त्री के होठों से मधु टपकता है, ओर उसकी बाते तेल से भी चिकनी होती है, परन्तु परिणाममें यहजहरजेसीकड़वीऔर दो धारवाली तलवारजैसी तेज होतीहै।" इसी पुस्तक के पद 8-11 में लिखा हे, "ऐसी स्त्री से दूर ही रह, और उसकी ढयोढ़ी के पास भी न जाना, कही ऐसा न हो कि तू अपना यश औरों के हाथ, और अपना जीवन क्र जन के वश में कर दे, या पराए तेरी कमाई से अपना पेट भरे, और परदेसी मनुष्य तेरे परिश्रम का फल अपने घर में रखे, और तू अपने अन्तिम समय में जब कि तेरा शरीर क्षीण हो जाए, तब तूरोता बिलखता रह जाए ।" नीतिवचन 2:18,19में लिखा है, "उसका घर मृत्यु की ढलान पर है।" "जो उसके पास जाते है, उनमें से कोई भी लौटकर नहीं आता।" नीतिवचन 9:18 के अनुसार, "उसे स्त्री के अतिथि अधोलोक के निचले स्थानों में पहुँचे है। PPHin 471.2

अध्याय 42—व्यवस्था का दोहराया जाना

यह अध्याय व्यवस्था विवरण 4-6:28 पर आधारित है

प्रभु ने मूसा को बताया कि कनान पर स्वामित्व का नियुक्त समय पास ही था, और जब वृद्ध भविष्यद्वकता यरदन नदी और प्रतिज्ञा के देश पर दृष्टि डालती ऊंचाईयों पर खड़ा था, उसने गहरी रूचि से अपने लोगों की धरोहर को निहारा क्या यह सम्भव था कि कादेश में उससे हुए पाप के कारण उसके विरूद्ध दिया गया दण्डादेश रद्द किया जा सके? उसने आग्रहपूर्वक विनती की, "हे प्रभु यहोवा, तू अपने दास को अपनी महिमा और बलवन्त हाथ दिखाने लगा है, स्वर्ग में और पृथ्वी पर ऐसा कौन देवता है जो तेरे से काम और पराकम के कर्म कर सके? इसलिये मुझे पार जाने दे कि यरदन पार के उस उत्तम देश को, अर्थात उस उत्तम पहाड़ और लबानोन को भी देखने पाऊँ।-व्यवस्था विवरण 3:24-26। PPHin 473.1

उसे उत्तर मिला, "बस कर, इस विषय में फिर कभी मुझ से बातें न करना। पिसगा पहाड़ की चोटी पर चढ़ जा, और पूर्व, पश्चिमी, उत्तर दक्षिण चारों और दृष्टि करके उस देश को देख ले, क्योंकि तू इस यर्दन के पार जाने न पाएगा ।" व्यवस्थाविवरण 3:27। PPHin 473.2

बिना कुड़कुड़ाए मूसा ने परमेश्वर के आदेश के आगे समर्पण किया। और अब उसको इज़राइल की अधिक चिंता थी। उनके कल्याण के लिये जिस रूचि को वह महसूस करता था वैसा कौन महसूस करेगा? भरे हृदय से उसने फिर प्राथना की, "यहोवा जो सारे प्राणियों की आत्माओं का परमेश्वर है, वह इस मण्डली के लोगों के ऊपर किसी पुरूष को नियुक्त कर दे, जोउसके सामने आया-जाया करे, और उनका निकालने और पैठानेवाला हो, जिससे यहोवा की मण्डली बिन चरवाहे की भेड़-बकरियों के समान न रहे। गिनती 27:16,17। PPHin 473.3

यहोवा ने अपने दास की प्रार्थना को स्वीकार किया, और उत्तर आया, "तू नून के पुत्र यहोशू को लेकर उस पर हाथ रख, वह ऐसा पुरूष है जिसमें मेरा आत्मा बसा है, और उसको एलीआजार याजक के और सारी मण्डली के सामने खड़ा करके उनके सामने आज्ञा दे। और अपनी ओर से उसे सम्मानित कर, जिससे इज़राइलियों की सारी मण्डली उसका कहा माने ।"-गिनती 27:18-20 । यहोशू ने चिरकाल से मूसा की सेवा-टहल की थी, और चूंकि वह बुद्धिमत्ता, योग्यता और विश्वास का धनी था, उसे मूसा का उत्तराधिकारी चुना गया। PPHin 473.4

मूसा द्वारा उस पर हाथ रखने से और साथ ही इतना प्रभावशाली कार्य भार सौंपने से, यहोशू की विधिवत इज़राइल के अगुवे के रूप में अलग किया गया। उसे वर्तमान शासन में भी भागीदार होने की अनुमति मिली। यहोशू के संदर्भ में परमेश्वर का कथन मूसा के माध्यम से मण्डली में पहुँचाया गया, "और वह एलीआजार याजक के सामने खड़ा हुआ करे, और एलीआजार उसके लिये

यहोवा से ऊरीम की आज्ञा पूछा करे। उसके कहने से वह जाया करे, और उसी के कहने से लौट भी आया करे।"-गिनती 27:21,23। PPHin 474.1

इज़राइल के सदृश्य अगुवे के पद को त्यागने से पूर्व, मूसा को निर्देश दिया गया, कि वह मिस्र से उनके छुटकारे का, और भीड़ में उनकी यात्राओं के इतिहास को उनके सम्मुख दोहराये, और सिने पर दी गई व्यवस्था को भी दोहरए । जब व्यवस्था दी गई, वर्तमान की मण्डली केकुछ ही लोग अवसर की महिमामय धार्मिकता को समझने के लिये व्यस्क थे, वे शीघ्र ही यरदन को पार कर, प्रतिज्ञा के देश का स्वामित्व लेने को थे और परमेश्वर उनके सम्मुख व्यवस्था का अधिकार प्रस्तुत करने और आज्ञाकारिता को समृद्धि की शर्त के तौर पर आदिष्ट करने को था। PPHin 474.2

मूसा लोगों के सम्मुख अन्तिम चेतावनियों और उपदेश देने को खड़ा हुआ। उसका चेहरा पवित्र प्रकाश से कांतिमान था। उसके बाल आयु के अनुसार सफेद हो चले थे, लेकिन उसका शरीर सीधा था, उसकी मुखाकृति स्वास्थ्य की अक्ष्य प्रबलता को अभिव्यक्ति करती थी, और उसकी दृष्टि स्पष्ट और पैनी थी। यह एक महत्वर्पूण अवसर था, और संवेदनशील होकर उसने उनके सर्वशक्तिमान रक्षक के प्रेम और दया को प्रस्तुत किया। PPHin 474.3

"जब से परमेश्वर ने मनुष्य को उत्पन्न करके पृथ्वी पर रखा, तब से लेकर तू अपने उत्पन्न होने के दिन तक की बातें पूछ, और आकाश के एक छोर से दूसरे छोर तक की बातें पूछ, क्या ऐसी बड़ी बात कभी हुईं या सुनने में आईं है? क्या कोई जाति कभी परमेश्वर की वाणी आग के बीच में से आती हुई सुनकर जीवित रही, जैसे कि तू ने सुनी है। फिर क्या परमेश्वर ने और किसी जाति को दूसरी जाति के बीच से निकालने को कमर बाँधकर परीक्षा, और चिन्ह और चमत्कार और युद्ध और एक बलवन्त हाथ, और बढ़ाए हुए हाथ, और अत्यन्त भयानक कार्यों द्वारा काम किये, जैसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने मिस्र में तुम्हारे देखते किये? यह सब तुझ को दिखाया गया, इसलिये कि तू जान रखे कि यहोवा ही परमेश्वर है, उसको छोड़ और कोई है ही नहीं।"- व्यवस्थाविवरण 4:32-35 PPHin 474.4

यहोवा ने जो तुम से स्नेह करके तुम को चुन लिया, इसका कारण यह नहीं था कि तुम गिनती में और सब देशों के लोगों से गिनती में थोड़ थे, यहोवा ने जो तुम को बलवन्त हाथ के द्वारा दासत्व के घर में से, और मिस्र के राजा फिरौन के हाथ से छुड़ाकर निकाल लिया, इसका यही कारण है कि वह तुम से प्रेम रखता है और उस शपथ को भी पूरी करना चाहता है जो उसने तुम्हारे पूर्वजों से खाई थी। इसलिये जान रख कि तेरा परमेश्वर यहोवा ही परमेश्वर है, वह विश्वासयोग्य ईश्वर है, जो उससे प्रेम रखते और उसकी आज्ञाओं को मानते हैं उनके साथ वह हजार पीढ़ी तक अपनी वाचा का पालन करता और उन पर करूणा करता रहता है। व्यवस्थाविवरण 7:7-9। PPHin 475.1

इज़राइल के लोग अपने सारे कष्टों का आरोप मूसा पर लगाने को तत्पर थे, लेकिन अब उनका यह सन्देह कि मूसा घमण्ड, महत्वकांक्षा या स्वार्थ से नियन्त्रित था, दूर हो गया, और वे विश्वास से

उसकी कही बातें सुनते रहे। मूसा ने सच्चाई से उनके सम्मुख उनके दोष और उनके पितरों के पापों को रखा। वे प्रायः भीड़ में अपनी लम्बी यात्रा के कारण अधीर और उपद्रवी महसूस करते थे, लेकिन कनान पर आधिपत्य के विलम्ब के लिये यहोवा उत्तरदायी नहीं था, वह उन से अधिक दुखी था कि वह उनको प्रतिज्ञा के देश का तत्काल स्वामित्व नहीं दिला सका, और सभी जातियों के सम्मुख, अपने लोगों के छुटकारे में अपनी प्रबल शक्ति का प्रदर्शन नहीं कर सका। परमेश्वर में अविश्वास के कारण, अपने अधर्म और घमण्ड के कारण वे कनान में प्रवेश करने के लिये तैयार नहीं थे। वे उनलोगों का कदाचित प्रतिनिधित्व नहीं कर सकते थे, जिनका परमेश्वर यहोवा, क्योंकि वे परमेश्वर के पवित्र भले और उदार चरित्र के धनी नहीं थे। यदि उनके पूर्वज, परमेश्वर के अध्यादेशों का पालन करते, उसके निर्णयों के नियन्त्रण में, विश्वास में परमेश्वर के निर्देशन को समर्पित होते तो वे बहुत पहले एक समृद्ध, पवित्र और खुशहाल जाति के रूप में कनान में बस गए होते। समृद्ध देश में विलम्बित प्रवेश से परमेश्वर का अपमान हुआ और पड़ोसी देशों की दृष्टि में उसकी महिमा घट गई। PPHin 475.2

मूसा ने, जो परमेश्वर की व्यवस्था के मूल्य और विशेषता को समझता था, लोगों को आश्वस्त किया कि किसी भी राष्ट्र के पास ऐसे ज्ञानपूर्ण धर्मी और उद्धार नियम नहीं थे, जैसे कि इब्रियों को दिए गए थे। "सुनो", उसने कहा, "मैंने तो अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार तुम्हे विधि और नियम सिखाए हैं कि जिस देश के अधिकारी होने जाते हो उसमें तुम उनके अनुसार चलो। इसलिये तुम उनको धारण करना, क्योंकि अन्य देशों के लोगों के सामने तुम्हारी बुद्धि और समझ इसी से प्रगट होगी, अर्थात वे इन सब विधियों को सुनकर कहेंगे, कि निश्चय यह बड़ी जाति बुद्धिमान और समझदार है।"-व्यवस्थाविवरण 4:5-6 PPHin 475.3

मूसा ने उनका ध्यान "उस दिन की बातों"की ओर आकर्षित किया"जिसमें तुम होरेब के पास अपने परमेश्वर यहोवा के सामने खड़े थे"। और उसने इब्री सेना को चुनौतीदी, "देखो, कौनसी ऐसी बड़ी जाति है जिसका देवता उसके ऐसे समीप रहता हो जैसा हमारा परमेश्वर यहोवा, जब हम उस को पुकारते है? फिर कौन सी ऐसी बड़ी जाति है जिसके पास ऐसी धर्ममय विधि और नियम हों, जैसी कि यह सारी व्यवस्था जिसे मैं आज तुम्हारे सामने रखता हूँ"" आज, इज़राइल को दी गई चुनौती को दोहराया जा सकता है। परमेश्वर द्वारा प्राचीन काल के उसके लोगों को दिए गए नियम पृथ्वी के सबसे अधिक सभ्य जातियों के नियमों से अधिक विवेकी, बेहतर और मानवीय थे। राज्यों के नियमों में अपरिवर्तित हृदय के आवेग और दुर्बलता के चिन्ह है, लेकिन परमेश्वर की व्यवस्था पर पवित्र की छाप थी। PPHin 476.1

मूसा ने घोषणा की, "तुम को यहोवा लोहे के भट्ठे सरीखे मिस्र देश से निकाल ले आया है, इसलिये कि तुम उसका प्रजारूपी निज भाग ठहरो।" जिस देश में वे शीघ्र ही प्रवेश करने वाले थे, और परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति आज्ञाकारिता की शर्त पर जो उनका होने वाला था, उसका वर्णन

उनके लिये इस प्रकार किया गया- और इन शब्दों ने किस तरह इज़राइलियों के हृदयों को विचलित किया होगा, जब उन्होंने यह याद किया कि जिसने उस समृद्ध देश की आशीषों को इतने उत्साहपूर्वक तरीके से चित्रांकित किया था, उसे उनके पाप के कारण, अपने लोगों की मीरास में भागीदार होने से बाहर कर दिया गया। PPHin 476.2

"तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे एक उत्तम देश में लिये जा रहा है" "जो मित्र देश के समान नहीं है, जहाँ से निकलकर आए हो, जहाँ तुम बीज बोते थे, और हरे साग के खेत के जैसे अपने पाँव से नालियाँ बनाकर सींचते थे, परन्तुजिस देश के अधिकारी होने को तुम पर जाने पर हो वह पहाड़ी और तराईयों का देश है और आकाश की वर्षा के जल से सिंचता है" "जल की नदियों का, और तराईयों और पहाड़ो से निकले गहरे सोतो का देश है, और वह गेहँ, जौ, दाखलताओं अंजीर, और अनारो का देश हे, और तेलवाले जैतून और मधु का भी देश है, उस देश में तुम पेट भर खाना खा सकोगे, और उसमें तुझे किसी चीज की घटी न होगी, वहां के पत्थर लोहे के हैं, और वहाँ के पहाड़ो में से तू ताँबा खोदकर निकाल सकेगा, "वह ऐसा देश है जिसकी तेरे परमेश्वर यहोवा को सुधि रहती है, और वर्ष के आदि से लेकर अन्त तक तेरे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि उस पर निरन्तरलगी रहती है।" -व्यवस्था विवरण 8:7-9, 11:10-12। PPHin 476.3

"जब तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे उस देश में पहुँचाए जिसके विषय में उसने अब्राहम, इसहाक और याकूब नामक तेरे पूर्वजों से तुझे देने की शपथ खाई, और जब वह तुझ को बड़े-बड़े और अच्छे नगर, जो तूने नही बनाए, और अच्छे-अच्छे पदार्थों से भरे हुए घर जो तूने नहीं भरे, और खुदे हुए कएँ, जो तू ने नहीं खोदे, और दाख की बारियाँ और जेतून के वृक्ष, जो तू ने नहीं लगाए, ये सब वस्तुएँ जब वह दे, और तू खाकर तृप्त हो, तब सावधान रहना, कही ऐसा न हो कि तू यहोवा को भूल जाए।" "इसलियें अपने विषय में तुम सावधान रहो, कहीं ऐसा न हो कि तुम उस वाचा को भूल जाओ, जो तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम से बाँधी है.........क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा भस्म करने वाली आग है, वह जलन रखने वाला ईश्वर है।"यदि वे परमेश्वर की दृष्टि में बुरा करेंगे तो, फिर, मूसा ने कहा, "जिस देश के अधिकारी होने के लिये तुम यरदन पार जाने पर हो उसमें तुम जल्दी बिल्कुल नष्ट हो जाओगे।" PPHin 477.1

व्यवस्था के सार्वजनिक पूर्वाभ्यास के बाद मूसा ने, परमेश्वर द्वारा उसे दिये गए नियमों, विधान और दण्डाज्ञाओं को लिखने के कार्य समाप्त किया, और बलिदान सम्बन्धी विधियों को भी लिखा। जिस पुस्तक में इन्हें लिखा गया, उसे योग्य अधिकारियों के प्रभार में एक तरफ रखा गया। फिर भी महान अगुवे को डर था कि लोग परमेश्वर से दूर हो जाएंगे। एक रोमांचक और उत्कृष्ट संबोधन में उनके सम्मुख उन आशीषों को रखा जो आज्ञाकारिता की शर्त पर उनकी होती और उन श्रापों से भी अवगत कराया जो आज्ञा उल्लघंन के कारण उनपर पड़ते। PPHin 477.2

"यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की सब आज्ञाएँ जो मैं आज तुझे सुनाता हूँ चौकसी से पूरा करने को चित्त लगाकर उसकी सुने", "धन्य हो तू नगर में, धन्य हो तू खेत में" "धन्य हो तेरी संतान, और तेरी भूमि की उपज, और गाय और भेड़-बकरी आदि पशुओं को बच्चे......धन्य तेरी टोकरी और तेरा भण्डार। धन्य हो तू भीतर आते समय और धन्य हो तू बाहर जाते समय। यहोवा ऐसा करेगा कि तेरे शत्रु जो तुझ पर चढ़ाई करेंगे वे तुझ से हार जाएँगे.....तेरे भण्डारों पर और जितने कामों मे तू हाथ लगाएगा उन सभों पर यहोवा आशीष देगा। PPHin 477.3

"परन्तु यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की बात न सुने, और उसकी सारी आज्ञाओं और विधियों के पालन में जो में आज सुनता हूँ. चौकसी नहीं करेगा, तो ये सब श्राप तुझ पर आ पड़ेगा, "और उन सब जातियों में जिनके मध्य में यहोवा तुझ को पहुँचाएगा, वहाँ के लोगों के लिये तू चकित होने का, और दृष्टान्त और श्राप का कारण समझा जाएगा।" "और यहोवा तुझ को पृथ्वी के इस छोर से लेकर उस छोर तक के सब देशों के लोगों में तितर-बितर करेगा, और वहाँ रहकर तू अपने और अपने पुरखाओं के लिये अनजान काठ और पत्थर के दूसरे देवताओं की उपासना करेगा। और उन जातियों में तू कभी चैन नहीं पाएगा, और न तेरे पाँव को ठिकाना मिलेगा, लेकिन यहोवा तुझे एक काँपता हुआ हृदय देगा, ओर तेरी आँखे धुँधली पड़ जाएगी, और तेरा मन व्याकुल रहेगा। और तुझ को जीवन पर नित्य सन्देह रहेगा, और तू दिन रात थरथराता रहेगा, और तेरे जीवन का कुछ भरोसा न रहेगा "क्योंकि तेरे मन में भय बना रहेगा, और तेरी आंखो को जो कुछ दिखाता रहेगा उसके कारण तू भोरको आह भरके कहेगा," ""साँझ कब होगी। और साँझ को आह भरके करेगा, भोर कब होगी।" PPHin 478.1

प्रेरणा के आत्मा से, सदियों में झाँकते हुए, मूसा ने इज़राइल के राष्ट्र के रूप में पराजित होने और रोमियों की सेना द्वारा यरूशेलेम के विनाश के दृश्यों को चित्रांकित किया, "यहोवा तेरे विरूद्ध से, वरन् पृथ्वी के छोर से वेग से उड़नेवाले उकाब सी एक जाति को चढ़ा लाएगा, जिसकी भाषा तू नहीं समझेगा, उस जाति के लोगों का व्यवहार कर होगा, वे न तो बूढ़ो का मुहँ देखकर आदरकरेंगे, न बालकों पर दया करेंगे।" PPHin 478.2

सदियों पश्चात तीथुस के नेतृत्व में यरूशेलम की घेराबन्दी के समय लोगों की दर्दनाक पीड़ा और राष्ट्र के विनाश का विस्तृत रूप से वर्णन किया गया है, "वे तेरे पशुओं के बच्चे और भूमि की उपज यहाँ तक खा जाएँगे कि तू नष्ट हो जाएगा, वे तेरे परमेश्वर यहोवा के दिये हुए सारे देशों के सब फाटकों के भीतर तुझे घेर रखेंगे, जब तक तेरे सारे देश में तेरी ऊंची-ऊंची और दृढ़ शहरपनाहें जिन पर तू भरोसा करेगा गिर न जाएँ। तू अपने जिन जन्माए बेटे-बेटियों का माँस जिन्हें तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को देगा, खाएगा, क्योंकि घिर जाने और उस संकट में, जिसमें तेरे शत्रु तेरे सारे फाटकों के भीतर तुझे डालेंगे।" "और तुम्हारे मध्य जो स्त्री यहां तक कोमल और सुकमार हो कि सुकमारपन और कोमलता के कारण भूमि पर पांव धरते भी डरती हो, वह भी अपने प्राणप्रिय पति और अपनेजने

हुए बच्चों को कर दृष्टि से देखेंगी, क्योंकि घिर जाने और उस संकट के समय जिसमें तेरे शत्रु तुझे तेरे फाटकों के भीतर घेरकर रखेंगे, वह सब वस्तुओं को घटी के मारे उन्हें छुप कर खाएँगी।” PPHin 478.3

मूसा ने इन प्रभावशाली शब्दों में अपना उपदेश बन्द किया, “मैं आज आकाश और पृथ्वी दोनों को तुम्हारे सामने इस बात का साक्षी बनाता हूँ कि मैंने जीवन और भरण, आशीष और श्राप को तुम्हारे सामने रखा है, इसलिये तू जीवन ही को अपना ले, कि तू और तेरा वंश दोनो जीवित रहे, इसलिये अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेरम करो, और उसकी बात मानो और उससे लिपटे रहो, क्योंकि तेरा जीवन और तेरे दिनों की लम्बी अवधि यही है, और ऐसा करने से जिस देश को यहोवा ने तेरे पूर्वजों अब्राहम, इसहाक, और याकूब को देने की शपथ खाई थी उस देश में तू वास करेगा।”-व्यवस्था विवरण 30:19,20। PPHin 479.1

इस सत्य से सभी को और अधिक प्रभावित करने के लिये, महान अगुवे ने इसे पवित्र छंदो में समाविष्ट कर दिया। यह गीत केवल ऐतिहासिक ही नहीं, भविष्यसूचक भी था। इसने, बीते दिनों में अपने लोगों के प्रति उसके अद्‌भुत तरीकों या उपायों का वर्णन तो किया ही, वरन् भविष्य की महान घटना, महिमा और सामर्थ्य में मसीह के दूसरे आगमन के समय निष्ठावानों की निर्णायक विजय का भी पूर्वाभास दिया। लोगों को इस काव्यात्मक इतिहास को समृति के सुपुर्द करने और अपनी संतान और संतानों की संतान को सिखाने का निर्देश दिया गया। मण्डली से अपेक्षा की जाती थी कि वे इस गीत को आराधना के लिये एकत्रित होने के समय गाएँ और प्रतिदिन के कार्य करते समय भी दोहराते रहे। अभिभावकों का यह कर्तव्य था कि वे अपने बच्चों के कोमल मन पर इन शब्दों की छाप छोड़े ताकि वे इन्हें कभी भी ना भूलें। PPHin 479.2

इज़राइलियों को विशेष रूप से, परमेश्वर की व्यवस्था के अभिभावक और रक्षक होना था, इसलिये उसके सिद्धान्तों की महत्ता और आज्ञा पालन की आवश्यकता को विशेष रूप से उनको, और उनके द्वारा उनके बच्चों और बच्चों के बच्चों को समझाया जाना था। अपने नियमों के सन्दर्भ में यहोवाआदेश दिया, “तू इन्हें अपने बाल बच्चों को समझाकर सिखाया करना, और घर में बेठे, मार्ग पर चलते, लेटते, उठते इनकी चर्चा किया करना। और इन्हें अपने घर के चौखट की बाजुओं और अपने फाटकों पर लिखना।” PPHin 479.3

आने वाले समय में जब बच्चे उनसे पूछे, “ये चेतावनियाँ और विधि और नियम, जिनके मानने की आज्ञा हमारे परमेश्वर यहोवा ने तुम को दी है, इनका प्रयोजन क्या है?” तब अभिभावकों को उनके लिये अपनाए गए परमेश्वर के उदार व्यवहार व तरीकों का इतिहास दोहराना था- किस तरह प्रभु ने उन्हें छुटकारा दिलाया कि वे उसकी आज्ञा का पालन कर सके। उन्हें अपने बच्चों को यह भी बताना था, “और यहोवा ने हमें ये सब विधियाँ पालन करने की आज्ञा दी, इसलिये कि हम अपने परमेश्वर यहोवा का भय माने, और इस प्रकार सदैव हमारा भला हो, और वह हम को जीवित रखे,

जैसा कि आज के दिन है और यदि हम अपने परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में उसकी आज्ञा के अनुसार इन सारे नियमों का पालन करेंगे, तो यह हमारे लिये धर्म ठहरेगा। PPHin 480.1

अध्याय 43—मूसा को मृत्यु

यह अध्याय व्यवस्था विवरण 31-34 पर आधारित है

उसके लोगों के साथ, परमेश्वर के सभी लेन-देनों में, उसका प्रेम और उसकी करूणा मिली हुईं है, जो उसके कठोर और निष्पक्ष न्याय का असाधारण प्रमाण है। इसे इब्रियों के इतिहास में उदाहरण सहित समझाया गया है। परमेश्वर ने इज़राइल को बहुत आशीषित किया है। उसके प्रति उसकी स्नेहपूर्ण करूणा को मर्मस्पर्शी ढंग से चित्रित किया गया है, "जैसे उकाब अपने घोंसले को हिला-हिलाकर अपने बच्चों के ऊपर मँडराती है, अपने पंख फैसलाकर उन्हें अपने परों पर उठा लेती है, वैसे ही यहोवा अकेला ही उसकी अगुवाई करता रहा ।" लेकिन फिर भी उन्हें उनके पापों के लिये कितना शीघ्र और कठोर दण्ड दिया गया। PPHin 481.1

परमेश्वर का अनन्त प्रेम, एक पतित जाति को बचाने के लिये अपने इकलौते पुत्र की भेंट द्वारा प्रकट किया गया है। मसीह पृथ्वी पर अपने पिता के चरित्र को मनुष्य पर प्रकट करने के लिये आया, और उसका जीवन ईश्वरीय संवदेना और स्नेहशीलता से भरपूर था। और फिर भी मसीह स्वयं घोषणा करता हे, "जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएं, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या एक बिन्दु भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा।"-मत्ती 5:18। यही वाणी जो धीरजवन्त, प्रेमपूर्ण विनती करते हुए पापी को उसके पास आने का और शान्ति और क्षमा प्राप्त करने का निमन्त्रण देती है, न्याय होने के समय उसकी करूणा का तिरस्कार करने वालों को कहेगी, "मेरेसामने से चले जाओ, हे शापित लोगों ।"-मत्ती 25:41 । सम्पूर्ण बाईबल में परमेश्वर को एक दयालु पिता ही नहीं वरन् धर्मी न्यायाधीश के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यद्यपि वह दया करने में और, "अधर्म और अपराध और पाप क्षमा" करने में आनन्दित होता है, फिर भी वह "दोषी को किसी प्रकार निर्दोष नहीं ठहराएगा।"-निर्गमन 34:7 । PPHin 481.2

सभी जातियों के राजा ने घोषणा की थी कि मूसा इज़राइल की मण्डली को समृद्ध देश में अगुवा बनकर नहीं ले जाएगा, और परमेश्वर के दास की आग्रहपूर्ण गिड़गिड़हाट उसकी दण्डाज्ञा में परिवर्तन न करा सकी। वह जानता था कि उसे मृत्यु को प्राप्त होना है। लेकिन एक क्षण के लिये भी वह इज़राइल के प्रति अपने दायित्व को नहीं भूला। उसने पूरी निष्ठा से मण्डली को प्रतिज्ञा की धरोहर में प्रवेश के लिये तैयार करने की चेष्ठा की थी। पवित्र आज्ञानुसार मूसा और यहोशू तम्बू में लौटे, और बादल का स्तम्भ आकर द्वार पर छा गया। यहाँ लोगों को विधिवत तरीके से यहोशू के प्रभार के सुपुर्द किया गया। PPHin 481.3

इज़राइल के अगुवे के रूप मे मूसा का कार्य समाप्त हुआ। फिर भी वह स्वयं को लोगों की भलाई में भूल गया। एकत्रित भीड़ की उपस्थिति में, मूसा ने, परमेश्वर के नाम में, अपने उत्तराधिकारी

को पवित्र प्रोत्साहन के यह शब्द सम्बोधित किए, "हियाव बांधकर, दृढ़ हो जा, भय न कर, और तेरा मन कच्चा न हो, क्योंकि जहाँ-जहाँ तू जाएगा, वहाँ-वहाँ तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे संग रहेगा।" इसके बाद वह लोगों के अधिकारियों और पुरनियोंकी ओर मुड़ा और उन्हें परमेश्वर द्वारा दिए गए निर्दशों का पालन करने का पवित्र कार्य-भार दिया। PPHin 482.1

जब लोगों ने उस वृद्ध पुरूष पर अपनी दृष्टि स्थिर की, जो शीघ्र ही उनसे अलग होने को था, उन्होंने उसके अथक परिश्रम, उसके ज्ञानपूर्ण परामर्श और उसकी पिता-समान भावुकता को एक नए और गहरे आभार के साथ स्मरण किया। कितनी बार, जब उनके पाप परमेश्वर की न्यायसंगत दण्डाज्ञा को आमन्त्रित करते थे, मूसा की प्रार्थनाओं के कारण वह उन्हें दण्ड देता था। पश्चताप ने उनके दुख को बड़ा दिया। कड़वाहट के साथ उन्होंने स्मरण किया कि उनकी अपनी विकृतता ने मूसा को उस पाप के लिये उकसाया जिसके लिये मरना था। PPHin 482.2

उनके प्रिय अगुवे का हटाया जाना, इज़राइल के लिये, उसके (मूसा के) अभियान और जीवन के जारी रहने की स्थिति में मिलने वाली झिड़की या फटकार से, कहीं अधिक प्रभावशाली निन्दा थी। परमेश्वर उन्हे आभास करवाना चाहता था कि उन्हें अपने भावी अगुवे का जीवन इतना कष्टपूर्ण नहीं बनाना था जैसा कि उन्होंने मूसा के साथ किया था। परमेश्वर अपने लोगों के साथ उसी के द्वारा दी गई आशीषों के माध्यम से बात करता है, और जब इनका आभार नही माना जाता, तो आशीषों के हटाए जाने द्वारा बात करता है, ताकि उन्हें उनके पाप दिखाए जा सके, और वे उसके पास सहृदय लौट आएँ। PPHin 482.3

उसी दिन, मूसा को आदेश दिया गया, "नबो नामक चोटी पर चढ़कर कनान देश को देख ले, जिसे में इज़राइल की संतान के अधिकार में दूँगा, तू इस पहाड़ पर चढ़कर मर जाएगा, और अपने लोगों में मिल जाएगा।" पवित्र बुलाहट की आज्ञा का पालन करते हुए, मूसा कईं बार छावनी को छोड़कर, परमेश्वर से सम्पर्क करने जाता रहा था, लेकिन इस बार उसे एक नए और रहस्यमयी कार्य के लिये प्रस्थान करना था। उसने अपने जीवन को अपने सृष्टिकर्ता के हाथों में समर्पित करने के लिये जाना था। मूसा जानता था कि उसे एकांत में मृत्यु को प्राप्त होना था; किसी सांसारिक मित्र को अनुमति नहीं थी कि वह मूसा के जीवन के अन्तिम क्षणों में उसकी सेवा-टहल करे। उसके सामने जो दृश्य था, उसमें एक रहस्य और भयानकता थी, जिससे उसका हृदय सहम गया। उसकी देख-रेख और उसके प्रेम के पात्र लोगों से अलग होना उसके लिये सबसे कठोर परीक्षा थी- इन लोगों के साथ उसकी रूचि और उसका जीवन लम्बे समय से जुड़े थे। लेकिन उसने परमेश्वर में विश्वास रखना सीखा था और निस्सन्देह विश्वास के साथ उसने स्वयं को और अपने लोगों को परमेश्वर की करूणा और प्रेम को सुपुर्द किया। PPHin 482.4

अन्तिम बार मूसा अपने लोगों की मण्डली में खड़ा हुआ। फिर से परमेश्वर का आत्मा उसपर आकर ठहरा, और सबसे उत्कृष्ट और मर्मभेदी भाषा में उसने प्रत्येक घराने को आशीर्वाद दिया, और अन्त में वहां उपस्थित सभी लोगों को यह आशीष दी: PPHin 483.1

"हे यश्रन, ईश्वर के तुल्य और कोई नहीं है,

वह तेरी सहायता करने को आकाश पर,

और अपना प्रताप दिखाता हुआ

आकाशमण्डल पर सवार होकर चलता है।

अनादि परमेश्वर तेरा गृहधाम है,

और नीचे सनातन भुजाए हैं।

वह शत्रुओं को तेरे सामने से निकाल देता,

और कहता है, उनको सत्यानाश कर दे।

और इज़राइल निडर बसा रहता है,

अन्न और नए दाखमधु के देश में याकूब का सोता अकेला ही रहता है,

और उसके ऊपर के आकाश से ओस पड़ी

करती है

हे इज़राइल, तू क्या ही धन्य है

हे यहोवा से उद्धार पाई हुई प्रजा,

तेरे तुल्य कौन है?

वह तो तेरी सहायता के लिये ढाल है।' PPHin 483.2

- व्यवस्था विवरण 33:26-29

मूसा मण्डली से मुड़कर, चुपचाप और अकेला पहाड़ की और चल पड़ा। वह "नबो पहाड़ पर पिसगा की चोटी" पर चढ़ गया। उस एकान्त चोटी पर खड़े होकर, मूसा ने अपनी तेज आंखो से उसके सामने फैले दृश्य को निहारा। दूर पश्चिम में फैला था महान समुद्र का नीला जल? उत्तर में आकाश के नीचे हरमन पर्वत खड़ा था, पूरब में मोआब का पठार था, और उसके आगे था बाशान,

इज़राइल की विजय का दृश्य; और दक्षिण में फैला हुआ था वह मरूस्थल जिस वह लम्बे समय तक भटके थे। PPHin 484.1

एकान्त में मूसा ने, कठिनाईयों और अस्थिरता के अपने जीवन का अवलोकन किया, जब से वह मिस्र में एक प्रत्यशित राज्य और दरबार की प्रतिष्ठा को छोड़कर परमेश्वर के लोगों के साथ अपना स्थान विशेष पाने आया था। उसने यित्रो की भेड़-बकरियों के साथ मरूघर में बिताए कई वर्षा को, ज्वलंतझाड़ी में स्वर्गदूत का प्रकट होने को और इज़राइल के छुटकारे के लिये उसे बुलाए जाने को याद किया। एक बार फिर उसने चुने हुए लोगों के पक्ष में किये गए परमेश्वर की सामर्थ्य के प्रभावशाली चमत्कारों को और उनके उपद्रव और चिरकालीन यात्रा के दौरान परमेश्वर की चिरसहिष्णु करूणा को देखा। PPHin 484.2

बावजूद इसके कि परमेश्वर ने उनके लिये इतना कुछ किया, मूसा की निजी प्राथनाएँ और उसके परिश्रम के बावजूद, मिस्र छोड़कर आने वाल सेना के व्यस्कों में से केवल दो व्यक्ति प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश योग्य निष्ठावान पाए गए। जब मूसा ने अपने श्रम के परिणाम का अवलोकन किया, बलिदान और परीक्षा का उसका जीवन व्यर्थ सा प्रतीत हुआ। PPHin 484.3

लेकिन जिस उत्तरदायित्व को उसने सम्भाला था, उसके लिये उसे खेद नहीं था। वह जानता था कि उसका कार्य और विशेष गतिविधियाँ स्वयं परमेश्वर द्वारा निर्धारित थी। जब उसे पहली बार दासत्व से बाहर आए इज़राइल का अगुवा बनने को कहा गया, उस उत्तरदायित्व को सम्भालने के लिये उसे संकोच हुआ, लेकिन जब से उसने उस कार्य को अपने हाथों में लिया उसे उसको पूरी तरह निभाया। जब परमेश्वर ने उसे सेवा-निवृत करने का प्रस्ताव रखा, और इज़राइल को नष्ट करना चाहा, मूसा सहमति नहीं दे सका। हालाँकि उसकी परीक्षाएँ कठिन रही थी, उसने परमेश्वर की कृपा-दृष्टि के विशेष प्रतीकों का आनन्द उठाया था, भीड़में पड़ाव के दौरान, परमेश्वर की सामर्थ्य और महिमा के प्रदर्शनों के साक्षी होने में व उसके प्रेम की सहभागिता मे, उसने पर्याप्त अनुभव प्राप्त किया था, उसे लगा कि कुछ समय के पाप का आनन्द भोगने के बजाय परमेश्वर के लोगों के साथ कष्ट उठाने को पसन्द करके उसने विवेकपूर्ण निर्णय लिया था। PPHin 485.1

जब उसने परमेश्वर के लोगों के अगुवे में रूप में, पीछेमुड़कर अपने अनुभव को देखा, तो एक गलत कार्य में उसके जीवन इतिहास को बिगाड़ दिया। यदि उस पाप को मिटाया जा सकता, तो उसे लगा कि वह मृत्यु से पीछे नहीं हटता। वह आश्वस्त था परमेश्वर को केवल पश्चताप और प्रतिज्ञा के 'बलिदान' की अपेक्षा थी, और मूसा ने फिर से अपने पापों का अंगीकार किया और यीशु के नाम में क्षमा याचना की। PPHin 485.2

और अब प्रतिज्ञा के देश का परिदृश्य उसको दिखाया गया। देश का प्रत्येक भाग उसके सामने रखा गया, जो दूरी के कारण मंद या अस्पष्ट नहीं थे, लेकिन उसकी आनन्दित दृष्टि के लिये सुस्पष्ट, विशिष्ट और सुन्दर थे। इस दृश्य में इसे ऐसा नहीं दिखाया गया, जैसा वह तब दिख रहा था, वरन्

वैसे जैसा वह इज़राइल के अधीनस्थ, परमेश्वर की आशीषों के द्वारा, होने वाला था। उसे लगा मानों वह दूसरे अदन को देख रहा था। यहाँ पर थे लेबनान के देवदारों से आवृत पवर्त, दाख की सुगंध से सुगंधित जैतून से ढके पहाड़, फूले से उजले और अत्यन्त उपजाऊ हरे मैदान, यहां ऊष्णकटिबन्ध के खजूरके वृक्ष, वहां गेहूँ और जाँ के लहराते खेत, चिड़ियो के चहचहाट और नदियों की तरंग से संगीतमय उज्जवल घाटियाँ, सुन्दर वाटिकाएं और उत्तम नगर, 'समुद्र के सारे धन' से भरपूर तालाब, पहाड़ों पर घास चरती हुईं भेड़-बकरियाँ और चट्टानों के बीच जंगली मधु मक्ख्यिों की जमा की हुई निधि। वास्तव में ऐसे ही देश का, परमेश्वर के आत्मा की प्रेरणा से, मूसा ने इज़राइलियों को वर्णन किया था, "यहोवा से आशीष पाया हुआ.......प्रकाश के अनमोल पदार्थ के लिये, ओस के लिये, वह गहरा जल जो नीचे है उसके लिये और सूर्य के पकाए हुए अनमोल फलों के लिये, प्राचीन पहाड़ो के उत्तम पदार्थ के लिये, और पृथ्वी और जो अनमोल पदार्थ उसमे भरे है, उसके लिये।" PPHin 485.3

मूसा ने चुने हुए लोगों को कनान में स्थापित हुआ देखा, और हर घराने को अपने ही अधिकृत क्षेत्र में। उसने प्रतिज्ञा के देश के परिनिर्धारण के बाद के उनके इतिहास की झलक देखी, स्वधर्म त्याग और उसकी दण्डाज्ञा की दुखद कहानी उसके सामने रखी गईं। उसने उन्हें पापों के कारण, अधर्मियों के बीच तितर-बितर, इज़राइल से दूर हुए गौरव को, उसके सुन्दर नगर के खण्डहर को, और उसके लोगों को पराए देशों में बन्धक बने देखा। उसने उन्हें अपने पितरों के देश में पुनः स्थापित, और अन्ततः रोम के अधीनस्थ हुआ देखा । उसे समय की धारा में नीचे उतरकर हमारे उद्धारकर्ता के पहले आगमन को देखने की अनुमति दी गई। उसने यीशु को बेतलहेम में शिशु के रूप में देखा। उसने परमेश्वर की स्तूति और पृथ्वी पर शान्ति का सुखद गीतगाती, स्वर्गदूतों की सेना की आवाजों को सुना। उसे यीशु के पास जाते, ज्योतिषियों का मार्गदर्शन करते तारे को आकाश से देखा, और एक महान ज्योति ने उसके मन-मस्तिष्क को भर दिया जब उसने उन भविष्यसूचक शब्दों को सुना, "याकूब में से एक तारा उदय होगा, और इज़राइल में से एक राज दण्ड उठेगा ।"-गिनती 24:17। उसने नासरत में मसीह के दीन जीवन को, चंगाई और सहानुभूति और प्रेम की उसकी सेवकाई को एक घमण्डी और अविश्वासी जाति द्वारा उसके तिरस्कार को देखा। अचम्भित होकर उसने उन्हें परमेश्वर की व्यवस्था के घमण्डपूर्णउन्नयन को सुना, जबकि उन्होंने व्यवस्था देने वाले को अस्वीकृत और तिरस्कत किया। उसने यीशु को जैतून के पर्वत पर देखा जब वह अपने प्रिय देश से विदा लेते हुए रोया। जब मूसा ने उन लोगों के अन्तिम बहिष्कार को देखा, जो स्वर्ग द्वारा धन्य ठहराए गए थे, उन लोगों को जिनके लिये उसने परिश्रम किया था, प्रार्थना की थी और बलिदान किया था, जिनके लिये वह जीवन की पुस्तक में से अपने नाम को मिट्वा देने के लिये तैयार था, जब उसने इन भयावहशब्दों को सुना, "तुम्हारा घर तुम्हारे लिये उजाड़ छोड़ा जाता है।" -मत्ती 23:38। उसका हृदय वेदना से भर गया, और परमेश्वर के पुत्र के दुख के प्रति सहानुभूति में, उसकी आंखो से दुख भरे आंसू निकल पड़े। PPHin 486.1

वह उद्धारकर्ता क पीछे-पीछे गतसमनी तक गया, और उसने बाग में वेदना को, धोखे को, उपहास को, कोढ़े मारे जाने को, क्रूस पर चढ़ाए जाने को देखा। मूसा को ज्ञात हुआ कि जैसे बीहड़ में उसने साँप को ऊपर उठाया था, उसी प्रकार मनुष्य के पुत्र को भी ऊंचा उठायाजाएगा, ताकि जो कोई भी उसमें विश्वास करे “नाश न हो, वरन् अनन्त जीवन पाए”-यहुन्ना 3:16। उद्धारकर्ता वह तेजस्वी स्वर्गदूत जो उनके पूर्वजों के आगे-आगे चला था, उसके प्रति यहूदी जाति द्वारा प्रकट किये ए बैर-भाव और पांखड ने मूसा का हृदय दुख, कोध और भय से भर गया। उसने मसीह को अत्यन्त दुखदायी पुकार को सुना, “हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने क्यों छोड़ दिया?” मरकुस 15:34। उसने मसीह को युसुफ की नई कब्र में लेटे हुएदेखा। अत्यन्त निराशा का अँधेरा संसार को लपेटे हुए प्रतीत हो रहा था। लेकिन उसने दोबारा दृष्टि डाली, और उसे विजेता के रूप में बाहर आते और मण्डली का नेतृत्व करते, स्वर्गदूतों की संगति में स्वर्गारोहण करते देखा। उसने मसीह की अगवानी के लिये चमचमाते फाटकों को खुलते हुए और स्वर्गदूतों की, उनके सेनापित का विजयगान के साथ स्वागत करते देखा। वहाँ उस पर प्रकट किया गया कि वही होगा जो मसीह की सेवा में होगा, और उसके लिये सनातन फाटकों को खोलेगा। इस दृश्य को देखने पर उसकी मुखाकृति पवित्र तेज से कांतिमान हो गई। उसके जीवन के त्याग और कष्ट परमेश्वर के पुत्र के बलिदान और कष्टों की तुलना में कितने सामान्य थे!””असाधरण और अनन्त महिमा” के मान की तुलना में कितने तुच्छ!- 2 कुरिन्थियों 4:17। वह प्रसन्न था कि भले ही कम मात्रा में, वह मसीह के कष्टों में भागीदार था। PPHin 487.1

मूसा ने मसीह के अनुयायियों को जगत में सुसमाचार फैलाने के लिये जाते हुए देखा। उसने देखा कि हालाँकि इज़राइल के लोग ‘शरीर के अनुसार’ उस उत्तम नियति के लिये असफल हो गए थे, जिसके लिये परमेश्वर ने उन्हें बुलाया था,अपने अविश्वास के कारण जगत के लिये ज्योति बनने में असफल रहे थे, हालांकि उन्होंने परमेश्वर की दया का तिरस्कार किया था और उसके चुने हुए लोगों के तौर पर मिलने वाली आशीषों को गँवां दिया था- फिर भी परमेश्वर ने अब्राहम के वंशजों को नहीं छोड़ा; जिन गौरवपूर्ण प्रयोजनों को इज़राइल द्वारा पूरा करने का दायित्व उसने अपने ऊपर लिया था, उन प्रयोजनों को पूरा होना था। जो भी मसीह के द्वारा विश्वास की संतान बनते उनकी गणना अब्राहम के वंशजो में होती थी; वे वाचा की प्रतिज्ञाओं के उत्तराधिकारी थे, अब्राहम के समान, उन्हें परमेश्वर की व्यवस्था और उसके पुत्र के सुसमाचार को सम्पूर्ण जगत से परिचित कराना था और उसकी रक्षा करनी थी। मूसा ने सुसमाचार के प्रकाश को यीशु के अनुयायियों के माध्यम से उन लोगों तक चमकते देखा, “जो अन्धेरे में बैठे थे” (मत्ती 4:16), और गैर-यहूदियों के देशों से हजारों को उसकी वृद्धि की चमक की ओर आते देखा यह देखकर वह इज़राइल की समृद्धि और वृद्धि में आनन्दित हुआ। PPHin 487.2

शैतान का वह कार्य जिसका पालन करके यहूदियों ने मसीह का तिरस्कार किया, मूसा को दिखाया गया, जबकि वे परमेश्वर की आज्ञा का आदर करने का दावा करते थे, अब उसने मसीही

जगत को ऐसे ही छलावे में देखा- परमेश्वर की व्यवस्था को अस्वीकार करके भी वह मसीह को ग्रहण करने का दावा कर रहे थे। उसने याजकों और पुरनियों के द्वारा उस अत्यन्त कोधित माँग की सुना था, “ले जा! ले जा! उसे कूस पर चढ़ा।” और उसने तथाकथित मसीही शिक्षकों से इस माँग को सुना, “व्यवस्था को हटाओं!” उसने सबत का पैरों तले रौंदा जाना और उसके स्थान पर एक अप्रामाणिक संस्था का संस्थापन देखा । एक बार फिर मूसा अचरज और भय से भर गया। जो मसीह में विश्वास करते थे वे पवित्र पर्वत पर उसी की आवाज में कही गई व्यवस्था को अस्वीकार कैसे कर सकते थे? कैसे कोई भी जो परमेश्वर का भय मानता था, पृथ्वी और आकाश में उसकी सत्ता के आधार, उसकी व्यवस्था को परे रख सकता था? प्रसन्नता से मूसा ने देखा कि व्यवस्था अभी भी कुछ निष्ठावानों द्वारा गौरवान्वित और सम्मानित की जाती थी। उसने परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करने वालों को नष्ट करने के लिये सांसारिक शक्तियों का अन्तिम महान संघर्ष देखा। उसने उस समय की देखा जब परमेश्वर पृथ्वी वासियों को उनके अधर्म के लिये दण्डित करने उठेगा, और जिन्होंने उसका भय माना है वे उसके प्रकोप के दिन ढॉके और छुपाये जाएँगे। उसने उसकी व्यवस्था को मानने वालों के साथ परमेश्वर की शान्ति की वाचा को सुना, जब वह अपने पवित्र वास से बोलता है, धरती और आकाश कॉपं उठते है। उसने मसीह के दूसरे आगमन को देखा, जब वह महिमा सहित आया, उसने धर्मी मृतकों को अनश्वर जीवन में उठते हुए, और जीवित पवित्रों को बिना मृत्यु को प्राप्त हुए परिवर्तित होते और हर्ष के गीतों के साथ एकसाथ परमेश्वर के नगर जाने के लिये ऊपर उठते हुए देखा। PPHin 488.1

एक और दृश्य उसकी आंखो के सामने खुला-श्राप से मुक्त हुई प्रथ्वी जो हाल ही में उसके सम्मुख फैलाए हुए प्रतिज्ञा के सुन्दर देश से अधिक सुन्दर थी। वहाँ पाप नहीं था, और मृत्यु प्रवेश नहीं कर सकती थी। वहाँ बचाए हुओं के समुदायों को अपना सनातन निवास मिला। अकथनीय आनन्द के साथ मूसा ने उस दृश्य को देखा- उसके आशाओं से अधिक आनन्दमय छुटकारे की तृप्ति! उनका पृथ्वी भ्रमण हमेशा के लिये समाप्त हो गया था, और परमेश्वर का इज़राइल अनन्तः समृद्ध देश में प्रवेश कर गए। PPHin 488.2

दर्शन फिर से धैधला गया, और उसकी आँखें दूर तक फैले हुए कनान प्रदेश पर स्थिर हो गई। फिर, एक थके हुए योद्धा की तरह, वह विश्राम करने के लिये लेट गया। “तब यहोवा के कहने के अनुसार उसका दास मूसा वहीं मोआब के देश में मर गया और उसने उसे मोआब के देश में बेतपोर के सामने एक तराई में मिट्टी दी, और आज के दिन तक कोई नहीं जानता कि उसकी कब्र कहां है।” कई, जो मूसा के सुझावों पर ध्यान देने को अनिच्छुक रहे थे, जब वह उनके साथ था, वे उसकी कब्र का स्थान जानकर, उसके मृत शरीर पर मूर्तिपूजा करने के खतरे में थे। इस कारण यह बात मनुष्यों से छुपा कर रखी गई। लेकिन परमेश्वर के स्वर्गदूतों ने उसके निष्ठावान दास के शरीर को मिट्टी दी और उसकी एकाकी कब्र पर पहरा दिया। PPHin 489.1

"और मूसा के तुल्य इज़राइल में ऐसा कोई नबी नहीं उठा, जिससे यहोवा ने आमने सामने बातें की, उन सभी चिन्हों और चमत्कारों में जिन्हे दिखाने के लियेयहोवा ने उसे भेजा.......और उसने सारे इज़राइलियों की दृष्टि में बलवन्त हाथ और बड़े भय के काम कर दिखाए। PPHin 489.2

कादेश में चट्टान से पानी निकालने का यश परमेश्वर को ना देने में, मूसा के उस एक पाप के कारण, उसका जीवन कलंकित ना हुआ होता, तो मूसा ने प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश किया होता, और वह मृत्यु को देखे बिना स्वर्ग में जाने के लिये परिवर्तित हुआ होता। लेकिन उसे बहुत दिनों तक कब्र में नहीं रहना था। मसीह स्वयं, उन स्वर्गदूतों के साथ जिन्होंने मूसा को गाढ़ा था, सुप्त पवित्र को बुलाने के लिये स्वर्ग से उतरकर नीचे आया। मूसा को परमेश्वर के विरूद्ध पाप कराने में अपनी सफलता पर शैतान अति प्रसन्न हुआ था, क्योंकि मूसा इस प्रकार मृत्यु के अधीनस्थ हो गया था। महान शत्रु ने घोषणा की कि इस ईश्वरीय कथन ने उसे मृतकों पर अधिकार दे दिया था, "तू मिट्टी तो है और मिट्टी ही में फिर मिल जाएगा ।""-उत्पत्ति 3:19 । कब्र की शक्ति कभी भी खंडित नहीं हुई थी, कब्र में के सभी लोगों को उसने उसके कैदी होने का दावा किया, जिन्हें उस अन्धेरे कारागृह से कभी भी छुटकारा नही मिलना था। PPHin 489.3

पहली बार मसीह मृतकों को जीवन देने वाला था। जैसे ही जीवन का राजकुमार और उसके कांतिमान दूत कब्र के निकट आए, शैतान अपने आधिपत्य के लिये सावधान हो गया। अपने पापी दूतों के साथ, वह उस भू-खण्ड पर अतिक्रमण छेड़ने को खड़ा हुआ, जिसे वह उसका होने का दावा कर रहा था। उसने घमण्ड में कहा कि परमेश्वर का दास उसका कैदी बन गया था। उसने घोषणा की कि मूसा भी परमेश्वर की व्यवस्थाका पालन करने में असमर्थ रहा था, और यह कि यहोवा को देय महिमा उसने स्वयं के लिये ली थी- वही पाप जो स्वर्ग में शैतान के बहिष्कार का कारण बना और अब मूसा, आज्ञा उल्लंघन के कारण शैतान के अधीनस्थ हो गया था। मुख्य देशद्रोही ने पवित्र सत्ता के विरूद्ध उसके द्वारा लगाए गऐ मूलभूत अरोपों को दोहराया और उसके प्रति परमेश्वर के अन्याय की शिकायतों को दोहराया। PPHin 490.1

मसीह ने शैतान के साथ वादविवाद में पड़ने से स्वयं को नीचा नहीं किया। वह शैतान पर उसके छलावे द्वारा स्वर्ग में किये गये भयानक कर्मा का आरोप लगा सकता था, जिनके कारण स्वर्ग के वासियों की भारी संख्या का नाश हुआ। वह अदन में बोले गए झूठ की ओर संकेत कर सकता था, जिसके कारण आदम से पाप हुआ और मानव जाति पर मृत्यु आई। वह शैतान को याद दिला सकता था कि इज़राइल को बड़बड़ाने और विद्रोह के लिये बहकाने का काम उसी का था, वह इज़राइल जिसने अपने अगुवे के चिरसहिष्णु धैर्य को थका दिया था, और एक असुरक्षित पल की घबराहट में उससे वह पाप करवाया जिसके कारणवश वह मृत्यु के अधिकार के अधीन हो गया था। लेकिनयह कहते हुएकि "परमेश्वर तेरी निंदा करे"-यहूदा 9, मसीह ने इस सब को अपने पिता के सम्मुख रखा ।उद्धारकर्ता अपने शत्रु के साथ किसी विवाद में नही पड़ा, लेकिन उसी समय और

वहीं से पतित शत्रु की शक्ति को कम करने और मृतकों को जीवित करने का उसकाकार्य प्रारम्भ हुआ। यहाँ परमेश्वर के पुत्र की सर्वोच्चता का प्रमाण था जिसे शैतान अस्वीकार नहीं कर सकता था। पुनरूत्थान कोसदा के लिये निश्चित कर दिया गया था। शैतान को उसके शिकार से वंचित कर दिया गया, धर्मी मृतक जी उठेंगे। PPHin 490.2

पाप के कारणवश, मूसा शैतान के अधिकार के अधीन हो गया। अपनी योग्यता अनुसार वह मृत्यु का न्यायसंगत बन्धक था, लेकिन उद्धारकर्ता के नाम में अपने अधिकार को थामे हुए, उसे मृत्यू से जिलाकर अनश्वर जीवन दिया गया। मूसा कब्र से महिमावान होकर बाहर निकला और अपने मुक्तिदाता के साथ परमेश्वर के नगर में ऊपर उठ गया। PPHin 491.1

मसीह के बलिदान में उदाहरण सहित समझाए जाने से पहले, परमेश्वर के न्यायपरता और प्रेम को कभी भी इतनी सुस्पष्टता से प्रदर्शित नहीं किया गया था, जैसे कि मूसा के साथ उसके व्यवहार में किया गया। परमेश्वर ने कभी न भुलाने वाला एक सबक सिखाने के लिये, मूसा को कनान से बाहर रखा, परमेश्वर सम्पूर्ण आज्ञाकारिता की अपेक्षा करता है और मनुष्य को परमेश्वर को देय महिमा स्वयं ले लेने से सावधान रहना है। मूसा की इस प्रार्थना को परमेश्वर पूरी नहीं कर सकता था कि उसे इज़राइल की मीरास में हिस्सा दे, लेकिन उसने अपने दास को भुलाया या छोड़ा नहीं था। स्वर्ग का परमेश्वर मूसा द्वारा सहन की गई पीड़ा को समझता था, संघर्ष और परीक्षा के इन लम्बे वर्षों को उसने अंकित किया था। पीसगा की चोटी पर परमेश्वर में मूसा को उस मीरास के लिये बुलाया जो सांसारिक कनान से अत्यन्त गौरवशाली थी और अनन्तकाल के लिये थी। PPHin 491.2

रूपान्तरण के पर्वत (mount of transfiguration) पर मूसा एलिय्याह, जिसका परिवर्तन हुआ था, के साथ उपस्थित था। उन्हें पिता से उसके पुत्र को महिमा और प्रकाश के वाहकों के रूप में भेजा गया था। और इस प्रकार मूसा की, इतनी सदियों पूर्व कीगईप्रार्थना पूरी हुईं। वह लोगों की धरोहर की सीमा में, "पवित्र पर्वत" पर परमेश्वर के साक्ष्य के रूप में, जिसमें इज़राइल की सारी प्रतिज्ञाएँ केन्द्रित थी, खड़ा हुआ। जोस्वर्ग द्वारा इतना उच्च सम्मान प्राप्त थाउसमनुष्यके इतिहास में नश्वर दृष्टि पर प्रकट किया गया यह अन्तिम दृश्य है। PPHin 491.3

मूसा मसीह का प्ररूप था। उसने स्वयं इज़राइल के सम्मुख घोषणा की थी, "तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे मध्य से, अर्थात तेरे भाईयों में से मेरे समान एक नबी को उत्पन्न करेगा, तू उसी की सुनना। इससे पहले कि मूसा को सांसारिक कनान के लिये इज़राइल की सेना के नेतृत्व के लिये तैयार किया जा सके, परमेश्वर ने उसे कष्ट और गरीबी के शिक्षालय में अनुशासित करना उचित समझा। स्वर्गीय कनान की ओर यात्रा करते हुए, परमेश्वर के इज़राइल के पास एक कप्तान है जिसे ईश्वरीय अगुवे के रूप में उसके विशेष कार्य के लिये तैयारी कराने के लिये मानवीय शिक्षा की आवश्यकता नहीं थी, फिर भी उसे कष्टों द्वारा सम्पूर्ण बनाया गया; और "जब उसने परीक्षा की दशा में दुख उठाया, तो वह उनकी सहायता कर सकता है जिनकी परीक्षा होती है।"-इब्रानियों 2:18 ।

हमारे उद्धारकर्ता ने कोई मानवीयदुर्बलता या त्रुटि नहीं दिखाई, लेकिन फिर भी प्रतिज्ञा के देश में हमारे लिये प्रवेश प्राप्त करने के लिये उसने मृत्यु को ग्रहण किया। PPHin 491.4

“मूसा तो परमेश्वर के सारे घर में सेवक के समान विश्वासयोग्य रहा कि जिन बातों का वर्णन होने वाला था, उनकी गवाही दे। परन्तु मसीह परमेश्वर के घर मे पुत्र के समान अधिकारी है, और उसका घर हम है, यदि हम अपने साहस पर और अपनी आशा मेंविश्वास पर अन्त तक दृढ़ता से स्थिर रहें।”-इब्रानियो 3:5.6 । PPHin 492.1

अध्याय 44—यरदन को पार करना

यह अध्याययहोशू 1-5:12 पर आधारित है

इज़राइली ने अपने दिवंगत अगुवे का शोक मनाया, और उसकी स्मृति के उपलक्ष्य में तीस दिन विशेष धर्म-किया को समर्पित किए गए। मूसा को उनसे अलग कर दिए जाने से पूर्व कभी भी उन्होंने उसके ज्ञानपूर्ण सुझावों, उसकी पिता समान नम्रता और उसके दृढ़ विश्वास के मोल को नहीं जाना था। एक अलग और अति आभार के साथ उन्होंने उस बहुमूल्य शिक्षा का स्मरण किया जो उसने उनके साथ रहते हुए दी थी। PPHin 493.1

मूसा मृत्यु को प्राप्त हो चुका था, लेकिन उसका प्रभाव उसके साथ समाप्त नहीं हुआ। प्रभाव को लोगों के हृदयों में पुनजीवित होकर, जीवित रहना था। उसके जीते जी कहे शब्दों की उपेक्षा करने वालों के जीवन को ढालने वाली शान्त शक्ति के साथ, उस पवित्र, निःस्वार्थ जीवन की स्मृति को दीर्घकाल तक संजोया जाना था। जैसे कि पहाड़ों के पीछे से, सूर्यास्त के बाद भी डूबते सूर्य का प्रकाश पर्वत के शिखरों को उज्जवल करता है, वैसे ही कर्ताओं के मर्णापरांत, उन पवित्र, ध्मी और भले मनुष्यों के कर्म दीरघकाल तक संसार पर प्रकाश डालते हैं। उनके कर्म, उनके कथन, उनके उदाहरण सदा जीवित रहेंगे । "धर्मी का स्मरण सदा तक बना रहेगा ।"-भजन संहिता 112:6। PPHin 493.2

यद्यपि इस गहरी क्षति से वे अत्यन्त दुःखी हुए, लेकिन वे जानते थे कि उन्हें अकेला नहीं छोड़ा गया था। बादल का स्तम्भदिन में मिलापवाले तम्बू पर ठहरा रहता था, और रात में आग के स्तम्भ के रूप में यह एक आश्वासन था कियदि वे परमेश्वर की आज्ञानुसार चलेंगे तो वह अभी भी उनका सहायक और मार्गदर्शक होगा। PPHin 493.3

यहोशू अब इज़राइल का अभिस्वीकत अगुवा था। उसे मुख्यतः योद्धा होने की मान्यता प्राप्त थी, और उसके लोगों के इतिहास के इस चरण में उसके गुण और योग्यता विशेष रूप से महत्वपूर्ण थे। साहसी, दृढ़, निरन्तर प्रयत्नशील, तत्पर, सच्चरित्र, उसके प्रभार के सुपुर्द किये हुओं की देख-रेख से अपने स्वार्थपूर्ण लाभ के प्रति अनजान और इन सब से बढ़कर परमेश्वर में सक्रिय विश्वास से प्रेरित-प्रतिज्ञा के देश, कनान में प्रवेश करने पर इज़राइलियों की सेनाओं का संचालन करने वाले परमेश्वर द्वारा नियुक्त मनुष्य का चरित्र ऐसा था। बीहड़ में पड़ाव के दौरान उसने मूसा के लिये प्रधान-मन्त्री के तौर पर कार्य किया था, और अपनी शान्त और आंडबररहित स्वामिभक्ति से, दूसरों के लड़खड़ाने पर भी दृढ़ रहने से, संकटकाल में भी सत्य को कायम रखने से, उसने परमेश्वर द्वारा इस पद के लिये बुलाए जाने से पहले ही, मूसा को उत्तराधिकारी होने की योग्यता का प्रमाण दिया था। PPHin 493.4

बहुत उत्सुक्ता और आत्म-अविश्वास के साथ यहोशू ने उसके सम्मुख रखे गए कार्य की अपेक्षा की थी, किन्तु परमेश्वर के आश्वासन ने उसकी झिझक को दूर किया, "जैसे में मूसा के साथ रहा वैसे ही तेरे साथ रहूंगा, और न तो मैं तुझे धोखा दूंगा, और न तुझे छोड़ूंगा। जिस देश के देने की शपथ मैं ने इन लोगों के पूर्वजों से खाई थी उसका अधिकारी तू इन्हें करेगा।" "जो मैंने मूसा से कहा, जिस-जिस स्थान पर तुम पॉवघरोगे, वह सब मैं तुम्हे देता हूँ। सुदूर लेबनान की पहाड़ियों से लेकर परात महानद तक, और महासमुद्र के तट तक सारा देश उनका होना था। PPHin 494.1

इस प्रतिज्ञा के साथ आज्ञा दी गई, "इतना हो कि तू हियाव बाँधकर और बहुत दृढ़ होकर जो व्यवस्था मेरे दास मूसा ने तुझे दी है उसका पालन निश्चय के साथ करना ।" यहोवा का निदेश था, "व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित से कभी न उतरने पाए, तुम उस पुस्तक का अध्ययन दिन-रात करो," "और उससे न तो दाहिने मुड़ना और न बाएं" "क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सफल होंगे और तू प्रभावशाली होगा।" PPHin 494.2

इज़राइली अभी भी यरदन के पूरब में पड़ाव डाले हुए थे जो उनके द्वारा कनान के अधिग्रहण में पहली बाधा थी। यहोशू को परमेश्वर का पहला सन्देश था, "अब तू उठ, और इसी सारी प्रजा समेत यरदन पार होकर उस देश को जा जिसे मैं उनको देता हूँ।" जिस प्रकार से उन्हें वहाँ से मार्ग निकालना था, इस बारे में कोई निर्देश नहीं दिया गया था। फिर भी, यहोशू जानता था कि जो भी आदेश परमेश्वर देगा उसकालोगों से प्रालनकरवानेकामार्ग वहअवश्य निकालेगा, और इसी विश्वास में बहादुर अगवे ने तुरन्त कच करने की प्रक्रिया प्रारम्भ की। PPHin 494.3

यरदन नदी के पार, कुछ ही मीलों की दूरी पर, इज़राइलियों के पड़ाव के सम्मुख स्थित यरीहोका विशाल, सशक्त किलाबंद शहर था। यथार्थ में यह शहर पूरे राष्ट्र के लिये चाबी समान था, और वह इज़राइल की सफलताक मार्ग में सबसे दुर्जय बाधा प्रस्तुत करता। इस कारण यहोशू ने दो नौजवान गुप्तचरों कोनिरीक्षण करने और उसकी जनसंख्या, संसाधनों और उसके किलेबन्दी की ताकत के संदर्भ में कुछ सुनिश्चित करनेभेजा । उस नगर के वासी भयभीत और संदेहजनक, लगातार सावधान रहते थे, और सन्देशवाहक बहुत खतरे में थे। फिर भी, यरीहो की एक स्त्री, राहब ने, अपने प्राण दाव पर लगाकर उनको बचाया। उसकी कृपा के बदले उस नगर पर अधिकार करने के समय उन्होंनेउसे सरंक्षण का आश्वासन दिया। PPHin 494.4

गुप्तवर इस समाचार के साथ वापस सुरक्षित पहुँचे, "निःसन्देह यहोवा ने वह सारा देश हमारे हाथ में कर दिया है, फिर इसके सिवाय उसके सारे निवासी हमारे कारण घबरा रहे है।" यरीहो में उनसे कहा गया था, "हम ने सुना है कि यहोवा ने तुम्हारे मिस्त्र से निकलने के समय तुम्हारे सामने लाल समुद्र का जल सुखा दिया। और तुम लोगों ने सीहोन और ओग नामक यरदन पार रहने वाले एमोरियों के दोनों राजाओं का विनाश कर डाला है। यह सुनते ही हमारा मन पिघल गया, और

तुम्हारे कारण किसी के जी में जी नहीं रहा, क्योंकि तुम्हारापरमेश्वर यहोवा ऊपर के आकाश का और नीचे की पृथ्वी का परमेश्वर है। PPHin 495.1

कूच करने की तैयारी के आदेश जारी किये गए। लोगों को तीन दिनों के खाने के लिये खाद्य सामग्री तैयारी करनी थी, और सेना को युद्ध के लिये तैयार होना था। सभी अपने अगुवा की योजनाओं से प्रसन्नतापूर्वक सहमत हो गए और उन्होंने अपने समर्थन और विश्वास का आश्वासन दिया।"जो कुछ तू ने हमें करने की आज्ञा दी है वह हम करेंगे, और जहाँ कहीं तू हमें भेजे वहाँ हम जाएँगे। जैसे हम सब बातों में मूसा की मानते थे वैसे ही तेरी भी माना करेंगे, इतना हो कि तेरा परमेश्वर यहोवा जैसा मूसा के साथ रहता था, वैसे ही तेरे साथ भी रहे।" PPHin 495.2

अपनी छावनी को शित्तीम के बबूल की वृक्ष वाटिकाओं में छोड़कर, सेना यरदन की सीमा पर उतरी। लेकिन, सब जानते थे कि बिना ईश्वरीय सहायता के वे रास्ता निकालने की आशा भी नहीं कर सकते थे। वर्ष के इस समय पर बसनन््त ऋतु में पहाड़ो से पिघलती बफ यरदन का स्तर इतना बढ़ा देती थी कि पानी किनारों से ऊपर बहने लगता था और सामान्य पार होने वाले स्थानों से पार होना असम्भव कर देता था। परमेश्वर की इच्छा थी कि यरदन पर से इज़राइल के पारगमन चमत्कारी ढंग से यहोशू ने ईश्वरीय निर्देश द्वारा लोगो को स्वयं को पवित्र करने को कहा, उन्हें अपने पापों को अलग करके स्वयं को बाहरी अशुद्धता से भी मुक्त करना था, क्योंकिउसने कहा "कल के दिन यहोवा तुम्हारे मध्य में आश्चर्यकर्म करेगा ।" "वाचा के सन्दूक को सेना के आगे-आगे चलकर मार्गदर्शन करना था। जब वे यहोवा की उपस्थिति के प्रतीक को, छावनी के मध्य से उसके स्थान से हटाकर, याजको द्वारा उठाया जाकर, नदी की तरफ बढ़ता देखे, तो उन्हें भी अपने स्थान से हटना था, और उसके पीछे-पीछे जाना था। पारगमन की परिस्थितियों की सूक्ष्मता से भविष्यवाणी की गई थी, और यहोशू ने कहा, "इससे तुम जान लोगों कि जीवित ईश्वर तुम्हारे मध्य में है, ओर वह तुम्हारे सामने से निःसन्देह कनानियोंहित्तियों, हिब्बयों, परिज्जयों, गिर्गाशियों, ऐमोरियों, और यबूसियों को उनके देश्ज्ञ में से निकाल देगा। सुनो, पृथ्वी भर के प्रभु की वाचा का सन्दूक तुम्हारे आगे-आगे यरदन में जाने पर है।" PPHin 495.3

निर्धारित समय पर, याजकों के काँधो पर सवार, वाचा के सन्दूक के नेतृत्व में, सेना ने अपने आगे की गतिविधि प्रारम्भ की। लोगों को पीछे हटने का निर्देश दियागया, ताकि सन्दूक के आस-पास लगभग आधे-मील का खाली स्थान हो। सभी गहरी उत्सुकता से याजकों को यरदन के किनारे की तरफ बढ़ते हुए देखते रहे। उन्होंने याजकों को उमड़ती हुई नदी की ओर, वाचा का सन्दूक लिये, नियमित रूप से आगे बढ़ते देखा, जब तक कि वाहकों के पैर पानी में उतरे। उसी समय ज्वार पीछे हट गया, जबकि नीचे की जल धारा वहती रही, और नदीतल दिखाई देने लगा। PPHin 496.1

पवित्र आदेश पर याजक नहर के बीच तक गए और वहाँ खड़े रहे, जबकि पूरी सेना उतरकर दूसरी ओर पार हो गई। इस प्रकार इज़राइलियों के मनों में इस तथ्य को अंकित किया गया कि जिस शक्ति ने यरदन के पानी को रोक कर था, उसी शक्ति ने चालीस वर्ष पूर्व उनके पूर्वजों के लिये लाल समुद्र को दो हिस्सों में बाँट दिया था। जब सभी लोग पार हो गए, वाचा के सन्दूक को पश्चिमी छोर पर लाया गया। जैसे ही वह सुरक्षित स्थान पर पहुँचा, याजकों के पाँवों के तले उठकर स्थल पर पड़े, थमा हुआ जल, छूटकर, नदी की प्राकृतिक धारा में एक अबाध्य बाढ़ के रूप में पहले जैसे बहने लगा। PPHin 496.2

आगामी पीढ़ियों को इस आश्चर्यकर्म के साक्ष्य से वंचित नहीं रहना था। जब सन्दूक उठाए याजक यरदन के बीच में ही थे, प्रत्येक घराने से एक-एक अर्थात कुल बारह पुरूष जिन्हें पहले से ही चुना लिया गया था, नदीतल से, जहां याजक खड़े रहे थे, एक-एकपत्थर उठाकर पश्चिमी छोर पर ले गए। नदी के पार पहले पड़ाव के स्थान पर इन पत्थरों को स्मारक के रूप में व्यवस्थित किया गया। लोगों को आदेश दिया गया कि परमेश्वर द्वारा छुटकारे की कहानी, उनके बच्चों को और बच्चों के बच्चों को दोहराई जाए, जैसे कि यहोशू ने कहा, “इसलिये कि पृथ्वी के सब देशों के लोग जान लें कि यहोवा का हाथ बलवन्त है, और तुम सर्वदा अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानते रहो।” PPHin 496.3

इस आश्चर्यकर्म का प्रभाव, इब्रियों व उनके शत्रुओं पर, अत्यन्त महत्वपूर्ण था। वह इज़राइल के लिये परमेश्वर की स्थायी उपस्थिति और सुरक्षा का आश्वासन था-एक प्रमाण की वह यहोशू के माध्यम से उनके लिये काम करेगा, जैसा कि उसने मूसा के माध्यम से किया था। देश पर चढ़ाई करने के प्रारम्भ में, उनके हृदयों को मजबूत करने के लिये ऐसे आश्वासन की आवश्यकता थी-जिस महान कार्य ने चालीस वर्ष पूर्व उनके पूर्वजों के विश्वास को झंझोड़ दिया था। पारगमन से पहले परमेश्वर ने यहोशू को घोषणा की थी, “आज के दिन में मैं सब इज़राइलियों के सम्मुख तेरी प्रशंसा करना आरम्भ करूँगा, जिससे वे जान लें कि जैसे में मूसा के साथ रहता था वैसे ही मैं तेरे साथ भी हूँ।” और परिणाम ने प्रतिज्ञा को परिपूर्ण किया। “उस दिन यहोवा ने सब इज़राइलियों के सामने यहोशू की महिमा बढ़ाई और जैसे वे मूसा का भय मानते थे वैसे ही यहोशू का भी भय उसके जीवन भर मानते रहे।’ PPHin 497.1

इज़राइल के पक्ष में ईश्वरीय शक्ति का अभ्यास, पड़ोसी देशों के उनके प्रतिभय में वृद्धि करने के लिये था, ताकि उनकीसम्पूर्ण और आसान विजय के लिये मार्ग तैयार हो सके। जब कनानियों और ऐमोरियों के राजाओं के पास यह सूचना पहुँची कि परमेश्वर ने इज़राइलियों के सम्मुख यरदन के पानी को थाम लिया था, तो उनके हृदय भय के कारण पिघल गए। इब्री, मिद्यान के पांच राजाओं को, शक्तिशाली सिहोन, ऐमोरियों के राजा, बाशान के ओग का वध कर चुके थे, और अब तीव्र जल-प्रवाह वाली यरदन के पारगमन ने पड़ोसी देशों को भय से भर दिया। कनानियों, समस्त

इज़राइल और स्वयं यहोशू को ठोस प्रमाण दिया गया था कि पृथ्वी और आकाश का राजा, जीवित परमेश्वर, अपने लोगों के बीच में था, और वह कभी भ उन्हें धोखा नहीं देगा और न ही उन्हें छोड़ेगा। PPHin 497.2

यरदन से कुछ ही दूरी पर इब्रियों ने कनान में पहला पड़ाव डाला। यहाँ यहोशू ने "इज़राइलियों का खतना किया।" और "इज़राइलियों ने गिलगल में पड़ाव डाला और फसह का पर्व मनाया।" कादेश के विद्रोह पश्चात खतना की विधि का निलम्बन, इज़राइल के लिये स्थायी साक्ष्य था कि परमेश्वर की उनके साथ वाचा, जिसका प्रतीक खतना था, टूट गई थी। और मिस्र से छुटकारे के स्मारक, फसह के पर्व की समाप्ति, इज़राइलियों की दासत्व के देश में लौट जाने की अभिलाषा पर परमेश्वर की अप्रसन्नता का प्रमाण था। अब, उपेक्षा के वर्ष समाप्त हो गए थे। एक बार फिर परमेश्वर ने इज़राइल को उसके लोगों के रूप में स्वीकार किया, और वाचा का चिन्ह पुन: स्थापित किया गया। खतना की विधि उन सब पर अपनाईं गई जिनका जन्म बीहड़ में हुआ था। और यहोवा ने यहोशू कोघोषणा की, "तुम्हारी नामधराई जो मिस्रियों में हुई है उसे मैंने आज दूर की है" और इसके सांकेतिक प्रसंग में उनके पड़ाव के इस स्थान का नाम गिलगल रखा गया, जिसका अर्थ है, "दूर कर देना।" PPHin 497.3

अधर्मी जातियों ने यहोवा और उसके लोगों की नामधराई की थी क्योंकि इब्री कनान पर अधिकार पाने में असमर्थ रहे थे, जैसे कि मिस्र छोड़ने के पश्चात् उनकी इच्छा थी। उनके शत्रुओं की विजय हुईं थी, क्योंकि इज़राइली इतने लम्बे समय तक बीहड़ में भटके थे, और उन्होंने उपहास करते हुए घोषणा की थी कि इब्रियों का परमेश्वर उन्हें प्रतिज्ञा के देश में लाने में असमर्थ था। अपने लोगों के सम्मुख यरदन से मार्ग निकालने में, परमेश्वर ने स्पष्ट रूप से अपनी सामर्थ्य का प्रदर्शन किया था और अब उनके शत्रु उनकी नामधराई नहीं कर सकते थे। PPHin 498.1

"महीने के चौदहवें दिन संध्या को", यरीहो की तराई में फसह का पर्व मनाया गया। "और फसह के दूसरे दिन वे उस देश की उपज में से अखमीरी रोटी और उसी दिन से भुना हुआ दाना भी खाने लगे। और जिस दिन वे उस देश की उपज में से खाने लगे, उसी दिन सवेरे को मन्ना बन्द हो गया, और इज़राइलियों को आगे फिर कभी मनन्ना नहीं मिला, परन्तु उस वर्ष उन्होंने कनान देश की उपज में से खाया।" बीहड़ में भटकने के लम्बे वर्ष भटकने में व्यतीत हुए थे। आखिरकार इज़राइलियों के पैर प्रतिज्ञा के देश पर चल रहे थे।

अध्याय 45—यरीहो का पतन

यह अध्याय यहोशू 5:13-15, 6,7 पर आधारित है

इब्रियों ने कनान में प्रवेश कर लिया था, लेकिन उसके अपने अधिकृत नहीं किया था, और मनुष्य की दृष्टि में उसपर स्वामित्व प्राप्ति का संघर्ष लम्बा और कठिन होना निश्चित था। वह एक सशक्त जाति से जनपूर्ण था, जो अपने भू-खण्ड पर घुसपैठ का विरोध करने के लिये तैयार खड़े थे। सभी घराने एक-दूसरे के साथ एक सर्वसामान्य संकट के भय से बंधे हुए थे। उनके घोड़े, लोहे के बने युद्ध-रथ, देश के बारे में उनका ज्ञान, और युद्ध में उनका प्रशिक्षण उनके लिये अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होने वाला था। और तो और यह प्रदेश किलों से सुरक्षित था-'जिसकी शहरपनाह आकाश से बातें करती है।"-व्यवस्थाविवरण 9:1 केवल शक्ति के आश्वासन में, जो उनकी अपनी नहीं थी, इज़राइल आसान संघर्ष में सफलता की अपेक्षा कर सकते थे। PPHin 499.1

प्रवेश का सबसे शक्तिशाली गढ़-यरीहो का विशाल और समद्ध शहर उनके बिल्कल सामने था, लेकिन गिलगल में उनके पड़ाव से कुछ दूरी पर था। एक उपजाऊ तराईं की सीमा पर जो विभिन्न उपजों से भरपूर था, जिसके महल और मन्दिर अवगुण व भोग-विलास के कन्द्र थे, अपने विशाल परकोटों के पीछे, यह घमण्डी शहर इज़राइल के परमेश्वर को चुनौती देता था। यरीहो, चन्द्रमा की देवी ऐश्टरोथ के लिये विशेष रूप से समर्पित मूर्तिपूजा का मुख्य स्थान था। कनानियों के धर्म में जो सबसे अधिक भ्रष्टाचारी और नीच था, वह यहां केन्द्रित था ।इजराईल के लोग, जिनके मन में बेतपोर में उनके पाप के भयानक परिणाम अभी भी ताजा थे, इस अधर्मी शहर को केवल भय और घृणा से देख सकते थे। PPHin 499.2

यहोशू की दृष्टि में यरीहों को शक्तिहीन करना कनान पर विजय का पहला चरण था। लेकिन सर्वप्रथम उसने ईश्वरीय मार्गदर्शन का आश्वासन मांगा, जो उसे प्रदान किया गया। इज़राइल के परमेश्वर से उसके लोगों के आगे-आगे जाने के लिये प्रार्थना और मनन करने छावनी से दूर जाकर, उसने विशाल डील-डौल और रोबदार उपस्थिति, “हाथ में नंगी तलवार लिये हुए” एक हथियारबन्ध योद्धा को देखा। यहोशू ने उसे चुनौतीपूर्ण शब्दों में पूछा, “क्या तू हमारी ओर का है या बैरियों के पक्ष का है?” और उसे उत्तर मिला, “मैं यहोवा की सेना का प्रधान होकर अभी आया हूँ।” “अपनी जूती पाँव से उतार, क्योंकि जिस स्थान पर तू खड़ा है वह पवित्र है” यहोशू को दी गई इस आज्ञा ने, जो होरेब में मूसा को भी दी गईं थी, रहस्यमयी आगन्तुक का वास्तविक चरित्र प्रकट कर दिया। वह मसीह था, अत्यधिक प्रशंनीय एकमात्र, जो इज़राइल के अगुवे के सम्मुख खड़ा था। आदरयुक्त भय के साथ यहोशू ने मुहँ के बल गिरकर उसको दण्डवत किया, और उसने यह आश्वासन सुना, “सुन, मैं यरीहो को उसके राजा और शूरवीरों समेत तेरे वश में कर देता हूँ” और उसने नगर के बन्दीकरण के लिये निर्देश प्राप्त किये। PPHin 499.3

पवित्र आज्ञा का पालन करते हुए यहोशू ने इज़राइल की सेना का संचालन किया । कोई आक्रमण नहीं करना था। उन्हें केवल परमेश्वर के सन्दूक को उठाए हुए और नरसिंगे फूंकते हुए, नगर के चारों ओर चक्कर लगाना था। सर्वप्रथम आएयोद्धा, चुने हुए पुरूषों का एक समूह, जो इस बार अपने कौशल या उत्कृष्ट निपुणता से नहीं, वरन् परमेश्वर द्वारा दिये गये निर्देशों के पालन द्वारा जीतने के लिये आए। नरसिंगे लिये हुए सातयाजकों ने उनका अनुसरण किया। फिर परमेश्वर का सन्दूक, जो पवित्र महिमा से घिरा हुआ था, और जिसे पवित्र कार्यभार को दर्शाती हुई पोषाक पहने याजकों ने उठाया हुआ था। इज़राइल की सेना, प्रत्येक गोत्र अपने झण्डे के साथ, पीछे-पीछे हो ली। ऐसा था वह जुलूस जिसने उस नगर के चारों ओर चक्कर लगाया। यरीहो की सड़को में प्रतिध्वनित होती और पहाड़ों में गूँजता नरसिंगों का प्रभावशाली स्वर और विशाल सेना के पदचापों के अलावा अन्य कोई आवाज सुनाई नहीं दी। परिकमा समाप्ति कर, सेना चुपचाप अपने तम्बुओं में लौट आई, और सन्दूक को पवित्र मण्डप में अपने निर्धारित स्थान पर रख दिया गया। PPHin 500.1

नगर के चौकीदार ने सावधान होकर और आश्चर्य से प्रत्येक गतिविधि को अंकित किया, और अधिकारियों को सूचित किया। वे इस प्रदर्शन का अभिप्राय नहीं जानते थे, लेकिन जब उन्होंने इस विशाल सेना को, पवित्र सन्दूक और उसकी सेवा में याजकों को दिन में एक बार नगर की परिकमा करते देखा, तो इस दृश्य के रहस्य ने पुरोहित और प्रजा दोनों के हृदयों को भय से भर दिया। वे फिर सेअपनी सशक्त सुरक्षा का निरीक्षण करते, यह सोचते हुए कि वे निश्चयही सफलतापूर्वक सबसे शक्तिशाली आक्रमण का प्रतिरोध कर सकते थे । कईयों ने इस धारणा का उपहास किया कि उन असाधारण प्रदर्शनों के माध्यम से कोई क्षति पहुँच सकती थी। अन्य, श्रद्धायुक्त भय से भर गए, जब उन्होंने उस जुलूस को प्रतिदिन नगर की परिकमा करते हुए देखा। उन्होंने स्मरण किया कि इन लोगों के सम्मुख लाल समुद्र के दो भाग हो गए थे, ओर उनके लिये यरदन नदी के बीच से मार्ग निकाला गया था। वे नहीं जानते थे कि परमेश्वर उनके लिये और कौन से आश्चर्य कर्म करने को था छः दिनों तक इजराईली सेना ने नगर की परिकमा की। सातवाँ दिन आया, और प्रात: काल की पहली किरण के साथ, यहोशू ने परमेश्वर की सेनाओं को संचालित किया। अब उन्हें यरीहो की सात बार परिकमा करने का निर्देश दिया गया और नरसिंगे के शब्द पर जय-जयकार करने को कहा गया, क्योंकि यहोवा ने वह नगर उनको दे दिया था। PPHin 500.2

विशाल सेना समर्पित प्राचीरों की विधिवत परिकमा करती रही। प्रातः: काल की निस्तद्वता को खंडित करने वाले नरसिंगे के कभी-कभी आने वाले स्वर और कई पेरों की नपी-तुली चलने की आवाज के सिवाय, सब कुछ शांत था। प्राचीरों पर तैयार पहरेदार बढ़ते हुए डर से देखते है कि जैसे ही प्रथम परिकमा पूरी हुई, दूसरी प्रारम्भ हुई, फिर तीसरी, उसके बाद चौथी, फिर पाँचवी और फिर छठी। इन रहस्यमयी गतिविधियों का लक्ष्य क्या हो सकता था? कौन सी प्रभावशाली घटना आसनन््न थी? उन्हें अधिक समय तक रूकना नहीं पड़ा। जैसे ही सातवी परिकमा समाप्त हुई, लम्बा जुलूस रूक गया, नरसिंगे, जो कुछ समय के लिये शान्त थे, अब इतने जोर के साथ फूंके गए

कि धरती काँप उठी। ठोस पत्थर की दीवारें, अपने परकोटों और विशाल मीनारों के साथ डगमगाए और अपनी नींव से ऊपर उठ गए और घड़ाक की आवाज के साथ पृथ्वी पर ढेर हो गए। यरीहो के निवासी डर से शक्तिहीन हो गए, और इज़राइल की सेना ने आगे बढ़कर नगर को अपने अधिकार में ले लिया। PPHin 501.1

इज़राइलियों ने अपनी सामर्थ्य से विजय प्राप्त नहीं की थी। विजय पूरी तरह से परमेश्वर की हुई थी, और भूमि के पहले फल की तरह, नगर और जो कुछ भी उसमें था, यहोवाके लिये बलिदान के रूप में अर्पण किया जाना था। इजराईल को इस बात से प्रभावित करना था कि कनान के अधीनीकरण में उन्हें स्वयं के लिये नहीं लड़ना था, वरन् परमेश्वर की इच्छा को पूरी करने का माध्यम होना था, अपनी पदोन्नति या धन की चाह न रख कर, उनके राजा यहोवा को महिमा पहुँचानी थी। अधीकरण से पूर्व आदेश दिया गया था, "और नगर और जो कुछ उस में है यहोवा के लिये अर्पण की वस्तु ठहरेगी ।" और तुम अर्पण की हुई वस्तुओं से सावधानी से अपने आप को अलग रखना, कहीं ऐसा न हो कि अर्पण की हुईं वस्तु में से तुम कुछ ले लो, और इस प्रकार इज़राइल छावनी को भ्रष्ट करके उसके कष्ट में डाल दो ।" PPHin 501.2

नगर के सभी वासियों को, और उसमें रहने वाले प्रत्येक जीवित प्राणी को, "क्या पुरूष, क्या स्त्री, क्या जवान, क्या बूढ़े, वरन् बेल,भेड़, बकरी, गधे और जितने नगर में थे, उन सभी को उन्होंने अर्पण की वस्तु जानकर तलवार से मार डाला ।" भेदियों की शपथ के अनुसार केवल निष्ठावान राहाब और उसके घराने को जीवित छोड़ा गया। स्वयं नगर को जला दिया गया, उसके महल और मन्दिर, भोग-विलास की वस्तुओं सहित भव्य भवन, भारी-भारी परदे और कीमती वस्त्र, सब अग्नि को समर्पित कर दिये गए। जो आग में भस्म नहीं हो सकता था, "चाँदी, सोना, पीतल और लोहे के पात्र" उनको यहोवा के भवन की धर्म किया के लिये समर्पित कर दिया गया। नगर का स्थान ही श्रापित कर दिया, यरीहो को गढ़ के रूप में कभी भी निर्मित नहीं होना था; ईश्वरीय शक्ति द्वारा गिराई गईं दीवारों को पुनः खड़ी करने की परिकल्पनाकरने वाला तक दण्ड का भागी होगा। सम्पूर्ण इज़राइल की उपस्थिति में यह पवित्र घोषणा की गईं, "जो मनुष्य उठकर इस नगर यरीहों को फिरसे बनाए, वह यहोवा की ओर से श्रापित हो। जब वह उसकी नींव डालेगा तब उसका ज्येष्ठ पुत्र मरेगा और जब वह उसके फाटक लगवाएगा, तब उसका छोटा पुत्र मर जाएगा। PPHin 502.1

यरीहो के लोगों का सम्पूर्ण विनाश, कनान वासियों से सम्बन्धित मूसा द्वारा पहले दिये गए आदेशों का पूरा होना था, "तू उन्हें पूरी रीति से नष्ट कर डालना" व्यवस्थाविवरण 7:21 । कई लोगों को लगता है कि यह आज्ञा बाईबल के अन्य अंशों में प्रेम और करूणा रखने की आज्ञा के विपरीत है, लेकिन यथार्थ में यह भलाई और अनन्त बुद्धिमता का आदेश है। उन्हें ना केवल सच्चे धर्म के उत्तराधिकारी होना था, वरन् उसके सिद्धान्तों को सम्पूर्ण जगत में प्रसारित करना था। कनानियों ने स्वयं को अत्यन्त नीचतापूर्ण व भ्रष्ट अधर्म को समर्पित कर दिया था, और इसलिये यह अनिवार्य था

कि प्रदेश को उससे रहित किया जाए जो परमेश्वर के अनुग्रहकारी प्रयोजनों के परिपूर्ण होने में बाधा डाले। PPHin 502.2

कनान वासियों को प्रायश्चित करने का पर्याप्त अवसर प्रदान किया गया था। चालीस वर्ष पूर्व लाल समुद्र को खोले जाने और मिस्र पर भेजी गई विपत्तियों ने इज़राइल के परमेश्वर के सर्वशक्तिमान होने का प्रमाण दिया था। और अब मियगद्यान के राजाओं की गिलाद और बाशान की पराजय ने भी प्रमाणित कर दिया था कि यहोवा सभी देवी-देवताओं से श्रेष्ठ है। बालपोर के घृणास्पाद रीति-रिवाजों में सम्मिलित होने के कारण दण्डाज्ञाओं में परमेश्वर के चरित्र की पवित्रता और अधर्म के प्रति उसकीघृणा व्यक्त की गई थी। यरीहो के वासी इन सभी घटनाओं से परिचित थे, और कई राहाब के विश्वास को भी जानते थे, लेकिन उन्होंने मानने से मना कर दिया कि वह यहोवा, इज़राइल का परमेश्वर, "ऊपर आकाश में, और नीचे पृथ्वी पर परमेश्वर है।" जल-प्रलय से पूर्व के वासियों की भाँति कनानी भी स्वर्ग को अपमानित और पृथ्वी को दूषित करने के लिये जीवित थे। और प्रेम और न्याय दोनों की यही माँग थी कि परमेश्वर के विरोधियों और मनुष्य के शत्रुओं का तत्परता से अन्त किया जाए। PPHin 502.3

कितनी आसानी से इज़राइल की सेनाओं ने यरीहो की दीवारों को धराशाही कर दिया, वह घमण्डी प्रदेश जिसके परकोटों ने चालीस वर्ष पूर्व अविश्वासी भेदियों को भयभीत कर दिया था! इज़राइल के सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने कहा था, "मैंने यरीहों का नगर तेरे हाथों में दे दिया।'उसवचनके आगे मानवीय शक्ति प्रभावहीन थी। PPHin 503.1

इब्रियों 11:30 में लिखा है, "विश्वास ही से यरीहो की दीवारें गिर गई।" परमेश्वर की सेना के कप्तान ने केवल यहोशू से सम्पर्क किया। उसने स्वयं को पूरी प्रजा पर प्रकट नहीं किया, और यह उन पर निर्भर करता था कि वे यहोशू के शब्दों पर विश्वास करे या सन्देह करे, परमेश्वर के नाम से उसके द्वारा दी गई आज्ञाओं का पालन करें या उसके अधिकार का तिरस्कार करें। परमेश्वर के पुत्र के नेतृत्व में उनकी सेवा में उपस्थित स्वर्गदूतों की सेना को वे देख नहीं सकते थे। उन्होंने तक दिया होगा, "यहगतिविधियाँ कितनी निरर्थक हैं, और मेढ़ो के सींग के नरसिंगे फँ ँकते हुए, शहर की प्राचीरों की परिकमा करने का उपकम कितना मूर्खतापूर्ण है। उन ऊंचे-ऊंचे गढ़ो पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा । लेकिन दीवारों को अन्ततः गिराने से पूर्व, इस धर्म किया को जारी रखने की योजना ने ही इज़राइलियों में विश्वास के विकास के लिये अवसर प्रदान किया। उनके मनों पर यह प्रभाव डालना था कि उनकी शक्ति या सामर्थ्य मनुष्य की बुद्धिमता में नहीं, ना ही उसकी सामर्थ्य में है, वरन् केवल उनके उद्धार देने वाले परमेश्वर में है। इस रीति से उन्हें अपने पवित्र अगुवे पर पूर्ण रूप से निर्भर होने का अभ्यस्थ होना था। PPHin 503.2

परमेश्वर, उस पर विश्वास रखने वालों के लिये महान कार्य करेगा। उसके तथाकथित लोगों के पास अधिक शक्ति इसलियें नहीं है क्योंकि वे अपनी बुद्धिमत्ता में अधिक विश्वास करते है, और

परमेश्वर को उनके पक्ष में अपनी सामर्थ्य को प्रकट करने का अवसर नहीं देते। यदि उसके बच्चे उसमें पूरी तरह विश्वास करे और निष्ठापूर्वक उसकी आज्ञाओं का पालन करे तो वह प्रत्येक आपातकालीन स्थिति में अपने विश्वासी बच्चों की सहायता करेगा। PPHin 504.1

यरीहों के पतन के तत्पश्चातू, यहोशू ने ऐ नगर पर आक्रमण करने का संकल्प किया, ऐ यरदन की तराई के पश्चिम की ओर कुछ मीलों की दूरी पर घाटियों के बीच एक छोटा सा शहर है। इस स्थान पर भेजे गए गुप्तचर, यह सूचना लेकर लौट कि वहाँ के निवासी संख्या में कम थे और उन्हें पराजित करने के लिये छोटी सी सेना ही पर्याप्त होगी। PPHin 504.2

परमेश्वर द्वारा उनके लिये प्राप्त की गई विजय ने इज़राइलियों को आत्म-विश्वासी बना दिया। परमेश्वर ने उन्हें कनान का प्रदेश देने की प्रतिज्ञा की थी, इसलिये वे सुरक्षित महसूस कर रहे थे, और वे इस बात को समझना भूल गए कि केवल ईश्वरीय सहायता ही उन्हें सफलता प्राप्त करवा सकती थी। यहोशू ने भी परमेश्वर से परामर्श लिये बिना ऐ पर विजय की योजना तैयार कर ली। PPHin 504.3

इज़राइली स्वयं की शक्ति की प्रशंसा करने लगे थे और अपने शत्रुओं को तिरस्कार की दृष्टि से देखते थे। एक आसान विजय की अपेक्षा थी, और ऐसा विचार किया गया कि उस नगर को अधीकत करने के लिये तीन हजार पुरूष पर्याप्त थे। वे नगर के फाटकों के समीप पहुँचे, लेकिन उन्हें अत्यन्त दृढ़ प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। अपने शत्रुओं की संपूर्ण तैयारी और संख्या से भयभीत होकर, वे घबराहट में सीधे ढलान पर भाग खड़े हुए। कनानी उनका तेजी से पीछा कर रहे थे, "तब ऐ के रहने वालों न अपने फाटक से पीछा करके, उतराई में उन्हें मार गिराया।" संख्या की दृष्टि से क्षति थोड़ी ही थी-केवल छत्तीस पुरूष मारे गए- लेकिन पूरी प्रजा के लिये पराजय हतोत्साहक थी। "लोगों के हृदय पिघल गए, और पानी की तरह हो गए।" यह पहली बार हुआ था कि कनानियों के साथ उनका वास्तविक युद्ध हुआ, और यदि इस छोटे से नगर के प्रतिरोधियों ने उन्हें भाग खड़े होने को विवश कर दिया था, तो उनके सम्मुख महान संघर्ष का क्या परिणाम होगा? यहोशू ने इस असफलता को परमेश्वर कीअसफलता.की अप्रसनन्नता की अभिव्यक्ति के रूप में देखा और दुख और भय से प्रभावित, "उसने अपने वस्त्र फाड़े और सन्दूक के सामने मुंह के बल गिरकर पृथ्वी पर साँझ तक पड़े रहे, और उन्होंने अपने-अपने सिर पर धूल डाली।" PPHin 504.4

यहोशू ने परमेश्वर से कहा, "हाय, प्रभु यहोवा, तू अपनी इस प्रजा को यरदन पार क्यों ले आया? क्यों हमें एमोरियों के वश मे करके नष्ट करने के लिये ले आया है? हाय प्रभु, में क्या कहूँ जब इज़राइलियों ने अपने शत्रुओं को पीठ दिखाई है? क्योंकि कनानी वरन् इस देश के सब निवासी यह सुनकर हम के घेर लेंगे, और हमारा नाम पृथ्वी पर से मिटा डालेंगे, फिर तू अपने बड़े नाम के लिये क्या करेगा? PPHin 505.1

यहोवा की ओर से उत्तर था, "उठ, खड़ा हो जा, तू क्यों इस भाँति मुहँ के बल पृथ्वी पर पड़ा है? इज़राइल ने........जो वाचा मैंने उनसे अपने साथ बंधवाई थी उसको उन्होंने तोड़ दिया है।" यह समय था तत्पर और निश्चित कार्यवाही का, ना कि निराश होने या विलाप करने का। छावनी में गुप्त पाप था, और परमेश्वर के लोगों के साथ उसकी आशीष और उपस्थिति होने से पूर्व उस पाप को ढूंढ कर दूर करना था। "यदि तुम अपने मध्य में से अर्पण की वस्तु का सत्यनाश न कर डालोगे, तो मैं आगे को तुम्हारे संग नहीं रहूंगा। PPHin 505.2

परमेश्वर की आज्ञा की अवमानना उसने की थी जिसे उसकी दण्डाज्ञा को क्रियान्वित करने के लिये नियुक्त किया गयाथा। और आज्ञा उल्लंघन करने वाले के दोष के लिये पूरी मण्डली को उत्तरादयी ठहराया गया, "उन्होंने अर्पण की वस्तुओं में से तो ले ही लिया, वरन् चोरी भी की, और छल करके उसको अपने सामान में रख लिया। यहोशू को उसे दूँढ निकालने और अपराधी को दण्ड देने का आदेश दिया गया। दोषी की पहचान करने के लिये चयन का प्रयोग किया जाना था। अपराधी की ओर प्रत्यक्ष रूप से संकेत नहीं करके कुछ समय तक विषय को सन्देहास्पद रखा जाना था, ताकि लोगों को स्वयं में विद्यमान पापों के लिये उत्तरदायी होने का एहसास हो, जिससे कि वह परमेश्वर के सम्मुख दीन हो और अपने हृदयों को टटोलें। PPHin 505.3

भोर होते ही, यहोशू ने गोत्रों के अनुसार लोगों को एकत्रित किया और वह प्रभावशाली व पवित्र विधि प्रारम्भ हुईं। कई चरणों में खोज की गईं। भयावह कसौटी कसती गई । सबसे पहले गोत्र को, फिर परिवार को, फिर घराने को और फिर पुरूष को पकड़ा गया, और यहूदा के गोत्र में से कमी के पुत्र आकान को इज़राइल के कष्टकर के रूप में परमेश्वर की अंगुली द्वारा संकेत किया गया। PPHin 505.4

उसके दोष को अविवादस्पद स्थापित करने के लिये और इस आरोप के लिये कोई आधार नहीं छोड़ने के लिये कि उसका दण्ड न्यायसंगत नहीं था, यहोशू ने विधिवत रूप से आकान को सच्चाई स्वीकार करने के लिये अनुरोध किया। उस निंदनीय व्यक्ति ने अपने अपराध का पूर्ण अंगीकार किया "सचमुच मैने इज़राइल के परमेश्वर यहोवा के विरूद्ध पाप किया है, जब मुझे लूट में शिनार देश का एक सुन्दर ओढ़ना, और दो सौ रोकेल चांदी, और पचास रोकेल सोने की एक ईंट दिख पड़ी? तब मैंने उनका लालच करके उन्हें रख लिया, वे मेरे डेरे के भीतर भूमि में गड़े है, ओर सब के नीचे चाँदी है।" तत्काल ही दूतों को तम्बू में भेजा गया, जहाँ उन्होंने बताए हुए स्थान से मिट्टी हटाई और, "उन्होंने देखा कि वस्तुएं उसके डेरे में गड़ी है, और सब के नीचे चाँदी थी। उनको उन्होंने डेरे में से निकालकर यहोशू और......यहोवा के सामने रख दिया।" PPHin 506.1

दण्डाज्ञा सुनाई गई और उसका तुरन्त पालन किया गया। यहोशू ने उससे कहा, "तू ने हमे क्यों कष्ट दिया है? आज के दिन यहोवा तुझी को कष्ट देगा।" आकान के पाप के लिये लोगों को उत्तरादयी ठहराया गया था और उन्होंने उसका परिणाम भुगता था, और इस कारण, उन्हें उनके प्रतिनिधियों

के द्वारा उसके दण्ड में भूमिका निभानी थी। "सब इज़राइलियों ने उस पर पथराव किया।" PPHin 506.2

फिर उस स्थान पर और उसके दण्ड के साक्ष्य के रूप में एक पत्थर का ढेर लगाया गया। "इस कारण उस स्थान का नाम आज तक "आकोर' तराईं पड़ा है जिसका अर्थ है 'कष्ट'। बाईबल में इतिहास क पुस्तक में उसका स्मृतिपत्र लिखा गया है, "आकोर, इज़राइल को कष्ट देने वाला।"-1 इतिहास 2:7। PPHin 506.3

आकान का पाप परमेश्वर के सामर्थ्य के सबसे उत्तम प्रदर्शनों और सबसे प्रत्यक्ष और गम्भीर चेतावनियों को चुनोती देते हुए किया गया। "तुम अर्पण की हुईं वस्तुओं से सावधानी से अपने आप को अलग रखो, ऐसा न हो कि अर्पण की हुईं वस्तु ठहराकर बाद में उसकी अर्पण की वस्तु में से कुछ ले लो, और इस प्रकार इज़राइल छावनी को भ्रष्ट करके उसके कष्ट में डाल दो" यह घोषणा समस्त इज़राइल के लिये थी। यह आज्ञा उनके आश्चर्यजनक रूप से यरदन नदी पार करने के तुरन्त बाद, लोगों के खतने की विधि द्वारा परमेश्वर की वाचा की स्वीकृति देने के बाद, फसह का पर्व मनाने के बाद और परमश्वर की सेना के कप्तान, वाचा के स्वर्गदूत के प्रकट होने के बाद दी गई। इसके पश्चात् यरीहो को पराजित किया गया, जो इस बात का प्रमाण था कि परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन करने वालों को विनाश निश्चित था।यह तथ्य कि इज़राइल की विजय केवल ईश्वरीय शक्ति से सम्भव हुई थी, और यह कि यरीहो का स्वामित्व उन्हें अपनी निजी योग्यता से प्राप्त नहीं हुआ था, इस आज्ञा को महत्वपूर्ण ठहराता था कि उनके लिये लूट की वस्तुओं को ग्रहण करना प्रतिबंधित था। परमेश्वर ने, अपने वचन के सामर्थ्य से, इस गढ़ को जीता था, विजय उसकी थी, और नगर और उसमें की सभी वस्तुएँ उसको समर्पित की जानी थी। PPHin 506.4

लाखों इज़राइलियों में केवल एक ही व्यक्ति था, जिसने दण्डाज्ञा और विजय की घड़ी में परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करने का दुस्साहस किया था। आकान का लालच शिनार के कीमती वस्त्र को देखने से जागृत हुआ, यहाँ तक कि जब उसका इस कारण मृत्यु से आमना-साना हुआ उसने इसे "शिनार देश का एक सुन्दर ओढ़ना" कहा। एक पाप ने दूसरा पाप करने की प्रेरणा दी और परमेश्वर के भण्डार को समर्पित सोने और चांदी को हथिया लिया- उसने परमेश्वर को कनान प्रदेश की भूमि के पहले फलों से वंचित रखा। PPHin 507.1

आकान को विनाश तक पहुँचाने वाले घातक पाप की जड़े लालच में थी, जो सब पापों में सबसे सामान्य और सहज माना जाता है। जबकि अन्य अपराधों को जाँच पड़ताल और दण्ड का सामना करना पड़ता है, दसवीं आज्ञा का खंडन शायद ही कभी निंदा का विषय होता है। इस पाप की घोरता, और इसके भयानक परिणाम, आकान के इतिहास के सबक हैं। PPHin 507.2

लालच धीमे-धीमे विकसित होने वाला पाप है। आकान ने लाभ के लालच को संजोया था जब तक कि वह एक आदत बन गया, और उसे ऐसी जजीरो में जकड़ा जिन्हें तोड़ना लगभग सम्भव

था। इस पाप को बढ़ावा देते हुए, इज़राइल पर विपत्ति लाने के विचार पर वह भयभीत हो गया होगा; लेकिन उसका प्रत्यक्ष ज्ञान पापसे शिथिल हो गया था, और प्रलोभन के आगे वह एक आसान शिकार हो गया। PPHin 507.3

ऐसी ही सुस्पष्ट और विधिपूर्ण चेतावनियों के होते हुए भी, क्या आज भी ऐसे ही पाप नहीं किये जाते? जिस प्रकार आकान को यरीहों की लूट की वस्तुओं को हथियाने पर प्रतिबन्ध था उस प्रकार हमें भी लालच करना प्रत्यक्ष रूप से निषिद्ध है। परमेश्वर ने उसे मूर्तिपूजा घोषित किया है। हमें चेतावनी दी गई है, "तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते ।"-मत्ती 6:24। "चौकस रहो, और हर प्रकार के लोभ से अपने आप को बचाए रखो",लूका 12:15। "तुम में किसी प्रकार के लोभ की चर्चा तक न हो"-इफसियों 5:3। हमारे सम्मुख आकान, यहूदा, हनन्याह और सफीरा का भयानक अन्त है। इन सब के पीछे 'सुबह का तारा' लूसिफेर का अन्त है, जिसने पदोन्नति के लालच में स्वर्ग के परम आनन्द और धवलता को हमेशा के लिये खो दिया। फिर भी, इन सभी चेतावनियों के बावजूद लालच बहुत फैला हुआ है। PPHin 507.4

सभी स्थानों पर उसका लिसलिसा पथ दिखाई देता है। यह परिवारों में असंतोष और मतभेद उत्पन करता है, यह गरीबों में धनवानों के प्रति ईर्ष्या और घृणा को उकसाता है, यह धनवानों का निर्धनों के प्रति कष्टकर अत्याचार को प्रोत्साहन देता है। और यह पाप केवल संसार में ही नहीं, वरन् कलीसिया में भी विद्यमान है। यहाँ भी "दश्वांश और चन्दे" में स्वार्थ, धनलोलुपता, ठगी, धर्मदान की उपेक्षा, और परमेश्वर के भाग की चोरी का प्रचलन कितना सामान्य है! बड़े दुख की बात है कि कलीसिया के प्रतिष्ठित लोगों में भी कई आकान है। कई कली व्यक्ति, गिरजाघर में आते है, परमेश्वर की मेज पर बैठते हैं, लेकिन उनकी सम्पत्ति में अवैध लाभ की वस्तुएँ छुपी होती हैं, वे वस्तुएँ जो परमेश्वर द्वारा श्रापित है। शिनार के सुन्दर वस्त्र के लिये लाखों स्वर्ग के लिये उनकी आशा और अंत: करण की सहमति का त्याग कर देते है। कई लोग अपनी सत्यनिष्ठा और सार्थकता हेतु उनकीयोग्यता का, चाँदी के सिक्कों की थेली के लिये सौदा कर लेते है। कष्ट उठाते हुए दरिद्रों की पुकार पर ध्यान नहीं दिया जाता है, सुसमाचार का प्रकाश अपने मार्ग मे बाधित होता है, मसीही व्यवसाय को झुठलाने वाली प्रथाएं सांसारिक व्यक्तियों के तिरस्कार को सुलगाता है, लेकिन फिर भी लालची व्यवसायी निधि को ढेर लगाना जारी रखता है। मलाकी में, परमेश्वर कहता है, "क्या मनुष्य परमेश्वर को धोखा दे सकता है? पर देखो, तुम मुझ को धोखा देते हो।" PPHin 508.1

आकान के पाप के कारण सम्पूर्ण राष्ट्र का अनर्थ हुआ। एक व्यक्ति के पाप के कारण परमेश्वर कलीसिया से तब तक अप्रसन्न रहेगा जब तक पाप को ढूंढ कर दूर न कर दिया जाए। कलीसिया को जिस प्रभाव से सबसे अधिक सावधान रहने की आवश्यकता है वह प्रत्यक्ष विरोधियों अधर्मियों या मूर्तिपूजकों से नहीं वरन् मसीह के असंगत आचार्यों के प्रभाव से सावधान रहने की आवश्यकता

है। यही वे लोग हैं, जो इजराईल परमेश्वर की आशीषों पर रोक लगा देते हैं और उसके लोगों को शक्तिहीन कर देते हैं। PPHin 508.2

जब कलीसिया कठिनाई में होती है, जब उदासीनता और आध्यात्मिक अवनति विद्यमान रहती है, और परमेश्वर के शत्रुओं को जीतने का अवसर देती हैं, तब अपनी अप्रसन्न अवस्था पर रोने और मुट्ठी बन्द करने के बजाय, उसके सदस्यों को पता लगाना चाहिये कि कहीं उनकी छावनी में कोई आकान तो नहीं। दीनता और आत्म विश्लेषण के साथ प्रत्येक को परमेश्वर की उपस्थिति को बाहर रखने वाले गुप्त पापों को पहचानना चाहिये। PPHin 509.1

आकान ने अपना दोष स्वीकार किया, लेकिन उसके अंगीकार करने से उसको लाभ होने में बहुत देर हो चुकी थी ।उसने इज़राइल की सेना को ऐ से पराजित और हतोत्साहित होकर लौटते देखा था, लेकिन फिर भी उसने आगे आकर अपने पाप का अंगीकार नहीं किया। उसने यहोशू और इज़राइल के पुरनियों को अकथनीय दुख के साथ पृथ्वी पर झुके हुए देखा था। यदि उसने उस समय अपना पाप स्वीकार किया होता, तो उसने वास्तविक प्रायश्चित का कुछ प्रमाण दिया होता, लेकिन वह तब भी चुप रहा। उसने किये हुए महान पाप की घोषणा सुनी थी, और उस पाप के स्वभाव का स्पष्ट विवरण भी सुना था, लेकिन उसके होठ पर मानो ताला लगा हुआ था। फिर औपचरिक जांच पड़ताल की गई । उसकी आत्मा किस प्रकार भय से काँप उठी जब उसके गोत्र की ओर संकेत किया गया, फिर उसके परिवार और फिर घराने को। लेकिन तब भी उसने अंगीकार के शब्द न कहे, जब तक कि परमेश्वर ने उस पर अंगुली नहीं रखी । फिर, जब उसका पाप और छुपाया नहीं जाया सकता था, उसने सच्चाई को स्वीकार किया। कितनी बार ऐसे पाप स्वीकरण किये जाते है। तथ्यों को उनके प्रमाणित होने के पश्चात स्वीकार करने औरउन पापों का अंगीकार करने में जिनसे केवल हम और परमेश्वर परिचित हैं बहुत अन्तर है। यदि आकान को यह आशा नहीं होती कि पापों का अंगीकार करने से वह अपने अपराध के परिणाम को रोक लेगा, तो उसने कभी अंगीकार नहीं किया होता। लेकिन उसके पाप के अंगीकरण से केवल यह प्रमाणित हुआ कि उसको दिया गया दण्ड न्यायसंगत था। पाप के लिये कोई वास्तविक प्रायश्चित नहीं था, कोई पछतावा नहीं था, उद्देश्य में कोई परिवर्तन नहीं था और ना ही पाप के प्रति घृणा थी। प्रत्येक मनुष्य से सम्बन्धित जीवन या मृत्यु के निर्णय के पश्चात जब वे परमेश्वर के न्यायालय के सम्मुख खड़े होंगे, तब दोषियों द्वारा ऐसे ही पाप अंगीकरण किये जाएँगे। उसी पर आने वाले परिणाम उसे अपने पाप को स्वीकार करने के लिये विवश कर देंगे। दण्डाज्ञा का भयावह आभास और तिरस्कार की भयानक अनुभूति के द्वारा आत्मा ऐसा करने के लिये विवश हो जाएगी। लेकिन ऐसे पाप-अंगीकरण पापी को बचा नहीं सकते। PPHin 509.2

जब तक वे अपनेपापों को अपने सहवासियों से छुपा सकते हैं, कई लोग, आकान की तरह, सुरक्षित महसूस करते है और स्वयं को सन्ृतोष दिलाते है कि परमेश्वर उनके अधर्म को अंकित

करने में कठोर नहीं होगा। बहुत देर हो चुकी होगी जब उनके पाप उन्हें उस दिन ढूंढ निकालेंगे, जब वे कभी भी बलिदान या भेंट से पवित्र नहीं हो सकेंगे। जब स्वर्ग के अभिलेख खोले जाएँगे, न्यायाधीश मनुष्य को उसके पाप शब्दों में घोषित नहीं करेगा, वरन् एक मर्मज्ञ, दोषविभावक दृष्टि डालेगा, और प्रत्येक कर्म जीवन का प्रत्येक लेन-देन अपराधी की स्मृति पर व्यापक प्रभाव डालेगा। जैसे कि यहोशू की दिनों में किया गया, इस व्यक्ति को गोत्र से लेकर परिवार तक ढूंढने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी,उसके अपने होंठ उसके पाप का अंगीकार करेंगे। वह पाप जो मनुष्य की जानकारी से छुपे हुए थे पूरे जगत में घोषित किये जाएँगे। PPHin 510.1

अध्याय 46—आशीष और श्राप

यह अध्याय यहोशू 8 पर आधारित है

आकान पर दण्डादेश के कियान्वन के पश्चात, यहोशू को योद्धाओं का संचालन करने की और ऐ प्रदेश के विरूद्ध अग्रसर होने का आदेश दिया गया। परमेश्वर का सामर्थ्य उसके लोगों के साथ था, और उन्होंने जल्द ही ऐ हो अपने अधिकार में ले लिया। PPHin 511.1

सामरिक गतिविधियाँ तब स्थगित कर दी गई, ताकि सभी इज़राईली एक पवित्र धार्मिक समारोह में सम्बद्ध हो सके। लोग कनान में उपनिवेश प्राप्त करने के लिये उत्सुक थे, अभी तक उनके पास अपने परिवारों के लिये भू-खण्ड या घर नहीं थे, और इन्हें प्राप्त करने हेतु उन्हें कनानियों को बाहर भगाना आवश्यक था, लेकिन इस महत्वपूर्ण कार्य को आस्थगित करना उचित था, क्योंकि उन्हें इससे श्रेष्ठतर कर्तव्य पर पहले ध्यान देना था। PPHin 511.2

अपनी धरोहर का स्वामित्व लेने से पूर्व, उन्हें परमेश्वर के साथ अपनी सत्यनिष्ठा की वाचा को दोहराना था। मूसा द्वारा दिये गए अन्तिम निर्देशों में, परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति औपचारिक मान्यता के लिये शेकेम में, एबाल और गिरिज्जीम पर्वतों पर गोत्रों के दीक्षान्त समारोह के लिये दो बार निर्देश दिए गए थे। इन आज्ञाओं का पालन करने के लिये इज़राइल की सारी मण्डली, केवल पुरूष ही नहीं, वरन् "स्त्रियाँ बाल बच्चे और उसके साथ रहने वाले परदेसी लोग" गिलगल में अपने डेरे छोड़कर, अपने शत्रुओं के देश में से होकर शेकेम की घाटी पहुँचे, जो प्रदेश के बीच में थी। हालाँकि के अपराजित शत्रुओं से घिरे हुए थे, जब तक वे परमेश्वर के प्रतिईमानदार थे, वे परमेश्वर की सुरक्षा में सुरक्षित थे। अब, जैसे कि याकूब के दिनों में, "उनके चारों ओर नगर निवासियों के मन में परमेश्वर की ओर से भय समा गया" (उत्पत्ति 35:5)और इब्रियों को सताया नहीं गया। PPHin 511.3

इस विधिवत धर्म किया के लिये नियुक्त स्थान, उनके पूर्वजों के साथ उसके सम्बन्ध के कारण पहले से ही पवित्र था। यही पर अब्राहम ने कनान में यहोवा के लिये पहली वेदी खड़ी की थी। अब्राहम और याकूब, दोनो ने अपने तम्बू यहीं गाड़े थे। यहीं पर याकूब ने वह खेत खरीदा जिसमें गोत्रो को यूसुफ के मृत शरीर को मिट्टी देनी थी। यही पर वह कुआँ था जो याकूब ने खोदा था और ओक का वह वृक्ष जिसके नीचे उसने अपने घराने की मूर्तिपूजक आकृतियों को गाड़ा था। PPHin 511.4

चुना हुआ स्थान पूरे फिलिस्तीन के सबसे सुन्दर स्थानों में से एक था और इस भव्य और प्रभावशाली दृश्य के अभिनीत होने के लिये मंच होने योग्य था। वह सुन्दर घाटी, जैतून की वृक्ष वाटिकाओं से छितराए हुए हरे मैदान, बहते झरनो से निकली नदियों से तरित और अदभुत फलों

से रत्नजड़ित बंजर पहाड़ो के बीच लुभाते हुए फैली हुई थी। तराई में आमने-सामने एबल और गिरिज्जिम लगभग एक-दूसरे के बिल्कुल समीप है, और निचले पर्वत स्कन्ध स्वाभाविक उपदेश मंच सा रूप देते प्रतीत होते हैं, जहां एक पहाड़ से बोले गए शब्द दूसरे पहाड़ पर स्पष्ट सुनाई देते है और पीछे की पहाड़ी ढाल विशाल जनसमूह के लिये स्थान प्रदान करती है। PPHin 512.1

मूसा के निर्देशानुसार, ऐबाल पर्वत पर बड़े-बड़े पत्थरों का स्मारक खड़ा किया गया था। पलस्तर के प्रावरण से पहले से तैयार, इन पत्थरों पर, व्यवस्था लिखी हुई थी- ना केवल सिने पर्वत पर बोली गईं और पत्थर की पटियाओं पर उत्कीर्ण की हुई दस आज्ञाएं, लेकिन मूसा को संचारित किये गए और उसके द्वारा पुस्तक में लिखे गए नियम भी। इस स्मारकके समीप अपरिकष्त पत्थर की एक वेदी बनाई गई थी, जिस पर परमेश्वर के लिये बलि की भेंट चढ़ाई जाती थी। यह तथ्य कि वेदी को ऐबाल पर्वत पर खड़ा किया गया, वह पर्वत जो श्रापित था, महत्वपूर्ण था, यह दर्शाते हुए कि परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन करने के कारण, इज़राइल पर परमेश्वर का प्रकोप न्यायसंगत था और बलिदान की वेदी पर दर्शाए गए मसीह के प्रायश्चित के अभाव में यह उसी समय भुगतान पड़ सकता था। PPHin 512.2

गोत्रों में से छः गोत्र लिया और राहेल के वंशज थे और ये गिरिज्जिम पर्वत पर ठहरे थे, और जो दासियों से उत्पन्न हुए थे, उन्होंने रूब्रेन और जेबुलून सहित, ऐबाल पर्वत पर स्थान ग्रहण किया, और सन्दूक उठाने वाले याजकों ने बीच की घाटी का स्थान लिया। संकेतक तुरही के स्वर द्वारा शान्त हो जाने की घोषणा की गई, और फिर संपूर्ण निस्तब्धता में विशाल सभा की उपस्थिति में, पवित्र संदूक के पास खड़े हुए, यहोशू ने परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करने से मिलने वाली आशीषों को पढ़ कर सुनाया। गिरिज्जिम पर स्थित सभी गोत्रों ने 'आमीन'" कहकर उत्तर दिया। फिर उसने श्रापों को पढ़ा और ऐबाल पर्वत पर ठहरे गोत्रों ने इसी प्रकार सहमति दी; सैंकड़ों आवाजें एक मनुष्य के स्वरसमान इस औपचारिक उत्तर के लिये मिल गए। इसके बाद मूसा द्वारा उनपर प्रकट किये गए अधिनियम और दण्डादेशों सहित, परमेश्वर की व्यवस्था को पढ़ा गया। PPHin 512.3

इज़राइल ने सिने पर्वत पर व्यवस्था को प्रत्यक्षतः परमेश्वर के मुहँ से प्राप्त किया था, और उसके अपने हाथों से लिखे गए व्यवस्था के पवित्र सिद्धान्त अभी भी सन्दूक में संरक्षित थे। अब उन्हें दोबारा लिखा गया था, जहां उन्हें सब पढ़ सकते थे। सभी को कनान पर स्वामित्व को बनाए रखने से सम्बन्धित वाचा के प्रतिबन्धों को स्वयं देखने का विशेषाधिकार प्राप्त था ।सभी को वाचा के नियमों से सहमत होने को प्रकट करना था और आशीषों और श्रापों के पालन या उपेक्षा के सन्दर्भ में अपनी सहमति देनी थी। व्यवस्था को केवल स्मारक-पत्थरों पर ही नहीं लिखा गया, वरन् समस्त इज़राइल के सुनने के लिये स्वयं यहोशू द्वारा पढ़ा गया। कुछ ही सप्ताह पूर्व मूसा ने लोगों को उपदेश देते समय व्यवस्था विवरण की पूरी पुस्तक दी थी, लेकिन फिर भी यहोशू ने व्यवस्था को दोबारा पढ़ा। PPHin 513.1

व्यवस्था के पढ़े जाने को केवल इज़राइली पुरूषों ने ही नहीं, वरन् "सभी स्त्रियों और बाल बच्चों" ने भी सुना, क्योंकि यह आवश्यक था कि वे अपने कर्तव्य को जाने और उसका पालन करे। अपने नियमों से सम्बन्धित परमेश्वर ने इज़राइल को आदेश दिया था, "इसलिये तुम मेरे ये वचन अपने मन और प्राण में धारण किये रखना और चिन्ह के रूप में अपने हाथों पर बाँधना और वे तुम्हारी आखों के मध्य में टीके का काम दे। और तुम इनकी चर्चा करके अपने बच्चों को सिखाना.........जिससे कि जिस देश के विषय में यहोवा ने तेरे पूर्वजों से शपथ खाकर कहा था मैं उसे तुम्हें दूंगा, उसमें तुम और तुम्हारे बच्चे दीर्घायु होंगे और जब तक पृथ्वी के ऊपर आकाश बना रहे तब तक वे भी बने रहें । PPHin 513.2

प्रत्येक सातवें वर्ष पूरी व्यवस्था को समस्त इज़राइल की सभा में पढ़ कर सुनाया जाना था, जैसे कि मूसा ने आज्ञा दी थी, "सात वर्ष के बीतने पर, अर्थात छुटकारे के वर्ष की धार्मिक किया में झोपड़ीवाले पर्व पर जब सब इज़राइली तेरे परमेश्वर यहोवा के उस स्थान पर, जिसे वह चुन लेगा, आकर इकटटठे हों, तब यह व्यवस्था सब इज़राइलियों को पढ़कर सुनना। क्या पुरूष, क्या स्त्री, क्या बालक, क्या तुम्हारे फाटकों के भीतर रहने वाले परदेसी, सब लोगों कोइकट्ठा करना कि वे सुनकर सीखें और तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का भय मानकर इस व्यवस्था के सारे वचनों के पालन करने में चौकस रहें और उनके बच्चे जो ये बातें नहीं जानते, वे भी सुनें और, जब तक तुम उस देश में जीवित रहो, जिसके अधिकारी होने को तुम यरदन पार जारहे हो, परमेश्वर यहोवा का भय मानना सीखें। PPHin 513.3

शैतान परमेश्वर की कही बातों को विकृत करने, समझ को अन्धकारमय और विवेक को अंधा कर मनुष्य को पाप में ले जाने के प्रयत्न में सर्वदा कार्यरत रहता है। इसी कारण यहोवा इतना सुस्पष्ट है और अपनी अपेक्षाओं को इतना प्रत्यक्ष बना देता है कि कोई भी गलती नहीं करे। परमेश्वर मनुष्य को अपनी सुरक्षा की छत्र-छाया में खींचने की लगातार कोशिश करता है, ताकि शैतान उन पर अपनी निमर्म'कपटी शक्ति का अभ्यास न करे। उसने उनके साथ अपनी ही आवाज में अर्थात प्रत्यक्ष रूप से बोल कर बताने और विद्यमान व्यवस्था को अपने हाथों से लिखने की कृपा की। और यह धन्य कथन, सत्य से सुबोधगम्य और आचरण से सहज-प्रवृति वाले, उत्तम मार्गदर्शक के रूप में मनुष्य के सुपुर्द किये गए। क्योंकि शैतान बुद्धि को वश में करके उसे परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं और अपेक्षाओं से लगाव को दूसरे मार्ग पर ले आने को इतना तैयार रहता है, कि उन्हें बुद्धि या मन में स्थिर करने और हृदय में अंकित करने के लिये अतिरिक्त लगन की आवश्यकता है। PPHin 514.1

लोगों को परमेश्वर की अपेक्षाओं और चेतावानियों, और बाईबल इतिहास के पाठ और तथ्यों सम्बन्धित शिक्षा देने में धर्म के शिक्षकों द्वारा अतिरिक्त ध्यान दिया जाना चाहिये। इन्हें बच्चों की समझ के अनुरूप बनाकर, साधारण भाषा में प्रस्तुत किया जाना चाहिये। यह अभिभावकों और

याजकों दोनो के कर्तव्यों का हिस्सा होना चाहिये कि वे देखे कि बच्चे पवित्रशास्त्र की शिक्षा ग्रहण करें। PPHin 514.2

अभिभावक अपने बच्चों को पवित्र पृष्ठों में मिलने वाले विविध प्रकार के ज्ञान में रूचि दिलाएँ। लेकिन यदि वे चाहते हैं कि उनके बच्चे परमेश्वर के वचन में रूचि रखें तो उन्हें उसमें स्वयं रूचि रखनी होगी। उन्हें वचन की शिक्षा से परिचित होना चाहिये और जैसे कि परमेश्वर ने इज़राइल को आज्ञा दी, उसके बारे में, "घर में बैठे, मार्ग पर चलते, लेटते, उठते" बच्चों को सिखाना चाहिये। व्यवस्थाविवरण 11:19।जो यह इच्छा रखते है कि उनके बच्चे परमेश्वर से प्रेम करे और उसका आदर करे, तो उन्हें उसकी सृष्टि की कृतियों और उसके वचन में प्रकट उसकी सामर्थ्य, उसकी महानता और उसकी अच्छाई की चर्चा करना चाहिये। PPHin 514.3

बाइबल का प्रत्येक पद और प्रत्येक अध्याय परमेश्वर से मनुष्य के लिये सन्देश है। हमें उसके सिद्धान्तों को चिन्ह की तरह अपने हाथों पर बाँधना चाहिये और आखों के बीच टीके जैसे धारण करना चाहिये। यदि इसे पढ़ा गया और इसका पालन किया गया, तो यह दिन में बादल के स्तम्भ के रूप में औररातमेंअग्निके स्तम्भ के रूप मेंपरमेश्वर के लोगों का नेतृत्व करेगा, जैसा कि इज़राइलियों के लिये किया। PPHin 515.1

अध्याय 47—गिबोनियों के साथ मेल

यह अध्याय यहोशू 9 और 19 पर आधारित है

शेकेम से इज़राइली गिलगाल में अपनी छावनी में लौटे। यहाँ पर कुछ ही समय पश्चात एक अदभुत प्रतिनिधि-मण्डल उनसे भेंट करने आया और उसके सदस्य इज़राइलियों के साथ सन्धि करने के इच्छुक थे । प्रतिनिधियोंको देख कर लग रहा था कि वे दूर के देशसे आए थेऔर उनके रूप-रंग से इस बात की पुष्टि हो गई। उनके वस्त्रपुरानेऔर फटेहुए थे,सामग्री मेंफफ्दी लगी थी और मदिरा की मश्कें फटी और जोड़ लगी हुई थी, मानों यात्रा के दौरान जल्दी-जल्दी उनकी मरम्मत की गई हो। PPHin 516.1

उन्होंने कहा कि फिलिस्तीन की सीमा के परे उनके दूर के देश में उनके सह देशवासियों ने परमेश्वर द्वारा उसके लोगों के लिये किये गए आश्चर्यकर्मा के बारे में सुना था और उन्होंने इन्हे इज़राइल के साथ वाचा बाँधने को भेजा था। इब्रियों को विशेष रूप से चेतावनी दी गईं थी कि वे कनान के मूर्तिपूजकों के साथ किसी तरह की वाचा नहीं बाँधे और अगुवों के मन में इन आगन्तुकों के शब्दों की सच्चाई के सन्दर्भ में आंशका हुई। उन्होंने कहा," क्या पता तुम हमारे ही मध्य में रहते हो।" इस पर प्रतिनिधियों ने कहा, "हम तेरे दास है।" लेकिन जब यहोशू ने उनसे प्रत्यक्ष प्रश्न किया, "तुम कौन हो? और कहाँ से आए हो"? तो उन्होंने अपना पहला कथन दोहरा दिया और अपनी सत्यनिष्ठा के प्रमाण में कहा, "जिस दिन हम तुम्हारे पास चलने को निकले थे उस दिन तो हमने अपने-अपने घर से यह रोटी गरम और ताजी ली थी, परन्तु अब देखो, यह सूख गई है और इसमें फफूंदी लग गईं है। फिर ये जो मदिरा की मटके हम ने भर ली थी, तब तो नयी थी, परन्तु देखो अब ये फट गई हैं, और हमारे ये वस्त्र और जूते बड़ी लम्बी यात्रा के कारण पुराने हो गए है। PPHin 516.2

यह प्रस्तुति सफल रही। इब्रियों ने "यहोवा से बिना सलाह लिये उनसे यह वाचा बाँधी कि उन्हें जीवित छोड़ेगे, और मण्डली के प्रधानों ने उनसे शपथ खाई ।" इस प्रकार वाचा बाँधी गईं। तीन दिन पश्चात सच्चाईकापता लगा। "उन्होंनेसुना किवेउनकेपड़ोस के रहने वाले लोग थे और उनके ही मध्य में बसे थे।" यह जानते हुए कि इब्रियों का प्रतिकार करना असम्भव था, अपने जीवन सुरक्षित रखने के लिये गिबोनियों ने छल का सहारा लिया। PPHin 516.3

जब इज़राइलियों को उन पर प्रयोग किये गए छल का पता चला, वे घृणा और कोध से भर गए। और यह कोध और भी बढ़ गया जब तीन दिन की यात्रा के पश्चात वे प्रदेश के बीच गिबोनियों के शहरों में पहुँचे। "सारी मण्डली के लोग प्रधानों के विरूद्ध कुड़कड़ाने" लेकिन गिबोनी वाचा को तोड़ने के लिये तैयार नहीं हुए, जबकि उन्होंने वह धोखे से बाँधी थी, क्योंकि प्रधानों ने "उनके

साथइजराईल के परमेश्वर यहोवा की शपथ खाई थी।" "इसलिये इज़राइलियों ने उनको नहीं मारा।" गिबोनियों ने मूर्तिपूजा का परित्याग करने की और यहोवा की आराधना करने की प्रतिज्ञा की थी, और उनके द्वारा मूर्तिपूर्जक कनानियों को जीवित छोड़ देना परमेश्वर की उनका विनाश कर देने की आज्ञा की अवमानना नहीं था। इस प्रकार अपनी शपथ द्वारा वे पाप न करने के लिये प्रतिज्ञाबद्ध थे। हालाँकि वाचा धोखे से बाँधी गई थी, उसे अमान्य नहीं ठहराया जा सकता था। लाभ, प्रतिशोध या स्वार्थ का कोई भी विचार या तक वाचा या शपथ की पवित्रता को किसी भी तरह प्रभावित नहीं कर सकता। नीतिवचन 12:22में लिखा है, "ऐसे होठों से यहोवा घृणा करता है, जो झूठ बोलते है।" वह जो "यहोवा के पर्वत पर चढ़ सकता हे" और "उसके पवित्र स्थान में खड़ा रह सकता है"वह वही है, "जो शपथ खाकर बदलता नहीं चाहे हानि उठानी पड़े।:-भजन संहिता 24:3, 15:4। PPHin 517.1

गिबोनियों को जीवित रहने की अनुमति दी गईं, लेकिन उन्हें दासोचित कार्य करने के लिये, वेदी के लिये सेवकों के रूप में नियुक्त किया गया। "यहोशू ने उसी दिन उनको मण्डली के लिये और परमेश्वर की वेदी के लिये, लकड़हारे और पानी भरने वाले नियुकत किया ।" उन्होंने धन्यवाद के साथ यह शर्ते स्वीकार की, यह जानते हुए कि वे दोषी थे और किसी भी शर्त पर वे जीवन प्राप्त करने में प्रसन्न थे। उन्होंने यहोशू से कहा, "अब हम तेरे वश में है, जैसा बर्ताव तुझे भला लगे और ठीक जान पड़े, वैसे ही व्यवहार हमारे साथ कर ।" कई सदियों तक उनके वंशज वेदी की धर्म-कियाओं के साथ जुड़े रहे। PPHin 517.2

गिबोनियों का राज्य क्षेत्र चार शहरों से बना था। लोग राजा के शासन के अधीन नहीं थे, वरन् पुरनियों या प्रधानों द्वारा शासित थे। गिबोन उनका सबसे महत्वपूर्ण शहर, "बड़ा नगर, वरन् राजनगर के तुल्य था" और "उसके सब निवासी शूरवीर थे।" उस डर को, इज़राईलियों ने कनान के निवासियों के मन में बैठा दिया था, विस्मयकारी प्रमाण है कि ऐसे नगर के लोगों ने अपने प्राण बचाने के लिये ऐसे अपमानजनक साधन का सहारा लिया। PPHin 517.3

लेकिन, यदि गिबोनियों ने इज़राइलियों के साथ सच्चाई से समझौता किया होता, तो उनके लिये अधिक अच्छा होता। यहोवा को समर्पण करने से उनके जीवन तो संरक्षित हो गए, लेकिन उनके छल के कारण उन्हें दासत्व और अपमान को सहना पड़ा। PPHin 518.1

परमेश्वर ने प्रयोजन रखा था कि जो भी अधर्म का त्याग करेगाऔर स्वयं को इज़राइल के साथ जोड़ेगा, वह वाचा से जुड़ी आशीषों का भागीदार होगा। वे इस पद में सम्मिलित थे, "वे परदेसी जो तेरे मध्य रहते है" और कुछ चीज़ो को छोड़ यह वर्ग भी इज़राइल के समान वहीं विशेषाधिकार और समान सुविधाओं का आनन्द लेता। PPHin 518.2

"यदि कोई परदेसी तुम्हारे साथ रहे, तो उसको दुख न देना, जो परदेसी तुम्हारे साथ रहे वह तुम्हारे लिये देशी के समान हो, और उससे अपने ही समान प्रेम रखना ।"-लैवव्यवस्था 19:33,34।

फसह के पर्व और बलि की भेंट से सम्बन्धित यह आदेश दिया गया, “मण्डली के लिये, अर्थात तुम्हारे और तुम्हारे साथ रहने वाले परदेसी दोनो के लिये एक ही विधि हो,......जैसे तुम हो वैसे ही परदेसी भी यहोवा के लिये ठहराता है ।”-गिनती 15:15। PPHin 518.3

यदि गिबोनियों ने छल का सहारा नहीं लिया होता तो, ऐसा था वह आधार जिस पर उन्हें ग्रहण किया जाता। ‘राजनगर', “जहाँक सभी पुरूष श्रवीर थे”, के नागरिकों के लिये यह कम अपमानजनक नहीं था कि उन्हें और उनके सभी पीढ़ियों को लकड़हारे और पानी भरने वाले बनाया गया। लेकिन धोखे के प्रयोजन के लिये उन्होंने दरिद्रता का वेष धारण किया, और वह उनपर चिरस्थायी दासत्व के चिन्ह के रूप में बाँध दिया गया था। इस प्रकार अब से लेकर आगे की सभी पीढ़ियों के लिये उनकी दासत्व की अवस्था परमेश्वर की झूठ के लिये घृणा की साक्ष्य होगी। PPHin 518.4

गिबोन का इज़राइलियों के सम्मुख समर्पण ने कनान के राजाओं को भय और उत्साहीनता से भर दिया। घुसपैठियों के साथसमझौता करने वालों से प्रतिशोध लेने के लिये तत्काल कदम उठाया गया। यरूशलेम के राजा अदोनीसेदेक के नेतृत्व में, कनानी राजाओं में से पाँच राजाओं ने गिबोन के विरूद्ध संधि की। उनकी गतिविधियाँ तेज थी। गिबोन बचाव के लिये तैयार नहीं थे, इसलिये उन्होंने गिलगाल में यहोशू के पास सन्देश भेजा, अपने दासों की ओर से तू अपना हाथ न हटाना, शीघ्र हमारे पास आकर हमें बचा ले, और हमारी सहायता कर, क्योंकि पहाड़ पर रहने वाले एमोरियों के सब राजा हमारे विरूद्ध इकटठे हुए हुए है। “यह खतरा केवल गिबोन के निवासियों के लिये ही नहीं, वरन् इज़राइल के लिये भी धमकी था। मध्य और दक्षिणी फिलिस्तिन जाने के लिये मार्गा पर इस नगर का अधिकार था, और देश पर विजय प्राप्त करने के लिये इसको अधिकार में रखना आवश्यक था। PPHin 518.5

यहोशू ने गिबोन की सहायता के लिये जाने की तत्काल तैयारी की। घिरे हुए नगर के निवासियों को डर था कि उनके द्वारा प्रयोग किये गए छल के कारण यहोशू उनके निवेदन को अस्वीकार कर देगा, लेकिन उन्होंने इज़राइल के नियन्त्रण में होना स्वीकार कर लिया था और परमेश्वर की आराधना करने से सहमत हो गए थे, इसलिये उसे लगा कि उनकी सुरक्षा करना उसका कर्तव्य है। इस बार वह ईश्वर के परामर्श बिना आगे नहीं बढ़ा और परमेश्वर ने इस कार्य के लिये उसे प्रोत्साहित किया। ईश्वरीय सन्देश था, “उनसे मत डर, क्योंकि मैंने उनको तेरे हाथ में कर दिया है, उनमें से एक भी पुरूष तेरे सामने टिक न सकंगा ।” “तब यहोशू सारे योद्धाओं और सब शूरवीरों को संग लेकर गिलगल से चल पड़ा। PPHin 519.1

सारी रात चलकर वह प्रातः: काल को अपनी सेना गिबोन के सम्मुख ले आया। संघ के राजाओं ने अपनी सेनाओं को नगर के आस-पास एकशत्रित किया ही था कि यहोशू एकाएक उनपर टूट पड़ा ।इस चढ़ाई का परिणाम यह हुआ कि आक्रमणकारी पूरी तरह से घबरा गए। वह विशाल सेना यहोशू के सामने से, पहाड़ी रास्ते से होकर बेथोरोन को भाग गई, और ऊँचाई पर पहुँचकर, तेजी

से वृष्टि हुई। “यहोवा ने आकाश से बड़े-बड़े पत्थर उन पर बरसाए......जो ओलो से मारे गए उनकी गिनती इज़राइलियों की तलवार से मारे हुओं से अधिक थी। PPHin 519.2

किले समान पर्वतों में शरण पाने के उद्देश्य से ऐमारी बिना सोचे समझे भागते रहे, और टीले के ऊपर नीचे देखते हुए, यहोशू को लगा कि उसके काम की कार्यसिद्धि के लिये दिन बहुत छोटा था। यदि उन्हें पूर्ण रूप से बाहर नहीं किया गया, तो उनके शत्रु फिर से शक्ति जुटाकर, नये सिरे से संघर्ष प्रारम्भ कर देंगे। “उस दिन यहोशू ने यहोवा से इज़राइलियों के देखते इस प्रकार कहा, हे सूर्य, तू गिबोन पर, और हे चन्द्रमा, तू अय्यालोन की तराई के ऊपर थमा रह । और सूर्य उस समय तक थमा रहा, और चन्द्रमा उस समय तक ठहरा रहा, जब तक उस जाति के लोगों ने अपने ठहरा रहा, और लगभग चार पहर तक न डूबा। PPHin 519.3

सांझ होने से पहले, यहोशू से की गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा परिपूर्ण हुई। शत्रु की समस्त सेना उसके हाथ में दे दी गईं। उस दिन की घटनाएँ इतनी लम्बी थी कि वे इज़राइल को हमेशा याद रही। “न तो उससे पहले कोई ऐसा दिन हुआ और न उसके बाद, जिसमें यहोवा ने किसी पुरूष की सुनी हो, क्योंकि यहोवा तो इज़राइल की ओर से लड़ता है।” तेरे उड़ने वाले तीरों के चलने की ज्योति से, और तेरे चमकीले भाले की झलक के प्रकाश से सूर्य और चन्द्रमा अपने-अपने स्थान पर ठहर गए। तू कोध में आकर पृथ्वी पर चल निकला, तूने अन्य जाति को कोध से नष्ट किया। तू अपनी प्रजा के उद्धार के लिये निकला ।ह्बक्कक 3:11-13 PPHin 520.1

यहोशू की प्रार्थना को परमेश्वर के आत्मा ने प्रेरित किया, ताकि इज़राइल के परमेश्वर की सामर्थ्य का फिर से प्रमाण दिया जा सके। इस प्रकार विनतीने महान अगुवे की ओर से घमण्ड नहीं दिखाया। यहोशू से प्रतिज्ञा की गई थी कि परमेश्वर ही इज़राइल के शत्रुओं को पराजित करेगा, लेकिन फिर भी उसने इतना उत्साहपूर्वक प्रयत्न किया मानो सफलता केवल इज़राइल की सेनाओं पर निर्भर थी। उसने वह सब किया तो मानवीय शक्ति के वश में था, और फिर विश्वास से ईश्वरीय सहायता के लिये प्रार्थना की। ईश्वरीय सामर्थ्य के साथ मानवीय प्रयत्न का मेल ही सफलता का रहस्य है। जो सबसे श्रेष्ठ परिणाम प्राप्त करते हैं वह वे लोग होते है जो पूरी तरह सर्वशक्तिमान पर निर्भर करते है। जिस व्यक्ति ने आदेश दिया, “हे सूर्य, तू गिबोन पर, और हे चन्द्रमा, तू अय्यालोन की तराई के ऊपर थमा रह”, यह वही था जो गिलगल की छावनी में घण्टों तक पृथ्वी पर दण्डवत कर प्रार्थना करता था। प्रार्थना करने वाले मनुष्य सामर्थ्यवान होते है। PPHin 520.2

यह प्रभावशाली आश्चर्यकर्म प्रमाणित करता है कि सृष्टि सृष्टिकर्ता के नियन्त्रण में है। शैतान इस नैतिक संसार में ईश्वरीय साधन को मनुष्य से छुपाना चाहता है, पहले महान उद्देश्य की अथक प्रक्रिया को अदृश्य रखना चाहता था। इस आश्चर्यकर्म में जो भी प्रकृति के परमेश्वर से श्रेष्ठ समझता है वह तिरस्कृत है। PPHin 520.3

परमेश्वर, अपनी इच्छा से उसके शत्रुओं की शक्ति को पराजित करने के लिये प्रकृति की शक्तियों को बुलाता है- "अग्नि और ओले, हिम और कोहरा, और उसका वचन मानने वाली प्रचण्ड बयार ।'-भजन संहिता 148:8। जब अधर्मी ऐमोरी उसके उद्देश्यों का प्रतिरोध करने के लिये अड़ गए, परमेश्वर ने हस्तक्षेप किया, उसने इज़राइल के शत्रुओं पर "आकाश से बड़े-बड़े पत्थर' बरसाए। हमें पृथ्वी के इतिहास के अन्तिम दृश्यों में एक महान युद्ध के घटित होने के बारे में कहा गया है जब, "यहोवा ने अपने शस्त्रों का घर खोलकर, अपने क्रोध प्रकट करने का सामान निकाला ।"-यिर्मयाह 50:25। उसने पूछा, "क्या तू कभी हिम के भण्डार में गया? या कभी ओलो के भण्डार को तूने देखा है, जिसकी मैंने संकट के समय और युद्ध और लड़ाई के दिन के लिये रख छोड़ा है -अय्यूब 38:22,23। PPHin 521.1

भविष्यद्वक्ता होने वाले विनाश का वर्णन करता है जो तब होगा जब, "मन्दिर के सिंहासन से यह प्रभावशाली स्वर" घोषणा करेगा, "हो चुका"। वो कहता है, "आकाश से मनुष्यों पर मन-मन भर के बड़े ओले गिरे।"-प्रकाशितवाक्य 16:17,21।

अध्याय 48—कनान का विभाजन

यह अध्याय यहोशू 10:40-43, 11, 14—22 पर आधारित है

बेथोरोन में विजय के तत्पश्चात दक्षिणी कनान को अधीकृत किया गया। "यहोशू ने उस सारे देश को, अर्थात पहाड़ी देश, दक्षिण के देश और तराई के देश......इन सब राजाओं को उनके देशों समेत यहोशू ने एक ही समय में ले लिया, क्योंकि इज़राइल का परमेश्वर यहोवा इज़राइलियों की ओर से लड़ा। और यहोशू सब इज़राइलियों समेत गिलगाल की छावनी में लौट आया।" PPHin 522.1

इज़राइलियों को मिली सफलता से घबराकर, उत्तरी फिलिस्तीन के गोत्रों ने उनके विरूद्ध संधि कर ली। इस संघ का मुखिया था हासोर का राजा याबीन, हासोर मेरोम तालाब के पश्चिम में स्थित था। "और वे अपनी सेना समेत मिलकर निकल आए।" यह सेना उन सभी सेनाओं से विशाल थी जिसका सामना इज़राइलियों ने कनान में इससे पहले कभी किया हो, "सेना, जो समुद्र के किनारे की बालू के किनकों के समान बहुत थी, और उनके साथ बहुत से घोड़े और रथ भी थे। और जब ये सब राजा सम्मति करके इकट्ठे हुए और इज़राइलियों से लड़ने को मेरोम नामक ताल के पास आकर एक संग छावनी डाली। PPHin 522.2

मेरोम नामक ताल के पास पहुँचकर यहोशू संघ की छावनी पर टूट पड़ा और उनको पूरी तरह पराजित कर दिया। "और यहोवा ने उनको इज़राइलियों के हाथ में कर दिया, इसलिये उन्होंने उन्हें मार दिया, और उनका पीछा किया, और उनमें से किसी को जीवित नहीं छोड़ा। रथ और घोड़े जो कनानियों का गौरव और अभिमान थे, इज़राइल द्वारा गृहीत नहीं किये जाने थे। परमेश्वर की आज्ञा केअनुसार उनके घोड़ो को लंगड़ा कर दिया गया और रथों को जला दिया गया जिससे वह युद्ध में प्रयोग किये जाने योग्य नहीं रहे। इज़राइलियों को रथों या घोड़ो में नहीं, वरन् "परमेश्वर उनके प्रभु के नाम में" विश्वास रखना था। PPHin 522.3

एक-एक करके नगरों को ले लिया गया, और संघ के गढ़ हासोर को भस्म कर दिया गया। युद्ध कई वर्षा तक चलता रहा लेकिन अन्त में यहोशू कनान प्रदेश का स्वामी हुआ। "और देश को लड़ाई से शान्ति मिली। PPHin 522.4

यद्यपि कनानियों को शक्तिहीन कर दिया गया था, लेकिन वे पूरी तरह निर्वासित नहीं हुए थे। परिचय में पलिश्ती अभी भी समुद्र तट पर एक उपजाऊ तराई पर अधिकार जमाए हुए थे, और उत्तर में सीदोनियों का अधिकत क्षेत्र था। दक्षिण में, मिद्र की ओर का देश अभी भी इज़राइल के शत्रुओं के अधिकार में था। PPHin 523.1

फिर भी यहोशू युद्ध को जारी नहीं रखना चाहता था। इज़राइल की कमान को तजने से पूर्व इस महान अगुवे को एक और काम करना था। सम्पूर्ण ढेरा, दोनो भाग, जो जीत लिया गया था और जो अभी भी अनधीकृत था, गोत्रों में बांटा जाना था। और अपनी धरोहर पर पूर्ण रूप से अधिकार करना प्रत्येक गोत्र का कर्तव्य था। लोगो द्वारा परमेश्वर की प्रति निष्ठावान होने की पुष्टि होने पर, वह उनके शत्रुओं को उसके सामने से हटा देगा, और परमेश्वर ने उन्हें आश्वासन दिया कि यदि वे उसकी वाचा के प्रति सत्यनिष्ठ हुए तो वह उन्हें इससे भी बड़ा अधिकार क्षेत्र देगा। PPHin 523.2

यहोशू को, महायाजक एलियाजर और गोत्रों के मुखियाओं के साथ, देश का बँटवारा सौपा गया, प्रत्येक गोत्र का क्षेत्र परचियों द्वारा निर्धारित किया जाना था और उसी ने बँटवारे पर ध्यान देने के लिये प्रत्येक गोत्र से एक-एकप्रधान नियुक्त किया था। लैवि का कुल, जो पवित्र स्थान की सेवा टहल के लिये समर्पित थे, उनकी गिनती इस आवंटन में नहीं की गई, वरन् देश के विभिन्न भागों से अड़तालीस शहर धरोहर के रूप में लैवियों को सौंपे गए। PPHin 523.3

भू-खण्ड का बँटवारा होने से पहले, कालेब, अपने गोत्र के प्रधानों के साथ, एक विशेष माँग को लेकर आगे आया। यहोशू को छोड़कर, अब कालेब इज़राइल में सबसे वृद्ध पुरूष था। गुप्तचरों में से केवल कालेब और यहोशू ही थे जो प्रतिज्ञा के देश से शुभ समाचार लाए थे और जिन्होंने परमेश्वर के नाम में उस पर चढ़ाई करके उसेअधिकत करने को प्रोत्साहित किया। अपनी सत्यनिष्ठा के प्रतिफल के रूप में, कालेब ने यहोशू की उस समय की गई प्रतिज्ञा का स्मरण करवाया, “तूने पूरी रीति से मेरे परमेश्वर यहोवा की बातों का अनुकरण किया है, इस कारण निःसन्देह जिस भूमि पर तू अपने पाँव घर आया है वह सदा के लिये तेरा और तेरे वंश का भाग होगी।” इसलिये उसने निवेदन प्रस्तुत किया कि उसे हेब्रोन का आधिपत्य दिया जाए। यहाँ कई वर्षो तक अब्राहम, इसहाक और याकूब का घर था और यहीं मकपेला की गुफा में उन्हें मिट्टी दी गईं थी। हेब्रोन अनाकवंशियों को केन्द्र था, जिनके डरावने रूप रंग ने गुप्तचरों को बुरी तरह भयभीत कर दिया था, और उनके द्वारा समस्त इज़राइल के साहस को नष्ट कर दिया था। अन्य स्थानों से हटकर, कालेब ने परमेश्वर की सामर्थ्य में विश्वास रखते हुए, अपनी धरोहर के लिये इस स्थान को चुना। PPHin 523.4

“जब यहोवा ने मूसा से यह वचन कहा था, उस समय से मुझे पैंतालीस वर्ष तक जीवित रखा है ।जितना बल मूसा के भेजने के दिन मुझ में था उतना बल अभी तक मुझ में है, युद्ध करने या भीतर बाहर आने जाने के लिये जितनी उस समय मुझ में सामर्थ्य थी उतनी हो अब भी मुझ में सामर्थ्य है। इसलिये अब वह पहाड़ी मुझे दे जिसकी चर्चा यहोवा ने उस दिन की थी, तूने तो उस दिन सुना होगा कि उसमें अनाकवंशी रहते है, और बड़े-बड़े गढ़ वाले नगर भी है, यदि ऐसा है तो यहोवा मेरे संग रहे, और उसके कहने के अनुसार में उन्हें उनके देश से निकाल दूँ।” यहूदा के विशिष्ट व्यक्तियों ने इस निदेवन का समर्थन किया । देश के बँटवारे के लिये नियुक्त, कालेब ने स्वयं

अपनी माँग को प्रस्तुत करने में इन पुरूषों को अपने साथ लिया, ताकि ऐसा प्रतीत न हो कि उसने स्वार्थपूर्ण लाभ के लिये अपने अधिकार का प्रयोग किया। PPHin 524.1

उसकी माँग को तत्काल स्वीकृति प्रदान की गई। इस शक्तिशाली गढ़ की विजय किसीऔर के सुपुद करना सुरक्षित नहीं था। तब यहोशू ने उसको आशीर्वाद दिया और हेब्रोन को यपुन्ने के पुत्र कालेब का भाग कर दिया" "क्यों वह पूरी रीति से इज़राइल के परमेश्वर यहोवा का अनुगामी था।" कालेब का विश्वास अभी भी वैसा ही था जैसा तब था जब उसकी साक्षी ने गुप्तचरों की झूठी सूचना का खंडन किया था। उसने परमेश्वर की प्रतिज्ञा में विश्वास किया कि वह उसके लोगों को कनान का स्वामित्व देगा और इसमें वह परमेश्वर का पूर्ण रूप से अनुगामी रहा था। अपने लोगों के कष्ट औरउनकी निराशाओं में भागीदार होते हुए, उसने भीड़ में अपने लोगों के साथ लम्बे समय तक भटकने को सहन किया था, और फिर भी शिकायत न की, वरन् परमेश्वर की करूणा की प्रशंसा की जब उसने उसको बीहड़ में सुरक्षित रखा, जबकि उसके भाई मारे गए। कनान, प्रवेश के समय से युद्ध के वर्षो के दौरान सभी कठिनाईयों संकटों और बीहड़ में भटकने के दौरान आई विपत्तियों के मध्य, परमेश्वर ने उसे सुरक्षित रखा, और अब चालीस वर्ष बाद भी उसकी शक्ति ज्यों की त्यों थी। उसने वह भू-खण्ड नहीं माँगा जिस पर विजय प्राप्त कर ली गईं थी, वरन् वह प्रदेश माँगा जिसका दमन करना गुप्तचरों ने असम्भव सोचा था। परमेश्वर की सहायता से वह अपने गढ़ को ही दैत्यों से छीनने वाला था जिनकी शक्ति ने इज़राइल के विश्वास को हिला कर रख दिया था। कालेब का निवेदन किसी ख्याति या प्रशंसा से प्रेरित नहीं था। यह साहसी अनुभवी योद्धा लोगों को वह उदाहरण देना चाहता था जिससे परमेश्वर का आदर हो, और अभी गोत्रो को प्रोत्साहित करना चाहता था कि वे उस देश को जिसे उनके पूर्वजो ने दुर्जय माना था, पूर्णतया अधिकृत करें। PPHin 524.2

कालेब ने उस मीरास को प्राप्त किया, जिसमें उसका हृदय चालीस वर्षों से लगा था, और इस विश्वास से कि परमेश्वर उसके साथ था, उसने वहाँ से "अनाक के तीन पुत्रों को भगा दिया।" अपने और अपने घराने के लिये धरोहर सुरक्षितकरके, उसका उत्साह कम नहीं हुआ, वह अपनी धरोहर का ही आनन्द उठाने में सन्तुष्ट नहीं हुआ, वरन् परमेश्वर की महिमा और देश की भलाई के लिये और देशों पर विजय प्राप्त करने का कठोर प्रयत्न किया। PPHin 525.1

कायर और विरोधी बीहड़ में नष्ट हो गए थे, लेकिन धर्मी गुप्तचरों ने एश्कोल के अंगूर खाए। प्रत्येक को उसके विश्वास के अनुसार दिया गया। अविश्वासियों ने अपनी आशकांओं को परिपूर्ण होते देखा। परमेश्वर की प्रतिज्ञा के बावजूद, उन्होंने घोषणा की कि कनान का उत्तराधिकारी होना असम्भव था, और वह उन्हें नहीं मिला। लेकिन जिन्होंने आने वाली कठिनाईयों पर सर्वशक्तिमान सहायक के बल से अधिक ध्यान न देकर, परमेश्वर पर विश्वास किया, उन्होंने उस समृद्ध देश में प्रवेश किया। विश्वास के द्वारा ही इन वृद्ध सूरमाओं ने "राज्य जीते.....तलवार की धार से बच निकले, निर्बलता में बलवन्त हुए, युद्ध में वीर निकले, विदेशियों का फोजों को मार भगाया।"-इब्रानियों

11:33,34। वह विजय जिससे संसार पर जय प्राप्त होती है हमारा विश्वास है।' -1 यहुन्ना 5:4 PPHin 525.2

देश के विभाजन से सम्बन्धित एक अन्य अनुरोध ने उसभावनाको प्रकट कियाजो कालेब की माँग की भावना से बहुत भिन्न था। यहयुसुफ के बच्चों,अर्थात एप्रेैम के गोत्र, और मनश्शे के आधे गोत्र द्वारा प्रस्तुत किया गया। बहुसंख्य होने के आधार पर, इन गोत्रों ने भू-खण्ड के दुगने भाग की माँग की। जो भाग उनके लिये मनोनीत था, वह देश में सबसे उन्नत था, और शारोन की उपजाऊ तराई उसी का भाग थी। लेकिन तराई के कई मुख्य नगर अभी भी कनानियों के अधिकार में थे, और उनके अधिकार क्षेत्र को जीतने के लिये खतरों और श्रम से वे हिचकिचा रहे थे और वे जीते हुए प्रदेश में सेअधिकार क्षेत्र का अतिरिक्त भाग चाहते थे। एप्रैम का गोत्र, इज़राइल में सभी गोत्रो से बड़ा था और यहोशू इसी गोत्र का सदस्य था और इसलिये उसके सदस्य स्वाभाविक रूप से स्वयं को विशेष महत्व का अधिकार मानते थे। "हम तो गिनती से बहुत है, फिर तूने हमारे भगा के लिये चिट्ठी डालकर क्यों एक ही अंश दिया है? लेकिन कठोर अगुवे से कठोर न्याय के अलावा और किसी निर्णय की अपेक्षा नहीं की जा सकती थी।' PPHin 525.3

उसका उत्तर था, "यदि तुम गिनती में बहुत हो, और एप्रेम का पहाड़ी देश तुम्हारे लिये छोटा है, तो परिज्जियों और रपाईयों का देश है जो जंगल में है, उसमे जाकर पेड़ो को काट डालो।" PPHin 526.1

उनके उत्तर में शिकायत का वास्तविक कारण प्रकट हुआ। उनमें कनानियों को मार भगाने के लिये विश्वास और साहस का अभाव था। उन्होंने कहा, "वह पहाड़ी देश हमारे लिये छोटा है, और उन सभों के पास लोहे के रथ है। PPHin 526.2

इज़राइल के परमेश्वर का सामर्थ्य उसके लोगों को प्रतिज्ञा द्वारा प्राप्त था और यदि एप्रैमी कालेब के विश्वास जैसे विश्वास और साहस के स्वामी होते तो कोई भी शत्रु उनके सम्मुख खड़े नहीं रह सकते थे। खतरों और कठिनाईयों से बच कर निकल जाने की उनकी प्रकट इच्छा को यहोशू ने दृढ़ता से लिया, "तुम लोग गिनती में बहुत हो, और तुम सामर्थ्यवान भीहो, चाहे कनानी सामर्थी हो, और उनके पास लोहे के रथ भी हो, तो भी तुम उन्हें वहां से निकाल सकोगे।" इस प्रकार उनके तक उन्हीं पर पलट दिये गए। संख्या में बहुत होने के कारण, जैसा कि उन्होंने कहा, वे अपने भाईयों के समान, अपना रास्ता निकालने में पूर्णतया सक्षम थे। परमेश्वर की सहायता के होते हुए, उन्हें लोहे के रथों से डरने की आवश्यकता नहीं थी। PPHin 526.3

अभी तक गिलगल देश का मुख्यालय और मिलापवाले तम्बू अर्थात पवित्रमण्डपका स्थानरहा था। लेकिन अब पवित्र मण्डप को उसके स्थायी स्थान पर स्थानान्तरित करना था। यह स्थान था शीलो, जो एप्रैम के भाग में एक छोटा सा नगर था। यह देश के मध्य में था, और सभी गोत्रों की आसान पहुँच में था। यहाँ देश का भाग पूर्णतया अधिकृत कर लिया गया था, जिससे कि उपासकों

को सताया न जाए। फिर इज़राइलियों की सारी मण्डली ने शीलो में इकट्ठा होकर वहाँ मिलापवाले तम्बू को खड़ा किया। "जो गोत्र अभी भी वहाँ डेरा डाले थे गिलगल से मिलापवाले तम्बू के हटाए जाने पर उसके पीछे हो लिये, और उन्होंने शीलो के पास अपने तम्बू खड़े किए।यहाँ पर ये गोत्र तब तक रहे जब तक वे अपने-अपने अधिकार क्षेत्रों में बँट न गए। PPHin 526.4

शीलो में सन्दूक तीन सौ वर्ष तक रहा, जब तक कि एली के कुल के पापों के कारण, यह पीलश्तियों के हाथो में पड़ गया और शीलो नष्ट हो गया। PPHin 527.1

सन्दूक फिर कभी यहाँ के मिलापवाले तम्बू में लोटाकर नहीं लाया गया, पवित्र स्थान की विधि यरूशलेम के मन्दिर में स्थानान्तरित की दी गई, और शीलो महत्वहीन हो गया। जहाँ यह पहले था वहाँ अब केवल अवशेष हैं। बहुत समय तक इसका प्रयोग यरूशेलेम के लिये चेतावनी के रूप में किया गया। "मेरा जो स्थान शीलो में था जहाँ मैंने पहले अपने नाम का निवास ठहराया था, वहाँ जाकर देखो कि मैंने अपनी प्रजा इज़राइल की बुराई के कारण उसकी क्या दशा कर दी है?......इसलिये यह भवन जो मेरा कहलाता है, जिस पर तुम भरोसा रखते हो, और यह स्थान जो मैंने तुमको और तुम्हारे पूर्वजों को दिया था, इसकी दशा मैं शीलो की सी कर दूंगा। - यिर्मयाह 7:12-14। PPHin 527.2

"जब देश का बॉटा जाना सीमाओं के अनुसार पूरा हो गया", और सभी गोत्रों को उनकी धरोहर आवंटित कर दी गई, तब यहोशू ने अपनी माँग प्रस्तुत की । जैसे कि कालेब को दी गई थी, उसी प्रकार यहोशू को भी मीरास की एक विशेष प्रतिज्ञा दी गई थी, किंतु उसने सिवाय एक नगर के, किसी विस्तृत प्रात की माँग नहीं की। "उन्होंने उसको उसका माँगा हुआ नगर दिया......और वह उस नगर को बसाकर उसमें रहने लगा।" इस नगर का नाम तिम्नत्सेरह पड़ा जिसका अर्थ है, "बचा हुआ भाग"- और जो विजेता की निःस्वार्थ भावना और शिष्ट आचरण का स्थायी साक्षी था, वह विजेता जिसने विजय से प्राप्त लूट को सबसे पहले लेने के बजाय अपनी माँग को तब तक टाले रखा, जब तक कि उसके लोगों में सबसे दीन व्यक्ति की माँग पूरी नहीं हुई। PPHin 527.3

लैवियों को आवंटित शहरों में से छः: शहर, यरदन के दोनों किनारो पर तीन--तीन शहरों को शरण के नगरों के रूप में चुना गया। इन शहरों का चयन मूसा के आदेश से किया गया था, ताकि "जो कोई किसी को भूल से मारकर खूनी ठहरा हो वह वहाँ भाग जाए। वे नगर तुम्हारे निमित्त पलटा लेने वाले से शरण लेने के काम आएँगे, कि जब तक खूनी न्याय के लिये मण्डली के सामने खड़ा न हो तब तक वह मार न डाला जाए। यह करूणामयी प्रयोजन निजी प्रतिशोध की प्राचीन परम्परा के कारण आवश्यक था, क्योंकि इस परम्परा के अनुसार हत्यारे का दण्ड उसके सबसे निकटतम परिजन या मृतक के अगले उत्तराधिकारी पर डाल दिया जाता था। जिन मामलों में दोष स्पष्ट रूप से प्रमाणित होता था, उनमें न्यायियों के द्वारा सुनवाई केलिये रूकने की आवश्यकता नहीं होती थी। प्रतिशोध अपराधी का कहीं भी पीछा कर सकता था, और जहाँ भी अपराधी मिले उसे मृत्यु के घाट

उतार सकता था। परमेश्वर ने इस परम्परा को उस समय उन्मूलन करना उपयुक्त नहीं समझा, लेकिन उसने अनजाने में प्राण लेने वालों की सुरक्षा निश्चित करने का प्रावधान रखा। PPHin 527.4

शरण के शहरों का इस तरह वितरण किया गया कि देश के प्रत्येक भाग से आधे दिन की यात्रा की दूरी पर था। वहाँ तक ले जाने वाली सड़कों को हमेशा अच्छी स्थिति में रखा जाना था, पूरे रास्ते बड़े और साधारण अक्षरों में 'शरण' शब्द धारण किये हुए मार्गपट्ट खड़े किये जाने थे, ताकि भागने वाले को क्षणभर का भी विलम्ब न हो। चाहे इब्री, चाहे अपरिचित या पलायक, सभी इस प्रावधान का लाभ उठा सकते थे। लेकिन जहाँ निर्दोष को उतावलेपन में मारा नहीं जाना था, वहीं दोषी को दण्ड से मुक्ति नहीं देनी थी। पलायकों की उचित अधिकारियों द्वारा सुनवाई की जानी थी, और केवल सुविचारित हत्या का दोषी न पाए जाने पर ही उसे शरण के शहर में सुरक्षा प्रदान की जानी थी। सुरक्षा के हकदारों को चुने हुए शरण-स्थान की सीमाओं के अन्दर रहने की शर्त पर ही सुरक्षा प्राप्त होती थी। यदि कोई निर्धारित सीमाओं को लाँघ जाए, और लहू के प्रतिशोधी द्वारा पाया जाए, तो उसे परमेश्वर के प्रावधान का अनादर करने का दण्ड उसका प्राण होगा। लेकिन महायाजक की मृत्यु हो जाने पर, शरण के नगरों के सभी शरणार्थियों को अपने-अपने अधिकार क्षेत्र में लौट जाने की स्वतन्त्रता थी [हत्या की सुनवाई में आरोपी को एक साक्ष्य के आधार पर दण्डित नहीं किया जा सकता था, भले ही उसके विरोधमें संयोगवश प्रमाण बहुत ठोस हो। परमेश्वर का निर्देश था, "जो कोई किसी मनुष्य को मार डाले, वह साक्षियों के कहने पर मार डाला जाए, परन्तु एक ही साक्ष्य की साक्षी से कोई न मारा जाए।" इज़राइल के लिये यह निर्देश मसीह ने मूसा को दिये थे। जब वह पृथ्वीपर व्यक्ति रूप से अपने अनुयायियों के साथ था, उन्हें यह सिखाते समय कि दोषियों के साथ किस प्रकार का व्यवहार किया जाए, महान गुरू ने इस सीख को दोहराया कि एक व्यक्ति की साक्षी के आधार पर दण्ड या मुक्ति ना दी जाए। एक ही व्यक्ति के विचार और दृष्टिकोण विवादास्पद प्रश्नों का समाधान नहीं कर सकते। इन सभी मामलों में दो या दो से अधिक का सहयोगी होना अनिवार्य था, उन्हें एकसाथ उत्तरादायित्व को निभाना है, "कि हर एक बात दो या तीन गवाहों के मुहँ से निश्चित की जाए।"-मत्ती 8:16। PPHin 528.1

यदि वह, जिसे हत्या के लिये सुना गया हो दोषी प्रमाणित हो तो कोई भी प्रायश्चित या फिरौनी उसे नहीं बचा सकते थे, "जो कोई मनुष्य का लहू बहाएगा, उसका लहू मनुष्य ही से बहाया जाएगा ।।"-उत्पत्ति 9:6। "जो खूनी प्राणदण्ड के योग्य ठहरे उससे प्राणदण्ड के बदले में जुर्माना न लेना, वह अवश्य मार डाला जाए।" परमेश्वर की आज्ञा थी, "उसको मार डालने के लिये मेरी वेदी के पास से भी अलग ले जाना," "जिस देश में जब खून किया जाए तब केवल खूनी के लहू बहाने ही से उस देश का प्रायश्चित हो सकता है।"-गिनती 35:31, निर्गमन 21:24, गिनती 35:33 (राष्ट्र की सुरक्षा और पवित्रता की माँग थी कि हत्या के पाप को कठोर दण्ड दिया जाए। मानव का प्राण, जो केवल परमेश्वर द्वारा देय है, गंभीरता से सुरक्षित रखा जाना चाहिये। PPHin 529.1

परमेश्वर के प्राचीन लोगों के लिये नियुक्त शरण-स्थान मसीह द्वारा प्रदान की गईं शरण का प्रतीक थे। जिस दयावान उद्धारकर्ता ने शरण के इन सांसारिक शहरों को नियुक्त किया, उसी ने अपना लहू बहाकर परमेश्वर की आज्ञा के उललंघनकर्ताओं के लिये एक निश्चित विश्राम-स्थल का प्रबन्ध किया जिसमें वे दूसरी मृत्यु से सुरक्षा के लिये भाग सकते थे। जो भी क्षमा के लिये उसके पास जाता है, उसे कोई भी शक्ति उसके हाथों से नहीं ले सकती। “अतः अब जो मसीह यीशु में है, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं।” “फिर कौन है जो दण्ड की आज्ञा देगा? मसीह ही है जो मर गया, लेकिन मुर्दों में से जी भी उठा, और परमेश्वर के दाहिनी ओर है, और हमारे लिये निवेदन भी करता है” ताकि “दूढता से हमारा ढाढ़स बँध जाए, जो शरण लेने के लिये इसलिये छोड़े हैं कि जो आशा उनक सामने है प्राप्त कर सके।”-रोमियों 8:1,34, इब्रानियों 6:18। PPHin 529.2

शरण के नगर को दौड़ने वाला विलम्ब नहीं कर सकता था परिवार और व्यवसाय पीछे छोड़ दिये गए। अपने प्रियों को अलविदा कहने के लिये समय नहीं था। उसका जीवन दाँव पर लगा था, और प्रत्येक अन्य रूचि को उस एक लक्ष्य पर नन्यौछावर करना था- सुरक्षा के स्थान पर पहुँचना। थकान को भुला दिया गया, कठिनाईयों पर ध्यान नहीं दिया गया। पलायक ने गति धीमी करने का दुस्साहस नहीं कियाजब तक कि वह उस शहर की सीमा के अन्दर न पहुँच गया। PPHin 529.3

पाप को हमेशा की मृत्यु से सामना कराया जाता है। जब तक कि वह मसीह में छुपने का स्थान नहीं दूँढ लेता, और जिस प्रकार टालना और बेपरवाही पलायक को उसके जीवित रहने के एक अवसर से वंचित कर सकते हैं, उसी प्रकार विलम्ब और उदासीनता आत्मा के विनाश का कारण हो सकते हैं। महान शत्रु, शैतान परमेश्वर की पवित्र व्यवस्था के प्रत्येक उल्लंघन करने वाले के मार्ग में होताहै, जो खतरे से अनभिज्ञ होता है औरअनन्त शरण स्थान में शरण नहीं लेता वह विनाशक का शिकार हो जाएगा। PPHin 530.1

जो कैदी किसी भी समय शरण के नगर से बाहर चला जाता था, उसे लहू के प्रतिशोधी के लिये छोड़ दिया जाता था। इस प्रकार लोगों को उनके सुरक्षा के लिये परमेश्वर द्वारा बनाए गए कि पाप की क्षमा के लिये पापी मसीह में विश्वास करें, उसे विश्वास और आज्ञाकारिता द्वारा उसमें बना रहा है। PPHin 530.2

“क्योंकि सच्चाई की पहचान प्राप्त करने के बाद यदि हम जान-बूझकर पाप करते रहें, तो पापों के लिये फिर कोई बलिदान बाकी नहीं। हाँ, दण्ड का एक भयानक बाट जोहना और आग का ज्वलन बाकी है, जो विरोधियों को भस्म कर देगा।”- इब्रानियों 10:26,27 । PPHin 530.3

इज़राइल के दो गोत्र गाद और रूबेन, और मनश्शे का आधा गोत्र, यरदन पार करने से पहले ही अपनी मीरास प्राप्त कर चुके थे। खेतीहरों को अपने मवेशियों और भेड़-बकरियों के लिये विस्तृत चरागाह प्रदान करते हुए, गिलियाद और बाशानके घने जंगल और ऊंचाई पर तराई दी गईं, जिसमें वह आकर्षण थे जो कनान में नहीं थे, और यहाँ बसने के इच्छुक इन ढाई गोत्रों ने यरदन पार अपने

भाईयों का साथ देने के लिये हथियारबन्ध पुरूषों का अपनी ओर से बराबर का भाग जुटाने की और उनका लड़ाई में साथ देने की प्रतिज्ञा की थी, जब तक कि वे अपने निज भाग में प्रवेश नहीं कर लेते। इस कर्तव्य का उन्‍्होंनें निष्ठापूर्वक पालन किया। “रूबेन, गादी और मनश्शे के आधे गोत्र के लोग....... युद्ध के हथियारों से लैस संग्राम करने के लिये यहोवा के सामने पार उतरकर, यरीहो की तराई में पहुँचे।” यहोशू 4:12,13 । वर्षों तक उन्होंनेअपने भाईयों के पक्ष में वीरता से युद्ध किया था। अब समय आ गया था कि वे अपने निज भाग के देश में जाएँ। जैसे उन्होंने संग्रामों में अपने भाईयों के साथ एका किया था, वैसे ही वे युद्ध से प्राप्त सामग्री में भागीदार बने, और वे “बहुत से पशु और चांदी सोना, पीतल, लोहा और बहुत से वस्त्र और बहुत धन सम्पत्ति” लिये हुए लौटे, जिस सब को उन्होंने उनके परिवारों और भेड़ बकरियों के साथ पीछे रहने वालों के साथ बांटा। PPHin 530.4

जब यहोशू और अन्य अगुवों के मन अभी चिन्तायुक्कत पूर्वाभास से उत्पीड़ित थे, उन्हें एक अद्‌भुत समाचार मिला। यरदन के किनारे उस स्थान के पास जहां से इज़राईली चमत्कारी रूप से पार हुए थे, उन ढाई गोत्रों ने एक महान वेदी को खड़ा किया था, जो शीलो की मेलबलि की वेदी के समान थी। उस धर्म स्थान पर अन्य आराधना का संस्थापन, परमेश्वर के नियमानुसार, प्रतिबन्धित था, और मृत्युदण्ड के योग्य था। यदि इस वेदी का ऐसा लक्ष्य था, तो इसे बने रहने देने की अनुमति देने से, लोगसच्चे विश्वास से दूर हो जाते। PPHin 531.1

प्रजा के प्रतिनिधि शीलो में एकत्रित हुए, ओर कोध और उत्साह के आवेग में उन्होंने अपराधियों पर चढ़ाई करने का प्रस्ताव रखा। लेकिन, अधिक सावधानी से चलने वालों के कहने पर, यह निर्णय लिया गया कि युद्ध से पहले उन ढाई गोत्रों के पास उनसे उनके आचरण का स्पष्टीकरण प्राप्त करने के लिये एक प्रतिनिधि मंडल को भेजा जाए। प्रत्येक गोत्र में से एक-एक यानि प्रधानों को चुना गया। पिनीहास, जिसमें पोर के विषय में अपनी लगन से स्वयं को विशिष्ट प्रमाणित किया था, उनका मुखिया बना। PPHin 531.2

इतने गम्भीर सन्देहास्पद कृत्य को, बिना स्पष्टीकरण दिए, करने में ढाई गोत्रों ने गलती की थी। प्रतिनिधियों ने यह मानते हुए कि उनके भाई दोषी थे, उनकी कड़ी निंदा की। उन्होंने उन पर परमेश्वर के प्रति विरोध करने का आरोप लगाया और उन्हें स्मरण करने को कहा कि किस तरह बालपोर के साथ जुड़ जाने पर, इज़राइल पर दण्डाज्ञा भेजी गई थी। पिनीहास ने गादियों और रूबेनियों से कहा कि यदि वे उस देश में बलिदान की वेदी के बिना वास करने को तैयार नहीं होंगे, तो ही वे यरदन पार अपने भाईयों के विशेषाधिकारों और निज-भाग में भागीदार हो सकेंगे। PPHin 531.3

उत्तर देते हुए आरोपितों ने स्पष्टीकरण दिया कि वेदी बलिदान के उद्देश्य से नहीं, वरन्‌ केवल एक साक्ष्य के रूप में स्थापित की गई थी, और यद्यपि वे नदी के द्वारा अलग हो गए थे, लेकिन

उनका विश्वास वही था जो कनान में उनके भाईयों का था। उन्हें भय था कि आने वाले समय में उनके बच्चों को मिलाप वाले तम्बू से बाहर रखा जाएगा, मानों इज़राइल में उनका कोई भाग न हो। उस समय यह वेदी, जो शीलो में परमेश्वरकी वेदी के स्वरूप में खड़ी की गई थी, इस बात की साक्षी होगी कि इसके निर्माता भी जीवित परमेश्वर के आराध्य थे। PPHin 531.4

अत्यन्त प्रसन्नता के साथ प्रतिनिधियों ने इस स्पष्टीकरण को ग्रहण किया, और यह समाचार लेकर वे तुरन्त उनके पास लौटे, जिन्होंने उन्हे भेजा था। युद्ध करने के सभी विचारों को त्याग दिया गया और प्रजा ने मिलकर आनन्द मनाया और परमेश्वर की स्तूति की। PPHin 532.1

गादियों और रूबेनियों ने अब वेदी पर एक शिलालेख रखा जो उसके निर्माण के उद्देश्य की ओर संकेत करता था और उन्होंने कहा, "यह हमारे बीच साक्षी है कि परमेश्वर ही यहोवा है।" इस प्रकार उन्होंने प्रयत्न किय कि भविष्य में कोई मिथ्या-बोध न हो और प्रत्याशित प्रलोभन का कारण दू हो जाए। PPHin 532.2

कितनी बार, उनमें भी जो नेक इरादों से प्रेरित होते है, छोटी सी गलतफहमी के कारण गम्भीर कठिनाईयाँ उत्पन्न हो जाती है, और कृतज्ञता और सहनशीलता के अभाव के परिणाम कितने गम्भीर और घातक हो सकते है। दसों गोत्रो ने स्मरण किया कि किस प्रकार, आकान के मामले में, परमेश्वर ने उनके बीच विद्यमान पापों को खोज निकालने में सकता के अभाव की निंदा की थी। अब उन्होंने तत्परता और गम्भीरता से कार्य करने का दृढ़ संकल्प किया, लेकिन पहली गलती को दूर करने के लिये दूसरी ओर वे ज्यादती कर बैठे। इस विषय में तथ्यों को जानने के लिये शिष्टापूर्वक जाँच-पड़ताल करने के बजाय, उन्होंने अपने भाईयों की निंदा की और दोष लगाया। यदि गादियों और रूबेनियों ने उसी भावना से प्रत्युत्तर दिया होता तो उसका परिणाम युद्ध भी हो सकता था। एक ओर तो पाप के सम्बन्ध मेंढीलेपन को दूर रखना है, पर दूसरी ओर निराधार सन्देह और कठोर दण्डाज्ञा से किनारा करना भी उतना ही आवश्यक है। PPHin 532.3

कई लोग अपने व्यवहार के संदर्भ में थोड़े सी उलाहना के प्रति अति संवेदनशील होते है, लेकिन उनके साथ, जिन्हें वे गलत समझते है, उनका व्यवहार बहुत कठोर होता है। दोषारोपण और निन्दा से कभी भी किसीको अनुचित स्थिति से सुमार्ग पर नहीं लाया गया, इसके विपरीत इस प्रकार कई सही मार्ग से दूर हो जाते है और दोषसिद्ध के प्रति उनके हृदय कठोर हो जाते है। दया की भावना और एक विनम्र, सहिष्णु आचरण पापी को बचा सकता है। PPHin 532.4

रूबेनियों और उनके साथियों द्वारा दर्शायी गईं बुद्धिमत्ता अनुसरण करने योग्य है। निष्ठापूर्वक सच्चे धर्म के मनोरथ को बढ़ावा देने के प्रयत्न में उन्हें गलत समझा गया और उनकी बड़ी निन्दा की गई, लेकिन उन्होंने कोई प्रतिरोध प्रकट नहीं किया। अपने बचाव का प्रयत्न करने से पहले उन्होंने विनम्रता और धेर्य के साथ अपने भाईयों द्वारा लगाए आरोपों को सुना, और फिर अपने उद्देश्य को

विस्तारपूर्वक समझाया और अपनी दोषहीनता प्रकट की। इस प्रकार जो कठिनाई गम्भीर परिणाम की चुनौती दे रही थी वह मैत्रीपूर्ण ढंग से शान्त हो गई। PPHin 533.1

गलत आरोप लगाए जाने पर भी, जो सही होते है वे शान्त और विचारशील रह सकते है। परमेश्वर उस सब से परिचित होता है जो मनुष्य द्वारा गलत समझजाता है या गलत रूप में बताया जाता है और हम इसे परमेश्वर के हाथ में छोड़ सकते है। जैसे उसने आकान के पाप को ढूँढ निकाला, इसी प्रकार जो अपना विश्वास उसमें रखते हैं, उनके ध्येय का वह समर्थन करता है। जो मसीह के आत्मा से प्रेरित होते है, वे उस प्रेम के धनी होती है, जो चिरसहिष्णु और दयावान होता है। PPHin 533.2

यह परमेश्वर की इच्छा है कि उसके लोगों के बीच में भाई समान प्रेम और एकता बनी रहे। क्रूस पर चढ़ाए जाने से पूर्व, मसीह की प्रार्थना थी कि उसके अनुयायी एक हो, जैसा वह अपने पिता के साथ एक है, ताकि जगत यह विश्वास कर सके कि परमेश्वर ने उसे भेजा है। यह सबसे अधिक मर्मभेदी और अत्युत्तम प्रार्थना प्रत्येक युग में पहुँची, क्योंकि उसने कहा, "मैं केवल इन्ही के लिये विनती नहीं करता, परन्तु उनके लिये भी जो इनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे।" यहुन्ना 17:20 । हमें सत्य के एक भी सिद्धान्त का त्याग नहीं करना है, वरन् हमारा लक्ष्य यह होना चाहिये कि हम एकता की इस स्थिति पर पहुँचे। यही हमारे अनुयायी होने का प्रमाण है। यीशु ने कहा, "यदि आपस में प्रेम रखोगे, तो इस से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो ।"-यहुन्ना 13:35 । प्रेरित पतरस कलीसिया को प्रबोधित करता है, "अतः सब के सब एकमन और कृपामय और भाईचारे की प्रति रखने वाले, और करूणामय और नम्र बनो, बुराई के बदले बुराई मत करो और न गाली के बदले गाली दो, पर इसके विपरीत आशीष ही दो, क्योंकि तुम आशीष के वारिस होने के लिये बुलाए गए हो।" - 1 पतरस 3:8,9 । PPHin 533.3

अध्याय 49—यहोशू का अन्तिम संदेश

यह अध्याय यहोशू 23 और 24 पर आधारित है

युद्ध के समाप्त होने पर, यहोशू तिम्नत्सेहर में अपने घर के शान्तिपूर्ण एकान्त स्थान में चला गया था। ““इसक बहुत दिनों के बाद, जब यहोवा ने इज़राईलियों को उनके चारों और के शत्रुओं से विश्राम दिया, तब यहोशू ने सब इज़राईलियों को, अर्थात पुरनियों, मुख्य पुरूषों, न््यायियों और सरदारों को बुलवाया।” PPHin 534.1

प्रजा को अपने-अपने निज भाग में बसे हुए कुछ ही बर्ष बीते थे, और वही बुराईयों उत्पन्न होने लगी थी जिनके कारण इज़राइल को दबण्डाज्ञा मिली थी। जैसे-जैसे यहोशू को आयु सम्बन्धित दुर्बलता महसूस होने लगी, और उसे लगा कि उसका कार्य काल सामप्त होने को था, वह अपनी प्रजा के लोगों के भविष्य को लेकर चिन्ता से भर गया। जब वे अपने वृद्ध मुखिया के चारों ओर इकट्ठे हुए, तो उसने एक पिता से अधिक रूचि के साथ उन्हें सम्बोधित किया, “तुम ने देखा है कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हारे निमित्त इन सब जातियों के लिये क्या क्या किया, क्योंकि जो तुम्हारी ओर से लड़ता आया है वह तुम्हारा परमेश्वर यहोवा है।’ PPHin 534.2

हालाँकि कनानियों को अधीकृत कर लिया गया था, लेकिन अभी भी इज़राइल को प्रतिश्रुत देश का काफी बड़ा भाग उनके अधिकार में था, और यहोशू ने अपने लोगों से आग्रह किया कि वे आराम से न बैठ जाएँ और ना ही उन मूर्तिपूजक जातियों को पूरी तरह अनाधिकृत करने के परमेश्वर के आदेश को भूले। PPHin 534.3

सामान्य रूप से प्रजा मूर्तिपूजकों को बाहर करने के कार्य को समाप्त करने में ढीले थे। गोत्र अपने-अपने निज भागों में तितर-बितर हो गए थे, सेना भंग हो गई थी, और युद्ध दोबारा छेड़े जाना एक कठिन और सन्देहजनक कार्य प्रतीत हो रहा था। लेकिन यहोशू ने घोषणा की, “तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उनको तुम्हारी सामने से उनको देश से निकाल देगा, और तुमअपने परमेश्वर यहोवा के वचन के अनुसार उनके देश के अधिकारी हो जाओगे। इसलिये हियाव बांधकर, जो कुछ मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखा है, उसको पूरा करने में चौकसी करना, उससे न तो दाहिने मुड़ना और न बाएं।’ PPHin 534.4

यहोशू ने लोगों को ही साक्षी मान अनुरोध किया कि जब तक वे नियमों से सहमत थे, परमेश्वर ने उनसे की हुईप्रतिज्ञाओं को पूरा किया। “तुम सब अपने-अपने हृदय और मन में जानते हो, कि जितनी भलाई की बातें हमारे पमरेश्वर यहोवा ने हमारे विषय में कहीं उनमे से एक भी बिना पूरी हुए नहीं रही ।” उसने घोषणा की कि “जैसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की कही हुईं भलाई की सब बातें तुम पर घटी है, वैसे हीयहोवा विपत्ति की सब बातें भी तुम पर लाएगा.........जब तुम उस वाचा का

उल्लंघन करोगे, तब यहोवा का कोप तुम पर भड़केगा, और तुम इस अच्छे देश में से जिसे उसने तुम को दिया है, शीघ्र नष्ट हो जाओंगे। PPHin 535.1

शैतान इस संभावित मत से बहुतों को बहकाता है कि लोगों के लिये परमेश्वर का प्रेम इतना महान है कि परमेश्वर के वचन में दी गई चेतावनियाँ उसके नैतिक शासन में एक विशेष उद्देश्य के लिये है, लेकिन वे यथाशब्द कभी पूरी नहीं होगी। लेकिन परमेश्वर ने मनुष्य के अपने सभी कार्यों में सिद्धान्तों को कामय रखा है, और उदाहरण सहित यह समझाया है कि उसके परिणामस्वरूप कष्ट और मृत्यु निश्चित है। पाप की अप्रतिबंधित क्षमा न कभी हुई है और ना कभी होगी। इस प्रकार की क्षमा धार्मिकता के सिद्धान्तों का परित्याग प्रकट करेगी, वे सिद्धान्त जो परमेश्वर की सत्ता का आधार हैं। यह अपतित ग्रहों को आश्चर्यचकित कर देगी । परमेश्वर ने सच्चाई से पाप के परिणामों की ओर संकेत किया है, और यदि ये चेतावनियाँ सत्य नहीं थी, तो उसकी प्रतिज्ञाओं के पूरे होने के बारे में हम कैसे निश्चित होते, वह तथाकथित उदारता जो न्याय को परे रख देती है वह उदारता नहीं दुर्बलता है। PPHin 535.2

परमेश्वर जीवनदाता है। प्रारम्भ से ही उसके सारे नियम जीवन के लिये नियुक्त थे। लेकिन परमेश्वर द्वारा स्थापित कम को पाप ने भंग कर दिया, और परिणाम था असामन्जस्य। जब तक पाप विद्यमान रहेगा, दुख औरपाप निश्चित है। केवल इसलिये कि उद्धारकर्ता ने हमारे लिये पाप के श्राप का वहन किया, मनुष्य पाप के परिणाम से छुटकारे की आशा कर सकता है। PPHin 535.3

यहोशू की मृत्यु से पहले, उसकी आज्ञा का पालन कर, गोत्रों के प्रतिनिधि और प्रधान फिर से शेकेम में एकत्रित हुए। पूरे देश में कोई भी स्थान ऐसा नहीं था जहाँ इतने सारे पवित्र संसर्ग थे, जो उन्हें अब्राहम और याकूब के साथ बाँधी वाचा का स्मरण कराते थे और कनान में उनके प्रवेश के समय ली गई उनकी शपथ की भी याद दिलाते थे। ऐबाल और गिरिज्जिम पर्वत उन शपथों के मूक साक्षी थे, जिन्हें दोहराने के लिये वे अपने मरते हुए अगुवे की उपस्थिति में इकट्ठे हुए थे। चारों ओर प्रमाण थे उन कार्यों के जो परमेश्वर ने उनके लिये किये थे, किस तरह उसने उन्हें वह देश जिसके लिये उन्होंने श्रम नहीं किया, वे नगर जिनका निर्माण उन्हों नहीं किया, दाख की बारियाँ जिनको उन्होंने नहीं रोपा दिये थे। यहोशू ने एक बार फिर परमेश्वर के आश्चर्यजनक कार्यों का वर्णन करते हुए इज़राइल के इतिहास को दोहराया, जिससे कि सबको उसकी दया और उसके प्रेम का आभास हो और वे “आत्मा और सच्चाई से” उसकी आराधना करे। PPHin 535.4

यहोशू के निदंश द्वारा सन्दूक शीलो से लाया जा चुका था। यह एक विधिवत समारोह था, और परमेश्वर की उपस्थिति का यह प्रतीक उन पर उस प्रभाव को गहरा कर सकताथाजिसे वह करना चाहता था। परमेश्वर की भलाई को इज़राइल पर प्रकट करने के पश्चात, उसने यहोवा के नाम में उन्हें चयन करने को कहा कि वे किसकी उपासना करेंगे। मूर्तियों की पूजाअभी भी गुप्त रूप से किसी हद तककी जाती थी और यहोशू ने उन्हें निर्णय पर पहुँचाने का प्रयत्न किया, जिससे वे

इज़राइल के इस पाप को निर्वासित कर दे। उसने उनसे कहा, “यदि यहोवा की सेवा करना तुम्हें बुरा लगे, तो आज चुन लो कि तुम किस की सेवा करोगे।” यहोशू चाहता था कि वे परमेश्वर की सेवा, दबाव में आकर नहीं, वरन् स्वेच्छा से करें। परमेश्वर के लिये प्रेम धर्म का आधार है। प्रतिफल की उपेक्षा में या दण्ड के भय से उसकी सेवा में व्यस्त होने से कोई लाभ नहीं। निरी औचारिक आराधना और पाखंड परमेश्वर के लिये उतना ही दुखदायी है जितना कि प्रत्यक्ष अधर्मी। PPHin 536.1

वृद्ध अगुवे ने लोगों से आग्रह किया कि जो भी उसने उनके सम्मुख प्रस्तुत किया था, उससे संबंधित सब बातों पर सोच-विचार कर निष्कर्ष पर पहुँचे कि क्या वे वास्तव में अपने चारों ओर के पतित मूर्तिपूजक जातियों की तरह अपना जीवन व्यतीत करना चाहते थे। यदि उन्हीं आशीष के सोते, शक्ति के स्रोत, यहोवा की सेवा करना बुरा लगता था, तो वे उसी दिन चुनाव करे कि वे किसी सेवा करेंगे-- “उन देवताओं की जिनकी सेवा उनके पुरखा करते थे” जिनमें से अब्राहम को बुलाया गया था, “या एमोरियों के देवताओं की, जिनके देश में वे रहते थे।” ये अन्तिम शब्द इज़राइल के लिये कड़ी निन्दा थे। ऐमोरियों के देवता अपने उपासकों की रक्षा नही कर पाए थे। उनके छृणास्पद और भ्रष्ट करने वाले पापों के कारण, इस दुष्ट राज्य को नष्ट कर दिया गया था और उनका अधिकृत समृद्ध प्रदेश परमेश्वर के लोगों को देदिया गया था। यह इज़राइलियों की कैसी मूर्खता थी कि उन्होंने उन देवी-देवताओं को चुना जिनके जिनके लिये एमोरियों को नष्ट कर दिया गया था। “मैं ओर मेरा घराना तो यहोवा की सेवा करेगा”, यहोशू ने कहा। जो पवित्र उत्साह अगुवे के हृदय को प्रेरणा देता था, उसी उत्साह का प्रजा में संचार हुआ। उसके निवेदन का उन्होंने बिना हिचकिचाहट के उत्तर दिया, “यहोवा को त्याग कर, दूसरे देवताओं की सेवा करने से परमेश्वर हमें दूर रखे।” PPHin 536.2

यहोशू ने कहा, “तुम यहोवा की सेवा नहीं कर सकते, क्योंकि वह पवित्र परमेश्वर है, वह तुम्हारे अपराध और पाप क्षमा नहीं करेगा।” स्थायी दोषनिवृत्ति होने से पूर्व लोगों को परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी होने की अपनी असमर्थता का आभास करवाना आवश्यक है। उन्होंने उसकी व्यवस्था को भंग किया था, वह उन्हें आज्ञा का उल्लंघन करने का दोषी ठहराती थी, और वह बचने का कोई उपाय नहीं प्रदान करती थी। जब तक उन्हें अपने निजी समार्थ्य और धार्मिकता में विश्वास था, उनके लिये क्षमा दान प्राप्त करना असम्भव था; वे परमेश्वर की पवित्र व्यवस्था की अपेक्षाओं को पूरा नहीं कर सकते थे, और उनका परमेश्वर की सेवा करने की शपथ लेना ब्यर्थ था। उन्हें उद्धार के लिये अपने निजी प्रयत्नों पर निर्भर करना छोड़ना होगा और परमेश्वर द्वारा स्वीकृत होने के लिये पूर्णतया प्रतिश्रुत उद्धारकर्ता की योग्यता में पूरी तरह विश्वास करना होगा। PPHin 537.1

यहोशू ने प्रयत्न किया कि उसके श्रोता उसके शब्दों पर गौर करें और ऐसी शथप लेने से पीछे रहे जिन्हें पूरी करने के लिये वे तैयार नहीं थे। उन्होंने गम्भीरतापूर्वक अपने कथन को दोहराया, “नहीं, हम यहोवा की ही सेवा करेंगे।” आप ही अपनी साक्षी होकर कि उन्होंने यहोवा को चुना था,

उन्होंने एक बार फिर स्वामिभक्ति की शपथ खाई, "हम तो अपने परमेश्वर यहोवा ही की सेवा करेंगे, और उसी की बात मानेंगे।" PPHin 537.2

"तब यहोशू ने उसी दिन उसी दिन उन लोगों के साथ वाचा बाँधी, और शकम में उनक लिये विधि और नियम ठहराए ।" इस विधिवत कार्यवाही के वृतान्त को लिखकर, उसने इसे "व्यवसाय की पुस्तक' के साथ, सन्दूक में एक किनारे रख दिया। और स्मारक के प्रतीक के रूप में एक पत्थर की शिला को खड़ा किया, और कहा कि "यह पत्थर हम लोगों का साक्षी रहेगा, क्योंकि जितने वचन यहोवा ने हमसे कहे हैं, उन्हें इसने सुना है, इसलिये यह तुम्हारा साक्षी रहेगा, ऐसा न हो कि तुम अपने परमेश्वर से मुकर जाओ।" तब यहोशू ने लोगों को अपने निज भाग पर जाने के लिये विदा किया। PPHin 537.3

इज़राइल के लिये यहोशू का कार्य समाप्त हुआ। उसने "सम्पूर्णता से प्रभु का अनुसरण किया था" और परमेश्वर की पुस्तक में उसे, "यहोवा का दास" कहकर लिखा गया है। प्रजा के अगुवे के रूप में उसके चरित्र का श्रेष्ठतम साक्ष्य है, उन पीढ़ियों का इतिहास, जिन्होंने उसके श्रम का आनन्द लिया, 'यहोशू के जीवन भर, और जो वृद्ध लोग यहोशू के मरने के बाद जीवित रहे, उनके भी जीवन भर इजराइली यहोवा ही की सेवा करते रहे।" PPHin 538.1

अध्याय 50—दश्वांश और दान

इब्री अर्थव्यवस्था मे लोगों की आय का दसवाँ भाग परमेश्वर की आराधना के लिये अलग किया जाता था। मूसा ने इज़राइल के लिए धोषणा की "फिर भूमि का उपज का दश्वाश ,चाहे वह भूमि का बीज हो, चाहे वृक्ष का फल: वह यहोवा का ही है वह यहोवा के लिए पवित्र ठहरे।" और "गाय बैल और भेड़-बकरियों का दश्वांश अर्थात दस दस के पीछे एक एक पशु यहोवा के लिए पवित्र ठहरे।" लैवव्यवस्था 27:30,32। PPHin 539.1

लेकिन दश्वांश की प्रणाली इब्रियों के साथ प्रारम्भ नहीं हुईं। प्राचीनतम समय से परमेश्वर ने दश्वाश को स्वयं के लिये ठहराया और उसकी माँग को मान्यता और सम्मान दिया गया। अब्राहम ने सर्वोच्च परमेश्वर के याजक मलिकिसिदक को दश्वांश दिया-उत्पत्ति 14:20। बेथेल मे एक पलायक और निर्वासित याकूब ने परमेश्वर से प्रतिज्ञा की, "जो कुछ तू मुझे दे, उसका दश्वांश मैं अवश्य ही तुझे दिया करूँगा।"-उत्पत्ति 28:22। जब इज़राईलियों को एक राष्ट्र के रूप में स्थापित किया जाना था, दश्वाश देने की विधि को, ईश्वर द्वारा अभिषिक्त नियम के रूप में दोहराया गया, जिसका पालन करने पर उनकी समृद्धि निर्भर करती थी। PPHin 539.2

दश्वांश और दान की प्रणाली का उद्देश्य मनुष्य के मनों को एक सत्य से प्रभावित करना था, कि परमेश्वर उसके सृजन किये गए हुओं को प्राप्त प्रत्येक आशीष का स्रोत हे, और उसकी उदारता के उत्तम उपहारों के लिये उसके प्रति मनुष्य की कृतज्ञता देय है। PPHin 539.3

"वह सब को जीवन और खास और सब कुछ देता है।"-प्रेरितों के काम 17:25 । भजन संहिता में लिखा है, "वन के सारे जीव-जन्तु और हजारों पहाड़ो के पशु मेरे है। हग्गै 2:8में लिखा है, "चाँदी तो मेरी है, और सोना भी मेरा ही है ।"व्यवस्थाविवरण 8:18में लिखा है, "वही है जो तुझे सम्पत्ति प्राप्त करने की सामर्थ्य देता है।" परमेश्वर ने निर्देश दिया कि इस बात की अभिस्वीकृति के लिये कि सब कुछ उसी से आता है, उसकी बहुतायत का कुछ भाग भेंट और दान के रूप में उसे लौटाया जाए ताकि उसकी आराधना को कायम रखा जा सके। PPHin 539.4

"दश्वांश.........परमेश्वर का है।" यहां अभिव्यक्ति का वही तरीका प्रयोग किया गया है जो विश्राम दिन के नियम के लिये किया गया था। निर्गमन 20:10 में लिखा है, "सातवाँ दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये विश्राम दिन है।' परमेश्वर ने मनुष्य के समय और उसके साधनों का एक निर्दिष्ट भाग अपने लिये आरक्षित किया, और कोई भी मनुष्य बिना अपराध के, अपने लाभ के लिये दोनों में से किसी को भी उपयोग नही कर सकता है। PPHin 540.1

दश्वांश को केवल लैवियों के द्वारा प्रयोग में लाने को समर्पित होना था, लेवी वह गोत्र था जिसे मिलापवाले तम्बू की सेवा-टहल के लिये अलग किया गया था। लेकिन यह किसी भी तरह धार्मिक

प्रयोजनों के लिये योगदान की सीमा नहीं थी। मिलापवाले तम्बू का, और तत्पश्चातमन्दिर, का पूरी तरह स्वैच्छिक दान से निर्माण किया गया; और आवश्यक मरम्मत और अन्य खर्चा के लिये साधन जुटाने के लिये मूसा ने निर्देश दिया, कि जितनी बार लोगों की गिनती की जाए, प्रत्येक मनुष्यपवित्रस्थान की विधिके लिये आधे शेकेलका योगदानदे । नहेम्याह के समय में इस कार्य के लिये वर्ष में एक बार योगदान किया जाता था। निर्गमन 3:12-16, 2 राजा 12:4,5, योगदान 24:4-13, नहेम्याह 10:132-33 देखे ।/समय-समय पर परमेश्वर के लिये पाप बलि और धन्यवाद की भेंट लाते थे।यह वार्षिक उत्सवों के समय भारी संख्या में चढ़ाई जाती थी। और दरिद्रों के लिये सबसे उदार प्रावधान रखा जाता था। दश्वांश के आरक्षित किये जाने से पहले भी परमेश्वर के अधिकारों को स्वीकार किया जाता था। भूमि की प्रत्येक उपज का पहला फल उसके लिये पवित्र ठहराया जाता था। भेड़ के कतरे जाने पर प्राप्त पहला ऊन, गेहूँ के गाहने के समय का पहला गेहूँ तेल और मदिरा का पहला भाग, परमेश्वर के लिये अलग किया जाता था, इसी प्रकार सभी पशुओं के पहलौठों को अलग किया जाता था, और पहलौठे पुत्र के लिये उद्धार का मूल्य चुकाया जाता था। पहले फल को पवित्र स्थान पर प्रभु के सम्मुख चढ़ाया जाता था, और फिर याजमकों के प्रयोग के लिये समर्पित कर दिया जाता था। PPHin 540.2

इस प्रकार प्रजा को लगातार स्मरण कराया जाता था कि परमेश्वर उनके खेतों, भेड़-बकरियों और मवेशियों का वास्तविक स्वामी था, वही बीज बोने और कटाई के समय धूप और वर्षा भेजता था, और उनके पास जो कुछ भी था उसी की सृष्टि का था, और उसने उन्हें अपने द्वारा सृजित वस्तुओं का भण्डारी बनाया था। PPHin 540.3

जब इजराइली पुरूष, खेतों, फलोद्यानों और अंगूरों के बाग के पहले फलों से लदे हुए, पवित्र स्थान पर एकत्रित हुए परमेश्वर की अच्छाई की सार्वजनिक स्वीकृति दी गई। जब याजक ने भेंट स्वीकार की, भेंटकर्तानेे ,मानो यहोवा की उपस्थिति में बोल रहा हो, कहा, “मेरा मूलपुरूष एक आरामी मनुष्य था जो मरने पर था” और उसने इज़राइल का मिस्र में पड़ाव का और उस कष्ट का वर्णन किया जिसे परमेश्वर ने “बढ़ाई हुई भुजा से अति भयानक चिन्ह और चमत्कार दिखा कर” निवारण किया। और उसने कहा, “हमें इस स्थान पर पहुँचाकर यह देश जिस में दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं हमे दे दिया है। अब हे यहोवा, देख, जो भूमि तू ने मुझे दी है उसकी पहली उपज मैं तेरे पास ले आया हूँ। व्यवस्थाविवरण 26:5, 8-11। PPHin 541.1

धार्मिक और परोपकारी प्रयोजन के लिये इब्रियों से उनकी आय के एक चौथाई भाग के योगदान की अपेक्षा की जाती थी। ऐसा प्रतीत हो सकता है कि मनुष्य के संसाधनों पर अधिक कर उन्हें दरिद्रता में पहुँचा देंगे, लेकिन इसके विपरीत, इन अधिनियमों का निष्ठापूर्ण अनुपालन उनकी समृद्धि की एक शर्त थी। उनकी आज्ञाकारिता की शर्त पर परमेश्वर ने उनसे प्रतिज्ञा की,'में तुम्हारे लिये नाश करने वाले को ऐसे घुड़कूंगा कि वह तुम्हारी भूमि की उपज नष्ट न करेगा; और तुम्हारी

दाखलताओं के फल कच्चे न गिरेंगे, अन्य जातियों केलोगतुम्हे धन्य कहेंगेःक्योंकितुम्हारादेश मनोहर देश होगा,सेनाओं के यहोवा का यही वचन है [--मलाकी 3:11। PPHin 541.2

परमेश्वर के कार्य के लिये उपयोग होने वाली स्वैच्छिक भेंट को स्वार्थी होकर दबा कर रखने के परिणामों का प्रभावशाली उदाहरण हाग्गे भविष्यद्वक्ता केदिनों में दिया गया। बाबुल के दासत्व से लौटने के पश्चात यहूदियों ने परमेश्वर के मन्दिर के पुनर्निर्माण का दायित्व लिया, लेकिन शत्रुओं के कड़े विरोध के कारण उन्होंने इस कार्य को बन्द कर दिया, और एक भयंकर सूखे ने उन्हें वास्तविक दरिद्रता की स्थिति में पहुँचा दिया, जिससे उन्हें विश्वास हो गया कि मन्दिर के भवन को पूरा करना असम्भव था। उन्होंने कहा, "यहोवा का भवन बनाने का भवन बनाने का समय नहीं आया है।" लेकिन परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता द्वारा उन्हें सन्देश भेजा गया, "क्या तुम्हारे लिये अपने छतवाले घरों में रहने का समय है, जबकि यह भवन उजाड़ पड़ा है? इसलिये अब सेनाओं का यहोवा यों कहता है, अपने चाल-चलन पर ध्यान दो। तुमने बोया बहुत, परन्तु थोड़ा काटा; तुम खाते हो, परन्तु तुम्हारा पेट नहीं भरता; तुम पीते हो, परन्तु तुम्हारी प्यास नहीं बुझती; मजदूरी कमाता है, वह अपनी मजदूरी की कमाई को छेदवाली थैली में रखता है।" हग्गै 1:2-6। और फिर कारण दिया गया, "तुमने बहुत उपज की आशा रखी, परन्तु देखो थोड़ी ही है, और जब तुम उसे घर ले आए, तब मैंने उसको उड़ा दिया, ऐसा क्यों हुआ? क्या इसलिये नहीं कि मेरा भवन उजाड़ पड़ा है और तुम में से प्रत्येक अपने-अपने घर को दौड़ा चला जाता है? इस कारण आकाश से ओस गिरना और पृथ्वी से अन्न उपजना दोनों बन्द है। मेरी आज्ञा से पृथ्वी और पहाड़ी पर, और अन्न और नए दाखमधु पर और ताजे तेल पर, और जो कुछ भूमि से उपजता है उसपर,और मनुष्यों और घरेलू पशुओं पर, और उनके परिश्रम की सारी कमाई पर भी अकाल पड़ा है।"हग्गै 1:9-11 "जब कोईऔर जब कोई दाखरस के कुण्ड के पास इस आशा से जाता कि पचास बर्तन भर निकाले, तब बीस ही निकलते थे। मैंने तुम्हारी सारी खेती को लू और फफूदी और ओलों से मारा। हग्गै 2:16,17। PPHin 541.3

इन चेतावनियों से जागरूक होकर, लोगों ने परमेश्वर के भवन का निर्माण फिर से आरम्भ किया। और फिर परमेश्वर का आदेश उन तक पहुँचाना,"अब सोच विचार करो, कि आज से पहले अर्थात जिस दिन यहोवा के मन्दिर की नींव डाली गई, उस दिन से नवें महीने के इसी चौबीसवें दिन तक क्या दशा थी....... परन्तु आज के दिन से मैं तुम को आशीष देता रहूंगा ।"-हग्गै 2:18,19। PPHin 542.1

नीतिवचन 11:24 में बुद्धिमान पुरूष कहता है, "ऐसे हैं, जो छितरा देते हैं, तौमभी उनकी बढ़ौतरी होती है, और ऐसे भी हैं जो यथार्थ से कम देते हैं, और इस से उनकी घटी होती है।" यही पाठ नये नियम में प्रेरित पौलुस ने सिखाया, "जो थोड़ा बोता है, वह थोड़ा काटेगा भी, और जो बहुत बोता है, वह बहुत काटेगा ।" परमेश्वर तुम्हे बहुतायत से अनुग्रह दे सकता है, जिससे हर बात में

और हर समय, सब कुछ, जो तुम्हारी लिये आवश्यक हो, तुम्हारे पास रहे, और हर एक भले काम के लिये तुम्हारे पास बहुत कुछ हो ।" - 2 कुरिन्थियों 9:6,8। PPHin 542.2

परमेश्वर चाहता था कि इज़राइल, उसकी प्रजा सभी पृथ्वी वासियों के लिये प्रकाशवाहक बने। उसकी सार्वजनिक आराधना को कायम रखने में वे जीवित परमेश्वर की प्रभुता और अस्तित्व के प्रमाण को प्रकट कर रहे थे। परमेश्वर के प्रति उनके प्रेम और उनकी स्वामिभक्ति की अभिव्यक्ति के तौर पर इस आराधना को कायम रखना उनका विशेषाधिकार था। परमेश्वर ने यह नियत किया है कि पृथ्वी पर प्रकाश और सत्य का प्रचार उन लोगों की भेंट और प्रयत्नों पर निर्भर करे जो स्वर्गीय उपहार के भागीदार है। वह स्वर्गदूतों को उसकी सच्चाई के प्रतिनिधि बना सकता था; वह अपनी इच्छा को ज्ञात करा सकता था, जिसे उसने अपने ही स्वर में, सिने से व्यवस्था को घोषित किया था; लेकिन अपने अनन्त प्रेम और बुद्धिमता में उसने मनुष्य को इस कार्य के लिये चुनकर, उसके साथ सहकरमी होने के लिये बुलाया। PPHin 542.3

इज़राइल के दिनों में धर्म-किया की विधियों को कायम रखने के लिये स्वैच्छिक भेंट और दश्वांश की आवश्यकता होती थी। क्या इस युग में लोगों को कम देना चाहिये? जो सिद्धान्त मसीह ने दिया है, वह यह है कि हमारी भेंट हमे प्राप्त प्रकाश ओर विशेषाधिकारों के अनुपात में होना चाहिये। लूका 12:48में लिखा है, "जिसे बहुत दिया गया है, उससे बहुत माँगा जाएगा।" अपने अनुयायियों को भेजते हुए, उद्धारकर्ता ने कहा, "तुमने बिना कुछ दिए पाया है, इसलिये बिना कुछ लिये मुक्त भाव से बाँटो।"-मत्ती 10:8। जैसे हमारी आशीषों और विशेषाधिकारों में वृद्धि होती है- इन सबसे श्रेष्ठहमारे सम्मुख परमेश्वर के तेजस्वी पुत्र का अतुल्य बलिदान है- क्या हमें उद्धार के सन्देश की दूसरों तक पहुँचाने के लिये और अधिक भरपूर उपहारों द्वारा अभिव्यक्त नहीं करना चाहिये? जब सुसमाचार प्रचार का काम फैलता है तो उसे जारी रखने के लिये पहले से अधिक प्रयोजनों की आवश्यकता पड़ती है। इस कारण इब्री अर्थव्यवस्था के समय की तुलना में दश्वांश और भेंट के नियम को और भी आग्रहपूर्ण आवश्यकता बना देते हैं। यदि अपने खजानों को मसीह विरोधी और अपवित्र तरीके अपनाकर भरने के बजाय, उसके लोग अपनी स्वैच्छिक भेंटो से परमेश्वर के कार्य को कायम रखें तो परमेश्वर सम्मानित होगा और मसीह के लिये कई आत्माओं को जीता जा सकेगा। PPHin 543.1

पवित्र स्थान के निर्माण के लिये साधन जुटाने की मूसा की योजना बहुत सफल रही। आग्रह की आवश्यकता नहीं पड़ी। ना ही उसने वह तरीके अपनाए जो वर्तमान में कलीसियाएँ प्रायः अपनाती हैं। उसने कोई महापर्व नहीं मनाया। उसने लोगों को लोकप्रिय मनोरंजन, नृत्य, या रंगरलियों के दृश्यों के लिये आमन्त्रित नहीं किया, ना ही परमेश्वर के पवित्र स्थान के निर्माण हेतु साधन जुटाने के लिये लोटरी या इस श्रेणी के भ्रष्ट साधन को जारी किया। परमेश्वर ने मूसा को निर्देश दिया कि वह इज़राईलियों को अपनी भेंट लाने को आमन्त्रित करे। उसे उन सभी की भेंट स्वीकार

करनी थी, जो हार्दिकता व स्वेच्छा से दे। और भेंटे इतनी बहुतायत से आईं कि मूसा ने लोगों को और लाने से मना किया, क्योंकि उनके द्वारा आवश्यकता से अधिक प्रदान कर दिया गया था। PPHin 543.2

परमेश्वर ने मनुष्य को उसके भण्डारी बनाया है। जो सम्पत्ति उसने उनके हाथों में दी है, यह वो साधन है जो उसने सुसमाचार फैलाने के लिये मुहैया कराया है। जो स्वयं को निष्ठावान भण्डारी प्रमाणित करते है, परमेश्वर उन्हें अधिक महत्वपूर्ण दायित्व सौंपता है। परमेश्वर कहता है, “जो मेरा आदर करे, मैं उनका आदर करूँगा ।”-1 शमूएल 12:30 ।'परमेश्वर हर्ष से देने वाले से प्रेम रखता है”, और जब उसके लोग उसके लिये “न कृढ़कुढ़ करके और न दबाव से” वरन् आभारपूर्ण हृदयों से अपने भेंट और उपहार लाएँ, तो उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार उसकी आशीष उनपर होगी। मलाकी 3:10 में लिखा है, “सारे दश्वांश भण्डार में ले आओ कि मेरे भवन में भोजनवस्तु रहे, और सेनाओं का यहोवा यह कहता है कि ऐसा करके मुझे परखो कि मैं आकाश के झरोखे तुम्हारे लिये खोलकर तुम्हारे ऊपर अपरम्पार आशीषों की वर्षा करता हूँ कि नहीं ।”-मलाकी 3:10। PPHin 544.1

अध्याय 51—दरिद्रों के लिये परमेश्वर का दायित्व

धार्मिक विधि के लिये लोगों के एकत्रित होने का बढ़ावा देने के लिये, और दरिद्रों की सहायता के लिये अधिक्य के द्वितीय दश्वांश की अपेक्षा की जाती थी। प्रथम दश्वांश के सम्बन्ध में, परमेश्वर ने घोषणा की थी, "मैं उनको इज़राइलियों का सब दश्वांश उनका निज भाग करके देता हूँ""-गिनती 18:21। दूसरी आज्ञा के सन्दर्भ में उसने आदेश दिया, "जिस स्थान को तेरा परमेश्वर यहोवा अपने नाम का निवास ठहराने के लिये चुन ले उसमें अपने अन्न और नए दाखमधु, तेल का दश्वांश और अपने भेड़ बकरियों और गाय-बैलों के पहलौठे अपने परमेश्वर यहोवा के सम्मुख खाया करना, जिससे तुम उसका भय मानना नित्य सीखेगे।" व्यवस्थाविवरण 14:23। उन्हें दो वर्षो तक यह दश्वांश या इसके समतुल्य राशि, पवित्र स्थान के स्थापन के स्थान पर लेकर आना था। परमेश्वर को धन्यवाद की भेंट और याजक को एक निर्दिष्ट भाग देने के पश्चात भेंटकर्ता को अवशेष का उपयोग एक धार्मिक पर्व में करना होता था, जिसमें लेवी, परदेशी, पितृहीन और विधवाओं को भाग लेना था। इस प्रकार वार्षिक त्यौहारों पर भोज और धन्यवाद की भेंट का प्रबन्ध किया जाता था, और लोगों को लैवियों और याजकों की संगति में आने के लिये आकर्षित किया जाता था, जिससे वे परमेश्वर की सेवा के लिये प्रोत्साहन और निर्देश प्राप्त कर सके। PPHin 545.1

तीन-तीन वर्ष के बीतने पर, यह दूसरा दश्वांश अपने घरों में निर्धनों और लेवियों के सत्कार के लिये उपयोग में लाना था, जैसा कि मूसा ने कहा, "वे तेरे फाटकों के भीतर खाकर तृप्त हो"-व्यवस्थाविवरण 26:12। यह दश्वांश धर्मार्थ और अतिथ्य के उपयोग के लिये धन-राशि जुटाता था। PPHin 545.2

निर्धनों के लिये अतिरिक्त प्रावधान किया गया। परमेश्वर के भाग को मान्यता देने के पश्चात, ऐसा कुछ नहीं हैं, जो निर्धनों के प्रति उदार, विनम्र और सत्कारशील भावना रखने के आदेश की तुलना में, मूसा द्वारा दिये गये नियमों को और विशिष्ट ठहराता हो। हालाँकि परमेश्वर ने उसके लोगों को बहुत आशिषित करने की प्रतिज्ञा की है, उसकी यह योजना कभी नहीं थी कि वे निर्धनता से पूर्णतया अपरिचित रहे। उसने घोषणा की कि देश के बाहर निर्धन कभी समाप्त नहीं होंगे। उसके लोगों के मध्य में ऐसे लोग अवश्य होंगे जिनके लिये उनके सहानुभूति, विनम्रता, और उदारता का अभ्यास आवश्यक होगा। वर्तमान समय के जैसे, तब भी लोग अनर्थ, बीमारी और सम्पत्ति की क्षति के पात्र होते थे, लेकिन जब तक वे परमेश्वर के निर्देशों का पालन करते रहते थे, उनके बीच में कोई भिखारी नहीं होता था, और ना ही किसी को खाने की घटी होती थी। PPHin 545.3

परमेश्वर की व्यवस्था निर्धनों को मिट्टी की उपज के एक निश्चित भाग पर अधिकार देती थी। भूख लगने पर कोई भी व्यक्ति स्वतन्त्रता से अपने पड़ोसी के खेत या फलोद्यान में जाकर अन्न या फल खाकर अपनी भूख को तृप्त कर सकता था। इसी अनुमति के तदानुसार यीशु के अनुयायियों

ने अन्न की खड़ी बालियों को उखाड़कर खाया, जब वे सबत के दिन एक खेत में होकर निकल रहे थे। PPHin 546.1

खलिहान, फलोद्यान और दाख की बारी में बटोरे जाने वाला भाग निर्धनों के लिये होता था। मूसा ने कहा, "जब तू अपने खेत की पकी फसल को काटे, और एक पूला खेत में भूल से छूट जाए, तो उसे लेने को फिर न लौटना.......जब तू अपने जैतून के वृक्षों का झाड़े, तब तू डालियों को दूसरी बार नहीं झाड़ना....... जब तू अपनी दाख की बारी के फल तोड़े, तो उसका दाना-दाना न तोड़ लेना, वह परदेसी, अनाथ और विधवा के लिये होगा। और इसको स्मरण रखना कि तू मिस्र देश में दास था।" -व्यवस्थाविवरण 24:19-22, लैवव्यवस्था 19:9,10 । PPHin 546.2

प्रत्येक सातवें वर्ष निर्धनों के लिये विशेष प्रावधान रखा जाता था। विश्रामकालीन वर्ष, जैसा कि इसे कहा जाता था, फसल-कटाई के अन्त से प्रारम्भ होता था। संचयन के पश्चात बीजारोपण के समय, लोगों को बीज बोना मना था, बसन्त ऋतु में दाख की बारियों को छाँटना मना था, और उन्हें फसल या अंगूर की पैदावार की अपेक्षा नहीं रखनी थी। भूमि से स्वाभाविक रूप से उत्पन्न फल को वह ताजा-ताजा खा सकते थे, लेकिन उस उपज का थोड़ा सा भी भाग को भण्डारग्रह में ले जाकर रखना मना था। इस वर्ष की उपज परदेशियों, पितृहीनों, विधवाओं और मैदानों के जीव-जन्तुओं के लिये निःशुल्क होती थी। PPHin 546.3

लेकिन यदि खेत सामान्यतः लोगों की आवश्यकता पूर्ति के लिये ही पर्याप्त उपज उत्पन्न करता, तो वे उन वर्षा में जब कोई उपज इकटठी नहीं की जाती थी, उन्हें किस प्रकार निर्वाह करना था? इस के लिये परमेश्वर की प्रतिज्ञा ने पर्याप्त प्रावधान रखा" मैं तुमको छठवें वर्ष में ऐसी आशीष दूँगा कि भूमि की उपज तीन वर्ष तक काम आएगी। तुम आठवें वर्ष में बोओगे, और पुरानी उपज में से खाते रहोगे, ओर नवें वर्ष की उपज जब तक न मिले, तब तक तुम पुरानी उपज में से खाते रहोगे । - लैवव्यवस्था 25:21,22 । PPHin 546.4

विश्रामकालीन वर्ष का अनुपालन खेत और खेतिहरों यानि किसानो दोनों के लिये लाभदायक था। एक ऋतु के लिये बिना जोती भूमि बाद में बहुतायत से अन्न उत्पन्न करती थी। लोग खेतों के कठोर परिश्रम से मुक्त हो जाते थे, और हालाँकि इस समय के दौरा कार्य के अन्य विभागों में कार्य किया जा सकता था, लेकिन सभी कुछ समय विश्राम करने में व्यतीत करते थे, जिससे आने वाले वर्षो के कठोर परिश्रम के लिये उनकी शारीरिक शक्ति पूर्वावस्था को प्राप्त कर सके । उन्हें प्रार्थना और चिन्तन के लिये, परमेश्वर की सीख और अपेक्षाओं से स्वयं को परिचित कराने के लिये, और अपने घरानों को निर्देश देने के लिये अतिरिक्त समय मिल जाता था। PPHin 547.1

विश्रामकालीन वर्ष में दासों को मुक्त किया जाता था, और उन्हें बिना निज भाग दिये नहीं भेजा जाता था। परमेश्वर का निर्देश था, "जब तू उसको स्वतनत्र करके अपवने पास से जाने दे तब उसे खाली हाथ न जाने देना, वरन् अपनी भेड़-बकरियों और खलिहान और दाखमधु के कुण्ड में से

उसको बहुतायत से देना, तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे जैसी आशीष दी हो, उसी के अनुसार उसे देना।" व्यवस्थाविवरण 15:13,14। PPHin 547.2

श्रमिक का परिश्रमिक यथासमय दिया जाना था, "कोई श्रमिक जो दीन और कंगाल हो, चाहे वह तेरे भाईयों में से हो या देश के फाटकों के भीतर रहने वाले परदेशियों में से हो, उस पर अन्धेर न करना। यह जानकर कि वह दीन है और उसका मन मजदूरी में लगा रहता है, मजदूरी करने के दिनही, सूर्यास्त से पहले, तू उसकी मजदूरी देना।"-व्यवस्थाविवरण 24:14,15। PPHin 547.3

कार्यरत पलायकों से सम्बन्धित व्यवहार के लिये भी विशेष निर्देश दिए गए, "जो दास अपने स्वामी के पास से भागकर तेरी शरण ले उसको उसके स्वामी के हाथ न पकड़ा देना। वह तेरे बीच जो नगर उसे अच्छा लगे उसी में तेरे संग रहने पाए, तू उसका उत्पीड़न न करना।"-व्यवस्थाविवरण 23:15,16। PPHin 547.4

निर्धन के लिये, सातवाँ वर्ष ऋण से मुक्ति का वर्ष होता था। इब्रियों को हर समय आदेश दिया जाता था कि वे अपने भाईयों को बिना ब्याज के धन राशि उधार देकर, सहायता प्रदान करें। निर्धन से अत्यधिक ब्याज दर वसूलना बिल्कुल मना था, "यदि तेरे कोई भाई बन्धु कंगाल ही हो जाए, और उसकी दशा तेरे सामने तरस योग्य हो जाए, तो तू उसको सम्भालना, वह परदेशी या यात्री के समान तेरे संग रहे। उससे तू ब्याज या बढ़ती न लेना, परमेश्वर का भय मानना, जिससे तेरा भाई बन्धु तेरे संग जीवन निर्वाह कर सके। उसको ब्याज पर रूपया न देना, और जो भोजन वह करे, उस पर कोई लाभ लेने का प्रयत्न न करना" लैवव्यवस्था 25:35-37। यदि ऋण मुक्ति के वर्ष तक भी चुकाया ना जा सके, तो मूलधन भी पुनः प्राप्त नहीं किया जा सकता था। लोगों को स्पष्ट चेतावनी दी गई थी कि वे इस कारण से अपने भाई बन्धुओं को आवश्यक सहायता से वंचित न रखे। "यदि तेरे भाईयों में से कोई दरिद्र हो, तो अपने उस दरिद्र भाई के लिये न तो अपना हृदय कठोर करना और न अपनी मुट्ठी कड़ी करना......सचेत रह कि तेर मन में ऐसी बुरा विचार न आए कि सातवाँ वर्ष जो, छुटकारे का वर्ष है, वह निकट है और तू अपने उस भाई पर कृदृष्टि डाले और उसे कुछ न दे, और वह तेरे विरूद्ध यहोवा की दुहाई दे, तो यह तेरे लिये पाप ठहरेगा।" "तेरे देश में दरिद्र तो सदा पाए जाएँगे, इसलिये मैं तुझे यह आज्ञा देता हूँ कि तू अपने देश में अपने दीन दरिद्र भाईयों को अपना हाथ ढीला करके अवश्य दान देना" "जिस वस्तु की घटी उसको हो, उसकी जितनी आवश्यकता हो उतना अवश्य अपना हाथ ढीला करके उसको उधार देना।"-व्यवस्थाविवरण 15:7-9, 11,8। PPHin 547.5

किसी को डरने की आवश्यकता नहीं कि उनकी उदारता उनकी घटी का कारण होगी। परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन निश्चय ही समृद्धि में परिणामित होगा। यहोवा ने कहा, "तू बहुत जातियों को उधार देगा, परन्तु तुझे उधार न लेना पड़ेगा, और तू बहुत जातियों पर प्रभुता करेगा, परन्तु वे तुझ पर प्रभुता न कर पाएंगी।-व्यवस्थाविवरण 15:6। PPHin 548.1

'सात विश्रामवर्षः अर्थात 'सात गुना सात वर्ष पश्चात छुटकारे का महान वर्ष-जुबली आता था। "तब तू जुबली के महाशब्द का नरसिंगा अपने सारे देश में फुंक्कवाना। और उस पचासवें वर्ष को पवित्र मानना और देश के सारे निवासियों के लिये छूटकारे का प्रचार करना, वह वर्ष तुम्हारे यहाँ जुबली कहलाए, उसमें तुम अपनी अपनी निज भूमि और अपने अपने घराने में लौटने पाओगे।" - लैवव्यवस्था 24:9,10। PPHin 548.2

"तब सातवें महीने के दसवें दिन को, अर्थात प्रायश्चित के दिन" जुबली का नरसिंगा फेंका जाता था। पूरे देश में, जहाँ कहीं भी यहूदी लोग रहते थे, मुक्ति वर्ष के स्वागत के लिये याकूब की सन्तानों को पुकारते हुए, यह महाशब्द सुनाई पड़ता था। प्रायश्चित के दिन, इज़राइल के पापों का ऋण चुकाया जाता था और हार्दिक प्रसन्नता के साथ लोग 'जुबली' का स्वागत करते थे। PPHin 549.1

विश्रामकालीन वर्ष के समान, भूमि को न जोता जाना था ना उसकी फसल को काटा जाना और उसकी उपज को निर्धन की आधिकारिक सम्पत्ति माना जाना था। इब्री दासों के उन विशेष वर्गों को जिन्हें विश्रामकालीन वर्ष में स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं हुई थी, उन्हें अब मुक्त कर दिया जाता था। लकिन जो जुबली के वर्ष की विशिष्टता थी वह यह थी कि समस्त अचल सम्पत्ति उसके मूल स्वामी के परिवार को लौटा दी जाती थी। फिर परमेश्वर के विशेष निर्देश द्वारा चिटठी डालकर भूमि का विभाजन किया जाता था। विभाजन के पश्चात किस को भी उसकी भू-संपत्ति का सौदा करने की स्वतन्त्रता नहीं थी। ना ही वह अपनी भूमि को बेच सकता था, जब तक कि निर्धनता उसे विवश न कर दे, और फिर जब भी वह या उसका कोई परिजन उस भूमि को पुनः प्राप्त करना चाहे, तो खरीदने वाले को उसे बेचने से इन्कार नहीं करना था, और यदि इसे खरीदा न जा सके तो वह भूमि जुबली के वर्ष में पुनः उसके प्रथम स्वामी या उसके उत्तराधिकारी की हो जाती थी। PPHin 549.2

परमेश्वर ने इज़राइल को घोषणा की, "भूमि सदा के लिये बेची न जाए, क्योंकि भूमि मेरी है, और उसमें तुम परदेशी और बाहरी होगे"-लैवव्यस्था 25:23 । प्रजा को इस तथ्य से प्रभावित करना था कि वह भूमि परमेश्वर की थी, जिसका स्वामी होने की अनुमति उन्हें कुछ समय के लिये दी गई थी, और यह कि वह उस भूमि का वास्तविक स्वामी था, मूल स्वत्वधारी, और यह कि वह निर्धनों और अभागों का विशेष ध्यान रखवाला है। लोगों के मनों में इस बात को बैठाना था कि परमेश्वर के जगत में दरिद्रों को स्थान का उतनाही अधिकार है जितना के धनवानों का है। PPHin 549.3

हमारे दयावान सृष्टिकर्ता द्वारा, कष्टों को कम करने के लिये, आशा की कोई किरण लाने के लिये, परेशान और निराश्रितों के जीवन में प्रसन्नता का प्रकाश चमकाने के लिये ऐसे प्रावधान रखे गए। PPHin 549.4

प्रभु ने सत्ता और सम्पत्ति से असामान्य प्रेम पर रोक लगाईं। एक वर्ग द्वारा लगातार धन का संचय करने से, और दूसरे वर्ग की निर्धनता और पतन से बहुत सी बुराईयाँ उत्पन्न हो जाती। अंकुश के अभाव में धनवानों की सत्ता एकाधिकार हो जाती, और निर्धन, परमेश्वर की दृष्टि में हर तरह से

योग्य होने पर भी अपने अधिक समृद्ध भाई-बन्धुओं द्वारा तुच्छ माने जाते। इस उत्पीड़न का आभास निर्धन वर्ग के मनोविकारों को उत्तेजित करता। निराशा और बेबसी की भावना व्याप्त होती जो समाज को नीतिमग्रष्ट करने और प्रत्येक प्रकार के अपराधों के लिये द्वार खोल देती। परमेश्वर द्वारा स्थापित नियम सामाजिक समानता को बढ़ावा देने के लिये बनाए गए थे। विश्रामकालीन वर्ष और 'जुबली' के प्रयोजन ने, काफी हद तक, उसे सही किया जो मध्यांतर के दौरान राज्य की सामाजिक व राजनैतिक अर्थव्यवस्था में गलत हो गया था। PPHin 550.1

ये नियम धनवानों व गरीबों दोनो को आशीष देने के लिये बनाए गये थे। वे लालच और स्वयं की प्रशंसा के स्वभाव पर रोक लगाकर, उदारता की नेक भावना को विकसित करते, और सभी वर्गों के बीच विश्वास और सदभावना को बढ़ावा देकर सत्ता के स्थायित्व और सामाजिक व्यवस्था में सहायक होते। हम सभी मानवता के विशाल जाल में बुने हुए हैं, और जो कुछ भी हम दूसरों को ऊपर उठाने और लाभान्वित करने के लिये कर सकते है, वह हम पर आशीषों में प्रतिबिम्बित होगा। निर्धन और धनवान दोनो ही समान रूप से एक-दूसरे पर निर्भर है। जहाँ एक वर्ग उन आशीषों में हिस्सा माँगता है जो परमेश्वर ने उसके उससे अधिक धनवान पड़ोसियों को दी है, और दूसरों को आवश्यकता थी सत्यनिष्ठा सेवा, बुद्धि, हडडी और माँसपेशी की ताकत की, जो निर्धन की पूँजी है। PPHin 550.2

परमेश्वर के निर्देशों का पालन करने की शर्त पर इज़राइल को बहुत आशीषों का वचन दिया, "मैं तुम्हारे लिये समय-समय पर वर्षा भेजूँगा, भूमि अपनी उपज उपजाएगी और मैदान के वृक्ष अपने-अपने फल दिया करेंगे। यहाँ तक कि तुम्हारा अनाज निकालने का काम तब तक चलेगा जब तक अंगूर इकट्ठा करने का समय आएगा, और अँगूर का इकट्ठा करना तब तक चलेगा जब तक बोने का समय आएगा। तब तुम्हारे पास खाने के लिये बहुत होगा, और तुम अपने प्रदेश में सुरक्षित रहोगे। मैं तुम्हारे देश को शान्ति दूंगा। तुम शान्ति से सो सकोगे। कोई तुम्हे भयभीत करने न आएगा, में विनाशकारी जानवरों को तुम्हारे देश से बाहर रखूँगा। और सेनाएँ तेरे देश से नहीं गुजरेंगी। मैं तुम्हारे साथ चलूँगा और तुम्हारा परमेश्वर रहूँगा और तुम मेरे लोग रहोगे। किन्तु यदि तुम मेरी आज्ञा का पालन नहीं करोगे और मेरे ये सब आदेश नहीं मानोगे तो तुम्हारा बीज बोना व्यर्थ होगा, क्योंकि तुम्हारे शत्रु उसकी उपज खा लेंगे। और मैं भी तुम्हारे विरूद्ध हो जाऊंगा, और तुम अपने शत्रुओं से हार जाओगे। तुम्हारे बैरी तुम्हारे ऊपर अधिकार करेंगे, और जब कोई तुम को खदेड़ता भी न होगा तक भी तुम भागोगे" - लैवव्यवस्था 26:4,17। PPHin 550.3

कई हैं जो बड़े उत्साह से आग्रह करते है कि परमेश्वर की सांसारिक आशीषों में सभी मनुष्यों का बराबर का भाग होना चाहिये। लेकिन यह परमेश्वर का उद्देश्य नहीं था। अवस्था में विविधता कई साधनों में से एक है जिसके माध्यम से परमेश्वर चरित्र को प्रमाणित और विकसित करता है। लेकिन वह चाहता है कि जिनके पास सांसारिक सम्पत्ति है, वे स्वयं को उन वस्तुओं का केवल

भण्डारी माने, जिनके सुपुर्द वो साधन किये गए हैं जो जरूरतमंदों और दुखियों के लाभ के लिये उपयोग किये जाने हैं। PPHin 551.1

मसीह ने कहा है कि निर्धन हमारे साथ हमेशा होंगे और वह अपने अधिकार को अपने पीड़ित लोगों के अधिकार के साथ जोड़ देता है। हमारे उद्धारकर्ता का हृदय उसके सबसे दीन और दरिद्र मनुष्य के लिये सहानुभूति दिखाता है। वह कहता है कि वे पृथ्वी पर उसके प्रतिनिधि हैं। उसने उन्हे हमारे मध्य इसलिये रखा है कि ताकि हमारे हृदयों में वह प्रेम जागृत हो सके जैसा वह दुखियों और उत्पीड़ितों के लिये करता है। उनको दिखाई गई उदारता और दया परमेश्वर द्वारा ऐसे स्वीकार की जाती है, मानो वह उसी को दिखाई गईं हो। उनके प्रति उपेक्षा या निर्दयता का कृत्य परमेश्वर के प्रति किया गया माना जाता है। PPHin 551.2

यदि निर्धनों के लाभ के लिये परमेश्वर द्वारा दी गईं व्यवस्था का कियान्वन जारी रहता, तो कितनी भिन्न होती संसार की वर्तमान स्थिति नैतिक, आध्यात्मिक और संसारिक रूप से! आज की तरह स्वार्थ और अंहकार दर्शाया नहीं जाता, वरन् सभी दूसरों के कल्याण और आनन्द के विचार को पनपने देता, और जैसी व्यापक निराश्रयता आज कई देशों में देखी जाती है, यह विद्यमान नहीं होती। PPHin 551.3

परमेश्वर द्वारा दिए गए सिद्धान्त, उन सभी बुराईयों को होने से रोकते, जो धनवानों के प्रति निर्धनों की घृणा और सन्देह और निर्धनों के प्रति धनवानों के उत्पीड़न का परिणाम है। ये सिद्धान्त अत्यधिक धन दौलत के संचय करने और असीमित भोग विलास की तुष्टि पर रोक लगाकर, उन हजारों के पतन और उनके फलस्वरूप अज्ञानता पर रोक लगाते, जिनकी बेगारी के दम पर यह विपुल सम्पत्ति इकट्ठी की जाती है। वे उन समस्याओं का शान्तिपूर्ण उपाय प्रदान करते जो अभी संसार को रक्तपात और अराजकता से भर देने का भय उत्पन्न करती है।

अध्याय 52—वार्षिक पर्व

यह अध्याय लैवव्यवस्था 23 पर आधारित है

पवित्र स्थान पर आराधना के लिये सम्पूर्ण इज़राइल की तीन वार्षिक पवित्र सभाएं होती थी- निर्गमन 2:1-16। कुछ समय के लिये इन सभाओं का स्थान शीलो था, लेकिन बाद में यरूशलेम राष्ट्र की आराधना का केन्द्र बन गया, और पवित्र पर्वो के लिये गोत्र यहाँ एकत्रित होते थे। PPHin 553.1

प्रजा उग्र व लड़ाकू जनजातियों से घिरी हुई थी, जो उनके भूभागों को हड़पने के लिये उतावले थे, लेकिन फिर भी वर्ष में लोगों में तीन बार सभी स्वस्थ शरीर वाले पुरूषों और यात्रा करने योग्य लोगों को निर्देश दिया गया कि वे अपने-अपने घरों से निकलकर देश के मध्य भाग के पास सभा स्थान पर पहुँचे। उनके असुरक्षित घरानों को आक्रमण द्वारा आग और तलवार से नष्ट करने को, उनके शत्रुओं को क्या बाधित कर सकता था? देश पर उस आक्रमण को जो इज़राइल को दोबारा किसी परदेशी शत्रु के अधीनस्थ कर देता, क्या रोक सकता था?परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि वह उसके लोगों का रक्षक होगा। भजन संहिता 34:7 में लिखा है, “यहोवा का दूत उसके भक्त जनों के चारों ओर डेरा डाले रहता है। और यहोवा का दूत उनकी रक्षा करता है। जब इज़राईली आराधना के लिये जाते, ईश्वरीय शक्ति उनके शत्रुओं पर रोक लगाता था। परमेश्वर की प्रतिज्ञा थी, “मैं अन्य जातियों को तेरे आगे से निकालकर तेरी सीमाओं को बढ़ाऊंगा, और जब तू अपने परमेश्वर यहोवा को अपना मुहँ दिखाने के लिये वर्ष में तीन बार आया करे, तब कोई तेरी भूमि का लालच न करेगा।”-निगर्मन 34:24। PPHin 553.2

इन पर्वां में सर्व प्रथम, फसह और अखमीरी रोटी का पर्व, यहूदी वर्ष के प्रथम वर्ष, अबीब में मनाया जाता था, यह समय मार्च के अन्त और अप्रैल के प्रारम्भ के समतुल्य था। शीत ऋतु की ठण्ड जा चुकी थी,उत्तरवर्ती वर्षा समाप्त हो गई थी, और सारी प्रकृति बसनन्ृत ऋतु के सौन्दर्य और उसकी ताजगी में आनन्दित थ। तराईयों और पहाड़ों पर घास हरी थी, और गली फूल मैदानों की शोभा बढ़ा रहे थे। चन्द्रमा, जो पूरी होने को था, संध्या को आनन्दपूर्ण बना रहा था। इस ऋतु को सुन्दरता से चित्रित किया गया है- PPHin 553.3

देख, जाड़ा जाता रहा,

वर्षा भी हो चुकी और जाती रही।

पृथ्वी पर फूल दिखाई देते हैं,

चिड़ियों के गाने का समय आ पहुँचा है,

और हमारे देश में पिन्डुक का शब्द सुनाई देता है।

अंजीर के वृक्ष पर अंजीर पकने लगे है,

और दाखलताएं फल रही है,

वे सुगन्ध बिखरे रही है। PPHin 554.1

- श्रेष्ठगीत 2:11-13

देश के एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक तीर्थयात्रियों के समूह यरूशलेम की ओर बढ़ रहे थे। चरवाहे अपने भेड़ बकरियों को छोड़, पहाड़ो से पशुपालक, गलील के समुद्र से मछुवारे, खेतों से किसान, और धार्मिक संस्थाओं से भविष्यद्वक्ताओं के पुत्र सभी ने उधर का रूख किया, जहाँ परमेश्वर की उपस्थिति प्रकट हुई । उन्होंने कई चरणों में यात्रा की, क्योंकि कई पैदल यात्री थे। कारवां में लोग लगातार जुड़ रहे थे, और पवित्र नगरी पहुँचने से पहले वे प्रायः बहुत बड़े हो जाते थे। PPHin 554.2

प्रकृति की मनोहरता ने इज़राइलियों के हृदयों में प्रसन्नता, और भलाई के दाता के प्रति कृतज्ञता को जागृत किया। श्रेष्ठ इब्री भजन गाकर, यहोवा के गोरव ओर महिमा की स्तुति की गईं। तुरही के स्वर पर झांझ के संगीत के साथ, सैकड़ो की आवाजों में धन्यवाद का गीत गाया गया। PPHin 554.3

जब लोगों ने मुझ से कहा, "आओ,

हम यहोवा के भवन को चले"

तब मैं आनन्दित हुआ।

हे यरूशलेम, तेरे फाटकों के भीतर,

हम खड़े हो गए है।

वहाँ यहोवा के गोत्र गोत्र के लोग

यहोवा के नाम का धन्यवाद करने को जाते है, यरूशलेम की शान्ति का वरदान माँगो,

तेरे प्रेमी कुशल से रहे। PPHin 554.4

- भजन संहिता 122:1-6।

जब उन्होंने अपने चारो ओर उन पहाड़ो को देखा, जहाँ मूर्तिपूजक अपनी वेदी की आग जलाने के अभ्यस्त थे, इज़राइलियों ने गाया, PPHin 555.1

"में अपनी आंखो पर्वतों की ओर लगाऊंगा?

मुझे सहायता कहाँ से मिलेगी?

मुझे सहायता यहोवा की ओर से मिलती है,

जिसने आकाश और पृथ्वी को बनाया।” PPHin 555.2

-भजन संहिता 121:1,2।

जो यहोवा पर भरोसा रखते है,

वे सिय्योन पर्वत के समान है,

जो टलता नहीं, वरन् सदा बना रहता है।

जिस प्रकार यरूशलेम के चारो ओर पहाड़ है,

उसी प्रकार यहोवा अपनी प्रजा के चारों ओर

अब से लेकर सर्वदा तक बना रहेगा। PPHin 555.3

-भजन संहिता 25:1,2 ।

पवित्र नगरी के सदृश्य पहाड़ों के ऊपर से, उन्होंने मन्दिर की ओर बढ़ते हुए उपासकों के विशाल समूहों को श्रद्धायुक्त भय के साथ देखा। उन्होंने लोबान के उठते धुएँ को देखा, और पवित्र धर्म-किया का सन्देश देते लैवियों की तुरहियों का शब्द सुना, और इस घड़ी से प्रेरणा पाकर उन्होंने गया- PPHin 555.4

“हमारे परमेश्वर के नगर में, और अपने पवित्र पर्वत पर

यहोवा महान और अति स्तुति के योग्य है

सिय्योन पर्वत ऊँचाई में सुन्दर और सारी

पृथ्वी के हर्ष का कारण है, राजाधिराज का नगर उत्तरी सिरे पर है।” PPHin 555.5

-भजन संहिता 48:1,2।

“तेरी शहरपनाह के भीतर शान्ति

और तेरे महलों में कुशल होवे"

"मेरे लिये धर्म के द्वार खोलो

मैं उन से प्रवेश करके यहोवा का धन्यवाद करूंगा ।'

मैं यहोवा के लिये अपनी मन्नतें,

प्रगट में उसकी सारीप्रजा के सामने

यहोवा के भवन के आँगनों में,

हे यरूशलेम, तेरे भीतरपूरी करूंगा

यहोवा की स्तुति करो।" PPHin 556.1

-भजन संहिता 112:7, 118:19, 116:18,19।

यरूशलेम के सभी घर, तीर्थयात्रियों के लिये खोल दिये जाते थे, और कक्षों को निःशुल्क दिया जाता था,लेकिन यह सब मिलाकर भी विशाल सभा केलिये पर्याप्त नहीं होता था, ओर आस-पास के पहाडों, शहर में प्रत्येक सम्भव स्थान पर तम्बू खड़े किये जाते थे। PPHin 556.2

महीने के चौदहवें दिन, संध्या होने पर, फसहका पर्व मनाया जाता था, उसके प्रभावशाली अनुष्ठान, मिस्र में इज़राइलियों के दासत्व का स्मरण कराते थे ओर उस बलिदान की ओर संकेत करते थे, जो उन्हें पाप के बन्धन से मुक्त करेगा । जब उद्धारकर्ता ने कलवरी पर अपने प्राण न्यौछावर किये, फसह के पर्व का महत्व समाप्त हो गया, और जिसका फसह का सर्व प्ररूप रहा था, इसी कार्यकम के रूप में प्रभु भोज की विधि स्थापित की गई। PPHin 556.3

फसह के पर्व के बाद अखमीरी रोटी का सात दिन का पर्व मनाया जाता था। पहला और सातवाँ दिन पवित्र दीक्षान्त समारोह के दिन थे,जब कोई दास्तव वाला कार्य नहीं किया जाना था। पर्व के दूसरे दिन, वर्ष की उपज के पहले फल परमेश्वर के सम्मुख प्रस्तुत किये जाते थे। जौ फिलिस्तीन का सबसे पहले तैयार होने वाला अन्न था, और पर्व के प्रारम्भ में यह पकने पर आता था। अन्न की एक बाली याजक द्वारा परमेश्वर की वेदी के सम्मुख लहराई जाती थी, जो इस बात की स्वीकृति थी कि सब कुछ परमेश्वर का था। जब तक यह विधि सम्पन्न नहीं होती थी। उपज को इकट्ठा नहीं किया जाता था। PPHin 556.4

पहले फलों की भेंट चढ़ाने के पचास दिनों बाद पिन्तेकुस्त, जिसे कटन का पर्व और सप्ताहों का पर्व भी कहा जाता था। भोजन के रूप में तैयार किये गए अन्न के लिये आभार की अभिव्यक्ति के रूप में परमेश्वर के सम्मुख दो अखमीरी रोटियों की भेंट चढ़ाई जाती थी। पिन्तेकुस्त केवल एक ही दिन के लिये होता था, जो धार्मिक विधि को समर्पित था। PPHin 557.1

सातवें महीने मे झोपड़ियों का पर्व या एकत्रित होने का पर्व मनाया जाता था। यह पर्व अंगूर के बागों, जैतून की वृक्ष-वाटिकाओं और फलोद्यानों में परमेश्वर की ओर से बहुतायत की आशीष के लिये आभार प्रकट करता था। यह वर्ष का सर्वोच्च उत्सव सम्बन्धी सम्मेलन होता था। भूमि अपनी अतिरिक्त उपज उत्पन्न करती थी, कटी हुई उपज को खाद्य-भण्डारों में इकट्ठा कर दिया जाता था, फलों, तेल और दाखरस को संचित कर दिया जाता था, पहले फलों को आरक्षित किया जाता था, और फिर लोग उस परमेश्वर के लिये जिसने उन्हें इतनी आशीषें दी थी, धन्यवाद की भेंट लेकर आते थे। PPHin 557.2

पर्व को विशेष रूप से हर्षोल्लास का अवसर होना था। यह प्रायश्चित के दिन के तुरन्त बाद मनाया जाता था, जब यह आश्वासन दे दिया जाता था कि उनका अधर्म भुला दिया जाएगा। परमेश्वर के साथ सुलह होने पर, अब वे उसके सम्मुख उसकी भलाई का अंगीकार करने और उसकी दया के लिये उसकी प्रशंसा करने आते थे। कटनी का परिश्रम की समाप्ति पर, और नये वर्ष के कठिन श्रम का प्रारम्भ ना होने पर, लोग चिन्तामुक्त होते थे, और अपने आप को उस समय के पवित्र, आनन्दमयी प्रभावों को समर्पित कर सकते थे। हालाँकि, केवल पिताओं और पुत्रों को पर्व में आने का आदेश होता था, फिर भी, जहाँ तक सम्भव होता था, सम्पूर्ण घराना इन पर्वों के लिये उपस्थित हो सकता था और उसके अतिथि सत्कार के लिये दास, लैवी, परदेशियों और निर्धनों का स्वागत किया जाता था। PPHin 557.3

फसह के पर्व के समान, झोपड़ियों का पर्व भी संस्मारक है। बीहड़ों में बिताए जीवन की स्मृति में लोग अपने-अपने घरों से निकलकर "अच्छे-अच्छे वृक्षों की उपज और खजूर के पत्ते और घने वृक्षकों की डालियाँ और नदियों के किनारे लगे पेड़ों" से बने अस्थायी आश्रयों या झोपड़ियों में रहते थे। - लैवव्यवस्था 23:40,42,43। PPHin 557.4

पहला दिन पवित्र सम्मेलन होता था और पर्व के सात दिनों में आठवाँ दिन जोड़ा जाता था, जिसे उसी तरह मनाया जाता था। PPHin 558.1

इन वार्षिक सभाओं में वृद्धि व नौजवानों के हृदय परमेश्वर की सेवा के लिये प्रोत्साहित होते थे, और देश के विभिन्न भागों से आए लोगों का मेल-जोल उन बन्धनों को मजबूत करता था जो उन्हें परमेश्वर से और एक दूसरे से बाँध कर रखते थे। अच्छा होता कि वर्तमान में भी परमेश्वर के लोग झोपड़ियों का पर्व मनाते- परमेश्वर की उन पर आशीषों का आनन्दमयी स्मरणोत्सव! जैसे इज़राईली परमेश्वर द्वारा उनके पूर्वजों को दिलाए छुटकारे और मिस्र से उनकी यात्राओं के दौरान उनका आश्चर्यजनक संरक्षक के स्मरण में उत्सव मनाते थे, इसी प्रकार हमें भी उन विभिन्न तरीकों का कृतज्ञतापूर्ण स्मरण करना चाहिये जोउसने हमें संसार से बाहर निकालनेऔर पाप के अन्धकार से अपने अनुग्रह और सच्चाई के बहुमूल्य प्रकाश में लेकर आने के लिए अपनाए। PPHin 558.2

जो पवित्र स्थान से कुछ दूरी पर रहते थे उनके लिये प्रत्येक वर्ष का एक महीना वार्षिक पर्वों में उपस्थित होना अनिवार्य था। भक्ति का यह उदाहरण धार्मिक धर्म-कियाओं की महत्ता और हमारे सात्विक और आध्यात्मिक रूझान को स्वार्थपूर्ण, सांसारिक रूचियों के ऊपर रखने की आवश्यकता पर जोर देता है। जब हम परमेश्वर की सेवा के लिये एक दूसरे को प्रोत्साहित करने और सशक्त बनाने के लिये मेल-जोल के विशेषाधिकार की उपेक्षा करते हैं तो हमें नुकसान होता है। हमारे हृदय उसके पवित्र प्रभाव से जागृत और प्रबद्ध होना बन्द कर देते हैं और आध्यात्मिक पतन होने लगता है। PPHin 558.3

मसीही होते हुए हमारे पारस्पारिक व्यवहार में, एक दूसरे के प्रति सहानुभूति के अभाव में हम बहुत कुछ खो देते हैं। वह जो स्वयं को अपने तक ही सीमित रखता है, वह उस स्थान को नहीं भरता जो परमेश्वर ने उसके लिये ठहराया है। हम सभी एक पिता की संतान है, और प्रसन्नता के लिये एक दूसरे पर निर्भर है। परमेश्वर और मानवता, दोनों का हम पर अधिकार है। हमारे स्वभाव के सामाजिक भाव है वह हमारे मन में अपने भाईयों के लिये सहानुभूति उत्पन्न करते है और दूसरों को आशीषित करने के लिये हमारे प्रयत्नों में आनन्दित करता है। PPHin 558.4

झोपड़ियों का पर्व ना केवल संस्मारक था वरन् प्रतीकात्मक भी था। वह केवल बीहड़ के पड़ाव की ओर ही संकेत नहीं करता था, वरन् कटनी के उत्सव के तौर पर, यह संकेत करता था निर्णायक संचयन के दिन की ओर, जब फसल का प्रभु आग में भस्म करने के लिये जंगली घाँस के पूले बनाने और गेहूँ को उसके गोदाम में इकट्ठा करने को अपने फसल काटने वालों को भेजता है। उस समय सभी दुष्टों को नष्ट कर दिया जाएगा। वे ऐसे हो जाएंगे, "जैसे कभी थे ही नहीं"-ओबद्याह 16। सम्पूर्ण सृष्टि की प्रत्येक आवाज परमेश्वर की आनन्दपूर्ण स्तुति करने में एक हो जाएगी। प्रकाशितवाक्य 5: 13में लिखा है, "फिर मैंने स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे और समुद्र की सब सृजी हुई वस्तुओं को, और सब कुछ को जो उनमें यह कहते सुना" जो सिंहासन पर बैठा है उसका और मेम्ने का धन्यवाद और आदर और महिमा और राज्य युगानुयुग रहे।" PPHin 559.1

बीहड़ में उनके पथिक समान जीवन के दौरान परमेश्वर की नम्रतापूर्ण देखभाल और मिस्र में उनके दास्तव से छुटकारे में उसकी करूणा का स्मरण करते हुए, इज़राइल के लोगों ने झोपड़ियों के पर्व पर परमेश्वर की स्तूति की । हाल ही में समाप्त हुई प्रायश्चित के दिन की धर्म-किया के माध्यम से मिली स्वीकृति और क्षमा का बोध होने पर वे आनन्दित हुए। लेकिन जब प्रभु के बचाए लोग स्वर्गीय कनान में सुरक्षित एकत्रित हो जाएँगे व उस श्राप की अधीनता से सर्वदा के लिये छुटकारा पा लेंगे, जिसके प्रभाव में, "सारी सृष्टि अब तक मिलकर कराहती और पीड़ाओं में पड़ी तड़पती है-रोमियों 8:22, वे अकथनीय प्रसन्नता के साथ परमेश्वर की स्तुति करेंगे। मनुष्य के प्रायश्चित का मसीह का महान कार्य उस समय तक समाप्त हो चुका होगा और उनके पाप हमेशा के लिये मिटा दिये गए होंगे। PPHin 559.2

"जंगल और निर्जल देश प्रफुल्लित होंगे,
मरूभूमि मगन होकर केसर के समान फूलेगी,
वह अत्यन्त प्रफुल्लित होगी और आनन्द के साथ
जय-जयकार करेगी। उसकी शोभा लबानोन की सी होगी और
वह कार्मेल और शारोन के तुल्य तेजोमय हो जाएगी।
"तब अँधो की आँखे खोली जाएगी और
बहरों के कान भी खोले जाएँगे
तब लँगड़ा हिरण की सी चौकड़ियाँ भरेगा और
गूँगे अपनी जीभ से जय-जयकार करेंगे ।
क्योंकि जंगल में जल के सोते फूट निकलेंगे
और मरूभमि में नदियाँ बहने लगेंगी ।
और प्यासी प्थ्वी तालाब बन जाएगी
और सूखी भूमि में सोते फटेगें
वहाँ एक सड़क अर्थात राजमार्ग होगा
और उसका नाम पवित्र मार्ग होगा
कोई अशुद्ध जन उस पर से चलने न पाएगा,
वह तो उन्हीं के लिये रहेगा-
पैदल यात्रा करने वाले पुरूष,
चाहे मूर्ख भी हों, तो भी कभी नहीं भटकेंगे ।
वहाँ सिंह नहीं होगा और कोई हिंसक जन्तु उस पर न चढ़ेगा,
और न ही वह वहाँ पाया जाएगा
परन्तु छुड़ाए हुए उस पर नित चलेंगे ।
यहोवा के छुड़ाए हुए लोग लौटकर जयजयकार करते हुए

सिय्योन में आएँगे, और उनके सिर पर

सदा का आनन्द होगा वे हर्ष और आनन्द पाएँगे और

शोक और लम्बी साँस का लेना जाता रहेगा। PPHin 559.3

याशायाह 35:1,2,5-10

अध्याय 53—पूर्व न्यायाधीश

यह अध्याय न्यायियों 6-8;10 पर आधारित है PPHin 562.1

कनान में बस जाने के पश्चात, गोत्रों ने देश की विजय को सम्पूर्ण करने के लिये कोई सशक्त प्रयत्न नहीं किया। जीते हुए भू-खण्ड से सन्तुष्ट, उनका उत्साह घट गया और युद्ध को समाप्त कर दिया गया। "परन्तु जब इज़राईली सामर्थी थे, तब उन्होंने कनानियों से बेगारी ली, परन्तु उन्हें पूरी रीति से न निकाला।" - न्यायियों 1:28। PPHin 562.2

प्रभु ने अपनी ओर से, इज़राइल से की गई प्रतिज्ञाओं को ईमानदारी से पूरा कर दिया था, यहोशू ने कनानियों की शक्ति को समाप्त कर दिया था, और भूमि को गोत्रों में विभाजित कर दिया था। अब परमेश्वर की सहायता से, उस देश से वहाँ के निवासियों को निर्वासित करना, उनका काम था। लेकिन ऐसा करने में वे असफल रहे। कनानियों के साथ सन्धि करने उन्होंने प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया, और इस प्रकार वे उस शर्त को पूरा करने में असफल रहे, जिसके आधार पर परमेश्वर ने उन्हें कनान का स्वामित्व देने का आश्वासन दिया था। PPHin 562.3

सिने पर परमेश्वर के साथ उनके प्रथम संपर्क से, उन्हें मूर्तिपूजा के प्रति चेतावनी दी गईं थी। व्यवस्था की घोषणा के तुरन्त बाद उन्हें कनान की जातियों से सम्बन्धित मूसा द्वारा संदेश भेजा गया था, "उनके देवताओं को दण्डवत न करना, और न उनकी उपासना करना, और न उनके से काम करना, वरन् उन मूर्तियों का पूरी रीति से सत्यनाश कर डालना और उनकेप्रस्तर पिण्डों को तोड़ देना। तू अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करना, तब वह तेरे अन्न जल पर आशीष देगा, और तेरे बीच में से रोग दूर करेगा।"-निर्गमन 23:24,25। PPHin 562.4

उन्हें आश्वासन दिया गया कि जब तक वे आज्ञाकारी रहेंगे, परमेश्वर उनके शत्रुओं को उनके सामने वश में कर लेगा। "जितने लोगों के बीच तू जाएगा उन सभी के मन में मैं अपना भय पहले से ऐसा बैठा दूँगा कि वे व्याकुल हो जाएँगे, और मैं तुझे सब शत्रुओं की पीठ दिखाऊँगा। और में तुझ से पहले बड़ो को भेजूँगा जो हिब्बी, कनान और हित्ती लोगों को तेरे सामने से भाग कर दूर कर देगें। मैं उनको तेरे आगे से एक ही वर्ष में नहीं निकाल दूँगा, ऐसा न हो देश उजाड़ हो जाए, और बनैले पशु बढ़कर तुझे दुःख देने लगे। जब तक तू फल-फूलकर देश को अपने अधिकार में न कर ले तब तक मैं उन्हें तेरी आरे से थोड़ा-थोड़ा करके निकालता रहूँगा। मैं उस देश के निवासियों को भी तेरे वश में कर दूँगा, और तू उन्हें अपने सामने से बरबस निकालेगा। तू न तो उनसे वाचा बाँधना और न उनके देवताओं से। वे तेरे देश में रहने न पाएँ, ऐसा न हो कि वे तुझ से मेरे विरूद्ध पाप कराएँ, क्योंकि यदि तू उनके देवताओं की उपासना करे, तो यह तेरे लिये फंदा बनेगा।"-निर्गमन 23:27-33। PPHin 562.5

परमेश्वर ने काना में अपने लोगों की नैतिक बुराईयों के ज्वार को रोकने के लिये एक सशक्त वक्षमीत की तरह स्थापित किया था, ताकि संसार में बुराईयों की बाढ़ न आ सके। यदि इज़राइल परमेश्वर के प्रति सत्यनिष्ठ होता तो परमेश्वर चाहता था कि वे विजय प्राप्त करते रहें और देशों को जीतें। वह उनके हाथों में कनानियों से अधिक सशक्त और महान जातियों को दे देगा। परमेश्वर की प्रतिज्ञा थी, "यदि तुम इन सब आज्ञाओं के मानने में जो तुम्हें सुनाता हूँ सावधानी बरतोगे....तो यहोवा उन सब जातियों को तुम्हारे आगे से निकाल डालेगा, औरतुम अपने से बड़ी और सामर्थी जातियों के अधिकारी हो जाओगे। जिस भी स्थान पर तुम्हारे पैर पड़ेंगे वे सब तुम्हारे हो जाएँगे, अर्थात बीहड़ से लेकर लबानोन तक, फरात नदी से लेकर पश्चिम के समुद्र तक तुम्हारी सीमा होगी। तुम्हारे सामने कोई भी खड़ा न रह सकेगा, क्योंकि जितनी भूमि पर तुम्हारे पाँव पड़ेंगे उन सब पर रहने वालों के मन में तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अपने वचन के अनुसार तुम्हारे कारण उनमें डर और थरथराहट उत्पन्न कर देगा ।"-व्यवस्थाविवरण 11:22-25। PPHin 563.1

लेकिन अपने उत्कृष्ट भविष्य से उदासीन, उन्होंने सुगमता और आत्मतुष्टि का मार्ग चुना, देश पर विजय को पूरा करने के अवसर को उन्होंने जाने दिया, और कई पीढ़ियों तक इन बचे हुए मूर्तिपूजक लोगों द्वारा परेशान रहे जैसे कि भविष्यद्वक्ता ने भविष्यवाणी की थी कि वे उनकी आखों में 'चुभन' और उनकी पसली में 'काँटे" के समान होंगे। (गिनती 35:55) PPHin 563.2

इज़राइली "उन्हीं जातियों से हिलमिल गए और उनके व्यवहारों को सीख लिया ।-भजन संहिता 106:35। उन्होंने कनानियों के साथ अंतर्जातीय विवाह किये, और मूर्तिपूजा पूरे देश में महामारी की तरह फैल गई। "उन्होंने कनान की मूर्तियों पर बलि चढ़ाई, जो उनके लिये जाल समान थी। उन्होंने अपने बेटे-बेटियों को पिशाचों के लिये बलिदान किया.......और देश लहू से दूषित हो गया.........तब यहोवा का कोध अपनी प्रजा पर भड़का और उसको अपने निज भाग से घृणा आई।" भजन संहिता 106:6-40। PPHin 563.3

जब तक कि यहाोशू द्वारा निर्देश प्राप्त पीढ़ी विलुप्त न हुई, मूर्तिपूजा ने कम प्रगति की, लेकिन अभिभावकों ने अपने बच्चों के स्वधर्मत्याग का मार्ग तैयार कर दिया था। कनान पर अधिकार पाने वालों की ओर से परमेश्वर के प्रतिबन्धों की अवमानना ने बुराई का बीज बो दिया जो कई पीढ़ियों तक कड़वा फल देती रही। इब्रियों की सीधी-सीधी आदतों ने उनके शारीरिक स्वास्थ्य को सुरक्षित रखा था, लेकिन मूर्तिपूजकों की संगति में वे भूख और लालसा में लिप्त हो गए, जिससे उनकी शारारिक शक्ति कम होती चली गई और उनकी मानसिक व सात्विक शक्तियाँ कमजोर हो गई। अपने पापों के कारण इज़राइली परमेश्वर से दूर हो गए, उसकी शक्ति से वे वंचित हो गए, और अब वे अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में असमर्थ हो गए। इस कारण वे उन जातियों के अधीन हो गए, जिनको परमेश्वर की सहायता से वे अपने अधीन कर सकते थे। PPHin 564.1

उन्होंने "अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा को त्याग दिया जो उन्हें मिस्र देश से निकाल लायाथा" "और जंगल में उनकी अगुवाई भेड़ो व बकरियों के झुण्ड की सी की थी।" "उन्होंने ऊंचे-ऊँचे पूजा स्थल बनाकर उसके कोध को भड़काया, और देवी-देवताओं की मूर्तियों द्वारा उसे इर्ष्या करने को विवश किया । "फिर परमेश्वर ने शिलोह के पवित्र तम्बू को त्याग दिया, यह वही तम्बू था जहाँ परमेश्वर लोगों के बीच रहता था। फिर उसने अपने लोगों को दूसरी जातियों का बंदी बनने दिया और परमेश्वर के 'गौरव' को शत्रुओं ने छीन लिया ।"-न्यायियों 2:12, भजन संहिता 78:52,58,60,61। फिर भी उसने अपने लोगों को पूरी तरह से नहीं छोड़ा। एक बकिया कलीसिया, जो यहोवा के प्रति सत्यनिष्ठ थी, सर्वदा रही, और समय-समय पर परमेश्वर ने इज़राइलियों को उनके शत्रुओं से छुड़ाने के लिये और मूर्तिपूजा को दूर करने के लिये बहादुर और विश्वसनीय मनुष्यों को खड़ा किया। लेकिन जब छुटकारा दिलाने वाला मृत्यु को प्राप्त हो जाता था, और लोग उसके अधिकार से मुक्त हो जाते थे, वे धीरे-धीरे पुनः मूर्तिपूजा करने लगे थे। और इस प्रकार, पुनपतन और सुधारदण्ड की, पापों के अंगीकार और छुटकारे की कहानी बार-बार दोहराई जाती थी। PPHin 564.2

मेसोपोतामिया और मोआब के राजा, और इनके पश्चात पलिश्ती, और सिसेरा के नेतृत्व में, हाज़ोर के कनानी कम से इज़राइलियों के तानाशाह बने। ओत्नीएल, शमगर, एहूद, दबोरा और बाराक को उनके लोगों के मुक्तिदाता के रूप में खड़ा किया गया। लेकिन फिर से, "इजराइली वह करने लगे जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, और प्रभु ने उन्हें मिद्यान के हाथों में जाने दिया।" इससे पहले यरदन के पूर्व में रहने वाले गोत्रों पर दमनकारियों का हाथ हल्का ही रहा था, लेकिन वर्तमान विपत्तियों में वे पहले कष्टभोगी थी।कनान के दक्षिण में अमालेकी और उसकी पूर्वी सीमा और सीमापार मरूस्थल में मिद्यानी अभी इज़राइल के कट्टर शत्रु थे। मूसा के समय मे मिद्यानी इज़राईलियों द्वारा लगभग नष्ट कर दिये गए थे, लेकिन उसके बाद से ही उनमें बहुत वृद्धि हुईं थी, और वे सशक्त और बहुसंख्यक हो गए थे। वे प्रतिशोध के प्यासे थे, और अब जब परमेश्वर की सुरक्षा वाला हाथ इज़राइल पर से उठ गया था, उनके पास अवसर उपलब्ध हो गया। ना केवल यरदन के पूर्व में बसने वाले गोत्र, वरन् समस्त देश ने विध्वंस के कारण कष्ट उठाया। मरूभूमि के असभ्य, कर निवासी "टिडिडयों के दल" के समान (न्यायियों 6:5)अपने मवेशियों और भेड़ बकरियों सहित प्रदेश में घुस आए और भक्षक महामारी की तरह, यरदन नदी से लेकर पलिशिती तराई तक फैल गए। उपज ने पकना प्रारम्भ ही किया था, जब वे आए और जब तक पृथ्वी के अन्तिम फल इकटठे न कर लिये गए, वे वहीं रहे। उन्होंने खेतों की अतिरिक्त उपज को लूट लिया, निवासियों के साथ दुर्व्यवहार किया और उन्हें भी लूट लिया और, मरूस्थल को लौट गए। इस प्रकार खुले प्रान्त में रहने वाले इज़राइलियों को अपने घर छोड़कर प्राचीरों से सुरक्षित शहरों में इकट्ठा होना पड़ा, गढ़ों में या पहाड़ी गुफाओं और पहाड़ी किलों में शरण लेनी पड़ी। सात वर्षो तक यह दमन चलता रहा, और फिर जब लोगों ने दु:खी होकर परमेश्वर की ताड़ना पर ध्यान दिया, और अपने पापों का अंगीकार किया, तो परमेश्वर ने फिर से उनके लिये सहायक को खड़ा किया। गिदोन, मनश्शे के

गोत्र से, योआश का पुत्र था। जिस वर्ग से उसका परिवार सम्बन्धित था, उसका कोई प्रमुख स्थान नहीं था, लेकिन योआश का घराना साहस और निष्ठा के लिये माना जाता था। उसके साहसी पुत्रों के लिये कहा गया है, "एक-एक का रूप राजकुमार का सा था।" मिद्यानों के विरूद्ध संघर्ष में सिवाय एक के सभी मारे गए थे, और गिदोन के नाम से घुसपैठिए भय ये भर जाते थे। गिदोन को उसके लोगों को मुक्ति दिलाने के लिये पवित्र आदेश मिला। उस समय वह गेहूँ झाड़ रहा था। अन्न की कुछ मात्रा उसने छुपा कर रखी थी और सामान्य खलिहान में झाड़ने का दुस्साहस न कर, उसने दाखरस के कुण्ड के पास एक स्थान को इस काम के लिये चुना, अंगूर पकने की ऋतु अभी दूर थी, इसलिये दाख की बारियों पर इतना ध्यान नहीं दिया जाता था। जब गिदोन निस्तब्धता और एकांत में परिश्रम करता था, वह उदास होकर इज़राइल की स्थिति के बारे में चिन्तन करता और विचार करता कि किस प्रकार वह अपने लोगों पर से दमनकारियों के जुए को तोड़ सकता था। PPHin 564.3

अचानक से उसको यहोवा के दूत ने दर्शन देकर कहा, "हे शूरवीर सूरमा, यहोवा तेरे संग है।" PPHin 566.1

गिदोन ने उत्तर दिया, "हे मेरे प्रभु, यदि यहोवा हमारे संग होता, तो हम पर विपत्ति क्यों आती? और जितने आश्चर्यकर्मों का वर्णन हमारे पुरखा यह कहकर करते थे, 'क्या यहोवा हम को मिस्र देश से छूड़ा नहीं लाया' वे कहाँ रहे? अब तो यहोवा ने हमको त्याग दिया और मियद्यानियों के हाथ कर दिया है।" PPHin 566.2

स्वर्ग के सन्देहवाहक ने कहा, "अपनी इसी शक्ति में जा, और तू इज़राईलियों को मिद्यानियों के हाथ से छड़ाएगा। क्या मैंने तुझे नही भेजा? PPHin 566.3

गिदोन कोई प्रतीक चाहता था कि उसे सम्बोधित करने वाला वाचा का स्वर्गदूत था, जिसने बीते समय में इज़राइल के लिये कार्य किये थे। अब्राहम के साथ बातचीत करने वाले परमेश्वर के दूत उसके आतिथ्य का मान रखने के लिये रूके थे, और अब गिदोन ने पवित्र दूत से विनती की कि वह उसका अतिथि बनकर रहे। वह शीघ्र ही अपने तम्बू में गया और उसने अपनी सीमित सामग्री में से बकरी का एक बच्चा और अखमीरी रोटियाँ तैयार की और उसके सामने लाकर रखी। लेकिन स्वर्गदूत ने उससे कहा, "मास और अखमीरी रोटियों को लेकर, इस चटटान पर रख दे, और शोरबे को उण्डेल दे।" गिदोन ने ऐसा ही किया और फिर उसका वांछनीय चिन्ह उसे दिया गया, यहोवा के दूत ने अपने हाथ की लाठी को बढ़ाकर मास और अखमीरी रोटियों को छुआ, और चटटान से आग निकली जिससे मास और अखमीरी रोटियाँ भस्म हो गई, और यहोवा का दूत उसकी दृष्टि से ओझल हो गया। PPHin 566.4

गिदोन के पिता योआश ने, जो अपने देशवासियों की मूर्तिपूजा में भागीदार था, ओप्र में, जहाँ वह रहता था, बाल देवता के लिये एक बड़ी सी वेदी तैयार की थी, जहाँ शहर के लोग आराधना करते थे। गिदोन को आदेश दिया गया कि वह उस वेदी को नष्ट कर दे और उस चट्टान पर, जहाँ

भेंट भस्म हो गई थी, यहोवा के लिये एक वेदी तैयार करे और परमेश्वर के लिये बलि चढ़ाए। परमेश्वर के लिये बलि की भेंट चढ़ाने का कार्य याजकों को सौंपा गया था और शिलोह की वेदी तक सीमित था: लेकिन जिसने व्यवाहारिक विधि का संस्थान किया, और जिसकी ओर उसकी सारी भेंटे संकेत करती थी, उसके पास उसकी आवश्यकताओं को बदलने का अधिकार था। इज़राइल के छुटकारे से पहले बाल की आराधना के विरूद्ध एक विधिवत प्रतिवाद होना था। अपने लोगों के शत्रुओं के साथ युद्ध करने से पहले गिदोन को मूर्तिपूजा पर युद्ध घोषित करना था। PPHin 566.5

पवित्र निर्देश का निष्ठापूर्वक पालन किया गया। यह जानते हुए कि प्रकट रूप से उसका पालन करने से उसका विरोध किया जाएगा, गिदोन ने यह कार्य गुप्त रूप से किया, और अपने दासों की सहायता से, पूरा काम एक रात में समाप्त कर दिया। दूसरे दिन जब ओप्र के पुरूष बाल देवता की उपासना करने आए तो वे अत्यन्त कोधित हुए। यदि योआश, जिसे स्वर्गदूत के प्रकट होने की जानकारी दे दी गई थी, अपने पुत्र के बचाव में खड़ा नहीं हुआ होता तो उन्होंने गिदोन के प्राण ले लिये होते। योआश ने कहा, "क्या तुम बाल के लिये वाद विवाद करोगे? क्या तुम उसे बचाओगे? जो कोई उसके लिये वाद-विवाद करे वह मार डाला जाएगा। सवेरे तक ठहरे रहो, तब तक यदि वह परमेश्वर हो, तो जिस ने उसकी वेदी गिराई है उससे वह आप ही अपना वाद-विवाद करे।" यदि बाल अपनी निजी वेदी का बचाव नहीं कर पाया, उस पर उसके उपासकों को सुरक्षा के लिये कैसे विश्वास किया जाता? PPHin 567.1

गिदोन के प्रति हिंसा के सभी विचारों को रद्द कर दिया गया, और जब युद्ध का बिगुल बजाया गया, ओप्र के पुरूष उसके झण्डे के पास एकत्रित होने वालो में सबसे आगे थे। मनरशे के गोत्र को, जो उसका निजी गोत्र था, और आशेर, जबूलून और नप्ताली के पास सन्देश भेजा गया ओर सभी ने बुलावे का उत्तर दिया। PPHin 567.2

अतिरिक्त प्रमाण के अभाव में की परमेश्वर ने उसे इस कार्य के लिये बुलाया था और यह कि वह उसके साथ रहेगा गिदोन ने स्वयं को सेना का मुख्या होने का दुस्साहस नहीं किया। उसने प्रार्थना की, "यदि तू अपने वचन के अनुसार इज़राइल को मेरे द्वारा छुड़ाएगा, तो सुन, में खलिहान के फर्श पर एक भेड़ का ऊन रखता हू। यदि भेड़ के ऊन पर ओस की बूंदे होगी, जबकि सारी भूमि सूखी है, तब में समझूंगा कि तू अपने कहने के अनुसार मेरा उपयोग इज़राइल की रक्षा करने में करेगा।" सुबह होने पर ऊन गीली थी और भूमि सूखी थी। लेकिन अब एक सन्देह उत्पन्न हुआ, ऊन प्राकृतिक रूप से नमी को सोख लेता है, इसलिये परीक्षण निर्णायात्मक नहीं हो सकता। इस कारण उसने विनती की कि चिन्ह को उलट दिया जाए, और उसने विनती की कि उसकी अत्यधिक सतकता प्रभु को अप्रसन्न न करे। उसका निवेदन स्वीकार कर लिया गया। PPHin 567.3

इस प्रकार प्रोत्साहन पाकर, गिदोन ने घुसपैठियों से युद्ध करने के लिये अपनी सेना का नेतृत्व किया। "मिद्यानी और अमालेकी और सब पूर्वी लोग एकत्रित हुए, और पार आकर यित्रेल की तराई

में डेरे डाले।” गिदोन के दस्ते में केवल बत्तीस हजार पुरूष थे, लेकिन उसके सामने फैली हुई शत्रुओं की विशाल सेना के साथ ही, परमेश्वर का वचन उसके पास आया, “जो लोग तेरे संग है वे इतने हैं कि मैं मिद्यानियों को उनके हाथ नहीं कर सकता, नहीं तो इज़राईली यह कहकर अपनी प्रशंसा करने लगेंगे कि वे अपने भुजबल के द्वारा बचे हैं। इसलिये तू जाकर लोगों में यह प्रचार करके सुना दे, जो कोई डर के मारे थरथरता हो, वह गिलाद पहाड़ से लौटकर चला जाए।” जो कठिनाईयों और खतरों का सामना करने के लिये सहमत नहीं थे, या जिनके सांसारिक रूझान उनके हृदयों को परमेश्वर के काम से दूर करे, वे इज़राइल की सेनाओं को सशक्त नहीं बना सकता था। उनकी उपस्थिति केवल शक्तिहीनता का कारण प्रमाणित होती। PPHin 568.1

इज़राइल में यह नियम बनाया गया था कि युद्ध में जाने से पहले पूरी सेना में यह घोषणा की जाए, “तुम में से कौन है जिसने नया घर बनाया और अब तक उसे अर्पित नहीं किया है? उस व्यक्ति को अपने घर लौट जाना चाहिये। वह युद्ध में मारा जा सकता है और तब दूसरा व्यक्ति उसके घर को अर्पित करेगा। क्या कोई व्यक्ति ऐसा है जिसने अंगूर के बाग लगाए है, किन्तु अभी तक उससे कोई अंगूर नहीं लिया है? उस व्यक्ति को घर लौट जाना चाहिये। यदि वह व्यक्ति युद्ध में मारा जाता है तो दूसरा व्यक्ति उसके बाग के फल को भोगेगा। क्या यहाँ कोई ऐसा व्यक्ति है जिसके विवाह की बात पक्की हो चुकी है। उस व्यक्ति को घर लौट जाना चाहिये। यदि वह युद्ध में मारा जाता है तो दूसरा उस व्यक्ति स्त्री से विवाह करेगा जिसके साथ उसके विवाह की बात पक्की हो चुकी है। “और अधिकारियों को लोगों से यह कहना था, “क्या यहाँ कोई ऐसा व्यक्ति है जो साहस खो चुका है और भयभीत है। उसे घर लौट जाना चाहिये ऐसा न हो कि उसकी देखदेखी उसके भाईयों का भी हियाव टूट जाए।”-व्यवस्थाविवरण 20:5-8। PPHin 568.2

उसके शत्रुओं की सेना की तुलना में, उसकी सेना में सैनिकों की संख्या कम थी, इसलिये गिदोन ने सामान्य घोषणा नहीं की। वह आश्चर्यचकित रह गया, जब यह घोषणा की गई कि उसकी सेना बहुत विशाल थी। लेकिन परमेश्वर ने अपने लोगों के हृदयों में विद्यमान घमण्ड और अविश्वास को देखा। गिदोन के भावोत्तेजक निवेदन से जागृत होकर, वे सहयोग देने को तैयार हो गए थे, लेकिन मियद्यानियों की संख्या देखकर कई भयभीत हो गए थे। लेकिन, यदि इज़राईली विजयी हो जाते, तो इन्होंने ही परमेश्वर को विजय का श्रेय देने के बजाय सारी महिमा स्वयं को दी होती। PPHin 569.1

गिदोन ने परमेश्वर के निर्देश का पालन किया, और भारी मन से बाईस हजार, अर्थात उसकी सम्पूर्ण सेना के दो-तिहाई से अधिक पुरूषों को अपने अपने घरों के लिये प्रस्थान करते देखा। फिर से परमेश्वर का आदेश उसके पास पहुँचा, “अब भी लोग अधिक है, उन्हें सोते के पास नीचे चल, वहाँ मैं उन्हें तेरे लिये परखूँगा, और जिस जिसके विषय में में तुझ से कहूँ, ‘यह तेरे संग चले,’ वह तो तेरे संग चले, और जिस जिसके विषय में कहूँ, “यह तेरे संग न जाए, वह न जाए।” तब वह उनको सोते के पास नीचे ले गया, इस अपेक्षा में कि वे शत्रु पर शीघ्र ही चढ़ाई करेंगे। कुछ लोगों ने बिना

विलम्ब किए थोड़ा सा पानी हाथों में लिया और चलते-फिरते उसे चुसकियाँ लेकर पीते गए, लेकिन अधिकतर अपने घुटनों पर गए और उन्होंने झुककर आराम से नदी की सतह से जल को ग्रहण किया। जिन्होंने जल को अपने हाथों में लिया वे दस हजार में से तीन सौ थे, लेकिन फिर भी इन्हें चुन लिया गया, बाकी सब को घर लौटने की अनुमति दे दी गई। PPHin 569.2

अत्यन्त साधारण तरीकों से चरित्र को परखा जाता है। जो संकटकाल में अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने को तत्पर थे, वे मनुष्य आपातकालीन स्थिति में विश्वास योग्य नहीं थे। PPHin 569.3

परमेश्वर के पास आलसी और आत्म-भोगी मनुष्यों के लिये कोई स्थान नहीं। उसके द्वारा चुने हुए पुरूष वे थोड़ी से थे जिन्होंने अपनी आवश्यकताओं को, उनके कर्तव्य के पालन करने में विलम्ब करने की अनुमति नहीं दी। वे तीन सौ चुने हुए पुरूष ना केवल साहस और आत्म संयम के स्वामी थे, वरन् विश्वास रखने वाले भी थे। उन्होंने स्वयं को मूर्तिपूजा से दूषित नहीं किया था। परमेश्वर उन्हें निर्देशित कर सकता था, और उनके द्वारा इज़राइल को छुटकारा भी दिला सकता था। सफलता संख्या पर निर्भर नहीं होती। परमेश्वर थोड़ो के द्वारा और बहुतों के द्वारा छुटकारा दिला सकता है। वह भारी सख्या से इतना सम्मानित नहीं होता, जितना कि उनके आचरण से जो उसकी सेवा करते हैं। PPHin 569.4

तराईं में घुसपैठियों की सेना ने पड़ाव डाला हुआ था और इज़राइली पर्वत-श्रृ पर डेरा डाले थे। "मिद्यानी और अमालेकी और सब पूर्वी लोग टिडिडयों के समान तराई में फैले पड़े थे, और उनके ऊंट समुद्र तट की बालू के किनको के समान अंसख्या थे"-न्यायियों 7:12। आगामी दिन के संघर्ष के बारे में सोचते हुए गिदोन काँप उठा। लेकिन परमेश्वर ने रात में उससे बात की ओर उसे उसके सेवक फ्रा के साथ मिशद्यानियों की छावनी के पास जाने को कहा और उसे बताया कि वहाँ पहुँचने पर वह कुछ ऐसासुनेगा जिससे उसे प्रोत्साहन मिलेगा। वह गया, और, जब वह चुपचाप अंधेरे में रूका हुआ था, उसने एक सैनिक को अपने साथी को यह स्वप्न सुनाते हुए सुना, "सुन जौ की एक रोटी लुढ़कते लुढ़कते मिद्यान की छावनी में आई, और डेरे को ऐसी टक्कर मारी कि डेरा पलट गया और चौड़ा होकर गिर गया ।" दूसरे ने ऐसे शब्दों में उत्तर दिया, जिन्होंने उस अदृश्य श्राता केह्ददय को झकझोर दिया "यह योआश के पुत्र गिदोन नामक एक इज़राइली पुरूष की तलवार को छोड़ कुछ नहीं है, उसी के हाथ में परमेश्वर ने मिद्यान को सारी छावनी समेत दे दिया है।" गिदोन ने उन मिद्यानी अपरिचितों के माध्यम से उससे बात करते हुए परमेश्वर की वाणी को पहचान लिया। अपने दस्ते के थोड़े से पुरूषों के पास लौटकर उसने कहा, "उठो, यहोवा ने मिद्यानी सेना को तुम्हारे वश में कर दिया है।' PPHin 570.1

पवित्र निर्देश द्वारा उसे आक्रमण की योजना का सुझाव दिया गया जिसे क्रियान्वित करने के लिये वह तुरन्त निकल पड़ा। तीन सौ पुरूषों को तीन टुकड़ियों में विभाजित किया गया। प्रत्येक पुरूष को मिट्टी के घड़े में छुपाकर एक मशाल और हाथ में नरसिंगा दिया गया। सैनिकों को इस

प्रकार ठहराया गया कि वे अलग अलग दिशाओं से चढ़ाई कर सकते थे। बहुत रात होने पर, गिदोन द्वारा युद्ध नरसिंगे के संकेत पर, तीनों टुकड़ियों ने अपने नरसिंगे फके, और फिर अपने घड़े तोड़कर जलती हुईं मशालों को प्रदर्शित करते हुए, वे शत्रु पर युद्ध की ललकार के साथ टूट पड़े, "यहोवा की और गिदोन की तलवार।" PPHin 570.2

सोती हुई सेना चौंक कर जाग गई। उन्होंने अपने चारों और जलती हुई मशालों के प्रकाश को देखा। प्रत्येक दिशा में तुरही का स्वर और आक्रमणकारियों की पुकार सुनाई दे रहे थे। स्वयं को एक अपरिहार्य शक्ति की दया पर निर्भर मानकर, मिद्यानी घबरा गए। खतरे की सूचना की पुकार देते हुए वे अपने प्राण बचाने के लिये भाग खड़े हुए और अपने ही साथियों को शत्रु समझकर, उन्हें एक-दूसरे को मार डाला। विजय का समाचार पाकर, हजारों इज़राइली, जिन्हें घर भेज दिया गया था, लौट आए और अपने भागते हुए शत्रुओं का पीछा करने में जुट गए। नदी के पार अपने निजी भू-खण्ड मे पहुँचने की आशा में मिद्यानी यरदन की ओर जा रहे थे। गिदोन ने एप्रैमी लोगों के पास दूत भेजे और उन्हें दक्षिणी घाट पर भागने वालों का अवरोध करने को उकसाया। इसी दौरान अपने तीन सौ "थक मन्दे' पुरूषों के साथ गिदोन ने नदी को पार किया और उसका पीछा करते रहे जो बहुत आगे निकल चुके थे। जेबह और सल्मुन्ना नामक राजा, जो समस्त सेना के ऊपर थे, जो पन्द्रह हजार पुरूषों की सेना के साथ बच निकले थे, गिदोन द्वारा पराजित कर दिये गए, उनकी सेना को तितर-बितर कर दिया गया, और प्रधानों को जीतकर मार डाला गया। PPHin 571.1

इस महत्वपूर्ण पराजय में एक लाख बीस हजार घुसैपेठिये नष्ट हुए। मिद्यानियों को सामर्थ्यहीन कर दिया गया था, जिससे कि वह इज़राइल पर फिर कभी चढ़ाई नहीं कर पाए। यह सन्देश तेजी से चारो ओर प्रसारित हो गए, कि इज़राइल का परमेश्वर फिर से अपने लोगों के पक्ष में लड़ा था। शब्द वर्णन नहीं कर सकते आस-पास की जातियों के मनों के भय का जब उन्हे ज्ञात हुआ कि दुस्साहसी, रणकुशल लोगों को इतने सामान्य साधनों द्वारा पराजित कर दिया गया था। PPHin 571.2

जिस अगुवे को परमेश्वर ने मिद्यानियों को पराजित करने के लिये चुना था उसका इज़राइल में कोई विशिष्टि स्थान नहीं था। वह ना ही शासक था, ना याजक, और ना ही वह लेैवी था। वह स्वयं को अपने पिता के घर में सबसे न्यूनतम समझता था। लेकिन परमेश्वर उसमें एक साहसी और सत्यनिष्ठ मनुष्य देखता था। उसे स्वयं पर विश्वास नहीं था और वह प्रभु के मार्गदर्शन में चलने को तत्पर था। परमेश्वर अपने काम के लिये हमेशा ही अत्यन्त प्रतिभासम्पन्न मनुष्यों को नहीं चुनता, लेकिन वह उन्हें चुनता है। जिनका वह भली भाँति उपयोग कर सकता है। नीतिवचन में लिखा है, "महिमा से पहले नम्रता आती है।" प्रभु उनके माध्यम से सफलतापूर्वक कार्य कर सकता है जिन्हें अपनी अपर्याप्तता का एहसास होता है और जो उसे अपना अगुवा और अपनी सामर्थ्य का स्रोत मानकर उस पर निर्भर करते है। अपने सामर्थ्य को उनकी निर्बलता के साथ जोड़कर वह उन्हें

सबल बनाता है, और उनकी अज्ञानता का संपर्क अपनी बुद्धिमता से कराकर उन्हें बुद्धिमान बनाता है। PPHin 571.3

यदि वे सच्ची दीनता को संजोए, प्रभु अपने लोगों के लिये बहुत कुछ कर सकता है लेकिन बहुत कम है ऐसे लोग जो सफलता या बहुत भारी उत्तरदायित्व दिये जाने पर आत्मविश्वासी नहीं बनते या परमेश्वर पर उनकी निर्भरता को नहींझेलते। इस कारण, अपने काम के लिये, माध्यमों चुनाव में, संसार द्वारा महान, प्रतिभासम्पन्न और मेघावी माने जाने वाले सम्मानीय व्यक्तियों को छोड़ देता है। वे प्रायः घमण्डी और आत्म-सम्पन्न होते है। वे स्वयं को परमेश्वर के मार्गदर्शन के बिना कार्य करने के योग्य समझते हैं। PPHin 572.1

यरीहों की परिकमा करते हुए यहोशू की सेना द्वारा नरसिंगा फूकने का साधारण कृत्य, और मिद्यान के सेनाओं के चारो तरफ गिदोन की छोटी से टुकड़ी द्वारा अपनाए गए इसी तरीके को, परमेश्वर की सामर्थ्य द्वारा, उसके शत्रुओं को पराजित करने के लिये कारगर बनाया गया। परमेश्वर की सामर्थ्य और बुद्धिमता को छोड़ कर, मनुष्य द्वारा बनाया गया सबसे उत्कृष्ट प्रणाली भी असफल प्रमाणित होगी, जब कि विश्वास और दीनता के साथ अपनाए गए और परमेश्वर द्वारा नियुक्त सबसे निराशामय तरीके सफल हो जाते हैं। परमेश्वर में विश्वास और उसकी इच्छा का पालन आध्यात्मिक युद्ध में मसीहों के लिये उतना ही आवश्यक है जितना कि कनानियों के साथ युद्ध करने में गिदोन और यहोशू के लिये आवश्यक था। इज़राइल के पक्ष में अपने सामर्थ्य के लगातार प्रदर्शनों के द्वारा, परमेश्वर उन्हें उस पर विश्वास रखना सिखा रहा था, ताकि वे प्रत्येक आपातकालीन स्थिति में विश्वास के साथ उससे सहायता माँगे। आज भी वह लोगों के प्रयत्नों में सहयोगी होने और बलहीन साधनों के माध्यम से महान उपलब्धिँयाँ प्राप्त करने के लिये सहमत है। सम्पूर्ण स्वर्ग प्रतीक्षा में है कि हम उसके विवेक और सामर्थ्य की माँग करें। परमेश्वर "ऐसा सामर्थी है कि हमारी विनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है।"-इफिसियों 3:20। PPHin 572.2

गिदोन अपनी प्रजा के शत्रुओं की पीछा करके लौटा ही था, कि उसे अपने ही देशवासियों द्वारा निन्दा और आरोपों का सामना करना पड़ा। जब उसके बुलाने पर इज़राइलियों ने मिद्यानियों के विरूद्ध शक्ति प्रदर्शन किया था, एप्रैम का गोत्र पीछे रह गया था। उन्हें यह प्रयत्न एक खतरनाक कार्य लगा था, और क्योंकि गिदोन ने उन्हे कोई विशिष्ट बुलावा नहीं भेजा, इस कारण, अवसर का फायदा उठाते हुए, उन्होंने अपने भाईयों के साथ सम्मिलित ना होने का बहाना बनाया। लेकिन जब एप्रेमियों के पास इज़राइल की विजय का समाचार पहुँचा, तो वे इर्ष्या से भर गए कि वे इसमें सहभागी न थे। मिद्यानियों को खदेड़ देने के पश्चात गिदोन के निर्देशानुसार एप्रैमियों ने यरदन के घाटों पर अधिकार कर लिया था, ताकि पलायकों को भाग जाने से रोका जा सके। इस युक्ति से भारी संख्या में शत्रु मारे गए, जिनमें ओरेब और जेब दो हाकिम भी थे। इस प्रकार एप्रैम के पुरूषों ने युद्ध की आगे की कार्यवाही की और विजय को सम्पूर्ण किया। लेकिन वे द्वेषपूर्ण और कोधित थे,

मानों गिदोन स्वयं की इच्छा और निर्णय का अनुसरण कर रहा हो। इज़राइल की विजय में वे परमेश्वर के योगदान को न समझ पाए, उनके छुटकारे में उसकी दया और उसके सामर्थ्य के प्रति उन्होंने आभार प्रकट नहीं किया, और इस तथ्य ने उन्हें परमेश्वर के विशेष माध्यम के रूप में चुने जाने के लिये अयोग्य ठहराया। विजय के जयचिन्हों के साथ लोटकर, वे कुछ अवस्था में गिदोन के पास आए और बोले, "तूने हमारे साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया है कि जब तू मिद्यान से लड़ने को चला तब हम को नहीं बुलवाया?' PPHin 572.3

गिदोन ने उनसे कहा, "तुम्हारी तुलना में, मैंने अब क्या किया? क्या एप्रेम की छोड़ी हुई दाख भी अबीएजेर की सब फसल से अच्छी नहीं है? तुम्हारे ही हाथों में, परमेश्वर ने ओरेब और जेब नामक मिथ्यान के हाकिमों को दे दिया है, तब तुम्हारे बराबर में कर ही क्या सका?" PPHin 573.1

ईर्ष्या की भावना कलह में भड़क सकती थी जिसके कारण रक्तपात और संघर्ष होता, लेकिन गिदोन के नम्रतापूर्ण उत्तर ने एप्रैमियों के कोध को शान्त कर दिया, और वे शान्तिपूर्वक अपने घरों को लौट गए। सिद्धान्तों के सन्दर्भ में दृढ़ और अटल और युद्ध में 'शूरवीर सूरमा' गिदोन शिष्टाचार की भावना का भी धनी था जो कम ही देखने को मिलती है। PPHin 573.2

मिद्यानियों से छुटकारे के लिये आभारी होकर, इज़राइलियों ने प्रस्ताव रखा कि गिदोन को उनका राजा बनना चाहिये और उसके वंशजों के लिये सिंहासन निश्चित किया जाना चाहिये। यह प्रस्ताव धर्मतन्त्र के सिद्धान्तों का प्रत्यक्ष खंडन था। परमेश्वर इज़राइल का राजा था, और उनके द्वारा सिंहासन पर एक मनुष्य को विराजमान करना उनके स्वर्गीय सम्राट का तिरस्कार करना था। गिदोन इस तथ्य को पहचानता था, उसका उत्तर प्रमाणित करता है कि उसका उद्देश्य कितना सत्य और उत्कृष्ट था। उसने घोषणा की, "मैं तुम्हारे ऊपर प्रभुता न करूँगा, और न मेरा पुत्र तुम्हारे ऊपर प्रभुता करेगा, यहोवा ही तुम पर प्रभुता करेगा। PPHin 573.3

लेकिन गिदोन एक अन्य गलती कर बैठा जिसके कारण उसके घराने पर और सम्पूर्ण इज़राइल पर विपत्ति आ पड़ी। महान संघर्ष के पश्चात निष्क्रियता का काल संघर्ष की कालावधि से भी अधिक खतरों से भरपूर होता है। अब गिदोन के सम्मुख यह खतरा था। बैचेनी की भावना ने उसे घेर लिया। इससे पहले वह परमेश्वर द्वारा दिये गए निर्देशों का पालन करने में सन्तुष्ट था, लेकिन अब पवित्र मार्गदर्शन के लिये रूकने के बजाए, उसने स्वयं के लिये योजना बनाना आरम्भ कर दिया। जब परमेश्वर की सेनाओं को महत्वपूर्ण विजय प्राप्त होती है, शैतान परमेश्वर के कार्य को विफल करने के अपने प्रयत्नों को दुगना कर देता है। इस प्रकार गिदोन के मन में वे विचार और योजनाएँ सुझाई गई, जिनके द्वारा इज़राइल की प्रजा पथभ्रष्ट हो गई। PPHin 574.1

गिदोन को स्वर्गदूत के प्रकट होने के स्थान पर बलि की भेंट चढ़ाने की आज्ञा दी गई थी, इसलिये वह इस निष्कर्ष पर पहुँच गया कि उसे याजक के तौर पर कार्यरत होने को नियुक्त किया गया है। पवित्र सहमति के लिये रूके बिना, उसने उचित स्थान प्रदान करने का और उस पवित्र

स्थान पर वैसी ही आराधना की व्यवस्था को स्थापित करने का निश्चय किया। सशक्त लोकप्रिय भावना उसके पक्ष में थी, इसलिये अपनी योजना को क्रियान्वित करने में उसे कोई कठिनाई नहीं हुई। उसके निवेदन पर मिशद्यानियों से लिये सोने के कर्ण आभूषण उसे लूट के उसके हिस्से के तौर पर दिये गए। लोगों ने इसके अलावा भी कई बहुमूल्य वस्तुएँ और मिद्यान के हाकिमों के सुसज्जित वस्त्र भी इकट्ठे किये। जुटाए गए सामान से गिदोन ने एक एपोद, जो महायाजक द्वारा पहने जाने वाले एपोद का प्रतिरूप था, बनवाया। उसका यह कत्य स्वयं उसके लिये, उसके परिवार के लिये और इज़राइल के लिये एक फन्दा प्रमाणित हुआ। इस अनधीकृत आराधना के कारण कई लोगों ने अन्तत: प्रभु को बिल्कुल त्याग दिया, और मूर्तियों को पूजने लगे। गिदोन की मृत्यु पश्चात, भारी संख्या में लोगों ने, जिनमें उसका परिवार भी था, स्वधर्म त्याग किया। जिस व्यक्ति ने उनमें से मूर्तिपूजा को उखाड़ फेंका था, उसी के द्वारा वे परमेश्वर से दूर कर दिये गए। PPHin 574.2

बहुत कम हैं वे लोग जिन्हे एहसास होता है कि कर्मा और शब्दों का प्रभाव कितना व्यापक होता है। कितनी बार माता-पिता की गलतियाँ उकी संतान और संतान की सन्तानों पर दुष्प्रभाव डालती है, कार्य करने वाले कब्र में चले जाते है, पर प्रभाव छोड़ जाते है। सभी दूसरों पर प्रभाव डालते है, और उस प्रभाव के परिणाम के लिये वे उत्तरदायी होते है। कर्मा और शब्दों में प्रभावशाली शक्ति होती है, और इसके बाद का लम्बा समय हमारे यहाँ के जीवन का प्रभाव दिखाएगा। हमारे शब्दों और कर्मा के प्रभाव की प्रतिक्रिया हम ही पर आशीष या श्राप के रूप में होती है। यह धारणा जीवन को अत्यन्त गम्मैरता प्रदान करती है, और हमें दीनता भरी प्रार्थनाओं द्वारा परमेश्वर की ओर खींचती है ताकि वह हमें उसकी बुद्धिमता से मार्गदर्शित कर सके। PPHin 575.1

जो उच्चतम पदों पर खड़े है, वे हमें पथग्रष्ट कर सकते है। सबसे बुद्धिमान गलती करते है, सबसे शक्तिशाली डगमगा सकते हैं, और ठोकर खा सकते हैं। हमारी सुरक्षा इसी में है कि जिस मार्ग पर हम चलेंउस परमेश्वर पर विश्वास रखते हुए चलें जिसने कहा है, "मेरे पीछे हो ले। PPHin 575.2

गिदोन के मरणोपरांत इज़राइलियों ने अपने परमेश्वर यहोवा को, जिसने उन्हें चारों ओर के सब शत्रुओं के हाथ से छूड़ाया था, स्मरण न रखा। और ना उन्होंने यरूब्बाल अर्थात गिदोन की उस सारी भलाई के अनुसार जो उसने इज़राइलियों के साथ की थी उसके घराने को प्रति दिखाई ।" उनके न्यायी और मुक्तिदाता, गिदोन को देय सब कुछ भूलकर, इज़राइल के लोगो ने उसके अकूलीन पुत्र अबीमेलक को अपने राजाके रूप में स्वीकार किया, जिसने अपनी सत्ता को बनाए रखने के लिये, एक को छोड़कर गिदोन क सभी वैध सन्तानों की हत्या कर दी। जब मनुष्य परमेश्वर का भय मानना समाप्त कर देते हैं तो वे सम्मान और अखण्डता से अलग होने में बिलम्ब नहीं करते। परमेश्वर की दयालुता के प्रति आभारी होने से, हम उन लोगों के भी आभारी होंगे, जिन्हें गिदोन की तरह लोगों को आशीषित करने के साधन के रूप में उपयोग किया गया है। गिदोन के घराने के

प्रति इज़राइल का निदयतापूर्ण व्यवहार उन लोगों से अपेक्षित किया जा सकता है जिन्होंने परमेश्वर के प्रति घोर अकृतज्ञता प्रकट की थी। PPHin 575.3

अबीमेलेक की मृत्यु के बाद मूर्तिपूजा पर रोक लगाने के लिये कुछ समय तक न्यायियों का शासन रहा, लेकिन कुछ ही समय पश्चात लोग उनके चारों और की अधर्मी जातियों के रीति-रिवाजों में लौट गए। उत्तर में बसे गोत्रों में सीरिया और सिदोन के देवी-देवताओं के बहुत उपासक थे। दक्षिण में पलिश्तियों की मूर्तियाँ, पूर्व में मोआब और अम्मोन की मूर्तियों ने इज़राइलियों के हृदय को उनके पूर्वजों के परमेश्वर से फिरा दिया। लेकिन स्वधर्म त्याग शीघ्र ही अपना दण्ड लेकर आया। अम्मोनियों ने पूर्वी गोत्रों को अधीकत किया और यरदन को पार करके, यहूदा और एप्रेम के राज्य क्षेत्र पर चढ़ाई की। पश्चिम में पलिश्ती समुद्र के किनारे की तराई से ऊपर की ओर व्यापक रूप से लूटपाट करते ओर आगजनी करते हुए आए। एक बार फिर इज़राइली निर्दयी, शत्रुओं के द्वारा अधीकत होने के लिये छोड़ दिये गए प्रतीत हो रहे थे। PPHin 575.4

फिर से लोगों ने उससे सहायता माँगी जिसे उन्होंने छोड़ दिया था और अपमानित किया था। "तब इज़राइलियों ने यह कहकर यहोवा की दुहाई दी, हम ने जो अपने परमेश्वरको तयागकर बाल देवताओं की उपासना की है, यह हमने तेरे विरूद्ध महापाप किया है।" लेकिन दुख ने उनसे सच्चा प्रायश्चित नहीं करवाया। वे इसलिये शोकित थे क्योंकि उनके पापों के कारण उन पर कष्ट आए थे, लेकिन इसलिये नहीं कि उन्होंने परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लघंन करके उसका अपमान किया था। सच्चे प्रायश्चित का तात्पर्य केवल पाप के लिये दुख नहीं है, यह पाप से मुहँ फेर लेने का दृढ़ संकल्प है। PPHin 576.1

परमेश्वर ने अपने एक भविष्यद्वक्ता के माध्यम से उन्हे उत्तर दिया, "क्या मैंने तुम को मिस्रियों, एमोरियो, अम्मोनियो और पलिश्तियों के हाथ से न छड़ाया था? फिर जब सीदोनी और अमालेकी, और माओनी लोगों ने तुम पर अन्धेर किया, और तुमने मुझे पुकारा, तब मैंने तुम को उनके हाथ से भी न छड़ाया, तौमी तुम ने मुझे त्यागकर पराए देवताओं की उपासना की है, इसलिये मैं फिर तुम को न छुड़ाऊंगा। जाओ, अपने माने हुए देवताओं की दुहाई दो, तुम्हारे संकट के समय वे ही तुम्हे छूड़ाएँ। PPHin 576.2

यह गम्भीर और भयावह शब्द विवेक को एक अन्य दृश्य की ओर ले जाते है-- अन्तिम निर्णय का महान दिन-जब परमेश्वर की दया का तिरस्कार करने वाले और उसके अनुग्रह को ठुकराने वालों का सामना उसकी दण्डाज्ञाओं से होगा। जिन्होंने भी परमेश्वर द्वारा दिए गए समय, साधनों और विवेक की क्षमता को इस संसार के देवी-देवताओं की उपासना में समर्पित किया है, उन्हें उस न्यायालय में जबाव देना होगा। सांसारिक आमोद-प्रमोद और सुख-सुविधाओं के मार्ग पर चलने के लिये उन्होंने अपने सच्चे और प्रिय मित्र को छोड़ दिया है। किसी समय वे परमेश्वर के पास लौटना चाहते थे, लेकिन संसार ने अपने छलावों और मूढ़ता से ध्यान-मग्न कर दिया। चंचल मनोरंजन, वस्त्रों

के घमण्ड, स्वाभाविक इच्छाओं की पूर्ति ने उनके हृदयों को कठोर और अन्तरात्मा को सुन्न कर दिया, जिससे सत्य की आवाज सुनी न गईं। कर्तव्य का तिरस्कार किया गया। असीम महत्व की बातों को बहुत कम मान्यता दी जाती थी, जब तक कि मनुष्य के हृदय से परमेश्वर के लिये, जिसने मनुष्य के लिये इतना कुछ दिया था, बलिदान करने की अभिलाषा समाप्त हो गई। लेकिन कटनी के समय वे वही काटेंगे जो उन्होंने बोया है। PPHin 576.3

परमेश्वर कहता है, "मैंने तो पुकारा, परन्तु तुम ने इन्कार किया, और मैंने हाथ फैलाया, परन्तु किसी ने ध्यान नहीं दिया, वरन् तुम ने मेरी सारी सम्मति को अनसुना किया, और मेरी ताड़ना का मूल्य न जाना, इसलिये मैं भी तुम्हारी विपत्ति के समय हसूँगा, और जब तुम पर भय आ पड़ेगा, वरन् तुमपर आँधी के समान भय आ पड़ेगा, और विपत्ति बवण्डर के समान आ पड़ेगी और तुमपर संकट और यातनाएँ आएँगी। उस समय वे मुझ यत्न से तो ढूँढेगे, परन्तु न पाएँगे। क्योंकि उन्होंने ज्ञान से बैर किया, और यहोवा का भय मानना उनको न भाया। उन्होंने मेरी सम्मति न चाही, वरन् मेरी सब ताड़नाओं को तुच्छ जाना। इसलिये वे अपनी करनी का फल आप भोगेंगे और अपनी युक्तियों के फल को भोंगेंगे और अपनी योजनाओं के कफल से अघाएँगे।" "परन्तु जो मेरी सुनेगा, वह निडर बसा रहेगा, और बेखटके सुख से रहेगा। - नीतिवचन 1:24-31,33 PPHin 577.1

अब इज़राईलियों ने स्वयं को प्रभु के सम्मुख दीन किया "तब वे पराए देवताओं को अपने मध्य में से दूर करके यहोवा की उपासना करने लगे।" और प्रभु का प्रेमपूर्ण हृदय खेदित हुआ- "इज़राईलियों के कष्ट के कारण खेदित हुआ।" आह, हमारे परमेश्वर की चिरसहिष्णु करूँगा! जब उसके लोगों ने उन पापों को त्याग दिया जिनके कारण परमेश्वर की उपस्थिति बाहर हो गईं थी, उनकी प्रार्थनाओं को सुना और उनके लिये कार्य करना आरंभ कर दिया। गिलाद के यिप्ताह नामक व्यक्ति को उनके मुक्तिदाता के रूप में खड़ा किया गया, जिसने अम्मोनियों पर चढ़ाई करक उनकी शक्ति को नष्ट किया। PPHin 577.2

इस समय इज़राइल ने अठारह वर्षों तक अपने शत्रुओं के अत्याचार को सहन किया था, लेकिन वे फिर से उस सबक को भूल गए जो कष्ट ने उन्हें सिखाया था। PPHin 578.1

जब परमेश्वर की प्रजा बुराई के मार्ग पर लौट गई, तो उसने उन्हें उनके शक्तिशाली पलिशिती शत्रुओं द्वारा उत्पीड़ित होने दिया। कई वर्षो तक उन्हें लगातार सताया गया और किसी किसी समय इस निर्दयी, लड़ाक् जाति द्वारा पूर्ण रूप से अधीकृत कर लिया गया। इज़राइली इन मूर्तिपूजकों के साथ मिलजुल गए थे, उनके आमोद-प्रमोद और आराधना में सम्मिलित हो गए थे जब तक कि वे रूचि और स्वभाव में उनके साथ एक हो गए। फिर इज़राइल के ये तथाकथित मित्र उनके कट्टर शत्रु बन गए और प्रत्येक साधन से उनका विनाश करने में जुट गए। PPHin 578.2

इज़राइल के समान, मसीही भी प्रायः संसार के प्रभाव को समर्पण कर देते है और अधर्मियों से मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध रखने के लिये उसके सिद्धान्तों और रीति-रिवाजों को मानने लगते है, लेकिन

अन्त में ज्ञात होगा यही तथाकथित मित्र, शत्रुओं में सबसे खतरनाक है। बाईबल स्पष्ट रूप से सिखाती है कि परमेश्वर के लोगों और संसार में कोई सामंजस्य नहीं हो सकता। “हे भाईयों, यदि संसार तुम से बेर करता है तो अचम्भा न करना ।”यहुन्ना 3:14। हमारा उद्धारकर्ता कहता है, “यदि संसार तुम से बैर रखता है, तो तुम जानते हो कि उसने तुम से पहले मुझ से बैर रखा ।”-यहुन्ना 15:18 । परमेश्वर के लोगों को भरमाने के लिये, शैतान दिखावटी मित्रता की आढ़ में, अधर्मियों के माध्यम से कार्य करता है, ताकि वह उन्हें परमेश्वर से अलग कर सके, और जब वे बचाव से वंचित हो जाते है, तब वह अपने कर्मकों को उसके विरूद्ध कर देता है और उसके विनाश को परिपूर्ण करने में जुट जाता है।

अध्याय 54—शिमशोन

यह अध्याय न्यायियों 13 से 16 पर आधारित है

सर्वव्यापी स्वधर्म-त्याग के समय में भी परमेश्वर के श्रद्धालु उपासक इज़राइल के छुटकारे के लिये विनती करते रहे। यद्यपि प्रकट रूप से कोई उत्तर नहीं मिला, यद्यपि लगातार कई वर्षो तक देश पर अत्याचारियों का पलड़ा भारी होता रहा, परमेश्वर उनके लिये सहायता जुटा रहा था। पलिश्तियों के अत्याचार के प्रारम्भिक वर्षों में ही एक बालक उत्पन्न हुआ जिसके माध्यम से परमेश्वर उन बलवन्त शत्रुओं की ताकत को वश में करना चाहता था। PPHin 579.1

पलिशित तराईं से लगे हुए पहाड़ी प्रदेश की सीमा पर सोरा का छोटा सा शहर था। दान का गोत्र उन थोड़े से घरानों में से था जो सार्वजनिक धर्मत्याग के दौरान यहोवा के प्रति सत्यनिष्ठ बने रहे, और दान के गोत्र से मनोह का परिवार सोरा में वास करता था। मनोह की सन्तानहीन पत्नी को परमेश्वर के स्वर्गदूत' ने प्रकट होकर यह सन्देश दिया कि उसने एक पुत्र उत्पन्न होगा, जिसके माध्यम से परमेश्वर इज़राइल को छुटकारा दिलाना प्रारम्भ करेगा। इस सन्दर्भ में स्वर्गदूत ने उसकी निजी आदतों से सम्बन्धित और उसके पुत्र के पालन-पोषण के बारे में भी निर्देश दिये, "इसलिये अब सावधान रह कि न तो तू दाखमधु या और किसी प्रकार की मदिरा पिए, और न कोई अशुद्ध वस्तु खाए।' और यही प्रतिबंध प्रारम्भ से ही उस बालक पर भी लागू होना था, और इसके अतिरिक्त उसके सिर के केश नहीं काटे जाने थे, क्योंकि जन्म से ही उसे एक नाजीर के तौर पर परमेश्वर के लिये अर्पित किया जाना था। PPHin 579.2

उस स्त्री ने अपने पति के साथ जाकर, स्वर्गदूत का वर्णन करने के पश्चात्, उसके सन्देश को दोहराया। फिर, इस डर से कि उनको सुपुर्द किये इस महत्वपूर्ण कार्य में वे कोई गलती न कर बेठें, पति ने प्रार्थना की, "परमेश्वर का वह जन जिसे तू ने भेजा था फिर हमारे पास आए, और हमें सिखलाए कि जो बालक उत्पन्न होने वाला है उसके साथ हमें क्या करना चाहिये।" PPHin 579.3

जब स्वर्गदूत दोबारा प्रकट हुआ, मनोह ने उत्सुकतावश पूछताछ की, "उस बालक के जीने का तरीका कैसा होगा और उसका व्यवसाय क्या होगा?" पिछली बार दिये गए निर्देश को दोहराया गया, "जितनी वस्तुओं की चर्चा मैंने इस स्त्री से की थी उन सब से यह परे रहे। यह कोई वस्तु जो दाखलता से उत्पन्न होती है, न खाए, और न दाखमधु या और किसी भांति की मदिरा पिए, और न कोई अशुद्ध वस्तु खाए, जो जो आज्ञा मैंने इसको दी थी उसी को यह माने। PPHin 579.4

परमेश्वर के पास मनोह के प्रतिश्रुत सन्तान से करवाने के लिये एक महत्वपूर्ण कार्य था, और इस काम के लिये उसमें वे आवश्यक योग्यताएँ सुरक्षित करने के लिये, माँ और बेटे दोनों की आदतों को सावधानी से नियंत्रित करना था ।मनोह की पत्नी के लिये स्वर्गदूत का यह निर्देश था, "ना तो उसे

दाखमधु और ना ही कोई किण्वित पेय पदार्थ पीने देना" "और ना ही कोई अशुद्ध वस्तु। जिस सब की मैंने आज्ञा दी है, उसका उसे पालन करने दे।" माँ की आदतों के द्वारा बच्चा अच्छे या बुरे के लिये प्रभावित होता है। स्वयं उसे सिद्धान्त से नियन्त्रित होना चाहिये और यदि वह अपने बच्चे का भला चाहती है तो उसे आत्म-संयम और आत्म-त्याग का अभ्यास करना चाहिये। विवेकहीन सलाहकार माँ पर प्रत्येक इच्छा और लालसा को तृप्त करने की आवश्यकता पर जोर देंगे, लेकिन ऐसी शिक्षा झूठी और हानिकारक होती है। माँ को स्वयं परमेश्वर के आदेशानुसार आत्म-संयम का अभ्यास करने को कहा गया है। PPHin 580.1

माता और पिता, दोनों ही इस उत्तरदायित्व में भागीदार हैं। दोनो ही अपनी निज विशेषताएँ, मानसिक व शारीरिक, अपना स्वभाव और प्रवृति अपनी संतान में संकामित करते हैं। पैतृक असंयम के कारणवश संतान मे नैतिक और मानसिक क्षमता और शारीरिक शक्ति का अभाव होता है। मदिरापान वाले और तम्बाकू खाने वाले अपनी अतृप्य तृष्णा, अपने उत्तेजनापूर्ण कर सकते है और करते है। व्यभिचारी प्रायः अपनी अपवित्र इच्छाओं और घृणास्पद रोगों को अपने वंशजो के लिये विरासत के तौर परदेते है। संतानों के पास प्रलोभन का प्रतिकार करने की शक्ति अपने अभिभावकों से कम होने के कारण प्रत्येक पीढ़ी अपनी प्रवृति के अनुसार नीचे गिरते जाते हैं। काफी हद तक माता-पिता न केवल अपने बच्चों की विकृत प्रवृतियों और हिंसक आवेगों के लिये उत्तरदायी है वरन उन हजारों की दुर्बलताओं का भी कारण है जो बहरे, अन्धे, रूग्ण या मूर्ख पैदा होते है। PPHin 580.2

प्रत्येक माता-पिता को पूछना चाहिये, "हम उस बच्चे के लिये क्या करे जो उत्पन्न होने वाला है?" प्रसवपूर्व प्रभाव की आवृत्ति को कोई लोग महत्वहीन समझते है, लेकिन उन इब्री अभिभावकों को स्वर्ग से दिया गया निर्देश, जिसे दो बार स्पष्ट और औपचारिक रूप से दोहराया गया, इस बात की पुष्टि करता है कि सृष्टिकर्ता इस विषय को किस प्रकार देखता है। PPHin 580.3

यह पर्याप्त नहीं था कि प्रतिश्रुत बालक को अपने अभिभावकों से एक अच्छी विरासत मिले। इसके बाद विवेकपूर्ण प्रशिक्षण और सदव्यवहार का विकास होना अनिवार्य था। परमेश्वर ने निर्देश दिया कि भावी न्यायाधीश और इज़राइल के मुक्तिदाता को बचपन से आत्म-संयम में प्रशिक्षण दिया जाए। उसे जन्म से नाजीर होना था, इस कारण उसके लिये हमेशा के लिये दाखमधु या किण्वित पेय पदार्थों का प्रयोग प्रतिबंधित था। आत्म संयम, आत्म-त्याग और आत्म-नियन्त्रण बच्चों को बचपन से सिखाया जाना चाहिये। PPHin 581.1

स्वर्गदूत की निषेधाज्ञा में, (प्रत्येक अशुद्ध वस्तु' सम्मलित थी। भोजन वस्तुओं के शुद्ध या अशुद्ध होने का अंतर निरा रीति-सम्बन्धी और एकपक्षीय अधिनियम नहीं था, वरन् वह स्वास्थ्य संबंधी सिद्धान्तों पर आधारित था। जिस आश्चर्यजनक प्राण-शक्ति ने हजारों वर्षों से यहूदी लोगों को विशिष्टता प्रदान की है, उसे काफी हद तक इस अन्तर को मान्यता देने से जोड़ा जा सकता है।

आत्म-संयम के सिद्धान्तों को किण्वित पेय पदार्था के प्रयोग से भी आगे ले जाया जाना चाहिये। अपचनीय और उत्तेजनापूर्ण भोजन भी स्वास्थ्य के लिये प्राय: उतनाही हानिकारक होता है और कई बार मादकता के बीज बो देता है। वास्तविक आत्म-संयम हमें सिखाता है कि हम हानिकारक वस्तुओं को पूर्णतया त्याग दे और स्वास्थ्यवर्धक वस्तुओं का विवेकपूर्ण प्रयोग करें। बहुत कम हैं वे लोग जो समझते है, जैसा कि उन्हें समझना चाहिये कि उनकी आहार सम्बन्धी आदतों का उनके स्वास्थ्य, उनके आचरण, इस संसार में उनकी उपयोगिता और उनकी सनातन नियति से कितना गहरा सम्बन्ध है। स्वाभाविक इच्छाएँ हमेशा नैतिक और बौद्धिक शक्तियों के पराधीन होना चाहिये। शरीर को विवेक का दास होना चाहिये ना कि विवेक को शरीर का। PPHin 581.2

मनोह से की गई पवित्र प्रतिज्ञा एक पुत्र के जन्म के द्वारा नियत समय पर परिपूर्ण हुई, और उस बालक का नाम शिमशोन रखा गया। लड़का जब बड़ा हुआ तो यह प्रमाणित हो गया कि वह असाधारण शारीरिक शक्ति का स्वामी था। हालाँकि शिमशोन और उसके माता-पिता यह भली भाँति जानते थे कि यह उसकी कसी हुई मॉस-पेशियों पर निर्भर होनी थी, वरन् उसके नाजीर होने में थी जिसका प्रतीक उसके लम्बे अनकटे केश थे। यदि शिमशोन ने, अपने माता-पिता के समान पवित्र आज्ञा का निष्ठापूर्ण पालन किया होता तो उसकी नियति श्रेष्ठठर और आनन्दमय होती। लेकिन मूर्तिपूजकों की संगत ने उसे भ्रष्ट कर दिया। सोरा शहर पलिशितियों के देश के समीप था, इसलिये शिमशोन ने उनके साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाए। अपनी नौजवानी में अनैतिक प्रेमसम्बन्ध स्थापित हो गए जिसके प्रभाव ने उसके सम्पूर्ण जीवन को अन्धकारमय बना दिया । तिम्ना के पलिश्ति शहर में रहने वाली एक नवयुवती ने शिमशोन को आकर्षित किया और शिमशोन ने उसे अपनी पत्नी बनाने का संकल्प लिया। परमेश्वर का भय मानने वाले उसके माता-पिता, जिन्होंने उसको उसके उद्देश्य के विपरीत परामर्श देने का प्रयत्न किया, उनको उसने उत्तर दिया, “वह मुझे बहुत अच्छी लगती है।” माता-पिता ने उसकी इच्छाओं के आगे समर्पण कर दिया और विवाह हो गया। PPHin 581.3

जब वह पुरूषत्व में प्रवेश करने की वाला था-उस समय में जब उसे ईश्वरीय विशेष कार्य को क्रियान्वित करना था- अन्य समयों से अधिक महत्वपूर्ण जब उसे परमेश्वर के प्रति निष्ठावान होना चाहिये था-शिमशोन ने स्वयं को इज़राइल के शत्रुओं से सम्बद्ध कर लिया। उसने यह नहीं पूछा कि वह अपनी पसन्द की वस्तु को पाकर परमेश्वर की बेहतर महिमा कर सकता था या वह स्वयं को उस स्थान पर रख रहा था जहाँ वह उस उद्देश्य को पूरा नहीं कर सकता था जो उसके जीवन से सम्पन्न होना था। जो सबसे पहले परमेश्वर को सम्मानित करने का प्रयास करते हैं, उन्हें परमेश्वर बुद्धिमत्ता का आश्वासन देता है, लेकिन स्वयं को सन्तुष्ट करने पर तुले हुए लोगों के लिये कोई प्रतिज्ञा नहीं। PPHin 582.1

कितने है जो उसी मार्ग पर चल रहे हैं जिस पर शिमशोन चला था। कितनी बार विवाह धर्मियों और अधर्मियों के बीच सम्पन्न होते हैं क्योंकि पति और पत्नी के चयन में रूझान को प्राथमिकता दी जाती है। दोनो ही पक्ष न तो परमेश्वर का परामर्श लेते हैं और ना ही उसके गौरव को देखते हैं। वैवाहिक सम्बन्ध पर मसीहत का नियन्त्रकारी प्रभाव होना अनिवार्य है, लेकिन प्राय: ऐसा होता है कि इस सम्बन्ध से जुड़ा उद्देश्य मसीही सिद्धान्तों के अनूकूल नहीं होता। शैतान परमेश्वर के लोगों को अपनी प्रजा के साथ सम्बन्ध स्थापित करने के लिये उकसाने कर, उन पर अपने आधिपत्य को दृढ़ करने के लगातार प्रयास कर रहा है, और इसको सम्पूर्ण करने के लिये वह हृदय में अपवित्र भावनाएँ जागृत करने का प्रयत्न करता है। लेकिन परमेश्वर ने स्पष्ट रूप से अपने वचन में अपने लोगों निर्देश दियाहै कि वे उनके साथ सम्बन्ध ना जोड़ें जिनमें उसके प्रेम का वास नहीं। "और मसीह का बलियाल के साथ क्या लगाव? या विश्वासी के साथ अविश्वासी का क्या नाता? और मूर्तियों के साथ परमेश्वर के मन्दिर का क्या सम्बन्ध?? 2 कुरिन्थियों 6:15,16। PPHin 582.2

विवाह समारोह के अवसर पर शिमशोन का इज़राइल के परमेश्वर से घृणा करने वालों के साथ परिचय हुआ। जो भी स्वेच्छा से ऐसे सम्बन्ध जोड़ता है, वह काफी हद तक, अपने साथियों के रीति-रिवाजों और आदतों से सहमत होने की आवश्यकता को महसूस करता है। इस तरह बिताया हुआ समय, व्यर्थ गवॉने से ही बुरा है। ऐसे विचारों को माना जाता है और ऐसे शब्द बोले जाते हैं जो सिद्धान्त के गढ़ को गिरा देते है और आत्मा के किले को दुर्बल बना देते हैं। PPHin 583.1

वह पत्नी, जिसे पाने के लिये शिमशोन ने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया था, विवाह समारोह के समापन के पूर्व ही अपने रीति के प्रति विश्वासघाती प्रमाणित हुई । उसके विश्वासघात से कोधित होकर, कुछ समय के लिये शिमशोन ने अपनी पत्नी को छोड़ दिया और सोर में अपने घर अकेला ही चला गया। बाद में दया करके, जब वह अपनी पत्नी को लाने के लिये लौटा, तो उसने उसे अन्य पुरूष की पत्नी पाया। पलिश्तियों की दाख की बारियों और खेतों को नष्ट करके शिमशोन ने अपना प्रतिशोध लिया, जिससे भड़क कर उन्होंने उसी स्त्री की हत्या कर दी, जबकि उन्हीं की धमकियों ने उससे वह छल करवाया था जिसके कारण यह क्लेश आरम्भ हुआ। PPHin 583.2

अश्कलोन के तीस पुरूषों को मारकर और एक सिंह को निहत्थे वअकेले घात कर अपनी आश्चर्यजनक शक्ति का प्रमाण दे चुका था। शिमशोन ने अब, अपनी पत्नी की नृशंस हत्या से कोधित होकर, पलिश्तियों पर चढ़ाई कर "बड़ी निष्ठुरता के साथ बहुतों को'मार डाला।" तब अपने शत्रुओं के पास से सुरक्षित लौटने की इच्छा से, वह '"एताम नामक चट्टान' की दरार में जाकर रहने लगा जहाँ यहूदा का गोत्र रहता था। PPHin 583.3

एक शक्तिशाली सेना ने उसका इस स्थान तक पीछा किया, और यहूदा के वासियों ने अत्यन्त भयभीत होकर, शिमशोन को उसके शत्रुओं के हाथों में देकर नीचतापूर्ण कार्य किया। तदनुसार, यहूदा के तीन हजार पुरूष एताम नामक चट्टान में उसके पास गए। लेकिन ऐसी अनुकूल परिस्थिति

में भी उन्होंने उस पर चढ़ाई करने का दुस्साहस नहीं किया होता, यदि वे आश्वस्त नहीं होते कि वह अपने निज देशवासियों को हानि नहीं पहुँचाएगा। शिमशोन इस बात के लिये सहमत हो गया कि उसको बाँधकर पलिश्तियों को सौंप दिया जाए, लेकिन उसने यहूदा वासियों से शथप ली कि वे स्वयं उस पर प्रहार नहीं करेंगे, और इस रीति से उसे बाध्य नहीं करेंगे कि वह उन्हें नष्ट कर डाले। उसने उनके द्वारा स्वयं को दो नई रस्सियों से बंधने दिया और उल्लास भरे प्रदर्शनों के साथ उसे उसके शत्रुओं की छावन में ले जाया गया। लेकिन जब उनकी ललकार पहाड़ो की गूंज को जागृत कर रही थी, 'तब यहोवा का आत्मा उस पर बहुतयात से उतरा। उसने नई रस्सियों को ऐसे टुकड़े-टुकड़े कर डाला मानो वह आग में जला सन हो। फिर उस हथियार को ले, जो उसे सबसे पहले मिला, जो कि केवल एक गधे के जबड़े की हड्डी थी, पर भाले या तलवार से भी अधिक कारगर प्रमाणित हुई, उसने पलिश्तियों पर ऐसा प्रहार किया कि वे डरकर भाग खड़े हुए और अपने पीछे एक हजार पुरूषों को मैदान में मरा हुआ छोड़ गए। PPHin 583.4

यदि इज़राइली शिमशोन के साथ एक होकर इस विजय की आगे की कार्यवाही करने को तैयार होते तो इस समय स्वयं को अपने दमनकारियों से स्वतन्त्र करा लेते। लेकिन वे हतोत्साहित और कायरतापूर्ण हो गए थे। अधर्मियों के निष्कासन में जिस कार्य को करने की आज्ञा इज़राइलियों को परमेश्वर ने दी थी, उसकी उन्होंने उपेक्षा की थी, और उनकी निर्दयता को सहन करते हुए उनकी अपमानजनक प्रथाओं में उनके साथ सम्मिलित हो गए थे, और जब तक यह उनके ही विरूद्ध संचालित न की गई, वे उनके अन्याय का भी प्रतिपालन करते रहे। जब वे स्वयं अत्याचारी के अधीन हो गए, वे सरलता से उस दुर्दशा के अधीन हो गए, जिससे, यदि उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया होता, वे बच सकते थे। परमेश्वर द्वारा उनके लिये मुक्तिदाता खड़ा करने के बाद भी, वे प्रायः उसे छोड़कर, शत्रु के सहयोगी हो जाते थे। PPHin 584.1

शिमशोन की इस विजय के पश्चात् इज़राइलियों ने उसे न्यायाधीश बना दिया और उसने बीस वर्ष तक इज़राइल पर राज किया। लेकिन एक गलत कदम दूसरे के लिये मार्ग तैयार करता है। पलिश्तियों में से पत्नी लेकर शिमशोन ने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लघंन किया था, और फिर से उसने नियम विरूद्ध लालसाओं की तृप्ति के लिये उनके बीच जोखिम उठाया जो अब उसके शत्रु थे। अपनी उस शक्ति में विश्वास रखकर, जिसने पलिश्ितियों को इतना भयभीत कर दिया था,उसने गाज़ा की एक कसबी से भेंट करने, वहाँ जाने का दुस्साहस किया । नगरवासियों को उसकी उपस्थिति की जानकारी मिली और वे प्रतिशोध लेने के लिये आतुर थे। उनका शत्रु उनके शहरों में से सबसे आरक्षित शहर की सीमाओं के भीतर था, और वे शिमशोन को दबोचने के लिये निश्चिन्त थे, और अपनी विजय को सम्पन्न करने के लिये केवल प्रातः: काल तक रूके। मध्यरात्रि को शिमशोन को जागृत किया गया। अन्तरात्मा की दोष लगाती आवाज ने उसे ग्लानि से भर दिया और उसे स्मरण हुआ कि उसने नाजीर के तौर पर ली गईं शपथ का खंडन किया था। लेकिन उसके पाप के बावजूद, परमेश्वर की दया उस पर बनी हुई थी। उसके छूटकारे के लिये एक बार फिर उसकी

असाधारण शक्ति ने साथ दिया। वह नगर के फाटक तक गया और उसने उसके दोनों स्तम्भों और किवाड़ों को बेड़ों समेत उखाड़ लिया और अपने कन्धों पर रखकर उन्हें उस पहाड़ की चोटी पर ले गया, जो हेब्रोन के सामने है। PPHin 584.2

लेकिन बाल-बाल बचने पर भी उसने अपना पापमय चाल-चलन नहीं त्यागा । उसने पलिशितियों के बीच जाने का दुस्साहस तो नहीं किया, लेकिन वह उन कामुकतापूर्ण सुखों का भोग करता रहा जो उसे विनाश की ओर धकेल रहे थे। उसकी जन्मभूमि से बहुत दूर नहीं, 'सोरेक नामक घाटी में रहने वाली दलील नाम की एक स्त्री से वह प्रीति करने लगा।" दलील का तात्पर्य है 'उपभोक्क्ता' । सोरेक की घाटी अपनी दाख की बारियों के लिये प्रसिद्ध है, यह भी उस अस्थिर नाजीर के लिये प्रलोभन थे, जो मदिरापान करके परमेश्वर और पवित्रता से संलग्न करने वाले एक अन्य बन्धन को तोड़ चुका था। पलिश्ती अपने शत्रु की गतिविधियों पर चौकट दृष्टि जमाए हुए थे और जब उसने इस नए मोह से स्वयं को नीचे गिराया, तो उन्होंने दलील के माध्यम से, उसके विनाश को सम्पन्न करने का संकल्प किया। PPHin 585.1

प्रत्येक पलिश्ती प्रान्ृत से एक-एक व्यक्ति चुनकर एक प्रतिनिधि मण्डल सोरेक की घाटी में भेजा गया। जब तक उसकी महाशक्ति उसके पास थी, उन्होंने उसे वश में करने का दुस्साहस नहीं किया, लेकिन यदि सम्भव था, तो वे उसकी शक्ति के रहस्य को जानना चाहते थे। इस उद्देश्य से उन्होंने दलील को रिश्वत देकर, उसे रहस्य का पता लगाकर उन्होंने बताने को कहा। PPHin 585.2

जब दलील ने प्रश्नों के साथ शिमशोन से अनुरोध किया, तो शिमशोन ने उसे कई ऐसी प्रक्रियाएं बताकर जिनके द्वारा वह साधारण मनुष्य के सामान हो जाता, भरमाया। जब उसने इस विषय को परखा, तो झूठ पकड़ा गया। उसने शिमोन को झूठ बोलने के लिये उलाहना दी और कहा, "तेरा मन तो मुझ से नहीं लगा, फिर तू क्यों कहता है कि मैं तुझसे प्रेम करता हूँ? तूने तीनों बार मुझसे छल किया, और मुझे नहीं बताया कि तेरी शक्ति कहाँ वास करती है?" तीन बार शिमशोन को स्पष्ट प्रमाण मिला कि पलिशितयों ने उसे नष्ट करने के लिये उसकी सम्मोहिनी के साथ सन्धि कर ली थी, लेकिन जब दलील का उद्देश्य विफल रहा, उसने इस विषय को गम्भीरता से नहीं लिया, और शिमशोन ने बिना सोचे समझे अपने मन से डर निकाल दिया। PPHin 585.3

दलील के प्रत्येक दिन आग्रह करने पर "उसकी आत्मा इतनी दुखित हो गई, मानो वह मरने वाला हो, लेकिन एक धूर्त शक्ति ने उसे दलील के पास से दूर न होने दिया। पराजित होकर शिमशोन ने रहस्य को खोल दिया, "मेरे सिर पर उस्तरा कभी नहीं फेरा गया, क्योंकि मैं माँ के पेट से ही नाज़ीर हूँ यदि मेरा मुण्डन कर दिया जाए, तो मेरी शक्ति इतनी घट जाएगी कि मैं साधारण मनुष्य के समान हो जाऊंगा।" तत्काल ही एक दूत को पलिश्तियों के सरदारों पास भेजा गया और उनसे आग्रह किया गया कि वे अविलम्ब उसके पास चले आएँ । जब योद्धा सो रहा था, उसके सिर के घने बाल

काट दिये गए। फिर जैसा उसने पहले तीन बार किया था, पुकारा “हे शिमशोन, पलिश्ती तेरी घात में है। अचानक से उठकर, शिमशौन ने पहले की तरह अपने बल का उपयोग कर उन्हें नष्ट करने पर विचार किया, लेकिन उसकी शक्तिहीन भुजाओं ने उसका साथ नहीं दिया और वह समझ गया कि “यहोवा उसके पास से चला गया है।” जब उसका मुण्डन कर दिया गया, दलील उसे तंग करके कष्ट पहुँचाने लगी और इसप्रकार उसकी शक्ति की परखकरने लगी, क्योंकि पलिश्ति ने तब तक उसके निकट आने का दुस्साहस नहीं किया जब तक उन्हें उसके शक्तिहीन हो जाने का आश्वासन न मिला। फिर उन्होंने उसको पकड़कर उसकी आँखें फोड़ डाली और उसे गाजा ले गए। यहाँ उसे उनके बन्दीगृह में बेड़ियों से जकड़ दिया गया और उससे कठिन परिश्रम कराया गया। PPHin 586.1

क्या परिवर्तन था उसके लिये जो इज़राइल का शूरवीर और न्यायी रहा था! अब वह निर्बल, अन्धा, कैद में, सबसे तुच्छ कामों के लिये निम्नीकृत कर दिया गया! थोड़ा थोड़ा करके उसने अपनी पवित्र बुलाहट के नियमों को खंडित किया था। परमेश्वर ने उसको बहुत समय तक सहन किया, लेकिन जब उसने स्वयं को पाप के वश में इस सीमा तक होने दिया कि उसके रहस्य को खोल दिया, तब यहोवा उसके पास से चला गया। उसके बालों में मात्र कोई गुण नहीं था, उसके बाल परमेश्वर के प्रति उसकी सत्यनिष्ठा या स्वामिभक्ति का प्रतीक थे, और फिर मनोवेग की सन्तुष्टि में जब इस प्रतीक की बलि चढ़ा दी गईं, तो वे आशीषें जिनका प्रतीक वह बाल थे, भी गवाँ दी गई। PPHin 586.2

कष्ट और अपमान में, जो पलिश्तियों के लिये मनोरंजन था, शिमशोन को अपनी दुर्बलता के बारे इतना कुछ ज्ञात हुआ, जितना पहले कभी नहीं हुआ था और उसके कष्ट ने उसे प्रायश्चित करने के लिये विवश कर दिया। जैसे-जैसे उसके बाल बढ़ने लगे, उसकी शक्ति धीरे-धीरे लौटने लगी, लेकिन उसे जंजीरों मे जकड़ा हुआ और असहाय कैदी समझ कर, उसके शत्रुओं को कोई सन्देह नहीं हुआ। PPHin 587.1

पलिशितियों ने अपनी विजय का श्रेय अपने देवी-देवताओं को दिया, और मग्न होकर इज़राइल के परमेश्वर को ललकारा। समुद्र के संरक्षक, मछली देवता, दागोन के सम्मान में एक समारोह आयोजित किया गया। पलिश्ती तराई के एक छोर से दूसरे छोर तक के गावों और शहरों से लोग और उनके सरदार एकत्रित हुए। विशाल मन्दिर और छत के गलियारों में उपासकों का जमघट लग गया। यह उत्सव और हर्षोल्लास का दृश्य था। बलि की भेंट की धूमधाम के बाद संगीत और सहभोज था। फिर दागोन की शक्ति के उत्कृष्ट जयचिन्ह के तौर पर शिमशोन को भीतर लाया गया। उसके आने पर लोग चिल्ला उठे। लोगों और सरदारों ने उसके दुख का उपहास किया और उस देवता की उपासना की जिसने ‘उनके देश के विनाशक’ को पराजित किया था। कुछ समय पश्चात, मानो वह थक गया हो, शिमशोन ने मन्दिर की छत को थामने वाले दो बीच के स्तम्भों का सहारा लेकर खड़े

प्रभु यहोवा, मेरी सुधि ले, “हे परमेश्वर, इस बार मुझे शक्ति दे कि मैं पलिश्तियों से बदला लूँ।” तब शिमशोन ने अपनी शक्तिशाली भुजाओं के घेरे में स्तम्भों को लिया और वह झुका और छत धराशाही हो गई, और एक ही झटके में वह पूरा जनसमूह नष्ट हो गया। “इस प्रकार जिनको उसने मरते समय मार डाला वे उनसे भी अधिक थे जिन्हें उसने अपने जीवन में मार डाला था। PPHin 587.2

वह मूर्ति और उसके उपासक, याजक और खेतिहर, योद्धा और महापुरूष सभी दागोन के मन्दिर के मलवे के नीचे एक साथ दब गए। और उन्हीं के बीच था उसका दीर्घकाय शरर जिसे परमेश्वर ने अपने लोगों का मुक्तिदाता होने के लिये चुना था। इस भयानक पराजय का समाचार इज़राइल के देश में पहुँचा, और शिमशोन के परिजन पहाड़ो से उतर कर आए और, निर्विरोध अपने मृत नायक के पार्थिव शरीर को ले आए। और वे “उसे उठाकर ले गए, और सोरा और एश्ताएओल के मध्य उसके पिता मनोह की कब्र में मिट्टी दी। PPHin 587.3

परमेश्वर की प्रतिज्ञा कि शिमशोन के द्वारा वह “पलतिशितियों के हाथों से इज़राइल को छुटकारा दिलाना आरम्भ करेगा”, पूरी हुई, लेकिन कितना कलंकित और भयानक है उस जीवन का इतिहास जो परमेश्वर के लिये सराहना और कूल के लिये महिमा हुआ होता। यदि शिमशोन अपनी अपनी पवित्र बुलाहट के प्रति सत्यनिष्ठ होता, तो उसके सम्मान और उत्थान में परमेश्वर का उद्देश्य परिपूर्ण होता। लेकिन वह प्रलोभन के आगे हार गया और अपने दायित्व में खरा नही उतरा, और उसका विशेष कार्य पराजय, बन्धुत्व और मृत्यु में परिपूर्ण हुआ। PPHin 588.1

शारीरिक रूप से शिमशोन पृथ्वी पर सबसे शक्तिशाली पुरूष था, लेकिन आत्म-संयम, सत्यनिष्ठा और दृढ़ता में वह मनुष्यों में सबसे निर्बल था। कई लोग प्रबल आवेग को ओजस्वी चरित्र समझने की भूल करते हैं, लेकिन यथार्थ में जो अपने आवेगों के अधीन होता है वह निर्बल मनुष्य होता है। मनुष्य की वास्तविक महानता उन भावनाओं की शक्ति से मापी जाती है, जिन्हें वह नियन्त्रित करता है, ना कि उनसे जो उसे नियन्त्रित करती है। PPHin 588.2

परमेश्वर की सरक्षा व देखभाल शिमशोन पर थी, जिससे कि वह उस कार्य को सम्पन्न करने के लिये तैयार किया जा सके, जिसके लिये उसे बुलाया गया था। अपने जीवन के प्रारम्भ से ही वह शारीरिक शक्ति, बुद्धिजीवी क्षमता और नैतिक पवित्रता के लिये अनुकूल परिस्थितियों से घिरा हुआ था। लेकिन दुष्कमी सहभागियों के प्रभाव में उसने परमेश्वर पर अपनी पकड़ को जाने दिया, जो मनुष्य की एकमात्र सुरक्षा है, और बुराई का ज्वार उसे बहा ले गया। जिन्हें कर्तव्य के मार्ग में परखा जाता है वे निश्चित रहे कि परमेश्वर उन्हें सुरक्षित रखेगा, लेकिन यदि मनुष्य जानबूझकर प्रलोभन में पड़ता है, वह शीघ्र ही या देर से गिरेगा। PPHin 588.3

उन्हीं को जिन्हें परमेश्वर एक विशेष कार्य के लिये अपने साधन के रूप में उपयोग करना चाहता है, शैतान अपनी पूरी ताकत से पशथभ्रष्ट करने का प्रयत्न करता है। वह हमारी निर्बलताओं पर आक्रमण करता है, हमारे चरित्र की त्रुटियों के माध्यम से हमारे सम्पूर्ण अस्तित्व को नियन्त्रित

करता है, और वह जानता है कि यदि इन त्रुटियों को संजोया जाए तो वह सफल होगा। लेकिन किसी को पराजित होने की आवश्यकता नहीं। बुराई की शक्ति को अपने निज साधारण प्रयत्नों से जीतने के लिये मनुष्य को अकेले नहीं छोड़ दिया गया है। सहायता पास ही है और यह प्रत्येक उस प्राणी को दी जाएगी जो वास्तविकता में उसे पाना चाहता है। परमेश्वर के दूत, जो याकूब द्वारा स्वप्नदर्शन में देखी गईं सीढ़ी पर चढ़ते-उतरते रहते है, प्रत्येक इच्छुक प्राणी की सर्वोच्च स्वर्ग तक चढ़ने में सहायता करेंगे।

अध्याय 55—बालक शमूएल

यह अध्याय 1 शमूएल 1,2:1-11 पर आधारित है

एप्रेम पर्वत का एक लैवी, एल्काना, प्रभावशाली और धनवान व्यक्ति था जो परमेश्वर से प्रेम करता था और उसका भय मानता था। उसकी पत्नी हन्ना एक धर्मपरायण स्त्री थी। नम्र और सीधा-सादा, उसका चरित्र इमानदारी और अत्याधिक विश्वास से परिपूर्ण था। PPHin 590.1

यह धर्मी जोड़ा उस आशीष से वंचित था जिसे प्रत्येक इब्री हृदय से चाहता था, उनके घर में शिशुत्व की किलकारियों का सुख नहीं था, और अपने नाम को चिरायु बनाने की अभिलाषा ने पति को, कई औरों की तरह, दूसरा विवाह रचने को विवश कर दिया। लेकिन परमेश्वर में विश्वास के अभाव में उठाया गया यह कदम, प्रसन्नता लेकर नहीं आया। पुत्र और पुत्रियाँ परिवार में जुड़े, लेकिन परमेश्वर की पवित्र संस्था की सौम्यता और सुख को आघात पहुँचा था और परिवार की शान्ति भंग हो गईं थी। दूसरी पत्नी पनिन्ना ईष्यालु और संकीर्ण सोच वाली स्त्री थी और उसके व्यवहार में घमण्ड और निर्लज्जता थी। हनना के लिये आशा समाप्त हो चकी थी और जीवन थकाने वाला बोझ था, फिर भी उसने इस कठिन समय का बिना शिकायत करे दिन होकर सामना किया। PPHin 590.2

एल्काना निष्ठापूर्वक परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करता था। शिलोह की आराधना अभी भी की जाती थी, लेकिन परिचर्या में अनियमितताओं के कारण उस पवित्र स्थान पर जहाँ लैवी होते हुए, उसे उपस्थित होना था, उसकी सेवाओं की आवश्यकता नहीं थी। फिर भी वह अपने परिवार सहित, नियम समारोह में आराधना करने और बलि की भेंट चढ़ाने जाता था। परमेश्वर की आराधना से सम्बद्ध पवित्र समारोह के होते हुए भी जिस दुष्ट आत्मा ने उसके घर को श्रापित किया था, वही दुष्टात्मा बलपूर्वक घुस आई। धन्यवाद की भेंट चढ़ाने के बाद, परम्परागत रूप से, पूरा परिवार औपचारिक पर आनंदमयी भोज के लिये इकट्ठा हुआ। इन अवसरों पर एल्काना अपने बच्चों की माँ को एक भाग उसके लिये और उसके सभी पुत्रों और पुत्रियों के लिये देता था, और हन्ना को उसने सम्मान के प्रतीक के तौर पर, दुगना भाग देता, यह बताने के लिये कि उसका उसके प्रति प्रेम वैसा ही था जैसा कि पुत्र होने पर होता। फिर, दूसरी पत्नी ने ईर्ष्या से आग बबूला होकर परमेश्वर की अधिकतम कृपा-दृष्टि की पात्र होने पर वरीयता का दावा किया और हन्ना की संतानरहित अवस्था को परमेश्वर की उसके प्रति अप्रसन्नता का प्रमाण बताते हुए उसको ताना दिया। यह प्रतिवर्ष दोहराया जाता, जब तक कि हनना की सहनशक्ति समाप्त हो गईं । अपने दुख को छुपाने में असफल, वह बिलख-बिलख कर रोई, और समारोह छोड़कर चली गई। उसके पति ने उसे व्यर्थ में सांत्वना देनी चाही, “हे हन्ना, तू क्यो रोती है? और खाना क्यों नहीं खाती? और तेरा मन क्यो उदास है? क्या तेरे लिये में दस बेटों से भी अच्छा नहीं हूँ? PPHin 590.3

हनना कुछ नहीं बोली। जिस बोझ को वह किसी सांसारिक मित्र के साथ नहीं बाट सकती थी, उसने उसे परमेश्वर पर डाल दिया ।उसने विनम्रता से विनती की कि वह उसकी कमी को दूर कर उसे पुत्र के रूप में एक अनमोल उपहार दे, जिसे वह पाल कर बढ़ा करे और उसके लिये प्रशिक्षित करे। उसने विधिवत शपथ ली कि यदि उसकी विनती सुनी गई, तो वह अपनी संतान को उसके जन्म से ही परमेश्वर कोअर्पण करेगी। हनना मन्दिर के चौखट के पास पहुँची और वह मन में व्याकुल होकर यहोवा से “प्रार्थाना करने और बिलख बिलख कर रोने लगी।” उसने बिना आवाज किये, परमेश्वर से मन ही मन प्रार्थना की । उस बुरे समय में आराधना के ऐसे दृश्य बहुत कम देखने को मिलते थे। धार्मिक उत्सवों पर भी, श्रद्धाहीन सहभोज और नशा असामान्य नहीं थे, और महायाजक एली ने हनना को देखकर सोचा कि वह नशे में थी। हनन्ना को उचित रूप से डॉटने के लिये वह कठोरता से बोला, “तू कब तक नशे में रहेगी? अपना नशा उतार। PPHin 591.1

दुखी और भौंचक्की हन्ना ने नम्रतापूर्ण उत्तर दिया, “नहीं, हे मेरे प्रभु में तो दुखिया हूँ मैने न तो दाखमधु पिया है और न मदिरा, मैने अपने मन की बात खोलकर यहोवा से कही है। अपनी दासी को ओछी स्त्री न जान, जो कृछ मैंने अब तक कहा है, वह बहुत ही शोकित होने और चिढ़ाए जाने के कारण कहा है। PPHin 591.2

महायाजक विचलित हो गया क्योंकि वह परमेश्वर का दास था और डॉट के स्थान पर उसने हनना को आशीष दी, “कुशल से चली जा; इज़राइल का परमेश्वर तुझे मनचाहा वरदान दे।” PPHin 591.3

हनना की प्रार्थना स्वीकार हुई, उसे वह वरदान प्राप्त हुआ जिसकी उसने प्राथना की थी। उसने बच्चे को देखा और उसका नाम शमूएल रखा जिसका तात्पर्य है, “परमेश्वर से माँगा हुआ, जब शिशु अपनी माँ से अलग होने योग्य हो गया, उसने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की। उसने अपने पुत्र पर सम्पूर्ण मातृ-प्रेम न्यौछावर किया, प्रतिदिन जब वह अपने बच्चे की बढ़ती हुई क्षमता को देखते हुए और बालोचित बातों को सुनती, उसे अपने पुत्र पर और भी प्यार आता। वह उसका इकलौता पुत्र था, स्वर्ग से मिला हुआ विशेष उपहार, लेकिन उसने इस पुत्र को परमेश्वर के लिये समर्पित खजाने के तौर पर प्राप्त किया था, और वह ‘दाता’ को उससे वंचित नहीं रखेगी, जो उसी का था। PPHin 591.4

एक बार फिर हन्ना अपने पति के साथ शिलोह गई, और परमेश्वर के नाम में, अपने अनमोल उपहार को उसने एली को दे दिया और कहा, “यह वही बालक है जिसके लिये मैंने प्रार्थना की थी, और यहोवा ने मुझे मुहँ माँगा वरदान दिया है। इसलिये मैं भी उसे यहोवा को अर्पण करती हूँ।” इज़राइल की इस स्त्री की भक्ति और विश्वास से एली बहुत प्रभावित हुआ। एली स्वयं एक अत्यन्त पक्षपातपूर्ण पिता था, जब उसने इस माँ के बलिदान को देखा कि किस तरह वह अपने इकलौते पुत्र से अलग हुईं ताकि वह उसे परमेश्वर की सेवा के लिये समर्पित कर सके, वह श्रद्धा और दीनता

से भर गया। उसे स्वयं के स्वार्थपूर्ण प्रेम के लिये ग्लनि हुई और उसने दीन भावना और आदर के साथ परमेश्वर के सम्मुख दण्डवत किया और आराधना की। PPHin 592.1

माँ का हृदय हर्ष और महिमा से भर गया, और परमेश्वर के प्रति धन्यवाद प्रकट करने के लिये तीव्र इच्छा उत्पन्न हुई। प्रेरणा के प्रभाव में हन्ना ने प्रार्थना की और कहा- PPHin 592.2

मेरा मन यहोवा के कारण मग्न है,

में अपने परमेश्वर में स्वयं को शक्तिशाली अनुभव करती हूँ

मेरा मुहँ मेरे शत्रुओं के विरूद्ध खुल गया,

क्योंकि में तेरे किये हुए उद्धार से आनन्दित हूँ।

यहोवा के तुल्य कोई पवित्र नहीं,

क्योंकि तुझ को छोड़ और कोई है

ही नहीं,

और हमारे परमेश्वर के समान कोई चट्टान नहीं है

फूलकर अंहकार की और बातें मत करो, और अंधेरे की बातें तुम्हारे मुहँ से न निकले

क्योंकि यहोवा ज्ञानी ईश्वर है और कामों को तोलने वाले है

श्रवीरों के धनुष टूट गये

और ठोकर खाने वालों की कटि में बल का फेंटा कसा गया।

जो पेट भरते थे उन्हें रोटी के लिये मजदूरी करनी पड़ी

जो भूख थे वे फिर ऐसे न रहे, वरन् जो बांझ थी उसके सात हुए,

और अनेक बालकों की माताएँ घुलती जाती है।

यहोवा मारता है और जिलाता भी है,

वही अधोलोक में उतारता और उससे निकालता भी है

वह कंगाल को धूलि में से उठाता,

और दरिद्र को घूरे में से निकाल खड़ा करता है,

ताकि उनको अधिपतियों के संग बैठाए

और महिमायुकत सिंहासन के अधिकारी बनाए।

क्योंकि पृथ्वी के स्तम्भ यहोवा के है,

और उसने उन पर जगत को धरा है।

वह अपने भक्तों के पाँवो को सम्भालता रहेगा,

परन्तु दुष्ट अंधेरे में चुपचाप पड़े रहेंगे

क्योंकि कोई मनुष्य अपने बल के कारण प्रबल न होगा।

जो यहोवा से झगड़ते है वे चकनाचूर होंगे,

वह उनके विरूद्ध आकाश में गरजेगा।

यहोवा पृथ्वी की छोर तक न्याय करेगा,

और अपने राजा को बल देगा,

और अपने अभिषिक्त की शक्ति को बढ़ाएगा।" PPHin 592.3

हन्ना के शब्द भविष्यसूचक थे, वे दाऊद की ओर, जिसे इज़राइल के राजा के रूप में शासन करना था, संकेत कर रहे थे और परमेश्वर द्वारा अभिषिक्त से भी सम्बन्धित थे। सबसे पहले एक निर्लज्ज और झगड़ालू स्त्री के घमण्ड का वर्णन करते हुए, यह गीत परमेश्वर के शत्रुओं के विनाश और उसके बचाए हुए लोगों की निर्णायक विजय की ओर संकेत करता है। PPHin 594.1

शिलोह से हन्ना चुपचाप रामा में अपने घर लौट आई। उसने अपने पुत्र शमूएल को महायाजक के निर्देशन में, परमेश्वर के मन्दिर में सेवा करने के लिये प्रशिक्षित होने के लिये छोड़ा। जब से वह समझने लगा था, हन्ना ने अपने पुत्र को परमेश्वर से प्रेम करना और उसका आदर करना और स्वयं को परमेश्वर का मानना सिखाया था। उसके चारों तरफ की प्रत्येक परिचित वस्तु के माध्यम से उसने शमूएल के विचारों को सृष्टिकर्ता की ओर ले जाने का प्रयत्न किया था। अपने पुत्र से अगल होकर भी, इस ईमानदार माँ की परवरिश समाप्त नहीं हुईं । प्रतिदिन उसकी प्रार्थना का विषय उसका पुत्र होता था। प्रत्येक वर्ष, वह अपने ही हाथों से उसके लिये पोशाक बनाती थी और जब वह अपने पति के साथ आराधना के लिये शिलोह जाती, तब वह शमूएल को वह पोषाक देकर अपने प्रेम का स्मरण कराती। उस छोटी सी पोशाक का प्रत्येक धागा एक प्रार्थना से बुना हुआ था कि वह पवित्र, शिष्ट और सत्यवादी बने। उसने अपने पुत्र के लिये सांसारिक महानता नहीं माँगी, वरन् उसने हार्दिक रूप से विनती की कि वह उन ऊँचाइयों पर पहुँचने जिनका मूल्य स्वर्ग जानता है और वह यह कि शमूएल परमेश्वर का आदर करे और अन्य लोगों को आशीषित करे। PPHin 594.2

क्या प्रतिफल मिला हन्ना को! और उसका उदाहरण सत्यनिष्ठा के लिये कितना अच्छा प्रोत्साहन है। अनमोल अवसर, अत्यन्त लाभप्रद अनुकूल परिस्थितियाँ, प्रत्येक माँ के सुपुर्द की गई है। वह सीधे-सादे कर्तव्य जिन्हें महिलाएँ थकाने वाले कार्य समझने लगी हैं उन्हें श्रेष्ठ व महत्वपूर्ण कार्यों के रूप में देखा जाना चाहिये। अपने प्रभाव से संसार को आशीषित करनामाँ की विशेषाधिकार है, और ऐसा करने से उसके हृदय को प्रसन्नता मिलेगी। वह अपने बच्चों के लिये सुगम रास्ते तैयार करती है जिसपर चलकर वे धूप व छाया से होकर स्वर्ग की महिमावान ऊँचाइयों पर पहुँच सकते है। लेकिन एक माँ अपने बच्चों के चरित्र का निर्माण पवित्र उदाहरण के अनुसार करने की आशा तभी कर सकती है, जब वह अपने निजी जीवन में मसीह की शिक्षा का अनुसरण करने का प्रयास करती है। यह संसार भ्रष्ट प्रभावों से व्याप्त है। फैशन और रिवाज नौजवानों पर गहरा प्रभाव डालते है। यदि एक माँ निर्देश देने, मार्गदर्शन करने या नियन्त्रण में रखने के कर्तव्य को अनदेखा करती है, तो यह स्वाभाविक है कि उसके बच्चे अच्छाईं से मुहँ मोड़कर बुराई को अपना लेंगे। प्रत्येक माँ प्रायः अपने उद्धारकर्ता के पास यह प्रार्थना लेकर जाए, "हमें सिखा, इस बच्चे का पालन पोषण हम किसी रीति से करे, और इसके साथ हम क्या करे?" परमेश्वर के वचन में दिये गए निर्देशों का पालन करने से उसे आवश्यकतानुसार बुद्धिमता प्राप्त होगी। PPHin 594.3

"बालक शमूएल बढ़ता गया और यहोवा और मनुष्य दोनों उससे प्रसन्न रहते थे।" हालाँकि शमूएल का युवाकाल परमेश्वर की आराधना के लिये समर्पित मन्दिर में बीता, वह संसार के दुष्प्रभाव और पापमय उदाहरणों से अछता नहीं था। एली के पुत्रों को परमेश्वर का भय नहीं था, और ना ही वे अपने पिता का आदर करते थे, लेकिन शमूएल ने ना तो उनकी संगति की इच्छा रखी और न ही उनके गलत रास्तों को अपनाया। वह हमेशा वैसा बनने का प्रयास करता था, जैसा परमेश्वर उसे बनाना चाहता था। यह प्रत्येक युवा का विशेषाधिकार है। परमेश्वर प्रसन्न होता है जब छोटे-छोटे बच्चों भी स्वयं को उसकी सेवा टहल के लिये समर्पित करते हैं। PPHin 595.1

शमूएल को एली की देख-रेख में रखा गया था, और उसके आचरण को मनोरमता ने वृद्ध याजक के हार्दिक प्रेम को जागृत किया। शमूएल नम्र, उद्धार, आदरपूर्ण और आज्ञाकारी था। एली अपने निजी पुत्रों की स्वच्छता से दुखी था, और अपने प्रभार यानि शमूएल की उपस्थिति में उसे आशीष, सुख और चैन मिलता था। शमूएल कोमल और सहायक प्रवृति का था, और किसी भी पिता ने अपने पुत्र से इतना नम्रतापूर्ण प्रेम नहीं रखा होगा जितना कि एली ने इस युवक के साथ किया। यह अपने आप मे अतुल्य था कि राज्य के मुख्य न्यायाध्यक्ष और एक साधारण बालक के बीच ऐसा हार्दिक प्रेम हो। जैसे जैसी एली पर वृद्धावस्था की कमजोरियाँ आती गईं, वह अपने पुत्रों की आचरणहीनता व कुकर्मां के कारण पश्चाताप से भर गया और शमूएल ने उसे दिलासा दिया। PPHin 595.2

लेवियों के लिये पच्चीस वर्ष की आयु से पहले अपनी विशेष सेवाओं को आरम्भ करना परम्परागत नहीं था, लेकिन शमूएल पर यह नियम लागू नहीं हुआ। प्रत्येक वर्ष महत्वपूर्व दायित्व उसके सुपुर्द किये जाते थे, और जब वह बालक ही था उसे सन का एपोद पहनाया गया, जो प्रतीक था इस तथ्य का कि वह पवित्र तम्बू क कार्य के लिये समर्पित था। मिलाप वाले तम्बू में सेवा-टहल के लिये जब उसे लाया गया वह बालक ही था, लेकिन तब भी उसे उसकी क्षमता के अनुसार परमेश्वर की सेवा-टहल में करने के लिये कार्य दिए जाते थे। प्रारम्भ में यह अत्यन्त साधारण व कभी-कभी अरूचिकर भी होते थे, परन्तु शमूएल प्रत्येक कार्य को अपनी योग्यतानुसार और पूरे मन से करता था। जीवन के प्रत्येक कर्तव्य में उसका धर्म झलकता था। वह स्वयं को परमेश्वर का दास और अपने कार्य को परमेश्वर का कार्य मानता था। उसके प्रयत्न स्वीकार्य होते थे क्योंकि वे परमेश्वर के प्रति प्रेम और उसकी इच्छा पूरी करने की सच्ची इच्छा से प्रेरित होते थे। इस प्रकार शमूएल पृथ्वी और आकाश के प्रभु के साथ सहकमी बना। और परमेश्वर ने उसे इज़राइल के महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करने के लिये समुचित बनाया। PPHin 595.3

यदि बच्चों को यह मानना सिखाया जाए कि प्रतिदिन के सीधे-सादे कार्यों को दीनता से पूरा करना, उनके लिये ईश्वरकत कार्य प्रणाली है और एक शिक्षण संस्था के समान है जिसकी माध्यम से उन्हें सत्यनिष्ठ और दक्षतापूर्ण सेवा के लिये प्रशिक्षित किया जाता है, ओर तब उनका कार्य रूचिकर और सम्मानयोग्य प्रतीत होगा। यदि हम प्रत्येक काम को यह मानकर करें कि वह परमेश्वर के लिये है तो तुच्छ से तुच्छ कार्य भी मनमोहक प्रतीत होता है, और पृथ्वी पर के कार्यकर्ताओं को उन पवित्र प्राणियों से जोड़ देता है जो स्वर्ग से परमेश्वर की इच्छा को पूरा करते हैं। PPHin 596.1

इस जीवन की सफलता और आने वाले जीवन की सफलता नगण्य बातों पर सच्चे हृदय व कर्तव्यनिष्ठा से ध्यान देने पर निर्भर करती है। चाहे वह सबसे अमहत्वपूर्ण हो, चाहे सबसे महान, परमेश्वर के लिये किया गया प्रत्येक कार्य पूर्णतया सन्तोषप्रद होना चाहिये। जिन हाथों ने ग्रहों को आकाश में स्थापित किया उन्हीं हाथों ने अतिनिपुण कौशल से नरगिस के फूलों को बनाया। जिस प्रकार परमेश्वर अपने क्षेत्र में सिद्ध है, उसी प्रकार हमें हमारे क्षेत्र में सिद्ध होना है। एक सुदृढ़, गुणसम्पन्न चरित्र की सन्तुलित संरचना दायित्व के व्यक्तिगत कार्यों से होती है। हमारे जीवन के छोटे से छोटे व बड़े से बड़े विवरण में विश्वसनीयता चरितार्थ होनी चाहिये। छोटी-छोटी बातों में अखण्डता, स्वामिभक्ति और दया के छोटे-छोटे कार्य जीवन के मार्ग को सुखद बनाते है, और जब पृथ्वी पर हमारा कार्य समाप्त होगा, तो यह ज्ञात होगा कि प्रत्येक तुच्छ कार्य यदि निष्ठा से किया जाए तो वह एक अच्छा और कभी न नष्ट होने वाला प्रभाव डालता है। PPHin 596.2

हमारे समय के युवा भी परमेश्वर की दृष्टि में शमूएल की तरह श्रेष्ठ हो सकते है। अपनी मसीही अखण्डता को निष्ठापूर्वक बनाए रखने से, वे सुधार के कार्य को बहुत प्रभावित कर सकते है। वर्तमान में ऐसे मनुष्यों की आवश्यकता है, परमेश्वर के पास उन सब के लिये काम है। मानवता और परमेश्वर

के लिये मनुष्य ने इससे बढ़कर प्रतिफल कभी नहीं पाया, जितना कि वर्तमान में वे लोग प्राप्त कर सकते हैं जो उस दायित्व के प्रति सत्यनिष्ठ होते है जो परमेश्वर ने उन्हें सौंपा है। PPHin 597.1

अध्याय 56—एली और उसके पुत्र

यह अध्याय 4 शमूएल 2:12-36 पर आधारित है

एली इज़राइल में याजक और न्यायाध्यक्ष था। परमेश्वर की प्रजा में वह सबसे महत्वपूर्ण और सर्वोच्च पद पर आसीन था। उसे याजकता के पवित्र कार्यों के लिये ईश्वर द्वारा नियुक्त किया गया था, और देश पर उच्चतम न्यायिक अधिकारी के स्थान पर बैठाया गया था और इस कारण उसे उदाहरण के रूप में देखा जाता था और इज़राइल के सभी घराने उससे प्रभावित थे। हालाँकि उसे प्रजा पर शासन करने के लिये नियुक्त किया गया था, लेकिन वह अपने ही परिवार को सुशासित नहीं कर सका। एली एक क्षमाशील पिता था। शान्ति और सहूलियत से लगाव रखते हुए, उसने अपने बच्चों की बुरी आदतों और तीव्र अभिलाषाओं पर रोक लगाने के अधिकार का प्रयोग नहीं किया। उन्हें दृढ़तापूर्वक टोकने या दण्डित करने के बजाय, वह उनकी इच्छा के आगे झुक जाता या उन्हें उनके रास्ते पर जाने देता। अपने पुत्रों की शिक्षा को अपना सबसे महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व समझने के बजाय, उसने इस विषय को प्राथमिकता नहीं दी। इज़राइल के याजक और न्यायाध्यक्ष को परमेश्वर द्वारा उसके सुपुर्द किये गए बच्चों को संचालित और नियन्त्रित करने के कर्तव्य के बारे में अन्धेरे मेंनहीं रखा गया था। लेकिन एली ने इस कर्तव्य का अनुपालन नहीं किया, क्योंकि ऐसा करने से उसे अपने पुत्रों की इच्छा के विरूद्ध जाना होता, और यह अनिवार्य हो जाता कि वह उन्हें रोके या दण्डित करे। इस पद्धति के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाली भयानक परिस्थितियों पर विचार किये बिना, उसने अपने पुत्रों को मनमानी करने दी और उस कार्य की उपेक्षा की जो उन्हें जीवन के कर्तव्यों और परमेश्वर की सेवा टहल क लिये सुयोग्य बनाता। PPHin 598.1

परमेश्वर ने अब्राहम के सन्दर्भ में कहा था, "मैं जानता हूँ कि वह अपने पुत्रों और परिवार, जो उसके पीछे रह जाएँगे, आज्ञा देगा कि वे यहोवा के मार्ग में अटल बने रहे, और न्याय और परख करते रहें"-उत्पत्ति 18:19 । लेकिन एली ने अपने पुत्रों को उसे नियन्त्रित करने की अनुमति दी। पिता अपने पुत्रों की प्रजा बन गया। आज्ञा उल्लंघन का श्राप उसके पुत्रों की कार्यविधि में भ्रष्टाचार और बुराई की छाप से स्पष्ट था। वे ना तो उचित रूप से परमेश्वर के चरित्र को और ना ही उसकी व्यवस्था की पवित्रता को सराहते थे। उसकी सेवा-टहल करना उनके लिये साधारण बात थी। बचपन से वे मिलापवाले तम्बू और उसकी विधियों के अभ्यस्तथे, लेकिन और अधिक श्रद्धायुक्त होने के बजाय, वे उसकी पवित्रता और महत्ता का आभास तक खो चुके थे। पिता ने उसके अधिकार के प्रति उनके आदर के अभाव को सही नहीं किया, ना ही पवित्र स्थान की औपचारिक विधियों के प्रति उनके अनादर पर रोक लगाई और तब वे प्रौढ़ावस्था में पहुँचे तो वे विद्रोह और संदेहवाद के घातक फलों से परिपूर्ण थे। PPHin 598.2

हालाँकि वे धर्मकिया के लिये पूरी तरह से अयोग्य थे, उन्हें परमेश्वर के सम्मुख सेवा-टहल करने के लिये मिलाप वाले तम्बू में याजकों का स्थान दिया गया। परमेश्वर ने बलि की भेंट चढ़ाने के सन्दर्भ में विशेष निर्देश दिये हुए थे, लेकिन इन दुष्ट पुरूषों ने परमेश्वर की सेवा-टहल में भी प्रभुत्व के प्रति अनादर दिखाया और जिस भेंट को अत्यन्त नियमित रूप से चढ़ाया जाना था उसके नियमों पर ध्यान नहीं दिया। मसीह की मृत्यु की और संकेत करते हुए ये बलिदान लोगों के ह्दयों में आने वाले उद्धारकर्ता में विश्वास को बनाए रखने के लिये चढ़ाया जाता था। इस कारण यह अति आवश्यक था कि भेंट से सम्बन्धित परमेश्वर के निर्देशों का नियमित रूप से पालन किया जाए । मेलबलि विशेष रूप से परमेश्वर के प्रति धन्यवाद की अभिव्यक्ति थी। इन भेंटों में वेदी पर केवल चरबी को जलाया जाता था, याजकों के लिये एक निश्चित विशेष भाग अलग किया जाता था, लेकिन बड़ा वाला भाग भेंट देने वालों को लौटा दिया जाता था, जिसे वह एक बलिदान सम्बन्धी प्रीतिभोज में अपने दोस्तों के साथ खाता था। इस प्रकार धन्यवाद और विश्वास में उनके मनों को उस महान बलिदान की ओर आकर्षित करना था जो जगत को पापमुक्त करने आने वाला था। PPHin 599.1

एली के पुत्रों ने, इस सांकेतिक विधि की औपचारिकता को समझने के बजाय केवल इस बात पर विचार किया कि वह इसको आत्म-सन्तुष्टि का साधन कैसे बना सकते थे। उनके लिये आवंटित मेलबलि के अंश से असंतुष्ट उन्होंने एक अतिरिक्त भाग की मांग की, और वार्षिक पर्वों के समय चढ़ाई गईं बहुसंख्य भेंटे याजकों को लोगों के सौजन्य से स्वयं को धनवान बनाने का अवसर प्रदान करती थी। उन्होंने न केवल अपने अधिकार से अधिक की माँग की परमेश्वर को भेंट के रूप में चढ़ाई गई चरबी के जल जाने तक रूकने से भी इन्कार कर दिया। वे लगातार अपने मनचाहे भाग की माँग करते और यदि उन्हें मना किया जाता तो वे उसे बलपूर्वक लेने की धमकी देते। PPHin 599.2

याजकों की ओर से इस श्रद्धाहीनता ने विधि को उसके पवित्र और विधिवत महत्ता से वंचित कर दिया और लोगों ने “यहोवा की भेंट का तिरस्कार’ किया । जिस महान प्रतिरूपक बलिदान की उन्हें प्रतीक्षा करनी थी,वह अब मान्य न रहा, “उन जवानों का पाप यहोवा की दृष्टि में बहुत भारी हुआ।’ PPHin 600.1

इन अधर्मी याजकों ने अपने भ्रष्ट और नीचतापूर्ण कार्या के द्वारा अपने पवित्र कार्यभार का निरादर किया और परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन भी किया, और ये परमेश्वर के पवित्र मण्डप को अपनी उपस्थिति से दूषित करते रहे। PPHin 600.2

मण्डली के कई लोगों ने होप्नी और पीनहास की भ्रष्ट युक्ति पर कोधित होकर, आराधना के नियुक्त स्थानपर आना बन्द कर दिया। इस रीति से जिस धर्म किया को परमेश्वर ने पवित्र ठहराया था,वह दुष्ट मनुष्यों के पापों से सम्बद्ध होने के कारण घृणित और अपेक्षित हो गई, और वे जिनके

हृदयों का झुकाव बुराई की ओर था, उन्हें पाप करने के लिये प्रोत्साहन मिला। अधर्म भ्रष्टाचार और मूर्तिपूजा भी व्यापक रूप से प्रचलन में थे। PPHin 600.3

अपने पुत्रों को पवित्र स्थान में सेवा-टहल करने की अनुमति देकर बहुत बड़ी गलती की थी। किसी न किसी बहाने उनकी गतिविधियों को क्षमा करके वह उनके पापों के प्रति अन्धा हो गया, लेकिन फिर अन्त में वे वहाँ पहुँच गए जहाँ वह अपने पुत्रों के अपराधों से आँखे न चुरा सका। लोगों ने उनके हिंसक कृत्यों की शिकायत की ओर महायाजक अत्यन्त खेदित और शोकित हुआ। अब वह चुप न रह सका। लेकिन उसके पुत्रों की परवरिश ऐसे हुईं थी कि वे स्वयं के अलावा और किसी के बार में नहीं सोचते थे और अब उन्हें और किसी की चिन्ता नहीं थी। उन्होंने अपने पिता के दुख को देखा, लेकिन उनके कठोर हृदय विचलित नहीं हुए। उन्होंने उसकी विनम्र ताड़ना को सुना, लेकिन वे प्रभावित नहीं हुए। हालाँकि उन्हें उनके पापों के परिणाम के लिये भी चेतावनी दी गई, उन्होंने बुराई का चाल-चलन नहीं बदला। यदि एली ने अपने दुष्ट पुत्रों के साथ न्यायसंगत व्यवहार किया होता, तो उन्हें याजकीय कार्यभार से निकाल दिया गया होता और उन्हें मृत्युदण्ड दिया जाता। उन पर सार्वजनिक अपमान और दण्डादेश से बचाने के लिये उसने उन्हें पवित्र पदों पर आसीन रहने दिया। उसने अपने पुत्रों द्वारा परमेंश्वर की पवित्र आराधना में भ्रष्टाचार को सम्मिलित होने दिया और सत्य के विषय पर उस चोट को आघात करने दिया जिसके निशान कई वर्षो तक मिटाए जा सके। लेकिन जब इज़राइल के न्यायाध्यक्ष ने अपने कर्तव्य का पालन नहीं किया, परमेश्वर ने इस विषय को अपने हाथ में ले लिया। PPHin 600.4

“तब परमेश्वर का एक जन एली के पास आया और उससे कहने लगा, यहोवा यो कहता है कि जब तेरे मूल पुरूष का घराना मिस्र में फिरौन के घराने के वंश में था, तब में उस पर निश्चय प्रकट नहीं हुआ था? और क्या मैंने उसे इज़राइल के सब गोत्रों में से इसलिये चुन नहीं लिया था कि मेरा याजक होकर मेरी वेदी के ऊपर चढ़ावा चढ़ाए और धूप जलाए, और मेरे सामने एपोद पहना करे? और क्या मैंने तेरे मूलपुरूष के घराने को इज़राइलियों के सारे बलि भेंट न दिए थे? इसलिये तुम उन बलि भेंटो और अन्नबलियों को, जिन्हें मैंने अपने धाम में चढ़ाने की आज्ञा दी है, पाँव तले क्यों रौंदते हो? और तू क्यों अपने पुत्रों को मुझ से अधिक आदर देता है, कि तुम लोग मेरी इज़राइली प्रजा की अच्छी से अच्छी भेंट खाकर मोटे हो जाओ? इसलिये इज़राइल के परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है कि मैंने कहा तो था कि तेरा घराना और तेरे मूल पुरूष का घराना मेरे सामने सदैव चला करेगा, परन्तु अब यहोवा की वाणी यह है कि यह बात मुझ से दूर हो, क्योंकि जो मेरा आदर करे मैं उनका आदर करूंगा, और जो मुझे तुच्छ जाने वे छोटे समझे जाएँगे। और मैं अपने लिये एक विश्वासयोग्य याजक, ठहराऊंँगा, जो मेरे हृदय और मन की इच्छा के अनुसार किया करेगा, और मैं उसका घर बसाऊंगा और स्थिर करूँगा, और वह मेरे अभिषिक्त के आगे हमेशा चलेगा।” PPHin 601.1

परमेश्वर ने एली पर आरोप लगाया कि वह अपने पुत्रों को प्रभु से अधिक सम्मान करता था। जिस भेंट को परमेश्वर ने इज़राइल के लिये आशीष के रूप में नियत की थी, एली ने उसे घृणा का पात्र बना दिया, जबकि उसे अपने पुत्रों को उनके घृणास्पद और अधर्मी चाल-चलनके लिये लज्जित करना चाहिये था। जो अपने बच्चों के प्रेम में अन्धे होकर, उनकी अपनी ही इच्छा के अनुसार, उन्हें उनकी स्वार्थपूर्ण मनोकामनाओं की सन्तुष्टि करने देते हैं और बुराई को सुधारने और पाप की निनदा करने के लिये परमेश्वर के प्रभुत्व का प्रयोग नहीं करते, वे यह प्रकट करते है कि जितना सम्मान वे परमेश्वर का करते है, उससे अधिक सम्मान वे अपने बच्चों का कर रहे है। वे परमेश्वर को गौरवान्वित करने के बजाय, अपनी प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिये अधिक चिन्तित होते है, वे परमेश्वर को प्रसन्न करने के इच्छुक होने के बजाए, अपने बच्चों को प्रसन्न करने के अधिक इच्छुक होते हैं। PPHin 601.2

परमेश्वर ने एली को उसके लोगों के नैतिक और धार्मिक स्थिति और विशेष रूप से उसके पुत्रों के चरित्र के लिये उत्तरदायी ठहराया, क्योंकि एली इज़राइल का न्यायाध्यक्ष और एक याजक था। उसे सर्वप्रथम नम्र उपायों द्वारा बुराई पर रोक लगाने का प्रयास करना चाहिये था, लेकिन यदि ये सफल नहीं होते, तो उसे कठोर साधनों को अपनाकर पाप को रोकना चाहिये था। पाप की निंदा न करके और पापी को दण्डित ना करके उसने प्रभु को अप्रसनन्न किया। इज़राइल को शुद्ध रखने के लिये उस पर विश्वास नहीं किया जा सकता था। जिनमें गलतियों की कटु आलोचना करने का बहुत कम साहस होता है या जो अपने आलस या उदासीनता के कारण परमेश्वर की कलीसिया या अपने परिवार को शुद्ध करने का कोई प्रयास नहीं करते, वे उस बुराई के लिये उत्तरदायी ठहराए जाते है, जो कर्तव्य की उपेक्षा के कारण उत्पन्न हो सकती है। उन बुराईयों के लिये, जिन्हें हम याजकीय या पैतृक अधिकार से रोक सकते थे, हम उसी प्रकार उत्तरदायी है, मानों वह कृत्य हमने किये हो। PPHin 602.1

एली ने अपने परिवार के पारिवारिक संचालन के लिये परमेश्वर के नियमों के अनुसार नहीं चलाया। उसने अपने निजी निर्णयों का अनुसरण किया। प्रेम ही प्रेम में पिता अपने पुत्रों के बचपन में उनके द्वारा किये गए पाप और गलतियों को अनदेखा करता रहा, और स्वयं को इस बात से संतोष दिलाता रहा कि उनके बड़े होने पर उनकी पापमय प्रवृति दूर हो जाएगी। कई आज भी यही गलती करते है। वे सोचते है बच्चों को प्रशिक्षित करने के लिये परमेश्वर के वचन में दिये गए तरीके से बेहतरतरीका उनके पास है। वे उनमें गलत प्रवृतियों को बढ़ावा देते है और यह बहाना लगाकर आग्रह करते है, "अभी यह दण्ड भुगतने के लिये बहुत छोटे है। इनके बड़े होने तक ठहर जाओ, फिर इनके साथ तकं-विर्तक किया जा सकता है।" इस प्रकार गलत आदतों को परिपक्क होने के लिये छोड़ दिया जाता है और वे उनका अतिरिक्त स्वभाव बन जाती है। बच्चे बिना नियन्त्रण के चरित्र के उन अवगुणों के साथ बड़े हो जाते है जो उनके लिये एक आजीवन श्राप की तरह होते है और अन्य लोगों में भी उत्पन्न हो सकते है। PPHin 602.2

घरानों पर इससे बड़ा श्राप नहीं हो सकता कि नौजवानों को मनमानी करने की अनुमति दी जाए। जब अभिभावक बच्चों की प्रत्येक इच्छा को मान लेते है और जानते हुए भी उन्हें वह करने देते है जो उनके लिये हानिकारक है, तो बच्चे उनका आदर करना छोड़ देते है। वे परमेश्वर और अन्य मनुष्यों के अधिकार का भी सम्मान नहीं करते और शैतान की इच्छा के वश में हो जाते है। एक अव्यवस्थित परिवार का प्रभाव समस्त समजात के लिये अनर्थकारी और व्यापक होता है। वह एक बुराई के ज्वार के समान बढ़ जाता हे और परिवारों, समाजों और सरकारों पर दुष्प्रभाव डालता है। PPHin 603.1

एली के पद के कारण उसका प्रभाव सामान्य मनुष्य के प्रभाव से अधिक विस्तृत था। सम्पूर्ण इज़राइल में उसके पारिवारिक जीवन का अनुकरण किया जाता था। उसके उपेक्षापूर्ण और अनुशासनहीन तरीकों के अनिष्टकर परिणाम उन सैकड़ों घरों में दिखाई दिये, जो उसके उदाहरण अनुसार ढल गये थे। यदि बच्चों को कुकर्मा में व्यस्त होने दिया जाता है, और माता-पिता तथाकथित घार्मिक बने रहते है, तो परमेश्वर का सत्य निंदनीय ठहरता है। एक घर या एक परिवार की मसीहत की सबसे उत्तम पहचान उसके प्रभाव से उत्पन्न चरित्र की विशिष्टता में होती है। कर्म धार्मिकता के सबसे सकात्मक व्यवहार से अधिक प्रभावशाली होते है। यदि धर्मगुरू परमेश्वर में विश्वास के लाभ के साक्षी के रूप में एक सुव्यवस्थित परिवार की परवरिश के लिये सच्चे मन से, निरंतर और अत्यन्त सावधानी से प्रयास करने के बजाय अपने शासन में आचार भ्रष्ट और अपने बच्चों की बुरी आदतों के प्रति नम्रर होते हैं, तो वे एली जैसे कर्म कर रहे हैं, और मसीह के उद्देश्य का अपमान कर रहे है, और स्वयं पर और अपने परिवारों को विनाश की ओर ले जा रहे हैं। किसी भी परिस्थिति में पैतृक अनिष्ठा का पाप गम्भीर है, परन्तु यही पाप दस गुना अधिक बड़ा है जब यह उनके परिवारों में विद्यमान होता है जिन्हें प्रजा के गुरूओं के तौर पर नियुक्त किया गया है। जब ये अपने परिवारों को नियन्त्रण में रखने में असफल होत है, तब अपने गलत उदाहरण से, वह कई लोगों को पथ-भ्रष्ट करते है। उनका अपराध दूसरों के अपराध से बड़ा है क्योंकि उनका पद अधिक उत्तरदायी है। PPHin 603.2

यह प्रतिज्ञा की गई थी कि हारून का परिवार सदेव परमेश्वर के आगे-आगे चलेगा, लेकिन इस प्रतिज्ञा की शर्त यह थी उन्हें अपने विकृत रूझानों का अनुसरण या स्वयं को सन्तुष्ट ना करके, अपने चाल-चलन से परमेश्वर को महिमा पहुँचानी थी, और हृदय की एकनिष्ठता से मिलाप वाले तम्बू के कार्य के लिये समर्पित होतना था। एली और उसके पुत्रों को परखा गया, और प्रभु ने उनको उसकी सेवा-टहल या धर्म किया में याजकों के उत्कृष्ट पदों के लिये पूर्णतया अयोग्य पाया। परमेश्वर ने घोषणा की, “मुझसे दूर हो जाओ।” वह उनके लिये वैसा नहीं कर सका, जैसा वह चाहता था, क्योंकि उन्होने अपनी भूमिका नहीं निभायी। PPHin 603.3

जो पवित्र कार्यों में कार्यरत होते हैं, उनका उदाहरण ऐसा होना चाहिये जो लोगों को परमेश्वर के प्रति श्रद्धा और उसकी आज्ञा के उल्लंघन के प्रति भय से प्रभावित करे। जब मनुष्य पुनर्मिलाप और करूणा सम्बन्धित परमेश्वर के सन्देश को लोगों तक पहुँचाने के लिये मसीह के स्थान पर' खड़े होकर, अपनी पवित्र बुलाहट को प्रयोग अपनी कामुक या स्वार्थपूर्ण तृप्ति के लिये आवरण के तौर पर करते हैं, तो वे स्वयं को शैतान के सफल कमक या कार्यकर्ता बना लेते है। होप्नी और पीनहास की भाँति वे मनुष्य से 'परमेश्वर की भेंट का तिरस्कार' करवाते है। वे कुछ समय के लिये गुप्त रूप से अपने दुष्टकर्म कर सकते है, लेकिन आखिरकर जब उनका वास्तविक चरित्र सामने आता है, तब लोगों के विश्वास को ऐसा झटका लगता है कि उनका धर्म पर से विश्वास उठ जाता है। उनका मन उन सब पर सन्देह करने लगता है जो परमेश्वर के वचन को सिखाने में आस्था दिखाते है। मसीह के सच्चे दास के सन्देश को सन्देह के साथ ग्रहण किया जाता है। यह प्रश्न लगातार उठता है "कहीं यह व्यक्ति भी उसकी तरह तो नहीं होगा जिसे हमने इतना पवित्र समझा, लेकिन वह इतना भ्रष्ट निकला"? इस प्रकार मनुष्य की आत्मा पर से परमेश्वर के वचन का प्रभाव समाप्त हो जाता है। PPHin 604.1

अपने पुत्रों को दी गई, एली की फटकार में एक गम्भीर और भयावह सन्देश है-- वह सन्देश जिस पर उन सब को मनन करना चाहिये जो पवित्र कार्या में कार्यरत है: "यदि एक मनुष्य दूसरे के विरूद्ध पाप करे, तो न्यायी उसका न्याय करेगा, परन्तु यदि कोई मनुष्य यहोवा के विरूद्ध पाप करे, तो उसके लिये कौन विनती करेगा?" यदि उनके अपराधों से केवल उनके सहवासियों को आघात पहुँचा होता, तो न्यायाध्यक्ष ने अर्थदण्ड नियत करके और क्षतिपूर्ति मॉगकर सुलह करवा दी होती, और उस प्रकार दोषी को क्षमा-दान मिल जाता। और यदि वे घृष्ट पाप के दोषी होते, तो उनके लिये पापबलि का चढ़ावा चढ़ा दिया जाता। लेकिन पाप बलि चढ़ाने में सर्वोच्च परमेश्वर के याजकों के तौर पर उनकी सेवा-टहल के साथ उनके पापों का ऐसा ताना बाना था कि प्रजा के सम्मुख परमेश्वर के कार्य इतना इतना दूषित और तिरस्कत हुआ कि उनके लिये कोई प्रायश्चित स्वीकार नहीं किया जा सकता था। उनका अपना पिता, महायाजक होते हुए भी, उनके पक्ष में मध्यस्थता करने का दुस्साहस न कर सका, वह उन्हें पवित्र परमेश्वर के कोध से नहीं बचा सका। समस्त पापियों में, वे सबसे अधिक दोषी है, जो उन साधनों की उपेक्षा करते है, जिन्हें परमेश्वर ने मनुष्य के छुटकारे या उद्धार के लिये प्रदान किया है- जो "परमेश्वर के पुत्र को अपने लिये फिट कूस पर चढ़ाते हैं और प्रकट रूप से उस पर कलंक लगाते है।-इब्रियों 6:6।

अध्याय 57—वाचा के सन्दूक का पलिश्तियों द्वारा ले लिया जाना

यह अध्याय 1 शमूएल 3-7 पर आधारित है

एली के परिवार को एक और चेतावनी दी जानी थी। परमेश्वर महायाजक और उसके पुत्रों से संपर्क नहीं कर सकता था; उनके पापों ने, घने बादल के रूप में, उसके पवित्र आत्मा की उपस्थिति को बाहर कर दिया था। परन्तु बुराईयों के वातावरण में भी शमूएल परमेश्वर के प्रति सत्यनिष्ठ रहा, और सर्वोच्च परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता के रूप में शमूएल को यह आदेश दिया गया कि वह एली के घर तक दण्डाज्ञा का संदेश पहुँचाए। PPHin 606.1

"उन दिनों में यहोवा का वचन दुर्लभ था, और दर्शन कम मिलता था। और उस समय ऐसा हुआ कि एली के आँखे धुँधली होने लगी थी और उसे दिखाई नहीं पड़ता था, और वह लेटा हुआ था; परमेश्वर के मन्दिर में उसके दीपक के बुझने से पहले, जहाँ परमेश्वर का सन्दूक था और जहां शमूएल सोया हुआ था; यहोवा ने शमूएल को पुकारा।" यह मानकर कि वह आवाज एली की थी, बालक शमूएल दौड़कर याजक की शैय्या के निकट गया और बोला, "मैं यहाँ हूँ क्योंकि तूने मुझे पुकारा है।" उसे उत्तर मिला, "मैंने तुझे नहीं पुकारा पुत्र, जा फिर से लेट जा।" तीन बार शमूएल को पुकारा गया, और तीनों बार उसने ऐसे ही उत्तर दिया। और फिर एली समझ गया कि वह रहस्यमयी बुलाहट परमेश्वर की वाणी थी। अपने चुने हुए दास, जिसके बाल सफंद हो चुके थे, को छोड़कर परमेश्वर ने एक बालक के साथ सम्पर्क किया। यह अपने आप में एली और उसके परिवार के लिये एक कटु लेकिन उचित फटकार थी। PPHin 606.2

एली के हृदय में ईर्ष्या या द्वेष की थोड़ी सी भी भावना जागृत नहीं हुई। दोबारा बुलाए जाने पर शमूएल को उसने ऐसा कहने को कहा, "हे यहोवा कह, क्योंकि तेरा दास सुन रहा है। श्रद्धायुक्त भय के कारण कि महान परमेश्वर ने उससे बात की, शमूृएल एली द्वाराबताए गए शब्द ठीक-ठीक याद नहीं रख सका।' PPHin 606.3

"यहोवा ने शमूएल से कहा, "सुन, में इज़राइल में एक ऐसा काम करने पर हूँ जिससे सुनने वालों के कान झनझना उठेंगे। उस दिन मैं एली के विरूद्ध वह सब कुछ पूरा करूँगा जो मैंने उस घराने के विषय में कहा, उसे आरम्भ से अन्ततक पूरा करूँगा। क्योंकि मैंने उसे कह चुका हूँ कि मैं उस अधर्म के कारण जिसे वह जानता है, सदा के लिये उसके घर का न्याय करूंगा, क्योंकि उसके पुत्र स्वयं ही भ्रष्ट हुए, और उसने नहीं रोका। इसी कारण मैंने एली के परिवार को श्राप दिया है कि एली के घराने के अधर्म का प्रायश्चित न तो मेलबलि से कभी होगा और न अन्नबलि से।" PPHin 606.4

परमेश्वर से सन्देश प्राप्त करने से पहले, “शमूएल यहोवा को नहीं पहचानता था, और न यहोवा का वचन नहीं उस पर प्रकट हुआ था” अर्थात, परमेश्वर की उपस्थिति के ऐसे प्रत्यक्ष प्रदर्शनों से वह परिचित नहीं था, जैसे कि भविष्यद्वक्ताओं को दिखाए जाते थे। अप्रत्याशित रूप से स्वयं को प्रकट करने में प्रभु का यह प्रयोजन था कि एली इस बारे में शमूएल के अचम्भे और पूछताछ के माध्यम से जाने। PPHin 607.1

शमूएल उसे दिये गए इस भयावह सन्देश के विचार पर भय और आश्चर्य से मर गया। प्रातःकाल वह हमेशा की तरह अपने काम-काज करता रहा, लेकिन उसके हृदय पर एक भारी बोझ था। प्रभु ने उसे उस भयानक भविष्यवाणी को प्रकट करने का आदेश नहीं दिया था इसलिये वह चुप रहा और जहाँ तक संम्भव था, एली की उपस्थिति से दूर रहता रहा। वह काँप रहा था कि कहीं किसी प्रश्न के कारण वह उसके विरूद्ध ईश्वरीय दण्डाज्ञा की घोषणा करने को विवश न हो जाए जिसके लिये उसके मन में इतना प्रेम और श्रद्धा थी। एली को विश्वास था कि सन्देश उस पर और उसके घराने पर किसी महान विपत्ति की भविष्यवाणीथा । उसने शमूएल को बुलाया और उसे सच्चाई से वह सब बताने को कहा जो प्रभु ने प्रकट किया था। शमूएल ने आज्ञा का पालन किया और वृद्ध पुरूष उस भयावह कथन के प्रति दीन समर्पण में झुक गया, “वह तो यहोवा है, जो उसे भला लगे वह वही करे।” PPHin 607.2

अभी भी एली ने सच्चे प्रायश्चित के फल को प्रकट नहीं किया। उसने अपने दोष का अंगीकार किया, लेकिन पाप को त्यागने में असफल रहा। वर्ष के बाद वर्ष प्रभु ने उसके भयानक दण्डादेश में विलम्ब किया। इतने वर्षा में बीते दिनों की गलतियों को सुधारा जा सकता था, लेकिन वृद्ध याजक ने उन बुराईयों के निवारण के लिये कोई ठोस उपाय नहीं किये, जो परमेश्वर के मिलापवाले तम्बू को दूषित कर रही थी और इज़राइल में सेकड़ो को विनाश की ओर ले जा रही थी। परमेश्वर की सहनशीलता ने होप्नी और पीनहास के हृदयों को कठोर कर दिया और आज्ञा उल्लंघन में वे भी और भी निर्भीक हो गए। उसके घराने को मिली ताड़ना और चेतावनी का सन्देश एली द्वारा पूरी प्रजा को ज्ञात कराया गया। इस साधन से, वह कुछ मात्रा में, उसके बीते दिनों की उपेक्षा के दुष्प्रभाव को रोकना चाहता था। लेकिन प्रजा ने इन चेतावनियों की अवहेलना की, जैसे कि याजकों ने की थी। आस-पड़ोस के राज्य भी, जो इज़राइल में खुले आम हो रहे अधर्म के कामों से परिचित थे, अपने अपराधों और मूर्तिपूजा में और भी निर्भक हो गए। उन्हें अपने पापों के लिये दोषी होने का आभास तक न रहा, यह आभास तब होताजब इज़राइलियों ने अपनी अखंडता बनाए रखी होती। लेकिन प्रतिकार का एक दिन आने को था। परमेश्वर की सत्ता को परे रख दिया गया था, उसकी आराधना की उपेक्षा और तिरस्कार किया जा रहा था, और उसका हस्तक्षेप अनिवार्य हो गया था, जिससे उसके नाम का गौरव कायम रखा जा सके। PPHin 607.3

“अब इज़राइल पलिश्तियों पर चढ़ाई करने को गए और उन्होंने एबनेजेर के आस-पास छावनी डाली, और पलिश्तियों ने अपेक में छावनी डाली।” इज़राइलियों ने यह अभियान परमेश्वरके परामर्श के बिना, महायाजक या भविष्द्वक्ता की सहमति लिये बिना प्रारम्भ किया। “तब पलिश्तियों ने इज़राइलियों के विरूद्ध व्यूह-रचना में व्यवस्थित किया और जब घमासान युद्ध होने लगा, इजराइली पलिश्तियों से हार गए, और उन्होंने इज़राइली सेना के लगभग चार हजार पुरूषों को मैदान में ही मार डाला।” जब वह हतोत्साहित सेना छावनी में लौट कर आईं, “तब इज़राइल के वृद्ध लोग कहने लगे, “यहोवा ने आज हमे पलिश्तियों से क्यों हारने दिया?” प्रजा परमेश्वर की दण्डाज्ञा के लिये परिपक्व हो चुकी थी, फिर वे उन्होंने इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि इस भंयकर विपत्ति का कारण उनके अपने पाप थे। और उन्होंने कहा, “आओ हम यहोवा की वाचा का सन्दूक शिलोह से माँग ले आएँ कि वह हमारे बीच में आकर हमें शत्रुओं के हाथ से बचाए।” परमेश्वर ने न ही आज्ञा दी थी ना अनुमति कि सन्दूक को सेना के पास आना चाहिये, फिर भी इज़राइली आश्वस्त थे कि विजय उन्हीं की होगी और जब वह सन्दूक एली के पुत्रों के द्वारा छावनी में लाया गया , सारे इज़राइली पूराबल लगाकर ललकारे। PPHin 608.1

पलिश्ती वाचा के सन्दूक को इज़राइल के देवता के रूप में देखते थे। जितने भी गौरवशाली कार्य यहोवा ने अपने लोगों को लिये किए थे उनका श्रेय सन्दूक को दिया गया। जब उन्होंने उसके पहुँचने पर ललकार को सुना तो उन्होंने कहा, “इब्रियों की छावनी में इतने ऊंचे स्वर में ललकार का क्या कारण है? तब उन्होंने जान लिया कि यहोवा का सन्दूक छावनी में आया है। तब पलिश्ती डर कर कहने लगे, उस छावनी में परमेश्वर आ गया है। फिर उन्होंने कहा, “हाय! हम पर ऐसी बात पहले नहीं हुई थी। हाय! ऐसे महाप्रतापी देवताओं के हाथ से हमें कौन बचाएगा? ये तो वही देवता है जिन्होनें मिस्रियों पर बीहड़ में सब प्रकार की विपत्तियाँ भेजी थी। हे पलिश्तियों, तुम हियाव बाँधो, और पुरूषार्थ जगाआं, कही ऐसा न हो कि जैसे इब्री तुम्हारे अधीन हो गए वैसे तुम भी उनके अधीन हो जाओ, पुरूषार्थ करके संग्राम करो।” PPHin 608.2

तब पलिश्ती लड़ाई के मैदान में टूट पड़े बहुत नरसंहार हुआ और इज़राइल की हार हुई । तीस हजार पुरूष मैदान में मृत पड़े थे, और परमेश्वर का सन्दूक छीन लिया गया, और एली के दोनो पुत्र, होप्नी और पीनहास भी मारे गए। एक बार फिर इतिहास के पृष्ठों पर आने वाले सभी युगों के लिये एक साक्ष्य छोड़ा गया- कि परमेश्वर के तथाकथित लोगों के अधर्म को अवश्य दण्डित किया जाएगा। परमेश्वर की इच्छा का जितना अधिक ज्ञान हो, उतना ही बड़ा उनका पाप होगा जो उस इच्छा का तिरस्कार करते है। PPHin 609.1

सबसे भयानक विपत्ति जो घटित हो सकती थी, वह इज़राइल पर आ पड़ी थी। परमेश्वर का सन्दूक पलिश्तियों द्वारा अधिकृत कर लिया गया था, और शत्रु के कब्जे में था। जब यहोवा की सामर्थ्य और स्थायी उपस्थिति इज़राइलके बीच से उठ चुकी गई, तब इज़राइल का गौरव जाता

रहा। इस पवित्र सन्दूक के साथ परमेश्वर के सत्य और सामर्थ्य के सबसे आश्चर्यजनक प्रदर्शन सम्बद्ध थे। PPHin 609.2

बीते दिनों में जब भी वह प्रकट होता था, चमत्कारपूर्ण विजय प्राप्त होती थी। वह सोने के करूब के पंखो से आच्छादित था, और यहोवा का तेज, जो सर्वौच्च परमेश्वर का सदृश्य चिन्ह था, पवित्रों के पवित्र में, उसके ऊपर ठहरता था। लेकिन अब वह कोई विजय लेकर नहीं आया। इस अवसर पर वह बचाव प्रमाणित नहीं हुआ और इज़राइल के प्रत्येक भाग में शोक मनाया गया। PPHin 609.3

उन्हें समझ नहीं आया था कि उनका विश्वास केवल नाममात्र का विश्वास था, और परमेश्वर के साथ प्रबल होने का सामर्थ्य खो चुका था। सन्दूक के भीतर, परमेश्वर की व्यवस्था भी, उसकी उपस्थिति का प्रतीक थी, लेकिन उन्होंने आज्ञाओं की अवमानना की और उनके अधिकार का तिरस्कार किया, और परमेश्वर के आत्मा को दुख पहुँचाया। जब लोग पवित्र सिद्धान्तों का पालन किया करते थे, तब परमेश्वर अपनी असीम सामर्थ्य के द्वारा उनके लिये कार्य करने के लिये उनके साथ होताथा; लेकिन जब वे सन्दूक को देखते थे, और उसे परमेश्वर से सम्बद्ध नही करते थे और ना ही उसकी आज्ञा के पालन द्वारा उसकी प्रकट इच्छा का मान रखते थे, तब वह सन्दूक उनके लिये एक साधारण डिब्बे से थोड़ा अधिक हितकारी होता था। वे सन्दूक को उस दृष्टि से देखते थे जैसे मूर्तिपूजक देश अपने देवताओं को देखते थे, मानो उसमें अपने आप में उद्धार और सामर्थ्य के तत्व विद्यमान हो। उन्होंने उसमें रखी आज्ञा का उल्लंघन किया, क्योंकि उनके द्वारा की गईं आराधना ने मूर्तिपूजा, पांखड और रीतिवाद को बढ़ावा दिया। उनके पाप ने उन्हें परमेश्वर से अलग कर दिया था, और वह उन्हें तब तक विजय नहीं दे सकता था जब तक कि वे अपने अधर्म के कार्यों का परित्याग न कर दे और उनके लिये प्रायश्चित न करें। PPHin 609.4

इज़राइल के मध्य मिलापवाले तम्बू और वाचा के सन्दूक का होना पर्याप्त नहीं था। यह कि याजक बलि की भेंट चढ़ाते थे और लोगों को परमेश्वर की संतान कहा जाता था, पर्याप्त नहीं था। परमेश्वर उनके निवेदन का मान नहीं रखता जो हृदय में अधर्म को संजोए रखते हैं। नीतिवचन 28:9में लिखा है, "जो अपने कान व्यवस्था को सुनने से मोड़ लेता है, उसकी प्रार्थना घृणित ठहरती है। PPHin 610.1

जब सेनायुद्ध करने को गई, वह वृद्ध और अन्धा एली, शिलोह में ठहर गया था। चिन्तायुक्त पूर्वाभास के साथ वह संघर्ष के परिणाम की प्रतीक्षा करतारहा, "उसका मन परमेश्वर के सन्दूक की चिन्ता से थरथरा रहा था ।"वह मिलापवाले तम्बू के फाटक के बाहर मार्ग के किनारे बैठा रणभूमि से दूत के आने की बाट जो रहा था। PPHin 610.2

बहुत समय बाद, सेना सेएक बिन्यामी मनुष्य "अपने वस्त्र फाड़े और सिर पर मिट्टी डाले हुए तेजी से वह चढ़ाई चढ़कर आया जो शहर कोजाती थी। मार्ग के किनारे बैठे वृद्ध पुरूषको अनदेखा

कर, वह शहर की ओर दौड़ा और वहाँ पहुँचकर उत्सुक भीड़ को हार और जीत का समाचार सुनाया। PPHin 610.3

हाहाकार और विलाप की आवाज मिलाप वाले तम्बू के पास बेठे प्रतीक्षा करने वाले के कानों में पड़ी। दूत को उसके पास लाया गया। और आगन्तुक ने उससे कहा, "इज़राइली पलिश्तियों के सामने से भाग आए हैं, और भयानक नरसंहार हुआ है, और तेरे दोनो पुत्र होप्नी और पीनहास भी मारे गए, और परमेश्वर का सन्दूक भी छीनलिया गया है।" पुत्रों के मारे जानेकी दुखद सूचना तक तो एली से सब सहन कर लिया, क्योंकि उसने ऐसा ही सोचा था। लेकिन जब दूत ने आगे सन्दूकके लिये बताया तो उसके मुख पर अकथनीय वेदना उभर आयी। यह विचार कि उसके पाप ने इस प्रकार परमेश्वर का निरादर किया था जिसके कारण परमेश्वर ने इज़रईल से अपनी उपस्थिति को हटा लिया, उसकी सहनशक्ति से बाहर था, वह शक्तिहीन हो गया, और गिर गया, "और उसकी गरदन टूगई और वह मर गया।" PPHin 610.4

पीनहास की पत्नी अपने पति के अधर्म के बावजूद, परमेश्वर का भयमानने वाली स्त्री थी। अपने पति और अपने श्वसुर की मृत्यु, और विशेषकर, परमेश्वर के सन्दूक के छीन लिये जाने का समाचार सुन वह मृत्यु की गोद में सो गईं। उसने सोचा कि इज़राइल की अन्तिम आशा भी जाती रही, और विपत्ति की इस घड़ी में जन्मे शिशु का नाम उसने 'इकाबोद' रखा जिसका तात्पर्य है "अकीर्तिकर" और मरते समय वह यह शब्द दोहराती रही, "इज़राइल में से महिमा उठ गई है, क्योंकि परमेश्वर का सन्दूक छीन लिया गया है। PPHin 611.1

लेकिन प्रभुने अपनी प्रजा को बिल्कुल ही नहीं छोड़ दिया था, ना ही वह अधर्मियों का हषोल्लास देर तक सहन करने वाला था। उसने इज़राइल को दण्डित करने के लिये साधन के रूप में पलिश्तियों का उपयोग किया था, और अब पलिश्तियों को दण्ड देने के लिये उसने सन्दूक का प्रयोग किया। बीते समय में परमेश्वर के आज्ञाकारी लोगों का गौरव और सामर्थ्य होने के लिये, परमेश्वर की उपस्थिति उस पर ठहरती थी, वह अदृश्य उपस्थिति अभी भी साथ होगी, जिससे कि उसकी आज्ञा का उल्लंघन करने वालों का विनाश हो सके। परमेश्वर अधिकतर उसकी तथाकथित प्रजा की निष्ठाहीनता को दण्डित करने के लिये अपने सबसे कट्टर शत्रुओं का प्रयोग करता है। इज़राइल को दण्डित हुआ देख, दुष्ट कुछ समय के लिये आनन्द मना सकते है, लेकिन समय आएगा जब उन्हें एक पवित्र, पाप से घृणा करने वाले परमेश्वर के दण्डादेश का सामना करना होगा। जहाँ भी अधर्म को संजोया जाता है, वहां शीघ्र और अचूक पवित्र दण्डाज्ञाएं भेजी जाती है। PPHin 611.2

पलिशितियों ने हर्षोल्लास के साथ परमेश्वर के सन्दूकको उठाकर अशदोद, जो पांच मुख्य नगरों में से एक था, में पहुँचाकर उसे अपने देवता दागोन के मन्दिर में रख दिया। उन्होंने कल्पना की कि जो सामर्थ्य इससे पहले सन्दूक के साथ होता था अब उनका होगा और यह कि उस सामर्थ्य के साथ मिलने से वे अपराजेय हो जाएँगे। लेकिन अगले दिन मन्दिर में प्रवेश करने पर उन्होंने वह

दृश्यदेखा जिससे वे घबरा गए। दागोन यहोवा के सन्दूक के सामने औंधे मुहँ भूमि पर गिर पड़ा था। याजकों ने मूर्ति को श्रद्धापूर्वक उठाकर नियमित स्थान पर पुनः:स्थापित कर दिया। लेकिन अगले दिन उन्होंने मूर्ति को विकृत हुआ पाया और देखा कि वह फिर सन्दूक के सामने प्रथ्वी पर गिरी पड़ी थी। इस मूर्ति का ऊपरी भाग मनुष्य के समान था, और निचला भाग मछली के स्वरूप में था। प्रत्येक अंग जो मानव आकृति से मेल खाता था, वह कटा हुआ थाऔर केवल मछली का शरीर बचा हुआ था। याजक और लोग भयभीत हो गए, उन्होंने इस रहस्यमयी घटना कोएक अपशकून होने की दृष्टि से देखा,जो इब्रियों के परमेश्वर के सामने उनके और उनकी मूर्तियों के विनाश का पूर्वभास करा रही थी। अब उन्होंने सन्दूक को हटाकर एक अलग भवन में रख दिया। PPHin 611.3

अश्दोद के निवासियों पर एक घातक व कष्टदायक रोग की मार पड़ी । इज़राइल के परमेश्वर द्वारा मिस्र पर भेजी गई विपत्तियों का स्मरण कर, लोगों ने उनके बीच सन्दूक की उपस्थिति को उनकी आपदाओं का कारण बताया सन्दूक को गत नामक नगर में पहुँचाने का निर्णय लिया गया। लेकिन विपत्ति वहाँ तक भी पहुँच गई इसलिये उस नगर के वासियों ने सन्दूक को एकोन भेज दिया । यहाँ के लोग सन्दूक के आने से डर गए और चिल्लाने लगे, "इज़राइल के परमेश्वर का संदूक हमारे पास इसलिये पहुँचाया गया है कि हम और हमारे लोगोंको मरवा डाले ।" जैसा गत और अश्दोद के लोगों ने किया था, एकोनी भी सुरक्षा के लिये अपने देवताओं की शरण में गए, लेकिन विनाशक का कार्य चलता रहा, और दुखी होकर "नगर की चिललाहट आकाश तक पहुँची ।" सन्दूक को बहुत दिनों तक लोगों के घरों के बीच रखने के डर से, उन्होंने उसे खुले मैदान में रखदिया। इसके बाद चूहों का आंतक, जो पूरे देश में फैल गया और जिसने खेतों और भण्डारों, दोनों की उपज को नष्ट कर दिया। अकाल और बीमारों द्वारा सम्पूर्ण विनाश अब राज्य को चुनौती दे रहा था। PPHin 612.1

यहोवा का सन्दूक पलिश्तियों के देश में सात महीनों तक रहा, और इस पूरे समय के दौरान, इज़राइलियों ने इसकी पुनः प्राप्ति के लिये कोई प्रयास नहीं किया । लेकिन पलिशिती सन्देक से छुटकारा पाने के लिये उतने ही उत्सुक थे जितने कि उसे प्राप्त करने के लिये थे। बल का स्रोत होने के बजाय, वह उनके लिये एक बड़ा बोझ और श्राप था। लेकिन वे नहीं जानते थे कि कौनसा रास्ता अपनाएँ, क्योंकि जहाँ भी सन्दूक जाता परमेश्वर की दण्डाज्ञा वहाँ पहुँच जाती। तब लोगों ने देश के सरदारों, याजकों और भविष्यद्वक्ताओं को बुलाया और उत्सुकतावश उनसे पूछा, "यहोवा के सन्दूक से हम क्या करे। हमें बताओ कि हम सन्दूक को वापस इसके घर कैसे भेजें?" उन्हें सन्दूक को एक बहुमूल्य दोषबलि की भेंट के साथ लौटाने का सुझाव दिया गया। याजकों ने कहा, "तब तुम चंगे हो जाआगे, और तुम जान लोगे कि उसका हाथ तुम पर से क्यों नहीं उठाया गया।' PPHin 612.2

विपत्ति से बचाव करने या उसे दूर करने के लिये मूर्तिपूजक जातियों में यह प्रथा थी कि वे विनाश के स्रोत या विपत्ति के कारण प्रभावित शरीर के अंग की सोने, चांदी या अन्य धातु की आकति बनाकर एक स्तम्भ पर या किसी प्रमुख स्थान पर रख देते थे, और उन आकृतियों को जिन

विपत्ततियों का वे प्रतीक थी, उनके प्रति प्रभावशाली सुरक्षा माना जाता था। ऐसी ही प्रथा कुछ मूर्तिपूजक जातियों में अभी भी प्रचलित है। जब एक रोगग्रस्त मनुष्य चंगाई प्राप्त करने के लिये अपने देवता के मन्दिर जाताहै, वह अपने साथ प्रभावित अंग की आकृतिले जाता है, जिसे वह अपने देवता का चढ़ावे के रूप मे चढ़ाता है। PPHin 613.1

प्रचलित अन्धविश्वासों के आधार पर पलिश्ती सरदारों ने लोगो को उन पर आई विपत्तियों के प्रतिरूप बनाने को कहा, "पलिश्ती सरदारों की गिनती के अनुसार सोने की पांच गिलटियाँ और सोने के पांच चूहे क्योंकि तुम सब और तुम्हारे सरदार दोनो एक ही रोग से ग्रसित हो। PPHin 613.2

इन बुद्धिजीवियों ने स्वीकार किया कि सन्दूक के साथ एक रहस्यमयी सामर्थ्य था जिसका सामना करने की प्रतिभा उनमें नहीं थी। फिर भी उन्होंने लोगों को मूर्तिपूजा छोड़कर परमेश्वर की उपासना करने की सलाह नहीं दी। वे अभी भी इज़राइल के परमेश्वर से घृणा करते थे, हालाँकि उसके दण्डादेशों ने उन्हें उसके प्रभुत्व के प्रति सर्मपण करने को विवश कर दिया था। इस प्रकार पापियों को परमेश्वर की दण्डाज्ञाओं के आधार पर आश्वस्त हो जाना चाहिये कि परमेश्वर के विरूद्ध संघघष करना व्यर्थ है। संभव है कि वे उसकी सत्ता को समर्पित होने के लिये विवश हो जाएँ, पर हृदय से वे उसके नियन्त्रण का विरोध करते रहे। ऐसा समर्पण पापीको बचा नहीं सकता। हृदय को परमेश्वर के प्रति समर्पित होना चाहिये; पवित्र अनुग्रह से वशीभूत होना चाहिये- इससे पहले कि मनुष्य का प्रायश्चित स्वीकार हो। PPHin 613.3

कितनी उदार है दुष्टों के लिये परमेश्वर की चिरसहिष्णुता! मूर्तिपूजक पलिश्ती और स्वधर्म-त्यागी इज़राइल दोनो ने परमेश्वर की आशीषों को पाया था ।[उपद्रवी, कृतज्ञहीन मनुष्यों के मार्ग में दस हजार अज्ञात दया की आशीषें चुपचाप बरस रही थी। प्रत्येक आशीष उन्हें देने वाले 'दाता' के बारे मेंबता रही थी, लेकिन वे उसके प्रेम के प्रति उदासीन थे। मनुष्य के पुत्रों के प्रति परमेश्वर की सहनशीलता अधिक थी, लेकिन जब उन्होंने हठी होकर प्रायश्चित नहीं किया, तब उसने उनपर से अपना हाथ हटा लिया जो उनकी सुरक्षा करता था। उन्होंने परमेश्वर की कतियों में उसके वचन की चेतावनियों में, परामर्श में, फटकार में उसकी आवाज को सुनने से इन्कार कर दिया, और इस प्रकार परमेश्वर उनसे दण्डादेशों के माध्यम से बात करने के लिये बाध्य हो गया। PPHin 614.1

कुछ पलिश्ती थे जो संदूक को उसके अपने स्थान पर लौट जाने देने की पक्ष में नहीं थे। इज़राइल के परमेश्वर के सामर्थ्य का ऐसा अंगीकरण पलिश्तियों की शान के लिये अपमानजनक होता। लेकिन "याजकों और भविष्यद्वक्ताओं" ने लोगो की डॉटा कि वे मिस्रियों और फिरीनक हठीलेपन को न अपनाएँ और न ही उसके कारण अपने ऊपर और अधिक विपत्तियां लाएँ। एक योजना, जिसे सबकी सहमति मिल गई, प्रस्तावित की गई, और तत्काल क्रियान्वित की गईं। सोने की दोषबलि की भेंट के साथ, सन्दूक को एक नए वाहन पर रखा गया, ताकि अपवित्र होने का खतरा न हो, इसके साथ दो दुधार गायें जो जूए तले न आई थी, जोती गई। उन गायों के बछड़ो को

घर पर बन्द कर दिया गया और गायों को उनकी इच्छानुसार कहीं भी जाने के लिये स्वतन्त्र छोड़ दिया गया। यदि सन्दूक लैवियों के निकटतम शहर, बेतशेमेश के मार्ग से, इस प्रकार, इज़राइलियों के पास लौट जाए तो पलिश्त इसे प्रमाण के रूप में स्वीकार करेंगे कि इज़राइल के परमेश्वर ने उन पर ये विपत्ति भेजी थी, "और यदि नहीं तो हम को निश्चय होगा कि यह मार हम पर उसकी ओर से नहीं परन्तु संयोग ही से हुई। PPHin 614.2

स्वतन्त्र होकर, गायों ने अपने बछड़ो को छोड़, बेतशेमेश का सीधा मार्ग लिया और रंभाती हुई चली गई। किसी मनुष्य ने उनका मार्गदर्शन नहीं किया, इन धेर्यवान पशुओं ने अपना मार्ग नहीं छोड़ा। पवित्र उपस्थिति सन्दूक के साथ थी और वह अपने निर्धारित स्थान पर सुरक्षित पहुँच गया। PPHin 614.3

यह गेहूँ की फसल काटने का समय था, और बेतशेमेश के लोग तराई में गेहूँ काट रहे थे। "जब उन्होंने आँखे उठाकर सन्दूक को देखा, तब उसको देखने से वे आनन्दित हुए। गाड़ी यहोशू नामक एक बेतशेमेशी के खेत में जाकर वहाँ ठहर गई, जहाँ एक बड़ा पत्थर था। तब उन्होंने गाड़ी की लकड़ी को चीरा और गायों को होमबलि करके यहोवा के लिये चढ़ाया।" पलिश्तियोंके सरदार, जो सन्दूक के पीछे-पीछे "बेतशेमेश की सीमा तक गए थे" उसकी अगवानी के साक्षी ठहरे औरवे एकोन को लौट आए। विपत्तियाँ थम गई, और उन्हे विश्वास हो गया कि उनपर आईं आपदाएँ इज़राइल के परमेश्वर की दण्डाज्ञा थी। PPHin 614.4

बेतशेमेश के पुरूषों ने शीघ्रता से सन्दूक के उनके अधीकृत होने का समाचार फैला दिया और पड़ोस के देशक लोग उसकी वापसी का स्वागत करने उमड़ पड़े। सन्दूक को उस पत्थर पर रखा गया जिसे पहले वेदी की तरह प्रयोग किया जाता था औरउसके सम्मुख परमेश्वर के लिये अतिरिक्त बलि की भेंटे चढ़ाई जाती है। यदि भक्तों ने अपने पापों का प्रायश्चित किया होता, तो परेश्वर उन्हें आशीष देता। लेकिन वे व्यवस्था का निष्ठापूर्वक पालननहीं कर रहे थे, वे सन्दूक को सुख का अग्रदूत मानकर आनन्दित तो हुए, लेकिन वे उसकी पवित्रता को वास्तव में अनुभव नहीं कर रहे थे। उसकी अगवानी के लिये उपयुक्त स्थान तैयार करने के बजाय उन्होंने उसे खलिहान में ही रहने दिया। वे उसे निहारते रहे, और जब वे सन्दूक की आश्चर्यजनक वापसी के बारे में बात कर रहे थे, वे सोचने लगे कि उसका विलक्षण सामर्थ्य किस में निहित था। अन्ततः, उत्सुकतावश, उन्होंने उसके आच्छादन को हटाकर उसे खोलने का दुस्साहस किया। PPHin 615.1

सम्पूर्ण इज़राइल को सन्दूक का भय और श्रद्धा के साथ मान रखना सिखाया गया था। उसे एक जगह से दूसरी जगह ले जाने में उन्हें उसे ताकना नहीं था। याजक को वर्ष में केवल एक बार परमेश्वर के संदूक को देखने की अनुमति दी जाती थी। मूर्तिपूजक पलिशितियों ने भी उसके आच्छादन हटाने का दुस्साहस नहीं कियाथा। अदृश्य स्वर्गदूत उसकी सब यात्राओं में उसकी सेवा

में उपस्थित रहते थे। बेतशेमेश के लोगों की श्रद्धाहीन निर्भकिता को शीघ्रता से दण्डित किया गया। कई लोगों की आकस्मिक मृत्यु हो गई। PPHin 615.2

इस दण्डाज्ञा से उत्तरजीवी अपने पापों का प्रायश्चित करने के बजाय, सन्दूक को केवल अन्धविश्वासी भय के साथ देखने लगे। वे उसकी उपस्थिति से छुटकारा पाने के लिये उत्सुक थे, लेकिन उसे हटा देने का दुस्साहस न कर सके, और उन्होंने अर्थात बेतशेमेशियों ने किर्यत्यारीम के निवासियों को सन्दूक को वहाँ से ले जाने का निमन्त्रण दिया। इस जगह के लोगों ने पवित्र सन्दूक का प्रसन्नतापूर्वक स्वागत किया। उन्हें यह ज्ञात था कि वह सन्दूक निष्ठावान और आज्ञाकारी लोगों के प्रति ईश्वरीय कृपा दृष्टि की शपथ था। सौम्यतपूर्ण प्रसन्नता के साथ वे उसे अपने नगर में लाए और उसे एक लेवी, अबीनादाब के घर में रख दिया। इस व्यक्ति ने सन्दूक का कार्यभार लेने के लिये अपने पुत्र एलीआजार को नियुकत किया, और सन्दूक वहाँ बहुत समय तक रहा। PPHin 615.3

हन्ना के पुत्र पर प्रभु के स्वयं प्रकट होने के समय से आगामी वर्षो में भविष्यवाणी सम्बन्धित कार्य के लिये शमूएल को बुलाए जाने को समस्त प्रजा द्वारा स्वीकृति मिल गई थी। हालाँकि एली के परिवार को इश्वरीय चेतावनी पहुँचाना कठिन और पीड़ाजनक था, लेकिन इस कर्तव्य का निष्ठापूर्वक पालन करके शमूएल ने यहोवा के दूत के तौर पर अपनी स्वामिभक्ति का प्रमाण दे दिया था, “और यहोवा उसके संग रहा, और उसने उसकी कोई भी बात निष्फल नही होने दी, और दान से बेशैबा तक के रहने वाले सारे इज़राईलियों ने जान लिया कि शमूएल यहोवा का नबी होने के लिये नियक्त किया गया है। PPHin 616.1

राज्य के रूप में इज़राइली मूर्तिपूजा और अधर्म की अवस्था में बने रहे, और दण्ड के रूप में वे पलिश्तियों के अधीन रहते रहे। इस समय के दौरान शमूएल देशभर के नगर और गाँवों को गया कि वह लोगों के हृदयों को उनके पूर्वजों के परमेश्वर की ओर मोड़ सके, और उसके प्रयत्न सफल हुए। बीस वर्षो तक शत्रुओं द्वारा उत्पीड़न सहने के बाद इज़राइली “विलाप करते हुए यहोवा के पीछे चलने लगे।” शमूएल ने उन्हें सम्मति दी, “यदि तुम अपने पूरे मन से यहोवा की ओर फिरे हो, तो पराए देवताओं और अश्तोरेत देवी को अपने बीच में से दूर करो, और यहोवा की ओर अपना मन लगाकर केवल उसी की उपासना करो ।” यहाँ हम देखते है कि शमूएल के समय में व्यवहारिक धर्मपरायणता और वास्तविक धर्म जैसा कि मसीह, इस पृथ्वी पर होने के समय, सिखाता था। मसीह के अनुग्रह के अभाव में प्राचीन इज़राइल के लिये धर्म के दिखावटी रूप व्यर्थ थे। यही वर्तमान इज़राइल पर भी लागू होता है। PPHin 616.2

प्राचीन इज़राइल द्वारा अनुभव किये गये सच्चे सहृदय धर्म अर्थात वास्तविक धर्म के ऐसी ही धार्मिक जागृति की आवश्यकता है। परमेश्वर की ओर लौटने वालों द्वारा लिये जाना वाला पहला कदम प्रायश्चित है। कोई भी किसी अन्य के इस कार्य को नहीं कर सकता। हमें व्यक्तिगत रूप से

हमारी आत्माओं अर्थात हृदयों को परमेश्वर के सम्मुख दीन करना चाहिये और मूर्तियों अर्थात पूजित वस्तुओं को दूर कर देना चाहिये। जब हम वह सब कर लेते है जो हम कर सकते हैं, प्रभु उसके उद्धार को हम पर प्रकट करेगा। PPHin 616.3

गोत्रों के सरदारों के सहयोग से, मिस्पा में बड़ी संख्या में लोग एकत्रित हुए। यहाँ पर लोगो ने एक विधिवत व्रत रखा। दीन होकर लोगों ने अपने पापों का अंगीकार किया, और सुने निर्देशों का पालन करने के दृढ़ संकल्प को प्रमाणित करने के लिये उन्होंने शमूएल को न्याय करने का अधिकार प्रदान किया। PPHin 617.1

पलिश्तियों ने इस सम्मेलन को युद्ध की विचार सभा समझा और इज़राइलियों की योजनाओं के परिपक्व होने से पहले ही वे एक सशक्त सेना के साथ उन्हें तितर-बितर करने के लिये निकल पड़े। उनके आने के सूचना पाकर इज़राइल में डर की लहर दौड़ गई। और इज़राइलियोंने शमूएल से कहा, “हमारे लिये हमारे परमेश्वर यहोवा की दुहाई देना न छोड़ जिससे वह हमें पलिश्तियों के हाथ से बचाए।” PPHin 617.2

जब शमूएल होमबलि को चढ़ा ही रहा था, उस समय पलिश्ति इज़राइलियों के संग युद्ध करने के लिये निकट आ गए।। फिर उस शक्तिशाली परमेश्वर ने जो अग्नि और धुएँ और मेघगर्जन के बीच सिने पर उतरा था, जिसने लाल समुद्र के दो भाग कर दिये, और जिसने इज़राइल की संतान के लिये यरदन में से मार्ग निकाला, अपने सामर्थ्य को प्रकट किया। एक बड़े बवण्डर ने बड़ती हुई सेना को अपनी चपेट मे ले लिया और पृथ्वी पर शूरवीर योद्धाओं के मृत शरीरों का ढेर लग गया। PPHin 617.3

इज़राइली श्रद्धा से चुपचाप खड़े रहे, और वे भय और आशा से काँपं रहे थे। जब उन्होंने अपने शत्रुओं को नरसंहार को देखा.उन्हें ज्ञात हो गया कि परमेश्वर ने उनके प्रायश्चित को स्वीकारकर लिया था। हालाँकि वे युद्ध के लिये हथियारबन्ध नहीं थे, उन्होंने वध किये हुए पलिश्तियों के हथियार छीन कर भागती हुई सेना का बेतकर तक पीछा किया। यह महत्वपूर्ण विजय उसी मैदान पर प्राप्त हुई, जहाँ बीस वर्ष पूर्व, इज़राइल पलिश्तियों के आगे हार गया था, याजकों का वध किया गया था और परमेश्वर का सन्दूक छीन लिया गया था। राष्ट्र और व्यक्तियों के लिये, परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता का मार्ग ही सुख और सुरक्षा का मार्ग है, जबकि आज्ञा का उल्लंघन का मार्ग हमे विनाश और पराजय की ओर ले जाता है। पलिश्ती अब पूर्ण रूप से अधीकृत हो चुके थे, इसलिये उन्होंने इज़राइल से छीने हुए गढ़ भी उन्हें लौटा दिये और कई वर्षों तक वे शत्रुता के कृत्यों से दूर रहे। दूसरे देशों ने भी इस उदाहरण को अपनाया और शमूएल के पूरे शासन काल में इज़राइली शान्ति से रहे। PPHin 617.4

मिस्पा और शेन के बीच में शमूएल ने स्मारक के रूप में एक बड़ा सा पत्थर खड़ा किया, जिससे इस अवसर को कभी भी भुलाया न जाए। उसने इस पत्थर का नाम एबनेजेर रखा जिसका

अर्थ है, 'सहायता का पत्थर' और उसने लोगों से कहा, "यहाँ तक यहोवा ने हमारी सहायता की।" PPHin 618.1

अध्याय 58—भविष्यवक्ताओं के सम्प्रदाय

परमेश्वर स्वयं इज़राइल की शिक्षा को निर्देशित करता था। उसका दायित्व उनके धार्मिक सरोकारों तक सीमित नहीं था, जो भी उनके मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता था, वह ईश्वरीय देख-रेखका विषय था, और पवित्र व्यवस्था के दायरे में था। PPHin 619.1

परमेश्वर ने इब्रियों को आज्ञा दी थी कि वे अपने बच्चों को उसके नियम सिखाए और उनके पूर्वजों के साथ परमेश्वर के व्यवहार से परिचित कराएँ। यह प्रतयंक अभिभावक का एक विशेष कर्तव्य था, विशेष इसलिये क्योंकि इसे किसी भी अन्य कर्तव्य से बदला नहीं जा सकता था। अपरिचितों के होठों से निर्देशदिये जाने के बजाय, माता और पिता के स्नेहयुक्त हृदयों की घटनाओं के साथ परमेश्वर से सम्बन्धित विचारों को सम्बद्ध करना था। अपने लोगों के छुटकारे में परमेश्वर के महान कार्यों आने वाले उद्धारकर्ता की प्रतिज्ञाओं को इज़राइल के परिवारों में प्रायः दोहराया जाना था। चित्रों और प्रतीकों के प्रयोग ने दी हुई सीख या शिक्षा को स्मृति पट पर स्थिरता से अंकित कर दिया। यहोवा की उदारता के और आने वाले जीवन के महान सत्य ने युवा मन को प्रभावित किया। वह रहस्योद्घाटन के शब्दों और प्रकृति के दृश्यों में परमेश्वर को समान रूप से देखने के लिये प्रशिक्षित किया गया। आकाश के नक्षत्र, मैदानों के वृक्ष और पुष्प, ऊंचे-ऊंचे पर्वत और कलकल करती नदी की धाराएँ-- सभी सृष्टिकर्ता की बात करते थे। मिलाप वाले तम्बू पर आराधना और बलि की पवित्र विधि और भविष्यद्वक्ताओं के कथन परमेश्वर के प्रकाशित वाक्य थे। PPHin 619.2

मूसा की गोशेन के साधारण झोपड़ीनुमा घर में, शमूएल की हन्ना द्वारा, दाऊद की बेतलहेम के पहाड़ी निवास में, और दासत्व के कारण अपने पूर्वजों के घर से अलग हो गए दानिय्येल का प्रशिक्षण भी ऐसा ही था, ऐसे ही प्रशिक्षण द्वारा बालक तीमुथियुस ने अपनी नानी लोइस और माँ युनिके के होठों से पवित्र लेख के सत्य को जाना। PPHin 619.3

युवाओं के निर्देशन के लिये भविष्यद्वक्ताओं के सम्प्रदायों के संस्थान द्वारा आगे का प्रयोजन किया गया। यदि कोई युवा परमेश्वर के वचन की सच्चाई का गहन अध्ययन करने का इच्छुक था और स्वर्ग से बुद्धिमता पाना चाहता था, जिससे कि वह इज़राइल में शिक्षक बन सके, उसके लिये यह सम्प्रदाय खुले थे। भविष्यद्वक्ताओं के सम्प्रदाय शमूएल द्वारा व्यापक भ्रष्टाचार के विरूद्ध अवरोधके रूप में युवाओं के नैतिक व आध्यात्मिक समृद्धि के प्रयोजन के लिये और राष्ट्र के लिये अगुवों और सलाहकारों के तौर पर परमेश्वर के भय में कार्य करने वाले सुयोग्य पुरूषों को जुटाकर भविष्य की समृद्धि के लिये स्थापित किये गए। इस लक्ष्य की उपलब्धि के लिये शमूएल ने नवयुवकों की टोलियों को एकत्रित किया जो धार्मिक प्रवृति के बुद्धिमान और अध्ययनपरायण थे। इन्हें भविष्यद्वक्ताओं के पुत्र कहा जाता था। जैसे-जैसे उन्होनें परमेश्वर से सम्पक साधा, और उसके कार्यों और उसके वचन का अध्ययन किया, उनके स्वाभाविक प्रतिभाओं के साथ स्वर्ग से प्राप्त बुद्धिमत्ता

जुड़ गईं। ये गुरू या निर्देशक ईश्वरीय सत्य में केवल सुप्रवीण मनुष्य मात्र नहीं थे, वरन् ये वह लोग थे जिन्हें परमेश्वर के साथ सम्पक करने का सौभाग्य प्राप्त था और जिन्हें पवित्र आत्मा का विशेष दान प्राप्त हुआ था। अपने ज्ञान और धार्मिकता के कारण उन्हें लोगों का आदर और विश्वास प्राप्त था। PPHin 619.4

शमूएल के समय में ऐसे दो सम्प्रदाय थे- एक रामा में, जो भविष्यद्वक्ताओं का घर था, और दूसरा किर्यत्यारम में, जहाँ उस समय सन्दूक था। अन्य सम्प्रदाय बाद में स्थापित किये गए। PPHin 620.1

इन सम्प्रदायों के शिष्य किसी तकनीकी व्यवसाय या खेतों में हल चलाकर अपने निजी परिश्रम द्वारा अपना भरण-पोषण करते थे ।इज़राइल में यह तुच्छ या अदभुत नहीं माना जाता था। यथार्थ में, बच्चों को उपयोगी श्रम की अज्ञानता में बढ़े होने देने की अनुमति को अपराध माना जाता था। परमेश्वर के आदेशानुसार, भले ही बच्चे को पवित्र कार्यों के लिये शिक्षित किया जाना हो, प्रत्येक को किसी न किसी व्यवसाय के लिये प्रशिक्षित किया जाता था। कई धर्म के शिक्षक मजदूरी करके अपनी उपजीविका कमाते थे। प्रेरितों के समय में भी पौलुस और अकीला तम्बू बनाकर आजीवका कमाते थे लेकिन इसके कारण वे कम सम्मानीय नहीं थे। PPHin 620.2

इन सम्प्रदायों में परमेश्वर की व्यवस्था और उसके साथ मूसा के निर्देश, पवित्र इतिहास, पवित्र संगीत और काव्य मुख्य विषय थे। निर्देशन का तरीका वर्तमान की आध्यात्मविद्या सम्बंधी संस्थाओं की शिक्षा से बहुत भिन्न था, वर्तमान की संस्थाओं से शिष्य प्रवेश के समय से भी बहुत कम धर्म सम्बन्धी सत्य और परमेश्वर के बहुत कम वास्तविक ज्ञान प्राप्त करके स्नातक हो जाते है। प्राचीन काल के सम्प्रदायों में परमेश्वर की इच्छा और उसके प्रति मनुष्य के कर्तव्य को सीखना सम्पूर्ण अध्यय का महान लक्ष्य होता था। पवित्र इतिहास के अभिलेखों में यहोवा के पदचापों के संकेत ढूंढे जाते थे। प्रतिरूपों द्वारा सामने लाए गए महान सत्य दृश्यमान किये जाते थे, और विश्वास उस सम्पूर्ण व्यवस्था के मुख्य उद्देश्य पर पकड़ पा लेता था- परमेश्वर का मेमना जो जगत के पापों को लिवा ले जाने को था। PPHin 620.3

भक्ति की भावना को संजोया जाता था। ना केवल शिष्यों को प्रार्थना का कर्तव्य सिखाया जाता था, वरन् उन्हें यह भी सिखाया जाता था कि प्रार्थना किस तरह की जाए, परमेश्वर के आत्मा के उपदेश का कैसे पालन किया जाए और समझा जाए, परमेश्वर में विश्वास का अभ्यास कैसे किया जाए और सृष्टिकर्ता को कैसे सम्बोधित किया जाए। पवित्र बुद्धिजीवी परमेश्वर के निधिग्रह से नई व पुरानी चीजें प्रकट करते थे और परमेश्वर का आत्मा भविष्यद्वाणी और भजनों में प्रदर्शित होता था। PPHin 621.1

संगीत एक पवित्र उद्देश्य की पूर्ति के लिये बजाया जाता था। मन को उसमें लीन करना जो पवित्र, शिष्ट और उत्कृष्ट है, और हृदय में परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता और भक्ति को जागृत करना।

कितना अन्तर है संगीत की प्राचीन परम्परा और प्रयोग और उसमें जिसको संगीत वर्तमान में समर्पित है। कितने लोग इस प्रतिभा का प्रयोग स्वयं को प्रतिष्ठित करने के लिये करते है, बजाय इसके कि परमेश्वर को महिमा पहुचाएँ। संगीत प्रेमी असावधान होकर संसार प्रेमियों के साथ मनोरंजन के उन समारोहों में सम्मिलित होता है, जहाँ जाने के लिये पमरेश्वर ने अपने बच्चों को मना किया है। इस प्रकार वह, जिसका सहीं प्रयोग उसे आशीष ठहराता, सबसे सफल साधन बन जाता है जिसके द्वारा शैतान मन को कर्तव्य से और सनातन विषयों से भटका देता है। PPHin 621.2

संगीत स्वर्ग के प्रांगनों में परमेश्वर की आराधना का एक भाग होता है, और हमें हमारे स्तूतिगान में, जहाँ तक सम्भव है, स्वर्गीय गायक, मण्डली की स्वर संगति अथवा समरसता के आस-पास तक पहुँचने का प्रयास करना चाहिये। शिक्षा में कंठ या वाणी का उचित प्रशिक्षण एक महत्वपूर्ण विशेषता है जिसकी उपेक्षा नहीं की जानी चाहिये। धार्मिक विधि के भाग के रूप में गायन आराधना में प्रार्थना के समान ही एक धर्म किया है। सही अभिव्यक्ति के लिये, हृदय में गीत की भावना का आभास होना चाहिये। PPHin 621.3

कितना व्यापक अन्तर है परमेश्वर के भविष्यद्वक्ताओं द्वारा शिक्षित सम्प्रदायों और शिक्षा की वर्तमान संस्थाओं में! कितनी कम हे वे शिक्षण संस्थाएं जो जगत के रीति-रिवाजों और सिद्धान्तों पर आधारित नहीं है। विवेकपूर्ण अनुशासन और उचित नियन्त्रण का निदंनीय अभाव है। तथाकथित मसीहींलोगों में परमेश्वर के वचन की विद्यमान अज्ञानता चौंकाने वाली है। धर्म और शिष्टाचार में शिक्षण का स्थान, व्यर्थ की बात-चीत और निरी भावुकता ने ले लिया है। परमेश्वर की करूणा और उसके न्याय का, पवित्रता, शोभा, और अच्छे कर्मा कें निर्धारित प्रतिफल का, पाप के घृणास्पद स्वभाव और उसके भयानक परिणामों की नियतता का युवाओं के मन पर प्रभाव नहीं डाला जाता। बुरी संगत में पड़कर वे अपराध, अनैतिकता और व्यभिचार के मार्ग पर चलने लगते है। PPHin 622.1

इब्रियों के प्राचीन शिक्षालयों से सीखने के लिये कोई ऐसे सबक नहीं जो हमारे समय के शिक्षक सीख सकें और लाभ उठा सकें? जिसने मनुष्य की सृष्टि की, उसी ने उसके शरीर, बुद्धि और आत्मा के विकास के लिये प्रबन्ध किया है। इसलिये, शिक्षा की वास्तविक सफलता उस स्वामिभक्ति पर निर्भर करती है जिसे मनुष्य सृष्टिकर्ता की योजना को क्रियान्वित करते हैं। PPHin 622.2

शिक्षा का वास्तविक लक्ष्य परमेश्वर की छवि को आत्मा में पुनःस्थापित करना है। आदि में परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया। उसने मनुष्य को उत्कृष्ट गुणों से सम्पन्न किया। उसका दिमाग सुसंतुलित था और उसके अस्तित्व कीसभी शक्तियाँ सामंजस्यपूर्ण थी। लेकिन पतन और उसके दुष्प्रभाव ने इन वरदानों को विकृत कर दिया है। पाप ने मनुष्य में परमेश्वर की छवि को दूषित और विरूपित कर दिया है। उसी छवि को पुनः स्थापित करने के लिये उद्धार की योजना तैयार की गई, और मनुष्य को परख अवधि का जीवन प्रदान किया गया। मनुष्य को उसी सिद्धता

में लाना जिसमें उसका सृजन किया गया था जीवन का सबसे बड़ा उद्देश्य है- उद्देश्य जो अन्य सभी उद्देश्यों का आधार है। माता पिता और शिक्षकों का यहकर्तव्य है कि युवाओं की शिक्षा में वे ईश्वरीय प्रयोजन के साथ सहयोग करें, और ऐसा करने में वे “परमेश्वर के सहकर्मी” है। (1 कुरिन्थियों 3:9)। PPHin 622.3

आत्मा, विवेक और देह की सभी विभिन्न योग्यताएं जो मनुष्य में होती है, वे परमेश्वर की देन है, जिनका प्रयोग इस प्रकार होना है कि वे उत्कृष्टता की उच्चतम अवस्था में पहुँचे। लेकिन यह एक स्वार्थी और अनन्य उन्नति नहीं हो सकते, क्योंकि परमेश्वर का चरित्र, जिसकी समानता हमें प्राप्त होनी है, उदारता और प्रेम है। प्रत्येक योग्यता, प्रत्येक विशेषता जिससे परमेश्वर ने हमें सम्पन्न किया है, परमेश्वर की महिमा और हमारे सहवासियों के उत्थान के लिये प्रयोग किया जाना है। और इस कार्य में सिद्धान्त का सबसे पवित्र, सबसे शिष्ट और सुखदायी अभ्यास होता है। PPHin 622.4

यदि इस सिद्धान्त पर इसकी महत्ता के अनुसार ध्यान दिया जाता, तो शिक्षा की किसी-किसी वर्तमान प्रणाली में सुधारवादी परिवर्तन आता। घमण्ड और स्वार्थपूर्ण महत्वकांक्षा को बढ़ावा देकर, प्रतिस्पर्धा की भावना को जागृत करने के बजाय, अध्यापक अच्छाई और सत्य और सुन्दरता के प्रति प्रेम और श्रेष्ठा की इच्छा को जागृत करने का प्रयत्न करते। शिष्य स्वयं में परमेश्वर के दिये सदगुणों के विकास का प्रयास करते, अग्रगण्य होने के लिये नहीं, वरन् सृष्टिकर्ता के उद्देश्य को पूरा करने और उसके स्वरूप अर्थात समानता को प्राप्त करने के लिये। निरे सांसारिक स्तर की ओर निदेशित किये जाने, या स्वयं के उत्कर्ष की अभिलाषा से प्रेरित होनेके बजाय, मन सृष्टिकर्ता को जानने के लिये और उसकी तरह बनने के लिये, उसकी ओर निर्देशित होगा। PPHin 623.1

नीतिवचन 9:10 में लिखा है, “यहोवा का भय मानना बुद्धिका आरम्भ है, और परमपवित्र ईश्वर को जानना ही समझ है।” चरित्र निर्माण जीवन का महान कार्य है, और परमेश्वर का ज्ञान सम्पूर्ण वास्तविक शिक्षा का आधार है। इस ज्ञान को प्रदान करना चरित्र को इसके अनुकूल ढालना अध्यापक के कार्य का लक्ष्य होना चाहिये। परमेश्वर की व्यवस्था उसके चरित्र का प्रतिबिम्ब है। इसलिये भजन संहिता 119:172,104 में कहा गया है, “तेरी सब आज्ञाएं धर्ममय है” और “तेरे उपदेशों के द्वारा मुझे समझ मिलती है।” परमेश्वर ने स्वयं को अपने वचन और सृष्टि की रचनाओं में प्रकट किया है। हमें प्रेरणा के ग्रंथ और प्रकृति की पुस्तक के माध्यम से परमेश्वर का परिचय या पहचान को प्राप्त करना है। PPHin 623.2

बुद्धि का यह एक नियम है कि वह धीरे-धीरे स्वयं को उन विषयों के अनुकूल कर लेता है जिन पर मनन करने को वह प्रशिक्षित किया जाता है। यदि दिमाग में केवल अति साधारण विषय हैं तो वह बौना और क्षीण हो जाता है। यदि उसे कठिन समस्यों से जूझने न दिया जाए, तो कुछ समय पश्चात उसने बढ़ने की क्षमता समाप्त हो जाती है। शिक्षा देने वाली शक्ति के तौर पर बाईबल का कोई प्रतिद्वन्दी नहीं। परमेश्वर के वचन में मन को उच्चतम अभिलाषा विचार करने के लिये विषय

मिलते है। बाईबल, मनुष्यके पास सबसे अधिक शिक्षाप्रद इतिहास है। यह सीधा सनातन सत्य के सोतेसे आया, और एक पवित्र हाथ ने युगानुयुग इसकी पवित्रता को संरक्षित रखा है। यह उस अतीत को दीप्तिमान करता है, जहाँ मानुषिक अनुसंधान व्यर्थ में प्रवेश करने का प्रयास करता है। परमेश्वर के वचन में हम उस सामर्थ्य को देखते है जिसने पृथ्वी की नींव डाली और आकाश को फैलाया। केवल यहीं पर हम अपने वंश का इतिहास पा सकते है, जो मनुष्यके पूर्वाग्रह या मनुष्य के घमण्डसे कलंकित नहीं हुआ। इसी में इस जगत के उन महापुरूषों की विजय, पराजय और संघर्षों का उल्लेख है। यहीं कर्तव्य और नियति की गम्भीर समस्याओं पर प्रकाश डाला जाता है। सदृश्य और अदृश्य के बीच का परदा उठता है और हम पाप के प्रथम प्रवेश से लेकर सत्य और धर्म की निर्णायक विजय तक, अच्छाई और बुराई के विरोधी पक्षों के संघर्ष को देखते है, और यह सब परमेश्वर के चरित्र का प्रकाशन ही तो है। परमेश्वर के वचन में प्रस्तुत किये गए सत्य के श्रद्धायुक्त मनन में शिष्य के मन का सम्पर्क परमेश्वर के मन से होता है। ऐसा अध्ययन न केवल चरित्र को सिद्ध और उदात्त बनाएगा, वरन् मानसिक शक्तियों को सबल और विकसित करेगा। PPHin 623.3

बाईबल की शिक्षा का, मनुष्य के इस जीवन से सम्बन्धित हर चीज की समृद्धि पर प्रभाव पड़ता है। यह उन सिद्धान्तों को उजागर करती है जो राष्ट्र की समृद्धि के लिये आधारशिला है। वे सिद्धान्त जिनमें समाज का सुख निहित है, और जो परमेश्वर की सुरक्षा है- वे सिद्धान्त जिनके अभाव में कोई भी मनुष्य इस जीवन में उपयोगिता, प्रसन्नता और सम्मान नहीं पा सकता, और ना ही भावी अनश्वर जीवन को पानेकी आशा कर सकता है। जीवन में ऐसा कोई पद नहीं, मानवीय अनुभव का कोई चरण नहीं, जिसके लिये बाईबल की शिक्षा द्वारा तैयारी की आवश्यकता नहीं हो। अध्ययन और पालन किये जाने पर परमेश्वर का वचन मानवीय धारणा की तुलना में संसार को अधिक दृढ़ और सक्रिय बुद्धि के धनी व्यक्ति प्रदान करेगा। वह ऐसे मनुष्य को उपलब्ध कराएगा जिनके चरित्र सुदृढ़ और सामर्थ्यवान है, जो सही निर्णय करता हो और जिसकी सोच पैनी हो, जो परमेश्वर के लिये गौरवऔर जगत के लिये आशीष का कारण है। PPHin 624.1

विज्ञान के अध्ययन में भी हमें सृष्टिकर्ता के बारे में ज्ञान प्राप्त करना है। शुद्ध विज्ञान इस अनात्मीय संसार में परमेश्वर की हस्तलिपि की व्याख्या है। विज्ञान अनुसंधान के द्वारा परमेश्वर के सामर्थ्य और उसकी बुद्धिमता के मात्र नए प्रमाण लाता है। सही समझे जाने पर प्रकृति की पुस्तक और लिखित वचन दोनो ही हमें परमेश्वर से परिचित कराते है क्योंकि यह हमें उन विवेकपूर्ण और उदार नियमों के बारे में सिखाते है, जिनके द्वारा परमेश्वर कार्य करता है। PPHin 624.2

शिष्य को ऐसी शिक्षा मिलनी चाहिये कि वह सृष्टि की सभी रचनाओं में परमेश्वर को देखे। अध्यापकों को उस महान शिक्षक का उदाहरण अपनाना चाहिये। जिसने प्रकृति के सामान्य दृश्यों के उदाहरण से अपने उपदेशों को सरल बनाया और अपने श्रोताओं के मनों को प्रभावित किया। पत्तेधारी शाखाओं पर चहचहाती चिड़ियाँ, तराई के फूल, ऊंचे वक्ष, फलवन्त खेत, झूमता अन्न, बंजर

भूमि, अपनी स्वर्णिम किरणों से आकाश को चमकाता हुआ, डूबता सूरज- यह सब शिक्षा के साधन थे। मसीह सृष्टिकर्ता की सद्दश्य रचनाओं को स्वयं के द्वारा बोले गए जीवन के शब्दों से सम्बद्ध करता था, जिससे कि जब भी यह चीजें उसके सुनने वालों की आंखो के सामने आएँ, तो उनके विचार सत्य के उन पाठों पर जाएँ जिन्हें उसने इनसे सम्बद्ध किया था। PPHin 625.1

ईश्वर की छाप जो प्रकाशितवाक्य के पृष्ठों में प्रकट है, वह ऊंचे-ऊंचे पहाड़, फलवन्त तराईयों और गहरे समुद्र पर दिखाई देती है। प्रकृति की रचनाएं मनुष्य से सृष्टिकर्ता के प्रेम के बारे में बात करती हैं। उसने हमें पृथ्वी और आकाश में असंख्य प्रतीकों द्वारा स्वयं उस के साथ जोड़ा है। जगत में केवल दुख और मुसीबत नहीं है। "परमेश्वर प्रेम है"- यह प्रत्येक खिलती हुई कली पर प्रत्येक फल की पंखुड़ी पर, घास की प्रत्येक पत्ती पर लिखा हुआ है। हालाँकि पाप के श्राप के कारण धरती काँटेदार झाड़ियाँ उत्पन्न करने लगी, लेकिन उन्हीं काँटेदार झाड़िया पर गुलाब खिलते हैं और काँटो को गुलाब छुपा देते है। प्रकृति की सब रचनाएँ हमारे परमेश्वर की पिता समान देखभाल और उसके बच्चों को आनन्दित करने की उसकी इच्छा की साक्षी है। उसकी निषेधाज्ञाएं और समादेश उसके अधिकार का प्रदर्शन मात्र के लिये नियत नहीं है, वरन् वह जो कुछ भी करता है, अपने बच्चों की भलाई को ध्यान में रख कर करता है। वह उनसे ऐसा कुछ भी त्यागने की अपेक्षा नहीं करता, जिसे बनाए रखने में उनका लाभ हो। PPHin 625.2

समाज के कुछ वर्गों में प्रचलित धारणा किधर्म स्वास्थ्य या सुख के लिये हितकार नहीं है, सबसे हानिप्रद भ्रान्ति हैं। नीतिवचन 1:23 में पवित्र शास्त्र कहता है "यहोवा का भय मानने से जीवन बढ़ता है, और उसका भय मानने वाले ठिकाना पाकर सुखी रहते है"। भजन संहिता 34:12-24 में लिखा है, "तब कौन मनुष्य है जो जीवन की इच्छा रखता, और दीर्घायु चाहता है ताकि भलाई देखे? अपनी जीभ को बुराई से रोक रख और अपने मुँह की चौकसी कर कि उससे छल की बात न निकले। बुराई को छोड़ और भलाई कर, शान्ति को दूँढ और उसका पीछा कर।" नीतिवचन 4:22 में लिखा है, "बुद्धिमानी को बातें', जिनको वे प्राप्त होती है, वे उनके जीवित रहने का और उनके सारे शरीर के स्वस्थ रहने का कारण होती है।' PPHin 625.3

वास्तविक या सच्चा धर्म मनुष्य और परमेश्वर द्वारा दिये गए शारीरिक, मानसिक और नैतिक नियमों में सामजंस्य बैठाता है। यह आत्म-संयम, स्वेच्छा और आत्म नियन्त्रण सिखाता है। धर्म मन को उदत्त बनाता है, स्वभाव को निर्मल करता हे, और विवेक को दोषमुक्त करता है। यह आत्मा को स्वर्ग की पवित्रता का भागीदार बनाता है। परमेश्वर के प्रेम में विश्वास और निष्प्रभाव कर देने वाली कृपा-दृष्टि, चिंता और व्याकुलता के बोझ को हल्का कर देते है। उच्चतम या न्यूनतम, सभी के हृदयों को यह संतोष और आनन्द से परिपूर्ण कर देता है। धर्म प्रत्यक्ष रूप से स्वास्थ्यप्रद हैं, यह जीवन को चिरायु करता है और इसकी सभी आशीषों में हमारे आनन्द को बढ़ाता है। यह आत्मा के लिये आनन्द का सदैव जलपूर्ण रहने वाला सोता खोल देता है। अच्छा होता यदि जिन्होंने मसीह को

नहीं चुना, वे यह समझ पाते कि जो वह अपने लिये ढूँढ रहे है, उससे कहीं अधिक उत्तम चीज परमेश्वर के पास है जो वह देना चाहता है। मनुष्य अपनी ही आत्मा को सबसे भारी चोट पहुँचाता है और उसके साथ सबसे बड़ाअन्याय करता है. जब वहपरमेश्वर की इच्छा के विपरीत सोचता और कार्य करता है। परमेश्वर जानता है कि हमारे लिये सबसे अच्छा क्या है, और वह अपने प्राणियों की भलाई के लिये योजना बनाता है; उसके द्वारा निषिद्ध पथ में थोड़ा सा भी वास्तविक आनन्द हीं मिल सकता। आज्ञा उल्लंघन का मार्ग विनाश और कष्ट की ओर जाता है, लेकिन बुद्धि के "मार्ग आनन्ददायक है, और उसके सब मार्ग कुशल के है।" (नीतिवचन 3:17)। PPHin 626.1

इब्रियों के शिक्षालयों में अभ्यास किये जाने वालेशारीरिकऔर आध्यात्मिक प्रशिक्षण को पढ़ाने से लाभ हो सकता है। ऐसे प्रशिक्षण के महत्व का मान नहीं रखा जाता। शरीर और मन में एक घनिष्ठ सम्बन्ध है, और आध्यात्मिक और बौद्धिक उपलब्धियों के ऊंचे स्तर पर पहुँचने के लिये हमारे शरीर को नियन्त्रित करने वाले नियमों पर ध्यान दिया जाना चाहिये। एक दृढ़, सुसंतुलित चरित्र के निर्माण के लिये मानसिक और शारीरिक क्षमताओं का अभ्यास और विकास आवश्यक है। परमेश्वर द्वारा हमारे सुपुर्द किये गए इस अदभुत जीवधारी, अर्थात हमारे शरीर और उन नियमों के बारे में, जिनके द्वारा हम इस शरीर को स्वस्थ रख सकते है, ज्ञान दिया गया है और युवाओं के लिये इस अध्ययन के विषय से अधिक महत्वपूर्ण क्या हो सकता है? PPHin 626.2

और अब, जैसे कि इज़राइल के समय में था, प्रत्येक युवा को व्यवाहरिक जीवन के कर्तव्यों में निर्देशित किया जाना चाहिये। प्रत्येक को हाथ के परिश्रम की किसी शाखा का ज्ञान प्राप्त करना चाहिये जिसके द्वारा आवश्यकता पड़ने पर वह अपनी आजीविका कमा सके। यह केवल जीवन के परिवर्तनों के प्रति सुरक्षा के लिये ही नहीं, वरन् शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास पर इसके प्रभाव के लिये भी आवश्यक है। PPHin 627.1

यदि यह निश्चित भी हो कि किसी को अपने निर्वाह के लिये हस्त-कर्म का सहारा नहीं लेना पड़ेगा फिर भी उसे श्रम करना सिखाना चाहिये। शारीरिक व्यायाम के अभाव में कोई भी स्फर्तिवान स्वास्थ्य और ठोस एवं निरोग शरीरावस्था नहीं पा सकता, और एक श्रेष्ठ चरित्र और स्वस्थ्य और सक्रिय बुद्धि के लिये सुव्यवस्थित श्रम का सीखना कम आवश्यक नहीं है। PPHin 627.2

प्रत्येक शिष्य को दिन का कुछ भाग सक्रिय श्रम को समर्पित करना चाहिये। इस प्रकार उद्यम की आदतें बनेगी और आत्म-निर्भरता की भावना को प्रोत्साहन मिलेगा, और युवा उन बुरे और नीचतापूर्ण अभ्यासों से बचे रहेंगे जो आलस्य की उपज होते हैं। और यह सब शिक्षा के मौलिक उद्देश्य के अनुकूल है, क्योंकि शुद्धता, निष्ठा और सक्रियता को प्रोत्साहित करने में हम सृष्टिकर्ता के साथ सामंजस्य बैठा रहे हैं। PPHin 627.3

नौजवानों को उनकी सृष्टि का उद्देश्य समझ जाना चाहिये और परमेश्वर का आदर करना और अपने भाई-बन्धुओं को आशीषित करना सिखाया जाना चाहिये, स्वर्गीय परमेश्वर द्वारा प्रकट किया

गया प्रेम, उत्कृष्ट नियति जिसके लिये इस जीवन का अनुशासन या प्रशिक्षण उन्हें तैयार कर रहा हे, वह सम्मान और प्रतिष्ठा जिसके लिये उन्हें चुना गया-परमेश्वर के पुत्र होने के लिये भी-यह सब उन्हें देखने दे, और हजारों नौजवान, उन स्वार्थपूर्ण लक्ष्यों और तुच्छ अभिलाषाओं को, जिन्होंने उन्हें जकड़ रखा था, घृणा से देखने लगेंगे और उनसे मुहँ फेर लेंगे। वे पाप से घृणा करना और दूर रहना सीख लेंगे, और यह केवल प्रतिफल की आशा या दण्ड के डर से नहीं, वरन् उसमें निहित नीचता के आभास से, क्योंकि वैसा करना परमेश्वर द्वारा दी गई शक्तियों का अपमान होगा और परमेश्वर समान पुरूषत्व पर एक कलंक होगा। PPHin 627.4

परमेश्वर नौजवानों को कम महत्वकांक्षी होने की आज्ञा नही दे रहा है। चरित्र की वे विशेषताएं जो एक व्यक्ति को मनुष्यों के बीच सफल और सम्मानीय ठहराती है- अधिक पुरूषार्थ की तीव्र अभिलाषा, अदम्य इच्छाशक्ति, श्रमसाध्य प्रयास, अथक आग्रह- इन विशेषताओं को कुचला नहीं जाना है। परमेश्वर के अनुग्रह से मात्र स्वार्थपूर्ण और सांसारिक रूचियों से उन्हें उतने ऊँचे लक्ष्यों की ओर मार्गदर्शित करना है जितना कि आकाश पृथ्वी से ऊंचा है। और इस जीवन में प्रारम्भ की हुई शिक्षा आने वाले जीवन में चलती रहेगी। दिन पर दिन परमेश्वर की अदभुत रचनाएँ जो सृष्टि की रचना उसे कायम रखने में, उसकी बुद्धिमता और समार्थ्य के प्रमाण है, उद्धार की योजना में उसके प्रेम और बुद्धिमता का अनन्त रहस्य, नए रूप में समझ आने लगेंगे। 1 कुरिन्थियों 2:9में लिखा है, "जो बाते आँख ने नहीं देखी और कान ने नहीं सुनी, और जो बातें मनुष्य के चित में नहीं चढ़ी, वे ही हैं जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखने वालों के लिये तैयार की है।" इस जीवन में भी हम उसकी उपस्थिति की झलक पा सकते हैं और स्वर्ग के साथ संपर्क के आनन्द को चख सकते है, लेकिन इस आनन्द और आशीष की सम्पूर्णता अब के बाद में होगी। केवल परमेश्वर ही उस महिमायी नियति को प्रकाशित कर सकता है, जो मनुष्य परमेश्वर की समानता में पुनः स्थापित होकर प्राप्त कर सकता है। PPHin 628.1

अध्याय 59—इज़राइल का पहला राजा

यह अध्याय 1 शमूएल 8-12 पर आधारित है PPHin 629.1

इज़राइल की सरकार परमेश्वर के नाम में और उसके अधिकार से प्रशासित की जाती थी। मूसा, सत्तर पुरनियों, प्रधानों और न्यायियों का काम परमेश्वर द्वारा दिये गए नियमों को लागू करना था। उनके पास राष्ट्र के लिये निमय बनाने का अधिकार नहीं था। राष्ट्र के रूप मेंडजराइल के अस्तित्व की अवस्था यह थी और यही रही। एक काल से दूसरे काल में परमेश्वर द्वारा प्रेरित मनुष्यों को लोगों को निर्देश देने और नियमों के प्रवर्तन में निर्देशन करने के लिये भेजा गया। PPHin 629.2

प्रभु को पूर्वाभास था कि इज़राइल एक राजा की इच्छा करेगा, परन्तु उसने उन सिद्धान्तों में बदलाव के लिये सहमति नहीं दी, जिनके आधार पर राज्य की स्थापना हुई थी। राजा को परमप्रधान का प्रतिनिधि होना था। परमेश्वर को राष्ट्र के प्रमुख के रूप में मान्यता दी जानी थी, और उसकी व्यवस्था भूमि की सर्वोच्च व्यवस्था के रूप में लागू की जानी थी। (परिशिष्ट देखे नोट 8) PPHin 629.3

जब इज़राइली पहली बार कनान में बसे, तो उन्होंने धर्मशास्त्र के सिद्धान्तों को स्वीकार किया, और देश यहोशू के शासन में समृद्ध हुआ। लेकिन जनसंख्या में वृद्धि और अन्य देशों के साथ मेल-मिलाप से परिवर्तन आया। लोगों ने अपने मूर्तिपूजक पड़ोसियों के कई रीति-रिवाजों को अपनाया और इस तरह, काफी हद तक उन्होंने अपने विशिष्ट पवित्र चरित्र को त्याग दिया। धीरे-धीरे परमेश्वर के प्रति उनकी श्रद्धा भी समाप्त हो गई और उन्होंने उसके चुने हुए लोग होने के सम्मान का मान रखना भी छोड़ दिया। मूर्तिपूजक सम्राटों के धमूधामवाले प्रदर्शनों से आकर्षित होकर, वे अपनी सादगी से थक गए। जनजातियों अर्थात विभिन्न गोत्रों में ईर्ष्या और द्वेष उत्पन्न हो गए। आंतरिक मतमभेदों ने उन्हें कमजोर बना दिया; वे लगातार अपने मूर्तिपूजक शत्रुओं के आक्रमण के निशाने पर थे, और लोग यह मानने लगे थे कि अन्य राष्ट्रों में अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिये, सभी जनजातियों को एक सशक्त केन्द्र सरकार के तहत एकजुट हो जाना चाहिये। परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करने से हटकर, उनमें पवित्र परमप्रधान परमेश्वर के आधिपत्य से स्वतन्त्र होने की इच्छा जागृत हुई और इस प्रकार सम्पूर्ण इज़राइल में राजशाही के माँग व्यापक हो गई। PPHin 629.4

यहोशू के दिनों से शासन का संचालन इतनी ज्ञानपूर्णत और सफलता के साथ नहीं हुआ था जितना की शमूएल के प्रशासन के समय हुआ। याजक, न्यायी और भविष्यद्वक्ता के तीन कार्यभारों के लिये परमेश्वर द्वारा नियुक्त उसने अपने लोगों के कल्याण के लिये अथक और निःस्वार्थ उत्साह से परिश्रम किया था और उसके बुद्धिमतापूर्ण नियंत्रण में राज्य समृद्ध हुआ था। व्यवस्था पुनः स्थापित हुईं, धार्मिकता को बढ़ावा दिया गया और उस समय के लिये असंतोष की भावना पर रोक लगाई

गईं। लेकिन बढ़ती आयु के साथ, भविष्यद्वक्ता शासन के दायित्व को दूसरों के साथ बॉटने को विवश हो गया, और उसने अपने दो पुत्रों को अपने सहायकों के रूप में नियुक्त किया। शमूएल रामा में अपना कार्यभार के कर्तव्य सम्भाले रहा, नौजवान को देश की दक्षिणी सीमा के पास लोगों के बीच न्यायिक प्रशासन के लिये बेशबा में रखा गया। PPHin 630.1

शमूएल ने पूरे राष्ट्र की सहमति से अपने पुत्रों को यह कार्यभार सौंपा था, लेकिन वे अपने पिता के चयन में खरे नहीं उतरे। प्रभु ने मूसा के माध्यम से अपने लोगों को विशेष निर्देश दिए थे कि इज़राइल के शासकों को न्यायापूर्वक न्याय करना चाहिये, विधवा और पितृहीनों के साथ न्यायसंगत व्यवहार करना चाहिये, और घूस नहीं लेनी चाहिये। लेकन शमूएल के पुत्र "लाभ देखकर पहले जैसे नहीं रहे;वे घूस लेने लगे और न्याय को विकृत करे लगे।" भविष्यद्वक्ता के पुत्रों ने उन सिद्धान्तों पर ध्यान नहीं दिया, जिनसे वह उनके हृदय को प्रभावित करना चाहता था। उन्होंने अपने पिता के पवित्र निःस्वार्थ जीवनशैली को नहीं अपनाया थां। एली को दी गई चेतावनी ने शमूएल के दिमाग पर वह प्रभाव नहीं छोड़ा था, जो उसे करना चाहिये था। वह अपने पुत्रों के साथ, कुछ हद तक अत्यन्त क्षमाशील रहा था, और परिणाम उनके चरित्र और जीवन में स्पष्ट था। PPHin 630.2

इन न्यायियों के अन्याय ने बहुत असन्तोष उत्पन्न किया और इस प्रकार लम्बे समय से उस गुप्त वांछनीय परिवर्तन के लिये आग्रह करने का बहाना उपलब्ध हुआ। "इज़राइल के सभी पुरनिये इकट्ठे हुए, और शमूएल से मिलने रामा गए। और उन्होंने उससे कहा, "तुम बूढ़े हो गए हो और तुम्हारे पुत्र ठीक से नहीं रहते और उनका चाल-चलन तुम्हारेचाल-चलन जैसा नहीं हैं, अबतुम अन्य राष्ट्रों की तरह हम पर शासन करने के लिये एक राजा दो।" लोगों के बीच दुर्व्यवहार के मामलों को शमूएल के पास नहीं भेजा गया था। यदि उसके पुत्रों के कमार्ग के बारे में उसे ज्ञात होता, तो उसने अविलम्ब उन्हें अपदस्थ कर दिया होता, लेकिन याचिकाकर्ता ऐसा नहीं चाहते थे। शमूएल ने देखा कि उसका वास्तविक प्रेरक असन्तोष और गवं था उनकी माँग एक सोचे समझे और सुनिश्चित प्रयोजन का परिणाम थी। शमूएल के विरूद्ध कोई शिकायत नहीं की गई थी। सभी ने उसके प्रशासन की अखण्डता और बौद्धिकता को स्वीकार किया; लेकिन वृद्ध भविष्यद्वक्ता ने अनुरोध को स्वयं की निदां और स्वयं को हटाए जाने का प्रत्यक्ष प्रयास समझा। हालाँकि, उसने अपनी भावनाओं को प्रकट नहीं किया, ना ही उसने उन्हें फटकार लगाई, लेकिन प्रार्थना में यहोवा के सम्मुख यह बात रखी और केवल उसी से सम्मति माँगी। PPHin 630.3

प्रभु ने शमूएल से कहा, "वही करो जो लोग तुमसे करने को कहते है। उन्होंने तुमको अस्वीकार नहीं किया है। उन्होंने मुझे अस्वीकार किया है। वे नहीं चाहते कि में उन पर राज करूँ। उस दिन से, जब मैं उन्हें मिस्र से निकाल कर लाया, आज तक उनके द्वारा किये गए सभी कार्यों के अनुसार, उन्होंने मुझको छोड़कर अन्य देवी-देवताओं की उपासना की है, और वे तुम्हारे साथ भी वही कर रहे है।" PPHin 631.1

लोगों के व्यवहार को अपने ऊपर व्यक्तिगत रूप से लेकर दुखी होने पर भविष्यद्वक्ता को झिड़का गया। उन्होंने उसके लिये निरादर प्रकट नहीं किया था, वरन् उस परमेश्वर के अधिकार का अपमान किया था, जिसने अपने लोगों के शासकों को नियुक्त किया था। जो परमेश्वर के विश्वसनीय सेवक से घृणा करते है और उसे अस्वीकार करते हैं, वे केवल मनुष्य के लिये ही नहीं, वरन् उस गुरू की अवमानना करते है, जिसने उसे भेजा था। वह परमेश्वर के कहे शब्द है, उसकी दी हुई फटकार और सम्मति,जिन्हें अमान्य कर दिया जाता है ;वह उसकी प्रभुता है जिसको अस्वीकार किया जाता है। PPHin 631.2

इज़राइल के सबसे समृद्ध दिन वे थे जब यहोवा को उसके राजा के रूप में मान्यता प्राप्त थी-जब उसके द्वारा स्थापित प्रशासन और व्यवस्था को अन्य देशों के सरकार और नियमों की तुलना में श्रेष्ठ माना जाता था। प्रभु की आज्ञाओं के स्दंर्भ से मूसा ने घोषणा की थी "इन नियमों का सावधानी से पालन करो। यह अन्य राष्ट्र को सूचित करेगा कि तुम बुद्धि और समझ रखते हो। जब उन देशों के लोग इन नियमों के बारे में सुनेगे तो वे कहेंगे कि 'सचमुच इस महान राष्ट्र के लोग बुद्धिमान और समझदार है ।"-व्यवस्थाविवरण 4:6। लेकिन परमेश्वर की व्यवस्था से दूर होकर वे वैसा बनने में असफल रहे जैसा परमेश्वर उन्हें बनाना चाहता था। और फिर उनके पापों के कारण उत्पन्न बुराईयों का आरोप उन्होंने परमेश्वर की सत्ता पर लगाया। इतने अन्धे हो गए थे वे पाप के कारण । PPHin 631.3

प्रभु ने अपने भविष्यद्कताओं के माध्यम से, भविष्यवाणी की थी, कि इज़राइल एक राजा द्वारा प्रशासित होगा, लेकिन इसके आगे यह नहीं कहा गया कि इस प्रकार का शासन उनके लिये सर्वोत्तम था या परमेश्वर की इच्छानुसार था। उसने लोगों को स्वेच्छा से चलने की अनुमति दे दी, क्योंकि उन्होंने उसकी सम्मति के मार्गदर्शन में चलने से इन्कार कर दिया था। होशे कहता है कि परमेश्वर ने कोध में आकर उन्हें एक राजा दिया (हो) 13:11)। जब मनुष्य, परमेश्वर से सलाह लिये बिना या उसकी प्रकट इच्छा के विरूद्ध, अपनी मनमानी करने लगते है, तो परमेश्वर उनकी इच्छा को इसलिये पूर्ण करता है कि उन्हें मनमानी के दुष्परिणाम के कटु अनुभव के द्वारा अपनी मूर्खता का आभास हो और वे अपने पापों का प्रायश्चित करें। मानवीय घमण्ड और बुद्धिमत्ता अविश्वसनीय मार्गदर्शक है। परमेश्वर की इच्छा के विरूद्ध , हृदय जिसकी अभिलाषा करता है, वह अन्त में आशीष के बजाय श्राप के रूप में सामने आता है। PPHin 632.1

परमेश्वर चाहता था कि लोग केवल उसे एक नियम-दाता और शक्ति स्रोत के रूप में देखे। परमेश्वर पर निर्भर होने के आभास से वह निरंतर उसकी ओर आकर्षित होंगे। उत्कृष्ट और शिष्ट बनकर वे उस नियति के लिये सुयोग्य हो जाएँगे जिसके लिये प्रभु ने उन्हें उसके चुने हुए लोगों के रूप में बुलाया है। लेकिन जब एक व्यक्ति को सिंहासन पर बैठाया जाता था, तो लोगों का ध्यान परमेश्वर पर से हट जाता था। वे मनुष्य की सामर्थ्य में अधिक विश्वास रखने लगते और परमेश्वर में

उनकी आस्था घट जाती। राजा की गलतियाँ उन्हें पाप का मार्ग दिखाती और राष्ट्र को परमेश्वर से अलग कर देती। PPHin 632.2

शमूएल को लोगों के निवेदन को स्वीकार करने का निर्देश दिया गया और प्रभु की असहमति की चेतावनी देने को और उन्हें उनके अपनाए मार्ग के परिणामों से अभिज्ञ करने को भी कहा गया। "शमूएल ने लोगों से वे सारी बातें कही जो यहोवा ने कही थी।" उसने स्पष्ट रूप से उनके सम्मुख उन कठिन परिस्थितियों को रखा जिनका सामना उनको करना पड़ेगा और उनकी उस समय की स्वतन्त्र और समृद्ध अवस्था और आने वाली अत्याचार की अवस्था का तुलनात्मक वर्णन किया। उसने बताया कि उनका राजा अन्य राजशाहों के आडम्बर और विलासिता का अनुसरण करेगा और ऐसा करने के लिये जान और माल दोनों का कष्टपूर्ण बलादग्रहण किया जाना अनिवार्य होगा। उसकी सेवा-टहल के लिये उनके सबसे बलवन्त नौजवानों की माँग करेगा। उन्हें उसके आगे-आगे चलने वाले सारथी, घुड़सवार और धावक बनाया जाएगा। उन्हें उसकी सेवा मे भर्ती होना होगा, और उन्हें उसके खेतों में हल चलाना पड़ेगा, उसकी फसलों की कटाई करनी होगी और उसकी सेवा-टहल के लिये युद्ध के अस्त्र-शस्त्र बनाने होंगे। इज़राइल की पुत्रियाँ शाही घराने में हलवाई और नानबाई होगी। अपनी राजसी अवस्था को सम्भालने के लिये वह उन भू-खण्डो को उनसे छीन लेगा, जो यहोवा ने अपने लोगों को दी थी। उनके दासों में से सबसे योग्य, और उनके मवेशियों को भी वह ले जाकर "अपने काम पर लगा देगा। इस सब के अलावा राजा उनकी पूरी आय, उनके श्रम के काम, या उनके खेतों की उपज का दसवाँ हिस्सा माँगेगा'। आखिर में उसने कहा, "तुम सब उसके नौकर बन जाओगे।" "और उस दिन तुम अपने राजा की वजह से रोओगे,, जिसे तुमने चुना होगा और प्रभु उस दिन तुम्हारी नहीं सुनेगा।" राजशाही का बलादग्रहण कितना ही कष्टदायक क्यों न हो, राजशाही के संस्थान के पश्चात, उसे जब मन चाहे विस्थापित नहीं किया जा सकता था। PPHin 632.3

लेकिन लोगों ने उत्तर दिया, "नहीं, लेकिन हम पर एक राजा निश्चय होगा कि हम भी अन्य राज्यों की तरह हो, हमारा राजा हमारा न्याय करे, हमारे आगे-आगे जाए और हमारे लिये युद्ध करे।" PPHin 633.1

"अन्य राज्यों की तरह ।" इज़राइली यह नहीं समझ पाए कि इस सन्दर्भ में अन्य राज्यों की तरह नहीं होना एक विशेषाधिकार और आशीष था। परमेश्वर ने इज़राइलियों को अन्य सभी जातियों से अलग किया था, जिससे वह उन्हें अपनी विशेष निधि बना सकें। लेकिन श्रेष्ठ सम्मान को तिरस्कृत करके, मूर्तिपूजकों के उदाहरण को ह्दय में सांसारिक रीति-रिवाजों और परम्पराओं को अपनाने की तीव्र इच्छा विद्यमान है। परमेश्वर से दूर जाकर वे संसार से प्राप्त होने वाले लाभ के लिये महत्वाकाँक्षी हो जाते हैं। मसीही लोग संसार के देवता की उपासना करने वालों के रीति-रिवाजों का अनुकरण करने के लिये निरन्तार प्रयास करते हैं। कई आग्रह करते है कि सांसारिक लोगों के साथ

मिलकर और उनके रीति-रिवाजों को अपनाकर वे अधर्मियों पर अधिक प्रभाव डाल सकते थे। लेकिन जो भी इस पद्धति का प्रयोग करते हैं वे स्वयं को शक्ति के स्रोत से अलग कर लेते है। संसार के मित्र बनकर, वे परमेश्वर के शत्रु हो जाते है। सांसारिक विशिष्टता के लिये वे उस अवर्णनीय सम्मान को त्याग देते हैं, जिसके लिये परमेश्वर ने उन्हें बुलाया है, अर्थात उसकी स्तुति जिसने हमें अन्धकार से बाहर निकालकर उसके अदभुत प्रकाश में बुलाया है। PPHin 633.2

गहरी उदासी के साथ शमूएल ने लोगों के शब्दों को सुना, लेकिन प्रभु ने उससे कहा, "जैसा वे कह रहे है वैसा ही कर, और उनके लिये एक राजा चुन ले। भविष्यद्वक्ता ने अपना कर्तव्य पूरा कर दियाथा। उसने ईमानदारी से चेतावनी प्रस्तुत कर दी थी और उसे अस्वीकार कर दिया गया था। भारी मन से उसने लोगों को भेजा और वह स्वयं शासन में बड़े बदलाव के लिये तैयार होने के लिये वहाँ से गया। PPHin 634.1

शमूएल के जीवन की शुद्धता और निःस्वार्थ भक्ति, इज़राइल की विषयासक्त, घमण्डी प्रजा और स्वार्थी याजकों के लिये चिरस्थायी फटकार थी। यद्यपि उसने किसी आडम्बर की कल्पना नहीं की और ना कोई प्रदर्शन किया था, उसके श्रम पर स्वर्ग की मुहर थी। संसार का उद्धारकर्ता उसका सम्मान करता था, वह उद्धारकर्ता जिसके मार्गदर्शन में उसने इब्रियों पर शासन किया। लेकिन लोग उसकी भक्ति और धार्मिकता से थक चुके थे। उन्हें उसके दीन अधिकार से घृणा थी और उन्होंने उसे उस व्यक्ति के रूप में स्वीकार नहीं किया जो राजा बनकर उनपर राज करें। PPHin 634.2

शमूएल के चरित्र में हमें मसीह की समानता का प्रतिबिम्ब दिखाई पड़ता है। वह हमारे उद्धारकर्ता के जीवन की पवित्रता थी जिसने शैतान के कोध को भड़काया। वह जीवन जगत की ज्योति था, और मनुष्यों के हृदय की गुप्त दुष्टता को उजागर करती थी। मसीह की पवित्रता ने ही धार्मिकता के ढोंगी गुरूओं के अति कर आवेगों को उसके विरूद्ध उत्तेजित किया। मसीह पृथ्वी के सम्मानों और निधि के साथ नहीं आया, लेकिन उसके द्वारा किये गए कार्यों से यह स्पष्ट हो गया कि उसकी सामर्थ्य अन्य सभी सांसारिक प्रधानों की सामर्थ्य से अधिक थी। यहूदी को आशा थी कि मसीह उन पर से अत्याचारियों के जुए को तोड़ डालेगा। लेकिन वे उन पापों को संजोए हुए थे जिन्होंने उस जुए को उनकी गर्दनों पर बाँध रखा था। यदि मसीह ने उनके पापों को आच्छादित किया होता और उनके धार्मिकता को सराहा होता, तो वे उसको राजा तो स्वीकार कर लेते;लेकिन अपने पापों के लिये उसकी निर्भय निनन्ृदा को वे सहन नहीं करते। चरित्र की उस सुन्दरता से जिसमें उदारता, निर्मलता और पवित्रता का स्थान सबसे ऊपर था, जिसमें पाप के अलावा और किसी चीज से घृणा नहीं थी, वे घृणा करते थे। संसार के प्रत्येक युग मे ऐसा ही हुआ है। स्वर्ग से प्राप्त प्रकाश उन सब को निंदंनीय ठहराता है जो उसकी ज्योति में चलना नहीं चाहते। जब पाप से घृणा करने वालों के उदाहरण से पाखण्डियों की निंदा होती हे, तो वे सत्यनिष्ठ लोगों को सताने और

उन पर अत्याचार करने के लिये शैतान के कर्मक बन जाते है। “वास्तव में जो परमेश्वर की सेवा में नेकी के साथ जीना चाहते है, वे सताए जाएँगे।”-2 तीमुथियुस 3:12। PPHin 634.3

हालाँकि इज़राइल के लिये राजतंत्रीय शासन की भविष्यवाणी की गईं थी, उनके राजा के चयन का अधिकार परमेश्वर ने स्वयं के पास सुरक्षित रखा था। अभी तक चयन को पूरी तरह परमेश्वर पर छोड़कर इब्री परमेश्वर के अधिकार का सम्मान करते थे। बिनयामीन के गोत्र से कीश के पुत्र, शाऊल को चुना गया। PPHin 635.1

भावी राजा की व्यक्तिगत विशेषताएँ ऐसी थी कि वे हृदय के घमण्ड को सन्तुष्ट करती थी जिसके कारण एक राजा के होने की अभिलाषा जागृत हुईं । “वहां इज़राइलियों में शाऊल से अधिक सुन्दर कोई नहीं था ।”1शमूएल 9:2 । कुलीन और गरिमापूर्ण व्यवहार का धारक, नौजवानी में, सुदर्शन और कद में ऊंचा, बाहरी आकर्षक विशेषताओं के होते हुए भी उसमें वास्तविक बुद्धिमता के गुणों का अभाव था। अपनी किशोरावस्था में उसने अविवेकपूर्ण और आवेशपूर्ण जुनून पर नियन्त्रण रखना नहीं सीखा था, और ना ही उसे पवित्र अनुग्रह के सामर्थ्य का आभास हुआ था, जिसमें परिवर्तन लाने की शक्ति होती है। PPHin 635.2

शाऊल एक धनवान और प्रभावशाली मुखिया का पुत्र था, लेकिन उस समय की सादगी के अनुसार वह अपने पिता के साथ एक खेतिहर के कर्तव्यों में व्यस्त था। उसके पिता के कुछ पशु पहाड़ों पर भटक गए थे, इसलिये एक सेवक को साथ लिये वह उन्हें ढूंढने निकला। तीन दिनों तक वे व्यर्थ में ढूँढते रहे, फिर जब वे शमूएल के घर, रामा से कुछ ही दूर था, उस सेवक ने खोए हुए पशुओं के सम्बन्ध में भविष्यद्क्ता से पूछताछ करने का प्रस्ताव रखा। “मेरे पास एक शेकेल चाँदी का चौथा हिस्सा है, जो मैं परमेश्वर के दास को दूँगा कि वह हम को बताए कि हम किधर जाएँ ।” यह उस समय की परम्परा के अनुसार था। यदि कोई व्यक्ति पद या कार्यभार में स्वयं से श्रेष्ठ व्यक्ति से भेंट करता था, तो आदर प्रकट करने के लिये वह उसे छोटी सी भेंट देता था। PPHin 635.3

नगर के समीप पहुँचने पर, उनकी भेंट कुछ नवयुवतियों से हुईं जो पानी भरने आईं थी, और शाऊल और उसके सेवक ने उनसे भविष्यद्वक्ता का पता पूछा। उत्तर में उन्हें कहा गया कि एक धार्मिक विधि होने को थी, और भविष्यद्वकता वहाँ आ चुका था और ऊँचे स्थान’ पर भेंट चढ़ाई जाएगी और उसके बाद बलिदान सम्बन्धी सहभोज होगा। शमूएल के प्रशासन के तहत बहुत बड़ा परिवर्तन हुआ था। जब परमेश्वर की ओर से उसे पहली बार बुलाया गया था, मिलापवाले तम्बू की विधियों का तिरस्कार किया जाता था। “वे यहोवा को भेंट की गईं बलि के प्रति श्रद्धा नहीं रखते थे ।-1 शमूएल 2:17। लेकिन अब परमेश्वर की आराधना पूरे राज्य में की जाती थी, लोग धार्मिक विधियों में रूचि दिखाते थे। पवित्र स्थान में कार्य संपादन न होने के कारण, कुछ समय के लिये बलि की भेंट कहीं और चढ़ाई जाती थी, और इस कार्य के लिये लैवियों और याजकों के नगर, जहाँ लोग

निर्देश प्राप्त करने जाते थे, चुने गए थे। इन नगरों के सबसे ऊंचे टीले बलि के स्थान के रूप में चुने जाते थे इसलिये यह "उच्च स्थान" कहलाते थे। PPHin 636.1

नगर के फाटक पर भविष्यद्वक्ता स्वयं शाऊल से मिला। परमेश्वर ने शमूएल पर प्रकट किया था कि इज़राइल के लिये चुना हुआ राजा स्वयं उसके सम्मुख प्रस्तुत होगा। जब वे आमने-सामने खड़े हुए परमेश्वर ने शमूएल से कहा, "यही वह व्यक्ति है जिसके बारे में मैंने तुमसे कहा था। यह मेरे लोगों पर शासन करेगा। PPHin 636.2

शाऊल ने शमूएल से निवेदन किया, "कपया बता कि भविष्यद्क्ता का घर कहा है?" शमूएल ने उत्तर दिया, "मैं ही भविष्यद्वक्ता हूँ। उसे आश्वासन देते हुए कि खोए हुए पशु मिल गए थे, शमूएल ने उससे ठहरने और सहभोज में सम्मिलित होने का कहा, और साथ ही साथ उसे उसकी महान नियति का भी संकेत दिया, "अब तुम्हें सारा इज़राइल चाहता है। वे तुम्हें और तुम्हारे पिता के परिवार के सभी लोगों को चाहते है।" भविष्यद्वक्ता से यह सुनकर सुनने वाले का हृदय गदगद हो गया। वह उन शब्दों के महत्व को समझ गया, क्योंकि एक राजा की माँग सम्पूर्ण राज्य के लिये अत्यन्त उत्सुकता का विषय बन गया था। फिर भी विनयपूर्ण दीनता से शाऊल ने उत्तर दिया, "किन्तु मैं तो बिन्यामीन परिवार समूह का एक सदस्यहूँ जो इज़राइल में सबसे छोटा परिवार समूह है। आप क्यों कहते हैं कि इज़राइल मुझको चाहता है? PPHin 636.3

शमूएल आगन्तुक को सभा स्थल पर ले गया जहाँ नगर के प्रतिष्ठित व्यक्ति एकत्रित हुए थे। उनके मध्य में, भविष्यद्वक्ता के निर्देशानुसार, सम्मान का स्थान शाऊल को दिया गया और सहभोज से समय सबसे उत्तम भाग उसके सम्मुख रखा गया। विधियों के सम्पन्न होने के पश्चात, शमूएल अपने अतिथि को अपने निजी निवास पर ले गया, और वहाँ छत पर उसके साथ बताचीत की और उसके सम्मुख उन महान सिद्धान्तों को रखा जिनके आधार पर इज़राइल की सत्ता स्थापित की गई थी, और इस प्रकार, कुछ हद तक, उसे इस ऊंचे पद के लिये तैयार करना चाहा। PPHin 637.1

दूसरे दिन, सुबह होने पर, भविष्यद्वक्ता शाऊल के साथ गया। नगर पार करके, उसने सेवक को आगे जाने को कहा, फिर उसने शाऊल को सीधे खड़े होकर उस सन्देश को प्राप्त करने को कहा जो परमेश्वर ने उसे दिया, "फिर शाऊल ने विशेष तेल की एक कृप्पी ली। शमूएल ने शाऊल के सिर पर तेल उँडेला और उसे चूमते हुए कहा, "यहोवा ने तुम्हारा अभिषेक अपने लोगों का प्रमुख बनाने के लिये किया है। तुम यहोवा के लोगों पर नियन्त्रण करोगे। तुम उन्हेंउन शत्रुओं से बचाओगे जो उन्हे चारों ओर से घेरे हुए है। यहोवा ने तुम्हारा अभिषेक (चुनाव) अपने लोगों का शासक होने के लिये किया है। एक चिन्ह प्रकट होगा जो प्रमाणित करेगा कि यह सत्य है।" इस बात का प्रमाण देने के लिये कि यह परमेश्वर के अधिकार से किया गया था, उसने उन घटनाओं की भविष्यवाणी की जो उसकी घर वापसी की यात्रा के द्वारा घटित होने वाली थी, और उसने शाऊल को आश्वासन दिया कि परमेश्वर का पवित्र आत्मा उसे राजा के पद के लिये सुयोग्य बनाएगा। भविष्यद्वक्ता ने कहा,

"यहोवा का आत्मा तुझ पर उतरेगा, और तू परिवर्तित होकर और ही मनुष्य हो जाएगा। और जब ये चिन्ह तुझे दिखाई पड़ेंगे, तब जो काम करने का अवसर तुझे मिले उसमें लग जाना, क्योंकि परमेश्वर तेरे संग रहेगा। PPHin 637.2

जैसे ही शाऊल वहाँ से चला, सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा कि भविष्यद्वक्ता ने कहा था। बिन्यामीन की सीमा पर पहुँच कर उसे बताया गया कि उसके सोए हुए पशु मिल गए थे। ताबोर की तराई में उसे तीन पुरूष मिले जो बेथेल से परमेश्वर की आराधना करने वाले थे। उनमें से एक ने बलि के लिये तीन बकरी के बच्चे पकड़े हुए थे, दूसरे ने तीन रोटी और तीसरे ने बलि सम्बन्धी सहभोज के लिये एक दाखरस की बोतल ली हुई थी। उन्होंने शाऊल को व्यवहारिक अभिनन्दन किया और तीन रोटी में से दो रोटी उसे दे दी। उसके अपने शहर गिबा में "उच्च स्थान' से लौटता हुआ भविष्यद्वक्ताओं का समूह सितार, डफ और बांसूरी की धुन पर परमेश्वर की प्रशंसा के गीत गा रहे थे। जैसे ही शाऊल उनके पास पहुँचा, परमेश्वर का आत्मा उस पर भी उतरा और वह भी उसके साथ प्रशंसाके गीत गाने लगा, ओर भविष्यद्वाणी करने लगा। वह इतनी वाक्पटुता और पांडित्य से बोला, और उनकी विधि में इतनी निष्ठा से सम्मिलित हुआ कि उससे जो परिचित थे वे आश्चर्य करते हुए बोले, "कीश के पुत्र को यह क्या हुआ? क्या शाऊल भी भविष्यद्वक्ताओं में से एक है? PPHin 637.3

जब शाऊल ने भविष्यद्वकताओं के साथ आराधना की, पवित्र आत्मा के द्वारा उसमें बहुत परिवर्तन आया। ईश्वरीय शुद्धता और पवित्रता का प्रकाश प्राकृतिक हृदय के अन्धकार पर चमका। उसने स्वयं को ऐसे देखा मानो वह परमेश्वर के सम्मुख हो। उसने पवित्रता की सुन्दरता को देखा। अब उसे पाप और शैतान के विरूद्ध संग्राम प्रारम्भ करने के लिये बुलाया गया और उसे यह एहसास दिलाया गया कि इस संघर्ष में उसका सामर्थ्य पूर्णतया परमेश्वर की ओर से आया था। उद्धार की योजना, जो धुँधली और अनिश्चित प्रतीत हो रही थी, अब उसको समझ आ गई। परमेश्वर ने उसे उसके उच्च पद के लिये साहस और बुद्धि प्रदान किये। उसने उस पर अनुग्रह और सामर्थ्य के स्रोत को प्रकट किया, और पवित्र अधिकारों और अपने निजी कर्तव्य के बारे में उसकी समझ को प्रबुद्ध किया। PPHin 638.1

शाऊल का राजा के रूप में अभिषेक किये जाने के बारे में इज़राइली प्रजा को नहीं बताया गया था। परमेश्वर के चयन को सार्वजनिक तौर पर प्रकट किया जाना था। इस कार्य के लिये शमूएल ने मिस्पा में लोगों की सभा बुलाई । ईश्वरीय मार्ग दर्शन के लिये प्रार्थना की गई, और इसके बाद चयन का विधिवत समारोह हुआ। एकत्रित हुई प्रजा चुपचाप इस कार्य की प्रतीक्षा करती रही। गोत्र, परिवार और घरानों को कमानुसार खड़ा किया, और फिर कीश के पुत्र शाऊल को चुने हुए व्यक्ति की तरह संकेत किया गया। लेकनि शाऊल सभा में नहीं था। स्वयं पर एक महान उत्तरदायित्व के आने के आभास के कारण शाऊल चुपचाप पीछे हट गया था। उसे प्रजा के पास लाया गया, जिन्होंने

सन्तोष और गर्व के साथ देखा कि वह एक कुलीन और राजसी आचरण का था और “लोगों से लम्बा था।” शमूएल भी उसे प्रजा के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए बोला, “क्या तुमने यहोवा के चुने हुए को देखा है कि सारे लोगों में कोई उसके बराबर नहीं?” और उत्तर देते हुए सब लोग ललकार कर बोले उठे, “राजा चिरंजीव रहे।” PPHin 638.2

शमूएल ने इसके बाद ‘राजा की राजनीति’ को लोगों के सम्मुख रखा और उन सिद्धान्तों का वर्णन किया जिन पर राजशाही शासन आधारित था और जिसके द्वारा उन्हें संचालित किया जाना था। राजा को एक निरंकश सम्राट ना होकर, अपने अधिकर को सर्वोच्च परमेश्वर के अधीन रखना था। इस सम्बोधन का उल्लेख पुस्तक में किया गया , जहाँ शासक के प्राधिकारों और प्रजा के विशेषाधिकारों और अधिकारों का वर्णन किया गया। यद्यपि लोगों ने शमूएल की चेतावनी का तिरस्कार किया था, सत्यनिष्ठ भविष्यद्वक्ता, उसकी अभिलाषाओं के आगे समर्पण करने को विवश होकर भी, जहाँ तक सम्भव था, उनकी स्वाधीनता की सुरक्षा करने के लिये प्रयत्नशील था। PPHin 639.1

हालाँकि सामान्य तौर पर लोग शाऊल को राजा के रूप में स्वीकार करने के लिये तैयार थे, लेकिन एक बड़ा दल विपक्ष में था। इज़राइल के गोत्रों में सबसे छोटे गोत्र बिन्यामीन में से राजा का चुना जाना और वह भी सबसे बड़े और सबसे शक्तिशाली, यहूदा और एप्रैम की उपेक्षा कर, एक ऐसा अपमान था जिसे वे सहन नहीं कर पाए। उन्होंने शाऊल के प्रति स्वामिभक्ति या उसके लिये परम्परागत भेंट लाने से इन्कार कर दिया। जो राजा की माँग करने में सबसे अधिक उतावले थे उन्होंने ही परमेश्वर द्वारा नियुकक्त व्यक्ति को कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार करने से मना कर दिया। प्रत्येक दल के सदस्यों का अपना प्रीतिपात्र था, जिसे वह सिंहासन पर बैठा देखना चाहते थे, और उनमें से कई अगुवे इस सम्मान को स्वयं के लिये चाहते थे, और उनमें से कई हृदय ईर्ष्या और द्वेष से जल रहे थे। महत्वकांक्षा और घमण्ड के प्रयत्न निराशा और असंतोष मे प्रमाणित हुए थे। PPHin 639.2

इन परिस्थितियों में शाऊल ने राजसी सम्मान को ग्रहण करना उचितनहीं समझा । शमूएल को पहले की तरह शासन करने को छोड़कर, वह गिबा को लौट गया। उसे वहाँ से सम्मानपूर्वक एक दल के साथ भेजा गया, जो उसके चुनाव में ईश्वरीय चयन को देखकर, उसे बनाए रखने को संकल्पित थे। लेकिन शाऊल ने सिंहासन पर अपने अधिकार को बलपूर्वक बनाए रखने का कोई प्रयत्न नहीं किया । बिन्यामीन के पहाड़ी प्रदेश में अपने घर जाकर वह खेतिहर के कर्तव्यों में व्यस्त हो गया और अपने आधिपत्य की स्थापना को पूर्णतया परमेश्वर पर छोड़ दिया। PPHin 639.3

शाऊल की नियक्ति के तुरन्त बाद नाहाश राजा के नेतृत्व में अम्मोनियों ने यरदन के पूर्व के प्रान्त पर चढ़ाई की और गिलाद के याबेश नगर में डेरा डाला । वहाँ के निवासियों ने अम्मोनियों के अधीन होने के प्रस्ताव द्वारा उनके साथ शान्तिपूर्ण समझौता करना चाहा। इसके लिये निर्दयी राजा

केवल इस शर्त पर सहमत हुआ कि उनमें से प्रत्येक की दाहिनी आंख फोड़ कर उनको उसकी शक्ति का स्थायी साक्षी बनाया जाए। PPHin 640.1

घेराव किये हुए नगर के लोगों ने सात दिनों का समय माँगा। इसके लिये अम्मोनी यह सोचकर सहमत हो गए कि वे अपनी अपेक्षित विजय के सम्मान को और ऊंचा कर सकेंगे। याबेश से दूतों को तत्काल भेजा गया, जिससे कि यरदन के पश्चिम के गोत्रों से सहायता प्राप्त की जा सके। वे समाचार लेकर गिबा पहुँचे, और इससे भय व्यापक रूप से फैल गाय। रात को शाऊल बैलों के पीछे-पीछे मैदान में चला आ रहा था कि उसने लोंगों के चिललाकर रोने की आवाज सुनी जो किसी विपत्ति का सन्देश दे रही थी। उसने पूछा, "लोगों को क्या हुआ कि वे रोते है?" जब अपमानजनक कहानी दोहराई गई उसकी दबी हुई शक्तियाँ जागृत हो गई। "परमेश्वर का आत्मा उस पर उतरा.......और उसने एक जोड़ी बैल लेकर उसके टुकड़े-टुकड़े किये, और यह कहकर दूतों के हाथ से इज़राइल के सारे देश में कहला भेजा, जो कोई आकर शाऊल के पीछे न हो लेगा उसके बैलों के साथ ऐसा ही किया जाएगा।" PPHin 640.2

शाऊल के नेतृत्व में, बेजक की तराई में तीन हज़ार पुरूष एकत्रित हुए। दूतों को तत्काल ही गिलाद के याबेश नगर में इस आश्वासन के साथ भेजा गया कि सबुह होने पर अर्थात उसी दिन जब उन्हें अम्मोनियों के आगे समर्पण करना था, उन्हें अवश्य ही सहायता प्राप्त होगी। शाऊल की सेना तीव्र गति से रातों-रात यरदन को पार कर "रात के अन्तिम पहर पर" याबेश पहुँचे। गिदोन की तरह, शाऊल ने अपनी सेना को तीन टुकड़ियों में बाँटा और उस पहर अम्मोनियों की छावनी पर टूट पड़ा जब, खतरे का अन्देशा ना होने से, वे विलकुल असुरक्षित थे। उसके बाद जो हुआ उसने बहुत नरसंहार हुआ। "और जो बच निकले वे वहाँ तक तितर-बितर हो गए कि कही भी दो जन भी इकटठे न रहे।" PPHin 641.1

शाऊल की तत्परता और साहस और इतनी विशाल सेना के सफल संचालन में प्रदर्शित उसका सेनापत्य वे गुण थे जो इज़राइल अपने राजा में देखना चाहते थे, जिससे कि वे अन्य राष्ट्र के समान हो सकें। उन्होंने अब शाऊल का राजा के रूप में अभिनन््दन किया, और विजय का श्रेय मानवीय साधनों को देते हुए वे भूल गए कि परमेश्वर के विशेष आशीर्वाद के अभाव में उनके सभी प्रयत्न व्यर्थ होते। इस उत्साह में किसी-किसी ने प्रस्ताव रखा कि जिन्होंने पहले शाऊल के अधिकार को स्वीकार करने से मना कर दिया था, उन्हें मार डाला जाए। लेकिन राजा ने हस्तक्षेप करते हुए कहा, "आज के दिन कोई भी मार डाला न जाएगा, क्योंकि आज यहोवा ने इज़राइलियों की छुटकारा दिया है। यहाँ शाऊल ने अपने स्वभाव में परिवर्तन होने का प्रमाण दिया। जीत का श्रेयस्वयं को देने के बजाए, उसने परमेश्वर की महिमा की। प्रतिशोध की इच्छा न दिखाकर उसने क्षमाशीलता और सहानुभूति की भावना को प्रकट किया। यह इस बात का निश्चय प्रमाण है कि परमेश्वर का अनुग्रह हृदय में वास करता है। PPHin 641.2

शमूएल ने अब गिलगल में एक राष्ट्रीय सभा के आयोजन का प्रस्ताव रखा, जिससे कि वहाँ राज्य को सार्वजनिक तौर पर शाऊल को दिया जाए। ऐसा ही किया गया, "वहीं उन्होंने यहोवा को मेलबलि चढ़ाए, और वहीं शाऊल और सब इज़राइलियों ने अत्यन्त आनन्द मनाया।" PPHin 641.3

गिलगल में इज़राइल ने पहला पड़ाव डाला था। यहीं पर यहोशू ने, पवित्र निर्देश द्वारा, यरदन को चमत्कारी रूप से पार करने के स्मारक के रूप में बारह पत्थरों के स्तम्भ को स्थापित किया था। यहीं पर खतने की विधि को दोहराया गया था। यही पर मरूस्थल में पड़ाव और कादेश में किए गए पाप के पश्चात पहला फसह का पर्व मनाया गया था। यहीं पर मन्ना का मिलना बन्द हुआ था। यहीं पर यहोवा की सेनाओं के कप्तान ने स्वयं इज़राइल के सेना प्रमुख के रूप में प्रकट किया था। इसी जगह से उन्होंने यरीहां और ऐ के लिये कूच किया था। यहीं आकान को उसके पाप का दण्ड मिला था और यहीं पर गिबोनियों के साथ वह सन्धि की गई, जिसके माध्यम से इज़राइलियों को परमेश्वर की सम्मति लेने की उपेक्षा के लिये दण्डित किया गया। इतनी सारी उत्सावर्धक घटनाओं से जुड़ी इस तराई पर शमूएल और शाऊल खड़े हुए, और जब उनका स्वागत करती आवाजे शान्त हुई, वृद्ध भविष्यद्वक्ता ने राज्य के शासक के रूप में अपने अन्तिम शब्द कहे। PPHin 641.4

"सुनो, जो कुछ तुम ने मुझ से कहा था उसे मानकर मैंने एक राजा तुम्हारे ऊपर ठहराया है। और अब देखो वह राजा तुम्हारे आगे-आगे चलता है, और अब मैं बूढ़ा हूँ. और मेरे बाल सफेद हो गए हैं, और मेरे पुत्र तुम्हारे पास है, और मैं लड़कपन से लेकर आजतक तुम्हारे सामने कार्य करता रहा हूँ। में उपस्थित हूँ. इसलिये तुम यहोवा के सामने और उसके अभिषिक्त के सामने साक्षी दो कि मैंने किसका बैल लिया है? या किसका गधा ले लिया? या किस पर अत्याचार किया? या किस के हाथ से अपनी आंख बन्द करने के लिये घूस ली? बताओ, और मैं तुमको लौटा दूँगा। PPHin 642.1

एक आवाज में लोगों ने उत्तर दिया, "तूने न तो हम पर अन्धेर किया, न हम पर अत्याचार किया, और न किसी के हाथ से कुछ लिया है।' PPHin 642.2

शमूएल केवल अपनी कार्य प्रणाली को न्यायसंगत ठहराने का प्रयत्न नहीं कर रहा था। उसने पहले से ही राजा और प्रजा को शासित करने वाले सिद्धान्तों का वर्णन किया था, और वह अपने उदाहरण का प्रभाव उसके कहे शब्दों पर डालना चाहता था। बचपन से ही वह परमेश्वर के कार्य से जुड़ा हुआ था और उसके लम्बे जीवन के दौरान परमेश्वर की महिमा और इज़राइल के सर्वोच्च कल्याण का लक्ष्य हमेशा उसके सम्मुख रहा था। PPHin 642.3

इज़राइल की समृद्धि की कोई भी आशा करने से पहले उन्हें परमेश्वर के सम्मुख प्रायश्चित करना था। पाप के फलस्वरूप उन्होंने परमेश्वर में अपना विश्वास और राज्य पर शासन करने की उसकी सामर्थ्य और बुद्धिमता के संदर्भ में अपने विवेक को खो दिया था-उन्होंने परमेश्वर के उद्देश्य को उसी के द्वारा सही प्रमाणित करने की उसकी योग्यता में अपना विश्वास खो दिया था। सच्ची

शान्ति प्राप्त करने से पहले यह आवश्यक है कि जिस पाप के लिये वे दोषी है उसका अंगीकार करे। उन्होंने राजा की माँग के लक्ष्य को घोषित कर दिया था, "कि हमारा राजा हमारा न्याय करे, और हमारे आगे-आगे जाकर हमारे लिये युद्ध करे।" शमूएल ने इज़राइल के इतिहास को उस दिन से दोहराया जब परमेश्वर उन्हे मिस्र से निकालकर लाया था। राजाओं का राजा यहोवा उनके आगे-आगे गया था, और उनके लिये उसने लड़ाईयाँ लड़ी थी। प्रायः उनके पाप उन्हें उनके शत्रुओं के अधिकार में बेच देते थे, लेकिन जैसे ही वे अपने पापमय तौर-तरीकों से मुहँ फेर लेते थे, करूणामयी परमेश्वर उनके लिये एक उद्धारकर्ता भेजा था। यहोवा ने गिदोन और बाराक, "और यिप्ताह और शमूएल को भेजकर तुमको तुम्हारे चारों ओर के शत्रुओं के हाथ से छुड़ाया और तुम निडरता से रहनेलगे ।" और जब उन पर संकट आया तो वे बोले" हम पर एक राजा राज्य करेगा, "और भविष्यद्वक्ता ने कहा ऐसा उन्होंने तब कहा, "जब तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारा राजा था। PPHin 642.4

शमूृएल ने आगे कहा, "अब तुम खड़े रहो, और इस बड़े काम को देखो जिसे यहोवा तुम्हारी आँखो के सामना करने पर है। आज क्या गेहूँ की कटनी नहीं हो रही? मैं यहोवा का पुकारूंगा और वह मेघगर्जन करेगा और मेंह बरसाएगा, तब तुम जान लोगे, ओर देख भी लोगे कि तुमने राजा माँगकर यहोवा की दृष्टि में बहुत बड़ा पाप किया है। तब शमूएल ने यहोवा को पुकारा, और यहोवा ने उसी दिन मेघगर्जन किया और मेंह बरसाया, और सब लोग यहोवा से और शमूएल से अत्यन्त डर गए।" अन्न की कटाई के समय, मई और जून में पूरब में कोई वर्षा नहीं हुई। आसमान साफ था, और मन्द-मन्द वायु प्रवाहित हो रही थी। इस ऋतु में इतने भयंकर तूफान ने लोगों को भयभीत कर दिया। लोगो ने दीन होकर अपने पाप का अंगीकार किया- जिस पाप के लिये वे दोषी थे। "अपने दासों के निमित अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना कर कि हममर न जाए, क्योंकि हमने अपने सारे पापों से बढ़कर यह बुराई की है कि एक राजा की माँग की।" PPHin 643.1

शमूएल ने लोगों को निराशा की अवस्था में नहीं छोड़ा, क्योंकि ऐसा करने से एक बेहतर जीवन के सभी प्रयत्नों पर रोक लग जाती। शैतान उन्हें परमेश्वर को कठोर और निर्मम मानने के लिये बाध्य कर देता और वे कई प्रलोभनों का शिकार बन जाते। परमेश्वर दयावान और क्षमाशील है, जो हमेशा अपने लोगों पर कृपा-दृष्टि करने का इच्छुक होता है जब वे उसका कहा मानते हैं। "दास के माध्यम से परमेश्वर का सन्देश था, "डरो मत, तुम ने यह सब बुराई तो की है, परन्तु अब यहोवा के पीछे चलने से फिर मत मुड़ना, परन्तु अपने सम्पूर्ण मन से उसकी उपासना करना, और मत मुड़ना, नहीं तो ऐसी व्यर्थ वस्तुओं के पीछे चलने लगोगे जिनसे न कुछ लाभ और न छुटकारा हो सकता है, क्योंकि वे व्यर्थ हैं। यहोवा अपनी प्रजा को कभी नहीं तजेगा।" PPHin 643.2

शमूएल ने स्वयं के अपमान के सन्दर्भमें कुछ नहीं किया और न ही उस अकृतज्ञता की निंदा की जो इज़राइल ने उसकी जीवन भर की भक्ति के प्रति दिखाई थी, लेकिन उसने उन्हें अपने कभी

न समाप्त होने वाली रूचि का आश्वासन दिया, “ऐसा कभी न हो कि में तुम्हारे लिये प्रार्थना करना छोड़कर, यहोवा के विरूद्ध पापी ठहरूँ, मैं तो तुम्हे अच्छा और सीधा मार्ग दिखाता रहूँगा। केवल यहोवा का भय मानो और सच्चाई से अपने सम्पूर्ण मन के साथ उनकी उपासना करो, क्योंकि यह तो सोचो कि उसने तुम्हारे लिये कितने बड़े-बड़े काम किये हैं। परन्तु यदि तुम बुराई करते ही रहोगे, तो तुम और तुम्हारा राजा दोनो मिट जाओगे।” PPHin 643.3

अध्याय 60—शाऊल उपधारणा

यह अध्याय 1 शमूएल 13:14 पर आधारित है

गिलगाल की सभा पश्चात, शाऊलने उससेना कोभंग कर दिया जिसे, अम्मोनियों को उखाड़ फेंकने के लिये, उसके बुलावे पर संगठित किया गया था। केवल तीन हजार पुरूषों को मिकमाश में उसकी आज्ञा के तहत और दोहजार पुरूष गिबा में उसके पुत्र योनातन के लिये आरक्षित किये गए। यह बहुत भारी गलती थी। हाल ही में हुई जीत के कारण उसकी सेना और और साहस से भरी हुई थी, और यदि उसने तत्काल ही इज़राइल के अन्य शत्रुओं पर चढ़ाई कर दी होती, तो वह राष्ट्र की स्वतन्त्रता के पक्ष में प्रभावशाली प्रहार होता। PPHin 645.1

इस बीच उनके रणकशल पड़ोसी पलिश्ती सक्रिय थे। एबेनेजर में पराजय के पश्चात उन्होंने अभी भी, इज़राइल के देश के कुछ कुछ पहाड़ी किलों पर अपना स्वामित्व बनाए रखा था, और अब उन्होंने स्वयं को देश के बीचों-बीच स्थापित कर लिया था। सुविधाओं, हथियार और सामग्री के सन्दर्भ में पलिश्ती अनुकूल परिस्थिति में थे। उनके दमनकारी शासन की चिरकालीन अवधि में उन्होंने इज़राइलियों के धातु कर्मकर के व्यवसाय के अभ्यास को प्रतिबंधित कर, अपनी शक्ति को प्रबल करने का प्रयास किया था, क्योंकि उन्हें डर था कि इज़राइली हथियार बनाने लगेंगे। शान्ति की स्थापना के बाद भी, कुछ आवश्यक कार्यों के लिये पलिश्ती सेना का सहारा लेने जाते रहे। आरामदेह जीवन की लालसा और दीर्घकालीन अत्याचार से उत्पन्न दीन-हीन भावना से प्रभावित इज़राइल ने, काफी हद तक, स्वयं को युद्ध सम्बन्धी हथियारों से लैस करने की उपेक्षा की थी। युद्ध में धनुष और गोफन का उपयोग किया जाता था, और ये इज़राइलियों को उपलब्ध हो सकते थे, लेकिन सिवाय शाऊल और योनातन के किसी के पास भाला या तलवार नहीं थी। PPHin 645.2

शाऊल के शासन के दूसरे वर्ष तक पलिश्तियों को अधीकृत करने का कोई प्रयास नहीं किया गया। प्रथम प्रहार, राजा के पुत्र, योनातन ने किया और गिबा की सेना पर चढ़ाई कर उसे पराजित किया। इस हार से तिलमिलाकर, पलिश्तियों ने शीघ्र ही इज़राइल पर आक्रमण किया। शाऊल ने सम्पूर्ण राज्य में तुरही के स्वर द्वारा रणकुशल पुरूषों को गिलगाल मे एकत्रित होने का बुलावा भेजकर युद्ध की घोषण कही। इनमें यरदन पार के गोत्र भी सम्मिलित थे। इस आज्ञा का पालन किया गया। PPHin 645.3

पलिशितियों ने मिकमाश में एक विशाल सेना एकत्रित की- "ती हजार रथ, छः: हजार घुड़सवार और समुद्र किनारे की रेत के समान लोगों की भीड़" जब यह समाचार गिलगल में शाऊल और उसकी सेना के पास पहुँचा, तो लोग उस सशक्त सेना के विचार से ही भोंचक्के रह गए, जिसका सामना उन्हें करना था। वे दुश्मन का सामना करने के लिये तैयार नहीं थे, और कई तो इतना

भयभीत थे कि उनमें मुठभेड़ की कसौटी पर उतरने का भी दुस्साहस नहीं किया। कुछ एक ने यरदन को पार किया, जबकि अन्य क्षेत्र की बहुत ये चटटानों के बीच, और गुफाओं और गड्ढो में छुप गए। जब मुठभेड़ का समय निकट आया, लोगों की वापसी में वृद्धि हुई और जिन्होंने जत्थे को नहीं छोड़ा, वे भय और पूर्वाभास से भर गए। PPHin 646.1

जब शाऊल को पहली बार इज़राइल का राजा अभिषिक्त किया गया था, उसने शमूएल से इस समय के लिये अपनायी जाने वाली कार्य-प्रणाली से सम्बन्धित स्पष्ट निर्देश दिए गए थे। "तू मुझ से पहले गिलगाल को जाना, और में होमबलि और मेलबलि चढ़ाने के लिये तेरे पास आऊँगा। तू सात दिन तक मेरी बाट जोहते रहना, तब मैं तेरे पास पहुँचकर तुझे बताऊंगा कि तुझ को क्या करना है"-1 शमूएल 10:8। PPHin 646.2

समय बीतने पर भी शाऊल ने लोगों को प्रोत्साहित करने और परमेश्वर में उनके विश्वास को प्रेरित करने का निश्चित प्रयास नहीं किया। भविष्यद्व क्ता द्वारा निर्धारित समय के समाप्त होने के पहले है वह विलम्ब के कारण अधीर हो चला और अपने चारों और की चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों से हतोत्साहित हो गया। शमूएल द्वारा की जाने वाली धर्म-किया के लिये लोगों को प्रयत्नशील होकर तैयार करने के बजाय, वह अविश्वास और पूर्वाभास में उलझ गया। बलि के माध्यम से परमेश्वर से विनती का कार्य सबसे अधिक विधिवत और आवश्यक कार्य था, और परमेश्वर अपेक्षा करता था कि लोग अपने हृदयों को टटोले और अपने पापों का प्रायश्चित करें, जिससे कि उनके द्वारा चढ़ाई गईं भेंट उसके सम्मुख स्वीकार ठहरे और शत्रु पर विजय पाने के उनके प्रयत्नों पर उसकी आशीष हो। लेकिन शाऊल धैर्यहीन हो गया था, और लोग सहायता के लिये परमेश्वर पर विश्वास रखने के बजाय, मागदर्शन व निर्देशन के लिये, अपने द्वारा चुने हुए राजा की ओर देख रहे थे। PPHin 646.3

फिर भी प्रभु उनके लिये चिन्तित था और उसने उन्हें विपत्तियों के सुपुर्द नहीं किया, जो उनपरनिश्चय ही आती, यदि हाड़-माँस का मनुष्य उनका एकमात्र सहायक होता। वह उन्हें संकीर्ण अर्थात चुनौतीपूर्ण स्थानों में लाया, जिससे उन्हें मनुष्य पर निर्भर होने की मूर्खता का आभास हो और वे उसे उनकी एकमात्र सहायता मानकर उसकी ओर मुड़े । शाऊल के लिये परीक्षा की घड़ी आ चुकी थी। अब उसे यह प्रमाणित करना था कि वह परमेश्वर पर पूरी रीति से निर्भर होगा या नहीं और उसकी आज्ञानुसार धेर्यपूर्वक प्रतीक्षा करेगा या नहीं, इस प्रकार उसे प्रकट करना था कि चुनौतीपूर्ण या संकीण स्थानों में लोगो का राजा होने के लिये परमेश्वर उस पर विश्वास रख सकता था या वह उसके द्वारा दिये गए पवित्र उत्तरदायित्व के लिये अयोग्य और अनिश्चित होगा। क्या इज़राइल द्वारा चुना हुआ राजा राजाओं के राजा की आज्ञाओं का पालन करेगा? क्या वह डरपोक सैनिकों का ध्यान उसकी ओर करेगा जिसमें अनन्त शक्ति और छुटकारा निहित है? PPHin 647.1

बढ़ती हुई अधीरता के साथ वह शमूएल के आगमन की प्रतीक्षा करता रहा और उसने भविष्यद्वक्ता की अनुपस्थिति को अपनी सेवा के कष्ट, गड़बड़ी और तितर-बितर होने का उत्तरदायी

ठहराया। निर्धारित समय आ गया, लेकिन भविष्यद्वक्ता तुरन्त प्रकट नहीं हुआ। परमेश्वर ने अपनी सूझ-बूझ में अपने दास को रोक रखा था। लेकिन शाऊल की बैचेन, आवेगपूर्ण भावना अनियन्त्रित हो चली। इसविचार से कि लोगों के भय को शान्त करने के लिये कुछ तो करना चाहिये, उसने धार्मिक अनुष्ठान के लिये एक सभा का आयोजन करने, और बलि की भेंट के द्वारा ईश्वरीय सहायता के लिये निवेदन करने का निश्चय किया। परमेश्वर का निर्देश था कि उसके सम्मुख केवल वे ही बलि की भेंट चढ़ाएं जिन्हें इस कार्य भार के लिये अभिषिक्त किया गया है। लेकिन शाऊल ने आज्ञा दी "होमबलि को मेरे पास लाओ।" युद्ध के हथियारों और कवच को धारण किए वह वेदी के निकट गया और उसने परमेश्वर के सम्मुख होमबलि चढ़ाई। PPHin 647.2

"ज्यों ही वह होमबलि को चढ़ा चुका, तो क्या देखता है कि शमूएल वहाँ आ पहुँचा, और शाऊल उससे मिलने और उसका अभिवादन करने बाहर निकला।" शमूएल को एकदम ज्ञात हो गया कि शाऊल ने स्पष्ट रूप से उसे दिए गए निर्देशों के विपरीत कार्य किया था। अपने भविष्यद्वक्ता के माध्यम से प्रभु ने कहा था कि इस घड़ी में इस संकट से इज़राइल को कैसे निकालना है। वह परमेश्वर प्रकट करेगा। PPHin 647.3

यदि शाऊल ने उन शर्तों को माना होता, जिनके आधार पर ईश्वरीय सहायता की प्रतिज्ञा की गई थी, तो परमेश्वर ने इज़राइल का चमत्कारी रूप से छुटकारा करा दिया होता और वह भी उन थोड़े से लोगों के द्वारा जो राजा के प्रति वफादार थे। लेकिन शाऊल स्वयं से और अपने कार्य से इतना सन्तुष्ट था कि वह भविष्यद्वक्ता से मिलने इस प्रकार गया मानो उसको निन्दा के बजाय उसकी प्रशंसा की जानी चाहिये थी। PPHin 648.1

शमूएल की मुखाकृति चिंतायुक्त और दुखभरी थी, लेकिन जब उसने शाऊल से पूछा, "यह तूने क्या किया?" शाऊल ने अपने हठीले कृत्य के लिये बहाने बनाए। उसने कहा, "जब मैंने देखा कि लोग मेरे पास इधर-उधर हो चले है, और तू ठहराए हुए दिनों के भीतर नहीं आया, और पलिश्ती मिकमाश में इकट्ठा हुए है, तब मैंने सोचा कि पलिश्ती गिलगाल में मुझ पर अभी हा पड़ेगे, और मेंने यहोवा से विनती भी नहीं की है, अतः मैने अपनी इच्छा न रहते भी होमबलि चढ़ाया।* PPHin 648.2

"शमूएल ने शाऊल से कहा, "तूने मूर्खता का काम किया है, तूने अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा को नहीं माना, नही तो यहोवा तेरा राज्य इज़राइलियों के ऊपर सदा स्थिर रखता। परन्तु अब तेरा राज्य बना न रहेगा, यहोवा ने अपने लिये एक ऐसे पुरूष को ढूँढ लिया है जो उसके मन के अनुसार है, और यहोवा ने उसी को अपनी प्रजा पर प्रधान होने को ठहराया है, क्योंकि तूने यहोवा की आज्ञा को नहीं माना। तब शमूएल चल निकला, और गिलगाल से बिन्यामीन के गिबा को गया।" PPHin 648.3

या तो इजराईल परमेश्वर की प्रजा ना रहे, या जिस सिद्धान्त पर राजशाही की नींव रखी गई, उसे कायम रखा जाना था और राष्ट्र को ईश्वरीय शक्ति द्वारा शासित होना था। यदि इज़राइल पूर्ण

रूप से परमेश्वर का हो जाता, यदि मानवीय व सांसारिक इच्छा परमेश्वर की इच्छा के अधीन होती, तो वह इज़राइल का राजा बना रहता। जब तक राजा और प्रजा परमेश्वर के अधीनस्थ होने की तरह व्यवहार करते, तब तक वह उनकी प्रतिवादी वकील होता। लेकिन इज़राइल में कोई भी राजाशाही समृद्ध नहीं हो सकती थी जो हर बात में परमेश्वर के सर्वोच्च अधिकार को स्वीकार नहीं करती। PPHin 648.4

यदि शाऊल ने इस संकट के समय में परमेश्वर उसके नियमों का मान रखा होता, तो परमेश्वर उसके माध्यम से अपनी इच्छा को पूरी कर सकता था। उसकी असफलता ने उसे परमेश्वर के लोगें के लिये उसका प्रतिनिधि होने के लिये अयोग्य प्रमाणित कर दिया था।वह इज़राइल को पशथमभ्रष्ट कर देता। परमेश्वर की इच्छा के बजाय, नियन्त्रण का अधिकर उसका होता। यदि शाऊल सत्यनिष्ठ होता तो, उसका राज्य हमेशा के लिये स्थापित हो जाता, लेकिन क्योंकि वह असफल रहा था, परमेश्वर का उद्देश्य किसी अन्य के द्वारा सम्पन्न होना था। इज़राइल का प्रशासन उसके सुपुर्द किया था, जो स्वर्ग की इच्छा के अनुसार प्रजा पर राज करे। PPHin 649.1

हम नहीं जानते कि परमेश्वर के प्रमाणित करने में कौन से महत्वपूर्ण हित दाव पर लगे हों। परमेश्वर के वचन के प्रति सम्पूर्ण आज्ञाकारिता में ही सुरक्षा है। उसकी सभी प्रतिज्ञाएँ विश्वास और आज्ञाकारिता की शर्त पर की गई है, ओर उसकी आज्ञा से सहमत ना होने पर हम पवित्र शास्त्र के प्रावधानों से वंचित हो जाते है। हमें आवेगपूर्ण नहीं होना चाहिये, और ना ही मनुष्य के निणर्य पर निर्भर करना चाहिये, हमें परमेश्वर की प्रकट इच्छा की ओर देखना चाहिये और उसकी निश्चित आज्ञा के अनुसार चलना चाहिये, चाहे हमारे चारों ओर कोई भी परिस्थितियाँ हमें घेरे हों। परमेश्वर परिणाम को देख लेगा; उसके वचन के प्रति विश्वसनीयता दिखाकर हम संकट के समय मनुष्यों और स्वर्गदूतों के सम्मुख प्रमाणित कर सकते है कि प्रभु कठिन परिस्थितियों में अपनी इच्छा को पूरी करने के लिये, उसके नाम को आदर पहुँचाने के लिये और उसके लोगों को आशीषित करने के लिये हम पर विश्वास कर सकता है। PPHin 649.2

शाऊल ने परमेश्वर को अप्रसन्न किया था, लेकिन फिर भी वह प्रायश्चित के द्वारा अपने हृदय को दीन नहीं करना चाहता था। जब भी उसमें वास्तविक धार्मिकता का अभाव होता वह धर्म के रूप में अपने उत्साह के द्वारा उसकी भरपाई करने का प्रयत्न करता। होप्नी और पीनहास द्वारा परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को छावनी में लाए जाने पर इज़राइल की पराजय से शाऊल अनभिज्ञ नहीं था। लेकिन, यह जानते हुए भी उसने पवित्र सन्दूक और उसकी सेवा टहल करे वाले याजकों को बुलवाने को निश्चय किया। इस साधन से लोगों में विश्वास उत्पन्न कर, उसे अपनी तितर-बितर हुईं सेना को पुनः संगठित कर पलिशितियों पर चढ़ाई करने की आशा थी। शमूएल की उपस्थिति और समर्थन के बिना कार्य कर, वह भविष्यद्वक्ता द्वारा की जानी वाली अवांछनीय आलोचना और निंदा से छुटकारा पाना चाहता था। PPHin 649.3

शाऊल को पवित्र आत्मा का दान उसकी समझ को प्रबुद्ध और हृदय को कोमल करने के लिये दिया गया था। भविष्यद्वक्ता द्वारा उसे विश्वसनीय निर्देश और फटकार मिली थी। लेकिन फिरभी कितना अधिक था उसका दुशग्रह! इज़राइल के पहले राजा का इतिहास प्रारम्भ की गलत आदतों के प्रभावका दुखद उदाहरण है। अपनी किशोरवस्था में शाऊल परमेश्वर से प्रेम नहीं करता था, और ना ही उसका भय मानता था; इस कारण वह उग्रता की भावना, जिसे प्रारम्भ से ही समर्पण के लिये प्रशिक्षित नहीं किया गया था, ईश्वरीय अधिकार के प्रति विरोध करने के लिये हमेशा तैयार रहती थी। जो किशोरवस्था में परमेश्वर की इच्छा के प्रति श्रद्धायुक्त सम्मान संजोए रखते है और जो अपने पद सम्बन्धी कार्या का विश्वसनीयता से पालन करते है, वे आने वाले जीवन में उच्चतम सेवा के लिये तैयार कियेजाएँगे। लेकिन मनुष्य बहुत वर्षो तक उन शक्तियों को विकृत नहीं कर सकता जो परमेश्वर ने उसे दी है, और फिर,जब वे परिवर्तित होना चाहते है, तो यही क्षमताएँ एक दूसरे पूर्णतया विपरीत कार्यवाही के लिये स्वतंत्र हो जाती है। PPHin 650.1

प्रजा को जागृत करने के शाऊल के प्रयत्न व्यर्थ ठहरे। जब उसे पता चला कि उसकी सेना में मात्र छ सौ सैनिक बचे थे, वह गिलगाल को छोड़ कर गिबा के गढ में चला गया जिसे हाल ही में पलिश्तियों से छीना गया था। यह गढ़ यरूशलेम से कुछ मील उत्तर की ओर एक गहरी, ऊबड़-खाबड़ घाटी या महाखड्ड के दक्षिण में था। इसी घाटी के उत्तर में पलिश्ती सेना ने मिकमाश में डेरा डाल रखा था, और सेना के छोटे-छोटे दल अलग-अलग दिशाओं में प्रदेश को लूटने गए थे। PPHin 650.2

परमेश्वर ने इस संकटकालीन स्थिति को शाऊल की विकुति को निदंनीय ठहराने और अपने लोगों को विश्वास और दीनता का पाठ पढ़ाने के लिये आने दिया। हठीलेपन में चढ़ाई गईं भेंट में शाऊल के पाप के कारण प्रभु ने पलिश्तियों की पराजय का सम्मान उसे नहीं दिया। राजा के पुत्र, योनातन को, जो परमेश्वर का भय मानता था, इज़राइल को छुटकारा दिलाने के लिये चुना गया। ईश्वर की प्रेरणा से, उसने अपने हथियार ढोनेवाले जवान के सम्मुख शत्रु की छावनी पर गुप्त आक्रमण का प्रस्ताव रखा। उसने कहा, “क्या जाने यहोवा हमारी सहायता करे, क्योंकि यहोवा के लिये कोई रूकावट नहीं, कि चाहे वह बहुत लोगों के द्वारा चाहे थोड़े लोगों के द्वारा छुटकारा दे।” PPHin 650.3

हथियार ढोने वाले ने जो एक विश्वासी और भक्त पुरूष था, इस योजना को प्रोत्साहित किया, और वे चुपचाप छावनी से निकल पड़े, जिससे कि उनके उद्देश्य का विरोध न हो। अपने पूर्वजों के मार्गदर्शक से हार्दिक प्रार्थना कर, उन्होंने सहमति से एक चिन्ह ठहराया जिसके आधार पर उन्होंने आगे बढ़ने का संकल्प किया। दोनो सेनाओं को अलग करती घाटी या महाखड्ड को पार कर, घाटी के टीले और मेड़ो में आंशिक रूप से संगुप्त और खड़ी चट्टान की छाया में, एक संकीर्ण रास्ते पर वे चुपचाप आगे बड़े।। पलिश्तियों की चौकी के निकट उन्होंने स्वयं को प्रकट होने दिया, जिस पर

उनके शत्रुओं ने ताना मारा, "देखो इब्री लोग उन बिलों में से जहाँ वे छुपे हुए थे निकल आए हैं" और फिर उन्हें चुनौती दी, "हमारे पास चढ आओ, तब हम तुम को कुछ सिखाएँगे" अर्थात उन दो इज़राइलियों को उनके दुस्साहस के लिये दण्डित करेंगे। यह चुनौती वही चिन्ह था जिसको योनातन और उसका साथी, प्रमाण के तौर पर मानने के लिये, सहमत हुए थे कि परमेश्वर उनके विशेष कार्य को सफल करेगा। पलिश्तियों की दृष्टि से हटकर, एक गुप्त और दुर्गन पथ को चुनकर, ये दो योद्धा खड़ी चट्टान की चोटी की ओर बड़े जो दुर्लभ मानी गई थी औरजिसपरकड़ा पहरा नहींथा। अतः वेशत्रु की छावनी में घुसे और उन्होंने प्रहरियों को मार डाला, जो भय और अचरज के कारण प्रतिरोध नहीं कर पाए। PPHin 651.1

स्वर्गदूतों ने योनातन और उसके सेवक की रक्षा की, वे उनके पक्ष में लड़े और पलिश्ती उनके आगे-आगे गिरते गए। पृथ्वी ऐसे काँपं रही थी, मानो घुड़सवारों और रथों सहित एक बड़ी भीड़ उमड़ रही थी। योनातन ने परमेश्वर की सहायता के चिन्हों को पहचान लिया, और पलिश्ती भी जान गए कि इज़राइल के छूटकारे के लिये परमेश्वर कार्य कर रहा था। मैदान और छावनी दोनों जगह सेना भय से भर गईं। गड़बड़ी में, अपने ही सैनिकों को शत्रु समझकर, पलिश्ती एक-दूसरे को मारने लगे। PPHin 651.2

इज़राइल की छावनी में शीघ्र ही युद्ध का हुल्लड़ सुनाई देने लगा। राजा के प्रहरियों ने सूचना दी कि पलिश्तियों की बीच बहुत गड़बडी फैल गई थी, और उनकी संख्या घट रही थी। अभी भी यह ज्ञात नहीं हुआ था कि इब्री सेना का कोई भी भाग छावनी से निकला था। पूछताछ करने पर ज्ञात हुआ योनातन और उसका हथियार ढोने वाले के अलावा और कोई अनुपस्थित नहीं था। पलिशि्तियों को इधर-उधर जाता देख, शाऊल ने भी आक्रमण में सम्मिलित होने के लिये अपनी सेना का नेतृत्व किया। इब्री जो शत्रुओं के पक्ष में हो गए थे, अपने गुप्त स्थानों से बाहर निकल आए, और जब पराजित होकर पलिश्ती भाग खड़े हुए, शाऊल की सेना ने पलायकों पर भयानक कहर बरसाया। PPHin 651.3

अवसर का पूरा लाभ उठाने के संकल्प से, राजा ने सेना को पूरे दिन भोजन न ग्रहण करने का आदेश दिया और अपनी आज्ञा को इस श्राप के द्वारा प्रवर्तित किया, "श्रापित हो, जो साँझ से पहले कुछ खाए, इस रीति से मैं अपने शत्रुओं से प्रतिशोध ले सकेंगा।" शाऊल की जानकारी और सहयोग के बिना ही विजय प्राप्त हो चुकी थी लेकिन पराजित सेना के सम्पूर्ण विनाश के द्वारा वह स्वयं को कीर्तिमान करना चाहता था। भोजन से परहेज रखने की आज्ञा स्वार्थी महत्वकांक्षा से प्रेरित थी और जब उसका स्वयं को ऊँचा उठाने का मनोरथ लोगों की आवश्यकताओं के आड़े आया तो उसे पता चला कि शाऊल उन आवश्यकताओं के प्रति उदासीन था। इस निषेधाज्ञा को विधिवत शपथ द्वारा निश्चित कर शाऊल ने प्रकट किया कि वह अविवेकी और भ्रष्ट था। श्राप के शब्दों ने ही शाऊल के उत्साह को उसी के लिये होने का प्रमाण दिया, ना कि परमेश्वर के आदर के लिये। उसने अपने लक्ष्य

को यह कहकर नहीं बताया कि “परमेश्वर अपने शत्रुओं से प्रतिशोध ले सके”, वरन् उसने कहा, ‘मैं अपना प्रतिशोध ले सके।” PPHin 652.1

निषेधाज्ञा के कारण लोगों ने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया। वे सारा दिन युद्ध में व्यस्त रहे थे, और भोजन के अभाव में बेहोश हुए जा रहे थे, और जैसे ही निषेध की घड़ियाँ समाप्त हुई वे लूट पर टूट पड़े और माँस को लहू के साथ ही खा गए, जिससे उन्होंने लहू खाने की निषेधाज्ञा का उल्लंघन किया। PPHin 652.2

दिनभर के युद्ध के दौरान राजा की आज्ञा से अनभिज्ञ, योनातन ने एक जंगल से निकलते हुए थोड़ा सा शहद खाकर अनजाने में अपराध किया। शाऊल को यह साँझ होने पर ज्ञात हुआ। उसने घोषणा की थी कि उसकी आज्ञा के उल्लंघन के लिये मृत्यु-दण्ड प्राप्त होगा, और हालाँकि योनातन स्वेच्छा से पाप करने का दोषी नहीं था, हालाँकि परमेश्वर ने अद्‌भुत रीति से उसका जीवन सुरक्षित रखा था और उसके द्वारा छुटकारा दिलाया था फिर भी राजा ने घोषणा की कि दबण्डाज्ञा को क्रियान्वित किया जाए। अपने पुत्र को प्राण दान देना शाऊल की ओर से एक तरह की स्वीकृति होती कि ऐसी अविवेकी प्रतिज्ञा करने में उसने पाप किया था। यह उसके घमण्ड को चकानचूर कर देता। उसने भंयकर दण्डादेश दिया, “परमेश्वर ऐसा ही करे, वरन् इससे भी अधिक करे, हे योनातन तू अवश्य मारा जाएगा।” PPHin 652.3

शाऊल विजय के सम्मान का दावा तो नहीं कर सकता था, लेकिन वह अपनी शपथ की पवित्रता को बनाए रखने में उसके उत्साह के लिये सम्मान पाने की आशा कर रहा था। अपने पुत्र को बलिदान करके भी राजसी अधिकार को कायम रखना आवश्यक है। कुछ समय पूर्व, परमेश्वर की आज्ञा के विपरीत, शाऊल ने याजक के तौर पर कर्तव्य पूरा किया। शमूएल के फटकारे जाने पर, उसने ढींठ होकर स्वयं को न्यायसंगत ठहराना चाहा। अब, जब उसकी आज्ञा की अवहेलना की गई-हालाँकि आज्ञा अनुचित थी और उसका उल्लंघन अज्ञानतावश हुआ था-राजा व पिता ने पुत्र को दण्डादेश दे दिया। PPHin 653.1

लोगों ने दण्डादेश के पालन होने की स्वीकृति नहीं दी। राजा के कोध को चुनौती देकर, उन्होंने घोषणा की, “क्या योनातन मारा जाए, जिसने इज़राइलियों को इतना बड़ा छुटकारा दिलाया है? ऐसा नहीं होगा। यहोवा के जीवन की शपथ, उसके सिर का एक बाल भी भूमि पर गिरने न पाएगा, क्योंकि आज के दिन उसने परमेश्वर के साथ होकर काम किया है।” अहंकारी राजशाह इस सर्वसम्मत निर्णय को अमान्य ठहराने का दुस्साहस नहीं कर सका, और योनातन का जीवन सुरक्षित हो गया। PPHin 653.2

शाऊल भली-भॉति जान गया कि परमेश्वर और लोगों द्वारा उसके आगे उसके पुत्र को प्राथमिकता दी जा रही थी। योनातन का छुटकारा राजा की अविवेकनीयता की कड़ी निंदा थी। उसे यह पूर्वाभास हुआ कि उसके द्वारा दिया गया श्राप उसी के सर पर आ पडेगा। वह पलिशितियों के

साथ युद्ध को जारी न रख सका, और वह असन्तुष्ट और चिड़चिड़ा होकर अपने घर लौट आया। PPHin 653.3

जो अपने पाप को न्यायसंगत ठहराने या उसको छोड़ देने को सबसे अधिक तत्पर रहते हैं, वे प्रायः दूसरों का न्याय करने और दण्ड देने में कठोर होते हैं। शाऊल की तरह, वे स्वयं को परमेश्वर की अप्रसनन्नता का पात्र बनाते हैं, और उसकी सम्मति को स्वीकार नहीं करते और फटकार से घृणा करते है। प्रभु का उनके साथ ना होने का विश्वास होने पर भी वे स्वयं में अपने संकट का कारण देखने से मना कर देते है। वे एक ढींगमार और अहंकारी भावना से भरे होते है और स्वयं से बेहतर लोगों के प्रति अति कर अन्याय और कड़ी निंदा करते हैं। अच्छा होता कि यह स्व-संगठित न्यायी मसीह के इन शब्दों पर मनन करे, "क्योंकि जिस प्रकार तुम दोष लगाते हो, उसी प्रकार तुम पर भी दोष लगाया जाएगा, और जिस नाप से तुम नापते हो, उसी नाम से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा। - मत्ती 7:2। PPHin 653.4

प्रायः जो स्वयं को उन्नत करना चाहते है, उन्हें उन पदों पर आसीन किया जाता है जहाँ उनका वास्तविक चरित्र प्रकट होता है। ऐसा ही शाऊल के साथ हुआ। उसी की कार्य-प्रणाली ने लोगों पर प्रकट कर दिया कि उसे न्याय दया और उदारता से अधिक राजसी सम्मान और अधिकार प्रिय थे। इस प्रकार लोगों को परमेश्वर द्वारा उन्हें दी गई सरकार का तिरस्कार करने में उनकी गलती का एहसास कराया गया। PPHin 654.1

जिसकी प्रार्थनाओं के कारण आशीषें उतर कर नीचे आयी थी, उस पवित्र भविष्यवक्ता के स्थान पर उन्होंने राजा को चुना, जिसने अपने अन्धे उत्साह में उनपर श्राप की प्रार्थना की। PPHin 654.2

यदि इज़राइलियों ने योनातन का जीवन बचाने के लिये हस्तक्षेप नहीं किया होता, तो राजा की आज्ञा के अनुसार उन्हें छुटकारा दिलाने वाला नष्ट कर दिया गया होता। इसके पश्चात् लोग कितने सन्देह के साथ शाऊल के मार्गदर्शन में चले होंगे। कितनी कड़ावाहट होगी उस विचार में कि उसे उन्हीं के कृत्य के कारण सिंहासन पर बैठाया गया था। परमेश्वर लोगों के स्वेच्छाचार के प्रति चिरसहिष्णु होता है, और सभी को उनके पाप देखने और त्यागने का अवसर प्रदान करता है, लेकिन भले ही वह उसकी चेतावनियों का तिरस्कार और उसकी इच्छा की अवमानना करने वालों को समृद्ध या सफल करता प्रतीत होता तो, वह अपने समयानुसार निश्चय ही उनकी मूर्खता को प्रकट करेगा। PPHin 654.3

अध्याय 61—शाऊल का बहिष्कृत होना

यह अध्याय 1 शमूएल 45 पर आधारित है

गिलगाल की विकट परिस्थिति में विश्वास की परख में खरा उतरने में शाऊल असफल रहा था, और उसने परमेश्वर के सम्बद्ध धर्म-किया का अपमान किया था, लेकिन उसकी गलतियाँ अभी सुधार्य थी, और परमेश्वर ने उसे उसकी आज्ञाओं के पालन और उसके वचनमें निर्विवाद विश्वास का सबक सीखने के लिये दूसरा अवसर प्रदान किया। PPHin 655.1

गिलगाल में भविष्यद्वक्ता द्वारा फटकारे जाने के समय, शाऊल को अपने द्वारा अपनाई गई कार्य प्रणाली में कोई पाप दिखाई नहीं दिया। उसे लगाकि उसके प्रति किया गया व्यवहार अन्यायपूर्ण था, और उसने अपनी गलती के लिये बहाने बनाए और अपने कृत्यों का दोष सिद्ध करने का प्रयत्न किया। उस समय से वह भविष्यद्वक्ता के साथ कम संपर्क करता था। शमृूएल शाऊल को अपनी निज पुत्र समान प्रेम करता था, जबकि निभीक और कुद्ध स्वभाव के शाऊल ने भविष्यद्वक्ता को अधिक सम्मान दिया था, लेकिन वह शमूएल की ताड़ना से अप्रसन्न था और इस कारण, जहाँ तक सम्भव था, उसका सामना नहीं करता था। PPHin 655.2

लेकिन प्रभु ने अपने दास को एक अन्य सन्देश के साथ शाऊल के पास भेजा। आज्ञा पालन के द्वारा वह अभी भी परमेश्वर के प्रति अपनी स्वाभिभक्ति और इज़राइल का नेतृत्व करने की योग्यता को प्रमाणित कर सकता था। शाऊल को आज्ञा पर ध्यान देने की आवश्यकता का आभास कराने के लिये, शमूएल ने स्पष्टता से बताया कि जिस अधिकार से उसने शाऊल को सिंहासन पर बैठने के लिये बुलाया था, उसी ईश्वरीय निर्देश से वह अभी बोल रहा था। भविष्यद्वक्ता ने कहा, "मुझे स्मरण है कि अमालेकियों ने इज़राइलियों से कया किया, जब इज़राइली मिस्र से आ रहे थे, तब उन्होंने मार्ग में उनका सामना किया। इसलिये अब तू जाकर अमालेकियों को मार, और जो कुछ उनका है उसे पूरी तरह नष्ट कर दे और उन्हें छोड़ना मत, पुरूष और स्त्री, शिशु या दूघ पीता बच्चा, बैल और भेड़, ऊंट और गधा, सब को मार डाल।" बीहड़ में इज़राइल पर सर्वप्रथम चढ़ाई कराने वाले अमालेकी थे; और इस पाप के लिये, और इसके साथ उनकी नीचतापूर्ण मूर्तिपूजा और परमेश्वर को उनकी चुनौती के लिये परमेश्वर ने मूसा के द्वारा उन्हें दण्डादेश दिया। ईश्वर के निर्देशन में इज़राइल के प्रति उनकी निर्दयता के इतिहास का उल्लेख किया गया था और उन्हे आज्ञा दी गई, "तू अमालेक का नाम धरती पर से मिटा डालना और तुम इस बात को न भूलना ।"-व्यवस्थाविवरण 25:19 । चार सौ वर्षो तक इस दण्डोश का निष्पादन विलम्बित किया गया था, लेकिन अमालेकी अपने पापों से नहीं फिरे। परमेश्वर जानता था कि सम्भव होने पर, ये दुष्ट लोग पृथ्वी पर से उसके लोगों और उसकी आराधना को पूरी तरह मिटा देंगे। अब इतने दिनों से आस्थगित, उस दण्डादेश के निष्पादन का समय आ गया था। PPHin 655.3

दुष्टों के प्रति परमेश्वर की चिरसहिष्णुता के अभ्यास ने, आज्ञा उल्लंघन करने वालों को निभीक बनाया, लेकिन उनका दण्ड आस्थगित किये जाने के कारण और भी निश्चित और भयानक होगा। यगायाह 28:21में लिखा है, “यहोवा ऐसे उठ खड़ा होगा जैसा वह पराजीम नामक पर्वत पर खड़ा हुआ और जैसा गिबोन की तराई में उसने कोध दिखाया था, वह अब फिर कोध दिखाएगा जिससे वह अपना काम करे, अपना अद्‌भुत कार्य और वह कार्य करे जो अनोखा है।” हमारे दयावान परमेश्वर के लिये दण्ड का कार्य एक अदभुत कार्य है। यहेजकेल 33:11में लिखा है, “परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है मेरे जीवन की सौगन्ध, मैं दुष्ट के मरने से कुछ भी प्रसन्न नहीं होता, परन्तु इससे कि दुष्ट अपने मार्ग से फिरकर जीवित रहे ।” निर्गमन 34:6,7में लिखा है, “यहोवा दयालु और अनुग्रहकारी, कोप करने में धीरजवन्त, और अति करूणामय और सत्य से परिपूर्ण , अधर्म और अपराध और पाप का क्षमा करने वाला।” “परन्तु दोषी को वह किसी प्रकार निर्दोष न ठहराएगा।” वह प्रतिशोध में आनन्दित नहीं होता, लेकिन वह अपनी व्यवस्था के उल्लंघन करने वालों पर दण्डादेश अवश्य भेजेगा । पृथ्वीवासियों को अधर्म और विनाश से सुरक्षित रखने के लिये, ऐसा करने के लिये वह बाध्य हो जाता है। कुछ को बचाने के लिये, उसे उसको काट डालना होगा जो पाप के कारण कठोर हो गए है। नद्‌दूम 1:3में लिखा है, “यहोवा विलम्ब से कोध करने वाला और बड़ा शक्तिमान है, वह दोषी को किसी प्रकार निर्दोष नहीं ठहराएगा।” धार्मिकता में किये गए श्रद्धायुक्त भयउत्पन्न करने वालेकार्यों से वह अपनी कचली हुई व्यवस्था के अधिकार को न्यायसंगत सिद्ध करेगा। न्याय के निष्पादन में उसकी हिचकिचाहट पापों की जघन्यता की और उल्लंघन करने वाले को मिलने वाले प्रतिफल की कठोरता को प्रमाणित करती है। PPHin 656.1

लेकिन दण्डादेश देते समय, परमेश्वर ने दया का स्मरण रखा। अमालेकियों को नष्ट होना था, लेकिन उनके बीच रहने वाले केनियों को छोड़ दिया गया। यह लोग मूर्तिपूजा से अछते तो नहीं थे, लेकिन परमेश्वर के भक्त और इज़राइल के मित्र थे। इसी जनजाति से मूसा का साला होबाब था, जो बीहड़ में इज़राइलियों की यात्रा में उनके साथ था और देश के बारे में उसकी जानकारी से महत्वपूर्ण सहायता मिली थी। PPHin 657.1

मिकमाश में पलिश्तियों की पराजय के समय से शाऊल ने मोआब, अम्मोन, एदोम, अमालेकियों और पलिश्तीयों से युद्ध किया था, और जिधर भी उसने हाथ डाला, विजय उसी की हुई । अमालेकियों के विरूद्ध आज्ञा प्राप्त करने पर उसने अविलम्ब युद्ध की घोषणा कर दी। उसके निज अधिकार के साथ भविष्यद्वक्ता का अधिकार भी संलग्न था और युद्ध के आह्वान पर इज़राइली पुरूष उसके मोरचे पर एकत्रित हो गए। इस अभियान में अपनी शक्ति अथवा पदवी बढ़ाने के उद्देश्य से भाग नहीं लेना था, इज़राइलियों को ना तो विजय का सम्मान और न ही उनके शत्रुओं के विजयोपहारों को प्राप्त करना था। उन्हें युद्ध में हिस्सा केवल परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता के कृत्य के तौर पर लेना था जिसका उद्देश्य अमालेकियों पर उसकी दण्डाज्ञा का निष्पादन करना था। परमेश्वर चाहता था कि सभी राष्ट्र उन लोगों के विनाश को देखे जिन्होंने उसकी सार्वभौमिकता को

ललकारा था और यह भी देखे कि उनका विनाश उन्हीं लोगों के द्वारा हुआ जिनकी प्रति उन्होंने घृणा की थी। PPHin 657.2

"तब शाऊल ने हवीला से लकर शूरतक जो मिम्र के पूर्व में है अमोलेकियों को मारा और उनके राजा अगाग को जीवित पकड़ा और उसकी सारी प्रजा को तलवार से नष्ट कर डाला। परन्तु अगाग पर, और अच्छी से अच्छी भेड़-बकरियों, गाय, बेला, मोटे पशुओं और मेमनो, और जो कुछ अच्छा था, उन पर शाऊल और उसकी प्रजा ने कृपा की, और उन्हें पूरी तरह नष्ट नहीं किया, परन्तु जो कुछ तुच्छ और कड़ा-करकट था, उसे उन्होंने पूरी तरह नष्ट कर दिया। PPHin 657.3

अमालेकियों पर शाऊलकी यह विजय शाऊल की सभी विजयों में विलक्षण थी, और इसने शाऊल के हृदय के घमण्ड को दोबारा जागृत कर दिया, जो उसके लिये सबसे बड़ा खतरा था। परमेश्वर के शत्रुओं के सर्व सत्यानाश की पवित्र आज्ञा को आंशिक रूप से ही पूरा किया गया था। राजसी युद्धबन्धी की उपस्थिति के द्वारा अपनी विजय सम्बन्धी वापसी के गौरव को ऊँचा करने को महत्वाकांक्षी, शाऊल ने पड़ोसी राष्ट्रों की प्रथाओं का अनुकरण करने का जोखिम उठाया और अमालेकियों के कर और रणकुशल राजा आगाग को मृत्यु के घाट नहीं उतारा। लोगों ने अपने लिये अच्छे से अच्छे भेड़-बकरियों, मवेशी और भारवाहक पशु, यह कहकर कि उन्हें परमेश्वर के लिये बलि की भेंट के रूप में चढ़ाना है, सुरक्षित कर लिये और इस आधार पर अपने पाप को क्षमा योग्य ठहराया। लेकिन, वास्तव में उनका प्रयोजन इन पशुओं को बलि के लिये अपने पशुओं के बदले में प्रयोग करना था, ताकि उनके पशु बचे रहें। PPHin 657.4

शाऊल की निर्णायिक परख का समय आ गया। परमेश्वर की इच्छा के प्रति उसके हठीले निरादर ने, निरंकश सम्राट के जैसे शासन करने के उसके संकल्प को दिखाते हुए, प्रमाणित कर दिया कि परमेश्वर के प्रतिनिधि के तौर पर उसमें राजसी सत्ता निहित नहीं की जा सकती थी। जब शाऊल और उसकी सेना विजय के उत्साह में घर लौट रहे थे, भविष्यद्वक्ता शमूएल का घर शोकाकुल था। उसे प्रभु द्वारा, राजा की कार्य-प्रणाली की निंदा करते हुए एक संदेश मिला था, "में शाऊल को राजा बनाकर पछताता हूँ, क्योंकि उसने मेरे पीछे चलना छोड़ दिया, और मेरी आज्ञाओं का पालन नहीं किया।" भविष्यद्वक्ता उपद्रवी राजा के तौर-तरीकों से अत्यन्त खिन्न था, उसने रो-रो कर रात भर प्राथना की कि वह भयानक दण्डाज्ञा वापस ले ली जाए। PPHin 658.1

परमेश्वर का प्रायश्चित मनुष्य के प्रायश्चित जैसा नहीं है। "इज़राइल का बलमूल न तो झूठ बोलता है और न पछताता है, क्योंकि वह मनुष्य नहीं है कि पछताए।" मनुष्य के प्रायश्चित का तात्पर्य मनपरिवर्तन से है। परमेश्वर के प्रायश्चितका तात्पर्य सम्बन्ध और परिस्थितियों में परिवर्तन से है। उन शर्तों की सहमति के आधार पर, जिसके द्वारा मनुष्य पर ईश्वर की कृपा-दृष्टि हो सकती है, मनुष्य परमेश्वर के साथ अपना सम्बन्ध बदल सकता है या अपने ही कार्यों द्वारा वह उसकी कृपा-दृष्टि के दायरे से बाहर हो सकता है, लेकिन प्रभु "आज और युगानुयुग एक सा है।" (इब्रियों 13:3)। शाऊल

की अनाज्ञाकारिता ने परमेश्वर के साथ उसके सम्बन्ध को बदल दिया, लेकिन परमेश्वर के साथ स्वीकृति की शर्तें अपरिवर्तनशील है- परमेश्वर के नियम वहीं है, क्योंकि जिसमें न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, और न अदल-बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है।"-याकूब 1:17। PPHin 658.2

दुखी हृदय के साथ दूसरे दिन प्रातःकाल ही शमूएल दोषी राजा से मिलने गया। शमूएल को आशा थी कि गहन चिंतन करने पर शाऊल को अपने पाप का आभास होगा, और वह समर्पण और प्रायश्चित के द्वारा परमेश्वर की कृपा-दृष्टि पुनः प्राप्त कर सकेगा। लेकिन जब आज्ञा उलंघन या पाप के मार्ग पर पहला कदम रखा जाता है, तो रास्ता आसान हो जाता है। शाऊल, जो अवज्ञा करने से गिर चुका था, होंठो पर झूठ लिये शमूएल के पास पहुँचा। उसने कहा, "तुझे यहोवा की ओर से आशीष मिले मैंने यहोवा की आज्ञा पूरी की है।" PPHin 659.1

भविष्यवक्ता के कानों तक पहुँचने वाले स्वर ने अनाज्ञाकारी राजा के कथन को अस्वीकार्य ठहराया। उसने आलोचना भरा प्रश्न किया "फिर भेड़-बकरियों का यह मिमियाना, और गाय-बैलों का यह रम्भाना जो मुझे सुनाई देता है, यह क्यों हो रहा है?" शाऊल ने उत्तर दिया, "वे तो अमालेकियों के यहाँ से आए है अर्थात प्रजा के लोगों ने अच्छी से अच्छी भेड़-बकरियों और गाय-बैलों के तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये बलि करने को छोड़ दिया है, और बाकी सब का तो हमने सत्यनाश कर दिया है।" लोगों ने शाऊल के निर्देशों का पालन किया था, लेकिन स्वयं को बचाने के लिये वह अपनी अनाज्ञाकारिता के पाप के लिये उन्हे दोषी ठहराने को तैयार था। PPHin 659.2

शाऊल के बहिष्करण के सन्देश ने शमूएल के हृदय को अकथनीय दुःख पहुँचाया। यह सन्देश इज़राइल की समस्त सेना के सम्मुख दिया जाना था, जब वे विजय सम्बन्धी उल्लास और गर्व से भरे हुए थे उस विजय के अवसर पर, जिसका श्रेय अपने राजा के रणकोशल साहस को दिया, क्योंकि इस संघर्ष में शाऊल ने इज़राइल की सफलता के साथ परमेश्वर को सम्बद्ध नहीं किया था, लेकिन जब भविष्यद्वक्ता ने शाऊल के उपद्रव के प्रमाण देखे, उसका कोध भड़क उठा, यह जानकर कि जिस पर परमेश्वर की इतनी कृपा-दृष्टि थी, उसी ने स्वर्ग की आज्ञा का उल्लंघन किया और इज़राइल को पाप में ले गया। शमूएल राजा के बहानों के धोखे में नहीं आया। कोध और दुख के साथ उसने घोषणा की, "ठहर जा, और जो बात यहोवा ने आज रात मुझ से कही है वह मैं तुझ को बताता हूँ.......जब तू अपनी दृष्टि में छोटा था, तब क्या तू इज़राइली गोत्रों का प्रधान न हो गया? और क्या यहोवा ने इज़राइल पर राज्य करने को तेरा अभिषेक नहीं किया? उसने अमालेक से सम्बन्धित परमेश्वर की आज्ञा को दोहराया, और राजा की अनाज्ञाकरिता का कारण पूछा। PPHin 659.3

शाऊल स्वयं को न्यायसंगत ठहराने में लगा रहा, "निःसन्देह मैं यहोवा की बात मानकर जिधर यहोवा ने मुझे भेजा उधर गया, और अमालेकियों के राजा को ले आया हूँ. और अमालेकियों का सत्यनाश किया है, परन्तु प्रजा के लोग लूट में से भेड़-बकरियों और गाय-बैलों, अर्थात वे प्रमुचा

चीजे जिन्हें पूर्णतया नष्ट किया जाना था, गिलगाल में तेरे परमेश्वर के लिये बलि चढ़ाने को ले आए है।” PPHin 660.1

कठोर और गम्भीर शब्दों के प्रवाह में भविष्यद्वकता झूठ के शरणस्थान को बहा ले गया और उसने अखण्डनीय दण्डादेश की घोषणा की, “क्या यहोवा होमबलियों और मेलबलियों से उतना प्रसन्न होता है, जितना कि अपनी बात के माने जाने से प्रसन्न होता है? सुन, आज्ञा मानना तो बलि करना और कान लगाना मेढ़ो की चरबी से उत्तम है। देख बलवा करना और अभिचार एक जैसे पाप है, और हठ करना मूर्तियों और गृहदेवताओं की पूजा के तुल्य है। तूने जो यहोवा की बात को तुच्छ जाना इसलिये उसने तुझे राजा होने के लिये तुच्छ जाना है।” PPHin 660.2

जब शाऊल ने यह भयवाह दण्डादेश सुना उसने कहा, “मैंने पाप किया है, मैंने तो अपनी प्रजा के लोगों का भय मानकर और उनकी बात सुनकर यहोवा की आज्ञा और तेरी बातों का उल्लंघन किया है।” भविष्यद्वक्ता द्वारा की गई निंदा से भयभीत होकर, शाऊलने अपने दोष को स्वीकार किया, जिसे उसने पहले हठ में माननेसे मना कर दिया था, लेकिन वह लोगों पर आरोप लगाता रहा कि उसने यह पाप उनके डर से किया था। PPHin 660.3

वह पाप के लिये दुख नहीं था, वरन् पाप के दण्ड का भय था, जिसके कारण इज़राइल के राजा ने शमूएल ने विनती की, “अब मेरे पाप को क्षमा कर, और मेरे साथ लौट आ कि मैं यहोवा को दण्डवत करू ।” यदि शाऊलका पश्चताप वास्तविक होता, तो उसने अपने पाप का सार्वजनिक तौर पर अंगीकार किया होता, परन्तु अपने अधिकार को कायम रखना और लोगों की उसके प्रति स्वामिभक्ति को बनाए रखना उनकी चिन्ता के मुख्य विषय थे। वह राज्य के साथ अपने प्रभाव को प्रबल करने के लिये वह शमूएल की उपस्थिति के सम्मान का अभिलाषी था। PPHin 660.4

भविष्यद्वक्ता ने उत्तर दिया, “मैं तेरे साथ न लौटूँगा क्योंकि तूने यहोवा की बात को तुच्छ जाना है और यहोवा न तुझे इज़राइल का राजा होने के लिये तुच्छ जाना है। ” जब शमूएल जाने के लिये घूमा, तो भय की पीड़ा में, शाऊल ने उसके आवरण के छोरको पकड़ा कि वह उसे रोक सके, लेकिन वह उसके हाथों में फट गया। इस पर भविष्यद्वक्ता ने घोषणा की, “आज यहोवा ने इज़राइल के राज्य को फाड़कर तुझ से छीन लिया, और तेरे एक पड़ोसी को जो तुझ से अच्छा है दे दिया है।” PPHin 660.5

परमेश्वर की अप्रसन्नता से अधिक शाऊल शमूएल के उसके प्रति विमुख होने से व्याकल था। वह जानता था कि लोग उससे अधिक भविष्यद्वक्ता में विश्वास रखते थे। यदि पवित्र आदेश के द्वारा किसी अन्य व्यक्ति को राजा नियुक्त किया गया, तो शाऊल के लिये अपने आधिपत्य को कायम रखना असम्भव था। शमूएल द्वारा पूर्णतया त्याग दिये जाने पर, उसे तात्कालिक विद्रोह का भय था। शाऊलने भविष्यद्वक्ता से विनती की कि एक धार्मिक विधि में सार्वजनिक तौर पर उसके साथ सम्मिलित होकर वह लोगों और पुरनियों के सम्मुख उसका सम्मान करे। ईश्वरीय निर्देश के द्वारा

शमूएलने राजा के निवेदन के आगे समर्पण कर दिया जिससे कि विद्रोह का कोई अवसर ना दिया जाए। लेकिन धर्म-किया में वह केवल एक मूक दर्शक बना रहा। PPHin 661.1

एक कठोर और भंयकर न्यायसंबंधी कार्य का संपादन अभी होना था। शमूएल को सार्वजनिक तौर पर परमेश्वर के सम्मान की पुष्टि करनी थी और शाऊल की कार्य प्रणाली का तिरस्कार करना था। उसने अमालेकियों के राजा के उसके सम्मुख लाए जाने की आज्ञा दी। इज़राइल की तलवार से घात किये हुओं से सर्वश्रेष्ठ, आगाग सबसे अधिक दोषी और निर्दयी था, वह जिसने परमेश्वर के लोगो से घृणा की थी और उनका विनाश करना चाहा था, और जिसके प्रभाव से मूर्तिपूजा को सबसे अध्कि बढ़ावा मिला था। स्वयं को सन्तुष्ट करते हुए कि मृत्यु का खतरा टल गया था, वह भविष्यद्वक्ता के आदेश पर आया। शमूएल ने घोषणा की, "जैसे स्त्रियाँ तेरी तलवार से निर्वंश हुई है, वैसे ही तेरी माता भी स्त्रियों में निर्वेश होगी। तब शमूएल ने अगाग को गिलगाल में यहोवा के सामने टुकड़े-टुकड़े किया।" इसके बाद शमूएल रामा में अपने घर लोट गया और शाऊल गिबा में अपने घर लौट गया। इसके बाद भष्थिद्द्कता और राजा केवल एक बार मिले। PPHin 661.2

सिंहासन ग्रहण करने के लिये बुलाए जाने के समय, शाऊल के अपनी निज क्षमताओं के बारे में अभिमानरहित अनुमान था और निर्देशित किये जाने के लिये सहमत था। उसमें ज्ञान और अनुभव का अभाव था और उसके चरित्र में कई गम्भीर त्रुटियाँ थी। लेकिन प्रभु ने उसे मार्गदर्शक और सहायक के रूप में पवित्र आत्मा प्रदान किया, और उसे ऐसे पद पर आसीन किया जहाँ वह इज़राइल के शासक के लिये अपेक्षित गुणों को विकसित कर सकता था। यदि वह ईश्वरीय ज्ञान व बुद्धिमत्ता द्वारा विनती करते हुए दीन रहा होता, तो उसे अपने ऊँचे पद के कर्तव्यों का सफलता व सम्मान के साथ निर्वाहकरने केलिये सुयोग्य किया जाता। परमेश्वर के अनुग्रह के प्रभाव में प्रत्येक सद्ुगुण द्दढ़ होता चला जाता और बुराई की प्रवृति घटती जाती। जो स्वयं को परमेश्वर के प्रति समर्पित करते है, उनके लिये परमेश्वर यही कार्य करता है। कई हैं जिन्हें उसने अपने कार्य में ऊँचे पदों पर बुलाया है क्योंकि वह उनमें दीन व सिखाने योग्य भावना है। अपनी सूझ-बूझ में वह उन्हें वहां नियुक्त करता जहाँ वे उससे सीख सकते हैं। वह उन्हें उनके चरित्र की त्रुटियाँ दिखाता है और जो भी उसकी सहायता प्राप्त करने के लिये प्रार्थना करते हैं, वह उन्हें गलतियाँ सुधारने को सामर्थ्य प्रदान करता है। PPHin 661.3

लेकिन शाऊल ने स्वयं के गौरवान्वित होने की परिकल्पना की और अपने अविश्वास और अवज्ञा के द्वारा परमेश्वर का अपमान किया। हालाँकि सिंहासन ग्रहण करने के समय वह दीन और आत्मा-अविश्वासी था, सफलता ने उसे आत्म-विश्वासी बना दिया। उसके राज की प्रथम विजय ने उसके हृदय के उस घमण्ड को सुलगाया जो उसके लिये सबसे बड़ा खतरा था। याबेश-गिलाद के छुटकारे में प्रकट किये गए रणकोशल और सहास ने पूरे राज्य को सम्मानित किया, और वे भूल गए कि वह केवल एक माध्यम था, जिसके द्वारा परमेश्वर ने कार्य किया था, और हालाँकि प्रारम्भ में

शाऊल ने गौरव का श्रेय परमेश्वर को दिया, परन्तु बाद में उसने सारा आदर स्वयं के लिये ही ले लिया। पर परमेश्वर पर अपनी निर्भरता को भूल गया, और अपने हृदय में उससे अलग हो गया। इस प्रकार गिलगाल में परिकल्पना और पवित्र स्थान के अपमान के लिये रास्ता तैयार हो गया। इसी अन्धे आत्मविश्वास के कारण उसने शमूएल की भर्त्सना का तिरस्कार किया। शाऊल शमूएल को परमेश्वर द्वारा भेजा गया भविष्यद्वक्ता मानता था, इसलिये उसे उसकी फटकार को स्वीकार करना चाहिये था, हालाँकि वह स्वयं नहीं देखा पा रहा था कि उसने पाप किया है। यदि वह अपने पाप को देखने और उसका अंगीकार करने को तैयार होता, यह कटु अनुभव भविष्य के लिये बचाव प्रमाणित होता। PPHin 662.1

यदि प्रभु ने उस समय शाऊल से स्वयं को पूर्णतया अलग कर लिया होता तो बीते समय की गलतियों को सुधारने हेतु एक विशेष कार्य के सम्पादन को उसके सुपुर्द करते हुए, उसने अपने भविष्यद्वक्ता के माध्यम से उससे बात न की होती । जब कोई परमेश्वर की संतान होने का दावा करने वाला उसकी इच्छा को पूरी नहीं करता और दूसरों को परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति बेपरवाह और श्रद्धाहीन होने के लिये प्रभावित करता है, उसके लिये फिर भी उसकी असफलताओं को विजय में बदलना सम्भव है, यदि वह निदां को पश्चताप के साथ ग्रहण करे, और विश्वास और दीनता के साथ प्रभु के पास लौट आए। पराजय का अपमान हमारे लिये आशीष प्रमाणित होता है क्योंकि वह हमे दिखाता है कि परमेश्वर की सहायता के अभाव में हम उसकी इच्छा को पूरी नहीं कर सकते। PPHin 663.1

जब शाऊल ने परमेश्वर के पवित्र आत्मा द्वारा उसे भेजी गई फटकार से मुहँ फेर लिया और ढींठ होकर स्वयं को न्यायसंगत ठहराता रहा, तो उसने उस एकमात्र साधन को अस्वीकार किया जिसके द्वारा परमेश्वर उसे उसी से बचाने का कार्य कर सकता था। शाऊल ने स्वेच्छा से स्वयं को परमेश्वर से अलग किया था। वह ईश्वरीय मार्गदर्शन या सहायता तब तक प्राप्त नही कर सकता था जब तक की वह अपने पाप के अंगीकार द्वारा परमेश्वर के पास न लौटे। PPHin 663.2

गिलगाल में, इज़राइल के सम्मुख खड़े होकर परमेश्वर के लिये बलि की भेंट चढ़ाते हुए शाऊल ने बड़ी कर्तव्यनिष्ठता का परिचय दिया। लेकिन उसकी धर्म-परायणता वास्तविक नहीं थी। ईश्वर की आज्ञा के प्रत्यक्ष विरोध में की गई एक धर्म किया ने केवल शाऊल के हाथों को कमजोर किया, और उस मदद से परे रखा जो ईश्वर उसे देने को तैयार था। PPHin 663.3

अमालेक के विरूद्ध अपने अभियान में, शाऊल ने सोचा कि जिसके लिये प्रभु ने उसे आज्ञा दी थी, उसमें जो भी आवश्यक था, वह उसने किया, लेकिन प्रभु आंशिक आज्ञाकारिता से प्रसन्न नहीं था और ना उसको अनदेखा करने को तेयार था, जिसकी इतने सम्भाव्य उद्देश्य के द्वारा उपेक्षा की गई थी। परमेश्वर ने मनुष्य को उसके नियमों या अपेक्षाओ से दूर होने की तनिक भी स्वतन्त्रता नहीं दी । व्यवस्थाविवरण 12:8, 28में प्रभु इज़राइल से कहता है, "जो काम जिसको भाता है वही वे

करते है, वैसा तुम न करो" वरन् "इन बातों को जिनकी आज्ञा मैं तुम्हें सुनाता हूँ. चित्त लगाकर सुन।" किसी भी कार्य प्रणाली का निर्णय लेने से पहले हमें यह नहीं पूछना है कि क्या हम उसके परिणामस्वरूप क्षति को देख सकते है, वरन् यह कि वह परमेश्वर की इच्छा के अनुकूल है या नहीं। नीतिवचन 14:12में लिखा है, "ऐसा मार्ग है जो मनुष्य को ठीक जान पढ़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है।' PPHin 663.4

"आज्ञा मानना बलिदान करने से अच्छा है।" परमेश्वर की दृष्टि में बलिदान की भेंटो का अपने आप में कोई महत्व नहीं था। इनको भेंटकर्ता द्वारा मसीह में विश्वास और पाप के प्रायश्चित को अभिव्यक्त करने और परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति भविष्य में आज्ञाकारिता की प्रतिज्ञा करने के लिये नियोजित किया गया था। पश्चताप, विश्वास और आज्ञाकारीह्दय के अभाव में यह भेंटे निरर्थक थी। जब परमेश्वर की आज्ञा के प्रत्यक्ष उल्लंघन में, शाऊल ने उसका बलिदान करने का प्रस्ताव रखा जिसे परमेश्वर ने विनाश को समर्पित किया था, तो यह ईश्वरीय सत्ता की स्पष्ट अवहेलना थी। वह धर्म-किया स्वर्ग का अपमान रही होगी। फिर भी, शाऊल के पाप और पाप के परिणाम हमारे सामने होते हुए भी हम में से कितने वैसी ही कार्य-प्रणाली का अनुकरण कर रहे है। वे परमेश्वर के किसी नियम को मानने और उस पर विश्वास करने की स्वीकृति नहीं देते, लेकिन वे परमेश्वर के लिये धर्म की औपचारिक विधियों का पालन करते रहते है। ऐसी धर्म किया को परमेश्वर का आत्मा स्वीकार नहीं करता। धार्मिक समारोह या पर्वों को मानने में मनुष्य चाहे कितना ही लौलीन हो, यदि वे परमेश्वर की एक आज्ञा का जानबूझकर खण्डन करते है, तो प्रभु उन्हें स्वीकार नहीं करता। PPHin 664.1

"विद्रोह अभिचार के पाप जैसा है और हठीलापन अधर्म और मूर्तिपजा के समान है। विद्रोह शैतान के साथ उत्पन्न हुआ और परमेश्वर की प्रति सभी विद्रोह प्रत्यक्ष रूप से शैतानी प्रभाव के कारण होते है। जो स्वयं को परमेश्वर के शासन-प्रबन्ध के विरूद्ध व्यवस्थित करते है, वे मुख्य स्वधर्म त्यागी के साथ सन्धि करते है, और वह समझ को पथशभ्रष्ट करने और इन्द्रियों को मोहित करने के लिये अपनी शक्ति का अभ्यास करेगा। उसके प्रभाव से सभी कुछ कृत्रिम प्रकाश में प्रकट होगा। हमारे पूर्वजों की तरह, जो भी शैतान के सम्मोहक आकर्षण के प्रभाव में होते है वे केवल पाप के द्वारा मिलने वाले लाभको देखते हैं। PPHin 664.2

शैतान की भ्रामक शक्ति का इससे ठोस प्रमाण नहीं दिया जा सकता कि उसके मार्गदर्शन में चलने वाले स्वयं को इस विश्वास से धोखा देते है कि वे परमेश्वर की सेवा-टहल कर रहे है। जब कोरह, दातान और अबिराम ने मूसा के अधिकार के विरूद्ध उपद्रव किया, तब उन्होंने सोचा कि वे उन्हीं के समान एक व्यक्ति, मात्र एक मानवीय अगुवे का विरोध कर रहे है, और वे विश्वास करने लगे कि वे यथार्थ में परमेश्वर का कार्य कर रहे हैं। लेकिन परमेश्वर के चुने हुए साधन का तिरस्कार करने में वे मसीह का तिरस्कार कर रहे थे, उन्होंने परमेश्वर के आत्मा को अपमानित किया था। इसी

प्रकार, मसीह के दिनों में, यहूदी शास्त्री और पुरनियों ने जो परमेश्वर के सम्मान के लिये बहुत उत्साह दिखाते थे, उसके पुत्र को कूस पर चढ़ा दिया। वही भावना आज भी उनके हृदयों में विद्यमान है जो परमेश्वर की इच्छा के विरूद्ध अपनी इच्छा का अनुकरण करते है। PPHin 664.3

शाऊल के पास शमूएल के परमेश्वर द्वारा प्रेरित होने का पर्याप्त प्रमाण था। भविष्यद्वक्ता के माध्यम से परमेश्वर के आदेश का निरादर करने का उसके द्वारादुस्साहस करना सही निर्णय और विवेक बुद्धि के आदेश के विरूद्ध था। उसकी घातक परिकल्पना का श्रेय शैतानी जादूगरी को देना चाहिये। मूर्तिपूजा और अभिचार का दमन करने में शाऊल नेबहुत जोश दिखाया था, लेकिन फिर भी पवित्र आज्ञा के प्रति उसकी अनाज्ञाकारिता में वह परमेश्वर के प्रति विरोध की उसी भावना से प्रेरित हुआ था और यथार्थ में शैतान द्वारा ऐसे प्रेरित था जैसे जादू-टोने को अभ्यास करने वाले होते है, और जब उसकी निनन्दा की गई, उसने विद्रोह के साथ हठीलेपन को भी जोड़ दिया। यदि वह मूर्तिपूजकों के साथ निःसंकोच एक भी हो जाता तो परमेश्वर के आत्मा का इससे बड़ा अपमान नहीं कर सकता था। PPHin 665.1

परमेश्वर के आत्मा या उसके वचन की चेतावनियों और फटकार की उपेक्षा करना खतरनाक कदम है। कई लोग शाऊल की तरह प्रलोभन का शिकार होकर पाप के वास्तविक स्वभाव के प्रति अंधे हो जाते हैं। वे स्वयं को सन्तुष्ट करते है कि उन्हें एक अच्छा लक्ष्य दिखाई दे रहा है, और उन्होंने परमेश्वर के नियमों से दूर जाकर कोई गलती नहीं की। इस प्रकार वे अनुग्रह के आत्मा का प्रतिरोध तब तक करते है, जब तक उसकी आवाज सुनाई देना बन्द न हो जाए और फिर वे उन्हीं के द्वारा चुने हुए भ्रम के अधीन हो जाते है। PPHin 665.2

शाऊल के रूप में, परमेश्वर ने इज़राइल को उनका मनपसन्द राजा दिया था जैसा कि शमूएल ने गिलगाल ने शाऊल को राज्य देने के समय कहा, "अब उस राजा को देखो जिसे तुम ने चुन लिया, और जिसके लिये तुम ने प्रार्थना की थी (1 शमूएल 12:13)। देखने में सुदर्शन, कुलीन डील-डौल और राजसी आचरण का धनी- उसका रग-रूप राजसी गौरव उनकी धारणा से मेल खाता था, और उसका अपना साहस और सेना-संचालन में योग्यता वे विशेषताएं थी जिनके द्वारा, उनकी दृष्टि में, अन्य राष्ट्रों से आदर और सम्मान प्राप्त हो सकता था। उन्हें इस बात की कम ही चिंता थी कि उनके राजा के पास वे विशेष गुण होने चाहिये जो उसे निष्पक्षता और न्याय के साथ राज करने केयोग्य बनाए। उन्होंने ऐसे राजा के लिये प्रार्थना नहीं की जो चरित्र से कलीन हो, जो परमेश्वर से प्रेम करता हो और उसका भय मानता हो। उन्होंने परमेश्वर से यह सम्मति नहीं माँगी कि शासक के पास कौन सी विशेषताएं होनी चाहिये जिससे वह परमेश्वर के चुने हुए लोगों की तरह उनके विशिष्ट, पवित्र चरित्र को संरक्षित रख सके। वे परमेश्वर की इच्छा नहीं, अपने ही इच्छा के बारे में सोच रहे थे। इसलिये परमेश्वर ने उन्हें उनकी इच्छानुसार राजा दिया, वह जिसका चरित्र उनके चरित्र का प्रतिबिम्ब था। उनके हृदय परमेश्वर को समर्पित नहीं थे, और उनका राजा भी पवित्र अनुग्रह द्वारा

अनियन्त्रित था। इस राजा के राज में उन्होंने वह अनुभव प्राप्त किया जो इस कारण आवश्यक था कि वे अपनी गलती को देख सके और परमेश्वर के प्रति स्वामीभक्ति की और लौट आए। PPHin 665.3

फिर भी, परमेश्वर ने शाऊल को राज्य का उत्तरदायित्व सौंपकर, उसे अकेला नहीं छोड़ा। उसने पवित्र आत्मा को उस पर उतरने दिया ताकि उस पर उसकी कमजोरियाँ और पवित्र अनुग्रह की उसकी आवश्यकता प्रकट हो सके, और यदि शाऊल ने परमेश्वर पर निर्भर किया होता, तो परमेश्वर उसके साथ होता । जब तक उसकी इच्छा परमेश्वर की इच्छा से नियन्त्रित थी, जब तक वह परमेश्वर के आत्मा के अनुशासन के प्रति समर्पित था, परमेश्वर ने उसके प्रयत्नों को सफलता का ताज पहनाया। लेकिन जब शाऊल ने परमेश्वर के बिना कार्य करने को चुना, प्रभु उसका मार्गदर्शक नहीं रह सकता था और वह उसे एक तरफ करने को विवश हो गया। फिर उसने सिंहासन पर उसे बैठाया "जो उसके मन के अनुसार" था। वह नहीं जो चरित्र में निर्दोष था, लेकिन जो स्वयं पर विश्वास रखने के बजाय परमेश्वर पर निर्भर करता हुआ, उसकी आत्मा द्वारा निर्देशित था और जो पाप करने पर निंदा और सुधार के लिये समर्पित था।

अध्याय 62—दाऊद का अभिषेक

यह अध्याय 1 शमूएल 16:1-13 पर आधारित है

यरूशलेम के कुछ मील दक्षिण में, “परमेश्वर का नगर” बेतलेहम है, जहाँ शिशु यीशु को चरनी में झूला झुलाने और पूरब दिशा से तीन मजूसियों के उसे दण्डवत करने के लिये आने से एक हजार वर्ष से भी पहले,यिशे के पुत्र, दाऊद का जन्म हुआ। उद्धारकर्ता के आगमन से सदियों पूर्व दाऊद, लड़कपन में बेतलेहम के चारों ओर के पहाड़ो पर चरती हुईं भेड़ो की रखवाली करता था। यह साधारण चरवाहा स्वयं के लिखे गीत गाया करता था और उसकी वीणा उसकी मधुर आवाज की धुन की संगत करती थी। प्रभु ने दाऊद को चुना था, और उसकी भेड़ो के साथ उसके एकान्त जीवन में, वह उसे उस कार्य के लिये तेयार कर रहा था जो वह भविष्य में उसके सुपुर्द करने को था। PPHin 667.1

जब दाऊद चरवाहे के जीवन के एकान्तवास में रह रहा था, प्रभु परमेश्वर उसके बारे में शमूएल से बात कर रहा था। “यहोवा ने शमूएल से कहा, मैंने शाऊल को इज़राइल पर राज्य करने के लिये तुच्छ जाना है, तू कब तक उसके विषय में विलाप करता रहेगा। अपने सींग में तेल भर कर चलममैं तुझ को बेतलेहमवासी यिशै के पास भेजता हूँ. क्योंकि मैने उसके पुत्रों में से एक को राजा होने के लिये चुना है। एक बछिया साथ ले जाकर कहना, मैं यहोवा के लिये यज्ञ करने को आया हूँ। और यज्ञ पर यिशै को न्योता देना, तब मैं तुझे बता दूँगा कि तुझ को क्या करना है, और जिसको मैं तुझे बताऊं उसी का मेरी ओर से अभिषेक करना। तब शमूएल ने यहोवा के कहने के अनुसार किया, और वह बेतलेहम को गया। उस नगर के पुरनिये थरथराते हुए उससे मिलने को गए और कहने लगे, “क्या तू मित्रभाव से आया है? और उसने कहा, ‘हाँ में मित्रभाव’ से आया हूँ।” पुरनियों ने यज्ञ का न्योता स्वीकार किया और शमूएल ने यिशै और उसके पुत्रों को भी बुलाया। वेदी खड़ी की गई और बलि तैयार थी। यिशै का पूरा घराना उपस्थित था, सबसे छोटे पुत्र दाऊद को छोड़कर, जिसे भेड़ो की रखवाली के छोड़ना सुरक्षित नही था। PPHin 667.2

यज्ञ समाप्त होने पर, बलि के भोज में सम्मिलित होने से पूर्व, शमूएल ने यिशे के पुत्रों के कलीन डील-डौल अर्थात रंग-रूप का भविष्यसूचक निरीक्षण प्रारम्भ किया। एलीआब सबसे बड़ा था, और अन्यों के तुल्य उसकी कद-काठी और सुदर्शनता शाऊल की सी थी। उसकी सुदर्शन मुखाकति और सुडौल विकसित रूप ने भविष्यद्वक्ता का ध्यान आकर्षित किया। उसके राजकमारों जैसे रंग-रूप पर दृष्टि डालकर शमूएल नेसोचा, “निश्चय ही यह वही पुरूष है जिसे परमेश्वर ने शाऊल के उत्तराधिकारी के रूप में चुना है” और वह ईश्वरीय स्वीकृति की प्रतीक्षा करने लगा ताकि वह उसका अभिषेक करे। लेकिन यहोवा बाह्य रंग-रूप को नहीं देखता। एलिआब परमेश्वर का भय नहीं मानता था। यदि उसे सिंहासन पर बेठाया जाता, तो वह एक घमण्डी, श्रमसाध्य शासक होता। प्रभु ने शमूएल

से कहा, "न तो उसके रूप पर दृष्टि कर और न उसके कद की ऊँचाई पर, क्योंकि मैंने उसे अयोग्य जाना है, क्योंकि यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है, मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा दृष्टि मन पर रहती है।" बाहरी सुन्दरता किसी को परमेश्वर के लिये स्वीकार्य नहीं बनाती, चरित्र और आचरण में प्रकट बुद्धिमत्ता और उत्कृष्टता, मनुष्य की वास्तविक सुन्दरता को अभिव्यक्त करती है, और वह अंतरस्थ योग्यता, हृदय की श्रेष्ठता है, जो सेनाओं के प्रभु के साथ हमारी स्वीकृति को निर्धारित करती है। दूसरों की और हमारी परख में इस सच्चाई का एहसास कितनी गहराई से करना चाहिये। हम शमृ ूएल की गलती से सीख सकते कि जो अनुमान डील-डौल की शालीनता या चेहरे की सुन्दरता पर आधारित होता है, कितना व्यर्थ है। हम देख सकते है कि हृदय की गुप्त बातों को, और स्वर्ग से विशेष प्रबोधन के अभाव में परमेश्वर सम्मति को समझने में मनुष्य की बुद्धिमता कितनी असमर्थ है। परमेश्वर के उसके सृजन किये प्राणियों के सम्बन्ध में विचार और तरीके हमारे सीमित विवेक से बहुत ऊपर है, लेकिन हम आश्वस्त रहें कि उसके बच्चे उस स्थान की पूर्ति के लिये अवश्य लाए जाएँगे, जिसके लिये वे योग्यता प्राप्त हैं, और उनके हाथों में सौंपे गए कार्य को सम्पन्न करने के लिये उन्हें सुयोग्य किया जाएगा, और ऐसा तभी होगा जब वे अपनी इच्छा को परमेश्वर के आगे समर्पित करदेंगे, ताकि उसकी परोपकारी योजानाएँ मनुष्य के दुराग्रहसे विफलनहो । PPHin 667.3

शमूएल एलीआब का निरीक्षण कर आगे बढ़ गया और यज्ञ में उपस्थित छहों भाईयों पर उसने दृष्टि डाली, लेकिन प्रभु ने उनमें से किसी को चुनने का संकेत नहीं दिया। पीड़ाजनक दुविधा में शमूएल ने सबसे छोटे नौजवान पर दृष्टि की, भविष्यद्वक्ता किंकर्तव्यमूढ़ और हैरान रह गया। उसने यिशे से पूछा, "क्या तेरे सभी पुत्र यहाँ है?" पिता ने उत्तर दिया, "नहीं, छोटा तो रह गया, और वह भेड़ों को चरा रहा है।" शमूएल ने निर्देश दिया कि उसे बुलवाया जाए और कहा, "जबतक वह वहाँ न आए तब तक हम नहीं बेठेंगे। PPHin 668.1

सन्देशवाहक के अप्रत्याशित बुलावे के कारण अकेला चरवाहा चौंक गया; सन्देशवाहक ने घोषणा की कि भविष्यद्वक्ता बेतलेहम आया है और उसने दाऊद को बुलाया है। उसने आश्चर्य से पूछा कि इज़राइल का न्यायी और भविष्यद्वक्ता उससे मिलने के लिये क्यों इच्छुक है; लेकिन बिना देर किये उसने बुलावे का पालन किया, "वह देखने में सुडौल था, उसकी मुखाकृति सुदर्शन थी और चेहरे पर लालिमा थी ।" जब शमूएल ने प्रसन्नतापूर्वक इस रूपवान, पुरूषोचित, शालीन चरवाहे को देखा प्रभु की वाणी ने भविष्यद्वक्ता से कहा, "उठ, इसका अभिषेक कर, क्योंकि वह यही है।" युवा चरवाहे के दीन कार्यभार में दाऊद ने स्वयं को साहसी और विश्वसनीय प्रमाणित किया था और अब परमेश्वर ने उसे अपने लोगो का कप्तान होने के लिये चुना। "तब शमूएल ने अपना तेल का सींग लेकर उसके भाईयों के मध्य में उसका अभिषेक किया, और उस दिन से प्रभु का आत्मा दाऊद पर उतरता रहा। भविष्यद्क्ता ने अपना नियम कार्य संपन्न कर लिया था, और वह हार्दिक संतोष के साथ रामा लौटा। PPHin 669.1

शमूएल ने इस कार्य के बारे में यिशै के परिवार को भी नहीं बताया था, और दाऊद के अभिषेक की विधि गुप्त रूप से सम्पन्न की गई थी। वह विधि नौजवान के लिये उसकी आसनन उत्कृष्ट नियति का संकेत थी, ताकि आने वाले वर्षा के विभिन्न अनुभवों और संकटों के बीच, यह ज्ञान, उसके जीवन के माध्यम से सम्पन्न होने वाले परमेश्वर के उद्देश्य के प्रति उसे कर्तव्यनिष्ठ रहने की प्रेरणा दे। PPHin 669.2

दाऊद को दिया गया यह महान सम्मान उसे गर्वित करने के लिये नहीं था। जिस ऊँचे पद को वह ग्रहण करने वाला था, उसके बावजूद वह परमेश्वर की योजनाओं की, उसी के समय और उसी के तरीके से, प्रगति अर्थात विकास की प्रतीक्षाकरने में सन्तुष्ट, अपने व्यवसाय को चुपचाप निभाता रहा। अभिषिक्त होने से पहले जैसा, वह दीन और आडम्बरहीन युवा चरवाहा पहाड़ो में लौट गया और उतनी ही नम्रता से अपनी भेड़ो की चौकसी और सुरक्षा करता था। लेकिन एक नई प्रेरणा से वह अपनेभजनों की रचना करता और अपनी वीणा बजाता था। उसके सामने व्यापक रूप से फैला हुआ प्राकृतिकपर्यावरण सम्पन्न सौन्दर्य का परिदृश्यथा। फलों के गुच्छोंसे लदी दाखलताएँ, धूप में चमक उठती थी। जंगल के वृक्ष अपनी हरी-भरी पत्तियों के साथ हवा में झूम उठते थे। उसने सूर्य को आकाश को प्रकाशमान करते देखा, जो दुल्हे के समान अपने कक्ष से बाहर आया और जो दौड़में भागने के लिये एक सशक्त घावक सा आनन्दमयी था। पहाड़ों की गगनचुम्बी चोटियाँ थी, दूरस्थ दिशा में मोआब के प्राचीर समान पर्वत टीले उठे हुए थे, और इन सब के ऊपर था स्वर्ग का हल्का नीला मेहराब! और उसके पार परमेश्वर था। दाऊद उसे देख नहीं सकता था, लेकिन उसकी कृतियाँ उसकी प्रशंसा से भरपूर थी। जल धाराओं और चरागाहों, पर्वतों और जंगल को उज्जवल करता दिन का प्रकाश मन को ऊपर की ओर प्रकाश के पिता, प्रत्येक भले और उत्कृष्ट उपहार के रचयिता, को देखने के लिये उठाता। उसके सृष्टिकर्ता के तेज और चरित्र के नित्य रहस्योद्घाटनों ने युवा कवि के हृदय को प्रशंसा और आनन्द से भर दिया। परमेश्वर और उसकी कृतियों पर मनन-चिन्तन करने से दाऊद की हार्दिक और मानसिक क्षमता उसके आगामी जीवन के कार्य के लिये मजबूत और विकसित हो रही थी। वह प्रतिदिन परमेश्वर के निकटतम संपर्क में आ रहा था। उसका मन लगातार नये प्रसंगों की गहनता में प्रवेश कर रहा था जिससे उसको भजन लिखने और वीणा के संगीत को जगाने की प्रेरणा मिलती थी। उसके स्वर की मधुर धुन हवा में होकर पहाड़ो में गूँजती मानो स्वर्ग में स्वर्गदूतों के गीतों की गूँज हो। PPHin 669.3

निर्जन पहाड़ों में भटकने और परिश्रम के उन वर्षो के परिणामों को कौन माप सकता है? परमेश्वर के साथ और प्रकृति के साथ संपर्क, भेड़ो की देखभाल, संकट और छुटकारे, आनन्द और शोक, जो उसके दीन हिस्से में थे, वे ना केवल दाऊद के चरित्र को ढालने और उसके भविष्य के जीवन को प्रभावित करने के लिये थे, वरन् इज़राइल के मधुर गायक के भजनों के माध्यम से, आने वाले युगों में परमेश्वर के लोगों के हृदयों में विश्वास और प्रेम को जागृत कर उन्हें उस परमेश्वर के

सदा-स्नेहशील हृदय के और निकट लाने के लिये थे-उस परमेश्वर के पास जिसमें उसके सभी प्राणी जीवित है। PPHin 670.1

नौजवानी की स्फर्ति और सुदर्शनता में दाऊद, पृथ्वी के संभ्रातों के साथ उच्च पद को ग्रहण करने की तैयारी कर रहा था। परमेश्वर द्वारा दिये गए उपहारों के तौर पर, उसकी प्रतिभाओं को पवित्र पिता की महिमा को बढ़ाने के लिये प्रयोग किया गया। मनन और चिन्तन के अवसरों ने उसे बुद्धिमता और पवित्रता से परिपूर्ण किया जिसके कारण वह परमेश्वर और स्वर्गदूतों में प्रिय ठहरा। जब उसने परमेश्वर की प्रवीणता पर सोच-विचार किया, उसके अन्तर्मन में परमेश्वर की और अधिक स्पष्ट धारणा उत्पन्न हुई। अव्यक्त प्रसंग दीप्तिमान हुए और कठिनाईयों को सरल किया गया, उलझनों को अनुरूप किया गया, और प्रत्येक किरण ने उद्धारकर्ता और परमेश्वर की महिमा के लिये भक्ति के मधुर गीत और उत्साह की नईं उमंग को प्रवाहित किया। जो प्रेम उसे संवेदनशील बनाता था, जो कष्ट उस पर आते थे, जो विजय उसकी होती थी, ये सब उसके सक्रिय विचारों के विषय थे, और जब वह अपने जीवन की घटनाओं में परमेश्वर के प्रेम को देखता था, उसका हृदय और भी कृतज्ञता और उत्कृष्ट श्रद्धा से धड़कने लगता था, उसकी आवाज का माधुर्य बढ़ जाता था और वह अधिक आनन्दित होकर वीणा बजाता, और वह युवा चरवाहा ज्ञान से ज्ञान में, शक्ति से शक्ति में, अग्रसर होता गया, क्योंकि परमेश्वर का आत्मा उस पर था।

अध्याय 63—दाऊद और गोलियत

यह अध्याय 1 शमूएल 16:144-23,17 पर आधारित है

जब शाऊल राजा को एहसास हुआ कि परमेश्वर ने उसे तुच्छ जाना था, और जब उसे भविष्यद्वक्ता के द्वारा उसे सम्बोधित किये हुए निंदा के शब्दों का प्रभाव अनुभव हुआ, तो वह निराशा और द्वेषपूर्ण विद्रोह से भर गया। वह सच्चा प्रायश्चित नहीं था, जिसके प्रभाव में घमण्डी राजा ने अपने सिर को झुकाया था। PPHin 672.1

उसे अपने पाप के आपराधिक स्वभाव की थोड़ी भी स्पष्ट अनुभूति नहीं थी और वह अपने जीवन में सुधार लाने के कार्य के लिये उत्साहित नहीं हुआ, वरन् अपनी इस धारणा पर सोचता रहा कि उसे इज़राइल के सिंहासन से वंचित करने और उसके वंश से उत्तराधिकारी छीन लेने में परमेश्वर का अन्याय था। अब वह अपने घराने पर लाए गए विनाश के बारे में सोचने में व्यस्त था। उसे लगा कि शत्रुओं का समाना करने में उसके द्वारा दिखाए गए साहस उसके अनाज्ञाकारिता के पाप को प्रभावहीन करने के लिये पर्याप्त था। उसने परमेश्वर की ताड़ना को दीनता से स्वीकर नहीं किया, वरन् उसकी अंहकारी भावना इतनीउग्र हो गई कि वह विवेकहीन होने की सीमा पर पहुँच गया। उसके सलाहकारोंने उसे एक कुशल संगीतकार के सेवाएँ लेने का परामर्श दिया, इस आशा में की साज के शांतिदायक स्वर उसके व्याकुल मन को शांत करेंगे। परमेश्वर की कृपा से, दाऊद को, जो वीणा-वादन में एक कुशल कलाकार था, राजा के सम्मुख लाया गया। उसकी ऊँची और स्वर्ग द्वारा प्रेरित तानों का वांछित प्रभाव पड़ा। जो विचारमग्न उदासी शाऊल के मन पर काले बादल की तरह छा गई थी मानों जादू से दूर हो गई। PPHin 672.2

शाऊल के दरबार में जब उसकी सेवाएँ समाप्त हो गई, दाऊद पहाड़ों में अपनी भेड़ो की बीच लौट आया और भावना और आचरण की अपनी सादगी को कायम रखता रहा। आवश्यकता पड़ने पर उसे राजा की सेवा-टहल के लिये वापस बुलाया जाता था, ताकि वह अशान्त राजशाह के मन को शान्त करे और दुष्टात्मा उससे दूर चली जाए। हालाँकि शाऊल दाऊद और उसके संगीत में आनन्द की अभिव्यक्ति करता था, लेकिन युवा चरवाहा प्रसन्नता और शान्ति की अनुभूति के साथ राजा के घर से अपने चरागाह के पहाड़ो और मैदानों में चला आता था। PPHin 672.3

दाऊद परमेश्वर और मनुष्य की कृपा-दृष्टि में बड़ा हो रहा था। उसे प्रभु के मार्ग में निर्देशित किया गया था, और अब वह अधिक सम्पूर्णता से परमेश्वर की इच्छा को पूरी करता था। चिन्तन के लिये उसके पास नए विषय थे। राजा के दरबार में जाकर उसने राजस्व के उत्तरदायित्व को देखा था। उसने उन प्रलोभनों को भी देखा था जो शाऊल की आत्मा पर हावी थे और वह इज़राइल के प्रथम राजा के लेन-देन और चरित्र में कुछ रहस्यों को जान गया था। उसने राजस्व के गौरव को दुख

के काले बादल की छाया में देखा था, और वह जानता था कि शाऊल का घराना, अपने निजी जीवन में, प्रसन्नता से बहुत दूर था। इन्ही सब बातों के कारण इज़राइल के अभिषिक्त राजा के मन में अशान्त विचार आये। लेकिन जब वह विचारमग्न होता था और चिंताजनक विचारों द्वारा सताया जाता, तो वह अपनी वीणा का सहारा लेता, और ऐसा तान छेड़ता जो उसके मन को प्रत्येक अच्छाई के रचयिता की ओर उठाता और जो काले बादल भविष्य के क्षितिज को घुँधला करते प्रतीत होते, उन्हें छितरा दिया जाता। PPHin 673.1

परमेश्वर दऊद को विश्वसनीयता का पाठ पढ़ा रहा था। जैसे मूसा को उसके कार्य के लिये प्रशिक्षित किया गया था, उसी प्रकार प्रभु यिशै के पुत्र को अपने चुने हुए लोगों का मार्गदर्शक बनने के लिये सुयोग्य बना रहा था। अपनी भेड़ो की देख-रेख और चौकसी में, वह उस दायित्व का परिप्रेक्ष्य प्राप्त कर रहा था जो महान चरवाहे का अपने चरगाह की भेड़ो के लिये होता है। PPHin 673.2

वह एकान्त पहाड़ियाँ और भंयकर घटियाँ जहाँ दाऊद अपनी भेड़ों के साथ घमूता था, माँसाहारी पशुओं की खोह थी। यरदन के किनारे की झाड़ियों से अक्सरभूख से पागल शेर, या पहाड़ो से अपनी खोह से भालू निकल आते थे और भेड़ो पर आक्रमण करते थे। उस समय की परम्परा के अनुसार हथियार के नाम पर दाऊद के पास केवल गोफन और चरवाहे की लाठी होती थी, लेकिन फिर भी उसने उसके सुपुर्द भेड़ों की सुरक्षा में प्रारम्भ में हीसाहस और शक्ति का प्रमाण दे दिया। इन मुठभेड़ो का वर्णन करते हुए बाद में उसने कहा, “तेरा दास अपने पिता की भेड़ बकरियाँ चराता था, और जब कोई सिंह या भालू झुण्ड में से मेमना उठा ले जाता, तब मैं उसका पीछा करके उसे मारता, और मेमने को उसके मुहँ से छुड़ा लेता, और जब वह मुझ पर हमला करता, तब मैं उसके केश को पकड़कर उसे मार डालता था ।”-शमूएल 17:347,35 । इन मामलों में दाऊद के अनुभव ने उसके हृदय को प्रमाणित किया और उसमें विश्वास, सहन-शक्ति और साहस को विकसित किया। PPHin 673.3

शाऊल के दरबार में बुलाए जाने से पहले, दाऊद ने साहसिक कार्यों द्वारा विशिष्टता प्राप्त की थी। जो अधिकारी उसे राजा के ध्यान में लाया था उसने उसे “वीर योद्धा, बात करने में बुद्धिमान और रूपवान” घोषित किया और कहा कि “यहोवा उसके साथ रहता है।” PPHin 674.1

जब इज़राइलियों ने पलिशितयों के विरूद्ध युद्ध की घोषणा की, यिशै के तीन पुत्र शाऊल के नेतृत्व में सेना में भतती हुए, लेकिन दाऊद घर पर रहा। कुछ समय पश्चात् वह शाऊल की छावनी देखने गया। पिता के निर्देशानुसार उसे अपने बड़े भाईयों के लिये उपहार और सन्देश ले जाना था और पता लगाना था कि वे सकुशल व सुरक्षित हैया नहीं । लेकिन यिशै इस बात से अनजान था कि युवा चरवाहे को एक उत्कृष्ट विशेष कार्य सौंपा गया था। इज़राइल की सेनाएँ संकट में थी और दाऊद को, स्वर्गदूत द्वारा, उसके लोगों को बचाने का निर्देश दिया गया था। PPHin 674.2

सेना के समीप आने पर, दाऊद ने हो-हुल्लड़ की आवाज सुनी, मानो कोई संग्राम होने को था। और "सेना रणभूमि को जा रही थी और संग्राम के लिये ललकार रही थी।" इज़राइलियों और पलिश्तियों ने अपनी-अपनी सेना अपने सामने करके पांति बांधी। दाऊद रणभूमि को दोड़ा और वहाँ जाकर उसने अपने भाईयों का अभिवादन किया। वह उनसे बात कर ही रहा था, कि पलिश्तियों का शूरवीर, गोलियत आगे आया, और उसने अपमानजनक भाषा मे इज़राइल को ललकारा और उन्हें उनके जत्थों में से एक ऐसे पुरूष को भेजने की चुनौती दी, जो उसमें द्वंद्वयुद्ध करे। उसने अपनी चुनौती को दोहराया, और जब दाऊद ने देखा कि इज़राइली भय से भरे थे, और जब उसे ज्ञात हुआ कि पलिश्ती द्वारा चुनौती कई दिनों से दी जा रही थी, और अब तक ढींगमार को चुप कराने के लिये कोई सूरमा खड़ा नहीं हुआ था, उसकी आत्मा में हलचल हुई। उसमें जीवित परमेश्वर के सम्मान और उसके लोगों की साख संरक्षित करने का उत्साह जागृत हुआ। PPHin 674.3

इज़राइल की सेनाएँ उदास थी। उनका साहस चूर-चूर हो गया था। उन्होंने एक दूसरे से कहा, "क्या तुमने उस पुरूष को देखा है जो चढ़ा आ रहा है? निश्चय वह इज़राइलियों को ललकारने को चढ़ा आता है।" शर्म और कोध में दाऊद बोला, "वह खतनारहित पलिश्ती क्या है कि जीवित परमेश्वर की सेना को ललकारे?" PPHin 674.4

दाऊद के सबसे बड़े भाई एलिआब ने जब यह शब्द सुने, तो वह भली-भांति जानता था कि नौजवान के मन में कौन सी भावनाएँ कियाशील हो रही थी। चरवाहे के रूप में भी दाऊद साहसी और बलवन्त रहा था लेकिन इसका कोई साक्ष्य नहीं था; और शमूएल की उनके पिता के घर रहस्यमयी भेंट और उसके चुपचाप प्रस्थान ने उसके भाईयों के मन में उसके दौरे के वास्तविक प्रयोजन के प्रति सन्देह उत्पन्न कर दिया। जब उन्होंने दाऊद को स्वयं से अधिक सम्मान प्राप्त करते देखा, तो उनकी ईर्ष्या जागृत हो गई, और वे उसकी भाई-जैसी नम्रता, और अखण्डता को देय प्रेम और आदर के साथ मान्यता नहीं देते थे। वे उसको मात्र युवा चरवाहे के रूप में देखते थे और एलिआब ने उसके पूछे हुये प्रश्न को अपनी कायरता की निंदा माना, क्योंकि उसने पलिश्ती योद्धा को चुप कराने का कोई प्रयास नहीं किया था। बड़े भाई ने कोधित होकर कहा, "तू यहाँ क्यों आया है? जंगल में उन थोड़ी सी भेड़ो को तू किस के पास छोड़ आया है? तेरा अभिमान और तेरे मन की बुराई मूझे मालूम है, तू तो लड़ाई देखने के लिये यहाँ आया है।" दाऊद का उत्तर आदरयुक्त लेकिन कतसंकल्प था, "अब मैने क्या किया है? क्या कोई कारण नहीं? PPHin 675.1

दाऊद के शब्द राजा को दोहराए गए और उसने नौजवान को अपने सम्मुख बुलाया। जब दाऊद ने कहा, "किसी का मन उसके कारण कच्चा न हो; तेरा दास जाकर उस पलिश्ती से लड़ेगा", शाऊल अचरज से चरवाहे के कहे शब्दों को सुनता रहा। शाऊल ने दाऊद को उसके प्रयोजन से दूर करना चाहा, लेकिन नौजवान अडिग था। उसने अपने पिता की भेड़ो की चौकसी करते समय

के अनुभवों का वर्णन करते हुए, सामान्य, विनम्र भाव से उत्तर दिया, "यहोवा जिसने मुझे सिंह और भालू, दोनो के पंजे से बचाया है, वह मुझे उस पलिश्ती के हाथ से भी बचाएगा। शाऊल ने दाऊद से कहा, जा यहोवा तेरे साथ रहे। PPHin 675.2

चालीस दिनों से इज़राइल की सेना पलिश्ती योद्धा की अंहकारी चुनौती के सम्मुख काँप रही थी। जिसका कद छः हाथ एक बित्ता (नौ इंच) था, उस विशाल आकृति को देख उनके हृदय बैठ जाते थे। उसके सिर पर पीतल का शिरस्त्राण (टोप) था, और वह एक अंगत्राण पहने हुए था, जिसका भार पांच हजार शेकेल पीतल का था, और उसकी टांगो पर पीतल की खातिकाएँ थी। अंगत्राण पीतल के पत्तरों से बना हुआ था जो एक के ऊपर एक इस प्रकार लगे हुए थे मानो मछली के सरहने हो और वह इतने पास पास जुड़े हुएथे कि उस कवच को कोई तीरयाबरछीनहीं बेघसकती थी। वह दीर्घकाय मनुष्य अपनी पीठ पर पीतल का भाला घारण किये हुए था ।"उसके भाले की छड़ जुलाहे के डोंगी के समान थी, और उस भाले का फल छः सौर शेकेल लोहे का था, और बड़ी ढाल लिये हुए एक जन उसके आगे-आगे चलता था। PPHin 675.3

प्रातःकाल और संध्या होने पर गोलियत इज़राइल की छावनी के निकट आता था, और ऊँची आवाज में कहता, "तुम ने वहाँ आकर लड़ाई के लिये व्यूह रचना क्यों की है? क्या मैं पलिश्ती नहीं हूँ. और तुम शाऊल के अधीन नहीं हो? अपने में से एक पुरूष चुनो, कि वह मेरे पास उतर आए। यदि वह मुझ से लड़कर मुझे मार सके, तब तो हम तुम्हारे अधीन हो जाएँगे, परन्तु यदि मैं उस पर प्रबल होकर उसे मारूँ, तो तुम को हमारे अधीन होकर हमारी सेवा करनी पड़ेगी। फिर वह पलिश्ती बोला, मैं आज के दिन इज़राइली सेनाओं को ललकारता हूँ। किसी पुरूष को मेरे पास भेजो कि हम एक-दूसरे से लड़े।" PPHin 676.1

हालाँकि शाऊल ने दाऊद को गोलियत की चुनौती स्वीकार करने की अनुमतिदे दी थी, राजा को उसक साहसिक विशेष कार्य में सफल होने की कम ही आशा थी। आज्ञा दी गई कि दाऊद को राजा का निजी कवच पहनाया जाए। पीतल की भारी शिरस्त्राण (टोप) उसके सिर पर रखा गया और उसकी देह पर बख्तर रखा गया; राजा की तलवार उसके वस्त्र पर कसी थी। इस प्रकार लैस होकर, वह अपने काम के लिये निकला, लेकिन कुछ ही समय बाद उसने अपने कदम पीछे किये। उत्सुक दर्शकों के मन में पहला विचार यह आया कि दाऊद ने ऐसी विषम मुठभेड़ में प्रतिद्वंद्वी का सामना करने में अपने प्राण को दाव पर नहीं लगाने का निश्चय कर लिया था। लेकिन साहसी युवक ने ऐसा दूर-दूर तक नहीं सोचा था। जब वह लौटकर शाऊल के पास आया तो उसने वह भारी युद्धवस्त्र परे रखने अर्थात उतारने की अनुमति माँगी और कहा, "इन्हें पहने हुए मुझ से चला नहीं जाता क्योंकि मैंने इन्हें परखा नहीं है।" उसने राजा का युद्धवस्त्र उतार दिया और उसके स्थान पर उसने अपनी लाठी हाथ में ली, और नाले में से पांच चिकने पत्थर छाँटकर अपनी चरवाहे की थेली अर्थात अपने झोले मे रखे, और अपना गोफन हाथ में लेकर पलिश्ती के निकट गया। वह दीर्घकाय

मनुष्य निर्भीकता से आगे बड़ा, इस अपेक्षा में कि उसका सामना इज़राइल के सबसे बलवन्त योद्धा से होगा। उसका कवचवाहक उसके आगे-आगे चल रहा था और वह ऐसा लग रहा था कि कोई भी उसका सामना नहीं कर सकता था। जब वो दाऊद के निकट आया, तो उसने उसे तुच्छ जाना, क्योंकि वह लड़का ही था। दाऊद के मुख पर लाली झलकती थी, और उसका गठा हुआ शरीर, कवच की सुरक्षा के बगैर, लाभ के लिये प्रदर्शित किया गया, लेकिन उसकी युवा रूपरेखा और पलिश्ती के विशाल अनुपात में बहुत अन्तर था। PPHin 676.2

गोलियत अचरज और कोध से भर गया। उसने कहा, "क्या मैं कृत्ता हूँ कि तू लाठी लेकर मेरे पास आता है"? फिर उसने अपने देवताओं के नाम लेकर दाऊद को भंयकर श्राप दिये। उसने उपहास करते हुए कहा, "मेरे पास आ, में तेरा मॉस आकाश के पक्षियों और बनेले पशुओं को दे दूँगा। PPHin 677.1

दाऊद पलिश्तियों के सूरमा के आगे कमजोर नहीं पड़ा। आगे बढ़कर उसने अपने प्रतिद्वन्दी से कहा, "तू तो तलवार और भाला और ढाल लिये हुए मेरे पास आता है, परन्तु मैं सेनाओं के यहोवा के नाम से तेरे पास आता हूँ. जो इज़राइली सेना का परमेश्वर है, और उसको तूने ललकारा है। आज के दिन यहोवा तुझ को मेरे पास में कर देगा और में तुझ को मारूँगा, और तेरे सिर तेरे धड़ से अलग करूँगा, और मैं आज के दिन पलिश्ती सेना के शव आकाश के पक्षियों और पृथ्वी के जीव-जन्तुओं को दे दूँगा, तब समस्त पृथ्वी के लोग जान लेंगे कि इज़राइल में एक परमेश्वर है। और यह समस्त मण्डली जान लेगी कि यहोवा तलवार या भाले के द्वारा जयवन्त नहीं करता, इसलिये कि संग्राम तो यहोवा का है, और वही तुम्हें हमारे हाथ में कर देगा।" PPHin 677.2

उसका स्वर निर्भीक था, और उसकी सुदर्शन मुखाकति पर आनन्द और विजय की आभा थी। स्पष्ट, संगीतमय स्वर में दिया गया यह भाषण हवा में प्रवाहित हुआ और युद्ध के लिये तैयार सैकड़ो सुनने वालों ने सुना। गोलियत का कोध चरम सीमा पर पहुँच गया। कोध में उसने अपने माथे की सुरक्षा करने वाले शिरस्त्राण (टोप) को पीछे किया और अपने प्रतिद्वन्दी से बदला लेने के लिये आगे बड़ा। यिशै का पुत्र अपने शत्रु का सामना करने की तैयारी कर रहा था। "जब पलिश्ती उठकर दाऊद का सामना करने के लिये निकट आया, तब दाऊद सेना और पलिश्ती का सामना करने के लिये स्फर्ति से दौड़ा। फिर दाऊद ने अपन थेली में हाथ डालकर उसमें से एक पत्थर निकाला, और उसे गोफन में रखकर पलिश्ती के माथे पर ऐसा मारा कि पत्थर उसके माथे के भीतर घुस गया, और वह भूमि पर मुहँ के बल गिर पड़ा । PPHin 677.3

दोनो सेनाएँ भोंचक्की रह गईं। उन्हें विश्वास था कि दाऊद मारा जाएगा, लेकिन जब पत्थर हवा में से सनसनाता हुआ सीधा निशाने कीओरगया, उन्होंने बलवन्त योद्धा को कॉपते हुए, और हाथों को आगे बढ़ाते देखा, मानो वह अंधा हो गया हो। विशालकाय मनुष्य चकराया, लड़खड़ाया और रोग्रस्त बांज वृक्ष की तरह भूमि पर गिर गया। दाऊद क्षण भर के लिये भी नहीं रूका। वह पलिश्ती

के औंधे मुहँ गिरे हुए शरीर पर कूदा और दोनो हाथों से गोलियत की भारी तलवार को थाम लिया। एकक्षण पहले गोलियत ने ढींग मारी थी कि वह उसी तलवार से दाऊद का सिर धड़ से अलग कर देगा और उसका माँस आकाश के पक्षियों को दे देगा। अब उसने तलवार को हवा में उठाया और उसके बाद ढींगमार का सिर धड़ से अलग होकर लुढ़क गया और इज़राइल की छावनी से उल्लासभरा शोर उठा। PPHin 677.4

पलिश्ती भयभीत हो गए और हो-हुल्लड़ के कारण अप्रत्याशित रूप से भाग खड़े हुए। विजयी इब्रियों की ललकार पहाड़ो की चोटियों मे गूँज उठी और वे "एकोन के फाटकों तक पलिश्तियों का पीछा करते गए, और घायल पलिश्ती शारेम के मार्ग में और गत और एकोन तक गिरते गए। तब इजराइली पलिश्तियों का पीछा छोड़कर लौट आए, और उनके डेरों को लूट लिया। और दाऊद पलिश्ती का सिर यरूशलेम में ले गया और उसका कवच अपने डेरे में रख दिया। PPHin 678.1

अध्याय 64—दाऊद, एक पलायक

यह अध्याय 1 शमूएल 18—22 पर आधारित है

गोलियत के मारे जाने पश्चात् शाऊल ने दाऊद को अपने पास ही रखा और उसे उसके पिता के घर लौटने की अनुमति नहींदी ।और ऐसा हुआ कि "योनातन का मन दाऊद पर ऐसा लग गया कि योनातन उसे अपने प्राणों के समान प्रेम करने लगा।" योनातन और दाऊद ने भाईयों जैसे एक होने की वाचा बॉधी और राजा के पुत्र ने "अपना बागा जो वह स्वयं पहनेहुए था उतारकर अपने वस्त्र समेत दाऊद को दे दिया, वरन् अपनी तलवार और धनुष और कटिबन्ध भी उसके दे दिए।" दाऊद को महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व सौंपे गए, लेकिन उसने अपनी विनम्रता को संरक्षित रखा और लोगों का और राजसी परिवार दोनों का प्रेम जीत लिया। PPHin 679.1

"और जहाँ भी शाऊल दाऊद को भेजता था वहाँ वह जाकर बुद्धिमानी के साथ काम करता था, अतः शाऊल ने उसे योद्धाओं का प्रधान नियुक्त किया।" दाऊद बुद्धिमान और ईमानदार था, और यह प्रमाणित था कि परमेश्वर का आशीर्वाद उसके साथ था। शाऊल को कभी-कभी एहसास होता था कि इज़राइल के शासन के लिये वह स्वयं अयोग्य है, और उसे लगता था कि राज्य परमेश्वर से निर्देशप्राप्त करने वाले के साथ जुड़े रहने में अधिक सुरक्षित रहेगा । शाऊल को आशा थी कि दाऊद के साथ उसका सम्बन्ध उसके लिये भी सुरक्षा होगा। क्योंकि दाऊद पर परमेश्वर की कृपा-दृष्टि थी और परमेश्वर उसकी ढाल था, युद्ध के समय वह शाऊल के लिये बचाव हो सकता था। PPHin 679.2

यह परमेश्वर का प्रयोजन था जिसने दाऊद का सम्बन्ध शाऊल से जोड़ा था। यह उसे राष्ट्र का विश्वास प्राप्त करने के योग्य ठहराता।। शाऊल की शत्रुता के माध्यम से जो कठिनाईयाँ उसके जीवन में आईं, उनसे उसने परमेश्वर पर निर्भर होना और अपना पूरा विश्वास उसमें रखना सीखा। दाऊद और योनातन की मित्रता भी, इज़राइल के भावी राजा के जीवन को सुरक्षित रखने के लिये, परमेश्वर की योजना थी। इन सभी बातों में परमेश्वर दाऊद और इज़राइलियों के लिये अनुग्रहकारी उद्देश्य कार्यान्वित कर रहा था। PPHin 679.3

लेकिन शाऊल ज्यादा दिनों तक दाऊद के प्रति मित्रवत नहीं रहा। जब शाऊल और दाऊद पलिश्तियों से युद्ध करके लौट रहे थे, "तब स्त्रियाँ सब इज़राइली नगरों से, नाचती और गाती हुई प्रसन्नतापूर्वक, डफ और वाद्य-झऑयंत्रों के साथ, शाऊल राजा के स्वागत के लिये निकलकर आई।" एक समूह न गाया, "शाऊल ने तो हजारों को मारा", और दूसरे समूह ने राग को पकड़ते हुए जबाव दिया, "परन्तु दाऊद ने लाखों को मारा है।" ईर्ष्या की दुष्टात्मा ने राजा के हृदय में प्रवेश किया। वह कोधित हुआ क्योंकि इज़राइल की स्त्रियों के गीत में दाऊद की उससे अधिक प्रशंसा की गई थी।

इस द्वेषपूर्ण भावनाओं को दबाने के बजाय, उसने अपने चरित्र की कमजोरी का प्रदर्शन किया और वह बोला, "उन्होंने दाऊद के लिये लाखों और मेरे लिये हजारों कोही ठहराया, इसलिये राज्य को छोड़ अब उसेऔरक्या मिलना बाकी है? PPHin 679.4

अनुमोदन या प्रशंसा की चाह शाऊल के चरित्र का सबसे बड़ा दोष था। इस गुण का उसके विचारों और कृत्यों पर नियन्त्रणकारी प्रभाव था, हर चीज प्रशंसा और आत्म-उत्थान की अभिलाषा से चिन्हित थी । लोकप्रिय वाहवाही का निम्न स्तर, सही और गलत का उसका स्तर था। जो मनुष्य को प्रसन्न रखने के लिये जीता है, वह मनुष्य सुरक्षित नहीं रहता, और वह परमेश्वर की प्रशंसा को पहला स्थान नहीं देता। शाऊल मनुष्य के अनुमान में प्रथम होने का महत्वाकांक्षी था, और जब यह प्रशंसा गीत गाया गया, शाऊल के मन में दृढ़ विश्वास हो गया कि दाऊद लोगों का मन जीत लेगा और उसके स्थान पर राज करेगा। PPHin 680.1

शाऊल ने ईर्ष्या की भावना को अपने हृदय में स्थान दिया जिससे उसकी आत्मा विषाक्त हो गई। भविष्यद्वक्ता शमूएल ने उसे शिक्षा दी थी कि परमेश्वर जो चाहता है वह करता है और उसे कोई नहीं रोकता, लेकिन इसके बावजूद शाऊल ने यह स्पष्ट कर दिया कि उसे परमेश्वर की योजनाओं या सामर्थ्य का सच्चा ज्ञान नहीं था। इज़राइल का राजा अपनी इच्छा को सनातन परमेश्वर की इच्छा के विरूद्ध खड़ा कर रहा था। इज़राइल राज्य पर राज करते हुए शाऊल ने अपनी स्वयं की भावना को नियन्त्रित करना नहीं सीखा था। उसने अपने निर्णय को अपने आवेग द्वारा तब तक नियन्त्रित होने दिया, जब तक कि वह आवेग की आग में न कूद पड़ा। उसे कोध के दोरे पड़ते थे, जब वह उसकी इच्छा का विरोध करने वाले की जान लेने को तैयार हो जाता था। इस पागलपन से वह निराशा और आत्म-अवमानना की अवस्था में आ जाता और पश्चताप उसकी आत्मा पर हावी हो जाता। PPHin 680.2

उसे दाऊद का वीणा-वादन सुनना अच्छा लगता था और उस समय के लिये दुष्टात्मा उससे दूर हो जाती थी, लेकिन एक दिन जब नौजवान उसकी सेवा-टहल कर रहा था और अपनी वीणा के मधुर संगीत के साथ परमेश्वर की स्तुति में गीत गा रहा था, शाऊल ने अचानक से संगीतज्ञ पर अपना भाला दे मारा; उसका उद्देश्य दाऊद की जान लेना था। परमेश्वर के हस्तक्षेप से दाऊद सुरक्षित रहा, और बिना घायल हुए झुँझलाए हुए राजा के कोध से बचने के लिये भाग गया। PPHin 681.1

जैसे-जैसे शाऊल की दाऊद के प्रति नफरत बढ़ती गई, वह उसकी जान लेने के अवसर को ढूंढने के लिये और भी अधिक सतर्क हो गया, लेकिन परमेश्वर द्वारा अभिषिक्त के विरूद्ध उसकी कोई भी योजना सफल नहीं हुई। शाऊल ने स्वयं को उस पर अधिकार करने वाली दुष्टात्मा के नियन्त्रण में दिया, जबकि दाऊद उसमें विश्वास रखता था जो सम्मति देने में सामथ्र्यवान है और

बचा कर निकाल लाने में बलवन्त है। नीतिवचन 9:10 में लिखा है, “प्रभु का भय ज्ञान की शुरूआत है” और दाऊद परमेश्वर से लगातार उसके आगे-आगे चलने की प्रार्थना करता था। PPHin 681.2

अपने प्रतिद्वंद्वी की उपस्थिति से मुक्त होने की इच्छा से, राजा ने उसे अपने पास से हटाकर, एक हजार से भी अधिक के ऊपर योद्धाओं का प्रधान नियुक्त किया......लेकिन सम्पूर्ण इज़राइल और यहूदा दाऊद से प्रेम करते थे। लोगों शीघ्र ही भाप लिया कि दाऊद एक सक्षम व्यक्ति था और यह कि उसके हाथों के सुपुर्द किये कार्यों को वह बुद्धिमानी और कौशल से प्रबन्धित करता था। नवयुवक के परामर्श प्रबुद्ध और विवेकशील थे और अनुकरण के लिये सुरक्षित प्रमाणित हुए, जबकि शाऊल का निर्णय कभी-कभी अविश्वसनीय और अविवेकी होते थे। PPHin 681.3

हालाँकि शाऊल, दाऊद को नष्ट करने के अवसर के लिये हमेशा सतक रहता था, वह उससे डरता भी था क्योंकि यह स्पष्ट था कि प्रभु उसके साथ था। दाऊद के दोषरहित चरित्र ने राजा के कोध को जागृत किया, उसने मान लिया कि दाऊद की उपस्थिति व जीवन ही उसके लिये तिरस्कार थे, क्योंकि तुलना किये जाने पर उसका अपना चरित्र तुच्छ प्रतीत होता था। इसी ईर्ष्या ने शाऊल को दयनीय बना दिया और उसके सिंहासन के विषय को संशय में डाल दिया। चरित्र के इस दोष ने हमारे संसार में कितनी अनकहा अनर्थ किया है। जिस शत्रुता ने कैन के हृदय को उसके भाई हाबिल के विरूद्ध कर दिया क्योंकि हाबिल के कार्य धर्म के थे और परमेश्वर ने उसका मान रखा और उसके अपने कार्य बुराई के थे जिसके कारण प्रभु ने उसे आशीषित नहीं किया, वही शत्रुता शाऊल के हृदय में विद्यमान थी। ईर्ष्या अभिमान की संतान है, और यदि इसे बढ़ावा दिया जाता है तो यह घृणा और अनन्त: प्रतिशोध और हत्या की ओर ले जाती है। शाऊल के कोध को उसके विरूद्ध उत्तेजित करने में, जिसने उसे कोई हानि नही पहुँचाई थी, शैतान ने अपने निज चरित्र का प्रदर्शन किया। PPHin 681.4

राजा ने दाऊद पर कड़ी निगरानी रखी, अविवेकहीनता या उतावलेपन के किसी अवसर की आशा में जिसे वह उसका अपमान करने के लिये, बहाने के रूप में उपयोग कर सकता था। उसे लगा कि वह तभी सन्तुष्ट होगा जब नौजवान के प्राण ले लेगा और उसके बावजूद अपने दुष्कर्म के लिये प्रजा के सम्मुख न्यायसंगत ठहराया जाएगा। उसने दाऊद से पलिश्तियों के विरूद्ध और अधिक शक्ति के साथ युद्ध करने का आग्रह कर, और उसकी बहादुरी के लिये पारितोषिक के रूप में राज घराने की ज्येष्ठ पुत्री का विवाह उसके साथ करने की प्रतिज्ञा कर, उसके लिये एक जाल बिछाया। इस प्रस्ताव पर दाऊद ने कहा, “में क्या हूँ और मेरा जीवन क्या है, और इज़राइल मे मेरे पिता का कुल कया है, कि मैं राजा का दामाद हो जाऊं? राजा ने अपनी पुत्री का विवाह किसी अन्य पुरूष से करवाकर अपनी निष्ठाहीनता प्रकट की। PPHin 682.1

शाऊल की सबसे छोटी बेटी मीकल दाऊद से प्रीति रखने लगी, जिससे शाऊल को अपने प्रतिद्वंद्वी के विरूद्ध षड़यन्त्र रचने का एक और अवसर मिल गया। मीकल का हाथ दाऊद के हाथ

में देने का प्रस्ताव रखा गया और शर्त यह थी उसे राष्ट्र के शत्रुओं की एक निर्धारित संख्या की पराजय व हत्या का प्रमाण देना था। “शाऊल की योजना थी कि पलिश्तियों से दाऊद को मरवा डाले” लेकिन पमरेश्वर ने अपने दास की रक्षा की। दाऊद राजा का दामाद बनने के लिये युद्ध में विजयी होकर लौटा। “शाऊल की पुत्री मीकल उससे प्रीति रखती थी” और कोधित राजा ने देखा कि उसका षड़यन्त्र उसके उत्थान में परिणामित हुआ जिसे वह नष्ट करना चाहता था। उसका इस बात में विश्वास और दृढ़ हो गया कि दाऊद की वह व्यक्ति था जिसे परमेश्वर ने उससे उत्तम कहा था, और जो उसके स्थान पर इज़राइल के सिंहासन पर बैठकर राज करेगा। अपना मुखौटा उतार कर, उसने योनातन और दरबार के अधिकारियों को अपनी घृणा के पात्र दाऊद को मार डालने का आदेश दिया। PPHin 682.2

योनातन ने दाऊद को राजा के प्रयोजन से अवगत करया और उसे तब तक छुपने को कहा, जब तक वह अपने पिता से इज़राइल को छुटकारा दिलाने वाले के प्राण न लेने की विनती करे। योनातन ने राजा के सम्मुख राष्ट्र का अस्तित्व और सम्मान संरक्षित करने में दाऊद का योगदान प्रस्तुत किया, और उस जघन्य अपराध के बारे में भी कहा जिसका दोषी वह होगा जो उस व्यक्ति की हत्या करेगा जिसका परमेश्वर ने शत्रुओं को तितर-बितर करने के लिये उपयोग किया था। राजा का अंत: करण प्रभावित हुआ और उसका हृदय नग्र हुआ। “तब शाऊल ने शपथ ली, यहोवा के जीवन की शपथ, दाऊद मार डाला न जाएगा।” दाऊद को शाऊल के पास लाया गया, और वह पहले की तरह उसके सामने रहकर उसकी सेवा टहल करने लगा। PPHin 683.1

तब इज़राइलियों और पलिश्तियों के बीच युद्ध फिर से होने लगा, और दाऊद ने शत्रुओं के विरूद्ध सेना का नेतृत्व किया। इब्रियों की बहुत बड़ी विजय हुई, और राज्य के लोगों ने दाऊद की बुद्धिमत्ता और वीरता की प्रशंसा की। इस कारण दाऊद के प्रति शाऊल की पहले वाली कड़ावहट उभर आईं। जब नौजवान राजा के सम्मुख वीणा-वादन कर, महल को मधुर संगीत से भर रहा था, शाऊल का जुनून उस पर हावी हो गया, और उसने दाऊद पर भाला फेंका, यह सोचकर कि भाला उसे बेधता हुआ दीवार में धँस जाएगा, लेकिन परमेश्वर के स्वर्गदूत ने उस घातक हथियार की दिशा बदल दी। दाऊद बच कर निकल गया और अपने घर भाग गया। शाऊल ने गुप्तचरों को भेजा जिससे के प्रातः:काल को जब वह बाहर निकल कर आए तो वे उसे पकड़ ले और उसका जीवन समाप्त कर दे। PPHin 683.2

मीकल ने दाऊद को अपने पिता के उद्देश्य के बारे में सूचित किया। उसने दाऊद से आग्रह किया कि वह अपने प्राणों की रक्षा के लिये वहाँ से भाग जाए, और उसने उसे खिड़की के रास्ते नीचे उतारा, ताकि वह भाग सकं। वह भागकर रामा में शमूएल के पास गया, और भविष्यद्क्ता ने पलायक का स्वागत किया क्योंकि उसे राजा की अप्रसन्नता का डर नहीं था। राजमहल की तुलना में शमृूएल का घर एक शान्त स्थान था। यहाँ पर पहाड़ के बीच, प्रभु द्वारा सम्मीनित दास ने अपना

कार्य चालू रखा। भविष्यद्वक्ताओं का एक समूह उसके साथ था और उनन्‍्होंनें परमेश्वर की इच्छा का गहन अध्ययन किया और शमूएल के मुख से निकलने वाले निर्देशों के शब्दों को श्रद्धापूर्वक सुना। इज़राइल के शिक्षक से प्राप्त शिक्षा दाऊद के लिये अनमोल थी। दाऊद को विश्वास था कि शाऊल की सेना को इस पवित्र जगह पर आक्रमण करने की आज्ञा नहीं दी जाएगी, लेकिन ऐसा प्रतीत हो रहा था कि उस कोधित राजा के प्रकाशहीन मन को कोई स्थान पवित्र नहीं लगता था। दाऊद के साथ शमूएल के सम्बन्ध ने शाऊल की ईर्ष्या को जागृत किया, यह सोचकर कि सम्पूर्ण इज़राइल में परमेश्वर भविष्यद्वक्ता के रूप में श्रद्धा प्राप्त के प्रभाव से उसके के प्रतिद्वंद्धी की उन्नति होती। जब राजा को पता चला कि दाऊद कहाँ है, उसने अपने अधिकारियों को भेजकर उसे गिबा लाने को कहा, जहाँ वह उसे मरवा डालना चाहता था। PPHin 683.3

दूत दाऊद के प्राण लेने के अभिप्राय से वहाँ से गए। लेकिन शाऊल से जो 'महान' था अर्थात परमेश्वर ने उन्हें नियन्त्रित किया। रास्ते में उनका सामना अदृश्य स्वर्गदूतों से हुआ, जैसा कि इज़राइल को श्रापित करने जाते समय बिलाम के साथ हुआ था। वे भविष्य में घटित होने वाले भविष्यसूचक कथनों का उच्चारण करने लगे, और उन्होंने यहोवा के तेजस्व और गौरव की घोषणा की। परमेश्वर ने मनुष्य के कोध का खण्डन किया और बुराई को बाधित करने के उसके सामर्थ्य को प्रकट किया, और अपने दास को स्वर्गदूतों की सुरक्षा के घेरे में रखा। PPHin 684.1

दाऊद को अधीकत करने के लिये उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा था, जब उसे सूचना मिली, लेकिन परमेश्वर की फटकार का आभास होने की बजाय, वह और भी भड़क गया, और उसने अन्य दूत भेजे। इन्हें भी परमेश्वर के आत्मा ने अपने वश में किया, और वे भी पहले वाले दूतों की तरह भविष्यद्वाणी करने लगे। राजा ने तीसरा दूतगण भेजा, लेकिन भविष्यद्वक्ताओं की संगत में आकर वे भविष्यद्वाणी करने लगे, क्योंकि परमेश्वर का प्रभाव उन पर भी हुआ। शाऊल ने स्वयं जाने का निश्चय किया, क्योंकि उसकी भयानक शत्रुता अदम्य हो गई थी। वह दाऊद को मारने के लिये एक और अवसर के लिये न रूकने के लिये संकल्पित था। वह चाहता था कि जैसे ही दाऊद उसकी पहुँच में आए, परिणाम की विंता किये बगैर वह उसे मार डाले। PPHin 684.2

लेकिन रास्ते में उसका सामना एक स्वर्गदूत से हुआ जिसने उसे नियन्त्रित किया। पमरेश्वर के आत्मा ने उसे अपनी शक्ति में जकड़ लिया, और वह परमेश्वर से प्रार्थना करता हुआ आगे बड़ज्ञ और बीच-बीच में भविष्यवाणी करता गया और पवित्र धुन गुनगुनाता गया। उसने मसीह के संसार के उद्धारकर्ता के रूप में आने की भविष्यद्वाणी की। जब वह रामा में शमूएल के घर आया, उसने अपने पद की प्रतीकात्मक बाहरी वस्त्र अलग रखे और दिन-भर पवित्र आत्मा के प्रभाव में शमूएल और उसके शिष्यों के आगे लेटा रहा। लोग इस अद्‌भुत दृश्य को देखने के लिये एकत्रित हो गए और राजा के अनुभव का वृतांत सब जगह सुनाया गया। इस प्रकार फिर से उसके राज के समाप्त

होने के समय इज़राइल में यह लोकोक्ति बन गई कि शाऊल भी भविष्यद्वक्ताओं की श्रेणी में था। PPHin 684.3

एक बार फिर सताने वाला अपने प्रयोजन में विफल रहा। उसने दाऊद को आश्वस्त किया कि उसके प्रति उसकी कोई शत्रुता नहीं, लेकिन दाऊद को राजा के पश्चताप में थोड़ा ही विश्वास था। अवसर पाते ही वहबच निकला, इस डर से कि हीं राजा को मनोदशा बदल कर पहले सी ना हो जाए। उसकाहृदय उसके भीतर घायल हो गया और वह योनातन को एक बार देखने के लिये तड़प उठा। अपने निर्दोष होने के प्रति सचेत, वह राजा के पास गया और उसने एक भावुक निवेदन किया। उसने पूछा, "मैंने क्या किया है? मुझ से क्या पाप हुआ? मैंने तेरे पिता की दृष्टि में ऐसा कौन सा अपराध किया है कि वह मेरे प्राण लेने की ताक में रहता है?" योनातन का विश्वास था उसके पिता ने अपना लक्ष्य बदल लिया था और अब वह दाऊद के प्राण नही लेना चाहता था। और योनातन ने दाऊद से कहा, "ऐसी बात नहीं है, तू मारा न जाएगा। सुन मेरा पिता मुझ को बिना बताए न तो कोई बड़ा काम करता है और न कोई छोटा, फिर वह ऐसी बात को मुझसे क्यों छिपाएगा? ऐसी कोई बात नहीं है।" पमरेश्वर की शक्ति के इतने अपूर्व प्रदर्शनों के पश्चात् योनातन को अपने पिता द्वारा दाऊद को हानि पहुँचाये जाने का विश्वास नहीं हो रहा था, क्योंकि ऐसा करना परमेश्वर के प्रति विरोध प्रकट करता। लेकिन दाऊद को विश्वास न था। अत्यन्त गम्भीरता से उसने योनातन से कहा, "यहोवा के जीवन की शपथ और तेरे जीवन की शपथ, निःसन्देह मेरे और मृत्यु के बीच डग भर का ही अन्तर है।" PPHin 685.1

नये चाँद के समय इज़राइल में एक पवित्र पर्व मनाया जाता था। यह पर्व योनातन और दाऊद के साक्षात्कार के अगले दिन पड़ा। इस भोज पर दोनो नौजवानों को राजा की मेज पर उपस्थित होने की अपेक्षा थी,लेकिन दाऊद उपस्थित होने से डर रहा था; और इसलिये यह प्रबन्ध किया गया कि दाऊद बेतलहम में अपने भाईयों से मिलने जाए। PPHin 685.2

लौटने पर उसे भोज-स्थल से कुछ ही दूरी पर खेत में तीन दिनों तक राजा की दृष्टि से छिपे रहना था, और योनातन को इस बात का शाऊल पर प्रभाव को देखना था। यदि यिशै के पुत्र के ठौर-ठिकाने के बारे में पूछताछ हो तो योनातन को कहना था कि वह अपने पिता के कल द्वारा बलि की विधि में उपस्थित होने के लिये गया था। यदि राजा कोध प्रकट ना करके कहे, "ठीक है" तो दाऊद का दरबार में आना सुरक्षित था। लेकिन यदि वह उसकी अनुपस्थिति पर कोधित हो, तो यह दाऊद के लिये भाग जाने को चिन्ह होगा। PPHin 686.1

भोज के प्रथम दिन राजा ने दाऊद की अनुपस्थिति के बारे में कोई पूछताछ नहीं की, लेकिन जब दूसरे दिन भी उसका स्थान खाली देखा, तो उसने पूछा "क्या कारण है कि यिशै का पुत्र न तो कल भोजन पर आया था, और न आज ही आया है?" योनातन ने शाऊल को उत्तर दिया कि "दाऊद ने बेतलहम जाने के लिये मुझ से विनती करके छूटटी माँगी और कहा, मुझे जाने दे, क्योंकि उस

नगर में हमारे कल का यज्ञ है, और मेरे भाई ने मुझ को उपस्थित होने की आज्ञा दी है। और यदि मुझ पर तेरे अनुग्रह की दृष्टि हो तो मुझे जाने दे कि मैं अपने भाईयों से भेंट कर आऊँ। इसी कारण वह राजा की मेज पर नहीं आया।" जब शाऊल ने यह सुना उसका कोध आपे से बाहर हो गया। उसने घोषणा की कि जब तक दाऊद जीवित रहेगा, योनातन इज़राइल के सिंहासन पर नहीं बैठे और उसे दाऊद को तुरन्त बुलवाने का आदेश दिया, ताकि उसे मृत्यु के घाट उतारा जा सके। "वह क्यों मारा जाए? उसने क्या किया है?" राजा से की गईं विनती ने उसके कोध में भी शैतानी बना दिया और जिस भाले से वह दाऊद को बेधना चाहता था, उसने वही भाला अपने ही पुत्र पर दे मारा। PPHin 686.2

राजपुत्र दुखित होकर कोध में, राजा की उपस्थिति से चला गया, और भोज में अतिथि न रहा। उसकी आत्मा दुख के बोझ से भारी थीजब वह नियत समय पर उस स्थल पर पहुँचा जहाँ दाऊद को उसके प्रति राजा के प्रयोजनों की जानकारी मिलनी थी। दोनो एक-दूसरे के गले लगकर बहुत रोए। राजा के आवेग के अनच्धेपन ने नौजवानों के जीवन पर काली छाया सी डाल दी और उनका दुख की गहराई अवर्णनीय थी। जब वे अलग-अलग रास्तों पर जाने के लिये अलग हुए योनातन के अन्तिम शब्द दाऊद के कानों में पड़े "कुशल से चला जा, क्योंकि हम दोनों ने एक-दूसरे से यह कहकर यहोवा के नाम की शपथ खाई है, कि यहोवा मेरे और तेरे मध्य और मेरे और तेरे वंश के मध्य में सदा रहे। PPHin 686.3

राजा का पुत्र गिबा को लौट गया और दाऊद शीघ्रता से कुछ ही मील की दूरी पर, बिन्यामीन के गोत्र के नगर नोब पहुँचा। मिलाप वाले तम्बू को शिलो से इस स्थान पर लाया गया था और यहाँ पर महायाजक अहीमेलेक पुरोहिती करता था। दाऊद नहीं जानता था कि परमेश्वर के दास के अलावा, वह शरण के लिये किसके पास भाग कर जाए। जब दाऊद चेहरे पर दुख और चिन्ता के भाव लिये, अकेला और जल्दी में महायाजक के पास आया, तो वह उसे अचरज से देखने लगा। उसने दाऊद से वहाँ आने का कारण पूछा। नौजवान में पकड़े जाने का भय बना हुआ था, और इस परमसंकट में उसने झूठ का सहारा लिया। उसने महायाजक से कहा कि उसे राजा द्वारा एक गुप्त कार्य के लिये भेजा गया था, और इस कार्य को अत्यन्त शीघ्रता से किया जाना था। यहाँ पर उसने परमेश्वर में उसके विश्वास की कमी दिखाई, और उसके पाप के कारण महायाजक की मृत्यु हो गईं। यदि तथ्यों को स्पष्ट रूप से बता दिया गया होता, अहीमेलेक को ज्ञात होता कि उसके जीवन की सुरक्षा के लियेकौन सा रास्ता अपनाना था। परमेश्वर बड़े से बड़े खतरे में भी अपने लोगों से सत्यनिष्ठा की अपेक्षा करता है। दाऊद ने याजक से पाँच रोटी माँगी। परमेश्वर के दास के पास पवित्र रोटी की छोड़ और कुछ न था, लेकिन दाऊद उसका सन्देह दूर करने में सफल रहा, और अपनी भूख शान्त करने के लिये उसने रोटी प्राप्त कर ली। PPHin 687.1

अब एक नया खतरा सामने आया। शाऊल के चरवाहों का मुखिया दोएग, जो इब्रियों के विश्वास को मानता था, आराधना के स्थान पर अपनी शपथ पूरी करने आया। दोएग को देखते ही दाऊद ने शीघ्र ही शरण के लिये कोई अन्य स्थान सुरक्षित करने का और बचाव की आवश्यकता पड़ने पर अपनी सुरक्षाके लिये कोई हथियार प्राप्त करने का संकल्प किया। उसने अहीमेलेक से तलवार माँगी और उससे कहा गया कि उसके पास गोलियत की तलवार के अलावा दूसरी तलवार न थी, और उसने वह पवित्र स्थान में स्मारक के रूप में रखी थी। दाऊद ने उत्तर दिया, "उसके तुल्य कोई नहीं, वही मुझे दे।" जिस तलवार का उपयोग उसने पलिश्तियों के श्रवीर को नष्ट करने में किया था, उसे हाथ में पकड़ते ही उसका साहस पुनः उत्पन्न हो गया। PPHin 687.2

वहाँ से भागकर, दाऊद गत के राजा आकीश के पास गया, क्योंकि उसे लगता था कि शाऊल के अधीकृत क्षेत्र से अधिक वह अपने लोगों के शत्रुओं के बीच सुरक्षित था। लेकिन आकीश का सूचित किया गया कि दाऊद वही व्यक्ति था जिसने वर्षा पूर्व पलिश्ती श्ूरवीर को मार डाला था, और अब जिसने इज़राइल के शत्रुओं से शरण माँगी थी, उसने स्वयं को खतरे में पाया। लेकिन पागलपन का ढोंग करते हुए, उसने अपने शत्रुओं को धोखा दिया और वहाँ से बच कर निकल गया। PPHin 688.1

दाऊद की पहली गलती थी कि उसने नोग में परमेश्वर पर विश्वास नहीं किया, और उसकी दूसरी गलती आकीश के सम्मुख उसका धोखा था। दाऊद ने अपने चरित्र के उत्कृष्ट विशेषताओं का प्रदर्शन किया था, और उसकी नैतिकता ने उसे लोकप्रिय बनाया था, लेकिन जब उस पर विपत्ति आईं, उसका विश्वास हिल गया और उसकी मानुषिक कमजोरी सामने आ गयी। वह प्रत्येक व्यक्ति में एक धोखेबाज और गुप्तचर देखता था। एक घोर संकट के समय दाऊद ने परमेश्वर की ओर विश्वास की दृष्टि डालीथी , और पलिश्ती राक्षस को नष्ट कर दिया था। वह परमेश्वर में विश्वास करता था, और उसके नाम से आगे बड़ा। लेकिन जब उसका पीछा किया गया और उसे सताया गया, दुविधा और दुख ने उसकी दृष्टि से स्वर्गीय पिता को दूर कर दिया। PPHin 688.2

लेकिन यह अनुभव दाऊद को बुद्धिमान बना रहा था, क्योंकि इसने उसको उसकी कमजोरी का और पमरेश्वर पर अपनी स्थायी निर्भरता की आवश्यकता का एहसास कराया। निराश और खिन्न आत्माओं पर पमरेश्वर के आत्मा का मीठा प्रभाव कितना अनमोल है, जो हतोत्साहितों को प्रोत्साहित करता है, निर्बल को बलवन्त बनाता है और परमेश्वर के परखे हुए दासों को साहस और सहायता प्रदान करता है। कितना महान है, हमारा परमेश्वर जो दोषियों के साथ नम्रता से व्यवहार करता है और कठिनाई में जब हम अत्यन्त दुखी हो जाते है वह अपनी धैर्यशशीलता और नम्रता प्रकट करता है। PPHin 688.3

परमेश्वर की संतान की ओर से प्रत्येक विफलता उनमें विश्वास की कमी के कारण होती है। जब हमारी आत्माको अन्धकार की परछाईयाँ घेर लेती है, जब हमें मार्गदर्शन और प्रकाश की

आवश्यकता होती है, हमें ऊपर की ओर देखना चाहिये, अन्धकार के परे प्रकाश होता है। दाऊद को एक क्षण के लिये भी परमेश्वर में अविश्वास नहीं दिखाना चाहिये था। उसके पास परमेश्वर में विश्वास करने का कारण था, वह प्रभु का अभिषिक्त था, और खतरों के बीच उसकी सुरक्षा स्वर्गदूतों द्वारा की गई थी, वह अदभूत कार्य करने के लिये साहस की हथियार से लैस था, और यदि वह अपने मन से, उसे कठिन परिस्थिति का निकाल देता, जिसमें उसे डाला गया था, और परमेश्वर के सामर्थ्य और तेज पर विचार करता तो वह मृत्यु की परछाईयों के मध्य भी शांति से रहता; उसे विश्वास के साथ परमेश्वर की इस प्रतिज्ञा को दोहराना चाहिये था, "चाहे पहाड़ हट जाएँ और पहाड़ियाँ टल जाएँ, तौभी मेरी करूणा तुझ पर से कभी न हटेगी, और मेरी शान्तिदायक वाचा न टलेगी यहोवा, जो तुझ पर दया करता है, उसका वही वचन है ।"-यगयाह 54:10। PPHin 688.4

यहूदा के पहाड़ों के बीच, शाऊल द्वारा उसका पीछा किये जाने से शरण प्राप्त की। दाऊद वहाँ से चला, और बच कर अदुल्लाम की गुफा में पहुँच गया, जो ऐसा स्थान था, जहाँ से एक छोटी सी सेना, एक विशाल सेना के विरूद्ध खड़ी रह सकती थी। "यह सुनकर उसके भाई, वरन् उसके पिता का समस्त घराना वहाँ उसके पास गया।" यह जानते हुए कि दाऊद के उनके साथ सम्बन्ध के कारण किसी भी समय शाऊल के निराधार सन्देह उनकी ओर निर्देशित हो सकते थे, दाऊद का परिवार सुरक्षित नहीं महसूस कर सकता था। अब उन्हें ज्ञात हो चुका था- जो इज़राइल में सार्वजनिक तौर पर ज्ञात होने को था- कि परमेश्वर ने अपने लोगों के भावी शासक के रूप में दाऊद को चुना था, और उन्हें विश्वास था कि उसके एक एकांत गुफा में पलायक होने के बावजूद, वे एक ईष्यालु राजा के विवेकशून्य पागलपन के समक्ष होने से अधिक उसके साथ सुरक्षित होंगे। PPHin 689.1

अबदुल्लाम की गुफा में वे प्रेम और करूणा में एक हो गए। यिशै का पुत्र अपनी आवाज और वीणा से मधुर संगीत उत्पन्न करता और गाता, "देखो, यह क्या ही भली और मनोहर बात है कि भाई लोग आपस में मित्र रहे है।"-भजन संहिता 133:1। उसने अपने ही भाईयों के अविश्वास की कड़ावहट को चखा था, और असामंजस्य का स्थान लेने वाले सामजस्यने पलायक के हृदय को प्रसन्न किया। यहाँ पर दाऊद ने सतावनवां भजन लिखा। PPHin 689.2

कुछ ही समय में वे लोग भी दाऊद की टोली के साथ जुड़ गए जो राजा की बलपूर्वक वसूली से बचाना चाहते थे। कई ऐसे थे जिनका इज़राइल के राजा पर से विश्वास उठ गया था, क्योंकि वे देख सकते थे कि उसे प्रभु के आत्मा का मार्गदर्शन प्राप्त नहीं था। "और जितने संकट में पड़ थे, और जितने ऋणी थे, और जितने उदास थे, वे सब उसके पास इकट्ठे हुए, और वह उनका प्रधान हुआ। और कोई चार सौ पुरूष उसके साथ हो गए।" यहाँ दाऊद के पास अपना छोटा सा राज्य था और उसमें व्यवस्था और अनुशासन प्रचलित था। लेकिन पहाड़ों के इस विश्राम स्थल में भी वह

सुरक्षित महसूस नहीं करता था, क्योंकि उसे लगातार प्रमाण मिलते थे कि राजा ने उसकी हत्या का प्रयोजन समाप्त नहीं किया था। PPHin 689.3

उसने मोआब के राजा के पास अपने माता-पिता के लिये शरण स्थान दूँढा और फिर परमेश्वर के एक भविष्यद्वक्ता के द्वारा खतरे की चेतावनी पाकर वह अपने छुपने के स्थान से निकलकर हेरेत के जंगल में चला गया। जिस अनुभव से दाऊद गुजर रहा था, वह अनावश्यक या व्यर्थ नहीं था। पमरेश्वर उसे एक बुद्धिमान योद्धा और एक न्यायसंगत व दयालु राजा बनने के सुयोग्य करने की शिक्षा दे रहा था। पलायकों की टोली के साथ वह शाऊल के कार्यभार को लेने की तैयारी प्राप्त कर रहा था, क्योंकि शाऊल अपने हिंसक आवेग और अन्धी मूर्खता के कारण सरासर अयोग्य हो रहा था। परमेश्वर की सम्मति से दूर होकर वह उस बुद्धिमत्ता और धीरता को कायम नहीं रख सकता, जो उसे न्यायसंगत और बुद्धिमानी से कार्य करने के योग्य बनाते है। पमरेश्वर की बुद्धिमता द्वारा अनियन्त्रित, मनुष्य की बुद्धिमता का अनुसरण करने से बढ़कर भयानक और निराशाजनक कोई भी मूर्खता नहीं हो सकती। PPHin 690.1

शाऊल दाऊद को अबदुल्लम की गुफा में जाल में फंसा कर बन्दी बनाने की तैयारी कर रहा था, और जब पता चला कि दाऊद ने अपना शरण स्थान छोड़ दिया है, राजा अत्यन्त कोधित हुआ। दाऊद का पलायन शाऊल के लिये रहस्य था। उसे विश्वास हो गया कि उसकी छावनी में देशद्रोही थे, जिन्होंने यिशै के पुत्र को उसके षड़यन्त्र निकटता की सूचना दी थी। PPHin 690.2

उसने अपने प्रधानों को इस बात की पुष्टि की कि उसके विरूद्ध षड़यन्त्र रचा गया था और उसने उन्हें सम्मानीय पद और मूल्यवान उपहारों की भेंट की घूस देकर उनसे दाऊद की सहायता करने वालों के नाम जानने का प्रयत्न किया। एदोमी दोएग भोदियं बन गया। महत्वाकांक्षा और लालच, और उसके पापों की निंदा करने वाले याजक के प्रति घृणा से प्रभावित होकर, दोएग ने दाऊद की अहीमेलेक से भेंट करने की सूचना दी, और इस बात को ऐसे प्रस्तुत किया, जिससे परमेश्वर के दास के प्रति शाऊल का कोध भड़क उठा। उस हानिप्रद जीभ के नरक की आग से प्रज्वलित शब्दों ने शाऊल के हृदय के सबसे बुरे आवेग को उत्पन्न किया। कोध में पागल होकर, उसने घोषणा की कि याजक के सम्पूर्ण परिवार को नष्ट कर दिया जाए। और उस भयानक आज्ञा का पाजन किया गया। केवल अहीमेलेक ही नहीं,वरन उसके पिता के घराने के-"सन के वस्त्र का एपोद पहिने हुए पचासी पुरूषों का" राजा के आदेश पर दोएग के हत्यारे हाथों द्वारा घात किया गया। PPHin 690.3

"और याजकों के नगर नोब को उसने स्त्रियों, पुरूषों और बाल-बच्चों, और दृधपीतों, और बेलों, गधों और भेड़-बकरियों समेत तलवार से मार डाला ।" यह था वह जो शाऊल शैतान के नियन्त्रण में होकर कर सकता था। जब परमेश्वर ने कहा था कि अमेलिकियों के पापों का घड़ा भर चुका था और उसने उन्हें पूर्णतया नष्ट करने की आज्ञा दी थी, तो शाऊल ने विनाश किए जाने वालों पर तरस

खाकर उन्हें छोड़ दिया था, लेकिन अब परमेश्वर की आज्ञा के बिना, शैतान के मार्गदर्शन में उसने परमेश्वर के याजकों को मरवा डाला और नोब वासियों का विनाश किया। पमरेश्वर के मार्गदर्शन को अस्वीकार करने वाले मानुषिक हृदय की विकता ऐसी होती है। PPHin 691.1

इस कत्य ने समस्त इज़राइल को भयभीत कर दिया। यह अत्याचार उस राजा ने किया था जिसे उन्होंने चुना था, और यह उसने परमेश्वर का भय न मानने वालों राज्यों के राजाओं की तरह किया था। पवित्र सन्दूक उनके पास था, लेकिन जिन याजकों से उन्होंने पूछताछ की थी, वे तलवार से मार डाले गए थे। आगे क्या होना था?

अध्याय 65—दाऊद की उदारता

यह अध्याय 1 शमूएल 22:20-23, 23—27 पर आधारित है

परमेश्वर के याजकों के नृशंस नरसंहार के पश्चात, "अहीतूब के पुत्र अहीमेलेक का एब्यातार नामक एक पुत्र बच निकला, और दाऊद के पास भाग गया। तब एब्यातार ने दाऊद को बताया कि शाऊल ने यहोवा के याजकों का वध किया है। दाऊद ने एब्यातार से कहा, 'जिस दिन एदोमी दोएग वहाँ था, उसी दिन मैंने जान लिया था कि वह निश्चय शाऊल को बताएगा। तेरे पिता के समस्त घराने के मारे जाने का कारण मैं ही हुआ। इसलिये तू मेरे साथ निडर रह, जो मेरे प्राण का ग्राहक है, वही तेरे प्राण का भी ग्राहक है, परन्तु मेरे साथ रहने से तेरी रक्षा होगी।' PPHin 692.1

अभी भी राजा दाऊद को ढूँढ रहा था और दाऊद को विश्राम करने के लिये और सुरक्षा के लिये कोई स्थान नहीं मिल रहा था। कीला में उसके साहसी जत्थे ने नगर को पलिश्तियों द्वारा बन्दी बनाए जाने से बचाया था, लेकिन वे उन्हीं के द्वारा बचाए गए लोगों के बीच सुरक्षित नहीं थे। कीला से वह जीप नामक जँगल में जाकर रहने लगा। PPHin 692.2

इस समय, जब दाऊद के मार्ग में कुछ ही अच्छे अनुभव थे, वह योनातन के अप्रत्याशित दर्शन से प्रसन्न हुआ, योनातन को उसके शरणस्थान का पता चला था। एक-दूसरे की संगति में बिताए हुए क्षण इन मित्रों के लिये अनमोल थे। उन्होंने अपने विभिनन अनुभवों का वर्णन किया और योनातन ने दाऊद को प्रोत्साहित करते हुए यह कहा, "मत डर, क्योंकि तू मेरे पिता शाऊल के हाथ में नहीं पड़ेगा, और तू ही इज़राइल का राजा होगा, और मैं तेरे नीचे हूँगा, और इस बात को मेरा पिता शाऊल भी जानता है।" जब वे दोनो परमेश्वर के दाऊद के प्रति आश्चर्यजनक व्यवहार के बारे में बात कर रहे थे, पीछा किये जा रहे पलायक को बहुत प्रोत्साहन मिला। "तब उन दोनों ने यहोवा की शपथ खाकर आपस में वाचा बाँधी, तब दाऊद जंगल में रह गया और योनातन अपने घर चला गया।* PPHin 692.3

योनातन से भेंट करने के पश्चात दाऊद ने अपनी वीणा बजाकर महिमा के गीत गाकर अपनी आत्मा को प्रोत्साहित किया- PPHin 692.4

"मेरा भरोसा परमेश्वर परहै,

तुम कैसे मेरे प्राण से कह सकते हो,,

पक्षी के समान अपने पहाड़ पर उड़ जा,

क्योंकि देखो, दुष्ट अपने धनुष चढ़ाते हैं,

और अपने तीर धनुष की डोरी पर रखते है,

कि सीधे मनवालों पर अन्धियारे में तीर चलाएँ,

यदि नीवें ढा दी जाएँ तो धर्मी क्या कर सकता है?

परमेश्वर अपने पवित्र भवन में है,

परमेश्वर का सिंहासन स्वर्ग में हैं,

उसकी आँखे मनुष्य की संतान को नित्य देखती है

और उसकी पलकें उनको जांचती है

यहोवा धर्मी को परखता है,

परन्तु वह उनसे जो दुष्ट हैं

और उपद्रव से प्रीति रखते है

अपनी आत्मा में घृणा करता है।" PPHin 693.1

-भजन संहिता 11:1-5

कीला से भाग कर जब दाऊद पहाड़ी देश के जीप नामक जंगल में रह रहा था, तो जीपियों ने गिबा में शाऊल के पास सूचना भेजी कि उन्हें मालूम था कि दाऊद कहाँ छुपा था, और यह कि वे राजा को उसके आश्रयस्थल तक भी ले जाएँगे। लेकिन उनके आशय की चेतावनी पाकर, दाऊद ने अपना स्थान बदल लियाऔर उसने माओन और मृत सागर के बीच पहाड़ों में शरण ली। फिर से शाऊल को सूचित किया गया कि दाऊद एनगदी के जंगल में है। तब शाऊल समस्त इज़राइलियों में से तीन हजार को छाँटकर दाऊद और उसके जनों को बनेले बकरों की चटटानों पर खोजने गया।" दाऊद के जत्थे में केवल छः सौ पुरूष थे, जबकि शाऊल तीन हजार की सेना लेकर उसकी ओर अग्रसर हुआ। यिशे का पुत्र और उसके जन एक एकान्त गुफा में आगे की कार्यवाही के लिये परमेश्वर के मार्गदर्शन के लिये रूके रहे। जब शाऊल पहाड़ों पर चढ़ रहा था, वह मुड़ा और उसने उस गुफा में अकेले प्रवेश किया, जिसमें दाऊद और उसके जन छिपे हुए थे। जब दाऊद के आदमियों ने यह देखा उन्होंने अपने अगुवे से शाऊल को मार डालने का आग्रह किया। इस तथ्य का कि राजा अब उनके अधिकार में था उन्होंने यह तात्पर्य निकाला कि वह निश्चय ही इस बात का प्रमाण था कि स्वयं परमेश्वर ने शत्रु को उनके हाथों में दे दिया था ताकि वे उसे नष्ट कर सके । एक बार तो दाऊद इस पर विचार करने को प्रलोभित हुआ, लेकिन उसकी अंतरात्मा की आवाज ने उससे कहा, "यहोवा के अभिषिक्त को न छू।" PPHin 693.2

दाऊद के आदमी शाऊल को शान्ति से छोड़ देने को तैयार नहीं थे और उन्होंने अपने सेनापति को परमेश्वर के कहे शब्दों का स्मरण कराया, "में तेरे शत्रु तेरे हाथ में सौंप दूंगा, कि तू उससे मनमाना बर्ताव कर ले। तब दाऊद ने उठकर शाऊल के बागे के छोर को छिपकर काट लिया ।" लेकिन बाद में उसकी अन्तरात्मा ने उसे राजा के वस्त्र को बिगाड़ने भर के लिये झंझोड़ा। PPHin 694.1

शाऊल उठा, और गुफा से बाहर आकर अपनी खोज में निकल पड़ा कि तब ही उसके कानों में चौंका देने वाली आवाज सुनाई पड़ी, हे मेरे प्रभु, हे राजा ।" उसने पीछे मुड़कर देखा कि कौन उसे सम्बोधित कर रहा था, और देखो, वह यिशे का पुत्र था, जिस व्यक्ति को वह उसने अपने अधिकृत करने का लम्बे समय से अभिलाषी था, ताकि उसे मार सके। दाऊद ने उसे अपना स्वामी मान कर झुककर उसे दण्डवत किया। फिर उसने शाऊल को इन शब्दों में सम्बोधित किया, "जो मनुष्य कहते हैं कि दाऊद तेरी हानि चाहता है तू उनकी क्यों सुनता है? देख, आज तूने अपनी आखो से देखा है कि यहोवा ने आज गुफा में तुझे मेरे हाथ में सौंप दिया था, और किसी ने तो मुझ से तुझे मार डालने को कहा था, परन्तु मुझे तुझ पर तरस आया, और मैंने कहा, "मैं अपने प्रभु पर हाथ न उठाऊँंगा, क्योंकि वह यहोवा का अभिषिक्त है। फिर, हे मेरे पिता, देख, अपने बागे को छोर मेरे हाथ में देख, मैंने तेरे बागे का छोर तो काट लिया, परन्तु तुझे घात न किया, इससे निश्चय करके जान ले कि मेरे मन में कोई बुराई या अपराध का बोध नहीं है। मैंने तेरे विरूद्ध कोई अपराध नहीं किया, परन्तु तू मेरा प्राण लेने को मानो उसका अहेर करता रहता है।' PPHin 694.2

जब शाऊल ने दाऊद से यह शब्द सुने वह दीन हो गया और उनकी सच्चाई मानने को विवश हो गया। वह सोच में पड़ गया जब उसे एहसास हुआ कि वह पूर्ण रूप से उसके अधिकार में था जिसकी जान के पीछे वह पड़ा था। दाऊद उसके समक्ष निर्दोष खड़ा था। नम्र भाव से शाऊल ने कहा, "हे मेरे बेटे दाऊद क्या यह तेरा बोल है? तब शाऊल ऊंची आवाज में रोने लगा।" फिर उसने दाऊद से कहा, "तू मुझ से अधिक धर्मी है, तूने तो मेरे साथ भलाई की है, परन्तु मैंने तेरे साथ बुराई की......भला क्या कोई मनुष्य अपने शत्रु को पाकर कुशल से जाने देता है? इसलिये जो तूने आज मेरे साथ किया है इसका अच्छा बदला यहोवा तुझे दे। और अब, मुझे मालूम हुआ है कि तू निश्चय राजा हो जाएगा, और इज़राइल का राज्य तेरे हाथ में स्थिर होगा।" और दाऊद ने शाऊल के साथ वाचा बाँधी कि ऐसे होने के बाद भी वह शाऊल के वंश को उसके बाद नष्ट नहीं करेगा और उसके पिता के घराने में से उसका नाम नहीं मिटाएगा। PPHin 694.3

शाऊल के पिछले किया-कलापों को जानते हुए, दाऊद को राजा के आश्वासनों में विश्वास नहीं था, और ना ही उसकी पश्चतापी अवस्था के बने रहने की आशा थी। इसलिये जब शाऊल अपने घर लौटा, दाऊद पहाड़ो के गढ़ो में ही रहता रहा। PPHin 695.1

शैतान की शक्ति को समर्पित हो जाने वालों की परमेश्वर के दासों के प्रति संजोयी गई शत्रुता कभी-कभी कृपा-दृष्टि और पुनर्मिलन की भावना में परिवर्तित हो जाती है, लेकिन वह परिवर्तन हर बार देर तक नहीं रहता। दुष्ट मनोवृति के लोग जब परमेश्वर के दासों के विरूद्ध दुष्टतापूर्ण बातें कहते हैं, तो यह विश्वास कि वे गलत थे उनके मन में घर कर लेता है। प्रभु का आत्मा उनके साथ संघर्ष करता है और वे परमेश्वर के सम्मुख अपने हृदयों को दीन करते हैं और उनके सम्मुख भी जिनके प्रभाव को वे नष्ट करना चाहते थे, और वे अपना रूख बदल सकते है। लेकिन जब वे फिर से शैतान के सुझावों के लिये द्वार खोलते है, पुराने सन्देह उभर आते है, पुरानी शत्रुता जागृत हो जाती है और वे उसी काम में जुट जाते है जिसके लिये उन्होंने प्रायश्चित किया था और जिसे उन्होंने कुछ समय के लिये छोड़ दिया था। उन्हीं से जिनके समक्ष उन्होंने अपनी गलती का अंगीकार किया था, वे अत्यन्त कड़वाहट के साथ उनकी निन्दा करते हुए और दोष लगाते हुए बुरा कहने लगते है। ऐसा रास्ता अपनाने वाले प्राणियों का उपयोग शैतान पहले से भी ज्यादा शक्ति के साथ कर सकता है, क्योंकि उन्होंने अधिक प्रकाश के विरूद्ध पाप किया हैं। PPHin 695.2

"शमूएल की मृत्यु हो गई, और समस्त इज़राइलयों ने इकटठे होकर उसके लिये छाती पीटी, और उसके घर ही में जो रामा में था उसको मिट्टी दी।" शमूएल की मृत्यु इज़राइल के लिये अपूर्णीय क्षति माना गया। एक महान और अच्छा भविष्यद्वकता और एक विशिष्ट न्यायी मृत्यु को प्राप्त हो गया था, और राज्य का दुख गहरा और हार्दिक था। अपनी किशोरवस्था से शमूएल हृदय की अखण्डता के साथ इज़राइल के आगे-आगे चला था, हालाँकि शाऊल मान्यता प्राप्त राजा था, शाऊल का प्रभाव उससे अधिक था, क्योंकि उसका जीवन इतिहास आज्ञाकारिता, भक्ति और स्वामिभक्ति से परिपूर्ण था। हमने पढ़ा कि उसने जीवन भर इज़राइल का न्याय किया। PPHin 695.3

जब लोगां ने शाऊल की कार्य-प्रणाली की तुलना शमृूएल की कार्य-प्रणाली से की तो उन्होंने देखा कि ऐसे राजा की इच्छा करने में जिसके राज में वे पड़ोसी देशों से भिन्न न होंगे, उन्होंने कितनी बड़ी गलती की थी। कई लोग समाज की स्थिति, जिसमें अधर्म और नास्तिकता किण्वित हो रहे थे, को देख चिंतित थे। उनके शासक के उदाहरण का प्रभाव व्यापक था और इस कारण परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता शमूएल की मृत्यु का शोक मनाना उचित था। PPHin 696.1

राष्ट्र ने अपने पवित्र शिक्षालयों के अध्यक्ष और संस्थापक को खो दिया था, लेकिन यह सब कुछ नहीं था। इज़राइल ने उसे खोया था जिसके पास वे अपनी गम्भीर समस्याओं को लेकर जाने के अभ्यस्त थे, उसे खोया था जिसने उसके लोगों के सर्वोत्तम सरोकारों के पक्ष में परमेश्वर के साथ लगातार मध्यस्थता की थी। शमूएल की मध्यस्थता ने सुरक्षा की अनुभूति दी थी, क्योंकि "धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है।'"-याकूब 5:16। लोगों को अब लग रहा था कि परमेश्वर उन्हें छोड़ रहा था। न्याय को विकृत कर दिया गया और व्यवस्था को गड़बड़ी में बदल दिया गया। PPHin 696.2

जब राष्ट्र आंतरिक क्लेश से जूझ रहा था, जब परमेश्वर का भय मानने वाली शमूएल की सम्मति की सबसे अधिक आवश्यकता महसूस हो रही थी, परमेश्वर ने अपने वृद्ध दास को विश्राम दिया। उसके शान्त विश्राम-स्थल पर दृष्टि डालते समय, और उसे अपने शासक के रूप में अस्वीकार करने की मूर्खता का स्मरण करते हुए, लोगों के विचार शोकमय थे, क्योंकि स्वर्ग के साथ उसका सम्बन्ध इतना घनिष्ठ रहा था कि वह समस्त इज़राइल को यहोवा के सिंहासन से बाँधता प्रतीत होता था। वह शमूएल ही था जिसने उन्हें परमेश्वर से प्रेम करना और उसकी आज्ञा का पालन करना सिखाया था, लेकिन अब जब वह नहीं रहा, लोगों को लगा कि वे उस राजा की दया पर छोड़ दिये गए थे जो शैतान से सम्बद्ध था और जो लोगो को परमेश्वर और स्वर्ग से अलग कर देगा। PPHin 696.3

दाऊद शमूएल को मिट्टी देने के समय उपस्थित न हो सका, लेकिन उसने उसके लिये उतना ही गहरा शोक मनाया जितना कि एक विश्वसनीय पुत्र अपने भक्त पिता के लिये करता है। वह जानता था कि शमूएल की मृत्यु ने शाऊल के कर्मा से नियन्त्रण का एक और बन्धन तोड़ दिया था और वह स्वयं को भविष्यद्वक्ता के जीवित होने के समय सुरक्षित होने की तुलना में कम सुरक्षित महसूस कर रहा था। जब शाऊल का ध्यान शमूएल की मृत्यु के शोक में व्यस्त था, दाऊद ने इस अवसर का उपयोग अपने लिये एक और अधिक सुरक्षित स्थान ढूँढने के लिये किया, और वहवहाँ से पारान के जें ंगल में भाग गया। यहाँ पर उसके एक सौ बीसवां और पच्चीसवाँ भजन लिखा। इस निर्जन बीहड़ में, इस एहसास के साथ कि भविष्यद्वक्ता मर चुका था और राजा उसका शत्रु था, उसने गीत गाया। PPHin 696.4

मुझे सहायता यहोवा की ओर से मिलती है,

जो आकाश और पृथ्वी का सृष्टिकर्ता है

वह तेरे पाँव को टलने न देगा

तेरा रक्षक कभी न ऊँघेगा।

सुन इज़राइल का रक्षक न ऊँघेगा और न सोएगा।

यहोवा सारी विपत्ति से तेरी रक्षा करेगा,

वह तेरे प्राण की रक्षा करेगा।

यहोवा तेरे आने जाने में

तेरी रक्षा अब से लेकर सदा तक करता रहेगा । PPHin 697.1

-भजन संहिता 1421:2-8

जब दाऊद और उसके आदमी पारान के जंगल में थे, उन्होंने सम्पत्ति सम्पन्न नाबाल नामक एक धनवान व्यक्ति के भेड-बकरी और गाय-बैलों को लुटेरों की लूटपाट से बचाया था। नाबाल कालेब का वंशज था, लेकिन उसका स्वभाव अभद्र और कंजूस था। PPHin 697.2

भेडो का ऊन कतरने का यानि अतिथि सत्कार का समय था। दाऊद और उसके आदमियों को खाद्य-सामग्री की बहुत आवश्यकता थी, और समय की परम्परा के अनुसार, यिशे के पुत्र ने नाबाल के पास दस आदमियों को भेजा और उनसे कहा कि वे अपने स्वामी के नाम से उसका अभिवादन करे और उससे ऐसा कहे, "तू चिरंजीव रहे, तेरा कल्याण हो, और तेरा घराना सुखी हो और जो कुछ तुम्हारे है ठीक-ठाक हो। मैंने सुना है कि जो तू ऊन कतर रहा है, तेरे चरवाहे हम लोगों के पास रहे, और न तो हम ने उनकी कुछ हानि की और न उनका कुछ खोया। अपने जवानों से यह बात पूछ ले, और वे तुझ को बताएँगे। अतः इन जवानों पर तेरे अनुग्रह की दृष्टि हो, हम तो आनन्द के समय में आए हैं, इसलिये जो कुछ तेरे हाथ लगे वह अपने दासों और अपने बेटे दाऊद को दे। PPHin 697.3

दाऊद और उसके आदमी नाबाल के भेड़-बकरियों और चरवाहों के लिये सुरक्षा की दीवार समान रहे थे, और अब इस धनवान पुरूष से उसकी बहुतायत में से कुछ आवश्यकता की सामग्री उन्हें प्रदान करने को कहा गया जिन्होंने उसको इतनी महत्वपूर्ण सेवाएँ दी थी। दाऊद और उसके आदमी उन भेड़-बकरियों और गाय-बैलों से काम चला सकते थे, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। उन्होंने शिष्टाचार दिखाया। लेकिन उनकी दया नाबाल के लिये लुप्त हो गई । दाऊद को दिये गए उत्तर ने उसके चरित्र की ओर इशारा किया, "दाऊद कौन है? और कौन है यिशै का पुत्र"? आजकल बहुत से दास अपने अपने स्वामी के पास से भाग जाते हैं। क्या मैं अपना रोटी-पानी और जो पशु में ने अपने ऊन कतरने वालों के लिये मारे है, लेकर ऐसे लोगों को दे दूँ, जिनको मैं नहीं जानता कि कहाँ के है"? PPHin 698.1

जब नौजवान खाली हाथ लौटे और उन्होंने सारा वृतान्त दाऊद को सुनाया, तो वह कोध से भर गया। उसने अपने आदमियों को मुठभेड़ के लिये स्वयं को हथियारबन्ध होने की आज्ञा दी, क्योंकि वह उस व्यक्ति को दण्डित करने के लिये संकल्पित था जिसने उसे उसी के अधिकार से वंचित किया था और उसकी चोट के साथ अपमान को जोड़ दिया था। यह आवेगपूर्ण गतिविधि शाऊल के स्वभाव से मेल रखती थी ना कि दाऊद के स्वभाव से, लेकिन यिशै के पुत्र को दुख के अनुभव में अभी धेर्य के बारे में सीखना बाकी था। PPHin 698.2

नाबाल द्वारा दाऊद के आदमियों को भेज दिये जाने के पश्चात् उसका एक नौकर शीघ्र ही उसकी पत्नी, अबीगैल के पास गया। उसने कहा, "दाऊद ने जंगल से हमारे स्वामी को आशीर्वाद देने के लिये दूत भेजे थे, और उसने उन्हें ललकार दिया। परन्तु वे मनुष्य हम से बहुम अच्छा बर्तात रखते थे, और जब तक हम मैदान में रहते हुए उनके पास आया जाया करते थे, तब तक न तो

हमारी कुछ हानि हुई और न हमारा कुछ खोया। जब तक हम उनके साथ भेड़-बकरिया चराते रहे, तब तक वे रात-दिन हमारी आड़ बने रहे। इसलिये अब सोच विचार कर कि क्या करना चाहिये, क्योंकि उन्होंने हमारे स्वामी की और उसके समस्त घराने की हानि करना ठान लिया होगा। PPHin 698.3

अपने पति की सलाह लिये बगैर और उसको अपना प्रयोजन बताए बिना, अबीगैल ने पर्याप्त सामग्री, गधे पर लदुवाई और अपने नौकरों के साथ आगे-आगे भेजा, और स्वयं दाऊद के जत्थे से मिलने को निकली। वह उनसे पहाड़ की आड़ में मिली। "दाऊद को देख अबीगैल फर्ती करके गधे पर से उतर पड़ी, और दाऊद के सम्मुख मुहँ के बल भूमि पर गिरकर उसने उसे दण्डवत किया। फिर वह उसके पैरों में गिरकर कहने लगी, 'हे मेरे प्रभु, यह अपराध मेरे ही सिर पर हो, तेरी दासी तुझ से कुछ कहना चाहती है, और तू अपनी दासी की बातों को सुन ले।" अबीगैल ने दाऊद को उतनी ही श्रद्धा से सम्बोधित किया मानो वह एक मुक्टघारी सम्राट से बात कर रही हो। नाबाल ने उपेक्षा में कहा था, "दाऊद कौन है?" लेकिन अबीगैल ने उसे 'मेरे प्रभु! कहकर सम्बोधित किया। उसने नम्र शब्दों के प्रयोग सेदाऊद के कूद्ध भावों को शान्त करने का प्रयत्न किया, और अपने पति के पक्ष में उससे विनती की। अभिमान या दिखावे से नहीं, वरन् परमेश्वर के प्रेम और बुद्धिमता से परिपूर्ण, अबीगैल ने अपने घराने के प्रति अपनी गहरी श्रद्धा को प्रकट किया, और उसने दाऊद को स्पष्ट रूप से बताय कि उसके पति का दयाहीन व्यवहार किसी भी प्रकार निजी अपमान के तौर पर उसके विरूद्ध पूर्वविचारित नहीं था, वरन् उसके स्वार्थी और अप्रसन्न स्वभाव का आवेग मात्र था। PPHin 699.1

"और अब, हे मेरे प्रभु, यहोवा के जीवन की शपथ, और तेरे जीवन की शपथ, कि यहोवा ने जो तुझे खून से और अपने हाथ के द्वारा अपना बदला लेने से रोक रखा है, इसलिये अब तेरे शत्रु और मेरे प्रभु की हानि के चाहने वाले नाबाल ही के समान ठहरे।" अबीगैल ने दाऊद को उसके उतावले प्रयोजन से पीछे हटने के लिये दिए गए तर्क का श्रेय स्वयं नहीं लिया, वरन् सारा आदर और सारी महिमा परमेश्वर को दी। फिर उसने मेलबलि के रूप से दाऊद के आदमियों को बहुत सारी सामग्री दी और फिर भी विनती की मानो प्रधान के आकोश को उकसाने के लिये वह उत्तरदायी थी। PPHin 699.2

अबीगैल ने कहा, "अपनी दासी का अपराध क्षमा कर, क्योंकि यहोवा निश्चय मेरे प्रभु का घर बसाएगा और स्थिर करेगा, इसलिये कि मेरा प्रभु यहोवा की ओर से लड़ता है, और जन्म भर तुझ में कोई बुराई नहीं पाई जाएगी।" निहितार्थ द्वारा अबीगैल ने उस पद्धति को प्रस्तुत किया जिसका अनुसरण दाऊद को करना चाहिये था। उसे प्रभु की लड़ाईयाँ लड़नी चाहिये थी। हालाँकि उसे देशद्रोही के समान सताया जा रहा था, उसे व्यक्तिगत अन्याय के लिये प्रतिशोध नहीं लेना था। वह बोली "यद्यपि एक मनुष्य तेरा पीछा करने और तेरे प्राण लेने को उठे, तौभी मेरे प्रभु का प्राण तेरे

परमेश्वर यहोवा की जीवनरूपी गठरी में बँधा रहेगा और तेरे शत्रुओं के प्राणों को वह मानों गोफन में रख कर फेंक देगा। जब यहोवा मेरे प्रभु के लिये यह समस्त भलाई करेगा जो उसने तेरे विषय में कही है, और तुझे इज़राइल पर प्रधान करके ठहराएगा, तब तुझे इस कारण पछताना न होगा, या मेरे प्रभु का हृदय पीड़ित न होगा कि तूने अकारण खून किया, और प्रभु से भलाई करे तब अपनी दासी को स्मरण करना"- 1 शमूएल 25:29-31। PPHin 699.3

यह शब्द केवल उसी के होठों से आ सकते थे जिसने ऊपर से बुद्धिमता प्राप्त की हो। अबीगैल की धाम्रिकता, एक फूल की सुगन्ध की तरह, अनजाने में चेहरे, बातचीत और कार्यों में प्रवाहित होती थी। परमेश्वर के पुत्र का आत्मा उसके प्राण में बसता थी। उसकी अनुग्रहकारी बोलचाल, दया और शान्ति से परिपूर्ण एक अलौकिक प्रभाव बिखेरती थी। दाऊद के मन को बेहतर प्रेरणा मिली, और जब उसने अपने उतावले प्रयोजन के परिणाम के बारे में सोचा तो वह कॉप उठा। मत्ती 5:9में लिखा है, "धन्य है वे जो मेल कराने वाले है, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएँगे।" अच्छा होता यदि इज़राइल की इस स्त्री के समान बहुत सी स्त्रियाँ होती जो कपित भवानाओं को शान्त करती, उतावले आवेग को रोकती और सलू्निर्दशित बुद्धिमत्ता और शान्तिपूर्ण शब्दों से बड़ी-बड़ी बुराईयों का अन्त करती। PPHin 700.1

एक समर्पित मसीही जीवन सदैव ही प्रकाश, सुख और शान्ति बिखेरता है। उसमें शुद्धता, चातुर्य, निष्कपटता और उपयोगिता चरितार्थ होता है। वह उस निस्वार्थ प्रेम से नियन्त्रित होता है जो प्रभाव को पवित्र करता है। यह जीवन मसीह से भरपूर होता है और इसका धारक जहाँ भी जाता है वहां वह प्रकाश का मार्ग छोड़ जाता है। अबीगैल एक विवेकपूर्ण सुधारक और सलाहकार थी। उसके प्रभाव और तर्क की शक्ति से दाऊद का जुनून शान्त हो गया। उसे विश्वास हो गया कि उसने एक अविवेकी पद्धति अपनायी थी और वह अपनी ही भावना पर नियंत्रण खो बैठा था। PPHin 700.2

दीन हृदय के साथ उसने ताड़ना को ग्रहण किया जो उसी के शब्दों के अनुरूप है, "धर्मी मुझ को मारे तो यह कृपा ठहरेगा।"-भजन संहिता 141:5। उसने अबीगैल को धन्यवाद और आशीर्वाद दिया क्योंकि उसने उसे धर्मसंगत परामर्श दिया था। कई है ऐसे जो, ताड़ना प्राप्त करके, उसे प्रशंसनीय मानते है यदि वे ताड़ना को बिना धैर्य खोए प्राप्त करते है, लेकिन कितने कम है जो सुधार को हृदय की कृतज्ञता के साथ स्वीकार करते हैं और उन्हें धन्य ठहराते हैं जो उन्हें पापमय पद्धति को अपनाने से बचाना चाहते हैं। PPHin 701.1

जब अबीगैल घर लौटी तो उसने देखा कि नाबाल और उसके अतिथि एक भव्य भोज का आनन्द ले रहे थे, जिसे उन्होंने उन्मत आनन्दोत्सव के दृश्य में बदल दिया था। दूसरी सुबह तक उसने अपने पति को उस घटना के बारे में नहीं बताया जो दाऊद के साथ उसके साक्षात्कार के दौरान हुई थी। नाबाल हृदय से कायर था, और जब उसे एहसास हुआ कि अपनी मूर्खता के कारण

वह मृत्यु के कितना निकट था, उसे लकवा मार गया। इस भय से दाऊद प्रतिशोध के अपने लक्ष्य का छोड़ेगा नहीं, वह अत्यन्त भयभीत हो गया और असहाय जड़ता की अवस्था में गिर पड़ा और दस दिन पश्चात मृत्यु को प्राप्त हो गया। वह जीवन जो परमेश्वर ने उसे दिया था, संसार के लिये श्राप मात्र था। जब वह आनन्द में मग्न था, परमेश्वर ने, जैसे दृष्टान्त में धनवान व्यक्ति से कहा था, नाबाल से कहा, "इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा।" - लूका 12:20। PPHin 701.2

तत्पश्चात् दाऊद ने अबीगैलसे विवाह कर लिया। वह पहले से ही एक पत्नी का पति था लेकिन उसके समय के राष्ट्रीय रीति रिवाजों ने उसकनिर्णय को विकृत कर दिया थाऔर उसके कर्मों को प्रभावित किया था। इस संसार की प्रथाओं का अनुसरण करने की गलती महापुरूष और भले मानुष भी करते हैं। एक से अधिक पत्नियों के साथ विवाह करने के दुष्परिणाम का एहसास दाऊद को जीवन भर होता रहा। PPHin 701.3

शमूएल की मृत्यु पश्चात्, दाऊद कुछ महीनों तक शान्ति से रहा। यह जीपी लोगों के एकांत स्थान में लौट गया, लेकिन राजा की कृपा-दृष्टि प्राप्त करने की आशा में, इन शत्रुओं उसे दाऊद के छपने के स्थान की सूचना दे दी। इस ज्ञान ने शाऊल के सीने में सोए हुए आवेग के राक्षस को जगा दिया। लेकिन कुछ मैत्रीपूर्ण गुप्तचरों ने यिशै के पुत्र को सूचना दी कि शाऊल फिर से उसका पीछा कर रहा था, और अपने कुछ आदमियों के साथ अपने शत्रु का ठिकाना ढूंढने निकल पड़ा। रात में, जब वह सावधानी से आगे बड़ रहा था, वे छावनी तक पहुँच गए और उन्होंने अपने सामने राजा और उसके परिचारकों के तम्बू देखे। छावनी में सब चुपचाप सोए थे, इसलिये उन्हें किसी ने नहीं देखा। दाऊद ने अपने मित्रों को शत्रु के मध्य जाने को कहा। "मेरे साथ उस छावनी में शाऊल के पास कौन चलेगा"? इस प्रश्न के उत्तर में अबीशै ने कहा, "तेरे साथ मैं चलूँगा। PPHin 701.4

पहाड़ों की आड़ में दाऊद और उसके साथी ने शत्रु की छावनी में प्रवेश किया। वे शत्रुओं की सही संख्या सुनिश्चित कर रहे थे, कि उन्होंने सोए हुए शाऊल को देखा, उसका भाला धरती में गढ़ा हुआ था और उसके सिरहाने पानी की सुराही थी। उनके चारों और योद्धा गहरी नींद में सोए हुए थे। अबीशे ने अपना भाला उठाया और दाऊद से कहा, "परमेश्वर ने आज तेरे शत्रु को तेरे हाथ में कर दिया है, इसलिये अब मुझे शाऊल को उसके भाले से ही जमीन में टांक देने दे। मैं इसे एक ही बार में मार दूँगा और मुझे उसे दूसरी बार मारनान पड़ेगा।" वह अनुमति के शब्द की प्रतीक्षा में था कि उसके कानों में यह धीमी सी आवाज आई, "उसे नष्ट न कर, क्योंकि यहोवा के अभिषिक्त पर हाथ डालकर कौन निर्दोष ठहर सकता है?.... यहोवा के जीवन की शपथ यहोवा ही उसको मारेगा या वह अपनी मृत्यु से मरेगा, या वह लड़ाई में जाकर मर जाएगा। यहोवा ना करे कि मैं अपना हाथ यहोवा के अभिषिक्त पर उठाऊं, अब उसके सिरहाने से भाला और पानी की सुराही उठा ले, और हम यहाँ से चले जाए तब दाऊद ने भाले और पानी की सुराही को शाऊल के सिरहाने से उठा लिया, और वे चले गए। किसी ने इसे नहीं देखा और न जाना, और न कोई जागा, क्योंकि वे सब इस

कारण सोए हुए थे कि यहोवा की ओर से उनमें भारी नींद समा गई थी। कितनी आसानी से प्रभु सबसे बलवन्त को निर्बल कर देता है, सबसे बुद्धिमान से विवेक को दूर कर देता है, और सबसे सर्तक की युक्क्ति को निष्फल कर देता है। PPHin 702.1

जब दाऊद छावनी से सुरक्षित दूरी पर था, वह पहाड़ की चोटी पर खड़ा हुआ और उसने उन लोगों को, और अब्नेर को पुकार कर कहा, "क्या तू साहसी मनुष्य नहीं है? इज़राइल में तेरे तुल्य कौन है? तूने अपने स्वामी राजा की चौकसी क्यों नही की? एक जन तो तेरे स्वामी राजा को नष्ट करने घुसा था। जो काम तूने किया है वह अच्छा नहीं है। यहोवा के जीवन की शपथ तुम लोग मारे जाने के योग्य हो, क्योंकि तुम ने अपने स्वामी यहोवा के अभिषिक्त की चौकसी नहीं की। अब देख, राजा का भाला और पानी की सुराही जो उसके सिरहाने थी वे कहाँ है? तब शाऊल ने दाऊद का बोल पहचानकर कहा, "हे मेरे बेटे दाऊद, क्या यह तेरी आवाज है? दाऊद ने कहा, "हाँ मेरे स्वामी व राजा, यह मेरी ही आवाज है। और उसने कहा, मेरा स्वामी अपने दास का पीछा क्यों करता है? मैंने क्या किया है और मुझ से कौन सी बुराई हुई है? मेरे स्वामी और राजा मेरी बात सुन।" राजा के होठों से फिर स्वीकृति के शब्द निकले, "मैंने पाप किया है, हे मेरे बेटे दाऊद, लौट आ, मेरा प्राण आज के दिन तेरी दृष्टि में अनमोल ठहरा, इस कारण मैं फिर तेरी कुछ हानि न करूंगा, सुन मैंने मूर्खता की है, और मुझ से बड़ी भूल हुई है।" और दाऊद ने उत्तर देते हुए कहा, "हे राजा, भाले को देख! कोई जवान इधर आकर इसे ले जाए।" हालाँकि शाऊल ने प्रतिज्ञा की थी, "मैं तुझे कोई हानि नहीं पहुँचाऊंगा" दाऊद ने स्वयं को उसके अधीकृत नहीं किया। PPHin 702.2

राजा के जीवन के प्रति दाऊद के आदर भाव की दूसरी घटना ने शाऊल के मन में गहरा प्रभाव डला और उसने और दीनता के साथ अपने पाप को स्वीकार किया। ऐसी करूणा ने उसे कायल और आश्चर्यवकित कर दिया। दाऊद से विदा लेते हुए वह बोला "हे मेरे बेटे दाऊद, तू धन्य है, तू बड़े-बड़े काम करेगा और तेरे काम सफल होंगे।" लेकिन यिशै के पुत्र को राजा की इसी मन:स्थिति में अधिक समय तक रहने की आशा नहीं थी। PPHin 703.1

शाऊल के साथ समझौते के प्रति दाऊद निराशा था। उसे प्रतीत होता था कि अन्त में वह निश्चय ही शाऊल की घृणा का शिकार हो जाएगा और इस कारण उसने फिर से पलिश्तियों के देश में शरण लेने का संकल्प किया। अपने नीचे छः सौ पुरूषों सहित वह गत के राजा आकीश के पास चला गया। PPHin 703.2

इस निष्कर्ष पर, कि शाऊल निश्चय ही अपने हिंसक प्रयोजन को सम्पन्न करेगा, दाऊद परमेश्वर की सम्मति के बगैर पहुँचा था। जब शाऊल षड़यन्त्र रच रहा था और उसके विनाश को सम्पन्न करना चाहा रहा था, प्रभु दाऊद के लिये राज्य को सुरक्षित करने के लिये कार्य कर रहा था। परमेश्वर अपनी योजनाओं को निश्चय ही सम्पन्न करता है भले ही वे मनुष्य की दृष्टि के लिये रहस्यमयी हो। मनुष्य परमेश्वर के तौर-तरीके को नहीं समझ सकता, और प्रकट रूप को देखकर, परमेश्वर की

अनुमति से आने वाली विपत्तियों या परख या परीक्षाओं को स्वयं के लिये प्रतिकूल और हानिप्रद समझता है। इसी प्रकार दाऊद ने प्रकट रूप को देखा, और परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं की ओर नहीं देखा। उसे इस बात का भी सन्देह था कि वह सिंहासन पर बैठेगा या नहीं। लम्बे समय के संघर्ष ने उसके विश्वास और उसके धैर्य को कम कर दिया था। PPHin 703.3

प्रभु ने दाऊद को इज़राइल के सबसे कट्टर शत्रु पलिश्तियों की सुरक्षा के लिये नहीं भेजा था। यही राष्ट्र अन्त तक उसके सबसे बड़े शत्रुओं में से एक था, लेकिन फिर भी वह आवश्यकता पड़ने पर सहायता के लिये उनके पास दौड़ा। शाऊल और अपने समर्थकों में पूर्णतया विश्वास खोकर, उसने स्वयं को शत्रुओं की दया के आगे समर्पित कर दिया। दाऊद एक शूरवीर योद्धा था, और उसने स्वयं को एक बुद्धिमान और सफल योद्धा प्रमाणित किया था, लेकिन पलिश्तियों के पास जाकर वह प्रत्यक्ष रूप से अपने ही भलाई के विरूद्ध कार्य कर रहा था। परमेश्वर ने दाऊद को यहूदा में सत्ता कायम करने के लिये नियुक्त किया था, और इस विश्वास की कमी के कारण उसने परमेश्वर की आज्ञा के बिना अपने कर्तव्य-स्थल को त्याग दिया। PPHin 704.1

दाऊद के अविश्वास से परमेश्वर का अपमान हुआ। पलिश्ती शाऊल और उसकी सेनाओं से अधिक दाऊद से डरते थे, और स्वयं को पलिश्तियों की सुरक्षा के निहित कर, दाऊद ने उन्हें उसके अपने लोगों की दुर्बलता को प्रकट किया। इस प्रकार उसने निदयी शत्रुओं को इज़राइल का उत्पीड़न करने के लिये प्रोत्साहित किया। दाऊद को परमेश्वर के लोगों के पक्ष में खड़ होने के लिये नियुक्त किया गया था, और प्रभु नहीं चाहता था कि उसके दास उसके लोगों की दुर्बलताओं का खुलासा करके या उनके कशल-क्षेम के प्रति उदासीनता दिखाकर दुष्टों को प्रोत्साहित करे। इसके अतिरिक्त, उसके भाई-बन्धुओं को ऐसा लगा कि वह मूर्तिपूजकों के पास उनके देवी-देवताओं की पूजा अर्चाना करने गया है। इस कृत्य से उसने अपने अभिप्राय के गलत समझे जाने का अवसर प्रदान किया, और कई लोगों की धारणाएं उसके प्रतिकूल हो गई। जो शैतान उससे करवाना चाहता था, उसने वहीं किया और पलिश्तियों की शरण में जाकर, दाऊद ने परमेश्वर और उसके लोगों के शत्रुओं को अत्यन्त प्रसन्न किया। दाऊद ने परमेश्वर की आराधना करना नहीं छोड़ा और ना ही उसके उद्देश्य के प्रति उसकी आस्था में कमी आईं, लेकिन उसने अपनी निजी सुरक्षा के लिये परमेश्वर में अपने विश्वास की बलि चढ़ा दी और इस प्रकार उस सत्यनिष्ठ और धर्मपरायण चरित्र को कलंकित किया जो परमेश्वर अपने दासों में चाहता है। PPHin 704.2

पलिश्तियों के राजा ने दाऊद का हार्दिक स्वागत किया। इस स्वागत के सौहाद का एक कारण यह था कि राजा दाऊद को पसन्द करता था और दूसरा कि यह कि एक इब्री का उसकी शरण में आना उसके अभिमान के लिये सन्तोषजनक था। आकीश के राज्य में वह विश्वासघात के प्रति सुरक्षित महसूस करता था। वह अपने परिवार, अपनी धन-सम्पत्ति और अपने आदमियों को भी वहाँ ले आया, और सभी को ऐसा लगता था कि वह पलिश्ती प्रदेश में स्थायी रूप से बस जाने के

लिये आया था। यह सब आकीश के लिये बड़ा सुखदायक था, जिसने पलायक इज़राइलियों की सुरक्षा करने की प्रतिज्ञा की थी। PPHin 705.1

प्रदेश में निवास-स्थान के लिये दाऊद के निवेदन करने पर, राजा ने उदारतापूर्वक उसे राजसी शहर में दूर सम्पत्ति के रूप में सिकलग दिया। दाऊद जानता था कि मूर्तिपूजकों के प्रभाव में रहना उसके और उसके आदमियों के लिये खतरनाक होगा। जो नगर पूर्ण रूप से उन्हीं के लिये अलग किया था, उसमें वे गत की तुलना में अधिक स्वतन्त्रता के साथ अपने पमरेश्वर की आराधना कर सकते थे, क्योंकि गत में मूर्तिपूजक विधियाँ केवल बुराई और कष्ट का स्रोत प्रमाणित होते। PPHin 705.2

इस एकान्त नगर में रहते हुए, दाऊद ने गशूरियों, गिर्जियों और अमालेकियों पर चढ़ाई की, और उसने गत में समाचार लाने के लिये किसी को जीवित नहीं छोड़ा। जब वह युद्ध से लौटा तो उसने आकीश को यह समझाया कि वह अपनी ही जाति, यहूदियों के विरूद्ध युद्ध करता रहा था। इस बहकावे से वह पलिश्तियों के हाथ को प्रबल करने का साधन हुआ, क्योंकि राजा ने कहा, "यह अपने इज़राइली लोगों की दृष्टि में अधिक घृणित हुआ है, इसलिये यह सदा के लिये मेरा दास बना रहेगा।" दाऊद जानता था कि उन मूर्तिपूजक जातियों का विनाश परमेश्वर की इच्छा थी, और वह जानता था कि उसे इस कार्य के लिये नियुक्त किया गया था, लेकिन जब उसने छल का अभ्यास किया, वह परमेश्वर की सम्मति के अनुसार नहीं चल रहा था। PPHin 705.3

"उन दिनों में पलिश्तियों ने इज़राइल से लड़ने के लिये अपनी सेना इकट्ठी की। तब आकीश ने दाऊद से कहा, "निश्चय जान कि तुझे अपने जनों समेत मेरे साथ सेना में जाना होगा।" दाऊद का अपने लोगों पर हाथ उठाने का कोई इरादा नही था, लेकिन उसे यह नहीं मालूम था कि उसे कौन सा रास्ता अपनाना है, जब तक कि परिस्थितियाँ उसके कर्तव्य का संकेत नहीं दे। उसने टाल-मटोल करके राजा को उत्तर देते हुए का, "इस कारण तू जान लेगा कि तेरा दास क्या करेगा ।" आकीश ने इन शब्दों को आने वाले युद्ध के संकट में सहायता की प्रतिज्ञा समझा और उसने दाऊद को बहुत सम्मानित करने की और उसे पलिश्ती दरबार में उच्च पद देने की प्रतिज्ञा की। PPHin 705.4

परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के प्रति दाऊद का विश्वास कुछ-कुछ डगमगाया था, लेकिन उसने स्मरण किया कि शमूएल ने उसे इज़राइल का राजा अभिषिक्त किया था। उसने उन विजयों का स्मरण किया, जो बीते दिनों में परमेश्वर ने उसे उसके शत्रुओं के विरूद्ध दी थी। उसने शाऊल के हाथ से बचाने में परमेश्वर की दयालुता की समीक्षा की और एक पवित्र अमानत के साथ विश्वासघात न करने का संकल्प किया। हालाँकि इज़राइल के राजा ने उसका प्राण लेना चाहा था, दाऊद ने अपनी सेना को उसके लोगों के शत्रुओं के साथ नहीं जोड़ा। PPHin 706.1

अध्याय 66—शाऊल की मृत्यु

इज़राइल और पलिश्तियों के बीच फिर से युद्ध घोषित हुआ। यिजत्रेल के उत्तरी छोर पर "पलिश्ती इकट्ठे हुए, और उन्होंने शूनेम में पड़ाव डाला" जबकि शाऊल और उसकी सेनाओं ने कुछ मील दूर, तराई की दक्षिण सीमा पर गिलबो पर्वत के तले अपना डेरा डाला। इसी तराई से गिदोन ने अपने तीन सौ पुरूषों सहित, मिद्यानी सेना को खदेड़ भगाया था। लेकिन जिस भावना ने इज़राइल को छुटकारा दिलाने वाले को प्रेरित किया था, वह उस भावना से बहुत भिन्न थी जिसने राजा के हृदय को प्रभावित किया था। गिदोन याकूब के सामर्थी परमेश्वर में दृढ़ विश्वास के साथ आगे बड़ा था, लेकिन शाऊल स्वयं को अकेला और असुरक्षित महसूस कर रहा था क्योंकि परमेश्वर ने उसे छोड़ दिया था। जब उसने फैली हुई पलिश्ती सेना पर दृष्टि डाली, "वह डर गया, और उसका मन अत्यन्त भयभीत होकर काँप उठा।" PPHin 707.1

शाऊल को पता चला था कि दाऊद और उसकी सेना पलिश्तियों के साथ थी, और उसे लगा कि यिशे का पुत्र इस अवसर का लाभ उठाकर उस पर किये गए अत्याचार का प्रतिशोध लेगा। वह अत्यन्त दुखी था। उसी के अविवेकीय आवेग ने उसे परमेश्वर द्वारा चुने हुए को नष्ट करने के लिये उकसाया था और सम्पूर्ण राष्ट्र को खतरे में डाल दिया था। दाऊद का पीछा करने में उसने अपने राष्ट्र की सुरक्षा की उपेक्षा की थी। उसकी असुरक्षित अवस्था का लाभ उठाकर पलिश्ती नगर के मध्य तक पहुँच गये। दाऊद को नष्ट करने के लिये, शैतान शाऊल से दाऊद को ढूंढने का भरसक प्रयत्न करने का आग्रह कर रहा था, यह वही दुष्टात्मा थी जिसने पलिश्तियों को शाऊल के विनाश और परमेश्वर के लोगों की पराज्य के लिये अवसरवादी होने की प्रेरणा दी थी। कितनी बार शैतान द्वारा इसी नीति को प्रयोग में लाया जाता है। वह कलीसियाओं में कलह और ईर्ष्या की चिंगारी सुलगने के लिये अपवित्र हृदयों को प्रभावित करता है, और फिर, परमेश्वर के लोगों की विभाजित अवस्था का लाभ उठाकर, वह अपने दूतों को उनका विनाश करने के लिये जगाता है। PPHin 707.2

प्रातः:काल शाऊल को पलिश्तियों से युद्ध करना था। आने वाले विनाश की काली छाया ने उसे घेर लिया, वह सहायता और मार्गदर्शन के लिये तड़प उठा। लेकिन उसका परमेश्वर से सम्मति माँगना व्यर्थ ठहरा। PPHin 707.3

"प्रभु ने न तो स्वप्न के द्वारा उसके उत्तर दिया और न ऊरीम के द्वारा और न भविष्यद्क्ताओं के द्वारा।/ दीनता और ईमानदारी से उसके पास आने वाले एक भी जन से वह मुहँ नहीं फिराता। फिर उसने शाऊल को उत्तर क्यों नहीं दिया? राजा ने अपने ही कृत्यों द्वारा परमेश्वर से पूछने के सभी तरीकों के लाभ को खो दिया था। उसने भविष्यवक्ता शमूएल की सम्मति का तिरस्कार किया था, उसने परमेश्वर के चुने हुए, दाऊद को प्रवास दिया था, उसने परमेश्वर के याजकों की हत्या की

थी। क्या वह स्वर्ग द्वारा नियत किये गए संपर्क के माध्यमों को काट डालने के बाद भी परमेश्वर के उत्तर देने की अपेक्षा कर सकता था? पाप के द्वारा उसने अनुग्रह के आत्मा को दूर कर दिया था, और क्या वह परमेश्वर से स्वप्नों और रहस्योदघाटनों द्वारा उत्तर प्राप्त कर सकता था? शाऊल दीनता और पश्चताप के साथ ईश्वर की ओर नहीं फिरा। वह पापों के लिये क्षमा या परमेश्वर के साथ पुर्नमिलन के लिये नहीं, वरन् शत्रुओं से छुटकारे का प्रयास कर रहा था। अपने व्यक्तिगत हठ और विद्रोह के कारण उसने स्वयं को परमेश्वर से अलग कर लिया था। प्रायश्चित के अभाव में वापसी सम्भव नहीं थी, लेकिन अपनी वेदना और निराशा में अभिमानी सम्राट ने अन्य माध्यम से सहायता प्राप्त करने का निश्चय किया। PPHin 708.1

"तब शाऊल ने अपने कर्मचारियों से कहा, "मेरे लिये किसी ऐसी स्त्री का पता लगाओ जो ओझा हो, ताकि मैं उसके पास जाकर उससे पूछ सकँू।" शाऊल को प्रेत विद्या की विशेषता का पूरा ज्ञान था। यह प्रभु द्वारा स्पष्ट रूप से निषेध किया गया था, और जो भी इसकी अपवित्र विद्या का अभ्यास करता था, वह मृत्यु की दण्डाज्ञा प्राप्त करता था। शमूएल के जीवित होने के समय, शाऊल ने आदेश दिया था कि सभी ओझाओं और भूत सिद्धि करने वालों को मृत्यु दण्ड दिया जाए, किन्तु अब निराशा से उत्पन्न दुस्साहस के कारण उसने उस ओझा का सहारा लिया जिसे उसने घृणित व्यक्ति के तौर पर निन्दनीय ठहराया था। PPHin 708.2

राजा को बताया गया कि एन्दोर में एक ओझा रहती थी। इस स्त्री ने स्वयं को शैतान के नियन्त्रण में समर्पित कर दिया था और वह उसकी योजनाओं को सम्पन्नकरती थी, और बदले में 'बुराई का राजकुमार" उसके लिये आश्चर्यकर्म करता था और उस पर गुप्त बातें प्रकट करता था। PPHin 708.3

शाऊल भेष बदलकर, केवल दो सेवकों सहित, रातोंरात उस जादूगरनी के आश्रय को ढूंढने निकल पड़ा। क्या ही दयनीय दृश्य था! इज़राइल के राजा को शैतान अपनी इच्छा से बन्दी बनाकर लिये जा रहा था। मनुष्य के पदचाप के लिये कितना अन्धकारमय था वह पथ जो उसके द्वारा चुना गया जो परमेश्वर के आत्मा के पवित्र प्रभाव का प्रतिशोध करके, लगातार मनमानी करता रहा था। उसके दासत्व से भयानक और कौन सा बन्धन इतना भयानक हो सकता है, जो स्वयं को सबसे बुरे तानाशाह यानि स्वयं के नियन्त्रण में दे देता है। परमेश्वर में विश्वास और उसकी इच्छा का पालन ही वे शर्ते थी जिनके आधार पर शाऊल इज़राइल का राजा हो सकता था। यदि वह इन्हें अपनी शासन-अवधि में बनाए रखता, तो उसका राज्य सुरक्षित रहता। पमरेश्वर उसका मार्गदर्शक होता और सर्वशक्तिमन उसकी ढाल। परमेश्वर ने बहुत दिनों तक के साथ धेर्य रखा था, और हालाँकि उसके आग्रह और विद्रोह ने उसकी आत्मा में पवित्र वाणी को शान्त कर दिया था, उसके पास प्रायश्चित का अवसर था। लेकिन जब संकट के समय वह परमेश्वर को पीठ दिखाकर शैतान के साथी से प्रकाश प्राप्त करने गया, उसने उस अन्तिम डोर को भी काट डाला जो उसे उसके सृष्टिकर्ता से

बाँधे हुए थी, उसने स्वयं को उस दुष्टात्मा की शक्ति के अधीन कर दिया जिसका अभ्यास उसपर वर्षों से किया जा रहा था, और जो उसे विनाश की अन्तिम सीमा पर ले आयी थी। PPHin 708.4

अन्धकार की आड़ में शाऊल और उसके सेवकों ने तराई को पार किया, और पलिश्ती सेना के पास से निकलते हुए, खड़ी पहाड़ी को पार कर वे एन्दोर की जादूगरनी के एकान्तवास में पहुँच गये। यहाँ वह स्त्री, जिसके पास सिद्ध प्रेत था, छिपकर रहती थी कि वह गुप्त रूप से अपना अपवित्र जादू टोना करती रहे । शाऊल भेष धारण किये हुए तो था, लेकिन उसके ऊँचे कद और राजसी चाल-ढाल से पता चल गया कि वह साधारण सैनिक न था। स्त्री को सन्देह हुआ कि वह शाऊल था, और कीमती उपहारों ने उसके सन्देह को और बड़ा दिया। जब शाऊल ने विनती की, "प्रेतों के द्वारा मुझे मेरा भविष्य बताओ। उस व्यक्ति को बुलाओ जिसका मैं नाम लूँ।" स्त्री ने कहा, "तुम जानते हो शाऊल ने क्या किया है। उसने ओझा और भाग्यफल बताने वालों को इज़राइल देश छोड़ने को विवश किया है। तुम मुझे जाल में फँसाकर मार डालना चाहते हो।" फिर "शाऊल ने यहोवा की शपथ खाकर उससे कहा, "यहोवा के जीवन की शपथ, इस बात के कारण तुझे दण्ड न मिलेगा।" और जब स्त्री ने कहा, "मैं तेरे लिये किस को बुलाऊँ? उसने उत्तर दिया, 'शमूएल'। PPHin 709.1

अपने मन्त्रोच्चारण और जादू-टोने का अभ्यास करने के बाद, उसने कहा, "मैंने देवताओं को पृथ्वी में से चढ़ते हुआ देखा ....एक बूढ़ा पुरूष बागा ओढ़े हुए चढ़ा आता है। तब शाऊल ने निश्चय जानकर कि वह शमूएल है, औंधे मुंह भूमि पर गिरकर दण्डवत किया। PPHin 710.1

वह परमेश्वर का पवित्र भविष्यवक्ता नहीं था जो ओझा के मंत्रोच्चार की माया से प्रकट हुआ। शमूएल दुष्टात्माओं के उस बसेरे में उपस्थित नहीं था। वह अलौकिक प्रतीति केवल शैतान के शक्ति से उत्पन्न हुई थी। वह शमूएल की आकति को उतनी ही सरलता से धारण कर सकता था जितनी आसानी से उसने बीहड़ में मसीह को प्रलोभन देने के समय प्रकाश के स्वर्गदूतत का रूप धारण किया था। स्त्री के मंत्रोच्चार की माया के प्रभाव में उसके पहले शब्द राजा को संबोधित किये गए, "तूने मुझे क्यों धोखा दिया? तू तो शाऊल हैं।" इस प्रकार भविष्यद्वक्ता का अवतार धारण करने वाली दुष्टात्मा का पहला कृत्य इस दुष्ट स्त्री के साथ गुप्त संपर्क कर उसे छल की चेतावनी देना था जिसका अभ्यास उस पर किया गया था। ढोंगी भविष्यवक्ता की ओर से शाऊल के लिये यह संदेश था, "तुने मुझे ऊपर बुलवाकर क्यों सताया है?" और शाऊल ने उत्तर दिया, "मैं बड़े संकट में पड़ा हूँ, क्योंकि पलिश्ती मेरे साथ लड़ रहे हैं और परमेश्वर ने मुझे छोड़ दिया, और अब मुझे न तो भविष्यवक्ताओं के द्वारा उत्तर देता है, और न स्वप्नों के, इसलिये मैंने तुझे बुलाया कि तू मुझे जता दे कि मैं क्या करूः? PPHin 710.2

जब शमूएल जीवित था, शाऊल ने उसकी सम्मति को तिरस्कृत किया था और उसकी ताड़ना से वह अप्रसन्न हुआ था। लेकिन अब संकट की घड़ी में, उसे महसूस हुआ कि भविष्यवक्ता का मार्गदर्शन ही उसकी एकमात्र आशा थी, और स्वर्ग के प्रतिनिधि के साथ संपर्क करने के लिये उसने

व्यर्थ ही नरक के दूत का सहारा लिया था। शाऊल ने स्वयं को पूर्ण रूप से शैतान के अधीन कर दियाथा, और अब, जिसे एकमात्र प्रसन्नता विनाश करने और कष्ट पहुँचाने में होती है, अप्रसन्न राजा के विनाश को सम्पन्न करने के लिये, इस सुअवसर का लाभ उठाया। शाऊल के वेदनापूर्ण विनती के उत्तर में प्रकट रूप से शमूएल के होठों से यह भयावह सन्देश आया "जब यहोवा तुझे छोड़कर तेरा शत्रु बन गया, तब तू मुझे से क्यों पूछता है? यहोवा ने तो जैसा मुझ से कहलवाया था वैसा ही उसने व्यवहार किया है, अर्थात उसने तेरे हाथ से राज्य छीनकर तेरे पड़ोसी दाऊद को दे दिया है। तू ने जो यहोवा की बात न मानी, और न अमालेकियों को उसके भड़के हुए कोप के अनुसार दण्ड दिया था, इस कारण यहोवा ने तुझ से आज ऐसा बर्ताव किया। फिर यहोवा तुझ समेत इज़राइलियों को पलिश्तियों के हाथ में कर देगा।" PPHin 710.3

उसके विद्रोह के दौरान पूरे समय शैतान ने शाऊल को धोखा दिया और उसकी झूठी प्रशंसा की। प्रलोभन देने वाले का कार्य पाप को छोटा दिखाना, अवज्ञा के पथ को सरल और आकर्षक बताना, परमेश्वर की धमकियों और चेतावनियों के प्रति मन को उदासीन कर देना होता है। अपनी सम्मोहक शक्ति के द्वारा शैतान ने शाऊल को शमूएल की चेतावनियों और झिड़कियों की अवज्ञा करने में न्यायसंगत होने का दावा करवाया। लेकिन अब, संकट के समय में, वह पलटवार करके उसके पाप की गंभीरता को, और क्षमा की आशाहीनता को प्रस्तुत कर, उसे मायूसी की ओर ले गया। उसकी बुद्धि को भ्रष्ट करने और उसके साहस को नष्ट करने, या उसे विनाश और निराशा में धकेलने के लिये इससे बेहतर और कुछ नहीं चुना जा सकता था। PPHin 711.1

शाऊल भूख और थकान से बेहोश हुआ जा रहा था, वह भयभीत था और अंतरात्मा से प्रताड़ित था। जैसे ही वह भयावह भविष्यवाणी उसके कानों में पड़ी उसका शरीर आंधी के प्रभाव में बांज वृक्ष की तरह लहराया और वह मुँह के बल धरती पर गिर पड़ा। PPHin 711.2

ओझा भयभीत हो गई। इज़राइल का राजा उसके सम्मुख मृतक के समान पड़ा था। यदि वह उसके आश्रय-स्थल में नष्ट हो जाता तो उसके लिये क्या परिस्थिति होती? उसने शाऊल से उठकर भोजन करने की विनती की, और उसने आग्रह किया कि उसकी अभिलाषा पूरी करने के लिये उसने अपने प्राण दाव पर लगा दिया थे, इसलिये उसे अपने स्वयं के प्राण बचाने के लिये उसकी विनती को स्वीकार करना होगा। उसके सेवकों ने भी विनती की। अन्त में शाऊल मान गया और स्त्री ने एक तैयार किये हुए बछड़े का मास और अखमीरी रोटी फूर्ती से बनाकर उसके आगे परोसा। क्या दृश्य था! जादूगरनी की गुफा में, जिसमें कुछ समय पहले विनाश के शब्द गूंज रहे थे, शैतान के दूत की उपस्थिति में, वह जो इज़राइल के राजा के तौर पर परमेश्वर द्वारा अभिषिक्त था, दिन के भयंकर संघर्ष की तैयारी में, भोजन करने बैठा। PPHin 711.3

पौ फटने से पहले शाऊल अपने सेवकों सहित, संघर्ष की तैयारी करने के लिये इज़राइल की छावनी में लौट आया। अन्धकार की आत्मा से सलाह लेकर शाऊल ने स्वयं को नष्ट कर लिया था।

आशाहीनता की दहशत से उत्तपीड़ित, शाऊल के लिये अपनी सेना को साहस की प्रेरणा देना असम्भव था। सामर्थ्य के स्रोत से अलग होकर वह इज़राइल के परमेश्वर को उसके सहायक के रूप में देखने के लिये विवश नहीं कर सकता था। इस प्रकार अनर्थ की भविष्यवाणी ने अपना कार्य स्वयं सम्पन्न किया। PPHin 711.4

शुनेम की तराई में और गिलबो की ढलान पर इज़राइल की सेनाओं और पलिश्तियों की सेनाओं के बीच घमासान युद्ध हुआ। यद्यपि एन्दोर की गुफा के भयावह दृश्य ने उसके हृदय को निराशा से भर दिया था, फिर भी शाऊल निभीक होकर अपने सिंहासन और अपने राज्य के लिये बहादुरी से लड़ा। लेकिन यह सब व्यर्थ में था। "इज़राइली पुरूष पलिश्तियों के सामने से भागे, और गिलबो नामक पहाड़ पर मारे गए।" राजा के तीन पुत्र भी मारे गए। धनुर्धारियों ने उसे घेर लिया। उसने अपने चारों ओर योद्धाओं को गिरते हुए और अपने राजकुमार पुत्रों को तलवार से घात हुए देखा था। वह स्वयं घायल था, ना वह लड़ सकता था, ना भाग सकता था। बच कर निकल जाना असम्भव था, और पलिश्तियों द्वारा जीवित न पकड़े जाने के लिये निश्चित, उसने अपने हथियार ढोने वाले से कहा, "अपनी तलवार खींचकर मुझमें भोंक दे ।" जब उस व्यक्ति ने परमेश्वर के अभिषिक्त पर हाथ उठाने से मना कर दिया तब शाऊल ने अपनी ही तलवार को खड़ी कर, उस पर गिर कर अपने प्राण ले लिये। PPHin 712.1

इस प्रकार इज़राइल का पहला राजा आत्म-हत्या का दोष अपने ऊपर लेकर नष्ट हो गया। उसका जीवन असफल रहा था, और वह अपमान और निराशा को प्राप्त हुआ क्योंकि उसने स्वयं की विकृत इच्छा को परमेश्वर की इच्छा के विरूद्ध खड़ा किया। PPHin 712.2

पराजय की सूचना इज़राइल के लिये भय का सन्देश लेकर दूर-दूर तक फेल गई । लोग नगर छोड़ कर भाग गए, और पलिश्तियों नेबिना रूकावट के वहाँ अपना स्वामित्व स्थापित किया। परमेश्वर के स्वतन्त्र शाऊल का शासन उसके लोगों के विनाश का कारण बना। PPHin 712.3

दूसरे दिन जब पलिश्ती मारे हुओं की सम्पत्ति को लूटने आए, तब उनको शाऊल और उसके तीनों पुत्रों के शव मिले। अपनी विजय की पूरी करने के लिये, उन्होंने शाऊल का सिर काटा, उसके कवच को उसके शरीर से अलग कर दिया, फिर उसका रकक्तरंजित सिर और कवच विजय-चिन्ह के तौर पर पलिश्तियों के देश में इसलिये भेजा कि "उसके देवताओं और साधारण लोगों में यह शुभ समाचार पहुँचे।" उसके कवच को आश्तोरेत नामक देवी के मन्दिर में रखा गया और उसके सिर को दागोन के मन्दिर में जड़ दिया गया। इस प्रकार विजय की महिमा का श्रेय इन कृत्रिम देवी-देवताओं को दिया गया और यहोवा के नाम का अपमान किया गया। PPHin 712.4

शाऊल और उसके पुत्रों के शवों को घसीटकर गिलबो के पास बेतशान नामक शहर में लाया गया जो यरदन नदी के निकट था। यहाँ उन्हें माँसाहारी पक्षियों द्वारा खाए जाने के लिये जंजीरों से लटका दिया गया। लेकिन याबेश-गिलाद के शूरवीर शाऊल के बीते सुखी वर्षो में उसके द्वारा उनके

नगर के छुटकारे को स्मरण कर, राजा और उसके पुत्रों के शवों को बचाकर ले आए व उन्हें सम्मानपूर्वक मिट्टी देकर, अपनी कृतज्ञता प्रकट की। रातों-रात यरदन को पार कर वे, "शाऊल और उसके पुत्रों के शव बेतशान की शहरपनाह पर से याबेश में ले आए, और वहीं उन्हें जला दिया, और उन्होंने उनकी हडिडियाँ लेकर याबेश के झाऊ के पेड़ के नीचे गाड़ दी और सात दिन तक उपवास किया।" इस प्रकार चालीस वर्ष पूर्व किये गए श्रेष्ठ कार्य ने शाउऊल और उसके पुत्रों के लिये अपमान और पराजय की उस दुर्भाग्यपूर्ण घड़ी में नम्र और दयावान हाथों द्वारा मिट्टी दिया जाना सम्भव किया। PPHin 713.1

अध्याय 67—प्राचीन व आधुनिक जादू-टोना

एन्दोर की स्त्री से शाऊल की भेंट का पवित्र-शास्त्र में किया गया वर्णन, बाईबल के विद्यार्थियों के लिये दुविधा का स्रोत रहा है। कुछ का मानना है कि शाऊल के साथ साक्षात्कार के समय शमूएल वास्तव में उपस्थित था, लेकिन बाईबल स्वयं एक विपरीत निष्कर्ष के लिये पर्याप्त आधार भी देती है। यदि, जैसा कि कई दावा करते है, शमूएल स्वर्ग में था, उसे वहाँ से परमेश्वर की शक्ति या शैतान की शक्ति के द्वारा बुलाया गया होगा। कोई भी एकक्षण के लिये भी यह विश्वास नहीं करेगा कि एक परित्यक्त स्त्री के मंत्रोच्चार का मान रखने के लिये शैतान के पास परमेश्वर के भविष्यवक्ता को स्वर्ग से बुलाने की शक्ति थी। ना ही हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि परमेश्वर ने उसे उस डायन की गुफा में बुलाया था, क्योंकि प्रभु ने शाऊल के साथ स्वप्न द्वारा, उरीम द्वारा या भविष्यवक्ताओं द्वारा संपर्क करने से मना कर दिया था।1 शमूएल 28:6। यह परमेश्वर के व्यक्तिगत रूप से संपर्क के निर्धारित माध्यम थे, और वह शैतान के कर्मक के माध्यम से सन्देश पहुँचाने के लिये इनकी उपेक्षा नहीं करता। PPHin 714.1

सन्देश स्वयं ही उसकी उत्पत्ति का पर्याप्त प्रमाण है। इसका लक्ष्य शाऊल को प्रायश्चित के लिये विवश करना नहीं, वरन् उसे विनाश की ओर ले जाना था, और यह कार्य परमेश्वर का नहीं, वरन् शैतान का था। उसके अतिरिक्त पवित्र शास्त्र कहता है कि अपना भविष्य जानने या सलाह लेने के लिये शाऊल के उस ओझा स्त्री से भेंट करने के कारण ही परमेश्वर ने उसे अस्वीकार किया और नष्ट होने के लिये त्याग दिया, “यों शाऊल उस विश्वासघात के कारण मर गया, जो उसने यहोवा से किया था, क्योंकि उसने यहोवा का वचन टाल दिया था, फिर उसने ओझा से पूछकर सम्मति ली थी उसने यहोवा से न पूछा था: इसलिये यहोवा ने उसे मारकर राज्य को यिशै के पुत्र दाऊद को दे दिया। यह स्पष्ट रूप से बताया गया है कि शाऊल ने सिद्ध प्रेत से पूछा, परमेश्वर से नहीं ।”-1इतिहास 10:13,14। उसने परमेश्वर के भविष्यवक्ता से सम्पर्क नहीं किया, वरन् भूत-सिद्धि करने वाली स्त्री के माध्यम से शैतान ने संपर्क किया। शैतान वास्तविक शमूएल को प्रस्तुत करने में असमर्थ था, लेकिन उसने निश्चय ही एक प्रतिरूप प्रस्तुत किया जिसने उसके छल के लक्ष्य को सार्थक किया। PPHin 714.2

प्राचीन काल के भूत सिद्धि और जादू-टोना के सभी प्रकार मृतकों के साथ संपर्क में विश्वास पर आधारित थे। जो प्रेम-विद्या की कला का अभ्यास करते थे, वे मृतकों की आत्माओं के साथ संपर्क का और उनसे भविष्य का ज्ञान प्राप्त करने का दावा करते थे। PPHin 714.3

मृतकों से सम्मति लेने की परम्परा का वर्णन यशायाह की भविष्यद्वाणी में किया गया है: जब लोग तुम से कहे, “ओझाओं और सिद्ध प्रेतों से जाकर पूछो जो धीमी आवाज में फसफसाकर बोलते

है, क्या प्रजा को अपने परमेश्वर ही के पास जाकर नहीं पूछना चाहिये? क्या जीवितों के लिये मुर्दों से पूछना चाहिये?' - यशायाह 8:19। PPHin 715.1

मृतकों के साथ संपर्क में यही विश्वास अधर्मी मूर्तिपूजा के कोने का पत्थर बना। ऐसा विश्वास प्रचलित था कि दिवंगत शूरवीरों की देवत्वारोपित आत्माएँ ही मूर्तिपूजकों के देवी-देवता थे। इस प्रकार मूर्तिपूजकों का धर्म मृतकों की आराधना थी। यह पवित्र-शास्त्र से प्रमाणित है। बेतपोर में इज़राइल के पाप के वर्णन में कहा गया है, "इज़राइली शित्तीम में रहते थे, और वे लोग मोआबी लड़कियों के साथ कुकर्म करने लगे। और जब उन स्त्रियों ने उन्हें अपने देवताओं के यज्ञों में आने का निमन्त्रण दिया, तब इज़राइलियों ने वहाँ भोजन भी किया और उनके देवताओं को दण्डवत किया। और इज़राइली बालपोर देवता की पूजा करने लगे ।"-गिनती 25:1-3। भजन लिखने वाला हमें चढ़ावे में चढाए हुए बलिदानों से सम्बन्धित देवताओं के बारे में बताता है, "वे बालपोर देवता को पूजने लगे और मुर्दों को चढ़ाए हुए पशुओं का मास खाने लगे। - भजन संहिता 10:28; अर्थात बलि मृतकों के लिये चढ़ाई जाती थी। PPHin 715.2

मृतकों के देवत्वारोपयण और मृतकों के साथ तथाकथित संपर्क का देवपूजा अर्थात मूर्तिपूजा की लगभग प्रत्येक प्रणाली में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। माना जाता था, कि देवी-देवता अपनी इच्छा मनुष्यों को बताते थे और सलाह माँगे जाने पर सलाह भी देते थे। रोम और यूनान के प्रसिद्ध देववाणी करने वालों की यहीं विशेषता थी। PPHin 715.3

मृतको के साथ संपर्क में विश्वास, आज भी, तथाकथित मसीही देशों में भी किया जाता है। अध्यात्मवाद के नाम में, दिवंगतों की आत्मा होने का दावा करने वालों के साथ संपर्क करने का अभ्यास व्यापक हो गया है। यह उनकी सहानुभूति को गिरफ्त में लेने के योग्य होता है जिन्होंने अपने प्रियजनों को कब्र में उतारा है। मायामय प्राणी कभी-कभी लोगों पर उनके दिवंगत मित्रों के रूप में प्रकट होते है, और अपने जीवन से सम्बन्धित घटनाओं का वर्णन करते है और वह कार्य करते है जो वह जीवित होने के समय करते थे। इस प्रकार वे मनुष्य को विश्वास दिलाते है कि उनके मृत मित्र स्वर्गदूत हैं, जो उनके ऊपर मण्डरा रहे हैं और उनसे संपर्क कर रहे हैं। जो इस प्रकार तथाकथित दिवंगतों की आत्माओं को मूर्तियों के समान मान्यता दी जाती है और कई लोगों के लिये उनके कहे शब्दों का परमेश्वर के वचन से अधिक महत्व होता है। PPHin 715.4

लेकिन, फिर भी, कई हैं जो अध्यात्मवाद को मात्र पाखंड मानते है। जिन प्रदर्शों के आधार पर वह अपने अलौकिक स्वभाव के दावे का समर्थन करता है उन प्रदर्शनों का कारण माध्यम की ओर से छलावा माना जाता है।यह सच है कि चालबाजी के परिणामों को प्रायः वास्तविक प्रदर्शन के तौर पर टाल दिया जाता है, यह भी सच है कि अलौकिक शक्ति के महत्वपूर्ण प्रमाण रहे हैं। और कई जो अध्यात्मवाद को सयानेपन या मानुषिक निपुणता के परिणामस्वरूप अस्वीकार करते है, इसके

दावों को स्वीकार करने के लिये विवश हो जाते हैं जब वे उन प्रदर्शनों का सामना करते है जिन्हें वह अपनी निपुणता से नहींसमझा पाते। PPHin 716.1

आधुनिक अध्यात्मवाद और प्राचीन अभिचार और मूर्ति-पूजा के रूप-सब का महत्वपूर्ण सिद्धान्त मृतकों के साथ संपर्क है और यह उस झूठ पर आधारित है जिससे शैतान ने हवा को अदन की वाटिका में भरमाया था, "तुम निश्चय न मरोगे, वरन् परमेश्वर स्वयं जानता है कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे....... तुम परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे।" - उत्पत्ति 3:4,5। ये झूठ पर आधारित है और उसी को स्थायी बना रहे है और वे झूठ के पिता के समान है। PPHin 716.2

इब्रियों के लिये किसी भी तरह से मृतकों के साथ पांखडी संपर्क करना स्पष्ट रूप से निषेध था। परमेश्वर ने यह द्वार प्रभावशाली ढंग से बन्द कर दिया जब उसने कहा, "मरे हुए कुछ भी नहीं जानते......और अब जो कुछ सूर्य के नीचे किया जाता है उसमें सदा के लिये उनका कोई और भाग न होगा ।"-सभोपदक 9:5,6। भजन संहिता 146:4 में लिखा है, "उसका भी प्राण निकलेगा, वह भी मिट्टी में मिल जाएगा, उसी दिन उसकी सब कल्पनाएं नष्ट हो जाएगी।" और प्रभु ने इज़राइल से कहा, "जो प्राणी ओझाओं या भूत साधने वालों की ओर मुड़ कर, उनके पीछे चलकर व्यभिचारी बने, तो मैं उस प्राण के विरूद्ध होकर उसे उसके लोगों के बीच में नष्ट करूँगा ।"-लैवव्यवस्था 20:6। PPHin 716.3

"सिद्ध प्रेत" मृतकों की आत्माएँ नहीं थी, वरन् वे शैतान के सन्देशवाहक, दुष्ट दूत थे। जैसा कि हमने देखा प्राचीन मूर्तिपूजा, जिसके अन्तर्गत मृतकों की पूजा और उनके साथ पांखडी संपर्क आते हैं, बाईबल द्वारा प्रेत-पूजा घोषित की गई है। प्रेरित पौलुस अपने भाई-बन्धुओं को उनके अधर्मी पड़ोसियों द्वारा की जा रही मूर्तिपूजा में किसी भी प्रकार से सम्मिलित होने के विरूद्ध चेतावनी में कहता है, "अन्यजाति जो बलिदान करते है, वे परमेश्वर के लिये नहीं परन्तु दुष्टात्माओं के लिये बलिदान करते हैं, और मैं नहीं चाहता कि तुम दुष्टात्माओं के सहभागी हो" 1 कुरिन्थियों 10:20। इज़राइल की बात करते हुए, भजन लिखने वाला कहता है, "उन्होंने अपने बेटे बेटियों को पिशाचों के लिये बलिदान किया" और अगे पद में वह समझाता है कि "उन्होंने उन्हें कनान की मूर्तियों पर बलि किया।" (भजन संहिता 106:37,38) मृतक पुरूषों की तथाकथित आराधना में वे यथार्थ में पिशाचों की पूजा कर रहे थे। PPHin 717.1

आधुनिक अध्यात्मवाद, इसी नींव पर टिका हुआ, प्रेम पूजा और भूतसिद्धि का नये रूप में पुनः प्रचलन है, जिसे आदि से परमेश्वर ने तिरस्कृत और निषिद्ध ठहराया था। पवित्र शास्त्र में यह भविष्यद्वाणी द्वारा घोषित किया गया है कि "आने वाले समयों में कितने लोग भरमानेवाली आत्माओं, और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर मन लगाकर विश्वास से बहक जाएँगे ।'-1 तीमुथियुस 4:1। थिस्सलुनीकियों को अपने दूसरे पत्र में, पौलुस, अध्यात्मवाद में शैतान की विशेष कार्यवाही की ओर संकेत करता है, जो घटना के तौर पर मसीह के दूसरे आगमन से ठीक पहले घटित होने वाली थी।

मसीह के दूसरे आगमन की बात करते हुए, वह 2 थिस्सलुनीकियों 2:9 में कहता है कि “उसका आना शैतान के कार्य के अनुसार संपूर्ण सामर्थ्यऔर चिन्ह और झूठे आश्चर्य कर्म के साथ” है। और, अन्तिम समय में कलीसिया पर मैंडराने वाले खतरों का वर्णन करते हुए वह कहता है कि जिस प्रकार झूठे भविष्यद्वक्ता थे जो इज़राइल को पाप में ले गए, उसी प्रकार झूठे उपदेशक होंगे जो, “नाश करने वाले पांखड का उदघाटन छुप-छुपकर करेंगे और उस स्वामी का, जिसने उन्हें मोल लिया है, इन्कार करेंगेऔर बहुत से उन के समान लुचपन करेंगे -2 पतरस 2:1,2। यहाँ प्रेरित ने अध्यात्म-विद्या के शिक्षकों की एक महत्वपूर्ण विशेषता की ओर संकेत किया है। वे मसीह को परमेश्वर का पुत्र मानने से इन्कार करते है। ऐसे शिक्षकों के बारे में यहुन्ना, जिससे यीशु प्रेम करता था, कहता है, “झूठा कौन है? केवल वह जो यीशु के मसीह होने से इन्कार करता है और मसीह का विरोधी वही है, जो पिता का और पुत्र का इन्कार करता है। जो कोई पुत्र का इन्कार करता है उसके पास पिता भी नहीं-1 यहुन्ना 2:22,23। मसीह को अस्वीकार कर, अध्यात्मवाद पिता और पुत्र दोनों को अस्वीकार करता है, और बाईबल इसे मसीह विरोधी का रूप बताती है। PPHin 717.2

एन्दोर की स्त्री के द्वारा की गई शाऊल के विनाश की भविष्यद्वाणी के माध्यम से, शैतान इज़राइल के लोगों को भरमाने के लिये योजनाबद्ध था। उसे आशा थी कि उन्हें ओझा में विश्वास करने की प्रेरणा मिलेगी और वे भी उससे सम्मति लेने जाएँगे। इस प्रकार वे परमेश्वर को अपना परामर्शदाता न मानकर उससे मुहँ मोड़कर स्वयं को शैतान के मार्ग-दर्शन में सौंप देंगे। वह लालच जिसके द्वार अध्यात्मवाद जनसाधारण को आकर्षित करता है, वह उसकी वो शक्ति है जो भविष्य से पर्दा उठाकर, मनुष्य पर वह प्रकट करती है, जिसे परमेश्वर ने छुपाया है। परमेश्वर ने अपने वचन में हमारे सम्मुख अपने वचन में भविष्य की महान घटनाओं को खोला है- वह सब जो हमारी जानकारी में होना आवश्यक है- और उसने संकट के समय के लिये हमारे पैरों के लिये एक विश्वसनीय मार्गदर्शक दिया है; लेकिन शैतानका उद्देश्य है परमेश्वर में मनुष्य के विश्वास को नष्ट करना, उन्हें अपने जीवन की दशा से असमन्तुष्ट बनाना, उन्हें उस ज्ञान को खोजने को प्रेरित करना जिसे परमेश्वर ने अपनी समझ से उनसे छुपा कर रखा है, और उनसे उसका तिरस्कार करवाना जो परमेश्वर ने अपने पवित्र वचन में प्रकाशित किया हैं। PPHin 718.1

घटनाकम का निर्धारित परिणाम न जान पाने पर, कई लोग व्याकल हो जाते हैं। वे अनिश्चितता को सहन नहीं कर पाते हैं, और अपनी अधीरता में वे एक कर परमेश्वर के उद्धार को देखने से इन्कार कर देते है। ग्रहीत बुराईयाँ उन्हें लगभग विचलित कर देती है। वे अपनी विद्रोही भावनाओं के प्रभाव में आ जाते है, और आवेशपूर्ण व्यथा में इधर-उधर भागकर उसे जानने की कोशिश करते है जो अभी प्रकट नहीं किया गया है। यदि वे परमेश्वर में विश्वास रख, प्रार्थना में जागरूक रहे, उन्हें ईश्वरीय ढाढ़स मिलगा। परमेश्वर के संपर्क मं आने से उनकी आत्मा को शान्ति प्राप्त होगी। बोझ से दबे हुओं और थके हुओं को यीशु के पास जाने से विश्राम मिलेगा, लेकिन जब वे उन साधनों की उपेक्षा करते है जिन्हें परमेश्वर ने उनकी सुविधा के लिये ठहराए हैं, और परमेश्वर द्वारा गुप्त रखी

गईं बातों को जानने की आशा में अन्य स्रोतों के पास जाते हैं, वे शाऊल वाली गलती करते है और केवल बुराई का ज्ञान प्राप्त करते है। PPHin 718.2

परमेश्वर इस कार्य प्रणाली से प्रसन्न नहीं होता, और उसमें यह स्पष्ट रूप से व्यक्त किया है। भविष्य पर से पर्दा हटाने का धेर्यहीन उतावलापन परमेश्वर में हमारे विश्वास की कमी को दर्शाता है और मन को शैतान के सुझावों के लिये खुला छोड़ देता है। शैतान मनुष्यों को सुझावों के लिये सिद्ध प्रेतों के धारकों के पास ले जाता है; और बीते समय की गुप्त बातें बताकर, वह भविष्यवाणी करने की उसकी शक्ति में विश्वास को प्रेरित करता है। दीर्घकाल के दौरान प्राप्त किये हुए अनुभव के द्वारा वह ध्येय से निष्कर्ष निकालकर, मनुष्य के जीवन की भविष्यकालीन घटनाओं को अत्यन्त सूक्ष्मता से प्रभावित कर सकता है और उनकी भविष्यवाणी कर सकता है। इस प्रकार वह असहाय, पथभ्रष्ट प्राणियों को धोखा देकर, अपनी शक्ति के अधीन करके और अपनी इच्छानुसार बन्दी बना सकता है। PPHin 719.1

परमेश्वर ने अपने भविष्यवक्ता के माध्यम से हमें चेतावनी दी है "जब लेग तुम से कहे, 'ओझाओं और जावू-टोना करने वालों के पास जाकर पूछो जो धीमी आवाज में फसफसाते है, तब तुम यह कहना, 'क्या प्रजा को अपने परमेश्वर ही के पास जाकर नहीं पूछना चाहिये? क्या जीवतों के लिये मुर्दा से पूछना चाहिये"? व्यवस्था औरचितौनी की ही चर्चा किया करो। यदि वे लोग इन वचनों के अनुसार न बोले तो निश्चय ही उनमें प्रकाश नहीं है-यशायाह 8:19,20। PPHin 719.2

क्या वे जिनके पास सामर्थ्य और बुद्धिमत्ता में अनंत, पवित्र परमेश्वर होता है, जादू-टोना करने वालों के पास जाते है, जिनका ज्ञान हमारे प्रभु के शत्रु के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध से आता है? परमेश्वर स्वयं उनके लोगों का प्रकाश है, वह उन्हें विश्वास के द्वारा अपनी आखों को उन उत्तम वस्तुओं पर केन्द्रित करने को कहता है जो मनुष्य की दृष्टि से छिपी है। धर्म का सूर्य उनके हृदयों में अपनी उज्जवल किरणें भेजता है और उनमें प्रकाश के स्रोत को छोड़ शैतान के दूतों की ओर मुड़ने की कोई इच्छा नहीं रहती। PPHin 719.3

शाऊल के लिये दुष्टात्मा का सन्देश, पाप की निंदा और प्रतिशोध की भविष्यवाणी तो था, लेकिन वह उसने सुधार लाने के लिये नहीं, वरन् उसे निराशा और विनाश की ओर ले जाने के लिये था। चापलूसी के द्वारा मनुष्य को विनाश की ओर आकर्षेत करना प्रलोभनकर्ता के उद्देश्य के लिये सबसे लाभदायक होता है। प्राचीन काल में पैशाचिक देवताओं की शिक्षा ने सबसे घिनौने दुराचार को प्रोत्साहित किया। वे ईश्वरीय सिद्धान्त जो पाप का तिरस्कार करते थे और धार्मिकता को महत्व देते थे उन्हे परे रख दिया गया; सत्य को हल्के में लिया जाने लगा; अशुद्धता की ना केवल अनुमति दी गई, वरन् उसकी आज्ञा दे दी गई। अध्यात्मवाद के अनुसार ना तो मृत्यु है, ना पाप, ना दण्डाज्ञा और ना ही प्रतिशोध, और यह कि "मनुष्य अपतित उपदेवता" है, अभिलाषा सबसे श्रेष्ठ नियम है, और मनुष्य स्वयें के प्रति उत्तरदायी हैं। श्रद्धा, शुद्धता और सत्य को सुरक्षा प्रदान करने वाले, परमेश्वर

द्वारा निर्मित अवरोधी को तोड़ दिया गया है जिसके कारण कई लोग पाप में दुस्साहसी हो गए है। क्या ऐसी शिक्षा एक ऐसे सूत्र का सुझाव नहीं देती जो पिशाचों की आराधना की शिक्षा के समान है? PPHin 719.4

परमेश्वर ने इज़राइल के सम्मुख, कनानियों की अपविध्न्ता में, दुष्टात्माओं के साथ संपर्क करने के परिणामों को प्रस्तुत किया: उनमें स्वभाविक प्रेम का अभाव था, वे मूर्तिपूजक, व्यभिचारी, हत्यारे और प्रत्येक भ्रष्ट विचार और घृणित प्रथा के कारण घृणित थे। मनुष्य अपने हृदयों को नहीं जानते, क्योंकि "मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोखा देने वाला होता है और खतरनाक रूप से दुष्ट है।'यिर्मयाह 17:9 लेकिन परमेश्वर मनुष्य के दुष्ट स्वभाव की प्रवृति को समझता है। उस समय, जैसे कि अभी, शैतान विद्रोह के अनुकल स्थितियाँ उत्पन्न करने की प्रतीक्षा में था, ताकि इज़राइल के लोग स्वयं को परमेश्वर के लिये कनानियों की भाँति घृणास्पद बना ले। मनुष्य का शत्रु हमारे अन्दर पाप के अनियन्त्रित प्रवाह के लिये मार्ग को खोलने के लिये तत्पर रहता है, क्योंकि वह हमारा विनाश चाहता है और हमें परमेश्वर के सम्मुख तिरस्कृत हुआ देखना चाहता है। PPHin 720.1

शैतान कनान प्रदेश पर अपना अधिकार जमाए रखना चाहता था, और जब कनान को इज़राइलियों को निवास-स्थान बना दिया गया, और परमेश्वर की व्यवस्था प्रदेश की व्यवस्था बना दी गई। वह इज़राइल से एक निमर्म और विद्वेषपूर्ण घृणा के साथ बैर रखने लगा। दुष्टात्माओं के माध्यम से पराए देवताओं का परिचय कराया गया और आज्ञा-उल्लंघन के कारण, चुने हुए लोग अनन्तः प्रतिज्ञा के देश से तितर-बितर हो गए। यही इतिहास शैतान हमारे दिनों में भी दोहराना चाह रहा है। परमेश्वर अपने लोगों को संसार की घृणित चीजों से बाहर ला रहा है, जिससे कि वे उसकी व्यवस्था का पालन करे, और इस कारण "हमारे भाई के आरोपी" का कोध सीमा पार कर चुका है और वह "बड़े कोध के साथ तुम्हारे पास उतर आया है क्योंकि वह जानता है कि उसका थोड़ा ही समय बाकी है"-प्रकाशित वाक्य 12:10,12। प्रतिज्ञा के देश का प्रतिरूप हमारे सामने है, और शैतान का दृढ़ सकल्प है कि वह परमेश्वर के लोगों को नष्ट कर और उन्हें उनकी धरोहर से अलग कर दे। "जागते रहो और प्रार्थना करते रहो कि तुम परीक्षा में न पड़ो"-मरकुस 14:38-इस उपदेश की आवश्यकता आज से अधिक पहले कभी न थी। PPHin 720.2

प्राचील इज़राइल के लिये परमेश्वर का सन्देश आज के युग के लोगों को भी सम्बोधित करता है, "ओझाओं और भूत साधने वालों की ओर न फिरना और उनके कारण अशुद्ध न हो जाना" "क्योंकि जितने ऐसे काम करते है वे सब यहोवा के सम्मुख घृणित है।" - लैवव्यवस्था 19:31, व्यवस्था विवरण 18:12।

अध्याय 68—सिकलग में दाऊद

यह अध्याय 1 शमूएल 29:30, 2 शमूएल 1 पर आधारित है

हलाँकि दाऊद और उसके आदमी पलिश्तियों के साथ संघर्ष के मैदान में उतरे, उन्होंन इज़राइलियों और पलिश्तियों के बीच युद्ध में भाग नहीं लिया। जैसे ही दोनो सेनाओं ने भिड़न्त की तैयारी की, यिशै के पुत्र ने स्वयं को बड़ी दुविधाजनक परिस्थिति में पाया। अपेक्षा थी कि वह पलिश्तियों क पक्ष में लड़ेगा। यदि इस समय वह उसे दिये गए पद को त्याग कर मैदान से प्रस्थान कर देता तो उस पर ना केवल कायरता का, वरन् आकीश के प्रति,जिसने उसे सुरक्षा प्रदान की थी और जिसने उस पर विश्वास किया था, अकृतज्ञता और धोखो का दाग भी लग जाता, । ऐसा कृत्य उसके नाम को कलंकित कर देता और उसे उसके शत्रुओं के कोध का पात्र बना देता और यह शाऊल से भी अधिक भयावह होता। ऐसा करके वह देशद्रोही हो जाता- परमेश्वर और उसके लोगों का शशत्रु। इससे इज़राइल के सिंहासन का रास्ता उसके लिये हमेशा के लिये बन्द हो जाता, और यदि शाऊल युद्ध में मारा जाता, उसकी मृत्यु का आरोप दाऊद पर लगाया जाता। PPHin 722.1

दाऊद को एहसास दिलाया गया कि वह मार्ग से भटक गया था। उसके लिये यहोवा और उसके लोगों के स्वीकृत शत्रुओं के पास शरण लेने से पहाड़ो में परमेश्वर के मजबूत गढ़ो में शरण लेना बेहतर होता। लेकिन अपनी अत्यधिक करूणा में प्रभु ने अपने दास को दुविधा और कठिनाई में असहाय नहीं छोड़ा और इस प्रकार उसे उसकी गलती को दण्डित नहीं किया, क्योंकि दाऊद ईश्वरीय शक्ति पर अपनी पकड़ छोड़कर, सख्त अखण्डता के रास्ते से भटक गया था, लेकिन उसके हृदय का ध्येय अभी भी यही था कि वह परमेश्वर के प्रति सच्चा रहे। शैतान और उसकी सेना परमेश्वर और इज़राइल के शत्रुओं की उस राजा के विरूद्ध योजना बनाने में सहायता कर रही थी, जिस राजा ने परमेश्वर को छोड़ दिया था, और प्रभु के स्वर्गदूत दाऊद को उस खतरे से बाहर निकाल रहे थे जिसमें वह पड़ गया था। स्वर्गीय दूतों ने पलिश्ती प्रधानों को आने वाले संघर्ष में उनकी सेना के साथ दाऊद और उसके आदमियों की उपस्थिति का विरोध करने के लिये प्रेरित किया। PPHin 722.2

“यह इब्री यहाँ क्या कर रहे है?” पलिश्ती सरदारों ने आकीश पर दबाव डालकर कहा। आकीश इतने महत्वपूर्ण मित्रपक्ष से अलग होने के लिये तैयार नहीं था और इसलिये उसने उत्तर दिया, “क्या वह इज़राइल के राजा शाऊल का कर्मचारी दाऊद नहीं है, जो क्या जाने कितने दिनों से वरन् वर्षों से मेरे साथ रहता है, और जब से वह भाग आया, तब से आज तक मैंने उसमें कोई दोष नहीं पाया”? PPHin 723.1

लेकिन प्रधान कोधित होकर अपनी माँग पर अड़े रहे, “उस पुरूष को लोटा दे कि यह उस स्थान पर जाए जो तूने उसके लिये ठहराया है, वह हमारे संग लड़ाई में न आने पाएगा, कहीं ऐसा न

हो वह लड़ाई में हमारा विरोधी बन जाए, फिर वह अपने स्वामी से किस रीति से मेल करे? क्या लोगों के सिर कटवकर न करेगा? क्या यह वही दाऊद नहीं है, जिसके विषय में लोग नाचते और गाते हुए एक-दूसरे से कहते थे। PPHin 723.2

"शाऊल ने हजारो को,पर दाऊद ने लाखों को मारा है।" PPHin 723.3

उस घटना के समय उनके प्रख्यात शूरवीर का वध और इज़राइल की विजय अभी भी पलिश्ती प्रधानों के स्मृति-पट पर ताजा थी। उन्हें विश्वास नहीं था कि दाऊद अपने ही लोगों के विरूद्ध लड़ेगा और यदि वह करता भी तो युद्ध के गर्माने पर, वह उनके पक्ष में लड़कर पलिश्तियों को, शाऊल की सम्पूर्ण सेना द्वारा नुकसान पहुँचाने से, अधिक नुकसान पहुँचा सकता था। PPHin 723.4

इस प्रकार आकीश झुकने के लिये विवश हो गया ओर दाऊद को बुलाकर उसने कहा, "यहोवा के जीवन की शपथ, तू तो सीधा है और सेना में तेरा मेरे संग आना जाना भी मुझ भावता है, क्यों जब से तू मेरे पास आया तब से लेकर आज तक मैंने तुझ में कोई बुराई नहीं पाई। तौभी सरदार लोग तुझे नहीं चाहते । इसलिये अब तू कशल से लौट जा, ऐसा न हो कि पलिश्ती सरदार तुझसे अप्रसन्न हो।" PPHin 723.5

इस डर से कि कहीं वह अपनी वास्तविक भावनाएँ व्यक्तनकर दे, दाऊद ने उत्तर दिया, "मैंने क्या किया है? और जब से मैं तेरे सामने आया तब से आज तक तू ने अपने दास से क्या पाया हे कि मैं अपने प्रभु राजा के शत्रुओं से लड़ने न पाऊं? PPHin 723.6

आकीश के उत्तर ने दाऊद के हृदय में पश्चताप और लज्जा की सिरहन भी भेज दी, जब उसने इस बात पर विचार किया कि जिस छल के कारण वह इतना नीचे गिर गया था, वह यहोवा के दूत के लिये कितना अनुपयुकत था। "हाँ, यह मुझे मालूम है, तू मेरी दृष्टि में तो परमेश्वर के दूत के समान अच्छा है, "राजा ने कहा, लेकिन पलिशिती हाकिमों ने कहा है, वह हमारे साथ लड़ाई में नहीं जा पाएगा। इसलिये अब तू अपने प्रभु के सेवकों को लेकर जो तेरे साथ आए हैं तड़के उठना, और उजियाला होते ही चले जाना।" इस प्रकार जिस जाल में दाऊद फेस गया था, वह फट गया और दाऊद स्वतन्त्र हो गया। PPHin 724.1

तीन दिनों की यात्रा के बाद दाऊद और उसके छ: सौ आदमी सिकलग पहुँचे जहाँ उनका पलिश्ती घर था। लेकिन उनकी दृष्टि के सामने निर्जनता का दृश्य था। दाऊद की अनुपस्थिति का लाभ उठाकर, अमालेकियों ने उनके भू-क्षेत्र में उसकी घुसपैठ का प्रतिशोध ले लिया था। जब नगर को असुरक्षित छोड़ा गया था, उन्होंने उस पर अचानक आक्रमण करके, लूटपाट की और उसे जला डाला, और वे वहाँ की स्त्रियों और बच्चों को बन्दी बना कर, बहुत सी लूट के साथ लौट गये थे। PPHin 724.2

भयाकान्त और आश्चर्यविकित, दाऊद और उसके आदमी कुछ समय तक उन स्याह और सुलगते हुए खंडहरों को देखते रह गए। फिर जब उन्हें इस भयानक निर्जनता का एहसास हुआ, वे “चिल्ला-चिल्ला कर इतना रोये की फिर उनमें रोने की शक्ति न रही।” PPHin 724.3

यहाँ फिर से दाऊद को विश्वास की कमी के लिये ताड़ा गया क्योंकि इसी के कारण वह पलिश्तियों के बीच जाकर रहने लगा था। उसे यह देखने का अवसर दिया गया था कि परमेश्वर और उसके लोगों को शत्रुओं के बीच कितनी सुरक्षा प्राप्त हो सकती है। दाऊद के अनुयायी उसे इस विपत्ति का कारण मानकर उस पर उलट पड़े। उसने अमालेकियों पर आक्रमण कर उनके प्रतिशोध को उकसाया था, लेकिन फिर भी अपने शत्रुओं के बीच अपनी सुरक्षा के लिये पूरी तरह निश्चित, उसने शहर को असुरक्षित छोड़ दिया था। दुःख और कोध से पागल, उसके योद्धा अब कोई भी कदम उठाने के लिये तैयार थे और उन्होंने अपने अगुवे पर पथराव करने की भी धमकी दी। PPHin 724.4

ऐसा प्रतीत हुआ मानो दाऊद प्रत्येक मानवीय समर्थन से कट चुका था। जो भी उसे इस पृथ्वी पर प्रिय था, उससे छिन गया था। शाऊल ने उसे अपने देश से निकाल दिया था, पलिश्तियों ने उसे छावनी से खदेड़ दिया था, अमालेकियों ने उसके नगर को लूट लिया था, उसकी पत्नियों और बच्चों को बन्दी बना लिया गया था, और उसके अपने परिचित मित्रों ने उसके विरूद्ध गिरोह बना लिये थे और उसे मृत्यु की धमकी दी थी। इस घोर पमरसंकट की घड़ी में, इन कष्टदायक परिस्थितियों पर अपने मन को मनन की अनुमति देने के बजाय, दाऊद ने सहायता के लिये परमेश्वर की ओर दृष्टि की। उसने “प्रभु में स्वयं को प्रोत्साहित किया।” उसने अपने बीते हुए घटनापूर्ण जीवन का अवलोकन किया। क्या कभी परमेश्वर ने उसे छोड़ा था? परमेश्वर की कृपा-दृष्टि के कई प्रमाणों का स्मरण कर उसकी आत्मा तरोताजा हो गई। दाऊद के अनुयायियों ने, अपने असन्तोष और धैर्यहीनता केकारण अपनी विपदा को दो गुना कष्टदायक बना लिया, लेकिन परमेश्वर के दास ने, दुख के इससे भी बढ़कर कारण के बावजूद, धैर्य से काम लिया। “जिस समय मुझे डर लगेगा, मैं तुझ पर भरोसा रखूंगा ।-भजन सहिता 56:3। यह उसके हृदय की भाषा थी। यद्यपि वह स्वयं उस कठिनाई से बाहर निकलने का मार्ग नहीं सोच पा रहा था, परमेश्वर देख सकता था और उसी ने उसे सिखाया की क्या करना था। PPHin 724.5

अहीमेलेक के पुत्र, याजक ऐशब्यातार को बुलाकर “दाऊद ने यहोवा से पूछा, ‘क्या में इस दल का पीछा करूँ? क्या उसको जा पकडूँगा?” उत्तर मिला, “पीछा कर, क्योंकि तू निश्चय उसको पकड़ेगा, और निःसन्देह सब कुछ छड़ा लाएगा। - 1 शमूएल 30:8। PPHin 725.1

यह शब्द सुनकर दुख और आवेग का तुफान थम गया। दाऊद और उसके योद्धाओं ने भागते हुए शत्रु का पीछा करने के लिय कूच किया। वे इतनी तीव्र गति से गए कि भूमध्यसागर में, गाजा के

पास, गिरने वाली बसोर नामक नदी पहुँच कर, गिरोह के दो सौ पुरूष थकान के कारण पीछे रहने को विवश हो गए। लेकिन बचे हुए चार सौ के साथ, बिना डरे, दाऊद आगे बड़ा। PPHin 725.2

चलते-चलते, वे एक मिस्री दास से टकराए, जो ऐसा लग रहा था, भूख और थकान से मरने वाला था। लेकिन भोजन-पानी ग्रहण करके उसकी जान में जान आयी और उन्हें ज्ञात हुआ कि उसे उसके निर्दयी स्वामी ने, जो घुसपैठ करने वाली सेना का सदस्य अमालेकी था, उसे मरने के लिये छोड़ दिया था। उसने चढ़ाई और लूटपाट की कहानी सुनाई, और फिर उनसे यह वचन लेकर कि ना तो उसे मारा जाए ना उसके स्वामी को सौंपा जाए, वह दाऊद की टोली का शत्रुओं की छावनी तक ले जाने के लिये तैयार हो गया। PPHin 725.3

छावनी के पास पहुँचकर उन्होंने देखा कि वहाँ नाच-गाना चल रहा था। पराक्रमी सेना ने एक भव्य पर्व आयोजित किया था। "वे चारों ओर भूमि पर मदिरा पीते और भोजन करते हुए फैले हुए थे। वे पलिश्तियों और यहूदा के प्रदेश से जो बहुत सी चीजे लाए थे, उसी से उत्सव मना रहे थे ।" एक तत्काल आक्रमण की आज्ञा दी गई और पीछा करने वाले अपने शिकार पर टूट पड़े। अमालेकी इस अक्समात आक्रमण से घबरा गए। पूरी रात और अगले दिन तक युद्ध चलता रहा, और लगभग पूरी शत्रु सेना मार डाली गई। केवल चार सौ पुरूषों का गिरोह, ऊंटो पर सवार होकर, बचकर निकल आने में सफल हुआ। प्रभु का कहा सम्पन्न हुआ, "जो कुछ अमालेकी ले गए थे वह सब दाऊद ने छुड़ाया और दाऊद ने अपन दोनो स्त्रियों को भी छुड़ा लिया। वरन् उनके क्या छोटे, क्या बड़े, क्या बेटे, क्या बेटियाँ, क्या लूट का माल, सब कुछ जो अमेलिकी ले गए थे, उसमें से कोई वस्तु न रही जो उनकी न मिली हो, क्योंकि दाऊद सब का सब लौटा लाया।' PPHin 726.1

जब दाऊद ने अमालेकियों के भूखण्ड में घुसपैठ की थी, उसने उसके हाथों में पड़ने वाले सभी वासियों को तलवार से मार डाला था। परमेश्वर की नियन्त्रकारी शक्ति के अभाव में, अमालेकियों ने पलट वार करके सिकलग के लोगों को नष्ट कर दिया होता। उन्होंने बन्धकों को जीवित रखने का निश्चय किया, क्योंकि भारी संख्या में युद्ध बन्दियों को घर ले जाकर वे विजय का सम्मान और भी बढ़ाना चाहते थे और उनका विचार था कि बाद में वे उन्हें दासों के रूप में बेच देंगे। PPHin 726.2

सभी सांसारिक शक्तियाँ सनातन परमेश्वर के नियन्त्रण में है। सबसे शक्तिशाली राजा, और सबसे अधिक निर्दयी अत्याचारी से वह कहता है, "यहीं तक आ, और आगे न बढ़"-अय्यूब 38:11 । बुराई की शक्तियों का प्रतिशोध करने के लिये परमेश्वर की शक्ति का लगातार अभ्यास होता है, वह मनुष्यों के बीच सर्वदा कार्यरत रहता है, उनके विनाश के लिये नहीं, लेकिन उनके संरक्षण और सुधार के लिये। PPHin 726.3

बड़े आनन्द के साथ विजेता अपने घर की ओर लौटे। अपने उन साथियों के पास लौटकर जो पीछे रह गए थे, उन चार सौ में से जो स्वार्थी और उद्दण्ड थे उन्होंने आग्रह किया कि जिन्होंने युद्ध

में भाग नहीं लिया था, उन्हें लूट का भाग न दिया जाए, और यह कि उनके पत्नि और बच्चे वापस मिल गए थे, यह उनके लिये पर्याप्त था। लेकिन दाऊद ने इस प्रबन्ध की अनुमति नहीं थी, "हे मेरे भाईयों, तुम उस माल के साथ ऐसा न करने पाओगे जिसे यहोवा ने हमें दिया है.........लड़ाई में जानेवाले का जैसा भाग हो, सामान के पास बेठे हुए का भी वैसा ही भाग होगा, दोनो एक ही समान भाग पाएँगे।" इस प्रकार मामले को शान्त किया गया, और बाद में इज़राइल में यह नियम बन गया कि सैन्य अभियान के साथ जो भी सम्मानपूर्वक सम्बन्धित थे, उन्हें वास्तविक संघर्ष में व्यस्त योद्धाओं के समान ही लूट का भाग मिलना चाहिये। PPHin 726.4

सिकलग से ले जाईं गईं सम्पूर्ण लूट को वापस ले लेने के अतिरिक्त, दाऊद और उसके साथियों ने अमालेकियों के बड़ी संख्या में भेड़-बकरियों और गाय-बैलों को भी जीत लिया। इन्हें "दाऊद की लूट" कहा गया, और सिकलग लौटने के उपरांत उसने इस लूट में से, यहूदा के अपने गोत्र के पुरनियों को उपहार भेजे। इस वितरण में उन सब को स्मरण किया गया जिन्होंने पहाड़ी किले में उससे और उसके अनुयायियों से मित्रता की थी, जब वह एक स्थान से दूसरे स्थान पर भागने के लिये विवश कर दिया गया था। पीछा किए जाए रहे पलायक के लिये अनमोल उनकी करूणा और संवदेना को इस प्रकार कृतज्ञतापूर्वक मान्यता दी गई। PPHin 727.1

तीसरे दिन दाऊद और उसके योद्धा सिकलग लौट गए। अपने खण्डहर हुए घरों की मरम्मत करते समय वे उत्सुकता से पलिश्तियों और इज़राइल के बीच युद्ध का समाचार सुनने की प्रतीक्षा कर रहे थे जो उन्हें मालूम था कि अब तक हो चुका होगा। अचानक एक सन्देशवाहक, "कपड़े फाड़े, सिर पर धूल डाले हुए आया। उसे तत्काल दाऊद के पास लाया गया और दाऊद को एक शक्तिशाली राजकुमार की मान्यता देने की अभिव्यक्ति में उसने दाऊद को श्रद्धापूवक दण्डवत किया। वह उसकी कृपा-दृष्टि पाना चाहता था। दाऊद ने उत्सुकता से युद्ध के बारे में पूछा। पलायक ने शाऊल की पराजय और मृत्यु, और योनातन की मृत्यु के बारे में बताया। लेकिन वह तथ्य विवरण से दूर चला गया। निस्सन्देह यह मानते हुए कि दाऊद अपने निर्दयी अत्याचारी के प्रति शत्रुता संजोए होगा, आगन्तुक राजा का हत्यारा होने का सम्मान स्वयं के लिये सुरक्षित करने की आशा कर रहा था। वह शाऊल के सिर का मुकुट और उसकी बॉह से सोने का कड़ा दाऊद के पास लाया था। ढींग मारते हुए उसने बताया कि युद्ध के दोरान उसने इज़राइल के सम्राट को घायल अवस्का में पाया, और उसी के निवेदन पर सन्देशवाहक ने उसे मार दिया। पूरे विश्वास के साथ वह अपेक्षा कर रहा था कि उसे प्रसन्नतापूर्वक शाबाशी दी जाएगी, और उसके द्वारा निभायी गईं भूमिका के लिये बहुमूल्य उपहार दिया जाएगा। PPHin 727.2

लेकिन "दाऊद ने अपने कपड़े पकड़कर फाड़े और जितने पुरूष उनके संग थे उन्होंने भी वैसा ही किया और वे शाऊल और उसके पुत्र योनातन, और यहोवा की प्रजा, और इजलराइल के घराने के लिये छाती पीटने और रोने लगे, इस कारण कि वे तलवार से मारे गए थे।" PPHin 728.1

उस भयावह समाचार का पहले झटके का प्रभाव समाप्त होने के पश्चात, दाऊद का ध्यान आगन्तुक सन्देशवाहक की ओर गया और उसी ही कथानुसार, जिस अपराध का वह दोषी था। मुखिया ने नौजवान से पूछा, 'तू कहाॅ से आय है?" उसने उत्तर दिया, "मैं तो परदेसी का पुत्र अर्थात अमालेकी हूँ।" तब दाऊद ने उससे कहा, "तू यहोवा के अभिषिकक्त को नष्ट करने के लिये हाथ बढ़ाने में क्यो नहीं डरा? दो बार शाऊल उसके अधिकार में था, लेकिन जब उससे उसे मारने का आग्रह किया गया, उसने उस पर हाथ उठाने से मना कर दिया था जिसे स्वयं परमेश्वर की आज्ञा के द्वारा इज़राइल पर शासन करने के लिये अभिषेक किया गया था। फिर भी अमालेकी ढींग मारने से नहीं डर रहा था कि उसने इज़राइल के राजा को मारा थ। उसने स्वयं को मृत्यु के योग्य अपराध का दोषी ठहराया था, और उसे तत्काल दण्डाज्ञा दी गई। दाऊद ने कहा, "तेरा खून तेरी ही सिर पर पड़े, क्योंकि तूने यह कहकर मैंने ही यहोवा के अभिषिक्त को मार डाला, अपने मुहँ से अपने ही विरूद्ध साक्षी दी है।" PPHin 728.2

शाऊल की मृत्यु पर दाऊद का शोक सच्चा और गहरा था और एक शिष्ट स्वभाव की उदारता व्यक्त कर रहा था। वह अपने शत्रु के पतन में अत्यानन्दित नहीं हुआ। इज़राइल के सिंहासन पर उसकी पहुँच का अवरोध करने वाली बाधा हटा दी गई थी, लेकिन इस पर उसने आनन्द नहीं मनाया। मृत्यु ने शाऊल की अविश्वसनीयता और करता की स्मृति को मिटा दिया था और अब उसके इतिहास से राजोचित और श्रेष्ठ के अलावा कुछ नहीं सोचा जा रहा था। शाऊल का नाम योनातन के साथ जुड़ा हुआ था, जिसकी मित्रता इतनी सच्ची और निःस्वार्थ रही थी। PPHin 728.3

जिस गीत में दाऊद ने अपने हृदय की भावनाओं को उच्चारित किया, वह उसकी प्रजा के लिये और उत्तरवती युगों में लोगों के लिये निधि बन गया- PPHin 728.4

"हे इज़राइल, तेरा शिरोमणि तेरे ऊँचे स्थान पर मारा गया।

हाय, शूरवीर कैसे गिर पड़े है।

गत में यह न बताओ और न अश्कलोन की सड़को में प्रचार करना,

न हो कि पलिश्ति स्त्रियाँ आनन्दित हो,

न हो कि खतनारहित लोगों की बेटियाँ गर्व करने लगे।

हे गिलबो पहाड़ो, तुम पर न ओस पड़े,और न वर्षा हो,

और न भेंट के योग्य उपजवाले खेत पाए जाएँ।

क्योंकि वहाँ शूरवीरों की ढाले अशुद्ध हो गई,

और शाऊल की ढाल बिना तेल लगाए रह गई।

जूझे हुओं के लहू बहाने से,

और शूरवीरों की चर्बी खाने से,

योनातन का धनुष न लौटता था,

और न शाऊल की तलवार खाली फिर आती थी।

शाऊल और योनातन जीवनकाल में तो प्रिय और मनभाऊ थे,

और अपनी मृत्यु के समय अलग न हुए,

वे उकाब से भी वेग से चलने वाले,

और सिंह से भी अधिक पराक्रमी थे।

हे इजराईली स्त्रियों शाऊल के लिये रोओ,

वह तो तुम्हें लाल रंग के वस्त्र पहिनाकर सुख देता,

और तुम्हारे वस्त्रों के ऊपर सोने के गहने पहिनाता था।

हाय युद्ध के बीच शूरवीर कैसे काम आए!

हे योनातन, हे ऊँचे स्थानों पर जूझे हुए हे मेरे भाई योनातन,

मैं तेरे कारण दुखित हूँ तू मुझे बहुत मनभाऊ जान पड़ता था।

तेरा प्रेम मुझ पर अद्‌भुत वरन् स्त्रियों के प्रेम से भी बढ़कर था।

हाय, शूरवीर कैसे गिर गए, और युद्ध केहथियार कैसे नष्ट हो गए।' PPHin 729.1

2 शमूएल 1:19-27

अध्याय 69—दाऊद को सिंहासन पर बैठाया जाना

यह अध्याय 2 शमूएल 2 से 55 पर आधारित है

शाऊल की मृत्यु हो जाने से दाऊद को प्रवासी बनाने वाले खतरे टल गए। अब उसके लिये स्वदेश लौटने का मार्ग खुला था। जब शाऊल और योनातन के लिये शोक मनाने के दिन समाप्त हो गए, तब "दाऊद ने यहोवा से पूछा, क्ॣयार्म यहूदा प्रदेश के किसी नगर में जाऊं? यहोवा ने उससे कहा, हाँ जा। दाऊद ने फिर पूछा, किस नगर में जाऊं? और उसने कहा, हेब्रोन में।' PPHin 730.1

हेब्रोन बेशबा से बीस मील उत्तर की ओर और नगर और यरूशलेम के भावी स्थल के बीच आधे रास्ते पर था। इसे आरम्भ में किर्यत्बा कहा जाता था, अरबा का नगर, अनक का पिता अरबा। बाद में इसका नाम माम्रे पड़ा, और यहाँ, "मकपेला की गुफा में" कुलपिताओं के गाढ़े जाने का स्थान था। हेब्रोन कालेब का अधिकत क्षेत्र था और अब यह यहूदा का प्रमुख नगर था। यह फलवन्त देशों और उपजाऊ पहाड़ी देश से घिरी हुई घाटी में स्थित है। फिलिस्तीन के सबसे सुन्दर अंगूर के बाग उसकी सीमाओं पर थे और इसके साथ थे जैतून और अन्य फलों के असंख्य बागान। PPHin 730.2

दाऊद और उसके साथियों ने परमेश्वर से प्राप्त निदेश का पालन करने के लिये तत्काल तैयारी की। वे छः सौ हथियारबंद पुरूष अपनी पत्नियों और बच्चों सहित व उनके भेड़-बकरियाँ और मवेशी जल्द ही हेब्रोन के मार्ग पर थे। जब कारवाँ ने नगर में प्रवेश किया यहूदा के पुरूष दाऊद का इज़राइल के भावी राजा के रूप में उसका स्वागत करने के लिये प्रतीक्षा कर रहे थे। उसके राज्याभिषेक के लिये तुरन्त प्रबन्धन किया गया। "और वहाँ उन्होंने दाऊद का अभिषेक किया कि वह यहूदा के घराने का राजा हो।" लेकिन अन्य जनजातियों पर उसके अधिकार को बलपूर्वक स्थापित करने का कोई प्रयास नही किया गया। PPHin 730.3

शाऊल और योनातन के स्मृति के लिये भावपूर्ण सम्मान व्यक्त करना नव--अभिषिकक्त सम्राट के सर्वप्रथम कृत्यों में से एक था। वीरगति को प्राप्त अगुवों के शवों को बचा कर लाने और उन्हें सम्मानपूर्वक मिट्टी देने में याबेश-गिलाद के पुरूषों के साहसी कार्य के बारे में जानकर दाऊद ने याबेश के पास एक राजदूत को इस सन्देश के साथ भेजा, "यहोवा की आशीष तुम पर हो, क्योंकि तुम ने अपने प्रभु शाऊल पर यह कृपा करके उसको मिट्टी दी। इसलिये अब यहोवा तुम से कृपा और सच्चाई का बर्ताव करे, और मैं भी तुम्हारी इस भलाई का बदला तुम को दूँगा, क्योंकि तुम ने यह काम किया है।" और उसने यहूदा के सिंहासन पर अपने परिग्रहण की घोषणा की और उन सब की राजनिष्ठा को निमन्त्रण दिया जिन्होंने स्वयं को निष्कपट प्रमाणित किया था। PPHin 730.4

पलिश्तियों ने दाऊद को राजा बनाने में यहूदा के निर्णय का विरोध नही किया। उन्होंने उसके प्रवास में उसके साथ मित्रता की थी, ताकि वे शाऊल के राज्य को कमजोर और प्रताड़ित कर सकें,

और अब उन्हें आशा थी कि दाऊद के प्रति उनकी बीते दिनों में दिखाई गईं दया के कारण उसके राज्य का विस्तार उनके लिये लाभदायक होगा। लेकिन दाऊद का राज्य-काल कठिनाईयों से मुक्त नही था। उसके राज्याभिषेक के साथ ही विद्रोह और षड़यन्त्र का दुखःद इतिहास आरम्भ हुआ। दाऊद किसी देशद्रोही के सिंहासन पर नहीं बैठा था, परमेश्वर ने उसे इज़राइलका राजा होने के लिये चुना था, और अविश्वास या विरोध के लिये कोई भी कारण नहीं रहा था, और यहूदा के लोगों द्वारा उसके आधिपत्य की स्वीकृति के बाद ही अब्नेर के प्रभाव से, शाऊल के पुत्र ईशबोशेत को राजा घोषित कर उसे इज़राइल में एक प्रतिद्वंद्वी सिंहासन पर नियुक्त किया गया। PPHin 731.1

ईशबोशेत, शाऊल के घराने का एक निर्बल और अयोग्य प्रतिनिधि था, जबकि दाऊद राज्य का दायित्व संभालने के लिये पहले से ही उत्कृष्ट रूप से योग्यता प्राप्त था। अब्नेर, जो ईश्बोशेत को राजसी अधिकार के लिये बढ़ावा देने में मुख्य कार्यकर्ता और इज़राइल में सबसे अधिक प्रतिष्ठित पुरूष था, शाऊल की सेना में प्रधान सेनापति रह चुका था। अब्नेर जानता था कि दाऊद को प्रभु ने इज़राइल के सिंहासन पर नियुक्त किया था लेकिन इतने लम्बे समय से उसका पीछा करने के बाद, वह अब इस बात के लिये सहमत नहीं था कि यिशे का पुत्र उस राज्य का उत्तराधिकारी हो जिस पर शाऊल ने राज किया था। PPHin 731.2

जिन परिस्थितियों के अधीन अब्नेर को रखा गया, उससे उसके वास्तविक चरित्र का विकास हुआ और पता चला कि वह महत्वाकांक्षी और सिद्धान्तहीन था। शाऊल के साथ उसका घनिष्ठ सम्बन्ध रहा था और वह इज़राइल पर राज करने के लिये परमेश्वर द्वारा चुने गए व्यक्ति का तिरस्कार करने की राजा की भावना से प्रभावित हुआ था। दाऊद के प्रति उसकी घृणा में वृद्धि तब हुई जब छावनी में सोते हुए शाऊल के पास उसका भाला और पानी की सुराही हटा लिये जाने पर दाऊद ने उसे झिड़का था। उसने स्मरण किया कि किस तरह दाऊद ने राजा और इज़राइलियों को सुनाने के लिये ऊंची आवाज में कहा था, “क्या तू साहसी पुरूष नहीं है? इइज़राइल में तेरे तुल्य कोन है? तूने अपने स्वामी राजा को चौकसी क्यों नही की?.......जो काम तूने किया है वह अच्छा नहीं है। यहोवा के जीवन की शपथ तू मारे जाने के योग्य है, क्योंकि तूने अपने स्वामी यहोवा के अभिषिक्त की चौकसी नहीं की ।” यह फटकार उसकी छाती में सुलग रही थी और उसने प्रतिशोध के उद्देश्य को कार्यान्वित करने का और इज़राइल में विभाजन उत्पन्न करने का दृढ़ संकल्प किया जिससे कि उसकी स्वयं की प्रशंसा हो सके। उसने अपने निजी प्रयोजनों और महत्वाकांक्षाओं को बढ़ावा देने के लिये पूर्व राजसी सत्ता के प्रतिनिधि काउपयोग किया। वह जानता था कि लोग योनातन से प्रेम करते थे। उसे स्मरण किया जाता था, और शाऊल के प्रथम सफल अभियानों का सेना ने भुलाया नहीं था। दृढ़ संकल्प के साथ, यह उपद्रवी अगुवा अपनी योजनाओं को कार्यान्वित करने आगे बड़ा। PPHin 731.3

यरदन पार महनेम को राजसी निवास के लिये चुना गया, क्योंकि वह आक्रमण को प्रति सबसे अधिक सुरक्षा प्रदान करता था, चाहे वह आक्रमण दाऊद करे या पलिश्ती। यहां ईश्बोशेत का अभिषेक किया गया। उसका राज सर्वप्रथम यरदन के पूर्व की जनजातियों ने स्वीकार किया, और अन्ततः: उसका विस्तार यहूदा को छोड़कर सम्पूर्ण इज़राइल पर हो गया। दो वर्ष तक शाऊल के पुत्र ने अपनी एकान्त राजधानी में अपनी उपाधि का आनंद लिया लेकिन, सम्पूर्ण इज़राइल पर अधिकार फैलाने के लिये उत्सुक, आकमक युद्ध के लिये तैयार हुआ। और "शाऊल के घराने और दाऊद के घराने के मध्य बहुत दिन तक लड़ाई होती रही, परन्तु दाऊद प्रबल होता गया, और शाऊल का घराना निर्बल पड़ता गया।' PPHin 732.1

अतंत विश्वासघात ने उस सिंहासन को उलट दिया। दुर्बल और अयोग्य ईश्बोशेत से अति कोधित होकर दाऊद के पक्ष में हो गया और उसने इज़राइल की सभी जनजातियों को दाऊद की ओर फिराने का आश्वासन दिया। उसका प्रस्ताव राजा द्वारा स्वीकार किया गया और उसे अपना उद्देश्य पूरा करने के लिये सम्मान के साथ भेजा गया। लेकिन एक प्रख्यात और वीर योद्धा के उत्साहपूर्ण स्वागत ने दाऊद की सेना के सेनापति, योआब की ईईर्ष्या को जागृत किया। अब्नेर और योआब के बीच कुल-बैर रहा था, क्योंकि यहूदा और इज़राइल के बीच युद्ध के दौरान, अब्नेर ने योआब के भाई असाहेल को मारा था। अब योआब ने, अपने भाई की मृत्यु का प्रतिशोध लेने के लिये और एक प्रत्याशित प्रतिद्वंद्वी से छुटकारा पाने क लिये, अवसर देखकर, अब्नेर का रास्ता रोककर उसकी हत्या कर दी। इस विश्वासघाती वार की सूचना पाकर दाऊद ने कहा, "नेर के पुत्र अब्नेर के खून के विषय में अपनी प्रजा समेत यहोवा की दृष्टि में मैं सदैव निर्दोष रहूँगा। वह योआब और उसके पिता के समस्त घराने को लगे।" राज्य की अस्थिर स्थिति, और हत्यारों के पद और अधिकार को देखते हुए, क्योंकि योआब के भाई अबीशै ने भी योआब की सहायता की थी, दाऊद अपराध के लिये निष्पक्ष दण्ड नहीं दे सका, लेकिन उसने सार्वजनिक तौर पर इस हत्या के प्रति अपनी घृणा प्रकट की। अब्नेर को सार्वजनिक सम्मान के साथ मिट्टी दी गई । योआब के नेतृत्व में सेना को शोक समारोह में सम्मिलित होना था अर्थात अपने वस्त्र फाड़कर टाट का वस्त्र धारण करना था। मिट्टी देने के दिन राजा ने उपवास रखकर अपने दुख की अभिव्यक्ति की, वह प्रमुख विलापी की तरह स्वयं अथी के पीछे-पीछे चला, और कब्र पर उसने एक शोक गीत गाया जो हत्यारों के लिये एक फटकार था, अब्नेर पर विलाप करते हुए राजा ने कहा, PPHin 732.2

"क्या उचित था कि अब्नेर मूढ़ के समान मरे?

न तो तेरे हाथ बांधे गए, और न तेरे पैरों में बेडिया डाली गई।

जैसे कोई कटिल मनुष्यों से मारा जाए.वैसे ही तू मारा गया।" PPHin 733.1

दाऊद द्वारा, उसका कट्टर शत्रु रहे व्यक्ति को इतनी उदार मान्यता दिए जाने से दाऊद ने समस्त इज़राइल के विश्वास और श्रद्धा को प्राप्त किया। "सब लोगों ने इस पर विचार कियाऔर इन

से प्रसन्न हुए, वैसे भी जो कुछ राजा करता था उससे सब लोग प्रसन्न होते थे। अत: उन सब लोगों ने, वरन् समस्त इज़राइल ने भी, उस दिन जान लिया कि नेर के पुत्र अब्नेर का घात किया जाना राजा की ओर से नहीं था।" अपने विश्वसनीय सलाहकारों और कर्मचारियों की अंतरग मण्डली में राजा ने अपराध की बात कही और अपनी इच्छा के अनुसार हत्यारों को दण्ड देने में उसकी व्यक्तिगत अयोग्यता को मानते हुए, उसने उन्हें परमेश्वर के न्याय के लिये छोड़ दिया, "क्या तुम लोग नहीं जानते कि इज़राइल में आज के दिन एक प्रधान और प्रतापी मनुष्य मरा है? और यद्यपि मैं अभिषिक्त राजा हूँ तौभी आज निर्बल हूँ और वे सरूयाह के पुत्र मुझ से अधिक प्रचंड है। परन्तु यहोवा बुराई करने वाले कोउसकी बुराई के अनुसार ही बदला दे।' अब्नेर अपने प्रस्तावों और प्रतिनिधित्व में दाऊद के प्रति सत्यनिष्ठ रहा था, लेकिन उसके प्रयोजन नीच और स्वार्थी थे। उसने लगातार परमेश्वर द्वारा नियुक्त राजा का प्रतिरोध किया क्योंकि वह स्वयं के लिये सम्मान सुरक्षित करना चाहता था। घृणा, घायल अभिमान, और आवेग के कारण वह उस उद्देश्य को भूल गया जिसके लिये उसने इतने वर्ष प्रयास किया, और दाऊद की सेवा में सम्मान का उच्चतम पद पाने की आशा में वह उसके पक्ष में आया। यदि वह अपने प्रयोजन में सफल हो जाता, उसकी प्रतिभा और महत्वाकांक्षा, उसके व्यापक प्रभाव और उसमेंधार्मिकता के अभाव ने दाऊद के सिंहासन और राष्ट्र की शान्ति और समृद्धि को संकट में डाल दिया होता। PPHin 733.2

"जब शाऊल के पुत्र ने सुना कि अब्नेर हेब्रोन में मारा गया, तब उसके हाथ ढीले पड़ गए और सब इज़राइली भी घबरा गए।" यह स्पष्ट था कि राज्य को बहुत दिनों तक कायम नहीं रखा जा सकता था। जल्द ही विश्वासघात के एक और कृत्य ने घटती हुई सत्ता के पतन को सम्पूर्ण किया। ईश्बोशेत को उसके दो कप्तानों ने धोखे से मार दिया, जो यहूदा के राजा का अनुग्रह प्राप्त करने की आशा में, ईश्बोशेत का सिर लेकर उसके पास गए। PPHin 734.1

वे दाऊद के सम्मुख अपने अपराध की रकक्तरंजित साक्षी के साथ प्रस्तुत हुए और बोले, "देख, शाऊल जो तेरा शत्रु और तेरे प्राणों का ग्राहक था, उसके पुत्र ईशबोशेत का यह सिर है, आज के दिन यहोवा ने शाऊल और उसके वंश से मेरे प्रभु राजा का प्रतिशोध लिया है।" लेकिन दाऊद, जिसका सिंहासन स्वयं परमेश्वर ने स्थापित किया था, और जिसे परमेश्वर ने उसके शत्रुओं से बचाया था, धोखे के सहयोग से उसके अधिकार को स्थापित करना नहीं चाहता था। उसने इन हत्यारों को शाऊल की हत्या करने वाले ढींगमारो के विनाश के बारे में बताया। "जब दुष्ट मनुष्यों ने एक निर्दोष मनुष्य को उसी के घर में, वरन् उसकी चारपाईं ही पर घात किया, तो मैं अब अवश्य ही उसके खून का बदला तुम से लूँगा, और तुम्हें धरती पर से नष्ट कर डालूँगा। तब दाऊद ने जवानों को आज्ञा दी और उन्होंने उनको हेब्रोन के पोखरे के पास टॉग दिया। तब ईश्बोशेत के सिर को उठाकर हेब्रोन में अब्नेर की कब्र में गाड़ दिया। PPHin 734.2

ईश्बोशेत की मृत्यु के पश्चात इज़राइल के प्रतिष्ठित पुरूषों में सामान्य इच्छा थी कि दाऊद को सभी जनजातियों का राजा बनाया जाए।" तब इज़राइल के सब गोत्र दाऊद के पास हेब्रोन में आकर कहने लगे, सुन हम लोग और तू एक ही हाड़ मास है।" फिर उन्होंने कहा, "तुम ही हमारा नेतृत्व करते थे और तुम ही इज़राइल को युद्ध से वापस लाए, और यहोवा ने तुझ से कहा, मेरी प्रजा इज़राइल का चरवाहा, और इज़राइल का प्रधान तू ही होगा। अत: सब इज़राइली पुरनिये हेब्रोन में राजा के पास आए और दाऊद राजा ने उनके साथ हेब्रोन मे यहोवा के सामने वाचा बाँधी" इस प्रकार परमेश्वर की देख-रेख में दाऊद के लिये सिंहासन पर आने का रास्ता खोला गया। सन्तुष्ट करने के लिये उसकी कोई महत्वाकांक्षा नहीं थी, क्योंकि उसने उस सम्मान की अभिलाषा नहीं की थी जहाँ तक उसे लाया गया था। PPHin 734.3

हारून और लैवियों के आठ हजार से अधिक वंशज दाऊद की सेवा-टहल करते थे। लोगों की भावनाओं में परिवर्तन स्पष्ट और निर्णयात्मक था। कान्ति शान्त और सभ्य थी, उस कार्य के योग्य, जो वे कर रहे थे। लगभग पचास हज़ार जन, जो शाऊल की भूतपूर्व प्रजा थे, हेब्रोन और उसके पड़ोस में एकत्रित हुए। जनसाधारण से पहाड़ और घाटियाँ सजीव हो उठी थी। राज्याभिषेक की घड़ी निर्धारित की गई; वह मनुष्य जिसे शाऊल के दरबार से निष्कासित किया गया, जो अपने प्राण बचाने के लिये पृथ्वी की गुफाओं और पहाड़ो से भाग गया था, उस उत्कृष्ट सम्मान को प्राप्त करने वाला था, जो किसी मनुष्य को दिया जा सकता है। याजक और पुरनिये, अपने पवित्र कार्य-भार के वस्त्र पहन, चमचमाते भाले और शिरस्त्राण धारण किये अफसर और सैनिक, और दूर-दूर से आए परदेशी, चुने हुए राजा के अभिषेक को देखने के लिये खड़े हुए। दाऊद को राजसी वस्त्र पहनाया गया। महायाजक द्वारा उसके सिर पर पवित्र तेल डाला गया, क्योंकि शमूएल द्वारा किया गया अभिषेक, राजा के अभिषेक के समय क्या होना था, उसका भविष्यसूचक था। समय आ गया था, और दाऊद, पवित्र रीति से परमेश्वर के प्रतिनिधि के रूप में अपने कार्यभार के लिये समर्पित किया गया। उसके हाथ में राजदण्ड दिया गया। उसकी पवित्र सार्वभौमिकता की वाचा लिखी गई और प्रजा ने अपनी स्वामिभक्ति की शपथ ली। उसके सिर पर मुकूट रखा गया और अभिषेक समारोह सम्पन्न हुआ। इज़राइल के पास ईश्वर द्वारा नियुक्त राजा था। वह जिसने प्रभु की बाट जोही थी, उसने परमेश्वर की प्रतिज्ञा को पूरा होते देखा। "और दाऊद की बड़ाई अधिक होती गई, और सेनाओं का परमेश्वर यहोवा उसके साथ रहता था ।"-2 शमूएल 5:10। PPHin 735.1

अध्याय 70—दाऊद का भाषण

यह अध्याय 2 शमूएल 5:6-25; 6,7,9,10 पर आधारित है

जैसे ही दाऊद को इज़राइल के सिंहासन पर विराजमान किया गया, वह अपने राज्य की राजधानी के लिये एक अधिक उचित स्थान ढूंढने लगा। हेब्रोन से बीस मील दूर राज्य के भावी महानगर के लिए एक स्थान चुना गया। यहोशू के द्वारा यरदन पर से इज़राइली सेना को ले जाने से पूर्व इसका नाम सालेम था। इस स्थान के निकट अब्राहम ने परमेश्वर के प्रति अपनी स्वामिभक्ति का प्रमाण दिया था। दाऊद के अभिषेक से आठ सौ वर्ष पूर्व यह परमेश्वर के याजक मलिकिसिदक का घर था। यह देश के मध्य से और ऊंचाई पर था और पहाड़ो के वातावरण द्वारा सुरक्षित था। बिन्यामीन और यहूदा के बीच की सीमा पर होते हुए, यह एप्रैम के समीप था और अन्य गोत्र यहा आसानी से पहुँच सकते थे। PPHin 736.1

इस स्थान को सुरक्षित करने के लिये इब्रियों के लिये कनानियों के उत्तरजीवियों को निर्वासित करना आवश्यक था। कनानी सिय्योन और मोरा पर्वतों पर एक सुरक्षित स्थान में स्थित थे। इस गढ़ को यबूस कहा जाता था और इसके निवासी यबूसी कहलाते थे। सदियों से यबूस को अजेय माना जाता था, लेकिन योआब के नेतृत्व में इब्रियों ने इसका घेराव कर इसे ले लिया था। योआब को इसी साहस के लिये पारितोषिक के रूप में इज़राइल की सेनाओं को प्रधान सेनापति बनाया गया था। यबूस अब राष्ट्रीय राजधानी बन गया था, और उसके मूर्तिपूजा से जुड़े नाम को बदलकर यरूशलेम रखा गया। PPHin 736.2

भूमध्यसागर पर स्थित, सोर के समृद्ध नगर का राजा, होशम ने इज़राइल के राजा से सन्धि की और यरूशलेम में महल के निर्माण के कार्य में दाऊद की सहायता की। सोर से राजदूतों को भेजा गया और उनके साथ राजमिस्त्री और कारीगर और कीमती काठ, देवदार के वृक्ष और अन्य बहुमूल्य सामग्री भी भेजी गई। PPHin 736.3

दाऊद के शासनकाल मे इज़राइल की बढ़ती हुई ताकत, यबूस के गढ़ का अधिग्रहण और सोर के राजा हीराम के साथ सन्धि ने पलिश्तियों की शत्रुता को उकसाया और उन्होंने सशक्त सेना के साथ देश पर आक्रमण किया, वे रपाईम नाम तराई में फैल गए, जो यरूशलेम से कुछ ही दूरी पर है। दाऊद और उसके साथी सिय्योन के गढ़ में चले गए और उन्होंने ईश्वरीय निर्देश की प्रतीक्षा की। "जब दाऊद ने यहोवा से पूछा, क्या मैं पलिश्तियों पर चढ़ाई करूँ? क्या तू उन्हें मेरे हाथ में दे देगा? यहोवा ने दाऊद से कहा, चढ़ाई कर, क्योंकि मै निश्चय ही पलिशितयों को तेरे हाथ कर दूँगा। PPHin 736.4

दाऊद ने शत्रु पर तत्काल चढ़ाई की, उन्हें पराजित किया और उनको नष्ट कर दिया और उनसे उनकी मूर्तियाँ, जो वे अपनी विजय निश्चित करने के लिये लाए थे, ले ली। अपनी पराजय के अपमान से अत्यन्त क्रोधित होकर, पलिश्तियों ने एक विशाल सेना एकत्रित की और दूसरी बार चढ़ाई करके वे "रपाईम नामक तराई में फैल गए।" जब दाऊद ने यहोवा से पूछा और उस महान "मैं हूँ" अर्थात परमेश्वर ने इज़राइल की सेनाओं का निर्देशन स्वयं किया। PPHin 737.1

परमेश्वर ने दाऊद को निर्देश दिया, "चढ़ाई न कर, उनके पीछे से घूमकर तूत वृक्षों के सामने से उन पर धावा बोल। और जब तूत वृक्षों की फनगियों में से सेना के चलन की सी आहट तुझे सुनाई पड़े, तब फर्ती करनाःक्योंकि फिर यहोवा पलिश्तियों की सेना को मारने तेरे आगे-आगे जाएगा।" यदि शाऊल की तरह दाऊद ने अपना ही तरीका अपनाया होता, तो वह सफल नहीं होता। लेकिन वह परमेश्वर की आज्ञानुसार "गेबा से लेकर गेजेर तक पलिश्तियों को मारता गया। 1 इतिहास 14:16,17। PPHin 737.2

चूंकि अब दाऊद सिंहासन पर दृढ़ता से स्थापित हो गया था, और विदेशी शत्रुओं की घुसपैठ से स्वतन्त्र था, वह अपने अभिलाषित उद्देश्य की पूर्ति की ओर मुड़ा-परमेश्वर के सन्दूक को यरूशलेम ले कर आना। कई वर्षा से सन्दूक यहाँ से नौ मील दूर किरयंत्यारीम में रहा था; लेकिन यह उचित था कि पवित्र 'उपस्थिति' के प्रतीक से राष्ट्र की राजधानी की शोभा बढ़ाई जाए। PPHin 737.3

दाऊद ने इज़राइल के तीस हजार प्रतिष्ठित पुरूषों को बुलाया क्योंकि उसका उद्देश्य था कि इस अवसर को परम आनन्द और प्रभावशाली प्रदर्शन का दृश्य बनाया जाए। लोगों ने प्रसन्नतापूर्वक इस बुलावे का प्रत्युत्तर दिया। पवित्र कार्य स्थान में कार्यरत अपने भाईयों के साथ महायाजक, और प्रधान और सभी गोत्रों के सम्मानीय पुरूष किर्यत्यारीम में एकत्रित हुए। दाऊद पवित्र उत्साह से दमक रहा था। सन्दूक को अबीनादाब के घर से निकाला गया और उसे एक नयी बैलगाड़ी में रखा गया और अबीनादाब के दो पुत्रों ने गाड़ी को हांका। PPHin 737.4

इज़ाराइली पुरूष उसके पीछे-पीछे प्रशंसा के गीत गाते और जयजयकार करते चले और उन्होंने वाद्य-यन्त्रों के संगीत के साथ अपनी आवाजों के सुर मिलाए, "दाऊद और इज़राइल का समस्त घराना यहोवा के आगे सब प्रकार के बाजे और वीणा, सारंगियाँ, डफ, डमरू और झांझ बजाते रहे।" इज़राइल ने विजयोल्लास का ऐसा दृश्य बहुत समय बाद देखा था। पहाड़ो और घाटियों के घुमावदार रास्तों से होता हुआ वह विशालजन-समूह प्रसन्नता के साथ पवित्र नगर की ओर गया। PPHin 738.1

लेकिन, जब वे नाकोन के खलिहान तक आए, तब उज्जा ने अपना हाथ परमेश्वर के सन्दूक की ओर बढ़ाकर उसे थाम लिया, क्योंकि बैलों ने ठोकर खाई और वह हिल गया। तब यहोवाका कोप उज्जा पर भड़क उठा, और परमेश्वर ने उसे उसके दोष के कारण ऐसा मारा कि वह वहाँ परमेश्वर

के सन्दूक के पास मर गया।" आनन्द मनाती हुई भीड़ अचानक से भयभीत हो गई । दाऊद भौंचक्का रह गया और अपने हृदय में उसने परमेश्वर के न्याय पर सन्देह किया। वह पवित्र उपस्थिति के प्रतीकके तौर पर वाचा के सन्दूक का सम्मान करना चाहता था। फिर क्यों उस सुखद सुअवसर को दुख और विलाप के दृश्य में बदलने के लिये वह भयावह दण्डाज्ञा भेजी गई? दाऊद को लगा की सन्दूक को पास में रखना सुरक्षित नहीं होगा, इसलिये उसने निश्चय किया कि उसे वहीं रहने दिया जाए जहाँ वह था। पास ही में गतवासी ओबेदेदोम के घर में उसे रखने के लिये स्थान मिल गया। PPHin 738.2

उज्जा कि नियति एक सुस्पष्ट आज्ञा के उल्लंघन के लिये पवित्र दण्डादेश था। मूसा के माध्यम से परमेश्वर ने संदूक के परिवहन से सम्बन्धित विशेष निर्देश दिए थे। केवल हारून के वंशज, अर्थात याजक संदूक को छू सकते थे या उसे बिना आवरण के देख सकते थे। पवित्र निर्देश था, "कहाती उसके उठाने के लिये आएं, पर किसी पवित्र वस्तु को न छुएँ, कही ऐसे न हो वे मर जाएं ।-गिनती 4:15। याजको को सन्दूक को ढॉकना था और फिर कहातियों को उसे डंडो से उठाना था; ये, डंडे संदूक के दोनो तरफ लगे कड़ो में से पिरोए हुए थे, और इन्हें कभी भी हटाया नहीं जाना था। गेशोनियों और मरारियों के प्रभार में मिलापवाले तम्बू के पर्द, पट और स्तम्भ थे। मूसा ने उन्हें दी गई वस्तुओं के परिवहन के लिये बैल और गाड़िया दी। "परन्तु कहातियों को उसने कुछ न दिया, क्योंकि उनके लिये पवित्र वस्तुओं की यह सेवकाई थी कि वे उसे अपने कंधो पर उठा लिया करें।-गिनती 7:9। इस प्रकार संदूक को किर्यत्यारीम से लाने में परमेश्वर के निर्देशों का प्रत्यक्ष और अक्षम्य अनादर हुआ था। PPHin 738.3

दाऊद और उसके प्रजा एक पवित्र कार्य को सम्पन्न करने के लिये एकत्रित हुए थे, और वे उसे प्रसन्नता और स्वेच्छा से करने में व्यस्त हुए थे, लेकिन प्रभु इस विधि को स्वीकार नहीं कर सकता था क्योंकि यह उसके निर्देशानुसार सम्पन्न नहीं की गईं थी। पलिश्तियों ने, जिन्हें परमेश्वर की व्यवस्था का ज्ञान नहीं था, इज़राइल लौटते समय सन्दूक को गाड़ी पर रखा था और परमेश्वर ने उनके द्वारा किये गए प्रयास को स्वीकार किया। लेकिन इज़राइलियों के हाथों में इन विषयों में परमेश्वर की इच्छा का स्पष्ट विवरण था, और इन निर्देशों के प्रति उनकी उपेक्षा परमेश्वर का निरादर करना था। उज्जा परिकल्पना के लिये अधिक दोषी था। परमेश्वर की व्यवस्था के उल्लंघन ने उसकी पवित्रता के आभास को उसमें कम कर दिया था और अस्वीकृति पापों को अपने ऊपर लिये, परमेश्वर द्वारा निषिद्ध होने के बावजूद उसने परमेश्वर की उपस्थिति के प्रतीक को छूने का दुस्साहस किया। परमेश्वर ना तो आंशिक आज्ञाकारिता और ना ही उसके नियमों के प्रति उदासीनता को स्वीकार करता है। उज्जा पर दण्डाज्ञा भेजने के द्वारा वह समस्त इज़राइल पर उसके नियमों पर गम्भीरतापूर्वक ध्यान देने की आवश्यकता को समझाना चाहता था। इस प्रकार उस एक मनुष्य की मृत्यु, लोगों को पश्चताप का मार्ग दिखाकर, हजारों को दण्डादेश देने की आवश्यकता को रोक सकता था। यह सोचकर कि उसका अपना मन परमेश्वर के प्रति पूर्णतया साफ नहीं था, उज्जा पर

पड़ी मार को देखकर दाऊद को सन्दूक का भय था कि कहीं उसका कोई पाप उस पर दण्डाज्ञा न ले आए। लेकिन ओबेदेदोम ने, जो प्रसन्नता में भी कॉप रहा था, पवित्र प्रतीक का, निष्ठावानों के लिये परमेश्वर की कृपा-दृष्टि की प्रतिज्ञा के तौर पर, स्वागत किया। समस्त इज़राइल का ध्यान अब गतवासी और उसके घराने की ओर था, सब देख रहे थे कि उनके साथ सब कुछ कैसा रहेगा और “यहोवा ने ओबेदेदोम और उसके समस्त घराने को आशीष दी। PPHin 739.1

दाऊद पर परमेश्वर की फटकार ने अपना कार्य सम्पन्न किया। उसे एहसास कराया गय कि उसने पहले से ही सम्पूर्ण आज्ञाकारिता की आवश्यकता और परमेश्वर की व्यवस्था की पवित्रता को नहीं समझा था। ओबेदेदोम के घराने पर कृपा-दृष्टि दिखाने से दाऊद ने फिर से यह आशा की कि संदूक उसके और उसकी प्रजा के लिये आशीष का कारण होगी। PPHin 739.2

तीन माह पश्चात उसने सन्दूक को हटाने का एक और प्रयास करने का संकल्प किया, और इस बार उसने परमेश्वर के निर्देशों का सूक्ष्माा से पालन करने पर पूरा ध्यान दिया। राष्ट्र के माननीय पुरूषोंको बुलाया गया और गतवासी के निवास स्थान के चारों ओर एक विशाल जन-समूह एकत्रित हो गया। सन्दूक को श्रद्धापूर्वक ईश्वर द्वारा नियुक्त व्यक्तियों के कन्धों पर रखा गया, सब लोग पक्तिबद्ध हुए और कॉपते हृदयों के साथ विशाल जन-मण्डली आगे बड़ी। छः कदम चलने पर तुरही के स्वर नें रूकने का संकेत दिया। दाऊद के निर्देश द्वारा “बेल और पाला-पोसा हुआ बछड़ा” बलि चढ़ाया था। केंपन और भय का स्थान अब आनन्द ने ले लिया। राजा ने अपने राजसी वस्त्र एक तरफ रख कर सन के वस्त्र का एपोद, जो याजकों द्वारा पहना जाता है, धारण किया। ऐसा करने से वह यह नहीं जता रहा था कि उसने याजकीय कार्य ग्रहण कर लिये थे, क्योंकि एपोद कभी-कभी याजकों के अलावा अन्य लोग भी पहन लेते थे। लेकिन इस पवित्र विधि में उसने परमेश्वर के सम्मुख, अपनी प्रजा की बराबरी में स्थान लिया। उस दिन यहोवा की महिमा होनी थी। परमेश्वर को श्रद्धा का एकमात्र लक्ष्य होना था। PPHin 740.1

फिर से लम्बा कारवाँ गतिमान हुआ और वीणा और सारंगी, तुरही और झांझ का संगीत हवामें तैरने लगा और कई सुरों के साथ मिल गया। “और दाऊद यहोवा के सम्मुख नाचता रहा।” PPHin 740.2

परमेश्वर के सम्मुख श्रद्धापूर्ण आनन्द में दाऊद के नाचने के प्रसंग को आमोद-प्रमोद प्रिय लोग प्रचलित आधुनिक नृत्य को न्यायोचित ठहराने के लिये उल्लेख करते है, लेकिन ऐसे तक के लिये कोई आधार नहीं है। आज के समय में नृत्य मध्यरात्रि के मनोरंजन और मौज मस्ती से सम्बद्ध है। स्वास्थ और नीति विद्या को आमोद-प्रमोद पर बलि चढ़ा दिया गया है। नृत्यप्रेमियों के लिये परमेश्वर श्रद्धायुक्त भय और विचार का पात्र नहीं होता, उनकी सभाओं में प्रार्थना या प्रशंसा के गीत अनुचित प्रतीत होंगे। यह परख निर्णायक होनी चाहिये। वे मनोरंजन जिनमें पवित्र वस्तुओं के लिये प्रेम को निर्बल करने की और परमेश्वर के कार्या को करने में हमारे आनन्द कोकम करने की प्रवृति होती

है, मसीही लोगों को नहीं अपनाने चाहिये। संदूक को स्थानान्तरित करने पर परमेश्वर के लिये सहर्ष प्रशंसा में नाच गाने और आधुनिक नृत्य में थोड़ी सी भी समानता नहीं है। एक का लक्ष्य था परमेश्वर का स्मरण और उसके पवित्र नाम की प्रशंसा लेकिन दूसरा अर्थात आधुनिक नृत्य मनुष्य को परमेश्वर को भुलाने और उसका निरादर करवाने का शैतान का माध्यम है। PPHin 740.3

विजयोल्लास से परिपूर्ण जन-समूह अपने अदृश्य राजा के पवित्र प्रतीक के पीछे-पीछे राजधानी के निकट पहुँचा। गीत की तेज आवाज ने शहरपनाहों के प्रहरियों को संकेत दिया कि पवित्र नगर के फाटक खोल दिये जाएँ- PPHin 741.1

“हे फाटकों, अपने सिर ऊँचे करो, हे सनातन के द्वारो, ऊंचे हो जाओ

क्योंकि प्रतापी राजा प्रवेश करेगा।

गायक मण्डली और साज बजाने वालों ने कहा,वह प्रतापी राजा कौन है?

दूसरे समूह ने उत्तर दिया-

परमेश्वर जो सामर्थी और पराक्रमी ह;परमेश्वर जो युद्ध में पराक्रमी है।’

फिर सेकड़ो आवाजों ने मिलकर विजय गान गाया

हे फाटकों अपने सिर ऊँचे करो

हे सनातन के द्वारों, तुम भी खुल जाओ

क्योंकि प्रतापी राजा प्रवेश करेगा । PPHin 741.2

फिर से वह सुखदायी प्रश्न सुनाई दिया, “वह प्रतापी राजा कौन है? और विशाल जन-समूह की ‘बहुत से जल की घरघराहट” के समान आवाज में उत्साहपूर्ण उत्तर सुनाई दिया- PPHin 741.3

“सेनाओं का यहोवा,वही प्रतापी राजा है। - भजन संहिता 24:7-10। PPHin 741.4

फिर फाटकों को पूरा खोल दिया गया, जन-समूह ने प्रवेश किया और अत्यन्त श्रद्धा के साथ सन्दूक को उस तम्बू में रख दिया गया, जिसे उसकी अगवानी के लिये खड़ा किया गया था। पवित्र तम्बू के सामने बलि की वेदी खड़ी की गई, होमबलि और मेल बलि के धुएँ, धूप के धुएँ के साथ इज़राइल के निवेदन और प्रशंसा गीत स्वर्ग को समर्पित किये गए। धर्म-किया सम्पन्न होने के पश्चात राजा ने स्वयं प्रजा को आशीर्वाद दिया। फिर अपनी राजसी बहुतायत में से उने उनके अल्पाहार के लिये भोजन और दाखरस बँटवाया। PPHin 741.5

इस धर्म किया में सभी गोत्रों का प्रतिनिधित्व हुआ था और यह दाऊद के शासनकाल का अब तक की सबसे पवित्र घटना का समारोह रहा था। शाऊल पर पवित्र प्रेरणा का आत्मा आकर ठहरा

था, और अब जब डूबते हुए सूर्य की अन्तिम किरणें पवित्र तम्बू को पवित्र प्रकाश से स्नान करा रही थी उसके हृदय ने परमेश्वर का धन्यवाद किया कि उसकी उपस्थिति का प्रतीक इज़राइल के सिंहासन के इतना समीप था। PPHin 741.6

इस प्रकार विचारमय होकर, दाऊद "अपने घराने को आशीर्वाद देने के लिये" अपने महल की ओर मुड़ा। लेकिन कोई एक थी जिसने इस आनंदमयी दृश्य को दाऊद के हृदय को प्रभावित करने वाली भावना के बिल्कुल विपरीत भावना से देखा था। "जब यहोवा की वाचा का सन्दूक दाऊदपुर में पहुँचा तब शाऊल की बेटी मीकल ने खिड़की में से झांककर दाऊद राजा को कूदते और नाचते हुए देखा। उसने उसे अपने हृदय में तुच्छ समझा।" अत्यन्त अप्रसन्नता के कारण वह दाऊद के महल में वापसी तक प्रतीक्षा न कर सकी, वरन् उससे मिलने के लिये बाहर गई और दाऊद के भद्र अभिवादन के उत्तर में उसने कट शब्दों की बौछार कर दी। उसके कथनों की व्यंगोक्ति तीव्र और कराक्ष करने वाली थी, "कितना तेजस्वी था आज इज़राइल का राजा, जिसने अपनी प्रजा की दासियों के सामने अपने वस्त्र उतार दिये, जैसे कोई मूर्ख मनुष्य बिना लज्जा के स्वयं को निर्वस्त्र करता है। PPHin 742.1

दाऊद को लगा कि मीकल ने परमेश्वर की धर्म-किया का तिरस्कार और निरादर किया था, और उसने कठोरतापूर्वक उत्तर दिया, "यहोवा, जिसे तेरे पिता और उसके समस्त घराने के बदले मुझ को चुनकर अपनी प्रजा इज़राइल का प्रधान होने को ठहरा दिया है, उसके लियेमैं ऐसे नाचा.......और में यहोवा के सम्मुख ऐसे ही नाचता रहूँगा। और में इससे भी अधिक तुच्छ बनूँगा, और अपनी दृष्टि में नीच ठहरूँगा, और जिन दासियों की तू ने चर्चा की है वे भी मेरा आदरमान करेंगी।" दाऊद की फटकार के साथ प्रभु की झिड़की भी जुड़ गई, अपने अभिमान और उदण्डता के कारण 'मरने के दिन तक मीकल के कोई संतान न हुई।" PPHin 742.2

सन्दूक के स्थानान्तरण के उपलक्ष में किये गए पवित्र समारोहों का प्रजा पर गहरा प्रभाव पडा और पवित्र स्थान की धर्म किया में उनकी गहरी रूचि उत्पन्न हुई और यहोवा के लिये उनका उत्साह पुनः जागृत हुआ। गीत गाने की धर्म किया धार्मिक आराधना का यथाविधि भाग बन गया, और दाऊद ने ना केवल मिलापवाले तम्बू की धर्म किया में याजकों के उपयोग के लिये, वरन् वार्षिक पर्वा पर राष्ट्र वेदी पर आने वाले यात्रियों के द्वारा गाए जाने के लिये, भजन लिखे। इस तरह डाला गया प्रभाव व्यापक था, और वह राष्ट्र को मूर्तिपूजकों से स्वतन्त्र कराने में प्रमाणित हुआ। पड़ोसी जन-जातियाँ इज़राइल की समृद्धि देखकर, इज़राइल के परमेश्वर, जिसने अपने लोगों के लिये इतने महान कार्य किये थे, के पक्ष में विचार करने लगे। PPHin 742.3

मूसा द्वारा निर्मित पवित्र-मण्डप, सन्दूक को छोड़कर पवित्र विधि से सम्बन्धित सभी वस्तुएँ अभी गीबा में ही थी। दाऊद इज़राइल को राज्य का धार्मिक केन्द्र बनाना चाहता था। उसने स्वयं के लिये महल का निर्माण कराया था, और उसे लगा था कि यह उचित नहीं था कि परमेश्वर का

सन्दूक एक तम्बू में रहे। उसने ऐसा भव्य मन्दिर के निर्माण का निश्चय किया, जो कि राजा यहोवा की 'स्थाई उपस्थिति" के रूप में दिये गए सम्मान के लिये इज़राइल के आभार की अभिव्यक्ति करता हो। उसने अपना उद्द्श्य नातान भविष्यद्वक्ता को बताया औश्र उससे प्रोत्साहक प्रत्युत्तर मिला, "जो कुछ तेरे मन में हो उसे कर क्योंकि यहोवा तेरे संग हैं। PPHin 743.1

उसी रात को यहोवा का यह वचन नातान के पास पहुँचा जिसमें राजा के लिये सन्देश था। दाऊद को परमेश्वर के लिये भवन निर्माण करने के विशेषाधिकार से वंचित किया जाना था लेकिन उसे उसके वंशजो को, और इज़राइल के राज्य को ईश्वर की कृपा-दृष्टि का आश्वासन दिया गया, "मैने तो तुझे भेड़शाला से, और भेड़ बकरियों के पीछे पीछे फिरने से, इस मंशा से बुला लिया कि तू मेरी प्रजा इज़राइल का प्रधान हो जाए। और जहाँ कहीं तू आया गया, वहाँ वहाँ में तेरे संग रहा, और तेरे समस्त शत्रुओं का तेरे सामने से नाश किया है, फिर मैं तेरे नाम को पृथ्वी पर के बड़े-बड़े लोगो के नामों के समान महान कर दूँगा। और में अपनी प्रजा इज़राइल के लिये एक स्थान ठहराऊंगा और उसको स्थिर करूँगा, कि वह अपने ही स्थान में वासी रहेगी और कभी चलायमान न होगी, और कटिल लोग उसे फिर दुख न देने पाएँगे, जैसा कि वे पहले करते थे। PPHin 743.2

जैसे कि दाऊद की अभिलाषा थी कि वह परमेश्वर के लिए एक घर बनाए, यह प्रतिज्ञा दी गई, "यहोवा तुझे यह भी बताता है कि वह तेरा घर बनाए रखेगा.....में तेरे निज वंश को तेरे पीछे खड़ा करके उसके राज्य को स्थिर करूँगा।" PPHin 743.3

दाऊद को मन्दिर बनाने के अनुमति न मिलने के कारण घोषित किया गया, "तूने लहू बहुत बहाया और बड़े-बड़े युद्ध किये है, इसलिये तू मेरे नाम का भवन न बनाने पाएगा......देख, तुझ से एक पुत्र उत्पन्न होगा, जो शान्तिप्रिय पुरूष होगा, और मैं उसको चारों ओर के शत्रुओं से शान्ति दूँगा, उसका नाम सुलेमान होगा (शांतिप्रिय) और मैं उसके दिनों में इज़राइल को शान्ति और चेन दूँगा। वही तेरे नाम का भवन बनाएगा।" 1 इतिहास 22:8-10। PPHin 743.4

यद्यपि उसके हार्दिक उद्देश्य से उसे वंचित कर दिया गया था, दाऊद ने संदेश को धन्यवाद सहित ग्रहण किया, "हे प्रभु यहोवा, क्या कहूँ, मैं कोन हूँ, और मेरा घराना क्या है, जो तूने मुझे यहां तक पहुँचा दिया है? तोभी, हे प्रभु यहोवा, यह तेरी दृष्टि में छोटी सी बात हुईं, लेकिन तूने अपने दास के घराने के विषय में आगे के बहुत दिनों तक की चर्चा की है, "और फिर अपने परमेश्वर के साथ अपनी वाचा को दोहराया। PPHin 744.1

दाऊद जानता था जिस काम को करने का उसके मन में प्रयोजन था, वह उसकी सरकार के लिये गर्व की बात होती और उसके नाम को भी सम्मान मिलता, परन्तु वह अपन इच्छा को प्रभु की इच्छा के आगे समर्पित करने को तैयार था। ऐसे आभारयुकत समर्पण की अभिव्यक्ति मसीही लोगों में भी देखने को मिलती है। कितनी बार आयु के कारण दुर्बल होने के बाद भी अपने हृदय में ठाने हुए किसी महान कार्य को सम्पन्न करने की आशा को थामे रहते है, जबकि वे उस कार्य को करने

के लिये अयोग्य होते है! परमेश्वर उनसे बात करता है, जैसे उसका भविष्यद्वक्ता दाऊद से करता था, और बताता है कि जिस कार्य के लिये वे इतने अभिलाषी है वह उनके सुपुर्द नहीं किया गया है। यह उनका दायितव है कि उस कार्य को सम्पन्न करने के लिये दूसरों के लिये मार्ग तैयार करें। लेकिन पवित्र निर्देश के आगे धन्यवाद के साथ समर्पण करने के बजाय, वे ऐसे मैदान छोड़ देते है मानों उनका तिरस्कार किया गया हो और उन्हें अस्वीकार कर दिया गया हो, और उन्हें ऐसा लगने लगता है कि यदि वे इस कार्य को, जिसको करने की उनकी हार्दिक इच्छा थी, नहीं कर पाए तो वे कुछ भी नहीं कर सकते। कई लोग उन उत्तरदायित्वों को किसी न किसी तरह पकड़े रहते है जिनका वहन करने में वे असमर्थ है, और व्यर्थ में उस कार्य को सम्पन्न करने का प्रयास करते है जिसके लिये वे अयोग्य है, जबकि वह, जो वे कर सकते है, उपेक्षित पड़ा रहता है। और उनकी ओर से सहयोग के अभाव में अधिक महत्वपूर्ण कार्य या तो बाधित होता है या असफल हो जाता है। PPHin 744.2

योनातन के साथ अपनी वाचा में दाऊद ने प्रतिज्ञा की थी कि जब उसे अपने शत्रुओं की ओर से शान्ति मिल जाएगी, तब वह शाऊल के घराने पर कृपा करेगा। अपनी समृद्धि के समय में, अपनी वाचा को याद रखते हुए, राजा ने पूछताछ की, “क्या शाऊल के घराने में से कोई अब तक बचा है, जिसको मैं योनातन के कारण प्रीति दिखाऊे?” उसे योनातन का पुत्र मपीबोशेत बताया गया, जो बचपन से ही लँगड़ा था। यितज्रेल में पलिश्तियों द्वारा शाऊल की पराजय के समय, बालक मपीबोशेत के दाईं ने उसे लेकर भागने के प्रयास में उसे गिरा दिया और वह जीवनभर के लिये अपैंग हो गया। दाऊद ने नौजवान को अपने दरबार में बुलाया और उसपर कृपा दिखाते हुए उसका स्वागत किया। उसने शाऊल की निजी सम्पत्ति उसको लौटा दी जिससे वह अपने घराने का भरण-पोषण कर सके, लेकिन योनातन के पुत्र को प्रतिदिन राजा की मेज पर उसका अतिथि बनके भोजन करना था। दाऊद के शत्रुओं से प्राप्त जानकारी के अनुसार, मपीबोशेत में कई वर्षों से पूर्वधारणा का संचार किया गयाथा कि दाऊद अनाधिकारग्राही था, लेकिन दाऊद द्वारा उसके उदार और विनयपूर्ण स्वागत ने और उसकी निरन्तर दयालुता ने नौजवान का हृदय जीत लिया, और उसके दाऊद के साथ सम्बन्ध घनिष्ठ हो गए, और पिता योनातन की तरह, उसे लगा कि उसकी और परमेश्वर द्वारा चुने हुए राजा की रूचि में समानता थी। PPHin 745.1

इज़राइल के सिंहासन पर दाऊद के स्थापित होने के पश्चात्, राज्य में लम्बे समय तक शान्ति बनी रही। राज्य की एकता और शक्ति को देखते हुए, आस पास की जन-जातियों ने खुल कर शत्रुता दिखाना उचित नहीं समझा, अपने राज्य के पुन:निर्माण और संगठन में व्यस्त होते हुए, आकमक युद्ध से सम्भल कर रहा। अन्त में, उसने पलिश्तियों और मोआबियों पर अर्थात इज़राइल के पुराने शत्रुओं पर चढ़ाई की और दोनो को पराजित कर उन्हें सहयोगी राज्य बनाने में सफल हुआ। PPHin 745.2

फिर दाऊद के साम्राज्य के विरूद्ध पड़ोसी राष्ट्रों का एक विशाल गठबंधन गठित हुआ जिसके परिणामस्वरूप उसके शासन-काल के सबसे महत्वपूर्ण युद्ध और पराकम और उसकी सत्ता के सबसे विस्तृत राज्यारोहण घटित हुए। यह प्रतिरोधी गठबंधन जो दाऊद की बढ़ती हुईं शक्ति के प्रति इर्ष्या के कारण उत्पन्न हुआ था, दाऊद द्वारा पूर्णतया अनुत्तेजित था। जिन परिस्थितियों के कारण इसका गठन हुआ वह यह थी: PPHin 745.3

अम्मोनियों के राजा, नाहाश की मृत्यु का समाचार यरूशलेम पहुँचा-नाहाश ने दाऊद पर तब दया की थी जब वह शाऊल के कोध के कारण पलायक हो गया था। अब दाऊद ने उसके संकट के समय में उस पर की गई कृपा के लिये आभार व्यक्त करने के लिये, अम्मोनी राजा के पुत्र व उत्तराधिकारी हानून के पास दूतों को सांत्वना संदेश के साथ भेजा, “जैसे हानून के पिता नाहाश ने मुझ को प्रीति दिखाई थी, वैसे ही मैं भी हानून को प्रीति दिखलाऊंगा।” PPHin 746.1

लेकिन उसके भद्र व्यवहार को गलत समझा गया। अम्मोनी सच्चे परमेश्वर से घृणा करते थे और इज़राइल के कटटर शत्रु थे। दाऊद को नाहाश दिखाई गईं दयालुता पूर्णतया इज़राइल के राजा शाऊल के प्रति शत्रुता से प्रेरित थी। दाऊद के सन्देश का हानून के सलाहकारों द्वारा गलत अर्थ लगाया गया। वे “अपने स्वामी हानून से कहने लगे, दाऊद ने जो तेरे पास शान्तिदूत भेजे हैं, वह क्या तेरी समझ में तेरे पिता का आदर करने के विचार से भेजे है? क्या दाऊद ने अपने कर्मचारियों को तेरे पास इस विचार से तो न भेजा कि इस नगर में जाँच पड़ताल करके और इसका भेद लेकर इसको उलट दे? पचास वर्ष पहले भी हाकिमों के परामर्श से नाहाश ने याबेश-गिलाद के लोगों के सम्मुख वह निर्दयी शर्त रखी थी, जब वे अम्मोनियों द्वारा घेर लिये गए थे और वे शान्ति के लिये विनती करने गए थे। नाहाश ने उनकी सीधी आंख फोड़ देने के विशेषाधिकार की माँग की थी। अम्मोनियों को अभी भी स्पष्ट रूप से स्मरण था कि किस तरह इज़राइल के राजा ने उनके षड़यन्त्र को निष्फल किया था और उन लोगों को बचाया था जिन्हें वह वश में कर अपाहिज बनाना चाहते थे। अभी भी वह इज़राइल के प्रति उसी घृणा से उकसाये हुए थे। जिस उदार भावना ने दाऊद के सन्देश को प्रेरित किया था वह उनके विचारों में भी नहीं थी। जब शैतान मनुष्य के मन को नियन्त्रित करता है, वह इर्ष्या और सन्देह उत्पन्न करता है जो अच्छे से अच्छे अभिप्रायों का भी गलत अर्थ निकालता है। अपने हाकिमों की बात मानकर, हानून ने दाऊद के दूतों को भेदिये समझा, और उन्हें अपमान और तिरस्कार से लाद दिया। PPHin 746.2

अम्मोनियों को बिना किसी रोकथाम के अपने मन के पापी प्रयोजनों को पूरा करने की अनुमति दे दी गई थी, जिससे कि दाऊद पर उनका वास्तविक चरित्र प्रकट हो। यह परमेश्वर की इच्छा नहीं थी इज़राइल उन धोखेबाज, मूर्तिपूजकों के साथ सन्धि करे। PPHin 746.3

प्राचीन समय में, वर्तमान की तरह, राजदूत का कार्यभार पवित्र माना जाता था। राष्ट्रों की सार्वदेशिक नियम के अनुसार वह व्यक्तिगत हिंसा या अपमान से सुरक्षित था। राजदूत अपने स्वामी

के प्रतिनिधि के रूप में खड़ा था और उसके प्रति किसी भी प्रकार का अपमान तत्पर प्रतिशोध माँगता था। अम्मोनी जानते थे कि इज़राइल के किये गए अपमान का प्रतिशोध अवश्य लिया जाएगा, इसलिये उन्होंने युद्ध की तैयारी की। "जब अम्मोनियों ने देखा कि वे दाऊद को घिनौने लगते है, तब हानून और अम्मोनियों ने एक हजार किक्कार (पचहत्तरहजारपौंड) चांदी, अरम्नहरेम और अरम्माका और सोबा को भेजी कि रथ और घुड़सवार किराये पर बुलाए। इस प्रकार उन्होंने बत्तीस हजार रथ किराए पर बुलाए....... और अम्मोनी अपने अपने नगर में से इकट्ठे होकर लड़ने को आए ।'-1 इतिहास 19:67 । PPHin 747.1

यह सन्धि यथार्थ मे दुर्जय थी। परात महानद और भूमध्यसागर के बीच के क्षेत्र के निवासियों ने अम्मोनियों के साथ सन्धि की थी। कनान का पूर्वी और उत्तरी भाग सशस्त्र शत्रुओं से घिरा हुआ था, जो इज़राइल के राज्य को कुचल डालने के लिये एकजुट हो गए थे। PPHin 747.2

इब्रियों ने अपने देश पर आक्रमण होने की प्रतीक्षा नहीं की। योआब के नेतृत्व में, उन्होंने यरदन को पार किया और अम्मोनी राजधानी की ओर बढ़े । जैसे-जैसे इब्री कप्तान ने अपनी सेना को मैदान में उतारा, उसने उन्हें संघर्ष के लिये प्रेरित करने के लिये कहा, "तू हियाव बाँध और हम सब अपने लोगों और अपने परमेश्वर के नगरों के निमित्त पूरूषार्थ करें, और यहोवा जैसा उसको अच्छा लगेगा, वैसा करेगा।" इतिहास 19:13। पहली मुठभेड़ में ही संघ की संयुक्त सेनाएँ पराजित हो गई। लेकिन वे संघर्ष में हार मानने को तैयार नहीं थे, और अगले वर्ष युद्ध फिर आरम्भ हो गया। अराम के राजा ने अपनी सेना को इकट्ठा किया और एक विशाल सेना के साथ इज़राइल को चुनौती दी। यह जानते हुए कि इस संघर्ष के परिणाम पर बहुत कुछ निर्भर करता था, दाऊद व्यक्तिगत रूप से मैदान में उतरा और परमेश्वर के आशीवार्द से संयुक्त सेना को इतनी बुरी तरह से पराजित किया कि लेबनान से फरात महानद तक, अरामियों ने ना केवल लड़ाई बन्द कर दी, वरन् वह इज़राइल का सहयोगी राष्ट्र बन गए। अम्मोनियों के विरूद्ध दाऊद ने युद्ध की गति बढ़ाई और उनके गढ़ गिर पड़े और सम्पूर्ण क्षेत्र दाऊद के अधीन हो गया। PPHin 747.3

जो खतरे राष्ट्र को विनाश की चुनौती दे रहे थे, परमेश्वर की दया-दृष्टि से वह साधन बने जिसने इज़राइल अभूतपूर्व महानता को प्राप्त हुआ। अपने महत्वपूर्ण छुटकारों को स्मरण कर दाऊद गाता है:- PPHin 748.1

यहोवा परमेश्वर जीवित है, मेरी चटटान धन्य है,

और मेरे मुक्तिदाता परमेश्वर की बड़ाई हो

धन्य है मेरा पलटा लेने वाला ईश्वर,

जिसने देश-देश के लोगो को मेरे वश में कर दिया है,

और मुझे मेरे शत्रुओं से छड़ाया है,

तू मुझ को मेरे विरोधियों से ऊँचा करता,

और उपद्रवी से बचाता है

इस कारण मैं जाति-जाति के सामने तेरा धन्यवाद करूँगा

और तेरे नाम का भजन गाऊंगा।

वह अपने ठहराए हुए राजा का बड़ा उद्धार करता है,

वह अपने अभिषिक्त दाऊद पर और उसके वंश पर

युगानुयुग करूणा करता रहेगा। PPHin 748.2

-भजन संहिता 18:46-50।

दाऊद के भजनों में आरम्भ से अन्त तक लोगों के मनों में यही विचार डाला गया कि यहोवा उनकी शक्ति और छुटकारा दिलाने वाला है:- PPHin 748.3

“कोई ऐसा राजा नहीं जो सेना की बहुतायत के कारण बच सके

वीर अपनी बड़ी शक्ति के कारण दूर नहीं जाता

बच निकलने के लिये घोड़ा व्यर्थ है,

वह अपने बड़े बल के द्वारा किसी को नहीं बचा सकता।” PPHin 748.4

- भजन संहिता 33:16,17।

हे परमेश्वर, तू ही हमारा महाराजा है

तू याकूब के उद्धार की आज्ञा देता है

तेरे सहारे से हम अपने द्रोहियों को ढकेलकर गिरा देंगे,

तेरे नाम के प्रताप से हम अपने विरोधियों को रौंदेगे

क्योंकि मैं अपने धनुष पर भरोसा न रखूँगा,

और न अपनी तलवार के बल से बचूँगा। PPHin 748.5

परन्तु तू ह ने हम को द्रोहियों से बचाया है,

और हमारे बैरियों को निराश और लज्जित किया है।” PPHin 749.1

- भजन संहिता 44:4-7 ।

किसी को रथो का, और किसी को घोड़ो का, भरोसा है,

परन्तु हम तो अपने परमेश्वर यहोवा ही का नाम लेंगे। PPHin 749.2

- भजन संहिता 20:7।

विस्तार में अब इज़राइल का राज्य अब्राहम को दी गई प्रतिज्ञा के सम्पूर्ण होनेतक पहुँच गया था, यही प्रतिज्ञा के बाद से मूसा को दोहराई गई थी। “मिस्र के महानद से लेकर परात नामक महानद तक जितना देश हे, मैंने तेरे वंश को दिया हे ।”-उत्पत्ति 15:18 । इज़राइल एक पराक्रमी राष्ट्र बन गया था और पड़ोसी देश उसका आदर करते थे और उससे डरते थे। अपने ही राज्य में दाऊद की शक्ति बहुत बढ़ गईं थी। उसे लोगों का प्रेम ओर स्वामिभक्ति इतनी प्राप्त थी कि किसी भी युग में, बहुत कम राजाओं को प्राप्त हुई होगी। उसने परमेश्वर का आदर किया था, और परमेश्वर अब उसका सम्मान कर रहा था। PPHin 749.3

लेकिन समृद्धि के बीच में खतरा छुपा बैठा था। अपनी सबसे महान बाहरी विजय के समय में वह सबसे बड़े खतरे में था, जिसमें उसे सबसे अधिक अपमानजनक पराजय मिली।

अध्याय 71—दाऊद का पाप और प्रायश्चित

यह अध्याय 2 शमूएल 11:12 पर आधारित है

बाइबल में पुरूषों की प्रशंसा के बारे में बहुत कम कहा गया है। जो कभी जीवित रहे हैं, उन सर्वश्रेष्ठ मनुष्यों के गुणों का उल्लेख करने को भी कम स्थान दिया है। यह मौन उद्देश्य के बिना नहीं है, और ना ही यह बिना सबक के है। सभी अच्छे गुण जो मनुष्य में है वे परमेश्वर की देन है, उनके अच्छे कार्य परमेश्वर के अनुग्रह से मसीह के माध्यम से किये जाते है। क्योंकि जो भी वे करते हैं या जो भी वे है, वह परमेश्वर की बदौलत है, इसलिये उसका गौरव केवल परमेश्वर को जाना चाहिये। इससे भी अधिक-जैसा बाईबल के इतिहास के सभी पाठ सिखाते हे-मनुष्यों की प्रशंसा करना खतरनाक बात है, क्योंकि यदि कोई परमेश्वर पर अपनी निर्भरता की आवश्यकता को भूल जाता है, और अपनी शक्ति में विश्वास करने लगता है, तो वह निश्चय ही गिरेगा। मनुष्य उन शत्रुओं से लड़ रहा है जो उससे अधिक शक्तिशाली है। "क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध लहू और माँस से नहीं वरन् राज्यों से, राजकीय सत्ताओं से, इस संसार के अन्धकार के शासकों से, उच्च स्थान की दुष्टताओं से है।" इफिसियों 6:12 । संघर्ष को अपनी शक्ति से या अपने बलबूते पर कायम रखनाहमारे लिये असम्भव है, और जो चीज मन को परमेश्वर से दूर करती है, जो भी चीज हमें आत्मनिर्भरता और आत्म-उन्नति की ओर ले जातीहै, वह हमारी पराजय के लिये मार्ग तैयार करती हैं। ईश्वरीय शक्ति में विश्वास के लिये प्रोत्साहित करना और मानुषिक शक्ति में अविश्वास की बात को मन में बैठाना ही बाईबल का सार है। PPHin 750.1

वह आत्म-विश्वास और आत्म-उत्कर्ष की ही भावना थी जिसने दाऊद के लिये पतन का मार्ग तैयार किया। चापलूसी और भोग-विलास और आधिपत्य के जटिल प्रलोभनों ने निश्चय ही उसे प्रभावित किया। पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्धों ने भी दुष्प्रभाव डाला। पूर्वी शासकों में प्रचलित प्रथाओं के अनुसार, प्रजा के असहनीय अपराधों को राजा द्वारा दण्डमुक्त छोड़ दिया जाता था, प्रजा की तरह राजा भी उसी आत्म-संयम का अभ्यास करने के लिये बाध्य नहीं था। इस सब ने दाऊद का, पाप की अति पापमयता के आभास को कम कर दिया। और दीनतापूर्वक यहोवा के सामर्थ्य पर निर्भर करने के बजाय वह अपनी शक्ति और अपनी बुद्धिमत्ता पर विश्वास करने लगा। जितनी शीघ्रता से शैतान प्राणी को शक्ति के एकमात्र स्त्रोत अर्थात परमेश्वर से अलग कर देता है वह मनुष्य के शारीरिक स्वभाव की अपवित्र अभिलाषाओं को उत्तेजित करता है। शत्रु का काम अप्रत्याशित नहीं होता है, वह प्रारम्भ में अक्समात और आश्चर्यजनक नहीं होता, वह सिद्धान्तों के गढ़ो को गुप्त रूप से खोखला कर रहा होता है। यह कार्य छोटी-छोटी बातों से आरम्भ होता है- परमेश्वर के प्रति सच्चा रहने और उस पर पूर्णतया निर्भर करने की उपेक्षा और संसार के रीति-रिवाजों का अनुकरण करने का आचरण। PPHin 750.2

अम्मोनियों के साथ युद्ध की समाप्ति से पूर्व, दाऊद ने योआब की सेना का संचालन छोड़कर, यरूशलेम को वापसी की। अरामियों ने पहले ही इज़राइल के सम्मुख समर्पण कर दिया था, और अम्मोनयिं की सम्पूर्ण पराजय निश्चित प्रतीत हो रही थी। दाऊद अपनी विजय के फल और अपने विवेकपूर्ण और सुयोग्य शासन के सम्मानों से घिरा हुआ था। इस घड़ी, जब वह असुरक्षित और विश्राम की स्थति में था, प्रलोभनकर्ता ने उसके मन को व्यस्त करने का अवसर प्राप्त किया । परमेश्वर ने दाऊद के साथ इतना घनिष्ठ सम्बन्ध रखा था और उस पर इतनी कृपा-दृष्टि दिखाई थी, कियह सच्चाई उसके चरित्र को बेदाग संरक्षित रखने के लिये ठोस सबब होना चाहिये थे। लेकिन जब आत्म-सुरक्षा और सहजता मे उसने परमेश्वर पर अपनी पकड़ को ढीला छोड़ा, दाऊद ने शैतान को समर्पण कर दिया और अपनी आत्मा पर दोष का कलंक लगने दिया। उसने, जो राज्य का स्वर्ग द्वारा नियुक्त अगुवा था, जिसे परमेश्वर ने अपनी व्यवस्था को लागू करने को चुना था, स्वयं उसके सिद्धान्तों को पैरों तले रौंद डाला। जिसे पाप करने वाले के लिये भय का स्रोत होना चाहिये था, उसने अपने ही कृत्य द्वारा उनके हाथों को बलवन्त किया। PPHin 751.1

अपने प्रारम्भिक जीवन के खतरों के बीच, दाऊद सचेतन अखण्डता के साथ अपनी स्थिति को परमेश्वर के भरोसे छोड़ सकता था। उसके पैरों से बिछाए गए असंख्य जालों से बचने के लिये परमेश्वर ने उसका मार्गदर्शन किया था। लेकिन अब दोषी और पश्चतापहीन होकर, उसने स्वर्ग से सहायता या मार्गदर्शन की अपेक्षा नहीं की, लेकिन पाप ने उसे जिन खतरों में धकेल दिया था, उनसे बाहर निकलने का वह स्वयं प्रयास कर रहा था। बतशेबा, जिसकी घातक सुन्दरता राजा के लिये एक जाल प्रमाणित हुईं, हित्ती ऊरिय्याह की पत्नी थी। ऊरिय्याह दाऊद का सबसे साहसी और निष्ठावान अधिकारी था। कोई भी इस बात की कल्पना नहीं कर सकता था कि अपराध के ज्ञात होने पर क्या परिणाम होगा। परमेश्वर की व्यवस्था व्यभिचारी को मृत्युदण्ड का भागी ठहराती थी, और वह स्वाभिमानी योद्धा, जिसके साथ इतना अनर्थ हुआ था, राजा के प्राण लेकर या राज्य को विद्रोह के लिये उत्तेजित करके अपना प्रतिशोध पूरा कर सकता था। PPHin 751.2

अपने दोष को छिपाने के लिये दाऊद का प्रत्येक प्रयास व्यर्थ ठहरा। उसने स्वयं को शैतान के अधिकार में दे दिया था, वह खतरों से घिरा था, मृत्यु से अधिक कड़वा अपमान उसके सामने था। बच के निकलने का एक ही उपाय सूझ रहा था, और अपने उतावलेपन में उसने अति शीघ्रता से व्यभिचार में हत्या के पाप को भी संलग्न कर दिया। वह जिसने शाऊल के विनाश को दिशा दी थी । वह दाऊद को भी विनाश की ओर ले जाना चाहता था। यद्यपि प्रलोभन भिन्न थे, लेकिन दोनों परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन कराने की दृष्टि से समान थे। दाऊद का तर्क था कि ऊरिय्याह यदि शत्रु के हाथों मारा जाए, तो उसकी मृत्यु का दोष राजा पर नहीं लगेगा और बतशेबा दाऊद की पत्नी बनने के लिये स्वतन्त्र होगी, सन्देह उस पर नहीं किया जाएगा और उसका राजसी सम्मान बना रहेगा। PPHin 752.1

ऊरिय्याह को अपनी ही मृत्यु के आदेश का वहनकर्ता बनाया गया। उसी के हाथों योआब को एक पत्र भेजा गया जिसमें राजा की यह आज्ञा थी, " ऊरिय्ययाह को सबसे घमासान युद्ध की अग्रिम श्रेणी में रखना, और उसे वहाँ छोड़कर लौट आना ताकि वह घायल होकर मर जाए ।" योआब, जिस पर एक अकारण हत्या का आरोप था, राजा के निर्देश का पालन करने में बिल्कुल नहीं हिचकिचाया, और ऊरिय्याह अम्मोन के पुत्रों की तलवार से काट डाला गया। PPHin 752.2

इसके पहले शासक के तौर पर, दाऊद का इतिहास ऐसा रहा है जिसकी बराबरी बहुत कम सम्राटों ने की है। 2 शमूएल 8:15 में लिखा है कि "दाऊद अपनी समस्त प्रजा के साथ न्याय और धर्म के काम करता था।" उसकी अखण्डता में प्रजा के विश्वास और स्वामिभक्ति को जीत लिया। लेकिन जब वह परमेश्वर से दूर हो गया और दुष्ट शैतान को समर्पित हो गया, वह उस समय के लिये शैतान का कर्मक बन गया; लेकिन फिर भी उसके पास परमेश्वर द्वारा दिया गया पद और अधिकार था और इस के कारण उसने लोगों की आज्ञाकारिता का दावा किया और इससे उसकी आज्ञा का पालन करने वालों की आत्मा संकट में पड़ गई। योआब ने जिसने परमेश्वर के बजाय राजा की आज्ञा का पालन किया, परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन किया क्योंकि उसे राजा ने आदेश दिया था। PPHin 752.3

दाऊद को परमेश्वर ने अधिकार प्रदान किया था, लेकिन उसका अभ्यास ईश्वरीय व्यवस्था के अनुकूल होना था। जब उसने वह आज्ञा दी जो परमेश्वर की व्यवस्था के विपरीत थी, उसका पालन करना पाप बन गया। "जो अधिकार है, वे परमेश्वर के ठहराए हुए है"(रोमियों 13:1), लेकिन हमें उनका पालन परमेश्वर की व्यवस्था के विपरीत नहीं करना है। प्रेरित पौलूस, कुरिन्थियों को पत्र लिखते हुए उस सिद्धान्त को आगे रखता है जिससे हमें संचालित होना है। वह कहता है, "तुम मेरी सी चाल चलो, जैसा मैं मसीह की सी चाल चलता हूँ ।" -1 कुरिन्थियों 11:1। PPHin 753.1

दाऊद के आदेश के कार्यान्विन का विवरण उसे भेज दिया, लेकिन नपे-तुले शब्दों में जिससे कि ना ता योआब फँसे और ना ही राजा। योआब ने "दूत को आज्ञा दी, जब तू युद्ध का पूरा हाल राजा को बता चुके, तब यदि राजा को कोध भड़क उठे.....तो तू यों कहना, तेरा दास ऊरिय्याह हित्ती भी मर गया। तब दूत चल दिया और जाकर दाऊद से योआब की सब बातों का वर्णन किय।" PPHin 753.2

राजा ने उत्तर दिया, "योआब से यों कहना, 'इस बात के कारण उदास न हो, क्योंकि तलवार जैसे इसको वैसे उसको भी नष्ट करती है, तू नगर के विरूद्ध अधिक दृढ़ता से लड़कर उसे उलट दे, और तू उसे हियाव बाँध। PPHin 753.3

बतशेबा ने अपने पति के लिये परम्परा के अनुसार विलाप किया और विलाप के दिन बीत जाने पर, "दाऊद ने उसे बुलाकर अपने घर में रख लिया, और वह उसकी पत्नी हो गई।" वह जिसकी संवदेनशील अन्तरात्मा और आत्म-सम्मान का आभास, उसके प्राण संकट होने के बावजूद भी, उसे

परमेश्वर के अभिषिक्त के विरूद्ध हाथ उठाने की अनुमति नहीं देते थे, वह इतना गिर गया कि उसने अपने सबसे इमानदार व शूरवीर योद्धा के साथ अनर्थ किया और उसे मरवा दिया और फिर भी अपने पाप के प्रतिफल को बिना बाधा के आनन्द लेने की आशा की। हाय! वह दमकता हुआ सोना फीका कैसे पड़ गया। वह उत्तम सोना बदल कैसे गया! PPHin 753.4

प्रारम्भ से ही शैतान ने मनुष्य को आज्ञा उल्लंघन से मिलने वाले लाभ को चित्रांकित किया था। इसी तरह उसने स्वर्गदूतों को भरमाया। इसी तरह उसने आदम और हवा को पाप के लिये ललचाया। और इसी तरह वह जनसाधारण को परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने से परे ले जा रहा है। आज्ञा उल्लंघन का मार्ग आकर्षक प्रतीत कराया जाता है, "परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है।'--नीतिवचन 14:12। धन्य है वे, जो इस रास्ते चल कर यह जान लेते हैं कि पाप का फल कितना कड़वा है, और उससे शीघ्र ही मुहँ मोड़ लेते है। दयावान परमेश्वर ने दाऊद को पाप के कपटपूर्ण प्रतिफल द्वारा सम्पूर्ण विनाश की ओर आकर्षित होने के लिये नहीं छोड़ा। PPHin 754.1

इज़राइल की खातिर, परमेश्वर का हस्तक्षेप अनिवार्य था। समय बीतने पर बतशेबा के प्रति दाऊद का पाप ज्ञात हो गया, और सन्देह उत्पन्न हुआ कि उसने ऊरिय्याह की हत्या का षड़यन्त्र रचा था। परमेश्वर का अपमान हुआ था। उसने दाऊद पर कृपा-द्दष्टि की थी और उसे ऊँचा उठाया था, और दाऊद के पाप नें परमेश्वर के चरित्र का गलत प्रतिनिधित्व किया और उसके नाम की निनन्‌्दा की। इससे इज़राइल में पवित्रता के स्तर को गिरने में, कईयों के मन में पाप से घृणा को कम करने में बढ़ावा मिला, और जो परमेश्वर का भय नहीं मानते और उससे प्रीति नहीं रखते, वे आज्ञा उल्लंघन करने में और भी निर्भीक हो गए। PPHin 754.2

भविष्यवक्ता नातान को दाऊद के लिये फटकार का सन्देश लेकर भेजा गया। सन्देश भयानक रूप से कठोर था। ऐसी फटकार कुछ ही शासकों को फटकार लगाने वाले के प्राणों को दाँव पर लगाकर, दी जा सकती थी। नातान ने बिना हिचकिचाहट के पवित्र दण्डादेश कह डाला, लेकिन स्वर्ग में प्रेरित बुद्धिमत्ता के साथ, ताकि वह राजा की सहानुभूति को पा सकें, उसकी अंतरात्मा के जागृत कर सके, और उसी के होठों से उसकी मृत्यु का दण्डादेश कहलवा सके । दाऊद को लोगो के अधिकारों का अभिभावक मानकर उसने विनती करते हुए, अत्याचार और अनर्थ की कहानी दोहराई जिसका समाधान आवश्यक था। PPHin 754.3

नातान ने कहा, "एक नगर में दो मनुष्य रहते थे, जिनमें से एक धनी और एक निर्धन था। धनी के पास तो बहुत सी भेड़-बकरियाँ और गाय बैल थे। परन्तु निर्धन के पास भेड़ की एक छोटी बच्ची को छोड़ और कुछ भी न था, और उसको उसने मोल लेकर जिलाया था। वह उसके यहाँ उसके बालबच्चों के साथ ही बढ़ी हुई थी। वह उसके टुकड़ो में से खाती, और उसके कटोरे में सी पीती, और उसकी गोद मे सोती थी, और वह उसकी बेटी के समान थी। फिर धनी के पास एक यात्री आया, और उसने उस यात्री के लिये जो उसके पास आया था, भोजन बनवाने को अपनी भेड-

बकरियों या गाय-बैलों मे से कुछ न लिया, परन्तु उस निर्धन मनुष्य की भेड़ की बच्ची लेकर उस जन के लिये जो उसके पास आया था, भोजन बनवाया। PPHin 754.4

तब दाऊद को कोध भड़क उठा, और उसने कहा, "यहोवा के जीवन की शपथ, जिस मनुष्य ने ऐसा काम किया है वह प्राण दण्ड के योग्य है। और उसको उस भेड़ की बच्ची का चौगुन भर देना होगा, क्योंकि उसने ऐसा काम किया, और कुछ दया नहीं की। - 2 शमूएल 12:5,6 I PPHin 755.1

नातान ने अपनी आँखें दाऊद पर स्थिर की, और फिर अपना दाहिना हाथ स्वर्ग की ओर उठाकर गम्भीरता से घोषणा की, "तू ही वह मनुष्य है" और वह बोलता गया, "तूने यहोवा की आज्ञा तुच्छ जानकर क्यों वह काम किया, जो उसकी दृष्टि से बुरा है? अपराधी, जेसा कि दाऊद ने किया, मनुष्य से अपने अपराध को छिपाने का प्रयास करते हे, वे मनुष्य की दृष्टि या शान से उस पाप को हमेशा के लिये विलुप्त करने का प्रयास करते हैं, लेकिन "जिससे हमें काम है, उसकी आंखो के सामने सब वस्तुएँ खुली और प्रकट है""-इब्रानियों 4:13 ।मत्ती 10:26में लिखा है, "कुछ ढका नहीं जो खोला न जाएगा, और न कुछ छुपा है, जो जाना न जाएगा।" PPHin 755.2

नातान ने घोषणा की, "इज़राइल का परमेश्वर यों कहता है, "मैंने तेरा अभिषेक करके तुझे इज़राइल का राजा ठहराया ओर मैंने तुझे शाऊल के हाथ से बचाया..........तूने यहोवा की आज्ञा तुच्छ जानकर क्यों वह काम किया जो उसकी दृष्टि में बुरा है? हित्ती ऊरिय्याह को तूने तलवार से घात किया, और उसकी पत्नी को अपनी कर लिया है, और ऊरिय्याह को अम्मोनियों की तलवार से मरवा डाला है। इसलिये अब तलवार तेरे घर से कभी दूर न होगी, क्योंकि तूने मुझे तुच्छ जानकर हित्ती ऊरिय्याह की पत्नी को अपनी पत्नी कर लिया है। सुन में तेरे घर में से विपत्ति उठाकर तुझ पर डालूँगा, और तेरी पत्नियों को तेरे सामने लेकर दूसरे को दूँगा.......तूने तो यह काम छुपकर किया, पर मैं यह काम सब इज़राइलियों के सामने दिन दोपहर कराऊंगा।" PPHin 755.3

भविष्यवक्ता की फटकार ने दाऊद के हृदय को छुआ, उसका अंतरमन जागृत हुआ, उसका पाप अपनी सम्पूर्ण घोरता में प्रकट हुआ। उसकी आत्मा परमेश्वर के सम्मुख प्रायश्चित में झुक गई। काँपते हुए होठों से उसने कहा, "मैंने परमेश्वर के विरूद्ध पाप किया है।" दूसरो के प्रति किया गया अनर्थ चोट खाए हुए की ओर से लौटकर परमेश्वर के पास जाता है। दाऊद ने बतशेबा और ऊरिय्याह के प्रति घोर अपराध किया था, जिसकी चुभन वह महसूस कर रहा था। लेकिन परमेश्वर के विरूद्ध उसका पाप और भी बड़ा था। PPHin 756.1

हालाँकि इज़राइल में परमेश्वर के अभिषिक्त पर मृत्यु की दण्डाज्ञा का कियान्वन करने वाला कोई भी नहीं मिलेगा, लेकिन फिर भी दाऊद यह सोचकर कॉप रहा था कि कहीं उसके दोषी और अक्षम्य होने के कारण परमेश्वर की तत्पर दण्डाज्ञा द्वारा वह काट डाला न जाए। लेकिन उसे भविष्यवक्ता के द्वारा सन्देश भेजा गया, "यहोवा ने तेरे पाप को दूर किया है, तू न मरेगा। फिर भी

न्याय को कायम रखा जाना था। मृत्युदण्ड दाऊद से उसके पाप से उत्पन्न संतान पर डाल दिया गया। इस प्रकार राजा को प्रायश्चित का अवसर प्रदान किया गया, जबकि दण्ड के तौर पर, उसके नवजात शिशु की मृत्यु का दुख, उसकी अपनी मृत्यु पर होने वाले दुख से कही अधिक दुखदायी था। भविष्यवक्ता ने कहा, "तूने जो इस काम के द्वारा यहोवा के शत्रुओं को तिरस्कार करने का बड़ा अवसर दिया है, इस कारण तेरा जो बेटा उत्पन्न हुआ है वह अवश्य ही मरेगा। PPHin 756.2

जब उसका बच्चा रोग ग्रस्त हो गया, दाऊद ने उपवास करके और दीन होकर उसके प्राणों की भीख मांगी। उसने अपने राजसी वस्त्र उतार दिये, अपना मुकट एक तरफ रख दिया और रात-रात भर भूमि पर लेटा रहा, अत्यन्त दुखी होकर अपने दोष के लिये कष्ट भुगत रहे निदषि सन्तान के पक्ष में मध्यस्थता करता रहा। "तब उसके घराने के पुरनिये उठकर उसे भूमि पर से उठाने के लिये उसके पास आए, परन्तु उसने उठना न चाहा।" अक्सर जब व्यक्तियों या नगरों पर दण्डाज्ञा की घोषणा की जाती थी, प्रायश्चित और समर्पण द्वारा उसे मोड़ दिया जाता था, और वह सदा-दयावान क्षमा करने में तत्पर, शान्तिदूतों को भेज देता था। इस विचार से प्रोत्साहित होकर, दाऊद तब तक विनती करता रहा, जब तक बच्चे को जीवित रखा गया। यह जानकर कि वह मर चुका था, उसने चुपचाप परमेश्वर के आदेश के आगे समर्पण कर दिया। जिस दण्डाज्ञा को उसने न्यायसंगत ठहराया था उसका प्रथम वार हो चुका था, लेकिन परमेश्वर की करूणा में विश्वास रखते हुए, दाऊद, बिना सांत्वना के न था। PPHin 756.3

दाऊद के पतन के इतिहास को पढ़ने वाले कईं पाठक पूछते है, "इस जीवन के इतिहास को सार्वजनिक क्यों बनाया गया? परमेश्वर ने स्वर्ग द्वारा इतने अधिक सम्मानित के जीवन में इस अन्धकारयम अंश को संसार के सामने खोलना क्यों उचित समझा? भविष्यद्वक्ता ने दाऊद को दी गई फटकार में उसके पाप से सम्बन्धित यह घोषणा की, "तूने इस काम के द्वारा यहोवा के शत्रुओं को तिरस्कार करने का बड़ा अवसर दिया है।" उत्तोत्तर पीढ़ियों के प्रारम्भ से अन्त तक नास्तिकों ने दाऊद के चरित्र की ओर संकेत किया है जिस पर यह गहरा कलंक है और उपहास करते हुए कहा है "यह है वो पुरूष जो परमेश्वर के मन के अनुसार है।" इस प्रकार धर्म को निन्दनीय ठहराया गया, परमेश्वर और उसके वचन का तिरस्कार हुआ है, आत्माएँ अविश्वास से कठोर हो गई है, और कई धाकिता की आड़ में, पाप में निर्भीक हो गए है।" PPHin 757.1

लेकिन दाऊद की इतिहास पाप का समर्थन नही करता। उसे "परमेश्वर के मन के अनुसार" तब कहा गया जब वह परमेश्वर की सम्मति में चल रहा था। जब उसने पाप किया, यह बात उसके लिये सत्य न रही, जब तक कि वह प्रायश्चित के द्वारा परमेश्वर के पास न लौट गया। परमेश्वर का वचन स्पष्ट रूप से घोषणा करता है, "जो काम दाऊद ने किया था, वह परमेश्वर की दृष्टि में बुरा था।-2 शमूएल 11:27। और परमेश्वर ने दाऊद को भविष्यवक्ता के द्वारा कहा, "तूने यहोवा की आज्ञा तुच्छ जानकर क्यों वह काम किया जो उसकी दृष्टि में बुरा है?.....इसलिये अब तलवार तेरे घर से

कभी दूर न होगी, क्योंकि तूने मुझे तुच्छ जानां” यद्यापि दाऊद ने अपने पाप का प्रायश्चित किया और उसे क्षमादान मिला और परमेश्वर द्वारा स्वीकार किया गया, उसने अपने ही द्वारा बोए हुए बीज की अनिष्टकर फसल को काटा। उस पर और उसके घराने को दी गई दण्डाज्ञा, परमेश्वर की पाप के प्रति घृणा की पुष्टि करती है। PPHin 757.2

इससे पहले परमेश्वर की सुरक्षा ने दाऊद को उसके शत्रुओं के षड़यन्त्रों के प्रति संरक्षित रखा था और शाऊल पर नियन्त्रण रखने के लिये इसका प्रत्यक्ष रूप से अभ्यास किया था। लेकिन दाऊद की अवज्ञा ने परमेश्वर के साथ उसके सम्बन्ध को बदल दिया। परमेश्वर किसी भी परिस्थिति में अधर्म को सहमति नहीं दे सकता था। वह दाऊद को उसके पापों के परिणामों से बचाने के लिये अपने शक्ति का प्रयोग नहीं कर सकता था, जैसे कि उसने उसे शाऊल की शत्रुता से बचाया था। PPHin 757.3

स्वयं दाऊद में बहुत परिवर्तन हुआ। अपने पाप और उसके व्यापक परिणामों के बोध से उसका मन टूट सा गया था। वह अपनी प्रजा की दृष्टि में गिर गया था। उसका प्रभाव कम हो गया था। अब तक उसकी समृद्धि का श्रेय परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति उसकी न्यायपरायण आज्ञाकारिता को दिया जाता था। लेकिन अब क्योंकि उसकी प्रजा को उसके पाप की जानकारी थी, वे खुलकर पाप करने लगे। उसके अपने ही घराने में उसका अधिकार, अपने पुत्रों से आज्ञाकारिता और आदर का दावा शक्तिहीन हो गया। जब उसे पाप की निंदा करनी होती थी, तो उसके अपने अपराध का बोध उसे चुप रहने के लिये विवश कर देता, अपने ही घर में न्याय को कार्यान्वित करने के लिये वह असमर्थ हो गया। उसके बुरे उदाहरण का प्रभाव उसके पुत्रों पर पड़ा, और परमेश्वर ने परिणाम को बाधित करने के लिये हस्तक्षेप नहीं किया। उसने परिस्थितियों को प्राकतिक रूप से घटित होने दिया, ओर इस प्रकार दाऊद को ताड़ा गया। PPHin 758.1

पतन के पश्चात, एक वर्ष तक दाऊद अवास्तविक रूप से सुरक्षित रहा, परमेश्वर की अप्रसन्नता का कोई बाहरी प्रमाण नहीं था। लेकिन पवित्र दण्डाज्ञा उसके सर पर लटक रही थी। शीघ्र और निश्चय ही न्याय और प्रतिशोध का दिन निकट आ रहा था जिसे कोई भी प्रायश्चित टाल नहीं सकता था और उस यातना और अपमान उसके सम्पूर्ण सांसारिक जीवन को अन्धकारमय बना दिया। दाऊद के उदाहरण की ओर संकेत करके जो अपने निज पापों के दोष को कम करने का प्रयास करते है, उन्हें बाईबल के उल्लेखों से सीखना चाहिये कि आज्ञा उल्लंघन का मार्ग दुष्कर है। हालाँकि दाऊद की तरह उन्हीं बुराई के रास्ते से मुहँ फिरा लेना चाहिये, पाप के परिणाम, इस जीवन में भी सहन करने के लिये कठिन और कट होंगे। PPHin 758.2

परमेश्वर चाहता था कि दाऊद के पतन का इतिहास उन्हें इस बात की चेतावनी दे कि जिन्हें उसने इतना आशीषित किया है और जिन पर उसकी कृपा-दृष्टि रही है, उन्हें भी सुरक्षित मान प्रार्थना और सजग रहने की उपेक्षा नहीं करनी चाहिये और इसी प्रकार इसने उन्हें जो दीनता में, परमेश्वर

द्वारा सिखाये जाने के लिये तैयार किये गए सबक को सीखना चाहते थे, समझाया है। एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हज़ारों ने प्रलोभनकर्ता से स्वयं के ऊपर संकट को समझने में सहायता की है। परमेश्वर द्वारा इतने सम्मानित दाऊद के पतन ने उनमें आत्म-विश्वास को जागृत किया। उन्हें आभास हुआ कि केवल परमेश्वर उन्हे उनके विश्वास के द्वारा अपनी सामर्थ्य से बचाए रख सकता था। वह जानकर कि उनकी शक्ति और सामर्थ्य उसी में निहित थी, तो शैतान के क्षेत्र में पहला कदम रखने से भी डरे है। PPHin 758.3

दाऊद के विरूद्ध दण्डादेश की घोषणा से पहले ही, वह आज्ञा उल्लंघन के फल को भुगतना आरम्भ कर चुका था। उसकी अन्तरात्मा शान्त नहीं थी। वह आत्मिक वेदना जो उसने उस समय सहन की, वह बत्तीसवें भजन में दिखाई गई है। वह कहता हे- PPHin 759.1

"क्या ही धन्य है वह जिसका अपराध

क्षमा किया गया, और जिसका पापढांपा गया हो।

क्या ही धन्य है वह मनुष्य जिसके अधर्म का

यहोवा लेखा न ले और जिसकी आत्मा में कपट न हो।

जब मैं चुप रहा

तब दिन भर कराहते-कहराते मेरी हडिडयाँ पिघल गई।

क्योंकि रात-दिन में तेरे हाथ के नीचे दबा रहा,

और मेरी तरावट धूप काल की झुरहिटसी बनती गई।" PPHin 759.2

-भजन संहिता 32:1-4।

और इक्यावनवाँ भजन दाऊद के प्रायश्चित की अभिव्यक्ति है, इस समय उसके पास परमेश्वर की ओर से फटकार का सन्देश आया- PPHin 759.3

"हे परमेश्वर, अपनी करूणा के अनुसार मुझ पर अनुग्रह कर,

अपनी बड़ी दया के अनुसार मेरे अपराधों को मिटा दे।"

"मुझे भली-भांति धोकर मेरा अधर्म दूर कर,

और मेरा पाप छुड़ाकर मुझे शुद्ध कर,

में अपने पापों को स्वीकार करता हूँ

और मेरा पाप निरन्तर मेरी दृष्टि में रहता है.......

जूफा से मुझे शुद्ध कर, तो मैं पवित्र हो जाऊंगा,

मुझे धो, और मैं हिम से भी अधिक श्वेत बनूँगा।

मुझे हर्ष और आनन्द की बातें सुना

जिससे जो हडिडयाँ तूने तोड़ डाली है,

वे मग्न हो जाए।

अपना मुख मेरे पापों की ओर से फेर ले,

और मेरे सारे अधर्म की कामों को मिटा डाल। हे परमेश्वर, मेरे अन्दर शुद्ध मन उत्पन्न कर,

और मेरे भीतर स्थिर आत्मा नये सिरे से उत्पन्न कर

मुझे अपने सामने से न हटा,

और अपने पवित्र आत्मा को मुझ से अलग न कर ।

अपने किये हुए उद्धार का हर्ष मुझे फिर से दे,

और उदार आत्मा देकर मुझे सम्भाल

तब में अपराधियों को तेरा मार्ग सिखाऊँगा,

और पापी तेरे ओर फिरेंगे ।

हे परमेश्वर, हे मेरे उद्धारकर्ता परमेश्वर

मुझे हत्या के अपराध से छड़ा ले,

तब में तेरे धर्म की जयजयकार करने पाऊँगा। PPHin 759.4

-भजन संहिता 51:1-14।

इस प्रकार अपनी प्रजा की सार्वजनिक सभाओं में गाए जाने वाले गीत में, दरबार अर्थात याजको, न्यायियों, प्रधानों और योद्धाओं की उपस्थिति में, और जो आखिरी पीढ़ी तक उसके पतन के ज्ञान को संरक्षित रखता, राजा ने अपने पाप, अपने प्रायश्चित और परमेश्वर की करूणा के द्वारा क्षमा में उसकी आशा का वर्णन किया । अपने दोष को छुपाने का प्रयास करने के बजाय, उसकी इच्छा थी कि उसके पतन के इतिहास द्वारा दूसरो को निर्देशित किया जाए। PPHin 760.1

दाऊद का प्रायश्चित गहरा व वास्तविक था। उसके अपराध को छुपाने या घटाने का कोई प्रयास नहीं था। उसकी प्रार्थना दण्डाज्ञा की धमकी से बचने की इच्छा से प्रेरित नहीं थी। बल्कि

उसने परमेश्वर के प्रति अपने पाप की घोरता को देखा, उसने अपने आत्मा के अपवित्र होने को देखा, और उसने अपने पाप से घृणा की। उसने केवल क्षमा-दान के लिये भी प्रार्थना नहीं की, वरन् हृदय की पवित्रता के लिये भी विनती की। हताश होकर, दाऊद ने संघर्ष के आगे समर्पण नहीं किया। पश्चतापी पापियों के प्रति परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं में उसे अपनी क्षमा और स्वीकृति के प्रमाण को देखा। PPHin 760.2

"क्योंकि तू मेजबलि से प्रसन्न नहीं होता,

नही तो मैं देता, होमबलि से भी तू प्रसन्न नहीं होता

टूटा मन परमेश्वर के योग्य बलिदान है,

हे परमेश्वर, तू टूटे और पिसे हुए मन को तुच्छ नहीं जानता। PPHin 760.3

-भजन संहित 51:16,17 ।

हालाँकि दाऊद का पतन हुआ था, परमेश्वर ने उसे उठाया। वह अब पतन से पहले की तुलना में परमेश्व के साथ और अपने सहवासियों के साथ और अधिक संपूर्ण रूप से सामजंस्य में था। अपने छुटकारे की प्रसन्नता में उसने गाया- PPHin 760.4

"जब मैं अपना पाप तुझ पर प्रकट किया

और अपना अधर्म न छुपाया और कहा,

"मैं यहोवा के सामने अपने अपराधों को मान लूंगा।"

तब तूने मेरे अधर्म और पाप को क्षमा कर दिया।

तू मेरे छिपने का स्थान है, तू संकट में रक्षा करेगा,

तू मुझे चारो ओर से छूटकारे के गीतों से घेर लेगा।" PPHin 761.1

-भजन संहिता 32:5-7।

कई लोग इसलिये कड़काड़ाते हैं, क्योंकि परमेश्वर द्वारा शाऊल को, उस अपराध के लिये जो उनकी दृष्टि में कम निन्दनीय था, अस्वीकार किये जाने के बाद, दाऊद के प्राण-दान को वे परमेश्वर का अन्याय कहते है। लेकिन दाऊद ने स्वयं को दीन किया और अपने पापों का अंगीकार किया, जबकि शाऊल ने निंदा का तिरस्कार किया और अपने हृदय को कठोर कर लिया और प्रायश्चित नहीं किया। PPHin 761.2

दाऊद के इतिहास का यह अंश पश्चतापी पापी के लिये बहुत महत्वपूर्ण है। यह मानवता के संघर्षा और प्रलोभनों का, और प्रभु यीशु मसीह में हमारे विश्वास और परमेश्वर के प्रति वास्तविक

प्रायश्चित का सबसे प्रभावशाली उदाहरण है। सभी युगों के आरम्म से अन्त तक यह उन प्राणियों के लिये प्रोत्सहान का स्रोत, प्रमाणित हुआ है, जो पाप में गिरकर अपने अपराध के बोझ से दबे संघर्ष कर रहे थे। परमेश्वर की हजारों संतानें, जो पाप में पड़ गई, लेकिन जब निराश हो जाने के समय उन्होंने दाऊद के सच्चे प्रायश्चित और पाप-अंगीकार का स्मरण किया, तो वे परमेश्वर द्वारा स्वीकार कर लिये गए, इसके बावजूद कि उनकी अवज्ञा के कारण उसने कष्ट उठाया, क्योंकि उन्होंने प्रायश्चित करने और परमेश्वर की आज्ञाओं के अनुसार चलने का प्रयास करने का साहस किया। PPHin 761.3

जो कोई भी परमेश्वर की फटकार सुनकर अपने पाप का अंगीकार और प्रायश्चित करके आत्मा को दीन करता है, जैसे कि दाऊद ने किया, उसके लिये निश्चय ही आशा है। जो विश्वास में परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को स्वीकार करता है, वह क्षमा प्राप्त करेगा। परमेश्वर कभी भी एकमात्र सच्चे पश्चतापी प्राणी को नहीं धिक्कारेगा। उसने प्रतिज्ञा की है, "यदि कोई व्यक्तिमेरी शरण मेंआए और मुझसे मेल करना चाहे तो वह चला आए और मुझसे मेल करले।"- याशायाह 27:5 । दुष्ट अपना चालचलन छोड़ दें, अधर्मी व्यक्ति अपने विचार; और वे यहोवा की ओर फिरें, वह उन पर दया करेगा, वह हमारे परमेश्वर की ओर फिरे और वह पूरी रीति से उनको क्षमा करेगा।"- यशायाह 55:7। PPHin 761.4

अध्याय 72—अबशालोम का विद्रोह

यह अध्याय 2 शमूएल 13—19 पर आधारित है

"वह चार गुना वापस करेगा" नातान भविष्यवक्ता से दृष्टांत सुनने पर दाऊद की स्वयं पर ये सबसे सांयोगिक दण्डाज्ञा थी, और स्वयं अपनी दण्डाज्ञा के अनुसार उसका न्याय होना था। उसके चार पुत्रों की मृत्यु निश्चित थी, और प्रत्यूके की हानि का कारण उनके पिता का पाप था। PPHin 763.1

दाऊद ने अपने पहले पुत्र अम्नोन के कुकर्म को बिना दण्ड दिये या बिना फटकार लगाए जाने दिया। व्यवस्था के अनुसार व्यभिचार करने वाले को मृत्यु दण्ड दिया जाता था, और अम्नोन के अस्वाभाविक अपराध ने उसे दो गुना दोषी ठहराया था। लेकिन दाऊद जो अपने निजी पाप के कारण स्वयं को दोषी मानता था, अपराधी का न्याय नहीं कर सका। दो वर्षो तक अबशालोम, जो अपनी बहन का, जिसके साथ अनर्थ हुआ था, स्वाभाविक रक्षक था, प्रतिशोध के अपने उद्देश्य को छुपाए बैठा था, क्योंकि अन्त में वह निश्चित वार करना चाहता था। राजा के पुत्रों के भोज के समय, अगम्यगामी व उनमत्त अम्नोन को अपने ही भाई के आदेशानुसार मार डाला गया। PPHin 763.2

दाऊद को दो गुना दण्ड दिया जा चुका था। यह भयानक सन्देश उसके पास पहुँचाया गया, "अबशालोम ने सब राजकुमारों को मार डाला, और उनमें से एक भी नहीं बचा। तब दाऊद ने उठकर अपने वस्त्र फाड़े और भूमि पर गिर पड़ा, और उसके सब कर्मचारी वस्त्र फाड़े हुए उसके पास खड़े रहे।" आश्चर्यवकित होकर जब राजा के पुत्र घर लौटे तो उन्होंने अपने पिता को सच्चाई से अवगत कराया, केवल अम्नोन मारा गया था "और वे चिल्ला चिललाकर रोने लगे, और राजा भी अपने सब कर्मचारियों के साथ बिलख-बिलख कर रोने लगा।" लेकिन अबशालोम गशूर के राजा, अम्मीहूर के पुत्र तल्में के पास चला गया, तल्में अबशालोम का नाना था। PPHin 763.3

दाऊद के अन्य पुत्रों की तरह, अम्नोन को भी अपनी मनमानी करने की अनुमति दे दी गईं थी। उसने अपने हृदय की प्रत्येक अभिलाषा को समन्तुष्ट करना चाहा था, और वह परमेश्वर के नियमों के प्रति उदासीन था। अपने महापाप के बावजूद, परमेश्वर ने उसे बहुत दिनों के लिये सहन किया था। दो वर्षो तक उसे प्रायश्चित का अवसर प्रदान किया गया, लेकिन वह पाप करता रहा, और उसके दोष के साथ ही उसे न्याय के दिन के न्याय की प्रतीक्षा करने के लिये मार दिया गया। PPHin 763.4

दाऊद ने अम्नोन के अपराध को दण्डित करने के कर्तव्य की उपेक्षा की थी और पिता व राजा की अविश्वसनीयता और पुत्र के अपश्चतापी होने के कारण परमेश्वर ने घटनाओं को स्वाभाविक तरीके से होने की अनुमति दे दी, और अबशालोम को बाधित नहीं किया। जब माता-पिता या शासक

अधर्म को दण्डित करने के कर्तव्य की उपेक्षा करते हैं, परमेश्वर उस विषय को अपने हाथ में ले लेता है। उसकी नियन्त्रकारी शक्ति उस उपाय में होगी जो पाप के सूत्रधारों से दूर है, ताकि परिस्थितियों का ऐसा ताँता उत्पन्न होगा जो पाप को पाप द्वारा दण्डित करेगा। PPHin 764.1

अम्नोन के प्रति दाऊद के अन्यायपूर्ण दयालुतापूर्ण व्यवहार के दुष्परिणाम समाप्त नहीं हुए थे, क्योंकि यहाँ से अबशालोम की अपने पिता से विमुखता प्रारम्भ हुईं। अबशालोम के गशूर भाग जाने के बाद, दाऊद को लगा कि उसका पुत्र दण्ड का पात्र है, और उसने उसे लौट कर आने की स्वीकृति न दी। इससे जिन जटिल विपदाओं में वह पड़ने वाला था, कम होने के बजाय बढ़ने वाली थी। राज्यों के मामलों में सहभागिता से उसके प्रवास के कारण बाहर किये जाने पर कर्मठ, महत्वकांक्षी और सिद्धान्तहीन अबशालोम खतरनाक षड़यन्त्र रचने लगा। PPHin 764.2

दो वर्ष बीत जाने पर योआब ने पिता और पुत्र क बीच पुनर्मिलन कराने का निश्चय किया। इस लक्ष्य को दृष्टि में रखते हुए उसने बुद्धिमानी के लिये प्रख्यात एक स्त्री, तकोआ की सहायता ली। योआब के निदेश से इस स्त्री ने दाऊद के सम्मुख अपना प्रतिनिधित्व एक विधवा के तौर पर किया, जिसके दो पुत्र ही उसका एकमात्र सहारा रहे थे। एक लड़ाई में एक ने दूसरे को मार दिया, और अब परिवार के सभी परिजन यह माँग कर रहे थे कि उत्तरजीवी को उन्हें सौंप दिया जाए। माँ ने कहा, “इस तरह वे मेरे अंगारे जो भी बच गये है बुझाएँगे, और मेरे पति का नाम और संतान धरती पर से मिटा देंगे।” इस विनती ने राजा की भावनाओं को छुआ और उसने उस स्त्री को उसके पुत्र की राजसी सुरक्षा देने का आश्वासन दिया। PPHin 764.3

राजा ने नौजवान की सुरक्षा की आवर्ती प्रतिज्ञाएं कराने के बाद, उसने राजा की सहिष्णुता की विनती की, और राजा को दोषी घोषित किया, क्योंकि वह अपने द्वारा निष्काषित को वापस लेकर नहीं आया था। उसने कहा, “हम को तो मरना है, और हम भूमि पर गिरे हुए जल के समान हहरेंगे, तो फिर उठाया नहीं जाता; ना ही परमेश्वर किसी व्यक्ति का पक्ष लेता है ;फिरभी वह ऐसी युक्ति करता है कि उसके निर्वासित, उससे दूर न हो।” पापी के प्रति परमेश्वर के प्रेम का ऐसा संवेदनशील चित्रांकन- वह भी उसके अशिष्ट योद्धा योआब की ओर से आया हुआ- इस बात का प्रमाण है कि इज़राइल उद्धार महान सत्य से परिचित थे। राजा ने स्वयं के लिये परमेश्वर की करूणा की आवश्यकता को महसूस किया और वह निवेदन का प्रतिकार न कर सका। योआब को आज्ञा दी गई, “तू जाकर उस नौजवान अबशालोम को लौटा ला।” PPHin 764.4

अबशालोम को यरूशलेम लौटने की अनुमति दे दी गई, लेकिन उसे दरबार में उपस्थित होने या अपने पिता से मिलने की अनुमति नहीं थी। दाऊदने अपनी संतान के प्रति अपने दयालुतापूर्ण व्यवहार के दुष्परिणाम देखने आरम्भ कर दिये थे, और क्योंकि वह अपने इस सुदर्शन और गुण-सम्पन्न पुत्र से अत्यन्त प्रेम करता था, उसने यह आवश्यक समझा कि ऐसे अपराध के प्रति घृणा को अबशालोम और प्रजा के लिये सबक के तौर पर प्रकट किया जाए। अबशालोम दो वर्षो तक अपनी

निजी निवास में रहा, लेकिन वह दरबार से निष्काषित रहा। उसकी बहन उसके साथ थी, और उसकी उपस्थिति ने उस पर किये गए अप्रतिकार्य दुष्कर्म की समृति को जीवित रखा। लोकप्रिय अनुमान में राजकुमार अपराधी न होकर नायक था। इस अनुकूल परिस्थिति के होते हुए, उसने लोगों के हृदयों को जीतना आरम्भ किया। उसका व्यक्तिगत आविर्भावऐसा था कि वह देखने वालों को आकर्षित करता था। "समस्त इज़राइल में सुन्दरता के कारण, बहुत प्रशंसा योग्य अबशालोम के तुल्य और कोई न था: उसमे सिर से पांव तक कोई दोष नहीं था।" राजा के लियेयह विवेकपूर्ण नहीं था कि अबशालोम जैसे स्वभाव वाले महत्वाकांक्षी, अति संवदेनशील और आवेशपूर्ण व्यक्ति को दो वर्ष से अधिक समय तक तथाकथित उलाहना पर चिंतन करने के लिये छोड़ दिया जाए। और अबशालोम को यरूशलेम वापसी की अनुमति देकर भीउसे राजा की उपस्थिति में होने से वंचित रखने में, दाऊद के निर्णय ने, लोगों को अबशालोम के प्रति संवेदनशील बनाया। PPHin 765.1

परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति आज्ञा-उल्लंघन की स्मृति हर पल युद्ध के सम्मुख थी, और इस कारण वह नैतिक रूप से शक्तिहीन हो गया था, वह दुर्बल और अनिश्चित था, जबकि अपने पाप से पहले वह साहसी और कृतसंकल्प था। लोगो पर उसका प्रभाव घट गया। इस सब ने उसके अस्वाभाविक पुत्र के षड़यन्त्रों को बढ़ावा दिया। PPHin 765.2

योआब के प्रभाव से, अबशालोम को अपने पिता की उपस्थिति में प्रवेश मिला, और हालाँकि एक दिखावटी पुनर्मिलन था, अबशालोम ने अपनी महत्वाकांक्षी युक्तियाँ जारी रखीं। अब उसने एक राजसी शान अपना ली, उसके पास रथ और घोड़े थे और पचास पुरूष उसके आगे-आगे भागते थे। और जब राजा एकान्त और कार्य निवृति की इच्छा के प्रति प्रवृत्त था, अबशालोम ने तत्परता से लोक-सम्मत समर्थन प्राप्त किया। PPHin 766.1

दाऊद की उदासीनता और अनिश्चितता उसके अधीनस्थों तक फैल गई, और न्याय के शासन-दप्रबन्ध में उपेक्षा और विलम्ब के लक्षण दिखाई देने लगे। अबशालोम ने असन्तोष के प्रत्येक कारण को धूर्तता से अपने लाभ के लिये प्रयोग किया। प्रतिदिन यह शालीन व्यक्तित्व वाला पुरूष नगर के फाटक पर दिखाई देता था, जहाँ भारी संख्या में प्रार्थी अपने कष्टों को निवारण के लिये प्रस्तुत करने की प्रतीक्षा करते थे। अबशालोम उनके साथ मेल-मिलाप करता और उनकी शिकायतों को सुनता, उनके दुखों के प्रति सहानुभूति व्यक्त करता और शासन की अयोग्यता पर खेद-प्रकट करता । इस प्रकार एक इज़राइली पुरूष की कहानी को सुनकर राजकुमार उत्तर देता, "तेरा पक्ष तो ठीक और न्याय का है परन्तु राजा की ओर से तेरी सुनने वाला कोई नहीं है, भला होता कि मैं इस देश में न्यायी ठहराया जाता, तब जितने मुकद्दमेवाले होते वे सब मेरे ही पास आते, और मैं उनका न्याय चुकाता। फिर जब कोई उसे दण्डवत करने को निकट आता, तब वह हाथ बढ़ाकर उसको पकड़ के चूम लेता था।" PPHin 766.2

राजकुमार के धूर्ततापूर्ण उकसाव से उत्तेजित, सरकार के प्रति असन्तोष तेजी से फैल रहा था। सभी के होठों पर अबशालोम की प्रशंसा थी। सामान्य तौर पर उसे राज्य का उत्तराधिकारी माना जाने लगा, लोग गर्व से उसे इस उच्च पद के योग्य मानते थे, और उनमें उसके सिंहासन पर विराजमान होने की अभिलाषा उत्पन्न हुई। "इस प्रकार अबशालोम ने इज़राइली मनुष्यों के मन को हर लिया।* पुत्र के प्रेम में अंधे, दाऊद को तनिक भी सन्देह नहीं हुआ। दाऊद का मानना था कि अबशालोम ने पुनर्मिलन पर प्रसन्नता की अभिव्यक्ति के तौर पर दरबार को सम्मान देने के लिये राजसी शान को अपनाया था। PPHin 766.3

जो होने वाला था, उसके लिये लोगों के मनों को तैयार कर, अबशालोम ने सभी गोत्रों में गुप्त रूप से चुने हुए व्यक्तियों को विद्रोह के लिये उपाय जानने के लिये भेजा। और अब उसने राजद्रोही युक्तियों को छुपाए रखने के लिये धर्मनिष्ठा के आवरण को धारण किया। बहुत समय पहले, प्रवास के दौरान की गई प्रतिज्ञा को हेब्रोन में पूर्ण होना था। अबशालोम ने राजा से कहा, "मुझे हेब्रोन जाकर अपनी उस प्रतिज्ञा को पूर्ण करने दे, जो मैंने यहोवा के सामने की थी। तेरा दास जब अराम के गशूर में रहता था, तब मैंने यहोवा से प्रतिज्ञा की कि यदि यहोवा मुझे सचमुच यरूशलेम को लौटा ले जाए तो मैं यहोवा की उपासना करूँगा।" अपने पुत्र में धार्मिकता के इस प्रमाण से सांत्वना पाकर, प्रेमी पिता ने उसे आशीर्वाद के साथ विदा किया। षड़यन्त्र अब पूर्ण रूप से तैयार हो चुका था। अबशालोम के पाखंड का सर्वोच्च अभिनय ना केवल राजा को धोखा देने के लिये तैयार किया गया था, वरन् लोगों के विश्वास को स्थापित कर, उन्हें परमेश्वर द्वारा चुने हुए राजा के विरूद्ध विद्रोह करवाने के लिये था। PPHin 767.1

अबशालोम, हेब्रोन के लिये निकल पड़ा और उसके "संग दो सौ आमन्त्रित पुरूष यरूशलेम से गए, वे साफ मन से उसका भेद बिना जाने गए।" ये पुरूष अबशालोम के साथ गए पर इन्होंने कभी नहीं सोचा था कि पुत्र के लिये प्रेम उन्हें पिता के विरूद्ध उपद्रव करने की ओर ले जा रहा था। हेब्रोन पहुँचकर अबशालोम ने दाऊद के प्रमुख सलाहकार को बुलवाया। अहतोपेल अपनी बुद्धिमानी के लिये विख्यात था और उसकी राय को भविष्यवक्ता की सम्मति के समान विश्वसनीय और ज्ञानपूर्ण माना जाता था। अहीतोपेल षड़यन्त्रकारियों के पक्ष में हो गया, और उसके समर्थन से अबशालोम के अभियान की सफलता निश्चित प्रतीत होने लगी, जिससे देश के सभी भागों से प्रभावशाली पुरूष उसके मोरचे की ओर आकर्षित होने लगे। जैसे ही विद्रोह के नरसिंगे का शब्द सुनाई दिया, राजकुमार के भेदियों ने देश भर से अबशालोम के राजा होने का समाचार फैला दिया और कई लोग उसके पक्ष में एकत्रित हो गए। PPHin 767.2

तब किसी ने यरूशलेम में राजा के पास यह सन्देश पहुँचाया। दाऊद मानो अचानक नींद से जागा, जब उसने अपने सिंहासन के पास ही विद्रोह की उत्पन्न होते देखा। उसका अपना पुत्र, जिससे उसने इतना प्रेम किया था, और जिस पर उसने विश्वास किया था, उसका ताज छीनने की और

निःसन्देह उसे प्राण लेने की योजना बनाता रहा था। इस घोर संकट में दाऊद ने उस पर लम्बे समय से ठहरी हुई उदासी को दूर हटाया और अपने प्रारम्भिक वर्षों वाली भावना के साथ इस भयानक आपात स्थिति की सामना करने के लिये तैयार हुआ। केवल बीस मील की दूरी पर अबशालोम हेब्रोन में अपनी सेना में वृद्धि कर रहा था। विद्रोही शीघ्र ही यरूशलेम के फाटकों पर पहुँचने वाले थे। PPHin 767.3

अपने महल से दाऊद ने अपनी राजधानी को देखा-“'सुन्दर और सारी पथ्वी के हर्ष का कारण........राजाधिराज का नगर” (भजन संहिता 48:2)-उसे नरसंहार और सर्वनाश को प्राप्त हो जाने के लिये छोड़ देने के विचार से वह कॉप उठा। क्या उसे उसके सिंहासन के प्रति अभी भी सत्यनिष्ठ लोगों को अपनी सहायता के लिये बुलाना चाहिये और राजधानी को अपने अधीकृत रखने का निश्चित निर्णय लेना चाहिये? क्या उसे यरूशलेम को लहू में डूब जाने देना चाहिये? उसने निर्णय ले लिया। चुने हुए नगर पर युद्ध की वीभत्सता का साया नहीं पड़ेगा। वह यरूशलेम छोड़कर, अपने लोगों को उसके समर्थन में संगठित होने का अवसर प्रदान करके उनकी स्वामिभक्ति की परीक्षा लेगा। इस महासंकट के समय उसका परमेश्वर और अपने लोगों के प्रति यह कर्तव्य था कि वह उस अधिकार को कायम रखे जो स्वर्ग ने उसे प्रदान किया था संघर्ष की समस्या को परमेश्वर के भरोसे छोड़ देगा। PPHin 768.1

दुःख और दीनता के साथ दाऊद यरूशलेम के फाटक से बाहर निकल गया- अपने लाडले पुत्र के विद्रोह द्वारा अपने सिंहासन से, अपने महल से,परमेश्वर के सन्दूक से दूर कर दिया गया। एक उदास मण्डली उसके पीछे-पीछे हो ली मानो किसी का जनाजा उठ रहा हो। दाऊद के अंगरक्षक करेती और पलेती, गत से आए छः सौ गती, इते के नेतृत्व में राजा के साथ हो लिये, पर दाऊद जो कि स्वभाव से निःस्वार्थी था, इस बात से सहमत न हो सका कि जो परदेशी उसकी शरण में आए थे इस विपत्तिमें सम्मिलित हों। उसके लिये इस बलिदान के लिये उन्हें तैयार देखकर उसने आश्चर्य व्यक्त किया। तब राजा ने गती इते से पूछा, “हमारे संग तू क्यों चलता है? अपने स्थान पर लौट और राजा के साथ रह, क्योंकि तू परदेशी है और प्रवासी भी। तू तो कल ही आया है, क्या मैं आज ही तुझे मारा-मारा फिराऊं? मै तो जहाँ जा सकेगा वहाँ जाऊगा। तू लौट जा और अपने भाईयों को भी लौटा दे, ईश्वर की करूणा और सच्चाई तेरे संग रहे। PPHin 768.2

इते ने उत्तर दिया, “यहोवा के जीवन की शपथ और मेरे प्रभु राजा के जीवन की शपथ, जिस किसी स्थान में मेरा प्रभु राजा रहेगा, चाहे मरने के लिये हो, चाहे जीवित रहने के लिये हो, उसी स्थान में तेरा दास भी रहेगा।” ये पुरूष मूर्तिपूजा को छोड़कर यहोवा की आराधना करने लगे थे, और शिष्टता से उन्होंने अपने परमेश्वर और अपने राजा के प्रति अपनी स्वामिभक्ति को प्रमाणित किया। कृतज्ञतापूर्ण हृदय से दाऊद ने अपने डूबते प्रतीत हो रहे मनोरथ के प्रति उनकी श्रद्धा को स्वीकार गया, और वे सब किद्रोन नदी को पार कर, बीहड़ के मार्ग पर हो लिये। PPHin 768.3

जन मण्डली फिर से रूक गई। पवित्र वस्त्र धारण किये एक दल उनकी ओर चला आ रहा था। “और क्या देखने में आया कि सादोक भी और उसके संग सब लेवी परमेश्वर की वाचा उठाए हुए है।” दाऊद के अनुयायियों ने इसे अच्छा शगुन माना। उनके लिये उस पवित्र प्रतीक की उपस्थिति उनके छुटकारे और विजय की प्रतिज्ञा थी। उससे लोगों को राजा के समर्थन के लिये साहस जुटाने की प्रेरणा मिली। यरूशलेम में उसकी अनुपस्थिति अबशालोम के समर्थकों में भय उत्पन्न करने वाली थी। PPHin 769.1

संदूक को देखकर एक क्षण के लिये दाऊद का हृदय हर्ष और आशा से प्रफुल्लित हो गया। लेकिन शीघ्र ही उसके मन में अन्य विचार आए ।धरोहर का नियुक्त शासक होने के नाते उस पर एक महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व था। इज़राइल के राजा के मन में सबसे ऊपर निजी लाभ नहीं, वरन् परमेश्वर की महिमा और अपने लोगों की भलाई होनी चाहिये थी। करूबों के बीच वासकरने वाले परमेश्वर ने यरूशलेम के संदर्भ में कहा था, “यह मेरा विश्राम स्थान है”-भजन संहिता 132:14; और ईश्वर की आज्ञा के बिना PPHin 769.2

ना तो याजक और ना ही राजा को उसकी उपस्थिति के प्रतीक को वहाँ से हटाने का अधिकार था। दाऊद जानता था कि उसके जीवन और हृदय का पवित्र सिद्धान्तों के साथ सामंजस्य होना चाहिये, नही तो संदूक सफलता का नहीं वरन् महाविपदा का साधन होगा। उसका महापाप सदैव उसके सामने था। इस षड़यन्त्र में उसने परमेश्वर का न्यायसंगत निर्णय देखा । जो तलवार उसके घर से नहीं निकली थी, वरन् म्यान से बाहर आ गई थी। वह नहीं जानता था कि संघर्ष का परिणाम क्या होने वाला था। उसके लिये यह उचित नहीं था कि वह राज्य की राजधानी से उन पवित्र आज्ञाओं को हटाए, जिनमें उनके पवित्र प्रभु की इच्छा समाविष्ट थी जो राज्य का संविधान और उसकी समृद्धि का आधार थे। PPHin 769.3

दाऊद ने सादोक को आदेश दिया, “परमेश्वर के सन्दूक को नगर में लौटा ले जा। यदि यहोवा के अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हो तो वह मुझे लौटाकर उसको और अपने वास स्थान को भी दिखाए, परन्तु यदि वह मुझ से ऐसा कहे, मैं तुझ से प्रसन्न नहीं, तौभी में हाजिर हूँ. जैसा उसको भाए वैसा ही वह मेरे साथ बर्ताव करे।” PPHin 770.1

दाऊद ने आगे कहा, “क्या तू दर्शी नहीं है? इसलिये कुशल-क्षेम से नगर को लौट जा, और तेरा पुत्र अहीमास, और एब्यातार का पुत्र योनातान, दोनो तुम्हारे संग लौटे। सुनों मैं जँगल के घाट के पास तब तक ठहरा रहूँगा, जब तक मुझे तुम लोगों से हाल का समाचार न मिले।” नगर में याजक आततायियोंके प्रयोजन और गतिविधियाँ जानकर उन्हें अपने पुत्रों, अहीमाज़ और योनातन के माध्यम से राजा तक पहुँचाने हेतु दाऊद के लिये यह अच्छा कार्य कर सकते थे। PPHin 770.2

जैसे ही याजक यरूशलेम की ओर पीछे मुड़े, प्रस्थान करती जन-मण्डली पर एक गहरी परछाई सी छा गईं। उनका राजा एक पलायक, स्वयं वे निष्कासित, परमेश्वर के सन्दूक से भी त्याग

दिये गए- पूर्वाभास और भय से भविष्य अन्धकारमय था। "तब दाऊद जैतून के पहाड़ की चढ़ाई पर सिर ढाँके नंगे पाँव, रोता हुआ चढ़ने लगा, और जितने लोग उसके संग थे, वे भी सिर ढाँके, रोते हुए चढ़ गए। तब दाऊद को यह समाचार मिला कि अबशालोम के संगी राजद्रोहियों के साथ अहीतोपेल भी था।" फिर से दाऊद को उसकी विपत्तियों में उसके पाप के परिणामों को देखने के लिए विवश किया गया। राजनैतिक अधिकारियों में सबसे चतुर और सबसे योग्य, अहीतोपेल का पक्ष त्याग उसकी अपनी पोती बतशेबा के साथ हुए अनर्थ से जुड़े पारिवारिक अपमान के लिये प्रतिशोध से प्रेरित था। PPHin 770.3

"और दाऊद ने कहा, "हे यहोवा, अहीतोपेल की सम्मति को मूर्खता बना दे।" चोटी पर पहुँच कर दाऊद अपनी आत्मा का बोझ प्रभु पर डालकर, दीन होकर परमेश्वर की करूणा में याचना करते हुए, प्रार्थना के लिये नतमस्तक हुआ। ऐसालगा मानों उसकी प्रार्थना का तत्काल ही उत्तर आया। एरेकी हूशै, एक बुद्धिमान और योग्य सलाहकार, जिसने स्वयं को दाऊद का विश्वसनीय मित्र प्रमाणित किया था, अपना अंगरखा फाड़े, सिर पर मिट्टी डाले हुए अपदस्थ और पलायक राजा के साथ अपनी नियति को दाव पर लगाने आया। दाऊद ने मानो ईश्वरीय प्रबोधन से देखा कि हूशै जैसे विश्वसनीय और निर्मल हृदय व्यक्ति की राजधानी में होने वाली सभाओं में राजा के हित में कार्य करने के लिये आवश्यकता थी। दाऊद के निवेदन पर हूशै अबशालोम की अपनी सेवाएँ देने और अहीतोपेल की कूटिल सम्मति को निष्फल करने के लिये यरूशलेम को लौट गया। PPHin 770.4

अन्धकार में प्रकाश की इस किरण के साथ, राजा और उसके समर्थक जैतून पूर्वी ढलान से उतरकर, एक पहाड़ी निर्जन स्थान और खड़ी घाटियों से होते हुए, पथरीले और ढलान वाले मार्ग के किनारे-किनारे यरदन की ओर गए। "और जब राजा, दाऊद बहूरीम पहुँचा, तब शाऊल का एक कूठम्बी वहाँ से निकला, वह गेरा का पुत्र शिमी था, और वह कोसता हुआ आया। वह दाऊद पर, और राजा दाऊद के सब कर्मचारियों पर पत्थर फेंकने लगा, और शूरवीरों समेत सब लोग उसकी दाहिनी और बाईं दोनो ओर थे। शिमी कोसता हुआ यो बकता गया, "दूर हो खूनी, दूर हो ओछे, निकल जा, निकल जा। यहोवा ने तुझ से शाऊल के घराने के खून का पूरा बदला लिया है, जिसके स्थान पर तू राजा बना है, यहोवा ने राज्य को तेरे पुत्र अबशालोम के हाथ कर दिया है। और इसलिए कि तू खूनी है, तू अपनी बुराई में आप फंस गया। PPHin 771.1

दाऊद की समृद्धि के समय शिमी ने बोल और कर्म से कभी भी यह नहीं जताया था कि वह एक एक स्वामिभकत व्यक्ति नहीं था। लेकिन राजा के कष्ट में इस बिन्यामीन ने अपना वास्तविक चरित्र प्रकट किया। जब दाऊद सिंहासन पर विराजमान था उसने दाऊद का सम्मान किया था, लेकिन उसकी मानहानि में उसे उसे श्राप दिया। नीच और स्वार्थी, वह दूसरों को भी अपने PPHin 771.2

जैसा आचारभ्रष्ट समझता था, और शैतान से प्रेरणा पाकर, उसने उस पर अपनी घृणा को उडेला, जिसे परमेश्वर ने ताड़ा था। जो कष्ट में होता है, उसे धिक्‌्कारने में या उसकी दुर्गति में या उस पर विजयी होने की भावना शैतान की भावना होती है। PPHin 772.1

दाऊद के विरूद्ध शिमी के आरोप सरासर झूठे थे,एक निराधार विद्वेषपूर्ण लॉछन । दाऊद शाऊल और उसके घराने के प्रति अनर्थ का दोषी नहीं था। जब शाऊल पूर्ण रूप से दाऊद के अधीन था और वह उसे मार सकता था, उसने केवल उसके चोगे का सिरा काटा और परमेश्वर के अभिषिक्त के प्रति इस निरादर को दिखाने के लिये स्वयं को दोषी माना। PPHin 772.2

जब उसे अहेर के पशु जेसा मानकर उसका पीछा किया जा रहा था, तब भी दाऊद ने मनुष्य के जीवन के लिये पवित्र सम्मान का स्पष्ट प्रमाण दिया था। एक दिन जब वह अदुल्लाम की गुफा में छुपा बैठा था, और उसके मन में विचार आए, पलायक ने कहा, "कौन मुझे बेतलहेम के फाटक के पास वाले कुएँ का पानी पिलाएगा" 2 शमूएल 23:16 । उस समय बेतलेहम पलिश्तियों के अधिकार में था, लेकिन दाऊद के तीन वीर पलिश्तियों के प्रहरियों पर टूट पड़े, और बेतलहेम के फाटक के कुएँ से पानी भरकर दाऊद के पास ले आए। दाऊद उस जल को ग्रहण नहीं कर सका। उसने पुकारकर कहा, "हे यहोवा, मुझ से ऐसा काम दूर रहे। क्या में उन मनुष्यों का लहू पीऊ जो अपने प्राणों पर खेलकर गए थे? और उसने उस जल को परमेश्वर को भेंट के रूप में श्रद्धा से उँडेल दिया। दाऊद एक योद्धा रहा था, उसका जीवन अधिकतर हिंसा के दृश्यों के बीच बीता था, लेकिन जितने भी ऐसी कठिन परीक्षा से निकले हैं, उसमें बहुत कम है वे जो दाऊद की तरह उसके कठोरबना देने वाले और हतोत्साहित कर देने वाले प्रभाव से कम प्रभावित हुए हैं।' PPHin 772.3

दाऊद का भाजा, अबीशै, जो दाऊद के शूरवीर कप्तानों में से एक था, शिमी के अपमानजनक शब्दों को धेर्य से नहीं सुन सका। उसने कहा, "यह मरा हुआ कृत्ता मेरे प्रभु राजा को क्यों श्राप दे? मुझे ऊपर जाकर उसका सिर धड़सेअलगकरनेदे ।" लेकिन राजा ने उसे मना कर दिया। उसने कहा, "जब मेरा निज पुत्र भी मेरे प्राण लेना चाहता है तो यह बिन्यामीन अब ऐसा क्यों न करे? उसको अकेला छोड़ दो और श्राप देने दो, क्योंकि यहोवा ने उससे कहा है। कदाचित यहोवा इस उपद्रव पर, जो मुझ पर हो रहा है, दृष्टि करके आज के श्राप के बदले मेरा भला करे।" PPHin 772.4

अन्तरात्मा दाऊद को कटु और अपमानजनक सत्य से कचोट रही थी। उसकी विश्वसनीय प्रजा नियति के इस अप्रत्याशित परिवर्तन पर अचम्भा कर रही थी, लेकिन राजा के लिये यह कोई रहस्य नहीं था। उसे ऐसी घड़ी का प्राय: पूर्वाभास हुआ था। उसे आश्चर्य था कि परमेश्वर ने इतने लम्बे समय के लिये उसके पापों को सहन किया था, और जिस दण्ड के लायक दाऊद था, उसमें विलम्ब किया था और अब अपने इस त्वरित और दुखदायी पलायन में, नंगे पैर, शाही वस्त्र के बजाय सन का वस्त्र धारण किये हुए और जब उसके अनुयायियों का विलाप पहाड़ो में गूंज रहा था, उसने अपनी प्रिय राजधानी के बारे में सोचा- उस स्थान के बारे में सोचा, जो उसके पाप का दृश्य रहा था- और जब

उसने परमेश्वर की अच्छाई और चिरसहिष्णुता का स्मरण किया वह पूर्णतया निराश नहीं रहा। उसे महसूस हुआ कि परमेश्वर उस पर अब भी दया करेगा। PPHin 772.5

अनर्थ करने वाले कई लोग दाऊद के पतन की ओर संकेत करके अपने पाप को क्षम्य मानते है, लेकिन बहुत कम है वे जो दाऊद के प्रायश्चित और उसकी दीनता को प्रकट करते है। कितने कम है वे जो दण्ड और फटकार को दाऊद के से धैर्य और सहनशीलता के साथ सहन करते हैं। दाऊद ने अपने पाप का अंगीकार किया और वर्षो तक वह परमेश्वर के विश्वसनीय दास के तौर पर अपने कर्तव्य का पालन करता रहा, उसने अपने राज्य के उत्थान के लिये श्रम किया और उसके शासन काल में वह शक्ति और समृद्धि की उस ऊँचाईपर पहुँचा, जहाँ पहले कभी नहीं पहुँचा था। उसने परमेश्वर के भवन-निर्माण के लिये बहुतायत से बहुमूल्य सामग्री एकत्रित की थी, और क्या अब उसके जीवन भर का श्रम व्यर्थ होने जा रहा था? क्या समर्पित श्रम के वर्षों का परिणाम, शासन कला और समर्पण और प्रतिभा केकार्य उस देशद्रोही और घृष्ट पुत्र के हाथ में चले जाएँ, जिसने ना ही परमेश्वर के सम्मान का और ना ही इज़राइल की समृद्धि का लिहाज किया? कितना स्वाभाविक प्रतीत होता, इस यातना में परमेश्वर के विरूद्ध दाऊद का कूड़कूड़ाना? PPHin 773.1

लेकिन दाऊद ने अपने निजी पाप में अपने कष्ट का कारण देखा। भविष्यवक्ता मीका के शब्द में वही भावना है जिसने दाऊद के हृदय को प्रेरणा दी। "ज्योंही में अन्धकार में पड़ूँगा, त्यों ही यहोवा मेरे लिये ज्योति का काम देगा। मैंने यहोवा के विरूद्ध पाप किया है, इस कारण मैं उस समय तक उसके कोध को सहता रहूँगा, जब तक वह मेरा मुकद्दमा लड़कर मेरा न्याय न चुकाएगा ।"-मीका 7:8,9। और परमेश्वर ने दाऊद को छोड़ा नही। उसके अनुभव का यह अध्याय, जब उसने सबसे निर्दयी अनर्थ और अपमान की स्थिति में स्वयं को दीन, निःस्वार्थी, उदार और विनम्र प्रमाणित किया, उसके सम्पूर्ण अनुभव में श्रेष्ठ था। इज़राइल का राजा कभी भी परमेश्वर की दृष्टि में वास्तव में इतना महान नहीं था, जितना कि वह अपनी सार्वजनिक दीनता की घड़ी में ठहरा। PPHin 773.2

यदि परमेश्वर ने दाऊद को बिना फटकारे पाप करते रहने दिया होता और पवित्र आज्ञाओं का उल्लंघन करते हुए भी सिंहासन पर शान्ति और समृद्धि के साथ रहने दिया होता, तो अविश्वासी ओर नास्तिक को बाइबल के धर्म को, निंदा के तौर पर दाऊद के इतिहास का विवरण देने का बहाना मिल जाता। लेकिन जिस अनुभव से उसने दाऊद को गुजरने के लिये विवश किया, उसमे प्रभु दिखाता है कि वह पाप को ना ही बिना दण्ड जाने दे सकता है और ना ही सहन कर सकता है। और दाऊद का इतिहास हमें उन महान उद्देश्यों को देखने के लिये योग्य बनाता है, जो पाप से सम्बन्धित व्यवहार में परमेश्वर की दृष्टि में है। वह हमें कड़ी से कड़ी दण्डाज्ञा के माध्यम से भी, परमेश्वर की करूणा और उपकार के उद्देश्यों के कियान्वन का संकेत पाने के योग्य बनाता है। उसने दाऊद को दण्ड भुगतने दिया, लेकिन उसने दाऊद को नष्ट नहीं किया, आग की भटटी निर्मल या शुद्ध करने के लिये होती है, भस्म करने के लिये नहीं। प्रभु कहता है, "यदि वे मेरी विधियों

का उल्लंघन करे, और मेरी आज्ञाओं को न माने तो मैं उनके अपराध का दण्ड सोंटे से और उनके अधर्म का दण्ड कोड़े से दूँगा। परन्तु में अपनी करूणा उस पर से न हटाऊंगा, और न सच्चाई त्यागकर झूठा ठहरूँगा। - भजन संहिता 89:31-33। PPHin 773.3

दाऊद के यरूशलेम छोड़ने के तुरन्त बाद, अबशालोम और उसकी सेना ने प्रवेश किया और बिना संघर्ष के इज़राइल के गढ़ को अधीकृत कर लिया। नया-नया मुकुट पहने सम्राट का अभिवादन करने में सर्वप्रथम हूशे था, और राजकुमार अपने पिता के पुराने मित्र और सलाहकार के आगमन से प्रसन्न और चकित हुआ। अबशालोम को विश्वास का कि वह सफल होगा। यहाँ तक उसकी युक्तियाँ सफल हुई थी और अपने सिंहासन को स्थिर करने और प्रजा के विश्वास को जीतने के लिये उत्सुक, उसने हू्ृशै का अपने दरबार में स्वागत किया। PPHin 774.1

अबशालोम अब एक विशाल सेवा से घिरा था, लेकिन उसमे अधिकतर पुरूषोंने युद्ध में भाग नहीं लिया था। अहीतोपेल जानता था कि दाऊद की स्थिति इतनी निराशाजनक नहीं थी। प्रजा का बड़ा भाग अभी भी उसके पक्ष में था, वह अनुभवी योद्धाओं से घिरा हुआ था जो अपने राजा के प्रति सत्यनिष्ठ थे, और उसकी सेना योग्य और अनुभव प्राप्त सेनापतियों के नेतृत्व में थी। अहीतोपेल जानता था कि नए राजा के पक्ष में उत्साह के पहले प्रवाह के बाद, एक प्रतिक्रिया होगी। यदि उपद्रव असफल रहा, तो अबशालोम की ओर से अपने पिता के साथ पुर्नमिलन करने की सम्भावना थी, फिर प्रमुख सलाहकार होने के नाते, अहीतोपेल को उप्रदव का सबसे बड़ा दोषी माना जाएगा, और उसे सबसे कठोर दण्डाज्ञा मिलेगी ।अबशालोम को कदम पीछे हटाने से रोकने के लियेअहीतोपेल ने उसे ऐसा काम करने का सुझाव दियाजो सम्पूर्ण राष्ट्र की दृष्टि में पुनर्मिलन असम्भव बना देता। नारकीयचातुर्य के साथ इस धूर्त और सिद्धान्तहीन राजनेता ने अबशालोम को विद्रोह के अतिरिक्त कोटुम्बिक व्यभिचार के लिये उत्तेजित किया। सम्पूर्ण इज़राइल की दृष्टि में, पूर्वी राष्ट्रों की परम्परा के अनुसार,अबशालोम ने अपने पिता की सहवासनियों को अपनाना था, और इस प्रकार अपने पिता के सिंहासन का उत्तराधिकारी होने की घोषणा करनी थी। अबशालोम ने इस घधूर्ततापूर्ण सलाह के अनुसार किया और इस प्रकार भविष्यवक्ता द्वारा दाऊद को दिया गया परमेश्वर का वचन पूरा हुआ, "सुन, मैं तेरे घर में से विपत्ति उठाकर तुझ पर डालूँगा, और तेरी पत्नियों को तेरे सामने होकर तूझ से दूसरे को दूँगा, और वह दिन दोपहर में तेरीपत्नियों के साथ कुकर्म करेगा ।" - 2 शमूएल 12:11,12। ऐसा नहीं था कि परमेश्वर ने इन दुष्टतापूर्ण कृत्यों को प्रेरित किया, लेकिन दाऊद के पाप के कारण उसने इन्हें रोकने के लिये अपनी समार्थ्य का अभ्यास नहीं किया। अहीतोपेल को अपनी बुद्धिमत्ता के लिये उच्च सम्मान प्राप्त था, लेकिन परेमश्वर की ओर से आने वाले प्रलोभनों से अभावग्रस्त था। नीतिवचन 9:10में लिखा है, "यहोवा का भय मानना बुद्धि का आरम्भ है" और इसी का अहीतोपेल में अभाव था, नहीं तो वह देशद्रोही की सफलता कौटुम्बिक व्यभिचार पर आधारित नहीं करता। दुष्ट-हृदय मनुष्य दुष्टता के षड़यन्त्र रचते है, मानो उनकी युक्तियों को निष्फल करने के लिये कोई ईश्वरीय रक्षा नहीं है, लेकिन "वह स्वर्ग में विराजमान हैः: हमेशा प्रभु उनको टठठों में उड़ाएगा। -

भजन संहिता 2:4। नीतिवचन 1:30-32 में लिखा है, "उन्होंने मेरी सम्मति न चाही, वरन् मेरी सब ताड़नाओं को तुच्छ जाना। इसलिये वे अपनी करनी का फल आप भोगेंगे, और अपनी युक्तियों के फल के अधीन हो जायेंगे। क्योंकि भोले लोगो का भटक जाना, उनके घात किये जाने का कारण होगा, और निश्चित रहने के कारण मूढ़ लोग नष्ट होंगे।' PPHin 774.2

अपनी निजी सुरक्षा को सुरक्षित करने के षड़यन्त्र में सफल होने के पश्चात, अहीतोपेल ने अबशालोम पर दाऊद के विरूद्ध तत्काल कार्यवाही करने की आवश्यकता का दबाव डाला।" मुझे हजार पुरूष छाँटने दे और मैं उठकर आज ही रात को दाऊद का पीछा करूँगा और जब वह थका-माँदा और निर्बल होगा,तब में उसको पकड़ूँगा और उसको डराऊंगा, और जितने लोग उसके साथ है सब भागेंगे। में राजा ही को मारूँगा, और मैं सब लोगों को तेरे पास लौटा लाऊंगा [इस योजना को राजा के सभी सलाहकारों ने स्वीकृति दे दी। यदि इसका पालन किया गया होता और परमेश्वर ने उसे बचाने को हस्तक्षेप न किया होता, तो दाऊद अवश्य ही मारा जाता। लेकिन सुप्रसिद्ध अहीतोपेल की बुद्धि से श्रेष्ठ बुद्धि घटनाओं को निर्देशित कर रही थी। "यहोवा ने तो अहीतोपेल की अच्छी सम्मति को निष्फल करने की ठान ली थी कि वह अबशालोम ही पर विपत्ति डाले। PPHin 775.1

हूशे को सभा में नही बुलाया गया, और वह बिना बुलाए प्रवेश नहीं करना चाहता था, क्योंकि ऐसा करने पर उसपर गुप्तचर होने का सन्देह किया जा सकता था,लेकिन सभा के समाप्त होने पर अबशालोम ने उसके समक्ष अहीतोपेल की योजना प्रस्तुत की, क्योंकि वह अपने पिता के सलाहकार के निर्णय का सम्मान करता था। हूशै ने देखा कि यदि प्रस्तावित योजना का पालन किया गया, तो दाऊद की हार तय थी। और उसने कहा, "जो सम्मति अहीतोपेल ने इस बार दी वह अच्छी नहीं है, क्योंकि तू अपने पिता और उसके जनों को जानता है कि वे शूरवीर है, और बच्चा छीनी हुई रीछनी के समान कोधित होंगे । तेरा पिता योद्धा है, और अन्य लोगों के साथ रात नहीं बिताता। इस समय वह किसी गडढे या किसी अन्य स्थान में छुपा होगा। उसने तक रखा कि यदि अबशालोम की सेना दाऊद का पीछा करेगी, वे राजा को बन्दी नहीं बना पाएँगे, और यदि विजय के बजाय उनकी हार हुई तो उसका साहस टूट जाएगा और उससे अबशालोम के अभियान को बहुत हानि पहुँचेगी। उसने कहा, "समस्त इज़राइल जानता है कि तेरा पिता वीर है, और उसके संगी बड़े योद्धा है।" और उसने एक योजना का सुझाव दिया जो शक्ति प्रदर्शन को पसन्द करने वाले अभिमानी और स्वार्थपूर्ण स्वभाव के लिये आकर्षक था। PPHin 776.1

"इसलिये मेरी सम्मति यह है कि दान से लेकर बैशेबा तक रहने वाले समस्त इज़राइली तेरे पास समुद्रतीर की बालू के किनकों के समान इकटूठे किये जाएँ, और तू आप हीयुद्ध को जाए। इस प्रकार जब हम उसको किसी न किसी स्थान में जहाँ वह मिले जा पकड़ेगे, तब जैसे ओस भूमि पर गिरती है वैसे ही हम उस पर टूट पड़ेगे, तब न तो वह बचेगा और न उसके संगियों में से कोई

बचेगा। यदि वह किसी नगर में घुसा हो, तो सब इज़राइली उस नगर के पास रस्सियाँ ले आएँगे, और हम उसे नदी में खीचेंगे, यहाँ तक कि उसक एक छोटा सा पत्थर भी न रह जाएगा।' PPHin 776.2

"तब अबशालोम और सब इज़राइली पुरूषों ने कहा, "एरेकी हृशे की सम्मति अहीतोपेल की सम्मति से उत्तम है।" लेकिन एक था जो धोखे में नहीं आया- जिसने अबशालोम की प्राणघातक गलती के परिणाम का पुर्वानुमान लगाया। अहीतोपेल जानता था कि विद्रोही अपना अभियान हार चुके। और वह ये भी जानता था कि राजकूमार की नियति कुछ भी हो, उस सलाहकार के लिये कोई आशा नही थी जिसने उसके सबसे बड़े अपराधों को उत्तेजित किया था। अहीतोपेल ने अबशालोम को विद्रोह के लिये प्रोत्साहित किया था। उसने अबशालोम को सबसे घृणास्पद दुष्टता- अपने पिता का निरादर करने की सलाह दी थी, उसी ने दाऊद को मार डालने की सलाह दी थी और इस कार्य के उपलब्धि की योजना तैयार की थी, उसने दाऊद के साथ अपने निजी पुर्नमिलन की सम्भावना को समाप्त कर दिया था, और उसके सामने, अबशालोम द्वारा भी किसी और को वरीयता दी जा रही थी। कोधित, द्वेषपूर्ण और मायूस अहीतोपेल, 'अपने नगर में जाकर अपने घर में गया, और अपने घराने के विषय जो जो आज्ञा देनी थी वह देकर अपने को फाँसी लगा ली, और वह मर गया।" ऐसा था उसकी बुद्धिमत्ता का परिणाम, जो इतना प्रतिभावान था, लेकिन जिसने परमेश्वर को अपना सलाहकार नहीं बनाया। शैतान मनुष्य को प्रसन्न करने वाली प्रतिज्ञाओं से भरमाता है, लेकिन अन्त में प्रत्येक प्राणी को ज्ञात होगा कि "पाप की मजदूरी मृत्यु है ।-रोमियों 6:23। PPHin .1

हूशै को चचंल राजा के द्वारा अपनी सम्मति के अनुसरण किए जाने का यकीन नही था, इस कारण उसने दाऊद को सचेत करने में देर नहीं की ताकि वह अविलम्ब यरदन पार बच कर निकल जाए। उन याजकों को, जिन्हें अपने पुत्रों के माध्यम से आगे भेजना था, हूृशै ने सन्देश भेजा, "अहीतोपेल ने तो अबशालोम और इज़राइली पुरनियों को इस प्रकार की सम्मति दी, और मैंने इस प्रकार की सम्मति दी है। इसलिये अब.....आज रात जँगली घाट के पास न ठहरना, अवश्य पार हो जाना, ऐसा न हो कि राजा और जितने लोग उसके संग हो, सब नष्ट हो जाएँ।" PPHin .2

नौजवान सन्देह के घेरे में आ गए और उनका पीछा किया गया, लेकिन फिर भी वे अपने खतरनाक विशेष कार्य को सम्पन्न करने में सफल रहे। पहले दिन के पलायन पश्चात थके हुए और दुखी दाऊद को यह सन्देश प्राप्त हुआ कि उसे उसी रात यरदन को पार करना था, क्योंकि उसका पुत्र उसके प्राणों का प्यासा हो गया था। PPHin .3

इस घोर संकट के समय उस पिता और राजा की भावनाएँ क्या रही होंगी जिनके साथ इतना गलत हुआ था? " एक पराक्रमी शूरवीर" रणकुशल राजा, जिसका कथन ही नियम था, जिसे उस पुत्र ने धोखा दिया, जिससे उसने प्रेम किया, जिसके साथ दयालुतापूर्ण व्यवहार किया था, जिसमें अंधा विश्वास किया, जिसकी प्रजा के, उन सदस्यों ने विश्वासघात किया और उसे छोड़ दिया, जो

उसके साथ सम्मान और स्वामिभक्ति के अटूट बन्धनों से बन्धे थे- किन शब्दों में दाऊद ने अपने हृदय की भावनाओं को अभिव्यक्त किया? अपने सबसे अन्धकारमय परीक्षा की घड़ी में दाऊद का हृदय परमेश्वर पर स्थिर था और उसने गीत गाया - PPHin 778.1

"हे यहोवा, मेरे को सतानेवाले कितने बढ़ गए है,

वे जो मेरे विरूद्ध उठते है बहुत है।

बहुत से मेरे प्राण के विषय में कहते हैं कि

उसका बचाव परमेश्वर की ओर से नहीं हो सकता

परन्तु हे यहोवा, तू तो मेरे चारों ओर मेरी ढाल है,

तू मेरी महिमा और मेरे मस्तक का ऊँचे करने वाला है।

में ऊंचे शब्द से यहोवा को पुकारता हूँ

और वह अपने पवित्र पर्वत पर से मुझे उत्तर देता है।

में लेटकर सो गया, फिर जाग उठा

क्योंकि यहोवा मुझे सम्भालता है

में उन दस हजार मनुष्यों से नहीं डरता,

जो मेरे विरूद्ध चारों ओर पांति बाँधे खड़े है।

उठ, हे यहोवा हे मेरे परमेश्वर मुझे बचा ले!

क्यों तूने मेरे सब शत्रुओं के जबड़ो पर मारा है।

और तूने दुष्टों के दांत तोड़ डाले है।

उद्धार यहोवा ही से होता है,

हे यहोवा तेरी आशीष तेरी प्रजा हो। PPHin 778.2

-भजन संहिता 3:1-8।

दाऊद और उसकी सम्पूर्ण मण्डली-योद्धा और नीतिज्ञ, वृद्ध और नौजवान, स्त्रियाँ और छोटे बालक सभी ने रात के अंधेरे में गहरी और तीव्र गति से बहती नदी को पार किया। "पौ फटने तक उनमें से एक भी न रहा जो यरदन के पार न हो गया हो।" PPHin 778.3

तब दाऊद और उसकी सेना महनैम पहुँचे जो इश्बोशेत का शाही निवास रहा था। पहाड़ी प्रदेश से घिरा हुआ यह एक सशक्त किलेबन्द शहर था, जो युद्ध के समय में शरण के लिये अनुकूल स्थान था। यह एक सामग्री सम्पन्न देश था, और लोग दाऊद के अभियान के प्रति सहायक थे। यहाँ उसके साथ कई समर्थक जुड गए और धनवान कृटुम्बी बहुतायत से खाद्य सामग्री और आवश्यकता की वस्तुएँ लेकर आए। PPHin 778.4

हूशै के परामर्श ने दाऊद के लिये बच निकलने के अवसर का लक्ष्य प्राप्त कर लिया था, लेकिन उतावले और अविवेकी राजकुमार को अधिक समय के लिये नियन्त्रित नहीं रखा जा सका, और वह शीघ्र ही अपने पिता का पीछा करने निकल पड़ा। “और अबशालोम सब इज़राइली पुरूषों समेत यरदन के पार गया।” अबशालोम ने दाऊद की बहन अबीगेल के पुत्र अमासा को अपनी सेनाओं का सेनापति बनाया। उसकी सेना विशाल थी, लेकिन वह उसके पिता के अनुभवी सैनिकों का समाना करने के लिये अनुशासनहीन थी और पर्याप्त रूप से तैयार नहीं थी। PPHin 779.1

दाऊद ने अपनी सेना को अबीशे और गतवासी इतै के नेतृत्व में तीन टुकड़ियों में विभाजित कर दिया। वह रणभूमि में सेनाओं का नेतृत्व स्वयं करना चाहता था, लेकिन सेना के अधिकारियों, सलाहकारों और लोगों ने इसका कड़ा विरोध किया। उन्होंने कहा, “तू जाने न पाएगा। क्योंकि चाहे हम भाग जाएँ, वे हमारी चिन्ता न करेंगे, वरन् हम में से आधे मारे भी मारे जाएँ, तो भी वे हमारी चिन्ता न करेंगे। परन्तु तू हमारे जैसे दस हजार पुरूषों के बराबर है, इसलिये अच्छा यह है कि तू नगर में से हमारी सहायता करने को तैयार रहे। “और राजा ने उनसे कहा, ‘जो कुछ तुम्हे भाए, वही मैं करूँगा ।” - 2 शमूएल 18:3,4। PPHin 779.2

नगर की प्राचीरों से विद्रोही की लम्बी कतारे पूरी तरह दृश्यमान थी। दाऊद की सेना बलातग्राही के साथ आईं विशाल सेना की तुलना में मुटठी मर प्रतीत हो रही थी। लेकिन जब राजा ने विद्रोही सेना पर दृष्टि डाली, उसके मन के सर्वापरि विचार राज्य और सिंहासन के बारे में नहीं थे, और न ही उसके जीवन के बारे में, जो युद्ध के परिणाम पर निर्भर थे। पिता का हृदय अपने विद्रोही पुत्र के लिये प्रेम और दया से परिपूर्ण था। जैसे-जैसे पंक्तिबद्ध सेना नगर के फाटकों से बाहर निकली दाऊद ने अपने विश्वसनीय सैनिकों को इस विश्वास के साथ, कि इज़राइल का परमेश्वर उन्हें विजयी करेगा, आगे बढ़ने को कहते हुए प्रोत्साहित किया। लेकिन यहाँ भी वह अबशालोम के लिये अपने प्रेम को दबा न सका। जब योआब प्रथम सैन्य दल का नेतृत्व करता राजा के पास से निकला, सौ रणभूमियों के विजेता ने सम्राट का अन्तिम सन्देश सुनने के लिये अपना ऊंचा सिर नीचे झुकाया, ओर काँपते स्वर में राजा ने कहा, “मेरे निमित्त उस नौजवान, अर्थात अबशालोम के साथ कोमलता से व्यवहार करना।” लेकिन राजा की चिन्ता से ऐसा प्रतीत हुआ मानो अबशालोम उसे अपने राज्य और उसकी राजशक्ति के प्रति निष्ठावान प्रजा से भी प्रिय था, और इससे अस्वाभाविक पुत्र के प्रति उनका कोध और भी बढ़ गया। PPHin 779.3

युद्ध का स्थान, यरदन के पास एक जंगल था, जिसमें अबशालोम की सेना की भारी संख्या उसके लिये केवल असुविधा थी। जंगल की झाड़ियों और दलदल में यह अनुशासनहीन सैन्य-दस्ता असंगत और बेकाबू हो गया। और "दाऊद की सेना ने इज़राइलियों को हरा दिया। उस दिन भारी नरसंहार हुआ और बीस हजार व्यक्ति मारे गए।" अबशालोम यह देखते हुए कि उसकी सेना हार चुकी थी, भागने के लिये पीछा मुड़ा और जब वह खच्चर पर सवार एक बड़े बांज वृक्ष के नीचे से निकल रहा था तो उसका सिर अटक गया और उसका खच्चर उसके नीचे से निकल गया, वह असहाय होकर अधर में लटका रहा और अपने शत्रुओं का शिकार हो गया। इस स्थिति में उसे एक सैनिक ने देखा, लेकिन राजा का अप्रसन्न करने के डर से, उसने अबशालोम को छोड़ दिया लेकिन यह आँखो देखा हाल योआब को सुनाया। योआब को नैतिकता के आधार पर कोई झिझक नहीं थी। उसने दो बार अबशालोम का दाऊद के साथ पुनर्मिलन कराने में अबशालोम की सहायता की थी और उसके विश्वास को दोनों बार तोड़ा गया था। योआब की मध्यस्थता के माध्यम से अबशालोम को मिली सुविधाओं के अभाव में यह उपद्रव कभी भी घटित नहीं होता। अब इस कृकृत्य के प्रवर्तक को एक झटके में नष्ट करना योआब के वश में था। "उसने तीन लकड़ी के तीर हाथ में लेकर, अबशालोम के हृदय को छेद डाला......तब लोगों ने अबशालोम को उतार कर उस वन के एक बड़े गडढे में डाल दिया, और उस पर पत्थरों का एक बड़ा ढेर लगा दिया।" PPHin 780.1

इस प्रकार इज़राइल में विद्रोह के प्रवर्तकों का विनाश हुआ। अहीतोपेल अपने ही हाथों से मरा था। चिरकालीन निन्दा के प्रतीक के रूप में, राजवंशी अबशालोम, जिसका तेजस्व सौन्दर्य इज़राइल की शान था, नौजवानी में काट डाला गया था, उसके शव को एक गडडढ़े में फेंक दिया गया था, और पत्थरों के देर से ढाँक दिया गया था। अपने जीवनकाल में अबशालोम ने राजा की तराईं में अपने लिये एक स्तम्भ खड़ा किया था, लेकिन जँगल में वह पत्थरों का ढेर, उसकी कब्र को चिन्हित करने वाला एकमात्र स्मारक था। PPHin 780.2

विद्रोह के अगुवा के मारे जाने के बाद, योआब ने तुरही के स्वर पर भागती हुई सेना का पीछा करती अपनी सेना को वापस बुलाया और राजा तक यह समाचार पहुँचाने के लिये तुरन्त ही सन्देशवाहकों को भेजा गया। PPHin 781.1

नगर की प्राचीर पर से रणभूमि की ओर देखते हुए, प्रहरी ने एक व्यक्ति को अकेले दौड़ते हुए आते देखा। उसके पीछे एक और व्यक्ति दिखाई दिया। जब पहला व्यक्ति पास आया, प्रहरी ने फाटक के पास प्रतीक्षा करते हुए राजा से कहा, "मुझे तो ऐसा दिखाई पड़ता है कि पहले का दौड़ना सादोक के पुत्र अहीमास का सा है। राजा ने कहा वह भला मनुष्य है, तो भला सन्देश लाया होगा। तब अहीमास ने पुकार कर राजा से कहा, सब कुशल है। फिर उसने भूमि पर मुहँ के बल गिर राजा को दण्डवत करके कहा, तेरा परमेश्वर यहोवा धन्य है, जिसने मेरे प्रभु राजा के विरूद्ध हाथ

उठानेवाले मनुष्य को तेरे वश में कर दिया है।” राजा की उत्सुकता भरे प्रश्न, क्या वह नौजवान अबशालोम कुशल है? अहीमास ने अस्पष्ट उत्तर दिया। PPHin 781.2

दूसरा सन्देशवाहक ऊंचे स्वर में पुकारते हुए आया, “मेरे प्रभु राजा के लिये यह समाचार है। यहोवा ने आज न्याय करके तुझे उन सब के हाथ में बचाया है जो तेरे विरूद्ध उठे थे।” फिर से पिता के होठों से वही अवशोषक प्रश्न आया, ‘क्या वह नौजवान अबशालोम कुशल है?” उस दुःखद समाचार का छुपाए रखने में असमर्थ, दूत ने उत्तर दिया, “मेरे प्रभु राजा के शत्रु, और जितने भी तेरी हानि के लिये उठें, उनकी दशा उस नौजवान की सी हो।” यह पर्याप्त था। दाऊद ने आगे प्रश्न नहीं किया, लेकिन सिर झुकाए वह, “फाटक के ऊपर की अटारी पर रोता हुआ चढ़ने लगा, और चलते चलते यों कहता गया, ‘हाय मेरे बेटे अबशालोम! मेरे बेटे हाय! मेरे बेटे अबशालोम! भला होताकि मैं आप तेरे बदले मरता, हाय अबशालोम! मेरे बेटे, मेरे बेटे।” PPHin 781.3

रणभूमि में लोटते हुए, विजयी सेना नगर के निकट आ पहुँची और उनकी जयजयकार से पहाड़ गूँज उठे। लेकिन नगर के फाटढकों में प्रवेश करते ही जयजयकार शान्त हो गया, उनकी पताकाएँ नीचे हो गईं, और दृष्टि नीचे किये हुए वे विजेताओं के बजाय पराजित हुओं की तरह आगे बढ़े। क्योंकि राजा उनका स्वागत करने की प्रतीक्षामें नहीं खड़ा था, वरन् फाटक के ऊपर की अटारी से उसका विलाप सुनाई दे रहा था, “हे मेरे बेटे अबशालोम मेरे बेटे अबशालोम! भला होता कि मैं आप तेरे बदले मरता, हाय अबशालोम बेटे, मेरे बेटे। PPHin 781.4

“इसलिये उस दिन की विजय सब लोगों की समझ में विलाप ही का कारण बन गई, क्योंकि लोगों ने उस दिन सुना कि राजा अपने बेटे के लिये खेदित है। इसलिये उस दिन लोग ऐसा मुहँ चुराकर नगर में घुसे, जैसे लोग युद्ध से भाग आने से लज्जित होकर मुँह चुराते हैं।’ PPHin 782.1

योआब कोध और घृणा से भर गया कि राजा अपने बेटे के लिये खेदित है। इसलिये लोग ऐसा मुह चुराकर नगर में घुसे, जैसे लोग युद्ध से भाग आने से लज्जित होकर मुहँ चुराते है।’ PPHin 782.2

योआब कोध और घृणा से भर गया। परमेश्वर ने उन्हें विजयोल्लास और हर्ष का कारण दिया था; इज़राइल की जानकारी में यह सबसे महत्वपूर्ण विद्रोह था जिसे दबा दिया गया था, और फिर भी यह महान विजय उसके सन्दर्भ में शोक में परिवर्तित हो गई, जिसके अपराध ने हज़ारों योद्धाओं के प्राण ले लिये थे। उस अशिष्ट और मुहँफट कप्तान ने राजा की उपस्थिति में घुसकर निर्भीकता से कहा, “तेरे कर्मचारियों ने, तेरा और तेरे बेटे-बेटियों और पत्नियों और सहवासनियों का प्राण बचाया है, परन्तु तूने आज के दिन उन सभों का मुहँ काला किया है, इसलिये कि तू अपने बैरियों से प्रेम और अपने मित्रों से बैर रखता है। तूने आज यह प्रकट किया कि तुझे हाकिमों और कर्मचारियों की कुछ चिंता नहीं, वरन् मेने आज जान लिया, कि यदि हम सब आज मारे जाते और अबशालोम जीवित रहता, तो भी तू बहुत प्रसन्न होता। इसलिये अब उठकर बाहर जा, और अपने कर्मचारियों

को शान्ति दे, नहीं तो मैं यहोवा की शपथ खाकर कहता हूँ कि यदि तू बाहर न जाएगा, तो आज रात को एक मनुष्य भी तेरे संग न रहेगा, और तेरे बचपन से लेकर अब तक जितनी विपत्तियाँ तुझ पर पड़ी है उन सब से यह विपत्ति बड़ी होगी। PPHin 782.3

हृदय से दुखी राजा के लिये यह उलाहना कर्कश और निर्दयी भी थी, लेकिन राजा ने बुरा नहीं माना। यह देखते हुए कि उसका सेनापति सही था, वह नीचे उतरकर फाटक तक गया, और जैसे-जैसे सैनिक उसके पास से निकले, उसने साहस और सराहना भरे शब्दों के साथ उनका स्वागत किया ।

अध्याय 73—दाऊद के अंतिम वर्ष

यह अध्याय 2 शमूएल 24, 1 इतिहास 21, 28, 29, 1 राजा पर आधारित है

अबशालोम की पराजय राज्य में तत्काल शान्ति लेकर नहीं आई। प्रजा का इतना बड़ा भाग विद्रोह में सम्मिलित हुआ था कि दाऊद गोत्रों से निमन्त्रण प्राप्त हुए बिना राजधानी लौटकर अपने अधिकार को पुनः ग्रहण नहीं करना चाहता था। अबशालोम की पराजय के पश्चात् उत्पन्न अव्यवस्था में राजा को वापस बुलाने की कोई तत्काल और कतसंकल्प कार्यवाही नहीं हुई थी, और अन्त में जब यहूदा ने दाऊद को वापस ले आने का दायित्व उठाया, तो अन्य गोत्रों की ईर्ष्या जागृत हो गई, और एक प्रति-विरोध उत्पन्न हो गया। लेकिन इसे जल्द ही शान्त कर दिया गया, और इज़राइल में शान्ति लौट आई। PPHin 783.1

दाऊद का इतिहास, मनुष्य में सबसे अधिक वांछनीय - अधिकार, धन-दोलत और सांसारिक सम्मान से सम्बन्धित, आत्मा कोजोखिममे डालने वाले खतरों के लिये अब तक की दी गई साक्षियों में सबसे प्रभावशाली साक्षी है। ऐसी परीक्षा में खरे उतरने के लिये मनुष्यों को तैयार करने हेतु इससे अधिक अनुकूल अनुभव से बहुत कम शायद ही होकर निकले हैं। चरवाहे के तौर पर दाऊद का प्रारम्भिक जीवन, दीनता, धेर्यशील श्रम,और भेड़ो के लिये उसकी नम्रतापूर्ण चौकसी के सबकों के साथ; पहाड़ो के एकान्त में प्रकृति के साथ उसकासंपर्क, संगीत और काव्य के लिये उसकी प्रतिभा को विकसित करते हुए, और उसके विचारों को सृष्टिकर्ता की ओर ले जाते हुए; साहस, सहनशीलता, धेरय और परमेश्वर में विश्वास का अभ्यास कराते हुएबीहड़ में उसके जीवन का चिरकालीन अनुशासन, परमेश्वर द्वारा इज़राइल के सिंहासन के लिये तैयारी के रूप में नियुक्त किया था। दाऊद ने परमेश्वर के प्रेम के अनमोल अनुभवों का आनन्द लिया था, और वह उसकी आत्मा की बहुतायत से आशीषित था; शाऊल के इतिहास में उसने निरी मानवीय बुद्धिमत्ताकी महत्वहीनता को देखाथा। फिर भी सांसारिक सफलता और सम्मान ने दाऊद के चरित्र को इतना दुर्बल कर दिया था कि वह बार-बार प्रलोभनकर्ता के वशीभूत हो जाता था। PPHin 783.2

मूर्तिपूजकों के साथ मेल-जोल ने उन्हें जातीय रीति रिवाजों का अनुसरण करने को इच्छित किया और सांसारिक ख्याति की महत्वाकांक्षा को सुलगाया। यहोवा कीप्रजा के तौर पर इज़राइल का सम्मान किया जाना था, लेकिन जब अभिमान और आत्म-निर्भरता में वृद्धि हुई, इज़राइल पहले से प्राप्त प्रतिष्ठा से सन्तुष्ट नहीं थे। उन्हें अन्य जातियों में अपनी प्रतिष्ठा की अधिक चिन्ता थी। यह भावना नि:सन्देह ही प्रलोभन को आमन्त्रित करती थी। पराए देशों से अपने राज्य का विस्तार करने की दृष्टि से दाऊद ने उपयुक्त आयु वाले सभी पुरूषों के लिये सैन्य सेवा अनिवार्य कर अपनी सेना में वृद्धि करने का दृढ संकल्प किया। इसे लागू करने के लिये जनगणना करना आवश्यक हो गया। राजा की ओर से यह कार्यवाही अभिमान और महत्वाकांक्षा से प्रेरित थी। लोगो का संख्याकन दाऊद

के सिंहासन ग्रहण करने के समय में राज्य की दुर्बलता और उसके शासन काल में उसकी शक्ति और समृद्धि के बीच अन्तर को दर्शाता। इससे राजा और प्रजा दोनो का आत्म-विश्वास, जो पहले से ही बहुत था, और बढ़ जाता। पवित्र शास्त्र में लिखा है, "शैतान ने इज़राइल के विरूद्ध उठकर दाऊद को उकसाया कि इज़राइल की गिनती ले।" दाऊद के समय में इज़राइल की समृद्धि, उसकी सेना की शक्ति या राजा की योग्यता के कारण नहीं, वरन् परमेश्वर की आशीष के कारण थी। लेकिन राज्य के सैन्य साधनों में वृद्धि से पड़ोसी राज्यों पर यह प्रकट होता कि इज़राइल का विश्वास उसकी सेनाओं में था ना कि यहोवा की समार्थ्य में। PPHin 783.3

हालाँकि इज़राइल के लोग अपनी जातीय श्रेष्ठता पर गर्व करते थे, लेकिन सैन्य सेवा के विस्तार के लिये दाऊद की योजना से वे प्रसन्न नहीं थे। प्रस्तावित नामांकन के कारण बहुत असन्तोष फैला, इस कारण से याजकों और न्यायियों के स्थान पर, जिन्होंने पहले जनगणना की थी, सेना के अधिकारियों को नियुक्त करना आवश्यक समझा गया। इस विशेष कार्य का लक्ष्य धर्मतन्त्र के सिद्धान्तों के प्रत्यक्ष रूप से विपरीत था। इससे पहले योआब ने स्वयं को अनैतिक प्रमाणित किया था लेकिन उसने भी आपत्ति जताई। उसने कहा, "यहोवा की प्रजा कितनी ही क्यों न हो, वह उसको सौ गुना बढ़ दे, परन्तु हे मेरे प्रभु हे राजा! क्या वे सब राजा के अधीन नहीं हैं? मेरा प्रभु ऐसी बात क्यों चाहता है? वह इज़राइल पर दोष लगने का कारण क्यों बने? फिर भी राजा की आज्ञा योआब पर प्रबल हुई। तब योआब विदा होकर सारे इज़राइल में घूमकर यरूशलेम को लौट आया।" जब दाऊद के पाप को धिक्कारा गया, संख्याकन समाप्त नहीं हुआ था। स्वयं को दोषी स्वीकार कर, "दाऊद ने परमेश्वर से कहा, यह काम जो मैंने किया है, वह महापाप है। परन्तु अब अपने दास का अधर्म दूर कर, मुझ से तो बड़ी मुर्खता हुई है।" अगले दिन प्रात::काल दाऊद को भविष्यवक्ता गाद द्वारा यह सन्देश मिला, "यहोवा यों कहता है कि चुन ले या तो तीन वर्ष का अकाल पड़े या तीन महीने तक तेरे विरोधी तुझे नष्ट करते रहे, और तेरे शत्रुओं की तलवार तुझ पर चलती रहे या तीन दिन तक यहोवा की तलवार चले, अर्थात मरी देश में फैले और यहोवा का दूत इज़राइली देश में चारों ओर विनाश करता रहे। अब सोच कि मैं अपने भेजने वाले को क्या उत्तर दूँ? PPHin 784.1

राजा ने उत्तर दिया "मैं बड़े संकट में पड़ा हूँ. में यहोवा के हाथ में पड़ूँ क्योंकि उसकी दया महान है, परन्तु मनुष्य के हाथ में मुझे पड़ना न पड़े।" PPHin 785.1

देश में मरी फैल गईं, और इज़राइल में सत्तर हजार पुरूष मर मिटे। अभी इसमहान कष्ट ने राजधानी में प्रवेश नहीं किया था कि "दाऊद ने आँखे उठाकर देखा कि यहोवा का दूत हाथ में खींची हुई और यरूशलेम की ओर बढ़ाई हुई एक तलवार लिये हुए आकाश के बीच खड़ा है, तब दाऊद और पुरनिये टाट पहने हुए मुहँ के बल गिर पड़े थे।" राजा ने इज़राइल के पक्ष में परमेश्वर से विनती की, "जिसने प्रजा को गणना करने को कहा क्या वह मैं नहीं? हाँ, जिसने पाप किया और बहुत बुराई की है, वह तो मैं ही हूँ। परन्तु इन भेड़-बकरियों ने क्या किया है? इसलिये हे मेरे परमेश्वर

यहोवा! तेरा हाथ मेरे पिता के घराने के विरूद्ध हो, परन्तु तेरी प्रजा के विरूद्ध न हो, कि वे मारे जाए।' PPHin 785.2

जनगणना के किये जाने से लोगों में मनमुटाव उत्पन्न हो गया। फिर भी उन्होंने स्वयं उन्हीं पापों को संजोया था जिन्होंने दाऊद के द्वारा की गई कार्यवाही को प्रेरित किया था। अबशालोम के पाप के माध्यम से परमेश्वर ने दाऊद को दण्डाज्ञा दी, और इसी प्रकार दाऊद की गलती के माध्यम से उसने इज़राइल के पापों को दण्डित किया। PPHin 785.3

विनाशक दूत ने अपनी कार्यवाही यरूशलेम के बाहर ही स्थगित कर दी थी। उस समय यहोवा का दूत यबूसी ओर्नान के खलिहान के पास खड़ा था। भविष्यवक्ता के निर्देशानुसार, दाऊद पहाड़ पर गया और वहाँ उसने परमेश्वर के लिये वेदी बनाई "और होमबलि और मेलबलि चढ़ाकर यहोवा से प्रार्थना की, और उसने होमबलि की वेदी पर स्वर्ग से आग गिराकर उसकी सुन ली।" "और यहोवा ने देश के निमित्त विनती सुन ली, तब वह महामारी इज़राइल पर से दूर हो गई।" PPHin 785.4

जिस स्थान पर वेदी खड़ी की गई, इस समय से हमेशा पवित्र भूमि माना जाना था, ओननीन द्वारा राजा को उपहार के रूप में दिया गया। लेकिन राजा ने उसे इस प्रकार लेना स्वीकार नहीं किया। उसने कहा, "में अवश्य इसका दाम ही देकर इसे मोल लूँगा, जो तेरा है, उसे मैं यहोवा के लिये नहीं लूँगा, और न बिना मोल के होमबली चढ़ाऊंगा। तब दाऊद ने उस स्थान के लिये ओरनान के छः: सौ शेकल सोना तोल दिया।" यह स्थान जहाँ अब्राहम ने अपने पुत्र की बलि चढ़ाने के लिये वेदी बनाई थी, अभी भी स्मरण किया जाता था, और अब यह इस महान छुटकारे के कारण पवित्र ठहराया गया, और आने वाले समय में यह सुलेमान द्वारा निर्माण किए गए मन्दिर का स्थान था। PPHin 786.1

दाऊद के अन्तिम वर्षो में एक विपत्ति और आनी थी। वह सत्तर वर्ष का हो गया था। उसके प्रारम्भिक घुमक्कड जीवन की कठिनाईयाँ, उसके द्वारा लड़ी गई गईं लड़ाईयाँ, बढ़ती आयु की चिन्ताएँ और कष्ट इन सब ने उसे दुर्बल कर दिया था। हालाँकि उसकाविवेक अभी स्पष्ट और दृढ़ था, बढ़ती आयु और निर्बलता के कारण उसकी अलगाव की इच्छा ने राज्य से घटित होने वाली चीजों का शीघ्र बोध नहीं होने दिया और उसके सिंहासन की छत्रछाया में ही उपद्रव उत्पन्न हो गए। फिर से दाऊद के पिता के तौर पर दयालुतापूर्ण व्यवहार का परिणाम प्रकट हुआ। अदोनिय्याह, जो अब सिंहासन के लिये आकाक्षा कर रहा था, व्यक्तित्व और आचरण में 'मिला मनुष्य" था, लेकिन वह सिद्धान्तहीन और उतावला था। उसकी किशोरवावस्था में उस पर बहुत कम नियन्त्रण रखा गया था, क्योंकि, "उसके पिता ने जन्म से लेकर कभी भी यह कहकर उदास नहीं किया था, तूने ऐसा क्यों किया?" अब उसने परमेश्वर की सत्ता के विरूद्ध उपद्रवः किया, जिसने सुलेमान को सिंहासन के लिये नियुक्त किया था। PPHin 786.2

स्वाभाविक प्रतिभा और धार्मिक विशेषता को देखते हुए सुलेमान, इज़राइल का शासक बनने के लिये अपने भाई से अधिक योग्य था, और यद्यपि परमेश्वर के चुनाव का स्पष्ट संकेत दे दिया गया था, फिर भी अदोनिय्याह के कई समर्थक थे। योआब, हालाँकि बहुत से अपराधों का दोषी था, इससे पहले सिंहासन के प्रति ईमान रहा था, लेकिन अब वह सुलेमान के विरूद्ध षड़यन्त्र में सम्मिलित हो गया, और ऐसा ही याजक एब्यातार ने भी किया। PPHin 786.3

विद्रोह की तैयारी पूरी हो चुकी थी। नगर के बिल्कुल बाहर षड़यन्यकारी अदोनिय्याह को राजा घोषित करने के लिये एक भोज पर एकत्रित हुए थे जब उनकी युक्तियों को कुछ विश्वसनीय व्यक्तियों की तात्कालिक कार्यवाही द्वारा विफल कर दिया गया, इन व्यक्तियों में प्रमुख थे याजक सादोक, भविष्यवक्ता नातान और सुलेमान की मां बतशेबा। उन्होंने राजा को राज्य में हो रही घटनाओं का वर्णन किया और उसे स्मरण कराया कि पवित्र निर्देश के अनुसार सुलेमान को सिंहासन का उत्तराधिकारी होना था। दाऊद ने तुरन्त सुलेमान के पक्ष में स्वेच्छा से सिंहासन छोड़ दिया। षड़यन्त्र को कृचल दिया गया। उसके प्रमुख कर्ताओं को मृत्यु दण्ड दिया गया। एब्यातार की दाऊद के प्रति पूर्व स्वामिभक्ति और कार्यभार का मान रखते हुए उसका प्राण नहीं लिया गया, लेकिन उसे महायाजक के पद से नीचे उतार दिया गया, और यह पद सादोक के वंश को दे दिया गया, और अदोनिय्याह को उस समय के लिये छोड़ दिया गया, लेकिन दाऊद की मृत्यु के बाद उन्हें अपने अपराध के लिये दण्ड दिया गया। दाऊद के पुत्र पर दण्डाज्ञा के कियान्वन ने, पिता के पाप के प्रति परमेश्वर की घृणा की साक्षी देने वाले चौगुना दण्ड को सम्पन्न किया। PPHin 786.4

दाऊद के शासन काल के प्रारम्भ से ही, परमेश्वर के मन्दिर का निर्माण करना उसका उसकी सबसे वांछनीय योजना थी। हालाँकि उसे अपनी योजना को क्रियान्वित कराने की अनुमति नहीं थी, उसने फिर भी उसके पक्ष में कम उत्साह और गम्भीरता नहीं दर्शाई। उसने बहुतायत से बहुमूल्य सामग्री प्रदान की थी- सोना, चांदी, गोमेद, पत्थर, विभिन्न रंगो के पत्थर, संगमरमर और सबसे बहुमूल्य लकड़ी। और अब वह मूल्यवान खजाना, जो उसने इकट्ठा किया था, दूसरों के सुपुर्द किया जाना था, क्योंकि परमेश्वर की उपस्थिति के प्रतीक, वाचा के सन्दूक के लिये किसी और को भवन तैयार करना था। PPHin 787.1

जब दाऊद ने देखा कि उसका समय निकट था उसने इज़राइल के प्रधानों को बुलाया और राज्य के सब भागों से प्रतिनिधियों को भी बुलाया ताकि वे न्यास में इस धरोहर को ग्रहण कर सके। उसकी इच्छा थी कि वह अपनी मृत्यु पूर्व उन्हे यह दायित्व सौंपे और इस महान कार्य को सम्पन्न कराने में उनका समर्थन और सहमति को प्राप्त करे। अपनी शारीरिक दुर्बलता के कारण यह अपेक्षा नहीं की गईं थी कि वह व्यक्ति रूप में इस अतरंग के लिये उपस्थित होगा, लेकिन परमेश्वर की प्रेरणा उस पर उतरी, और अपने स्वाभाविक सामर्थ्य और उत्साह से बढ़कर उत्साह के साथ वह अन्तिम बार अपनी प्रजा को सम्बोधित कर सका। उसने मन्दिर बनाने की अपनी स्वयं की अभिलाषा

और परमेश्वर की आज्ञा कि इस कार्य को उसके पुत्र सुलेमान को सौंप दिया जाए, के बारे में भी बताया। ईश्वरीय आश्वासन यह था, “तेरा पुत्र सुलेमान ही मेरे भवन और ऑगनो को बनाएगा, क्योंकि मैंने उसको चुन लिया है कि मेरा पुत्र ठहरे, और मैं उसका पिता ठहरूँगा। यदि वह मेरी आज्ञाओं और नियमों को मानने में आजके दिन के समान दृढ़ रहे, तो मैं उसका राज्य सदा स्थिर रखूंगा।” दाऊद ने कहा, “इसलिये अब इज़राइल अर्थात परमेश्वर की प्रजा की दृष्टि में और परमेश्वर के सामने अपने परमेश्वर यहोवा की सब आज्ञाओं को मानो और उन पर ध्यान करते रहो ताकि तुम इस अच्छे देश के अधिकारी बने रहो, और इसे अपने बाद अपने वंश का सदा का भाग होने के लिये छोड़ जाओ। PPHin 787.2

दाऊद ने अपने निजी अनुभव से जाना था कि जो परमेश्वर को छोड़ देता है उसका मार्ग कितना कठिन हो जाता है। उसने व्यवस्था भंग करने की दण्डाज्ञा को महसूस किया था और आज्ञा उल्लंघन के प्रतिफल को भुगता था। उसकी सम्पूर्ण आत्मा इस बात के लिये सचेत थे कि इज़राइल के अगुवे परमेश्वर के प्रति ईमानदार हो, और यह कि सुलेमान परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करे और उन पापों से दूर रहे, जिनके कारण उसके पिता की सत्ता कमजोर हो गई, उसका जीवन कष्टपूर्ण हो गया और परमेश्वर का निरादर हुआ। दाऊद जानता था कि सुलेमान के उच्च पद पर रहते हुए उस पर आने वाले प्रलोभनों का सामना करने के लिये हृदय की दीनता, परमेश्वर में स्थायी विश्वास और सदैव की जागरूकता की आवश्यकता थी क्योंकि ऐसे विशिष्ट मनुष्य, शैतान के तीरों के निशाने पर होते है। अपने पुत्र की ओर मुड़ते हुए, जिसे सिंहासन का उत्तराधिकारी मान लिया गया था, दाऊद ने कहा, “हे मेरे पुत्र सुलेमान! तू अपने पिता के परमेश्वर का ज्ञान रख, और खरे मन और प्रसन्न जीव से उसकी सेवा करता रह, क्योंकि यहोवा मन को जाँचता है और विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है उसे समझता है। यदि तू उसकी खोज में रहे तो वह तुझ को मिलेगा, परतु यदि तू उसको त्याग दे तो वह सदा के लिये तुझ को छोड़ देगा। अब चौकस रह, यहोवा ने तुझे एक ऐसा भवन बनाने क लिये चुन लिया है, जो पवित्र स्थान ठहरेगा, हियाव बॉधकर इस काम में लग जा। PPHin 788.1

दाऊद ने सुलेमान को पवित्र प्रेरणा के द्वारा प्रकट किये गए काम में आने वाले सभी उपकरण, प्रत्येक भाग के नमूने के साथ, मन्दिर निर्माण के लिये विस्तारपूर्वक निर्देश दिये। सुलेमान अभी नौजवान ही था और परमेश्वर की प्रजा के शासन में और मन्दिर निर्माण में उस पर आने वाले भारी उत्तरदायित्व से पीछे हटा। दाऊद ने अपने पुत्र से कहा, “हियाव बाँध और दृढ़ होकर इस कार्य में लग जा। मत डर, और तेरा मन कच्चा न हो क्योंकि यहोवा परमेश्वर जो मेरा परमेश्वर है, वह तेरे संग है, तुझे निराश नहीं करेगा और न तुझे त्यागेगा।’ PPHin 788.2

दाऊद ने फिर से मण्डली से विनती की, “मेरा पुत्र सुलेमान सुकमार लड़का है, और केवल उसी को परमेश्वर ने चुना है, काम तो भारी है, क्योंकि यह भवन मनुष्य के लिये नहीं, यहोवा परमेश्वर के लिये बनेगा। मैने तो अपनी पूरी ताकत के साथ मेरे परमेश्वर के भवन के लिये तैयारी की है”,

और फिर उसने उन सभी वस्तुओं को गिनाया जो उसने एकत्रित की थी। और तो और उसने कहा, “मेरा मन अपने परमेश्वर के भवन में लगा है, इस कारण जो कुछ मैंने पवित्र भवन के लियेएकत्रित किया है,उससबसे अधिकमें अपनानिज धन भी जो सोना, चाँदी के रूप में मेरे पास है, अपने परमेश्वर के भवनके लिये देता हूँ ; अर्थात तीन हजार किक्ाकार (लगभग 110 टन) ओपीर का सोना, और सात हजार किक्कार (लगभग 260टन) तायी हुई चाँदी, जिससे कक्षों की दीवारें गढ़ी जाएँ ।' “अब कौन अपनी इच्छा से यहोवा के लिये अपने को अर्पित कर देता है?” उसने एकत्रित जन समूह से पूछा जो अपने उदार उपहार ले कर आए थे। PPHin 789.1

मण्डली से एक तत्पर उत्तर मिला, “तब पितरों के घरानो के प्रधानों और इज़राइल के गोत्रों के हाकिमों, ओर सहस्रपतियों और शतपतियों, और राजा के काम के अधिकारियों ने स्वेच्छा से परमेश्वर के भवन के काम के लिये पाच हजार किक्कार (लगभग 490 टन) और दस हजार दकनोन (लगभग 84 किलो) सोना, दस हजार किक्कार (लगभग 375 टन) चांदी, अठारह हजार किक्कार (लगभग 375 टन) पीतल और एक लाख किक्कार (लगभग 3750 टन) लोहा दिया । जिनके पास मणि थे, उन्होंने उन्हें यहोवा के भवन के खजाने के लिये गेशोनी यहीऐल के हाथ में दे दिया ।.......तब प्रजा के लोग आनन्दित हुए, क्योंकि हाकिमों ने प्रसन्न होकर खरे मन और अपनी इच्छा से यहोवा के लिये भेंट दी थी और दाऊद राजा बहुत ही आनन्दित हुआ।” PPHin 789.2

“तब दाऊद ने सारी सभा के सम्मुख यहोवा का धन्यवाद किया और दाऊद ने कहा, हे यहोवा! हे हमारे मूल पुरूष इज़राइल के परमेश्वर! अनादिकाल से अनन्तकाल तक तू धन्य है! है यहोवा! महिमा, पराकम, शोभा, सामर्थ्य और वैभव, तेरा ही है, क्योंकि आकाश और पृथ्वी में जो कुछ है, वह तेरा ही है, हे यहोवा! राज्य तेरा है, और तू सभी के ऊपर मुख्य और महान ठहरा है। धन और महिमा तेरी ओर से मिलते हैं, और तू सभी के ऊपर प्रभुता करता है। सामर्थ्य और पराकम तेरे ही हाथ में है, और सब लोगों को बढ़ाना और बल देना तेरे हाथ में है। इसलिये अब हे हमारे परमेश्वर! हम तेरा धन्यवाद करते हैं, और तेरे महिमायुक्त नाम की स्तुति करते हैं। मैं क्या हूँ? मेरी प्रजा क्या है कि हम को इस रीति से अपनी इच्छा से तुझे भेंट दे कि शक्ति मिले? तुझी से तो सब कुछ मिलता है, और हम ने तेरे हाथ से पाकर तुझे दिया है। तेरी दृष्टि में हम तो अपने सब पुरखाओं के समान पराए और परदेशी है, पृथ्वी पर हमारे दिन छाया के सामन बीत जाते हैं, और हमारा कुछ ठिकाना नहीं। हे हमारे परमेश्वर यहोवा! वह जो बड़ा संचय हम ने तेरे पवित्र नाम का एक भवन बनाने के लिये किया है, वह तेरे ही हाथ से हमें मिला था, और सब तेरा ही है। हे मेरे परमेश्वर! मैं जानता हूँ कि तू मन को जाँचता है और शुचिता से प्रसन्न रहता है। PPHin 789.3

“मैंने तो यह सब कुछ मन की शुचिता और अपनी इच्छा से दिया है, और अब मैंने आनन्द से देखा है कि तेरी प्रजा के लोग जो यहाँ उपस्थित हैं, वे अपनी इच्छा से तेरे लिये भेंट देते है। हे यहोवा! हे हमारे पुरखाओं अब्राहम, इसहाक और इज़राइल के परमेश्वर, अपनी प्रजा के मन के विचारों में

यह बात बनाए रख और उनके मन अपनी ओर लगाए रख: मेरे पुत्र सुलेमान का मन ऐसा खरा कर दे कि वह तेरी आज्ञाओं, चेतावनियों और विधियों को मानता रहे और यह सब कुछ करे, और उस भवन को बनाए, जिसकी तैयारी मैंने की है। तब दाऊद ने सारी सभा से कहा, तुम अपने परमेश्वर यहोवा का धन्यवाद करो। तब सभा के सब लोगों ने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा का धन्यवाद किया, और अपना सिर झुकाकर यहोवा को और राजा को दण्डवत किया।" PPHin 790.1

बड़ी लगन से दाऊद ने मन्दिर के निर्माण और सौन्दर्यकरण के लिये बहुमूल्य वस्तुओं का संचय किया। उसने आनन्द और प्रशंसा के भजनों की रचना की जो आने वाले वर्षो में भवन के प्रॉगणों में गूंजने थे। और अब परमेश्वर में उसका हृदय प्रसन्न हुआ क्योंकि पितरों के प्रधानों और इज़राइल के हाकिमों ने उसके निवेदन का इतनी शिष्टता से उत्तर दिया, और स्वयं को उस महत्वपूर्ण कार्य के लिये समर्पित कियाजो उनके सामने था। और जैसे-जैसे उन्होंने अपनी सेवाएँ दी, वे और अधिक कार्य करने की इच्छा करने लगे। अपने निजी धन-सम्पत्ति को शाही खजाने में देकर उन्होंने भेंट में बहुत वृद्धि की। परमेश्वर के भवन के लिये सामग्री जुटाने में दाऊद ने स्वयं की अयोग्यता को गहराई से महसूस किया था, और उसके राज्य के अधिकारियों के तत्पर उत्तर में उनकी स्वामिभक्ति की अभिव्यक्ति ने दाऊद को प्रसन्नता से भर दिया, जब उन्होंने स्वेच्छा से अपनी निधि यहोवा के लिये अर्पण की और स्वयं को उसकी सेवा के लिये समर्पित किया। लेकिन वह परमेश्वर ही था जिसने लोगों को यह प्रवृति प्रदान की। मनुष्य को नहीं, वरन् ईश्वर को महिमा पहुँचनी चाहिये। उसी ने लोगों को पृथ्वी का बाहुलय प्रदान किया था और उसकी पवित्र आत्मा ने उन्हें स्वेच्छा से मन्दिर के लिये अनमोल वस्तुएँ लाने के लिये सहमत किया था। सब कुछ परमेश्वर का था, यदि परमेश्वर का प्रेम लोगों के हृदयों को प्रभावित नहीं करता, तो राजा के प्रयत्न व्यर्थ होते, और मन्दिर का निर्माण कभी नहीं हो पाता। PPHin 790.2

मनुष्य जो भी परमेश्वर की बहुतायत में से प्राप्त करता है, वह परमेश्वर का ही है। पृथ्वी की सुन्दर और मूल्यवान वस्तुएँ मनुष्य के हाथ में उसकी परीक्षा लेने के लिये रखी गई है, ताकि वह उसकी कृपा की सराहना और उसके प्रेम की गहराई को सुन सके। चाहे वह धन का खजाना हो या ज्ञान और बुद्धि का, दोनो को परमेश्वर के कदमों में एच्छिक भेंट के तौर पर रखना है, और देने वाले को दाऊद के साथ कहना है, "तुझी से तो सब कुछ मिलता है, और हम ने तेरे हाथ से पाकर तुझे दिया है। PPHin 791.1

जब उसे लगा कि मृत्यु निकट है, दाऊद के हृदय पर जो बोझ था वह अभी भी सुलेमान और इज़राइल के राज्य के लिये था, जिसकी समृद्धि व्यापक रूप से राजा की कर्तव्यपरायणता पर निर्भर थी। और उसने सुलेमान को आज्ञा दी और कहा, "मैं संसार की रीति से कच करने वाला हूँ इसलिये तू हियाव बाँधकर पुरूषार्थ दिखा। और जो कुछ तेरे परमेश्वर ने तुझे सौंपा है, उसकी रक्षा करके उसके भागों पर चला करना और जैसा मूसा की व्यवस्था में लिखा है, वैसा ही उसकी विधियों और

आज्ञाओं और नियमों और चेतावनियों का पालन करते रहना, सिसे जो कुछ तू करे और जहां कही तू जाए, उसने तू सफल हो, और यहोवा अपना वह वचन पूरा करे जो उसने मेरे विषय में कहा था, "यदि तेरी सन्तान अपनी चाल के विषय में ऐसे सावधान रहे कि अपने सम्पूर्ण हृदय और सम्पूर्ण प्राण से सच्चाई के साथ नित मेरे सम्मुख चलते रहे तब तो इज़राइल की राजगद्दी पर विराजने वाले की, तेरे कल में घटी कभी न होगी ।"-2 राजा 2:1-4। PPHin 791.2

दाऊद के "अन्तिम वचन',, जैसा कि उल्लिखित है, एक गीत है-विश्वास का गीत, ऊंचे सिद्धान्त का गीत और अनश्वर विश्वास का गीत:- PPHin 792.1

"यिशै के पुत्र की यह वाणी है, इस पुरूष की

यह वाणी है जो ऊंचे पर खड़ा किया गया,

और याकब के परमेश्वर का अभिषिक्त,

और इज़राइल का मधुर भजन गाने वाला है:

यहोवा का आत्मा मुझमें होकर बोला......

कि मनुष्यों में प्रभुता करने वाला एक धर्मी होगा,

जो परमेश्वर का भय मानता हुआ प्रभुता करेगा,

वह मानो भोर का प्रकाश होगा, जब सूर्य निकलता है,

ऐसा भोर जिसमें बादल न हो

जैसा वर्षा के बाद निर्मल प्रकाश के कारण

भूमि से हरी-हरी घास उगती है।

क्या मेरा घराना ईश्वर की दृष्टि में ऐसा नहीं है?

उसने तो मेरे साथ सदा की एक ऐसी वाचा बाँधी है,

जो सब बातों में ठीक की हुई और अटल भी है।

क्योंकि चाहे वह उसको प्रकट न करे

तो भी मेरा पूर्ण उद्धार और पूर्ण अभिलाषा का विषय वही है ।" PPHin 792.2

-2 शमूएल 23:1-5।

दाऊद का महापतन हुआ था, लेकिन उसके द्वारा किया गया प्रायश्चित हार्दिक था, उसका प्रेम उत्साहपूर्ण था और उसका विश्वास दृढ़ था। उसके पाप, जो बहुत थे, क्षमा हुए, इसलिये उसने बहुत प्रेम किया-लूका 7:47। PPHin 792.3

दाऊद के भजन सचेतन अपराधबोध की गहराईयों और आत्म-तिरस्कार से लेकर उच्चतम विश्वास और परमेश्वर के साथ उत्कृष्ट संपर्क तक के अनुभव की सम्पूर्ण श्रंखला से होकर निकलते है। उसके जीवन का इतिहास यही बताता है कि पाप केवल दुःख और अपमान लेकर आता है, लेकिन परमेश्वर का प्रेम और उसकी करूणा अगाध गहराईयों तक पहुँच सकते है, और यह कि विश्वास प्रायश्चित करने वाले प्राणियों को ऊपर उठाता है ताकि वे परमेश्वर के पुत्र ठहराए जा सकें। परमेश्वर के वचन में दिए गए आश्वासनों में यह विश्वसनीयता, न्यायपरायण्ता, और परमेश्वर की अनुबंधित करूणा की सबसे प्रबल साक्षी है। PPHin 792.4

मनुष्य "छाया की रीति पर ढल जाता है, और कहीं ठहरता नही", "परन्तुपरमेश्वर का वचन सदैव अटल रहेगा।" "परन्तु यहोवा की करूणा उसके डरवैयों पर युग-युग और उसका धर्म उनके नाती-पोतों पर भी प्रकट होता रहता है; अर्थात उन पर जो उसकी वाचा का पालन करते और उसके उपदेशों को स्मरण कर उन पर चलते है।"(अय्यूब 14:2, यशायाह 40:8, भजन संहिता 103:17,18)। PPHin 793.1

"जो कुछ परमेश्वर करता है वह सदा स्थिर रहेगा" "- सभोपदेशक 3:14 । दाऊद और उसके घराने से की गई प्रतिज्ञाएँ महान है, प्रतिज्ञाएँ जो सनातन युगों की बाट जोहती है, और मसीह में परिपूर्ण होती है। प्रभु ने घोषणा कीः PPHin 793.2

"मैने अपने दास दाऊद से शपथ खाई है.......मेरा हाथ उसके साथ बना रहेगा, मेरी भुजा उसे दृढ़ रखेगी.....मेरी करूणा और सच्चाई उस पर बनी रहेगी, और मेरे नाम के द्वारावह शक्तिशाली होगा। मैं समुद्र में उसके हाथ के नीचे और महानदों को उसके दाहिने हाथ के नीचे कर दूँगा। वह मुझे पुकारकर कहेगा, 'तू मेरा पिता है, मेरा परमेश्वर और मेरे उद्धार की चटटान है। फिर में उसको अपना पहलौठा और पृथ्वी के राजाओं पर प्रधान ठहराऊंगा। मैं अपनी करूणा उस पर सदा बनाए रहूँगा, और मेरी वाचा उसके लिये अटल रहेगी।"भजन संहिता 8:3-28। PPHin 793.3

"मैं उसके वंश को सदा बनाए रखूँगा

और उसकी राजगद्दी स्वर्ग के समान सर्वदा बनी रहेगी ।" PPHin 793.4

-भजन संहिता 8:29।

"वह प्रजा के दीन लोगों का न्याय करेगा,

और दरिद्रलोगों को बचाएगा,

और अन्धेरा करने वालों को चूर करेगा ।

जब तक सूर्य और चन्द्रमा बने रहेंगे ।

तब तक लोग पीढ़ी-पीढ़ी तेरा भय मानते रहेंगे।

उसके दिनों में धर्मी फूले-फलेंगे,

और जब तक चन्द्रमा बना रहेगा,

तब तक शान्तिबहुत रहेगी ।

वह समुद्र से समुद्र तक और महानद से पृथ्वी की छोर तक प्रभुता करेगा ।

उसका नाम सदा सर्वदा बना रहेगा,

जब तक सूर्य बना रहेगा,

तब तक उसका नाम नित्य होता रहेगा

उसके लोग अपने को उसके कारण धन्य गिनेंगे,

सारी जातियाँ उसको धन्य कहेंगी। PPHin 793.5

- भजन संहिता 72:4-- 3,17।

"क्योंकि हमारेलिये एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है, और प्रभुता उसके काँधे पर होगी, और उसका नाम अदभुत युक्ति करने वाला पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजक्मार रखा जाएगा।" "वह महान होगा और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा, और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उसको देगा, और वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा, और उसके राज्य का अन्त न होगा।" यशायाह 9:6, लूका 1:32,33। PPHin 794.1

